उनसैं हम अधिक नहीं कहा चाहते. इतनाही वहुत है कि–जिस रोगीकों तुमने विगडा देखा है उसने किसी मूढ (अनाडी) के हाथकी वनी कच्ची धातु खाई होगी–विद्वान वैद्यकी नहीं. अथवा उस रसकों खायकर पथ्य (परहेज) अवस्य विगाडा होयगा–वाहजो स्वयं उपद्रव करो. और दूसरोंके शिर पडना उत्तमोंका काम नहीं. हमारे तो प्रथमही लिखा हें. कि " औषधंमूढवैद्यानांत्यजंतुज्वरपीडिताः " परंतु आप उन दुष्टोंके वाक्य जालमें लोभ वश क्यों पडे ? वस यही कारण उनकी निंदा करनेका जान लीजिये.

हमारे सव रसके ग्रंथ संस्कृतमें हैं. और वो मिलतेभी कम है. फिर किसीमें कुछ ' [illegible]क और किसीमें कुछ न्यून हैं. फिरभी अशुद्ध हैं. और उनके पढाने वाले–तथा हस्त [illegible]या वताने वाले वहुत न्यून हैं. इस वास्ते हमने इस रसराजसुंदरका रचना प्रारंभ करा [illegible] रसरत्नाकर--रसेन्द्रचिंतामणि-रसप्रदीप-रसरत्नसमुच्चय-रसमंगल-रसदीपक-रसहृदय--काकचंडीश्वर-ग्रंथ-रसेन्द्रसारसंग्रह-रसेन्द्रकोश-टोडरानंद-गोरख संहिता इत्यादि अनेक २ प्राचीन और नवीन ग्रंथोंमें जो जो विषय अपूर्व और अनुभाविक हे उन सवका संकलन इसमें करागया है. और जो जो विषय हमकों प्राचीन वैद्योंसैं भाषा मात्र उपलब्ध हुए थे उन सवकों संस्कृत श्लोक वद्ध निर्माण करके इसमें मिलाय दीये गए. और सवकों उपयोगी होय इसवास्ते इसकी हिन्दी भाषाटीका कर दीनी गई और यथा शक्य उनमें हस्त क्रियाभी लिखी गई है. वहुतसे प्रयोग तो ऐंसे है कि उनको विना किसीके सहाताके केवल इसी पुस्तकके देखने मात्रसैंही आप वनाय सक्ते हो.

महाशय रस निर्माण करना राजा महाराजोंका कार्य है. साधारण मनुष्यका नहीं है. यदि कोई इसके दुःसाध्य कर्मकों उद्धत पनेसैं करनेकों उद्यत हो जायगा और वह नहीं होय तो हमकों दोष न देवे. किंतु जो कर्म उनसैं हो सके उसकों करैगेतो अवश्य अपने इष्टकों प्राप्त होगे। इसमें पारदके रंजन-सारण-वेधन-आदिकर्म-सुवर्ण-रूपा-अभ्रककीद्रुति-धातुवेधी भस्म अर्थात् रसायन इत्यादि क्रियाओंके वास्ते मित्रवर्ग ? आपलोग भूल करकैभी न करना ये केवल तप साध्य हैं. और वाकी क्रिया हो सक्ती है.

अव सव गुणिजनोंके प्रति प्रार्थना कर्त्ताहूं इस ग्रंथका वहुतसा भाग मेरे पिछाडी मुंबईमें छपा हे इसवास्ते जहां कहीं भूल चूक हो कृपा पूर्वक सुधार लेवे. और मेरेकों सूचित कर देवे तो आयंदा सुधार दीना जायगा.

आपका प्रेमाभिलाषी आयुर्वेदोद्धार संपादक.

पं॰दत्तरामचौवे.

मानिकचौक.

मथुराजी.

रसराजसुंदरग्रंथकी अनुक्रमणिका.

विषय.	पृ०
पारद.	
मंगलाचरण.	३
पारदको वंदना.	,,
ग्रंथकी श्रेष्ठता.	,,
अन्य ग्रंथोंसे इसरसराजसुंदर ग्रंथको श्रेष्ठत्व.	,,
गुरु सेवाके विनाकर्म करना निषेध	४
विद्या प्राप्तिमें तीन कारण.	,,
सद्गुरुके लक्षण.	,,
उत्तम शिष्यकेलक्षण.	,,
पारद प्रशंसा.	,,
पारदको जाननेके विनावैद्यकी हाँसी.	५
रसोपासनाके फल.	,,
रसकी त्रिविध गति.	,,
रसको प्राधान्यता.	,,
रसयोगके फल.	,,
रसकी ब्रम्हा विष्णु और रुद्रसंज्ञा.	६
असाध्य रोग हरण करनेसें रसको श्रेष्ठता.	,,
रसदर्शनका फल.	,,
रस पूजा तथा रस स्मरणका फल.	,,
रस लिंग पूजनका फल.	,,
रस दर्शनका फल.	,,
रसका पवित्र तत्त्व कथन.	७
पारदके नाम.	,,
पारदकी उत्पत्ति.	,,
पंचविध पारद.	८
रस संज्ञक पारदके लक्षण.	,,
रसेन्द्र संज्ञक पारदके लक्षण.	,,
सूत संज्ञक पारदके लक्षण.	,,
पारद संज्ञक पारदके लक्षण.	,,
मिश्र संज्ञक पारदके लक्षण.	,,
त्रिविध पारदोंके गुण और रसोत्पत्ति. जाननेका महात्म.	,,
रसादि शब्दोंकी निरुक्ति.	,,
इन्द्रकी आज्ञासें शिवजीको पारद. दूषित करना.	९
रस संख्या.	,,

विषय.	पृ०
पारदको श्रेष्ठत्व.	९
पारद ग्रहण करनेके उपाय.	१०
पारद आदिकी शुद्धिसें वैद्यको श्रेष्ठता	
पारदके संस्कार.	,,
सदोष पारा जारण निषेध.	,,
शुद्धपारेके लक्षण.	११
पारदकी जाती.	,,
पारदमें आठ दोष.	,,
आठ दोषोंके पृथक् २ अवगुण.	,,
सात कंचुकी.	,,
त्रिविध तथा बारह दोष.	,,
प्रत्येकके अवगुण.	१२
शुद्धीके भेद.	,,
रस शालाके लक्षण और शालाके अष्ट दिशाओंमें पृथक् २ कर्म.	,,
पारद शोधनमें तोलका प्रमाण.	,,
मतान्तर.	१३
पारद शोधनादि कर्ममें प्रथम कर्त्तव्य कर्म.	,,
रक्षा मंत्र.	,,
पारदके संस्कार.	,,
पारदके अष्टादश संस्कार.	,,
पारदमें अष्ट संस्कार.	,,
अष्ट संस्कारोंको मुख्यत्व.	,,
अथोनविंशति कर्माणि.	१४
पारदके भेद.	,,
स्वेदन संस्कार.	,,
खरल.	,,
खरलका विस्तार.	१५
स्वेदनार्थ औषधी.	,,
प्रकारांतर.	,,
अन्य सिद्ध मत.	,,
द्रव्यके अनुमानमें विधि.	,,
द्वितीय मर्दन संस्कार.	१६
अन्य सिद्ध मत.	,,
तृतीय मूर्च्छन संस्कार.	,,
तथा मर्दन.	१७
प्रत्येक दोष निवृत्तिके अर्थ पृथक२	,,

विषय.	पृ०
मर्दन.	१७
कंचुकी हरण.	,,
चतुर्थ उत्थापन संस्कार.	,,
पंचम पातन संस्कार.	,,
ऊर्ध्व पातन.	१८
अधःपातन.	,,
तिर्यक्पातन.	,,
छटा बोधन संस्कार.	१९
प्रकारांतर.	,,
सप्तम नियमन संस्कार.	,,
कालनी स्त्रीके लक्षण.	,,
नियमन संस्कारमें मतांतर.	,,
अष्टमदीपन संस्कार.	,,
अनुवासन संस्कार.	२०
अष्टमांश पारदकी शुद्ध संज्ञा.	,,
हिंगुलसें पारा निकालना.	,,
प्रकारांतर.	,,
तप्तखल्व द्वारा पारदकी शुद्धि.	,,
लहसनसें पारदकी शुद्धि.	२१
शुद्ध पारेके मुखकरना और पक्षच्छेदन.	,,
नवविष.	,,
उपविष.	,,
मुखकरनेका प्रकारांतर.	,,
तथा.	,,
तथा.	,,
स्वेदन और मर्दनका प्रकारांतर.	२२
हजार नीबूके रसमें मर्दनके गुण	,,
प्रबोधन.	,,
अम्लवर्ग.	,,
क्षारवर्ग.	२३
तथा.	,,
चंद्रोदयकी प्रथम विधि.	,,
गंधक जीर्णकी परीक्षा.	२४
चंद्रोदयके गुण.	२५
चंद्रोदयकी दूसरी विधि.	,,
चंद्रोदयखानेकी विधि.	,,
चंद्रोदयकी तीसरी विधि.	२६

विषय.	पृ०
गुण.	,,
चंद्रोदयकी चतुर्थ विधि.	२७
,, पंचम विधि.	,,
चंद्रोदयकी छटी विधि.	२८
क्षेत्रीकरण.	,,
रससिंदूरकी प्रथम विधि.	२९
रससिंदूरकी दूसरी विधि.	,,
रससिंदूरकी तीसरी विधि.	,,
रससिंदूरके अनुपान.	३०
पारदकी कृष्णभस्म.	,,
पीली भस्म.	,,
द्वितीय कृष्णभस्म.	,,
नीलभस्म.	,,
चारप्रकारकी भस्ममें उत्तरोत्तर श्रेष्टत्व.	३१
द्विविध भस्म.	,,
सर्वांग सुंदर रस.	,,
रसकपूर.	,,
रसकपूरकी प्रथम विधि.	,,
रसकपूरके अनोपान और गुण.	३२
रसकपूरकी दूसरी विधि–	,,
रसकपूरके गुण.	,,
पारद बंधन.	३३
बंधनोंके पचीस भेद.	,,
हठ रस.	,,
आरोट	,,
आभास.	,,
क्रियाहीन.	,,
पिष्टिकाबंध.	३४
क्षारबद्ध.	,,
खोटबद्ध.	,,
पोट (पर्पटी) बद्ध.	,,
कल्कबद्ध.	,,
कजलीबद्ध.	,,
सजीव पारद.	,,
निर्जीव पारद.	,,
निर्बीज.	,,
सबीजबद्ध.	,,
श्टंखला बद्ध.	३५
द्रुतिबद्ध.	,,
बालबद्ध.	,,
कुमारबद्ध.	,,
तरुणबद्ध.	,,
वृद्धबद्ध.	,,
मूर्त्तिबद्ध.	,,
प्रसंगवश ६४ दिव्यौषधियोंकेनाम.	,,
जलबद्ध.	३६
अग्निबद्ध.	,,
बद्धाभिधानरसकेलक्षण.	,,
चतुर्विधबंध.	,,
लक्षण.	,,
द्विविधभस्म.	३७
तलभस्मकीविधी.	,,
सिंगरफसैंनिकालेपारदकेफिर शोध नकरनेमेंपुरंदररहस्यकाप्रमाण.	,,
गुरुऔरशास्त्रकेबिनापाराजारणनिषेध,	,,
गंधक जारणकी अवश्यकता.	३८
शतगुण सहस्र गुण जीर्ण गंधकके गुण.	,,
गंधक जारणका फल.	,,
अंतर धूम विपाचित गंधक जारणका फल.	,,
अभ्रक सुवर्ण चांदी तांबा जारित पारदको श्रेष्टत्व.	,,
हीरा सुवर्ण और गंधक जारणकेबिना वैद्यकी निंदा.	,,
प्रमाणांतर.	,,
सुवर्णादि जीर्ण पारदके गुण.	३९
रस जारणका फल.	,,
पारदको अग्नि स्थाइकरनेका पुण्य,	,,
षड्गुण गंधक जारण.	,,
पीठीकरण.	,,
हांडी यंत्र.	,,
भूधरयंत्र.	,,
वज्रमूषा.	४०
अजीर्ण और अबीज पारद जारण निषेध.	,,
रससिंधुका प्रमाण.	,,
गंधक जीर्णके गुण.	,,
अभ्रकादि जीर्णके गुण.	,,
विड.	४१
बीज जारण.	,,
अजीर्णमें पातन और स्वेदन.	४२
बाह्य द्रुति.	,,
लोहका द्रवीकरण.	४३
पाराबद्ध करनेकी विधी.	,,
बद्धपारेके लक्षण.	,,
बद्धपारदकी परीक्षा.	,,
खगेश्वरी गुटिका.	४४
खगेश्वरी गुटकाके लक्षण.	,,
ब्रम्हांड गुटिका.	,,
पारदमारण.	
नियामक औषधी.	४५
पारद मारणकी दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	४६
चौथी विधि.	,,
पांचवी विधि.	,,
छटी विधि.	,,
सातवी विधि.	,,
आठवी विधि.	,,
नवम विधि.	,,
दशमी विधि.	४७
वज्रमूषाकरण.	,,
मदन मुद्रा.	,,
मृत पारदके लक्षण.	,,
रससेवाका फल.	,,
पारद देनेकी मात्रा.	,,
घन सत्वादि जीर्ण पारदकी मात्रा.	,,
पारद सेवनकी विधि.	,,
पारद भस्मके गुण.	४८
तथा.	,,
पारद भक्षणके पश्चात् उपद्रव.	,,
पारद जीर्णके उपद्रवोंका शमन.	,,
पारद भस्मके अनुपान.	,,
तथा.	४९
पारद भक्षणका समय.	,,
पारद भक्षणमें पथ्य.	,,
पारद भक्षणमें वर्ज्य पदार्थ.	५०
जीर्ण रस होनेसें उत्पन्न रोगोंकी शांति.	,,
रस पाकके लक्षण.	,,
अशुद्ध पारद भक्षणके दोष.	,,
पारद विकारकी शांति.	,,
रसकपूरके अवगुण:	,,
रसकपूरकेअवगुणोंकी शांति:	,,
रससिंदूरके अवगुण और विकारोंकी शांति.	,,
गंधक.	
गंधककी उत्पति.	,,
गंधकके नाम.	,,
शोधित गंधकके गुण	५२
गुणांतर.	
तीनप्रकारकी गंधक.	
ग्रंथांतरसे गंधकके लक्षण.	,,
तथा.	,,
गंधक शोधनकी विधि.	,,
गंधक शोधनका दूसरा प्रकार.	,,

विषय.	पृ०
शुद्ध गंधकसे तेल निकलना.	५३
दूसरी विधि.	,,
गंधककी दुर्गंध हरण.	,,
गंधकका अनुपान.	,,
गंधक कल्क.	५४
दूसरा प्रकार.	,,
गंधक रसायन.	,,
गंधक द्रुति.	,,
गंधक लेप.	५५
गंधककीधातु वेधीकजली.	,,
अशुद्ध गंधकके दोष.	,,
गंधक भक्षणमें त्याज्य वस्तु.	,,
गंधक विकारकी शांति.	,,
अष्ट लोहोंके नाम तथा सप्त धातु	५६
सुवर्ण.	
सुवर्णकी उत्पत्ति.	
सुवर्णके नाम.	,,
सुवर्णके भेद.	,,
अशुद्ध सुवर्णके दोष.	,,
सुवर्ण शोधन.	५७
सुवर्ण शोधनकी दूसरी विधि.	,,
सुवर्णादि धातुमारणमें शंकासमाधान,	,,
सुवर्ण मारणकी पहली विधि.	५८
कुक्कुट पुटके लक्षण.	,,
सुवर्ण मारणकी दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि	,,
चतुर्थ विधि.	,,
पांचवी विधि.	५९
छटी विधि.	,,
सातवी विधि.	,,
आठवी विधि.	,,
नवमविधि.	,,
मृतसुवर्णके गुण.	,,
सुवर्ण भस्मके गुण.	६०
अन्य गुण.	,,
केवल सुवर्णके गुण.	,,
सोनेके वर्कोंके गुण.	,,
सुवर्ण भस्मके अनुपान.	,,
सुवर्ण भस्मका भक्षण और अनुपा.	६१
,, भक्षणमें पथ्य.	,,
,, की द्रुति.	,,
अशुद्ध सुवर्णके दोष.	,,
सुवर्ण दोषोंकी शांति.	,,
चांदी.	
चांदीकी उत्पत्ति.	,,
रौप्य (चांदी) के भेद.	६२

विषय.	पृ०
तीन प्रकारका रूपा.	,,
रूपेकी परीक्षा.	,,
तथा.	,,
अशुद्ध चांदीके लक्षण.	,,
अशुद्ध मारणके अवगुण.	,,
रौप्य शुद्धी.	,,
तथा दूसरी विधी.	,,
रुपामारणकी पहिली विधि.	६३
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
गज पुटके लक्षण.	,,
रुपामारणकी चतुर्थ विधि.	,,
पांचवी विधि.	६४
वाराह पुटके.	,,
रुपेकी भस्मके गुण.	,,
रुपेके अनुपान.	,,
चांदीके वर्कोंके गुण.	,,
रुपेकी द्रुति.	६५
अशुद्ध रुपेके अवगुण.	,,
अशुद्ध दोषोंकी शांति.	,,
ताम्र	
ताम्रकी उत्पत्ति.	,,
ताम्रके भेद.	,,
म्लेच्छ ताम्रके लक्षण.	,,
नेपाल ताम्रके लक्षण.	,,
ताम्रकी सदोषत्व.	,,
ताम्रके दोष.	,,
ताम्र शोधन.	६६
ताम्र मारणकी प्रथम विधि.	,,
दूसरी विधि.	६७
तीसरी विधि.	,,
सोमनाथी तांबेकी विधि.	,,
दूसरी विधि.	,,
ताम्र भस्मकी परीक्षा.	,,
पारद संस्कारके विनाताम्रके दोष.	,,
ताम्र मारणकी सुगम रीति.	६८
ताम्रकी वांती आदिनाशकपुट.	,,
ताम्रके गुण.	,,
ताम्र भक्षणके अनुपान.	,,
ताम्रदेनेकी युक्ती.	,,
कैंचुए और मोरके पंखोंसे. ताम्र निकालनेकी विधि.	,,
भूनाग सत्वके गुण.	६९
तुत्य (नीलाथोथे) सैताम्र निकालना.	,,
विष हरमुद्रिकाके गुण.	,,

विषय.	पृ०
विष हरमुद्रिकाके जल अभिमंत्रित करनेकामंत्र.	६९
ताम्रद्रुति.	,,
ताम्र जनित दोषोंकी शांती.	,,
वंग	
वंगके भेद.	७०
खुरक और मिश्रक वंगके लक्षण.	,,
वंग शोधन.	,,
दूसरी विधि.	,,
वंग मारणकी पहिली विधि.	,,
दूसरी विधि.	,,
वंगकी धातु वेधि तीसरी भस्म.	७१
चौथीविधि.	,,
पांचवीविधि.	,,
वंगके अनुपान.	,,
वंग समूहका भस्म करना.	७२
वंग भस्मके गुण.	,,
वंगके अनुपान.	,,
अशुद्ध वंगके दोष.	७३
वंग विकारकी शांति.	,,
जस्त.	
जस्तेकी शुद्धी.	,,
जस्तका मारण.	,,
दूसरी विधि.	७४
जस्त भस्मकी मात्रा.	,,
सामान्य गुण.	,,
जस्तके अनोपान.	,,
सदोष जस्तके अवगुण.	,,
तथा इसकी शांति.	,,
नाग.	
नाग (शीशे) की उत्पति.	,,
नागके दोष.	,,
नागकी परीक्षा.	,,
नाग शोधन.	७५
नाग मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
चतुर्थ नागकी हरित भस्म.	,,
पांचवी पीली भस्म.	,,
छटी लाल भस्म.	,,
सातवी विधि.	७६
आठवी विधि.	,,
नवी विधि.	,,
नाग भस्मके अनोपान.	,,
अशुद्ध नागके दोष.	,,
नाग दोषोंकी शांति.	७७

विषय	पृ०
लोह	
लोहकी उत्पत्ति.	,,
लोहके भेद.	,,
त्रिविध मुंड लोह.	,,
तीक्ष्ण लोहके छःभेद.	,,
चतुर्विध कांत लोह.	,,
कांत लोहका पंचम भेद क्रपंण.	,,
खरसार लोहके लक्षण.	,,
गजवल्ली लोहके भेद.	,,
वज्र लोहके १० भेद.	,,
पांड्य लोहके लक्षण.	७८
कांत लोहके भेद.	,,
मुंड तीक्ष्णादि लोहोंके स्वरूप और कार्य.	,,
किट्ट, मुंड, सार, कालिंग, मद्र. वज्र पांड्य और कांति लोहोंको परस्पर एकसें दूसरेको श्रेष्ठत्व.	,,
कांति. स्फटिक. और बिजलीकेलोह को श्रेष्ठत्व.	,,
मुंड लोहके लक्षण.	,,
कुंडलोहके लक्षण.	,,
कांडार लोहके लक्षण.	,,
तीक्ष्ण लोहके भेद तिन्होंमें प्रथम खर लोहके लक्षण.	,,
सारके लक्षण.	७९
होत्तालके लक्षण.	,,
तारके लक्षण.	,,
कालके लक्षण.	,,
कांत लोहकी परीक्षा.	,,
भ्रामकादि लोहोंके लक्षण.	,,
लोहोंके वर्ण और उन्होंके देवता.	,,
कांत लोहके अभावमें तीक्ष्ण लोहका ग्रहण और मुंडकी निंदा.	,,
अशुद्ध लोहोंके अवगुण.	,,
लोहका शोधन.	,,
दूसरी विधि.	८०
तीसरी विधि.	,,
शुद्ध लोहकी परीक्षा.	,,
लोह जारणमें परिमाण और मंत्र	
विना पारदके लोह भस्म करण निषेध.	,,
फौलादकी भस्म.	८१
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
चौथी विधि.	,,
लोहकी भस्मकी सर्वोत्कृष्ट पांचवीं विधि.	,,

विषय	पृ०
छटी भस्म.	८२
पुटोंके गुण.	,,
तथा.	,,
स्वर्णादि जारणमें अग्निपुट कथन	,,
लोह भस्मके गुण.	८३
तथा अनुपान.	,,
लोह भस्मसेवनमें अपथ्य.	८४
अमृती करण.	,,
लोह भक्षणका मंत्र.	,,
लोहपाक.	,,
पुट देनेकी अवधी.	,,
मर्दन करनेकी अवधी.	,,
लोह भस्मकी परीक्षा.	८५
लोहके द्रावणकी विधि.	,,
अशुद्ध लोहके अवगुण.	,,
अशुद्ध लोह विकारोंकी शांति.	,,
मंडूर.	
कीट संज्ञा	८६
मंडूरवा कीटके लक्षण.	,,
कीटी ग्रहण.	,,
उत्तम मध्यम और अधम कीटी.	,,
मंडूरबनानेकी विधि.	,,
हंस मंडूरकी विधि.	,,
मिश्रक धातु (काँसा पित्तल भर्त्त)	
काँसा.	८७
कांसेके भेद.	,,
उत्तम कांसेके लक्षण.	,,
पीतल.	,,
पीतलके भेद.	,,
परीक्षा.	,,
उत्तम पीतलके लक्षण.	,,
अधमपितलके लक्षण.	,,
कांसे पीतलकी शुद्धि.	,,
मारणकी पहली विधि.	,,
दूसरी विधि.	८८
तीसरी विधि.	,,
कांसे पीतलकी वेधक भस्म.	,,
पितलके भस्मके गुण.	,,
कांस्य भस्मके गुण.	,,
कांसे पीतलके दोष.	,,
भर्त्तके लक्षण और उसकी उत्पती.	,,
पंच लोहका शोधन.	८९
पंच रसका मारण.	,,
वृत्तलोहका शोधन मारण.	,,

विषय.	पृ०
मिश्र पंचक.	,,
अपक्व धातु जारण.	,,
सर्व धातु ओंकी भस्मका रंग.	,,
भस्म खानेका प्रमाण.	९०
धातुसें धातुमारण.	,,
सप्तधातु मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
सप्तधातुओंके अवगुण.	,,
इस ग्रंथानुसार धातु मारणसे वैद्यकी प्रसंशा.	९१
ग्रंथकर्त्ताकी वंशावली.	,,
उत्तर भाग.	
सप्तधातु प्रकरण.	,,
प्रकारांतर.	,,
ग्रंथांतरका प्रमाण.	,
सुवर्णादि धातुके अभावमें ग्राह्य पदार्थ.	,,
प्रमाणांतर.	,,
उपधातुओंका शोधन.	,,
,, मारण.	,,
स्वर्णमाक्षिक.	,,
माक्षिकोत्पत्ति.	,,
तथा.	,,
,,	,,
मारण योग्य स्वर्ण माक्षिकके लक्षण	९३
तथा.	,,
अशोधित माक्षिकके अपगुण.	९४
तथा.	,,
सुवर्ण माक्षिकका शोधन.	,,
प्रकारांतरेण शुद्धि.	,,
तीसरी विधि.	९५
चतुर्थ विधि.	,,
मारण.	,,
तीसरी विधि.	,,
वाराह पुटके लक्षण.	,,
चौथी विधि.	,,
पांचवी विधि.	,,
छटी विधि.	९६
मृतमाक्षिकके गुण.	,,
तथा.	,,
स्वर्णमाक्षिकका सत्व निकालना.	,,
सीसा संयुक्त माक्षिकका पृथक् करना.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि माक्षिक सत्वका स्वरूप.	,,

विषय.	पृ०
माक्षिक भक्षणकी विधि.	९७
,, सत्वका द्रावण.	,,
सुवर्ण माक्षिकका अनुपान.	,,
अपक्व माक्षिकके दोष.	,,
माक्षिक दोषोंकी शांति.	,,
रौप्य माक्षिक.	
रौप्य माक्षिककी उत्पत्ति.	
,, शोधन.	९८
,, मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
रौप्य माक्षिकके गुण.	,,
विमला.	
विमला माक्षिकके भेद.	,,
तथा.	९९
विमलाकी शुद्धि.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
विमला मारणकी तीसरी विधि.	,,
विमलाका सत्वपातन.	१००
विमला शोधनकी दूसरी विधि.	,,
सत्व भक्षणकी विधि.	,,
भस्मके अनुपान और गुण.	,,
तथा अनुपान.	,,
विमला विकारकी शांति.	,,
तुत्थ	१०१
तुत्थ (तीलाथोथे) की उत्पत्ति.	,,
सस्यक शुद्धि.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
चतुर्थ विधि	,,
मारण	१०२
सत्व निकालना.	,,
सत्व निकालनेकी दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
विना आग्निके सत्व निलना.	,,
मोरपंखसें तांमा निकालना.	,,
केंचुएसें ताम्र निकालनेका प्रकारांत्तर.	,,
विष हर मुद्रिका (अंगूठी)	१०३
तुत्थ सत्व मारणकी विधि.	,,
तथा दूसरी विधि.	,,
तुत्थ सत्वके गुण.	१०४
,, विकारोंकी शांति.	
चपल.	
चपलका स्वरूप.	,,
नागसंभव चपलके लक्षण.	,,

विषय.	पृ०
चपल शोधन.	१०५
,, मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
चपलका सत्व निकालना.	,,
,, गुण.	,,
कंकुष्ठ (मुरदासंख.	
नालिका कंकुष्ठके लक्षण.	,,
रेणुका ,,	,,
वाग्भटके मतसें संज्ञा.	,,
कंकुष्ठकी शुद्धि.	१०६
मुरदाशंखके गुण.	,,
कंकुष्ठमें पथ्य.	,,
रसक (खपरिया)	
रसकके भेद.	,,
मतान्तर.	,,
रस पद्धतिके मतसें भेद.	,,
खपरियाका शोधन.	१०७
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चतुर्थ प्रकार.	,,
अग्नि स्थाईका फल.	,,
अग्नि स्थाईकरनेकीविधि.	,,
सत्वकी दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	१०८
रसके मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
अग्नि स्थाइ करनेकी दूसरी विधि	
टोडरानंदसे.	,,
खपरियाके गुण.	१०९
खपरियाके अनुपान.	,,
अशुद्ध खपरियाके दोष.	,,
रसक (खपरिया) के विकारोंकी शांती.	,,
सिंदूर	
सिंदूरकी उत्पत्ति.	,,
सिंदूरके नाम और गुण.	११०
औषधि योग्य सिंदूर.	,,
सिंदूरका शोधन.	,,
दूसरी विधि.	,,
सिंदूरके गुण.	,,
सिंदूरका मारणनिषेध.	,,
रोगपरत्वदेना.	,,
ग्रंथांतरसें कथन.	,,
उपरस.	
उपरस.	,,

विषय.	पृ०
अभ्रककी उत्पत्ति.	,,
उत्पतिके भेद कथन.	१११
अभ्रककी जाति.	,,
चारवर्णपरत्वकार्य.	,,
कृष्णाभ्रकके लक्षण.	,,
पिनाक.	,,
दर्दुरः	,,
नाग.	,,
वज्राभ्रक.	,,
वज्राभ्रकके दूसरे लक्षण.	११२
दिशापरत्व अभ्रक.	,,
भूमिलक्षण.	,,
मारणार्थ अभ्रक लेनेकी विधि.	,,
तथा.	,,
अशुद्ध अभ्रक मारणके दोष.	,,
अभ्रक शोधन.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरी विधि.	,,
धान्याभ्रक करण विधि.	११३
दूसरी विधि.	,,
अभ्रक मारणकी प्रथम विधि.	,,
दूसरी.	,,
तीसरी.	,,
चतुर्थ.	११४
पांचवी.	,,
छटी.	,,
सातवी.	,,
आठवी ६० पुटकी भस्म.	,,
नवी ४१ पुटीभस्म.	,,
दशमी विधि.	११५
ग्यारवी २० पुटीभस्म.	,,
बारवी विधि.	,,
तेरवी सफेद अभ्रककी भस्म.	११६
चौदवी विधि.	११७
पंद्रवी विधि.	,,
सोलवी विधि.	,,
सत्रवी विधि.	,,
अठारवी विधि.	११८
उन्नीसवी सहस्र पुटीभस्म.	११९
कार्यपरत्व पुटसंख्या.	,,
भावना और पुटोंका निर्णय.	,,
अभ्रककी मृत्तभस्मकी परीक्षा.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
अमृती करण.	,,
दूसरी विधि.	,,
ताभ्रकेक गुण.	,,

विषय.	पृ०
दूसरे गुण.	१२०
तीसरे गुण.	,,
अभ्रक भस्मके अनोपान	,,
तथा.	,,
तथा.	,,
तथा.	,,
अभ्रक सत्वकी विधि.	१२१
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
सत्वकेकणोंको एकत्र करना.	१२२
अभ्रकसत्वकी भाषा विधि.	,,
अभ्रक सत्वका शोधन.	,,
अभ्रक सत्वका मारण.	,,
दूसरी विधि.	१२३
सत्वकामृदु (नरम) करना.	,,
सत्वमारणकी तीसरी विधि.	,,
अभ्रक द्रुतिका प्रथम प्रकार.	१२४
तथा दूसरा प्रकार.	,,
तीसराप्रकार.	,,
चतुर्थ प्रकार.	,,
पांचवा प्रकार.	,,
छटा प्रकार.	,,
सातवां प्रकार.	,,
आठवा प्रकार.	,,
अनेकद्रुतियोंको मिलाप करना.	,,
द्रुतियोंको दुर्घटत्व कथन.	,,
अभ्रककी वेधी क्रिया.	,,
दूसरी विधि.	१२६
अभ्रकमें पुट देनेके गुण.	,,
अभ्रककल्प.	,,
अभ्रक सेवनमें अपथ्य.	१२७
अपक्व अभ्रक भक्षणके दोष.	,,
उसदोषकी शांति.	,,
हरिताल	
हरितालके भेद.	,,
मतांतर.	,,
पिंडताल.	,,
पत्रताल.	,,
गोदंती.	,,
बगदाली.	१२८
मारण योग्य हरितालके लक्षण.	,,
हरितालके गुण.	,,
नामभेद कथन.	,,
अशुद्ध हरितालके दोष.	,,
हरिताल शोधन.	,,
दूसरी विधि.	,,

विषय.	पृ०
तीसरी विधि.	१२८
चतुर्थविधि.	१२९
पंचम विधि.	,,
शुद्धहरतालके दोष.	,,
हरिताल मारण.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	१३०
चतुर्थ विधि.	,,
पांचवी विधि.	,,
छटी विधि.	१३१
सातवी विधि.	,,
आठवी विधि.	,,
नवम विधि.	१३२
दशवीं विधि.	१३३
ग्यारवी विधि.	,,
बारवी विधि.	,,
तेरवी विधि.	१३४
चौधवी विधि.	१३५
पंद्रवी विधि.	,,
सोल्हवी विधि.	,,
सत्रवी विधि.	१३६
अठारवी विधि.	१३७
उन्नीसवी विधि.	,,
बीसवी विधि.	,,
भस्मकी परिक्षा.	,,
भस्मके गुण.	१३८
हरितालके गुण.	,,
हरिताल सत्वकी विधि.	,,
दूसरी.	,,
तीसरी.	१३९
चतुर्थ.	,,
पांचवी.	,,
सत्वके गुण और अनुपान.	,,
हरितालकी योजना.	,,
अशुद्ध हरितालके दोष.	१४०
अशुद्ध दोषोंकी शांति.	,,
तथा.	,,
हरिताल भक्षणमें पथ्या पथ्य.	,,
अंजन (सुरमा)	
अंजनके नाम.	,,
अंजनके भेद.	,,
मतान्तर	,,
सौवीरांजन	,,
रसांजन	,,
स्रोतांजन	१४१
पुष्पांजन.	,,

विषय.	पृ०
नीलांजन.	१४१
अंजनशुद्धि	,,
अंजनसेंसत्वनिकालनेकीविधि.	
हीराकसीस	
हीराकसीसके भेद.	,,
मतांतर.	,,
दूसराप्रकार	,,
तीसराप्रकार	,,
रसांजनकी उत्पत्ति	,,
कुलत्थांजनकेगुण	,,
नीलांजनकीशुद्धि.	१४२
हीराकसीसका शोधन.	,,
दूसरीविधि	,,
तीसरीविधि	,,
हीराकसीसकासेवन.	१४३
हीराकसीसकेगुण.	,,
हीराकसीसकासत्वपातन.	,,
गैरिक (गेरू)	
गैरिकशोधन.	,,
गेरूकेगुण.	,,
पारेमेंमिलापकरना.	,,
हिंगुल	
उपरस	१४४
उपरसोंकाशोधन.	,,
हिंगुलबनानेकीक्रिया.	,,
हिंगुलकेभेद.	,,
त्रिविधहिंगुलकेन्यारेन्यारे भेद.	,,
हिंगुलशोधन.	१४५
दूसरीविधि.	,,
हिंगुलमारण.	,,
दूसरीविधि.	,,
मतांतरसेंशोधन.	,,
हिंगुलपाक.	१४६
हिंगुलमारणकी चतुर्थविधि.	,,
हिंगुलके अनुपान और गुण	,,
दरद (हिंगुल) के गुण.	१४७
तथा.	,,
अशुद्धहिंगुलके दोष.	,,
अशुद्ध हिंगुलके दोषोंकी शांति.	,,
टंकण (सुहागा)	
सुहागेकेभेद.	,,
सुहागेकी शुद्धि.	,,
तथा.	,,
सुहागेकेगुण.	,,
अशुद्धसुहागेके दोष.	१४८

विषय.	पृ०
तुरटी (फिटकरी)	
फिटकरीके भेद.	,,
फिटकरीकाशोधन.	,,
सत्वपातन.	,,
दूसरीविधि.	,,
फिटकरीकेगुण	१४९
मनसिल	
मनसिलकीनिरुक्ति.	,,
मनसिलकेभेद.	,,
मनसिलकीशुद्धि.	,,
दूसरीविधि.	,,
तीसरीविधि.	१५०
चतुर्थविधि.	,,
मनसिलमारणकीभाषाविधि.	,,
सत्वपातन.	,,
मनसिलकेगुण.	,,
तथा.	,,
सत्वकीदूसरीविधि.	,,
अशुद्धमनसिलकेदोष	,,
मनसिलदोषकीशांति.	,,
शंख	
शंखकेभेद.	,,
शंखशोधन.	१५१
शंखकेगुण.	,,
खडिया	
खडियाकेभेद.	,,
खडियाकेगुण.	,,
कौडी	
कौडियोंकेभेद.	,,
दूसराप्रकार.	१५२
शोधन.	,,
मारण.	,,
गुण.	,,
सीप	
मोतीकीसीप	,,
जलसीप.	,,
दोनोंसीपोंकाशोधन.	,,
गुण.	,,
छोटेशंख (घोंघा)	,,
सिकता (बालू)	१५३
बालूसेंलोहरजकाग्रहण.	,,
शिलाजीत	
शिलाजीतकीउत्पत्ति.	,,
शिलाजीतकेभेद.	,,
कांचनशिलाजीत.	,,
रौप्यशिलाजीत	,,

विषय.	पृ०
ताम्रशिलाजीत.	१५४
वंगशिलाजीत.	,,
सीसकाशिलाजीत.	,,
लोहशिलाजीत.	,,
मतांतर.	,,
शिलाजीतकी परीक्षा.	१५५
प्रथमखंडकी समाप्ति	
शिलाजीतकीदूसरीपरीक्षा.	,,
तीसरीपरीक्षा.	,,
द्विविध शिलाजीत.	,,
वर्णभेदसें गुणभेद.	,,
शिलाजीत शोधन.	१५६
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चौथा प्रकार.	१५७
पांचवां प्रकार.	,,
शुद्धकी भावना.	,,
शुद्धकी परीक्षा.	,,
शिलाजीतके गुण.	१५८
विशेष गुण.	,,
पथ्यापथ्य	,,
शिलाजीतकी भस्म.	,,
तथासत्व.	१५९
दूसरा शिलाजीत.	,,
इसके गुण.	,,
अशुद्ध शिलाजीत सेवनके दोष.	,,
शिलाजीतके विकारोंकी शांति.	,,
साधारणरसाः	
साधारणरसोंकेनाम.	,,
तथा शोधन.	,,
कंपिल्ल.	,,
कंपिल्लके गुण.	१६०
गौरीपाषाण (संखिया)	,,
जोहरवनाना.	,,
नोसदर.	
नोसदरकी उत्पत्ति.	१६१
अग्निजार	
अग्निजारके गुण.	,,
समुद्रफेन	
समुद्रफेनकी शुद्धि	१६२
बोल	
लालबोलके लक्षण.	,,
काले बोलके गुण.	,,
गूगल	,,
गूगलका शोधन और गुण.	,,
दूसरीविधि.	१६३

विषय.	पृ०
रसकपूर	
रसकपूरकी विधि	,,
रसकपूरकी तीसरी विधि.	,,
रसकपूरके अनुपान.	१६४
रत्न	
रत्नोपरत्नोंकी उत्पत्ति.	,,
नाम.	,,
रत्नभेद.	,,
दूसरा प्रकार नवग्रहोंके रत्न.	१६५
तीसरा प्रकार.	,,
चतुर्थ प्रकार.	,,
मणिरत्न.	,,
सर्व रत्न शोधनकी आवश्यकता.	,,
रत्न शोधन.	,,
हीरादिरत्नोंके मारणमें दोष.	१६६
हीराविना और रत्नोंका मारण.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
रत्नोपरत्नके गुण.	,,
हीरा	
हीराकी उत्पत्ति.	,,
दूसरा क्रम.	१६७
अज्ञानसें रत्नकामोलकहनेमेंदोष	,,
दूसरा प्रकार.	,,
रत्नपरीक्षा.	,,
हीराकी चारजाति.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तथा धारणका पृथक् २ फल.	१६८
जातिभेदसें गुण.	,,
पुरुष संज्ञकहीराके लक्षण.	,,
स्त्री और नपुंसक संज्ञकहीराकेलक्ष	,,
मतांतर.	१६९
वर्णोंके गुणदोष.	,,
मतांतर.	,,
बिंदुके भेद.	,,
रेखाओंकेभेद.	१७०
शुभहीराके लक्षण.	,,
छायाके भेद.	,,
तोल और मोल.	,,
मौल्य.	१७१
हीराकी परीक्षाका प्रकारांतर.	,,
स्त्री पुरुषादिहीरासेवनके गुण.	१७२
अशुद्धहीराके दोष.	,,
हीराशोधन.	,,
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,

विषय.	पृ०
चतुर्थ विधि.	,,
हीरामारण.	१७३
दूसरी विधि.	,,
तीसरी विधि.	,,
चौथी.	,,
पांचवी.	,,
छटी.	,,
सातवीं.	१७४
आठवीं.	,,
नवीं.	,,
ब्राह्मण जातीयहीरेका मारण.	,,
क्षत्री जातीय हीरेका मारण.	,,
वैश्यजातीय हीरेका मारण.	,,
शूद्रजातीय हीरेका मारण.	१७५
सबप्रकारके हीराओंका मारण.	,,
हीरादिसर्वरत्नोंका मारण.	,,
हीरकी भस्मका गुटका.	,,
हीराकी भस्म सेवनकी विधि.	,,
षड्गुण्यरस.	,,
हीराभस्मके गुण.	१७६
प्रकारांतर.	,,
तीसरे गुण.	,,
हीराभस्मके अनोपान.	,,
हीराकामृदु करण.	,,
हीराकी द्रुति.	,,
अशुद्ध हीराके दोष.	,,
हीराके विकारोंकी शांति.	१७७
मूगा	
मूंगाकी उत्पत्ति.	,,
मूंगाके लक्षण.	,,
अशुद्ध मूंगाके लक्षण.	,,
मूंगाके गुण.	,,
मूगाका मारण.	,,
मोती	
मोतीकी उत्पत्ति.	,,
गजमौक्तिक.	,,
वाराहमौक्तिक.	,,
वेणुमौक्तिक.	१७८
मत्स्यजमौक्तिक.	,,
दर्दुरमौक्तिक.	,,
शंखमौक्तिक.	,,
सर्पजमौक्तिक.	,,
सीपमौक्तिक.	१७९
लक्षण.	,,
मोतीकी परीक्षा.	,,
शुभ मौक्तिक.	,,

विषय.	पृष्ठ.
मोतीका शोधन.	,,
मणिमुक्ता प्रवाल शोधन.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
मुक्ता प्रवाल मारण.	,,
दूसरी विधि.	१८०
मोतीकी भस्मके गुण.	,,
तथा.	,,
मोतीकी द्रुति.	,,
पन्ना	
पन्नाकी परीक्षा.	,,
दूसरी परीक्षा.	,,
अशुभपन्नाके लक्षण.	,,
पन्नाका शोधन प्रकार.	,,
गुण.	,,
दूसरे गुण.	१८१
वैदूर्य.	
वैदूर्य मणिके लक्षण.	,,
तथा दोष.	,,
तथा अन्य लक्षण.	,,
तथा गुण.	,,
गोमेद	
अशुद्ध गोमेदके लक्षण.	,,
तथा गुण.	,,
माणिक्य (मानिक)	
मानिकके लक्षण.	१८२
प्रकारांतर.	,,
अशुभ.	,,
गुण.	,,
हरिनील	
हरिनील लक्षण.	,,
उत्तमनील.	,,
नीलके वर्णभेद.	,,
परीक्षा.	,,
उत्तमनील.	१८३
अधम.	,,
नीलके गुण.	,,
पुखराज	
पुखराज लक्षण	,,
अधम.	,,
मतांतर.	,,
पुखराजके गुण.	१८४
बाजूबंद आदिमें रखने.	,,
कक्रम.	,,
नवग्रहदान.	,,
पंचरत्न.	,,
सर्वरत्न शोधन मारण.	,,

विषय.	पृष्ठ.
उपरत्न	
उपरत्नोंका वर्णन.	,,
गुण.	,,
वैक्रांत	
वैक्रांतकी उत्पत्ति.	,,
मतांतर.	१८५
वैक्रांत ग्रहण विधि.	१८६
तथा शोधन मारण.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चतुर्थ प्रकार.	१८७
पांचवा प्रकार.	,,
वैक्रांतके अनुपान.	,,
तथा भस्मके गुण.	,,
तथा सत्वपातन.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	१८८
सर्वरत्नोंका शोधन मारण.	,,
रसोपरस.	,,
सूर्यकांत.	१८९
सूर्यकांतके गुण.	,,
चंद्रकांत.	,,
चंद्रकांतके गुण.	,,
राजावर्त्त.	,,
राजावर्त्तके गुण.	,,
राजावर्त्तका शोधन.	,,
दूसरा प्रकार.	१९०
राजावर्त्तका मारण.	,,
राजावर्त्तका सत्व पातन.	,,
पिरोजा.	,,
स्फटिक.	
स्फटिकके लक्षण	,,
सबरत्नोंके लक्षण.	,,
सत्वपातनार्थ सामान्य शोधन	१९१
सत्व पातन.	,,
सत्व पडनेकी परिक्षा.	,,
सत्व नम्रकरनेकी विधि.	,,
प्रकारांतर.	,,
नम्रसत्व खाने और पारेमें मिलानेका प्रमाण.	,,
सत्व पातनमें धमीके लक्षण.	,,
शुद्ध सत्वकी परिक्षा.	१९२
घरिया यंत्र बनानेका क्रम.	,,
सत्व और द्रुतिके गुण.	,,
मूष बनानेका क्रम.	,,

विषय	पृष्ठ.
विष	
विषकी उत्पत्ति.	,,
विषके भेद.	१९३
उक्तविषोंको भेद.	,,
मतांतर.	,,
लक्षण.	,,
मतांतर.	,,
वर्ज्यविष.	१९४
लक्षणांतर.	,,
मतांतर.	१९५
परीक्षा.	,,
विषवर्ण.	,,
कार्यपरत्वग्राह्यविष.	,,
मतांतर.	,,
प्रकारांतर.	१९६
ग्राह्ययोग्यविष.	,,
शोधनका प्रथम प्रकार.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चौथा प्रकार.	,,
पांचवा प्रकार.	,,
विषमारण.	१९७
दूसरा प्रकार.	,,
विषके गुण.	,,
गुणांतर.	,,
विषसेवनप्रकार.	,,
विषकी मात्राका प्रमाण.	१९८
प्रमाणांतर.	,,
विषके अनुपान.	,,
विषभक्षणके अधिकारी.	२०२
विषसेवनमें पथ्य.	२०३
मात्रा अधिक भक्षणकी परीक्षा.	,,
विष उतारनेकी विधि.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चौथा प्रकार.	,,
अधिक विषका उपचार.	२०४
विषसेवनमें कुपथ्य.	,,
घृतरहित विषसेवनके उपद्रव.	,,
उपविष.	
उपविषोंके नाम.	,,
मतांतर.	,,
उपविषशोधन.	,,
आक.	,,
कलियारी.	,,

विषय	पृष्ठ
गुंजा.	,,
कनेर.	२०५
कुचला.	,,
जैपाल (जमालगोटा)	,,
जमालगोटेका शोधन.	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तीसरा प्रकार.	,,
चौथा प्रकार.	,,
जमालगोटेके गुण.	,,
धतूरा.	२०६
धतूरेके गुण.	,,
अफीम.	,,
अफीमके गुण.	,,
भांग और भांगके गुण.	,,
थूहर.	,,
संखिया (सोमल)	,,
विषविकारोंकी शांति.	२०७
वच्छनाग (सिंगियाविषकी शांति.	,,
भिलाएके विषकी शांति.	,,
भांगके विषकी शांति.	,,
गुंजा (घूंघची)के विषकी शांति.	,,
कनेरके विषकी शांति.	२०८
थूहरके विषकी शांति.	,,
जैपालके विकारोंकी शांति.	,,
लोहाष्टक.	
षट्लवण.	,,
क्षारत्रय.	,,
मधुरत्रय.	,,
वसावर्ग.	,,
मूत्रवर्ग.	,,
महिषपंचक.	,,
अम्लवर्ग.	,,
अम्लपंचक.	२०९
पंचमृत्तिका.	,,
विषवर्ग.	,,
उपविषवर्ग.	,,
दुग्धवर्ग.	,,
विट् (विष्ठा) वर्ग.	,,
रक्तवर्ग.	,,
पीतवर्ग.	,,
श्वेतवर्ग.	२१०
कृष्णवर्ग.	,,
द्रावणवर्ग.	,,
रसोंकी तोल.	,,

विषय	पृष्ठ
पुटोंकी संख्या और रीति.	२११
महापुट.	,,
गजपुट.	,,
वराहपुट.	,,
कुक्कुटपुट.	,,
कपोतपुट.	,,
गोवरपुट.	,,
कुंभपुट.	२१२
भांडपुट.	,,
वालुकापुट.	,,
भूधरपुट.	,,
लावकपुट.	,,
यंत्राध्याय.	
यंत्रशब्दकी निरुक्ति.	,,
कवचीयंत्र.	,,
दोलायंत्र.	२१३
गर्भयंत्र.	,,
प्रकारांतर.	,,
हंसपाकयंत्र.	२१४
विद्याधरयंत्र.	,,
डमरुयंत्र.	,,
ऊर्ध्वनलिकायंत्र.	,,
वालुकायंत्र.	२१५
भूधरयंत्र.	,,
पातालयंत्र.	,,
तेजोयंत्र.	,,
कच्छपयंत्र.	२१६
तुलायंत्र.	,,
जलयंत्र.	,,
गौरीयंत्र.	२१७
कोष्ठयंत्र.	,,
वज्रमूषा.	२१८
चक्रयंत्र.	,,
इष्टकायंत्र.	,,
कोष्ठिकायंत्र.	,,
वकयंत्र.	२१९
नाडिकायंत्र.	,,
वारुणीयंत्र	,,
दूसरा प्रकार.	,,
तिर्यक्पातनयंत्र.	२२०
लवणयंत्र.	,,
उत्तरखंड प्रारंभः	
महामृत्युंजय रस.	,,
अनुपान.	२२१
नवज्वरमें लघुमृत्युंजयरस.	२२२

विषय	पृ०
अपरामृत्युंजयरस.	,,
चतुर्थमृत्युंजय.	,,
त्रैलोक्यडंबररस.	,,
ज्वरराजहरीरस.	२२३
तरुणज्वरेधूम्रकेतुरस.	,,
इभसिंहरस.	,,
नवज्वरेउदकमंजरीरस.	,,
दीपिकारस.	२२४
भैरवरस.	,,
कफज्वरेरसपर्पट.	,,
द्वितीयउदकमंजरीरस.	२२५
त्रिनोदविद्याधररस.	,,
महाज्वरांकुश.	,,
ज्वरघ्नीगुटिका.	२२६
लीलावतीवटी.	,,
नवज्वरहरीरस.	,,
नवज्वरहरवटी.	,,
विद्याधररस.	,,
विश्वतापहरणरस.	२२७
अन्यमतसें शीतभंजीररस.	,,
पाठांतर.	,,
नवज्वरांकुश.	,,
गदमुरारीरस.	२२८
ज्वरमुरारीरस.	,,
त्रिपुरभैरवरस.	,,
प्रचंडरस.	,,
नवज्वरारिपुरस.	,,
पर्णखंडेश्वररस.	२२९
स्वच्छंदभैरवरस.	,,
द्वितीयस्वच्छंदभैरवरस.	,,
रत्नगिरीरस.	,,
सर्वज्वरेभेदकमंजरीरस.	२३०
द्विभुजरस.	,,
प्राणेश्वररस.	,,
ज्वरांकुशरस.	,,
हुताशनरस.	२३१
रामवेधरस.	,,
सर्वेश्वररस.	,,
कल्पतरुरस.	,,
हिंगुलेश्वररस.	२३२
रविसुंदररस.	,,
शीतभंजीररस.	,,
दूसरा शीतभंजीर.	२३३
अमृतसंजीवनरस.	,,
पित्तज्वरपर क्षीरसागररस.	२३४
कफकुठाररस.	,,
ताम्रभस्मयोग.	,,
सर्वज्वरपरनस्य.	,,
पर्पटीरस.	,,
वातपित्तज्वरपर ज्वालामुख-रस.	२३५
चंद्रशेखररस.	,,
सूर्यशेखररस.	,,
वटिका.	२३६
नवचन्द्ररस.	,,
ज्वरांतकरस.	,,
संनिपातानलरस.	,,
भस्मेश्वररस.	२३७
स्वच्छंदभैरव.	,,
संधिकारीरस.	२३८
मृतसंजीवनरस.	,,
भैरवीगुटी.	,,
त्रिगुणाख्यरस.	२३९
संनिपातगजांकुशरस.	,,
प्राणेश्वररस.	,,
सर्वांगसुंदररस.	२४०
रक्तमारेश्वररस.	,,
सूचिकाभरणरस.	२४१
वृहत्सौभाग्यवटी.	,,
लघुसौभाग्यवटी.	,,
संनिपातांतकरस.	२४२
आनंदभैरवीगुटिका.	,,
ब्रह्मवटी.	,,
जलस्राईरस.	२४३
सन्निपातांतक.	,,
सन्निपातकृतांतकरस.	,,
विश्वमूर्तीरस.	२४४
सिद्धवटी.	,,
संनिपातविध्वंसशकरस.	,,
महाविजयपर्पटी.	२४५
वारिसागररस.	,,
मार्तंडरस.	२४६
पंचवक्ररस.	,,
द्वितीयसूचिकाभरणरस.	,,
सोमपाणीरस.	२४७
मृतोत्थापनरस.	,,
मृतसंजीवनरस.	,,
कालाग्निरुद्रोरस.	२४८
चक्रिका. (टिकिया)	२४९
द्वितीयचक्रिका.	,,
वीरभद्ररस.	,,
ब्रह्मरन्ध्ररस.	,,
अग्निकुमाररस.	२५०
अर्केश्वररस.	,,
कुलवटी.	,,
उन्मत्तरस.	,,
स्वच्छंदनामकरस.	,,
जयमंगलरस.	२५१
सन्निपातभैरवरस.	,,
सूचिकाभरणरस.	,,
तथा.	२५२
वृहत्सूचिकाभरणरस.	,,
विजयभैरवतैल.	,,
त्रिनेत्ररस.	,,
लोकनाथरस.	२५३
त्रिदोषहारीरस.	,,
वेतालरस.	२५४
संनिपातसूर्यरस.	,,
त्रिदोषनीहाररस.	,,
चिंतामणिरस.	,,
अग्निकुमाररस.	२५५
सन्निपाततूलानलरस.	,,
भैरवरस.	,,
अर्द्धनारीनटेश्वररस.	२५६
पानीयवटिका.	,,
दग्धफलापानीयवटिका.	२५७
सूचिकाभरण.	२५९
चिंतामणिरस.	,,
अर्द्धनारीनटेश्वररस.	२६०
लहरीतरंगरस.	,,
मृतसंजीवनीरस.	,,
राजचंद्रेश्वररस.	२६१
अभिन्यासहररस.	,,
रहस्यकथन.	,,
नस्यभैरवरस.	,,
अंजनभैरवरस.	२६२
मोहांधसूर्यरस.	,,
रसचूडामणिरस.	,,
द्वितीयचिंतामणिरस.	,,
मृतोत्थापनरस.	२६३
कनकसुंदररस.	,,
वाडवाख्यरस.	,,
सूचिकाभरणरस.	२६४
तथा.	,,
तथा.	,,

विषय	पृ०
मंथानभैरवरस.	२६५
पंचवक्ररस.	,,
रसराजेन्द्ररस.	,,
स्वेदशैलारिरस.	२६६
द्वितीयपंचवक्ररस.	,,
संनिपातसूर्यरस.	,,
चिंतामणिरस.	,,
घोरनृसिंहरस.	२६७
प्रतापतपनरस.	,,
संनिपातभैरवरस.	२६८
द्वितीयसंनिपातभैरवरस.	,,
संजीवनरस.	,,
अंजनीवटी.	२६९
वाडवरस.	,,
मृत्युंजयरस.	,,
श्रीसंनिपातमृत्युंजयरस.	२७०
प्रभाकररस.	,,
कालाग्निभैरवरस.	२७१
त्रैलोक्यचिंतामणिरस.	,,
रसेश्वररस.	२७२
वाडवानलरस.	,,
अर्कमूर्तिरस.	२७३
त्रिदोषदावानलकालमेघ.	,,
श्रीप्रतापलंकेश्वररस.	२७४
कफकेतुरस.	२७५
द्वितीयकफकेतु.	,,
श्लेष्मकालानलरस.	,,
स्वल्पकस्तूरीभैरवरस.	२७६
मध्यकस्तूरीभैरवरस.	,,
बृहत्कस्तूरीभैरवरस.	,,
कालानलरस.	२७७
मृतसंजीवनीसुरा.	,,
मृगमदासव.	२७८
इति सन्निपात.	
ज्वरमातंगकेशरीरस.	,,
सुंबलादि ज्वरांकुश.	२७९
तालकादि ज्वरांकुश.	,,
द्वितीयतालकादि.	,,
तुल्यकादि.	२८०
लंकेश्वरोरस.	,,
मेघनादवाआरादिज्वरांकुश.	,,
मनःशिलादिज्वरांकुश.	,,
तालकेश्वरादिज्वरांकुश.	२८१
रससिंदूरादिवटी.	,,
महाज्वरांकुश.	,,

विषय	पृ०
पाठांतर.	,,
शांकरीज्वरांकुश.	२८२
महाज्वरांकुश.	,,
तथा.	,,
तथा.	२८३
विषमज्वरांकुशलोह.	,,
विद्यावल्लभरस.	,,
रामज्वरापहारीरस.	,,
मेघनादरस.	२८४
संजीवनाभ्र.	,,
शीतकेशरीरस.	,,
शीतभंजीररस.	,,
शीतभंजीरस.	२८५
पंचाननज्वरांकुश.	,,
तरुणज्वरारिरस.	,,
मृत्युंजयरस.	२८६
श्रीरामरस.	,,
वैद्यनाथवटी.	२८७
प्रतापमार्त्तंडरस.	,,
चंडेश्वररस.	,,
अग्निकुमाररस.	२८८
ज्वरसिंहरस.	,,
अचिंत्यशक्तिरस.	,,
रसमंगलोक्तज्वरमुरारी.	२८९
तथा.	,,
ज्वरकेशरी.	,,
ज्वरभैरव.	२९०
अर्द्धनारीश्वर.	,,
श्रीरसराज.	,,
मुद्रोद्घाटकोरस.	२९१
शीताररस.	,,
व्याहिकारिरस.	,,
चातुर्थकारिरस.	,,
रात्रिज्वरोविश्वेश्वरोरस.	२९२
विक्रमकेशरीरस.	,,
ज्वरकालकेतुरस.	,,
त्रिपुरारिरस.	,,
मेघनादरस.	२९३
जयमंगलरस.	,,
ज्वरकुंजरपारींद्ररस.	२९४
विद्यावल्लभरस.	,,
शीतारिरस.	,,
ज्वरशूलहरोरस.	२९५
षडाननरस.	,,
कल्पतरुरस.	२९६

विषय	पृ०
तालंकोरस.	,,
ज्वरारिअभ्रम्.	,,
जीवनानंदाभ्रम्.	२९७
चंदनादिलोह.	,,
श्लेष्मशैलेन्द्रोरस.	,,
लक्ष्मीविलासोरस.	२९८
विषमज्वरांतकलोह.	२९९
तथा.	,,
सर्वज्वरहरलोह.	३००
बृहत्सर्वज्वरहरलोह.	,,
तथा.	३०१
मकरध्वजोरस.	३०२
पंचाननज्वरांकुश.	,,
शीतभंजीररस.	,,
रविसुंदररस.	,,
सर्वज्वरांकुशवटी.	३०३
बृहज्ज्वरांकुशवटी.	,,
सर्वज्वरेज्वरांकुश.	,,
तथा.	३०४
तथा.	,,
चतुर्थकनिवारणरस.	,,
चतुर्थकगजांकुश.	,,
चंद्रोदयरस.	,,
जीर्णज्वरारिरस.	३०५
प्रतापलंकेश्वरोरस.	,,
जीर्णज्वरघ्नीवटी.	३०६
ज्वरांकुश.	,,
लघुमालनीवसंत.	,,
स्वर्णमालिनीवसंतरस.	,,
बृहन्मालनीवसंतरस.	३०७
रसपर्पटी.	,,
जीर्णज्वरहररस.	३०८
कज्जली.	,,
कज्जलीकाप्रकारांतर.	,,
ज्वरातिसार.	
सिद्धप्राणेश्वररस.	३०९
गगनसुंदररस.	,,
कनकप्रभावटी.	,,
अतिसार.	
आनंदभैरवरस.	३१०
अतिसारनाशकयोग.	,,
दर्दुराद्यसूत.	,,
वातातिसारे-वातारिरस.	,,
अमृतार्णवरस.	,,
आनंदभैरवरस.	३११

विषय	पृ०
महारस.	”
द्वितीयमहारस.	”
जातीफलरस.	”
सुधासाररस.	३१२
अभयनृसिंहोरस.	३१३
लोकेश्वरोरस.	”
कर्पूररस.	३१४
नागसुंदररस.	”
सूतादिवटी.	”
चतुःसमावटी.	”
लोकनाथरस.	३१५
शंखोदररस.	”
तृप्तिसागररस.	”
आनंदरस.	३१६
गंगाधररस.	”
अतिसारेभसिंहरस.	”
चंद्रप्रभावटी.	”
पंचामृत पर्पटीरस.	३१७
महतीलाविका चूर्ण.	”
नृसिंहपोटलीरस.	”
अतिसारदलनोरस.	”
कनकसुंदररस.	”
करुणासागररस.	३१८

संग्रहणी.

विषय	पृ०
लघुलाई चूर्ण.	”
मध्यलाई चूर्ण.	”
बृहल्लाई चूर्ण.	३१९
मध्यलाविका चूर्ण.	”
महतीलाविका चूर्ण.	३२०
वज्रकपाटरस.	”
ग्रहणीकपाटरस.	”
द्वितीय.	३२१
तृतीय.	”
चतुर्थ.	३२२
पंचम.	”
षष्ठ.	”
सप्तम.	”
अष्टम.	३२३
नवम.	”
दशम.	”
रसपर्पटी.	”
लोहपर्पटी.	३२७
स्वर्णपर्पटी.	३२८
पाठांतर.	”
पंचामृतपर्पटी.	३२९
विजयपर्पटी.	”
तंत्रांतरोक्तविजयपर्पटी.	३३१
अग्निकुमार.	”
ग्रहणी शार्दूलवटिका.	”
ग्रहणी गजेन्द्रवटिका.	”
षडसंग्रह गदैककपाट.	३३२
जातीफलाद्यावटी.	”
ग्रहण्यारिरस.	३३३
हिरण्यगर्भपोटलीरस.	”
अर्कलोकेश्वररस.	”
अग्निसूनुरसेन्द्र.	३३४
शीघ्रप्रभावोरस.	”
द्वितीयजातीफलाद्यावटी.	३३५
पीयूषवल्लीरस.	”
नृपतिवल्लभरस.	३३६
बृहन्नृपतिवल्लभरस.	३३७
चित्रांबररस.	”
अभ्रवटिका.	३३८
महाभ्रवटिका.	
महागंधक.	३३९
वैद्यनाथवटिका.	”
खसमर्पणवटी.	३४०
ग्रहणीकामदवारणसिंह.	
अगस्तिसूतराज.	३४१
क्षारताम्र.	”
पूर्णचंद्ररस.	”
सूतराज.	३४२
सूतादिवटी.	”
पारदादिवटी.	”
वराटादियोग.	”
ज्वालालिंगरस.	३४३
हंसपोटली.	”
राजावर्त्तरस.	”
चंद्रप्रभावटी.	”
हिंगुलेश्वररस.	”
लघुसिद्धाभ्रक.	३४४
सर्वारोग्यवटी	”

अर्श (ववासीर):

विषय	पृ०
अर्शकुठारस.	३४५
तथा.	”
तथा.	३४६
तीक्ष्णमुखरस.	”
शिवरस.	”
लोहामृतरस.	”
अग्निमुखलोह.	३४७
मानसूरणाद्यलोह.	”
चंद्रप्रभावटी.	”
अभ्रकहरीतकी.	३४८
वैक्रांताख्यरस.	”
नित्योदितरस.	”
षडाननरस.	३४९
पीयूषसिंधुरस.	”
चक्रबंधरस.	”
सर्वलोकश्रमहारीरस.	३५०
त्रैलोक्यतिलकोरस.	”

अजीर्ण.

विषय	पृ०
अग्निसंदीपनोरस.	३५२
अजीर्णबलकालानलोरस	”
श्रीरामबाणरस.	३५३
क्षुद्बोधरस.	”
द्वितीयक्षुद्बोधरस.	”
अग्निकुमाररस.	”
पाठांतर.	३५४
पाठांतर.	”
पाठांतर.	”
तथा.	”
वडवानलरस.	३५५
स्वयमग्निरस.	”
क्षुधासागररस.	”
हुताशनरस.	”
भास्करोरस.	”
अग्नितुंडीवटी.	३५६
अमृतवटी.	”
द्वितीयामृतवटी.	”
टंकणादिवटी.	”
लवंगादिवटी.	”
महोदधिवटी.	”
अजीर्णहरमहोदधिवटी.	३५७
क्षुधासागरवटी.	”
अग्निदीपनीवटी.	”
भस्मवटी.	”
लघुपानीयभक्तवटी.	३५८
पंचामृतवटी.	”
भुक्तपाकवटिका.	”
भुक्तोत्तरीयावटिका.	”
गंधकवटी.	३५९
दूसरी गंधकवटी.	”
तीसरी गंधकवटी.	”
राजशेखरवटी.	३६०
रविसुंदरवटी.	”

विषय	पृ०
भैरववटी.	,,
वैश्वानरपोटली.	३६१
शंखवटी.	,,
द्वितीयाशंखवटी.	३६२
तृतीय.	,,
चतुर्थ.	,,
पंचम.	३६३
छटी.	,,
सातवी.	,,
आठवी बृहच्छंखवटी.	३६४
लघुक्रव्यादरस.	,,
क्रव्यादरस.	३६५
तथा.	,,
बृहत्क्रव्यादरस.	३६६
राजवल्लभरस.	३६७
वन्हिनामकरस.	,,
अग्निमुखरस.	,,
अजीर्णारिरस.	,,
बृहन्महोदधिरस.	३६८
पाशुपतरस.	,,
अजीर्णकंटकरस.	३६९
आदित्यरस.	,,
चिंतामणिरस.	,,
वीरभद्राभ्रक.	,,
विश्वोद्दीपिकाभ्र.	३७०

उत्त. उत्तरभाग.

कृमिरोग.

विषय	पृ०
कृमिकीटरस.	३७१
कृमिमुद्गररस.	,,
कीटारिरस.	,,
कृमिघातिनीगुटिका.	,,
कृमिकालानलोरस.	३७२
कृमिविनाशनोरस.	,,
कृमिकुठारोरस.	,,
कृमिदावानलोरस.	,,
कृमिरोगारिरस.	३७३
कृमिघ्नोरस.	,,
कृमिधूलिजलप्लवोरस.	,,
लाख्यादिवटी.	,,
विडंगलोह.	,,

पांडुरोग.

विषय	पृ०
पांडुसूदनोरस.	३७४
पंचाननरस.	,,
चंद्रसूर्यात्मकोरस.	,,
प्राणवल्लभोरस.	,,
पंचामृतलोह.	३७५
निशालोह.	,,
धात्रीलोह.	,,
पांड्वारिरस.	३७६
कामेश्वरोरस.	,,
पांडुनिग्रहोरस.	,,
नवायसचूर्ण.	,,
योगराजचूर्ण.	३७७
बिभीतक्यादि लवण.	,,
वृद्धनवायस चूर्ण.	३७८
त्रिकत्रयादिलोह.	,,
विडंगादि लोह.	,,
दार्व्यादिलोह.	३७९
मंडूरवज्रवटक.	,,
शंभोहलोहम्.	,,
त्र्यूषणादिमंडूर.	,,
बिभीतकादिवटी.	३८०
पुनर्नवादिमंडूर.	,,
हंसमंडूर.	,,
मधुमंडूर.	,,
खदिरलोह.	३८१
लोहसुंदरोरस.	,,
कांस्यपिष्टीरस.	,,
सिंदूरभूषणोरस.	३८२
त्रिसंवटोरस.	,,
लोहगर्भोरस.	,,
त्रैलोक्यनाथोरस.	,,
आरोग्यसागरोरस.	३८३
अमृताख्याहरीतकी.	,,
मदेभसिंहोरस.	३८४
तीक्ष्णादिरस.	३८५
त्रियोनिरस.	,,
योगांतर.	,,
हरिद्रालोह.	,,

रक्तपित्त.

विषय	पृ०
रक्तपित्त कुठारोरस.	,,
पोलपर्पटीरस.	३८६
योगांतर.	,,
तथा.	,,
तथा.	,,
चंद्रकलारस.	,,
अर्केश्वररस.	३८७
सुधानिधिरस.	,,
आमलाद्यंलोहम्.	,,
शतमूलाद्यंलोहम्	,,
रक्तपित्तांतकोरस.	३८८
रसामृतरस.	,,
खंडकूष्मांडक	,,
शर्कराद्यंलोहम्.	३८९
समशर्करलोह.	,,
रक्तपित्तकुलकंडनोरस.	,,
योगांतर.	,,
अमृताख्यलोह.	,,
कपर्दकीरस.	३९१
योगांतर.	,,
खंडखाद्यलोह.	,,
रक्तपित्तहारस.	३९२

यक्ष्मा.

विषय	पृ०
राजादिलोह.	,,
राजमृगांकरस,	३९३
मृगांकरस.	,,
रत्नगर्भपोटली.	,,
स्वल्पमृगांक.	३९४
लोकेश्वरपोटली.	,,
कनकसुंदररस.	३९५
हेमगर्भपोटली.	,,
महामृगांकरस.	,,
क्षयकेशरीरस.	३९६
रजतादिलोह.	३९७
सर्वांगसुंदररस.	,,
लोकेश्वररस.	३९८
कांचनाभ्ररस.	३९९
बृहत्कांचनाभ्ररस.	,,
शिलाजत्वादिलोह.	४००
कुमुदेश्वरोरस.	,,
क्षयकेशरीरस.	,,
बृहच्चन्द्रामृतोरस.	,,
कालवंचकोरस.	४०१
नीलकंठोरस.	,,
रसमाणिक्य.	,,
रसराज.	,,
वज्ररस.	४०२
महावीररस.	,,
दशांगलोह.	४०३
स्वर्णभूपति.	,,
पंचामृतपर्पटी.	४०४
चिंतामणिरस.	४०५
स्वर्णभस्मराजमृगांक.	,,
महाकनकसिंदूरोरस.	४०६

विषय	पृ०
मृगांकखानेकीविधि.	,,
मृगांककापथ्य.	,,
मोतीकेगुण.	४०७
हेमाभ्ररससिंदूर.	,,
स्वर्णपर्पटीरस.	,,
नवरत्नराजमृगांक.	४०८
शंखगर्भपोटली.	४०९
त्रैलोक्यचितामणिरस.	,,
वसंतकुसुमाकरोरस.	४१०
शिलाजत्वादिलोह.	४११
लक्ष्मीविलासोरस.	,,
चंद्रामृतपर्पटी.	,,
रुद्ररस.	४१२
नस.	,,

कास.

विषय	पृ०
वृहद्रसेन्द्रगुटिका.	,,
अमृतार्णवरस.	४१३
पित्तकासांतकोरस.	,,
काससंहारभैरवोरस.	,,
लक्ष्मीविलासरस.	,,
सर्वेश्वररस.	४१४
शृंगाराभ्रक.	,,
सार्वभौमरस.	४१५
तरुणानंदरस.	,,
महोदधिरस.	४१६
जयागुटिका.	,,
विजयागुटिका.	४१७
स्वच्छंदभैरवरस.	,,
रसगुटिका.	,,
रसेन्द्रगुटिका.	४१८
पुरंदरवटी.	,,
कासांतकरस.	,,
कासकुठाररस.	,,
श्रीचंद्रामृतलोह.	,,
श्रीचंद्रामृतरस.	४१९
अमृतमंजरी.	,,
कासांतक.	,,
वृहच्छृंगाराभ्रक.	,,
नित्योदयरस.	४२०
रसपर्पटी.	,,
कल्पतरुरस.	४२२
ताम्रभैरवरस.	,,
ताम्रपर्पटी.	,,
कासारिरस.	४२३
तिक्तत्रयरस,	,,
योगांतर.	,,
तथा.	,,
स्वर्णपर्पटीरस.	,,
भूतांकुशरस.	,,
पोलवद्धरस.	४२४
कासकर्त्तरीरस.	,,
पारदादिचूर्ण.	,,
सोमनाथीताम्र.	,,
मंथानभैरवरस.	४२५
त्रिनेत्ररस.	,,
शिलातालरस.	,,
तामेश्वररस.	,,
सूर्यरस.	,,
कफकुंजररस.	४२६
हेमगर्भपोटली.	,,
कासश्वासविधूननोरस.	,,
नागरस.	,,
कफकेतुरस.	४२७
तथा.	,,
तथा.	,,
पारदादिवटी.	,,
प्रयोगांतर.	४२८
तथा.	,,

हिक्का.

विषय	पृ०
रसप्रयोग.	,,
योगांतर.	,,
मेघडंबररस.	,,
हेमभस्मप्रयोग.	,,
मुक्ताभस्मप्रयोग.	४२९
माक्षिकभस्मप्रयोग.	,,
शंखचूलोरस.	,,
पिप्पल्यादिलोह.	,,
प्रयोगांतर.	,,

श्वास.

विषय	पृ०
श्वासारिरस.	,,
उदयभास्कररस.	,,
नीलकंठरस.	४३०
पाटांतर.	,,
श्वासगजकेशरीरस.	,,
घोडाचोलीरस.	,,
अमृतार्णवरस.	४३१
तामेश्वररस.	,,
कालाभिरुद्ररस.	४३२
मुष्टियोग.	,,
भैरवरस.	४३३
कालेश्वररस.	,,
शुल्वतालेश्वररस.	,,
महोदधिरस.	४३४
आनंदभैरवरस.	,,
रसेन्द्रवटी.	,,
पारदादिरस.	४३५
साधारणवटक.	,,
सप्तोत्तरावटी.	,,
जयागुटिका.	,,
लोहवानकेसत्वयनानेकीविधि.	४३६
महाश्वासारिलोह.	,,
हामराभ्र.	,,
सूर्यावर्त्तरस.	४३७
विजयपर्पटीरस:	,,
प्रयोगांतर.	,,
लोहपर्पटीरस.	,,
ताम्रपर्पटी.	४३८
पिप्पल्यादिलोह.	,,
श्वासकुठाररस.	,,
श्वासकासचिंतामणिरस.	,,
श्वासकुठाररस.	,,
तथा.	४३९

स्वरभेद.

विषय	पृ०
भैरवरस.	,,
प्रयोगांतर.	,,
स्वरप्रसादकरस.	,,
गोरखवटी.	४४०

अरुचि.

विषय	पृ०
अग्निकुमाररस.	,,
सूतादिवटी.	,,
सुधानिधिरस..	,,
सुलोचनाभ्र.	४४१
योगांतर.	,,

छर्दि.

विषय	पृ०
मधुकादियोग.	,,
पारदादिचूर्ण.	,,
वमनामृतयोग.	,,
वांतिहृद्रस.	४४२
सूतभस्मप्रयोग.	

तृष्णा.

विषय	पृ०
महोदधिरस.	,,
कुमुदेश्वररस.	,,
पारदादिचूर्ण.	४४३
क्षीरसागरोरस.	,,

मूर्च्छा.

विषय	पृ०
ताम्रभस्मयोग.	,,
तथा.	,,
अभ्रकभस्मयोग.	,,
सुधानिधिरस.	,,
अष्टांगलवण.	,,
रसामृत.	४४४
कज्जली.	,,
सूतभस्म.	,,
राजावर्त्तादियोग.	,,
दाह.	
दाहांतकरस.	,,
रसादिवटी.	४४५
योगांतर.	,,
उन्माद.	
उन्मादगजांकुशरस.	,,
भूतांकुशरस.	,,
उन्मादभंजनीरस.	४४६
त्रिकत्रयादिलोह.	,,
उन्मादभंजनरस.	,,
चतुर्भुजरस.	४४७
उन्मादपर्पटीरस.	,,
प्रयोगांतर.	,,
उन्मादध्वंसीरस.	,,
उन्मादगजकेशरीरस.	,,
पारदयोग.	४४८
योगांतर.	,,
अपस्मार.	
सर्वेश्वर.	,,
भूतभैरव.	,,
सूतभस्मप्रयोग.	,,
ब्रह्मवटी.	४४९
वातकुलांतक.	,,
वातव्याधि.	
द्विगुणाख्यरस.	,,
वातगजांकुश.	४५०
बृहद्वातगजांकुश.	,,
महावातगजांकुश.	,,
वातनाशनोरस.	,,
वातारिरस.	४५१
अनिलारिरस.	,,
वातकंटकोरस.	,,
लघ्वानंदोरस.	४५२
चिंतामणिरस.	,,
चतुर्मुखोरस.	,,
लक्ष्मीविलासरस.	४५३
रोगेभसिंहश्रीखंडवटी.	,,
पिंडीरस.	,,
कुब्जविनोदरस.	४५४
शीतारिरस.	,,
वातविध्वंसन.	,,
पलाशादिवटी.	४५५
दशसारवटी.	,,
गगनादिवटी.	,,
सर्वांगसुंदररस.	४५६
तालकेश्वररस.	,,
त्रैलोक्यचिंतामणिरस.	,,
स्वच्छंदभैरवरस.	४५७
वातराक्षसरस.	,,
समीरगजकेशरीरस.	,,
मृतसंजीवनीरस.	,,
सूर्यप्रभावटी.	४५८
लघुवातविध्वंसिनी.	४५९
वातराजवटी.	४६०
दूसरी वातराजवटी.	,,
वह्निकुमाररस.	,,
एकांगवीररस.	४६१
मेघडंबररस.	,,
रामबाणरस.	,,
रसादिगुटिका.	,,
कंपवातारिरस.	४६२
कंपवातहारस.	,,
गगनगर्भिकावटी.	,,
प्रयोगांतर.	,,
तथा.	,,
दरदादिवटी.	,,
अमरसुंदरीगुटका.	४६३
अमृतानामगुटिका.	,,
मार्त्तंडेश्वररस.	,,
चतुःसुधारस.	४६४
उसकेगुण.	४६५
सर्ववातारिरस.	,,
समीरपन्नगरस.	,,
वातगजसिंहरस.	,,
वृद्धचिंतामणिरस.	४६६
राक्षसरस.	,,
वंगेश्वररस.	,,
तालकादिगुटिका.	४६७
प्रभावतीगुटिका.	,,
कफरोग.	
श्लेष्मकालानलरस.	,,
श्लेष्मशैलेन्द्ररस.	४६८
महाश्लेष्मकालानलरस.	,,
महालक्ष्मीविलास.	४६९
कफकेतुरस.	,,
कफचिंतामणिरस.	४७०
पित्तरोग.	
गुडूच्यादिलोह.	,,
धात्रीलोह.	,,
पित्तांतकरस.	,,
महापित्तांतकरस.	४७१
वातरक्त.	
लांगलादिलोह.	,,
वातरक्तांतकरस.	,,
तालभस्म.	,,
महातालेश्वररस.	४७२
विश्वेश्वररस.	,,
चिकित्सांतरकी आज्ञा.	,,
ऊरुस्तंभ.	
गुंजाभद्ररस.	,,
प्रयोगांतर.	४७३
आमवात.	
आमवातारिरस.	,,
अपरामवातारिरस.	,,
आमवातेश्वररस.	४७४
वृद्धदारावलोह.	,,
शिवागुग्गुल.	,,
आमवातगजसिंहमोदक.	४७५
शूल.	
तप्तामृतलोह.	,,
त्रिफलालोह.	,,
चतुःसमलोह.	,,
पंचात्मकरस.	४७६
धात्रीलोह.	,,
शूलराजलोह.	४७७
विद्याधराभ्र.	,,
वृद्धविद्याधराभ्र.	४७८
सर्वांगसुंदररस.	,,
शूलवज्रिणीवटिका.	४७९
त्रिपुरभैरव.	,,
अग्निमुख.	,,
शूलगजकेसरी.	,,
त्रिगुणाख्यरस.	४८०
शूलहरणयोग.	,,
शर्करालोह.	,,
शंखादिचूर्ण.	,,

विषय	पृ०
उदावर्त्त. अनाह.	
वैद्यनाथवटी.	,,
वृद्धदिच्छाभेदीरस.	४८१
प्रयोगांतर.	,,
गुल्म.	
महानाराचरस.	,,
पंचाननरस.	,,
गुल्मवज्रिणीवटी.	४८२
गुल्मकालानलरस.	,,
वडवानलरस.	,,
महानाराचरस.	,,
विद्याधररस.	४८३
महागुल्मकालानलरस.	,,
अभयादिवटी.	,,
गोपीजल.	,,
कांकायनगुटिका.	,,
गुल्मशार्दूलरस.	४८४
प्राणवल्लभरस.	,,
सर्वेश्वररस.	,,
हृद्रोग.	
हृदयार्णवोरस.	४८५
नागार्जुनाभ्रम्.	,,
पंचाननरस.	,,
मूत्रकृच्छ्र.	
त्रिनेत्ररस.	,,
वरुणाद्यलोह.	४८६
मूत्रकृच्छ्रांतकरस.	,,
मूत्राघात.	
तारकेश्वरोरस.	,,
लघुलोकेश्वररस.	४८७
प्रयोगांतर.	,,
अश्मरी.	
पाषाणवज्रोरस.	,,
त्रिविक्रमोरस.	,,
लोह प्रयोग.	४८८
प्रयोगांतर.	,,
प्रमेह.	
हरिशंकररस.	,,
इन्द्रवटी.	,,
वंगावलेह.	,,
प्रमेहसेतु.	,,
विडंगादिलोह.	,,
अभ्रकयोग.	४८९
सर्वेश्वररस.	,,
मेहहरोगोल.	,,
रुजादलनवटी.	,,
नागभत्तयादि.	४९०
मेहभैरवरस.	,,
राजावर्त्तावलेह.	,,
प्रमेहकठाररस.	,,
मृत्युंजयरस.	४९१
तारकेश्वररस.	,,
त्रैलोक्यमोहनरस.	,,
कर्पूरादिरस.	४९२
मेहमर्दनरस.	,,
मस्कमृगांकरस.	,,
संजीवनरस.	४९३
प्रमेहपरपथ्य.	,,
चंद्रप्रभावटी.	,,
प्रमेहगजसिंह.	,,
भीमपराक्रम सर्व प्रमेहपर.	४९४
रामबाणरस.	,,
राजमृगांकरस.	४९५
मेहवद्धरस.	,,
बृहद्धरिशंकररस.	,,
आनंदभैरवोरस.	४९६
विद्यावागीशरस.	,,
मेहमुद्ररस.	,,
मेघनादरस.	,,
चंद्रप्रभावटिका.	४९७
वंगेश्वर रस.	,,
बृहद्वंगेश्वर.	,,
कस्तूरीमोदक.	४९८
हेमवज्ररस.	,,
मेहकेशरीरस.	,,
योगेश्वर रस.	४९९
सोम.	
तालकेश्वररस.	,,
गगनादिलोह.	,,
सोमनाथरस.	,,
बृहत्सोमनाथरस.	५००
सोमेश्वररस.	,,
स्थौल्य.	
त्र्यूषणाद्यलोह.	५०१
वाडवाग्निलोह.	,,
वाडवाग्निरस.	,,
उदर.	
त्रैलोक्यसुंदररस.	,,
वैश्वानरीवटी.	५०२
जलोदरारिरस.	,,
वह्निरस.	,,
त्रैलोक्यडंबररस.	५०३
इच्छाभेदीरस.	,,
पिप्पल्यादिलोह.	,,
उदरारिरस.	,,
वंगेश्वररस.	,,
प्लीह.	
रोहीतकलोह.	५०४
लोकनाथरस.	,,
बृहल्लोकनाथरस.	,,
ताम्रेश्वरवटी.	५०५
अग्निकुमारलोह.	,,
प्राणवल्लभरस.	,,
यकृदादिलोह.	५०६
मृत्युंजय लोह.	,,
प्लीहार्णवरस.	,,
प्लीहशार्दूलरस.	५०७
प्लीहारिरस.	,,
प्लीहारिरस.	,,
लोहमृत्युंजयरस.	५०८
महामृत्युंजयरस.	,,
बृहद्गुडपिप्पली.	,,
ताम्रकल्प.	५०९
वज्रक्षार.	,,
उदरामयकुंभकेशरी.	५१०
वारिशोषणरस.	,,
सर्वतोभद्ररस.	५११
शोथ.	
त्रिकट्वाद्यंलोहम्.	,,
कटकाद्यंलोहम्.	५१२
त्र्यूषणाद्यंलोहम्.	,,
सुवर्चलाद्यंलोहम्.	,,
क्षारगुटिका.	,,
वंगेश्वर.	,,
अर्बुद.	
रौद्ररस.	५१३
श्लीपद.	
नित्यानंदरस.	,,
कणादिवटी.	,,
भगंदर.	
वारितांडवरस.	५१४
भगंदरहारोरस.	,,
उपदंश.	
प्रयोग.	,,

विषय	पृ०	विषय	पृ०	विषय	पृ०
वसंतकुसुमाकररस.	५५४	स्तंभनकर्तापारा.	५५९	**स्तंभन.**	
नीलकंठरस.	,,	गंधामृतरस.	,,	स्तंभनप्रयोग.	,,
राक्षसरस.	५५५	पंचशररस.	,,	अन्ययोग.	,,
विलासिनीवल्लभरस.	५५६	कामिनीमदभंजनरस.	,,	सीगतिगुटिका.	,,
वंगेश्वररस.	,,	लक्ष्मणालोह.	५६०	तथा.	५६२
मदनकामदेवरस.	,,	कामिनीदर्पघ्नरस.	,,	तथा.	,,
कंदर्पसुंदररस.	५५७	हरशशांकरस.	,,	महानीलकंठरस.	,,
लोहरसायन.	,,	चंडालनीयोग.	,,	बृहच्छृंगाराभ्रक.	५६३
पारदभस्म.	५५८	सिद्धसूत.	५६१	कामाग्निसंदीपनमोदक.	,,

समाप्ता.

नवीन छपी पुस्तकोंकी यादी.

भावप्रकाश-भाषाटीकासह—मित्रगण ! यह वह भावप्रकाश नही हैं जो आप समझ रहेहैं इसकी चाल ढाल रूप रंग और तर्ज सबसें निरालीहै, यदि आपको आयुर्वेद शास्त्रमें कुछभी प्रेम हो. और विना पढे वैद्य बननेकी इच्छाहो तथा इष्टमित्रोंको परिचय दिखानाहो, और प्रतिष्ठित बननाहो, तथा आजकालके ढोंगी वैद हकीम और डाक्टरोंकी गोल मटोल पोलं पोल [illegible] नाहो, तो बस देर न करिये. आठरुपये देकर एकपुस्तक अवश्य खरीद लीजिये. प्रियवर ? यह भुसके मोल [illegible] वचा जारहाहै. जो मूलमात्र पुस्तकके ६—७ रुपे आप देतेहे सो अब उस्मे दूनी पुस्तक और यदि इसका पाठ देखोगे तो तिगना चौगुनाहै. अर्थात् मूल और टीका मिलाकर ७०।७२ हजार श्लोकके अनुमान पाठहै. बहुत वढिया चिकना कागद. और छपाईहै । आपको अवश्य असत्य मालूम होगा परंतु हम धर्मसेकहतेहैं कि आजतक भावप्रकाशकी ऐसी उत्तम और सस्ती पुस्तक कहीं नहीं छपी और जो समग्र लिया चाहे उनको केवल ८ रुपे देने पडेंगे और डाकमासूल उनसें नहीं लिया जायगा. ८ रुपे आतेही पूर्वार्द्धतो उसी समय भेजदीना जावेगा. आठरुपे इस अग्रिम वर्षके प्रारंभतकही लिये जावेगे फिर १२ रुपे कीमत और १२ आने भाडा डाक देना होगा. अब न लेनेसे फिर ४ रुपे अधिक देनेमें आप पछतायगे.

पथ्यापथ्य—भाषा हिन्दी टीकासहित जिसमें ज्वररोगसें आदिले सब रोगोंकी पथ्य और अपथ्य लिखी है हालमें मुंबईमें नवीन हमने छापाहै पहले न ऐसी टीका न ऐसा छापाहोथा किंमत १२ बारह आना.

अभिनवनिघंटु—मूल संस्कृत और भाषाटीका जिसमें प्रत्येक औषधके संस्कृत नाम हिंदी-बंगाली-मरेठी कान्हडी गुजराती-मारवाडी-फारसी-इंग्रेजी भाषा यथा लभ्यलिखी हैं. फिर उनकी उत्पत्ति. जातिभेद-स्वरूप-रसवीर्य-विपाक-प्रतिनिधि-दर्पघ्न और भक्षणकी मात्रा पृथक २ लिखी है तथा सालसा-सालमामिश्री सनाय-कालादाना आदि अनेक नई २ औषध संस्कृत श्लोक और भाषानुवादसहित इसमें है और निघंटुका हिन्दी और भाषा अकारादि कोश अति परिश्रमकेसाथ नवीन बनायके अंतमें लगाय दिया है. और अनेक औषधोंके चित्रभी दीने हैं । किंमत २॥ रुपया मात्र. भाडा ५ आना.

चिकित्साचक्रवर्ती–यह भाषा ग्रंथ राजाधिराज महाराज अकबर बादसाह सार्वभौमका निर्माण कराहै इसको हमने फारसीसें हिन्दीमें अनुवाद कराहै, इसमें अनेक २ औषधी योगी यतीश्वरोंकी कही हुई हैं और अनेक हकीमोंके नाम लिख हैं कि यह औषध अमुक हकीमने फलाने रोगपर फलानेकेवास्ते बनाई. जब स्वयं अकबर महाराजके अनुभव (आजमाए) प्रयोग इसमें है फिर बहुत क्या कहै ? हाथ कंगनको आरसी क्या ? रुपाया कीमत भेजकर देखही न लीजिये। यह ग्रंथ मुंबईका छपा कागद, स्याही उत्तम जिल्द बंधा हुआहै।

वैद्यरहस्यभाषाटीकासंयुक्त–अब तो थोडीशी प्रती बची हैं नित्य.दिनपर दिन बिकी जाती है. जिनको लेनाहो जल्दी लीजिये मन न होय तो रहने दीजिये किंमत २ रुपये मात्र (छापा मुंबईका है.)

पाकरत्नाकरभाषा–इसमें अनेक प्रकारके लड्डू-पेडा-बरफी-खुरचन-मलाई-मेवावाटी फेनी-गूझा-मोहनथार-सोहनहलुआ-गुपचुप-खाजा-जलेबी-इमरती-बूँदी-मोहनभोग-हलुआ वासोंधी-खोहा-आदि अनेक सखरे निखरे पकवान लिखे हैं। मित्रहो यह बहुत बडा ग्रंथ है एक इस ग्रंथको ले घरमें चित्रविचित्र व्यंजन बनाइये और खाइये भलेही हलवाईको मत बुलाइये, यह छपता है.

पंचपक्षीभाषाटीकासह–यह प्रश्न कहनेका छोटासा अति चमत्कारी ग्रंथहै. इसमें मोर, कुक्कुट, काक, पिंगल, [illegible] पांच पक्षियोंके जागने सोने, गमन आदि चेष्टाके अनुसार प्रश्न कहनेकी अपूर्व विधि है, कीमत [illegible] (छापा मुंबईका.)

रमलनवरत्न भाषाटीका–इसमें लह्यान, कब्जुद्दाखिल-कब्जुलखारिज आदि सोलह शकलोसें प्रश्न कहनेकी रीति बहुतही उत्तमताके साथ कही है, जो थोडाभी पढाहो इसकी भाषा देखकर प्रश्नको मिलाय सक्ता है और सबके सुगमार्थ इसकी बडी सारणीभी इसमें लगाय दीनी है भाडेसहित किंमत १२ बारह आना है.

ज्ञानभैषज्यमंजरी भाषाटीकासहित–'एकपंथ दोकाज' वैद्यकका अभ्यास और ज्ञानकी प्राप्ति इसी छोटेसे ग्रंथमें है कीमत ३ आना मात्र.

अंजननिदान भाषाटीकासह–मित्रहो इसमें बहुतसे भोरे मनुष्य धोका खाते हैं कि इसमें अंजनका कुछ वर्णन होगा.सो ऐसा नहीं यह महर्षिअग्निवेषका बनाया २३९ श्लोकमें ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, आदि रोगोंकी परीक्षा लिखीहै जो माधवनिदानको कंठाग्र न करसके वो इसको कंठाग्रकर रोगोंका निदान धडाधड कहने लगिये किंमत ४ आना मात्र है, (छापा मुंबईका.)

अमृतकी बूंद–गाने बजानेकी अनेक उत्तमोत्तम ठुमरी, गजल, रेखता, ख्याल, कजली, कहरवा आदि लिखी है किंमत १ आना.

रसकी चपक–अर्थात् अमृतकी दूसरी बूंद यह पहलेके सदृश है-एक चपक तो लेही लीजिये किंमत १ आना.

पावससुंदरी–वर्षा ऋतुमें गानेके लायक उत्तमोत्तम ख्याल, ठुमरी, पद, प्राचीन सूरदास, नंददास, हरिदास आदि महात्माओंकी वाणीका संग्रह है किंमत १ आना है.

राधाकृष्णगणोद्देशदीपिका–टिप्पणीसहित इस छोटेसे ग्रंथमें राधा और कृष्णके सब

कुटुंबका नाम कहाहै, अर्थात् कृष्णके माता, पिता, काका, बडाकाका, बाबा, नाना, नानी, मामा, मामी, भुआ, फूफा, मौसी, मौसा, सखा, नर्मसखा, दास, दासी, आदि और इसी प्रकार श्रीमहाराणी राधिकाजीके परिवारका वर्णन कराहै इसीकी बहुतसी कापी पंडितोंको हमने लिखाय दीनीथी परंतु अब तो जिसकी इच्छा हो २ दो आने मात्र भेजके राधाकृष्णके कुटुंबको सहज ही जान लीजिये और कथा वांचनेवाले पौराणिकोंको तो अत्यन्तही उपयोगी है.

नपुंसकसंजीवन भापाटीकासह–नपुंसकोंका एकही मित्र है किंमत१ आना भाडा१ आना.

चिकित्सारत्नभाषा–फारसीसें हिन्दीमें तरजुमा करा है. किं०२ आने भाडा आध आना-

चिकित्साचिमनभाषा–यहभी फारसीसें हिन्दीमें अनुवाद करागया हैं. इसमें आजमूदेनुसखे हैं. किं० ३ आना भाडा आध आना.

संतानदीपिका-भापाटीका–इसमें केवल संतान होने न होनेके योग सबसें विलक्षण कहे है. कीं०.२ आना भाडा आध आना.

अर्थदीपक भापाटीका–तेजी, मंदी कहनेका चुटकला, इसमें नाज, किरांना, कपडा, पशु-आदिके तेजी मंदी कहनेको ध्रुवांक है कीं० २ आना भाडा आध आना.

भावपंचासिका भापा वृंदकविकृत–कविताके सौकीनोंका प्राणजीवनहै इसमें पंचास कवितोंमें न्यारे न्यारे अपूर्व भाव दिखाएहैं फिर उनका [illegible] एकपुस्तक अवश्य [illegible] वत्तम कराहै किं० २ आना. भाडा आध आना.

ललितफाग वृजकीहोरी–मित्रहो इसमें प्राचीन बडे २ महात्माओंकी रंगबिरंगी और रस चहचुहाती होरीहै बहुत बढिया कागद और स्याहीसें मुंबईके दिव्य टैपमें छपीहै. देखतेही चित्त प्रसन्नहो जवे मित्रहो जो होरियोंका आनंद इसमें है वो नवीन मूर्खोंकी बनाईहुईमें देखनेकोभी नहीं है. कीमत २ आना भाडा आध आना.

ये ग्रंथ नवीन छप रहे हैं.

मल्लसंजीवनी–पहलवानोंका हुनर सिखलाती है.

योगतरंगिणीभापाटीका–वैद्यकका परमोत्तमग्रंथ है.

भक्तमालसंस्कृत–श्लोकबद्ध छपरहीहै सबपंडितोंको परमोपयोगी है आध आना भेजनेसें नमूना भेजाजाताहै. आजतक यह कहीं नहींछपी, अनेक सतयुग त्रेता, द्वापर और कलियुगके भक्तोंकी अपूर्वकथा है बिना आध आना भेजे नमूनों कदापि नहीं भेजा जायगा.

☞ हमारेपास रमलके डालनेके अष्टधाती फासेभी मिलतेहैं जो विधिपूर्वक बनाए गएहैं और हर प्रकारकी हिन्दीभाषा और संस्कृतकी पुस्तक हमारे पुस्तकालयसे मिलती है.

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना.

पं० दत्तरामचौबे.

मानिकचौक पुस्तकालय

मथुराजी.

श्री

रसराजसुन्दर.

(रसग्रन्थ)

जिसको श्रीयुत माथुर कृष्णलाल पाठकके पुत्र दत्तराम चौवे
मथुरानिवासीने अनेक रसके और तंत्रके ग्रंथोंसें
संकलन करके निर्माण करा.

एवं

हिन्दी भाषानुवादसें विभूषित करा.

" रसवैद्यःस्मृतो वैद्यः मानुषो मूलकादिभिः
अधमः शस्त्रदाहाभ्यां सिद्धवैद्यस्तुमांत्रिकः"

इतिरसकौमुद्याम्.

जिसको

दत्तराम चौवेने पंडितोसै यथावत् शोधन करायकै

मुंबई,

प्रबोधरत्नाकर यंत्रमें छपायकर प्रसिद्ध करा.

संवत् १९९० वैक्रमी

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

पंडित दत्तराम चौवे मानिकचौक.

मथुराजी.

ओ३म्

श्रीशंवन्दे

श्रीनिकुंजविहारिणेनमः

अथ रसराजसुन्दर प्रारम्भः

मङ्गलाचरणम्

प्रणम्य राधापतिपादपंकजं गुरोः प्रसादाद्रसराजसुन्दरम् ।
मधोर्वने माथुरनन्दनोऽहम् कुर्वे मुदे वैद्यविदां मनीषिणाम् ॥ १ ॥

अर्थ–नित्य निकुंजविहारी राधापति (श्रीकृष्ण) के चरणारविंदको प्रणाम कर श्रीगुरुदेवकी प्रसन्नतासे मधुपुरी निवासी माथुरनन्दनमें दत्तराम, उत्तम वैद्योंकी प्रसन्नताके अर्थ रसराजसुन्दर ग्रंथको रचता हूं ।

यं जग्ध्वा दितिनन्दना ह्यमरतामासावनेन-न्द्रने । मोदन्तेऽघवनानियस्यपतनान्नश्य न्ति रोगामृगाः ॥ यं दृष्ट्वा विरते शरीर शरणे मुंचन्ति प्राणान्त्वरं । तं शैवं शिवदं शशांकधवलं वन्दे परं पारदम् ॥ २ ॥

अर्थ–जिस पारे को दितिनन्दन (देवता) भक्षण कर अजर अमर हो नन्दनवनमें क्रीड़ा करते हैं, और जिसके पतनसे पापोंके वन नष्ट होते हैं, तथा जिस पारेके दर्शनसे रोगरूप मृग नष्ट होते हैं, ऐसे चन्द्रसम उज्ज्वल शैव कल्याणकारी पारदको हम वन्दना करते हैं ।

ग्रन्थकी श्रेष्ठता.

अनेकरसशास्त्रेषु संहितास्वागमेषुच । यदुक्तं वाग्भटे तंत्रे सुश्रुते वैद्यसागरे ॥ अन्यैश्च बहुभिःसिद्धैर्यदुक्तंचविलोक्यतत् । तत्र यद्यदसाध्यं स्याद्यद्यद्दुर्लभमौषधं । तत्तत्सर्वं परित्यज्य सारभूतं समुद्धृतम् ॥४॥

अर्थ–अनेक रसशास्त्रोंमें संहिता और तंत्र-के ग्रंथोंमें तथा वाग्भट तंत्रमें. सुश्रुतमें. वैद्य-सागर ग्रंथमें. तथा जो अन्य बहुतसे सिद्धोंने कहेहैं उन सबोंको देख तथा उन उक्त ग्रन्थों-में जो २ असाध्य कर्म है और जो २ औषधि दुर्लभ हैं उनको त्यागकर शेष सारांश मैंने इस ग्रंथमें लिखा है ।

क्वचिच्छास्त्रे क्रिया नास्ति क्रमसंख्या न च क्वचित् । मात्रायुक्तिः क्वचिन्नास्ति

सम्प्रदायो न च क्वचित् ॥ ५ ॥ तेन सि-
द्धिर्न तत्रास्ति रसे वाथ रसायने । वैद्ये
वादे प्रयोगे च तस्मात्रत्नो मया कृतः॥६॥
यद्यद्गुरुमुखाज्ज्ञातं स्वानुभूतं च यन्मया ।
तत्तल्लोकहितार्थाय प्रकटी क्रियतेऽधुना॥७॥

अर्थ–किसी शास्त्रमें तो क्रिया नहींहै कि-सीमें उस क्रियाकी क्रमसंख्या नहीं है, किसी में मात्रा की युक्ति नहीं, कहीं कहीं रस वनानेकी सम्प्रदा नहींहैं, अतएव उन शास्त्रोक्त रस वनानेकी विधि और रसायनविधि एवं वैद्यवादमें और प्रयोगमें सिद्धि नहींहै. अतएव इस ग्रंथके वनानेका मैंने यत्न कियाहै इसमें जो २ विधि मैंने गुरुके मुखसे सुनीहैं, और जो २ विधि मेरे अनुभवमें आईहैं उनको लोकहितार्थ अब मैं प्रगट करताहूं ।

गुरुसेवाकेविना कर्म करना निषेध.

गुरुसेवां विनाकर्म यः कुर्य्यान्मूढचेतनः ।
तद्यातिनिष्फलत्त्वंहिस्वप्नलब्धंयथाधनम्।८
विद्यांग्रहीतुमिच्छन्तिचौर्य्यछद्मबलादिना ।
नतेषांसिध्यते किंचिन्मणिमंत्रौषधादिकम्९

अर्थ–गुरुसेवाके विना जो मूढबुद्धी पुरुष रस तैलादि वनाना आदि कर्म करता है, वह निष्फल जाता है । जैसे सपनेका प्राप्त हुआ धन । जो पुरुष चोरी कपट बलात्कार आदि कर्मोंसे विद्याग्रहण करनेकी इच्छा करता है । उसको प्रथम तो विद्या आनेकी नहीं. यदि आभी गयी तो मणिमन्त्र और औषधादि कर्म कोई उसको सिद्ध नहीं होता । अतएव उचित है कि गुरुसेवा पूर्वक विद्या ग्रहण करे ।

विद्या आनेके त्रिविध कारण.

गुरुशुश्रूषया विद्या पुष्कलेन धनेन वा ।
अथवाविद्ययाविद्याचतुर्थं नैवकारणम्।१०।

अर्थ–विद्या आनेके तीन कारण हैं, प्रथम तो गुरु की सेवा करना है । दूसरा पुष्कल धन देना । तीसरा कारण विद्या आनेका यह है कि यदि आप कुछ उत्तम विद्या पढ़ा होवे उसको पढ़ाकर उसके पलटेमें दूसरेसे अपेक्षित विद्या पढ़े, ये तीनकारण विद्या आनेके हैं । इनके सिवाय चौथा कारण नहीं है ।

सद्गुरुके लक्षण.

मंत्रसिद्धो महावीरो निश्चलः शिववत्सलः।
देवीभक्तःसदा धीरोदेवतायागतत्परः॥११।
सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञः कुशलो रस कर्मणि ।
एतल्लक्षणसंयुक्तोरसविद्यागुरुर्भवेत् ॥१२॥

अर्थ–जिसको मंत्र सिद्ध हो, महावीर, निश्चल, शिवप्रिय, देवीका भक्त और सदैव धीर, देवताके पूजन करनेमें तत्पर, सकल शास्त्रोंके अर्थ और उनके भावको जानने वाला, पारद मारणादि रसकर्मोंमें कुशल हो इतने लक्षणों करके संपन्न रसविद्या पढ़ानेका आचार्य्य होताहै ।

उत्तम शिष्यके लक्षण.

शिष्यो निजगुरुर्भक्तःसत्यवक्ता बहुश्रुतः ।
निरालस्यःस्वधर्मज्ञोदेव्याराधनतत्परः १३

अर्थ–अपने गुरुका भक्त, सत्य वोलने वाला, बहुश्रुत, आलस्य रहित, अपने धर्म्मका ज्ञाता तथा देवीके आराधनमें तत्पर ऐसा शिष्य होवे ।

पारदप्रशंसा.

हरति सकलरोगान् मूर्च्छितो यो नराणाम्
वितरति किलबद्धः खेचरत्वं जवेन ॥
सकलसुरमुनीन्द्रैर्वन्दितः शम्भुबीजम्॥
सजयति भवसिन्धोःपारदःपारदोऽयम् १४

अर्थ-जो मूर्च्छित मनुष्योंके सकल रोगों-का हरण करताहै, और बद्ध हुआ वेगकरके आकाशमें विचरनेकी शक्ति वितरण करताहै। तथा सकल सुर मुनियों करके वन्दित, शिवबीज संसारसागरसे पार करने वाला ऐसा यह पारा सर्वोत्कर्ष करके वर्त्ते।

यो नवेत्ति कृपाराशिं रसं हरिहरात्मकम्।
वृथा चिकित्सां कुरुतेसवैद्योहास्यतांव्रजेत्॥
शुष्केन्धनमहाराशिं यथा दहति पावकः।
तद्वद्दहतिसूतोऽयंरोगान्दोषत्रयोद्भवान् १८

अर्थ-जो कृपासागर हरिहरात्मक पारेको नहीं जानता वो वृथा चिकित्सा करताहै, और उसकी हांसी होतीहै, जैसे सूखे इंधनके समूहको अग्नि भस्म करतीहै. उसीप्रकार तीनों दोषोंसे होनेवाले रोगोंको यह पारा दहन करताहै।

मोहयेद्यःपरान्बद्धो जीवयेच्च मृतःपरान्।
मूर्च्छितो बोधयेदन्यान् तंसूतंकोनसेवते १६

अर्थ-जो स्वयं बद्ध होकर औरोंको मोह वश करे, और स्वयं मृतहोकर औरोंको जिलावे, और स्वयं मूर्च्छित होकर औरोंको बोध अर्थात् जगाता है. ऐसे पारदको कौन नहीं सेवन करे ?।

आयुर्द्रविणयारोग्यं वन्हिर्मेधामहद्बलम्।
रूपयौवनलावण्यं रसोपासनया भवेत् १७

१ श्रीमान्सूतनृपोददाति विलसल्लक्ष्मींवपुःशाश्वतम्। स्वागांशितिकर्रामचंचलमनोमातेवपुंसांयथा। यन्योनास्तिशरीरनाशकगदप्रध्वंसकारीततः। कार्य्योनित्यमहोत्सवैःप्रथमतः सूताद्वपुःसाधनम्॥ १॥ साक्षादक्षयदायकोमुनिनृणां पंचत्वगुणैः कृतो। मूर्च्छा मूर्च्छितविग्रहो गदवतां हन्त्युग्रकैःप्राणिनाम्। चंद्राण्यसुरासुरेन्द्रचरितां तां तांगतिंप्रापयेत्। सोऽयंपातु परोपकारचतुरः श्रीसूतराजो जगत्॥२॥

अर्थ-आयु, द्रव्य, आरोग्यता, जठराग्नि, बुद्धि, अतिशय बल, तथा रूप, यौवन और लावण्यता ये सब रसोपासना अर्थात् पारद भक्षणसे होते हैं।

मारयेज्जारितं सूतं गंधकेनैव मूर्च्छयेत्॥
बद्धःस्याद्द्रुतिसत्वाभ्यां रसस्यैवंत्रिधागतिः

अर्थ-जारित पारेका मारण करे, और गंधक करके मूर्च्छित करे, तथा द्रुति और सत्वकरके पारेका बद्ध करना, ऐसे रसकी त्रिविध गति है।

रसको प्रधान्यता.

अल्पमात्रोपयोगित्वादरुचेरप्रसंगतः।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वादोषधेभ्योऽधिकोरसः

अर्थ-अल्पमात्रा अर्थात् थोड़ासाही उपयोगी होनेसे और अरुचिके अप्रसंगसे अर्थात् इसके खानेसे अरुचिभी नहीं होती तथा तत्काल आरोग्यदायी है, अतएव संपूर्ण औषधियोंसे रसको अधिक्यता अर्थात् श्रेष्ठता है। इस जगह औषधियोंसेही श्रेष्ठता नहीं है किन्तु इस पारदको योगसाधनत्व तथा बहुवीर्य्यकारी एवं मुक्तिप्रद होनेसे संपूर्ण वस्तु मात्रसे श्रेष्ठता है।

अचिराज्जायते देवि शरीरमजरामरम्।
मनसश्च समाधानं रसयोगादवाप्यते॥२०॥
सत्वं च लभते देवि विज्ञानं ज्ञानपूर्वकम्।
सत्वंमंत्राश्च सिद्ध्यंति योऽश्नातिमृतसूतकम्
यावन्नशक्तिपातस्तु नयावत्पाशकृन्तनम्।
तावत्तस्यकुतोवुद्धिर्जायते भस्मसूतके॥२२॥
यावन्न हरबीजन्तु भक्षयेत्पारदं रसम्। तावत्तस्यकुतोमुक्तिःकुतः पिंडस्यधारणम्॥२३॥
स्वदेहे खेचरत्वं च शिवत्वं येन लभ्यते।

अर्थ-हे देवि ? इस पारदके भक्षणसे

शीघ्र देह अजर अमर होकर मनका समाधान होताहै, सत्व और विज्ञानपूर्वक ज्ञानकी प्राप्ति होती है, जो मनुष्य मृत पारेको भक्षण करता है, वह सत्व (पुरुषार्थ) और मंत्रोंकी सिद्धिको प्राप्त होताहै, जबतक शक्तिपात और फांसोका कटना नहीं होता तावत्काल पर्य्यंत इस प्राणीकी पारदभस्मके भक्षणमें कब बुद्धि होती है। जबतक यह प्राणी शिवबीज (पारद) को भक्षण नहीं करता तब तक इसकी रोगोंसे मुक्ति और देहका धारण कहांहै जिस पारदके भक्षणसे यह प्राणी इस अपनी देहसेही खेचरत्व शिवत्वको प्राप्त होता है।

दोषहीनो रसो ब्रह्मा मूर्च्छितस्तु जनार्दनः
मारितोरुद्ररूपीस्यात्बद्धः साक्षात्सदाशिव;

अर्थ-दोषहीन पारा ब्रह्माका स्वरूपहै, मूर्च्छित जनार्दन रूप और मृतपारा रुद्ररूपी है। और जो पारा बद्ध है वो साक्षात् सदाशिवका स्वरूपहै।

साध्येषु भेषजं सर्वमीरितं तत्ववेदिना। असाध्येष्वपिदातव्योरसोऽतःश्रेष्ठउच्यते २६
हतोहन्तिजराव्याधिंमूर्च्छितोव्याधिघातकः
बद्धःखेचरतांधत्तेकोऽन्य.सूतात्कृपाकरः २७

अर्थ-तत्ववेत्ता वैद्योंने साध्य रोगोंमें संपूर्ण औषधी कहीहैं और असाध्यरोगोंमें कोई औषधी नहीं कही-परंतु पारद असाध्यरोगोंमें देना कहाहै अतएव पारेको श्रेष्ठत्वहै। मृतपारा बुढापे और रोगोंको दूर करताहै, मूर्च्छित व्याधिका नाशक और बद्धपारा आकाशमें गमन करनेकी शक्ति देताहै। कहो पारेसे अन्य कौन ऐसा कृपाकारकहै?

केदारादीनि लिंगानिपृथिव्यां यानिकानि चित्तानिदृष्ट्वातुयत्पुण्यं तत्पुण्यं रसदर्शनात्

अर्थ-जितने केदारसे आदिले पृथ्वीपर शिवलिंगहैं उनके दर्शनसे जो पुण्य होताहै वही पारदके दर्शनसे होताहै।

चन्दनाऽगरुकर्पूरकुंकुमान्तर्गतोरसः। मूर्च्छितःशिवपूजासाशिवसानिध्यसिद्धये ॥२९॥
भक्षणात्परमेशानि हन्तिपापत्रयं रसः।
दुर्लभं ब्रह्मविष्णवाद्यैःप्राप्यतेपरमंपदम् ३०॥
हृद्योगकर्णिकान्तस्थंरसेन्द्रं परमेश्वरि। स्मरन्विमुच्यतेपापैःसद्योजन्मान्तरार्जितैः ३१॥

अर्थ-मूर्च्छित रसको चन्दन, अगर, कपूर और केशरके अन्तर्गत स्थापन करना शिवपूजा कहलातीहै, यह शिवके समीप पहुँचाने वालीहै, पारेका भक्षण करना तीन जन्मोंके पापोंका नाश करताहै। जो स्थान ब्रह्मा, विष्णु और शिवको दुर्लभहै उस पदको पारदका भक्षण करने वाला मनुष्य पाताहै, जो मनुष्य अपने हृत्कमलमें पारदस्थितका ध्यान करताहै वह मनुष्य तत्काल अपने अनेक जन्मान्तरके संचित पापोंसे छूट जाताहै।

स्वयंभूलिंगसाहस्रैर्यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलंकोटिगुणितंरसलिंगार्चनाद्भवेत् ३२॥
रसविद्यापराविद्यात्रैलोक्येऽपिच दुर्लभा।
भुक्तिमुक्तिकरीयस्मात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।

अर्थ-जो पुण्य हजार शिवलिंगके पूजनसे होताहै, उससे करोड़गुना फल पारदलिंगके पूजनेसे होताहै। रसविद्या पराविद्या कहलाती है और त्रिलोकीमें दुर्लभहै तथा यह भोग मोक्षकी दाताहै अतएव इसको यत्नसे रक्षण करे।

शताश्वमेधेनकृतेनपुण्यंगोकोटिभिःस्वर्णसहस्रदानात्। नृणां भवेत्सूतकदर्शनेनयत्सर्वतीर्थेषुकृताभिषेकात् ॥ ३४ ॥

अर्थ-जो पुण्य १०० अश्वमेध यज्ञ कर-

नेसे होताहै, तथा करोड़ गोदान करनेसे जो पुण्य होताहै, और १००० तोला सुवर्णदान करनेसे जो पुण्य होताहै, तथा सब तीर्थोंमें अभिषेक करनेसे जो पुण्यहोताहै, वो पुण्य पारदकेदर्शन मात्रसे होताहै ।

सुरगुरुगोद्विजहिंसापापकलापो ध्रुवं किलासाध्यम् । चित्रंतदपिचशमयतियस्तस्मात्कः पवित्रतरः ॥ ३५ ॥

अर्थ–देव, गुरु, गौ, ब्राह्मणके वधसे तथा अनेक पापोंके करनेसे प्रगट जो कुष्टभगंदरादि दुष्टरोग उनको यह पारद शमन करताहै कहो इससे पवित्र और कौन होवेगा ? ।

पारदके नाम.

रसेन्द्रःपारदःसूतःसूतराजश्चसूतकः । शिवतेजो रसः सप्त नामान्येवं रसस्य तु ॥३६॥ शिवबीजो रसः सूतः पारदश्च रसेन्द्रकः । एतानि शिवनामानि तथान्यानि यथाशिवे

अर्थ–रसेन्द्र, पारद, सूत, सूतराज, सूतक, शिवतेज, और रस ये सात नाम पारदकेहैं, शिवबीज, रस, पारद, रसेन्द्रक इत्यादि पारेके नामहैं और शिवसंबंधी नामभी पारदके जानने जैसे शिव शंकर आदि ।

पारदकी उत्पत्ति.

शैलेऽस्मिन्शिवयोः प्रीत्यापरस्परजिगीषया । संप्रवृत्ते च संभोगे त्रिलोकीक्षोभकारिणि ॥ ३८ ॥ विनिवारयतुंवन्हिः संभोगं प्रेषितः सुरैः । कांक्षमाणैस्तयोःपुत्रं तारकासुरमारकं ॥ ३९ ॥ कपोतरूपिणंप्राप्तं हिमवत्कंदरेऽनलम् । अपक्षिभावसंक्षुब्धं स्मरलीलावलोकिनम् ॥ ४० ॥ तंदृष्ट्वालज्जितः शम्भुर्विरतः सुरतात्तदा । प्रच्युतश्चरमोधातुर्गृहीतः शूलपाणिना ॥ ४१ ॥ प्रक्षिप्तो वदने वन्हेर्गंगायामपि सोपतत् । बहिःक्षिप्तस्तयासोऽपि परिदंदह्यमानया ॥ ॥ ४२ ॥ संजातास्तन्मलाधानाद्धातवः सिद्धिहेतवः । यावदग्निमुखाद्रेतोन्यपतद्भूरिसारतः ॥ ४३ ॥ शतयोजननिम्नांस्तान्कृत्वाकूपांस्तु पंच च । तदाप्रभृति कूपस्थं तद्रेतःपंचधाभवत् ॥ ४४ ॥

अर्थ–अब पारदकी उत्पत्ति कहते हैं कि एकसमय हिमालय पर्वतमें प्रीतिके साथ परस्पर जीतनेकी इच्छा करके त्रिलोकीका क्षोभकारी संभोग करनेको जिस समय श्रीशिव और पार्वती प्रवृत्त हुए. उस समय उस संभोगके छुड़ानेको और तारकासुरके मारनेवाले पुत्रकी उनसे उत्पत्तिकी इच्छा करके देवताओंने अग्निदेवको भेजा, वो अग्निदेव कपोतपक्षी (कबूतर) का रूप धारण कर हिमालयकी कंदरामें प्राप्त हुआ, तहां अपक्षि स्थानमें कामक्रीड़ा देखनेवाले अग्निको आया हुआ देख लज्जितहो शिव सुरतसै निवृत्त हुए अर्थात् उस संभोगको त्यागते हुए उस समय जो वीर्य्य स्खलित हुआ उसको लेकर शिवजी अग्निके मुखमें डालते हुए उसको अग्निने गंगामें डाला तब गंगाने उसको पृथ्वीपर फैक दिया, उस शिववीर्य्यके मलसे सिद्धिके कारण सुवर्णादि धातु उत्पन्न हुई अत्यन्त वेगके कारण जितना वीर्य्य अग्निके मुखसे निकल गया वही पारेके स्वरूपसे पृथ्वीमें विख्यात हुआ, उसको १०० योजन यानी (४०० कोस) के गहरे पांच कुए करके उस शिववीर्यको स्थापन करते हुए उसीकालसे वह कूपस्थ शिववीर्य पांचप्रकारका होता हुआ ।

पंचविधपारद.

रसोरसेन्द्रःसूतश्चपारदोमिश्रकस्तथा ।
इतिपंचविधोजातःक्षेत्रभेदेनशंभुजः ॥४५॥

अर्थ–रस, रसेन्द्र, सूत, पारद और मिश्रक इस प्रकार क्षेत्रभेदसे पांच प्रकारका पारा है ।

रससंज्ञक पारदके गुण.

रसोरक्तोविनिर्मुक्तःसर्वदोषैरसायनः ॥
संजातास्त्रिदशास्तेननिरुजोनिर्जरामराः४६

अर्थ–रससंज्ञक पारा लालरंगका होता है और यह स्वयं शुद्ध और सर्व दोषरहित होता है, तथा रसायनहै । इसका सेवन करनेसे देवता रोगरहित अजर अमर हुए हैं ।

रसेन्द्रसंज्ञक पारदके लक्षण.

रसेन्द्रोदोषनिर्मुक्तःश्यावोरूक्षोऽतिचंचलः।
रसायनाभवंस्तेननागामृत्युजरोज्झिताः४७
देवैर्नागैश्चतौकूपौ पूरितौमृद्भिरश्मभिः ।
तदाप्रभृतिलोकानांतौजातावतिदुर्लभौ ४८

अर्थ–रसेन्द्रसंज्ञक पारा कालेरंगका रूक्ष और अति चंचल तथा सर्वदोष रहित होता है, इसके सेवनसे वासुकी तक्षकादि नाग मृत्यु और वृद्धावस्था रहित हुएहैं । इन रससंज्ञक और रसेन्द्र संज्ञक पारोंके कुओंको देवता और नागोंने मिट्टी और पत्थरोंसें आट (ढक) दियेहैं, तबीसे उक्त दोनों जातिके पारे इस मनुष्य लोकमें मनुष्योंको अति दुर्लभ हुएहैं ।

सूतसंज्ञकपारद.

ईषत्पीतश्चरूक्षांगो दोषयुक्तश्चसूतकः ।
दशाष्टसंस्कृतःसिद्धोदेहंलोहंकरोतिसः ४९

अर्थ–सूतसंज्ञक पारा कुछपीला रूक्ष और दोष मिला होता है, यह अष्टादश १८ संस्कार करनेसे सिद्ध होता है, और सेवन कर्त्ता मनुष्यके देहको लोहेके समान करताहै ।

पारदसंज्ञक.

अथान्यकूपजःकोऽपिसचलः श्वेतवर्णवान् ।
पारदोविविधैर्योगैःसर्वरोगहरःसहि ॥५०॥

अर्थ–तथा चतुर्थ कुएका जो पारद संज्ञक पाराहै वह सफेद वर्णवाला चंचलहै, यह पारा अनेक प्रकारके योगों करके सर्व रोगोंको हरण करता है ।

मिश्रकपारद.

मयूरचन्द्रिकाछायःसरसोमिश्रकोमतः ।
सोप्यष्टादशसंस्कारयुक्तश्चातीवसिद्धिदः ॥

अर्थ–जिस पारेमें मोरकी चन्द्रिकाके सदृश अनेक प्रकारके चित्र विचित्र रंगहो उसको मिश्र संज्ञक पारा कहते है, यहभी संस्कार करनेसे अत्यन्त सिद्धिको देता है ।

त्रयःसूतादयःसूताःसर्वसिद्धिकराअपि ।
निजकर्मविनिर्माणैः शक्तिमन्तोऽतिमात्रया
एतांरससमुत्पत्तिंयोजानातिसधार्मिकः ।
आयुरारोग्यसंतानं रससिद्धिंचविंदति ५३

अर्थ–पांच प्रकारके सूतादि पारोंमें तीन प्रकारका पारा (सूतक, पारद और मिश्रक) अपने २ कर्मद्वारा जो संस्कृतहैं वो अत्यन्त शक्तिसंपन्न और सर्व सिद्धिकारी जानने यह रस (पारद) की उत्पत्तिको जो जाने वह धार्म्मिकहै तथा आयु, आरोग्य, संतान और रससिद्धिको प्राप्ति होताहै ।

रसादि शब्दोंकी निरुक्ति.

रसनात्सर्वधातूनां रसइत्यभिधीयते ।
जरारुङ्मृत्युनाशायरस्यतेवारसोमतः ।५४।
रसोपरसराजत्वाद्रसेन्द्र इतिकीर्त्तितः।
देहलोहमयींसिद्धिं सूतेसूतस्ततःस्मृतः॥५५॥

रोगपंकाब्धिमग्नानां पारदानाचपारदः ।
सर्वधातुगतंतेजो मिश्रितंयत्रतिष्ठति ॥५६॥
तस्मात्समिश्रकःप्रोक्तोनानारूपफलप्रदः ॥

अर्थ–अब रसादि शब्दोंकी निरुक्ति कहते हैं, तहां सर्व धातुओंके रसोंसे अर्थात् भक्षण करनेसे इस पारेको **रस** ऐसा कहते हैं, अथवा जरा रोग और मृत्युके नाशनार्थ इसको भक्षण करते है, इस कारण इसको **रस** कहते हैं। तथा रस और उपरसोंका राजा होनेसे इसको **रसेन्द्र** कहते हैं, एवं देहको लोहेके समान करताहै अतएव इसको **सूत** कहते हैं, रोगरूप कीचड़के समुद्रमें डूबे हुए मनुष्योंको पार लगानेसे इसको **पारद** कहते हैं और सम्पूर्ण धातुमात्रका मिश्रित तेज इस पारेमें रहता है, अतएव इसको **मिश्रक** कहा है यह अनेक प्रकारका फल देता है।

एवंभूतस्यसूतस्य मर्त्यमृत्युगदच्छिदः ।
प्रभावान्मानुषाजातादेवतुल्यवलायुषः ॥
तान्दृष्ट्वाभ्यर्थितोरुद्रःशक्रेणतदनंतरम् ५८॥
दोषैश्चकंचुकाभिश्च रसराजोनियोजितः ॥
तदाप्रभृतिसूतोऽसौनैवसिद्ध्यत्यसंस्कृतः ॥

अर्थ–इस प्रकार मनुष्यकी मृत्यु और रोगोंके नाशकर्त्ता पारेके प्रभावसे मनुष्य-देवताओंके तुल्य बली और दीर्घायुवाले हुए ऐसे बलिष्ठ पुरुषोंको देख इन्द्रने शिवजीसे प्रार्थनाकी कि हे नाथ! इस पारदके प्रभावसे सर्व मनुष्य देवताओंके समान होजायगे फिर देवताओंको कोन पूछेगा? इन्द्रकी इस वाणीको सुन श्रीशिवजीने उस पारेको दोषयुक्त कंचुकी (कांचली) युक्त कर दिया, तभीसे यह पारा विना संस्कारके सिद्ध नहीं होता, अतएव पारदकी सिद्धी करनेवाले मनुष्यको शास्त्रोक्त शुद्धी अवश्य कर्त्तव्य है।

प्रत्यक्षेणप्रमाणेन योनजानातिसूतकम् ।
अदृष्टविग्रहंदेवं कथंज्ञास्यति चिन्मयम् ६०

अर्थ–जो मनुष्य प्रत्यक्षप्रमाण करके पारेको नहींजाने वह अदृष्ट विग्रहवान् परमात्मा चिन्मयको किसप्रकार जानेगा? अर्थात् जो पारेको जानता है वही परंब्रह्मको जानेगा।

रस संख्या.

एकएवरसोज्ञेयो बहुधोपरसाःस्मृताः ॥

अर्थ–रस जो पाराहै सो एकही है और सार, रूपरस, अभ्रकादि उपरस अनेक है, ।

पारदको श्रेष्ठत्व.

काष्ठौषध्योनागेनागोवंगेयवंगश्चपिशुल्वे ६१
शुल्वेतारेतारं कनकेकनकंचलीयतेसूते ॥
अमृतत्वंहिभजंते हरमूर्तौयोगिनोयथालीनाः
तद्वत्कवलितगगने रसराजेहेमलोहाद्याः ॥
परमात्मनीवसततंभवतिलयोयत्र सर्वसत्वानाम् ॥ ६३ ॥ एकोऽसौरसराजःशरीरमजरामरंकुरुते । स्थिरदेहाभ्यासवशात्माप्यज्ञानंगुणाष्टकोपेतम् ॥ ६४ ॥ प्राप्नोतिब्रह्मपदंनपुनर्भवनधासदुःखेन ।

अर्थ–काष्ठौषधि शीशेमें लीन होती हैं, अर्थात् मिलजाती हैं। सीसा वंगमें मिलजाता है, वंगतांबेमें, तांबा चांदीमें, चांदी सोनेमें, और सोना पारेमें लीन होजाता है, जैसे-योगी श्रीशिवजीकी मूर्त्तीमें लीन होते हैं, उसीप्रकार अभ्रकभक्षित पारेमें लोहादिधातु लीन होती हैं, जैसे परमात्मामें सर्व प्राणीमात्र लयहोते हैं उसीप्रकार एकही **रसराज** (पारा) देहको अजर अमर करता है। जब इसप्राणीकी देह स्थिरहोती है तब इसको अष्टगुणसम्पन्न ज्ञानकी प्राप्ति होती है, उस ज्ञानसे ब्रह्मपदको प्राप्त

होता है, किन्तु वनवासकरनेसे ब्रह्मपदकी प्राप्ति नहीं होसक्ती, तात्पर्य्य यह है कि पारद भक्षणसे ही मोक्ष होती है, वनमें तपश्चरणसे मोक्ष नहीं होती।

पारदग्रहणोपाय.

कन्यांस्वरूपांप्रथमर्तुयुक्तांस्नातांसुवस्त्राभरणादिजुष्टाम् । जवाश्वरूढांसुनिरीक्षमाणां दृष्ट्वारसःकूपगतोऽतिशीघ्रम् ॥ ६६ ॥ प्रयात्यधस्तादुपरिप्रचंडकामीवकान्ताकरकर्षणार्थम् । धावत्यसौपृष्ठगतोहितस्याःपुरोहिनद्याइवयोजनैकम् ॥ ६७ ॥ प्रत्यायातिततः कूपंवेगतःशिवसंभवः।मार्गेनिर्मितगर्तेषुस्थितं गृह्णन्तिपारदम् ।

अर्थ—प्रथमऋतुवती स्वरूपवान कन्या स्नानकर वस्त्र और आभूषणोंसे शृंगारकर वेगवान घोड़ेपर बैठकर जहां पारेका कुआ है उसके ऊपर खड़ी होती है, उस कन्याको देख पारा कुएमेंसे उमग अतिशीघ्रतासे उस कन्याके आलिंगन करनेको दौड़ता है, जैसे प्रचंडकामी पुरुष अपनी प्यारीस्त्रीके पकड़नेको चलता है, उससमय वह कन्या घोड़ेको दौड़ाती है उसके पीछे चारकोस पर्य्यन्त वह पारा दौड़ता है. जैसे नदीका वेग दौड़ता है, जब वह कन्या उसकी हद्दसे बाहर निकल जाती है तब पारा फिर उसी वेगसे कुएमें चला जाता है, उस समय मार्गमें जो खोदेहुए गड्ढे हैं उनमें जो पारा रहजाता है उसको वहाँके मनुष्य लेकर देशविदेशोंमें बेचते हैं इसप्रकार यह पारा आता है ।

यावत्सूतंनशुद्धं नचमृतमथनोमूर्च्छितंगंधबद्धं नोवज्रंमारितंस्याद्घनगगनवधोनोपधातुश्चशुद्धः॥स्वर्णाद्यंसर्वलोहंविषमपिनमृतंतैलपाको नजातस्तावद्वैद्यःकसिद्धोभवतिवसुभुजांमण्डलेश्लाघ्ययोग्यः ॥ ६९ ॥

अर्थ—जबतक पारा शुद्धनहो, और न मरे तथा विषसे मूर्च्छित और गंधबद्धनहो, एवं जबतक हीरेकी भस्म न करे, और अभ्रक जारण नहीं करे, तथा उपधातुओंकी शुद्धी नहो एवं स्वर्णादि अष्टलोह और विष नहींमरें तथा तैलपाक नहो, तबतक वैद्य कहीं सिद्ध होता है? और राजाके देशमें श्लाघाके योग्य होता है। कदाचित नहींहोता किन्तु जो उक्तकर्मोंको जानताहै वही श्लाघाके योग्य है।

इतिश्रीमाथुर कृष्णलालतनय दत्तरामकृते रसराजसुंदरे पारदोत्पत्तिर्नाम प्रथमोध्यायः

पारदके संस्कार.

अधुनारसराजस्य संस्कारान्संप्रचक्ष्महे
येनयेनहिचांचल्यंदुर्ग्रहत्वंचनश्यति ॥ १ ॥

अर्थ—अब हम रसराज (पारे) के संस्कारोंको कहते हैं जिस २ संस्कारोंके करनेसे पारेकी चंचलता और दुर्ग्रहत्व नष्ट होवे।

सदोषपारा जारणनिषेध.

सदोषोभस्मितोयेनयोजितोयोगकर्मणि।
सभिषक्पततेनरकेयावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ २॥

अर्थ—जिस वैद्यने सदोषपारेका जारण किया और उस सदोषपारेको औषधादि योगोंमें योजना किया अर्थात् मिलाया वह वैद्य जबतक सूर्य्यचन्द्र हैं तावत्काल पर्य्यंत नर्कोंमें वास करता है ।

शुद्ध पारेके लक्षण.

अन्तःसुनीलोवहिरुज्ज्वलोयोमध्याह्नसूर्य्यप्र
तिमप्रकाशः । शस्तोऽथधूम्रःपरिपाण्डुरश्च
चित्रोनयोज्योरसकर्म्मसिद्धौ ॥ ३ ॥

अर्थ–जिस पारेमें भीतरसे नीलापन झलकता हो, और ऊपरसे उज्ज्वल दीखे, तथा मध्यान्ह सूर्य्यके समान प्रकाशहो, वह पारा उत्तम है, इसको रसकर्ममें लैना चाहिये। और धुँएके रंगका, पीला और चित्रविचित्ररंगका हो उसको रसकर्म सिद्धिमें लेना उचित नहीं है, ।

पारेकी जाती.

अत्र पारेकी जाति कहते हैं, जैसेकि सफेद पारा ब्राह्मण जाती है, इसे कल्पविपयमें लेना, लालरंगका पारा क्षत्रीय है यह गुटकावनानेमें ग्राह्य है, पीलेरंगका पारा वैश्यजाति है, यह धातुक्रियामें ग्रहणीय है, और कालेरंगका पारा शूद्रजाति है, अतएव इसको इतरकर्म (कलईकरनाआदि) में लेना चाहिये ।

नागोरंगोमलोवन्हिश्चांचल्यंचविपंगिरिः ।
असह्याग्निर्महादोपानिसर्गाः पारदेस्थिताः॥

अर्थ–सीसा, रांग, मल, अग्नि, चंचलता, विप, गिरिदोप और अग्निका न सहना ये महान्दोप पारेमें स्वतःस्वभावसेही स्थित हैं ।

व्रणंकुष्टंतथाजाड्यंदाहंवीर्यस्यनाशनम् । म-
रणंजडतांस्फोटंकुर्वन्त्येतेक्रमान्नृणाम् ॥५॥
तस्माद्रसस्यसंशुद्धिर्विदध्याद्भिपजांवरः ॥
शुद्धोयममृतःसाक्षाद्दोपयुक्तोरसोविपम् ६॥
दोपहीनोयदासूतस्तदामृत्युजरापहः ॥

अर्थ–ये उक्त दोप क्रमसे व्रणादि रोगोंको करते हैं जैसे पारा सीसेके दोपसे व्रण उत्पन्न क.र, रांगके दोपसे कोढ, मलके दोपसे जडता, वन्हिदोपसे दाह, चंचलतासे वीर्यनाश विपदोपसे मरण, गिरिदोपसे जडता, और अग्नि [असहन] दोपसे स्फोट (फोडा) रोगको करता है अतएव उत्तम वैद्योंको पारदकी शुद्धि अवश्य कर्त्तव्य है । शुद्धरस अमृतके तुल्य है और दोपयुक्त रस (पारा) विपके तुल्य है यदि पारा दोपहीन होवे तो मृत्यु और बुड्ढेपनाका नाशक है ।

सप्तकंचुक.

पर्पटीपाटलीभेदीद्रावीमलकरीतथा ।
अंधकारीतथाध्वांक्षीविज्ञेयाःसप्तकंचुकाः

अर्थ–अत्र पारेकी सात काँचली कहते हैं-जैसे पर्पटी, पाटली, भेदी, द्रावी, मलकरी, अंधकारी और ध्वांक्षी ए पारेकी सात काँचली हैं ।

त्रिविधदोष.

विपवन्हिमलाश्चेतिदोपामुख्यतमास्त्रयः ।
रसेमरणसंतापमूर्च्छानांहेतवःक्रमात् ॥ १॥
यौगिकौनागवंगौद्वौतौजाड्याध्मानकारकौ।
औपाधिकाःपुनश्चान्ये कीर्तिताःसप्तकंचुकाः
भूमिजागिरिजावार्जाद्वेचद्वेनागवंगजे ।
द्वादशैतेरसेदोपाःप्रोक्तारसविशारदैः ॥१२

अर्थ–कोई आचार्य पारदमें विप वान्हि और मल इन तीन दोपोंको मुख्य मानते है, तहां विपसैं मरण, वन्हीसैं संताप, और मलदोपसैं मूर्च्छा होती है, एवं नागदोप और वंगदोप ये दो दोप योगिक है-ये क्रमसे जडता और अफरेको करते हैं,- उसी प्रकार सात कांचली जो हैं वो औपाधिक दोप हैं, और भूमिज दोप, गिरिदोप तथा जल दोप मिलके ३ और नाग, वंग मिलके दो और ७ कांचलीके ये सब मिलके १२ दोप पारेमें रसशास्त्रज्ञाताओंने कहे हैं ।

प्रत्येकके दोष.

भूमिजःकुरुतेकुष्टं गिरिजोजाड्यमेवच ।
वारिजोवातसंघातदोपाढ्यंनागवंगयोः ॥
अतोदोषनिवृत्त्यर्थंरसःशोध्यःप्रयत्नतः १३

अर्थ–भूमिजन्य दोष कुष्ट करता है, गिरिजन्य दोष जडता, जलजन्य दोष वादीके रोग, और नागवंग अनेक प्रकारके अवगुण करते है अतएव दोष निवृत्तिके अर्थ यत्नपूर्वक रसका शोधन करना चाहिये ।

तस्माद्दोषनिवृत्त्यर्थं सहायैर्निपुणैर्भिषक् ।
सर्वोपस्करमादाय रसकर्मसमारभेत् ॥१४॥

अर्थ–इसीसे दोष निवृत्तिके अर्थ चतुर मनुष्योंकी सहायता करके । और संपूर्ण रस बनानेकी सामिग्री लेकर वैद्य रसकर्म प्रारंभ करे ।

शुद्धिके भेद.

व्याधौरसायनेचैव द्विविधासामकीर्त्तिता ।
याशुद्धिःकथिताव्याधौ सानेष्टाहिरसायने ।
रसायनेतुयाशुद्धिःसाव्याधावपिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–अब रसकीशुद्धि कहते है तहां रसकी शुद्धि दो प्रकारकी है एक रोगके अर्थ, और दूसरी रसायनके अर्थ, तहां जो शुद्धि रोगोंके लिये कही है वो रसायनमें नहीं करनी और जो रसायनमें कही है वह रोगमेंभी करे।

अत्यन्तोपवनेरम्ये चतुर्द्वारोपशोभिते ।
रसशालाप्रकर्त्तव्या सुविस्तीर्णामनोरमा ।
सम्यग्वातायनोपेतादिव्यचित्रैर्विचित्रिता ॥

अर्थ–अब रसशालाके लक्षण लिखतेहैं, परम रमणीय उपवनमें चार द्वारोंसे शोभित तथा सुन्दर विस्तीर्ण और मनोहर, जिसमें चारो तरफसे उत्तम पवन आतीहो ऐसी रसशाला बनानी चाहिये ।

रसशालांप्रकुर्वीत सर्वबाधाविवर्जिते ।
सर्वौपधमयेदेशे रम्यकूपसमन्विते ॥ १९ ॥
नानोपकरणोपेतां प्राकारेणसुशोभिताम् ।
शालायाःपूर्वदिग्भागेस्थापयेद्रसभैरवम् १९
वन्हिकर्मणिचाग्नेयेयाम्येपाषाणकर्मणि ।
नैऋतेशस्त्रकर्माणि वारुणेक्षालनादिकम्२०
शोषणंवायुकोणेच वेधकर्म्मोत्तरेतथा ।
स्थापनंसिद्धवस्तूनां प्रकुर्य्यादीशकोणके ।

अर्थ–जहां किसी प्रकारकी बाधा न होवे, तथा सर्व प्रकारकी औषधि विद्यमानहों और जहां रमणीक कुआ होवे, तहां रसशाला बनानी चाहिये । जिस शालमें रस बनानेके अनेक यंत्रादि उपकरण विद्यमानहों, और जिसके चारों तरफ परकोटा खिचाहो, उस रसशालाके पूर्वमें रसभैरवकी स्थापना करे, और अग्निकोणमें अग्निकर्म अर्थात् भट्टी चूल्हे आदि बनावे, दक्षिणदिशामें पाषाणकर्म (शिल, लोढा, खरल आदिको) स्थापन करे नैऋतकोणमें शस्त्रकर्म करे, पश्चिममें जलसे प्रक्षालनादिकर्म करे, वायव्यकोणमें रसका सुखाना आदिकर्म करे, उत्तर दिशामें रस वेधनादि कर्म करे, और ईशानकोणमें सिद्ध वस्तुओंका स्थापन करना चाहिये ।

अथातःसंप्रवक्ष्यामि पारदस्यविशोधनम् ।
रसोग्राह्यःशुभेकाले पलानांशतमात्रकम्२२
पंचाशत्पंचविंशद्वा दशपंचैकमेववा ।
पलादूनोनकर्त्तव्योरससंस्कारउत्तमः २३॥
बहुप्रयाससाध्यत्वा त्फलंस्वल्पंयतोभवेत् ॥

अर्थ–अब पारदका विशोधन कहते हैं, शुभकालमें १०० पल, अथवा ५० पल, वा २५ वा १० वा ५ अथवा १ पल पारा लेवे १ पलसे न्यून पारेका संस्कार न करे, क्यों-

कि इसमें परिश्रमतो अधिक होता है और फल थोड़ा मिलता है ।

मतान्तरम्.

शतंपंचाशतंवापि पंचविंशद्दशैवच ॥२४॥
पंचैकंवा पलंचैव पलार्द्धंकर्पमेववा ।
कर्षादूनंनकर्त्तव्यंरससंस्कारमुत्तमम् ॥२५॥
प्रयोगेपुचसर्वेपु यथालाभंप्रकल्पयेत् ।

अर्थ—१०० पल, वा ५० पल, वा १० पल, वा ५, अथवा १ पल, वा आधा पल, अथवा १ कर्ष पारा ले १ कर्पसे कम पारेका संस्कार न करे, और बाकीके रसप्रयोगोंमें जैसा लिखा होवे उतनाही लेवे ।

संपूज्यश्रीगुरुंकन्यां वटुकंचगणाधिपं ।
योगिनीक्षेत्रपालांश्च चतुर्द्धावलिपूर्वकम् ॥
ततोरहस्येनिलये सुमुहूर्तेविधोर्बले ।
सुदिने शुभनक्षत्रे रसशोधनमाचरेत् ।
अघोरेणचमंत्रेणरसंप्रक्ष्याल्यपूज्यच ॥२८॥

अर्थ—चतुर्द्धा बलि पूर्वक श्रीगुरु, कन्या, वटुक, गणपति, योगिनी और क्षेत्रपालका पूजन करके तदनन्तर एकान्त स्थानमें शुभनक्षत्रमें रसशोधनका प्रारंभ करे, तथा अघोरमंत्र करके रसको प्रक्षालन और पूजन करना चाहिये ।

रक्षामंत्र.

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वतःसर्वसर्वेभ्यो नमस्तेरुद्ररूपेभ्यः २९ ॥

अर्थ—यह अघोर मंत्र श्रीशिवजीका है ।

पारदके संस्कार.

अष्टादशैवसंस्कारा ऊनविंशतिकाःक्वचित् ।
संप्रोक्तारसराजस्य वसुसंख्याःक्वचिन्मताः ।

अर्थ—अब पारदके संस्कारोंको कहतेहैं जैसे कि-कहीं पारदके १८ संस्कार कहेहैं और कहीं १९ संस्कार और किसी आचार्य ने ८ ही संस्कार माने हैं उनको आगे कहते हैं।

पारदके अष्टादश संस्कार.

स्यात्स्वेदनंतदनु मर्दनमूर्च्छनं च स्यादुत्थितिःपतनरोध [बोध] नियामनानि संदीपनं गगनभक्षणमानमत्र संचारणंतदनुगर्भगतिर्द्रुतिश्च ॥ ३१ ॥ बाह्यद्रुतिःसूतकजारणा स्याद्ग्रासस्तथासारणकर्मपश्चात् संक्रामणंवेधविधिः शरीरयोगस्तथाष्टादशधात्रकर्म ॥

अर्थ—१ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन, ५ पातन, ६ रोधन, अथवा बोधन, ७ नियमन, ८ संदीपन, ९ गगनभक्षण, १० संचारण, ११ गर्भगति, १२ गर्भद्रुति, १३ बाह्यद्रुति, १४ सूतकजारण, १५ ग्रास, १६ सारणकर्म, १७ संक्रामण, १८ शरीरमें वेधविधि योग यह पारदके १८ संस्कार हैं ।

अष्टसंस्कार.

स्वेदोमर्दनमूर्च्छनोत्थितिरतः पातोऽपिभेदान्वितो । रोधः संयमनप्रदीपनमितिस्प्राष्टधासंस्कृतिः ॥अस्यासर्वरसोपयोगिकतयात्वन्याननविन्यस्यते।ग्रन्थेऽस्मिन्प्रकृतोपयोगविरहाद्विस्तारभीत्याथवा । इतिरसपद्धतौ

अर्थ—रसपद्धति वाला १ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन, ५ पातन, ६ रोधन, ७ संयमन, ८ प्रदीपन, ये पारेकी आठ प्रकारकी संस्कृति कहता है येही आठ प्रकारके संस्कार सर्व रसोपयोगी होनेसें और संस्कार नहींकहे, अथवा प्रकृतोपयोगी, नहोनेसे अथवा ग्रन्थ विस्तार भयके कारण नहीं कहे।

वृद्धवाग्भटे.

इत्यष्टौसूतसंस्काराःसमाद्रव्येरसायने ।
शेषाद्रव्योपयोगित्वान्नतेवैद्योपयोगिकाः ॥

अर्थ–वृद्ध वाग्भट लिखताहै कि ये आठही संस्कार द्रव्यमें और रसायन विधिमें समानहैं बाकी दस संस्कारजो हैं सो द्रव्योपयोगीहैं किन्तु वैद्यके उपयोगी नहीं हैं अतएव त्याज्य हैं ।

अथोनविंशति कर्माणि.

स्वेदनमर्दनमूर्च्छनउत्थापनपातनबोधमानियमनसंदीपनअनुवासनगगनादिग्रासप्रमाणचारणगर्भद्रुतियोगजारणरंजनसारणक्रामणवेधनभक्षणाख्याः ऊनविंशतिसंस्काराः सूतसिद्धिदाभवन्तिदीपनान्ता अष्टौसंस्कारावादेहसिद्धिदाभवंति ॥

अर्थ–१ स्वेदन, २ मर्दन, ३ मूर्च्छन, ४ उत्थापन, ५ पातन, ६ बोधन, ७ नियमन, दीपन, ८ अनुवासन, ९ गगनादि ग्रास प्रमाण, १० चारण, ११ गर्भद्रुति, १२ बाह्यद्रुति, १३ योग, १४ जारण, १५ रंजन, १६ सारण, १७ क्रामण, १८ वेधन, १९ भक्षणाख्य, ये पारेके १९ संस्कार सिद्धि दायक हैं । अथवा दीपनान्त संस्कार देहके सिद्धि दाता हैं ।

पारदके भेद.

अर्थ–पारेकी आरोटक, मूर्च्छित, बद्ध, और मृतए चारही अवस्थाहैं । तहां आरोटक उसे कहते हैं जो दीपनान्तादि आठ संस्कारोंसे शुद्धहुआहो और चंचल हो । अथवा दीपनान्तादि संस्कार न हुएहों केवल शिंगरफसे ही निकाला हुआहो उसेभी आरोटक कहते हैं । और यह षड्गुण गंधक जारणादि और चन्द्रोदय आदि पारेको मूर्च्छित कहते हैं, जो अग्निमें न उड़े उसे बद्धकहतेहैं । एवं जिस पारेकी भस्महोजावे उसको मृतपारा कहते हैं । ये चारों संस्कार अष्टादशसंस्कारोंके अन्तर्गत हैं अतएव अब उन अठारह संस्कारोंको क्रमसे कहते हैं ।

अथ स्वेदनसंस्कार.

नानाधान्यैर्यथाप्राप्तैस्तुपवर्जजलान्वितैः ।
मृद्भांडपूरितंरक्षेद्यावदम्लत्वमाप्नुयात् ॥
तन्मध्येवनवाग्मुंडी विष्णुक्रान्तापुनर्नवा ।
मीनाक्षीचैव सर्पाक्षीसहदेवी शतावरी ॥
त्रिफलागिरिकर्णीच हंसपादीचचित्रकः ।
समूलकाण्डंपिष्ट्वातुयथालाभंविनिक्षिपेत् ॥
पूर्वाम्लभांडमध्येतुधान्याम्लकमिदंभवेत् ।
स्वेदनादिपुसर्वत्र रसराजस्ययोजयेत् ॥
अत्यम्लमारनालंच तदभावेप्रयोजयेत् ।

अर्थ–एक मिट्टीका घड़ालेवे उसमें अनेक प्रकारके धान तुपरहितोंको भरे फिर उसमें मुखपर्य्यन्त जल भर ढककर एकान्तमें रख देवे जबतक वो पानी खट्टा न हो तबतक उसकी रक्षा करे, फिर इसघड़ेमे इन औषधियोंको और डाले नागरमोथा, ब्राह्मी, गोरखमुंडी, सफेदकोयल, सांठ, मछेकी, सरफोका, सहदेई, शतावर, त्रिफला, नीलेफूलकी कोयल, हंसपदी और चित्रक ये प्रत्येक डाली पत्ते जड़ जो २ मिलें सबको लेकर पीसे और उक्त धान्यके घड़ेमें डाल देवे तो धान्याम्ल सिद्ध होवे, जहां पारेका स्वेदन संस्कार करनाहो तहांइसधान्याम्लको लेना चाहिये । यदि यह धान्याम्लक जहां न मिले तो उसजगह अत्यन्त खट्टी कांजीलेना चाहिये ।

खरल.

खल्वोलोहमयः श्रेष्ठस्तस्माच्छ्रेष्ठश्चसारजः ।
कान्तलोहमयस्तस्मान्मर्दकश्चतथाविधः ॥

अभावेलोहखल्वस्यास्निग्धःपाषाणजःशुभः। तादृशस्वच्छमसृणमर्दकेनसमन्वितं ॥

अर्थ–पारदादि संस्कारके वास्ते लोहका खरल उत्तमहै, और लोहके खरलसे सारका उत्तमहै, एवं सारलोहके खरलसे कान्तलोहका खरल उत्तम कहाहै। और जिस लोहका खरल होवे उसीका घोटनेका मूसला होना चाहिये, यदि लोहका खरल न मिले तो उसकेअभावमें चिकने पत्थरका खरल शुभहै। और चिकना मूसलाभी होवे।

खरलका विस्तार.

खल्वयोग्याशिला नीलाश्यामास्निग्धादृढागुरुः। षोडशांगुलकोत्सेधान वांगुलकविस्तराचतुर्विंशांगुलादीर्घा घर्षणीद्वादशांगुला

खरल यंत्रं.

अर्थ–खरलयोग्य शिलनीली अर्थात् स्याहरूपा पत्थर चिकना, दृढ़ और भारी लेना उचितहै, उस पत्थरका खरल १६ अंगुल ऊंचा ९ अंगुलचौडा २४ अंगुललंबावनावे। और घोटनेकी मुसली १२ अंगुल होनी चाहिये। आजकलके वैद्य पीतल वा संगमर्मर तथा चीनी आदिकेभी खरल बनातेहैं।

त्र्यूषणंलवणंराजीमूलकं त्रिफलार्द्रकम्। महाबलानागबलामेघनादःपुनर्नवा।मेषशृंगी चित्रकंचनवसारंसमंसमं। रसस्यषोडशांशेन सर्वैर्युंज्यात्पृथक्पृथक् ॥ एतत्समस्तं व्यस्तं वापूर्वाम्लेनैवपेषयेत् ॥ ४६ ॥ भर्लिप्तेन कल्केनवस्त्रमंगुलमात्रकम् ॥ तन्मध्येनिक्षिपेत्सर्वंबध्वा तुत्रिदिनं पचेत् ॥ दोलायन्त्रेऽम्लसंयुक्ते जायते स्वेदितो रसः ॥ ४७ ॥

अर्थ–त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) नोन, राई, मूलीका रस, त्रिफला, अदरक, महाबला, नागबला, चौलाई, सांठ, मेंढासिंगी, चित्रक, और नौसादर इनको प्रत्येक पारेका सोल्हवां भाग लेवे, और इन सबको पृथक् पृथक् वा एकत्र पीस पूर्वोक्त धान्याम्लकके साथ पीसे, पीछे इसको एक अंगुलके स्वच्छ गाढे कपडेमें लेप कर धूपमें सुखालेवे, फिर उस कपडेमें पारेको बांध दोलायंत्र द्वारा उसी धान्याम्लमें औटानेसे स्वेदन संस्कार होता है।

अथवा

त्र्यूषणंलवणासूर्य्यो चित्रकार्द्रकमूलकम्। पिष्टातत्तो मुहुःस्वेद्यःकांजिकेन दिनत्रयं ॥ ४८ ॥
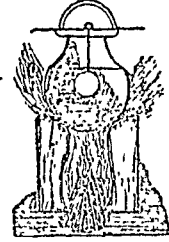
अर्थ–कोई कहता है कि त्रिकुटा, नोन, राई, चित्रक, अदरक, मूलीका रस, इन सबको पीस पूर्वोक्त विधिसे वारंवार तीन दिन स्वेदन संस्कार करे।

अन्यसिद्धमतम्

दिनंव्योषंवरावह्निःकन्याकल्केपुकांजिके ॥ रसंचतुर्गुणेवस्त्रेवध्वादोलाकृतंपचेत् ॥ ४९॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, चित्रक और घीगुवार इनका कल्क और कांजी इनमें पारेको चौलड कपडेमें बांध दोलायंत्रकी विधिसे पंचावे, तो स्वेदन संस्कार होवे।

रसस्यषोडशांशेनद्रव्यंयुंज्यात्पृथक्पृथक्। द्रव्येष्वनुक्तमानेषु मतंमानमिदंबुधैः ॥५०॥ त्रिदिनंस्वेदयेद्धर्मेदिनमेकंनिरंतरम्। स्वेदयेद्रसराजंतु नातितीक्ष्णेनवह्निना ।५१।

अर्थ–जितना पारा लेवे उसका सोलहवां भाग प्रत्येक औषधि पृथक् २ लेवे, जहां स्वेदनादि संस्कारमें औषधियोंका परिमाण न कहा हो तहां यह मान लेना चाहिये, फिर उस पारेको उक्त कांजी आदिमें डालके तीन दिन धूपमें रखकर स्वेदन करे, फिर दोलायंत्रकी विधिसे मध्यमाग्नि करके पारेका स्वेदन संस्कार करे ।

अथवा पारेके खंडत्त्व दूर करनेको स्वेदन संस्कार इस प्रकार करे, प्रथम पारेको दोलडकपडेमें बांधे फिर एक हांडीमें जलभांगरा, लोनियां, गोमा, जलपीपल, इन चारोंका रस भरके उसमें पारेकी पोटली लटका देवे, फिर उस हांडीको चूल्हेपर चढ़ाकर चारप्रहरकी दीपक अग्नि देवे, तदनन्तर पारदके मुख करनेको और पक्ष दूर करनेको मर्दन संस्कार करे।

द्वितीयमर्दनसंस्कार

गृहधूमेष्टिकाचूर्णं तथादधिगुडान्वितम् ।
लवणासुरिसंयुक्तं क्षिप्त्वासूतंविमर्दयेत् ५२
षोडशांशन्तुतद्द्रव्यंसूतमानान्नियोजयेत् ।
सूतंक्षिप्त्वासमंतेन दिनानित्रीणिमर्दयेत् ५३
जीर्णाभ्रकंतथाबीजंजीर्णसूतंतथैवच ।
नैर्मल्यार्थेहिसूतस्य खल्वेधृत्वातुमर्दयेत् ५४
गृह्णातिनिर्मलोरागान् ग्रासेग्रासेविमर्दितः ।
मर्दनाख्यंहियत्कर्म तत्सूतेगुणकृद्भवेत् ५५

अर्थ–घरका धुँआं, ईंटका चूर्ण (कूकुआ) दही, गुड, नोन, और राई इन सबको खरलमें डाल इनसे पारेको मर्दन करे । अब कहते हैं कि इस मर्दन संस्कारमें जो द्रव्य डालना लिखा है वह प्रत्येक औषधि पारेकी सोलहवां भाग डालनी चाहियें जैसे पारा चार रुपयेभर होतो प्रत्येक औषधि चार २ आनेभर डालनी चाहिये फिर उनके साथ उस पारेको तीनदिन खरल करे, जिस पारेमें जीर्णाभ्रक अथवा बीज (सोना, चांदी आदि) जीर्ण किया हो ऐसे जीर्ण पारेको निर्मल करनेके अर्थ खरलमें डालकर मर्दन करना चाहिये जैसे २ पारेको ग्रास देवे तैसे २ पारेको मर्दन करे, तो वह निर्मल पारा उत्तम रंगको गृहण करता है । जितना पारेका मर्दन संस्कार किया जावे उतनाही अधिक गुणवाला होता है अतएव मर्दन संस्कार अवश्य करे ।

अथान्यसिद्धमतम्

रक्तेष्टिकानिशाधूमसारोर्णाभस्मचूर्णकैः ॥
जंबीरद्रवसंयुक्तैर्मुहुर्मर्द्योदिनत्रयम् ॥ ५६ ॥
दिनैकंवापिसूतःस्यान्मर्दनान्निर्मलःपरम् ।
ऊर्ध्वपातनयंत्रेण गृह्णीयाच्च पुनःपुनः ॥
पटसारणतोवापि क्षालनाद्वारनालतः ५७

अर्थ–लाल ईंटका कूकुआ, हल्दीका चूर्ण, धूँआं, ऊनकीभस्म, चूना इनमें पारा मिलाकर जंभीरीके रससे तीनदिन खरल करे, अथवा एकही दिन खरल करनेसे शुद्ध होवे, फिर इस पारेको ऊर्ध्वपातन यंत्र द्वारा उड़ाकर निकाल लेवे, अथवा वस्त्रसे छानलेवे, अथवा कांजीसे धोवे तो पारा शुद्धहोवे ।

तृतीयमूर्च्छनसंस्कार

गृहकन्यामलंहन्या त्रिफलावह्निनाशिनी ॥
चित्रमूलंविषंहन्ति तस्मादेभिःप्रयत्नतः ५८
मिश्रितंसूतकंद्रव्यैः सप्तवाराणि मूर्च्छयेत् ।
इत्थंसंमूर्च्छितःसूतोदोषशून्यःप्रजायते५९॥

अर्थ–घीगुवारके रसमें घोटनेसे पारेका मलदूरहोवे, त्रिफलाके काढ़ेमें घोटनेसे पारेका अग्निदोष दूर होताहै, और चीतेके काढ़ेमें घोटनेसे विषदोष दूर होता है, अतएव इन

उक्तद्रव्योंमें यत्नपूर्वक पारा घोटना चाहिये। जो पारा अन्यद्रव्य मिश्रित है उसको सातवार मूर्च्छन करे इसप्रकार मूर्छित पारा दोषशून्य होता है।

पलत्रयंचित्रकसर्षपाणां कुमारिकन्यावृहती कषायैः ॥ दिनत्रयंमर्दितसूतकस्तु विमुच्य ते पंचमलादिदोषैः ॥ ६० ॥

अर्थ-चीतेकीछाल, सरसों, घीगुवार और कटेरी इनको तीन २ पल ले काढाकर तीनदिन पारेको मर्दन करे तो पारेके पंचमलादि दोष दूर होवें।

विशालांकोलचूर्णेन वंगदोषं विमुंचति ॥
राजवृक्षोमलंहन्ति पावकोहन्तिपावकं॥६१॥
चांचल्यंकृष्णधत्तूरस्त्रिफलाविषनाशिनी ॥
कटुत्रयंगिरिंहन्तिअसह्याग्निंत्रिकंटकः॥६२॥
प्रतिदोषंपलांशेन तत्रसूतंसकांजिकम् ॥
सुवस्त्रगालितंखल्वेसूतंक्षिप्त्वाविमर्दयेत् ॥६३
उद्धृत्यचारनालेनमृद्भाण्डेक्षालयेत्सुधीः ।
सर्वदोषविनिर्मुक्तःसर्वकंचुकवर्जितः ।
जायतेशुद्धसूतोऽयंयोजयेद्रसकर्मसु ॥ ६४ ॥

अर्थ-इन्द्रायनके फलके चूर्णमें और अंकोलके चूर्णमें पारेको घोटनेसे पारा वंगकेदोषको त्याग करता है, अमलतास पारेके मलको हरण करता है, चीतेकी छालका काढ़ा पारेका अग्निदोष नाश करता है। कालेधतूरेके रसमें घोटनेसें चांचल्यतादोष दूरहोवे, त्रिफलाका काढ़ा विषदोषको दूर करे। त्रिकुटाका काढ़ा गिरिदोष अर्थात् पर्वतके दोष जो पारेमेंहों एवं गोखरूके काढ़ेसे पारेको घोटनेसे असह्याग्निदोष दूर होता है। प्रतिदोष दूर करनेको पारेका सोलहवां भाग औषधी डाले और कांजी डाल दो २ दिन घोटे, फिर वस्त्रमें छानलेवे. फिर निकाल कांजीसे मिट्टीके पात्रमें धोवे तो पारा सर्वदोष और सातों कांचलियोंकरके रहित हो शुद्ध होवे। इस पारेको सम्पूर्ण रसकर्मोंमें डालना चाहिये।

अथ कंचुकी हरणम्.

कुमारिकाचित्रकरक्तसर्षपैः कृतैः कषायैर्बृहतीविमिश्रैः । फलत्रिकेनापि विमर्दितो रसो दिनत्रयं सप्तमलैर्विमुच्यते ॥ ६५ ॥

अर्थ-घीगुवारकारस, चित्रक, लालसरसो, कटेरी, और त्रिफला इनको पृथक २ काढ़ेमें अथवा सबका काढ़ाकर एकसाथ तीन दिन मर्दन करनेसे पारा सप्तकंचुकीदोष निर्मुक्त होता है।

चतुर्थ उत्थापन संस्कार.

ततउत्थापयेत्सूतमातपे निम्बुकार्दितम् ॥
उत्थापनावशिष्टंतु चूर्णपातनयंत्रके ।
धृत्वाग्नावूर्ध्वभांडास्संग्रहेत्पारदंभिषक् ।६६।

अर्थ-इसप्रकार मूर्च्छन संस्कार करके फिर पारेका उत्थापन संस्कार करे, पारेमें नींबूका रस डालकर घोटे जब सूखजावे तब पारेको निकाल लेवे, यदि रसके चूर्णमें पारा मिलजावे उसका पातनयंत्र द्वारा। अर्थात् डमरु यंत्रमें चढ़ाकर ऊपर लगेहुए पारेको निकाल लेवे, इसको उत्थापनसंस्कार कहते हैं।

पंचमपातनसंस्कार.

तथात्रिविधं ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्पातनम् ।

अस्मद्विरेकात्संशुद्धो रसःपात्यस्ततःपरम् ॥
उद्धृतःकांजिककाथात्पूतिदोषनिवृत्तये ।
ताम्रेणपिष्टिकांकृत्वापातयेदूर्ध्वभाजने ६८
वंगनागौपरित्यज्य शुद्धोभवतिसूतकः ।
शुल्वेनपातयेत्पिष्टिं त्रिधोर्ध्वंसप्तधात्वधः६९

अर्थ-अब पंचम पातन संस्कार कहते हैं,

पातन तीन प्रकारका है, जैसे-ऊर्ध्वपातन, अधःपातन, और तिर्यक्पातन तहां उत्थापन संस्कारमें पारदको लेकर पातन संस्कार इस प्रकार करे, कांजीके क्वाथसे पारदको निकालकर उस पारेकी दुर्गंधि दूर करनेको तांबेके पात्रमें पारे की पिष्टी भरके ऊपरके पात्रमें उसको पातनकरे तो पारा वंगदोष और नागदोष करके शुद्ध होवे तांबेके पात्रद्वारा पारेकी पिष्टीको पातनकरे, तहां तीन वार ऊर्ध्व पातन करे और सात वार अधःपातन करना चाहिये।

अथोर्ध्वपातनम्.

भागास्त्रयो रसस्यार्के भागमेकंविमर्दयेत्।
जंबीरद्रवयोगेन यावदायाति पिंडताम् ७०
तत्पिंडंतलभांडस्थमूर्ध्वभांडे जलंक्षिपेत्।
कृत्वालवालकेनापि ततःसूतं समुद्धरेत्॥
ऊर्ध्वपातनमित्युक्तं भिषग्भिःसूतसाधने ७१

अर्थ-पारा ३ भाग, ताम्रचूरा १ भाग, दोनोंको जंभीरीके रससे जबतक गोला न बंधे तब तक घोटे, फिर उस पारेके गोलेको नीचेके पात्रमें रख ऊपरके पात्रपर आलवाल (थांवला) सा बना जल भरदेवे, और नीचे अग्निदेवे फिरे उस ऊपरकी हांडीमें चिपटेहुए पारेको निकाल लेवे इसक्रिया को ऊर्ध्वपातन कहते हैं, ग्रंथान्तरमें इस ऊर्ध्वपातन यंत्रको विद्याधर यंत्र कहते हैं।

कोई कहता है कि पारेको ओंगा और सोनामक्खीके साथ घीगुवारके रसमें घोटे और पूर्वोक्त विधिसे ऊर्ध्वपातन करे।

अथाधःपातनम्.

त्रिफलाशिग्रुशिखिर्वा लवणासुरसंयुतैः।
नष्टपिष्टंरसंकृत्वा लेपयेदूर्ध्वभांडके॥ ७२॥
ऊर्ध्वभांडोदरं लिप्त्वाचाधोभांडेजलंक्षिपेत्।
संधिलेपंद्वयोःकृत्वातंयंत्रंभुविपूरयेत्॥७३॥
उपरिष्टात्पुटेद्देत्तेजलेपततिपारदः।
अधःपातनमित्युक्तं सिद्धाद्यैःसूतकर्मणि७४

अर्थ-त्रिफला, सहजनेकी छाल, ओंगा, सफेद सरसों, इनमें पारेको खरल कर पिष्टी कर उस पिष्टीको ऊपरके पात्रमें लेपकर नीचेके पात्रमें जलभर देवे दोनोंका मुख मूंद संधि लेपकर बंदकर देवे, फिर उस यंत्रको पृथ्वीमें गाड़ देवे, ऊपरके पात्रकी पैंदीमें कुक्कुटपुट देवे तो उस पुटके प्रभावसे पारा उडकर नीचेके जलपात्रमें प्रवेश करे, इस क्रियाको अधःपातन कहते हैं।

कोई आचार्य्य छाछियागंधक और पारा दोनोंको समानले कौंछके बीज, सहजनेके बीज, ओंगा, सैंधानिमक, सफेद सरसों, इनको मिलाकर जंबीरीके रससे १ दिन घोटे, फिर इस पिष्टीको ऊपरके पात्रमें लेपकर पूर्वोक्त विधिसे पारा निकाल लेवे। इसेभी अधःपातन कहते हैं।

तिर्यक्पातनम्.

घटेरसंविनिक्षिप्यसजलं घटमन्यकं॥
तिर्यङ्मुखंद्वयोःकृत्वातन्मुखंरोधयेत्सुधीः॥
रसाधोज्वालयेदग्निं यावत्सूतोजलंविशेत्।
तिर्यक्पातनमित्युक्तंसिद्धैर्नागार्जुनादिभिः।
मिश्रितौ चेन्नागवंगौ रसेविक्रयहेतुना॥
ताभ्यां स्यात्कृत्रिमोदोपस्तन्मुक्तिःपातनाश्रयात्॥ ७७॥ एवंसुसंस्कृतःसूतःपातनावधियत्नतः। सर्वदोपविनिर्मुक्तो जायते नात्रसंशयः॥ ७८॥

अर्थ-एक बड़ा घड़ा लेवे, उसमें पारा भरे और उसी प्रकारका दूसरा पात्र ले उसमें जल भरदेवे फिर कुछ तिरछे रखकर दोनोंके मुख मिला बन्द करदेवे और पारेवाले पात्रके

नीचे अग्नि जलावे जब तक कि पारा उड़कर दूसरे पात्रमें न जावे, इसको तिर्यकपातन कहते हैं। थालीयंत्र, डमरूयंत्र, और तिर्यक-पातन यंत्रोंका स्वरूप इस रसराजसुंदरके म-ध्यखंडके अंतमें है सो देख लेना।

कोई आचार्य्य पातन संस्कारके अनन्तर फिर स्वेदन करना कहते हैं।

छठावोधनसंस्कार

एवंकृदार्थितःसूतःखंडत्वमधिगच्छति।
तन्मुक्तयेऽस्यक्रियतेवोधनंकथ्यतेहितत् ७९

अर्थ-इस प्रकार संस्कृत पारा खंडत्व कहिये नपुंसकत्वको प्राप्त होता है अतएव उस नपुंसकत्वके दूर करनेके लिये अब हम छठा वोधन संस्कार कहते हैं।

विश्वामित्रकपालेवाकाचकुप्यामथापिवा।
मृष्टयंत्रुजांविनिक्षिप्यतत्रतन्मज्जनावधि ८०
पूरयेत्त्रिदिनंभूम्यांराजहस्तप्रमाणतः।
अनेनसूतराजोऽयंपंडभावंविमुंचति ॥८१॥

अर्थ-नरेली अथवा कांचकी शीशीमें पारा डालके उसमें सेंधेनिमकका पानी भरदेवे ताकि जिसमें वह पारा डूब जावे, कोई मृष्टयंत्रुजके कहनेसे स्त्रीका रज और मूत्र ग्रहण करते हैं, अर्थात् सोलह वर्षकी स्त्री जिसे कौलनी कहते है उसके आर्त्तवमें पारेको डवो देवे, फिर उस-को वंदकर सवा हाथका गड्ढा खोदके गाढ़ देवे, इस प्रकार तीन दिन गढ़ा रहने देवे इस प्रकार करनेसे पारेका नपुंसकत्व दूर होता है।

१ सूतेजलंविनिक्षिप्येति पाठांतरम्।

२ यस्यास्तुकुंचिताःकेशा श्यामायापद्मलोचना। सुरूपा तरुणीभिन्ना विस्तीर्णजघनाशुभा। संकीर्णहृदयापीनस्तनभा-रेणनम्रता। चुंबनालिंगनस्पर्शकोमलामृदुभाषिणी।अश्वत्थपत्र सदृशयोनिदेशेसुशोभिता। कृष्णपक्षेपुष्पवती सानारीकौलनी स्मृता।

सप्तमनियमनसंस्कार.

सर्पाक्षीचिंचिकावंध्याभृंगाब्दकनकांबुभिः।
दिनंसंस्वेदितःसूतोनियमात्स्थिरतांव्रजेत्

अर्थ-सरफोका, वा नागणी, इमली, वांझ-ककोडा, भांगरा, नागरमोथा, और धतूरा इन सबके रसमें १ दिन स्वेदन करनेसे पारा स्थिर होता है।

मतान्तरम्

उत्तराशाभवःस्थूलोरक्तसैंधवलोष्टकः।
तद्गर्भेरंध्रकंकृत्वासूतंतत्रविनिक्षिपेत् ॥८३॥
ततस्तुचणकक्षारंदत्वाचोपरिनिम्बुकं।
रसंक्षिप्त्वाथदातव्यंतादृग्सैंधवखोटकम् ८४
गर्त्तंकृत्वाधरागर्भेदत्वासैंधवसंयुतं।
धूलिमष्टांगुलंदत्वाकारिपंदिनसप्तकम् ॥८५॥
वह्निमज्ज्वाल्यतद्ग्राह्यंक्षालयेत्कांजिकेनतु।
अयंनियमनोनामसंस्कारोगदितोवुधैः।
अभावेचणकक्षारादर्पयेन्नवसादरम् ॥८६॥

अर्थ-उत्तरकी दिशामें लालरंगका सैंधव पापाण होता है, उस पत्थरके वीचमें छेद करके उसमें पारा भर देवे, और उस पारेके ऊपर चनाखार भरके नींबूका रस भरदेवे, फिर उसी सैंधव पापाणके टुकडेसे उसका मुख वंद करे और पृथ्वीमें गड्ढा खोदकर उसमें पारे वाले पत्थरको रख अठारह अंगुल ऊंची मिट्टी देकर दाव देवे, फिर उसके ऊपर सात दिन अग्नि जलाकर उस पारेको निकालले और कांजीसें धोडाले, इस क्रियाको नियमन सं-स्कार कहते हैं यदि नियमन संस्कारमें चना-खार नमिले तो नोसद्दर डाले अथवा सज्जीखार डाले इस प्रकार भास्कराचार्य्यने कहा है।

अष्टमदीपनसंस्कार

काशीसंपञ्चलवणंराजिकामरिचानिच।

भूशिग्रुबीजमेकत्रटंकणेनसमन्वितम् ॥ ८७॥ आलोड्यकांजिकेदोलायंत्रेपाच्योत्रिभिर्दिनैः। दीपनंजायतेसम्यक्सूतराजस्यचोत्तमम्

अर्थ–कसीस, पांचोंनोन, राई, मिरच, सहजनेके बीज, और सुहागा, इन सबको कांजीमें मिलावे, फिर इस कांजीमें पारेको दोलायंत्रकी विधिसे तीन दिन पचावे तो पारदमें दीपन संस्कार होवे।

अथवा पारेको चीतेके रसमें और कांजीमें दोलायंत्रकी विधिसे पचावे तो रसराजका परमोत्तम दीपन होवे।

अथअनुवासनसंस्कार

दीपितंरसराजन्तुजंबीररससंयुतं। दिनंकंधारयेद्घर्मेमृत्पात्रेवाशिलोद्भवे ॥८९

अर्थ–दीपित पारेको १ दिन जंबीरीके रसमें डालके मिट्टी या पत्थरके बरतनमें भरके धूपमें रखे यह अनुवासन संस्कार है।

अनुवासनांत नौ संस्कारों करके जो शुद्ध पारा है वह अष्टमांश शेष रहता है।

स्वेदनादिनवकर्मसंस्कृतःसप्तकंचुकविवर्जितोभवेत्। अष्टमांशमवशिष्यतेतदाशुद्धसूतइतिकथ्यतेतदा ॥ ९० ॥

अर्थ–स्वेदनादि नौ संस्कारोंसें पारा सातों कांचलियों करके वर्जित होता है और अष्टमांश शेष रहता है अर्थात् पारेमें सात भाग कंचुकी हैं जब शुद्ध होता है तब कंचुकीके सात भाग चले जाते हैं केवल आठवां भाग पारद मात्रका रहता है उसको शुद्ध पारा कहते हैं।

अथवाहिंगुलात्सूतंग्राह्येत्तन्निगद्यते। जंबीरनिंबुनिरेणमर्दितोहिंगुलोदिनम् ९१ ऊर्ध्वपातनयंत्रेणग्राह्यःस्यान्निर्मलोरसः। कंचुकैर्नागवंगाद्यैर्निर्मुक्तोरसकर्मणि। विनाकर्माष्टकेनैवसूतोऽयंसर्वकर्मकृत् ॥९२॥

अर्थ–अथवा हींगलूमेंसे पारा निकाले उसके निकालनेकी विधि कहते हैं, हींगलूकी डलीको खरलमें पीस जंबीरी या नींबूके रससे एक दिन खरल करे, फिर इसको ऊर्ध्वपातन यंत्र अर्थात् डमरू यंत्रद्वारा उडाय लेवे तो यह पारा कंचुकी और नागवंग आदि दोषों करके रहित और निर्मल होता है यह पारा विना अष्ट संस्कारकेही शुद्ध होता है. इसको संपूर्ण कर्मोंमें ग्रहण करना चाहिये।

निम्बूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम्। पिष्टाद्‌रदयूर्ध्वंच्चपातयेत्सूतयुक्तितः ॥९३॥ ततःशुद्धतरंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् ९४

अर्थ–शिंगरफकी डलीको नींबूके रस या नींबके पत्तोंके रसमें १ प्रहर घोटे, फिर डमरूयंत्रमें भर दोप्रहरकी अग्नि देकर पारेको उडालेवे. तो यह पारा सप्त कंचुकी और सर्व दोष रहित हो. इसको सर्व योगोंमें डालना चाहिये।

तप्तखल्वद्वाराशुद्धी.

भूगर्त्तेऽजशकृत्तुषानलपुटैःसंस्थापितेलोहजे। खल्वेजंभलकांजिकेनबलिनासार्द्धंदशांशेनसः। संमर्द्यःपरिपातयंत्रविधिनानिष्कासितःसप्तधा। शुद्धःपारदकर्मठैर्निगदितोवैद्यैरवैद्येतरैः ॥ ९५ ॥

तप्तखल्वम्.

अर्थ–पृथ्वीमें एक गढ्ढा खोदे उसमें बकरीकी मेंगनी, भूसा भरके अग्नि जलावे, उस के ऊपर लोहका खरल रखकर पारेका दशांश गंधक लेवे, इसको जंभीरीका रस और कांजीमें घोटे इस प्रकार

सात वार पारेको खरल करे और उडा लेवे तो पारेके कर्मकर्त्ताओंने यह शुद्ध पारा कहा है ।

एकेनलशुनेनापिशुद्धोभवतिपारदः ।
तप्तखल्वेमासमेकंपिष्टोलवणसंयुतः ॥ ९६ ॥

अर्थ–एक लहसनकेही रसमें पारेको घोटनेसै शुद्ध होता है इसको एक महीनेतप्तखल्वमें निमक डालकर उक्त रसमें, घोटे तब शुद्ध हो ।

शोधितस्यमुखकरणं पक्षछेदनं.

विषोपविषकैर्मर्द्यः प्रत्येकंदिनसप्तकं ।
तेनास्यजायतेवन्हिःपक्षछेदंमुखंतथा ॥९७॥

अर्थ–शुद्धपारेको विष उपविषोंसे पृथक् २ सात २ दिन घोटे तो उस पारेके क्षुधा प्रगट हो तथा पक्षछेद हो और मुख होवे ।

नवविष.

कालकूटोवत्सनाभःशृंगिकश्चप्रदीपनः ।
हालाहलोब्रह्मपुत्रोहारिद्रःसक्तुकस्तथा ।
सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ताविषभेदाअमीनव ९८

अर्थ–कालकूट, वत्सनाभ, शृंगिक, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक, सक्तुक और सौराष्ट्रक, ये विषके नौ भेद कहे है इन प्रत्येक विषोंमें सात २ दिन घोटके डमरूयंत्रमें पारेको उड़ाय लेवे ।

उपविष.

अर्कसेहुंडधत्तूरलांगलीकरवीरकाः ।
गुंजाहिफेनावित्येताःसप्तोपविषजातयः ॥
एतैर्विमर्दितःसूतश्छिन्नपक्षश्चजायते ॥
मुखंचजायतेतस्य धातूंश्चग्रसतेत्वरं ॥१००॥

अर्थ–आक, थूहर, धतूरा, कलहारी, कनेर, घूंघची और अफीम ये सात उपविषकी जाति हैं, इन विष और उपविषोंमें सात २ वार घोटनेसे पारेके पंख दूर होवें, और मुख होवे । तथा शीघ्र सुवर्णादि धातुओंको ग्रसे, परंतु नो विषोंका मिलना कठिन है इससे केवल सिंगियाविष और सातों उपविषोंमें सात २ दिन घोटके दो प्रहरकी आंचदे उड़ाय लेवे, परन्तु यहभी अवश्य स्मरण रहे कि दो प्रहरमें सब पारा नउड़े तो फिर अग्नि देकर शेष पारेको उडावे. और पारा उड़ते समय ऊपरकी हांडीपर शीतल जलका पुचारा देता रहे कि जिससे उड़ाहुआ पारा जमता जावे ।

सास्योरसःस्यात्पटुशिग्रुतुत्थैःसराजिकैःसोपणकैस्त्रिरात्रं ॥ पिष्टस्ततःस्विन्नतनुःसुवर्णमुखानयंखादतिसर्वधातून् ॥ १०१ ॥

अर्थ–सैंधानिमक, सहजनेकेबीजोंका चूरा, लीलाथोथा, राई, पीपल, अथवा त्रिकुटा इन सब औषधियोंमें तीन दिन खरल करे, फिर इस पारेका स्वेदन संस्कार करे, तो पारा सुवर्णादि संपूर्ण धातुओंको भक्षण करे ।

अथपड्विन्दुकीटैश्चरसोमर्द्यस्त्रिवासरम्[1] ।
लवणाम्लैर्मुखंतस्यजायतेधातुघस्मरम् १०२

अर्थ–अथवा षडविन्दु कीट (छःबूँदके विषैल कीडे) के रससे नोन और खटाई डालके घोटे तो पारेके मुख हो तथा सुवर्णादि धातुओंको शीघ्र भक्षण करे [छःबूँदका कीडा काला २ होता है और इसके ऊपर पीले रंगकी छःबूंद होती है इसका काटा हुआ मनुष्य मरजाता है]. ।

अथवात्रिकुटाक्षारौराजीलवणपंचकम् ।
रसोनोनवसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः ॥१०३
समांशैःपारदादेतैर्जंबीरेणद्रवेणच ॥
निंवुतोयैःकांजिकैर्वासोष्णेखल्वेविमर्दयेत् ॥
अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुकरंमुखम् ॥१०४

अर्थ–अथवा त्रिकुटा, सज्जीखार, जवा-

[1] अथवाविन्दुलीकीटैरित्यपिपाठः ।

खार, राई, पांचोंनोन, लहसन, नोसद्दर, और सहँजना इन सबको पारेके समान लेकर जंमीरीके रससे या नींबूके रस अथवा कांजीसे तप्त खरलमें तीन दिनरात खरलकरे तो पारेके धातुका ग्रसनेवाला मुख होवे ।

उक्तौषधिरसैर्वस्त्रेदोलायंत्रेविपाचयेत् । अवशिष्टरसैःपश्चान्मर्दयेत्पाचयेदपि १०५ मर्दनाख्यंहियत्कर्मतत्सूतेगुणकृद्भवेत् ॥ पुनर्विमर्दयेत्तस्माच्चतुर्दशदिन्यान्यमुम् १०६ इत्थंपातनयानपुंसकममुंयत्नेनरुद्धांवरे ॥ सिंधुव्यूषणमूलकार्द्रहुतभुग्राज्यादिकल्कान्विते ॥ भांडेकांजिकपूरितेदृढतरेभव्येशुभेवासरे ॥दोलायंत्रविधानवित्त्रिदिवसंमंदाग्निनास्वेदयेत् ॥ १०७ ॥ स्वेदनदीपनतोऽसौग्रासार्थे जायतेसुतः । दीपितमेनंसूतंजंबीराम्लेनधारयेद्घर्मे ॥ १०८ ॥ दिनमनुवासनमेवंनवमंसंस्कारमिच्छंति ।

अर्थ—पारेको पूर्वोक्त औषधि (जलभांगरा, लोनियां, गोमां और जल पीपल) के रसोंमें फिर मर्दनाख्य संस्कार करे, इस प्रकार उक्त चारों औषधियोंके रसमें १४ दिन खरल करे, इसका कारण यह है कि बहुत मर्दन करनेसे पारेमें विशेषगुण बढ़ता है, फिर १४ दिन उपरान्त पूर्वोक्त उत्थापन संस्कार करे, पीछे पारदका खंडत्व दूर करनेको दूसरी बार इस प्रकार स्वेदन संस्कार करे । सैंधानिमक, सोंठ, मिरच, पीपल, मूलीके बीज, अदरक, चीता और राई इन सब औषधियोंको छदाम २ भर लेवे और सबको कांजीमें पीसकर किसी स्वच्छ कपड़ेमें चार प्रहर पर्य्यन्त खूब लेप करे, फिर उस कपड़ेकी चार तह कर उसमें पारा बांधकर हांडीमें दोलायंत्र करके लटका देवे; फिर उस हांडीमें १९ सेर कांजी भरके तीन दिन धीमी आंचसैं स्वेदन संस्कार करे, स्वेदन संस्कारसे पारेमें दीपन संस्कार होता है, और दीपन संस्कारसैं पारा भूंखा होकर धातु खानेको समर्थ होता है, तथा पारेका पंडत्व कहिये निर्बलता दूर हो और बली होता है । फिर इसको वस्त्रसे निकाल इस प्रकार अनुवासन संस्कार करे कि एक हांडीमें पारा डाल उसमें कागजी नींबूका रस डाले एक दिन धूपमें रख देवे पीछे निकाललेवे यह अनुवासन संस्कार है ।

सहस्रनिंबूफलतोयघृष्टोरसोभवेद्वन्हिसमप्रभावः ॥ १०९ ॥

अर्थ—हजार नींबूके रसमें पारेको घोटनेसे पारा शुद्ध और भूंखा होता है, अथवा पारेको क्षारवर्गमें और अम्लवर्गमें घोटनेसे पारेके मुख और क्षुधा प्रगट होवे, सो ग्रन्थान्तरमें लिखाभी है । यथा

ततःखल्वेनतप्तेनअम्लेनोत्थापयेद्रसम् । क्षारामुखकराःसर्वेसर्वेअम्लाप्रबोधकाः १०

अर्थ—पारेको तप्तखल्वमें अम्लवर्गके रसमें डाल उत्थापन संस्कार करे क्योंकि सब क्षार मुखके कर्त्ता हैं. और सब अम्ल बोधक हैं ।

अथाम्लवर्ग.

अंमलवेत, जंभीरी, नीबूं, बिजौरा, लोनियां, चनाखार, इमली, बेर, अनारदाना, अंबष्टा, तंतिडीकें, नारंगी, रसपत्री, करोंदा, चूकोइनसे आदिले औरभी जो खट्टी औषधियां हैं उनको अम्लवर्ग कहते हैं । और जिनपर अंक है उनको अम्लपंचक कहते हैं, परंतु सब खटाइयोंमें चनाखार और अम्लवेतकी खटाई श्रेष्ठ है।

क्षारवर्ग.

पलासक्षार, मोखावृक्षकाक्षार जवाखार, सज्जीखार, तिलकाखार, सुहागा, ये क्षारवर्ग है इनमें. सुहागेको त्याग क्षारपंचक कहाते है और जवाखार, सज्जीखार, सुहागा ये क्षारत्रय कहाते हैं।

तथाच.

क्षाराम्लैर्लवणैर्मूत्रैर्विषैरुपविषैस्तथा ।
दिव्यौषधिसमूहेनमर्दयेद्दिवसत्रयम् ।
पारदस्यकलांशेनभेषजेनप्रमर्दयेत् ॥१११॥

अर्थ–क्षारवर्ग. अम्लवर्ग, लवणवर्ग, मूत्रवर्ग विषवर्ग, उपविषवर्ग, और ६४ दिव्य औषधि इन प्रत्येकमें तीन ३ दिन घोटे तो पारा शुद्ध होवे, और बहुतसे वैद्योंने पारदको दुग्धवर्ग, मूत्रवर्ग, तैलवर्ग, वसावर्ग, कृष्णवर्ग, शुक्लवर्ग, रक्तवर्ग कामकवर्ग, पीतवर्ग, मृत्तिकावर्ग, इनमें घोटना लिखा है. वो हमनें ग्रंथविस्तारके भयसे और पारदके सिद्धि करनेवालेंके अतिपरिश्रम बचानेके लिये नहीं लिखे, अब पारेका मूर्च्छा प्रकार लिखते हैं। प्रगटहोकि मूर्च्छा प्रकार दोप्रकारका है. एक गंधकके योगसे, दूसरा गंधक रहित अर्थात् औषधियोंसे अब औषधियोंके द्वारा मूर्च्छाका वर्णन करचुके हैं(विषैप विषकैर्मर्धैः इत्यादि) अब गंधकके संयोगसे होनेवाले चंद्रोदय आदिको लिखते हैं।

चन्द्रोदयकी प्रथम विधि.

ततस्तस्माद्विनिष्कास्यपारदंतोलयेद्भिषक् ।
तत्तुल्यंगंधकंदत्त्वाकुर्य्यात्कज्जलिकांद्वयोः ॥
द्रोणांवुकणयोर्नीरैर्मर्दयेच्चदिनद्वयम् ।
संशोष्यवालुकायंत्रेयामानष्टौततःपचेत् ।
मंदमग्निंततःकुर्य्यादाद्येयामचतुष्टये ।
ततोद्वितीयेयत्नेनतीव्रमग्निंप्रयोजयेत् ।
ततःकूप्यांसमुद्धृत्यपारदस्यास्यचक्रिकां ।
तत्पृष्ठलग्नंगंधंचदूरीकृत्यविचक्षणैः।
पुनस्तयोरसैरेनंमर्दयेदेकवासरम् ।
चतुर्य्यामंपचेदग्नौ तेनजीर्य्यतिगंधकः ॥

अर्थ– पूर्वोक्त प्रकारसे पारेको शुद्ध करचुके तब तोले यदि पारा १६ पैसे भर होवे तो शोधीहुई आमलासार गंधक १६ पैसे भर लेवे [गंधक शुद्ध करनेकी क्रिया आगे गंधकप्रकरणमें लिखेंगे] इन दोनोंको खरलमें डाल कजली करे, इसमें जलपीपल जिसको पूरवके वैद्य गंगतिरिया कहते हैं. और मध्यदेशवाले पनसगा कहते हैं, और गुमां इन दोनोंके रसमें उस कजलीको दोदिन घोटे, जब सूखजाय तव सेरभरकी आतसी शीशीपर कपडमिट्टी कर सुखालेवे और इस कज्जलीको उसमें भर एक सुंदर हांडीमें रखे, हांडीके नीचे पैसे से ड्योढा छेद करे, और छेदके गिर्द गीलीमिट्टी लगावे, जिससे हांडीकी बारू ननिकले और छेदके नीचे एक लंबी ठीकरीके दोनों वगलके छेद खुले रहें. उसके ऊपर सीसी धरे औरहांडीको मुख पर्य्यंत वालू (रेत)से भरदेवे, परंतु शीशीकी गर्दन वालूसे बाहर रहे. फिर चूल्हेपर चढाकरदो लकडीकी आंच ४ प्रहर मंद और ४ प्रहर तेज देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तव शीशीको फोडकर पारेकीचांदीको निकाल लेवे, उसमें जो गंधककी राख लगी होवे उसको छुरीसे छुड़ाडाले और उस चांदीको खरलमें डालकर पीसे, पीछे गुमां और जल पिप्पलीके रसमें १दिन घोटे जब सूख जाय तव पूर्वोक्त प्रकारसे शीशीमें भरकर वालुका यंत्रमें ४ प्रहरकी मन्दाग्नि देवे, जिससे अवसिष्ट गंधक जलजाय तदनंतर गंधकके जलनेकी परीक्षा करे.

अथ गंधकजीर्णकी परीक्षा.

याममेकंपरित्यज्य यामेषुत्रिषुबुद्धिमान् ।
प्रतियामार्द्धकंकूप्यांक्षित्वादीर्घतृणंदृढं ।
गंधस्यतेनकर्त्तव्योजीर्णाजीर्णस्यनिर्णयः ।
जीर्णेगंधेविदग्धंस्यादजीर्णेगंधकान्वितम् ॥

अर्थ–जब अग्निदेय तब पहिले प्रहर परीक्षा न करे, दूसरे, प्रहरसे लेकर तीसरे प्रहरतक परीक्षा करे, दूसरे प्रहरकी जब चारघड़ी बीतजायँ तब कड़ी और लंबी एक सींक शीशीमें डाले, जो सींक जली निकले तो जानेकि गंधक जलगयी, तब उस शीशीको अग्निसे उतारलेवे नहीं तो सब गंधक जलजायगी, और पारा गंधकजलजानेपर उड़जाता है, गंधकके आश्रयसेही पारा अग्निपर ठहरता है, और जो पिघलीगंधक संयुक्त सींक निकले तो जानेकि गंधक जीर्ण नहीं हुआ, तब फिर निर्भय होकर आंच देवे, जब तक गंधक जीर्ण न होवे, तीसरे प्रहरकी चारघड़ी उपरान्त फिर परीक्षा करे, तथा चौथे प्रहरकी चारघडी उपरान्त परीक्षा करे, जब गंधक जलजावे तब आंचपरसे उतार शीशीको फोड़ पारेकी चांदीको निकाल लेवे, और चांदीमें जो गंधककी राख लगीहो उसे छुरीसे छुडाकर साफ करलेवे ।

जीर्णगंधंरसंज्ञात्वा तोलयेत्कुशलोभिषक् ।
ततोगंधचतुर्थांशंदत्त्वासूतंविमर्दयेम् ।
पूर्वोक्तयोरसैर्मर्द्यचतुर्यामंचपाचयेत् ।
स्वांगशीतलमूत्तार्यविषंकर्षमितंक्षिपेत् ।
दृढंविमर्दयेत्सूतंतयोरेवरसैर्दिनम् ।
मंदाग्निनापचेत्पश्चाच्चतुर्याममतंद्रितः ।
निर्मुक्तगंधकस्तर्हिजायतेऽसौरसेश्वरः ।
अंतेतुलितसूतेनतुल्यमानोयदाभवेत् ।
तदासिद्धःपरिज्ञेयोरसश्चंद्रोदयोबुधैः ॥

अर्थ–फिर इस चांदीको तोलकर देखे कि पहिलेकी बराबर है या कम यह विचार करके इसमें पारेका चतुर्थांश यानी ४ पैसाभर शुद्ध गंधक डाले, फिर दोनोंकी कजलीकर गोमा और जलपिप्पलीके रसमें एक दिन घोटे, फिर सुखाय आतिशी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें ४ प्रहरकी मंदाग्नि देवे, जिससे दो पैसा भर गंधक जलजाय । एक प्रहर तेज आंच देनेसे पैसाभर गंधक जलती है और इतनेही समयमें मंदाग्निसे धेलेभर जलती है, यह सिद्धान्त है । इस हिसाबसे ४ प्रहरकी मंदआंचसे दो पैसेभर गंधक जलती हैं, जब दो पैसेभर गंधक जलजाय तब शीशीको फोड़कर चांदी निकाललै और गंधककी राखको छुरीसे दूर करे, फिर खरलमें डाल धेलाभर शुद्ध सिंगियाविष डाले, [सिंगियाविषका शोधन विषप्रकर्णमें लिखेंगे,] फिर इसमें गंधक न डाले, एक दिन गोमा और जलपिप्पलीके रसमें घोटकर पूर्वोक्त प्रकार वालुकायंत्रमें ४ प्रहरकी आंच देवे, आंच देनेके निमित्त बंबूलकी लकड़ी चार अथवा पांच अंगुल मोटी और हाथभर लंबी लेना उचित है, ऐसे आंच देनेसे अवशिष्ट गंधक जलजाय, और विष डालनेसे चांदी, गंधककी राख छोडकर बैठती है, छुरीसे खुरचनेकी अपेक्षा नहीं रहती फिर चांदी तोलनेसे पहलीकी बराबर हो तो जानेकी चंद्रोदय सिद्ध होगया, और जो तोलमें अधिक होतो फिर गूमा और जलपिप्पलीके रसमें एक दिन घोटकर चार प्रहरकी दीपक अग्नि देवे अधिक आंच देनेसे पारा उड़जाता है ऐसा कईबार होचुका है, इसलिये मंदीआंच देवे, अथवा ४ पैसेभर सौं धासीसा पिघलाकर १६

पैसेभर पारेमें मिलाकर शीतल करलेवे. तब १६ पैसाभर गंधक मिलाकर पूर्वोक्त प्रकारसे आरंभ करे, तो तेज आंचसेभी पारा न उडे, इस बातको कोई वैद्य नहीं जानता कल्याणभट्ट कहते हैं कि मैने यह किया है इसलिये सब वैद्योंके वास्ते लिखदिया है। इस चन्द्रोदयको पीसकर पक्की शीशीमें रख छोडे। इति चन्द्रोदयकी पहली विधि समाप्त।

अथगुणाः

सद्योजीर्णविपाचनोऽग्निजननोविड्बंधतृट्वांतिनुत् । मूत्रस्रावमपाकरोति मदनप्रोद्बोधकर्त्तारतौ ॥ मूर्च्छांहन्तिसहिक्कपुमधुयुतो वल्यःप्रभादार्ढ्यकृत् । शैत्यंस्वेदहरःप्रमेहमथनश्चन्द्रोदयाख्योरसः ॥ कासेश्वासेफिरंगाख्येरोगेचपरमोहितः । अपिवैद्यशतैस्त्यक्तामरुचिंचनियच्छति ।

अर्थ–चन्द्रोदय और लौंग दोनों एक २ तोला ले मिलाकर खरलमें एकघडी घोटे, फिर इसकी दो २ रत्तीकी पुडियां बांधे, रोगीको एक पुडिया खानेको देवे तो अजीर्णका शीघ्र नाश करे, और भूंख बढावे, बद्धकोष्टको दूर करे, तृषा और वमनको दूर करे, तथा मूत्रस्रावका शमन करे, कामदेवको बढावे, और मूर्च्छा हिचकी दूर होवे; बल और कान्ति बढावे, प्रसूत अथवा सन्निपातसे शीतल हुई देहको और चलते हुए पसीनोंको दूर करे, प्रमेह, खांसी, श्वास और फिरंगवातको दूर करे, ज्वर दूर होनेके बाद जो अरुचि रहती है कि जिसके अठारह दिन रहनेसे रोगी मरजाता है वो इस चन्द्रोदयके खानेसे दूर होती है।

चंद्रोदयकी दुसरी विधि.

पलद्वयंसुवर्णस्यसूतस्याष्टौचमर्दयेत् । एकीभूतेचगंधस्यपलंषोडशकंक्षिपेत् । शोणकार्पासकुसुमैः कन्याभिर्मर्दयेत्पृथक् । काचकूप्यांचसंरुध्यवालुकायंत्रगंत्र्यहम् । पचेत्सिद्धोरसःसस्याच्छ्रेष्ठश्चन्द्रोदयाभिधः ।

अर्थ–सोनेके वर्क ४ पैसेभर, शुद्धपारा १६ पैसे भर, दोनोंको मिलाकर घोटे, जब मिलजायँ तब सुधाहुआ गंधक ३२ पैसेभर डालकर नादनवन रुईके फूलकेसाथ १ दिन घोटे, एक दिन घीगुवारके रसमें घोटे, फिर सुखाकर शीशीमें भरलेवे, और शीशीपर सात कपरमिट्टी करे, और पूर्वोक्त प्रकार वालुकायंत्रमें रखकर चार २ अंगुल मोटी बंबूलकी दो लकड़ियोंकी अठारह प्रहर आंच देवे, जब चार प्रहर बाकी रहैं, तब शीशीका मुख गुड़ और चूनेसे बन्द करदेवे, जब शीतल होजावे तब उतार शीशीको तोडे और ऊपरकी लालरंगकी कटोरी निकाल लेवे, यह चन्द्रोदय सर्वोत्तम है।

अथ खानेकी विधि.

जातीफलंसकर्पूरंलवंगंमरिचानिच । पृथग्रससमानिस्युः कस्तूरीरसदिग्लवाः । मासोस्यभक्ष्यःपर्णेनजरारोगविनाशनः । सुप्रभातेतदाभ्यासाद्विपंचविषत्वारिच । सर्वेप्रशममायांतिशीघ्रमेवनसंशयः । केचिच्चतुर्गुणान्याहुःकर्पूरादीनितद्रसात् ।

अर्थ–चन्द्रोदय, जायफल, भीमसेनीकपूर, लौंग, कालीमिरच, प्रत्येक १ रत्ती कस्तूरी पौने तीन चांवल, इनको साथ मिलाकर खानेसे बहुत गुणकरे, वालोंकी सफेदी बुढापेमें देहकी सिकुड़न इनको दूरकरे, अजीर्णका शीघ्र नाश करे, भूँक बढावे, विषमात्रके रोगोंको शांति करे तथा विषैल पानीके पीनेसे जो रोग होवे. उनको दूर करे।

चन्द्रोदयकी तीसरी विधि.

रसंशुद्धतरंबद्धं स्थापयेत्खल्वशोभने ।
आनयेद्गंधकंपीतं महादिव्यंमनोहरम् ।
गोदुग्धेनतुसंशुद्धं समभागंप्रकल्पयेत् ।
गंधार्धन्तुशिलांरक्तांतालकंचैवतत्समं ।
सूर्य्यावर्त्तरसैर्दिव्यै मर्दयेच्चदिनत्रयम् ।
छायाशुष्केतुसंयाते तीक्ष्णतैलेनभावयेत् ।
उक्तभावेनसंदत्तेशोषयेद्यत्नपूर्वकम् ।
काचकुप्यांकृतंतच्च वालुकेनहठाग्निना ।
एकादशदिनान्येवं पाचयेत्परमंरसं ।
स्वांगशीतलमुत्तार्य लोहखल्वेच निःक्षिपेत् ।
पुनर्गंधत्रयंप्रोक्तोभावेनभावितंमतम् ।
मर्दयेत्पूर्ववत्सम्यक्पुनः शीशींनिधापयेत् ।
पुनर्विपाचयेत्सम्यगेकादशदिनान्यमुं ।
पाचितंरसराजंतु स्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
पुनर्विमर्दयेदेनं पूर्वोक्तेनरसेनहि ।
अवसिष्टस्यगंधस्यपाकार्थंतुपुनःपचेत् ।
संसिद्धेरसराजेतुजायतेसिद्धिसाधनम् ।

अर्थ–पूर्वोक्त रीतिसे शुद्ध और वद्ध पारा लेवे, और पारेकी वरावर गौके दूधसे शुद्ध की हुई गंधक (आमलासार) लेवे, और गंधकसे आधा मैनसिलका सत्व अग्निस्थाई लेवे, और इतनाही हरितालका सत्व अग्निस्थाई लेवे, प्रथम पारे गंधककी कजली करे, फिर इस कजलीमें दोनों सत्व डाल हुरहुरके रससे तीन दिन घोंटे, जव सूखजाय तव एक वड़ी आतिशी शीशीमें भरकर शीशीको वालुका यंत्रमें रखे, और हांडीके नीचे छेद न करे। और सोलह दिन तेज आंच देवे, जव सीतल हो तव शीशीको फोड़कर पारेकी चांदी निकाल ले। और चांदीकी राख छुरीसे दूर करे, फिर और गंधक न डाले और हुरहुरके रसमें दो दिन घोटे, फिर दूसरी शीशीमें भर वालुका यंत्रमें हांडीके नीचे छेदकर चार प्रहरकी आंच देवे, परन्तु मंद आंच दे, जिससे अवशिष्ट गंधक जलजाय, पीछे शीशी फोड़कर चांदी निकाल लेवे, पींठकी राख छुरीसे दूर करे फिर चांदी और छःपैसेभर सुधी गंधकको खरलमें डाल हुरहुरके रसमें तीन दिन घोटकर शीशीमें भर वालुकायंत्रमें हांडीके नीचे छेदकर चार प्रहरकी मन्दाग्नि देकर उडालेवे, फिर शीशीको फोड़ चांदी निकाल लेवे, और पीठकी राख दूरकर धेलेभर विषडाल हुरहुरके रसमें तीन दिन घोटे, एक दिनं राईके तेलमें घोट फिर हुरहुरके रससे तीन दिन घोटे। फिर शीशीमें भर हांडीके नीचे छेदकर वालुकायंत्रमें चार प्रहरकी मन्दाग्नि देवे जिससे अवशिष्ट गंधक जलजाय, फिर चांदीको निकाल उसकी राखको छुरीसे दूर करे, फिर छःपैसाभर गंधक डालकर हुरहुरके रससे तीन दिन घोटे, और एक दिन राईके तेलमें घोटे, फिर हुलहुलके रसमें तीन दिन घोटे और शीशीमें भरकर चार प्रहरकी मन्दाग्नि वालुका यंत्रमें देवे। फिर शीशीमेंसे चांदीको निकालकर छुरीसे उसकी पीठकी राखको छुटा डाले और धेलाभर विषका चूर्ण इसमें डालकर हुलहुलके रसमे तीन दिन घोटे, और एक दिन राईके तेलमें घोटे, पश्चात् हुलहुलके रसमें तीन दिन घोटे फिर शीशीमें भरकर चार प्रहरकी मंदाग्नि देवे, जिससे अवशिष्ट गंधक जलजाय तदनन्तर शीशीको फोड़ चांदी निकाल लेवे, और उसकी पीठकी राखको छुरीसे दूरकर खरलमें डाल पीसलेवे, पश्चात् दो वार छः २ पैसाभर गंधक डाल हुलहुलके रसमें घोटे और हर दफे धेले-

धेलेभर विष डालकर उड़ावे और पूर्वरीतिसे अवशिष्ट गंधकको जारण करता जाय तो यह चन्द्रोदय परम दुर्लभ बनकर तयार होवे, और सर्व कामना पूर्ण करे ।

शुद्धशुल्वेप्रदातव्यं सहस्रांशेनवेधयेत् ।
सुवर्णंजायतेशुद्धं यथाजांबूनदोद्भवम् ॥
तिलमात्रप्रयोगेणतांबूलेनमहेश्वरि ।
जायतेप्रबलाबुद्धिर्बलंभीमसमंभवेत् ॥
सप्तरात्रिप्रयोगेण जायतेनात्रसंशयः ।
अनेनक्रममार्गेण भक्षयेत्सुभगैर्नरैः ॥

अर्थ–शुद्ध तांबेमें इसको डाले तो दिव्य सुवर्ण होजाय, एक रत्ती लैंग चूर्णके साथ तिलमात्र रोज खानेसे सात दिनमें बुद्धीको तीव्र करे, और भीमसेनके समान बल करे, भूँख बढावे, रुधिर विकारको और सर्व रोग मात्रोंको यथायोग्य अनुपानके साथ देनेसे दूर करे । इति तृतीय विधि.

अथवा पारा और गंधक दोनोंको सोलह २ पैसेभर लेकर दोनोंकी कजली करे और इसमें डेढ़ पैसेभर विषका चूर्ण डाले और पूर्वोक्त प्रकारसे शीशीमें भर हांडीमें रखे और वालू भर देवे पश्चात् ९ प्रहर तेज आंच देवे फिर मंद करे और शीशीका मुंह खुला रहनेदे जिससे उसके मुखसें आग बराबर निकलती रहे। इसप्रकार चार घडी पर्य्यंत कर पीछे शीशीका मुख चूने और गुड़से बंदकर तीन प्रहर आंच देवे, इस प्रकार नौ प्रहर आंच दे, लकड़ियोंको अलग करे और अंगारे रहने देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब शीशीको निकाल पानीमें भिगोकर उसकी कपरमिट्टीको अलग करे, और शीशीको फोड़कर उसके ऊपर जो १६ पैसे भरका लालरंगका कटोरा निकले, उसको निकाल लेवे, परन्तु शीशीके भीतर जो एक अंगुल मोटा पारेका कटोरा निकले उसको ग्रहण करे, और गंधकको न-लेवे । और इस पारेके कटोरेको खरलमें डाल खूब बारीक पीस किसी उत्तम पात्रमें भरलेवे और इसको २ रत्ती विना लैंगके खाय तो डकारें आवे, भूख लगे, कोष्टको शुद्ध करे, वादी दूर करे, यह क्रिया सबसे सुगम है अन्य प्रकारकी क्रियाओंमें आंच देनेमें खतरा है क्योंकि और प्रकारकी आंच देनेमें कभी पारा ठहरता है और कभी उड़जाता है । इस चंद्रोदयमें आंच देनेके लिये चार या पांच अंगुल मोटी बंबूलकी लकड़ियां चाहियें, पारेको किसी औषधिके रसमें घोटे परन्तु आंच इसी प्रकार देवे तो मूर्खसेभी चन्द्रोदय सिद्ध हो और उड़े नहीं और प्रथम चन्द्रोदयकी विधिसे जो आंच देना कहा है वह चतुर वैद्योंसे बनता है । अन्यसे नहीं बने

इतिचन्द्रोदयस्य चतुर्थ प्रकारः

अथवा प्रथम शिंगरफके पारेको अमलतास चीता, ढेरा और घीगुवार प्रत्येकके रसमें दो २ दिन घोटे, और प्रत्येक समय पारेको डमरू यंत्रमें डालकर उडालेवे, फिर विष और उपविषोंमें दो २ दिन घोटके उड़ा लेवे. तिस पीछे शिंगरफका पारा २० पैसे भर लेवे और उसमें १० पैसे भर सैंधेनिमककी बुकनी डाल दो प्रहर नींबूके रसमें घोटे, फिर कांजीके पानीसे दो प्रहर घोटे उपरान्त उस पारेको सैंधेनिमकसे जुदा कर लेवे, और इसमें २० पैसेभर अफीम मिलाकर तीन दिन धतूरेके रस में खरल करे रात्रिको न घोटे, जब सूखजाय तब शीशीपर सुलेमानी मुद्रा कर और उसके

मुखपर कपरमिट्टी कर सुखावे, और वालुकायंत्रमें बराबर १२ प्रहरकी आंच देवे इसप्रकार तीन शीशी फेरे, पीछे शीशीके पारेको निकाल लेवे, तदनन्तर आठ पैसे भर गंधक ज्वारके चूनमें मिलाकर छोटी २ गोलियां बांध मुरगेको खिलावे, और उसको एकही स्थानपर बंद रहने देवे और उसकी बीठको इकट्ठा करता रहे फिर उस बीठको धूपमें सुखाकर पातालयंत्रद्वारा उसका तेल निकाल लेवे, इस तेलमें पूर्वोक्त शीशीके पारेको ३ दिन घोटे रात्रिको न घोटे, जब गाढ़ा होजावे तब पूर्वोक्त सुलेमानी मुद्राकीहुई शीशीमें डालके मुखबंद कर वालुकायंत्रमें बराबर १२ प्रहरकी अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजाय तब शीशीसे सिद्ध चन्द्रोदयको निकाल लेवे यह चन्द्रोदय अत्यंत गुणदायक है, और विशेष करके जो विन्दुकुसाद (हथरस) आदिसे होता है उसपर अतीव गुणदायक है।

इति चन्द्रोदयस्य पंचमविधिः

अथवा प्रथम पारेको विषोपविषमें शुद्धकर ९ पैसे भर लेवे संखिया (सुंमिलखार) ९ पैसे भर, नौसादर पैसेभर, सबको एकत्रकर आकके दूधमें ८ प्रहर खरल करे, जब डमरूयंत्रमें डाल दो प्रहरकी अग्नि देकर उडालेवे, फिर उसमें पारेकी प्रथम तोलकी बराबर छिलेहुए जमालगोटे डालकर दंती (दांतन) के रसमें ७ दिन घोटकर डमरूयंत्रमें डालकर उड़ालेवे, फिर उक्तपारेमें दो पैसेभर संमलखार और डेढ़पैसेभर नौसादर डालके दोनोंको दो प्रहर घोटे, पीछे शीशीमेंभर नौसादरसे मुख बंद करदे हांडीके नीचे छेदकर ४ अंगुल बारूडाल उसके ऊपर शीशी धरे, फिर हांडीके मुख पर्यन्त बालूभर शीशीपर सात कपरमिट्टी करे, फिर इसको बराबर १६ प्रहरकी अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजाय तब शीशीको निकाल लेवे, तो यह चन्द्रोदय सिद्ध होवे। इसमेंसे १ रत्ती नित्य खाय तो भूँख बहुत बढ़ावे, बादी और रुधिर विकारोंको दूरकरे, परन्तु किसी २ सद्वैद्यकी यह आज्ञा है कि संमलकी क्रियाका बनाहुआ पारा कदाचित् न खाना चाहिये. क्योंकि यह आंखोंको नुकसान करता है, देहको फुलाता है. देह बिगड जाता है, फोंड़ा पैदा करता है, कंठकी आवाजको बिगाडता है, और गला ऐसा रुक जाता है कि पानी तक नहीं उतरता, अतएव सुंमिलकी क्रिया त्याज्य है इसी प्रकार प्राणनाथने भाषामें चन्द्रोदयकी ७ क्रिया औरभी लिखी है. परंतु केवल उनमें घुटाई और शीशी उतारनाही विशेष है और कुछ विशेष नही अतएव हमने उनको त्याग दिया है

इति चंद्रोदय की छटी विधि समाप्त.

अथ क्षेत्रीकरणम्.

प्रथमंमारयेद्भ्रंशास्त्रोक्तंसुपरीक्षितम् ।
पश्चात्तंयोजयेद्देहे सूतकंतदनंतरम् ॥
अक्षेत्रीकारणात्सूतोह्यमृतोपिविषंभवेत् ।
तस्मादभ्ररसस्यादौ क्षेत्रीकरणमिच्छति ।
सेवनीयंप्रयत्नेन मासद्वयनिरंतरम् ।
गुंजाद्वयंसमारभ्य यावन्मापद्वयंभवेत् ।
क्षेत्रमेवंभवेद्देहेसूतवीर्यप्रसाधकम् ।
अक्षेत्रेयोजितःसूतोनरोहेत्कदाचन ।
निद्रालस्यशिरोदाहं अंगभंगारुचिस्तमः ।
नासायांजायतेशूलस्त्वन्यथायोजितोरसः ।

अर्थ–जो मनुष्य मृतपारेको खाया चाहे वो प्रथम शास्त्रोक्त रीतिसे मृत अभ्रकको खाय.

पश्चात् पारेको खाय. क्योंकि विना क्षेत्रीकरण के पारा अमृततुल्य गुणके देनेवालाभी विषके समान औगुन करता है, इसलिये प्रथम अभ्रक खाकर क्षेत्र कर लेवे, प्रथम दो महिने तक दो दो रत्ती अभ्रक नित्य इलायचीकेसंग खाय, तब क्षेत्र (देह) पारा खाने योग्य होवे, विना क्षेत्रीकरणके पारा कदापि फलदायक नहीं होता, उलटा निद्रा, आलस्य, मस्तकमें जलन, हटफूटन, अरुचि, नेत्रोंके आगे अंधेरा आना, नाकके भीतरपीड़ा इन रोगोंको प्रगट करताहै।

अब कहते हैं कि रससिंदूरभी मूर्च्छित पारेका भेद है इसलिये चन्द्रोदय करनेके अनन्तर रससिंदूर बनानेकी विधि लिखते हैं।

अथ रससिंदूरकी पहिली विधि.

सूतंपंचपलंस्वदोषरहितं तत्तुल्यभागोबलि र्द्वौटंकौनवसादरस्यतुवरी कर्षश्चसंमर्दितः ॥ कुप्यांकाचभुविस्थितश्चसिकतायंत्रेत्रिभिर्वासरैः। पक्कोवन्हिभिरुद्भवत्यरुणभः सिंदूर नामारसः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, प्रत्येक५पल। नौसादर १ तोले, फिटकरी १ तोले, इन सबको तीन दिन घोट आतिशी शीशीपर कपरमिट्टी दे भरदेवे, और तीन दिन वालुकायंत्रमें मंद, मध्य और तेज अग्नि देवे तो लाल रंगका रससिंदूर तयार होवे।

रससिंदूरकी दूसरी विधि.

द्विगुणगंधक.

रसभागोभवेदेको गंधकोद्विगुणोमतः। खल्वेकज्जलिसंकाशं काचकुप्यांक्षिपेत्सुधीः खर्प्परेवालुकापूर्णे स्थापयेत्तत्रकूपिकां। इष्टिकांचसुखेदत्वा कृत्वाकर्पटमृत्तिकां ॥ सप्तविंशतियामैश्च सितांकूपींविपाचयेत्। पश्चादूर्ध्वंसमायातं रसंज्ञात्वाविचक्षणः ॥ हंसपादसमंवर्णं निष्पन्नंरसमादिशेत्। गुंजायुग्मंप्रदातव्यंसितादुग्धानुपानतः ॥ प्रमेहेश्वासकासेच पंढेक्षीणेऽल्पवीर्यके। हरगौरीरसोदेयः सर्वरोगप्रशांतये ॥

अर्थ—शुद्धपारेसे दुगनी शुद्ध गंधक लेकर दोनोंकी खरलमें कजली करके, आतिशी शीशीमें भरके उसपर सात कपरमिट्टी कर सुखाय वालुका यंत्रमें रख उसकेमूंको ईंटके टुकडेसे बंदकर उसके नीचे अग्नि २७ प्रहरकी देवे, तदनन्तर पारेको ऊपर आया जानकर उतार लेवे, इसका रंग लाल होजाता है इसको निकालकर अच्छे पात्रमें रखछोडे पीछे इसमेंसे २ रत्तीकी मात्रा दूध और मिश्रीके संयोगसे देवे तो इन रोगोंको दूर करे प्रमेह, श्वास, खाँसी नपुंसकता, क्षीणवीर्य और यह हरगौरी रस सब रोगमात्रोंको दूर करता है।

रससिंदूरकी तीसरी विधि.

षड्गुणगंधक.

हिंगुलोत्थरसंभागं षड्भागंशुद्धगंधकम्। खल्वमध्येविनिक्षिप्य कुमारीरसमर्दितम् ॥ काचकुप्यांविनिक्षिप्य वालुकायंत्रगेपचेत्। पाचयेत्सप्तरात्राणि सिंदूरंभवतिध्रुवम्। वल्लमात्रंप्रयुंजीत मधुनालेहयेत्परम्। स्तंभनंदंडवृद्धिंच वीर्य्यवृद्धिंबलान्वितम् ॥ तेजस्त्वंपुष्टिकारित्वं महामत्तगजेन्द्रवत्। पंढत्वंवंध्यरोगत्वमन्यादीन्सर्वरोगजित् ॥ दिनमेकंशतस्त्रीणांरमतेतृप्तिवीर्य्यवान्। निरंतरमनोल्लासंरतिंप्रेम्णासनातनः ॥ शतानिपंचपट्कंच रोगाणांनाशकोभवेत्। षड्गुणोगंधकोनाम विश्वामित्रेणनिर्मितः।

अर्थ—हिंगुलसे निकला पारा १ भाग,

और गंधक ६ भाग, दोनोंको खरलमें डाल कजलीकरे। फिर ग्वारपाठेका रस डाल मर्दन करे, फिर सुखाकर कांचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें पचावे, सात दिनरात बराबर अग्नि देवे, जब शीतल होजाय तब शीशीको फोड़ लालरंगका सिंदूर निकाल लेवे, इस रससिंदूरको ३ रत्ती शहदके संग खायतो स्तंभनकरे, लिंग और वीर्य्यको बढ़ावे, बल, तेज और पुष्टताको बढ़ाकर महा मतवाले हाथीके समान बलवानकरे, नपुंसकत्व, वंध्यापना, मन्या इत्यादि रोगोंको दूरकरे, इसका खानेवाला एक दिनमें सौ स्त्रियोंको भोगे, और उनको आनंद देवे और पांच सौ रोगोंका नाशक है, यह षड्गुणगंधक नाम रससिंदूर विश्वामित्रऋषिने लोकके कल्याणार्थ निर्माण किया है।

रससिंदुरानुपानम्.

वातेसक्षौद्रपिप्पल्यपिच कफरुजिव्यूपणं साग्निचूर्णं। पित्तेशैलासितेन्दुव्रणवतिय वरागुग्गुलश्चारुवद्धः। चातुर्जातेनपुष्टौहरन यनफला शाल्मलीपुष्पदृत्तं। किंवाकान्ताललाटाभरणरसपतेःस्यादनूपानमेतत्।

अर्थ–पीपल सहतके साथ वात रोगमें, सोंठ मिरच पीपलके और चीतेके चूर्णके साथ कफ रोगमें, शिलाजीत मिश्री और कपूरकेसाथ पित्त रोगमें, त्रिफला और गूगलके साथ व्रण रोगमें, चातुर्जातके साथ पुष्टीमें अथवा त्रिफला और सेमरके मूसलाके साथ पुष्टीको देवे यह रससिंदूरके अनोपान कहे हैं।

कृष्णभस्म.

धान्याभ्रकंरसंतुल्यंमारयेन्मारकद्रवैः।
दिनैकंतेनकल्केनवस्त्रंलिप्त्वातुवर्तिकाम्।
विलिप्यतैलैर्वर्तितामेरंडोत्थैःपुनःपुनः।
प्रज्ज्वाल्यचतदाभांडेगृह्णियात्पतितंचयत्।
कृष्णभस्मभवेत्तच्चपुनर्मर्द्यैनियामकैः।
दिनैकंपातयेद्यंत्रेकन्दुकाख्येनसंशयः।
मृतःसूतोभवेत्सत्यंतत्तद्रोगेपुयोजयेत्।

अर्थ–पारदके तुल्य धान्याभ्रक लेके उसको मारक वर्गसे मारणकरे फिर मारकवर्ग [जो आगे कहेंगे] उस रससे एक कपड़ेको लीप धूपमें सुखाकर वत्ती बनावे, और उसको अंडीके तेलमें भिगोकर जलावे, और उसके नीचे एक पात्र रखे उस वत्तीद्वारा जो तेल उसमें टपके उस तेलसे पारे और अभ्रकको खरल करे, फिर एक दिन कंदुक (डमरूयंत्र) में पातन करे तो पारा मरकर कृष्णभस्म होवे, यह पृथक् २ अनुपानसे सर्वरोगोंको नाश करता है।

पीतभस्म.

भूधात्रीहस्तिशुंडीभ्यांरसगंधंचमर्दयेत्।
काचकुप्यांचतुर्यामंपक्वःपीतोभवेद्रसः।

अर्थ–यदि पारेकी पीलीभस्म करनेकी इच्छा होवे तो पारद और गंधककी कजलीको भुइआँवरा और हथशुंडीके रससे घोटे वालुकायंत्रमें चार प्रहरकी अग्नि देवे तो पारेकी पीलेरंगकी नाल उतरे।

द्वितीयकृष्णभस्म.

सूतंगंधकसंयुक्तंकुमारीरसमर्दितम्।
कृष्णवर्णंभवेद्रस्मदेवानामपिदुर्लभम्॥

अर्थ–यदि पारेकी स्यामभस्म उतारनेकी इच्छा हो तो पारे और गंधककी कजलीको घीगुवारके रससे घोट चार प्रहरकी आंच देवे, तो कालेरंगकी भस्म उतरे।

नीलभस्म.

वाराहीकन्दसंयुक्तं रसकेनसमन्वितम्।
नीलवर्णंद्भवेभस्मवलीपलितनाशनम्।

अर्थ–जो चाहे कि पारेकी भस्म **नीली** उतरे तो पारे और गंधककी कज्जलीमें बराबर की मिश्री डालकर वाराही कन्दके रससे घोटे, फिर पूर्वोक्त विधिसे वालुका यंत्रमें चार प्रहरकी अग्नि देवे, तो चन्द्रोदयकी नाल नीले रंगकी उतरे, यह वृद्धावस्थाको दूर करती है।

श्वेतंपीतंतथारक्तंकृष्णंचेतिचतुर्विधम् ।
लक्षणंभस्मसूतानां श्रेष्ठंस्यादुत्तरोत्तरम् ।

अर्थ–पारेकी भस्म सफेद, पीली, लाल और काली ऐसे चार प्रकारकी है इसमें उत्तरोत्तर भस्म श्रेष्ठ हैं अर्थात् सफेदसे पीली, पीलीसे लाल, लालसे काली इत्यादि ।

द्विविधभस्म.

सूतभस्मद्विधाज्ञेयमूर्ध्वगंतलगंतथा ।

अर्थ–पारेकी भस्म दो प्रकारकी होती है एक तो उर्ध्वग जो ऊपरकी शीशीकी नाडमें लगती है, दूसरी शीशीकी पेंदीमें बैठ जाती है।

सर्वाङ्गसुंदरोरसः

मर्दयेद्रसगंधौच हस्तिशुंडीद्रवैर्दृढम् ।
भूधात्रिकारसैर्वापि पर्य्यंतंदिनसप्ततिः ॥
विघृष्यवालुकायंत्रेमूपायांसन्निवेशयेत् ।
दिनमेकंददेदग्निं मंदंमंदंनिशावधि ॥
एवंनिष्पद्यतेपीतः शीतःसूतस्तुगृह्यते ।
पर्णखंडेनतद्गुंजां भक्षयेच्छूयतांमम ॥
क्षुद्बोधंकुरुतेपूर्वमुदराणिविनाशयेत् ।
ज्वराणांनाशनःश्रेष्ठस्तद्वत्श्रीसुखकारकः ॥
हृदयोत्साहजननः सुरूपतनयप्रदः ।
बलप्रदःसदादेहे जरानाशनतत्परः ॥
अंगभंगादिकंदोषं सर्वंनाशयतिक्षणात् ।
एतस्मान्नापरःसूतोरसात्सर्वांगसुन्दरात् ॥
पीतभस्मेतिचन्द्रिकाकारः ।

अर्थ–पारे गंधकको हथशुंडी और भूंय आमलेके रससे सात ७ दिन घोटे, फिर इस पारेकी पीठीको एक मूषामें भरके वालुका यंत्रमें स्थापन कर एक दिन रात्रि मंदाग्नि देवे तो पारेकी **पीली भस्म** होवे, इसमेंसे १ रत्ती पानके टुकडेमें रखके खाय तो क्षुधाकरे, उदर रोगको दूर करे, ज्वरोंका नाश करनेमें श्रेष्ठ है, सुखकरे, हृदयमें उत्साह बढावे, सुरूपवान पुत्र देवे, बलको बढावे, बुढापेको दूर करे, अंगभंगादि सर्व दोषोंका नाश करे, इस पारेसे श्रेष्ठ अन्य पारद नहीं है इसको **सर्वांगसुंदर** रस कहते हैं और **रसचंद्रिका** वाला इसको **पीतभस्म** कहता है ।

रसकपूर.

जो वैद्य चन्द्रोदयको नहीं जानते वो इस रसकासंग्रह करतेहैं, सद्वैद्य इस रसका संग्रह नहीं करते, कुवैद्योंके लिये इसकी बराबर दूसरा रस नहीं है, लोगोंके ठगनेके निमित्त इसको पारद भस्म बतलाते हैं, रसकपूर नहीं कहते क्योंकि उनका भेद खुलजाय, और वे इस क्रियाको किसीको नहीं बतलाते–कोष्टबद्ध, जलंधर और जुलाबमें चमत्कार दिखलानेके लिये इसको देते हैं बहुधा चेटक दिखलानेके लिये गुजरातीवैद्य इसको रखते हैं.

गंधकयोगके विना पारेकी मूर्च्छा दोप्रकारसे होती है. एक रसकपूर, दूसरी इससे अलग. यहां पहले रसकपूरकी विधि लिखते हैं.

रसकपूरकी पहिली विधि.

शुद्धंसूतंसमंकुर्य्यात्प्रत्येकंगैरिकंसुधीः।
इष्टिकांखटिकांतद्वत्स्फटिकांसिंधुजन्मच ।
वल्मीकक्षारलवणंभांडरंजनमृत्तिकां ।
सर्वाण्येतानिसंचूर्ण्यवाससाचापिशोधयेत् ।
एभिश्चूर्णैर्युतंसूतंस्थालीमध्येपरिक्षिपेत् ।

तस्यांस्थाल्यांमुखेस्थालीमपरांधारयेत्समाम्
सर्वाण्यकुंठितमृदामुद्रयेदुभयोर्मुखं ।
संशोष्यमुद्रयेद्भूयोभूयःसंशोष्यमुद्रयेत् ।
सम्यग्विशोष्यमुद्रान्तस्थालीचूल्यांविधारये
त् । अग्निंनिरंतरंदद्याद्यावद्दिनचतुष्टयम् ।
अंगारोपरितद्यंत्रंरक्षेद्यत्नादहर्निशम् ।
शनैरुद्घाटयेद्यंत्रमूर्ध्वस्थालीगतंरसम् ।
कर्पूरवत्सुविमलंगृह्णीयाद्गुणवत्तरम् ।

अर्थ—शिंगरफका निकाला पारा, गेरू, पुरानी ईंटका चूर्ण, सफेद खरिया, सफेद बिनाभुनी फिटकरी, , सेंधानिमक, बंबईकी मांटी, खारीनिमक, काविष, अर्थात् जिसमें कुह्मार बर्त्तन रंगते है. प्रत्येक दोदो पैसेभर, इन सबको अलग२ पीस कपरछन कर पृथक् २पारेके साथ मिलाकर दो २ प्रहर घोटे, पीछे नीचेकी हांडीपर चार कपरमिट्टी कर इसमें पारेको भरकर दूसरी हांडीसे मुख बंदकर डमरूयंत्र बनावे, फिर दोनों हांडियोंके मुखपर सात कपरमिट्टी करे, और तीन दिन सुखावे, पश्चात् चार लकडियोंकी ३२ प्रहर प्रचंड अग्नि देवे, इसकेबाद चारप्रहर अंगारोंपर रक्खे जब स्वांगसीतल होजाय तब उतारकर टेढारखे, और टेढाही खोले ऊपरकी हांडीमें जो कपूरके समान पारा लगा है उसको निकाल लेवे ।

सचदेवकुसुमचंदनकस्तूरीकुंकुमैर्युक्तम् ।
खादन्हरतिफिरंगव्याधिंसोपद्रवांघोराम् ।
विंदतिवन्हेर्दीप्तिंपुष्टिंवीर्यंबलंविपुलं ।
रमयतिरमणीशतकंरसकर्पूरस्यसेवकःसततम्

अर्थ—लौंग, सफेदचंदन प्रत्येक २ मांसे, कस्तूरी २ रत्ती, केशर ४ रत्ती, मिलाकर खावे तो गरमीकी बीमारी उपद्रवों समेत दूर होवे अग्नि प्रबल होवे, देहपुष्ट होवे, अपार वीर्यहो, अनेक स्त्रियोंके रमण करनेकी सामर्थ्य होवे, येगुण रसकपूरके आजमाये हुए हैं ।

तथारसकपूरकेगुण.

इसकी मात्रा बलवानको १ रत्ती और निर्बलको आधी रत्ती देनेसे आठवार रद्द और काली पीली और लाल रंगकी आंवके दस्त होते हैं, इनके होनेसे बल नहीं घटता, किंचित गरमी होती है इसलिये शरदऋतुमें इसका खाना उचित है, वातरोग सातदिन खानेसे दूर होता है, लेकिन रोग दूर होनेपरभी इसको १ महिने खाय, यह रुधिरविकारकोभी दूर करता है. इसके खानेवाले को चाहियेकि दहीभातका भोजन किया करे और घी न खावे, और वातरोगी थोडा सेंधानिमक खाय. ।

रसकपूरकी दुसरी विधि.

पिष्टंपांशुपटुप्रगाढममलंवज्रांबुनाचैकतः ।
सूतंधातुयुतंखटीकवलितंतत्संपुटेरोधयेत् ॥
अंतस्थंलवणस्यतस्यचतलेमज्ज्वालयद्वह्निंह-
ठात् । घस्रंग्राह्यमथेन्दुकुन्दधवलंभस्मोपरि
स्थंशनैः ॥

अर्थ—पारेको खारी निमक और थूहरके दूधके साथ घोटे, पश्चात् लोहेके पात्रमें रख खड़ियाकी डलीसे उसका मूं बंदकर संपुट करे पीछे नोनके पात्रमें उसको रखकर एक दिन नीचें आग जलावे, फिर ऊपरकी घड़ियामें जो सफेद भस्म—जिसे रसकपूर कहते हैं उसको युक्तिसे निकाले इसीको रसमंजरी वाला रसकपूर और रसचन्द्रिकावाला सफेद भस्म और कोई सुधानिधि रस कहता है ।

तद्वल्लद्वितयंलवंगसहितंप्रातःप्रभुक्तंनृणा ।
मूर्द्धेरेचयतिद्वियामसकृदेयंजलंशीतलं ॥
एतद्धंतिचवत्सरावधिविषपाणमासिकेमासि

कं । शैलोत्थंगरलंमृगेन्द्रकुटिलोद्भूतंचतत्कालिकम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य लौंगके साथ इस रसकपूरको ६ रत्ती खाय उसे चार घड़ी पीछे दस्त हो, इसके ऊपर शीतलजल पीवे तो वर्षदिनके छः महीनेके विषरोगोंको दूर करे, तथा मूलविष, सर्पविष, सिंहनखविष, और तत्कालेक विषको दूर करे। इति मूर्च्छा प्रकरणं समाप्तम्।

पारदर्यंधनम्.

पारावंधनके दो प्रकार हैं, सवीज और निर्वीज जो अभ्रकसत्व, सोना, चांदी, तांबा और लोहा इनके संयोगसे बद्ध होवे वो सवीज, और जो दिव्य औषधियोंके संवन्धसे बद्ध हो उसे निर्वीज जानना अब कहते हैं कि बंधन खोट, जलौकादि भेदसे अनेक प्रकारका है तिनमें मुख्य २५बंधनोंके नाम और उनके लक्षण लिखते हैं।

पंचविंशतिसंख्याकान्रसवंधान्प्रचक्ष्महे ।
येनयेनहिचांचल्यंदुर्ग्रहत्वंचनश्यति ।
मोक्तानिरसराजस्यवंधनान्यानिवार्त्तिकैः ।
हठारोटौतदाभासःक्रियाहीनश्चपिष्टिकः ।
क्षारःखोटश्चपोटश्चकल्कवंधश्चकज्जलिः
सजीवश्चैवनिर्जीवोनिर्वीजश्चसवीजकः ।
शृंखलाद्रुतिवंधौचबालकश्चकुमारकः ।
तरुणश्चतथावृद्धोमूर्त्तिबद्धस्तथापरः ।
जलबद्धोग्निबद्धश्चसुसंस्कृतकृताभिधः ।
महावंधाभिधाश्चेतिपंचविंशतिरीरिताः ।
केचिद्वदंतिपड्विंशोजलौकावंधसंज्ञकः ।
सतावन्नेष्यतेदेहेस्त्रीणांद्रावेमशस्यते ।

अर्थ-अब रसवंधनके २५ प्रकारोंको कहते हैं जैसें १ हठ, २ आरोट, ३ आभास, ४ क्रियाहीन, ५ पिष्टिका, ६ क्षारबद्ध, ७ खोटंक, ८ पोट, ९ कल्कवंध, १० कज्जलि, ११ सजीव, १२ निर्जीव, १३ निर्वीज, १४ सवीज, १५ शृंखलाबद्ध, १६ द्रुतिवंध, १७ बालक, १८ कुमारक, १९ तरुण, २० वृद्ध, २१ मूर्त्तिबद्ध, २२ जलबद्ध, २३ अग्निबद्ध, २४ सुसंस्कृत २५ महावंध, और कोई आचार्य जलौकाबद्ध छव्वीसवां कहतेहैं-वह देहकेवर्त्तनेमें त्याज्य है परंतु स्त्री द्रावणमें ग्राह्य है।

हठरस

हठोरसःसविज्ञेयोसम्यक्शुद्धिविवर्जितः ।
संसेवितोनृणांकुर्य्यान्मृत्युंव्याधिसमुद्भवं ।

अर्थ-यथार्थ शुद्धिहीन रसको हठरस कहते हैं, यह सेवन करनेसे मनुष्यको अनेक व्याधि और मृत्यु करता है।

आरोटरस.

सुशोधितोरसःसम्यगारोटइतिकथ्यते ।
सक्षेत्रीकरणेश्रेष्ठःशनैर्व्याधिविनाशनः ।

अर्थ-यथार्थ शोधितरसको आरोट कहते हैं-यह क्षेत्रीकरणमें श्रेष्ट है और धीरे २ रोगोंको नष्ट करता है।

आभासरस.

पुटितोयोरसोयातियोगंमुक्त्वास्वभावताम् ।
भावितोरसमूलाद्यैराभासोगुणवैकृते ।

अर्थ-जो पुटित रस योगको त्याग अपने स्वभावको प्राप्त हो और जिसमें रस मूलादिकी भावना दीगई हो उसको आभास रस कहते हैं।

क्रियाहीन.

अशोधितस्तुलोहाद्यैःसाधितोयोरसोत्तमः ।
क्रियाहीनःसविज्ञेयोविक्रियांयात्यपथ्यतः।

अर्थ-जो विना शोधा रस सुवर्ण, चांदी आदिसे साधित है उसको क्रियाहीन कहते हैं यह कुपथ्य करनेसे देहमें विकार करता है।

पिष्टिकाबंध.

तीव्रातपेगाढतरावमर्दात्पिष्टीभवेत्सानवनीत रूपा । ख्यातःससूतःकिलपिष्टिवद्धःसंदीप नःपाचनकृद्विशेषात् ।

अर्थ–पारेको तीव्रतर धूपमें रखकर घोटने से जिसकी मक्खनके समान पिंडी होजावे उस पारेको पिष्टिवद्ध पारा कहते हैं, इसको दीपन पाचन कर्त्ता जानना ।

क्षारबद्ध

शंखशुक्तिवराटाद्यैर्योऽसौसंसाधितोरसः । क्षारवद्धःपरंदीप्तिपुष्टिकृच्छूलनाशनः ।

अर्थ–जिस पारदको शंख, सीप, कौड़ी आदिके क्षारसें संशोधन किया है उसको क्षारवद्ध जानना-यह अग्निको परमदीप्ति करें, पुष्टिकरें और शूलका नाश करे ।

खोटबद्ध.

वद्धोयःखोटतांयातोध्मातोध्मातोक्षयंव्रजेत् । खोटवद्धःसविज्ञेयःशीघ्रंसर्वगदापहः ॥

अर्थ–जो वद्धपारा चलनेसे फिरनेसे रहित होजावे और धमानेसे क्षीण होवे उसको खोटवद्ध कहते हैं वह शीघ्र सर्व रोगोंका नाश करे।

पोट (पर्पटी) बद्ध.

द्रुतिकज्जलिकामोचापत्रकेचिपिटीकृता । सपोटःपर्पटीसैववालाद्यखिलरोगनुत् ।

अर्थ–जिस पारदकी कजलीकी द्रुति केलाकेपत्रमे पतली और चपटी होजावे उसको पोटवद्ध वा पर्पटी कहते हैं यह बालकादिकोंके सर्व रोग नाश करती है ।

कल्कबद्ध.

स्वेदाद्यैःसाधितःसूतःपंकत्वंसमुपागतः । कल्कवद्धःसविज्ञेयोयोगोक्तफलदायकः ।

अर्थ–जो पारा स्वेदन मर्दनादि संस्कारोंसे कीचके समान होजावे उसको कल्कवद्ध कहते हैं-यह योगोक्त फलको देता है ।

कज्जलीबंध.

कज्जलीरसगंधोत्थासुश्लक्ष्णाकज्जलोपमा। तत्तद्योगेनसंयुक्ताकज्जलीवंधउच्यते ।

अर्थ–पारे और गंधककी सुंदर कज्जलके समान कजली होजावे वह अपने अपने पृथक् २ योगोंकरके संयुक्त कज्जलीवंध कहाता है ।

सजीवपारद.

भस्मीकृतोगच्छतियह्नियोगाद्रसःसजीवः स खलुप्रदिष्टः । संसेवितोऽसौनकरोतिभस्मका र्य्यंजवाव्याधिविनाशनंच ।

अर्थ–जो पारा अग्निके योगसे भस्मी होजावे उसको सजीव पारद कहते हैं, इसका सेवन पारेकी भस्मके जो गुण हैं उनको नहीं करता और शीघ्र न रोग नाश करे ।

निर्बीज.

रसस्यपादांशसुवर्णजीर्णःपिष्टीकृतोगंधकयो गतश्च । तुल्यांशगंधैःपुटितंक्रमेणनिर्बीजना म्नासकलामयघ्नः ।

अर्थ–जिस पारदमें चतुर्थांश सुवर्ण जीर्ण हुआ हो और जो गंधकके योगसे पिष्टी किया गया हो तथा तुल्य भाग करके क्रमसे संपुटित हो उसको निर्बीजनामा सर्वरोग नाशक कहते हैं ।

सबीजबद्ध.

पिष्टीकृतैरभ्रकसत्वहेमताराकर्कान्तैःपरिजारितोयः । हतःस्वतःपड्गुणगंधकेन सवीज वद्धोविपुलप्रभावः ।

अर्थ–अभ्रकसत्व, सुवर्ण, चांदी, ताम्र और लोह संयोगसे पिष्टी करके जारित तथा

षड्गुण गंधक करके जो हत हो उस विपुल प्रभाववाले पारदको सवींजवद्ध कहते हैं।

शृंखलावद्ध.

वज्रादिनिहतःसूतोहतःसूतसमोपरः।
शृंखलावद्धसूतस्तुदेहलोहविधायकः।

अर्थ–जो वज्रादि करके मारित हो तथा समगंधक करके मारित हो उस पारेको शृंखलावद्ध कहते हैं यह देहको लोहके समान करता है।

द्रुतिवद्ध.

युक्तोऽपिवाह्यद्रुतिभिश्चसूतोवद्धंगतोवाभसितस्वरूपः। सराजिकापादमितोनिहन्तिदुःसाध्यरोगान्द्रुतिवद्धनामा।

अर्थ–जो वाह्यद्रुतियों करके वद्ध होकर भी उत्तम रूपसे वद्ध हुआ हो उसकी राईकी चौथाई मात्रा भक्षण करनेसे दुःसाध्य रोग दूर होते हैं इसे द्रुतिवद्ध पारा कहते हैं।

वालवद्ध.

समाभ्रजीर्णःशिवजस्तुवालःसंसेवितोयोगयुतोजवेन। रसायनोभाविगदापहश्चसोपद्रवारिष्टगदान्निहन्ति।

अर्थ–जिस पारदमें समान अभ्रक जीर्ण हुई होवे उसको वालवद्ध कहते हैं इसका योगके साथ सेवन करनेसे शीघ्र उपद्रव और अरिष्टयुक्त रोगोंका नाश होता है तथा होनेवाली व्याधियोंका नाश करे और रसायन है।

कुमारवद्ध.

हरोद्भवोयोद्विगुणाभ्रजीर्णः सस्यात्कुमारोमिततंदुलोऽसौ। त्रिःसप्तरात्रात्खलुपापयोगसंघातघातीचरसायनंच।

अर्थ–जिस पारदमें द्विगुण अभ्रक जीर्ण हुई हो उसको कुमारवद्ध कहते हैं. इसको १ चांवलकी वरावर नित्य सेवन करनेसे २१ दिवसमें सर्व रोगोंके समूहका नाश होवे और रसायन है।

तरुणवद्ध.

चतुर्गुणंव्योमकृताशनोसौ रसायनाग्र्यस्तरुणाभिधानः। ससप्तरात्रात्सकलामयघ्नो रसायनोवीर्यवलप्रदाता।

अर्थ–जिस पारदमें चतुर्गुण अभ्रक जारण कीगयीहो वह रसायनोंका अग्रवर्त्ती तरुणाभिध पारा कहाता हैं इसका सात रात्रि सेवन करनेसे सर्व रोग नाश होते हैं और वीर्य और वलको वढ़ाता है और रसायन है।

वृद्धवद्ध.

यस्याभ्रकःषड्गुणतोहिजीर्णःप्राप्ताग्निसख्यःसहिवृद्धनामा। देहेचलोहेच नियोजनीयःशिवाद्दतेकोऽस्यगुणान्प्रवक्ति।

अर्थ–जिस पारेमें षड्गुण अभ्रक जारण होचुका हो वह अग्निका सखा वृद्धवद्ध नामा पारद है इसको देहमें और ताम्रादि लोहोंमें योजना करना इसके गुण सिवाय शिवके कौन कह सक्ता है?।

योदिव्यमूलिकाभिश्चकृतोत्यग्निसहोरसः।
विनाभ्रजारणात्सस्यान्मूर्त्तिवंधोमहारसः।
योजितःसर्वरोगेषुनिरौपम्यफलप्रदः।

अर्थ–जो पारा विना अभ्रक जारणके केवल दिव्यौषधियोंके रससे वद्ध किया हो उस महारसको मूर्त्तिवंध कहते हैं इसको सर्व रोगोंमें देवे, यह निरुपम फलको देता है।

प्रसंगवशसे ६४ दिव्यौषधियोंके नाम.

सोमवल्ली १, जलपद्मनी २, अजगरी ३,

गोनसी ४, त्रिजटा ५, ईश्वरी ६, भूतकेशी ७, कृष्णवल्ली ८, रुद्रवंती ९, सर्वरा १०, वाराहीकंद ११, अश्वत्थपत्री १२, अम्लपत्री १३, चकोरनासा १४, अशोकनाम्नि १५, पुन्नागपत्रिका १६, नागनी १७, क्षेत्री १८, सवरी १९, देवीलता २०, वज्रवल्ली २१, चित्रक २२, कालपर्णी २३, नीलोत्पली २४, रजनी २५, पलासतिलका २६, सिंहिका २७, गोष्टांगी २८, खदिरपत्री २९, तृणज्योति ३०, रक्तवल्ली ३१, ब्रह्मदंडी ३२, मधुतृष्णा ३३, पद्मकन्दा ३४, हेमदंडी ३५, विजया ३६, अजया ३७, जया ३८, नली ३९, श्रीनाम्नि ४०, कीटमारी ४१, तुंबिका ४२, कटुतुंबी ४३, मयूरशिखा ४४, हेमलता ४५, आसुरी ४६, सप्तपर्णी ४७, गोमारी ४८, पीतक्षीरा ४९, व्याघ्रपादलता ५०, धनुर्वल्ली ५१, त्रिशूली ५२ त्रिदंडी ५३, शृंगी ५४, वज्रनामवल्ली ५५, महावल्ली ५६, रक्तकंदवती ५७, बिल्वदला ५८, रोहिणी ५९, बिल्वतंकी ६० गोरोचना ६१ कंदपत्रिका ६२ विशल्या ६३ और ६४ कंदक्षीरा।

जलबद्ध.

शिलातोयमुखैस्तोयैर्बद्धोऽसौ जलबद्धवत्।
सजरारोगमृत्युघ्नः कल्पोक्तफलदायकः।

अर्थ–जो पारा शिलातोय [शिलोदक, घृतोदक, विषोदक, तैलोदक, अमृतोदक, कर्त्तरी, तप्तोदक, चन्द्रोदक] इत्यादि जलोंके योगसे बद्ध हुआ हो उसको जलबद्ध कहते हैं यह वृद्धावस्थादि रोगोंको और मृत्युको दूरकर कल्पोक्त फल देता है।

अग्निबद्ध.

केवलोलोहयुक्तोवाध्मातःस्याद्गुटिकाकृतिः।
अक्षीणश्चाग्निबद्धोऽसौ खेचरत्वादिकृत्सहि।

अर्थ–जो पारा केवल लोहके मिलनेसे और अग्निमें धमानेसे गुटकाके आकार होजावे और क्षीण नहो उसको अग्निबद्ध पारा कहते हैं यह खेचरत्वादि सिद्धिको देता है।

बद्धाभिधानरस.

हेम्नावारजतेनवासहितपरोध्मातोव्रजत्येकतामक्षीणोनिचितोगुरुश्चगुटिकाकरोतिदीर्घोज्ज्वलः॥ चूर्णत्वंपटुवत्प्रयातिनिहितोघृष्टोनमुंचेन्मलंनिर्गंधोद्रवतिक्षणात्सहिमतोबद्धाभिधानोरसः।

अर्थ–महाबद्ध पारदके लक्षण कहते हैं। जो सुवर्ण अथवा चांदी आदिके साथ गलनेसे गलकर एक होजावे, क्षीण नहो न विखरे, तथा भारी और गुटकाके आकार अतिदीर्घ और उज्ज्वल हो, तथा पीसनेसे नोनके समान चूरा होजावे, मीड़नेसे कालौंछ नदेवे, गंधरहित हो अग्निपर तत्काल पतला होजावे, उसको बद्धाभिधान पारा कहते हैं।

मतान्तर.

पोटःखोटोजलौकाचभस्मश्चापिचतुर्थकम्।
बंधश्चतुर्विधोज्ञेयःसूतस्यभिषगुत्तमैः

अर्थ–कोई आचार्य कहता हैं कि पोट, खोट, जलौका और भस्म ये बद्धपारदके चार भेद है।

लक्षणानि.

पोटः पर्पटिकाबंध-पिष्टीबंधस्तुखोटकः।
जलौकापक्वबंधःस्याद्भस्मभस्मनिभंभवेत्।

अर्थ–गंधक पारदकी पर्पटीको पोटबद्ध कहते हैं, पिष्टीबंधको खोटक कहते हैं, और पक्वबंधको जलौकाबद्ध कहते हैं, एवं भस्मके समान पारदको भस्मबद्ध कहते हैं।

सूतभस्मद्विधाज्ञेयमूर्ध्वगंतलभस्मच ।
ऊर्ध्वंसिंदूरकर्पूररसादन्यदधोगतम् ।

अर्थ–पारेकी भस्म दो प्रकारकी होती है एक ऊर्द्धगत, दूसरी अधोगत, तहां रससिंदूर और रसकपूर आदि ऊर्द्धगत है और इनसे व्यतिरिक्त अधोगत भस्म कहाती हैं ।

अथ तलभस्मविधि.

गंधकंनवसारंचशुद्धसूतंसमंत्रयम् ।
यामैकंचूर्णयेत्खल्वेकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
रुध्वाद्वादशयामान्तंवालुकायंत्रगंपचेत् ।
स्फोटयेत्स्वांगशीतंतदूर्ध्वगंगंधकंक्षिपेत् ।
तलभस्मरसोयोगवाहीस्यात्सर्वरोगहृत् ।

अर्थ–गंधक, नौसद्दर, शुद्धपारा प्रत्येक आठ २ पैसेभर लेवे और सबकी कजली करे पश्चात् शीशीमें भर वालुकायंत्रमें १२ प्रहर की आंच देवे जब स्वांगशीतल होजाय तब उतार लेवे, फिर शीशीको फोड़कर जो पारेकी भस्म नीचे बैठी हो उसको निकाल लेवे । ऊपरकी गंधकको दूर करे ।

अब जानना चाहियेकि बंधके वास्ते शुद्धपारा लेना उचित है वह शिंगरफका निकाला विना संस्कारके ही शुद्ध होता है परन्तु कोई आचार्य कहते हैं कि शिंगरफके निकाले हुए पारेकोभी पूर्वोक्त स्वेदन, मर्दन, उत्थापनादि संस्कार करना चाहिये ।

यथोक्तंपुरंदररहस्ये.

रसगंधकसंभूतंहिंगुलंमोच्यतेबुधैः ।
तस्मात्सूतंचयद्ग्राह्यं शोध्यंतमपिसूतवत् ॥

अर्थ–पारा और गंधक मिलानेसे शिंगरफ बनता है इसलिये शिंगरफसे जो पारा लेवे उसकाभी पारेके समान शोधन करे ।

पीछे इस पारेमें औषधान्तरसे पहिले मुख उत्पन्न करे क्योंकि मुख होनेसे पारा सोना, चांदी, अभ्रकसत्व, तांबा, लोहा इत्यादिकको खाजाता है सुवर्णादिककी बाह्यद्रुति करना सो कष्टसाध्य है, और सुवर्णादिकको पारेमें मिलाकर केवल औषधियोंसे द्रव करना सो अंतरद्रुति कहता है, यह जब होसक्ता है कि प्रथम मुखकर पारेको भूँखा करेकि जिससे सुवर्णादिको खाय और पचावे, पारा हेमादिकको खाकर पचावे तब यह पारा भूँखा होवे, पारेमें मुख करने और भूँखका विस्तार बड़ा है यह होभी नहीं सक्ता यासे मुख और भूँखा करनेके निमित्त सुगम उपाय कहते हैं ।

विषोपविषकैर्मद्यःप्रत्येकंदिनसप्तकम् ।
मुखंचजायतेसूते वलंवह्निश्चवर्द्धते ।

अर्थ–सेरभर पारेमें आधपाव विषचूर्ण डालकर सातदिन आकके दूधसे घोटकर पूर्वोक्त डमरूयंत्रमें उड़ायलेवे ऐसेही धतूरा, कलयारी, कनेर और घुंघचीके काढे अथवा रसमें अफीम इन प्रत्येकके रसमें आध पाव विषचूर्ण डालकर सात २ दिन घोटकर उड़ाय लेवे तो पारेके मुख और भूँख होवे, और वाजे वैद्य पारेके मुख करनेके निमित्त पारेको बांस कीनलीमें भरकर एक हांडीमें गोमूत्र भर उसमें उस नलीको लटका देते हैं और २१ दिनतक आंच दें जैसें २ गोमूत्र जले वैसे वैसे डालते जाय तब पारेके मुख और भूँख उत्पन्न होती है । पारेके भूँखा करनेको पड्गुण गंधक जारण करते हैं, तब पारा भूँखा होता है ।

गुरुशास्त्रंपरित्यज्यविनाजारितगंधकात् ।
मारयेद्योरसंमूढःतंशपेत्परमेश्वरः ॥

अर्थ–गुरु शास्त्रको त्याग जो दुर्बुद्धि विना गंधकजारणके पारदका मारण करता है

उसको श्रीशिवजी शाप देते हैं, तहां गंधक जारण वहिर्धूम और अंतरधूमके भेदसे दो प्रकारका है।

गंधकजारणकी आवश्यकता.

रसगुणवलिजारणंविनायंनखलुरुजाहरणक्ष मोरसेन्द्रः। नजलदकलधौतपाकहीनःस्पृश तिरसायनतामितिमतिज्ञा।

अर्थ—विना षडगुण गंधक जारणके पारा रोगहरणको सामर्थ्य नहीं होता, और जब तक अभ्रक तथा सुवर्ण जारण नकिया जावे, तब तक पारा रसायन योग्य नहीं होता।

जीर्णेशतगुणेगंधेशतवेधीभवेद्रसः।
सहस्रगुणितेजीर्णेसहस्रांशेनवेधयेत्॥
एतत्प्रकारस्तुतत्रैवद्रष्टव्यः प्राधान्यपड्गुण-स्यसर्वसंमतम्।

अर्थ—शतगुण गंधक जीर्ण होनेसे, पारा शतवेध अर्थात् एक भाग पारा, ताम्र आदिके सौ भागोंको वेधे; इसी प्रकार सहस्रगुणित गंधक जीर्ण होनेसे सहस्रांशको वेधे, यह प्रकार रंजनादि संस्कारोंमें देखना मुख्य षड्गुण गंधक जारणही सर्व संमत है।

गंधकजारणका फल.

तुल्येतुगंधकेजीर्णेशुद्धाच्छतगुणोरसः।
द्विगुणेगंधकेजीर्णेसर्वथासर्वकुष्टहा॥
त्रिगुणेगंधकेजीर्णेसर्वव्याधिविनाशनः॥
चतुर्गुणेतत्रजीर्णे वलीपलितनाशनः॥
गंधेपंचगुणेजीर्णेक्षयरोगहरोरसः॥
पड्गुणेगंधकेजीर्णेसर्वरोगहरोभवेत्।

अर्थ—पारदके बराबर गंधक जारण करनेसे शुद्ध पारेसे सौगुना अधिक फलदाता होता है, द्विगुण गंधक जारणसे सर्वकुष्टोंको दूर करे, त्रिगुण जारणसे सर्वव्याधियोंको, चौगुनी जारणसे वलीपलितको, पांचगुनी जारणसे क्षयरोगको, और छःगुनी जारण करनेसे जो पारा बनता है वह सर्वरोगोंको नाश करता है।

अंतर्धूमविपाचितपड्गुणगंधेनरंजितःसूतः। सभवेत्सहस्रवेधीतारेताम्रेभुजंगेच।

अर्थ—अन्तर्धूम विपाचित और षड्गुण गंधक करके रंजित जो पारा है वह चांदी, तांबा और सीसामें सहस्रवेधी होता है।

विपिनौषधिपाकसिद्धमेतद्घृततैलाद्यपिदुर्निवारवीर्यम्। किमयंपुनरीश्वराङ्गजन्माघन जाम्बूनदचन्द्रभानुजीर्णः।

अर्थ—बनकी जड़ी बूँटी आदिके पाकसे सिद्ध घृत तैलादीकभी दुर्निवार वीर्य होजाता है, फिर ईश्वरसे उत्पन्न पारा यदि इसमें अभ्रक, सुवर्ण, ताम्र और चांदी जीर्ण होगयी होवे तो फिर क्या कहना है?।

अजारयंतःपविहेमगंधंवांछन्तिसूतात्फलम प्युदारम्। क्षेत्रादनुप्तादपिसस्यजातंकृपीव लास्तेभिषजश्चमंदाः।

अर्थ—जो विना हीरा, सुवर्ण, और गंधक जारणके पारदसे उदारफलकी इच्छा करते हैं तथाविना जोते बोए खेतसे फलकी इच्छा करते हैं, ऐसेकिसान और दोनों वैद्य मंदबुद्धि हैं।

घनरहितवीजजारणसंप्राप्तफलादिसिद्धिकृ तकृत्यः। कृपणाःप्राप्यसमुद्रेवराटकालाभ संतुष्टाः।

अर्थ— जो वैद्य विना अभ्रक जारणके केवल बीज जारणकी सिद्धिसे कृतकृत्य है, उसे ऐसे जानना कि, जैसे कृपणपुरुषको समुद्रके किनारे कौडी मिल जानेसे वह उसको सर्वोत्तम लाभ जानकर प्रसन्न होता है,

अभ्रकजारणमादौगर्भद्रुतिजारणंचहेम्नान्ते
योजानातिनवादीवृथैवसोऽर्थक्षयंकुरुते ।

अर्थ—प्रथम अभ्रक जारण करे, तदनन्तर सुवर्ण जारण, तत्पश्चात गर्भद्रुति करना, इस क्रमको जो वैद्य नहीं जानता, वह अपना धन व्यर्थ खर्च करता है ।

हेम्निजीर्णेसहस्रैकगुणसंघप्रदायकः ।
वज्रादिजीर्णसूतस्यगुणान्वेत्तिशिवःस्वयम् ।

अर्थ— पारद सुवर्ण जारणसें, हजार गुण करता है, और जिस पारदमें हीराआदिका जारण किया गया है, उसके गुण तो साक्षात् श्रीशिवजी ही जानते हैं ।

सर्वपापक्षयेजातेप्राप्यतेरसजारणा ।
तत्प्राप्तौप्राप्तमेवस्याद्विज्ञानंमुक्तिलक्षणम् ।

अर्थ—जब इस प्राणीके, सर्व पाप क्षीण होते हैं, तब यह रसजारणको प्राप्त होता है, इस रसजारणकी प्राप्तिसे मुक्ति लक्षण विज्ञानकी प्राप्ति होती है ।

यावद्दिनानिदेवेशि!वह्निस्थोधार्यतेरसः ।
तावद्वर्षसहस्राणिशिवलोकेमहीयते ॥
दिनमेकंरसेन्द्रस्ययोददातिहुताशनं ॥
द्रवन्तितस्यपापानि कुर्वन्नपिनलिप्यते ।

अर्थ—हे देवेशि! जितने दिन यह प्राणी पारदको अग्निमें रखता है, उतनेही वर्ष पर्यंत यह शिवलोकमें विहार करता है, जो प्राणी १ दिन पारकको अग्नि देता है, उसके संपूर्ण पाप द्रवीभूत होजाते हैं, और फिर किये हुए पापोंसें लिप्त नहीं होता ।

अथ षड्गुणगंधकजारणम्.

इष्टिकायांसुपक्कायांमूषांतंचचतुर्गुणम् ।
कृत्वाकाचेनसंलिप्तं तस्यांतत्पिष्टिकांक्षिपेत् ।
निंबुद्रावोद्भवोगंधोदेयोमूर्ध्निद्विकार्षिकः ।
मुखंसंरुध्यशुष्केथदद्यात्लावपुटंततः ।
गौरीयंत्रमिदंख्यातंमूर्च्छितेगंधजारणे ।

अर्थ—आठ अंगुल मोटी पंजावेकी ईंटमें चार अंगुलका गड्ढा कर उसमें काच फिराकर पारेकी पिट्ठीभर पारेकी बराबर यानी पैसेभर गंधक कागजी नीबूमें घोटकर पारेके ऊपर रखे, और गड्ढेको ईंटके टुकड़ेसे बंदकर कपरमिट्टी करे, पश्चात् ६ जंगली उपलोंकी आंच देवे, जब शीतल हो तब फिर इसी प्रकार आंच दे, इसी प्रकार गंधक डाले और जब तक षड्गुण गंधक जलेतब तक इसी प्रकार करता जाय । तहां पारेकी पीठी ऐसे बनावे ।

पीठीकरण.

एक हातका उत्तम कपडा ले, उसको सात वार धतूरेके रसमें भिगोकर सुखावे, पीछे उसपर मक्खन चुपडकर, मैनसिल, हरताल, गंधक, रिताहुआ सीसा, प्रत्येक धेला २ भरले बारीक पीस उस कपड़ेपर बिछाकर बत्ती बनावे और एक थालीमें घी चुपड़ उसमें उस बत्तीको जलाकर उलटी लटका देवे, उसमेंसे जो तेल टपके उसमें पैसेभर पारेकों खूब घोटे, जब पारा मिलकर पिट्ठी होजाय तब जारण करे।

हांडी यंत्रकी विधि.

एक हांडीमें १६ पैसेभर पारा डाल आंचपर रखे, जब गरम होजाय तब तोलाभर गंधक हंसपदीके रसमें घुटीहुई डाले, इसी प्रकार षड्गुण गंधक जले तब तक डाले ।

भूधरयंत्रकी विधि.

आरोटकसमगंधकचूर्णतुल्यंनिरुद्धमूषायां ।
भुविगर्त्तायांमूषांतांक्षिप्त्वाष्टांगुलाधस्तात् ।
आपूर्य्यवालुकाभिस्तंगर्त्तंभूसमीकृत्य मज्ज्वा

ल्य उपरिवह्निंत्रिदिनंमूषांसमुद्धृत्य ॥ जीर्णेतु
गंधकेस्मिन्पुनस्त्युक्षेप्योऽनयारित्या ।

अर्थ—आठ पैसेभर शुद्धपारा लेकर उसको लोहेकी घड़ियामें रखे, और उसमें आठपैसेभर शुद्ध गंधक डाल लोहेके पात्रसे मुख वंदकर कपरमिट्टीकर जमीनमें आठ अंगुल लंवा इतनाही चौड़ा गहरा गड्ढा खोद कर रखे, और ऊपर मिट्टी इकसार कर दे, पश्चात् उसके ऊपर तीनदिन अग्नि जलावे, और चौथे दिन घड़ियाको निकाले, तव यह गंधक जीर्ण होवे-फिर इतनीही गंधक डालकर जारण करे, इस प्रकार षड्गुण गंधक जलावे, अथवा वज्रमूषामें षड्गुण गंधक जारण करे ।

वज्रमूषाकीविधि.

छःटंक कोयला, स्याहमाटी, कपडा, कीटी प्रत्येक एक २ टंक, सवको कूटपीस छानकर दो मूषा वनावे, इसको वज्रमूषा कहते हैं, अव जानना चाहिये कि, कोई वैद्य गंधक जारणके अनन्तर पहले अभ्रक जारण करता है, और कोई सोना जारण करता है, ये दोनों प्रकार अच्छे हैं, विनागंधक जलाये, और विना वीज कहिये, सोना, चांदी, अभ्रक, इनके जलाये जो पारेको मारता है वो वड़ा पातकी है ।

यथा.

अजीर्णंतुअवीजंतुसूतकंयस्तुघातयेत् ।
ब्रह्महासदुराचारीब्रह्मद्रोहीमहेश्वरि ? ॥

अर्थ—जो मनुष्य अजीर्ण और अवीज पारेको जारण करे, वह हे पार्वती! ब्रह्महत्यारा खोटे आचरणोंवाला ब्रह्मद्रोही है ।

तथाच रससिंधौ.

देव्यारजोभवेद्गंधोधातुःशुक्रंतथाभ्रकम् ।
आलिंगनेसमर्थौद्वौप्रियत्वाच्छिवरेतसः
आश्लेषादेतयोःसूतोनवेत्तिमृत्युजंभयं ।
शिवशक्तिसमायोगात्प्राप्यतेपरमंपदम् ।
यंथास्यजारणावह्नीस्तथास्याद्गुणदोरसः ।

अर्थ—देवीके रजसे गंधक प्रगटी, और इसीका शुक्रधातु अभ्रक, इससे अभ्रक और गंधक दोनों पारेको परमप्रिय हैं, इनके संयोगसे पारा मौतका डर नहीं मानता, शिवशक्तिके योगसे उत्कृष्ट स्थान मिले है । जैसे २ पारेकी जारणादिक क्रिया अधिक होवें तैसे २ अधिक गुणदाता होता है ।

गंधकजीर्णगुणाः

समेगंधेतुरोगघ्नोद्विगुणेराजयक्ष्मजित् ।
जीर्णन्तुत्रिगुणेगंधेकामिनीदर्पनाशनः ।
चतुर्गुणेतुतेजस्वीसर्वशास्त्रविशारदः ।
भवेत्पंचगुणे-सिद्धःषड्गुणेमृत्युजिद्भवेत् ।

अर्थ—पारेके समान गंधक जारण करनेसे रोग दूर करे, द्विगुण गंधक जारण करनेसे खई रोगको जीते, तथा त्रिगुण स्त्रियोंका अभिमान दूर करे, तथा चतुर्गुण तेज देवे और बुद्धि वढावे, तथा पाँचगुनी जारण करनेसे सिद्ध होवे, और छःगुनी गंधक जारण मृत्युनाशक होता है ।

तस्माच्छतगुणोव्योमसत्वेजीर्णेतुतत्समे ।
ताप्यखर्परतालादिसत्वेजीर्णेगुणावहः ।
हेम्निजीर्णेसहस्रैकगुणसंघप्रदायकः ।
वज्रादिजीर्णसूतस्यगुणान्वेत्तिशिवःस्वयम् ।

अर्थ—पारेमें षड्गुण गंधक जारणसे, अभ्रकसत्व समानजीर्ण किया हुआ सौगुना अधिक है, और सोनामक्खी, खपरिया, हरिताल, इत्यादि सत्वजारणसे गुणदायक होता है, तथा सुवर्ण जीर्ण करनेसे हजार गुणोंकादाता होवे, और हीरकादि जीर्ण पारेके गुण आप श्रीशिवजीही जानते हैं ।

अब कहते हैं कि बीज अर्थात् सोंना, चांदी, अभ्रक, इनका जारण दो प्रकारसे होता है, एक विडयोगसे, दूसरा विना विडके, इन दोनोंमें विडयोगसे जो बीज जीर्ण है, सो प्रधान उपाय हैं, अब बीजके जारण निमित्त विड कहते हैं।

मूलकार्द्रकचित्राणांक्षारैःगोमूत्रगालितैः।
गंधकैःशतशोभाव्योविडोयंजारणेमतः॥

अर्थ–मूली, अदरक, चीता, प्रत्येक एक २ मन लेकर सुखा लेवे, पीछे जलाकर इनकी राखको गोमूत्रमें भिगोदेवे, और पांच दिन बाद चार तह कपडेमें गोमूत्रको छान लेवे, और उसमें सवासेर गंधक आमलासारको घोट सौसे अधिक भावना देवे, जब गाढा हो तब सुखाकर रख छोड़े, इसीको विड कहते हैं, इसके योगसे पारा अभ्रकसत्व आदिको खाजाता है, यद्यपि विड अनेक हैं परंतु ग्रंथविस्तारके भयसे नहीं लिखते, यह विड पारेके भीतर सोंना, चांदी, अभ्रकका सत्व परा होवे, उसको पानी करदेता है, और पारेको बहुत भूँखा करता है, जब पारा भूँखा हुआ तब अभ्रकसत्वादि द्रवीभूतोंको खाजाता है। इसका यह सिद्धान्त है कि अभ्रकसत्वादि जो पारेके बाहर हैं तिनको यह विड द्रव नहीं करे, पारेके बाहर उनका द्रवीभाव ईश्वरके अनुग्रहसें होता है, यद्यपि उनके द्रव करनेका उपाय शास्त्रमें लिखा है, परन्तु वह होनहीं सक्ता।

अथ बीजजारणं प्रकार.

केवलाभ्रकसत्वंहिनग्रसत्येवपारदः।
तस्माल्लोहान्तरोपेतोयुक्तंवाधातुसत्वकः।
अभ्रकंजारयेत्सिद्ध्यैकेवलेनतुसिद्ध्यति।

अर्थ–प्रथम पारेमें उसका अष्टमांश विड डाले यानी पारा ८ टांक होतो एक टांक विड डाले, और जंभीरीके रसमें १ दिन घोटे, पश्चात् चौसठवां हिस्सा यानी चार रत्ती अभ्रकसत्वडाले, फिर जंभीरीके रसमें १ दिन घोटे, परंतु यह याद रहे कि प्रथम अभ्रकसत्वको तब जंभीरीके रससे घोटे, जब पहले अपने हाथोंसे **मोरका पित्ता और सरसोंका** तेल मललेवे, अथवा सोनामक्खी और शहत मिलाकर मलले, पीछे सोनामक्खीका सत्व अभ्रकसत्वके समान यानी ४ रत्तीले-एक गोलाकरे, तत्पश्चात् सेंधानिमक और जवाखार दोंनोंको धेला २ भर लेकर नींबूके रस और गोमूत्रमें खूब घोटे, जब गाढाहो तब चारतह कपड़ेपर लेपकरे और जब सूखजाय तब इसमें उस गोलेको रखे, अथवा भोजपत्रपर लेपकर उसमें गोलेको रखे और सूतसें बांधकर दोलायंत्रकी भांति एक हांडीमें सैंधानिमक, जवाखार, कांजी, कागजी नींबूका रस, और गोमूत्र, डालकर तीन दिन स्वेदन करे। जानना चाहिये कि **अभ्रकसत्व** जब **सोनामक्खीके** सत्व में मिले तब पारा अभ्रकसत्वको भलीभांति ग्रसे, और दोनों सत्व नमिलें तो नहीं ग्रसे, इसीसे अभ्रकसत्वकी बराबर सोनामक्खीका सत्वमिलावे पीछे जारण करे। जब इस प्रकार स्वेदन करचुके तब उस गोलेको निकाल लेवे, फिर इस गोलेको कांजीके पानीसें धोकर इसमेंसें पारा निकाल लेवे और कपडेमें डालकर खूब मले, परन्तु ऐसें मले कि पारा घटने न पावे जब मलते मलते निर्मल होजाय तब चार लड़कपड़ेमें डालकर निचोड लेवे, पीछे पारेको तोले, जो जानेकि केवल पारा रहगया है अभ्रकसत्व बाकी नहीं रहा तो जानना कि

पारा अभ्रकसत्वको खागया और पारा तोलमें अधिक होवे तो जाने कि पारेमें अभ्रक जीर्ण नहीं हुआ, जब अभ्रकसत्व पारेमें जीर्ण होजाय तब पारा दंडधारी अथवा जीवधारी होवे और यदि जीर्ण नहोय तो दंडधारी नहोवे, तब उस पारेको भोजपत्रमें बांधकर दोलायंत्रकी भांति एक हांडीमें लटकाय कांजी-का पानी भरे और पावभर सैंधानिमक डाल तीन दिन स्वेदन करे तब पारेका अजीर्ण दूर होवे, अथवा डमरूयंत्रमें पारेको उडालेवे तब पारेका अजीर्ण दूर हो ।

उक्तंहि.

अजीर्णेपातयेत्पिंडंस्वेदयेन्मर्दयेत्तथा ।
रसस्याम्लस्ययोगेनजीर्णेग्रासंतुदापयेत् ।

अर्थ—पारेके अजीर्णमें पातन स्वेदन और खटाईके योगसे मर्दन संस्कार करे, जब जीर्ण होजाय तब ग्रास दे, इसी प्रकार पारेको अभ्रकके चार ग्रास और दे, इसीभाँति दोला-यंत्रमें स्वेदन करे, और इसी प्रकार प्रक्षालन करे और पिंड करे, इसी प्रकार अजीर्ण जीर्ण-की परीक्षा करे, बाजे वैद्य कच्छप यंत्रसे पारेमें दूने अभ्रक सत्वादिकको डालकर जलाते हैं, और जो शेप रहता है उसको साक्षात् भट्टी-की अग्निमें जलाकर राख करते हैं, और पूर्वोक्त गोलेको पक्की घड़ियामें गोलेके ऊपर नीचे बिडदे इस घड़ियाको नींबूके रससे भर देते हैं, और घडियाका मुख बंदकर भट्टीमें धोंकते हैं, और पारेका द्विगुण सत्वादिक कच्छपयंत्रमें जलाते हैं तब पारेके उड़नेका भय नहीं रहता, इससे साक्षात् अग्निके संयोगसे बाकी द्विगुणसे अधिक सत्वादिक जलावे तो कुछ चिंता नहीं अथवा अभ्रक सत्वादिक कच्छप यंत्रमें नजलावे तो सुगमप्रकार यह है कि, पृथ्वीमें गोबर रखकर उसमें छः अंगुल गहरी पक्की घरिया रख उसमें गोलेको रखे, उसके ऊपर नीचे बिड धरके जंभीरीके रससे आधी घरियाको भरदे और मुख बंदकर ऊपर अंगारोंका भरा खिपड़ा रखे जबतक सत्व न पिघले, पश्चात् पारेको निकाल कर तोले, जो पारा वजनमें बराबर हो तो फिर इसी प्रकार सत्वको डालकर अग्निदे, जब पारेका दूना सत्व जलजाय, तब साक्षात् अग्नि संयोगसे त्रिगुण, चतुर्गुण, पंचगुण, षड्-गुण, सत्वादिक जारण करे, हरबार पारेका षोडशांश सत्वादिक डाले और जलावे तिसके उपरान्त बाह्यद्रुतिके योगसे अभ्रक सत्वको पारेमें जलावे, यद्यपि शास्त्रमें बाह्यद्रुतिका प्र-कार और है उसकोमें लिखताहूं (इसको कोई वैद्य नहीं जानता) एक दिन मूलीके रसमें सफेद अभ्रकको भिगोकर कंबलकी थै-लीमें भरे, यदि अभ्रक सेरभर हो तो इसमें पावभर धानकी भुसी मिलाकर तीन दिन एक परातमें भिगोवे चौथे दिन उसी परातमें उस थैलीको मले, ऐसा करनेसे अभ्रकके छोटे २ टुक-डे होकर पानीमें आवें, तब पानीको निकाल डाले, पानीके भीतर जो धान्याभ्रक है उस-को ले, और उसकी बराबर साबुन मिलाकर एक खरलमें घोटे, पश्चात् कड़ाहीमें डाल साबु-नका तेजाब दोसेर डाले, तीनोको मंदाग्निसे जलावे, जब आधसेर तेजाब बाकी रहे तब उतारले, और फिर इसमें ३६ टांक शहत, १७ टांक छोटी मछली, ३६ टांक खर्गोशका गोश्त; ९ टांक खांड, ३६ टांक गुड़, १८ टांक गूगल, १८ टांक अंडीका चोवा, इन सबको कूट पीस कर मिलावे, और ३ गोले

कर सुखावे, पश्चात् तीनोंको अँगीठीमें रख नीचे ऊपर कोयला दे बंकनाल धौंकनीसे धौंके, तो अभ्रकका सत्वज्वारकी सदृश निकाले उसमें पूर्वोक्त मसाला डाल एक खर्गोश मारकर डाले, फिर सबको घोटकर गोला बनावे फिर पूर्वोक्त रीतिसे दूसरें रांगके समान अभ्रक सत्व निकाल लेवे, इसी प्रकार तीसरे मसाला डालकर बंकनालसे धौंक दहीसा अभ्रक सत्व निकाल लेवे, तीसरी वारका निकाला हुआ सत्व सर्वदा पतला रहता है-जमता नहीं है, इसको घाराद्रुति कहते हैं, यह पारेके संबंध विनाद्रवी भूत है।

लोहस्यद्रवीकरणं.

पहले फोलादमें शहत, सुहागा, संखियाको डाल एक बडी घरियामें डाल पिघलने पर्यंत घोटे, पीछे शीतलकर २४ टांक लेवे, और इसका आठवां हिस्सा नमक डालकर कागजी नीबूके रसमें घोटे, जब सूख जाय तब गरम पानीसे धोडाले, जब पानी शीतल हो तभी निकाल डाले, पश्चात् १ टांक नौसादर डाल नींबूके रसमें घोटे, पीछे गोला बनाकर शीशेके प्यालेमें रखे दोप्रहर सुखाकर पीछे १ टांक नौसादर डाल कागजी नीबूके रसमें घोटे, और गोला बनाकर उसी प्यालेमें तीन प्रहर सुखाकर पीस डाले, और नौसादर और शिंगरफ तीन १ टांक डालकर नींबूके रसमें घोटे, जब सूखजाय तब उसी प्यालेमें रख खट्टे अनारके रससे प्यालेको भरकर ढक देवे, नित्य खट्टे अनारका रस थोड़ा २ डाला करे, एक महीने तक लोहा रसमें डूबा रहे ऐसे एक महीने तक करे तो लोहा पारेकी तरह पतला होकर रहा आवे, इति लोहस्य वाराद्रुति। पश्चात् अभ्रकसत्व द्रवीभूत, और लोहद्रवीभूत दोनोंको तीन २ टांक मिलाकर घोटे और पीछे १ टांक शुद्ध पारा मिलाकर घोटे, जब भलीभांति मिलजायँ तब एक घरियामें भरकर खूब धौंके तो पारा बद्ध होजावे, यह क्रम मिथ्या नहीं है, इसीसे पारा बद्ध होता है-और सोना, चांदी होता है इससें संदेहनहीं और जो लोह और गंधक दोनों द्रवीभूतोंको पारेमें मिलवे, जिसमें अभ्रकसत्व जारण किया है तो अति उत्तम है, इसको सेरभर रांगमें एक टंक डाले, वो एक टंक रांग एकसेर तांवेमें डालेसो एक टंक तांवा सेरभर कांसेमें डाले सो एक टंक कांसा सेरभर सीसेमें डाले तो चांदी होवे और एक तोला तांवेमें डाले तो सुवर्ण होवे इस पारेका नाम सिद्धि सूत है।

बद्धपारदके लक्षण.

हेम्नावारजतेनवासहिपरो ध्मातोव्रजत्येकता गच्छीगोनिचलोगुरुश्चगुटिकाकारोतिदीर्घोज्ज्वलः। चूर्णत्वंपटुवत्प्रयातिनिहितो घृष्टेन मुंचेन्मलम्। निर्गंधोद्रवतिक्षणात्सहिमतो बद्धाभिधानोरसः॥

अर्थ—जो सुवर्ण चांदीके संग मिलानेसे एक होनाय-छीजे नहीं; निश्चल और भारी हो, गुटकाके आकार या लंबा हो, स्वच्छ और पीसनेसे नोनके समानचूर्ण होजाय, घिसनेसे कालोंछ न दे, गंध रहित, शीघ्रही द्रव जाय, उसे बद्धरस जानना। ए बद्धसूतके लक्षण हैं

बद्ध पारेकी परीक्षा.

रसेनवद्धमायातस्त्रोटयत्येवनिश्चितम्।
घनांलोहमयिस्थूलां स्पर्शमात्रेणलीलया।
मृतमुत्थापयेन्मर्त्यंचक्षुषोःक्षेपमात्रतः।
निहंतिसकलान्रोगान्घ्रातःशीघ्रंनसंशयः॥

अर्थ–पैरोंकी बडी भारी लोहेकी वेड़ी भी इसके स्पर्शमात्रसे टूटजायँ, और इसको घिसकर मुर्देकी आंखमें लगावे तो जी उठे, और इसके सूंघनेसे ही सब रोग दूर होवें, । अब सिद्धरसका गुटका प्रकार लिखते हैं ।

अथ खगेश्वरी गुटिका.

तुत्थकंमूषयाकृत्वा स्थापयेन्मध्यपारदं ।
अर्कसेंहुंडधत्तूर रसोद्रोणंचपूरयेत् ।
सप्ताहमौषधैर्भाव्यंसिंहनेत्र्यावनप्रिया ।
पश्चात्तदम्लयोगेनगोलकंशुकसन्निभम् ।
धत्तूरविषतैलेनज्योतिष्मत्यास्तथैवच ।
गुंजाचलांगलीचैव भल्लातांकोलकौतथा ।
एतेषांतैलयोगेनगुटिकाविषमध्यगां ।
दोलायंत्रेपचेदेवं चतुःषष्टिदिनानिच ।
प्रत्येकमौषधीतैले राक्षसीगुटिकोत्तमा ॥

अर्थ–सिद्धपारेके-नीलाथोथा आधसेर लेकर आधा नीचे और आधा ऊपर रखे, और आक, धतूरा, थूहर, इन तीनोंका रस चार २ सेर लेकर प्रथम कड़ाहीमें पूर्वोक्तरीतिसे पारेको रख ऊपरसे सब रसको डाल तेज आंच दे, जब रस गाढ़ा होजाय, तब कड़ाहीको उतार कर पारेको पानीसे खूब धोडाले जब पारा गाढ़ा हो तब खरलमें डाल ७ दिन सिंहनेत्रीके रसमें घोटे, और ७ दिन वनप्रियाके रसमें घोटे, पीछे कागजी नींबूके रससे घोटे, पीछे एक विषकी बडी और मोटी गांठ लेकर उसमें एक गढ़ेला इतना बड़ा खोदे जिसमें पावभर पारा समाजावे, तब उसमें पारा भरकर विषके टुकड़ेसे मुख बंद करे, और इस विषकी गांठको कच्चेसूतसे लपेटकर दोलायंत्रकरके विषकोधतूरेके तेलमें राखे परंतु विषकी गांठ कड़ाहीके पेंदेसे दो अंगुल ऊंची रहे ६४ दिन पर्य्यंत इसके नीचे मंदाग्नि जलावे, जैसे २ तेल घटे तैसे २ डालता जाय इसी प्रकार मालकांगनी, घूंघची, करियारी; भिलाया और अंकोल इन प्रत्येकके तेलमें चौंसठ २ दिन पचावे, तो राक्षसी पारा हो अर्थात् वहुत भूँखा होवे । इति

स्वर्णादिद्रवलोहानिभक्षयेन्मात्रसंशयः ।
तारमध्येयदाक्षिप्तंस्वर्णंभवतिनिश्चितं ।
वंगमध्येयदाक्षिप्तंरजतंजायतेध्रुवम् ।
मुखेक्षिप्तमदृश्यंचनानाकौतुककारकं ।
खेचरीजायतेसिद्धिर्मनःपवनवेगकृत् ।
जरांमृत्युंहरेद्रोगं विषंस्थावरजंगमम् ।
नानयासदृशांकापि त्रिपुलोकेपुविश्रुतं ।
नाम्नाखगेश्वरीनामगुटिकासिद्धिसाधनम् ॥

अर्थ–यह पारा सुवर्णादि पतली धातुओंके खानेको सामर्थ हो, चांदीमें डालनेसे सुवर्ण हो और रांगको चांदी करे, मुखमें रखनेसे अदृश्य होवे, आकाशमें विचरने वाला हो, एक क्षणमें हजार कोस पहुंचे, बुढापा मृत्यु और विषका नाश करे, इसकी बराबर दूसरा गुटिका नहींहै । इति खगेश्वरी गुटिका समाप्तम्

ब्रह्माण्ड गुटिका.

नागवल्लीदलद्रावैःसप्ताहंसिद्धपारदम् ।
मर्दयेत्तप्तखल्वेन कांजिकैःक्षालयेत्ततः ।
तंगर्भेविषकंदस्यक्षिपेन्निष्कंचतुष्टयम् ।
विषेणतन्मुखंरुध्वास्थूलवाराहमांसजे ।
पिंडवर्गेनिरुध्याथ मुखंसूत्रेणबंधयेत् ।
संध्याकालेबलिंदत्वा कुक्कुटंमदिरायुतं ।
ततश्चुल्ल्यांलोहपात्रे तैलेधत्तूरसंभवे ॥
विषचेत्तुततःपश्चात्सपिंडोमन्दवह्निना ।
संध्यामारभ्ययत्नेनयावत्सूर्योदयोभवेत् ॥
विषमुष्टिपलंचैकं गुंजाविजययोरपि ।

तैलंजातीफलस्यापि वीरतालस्यचोत्तमम्॥
पाचयेत्पूर्वयोगेन चान्यथानैवसिध्यति।
ततउद्धृत्यगुटिकां क्षीरमध्येविनिःक्षिपेत् ॥
तत्क्षीरंशोपयेत्क्षिप्रमेतत्प्रत्ययकारकम्।
दृष्ट्वातांधारयेद्वक्त्रेवीर्यस्तंभकरीनृणाम् ॥
क्षीरंपीत्वारमेद्रामांकामाकुलकलायुताम्।
ब्रह्माण्डगुटिकाख्याताशोपयन्तीमहोदधिम्

अर्थ–सिद्ध पारदको नागरवेल पानके रससें सात दिन तप्तखल्वमें खरल करे, फिर उसको कांजीसें धोवे, विषके रससे ७ दिन घोटके कांजीके पानीसें धोवे, फिर ४ टांक पारेको विषकी डलीके भीतर भरके उसका मुख विषकी डलीसे बंद कर देवे, फिर उस विषकी डलीको पुष्ट सूअरके मांसमें रखकर गोला बनावे, और इस गोलेका मुख सूतसे लपेट कर बंद कर देवे, फिर सायंकालमें भैरव और कालीको मुर्गे और शरावकी बलिदान देकर एक बड़े भारी लोहेके पात्रको चूल्हे पर चढाय उसमें साठ पैसे भर काले धतूरेका तेल छोड देवे, और उसमें पूर्वोक्त मांसके गोलेको छोड़ देवे, फिर मंदाग्निसे सायंकालसे लेकर प्रातःकाल तक औटावे, फिर निकाल कर दो पैसेभर कुनलाके तेलमें औटावे इसी प्रकार धूँवची, भांग, जायफल, वीरताल, इन प्रत्येकका रस दो २ पैसेभर लेकर पृथक् २ औटावे पीछे पारेको निकालकर दूधमें डाले तो यह क्षणमात्रमें उस दूधको सुखा देवे, तव जानेकि गुटका सिद्ध होगया फिर इस गुटकेको दूध पीकर मुखमें राखे तो सैकडों स्त्रियोंको भोगे, जव गुटकेको मुंसे निकाले तव स्खलित हो, यह ब्रह्मांड गुटिका समुद्रके समान वीर्यको शोपण करती है।

इति पारदस्यबंधनप्रकरणम्.

अथ मारण प्रकरणम्.

कृष्णधत्तूरतैलेन सूतोमर्द्योनियामकैः।
दिनैकंतंपचेद्यंत्रे कच्छपाख्येनसंशयः ॥
मृतःसूतोभवेत्सद्यो सर्वयोगेपुयोजयेत्।

अर्थ–एक पैसेभर सिद्ध पारेमें काले धतूरेका रस डालकर १ दिन घोटे, और एक दिन नियामक औषधियोंके रसमें घोटे, पश्चात् गोला वना कच्छप यंत्रमें रख आंचदे तो पारा निस्संदेह मरे, इस क्रियासें सबीज और निर्बीज पारा मरता है।

नियामक औषधि.

बंदालका रस, सफेद आकका दूध, कबूतरकी बीठ, गीली हंसपदीका रस, इंद्रायनके फलका रस, ये नियामक औषधि हैं।

पारामारणकी दूसरी विधि.

व्यालस्यगरलेसूतं मर्दयेत्सप्तवासरम्।
शंभुनालंकृतेयंत्रे तन्मध्येतद्रसंक्षिपेत् ॥
वन्हिमज्ज्वालयेद्द्वादंवारिणाचोर्ध्वशीतलम्
यामद्वादशकंचैव सुसिद्धोजायतेरसः ॥
शुल्वेगुंजार्द्धकंदेयं गुंजैकंपर्वतानपि।
देहेलोहेभवेत्सिद्धिःकामयेत्कामिनीशतं ॥
तिलमात्रंप्रदातव्यंसर्वरोगंनियच्छति।
सेवनाज्जायतेसिद्धिरायुर्वृद्धिश्चिरंतनी।

अर्थ–साँपके जहरमें पारेको सात दिन घोटे, पीछे श्रीमहादेवजीके कहे जलयंत्रमें भरकर १२ प्रहरकी अग्नि देवे और यंत्रके ऊपर शीतल जलभरे जिससे ऊपर ठंडा रहे ऐसा करनेंसे रस (पारा) सिद्ध होता है। इसको तांबेमें आधरत्ती डालनेसें तांबेको वेधे, और यही १ रत्ती पर्वतको वेधनेकेलिये समर्थ है,

इस रसने देह और सुवर्णकी सिद्धि होवे इसका खानेवाला पुरुष सौ स्त्रियोंसे भोग करे, इसकी तिलकी बराबर मात्रा सर्व रोगोंको नाशकर आयुको बढावे ।

तथा तीसरी विधि.

शुद्धंसूतंसमंसिंधुं सोमलंचतदर्द्धकम् ।
सोमलार्द्धंविषंक्षिस्वा हिंगुस्फटिकगैरिकम् ॥
सामुद्रलवणंचैव सर्वतुल्यंविनिक्षिपेत् ।
कांजिकेनपुटंदद्यात्पुटित्दाचेन्द्रवारुणीम् ॥
स्थाल्यामुत्थापनंकृत्वाअग्नियामाष्टकंददेत् ।
स्वांगशीतंसमुधृत्य भस्मसूतोर्द्धपातनं ॥
योजयेत्सर्वरोगेषु कुर्य्याद्बहुतरंक्षुधाम् ।
पुष्टिदंवर्द्धतेकामःयोजयेद्रक्तिकाद्वयम् ॥

अर्थ–शुद्धपारा, सेंधानिमक समभाग, संखिया अर्द्धभाग, बच्छनागविष चतुर्थांश, हींग, फिटकरी, गेरू, सामुद्रनोन, इनको समान भाग लेकर कांजीका पुट देवे, पीछे इन्द्रायनका पुट देकर डमरू यंत्रमें रख, आठ प्रहरकी आंचदे, स्वांग शीतल होनेपर ऊपरकी हांडीकी जमीहुई पारेकी भस्मको निकाल लेवे, और सर्व रोगोंमें योजना करे, यह भस्म क्षुधा पुष्टि और कामदेवको बढावे, इसकी मात्रा दोरत्तीकी है ।

पारा मारनेकी चौथी विधि.

पंचाग्निर्वरालिंगीद्रवेघ्रस्तत्रयंरसम् ।
मर्दितःपिष्टितोभस्म स्वर्णवर्णप्रजायते ॥

अर्थ–पारेको चित्रकके रसमें ९ दिन खरल करे, और वनतुलशी तथा शिवलिंगीके रसोंमें तीन २ दिन खरल करे, तथा इन्हीं रसोंके पुट देनेसे पारेकी सुवर्णके समान भस्म होवे ।

तथा पांचवी विधि.

कोरंटकाम्बुसंयोगादातपे मर्दयेद्रसम् ।
मृयतेसौततःसूतःसर्वकर्माणिसाधयेत् ॥

अर्थ–पारेको पीयावांसेके रसमें मर्दनकर धूपमें रखे तो पारा मरे और सर्व कार्य सिद्ध करे ।

छटी विधि.

भुजंगवल्लीनीरेण मर्दयेत्पारदंदृढम् ॥
कर्कटीकंदमूषायां संपुटस्थं पुटेद्गजे ॥
भस्मतद्योगवाहीस्यात्सर्वकर्मसु योजयेत् ॥

अर्थ–पारेको नागर वेलके रसमें दो प्रहर खरल कर ककडीमें भर संपुटकर गजपुटमें फूंकदेवे, तो पारेकी योगवाही भस्म होवे इसको सर्व कर्मोंमें मिलावे ।

सातवी विधि.

काष्टोदुम्बरिकादुग्धैःरसंकिंचिद्विमर्दयेत् ।
तद्दुग्धैःघृष्टहिंगोश्च मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥
क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतं तत्रमुद्रांप्रकल्पयेत् ।
धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञो मृन्मूषासंपुटेऽधिके ॥
पचेद्गजपुटेतेनसूतको यातिभस्मताम् ।

अर्थ–पारेको कठूँमरके रसमें खरलकर कठूँमरके रससे-भुनी हुईहींगकेदो मूषा वनाकर उनके वीचमें रख उसके ऊपर मुद्राकर उस गोलेको चतुरवैद्य संपुटमें रख गजपुटमें पचावें, तो पारा भस्म होवे ।

आठवी विधि.

वटक्षीरेणसूताभ्रौमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
पाचयेत्तेनकाष्टेनभस्मीभवतितद्रसः ॥

अर्थ–पारे और अभ्रकको दो प्रहर वडके दूधमें खरलकरे, पीछे कडाहीमें चढाकर वड़की लकडीसे चलाता रहे तो पारा भस्म होवे ।

नवम विधि.

कटुतुंव्युद्भवेकन्दे गर्भेनारीपयःप्लुतः ।
सप्तधाम्रियतेसूतःस्वेदितोगोमयाग्निना ॥

अर्थ–पारेको स्त्रीके दूधमें खरलकर कड़-

वी तूंबीमें रख अग्नि देवे, इसप्रकार सात वार उपलेंके संपुटमें पारा भस्म होवे ।

दशम विधि.

अपामार्गस्यबीजानि तथैरंडंचचूर्णयेत् ।
तच्चूर्णंपारदेदेयं मूषायामधरोत्तरम् ।
रुध्वालघुपुटैःपश्चाच्चतुर्भिर्भस्मतांव्रजेत् ॥

अर्थ—ओंगा और अंडी, दोनोंके बीजोंको पीसकर चूर्णकरे, और एक मूषा वनाय उक्त चूर्णको आधा नीचेकी मूषामें रख पारा रखे फिरे आधे चूर्णको पारेके ऊपर रखकर दूसरे मूषासे बंदकर चार हलके पुट देनेसे पारेकी भस्म होवे ।

वज्रमूषाकरण.

द्वौभागौतुपदग्धस्य चैकावल्मीकमृत्तिका ।
लोहकिट्टस्यभागैकं श्वेतपाषाणभागिकम् ॥
नरकेशंसमंपंच छागीक्षीरेणपेषयेत् ।
याममात्रंदृढंपश्चात्तेनमूषांप्रकल्पयेत् ॥
शोषयित्वातुसंलिप्य तत्कल्कैःसन्निरोधयेत्
वज्रमूषेयमाख्यातासम्यक्पारदसाधिका ॥

अर्थ—तूसेसकी राखसे दोभाग, वमईकी मिट्टी १ भाग, लोहेकी राख १ भाग, सफेद खडियाका चूरा १ भाग, इनके वरावर मनुष्यके वाल कतरे इन पांचोंको एक प्रहर वकरीके दूधमें खरल करे फिर इसकी मूषा वनाकर धूपमें सुखालेवे दोनों मूषाओंके मुख मिलाय उसी उक्त कल्कसे लेप देकर बंदकर देवे, तो यह पारदके सिद्धकरनेवाली वज्रमूषा वने ।

मदनमुद्रा.

औदुम्वरार्कवटदुग्धपलंपलंच लाक्षापलंपल चतुष्टयचुम्बकस्य । संमर्द्यसम्यगलसीफल तैलयोगाच्छ्रीपारदस्यमरणेमदनाख्यमुद्रा ॥

अर्थ—गूलर, आक, वड तीनोंका दूध दो २ पैसाभर, पीपलकी राख २ पैसाभर, चुम्बक पत्थरका चूर्ण ८ पैसा भर, इन सबको अलसीके तेलमें घोटे तो यह मैनमुद्रा सिद्ध होवे, इससे जो संधिलेप करे तो वह लेप दृढ होवे, कितनाही गरम पानी हो परंतु, यह मुद्रा नहीं चुए और इसी मुद्राके प्रभावसे जलजंत्रके द्वारा गंधकका तेल निकलता है ।

मृतपारदके लक्षण.

अतेजश्चागुरुःशुभ्रोलोहहाचंचलोरसः ।
यदानोवर्त्तयेद्वह्नौनोर्ध्वंगच्छेत्तदामृतः ।

अर्थ—मरापारा—तेजरहित, हलका, शुभ्र लोहके मारनेवाला, अचंचल और अग्निमें पलटे नही न उडे उसको मृतपारद जानना ।

रससेवाफल.

बुद्धिस्मृतिप्रभाकान्तिवलश्चैवरसस्तथा ।
वर्द्धतेसर्वएवैतेरससेवाविधौनृणाम् ।

अर्थ—पारद भक्षणसे मनुष्यकी वुद्धि, स्मृति, प्रभा, कान्ति, वल, और रस संपूर्ण वढते हैं।

पारदकी मात्रा.

वल्लमेकंनरेऽश्वेतुगद्याणैकंगजेद्वयम् ।
सर्वरोगविनाशार्थं भिषक्सूतंप्रयोजयेत् ।

अर्थ—मनुष्यको मूर्च्छित या मृत पारदकी मात्रा दो रत्तीकी है, घोडेको एक गद्याणक (३२ रत्ती) हाथीको दो गद्याणक पारा सर्व रोग नाश करनेके अर्थ वैद्य देवे ।

घनसत्वकान्तकांचन शंकरतीक्ष्णादि सत्व जीर्णस्य[1] । सूतस्यगुंजयुग्मामापकमात्रंपरा-मात्रा ।

अर्थ—जिस पारदमें अभ्रकसत्व जारण हुआ हो उसकी १ रत्तीकी मात्रा है, कान्त-

१ प्रातरेव पुरतो विरेचनं तद्दिनोपवसनं विधायच तत्परे हनिच पथ्यसेवनं तत्परे हनिरसेन्द्रसेवनम्

लोह जारित पारदकी दो रत्ती, सुवर्णजारित की ३ रत्ती, चांदी जारितकी ४ रत्ती, तीक्ष्ण जारितकी ९ रत्ती, मात्रा कहीहै, और बडी मात्रा १ मासेकी है, जो मनुष्य एक पल तीक्ष्णजारित पारदको भक्षण करे उसकी लक्षवर्षकी आयु होवे, इसी प्रकार सुवर्ण जारितपारद भक्षणसेभी लक्षायु होवे।

पारदभस्मगुणाः

यावन्नहरवीजंतु भक्षयेत्पारदंमृतं।
तावत्तस्यकुतोमुक्तिर्भोगाद्रोगाद्भवादपि ॥

अर्थ–जब तक यह मनुष्य शिवका बीज (पारद) मराहुआ भक्षण नहीं करे तब तक क्या इसकी भोगरोग और संसारसे मुक्ति होगी? अर्थात् नहीं होगी।

तथाच.

मूर्च्छीतोगदहृत्तथैवखगतिं धत्तेविवद्धोर्थदः। स्याद्भस्मामयवार्धकादिहरणंदृक्पुष्टिकांति प्रदं। वृष्यंमृत्युविनाशनंवलकरंकान्ताजनानंददं। शार्दूलातुलसत्वकृच्चभुविजात्रोगानुसारीस्फुटं ॥

अर्थ–मूर्च्छितपारा रोगीके रोगको दूरकरे, तथा आकाश मार्गमें चलनेवाला करे, बद्धपारा धन दे, मृतपारा तरुणता, दृष्टि, पुष्टता और कान्तिको दे और वृष्य है, मृत्युका नाशक, वलकर्त्ता, स्त्रियोंको आनंददाता, सिंहके समान पराक्रम करने वाला, पृथ्वीके सब रोगोंको दूर करनेवाला है।

एकोदोषोहिसूक्ष्मोस्ति भक्षितोभस्मसूतके।
त्रिसप्ताहाद्वरारोहेकामान्धोजायतेनरः ॥
नारीसंगाद्विनादेवी अजीर्णतस्यजायते।
मैथुनाचलितेशुक्रेजायतेप्राणसंशयम् ॥

अर्थ–श्रीशिवजी कहते हैं कि, हे वरारोहे! इस पारद भक्षणमें एक बड़ा भारी दोष है कि प्राणी पारदका भक्षण करते ही २१ दिनमें कामान्ध होजाता है हे देवी! विना स्त्रीसंग किये तो पारेका अजीर्ण होता है और यदि मैथुन करे तो वीर्य स्खलित होते ही इस प्राणीके प्राण वचनेका संशय होजाता है।

जीर्ण शमनोपाय.

युवत्याजल्पनंकार्यं तावतन्मैथुनंत्यजेत्।
लघुतांशेफसोज्ञात्वा पश्चाद्गच्छन्सुखीभवेत्

अर्थ–अतएव जब तक पारद जीर्ण नहो तब तक स्त्रियोंसे वार्त्तालाप करता रहे तथा उनके अंग स्पर्शादिक करता रहे पारद भक्षणके पूर्व लिंग लघु होता है और पश्चात् दीर्घ होजाता है अतएव पारद जीर्ण होनेके पश्चात् जो स्त्रीसंग करता है वो सुखी होता है।

पारद भस्मके अनुपान.

पिप्पलीमरिचैःशुंठीभारंगीमधुनासह।
कासश्वासप्रशमनोशूलस्यचविनाशनः ॥
हरिद्राशर्करासार्द्धंरुधिरस्यविकारनुत्।
त्र्यूषणंत्रिफलावासाकामलापाण्डुरोगजित्॥
शिलाजतुतथैलाच शितोपलसमन्वितः।
मूत्रकृच्छ्रेप्रशस्तोयं सत्यंनागार्ज्जुनोदितं ॥
लवंगकुसुमंपत्री हिंगुलंअकलंकरा।
पिप्पलीविजयाचैवसमान्येतानिकारयेत् ॥
कर्पूरादहिफेनानि नागाद्भागार्द्धकंक्षिपेत्।
सर्वमेकत्रसंमर्द्य धातुवृद्धौमदापयेत् ॥
सौवर्चलंलवंगंच भूनिंबंचहरीतकी।
अस्यानुपानयोगेन सर्वज्वरविनाशनः ॥
तथारेचकरःप्रोक्तःसौवर्चलफलत्रिकम्।
लवंगं कुसुमंचैव दरदेनचसंयुतं।
तांबूलेनसमंभक्ष्यंधातुवृद्धिकरंपरं।
विदारीचूर्णयोगेन धातुवृद्धिकरोमतः ॥

विजयादीप्यसंयुक्तोवमनस्यविकारनुत् ।
सौवर्चलंहरिद्राचविजयादीप्यकंतथा ।
अनेनोदरपीडांचसद्योत्पन्नांविनाशयेत् ।
चतुर्वल्लीपलासस्यबीजंचद्विगुणंगुडः ।
अस्यानुपानयोगेनक्रुमिदोषविनाशनः ।
अहिफेनलवंगंचदरदंविजयातथा ।
अस्यानुपानतःसद्यःसर्वातीसारनाशनः ।
सौवर्चलेनदीप्येनअग्निमांद्यहरःपरः ।
क्षुद्बोधजनकःश्चैवसिद्धनागेश्वरोदितम् ।
गुडुचीसत्वयोगेनसर्वपुष्टिकरःस्मृतः ।

अर्थ–पारेकी भस्म-पीपल, मरिच, सोंठ, भारंगी, इनका चूर्ण और सहतके संग खानेसे खांसी, श्वास और शूलरोगको नाश करे । हलदी और खांडके साथ रुधिर विकारको। त्रिफला, त्रिकुटा और अडूसेके संग कामेच्छा और पांडुरोगको। शिलाजात, इलायची और खांडके साथ मूत्रकृच्छको । लौंग, केशर, तालीसपत्र, हिंगुळ, अकरकरा, पीपल, समानले तथा कपूर, अफीम, आधा भागले, नागेश्वर १ भाग इनके चूर्णके साथ धातुवृद्धि करे । सेंधानोन, लौंग, चिरायता, हर्ड इनके चूर्णके साथ सर्वज्वरोंको दूर करे। सेंधानोन, त्रिफला, लौंग, केशर और शिंगरफके साथखानेसे दस्तावर जानना। पारेके साथ धातुको बढावे । तथा विदारीचूर्णके साथ खानेसेभी धातुको बढावे, । भांग और अजमायनकेसाथ वमनको दूर करे । सैंधा निमक, हलदी, भांग, अजमायन इनके साथ खानेसे उदरपीडा दूर करे । चतुर्वल्ली, पलासके बीज इनसे दूना गुड मिलाकर खाय तो क्रुमीरोग दूर हो,। अफीम, लौंग, शिंगरफ, भांग इनके साथ खानेसे अतीसारको दूर करे। सेंधानोन, अजमायनके साथ मंदाग्नि दूर हो, और क्षुधा बढे।गिलोयसत्वके संयोगसे खानेसे पुष्टि करे

तथाच.

पित्तेशर्करयामलेनसहसावातेचकृष्णासमं ।
दद्यात्श्लेष्मणिशृंगवेरसहितंजंबीरनीरेज्वरं ।
रक्तोत्थेमधुनामवाहरुधिरेस्यान्मेघनादोदके।
दद्याच्चाथकृतातिसारविकृतौरोगारिसंज्ञोरसं

अर्थ–पारेकी भस्म-पित्तरोगमें खांड और आमलेके चूर्णयुक्त दे, बादीमें-पीपलके साथ, कफरोगमें अदरकके साथ, ज्वरमें नींबूके रसमें, रुधिर विकारोंमें सहतके संग । रुधिरस्राव, प्रवाहिका, अतीसार, इनमें चौलाईके रससें पारेकी भस्म देनी चाहिये ।

पारदभक्षणकाल.

प्रभातेभक्षयेत्सूतंपथ्यंयामद्वयाधिके ।
नोल्लंघयेत्त्रियामंतुमध्यान्हेनैवभोजयेत् ।
ताम्बूलान्तर्गतेसूतेविड्वंधोनैवजायते ।
सकणामसृतंभुक्तामलबंधंहरेन्निशि ।

अर्थ–पारेकी भस्म तथा चन्द्रोदय अथवा रसकपूर इनको प्रातःकाल भक्षण करे, और दो प्रहर पीछे पथ्यले, परन्तु तीन प्रहर न वीतने पावें, इस पारद भस्मको पानके साथ खानेसे मलबंध नहीं हो, अथवा विष और पीपलके संग रात्रिमें खाय तो मलबंध नहोवे.

पारदेपथ्यानि.

हितंमुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानिपुरातनः ।
शाकेपुनर्नवादेविमेघनादंचवास्तुकं ।
सैंधवंनागरंमुस्तामूलकानिचभक्षयेत् ।
कुंकुमागुरुलेपंचतथाकर्पूरभक्षणम् ।
गोधूमजीर्णशाल्यन्नंगव्यंक्षीरंघृतंदधि ।
हंसोदकंमुद्गयूषोरसेन्द्रेचहितंविदुः ।
अभ्यंगंगालितंक्षौमंस्सैलैनारायणादिभिः ।
अवलाशीततोयंचमस्तकोपरिषेचयेत् ।

तृष्णायांनारिकेलांबुमुद्गयूपंसशर्करम् ।
द्राक्षादाडिमखर्जूरंकदलीनांफलंभजेत् ।

अर्थ–मुद्गान्न, बकरीका दूध, चांवल, और शाक (सांठ, चौलाई, वथुआ) सेंधानोंन, सोंठ, मोथा, मूली, केशर, और अगरका लेप, कपूर भक्षण, गेंहूं, पुराने चांवल, घी, दूध, दही, मक्खन, हंसोदक[1] मूंगका यूप, उवटना, सुगंध माला, शालदुशाला, नारायणादि तैल, सुंदरस्त्री, मस्तकको शीतल पानीसे सींचना, प्यास लगनेपर खांड मिलाकर नारियलका पानी या मूंगकायूप, वलायती दाख, अनार, छुहारे, केलाकी गहर, ये चीजें पारद भक्षण करनेवालेको हितकारी हैं ।

पारदभक्षणमें वर्ज्य पदार्थ.

अतियानंचासनंचअतिनिद्रातिजागरं ।
स्त्रीणामतिप्रसंगंचध्यानंचापिविवर्जयेत् ।
अतिहर्षंचातिकोपंचातिदुःखमतिस्पृहं ।
शुष्कवादंजलक्रीडामतिचिंतांविवर्जयेत् ।
कुष्मांडंकर्कटींचैवकारवेल्लंकलिंगकं ।
कुसुंभिकाचकर्कोटीकदलीकाकमाचिका ।
ककाराष्टकमेतद्धिवर्जयेद्रसभक्षकः ।
कुलत्थानतसींतैलंतिलान्मापान्मसूरकान् ।
कपोतान्कांजिकंचैवतक्रभक्तंचवर्जयेत् ।
कद्वम्लतीक्ष्णलवणंपित्तलंपीतकंचयत् ।
वदरंनारिकेरंचसहकारंसुवर्चलम् ।
वार्त्ताकंराजिकांचैववातलानिविवर्जयेत् ॥
निंदास्त्रीदेवतानांचपापाचरणवैत्यजेत् ।

अर्थ–डोलना, भोजन, निद्रा, जागना, स्त्रियोंसे रमण, स्त्रियोंका स्मरण, हर्ष, क्रोध, इच्छा, इनको अत्यन्त न करे, थोथा झगडा, जलक्रीडा, अत्यन्त चिन्ता । पेठा, ककडी, करेला, तरबूज, कुसुंभ, ककोंटी, कदली, (केला) काकमाची, (मकोय), यह ककाराष्टक है, कुलथी; अलसीका तेल, तिल, उडद, मसूर, कबूतरका मांस, कांजी, दहीभात, कडवी, खट्टी, तीखी, नोंनकी वस्तु, पित्तकारक, पीलेपदार्थ, वेर, नारियल, आम, हुरहुर, वैंगन, राई, और वातकारक वस्तु, स्त्री, और देवताओंकी निंदा, तथा पाप करना, इन बातोंको पारेका भक्षण कर्त्ता मनुष्य त्याग दे ।

जीर्ण रसके होनेसे उत्पन्न रोग.

एवंचैवमहान्व्याधीरसेजीर्णेतुभक्षयेत् ।
कर्पकंस्वर्जिकाक्षारंकारवल्लिरसेप्लुतं ।
सौवर्चलसमोपेतंरसेजीर्णेपिवेद्बुधः ।

अर्थ–रस जीर्ण होने पर महान्रोग उत्पन्न होते हैं, उनके दूर करनेके अर्थ सज्जीखार, करेलेके रसको हुरहुरके रससंयुक्त भक्षण करे ।

रसपाकके लक्षण.

अनुलोमगतिर्वायुःस्वस्थतासुमनस्कता ।
क्षुत्तृष्णेन्द्रियवैमल्यंरसपाकस्यलक्षणम् ॥

अर्थ–अच्छे प्रकार पवन चलना, चित्तमें स्वस्थता, मनप्रसन्न, क्षुधा, तृषाका यथार्थ लगना, सब इन्द्रियां अपने २ कर्मोंमें प्रवर्त्तहोंयें रसपाक अर्थात् पारे पचनेके लक्षण हैं ।

अशुद्धपारद भक्षणके दोष.

संस्कारहीनःखलुसूतराजोयःसेवतेतस्यकरोतिवाधां । देहस्यनाशोविदधातिनूनंकुष्ठादिरोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ–जो अशुद्ध पारदका सेवन करते हैं, उनके अनेक रोग उत्पन्न होते हैं, और मरण तथा कोढ आदि अनेक व्याधि प्रगट होवें ।

---

१ तप्तंतप्तांशु किरणैःशीतं शीतांशुरश्मिभिः । समंतादप्यहोरात्रमगस्त्योदयनिर्विषं । शुचिहंसोदकं नाम निर्मलं मलजिज्जलं । नाभिष्यंदि नवारूक्षं पानादिष्वमृतोपमम् ॥

विकारायदिजायंतेपारदान्मलसंयुतात् ।
गंधकंसेवयेद्धीमान्पाचितंविधिपूर्वकम् ॥

अर्थ–अशुद्धपारा खानेसे यदि विकार उत्पन्न होवें तो विधिपूर्वक शुद्ध की हुई गंधक पानके साथ दो महीने तक सेवन करे। अथवा दाख, पेठेके टुकडे, तुलसी, सौंफ, लौंग, तज, नागकेशर, इनके वरावर गंधक मिलाकर इसका दो प्रहर तक मर्दन कराकर शीतलजलसे स्नान करे, इस प्रकार तीन दिन करनेसें पारदका विकार शान्ति हो, अथवा करलेकी जड उवालकर पीवे, या नागरवेल, भाँगरा, तुलसी इनका रस और वकरीका दूध प्रत्येक सेर २ भर लेकर सवको मिला दो प्रहर सर्वदेहमें मालिश करे पश्चात् शीतल जलसे स्नान करे, ऐसा तीन दिन करनेस पारेका अवगुण दूर होवे ।

रसकर्पूरके अवगुण.

सेवितोऽविधिनाकुष्ठंसंधिवातंकफाधिकं ।
रसकर्पूरकंकुर्यात्तस्माद्यत्नेनसेवयेत् ॥

अर्थ–जो विधिहीन रसकर्पूर सेवन करे तो कुष्ठ, संधिशोथ, कफ और वातको प्रगट करे, इसलिये यत्नपूर्वक सेवन करना उचित है ।

अथास्य शांति.

महिषीशकृतोनीरंधान्यकंवाशितायुतं ।
पिवेन्नीरेणमुक्तस्याद्रसकर्पूरजैर्गदैः ॥

अर्थ–भैंसके गोवरका पानी, अथवा धनियां और खांड पानीसे पिये तो रसकपूरका विकार शान्ति होवे ।

रस० अवगुण तथा विकार शान्ति.

रससिंदूरमशुद्धाद्रसाद्धिजातंपारदव
द्रोगान् । कुर्य्याच्चेत्तच्छांत्यै घृतमरि
चरजःपिवेत्सप्तदिनं ।

अर्थ–अशुद्धपारेसे जो रससिंदूर रसकपूर अथवा चन्द्रोदय वना है वह पारेकी तरह विकार करता है, उसकी शान्तिके निमित्त कालीमिरच घृत मिलाकर सात दिन पीवे ।

इतिश्री माथुर दत्तरामनिर्मित रसराजसुन्दरे पारदप्रकरणम् समाप्तम्.

अथ गंधक प्रकरणम्.

तहां प्रथम गंधककी उत्पत्ति लिखते हैं.

पहिले समुद्रके समीप सर्वरत्न विभूषित श्वेतद्वीपमें सखियोंके संग क्रीडा करनेवाली श्रीपार्वतीजीके रजोदर्शन हुआ, कि जिससैं सव वस्त्र लालरंगके होगये, तव उनको त्यागदूसने नवीन वस्त्रोंको धारण कर, और संगकी सखियोंके साथ कैलासमें आकर प्राप्त हुई, जिन वस्त्रोंको समुद्रके किनारे त्याग किये थे वो लहरोंके द्वारा समुद्रके वीचमें पहुंच गये, ऐसे श्रीपार्वतीजीके रजोदर्शनका रुधिर क्षीरसागरमें प्रवेश हुआ, फिरवहीरज जव देव और दैत्योंनें समुद्र मंथन किया तव अमृतके साथ गंधक रूपसैं प्रगट हुआ, और अपनी गंधके प्रभावसे सव देव दानवोंको प्रसन्न किया तव देवताओंने कहा कि यह गंधक पारेके वंधन और जारण निमित्त प्रगटी है जो गुण पारेमें हैं, वही इसमें है ऐसे देवताओंके कहनेसे यह गंधक नामसे पृथ्वीमें विख्यात हुई ।

गंधकके नाम.

गंधकोगंधपाषाणःशुकपुच्छःसुगंधकः ।
सौगंधिकःशुल्वरिपुःपामारिर्नवनीतकः ॥

अर्थ–गंधक, गंधपाषाण, शुकपुच्छ, सुगं-

धक, सौगंधिक, शुल्वरिपु, पामारि, और नवनीतक, ये गंधकके संस्कृत नाम हैं ।

शोधितके गुण.

शुद्धोगंधोहरेद्रोगान्कुष्ठमृत्युज्वरादिकान् ।
अग्निकारीमहानुष्णोवीर्य्यवृद्धिंकरोतिहि ॥

अर्थ—शुद्ध गंधक-कुष्ठ, मृत्यु, ज्वरादि रोगोंको हरण करती है, जठराग्निको बढावे, अत्यन्त गरम है, और वीर्यवृद्धिको करे ।

गुणान्तर.

गंधश्चातिरसायनः सुमधुरः पाकेकटुष्णान्वितः । कंडूकुष्ठविसर्पदर्पदलनःदीप्तानलः पाचनः ॥ आमोन्मन्मथशोधनोविषहरः सूतेंद्रवीर्यप्रदः । गौरीपुष्पभवस्तथाक्रमिहरः स्वर्णाधिकंवीर्यकृत् ॥

अर्थ—गंधक-अत्यन्त रसायन है, मधुर है, पाकमें कटु और गरम है, खुजली, कुष्ठ और विसर्पको दूर करे, अग्निको करे, दीप्त और पाचन है, आमको मथनकर शोधन करे, विष को हरे, पारेके वीर्यको बढावे, और कृमिरोगको हरण करे तथा सुवर्णसें अधिक गुणकरे हैं।

सचापित्रिविधोदेविशुकचंचुनिभोवरः ।
मध्यमःपीतवर्णःस्याच्छुक्लवर्णोऽधमःप्रिये ॥

अर्थ—वह गंधक तीन प्रकारका है, तोताकी चोंचके समान लाल उत्तम, पीली मध्यम, और सफेद गंधक अधम है ।

ग्रंथान्तरे गंधक लक्षणम्.

चतुर्धागंधकोज्ञेयोवर्णैःश्वेतादिभिःखलु ।
श्वेतोत्रखटिकाप्रोक्तोलेपनेलोहमारणे ॥
तथाचामलसारःस्याद्योभवेत्पीतवर्णवान् ।
शुकपिच्छःसएवस्याच्छ्रेष्ठोरसरसायने ॥
रक्तश्चशुकतुंडाख्योधातुवादेविधौवरः ।
दुर्लभःकृष्णवर्णश्चसजरामृत्युनाशनः ॥

अर्थ—श्वेत आदि वर्णोंसे गंधक चार प्रकारकी है, श्वेत जिसे खडिया कहते हैं—वह घरोंके पोतने तथा लोह मारणमें लेनी उचित है, और पीले रंगवालीको आमलासार जानना, वही तोतेके पांखके तथा हरेरंगकी होती है उसे रस और रसायनमें लेनी योग्य है, और तोतेकी चोंचके समान लालको धातुवादकी विधिमें लेना चाहिये । और जरा, मृत्युको दूर करनेवाली कालेरंगकी गंधक दुर्लभ है ।

तथाच.

गंधकंद्विविधंप्रोक्तंलोणीयंचाम्लसारकं ।
योग्यंचैवाम्लसारंहिरसमार्गेगुणात्मकम् ॥

अर्थ—गंधक दो प्रकारकी है, एक लोणियां, दूसरा आमलासार, तिसमें आमलासार पारेके कर्म करनेमें प्रशस्त कही है ।

गंधक शोधन विधि.

पयःस्विन्नोघटीमात्रंवारिधौतोहिगंधकः ।
गव्याज्यविद्रुतोवस्त्रगालितःशुद्धिमिच्छति ।
एवंसंशोधितःसोयंपाषाणानवरेत्यजेत् ।
घृतेविषंतुपाकारंस्वयंपिंडत्वमेवच ॥
इतिशुद्धोहिगंधस्तु नापथ्येविकृतिंव्रजेत् ।

अर्थ—एक हांडीमें सेरभर दूधभर एक वस्त्रसे उसका मूं बांध दे, और आमलासार गंधक १६ तोलेको पीसकर घीमें गलावे, जब गलजाय तब उस वस्त्रपर डालदे तो गंधक उस कपडेमें से टपक कर दूधमें जम जायगी और कंकड वगैरह कपडेमें रहजायगे और गंधकका विष घीमें रहजायगा पीछे उस गंधकको निकाल पानीसें धो सुखाकर रख छोडे, ऐसे शुद्धकी हुई गंधक अपथ्यसे भी विगाड नहीं करे, ।

तथा दूसरा प्रकार.

गंधको द्रावितेभृंगरसेक्षिप्तोविशुध्यति ।

तद्रसेसप्तधाभिन्नोगंधकःपरिशुध्यति ॥
अथवाकांजिकेतद्वत् शुध्यतेपूर्ववत्पुटात् ।

अर्थ–गंधकको घीमें गलाकर सातवार पूर्वोक्तप्रकार भांगरेके रसमें डालनेसे शुद्ध होता है, अथवा एक पात्रमें कांजी भर उसका मुंह कपडेसे बांध उस कपडे पर घीके समान गंधकके छोटे २ टुकडे करके बिछादेवे, उसके ऊपर लोहेका तवा रख खूब आंच जलावे तवेके गरम होनेसे गंधक पिघलकर कांजीमें गिरजाय तब निकालकर पानीसे धो रख छोडे और वक्त पर काममें लावे।

शुद्धगंधकसैं तैलाकृष्टि.

अर्कक्षीरैस्नुहीक्षीरैर्वस्त्रंलेप्यंतुसप्तधा ।
गंधकंनवनीतेनपिष्टावस्त्रंविलेपयेत् ।
तद्वर्त्तिज्वलितांदण्डे धृताकार्यात्वधोमुखीं ॥
तैलंपतेदधोभांडे ग्राह्यंयोगेपुयोजयेत् ।

अर्थ–गजभर कपडेको सातवार आकके दूधमें भिगो २ कर सुखावें इसी प्रकार सातवार थूहरके दूधमें भिगो २ कर सुखावे, पीछे इतनी शोधी हुई गंधकले कि जिसका उस कपडे पर लेप होजाय, उस गंधकको मक्खनमें खलकर जौ के प्रमाण उस कपडे पर लेपकर वत्ती बनाय लोहेके चीमटेसे पकड एक सिरेसे जलावे और जिधरसे जलावे उधरसे नीचेको लटकादे और उसके नीचे एक पात्र रखे उसमें जो वत्तीसे टपककर तेल गिरे उसको ४ रत्ती पानके साथ खानेसे देह पुष्ट हो श्वास, कास, और बंधकोष्टको दूर करे।

तथा दुसरी विधि.

आदित्यास्तेचपयसि दध्याद्गंधकजंरजः ।
तज्जातदधिजंसर्पि गंधतैलंनियच्छति ॥
गंधतैलंगलत्कुष्टंहंतिलेपाचभक्षणात् ।

अर्थ–गंधकका चूर्ण संध्याको दूधमें डाल दही जमा देवे, जब जमजाय तब मथकर मक्खन निकाल घृतकरे इसीको गंधक तैल कहते हैं इसके खानेसे और लगाने से गलित्कुष्ट दूर होवे।

गंधककी दुर्गंध हरण.

विचूर्ण्यगंधकंक्षीरे घनीभावावधिपचेत् ।
ततःसूर्य्यावर्तरसं पुनर्दत्वापचेच्छनैः ॥
पश्चाचपातयेत्भाङ्गोजलेत्रिफलसंभवे ।
जहातिगंधकोगंधं निर्जनास्तीहसंशयः ॥

अर्थ–गंधकका चूर्ण दूधमें जब तक पचावे तब तक गाढाहो, तदनन्तर कालेभांगरेके रसमें मंदाग्निसे पचावे इसके बाद त्रिफलाके काढेमें पतली कर औटावेतो गंधककी दुर्गंधि निस्संदेह जाती रहे।

गंधकका अनुपान.

इत्थंविशुद्धस्त्रिफलाज्यभृंगमध्वान्वितःशाण मितोवलीढः । गृध्राक्षितुल्यंकुरुतेक्षियुग्मं करोतिरोगोज्झितदीर्घमायुः ॥ शुद्धंगंधंनिष्कमात्रंसदुग्धैःसेव्यंमासंशौर्यवीर्यप्रवृद्धौ । पण्मासात्स्यात्सर्वरोगप्रणाशोदिव्यांदृष्टिं दीर्घमायुःस्वरूपम् ॥

अर्थ–चारमाशे शुद्धगंधक, त्रिफला, घृत, भांगरेकारस, इनके साथ खानेसे गीध कीसी दूरदृष्टि होवे, रोगरहित दीर्घायु हो, तथा निष्कमात्र गंधक दूधके साथ एक महीना पर्य्यन्त खानेसे सूरपना, और वीर्यकी वृद्धि होवे, इस प्रकार छः महीना खानेसे सब रोग दूर होवें, और दिव्यदृष्टि तथा आयुष्यकी बढवार हो।

मोचाफलेनत्वग्दोपंचित्रकेनमहावलं ।
आढरूपकपायेनक्षयकासान्जयेद्भृशं ॥

मंदानलत्वंजयतित्रिफलाक्राथसंयुतः ।
ऊर्ध्वगान्सकलान्रोगान्हन्तिशीघ्रंसुगंधकः ।

अर्थ—गंधक मोचाफळके संग खानेसे त्वचाके दोषोंको दूर करे,त्रिफलाके साथ बलदायक, अडूसेके काढेके साथ खांसी और श्वासको दूर करे, त्रिफलाके काढेके साथ मंदाग्निका नाश करे और देहके ऊर्ध्व भागके रोगोंका नाश करे ।

गंधक कल्क.

चूर्णीकृत्यपलानिपंचनितरांगंधाश्मनोयत्न
तस्तच्चूर्णत्रिगुणेतुमार्कवरसेछायाविशुष्कंकृतं
पश्चाच्चूर्णमथाभयामधुघृतंप्रत्येकमेषांपलं ॥
वृद्धोयौवनमेतिमासयुगलंखादन्नरःप्रत्यहं ।
योगंधाश्मविचूर्णितंपिबतियस्तैलेनकर्षोमितं
अभ्यन्सोष्णजलावशेचनरतःकालेयथा
प्रत्यहं । सप्ताहात्त्रितयान्निहंतिसव्रणापामा
दिसर्वारुजो । नित्याभ्यासवशाद्विनष्ट
सकलःक्लेशोपतापःपुमान् ॥

अर्थ—पांचपल गंधकको भांगरेके रसमें पीस छायामें सुखावे, पीछे छोटी हरड मिलाकर दो २ तोले शहद और घृतके साथ नित्य दो महीनें पर्य्यंत खावे तो बुड्ढा भी जवान होजावे और तेलके साथ दशमाशे नित्य खावे और गरम जलसे स्नान करे तो सात अथवा तीन दिनमें खाज आदि सब रोग दूर होवें, और नित्य सेवन करे तो संपूर्ण क्लेश, उपतापका नाश होवे ।

दूसरा प्रकार.

योवाप्युग्रमतिःसुचूर्णितमिदंगंधाश्मकृष्णा
समं । पथ्यातुल्यमपिप्रपूजितगुरुर्भूतेशपूजा
रतः॥ आहारादिपुयंत्रणादिरहितःस्या
त्पुष्टिर्वीर्याधिकः । प्रोत्फुल्लाम्बुजनेत्रयुग्म
विलसच्चामीकराभासुरः ॥

अर्थ—गंधकचूर्ण-पीपल और समान भाग हरडोंमें मिलाकर खानेसे क्षुधा, पुष्टि, और वीर्यको बढावे, और नेत्र तथा देहकी कान्ति दिव्य होवे ।

गंधक रसायन.

शुद्धोवलिर्गोपयसाविभाव्यततश्चतुर्जातगुडू
चिकाभिः । पथ्याक्षधात्र्यौषधभृंगराजैर्भा
व्योष्टवारंपृथगार्द्रकेण ॥ सिद्धेसितांयोजय
तुल्यभागांरसायनंगंधकसंज्ञितंस्यात् । धातु
क्षयंमेहगणाग्निमांद्यंशूलंतथाकोष्ठगतांश्चरो-
गान् ॥ कुष्ठान्यथाष्टादशरोगसंख्यान्नित्वार
यत्येवचराजयोग्यं ॥ कर्षोन्मितंसेवितमेति
मर्त्योवीर्यंचपुष्टिंबलवान्प्रदीप्तं । वमनंरेचनं
पूर्वंशुद्धंचैवसमाहरेत् ॥ जांगलानितुमांसा-
निछागलानिप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—शुद्ध गंधकको गोदुग्ध, चातुर्जात, गिलोय, हरड, बहेडा, और आंवला सोंठ, भांगरो इन प्रत्येकको आठ २ भावना देवे, और आठही भावना अदरकके रसकी देवे, पीछे गंधकके समान चीनी मिलावे, यह गंधक रसायन है, इसकी तोलेभरसे कम मात्रा देनी चाहिये-यह धातुक्षय, संपूर्ण प्रमेह, अग्निमांद्य, शूल, उदरविकार, सर्व कुष्ठोंको नाश करे, तथा बल, वीर्य, और पुष्टिको देवे, इसका खानेवाला पुरुष प्रथम वमन विरेचनसे देहको शुद्ध करले और पथ्यमें जंगली जीवोंका मांस तथा बकराका मांस खावे ।

गंधकद्रुति.

कलांशव्योपसंयुक्तं शुद्धगंधंविमर्दयेत् ।
अरत्निमात्रेवस्त्रेतद्विप्रकीर्यविवर्जयेत् ॥

सूत्रेणवेष्टयित्वाच यामंतैलेनिमज्जयेत् ।
धृत्वासंदशतोवर्तिंमध्ये प्रज्ज्वालयेच्चतां ॥
द्रुतोनिपतितोगंधोनिर्दोषःकाचभाजने ।
तांद्रुतिंप्रक्षिपेत्पात्रे नागवल्याश्चिबिंदुकान् ॥
बलेनप्रमितंशुद्धंसूतेन्द्रंचविमर्दयेत् ।
कासश्वासंचशूलानिगृह्णीयादपिदुर्धरं ॥
आमंनिशोषयत्याशुलघुत्वंप्रकरोतिच ।

अर्थ–गंधकका सोलहवां भाग त्रिकुटा मिलाकर खरलकरे, पश्चात् सवाहाथके कपडेके टुकडेपर इसको फैलाकर वत्ती बनावे और डोरेसे लपेट कर पहरभर तिलके तेलमें भिगोवे पीछे एक तरफसे चीमटासे पकड दूसरी तरफसे जलावे और वत्तीके नीचे काँचका कटोरा रखदे उसमें जो तेल पटके उस गंधककी द्रुतिमें उसीके समान पारा घोटके कजली करे इसके खानेसे खांरी, श्वास, शूल ये असाध्यभी दूर होवें, तथा कुछ आमके रोग नाश होवें तथा देहको हलका करे ।

गंधक लेप.

शंपाकमूलस्वरसैःसंघृष्टोगंधकोत्तमः ।
लिप्तोदेहेध्रुवंखर्जुकुष्ठपामादिमर्दनः ॥

अर्थ–गंधकको अमल तासके रसमें घोटकर देहसे मालिश करे तो कोढ, खाज और पामाको दूर करे ।

गंधककी धातुवेधक कजली.

पीतिचगंधकेसूतं रक्तचित्ररसैर्मुदम् ।
वज्रीक्षीरेणसंपिष्टंवंगस्तंभकरंपरं ॥

अर्थ–पीला गंधक और पारेकी कजली लाल चित्रक तथा थूहरके दूधमें घोटनेसे यह वंगको स्तंभन करे अर्थात् चांदी करदे ।

गंधकेनहतंशुल्वंदरदेनसमंकुरु ।
मातुलुंगरसेपिष्टात्रिपुटान्मृयतेफणी ॥
सिंदूराभंभवेत्नागंताम्रंभवतिकांचनम् ।

अर्थ–गंधकसे तांबा मारे, उस तांबेकी बराबर हिंगुल मिलाय बिजौरेके रसमें खरल करे, पीछे सीसेके पत्रोंपर लेपकर पुट देवे इस प्रकार तीन पुट देनेसे सिंदूरके समान भस्म होवे इसको तांबेमें डाले तो सुवर्ण होवे ।

अशुद्ध गंधक दोष.

अशुद्धगंधंकुरुतेचकुष्टंतापंभ्रमंपित्तरुजांतथैव।
रूपंसुखंवीर्यबलंनिहन्ति तस्माद्विशुद्धोविनियोजनीयः ॥

अर्थ–अशुद्ध गंधक कोढ, ज्वर, भ्रम, पित्तके रोग और रूप तथा सुख, वीर्य, बल, इनका नाश करे इस लिये औषधियोंमें शुद्ध गंधक डाले अशुद्ध कभी न डाले ।

गंधक भक्षणमें त्याज्यवस्तू.

लवणाम्लानिशाकानि द्विदलानितथैवच ।
स्त्रियश्चारोहणंपानं पदाचैतानिवर्जयेत् ॥

अर्थ–गंधक खाने वाला मनुष्य नमकीन, पदार्थ खट्टे पदार्थ और साग, दोदलका अन्न, अरहर आदि, स्त्रीगमन, घोडा आदिकी सवारी, पैरोंसे चलना, और पित्तकारक वस्तुओंको त्याग दे ।

गंधक विकारकी शांति.

विकारोयदिजायेतगंधकाच्चेत्तदापिबेत् ।
गोघृतेनान्वितंक्षीरंसुखीस्यात्सचमानुपः ॥

---

१ वातारि तैलं संयुक्तं त्रिफला गुग्गुलेनतु । गंधकं रससंयुक्तं जराव्याधिविनाशनम् ॥ मासमात्र प्रयोगेण शृणुवक्ष्यामि तद्गुणान् । अर्शोभगंदरश्चैव तथा श्लेष्मा समुद्भवाः ॥ नश्यंति व्याधयः सर्वा मासेनैकेन गंधकात् । षण्मासस्य प्रयोगेण देवतुल्यो भवेन्नरः ॥ हंसवर्णाश्चयेकेशा वलिश्चैव प्रलंबिनी । चला दंता मंद दृष्टिः पलशुकादि संक्षयं ॥ निर्जित्य यौवनंयाति भ्रमरा इवमूर्द्धजाः । दिव्यदृष्टिर्महाप्राणो वराहइवर्णयो ॥ चक्षुपातार्क्ष्य तुल्यो ऽसौ बलेनबलविक्रमः । दृढदंतो वृद्धकायो द्वितीय इवशंकरः ॥ तस्यमूत्रपुरीषेण शुल्वंभवति कांचनं । इति अधिकपाठः॥

अर्थ—जो गंधक खानेसे विकार होवे तो गौका घृत मिलाकर दूध पीवे तो मनुष्य सुखी होवे

इतिश्री रसराजसुन्दरे गंधकप्रकरणम्

अष्टलोहोंके नाम तथा सप्तधातु.

सुवर्णरजतंताम्रंत्रपुशीशकमायसं ।
पडैतानिचलोहानिकृत्रिमौकांस्यपित्तलौ ॥

अर्थ—सोंना, चांदी, तांबा, लोहा, रांगा, सीसा ये छः लोहे श्रेष्ट हैं और काँसा-पीतल येदो कृत्रिम अर्थात् बनेहुए लोहे हैं, पित्तलके विना पूर्वोक्त सात धातु कहलाती हैं ।

सुवर्णकी उत्पत्ति.

पुरानिजाश्रमस्थानांसप्तर्षीणांजितात्मनाम्।
पत्नींविलोक्यलावण्यलक्ष्मींसंपन्नयौवना ॥
कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसोजातवेदसः ।
पतितंयद्धरापृष्टेरेतस्तद्धेमतामगात् ॥

अर्थ—पहले अपने आश्रममें स्थित जितात्मा सप्तऋषियोंकी परमोत्तम पत्नीकेयौवन सम्पत्तिको देख अग्निदेव कामपीडितहो वीर्यको त्यागता हुआ, वही वीर्य सुवर्णके नामसे विख्यात हुआ ।

सुवर्णके नाम

स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक तपनीय, गांगेय, कलधौत, कांचन, चामीकर, शतकुंभ, कार्तस्वर, जाम्बूनद, जातरूप, महारजत, ये सुवर्णके संस्कृत नाम हैं ।

सुवर्णके भेद.

प्राकृतंसहजंवन्हेसंभूतंखनिसंभवम् ।
रसेन्द्रवेधसंजातंस्वर्णपंचविधंस्मृतं ॥

अर्थ—प्राकृत १ सहज २ वन्हिसंभूत ३ खानेसे प्रगट ४ पारेके वेधसे उत्पन्न ५ ऐसे सुवर्ण ५ प्रकारका है । अब कहते हैं कि रजोगुणसे प्रगट जिसने संपूर्ण ब्रह्मांडको आच्छादित कर रक्खा ऐसा देवताओंको दुर्लभ प्राकृत सुवर्ण कहलाता हैं, और जो ब्रह्माके जन्मके संग प्रगट हुआ वो सुवर्ण सहज, अग्निने जो शिवका दुःसह तेज पानकर फिर परित्याग किया उससे प्रगट सुवर्ण वन्हिसंभव ये तीनों सुवर्ण दिव्य है, धारणमात्रसेही शरीरको अजर अमर करते हैं, और जो खानसेप्रगटहो वह खनिज सुवर्ण कहलाता है, और जो पारेके वेध यानी रसायनसे बने उसे वेधज सुवर्ण जानना ।

सौख्यंवीर्यंवलंहन्तिरोगवर्गंकरोतिच ।
अशुद्धंनमृतंस्वर्णंतस्माच्छुद्धंचमारयेत् ॥

अर्थ—अशोधित सुवर्ण सुख, बल, और वीर्यको हरण करे और देहमें अनेक रोग प्रगट करे, इससे अशुद्ध सुवर्णका जारण वर्जित है ।

गंधकं तुल्यमरिचं षड्गुणत्रिफलान्वितः । शम्याक मूलजरसै र्मर्दितो ऽखिलरोगहा । द्विनिष्क प्रमितोगंधः पीततैलेनशोधितः । पश्चान्मरिच तैलाभ्यामपामार्गजलेनच। पेषयित्वाबलिः सर्वदेहेलिप्तः प्रयत्नतः । घर्मेतिष्टेत्ततोरोगीमध्यान्हे तक्रभक्तकम् । भुंजीतरात्रौसेवेत वन्हि प्रातः समुत्थितः महिषीछगणैर्देहं संलिप्यस्नानमाचरेत् । शीतोदकेन पामादि खर्जूकुष्ठं प्रशाम्यति ।

तत्रयद्भक्षणार्हस्याद्धेमं तल्लक्षणं शृणु । दाहेरक्तं सितंछेदे निकसे कुंकुमप्रभम् ॥ तारशुल्वोज्झितंस्निग्धं मृदुहेम गुरुक्षमम् । श्वेतांगं-कठिनंरूक्षंविवर्णसमलंदलि ॥ दाहेछेदे सितश्वेतं कषेलघुचतत्यजेत् । कृत्रिमंचापिभवति सिद्ध सूतस्य योगतः ॥ मेरुसानुपत्तजम्बू फलाम्भोयोगतःपरं । दिव्यौषधिमणिस्पर्शा दन्यद्भवतिकाचनं ॥ एवंनानाविधान्यत्रै जायतेकांचनानिवै ।

अथशोधनम्.

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके । त्रिधा-
त्रिधाविशुद्धिःस्यात्स्वर्णादिनांसमासतः ॥

अर्थ—तोलेभर सुवर्णके कंटकवेधी ८ पत्र करे इसी रीतिसे चांदी, तांवेके पत्र करे, फिर इनको मीठेतेल, मठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथीके काढे इन प्रत्येकमें पत्रोंको गरम कर तीन २ वार वुझावे तो **सोंना, चांदी** और **तांवा** शुद्ध होवें। और रांगा, जस्त, और सीसेको अलग २ गलाकर पूर्वोक्त तैलादिकमें वुझावे तो ये तीनोंभी शुद्ध होवें, और लोहेके टुकडे गरमकर तीन २ वार वुझावे तो **लोहा शुद्ध** होये, सब धातुओंका शोधन संक्षेपसे कहा है ।

सुवर्णशोधन.

हेमंपंचदशंशुद्धंसूक्ष्मपत्राणिकारयेत् ।
शोधयेत्कांजिकेनैवपश्चाद्वानिम्बुकैर्द्रवैः ॥
तक्रेणशोधयेद्धेमदुग्धेपंचपुनःपुनः ।
शोधयेत्सर्वमौषध्यैःक्षालयेदुदकैःपृथक् ॥

अर्थ—उत्तम सोंनेके पत्र करके कांजी, नींबूके रस, मठा, और दूधमें तपा २ कर वारवार वुझावे, अथवा सर्व औषधियोंके काढेमें तपा २ कर वुझावे, पीछे स्वच्छ पानीसे धोवे तो सुवर्ण शुद्ध होवे। अथवा हर किसी धातुके पत्रकर गेरू, सज्जीखार, सिंडनोंन, नौसादर इनको आकके दूध; ग्वारपाठेके रस, थूंघचीके रसमें खरलकर पूर्वोक्त पत्रों पर लेप करे और अग्निमें तपावे तो शुद्ध होवे । अथवा संपूर्ण धातुओंके पत्रोंको तपाकर तैल वर्गमें दशवार वुझावे, इसी प्रकार तक्रवर्गमें, कांजीमें, मूत्रवर्गमें, क्षारवर्गमें, अम्लवर्गमें, पुष्पवर्गमें, रक्तवर्गमें, फलवर्गके रसमें, दुग्धवर्गमें रंगवर्गमें, उन पत्रोंको तपाकर १२० वार वुझावे, तो धातुमें जो दूसरी कृत्रिम धातु मिली होती है वो जलजाय और यह धातु स्वच्छ गंगाजलके समान निर्मल होजाय ये संपूर्णवर्ग इस ग्रंथके मध्यखंडमें लिखे हैं ।

प्रश्न—क्योंजी वहुतसे मनुष्य कहते हैं कि धातुका मारना जडी वूटीसे उत्तम है, क्योंकि जडीसे मरीहुई धातु कच्ची नहीं रहती इसमें आपकी क्या अनुमति है ।

उत्तर—सुनो हमारे प्यारे मित्र! यह वात सर्वथा झूंठी है क्या हमारे प्राचीन सद्वैद्य जडी वूंटियोंको नहीं जानतेथे उन्होंने यह श्लोक क्यों लिखा ।

लोहानांमारणंश्रेष्ठंसर्वत्ररसभस्मना ।
मध्यमंमूलिकाभिश्चअधमंगंधकादिभिः ॥

अर्थ—अर्थात् लोहकहियें सोंना, चांदी, तांवा, नाग, कांसा, वंग, लोहा, पीतल इत्यादि अष्ट लोहोंका मारना पारेके संयोगसे श्रेष्ट है, जडीवूँटीसे मध्यम और गंधकादिसे मारना अधम है इससे जडी वूँटियोंकी फुकी धातु हमारी समझमें उत्तम नहीं ।

यथा

चपलेनविनालोहंयःकरोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानिजायतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ—अर्थात् पारेके विना जो लोह मारा गया है उसके खानेसे पेटमें कीडे पडजाते हैं, इसीसे मनुष्योंको ठगनेवाले वैरागी संजोगड़ा आदि पामरोंसे वचनेके लिये हमने यह लिख दिया है अर्थात् इन लोगोंकी फुकी औषधि

सुवर्ण शोधनम् ॥ मृतिकामातुलुंगार्द्यैःपंचवासरभाविता । सभस्मलवणोहेम शोधयेत्पुटपाकतः ॥ अन्यच्च सुवर्णमुत्तमंवन्हौ विद्रुतंनिक्षिपेत्त्रिशः । कांचनारिद्रवेशुद्धं कांचनंजायतेभृशम् ॥

मनुष्यको खाना और विश्वास करना उचित नहीं, और येभी सोचना चाहिये कि क्या हमारे ऋषिगण मूर्ख थे जिन्होंने सुगम क्रियाओंको छोड कठिन क्रिया लिखी।

सुवर्ण मारणकी पहिली विधि.

पारावतमलैर्लिपेदथवाकुक्कुटोद्भवैः । हेमपत्राणितेपांचमदद्यादधरोत्तरम् ॥ गंधचूर्णसमंदत्वाशरावयुगसंपुटे । प्रदद्यात्कुक्कुटपुटंपंचभिर्गोमयोत्पलैः ॥ एवंनवपुटंदद्याद्दशमंचमहापुटं । त्रिंशद्वनोत्पलैर्देयंजायतेहेमभस्मकम् ॥ सुवर्णंचभवेत्स्वादुतिक्तंस्निग्धंहिमंगुरु । बुद्धिविद्यास्मृतिकरंविषहारिरसायनम् ॥

८ अर्थ–सोनेके पत्रोंपर कबूतर या मुर्गेकी बीटका लेपकर समान गंधकका चूर्ण बुरकता जाय और एक पर दूसरा रखता जाय पीछे मिट्टीके सराव संपुटमें गंधक बिछाकर उसमें पत्रोंको रख बाकी गंधकका चूर्ण उन पत्रोंपर बिछाय दूसरे सरावसे मुख बंदकर कपर मिट्टी दे नौ कुक्कुट पुट देवे ।

[कुक्कुटपुटके लक्षण.

वितस्तिमात्रगर्त्तेयत्पुटंयतेतत्तुकौकुटं ।

अर्थ–बालिश्तभर लंबा इतनाही चौडा और ऊंचा गढेला खोद आधेमें दो तीन उपलोंके टुकडोंकी आग दे इसे कुक्कुटपुट कहते हैं] ऐसे नौ पुट देनेके बाद दशवां महा पुट देवे तो सोनेकी भस्म हो, इसके गुण। मधुर, तीखी, स्निग्ध, शीतल और भारी है यह रस बुद्धि विद्या और स्मर्णको बढाता है और विषबाधाओंको दूर करता रसायन है ।

तथा दूसरी विधि.

सौवीरसंजनंपिष्ट्वामार्कवस्वरसैर्दृहेत् । जातरूपस्यपत्राणिशरावेसंपुटेपुटेत् ॥ गजाख्येनपुटेनैवसुवर्णंयातिभस्मतां ।

अर्थ–काले सुर्मेकीडली जलभांगरेके रसमें घोटकर सोनेके पत्रोंपर लेपकर सरावसंपुटमें रख गज पुटकी आंच दे तो एकही आंचमें सुवर्णकी शुद्ध भस्म होवे ।

तथा तीसरी विधि.

सूतस्यद्विगुणंगंधमम्लेनकृतकज्जलिं । द्वयोसमीकृतंस्वर्णंसम्यगम्लेनमर्दयेत् ॥ शरावसंपुटांतस्थमधऊर्द्धचसैंधवम् । अष्टयामान्दवेन्दस्मसर्वयोगेपुयोजयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारो १ टंक, शुद्ध गंधक १टंक दोनोंकी कजली कर कागजी नीबूके रसमें घडीभर घोटे, पीछे इसमें ३ टंक शुद्ध सोनेके वर्क घोटे एक वडी पर्य्यंत जब गाढा हो तब टिकडी बनाकर धूपमें सुखावे, फिर एक शरावेमें नोन बिछाकर उस टिकडीको रखे और फिर ऊपरसे ऐसा नोन बिछावे कि जिसमें वह टिकडी न दीखे, पीछे इसका मुख दूसरे सरावके मुखसे मिलाकर कपर मिट्टी कर सुखाले, और फिर गजपुटकी आंच दे तो आठ प्रहरमें सुवर्णकी भस्म होवे, इसी प्रकार चांदी और तांबेकी भस्म होवे, परन्तु तांबेकी कजलीमें पारा गंधककी कजली मिलाकर निंबूके रसमें पहरभर घोटे फिर टिकिया करे, बहुत देरतक तांबेको खटाईमें घोटनेसे जी नहीं मचलाता ।

तथा चौथी विधि.

शुद्धंहेमंश्लक्ष्णपत्रीकृतंतद्वारंवारंसूतगंधानुलिप्तम् । तीव्रैर्वन्हौकांचनारेहलिन्याज्वालामुख्यासंपुटेभस्मकुर्यात् ॥

अर्थ–शुद्ध सोनेके पत्रोंपर वारंवार गंधक और पारेकी कजलीको लेप करे, फिर उन

पत्रोंको कचनार, करियारी, और ज्वाला मुखी इन तीनोंकी लुगदीमें रख सराव संपुटमें रखे और सात कपर मिट्टीकर वारंवार गजपुटकी अग्नि देवे तो सोना भस्म हो।

तथा पांचवी विधि.

माक्षिकंनागचूर्णंचपिष्टमर्करसेनच।
हेमपत्रंपुटेनैवम्रियतेक्षणमात्रतः॥

अर्थ–सुवर्णके कंटकवेधी पत्रकर शुद्ध सोनामक्खी और सीसेके चूर्णको आकके दूधमें खरल करे और उक्त पत्रोंपर लेपकर मूषामें रख फूंक देवे तो सुवर्णकी भस्म होवे।

तथा छठी विधि.

सुशुद्धंपारदंदत्वाकुर्याद्यत्नेनपिष्टिकां।
दत्वोर्द्धाधोनागचूर्णपुटेनम्रियतेध्रुवम्॥

अर्थ–सोनेके पत्रोंसे दूना शुद्ध पारा ले दोनोंको खरल कर पीठीकरे, फिर इस पीठीके ऊपर नीचे सीसेका चूर्ण रख गजपुटमें फूंक देवे तो सुवर्णकी भस्म होवे।

तथा सातवी विधि.

रसस्यभस्मनावाथरसेनालिप्यवैदलं।
हिंगुहिंगुलसिंदूरंशिलासाम्येनमेलयेत्॥
संमर्द्यकांचनद्रावैर्दिनंकृत्वाथगोलकम्।
तद्भाण्डस्यतलंदत्वाभस्मनापूरयेद्दृढम्॥
अग्निमज्वालयेद्गाढंद्विनिशंस्वांगशीतलम्।
उद्धृत्यसावशेषंचेत्पुनर्देयंपुटद्वयम्॥
अनेनविधिनास्वर्णंनिरुत्थंजायतेमृतिम्।

अर्थ–पारेकी भस्म अथवा पारेसे सुवर्णके कंटकवेधी पत्रोंको लपेटकर फिर हींग, हींगलू सिंदूर, और मनसिल बराबर ले १ दिन कचनालके रसमें खरलकर गोला बनावे उसको पात्रके भीतर रख खूब दाबकर राख भरदेवे और चूल्हेपर चढाय दो रात्रि बराबर अग्नि दे और स्वांगशीतल होनेपर उतार लेवे यदि कुछ कच्चा रहजाय तो फिर दो पुट देकर अग्नि दे इस प्रकार सुवर्ण निरुत्थभस्म होता है।

तथा आठवीं विधि.

कांचनारिप्रकारेणलांगलीहन्तिकांचनम्।
ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहंतिमनःशिला॥

अर्थ–जिस प्रकार कचनालका पुट देनेसे सुवर्ण भस्म होता है उसी प्रकार कलयारीके रसका पुट देनेसे भस्म होता है, और उसी प्रकार ज्वालामुखी तथा मनसिलके संपुटसेभी सुवर्णकी भस्म होती है।

तथा नवम विधि.

शिलासिंदूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धतः।
सप्तधाभावयित्वातुशोषयेच्चपुनःपुनः॥
ततस्तुगलितेहेम्निकल्कोऽयंदीयतेसमः।
पुनर्धमेदतितरांयथाकल्कोविलीयते॥
एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कंहेममृतिर्भवेत्।

अर्थ–मनसिल और सिंदूर दोनोंका समान चूर्णले आकके दूधकी ७ भावना देवे, और सुखाता जाय, फिर सुवर्णको गलाकर उक्त चूर्ण थोडा २ बुरकाता जाय, फिर धमावेकि जिससे सुवर्णका पानी सूख जावे इस प्रकार तीन वार करनेसे सुवर्ण कल्ककी भस्म होवे।

मृत सुवर्णके गुण.

स्वर्णंविधत्तेहरतेचरोगान्करोतिसौख्यंप्रबलेन्द्रियत्वं। शुक्रस्यवृद्धिंबलतेजपुष्टिंक्रियासुशक्तिंचकरोतिहेमः॥

अर्थ–सुवर्णभस्म खानेसे उत्तम कान्तिहो रोगोंका नाश करे, सुख दे, इंद्रियोंको बलवानकरे, शुक्र, बल और तेजको बढावे; काम करनेकी शक्ति दे, इतने गुण हैं।

सुवर्ण भस्मके गुण.

स्वर्णस्वर्णसमानरूपजनकंसर्वक्षयोन्मूलकृत्। वल्यंवृष्यमनुष्णवीर्यमसकृत्क्षुद्वर्द्धनंवृंहणं ॥ निःशेषामयसंघसंहृतिकरस्तेजस्करंशुक्रकृत्। नेत्ररोगजराहरंनवसुधोपानोपमंप्राणिनाम्॥

अर्थ–सुवर्णकी भस्म खानेसे सुवर्णके समान देहका रंगहो, खई रोग दूर हो, वलकरे, वृष्य है, शीतल है, वीर्य्य और भूंखको वढावे, वृंहण है, अखिल रोग हर्त्ता तेज और शुक्रको वढावे, नेत्ररोग और बुढापेको दूर करे, यह प्राणियोंको अमृतके समान गुणदायक है।

तथाऽन्यगुण-

स्वर्णशीतंपवित्रंक्षयवमिकसनश्वासमेहास्र । पित्तंक्षैण्यंक्ष्वेडक्षतास्रमदरगदहरंस्वादुतिक्तं कषायं ॥ वृष्यंमेधाग्निकान्तिप्रदमधुरसकं । कार्श्यहानित्रिदोषोन्मादापस्मारशूलज्वरज यत्वपुषोवृंहणंनेत्रपथ्यम् ॥

अर्थ–सुवर्ण भस्म–शीतल और पवित्र है, तथा खई, बमन, खांसी, श्वास, प्रमेह, रक्तपित्त, क्षीणता, विष, घाव, रुधिर विकार और प्रदरका नाश करे, स्वादिष्ट है, चरपरा, कसेला, वृष्य, बुद्धि, अग्नि और कान्तिका देनेवाला, खांडके समान मीठा, और कृशता, त्रिदोष, उन्माद, मृगी, शूल और ज्वरका नाश करे तथा देहको पुष्ट करे, नेत्रोंको परमहित है।

केवल सुवर्णके गुण.

सर्वौषधिप्रयोगेणव्याधयोनगतायदा । कर्मभिपंचभिश्चापिसुवर्णंतेषुयोजयेत् ॥ शिलाजतुप्रयोगाच्चताप्यसूतकयोस्तथा । रसायनानामन्येषांप्रयोगाद्धेमउत्तमः ॥

अर्थ–जिस मनुष्यकी सर्व औषधियोंके द्वारा व्याधि निवृत्तन हुई हो, अथवा वमनादि पंचकर्मोंसेभी रोग नष्टन हुए हो, उसको सुवर्ण खिलावे एवं शिलाजीत, चांदी, पारा, अथवा और जो रसायनके प्रयोग हैं उन सबसें सुवर्णका प्रयोग उत्तम है।

अपक्वंहेमसंघृष्टंशिलायांजलयोगतः । द्रवरूपंतुतत्पेयंमधुनागुणदायकं ॥ यद्वाचवरखाख्यंतुस्वर्णपत्रंविचूर्णितम् । मधुनासंगृहीतंचसद्योहंतिविषादिकं ॥

अर्थ–शुद्ध सोनेको पानीसे पत्थरपर घिस शहतके संग पीनेसे गुण दायक होता है अथवा उत्तम सोनेके वर्क चूर्णकर शहतके संग खाय तो तत्काल विषादिक नाश होवे।

सोनेके वर्कोंके गुण.

सिद्धंस्वर्णदलंसमस्तविषहृच्छूलाम्लपित्ता पहं। हृद्यंपुष्टिकरंक्षयव्रणहरंकाथाग्निमांद्यं जयेत् ॥ हिक्कानाहनिरंतरंकफहरंभ्रूणां हितंसर्वदा। तत्तद्रोगहरानुपानसहितंसर्वा मयध्वंसनम् ॥

अर्थ–सोनेके वर्क संपूर्ण विष, शूल और अम्लपित्तको नाश करे, हृदयको हितकारक, पुष्टिकारक, खई, घाव, मंदाग्नि, हिचकी, अनाहवात, वढाहुआकफ, इनको दूर करें, और सर्वदा गर्भके वालकको हित, और सर्वरोग मात्रोंको अपने २ अनुपानके साथ दूर करें।

सुवर्ण भस्मानुपान.

मत्स्यपित्तस्ययोगेनस्वर्णंतत्कालदाहजित् । भृंगयोगाच्चतद्वश्यंदुग्धयोगाद्बलप्रदं ॥ पुनर्नवायुतंनेत्र्यंघृतयोगाद्रसायनम् । स्मृत्यादिकृद्वचायोगात्कान्तिकृत्कुंकुमेनच । राजयक्ष्माचपयसानिर्विप्याचविषंहरेत् ॥ शुंठीलवंगमरिचैस्त्रिदोषोन्मादहारकं ॥

अर्थ–सुवर्णकी भस्म मछलीके पित्तके संग

खानेसें तत्काल दाहको जीते, भांगरेके रसके साथ स्त्री प्रसंगमें हित है, दूधके साथ बल बढावे, पुनर्नवा (सांठ) के साथ नेत्रोंको हित करे, घृत संयुक्त बुढापे और व्याधिका नाश करे, बचके साथ बुद्धिको बढावे, केशरके साथ कान्ति कारक, दूधसें खईको हरे, निर्विषीके साथ विषरोगोंको, और सोंठ, लोंग, कालीमिर्चोंके साथ त्रिदोष, उन्मादको दूर करे।

मध्वामलकचूर्णंतुसुवर्णंचेतितत्त्रयं ।
प्राश्यारिष्टगृहीतोपिमुच्यतेप्राणसंकटात् ॥
शंखपुष्पावयार्थेचविदार्य्याचप्रजार्थकः ।

अर्थ–सोनेकी भस्म आमलेके चूर्ण और शहतके साथ खानेसे प्राण संकटसे छूटे, कोई कहता है कि 'ग्रहणीं प्रबलांहरेत्, अर्थात् पूर्व औषधियोंके संगप्रबल संग्रहणीको नाश करे, शंखाहूलीके साथ आयुष्यको बढावे, और विदारीकंद संयुक्त पुत्र देनेवाली है ।

सुवर्ण भक्षण और पथ्य.

दुग्धंवैशर्करोपेतंस्निग्धमन्नंचपेशलम् ।
वलीपलितनाशायस्वर्णपथ्यानिदापयेत् ॥

अर्थ–दूध, खांड संयुक्त, चिकना तथा स्निग्ध अन्न, वलीपलित नाशकरनेको सुवर्ण खाने वालेके लिये पथ्य देवे ।

सुवर्ण भक्षणमें अपथ्य.

ककारसहितंचान्नंव्यंजनंतुकपूर्वकम् ।
ककारपूर्वमांसानिस्वर्णभुग्दूरतस्त्यजेत् ॥

अर्थ–जिन अन्न, व्यंजन, और मांसोंके पूर्वमें ककारहो (जैसै करेला, ककडी) उनको सुवर्ण खानेवाला मनुष्य त्याग दे ।

सोनेकी द्रुति.

चूर्णमुरेन्द्रगोपानांदेवदालीफलद्रवैः ।
भावितंसदशंभस्मकरोतिजलवद्द्रुतिम् ॥

अर्थ–पारे और बीरबहुट्टीके चूर्णको विदालीफलके रसमें घोट सुवर्णके चूर्णमें भावना दे तो सुवर्ण पानीके समान द्रव हो जाय ।

मंडूकास्थिवसाटंकहयलालेन्द्रगोपकैः ।
प्रतिवापेनकनकंसुचिरंतिष्ठतिद्रवम् ॥

अर्थ–मेंडककी हड्डी, और बसा, सुहागा घोडेके मुखकीलार, बीरवहुट्टी, इनको समान लेकर इनमें सोंनेको गलाकर डालनेसे सोना पानीके समान बहुत दिन तक रहे ।

अशुद्ध सुवर्णके दोष.

वलंचवीर्यंहरतेनराणांरोगव्रजान्पोषयतीह काये। असौख्यकार्यंचसदैवहेमाऽपकंसदोषं मरणंकरोति ॥

अर्थ–सुवर्णकी अशुद्धभस्म बल और वीर्यको नाश करे, तथा देहमें रोगोंका समुदाय प्रगट करे और दुख तथा मरण करे ।

अथ तद्दोषशान्ति.

अभयासितयायुक्तांत्रिदिनंनृभिरंगने ।
हेमदोषहरीख्यातासत्यंसत्यंनसंशयः ॥

अर्थ–हरड और खांड तीन दिन खानेसे अशुद्ध सोंनेके खानेसे जो विकार हुए हों वो सब शांति होवें ।

इतिश्री रसराजसुन्दरे सुवर्ण प्रकरणम् समाप्तम्.

अथ रौप्य प्रकरण प्रारम्भः

चांदीकी उत्पत्ति.

एक समय त्रिपुर बधके निमित्त श्रीशिवजीने अतिक्रोध किया उस समय उनके एक नेत्रसे उल्का पैदा हुआ, और दूसरेसे वीरभद्रगण प्रगट हुआ तथा तीसरे नेत्रसे जो

आँसूकी विन्दु गिरी वो रूपा (चांदी) हुआ वह अनेक प्रकारकी पृथ्वीमें स्थित है ।

रौप्यके भेद.

सहजंखनिसंजातंकृत्रिमंचत्रिधामतं ।
रजतंपूर्वपूर्वंहिस्वगुणैरुत्तरोत्तरम् ॥
कैलासाद्यद्रिसंभूतंसहजंरजतंभवेत् ।
तत्पृष्टंहिसकृद्व्याधिनाशनंदेहिनांभवेत्
हिमाचलादिकूटेषुतद्रूप्यंजायतेहितत् ।
खनिजंकथ्यतेतज्ज्ञैःपरमंहिरसायनम् ॥
श्रीरामपादुकान्यस्तंवंगंयद्रुप्यतांगतम् ।
तत्पादरूप्यमित्युक्तंकृत्रिमंसर्वरोगनुत् ।
कृत्रिमंचापिभवतिवंगादेसूतयोगतः ॥

अर्थ–वह रौप्य (चांदी) १ सहज २खनिज और ३ कृत्तिमके भेदसे ३ प्रकारका है क्रम पूर्वक एकसे दूसरेमें विशेष गुण हैं, जो रूपा कैलाशसे प्रगटा है वह सहज कहाता है, इसके स्पर्शमात्रसेही सकल रोगोंका नाश होता है । और जो हिमालय आदि पर्वतोंसे प्रगट हुआ हो वह खनिज कहाताहै। और श्रीरामपादुकाके नीचे जो रांगा रौप्यताको प्राप्त हुआ वह कृत्रिम कहलाता है । कोई २ कहते हैं कि जो पारे और वंग अर्थात् रांगके संयोगसे बना हो उसे कृत्रिम चांदी कहते हैं ।

त्रिविधंपरिकीर्तितंचरूप्यंखनिजंवंगजंवेधजं तथैव । अवलोक्यरसोदधिश्चग्रंथात्सकलैर्वैद्यवरैर्विशारदैश्च ॥

अर्थ–चांदी ३ प्रकारकी है, खनिज, वंगज, और वेधज यह रसके अनेक ग्रंथ अवलोकन कर वैद्योंने कहा है ।

रौप्यपरीक्षा.

उभेवंगजेनैवग्राह्येचरूप्येयतौनैवशुभ्रत्वमेवंमृदुत्वं । अतोग्राह्यमेकंखनीजंचरूप्यंयतःश्वेत वर्णंचकौमल्ययुक्तं ॥

अर्थ–तीन प्रकारकी जो चांदी हैं, उनमें वंगज और वेधजको त्याग देवे, क्यों कि इनमें सफेदी और मृदुता नहीं है-इसलिये खानसे जो प्रगट सफेद और कोमल चांदीको ग्रहण करे

घनंस्वच्छंमृदुस्निग्धंदाहेछेदेसितंगुरु ।
शंखाभमघृणस्फोटरहितंरजतंशुभम् ॥

अर्थ–जो चांदी दृढ, स्वच्छ, नरम, चिकनी, तपाने तथा तोडनेमें सफेद, और भारी हो, तथा शंखके समान शुद्ध हो और घनकी चोटसे नफूटे उसे मारणके अर्थ लेना चाहिये।

अशुद्ध चांदीके लक्षण.

दाहेरक्तंचपीतंचकृष्णंरूक्षंस्फुटंलघु ।
स्थूलांगंकर्कशांगंचरजतंत्याज्यमष्टधा ॥

अर्थ–तपानेसे लाल और पीलीहो, तथा काली रूखी और घनकी चोटसे टुकडे २ होजाय, तथा वजनमें हलकी और देखनेमें स्थूल हो, तथा कर्कश हो, ऐसी आठ प्रकारकी चांदी मारणमें त्याज्य हैं ।

आयुःशुक्रंवलंहंतितापविड्बंधकृद्रुजं ।
अशुद्धंनमृतंतारंशुद्धंमार्यमतोवुधैः ॥

अर्थ–आयु, वीर्य, और वलको हरे, तथा अफरा आदि अनेक रोगोंको करे इसीसे अशोधित रूपामारण पंडितोंने वर्जित कहा है ।

रौप्यशुद्धि.

पत्रीकृतंतुरजतंसंतप्तंजातवेदसि ।
निर्वापितमगस्त्यस्यरसेवारत्रयंशुचि ॥

अर्थ–चांदीके पतले २ पत्र कर अग्निमें तपाय अगस्तपत्रके रसमें तीनवार वुझानेसे चांदी शुद्ध होती है ।

रौप्यंशुद्धंसमादायनागमुख्यंतुशोधयेत् ।

शुद्धेतारेपुनःस्तस्यसूक्ष्मपत्राणिकारयेत् ॥
तानिचिंचिणिद्राक्षाभिशोधयेच्चपृथक्पृथक् ।

अर्थ-उत्तम चांदीमें सीसा देकर शोधे पीछे उसके कंटकवेधी पतले पत्रकराय इमली और दाखके रसमें अलग २ शोधे तो चांदीको उत्तम प्रकारकी शुद्धि हो ।

रूपामारणकी पहिली विधि.

भागैकंतालकंमर्द्यंयाममम्लेनकेनचित् ।
तेनभागत्रयंतारंपत्राणिपरिलेपयेत् ॥
धृत्वामूषापुटेरुध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः ।
समुधृत्यपुनस्तालंदत्वारुध्वापुटेपचेत् ॥
एवंचतुर्दशपुटैस्तारभस्मप्रजायते ।

अर्थ-तोलेभर हरतालको कागजी नींबूके रसमें एक प्रहर घोटे जब गाढी होजाय तब तीन तोला चांदीके वर्क अंगुठेकी नखकी बराबर छोटे २ लेकर उनपर लेप करे और सराव संपुट कर ३० जंगली उपलोंकी आंच दे इस प्रकार चौदह आंच देनेसे रूपा (चांदी) को भस्म करे, पीछे सब योगोंमें दे विशेष कर सुवर्ण पर्पटीमें मिलावे तो सुवर्ण पर्पटीगुण करे ।

दूसरी विधि.

कनकमाक्षिकसूक्ष्मविचूर्णकंस्थविरस्नुक्पय सासहमर्दितं । रजतपत्रवराणिविलेपयेत् कथिततालकवत्परिपाचयेत् ॥

अर्थ-सोनामक्खीका बारीक चूर्ण पुरानी थूहरके दूधसे घोटे जब गाढा होजाय तब चांदीके पत्रोंपर लेपकर मांटीके संपुटमें पूर्वोक्त प्रकार १६ पुट देवे तो रूपेकी भस्म हो ।

तीसरी विधि.

सिद्धवंगवलिनाचतालकंतारपत्रसुविशेपलेपितं । इंद्रदण्डपुटपिण्डपाचिततारयोगपुट योगसिद्धिदम् ॥

अर्थ-वंगभस्म, गंधक, हरतार तीनोंको एकत्र कर खरलमें घोटे, पीछे इस कजलीका चांदीके पत्रों पर लेपकर कलयारीके फलोंकी लुगदी कूटकर करे और उसमें इन पत्रोंको रख कपर मिट्टी कर गजपुटमें आंच दे तो रूपा भस्म हो ।

बहुतसे मनुष्य गजभर लंबा और इतनाही चौडा तथा ऊंचा गजपुट बतलाते हैं सो यह मिथ्या है इस लिये प्रमाण लिखते हैं ।

गज पुटके लक्षण.

घनचौरसकेसार्द्धहस्तेचैवतुगर्त्तके पूर्ववदीय तेचाग्निस्तत्पुटंगजसंज्ञकं । माहिषंवातिसंज्ञेयं सूरिभिःसमुदाहृतं ॥

अर्थ-डेढ २ हाथ लंबा, चौडा और गहरा हो उसको आधा उपलोंसे भर औषधका संपुट रख आधेको फिर उपलोंसे भरकर अग्नि देना इसको गजपुट वा-माहिषपुट, कहते हैं ।

चतुर्थ विधि.

गंधपारदयोरैक्यंकिंचिद्वंगंचघर्षयेत् ।
द्राक्षायांचैवसंयुक्तंतानिपत्राणिलेपयेत् ॥
तत्रैपत्रविनिक्षिप्यलेपयेद्वस्त्रमृत्तिकां ।
प्रक्षिप्यपुटगर्त्तेचज्वालयेद्वहछाणकैः ॥
स्वांगशीतलमुधृत्यखल्वेतन्मर्द्दयेद्वहुः ।
पंचामृतपुटंदद्यंवस्त्रपूतंचकारयेत् ॥
वल्लार्द्धंभक्षयेत्प्रातःपूजयेत्सर्वदेवता ।
पूजयेद्द्विपजान्देवान्भव्येभाण्डेनिधापयेत् ॥

अर्थ-गंधक, पारा और बंग इनकी कजली कर दाखके रसमें घोटे, पीछे इसका चांदीके पात्रोंपर लेपकर सराव संपुटमें रख कपर मिट्टी करे और गजपुटमें फूंक देवे । जब शीतल हो जाय तब संपुटसे निकाल खरलमें चूर्ण करे पीछे इसमें पंचामत (सोंठ, मूसली, गिलोय,

सितावर, गोखरू) का पुट दे, तदनन्तर वस्त्रमें छानकर उत्तम शीशीमें रख छोडे और एक-रत्ती प्रातःकाळ खाया करे ।

पांचवीं विधि.

शुकप्रियोपीतकपत्रकल्केचतुर्गुणेतारकमेव रुध्वा। सरावकेसंपुटकेपुटेच्चत्रीभिः पुटैरेव वराहसंज्ञैः ॥ ९ ॥

अर्थ–चार तोले अनार और हरतालके पत्र लेकर पीसे इनकी लुगदीमें तोलेभर शुद्ध चांदीके कंटक वेधी पत्र कर सराव संपुटमें रख कपर मिट्टी करे, पीछे वाराह पुटमें फूंके इस प्रकार ३ वारमें रूपा भस्म हो ।

अरत्निमात्रेगर्त्तेयद्दीयतेपूर्ववत्पुटम् ।
करीषाग्नौतुतत्प्रोक्तंपुटंवाराहसंज्ञिकम् ॥

अर्थ–अरत्निमात्र यानी वालिश्तभरका गढा खोदकर उपलेंसेभर गजपुटके अनुसार पुट देनेको वैद्यलोग वाराहपुट कहते हैं। परंतु पूर्वोक्त रूपेकी विधिमें हाथभरका गढा खोदकर अग्नि देवे ।

रूपेकी भस्मके गुण.

तारंचतारयतिरोगसमुद्रपारं देहस्यसौख्य दमिदंपलितंनिहंति। हंतीहरोगविपदोपमलं प्रसह्यवृष्यंपुनर्नवकरंकुरुतेचिरायुः ॥

अर्थ–रोग समुद्रसे पार लगानेवाला रूपा-देहका सुखदाता, वली पलित और विपदोपका नाशक, तथा वृष्य तरुणावस्थाका देनेवाला और आयुष्यको दे ऐसा है ।

रूपेके अनुपान.

भस्मीभूतंरजतममलंतत्समंव्योमभानुः ।
सर्वैस्तुल्यंत्रिकटुरसवरंसारमाज्येनयुक्तं ॥
लीढंप्रातःक्षपयतिनृणांयक्ष्मपांडूदरार्शः ।
श्वासान्कासान्तिमिरनयनयोःपित्तरोगा-नशेषान् ॥

अर्थ–रूपेकी भस्मके समान अभ्रक, ताम्र और इनके समान त्रिकुटाका चूर्ण मिलाय प्रातःकाल खावे तो खई, पीलीया, उदर, बवासीर, श्वास, खांसी, तिमिर और पित्तरो-गोंका नाश करे ।

सितयाहंतिदाहाद्यंवातपित्तंफलत्रिकात् ।
त्रिपुगंध्याप्रमेहादिगुल्मेक्षारसमन्वितं ॥
कासेकफेढरूपस्यरसेत्रिकटुकान्विते ।
भार्ङ्गीविश्वयुतंश्वासेक्षयजित्सशिलाजतु ॥
क्षीणेमांसरसेदेयंदुग्धंवाललनोत्तमे ।
यकृत्प्लीहहरंप्रोक्तंवरापिप्पलिसंयुतं ॥
पुनर्नवायुतंशोफेपाण्डौमण्डूरसंयुतम् ।
वलीपलितहंकांतिक्षुत्करंघृतसंयुतम् ॥

अर्थ–मिश्रीके संग दाहमें, वातपित्त जनित रोगोंमें त्रिफलाके संग, तज पत्रज और इलाय चीके संग प्रमेहमें, गोलामें क्षारयुक्त, कफ, खासीमें त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) के चूर्णके साथ, श्वासमें अडूसेके रसके साथ, खईमें भारंगी और सोंठके साथ, और खईमें शिला-जीतके साथ देवे, क्षीणतामें मांसके यूष तथा दूध संयुक्त, यकृत् प्लीहमें त्रिफला और पी-पलके साथ, शोथमें पुनर्नवाके साथ, पीलियामें मंडूर युक्त, वली पलितमें घृतके साथ देनेसे इनको दूर करे, तथा भूंख और कान्तिको वढावे।

इतिरौप्यभस्मगुणाः

चांदीके वर्कोंके गुण.

सिद्धंरौप्यदलंकायेकरोतिविविधान्गुणान्।
मेहघ्नंशीतलंवृष्यंवलंवीर्यंविवर्द्धयेत् ॥

अर्थ–सिद्धरूपेके दल अर्थात् वर्क देहमें अनेक गुण करें, तथा प्रमेहको दूरकरें, शीतल और वृष्य हैं, वलवीर्यको वढावें ।

रूपेकीद्रुति.

शतधानरमूत्रेणभावयेद्देवदालिकाम् ।
तच्चूर्णवापमात्रेणद्रुतिःस्यात्स्वर्णतारयोः ॥

अर्थ–देवदालीके चूर्णमें १०० भावना मनुष्यके मूत्रकी देकर रूपेमें डाले तो रूपा पानी होजाय ।

अशुद्ध रूपेके अवगुण.

अशुद्धंरजतंकुर्यात्पांडुकंडुंगलग्रहान् ।
विबंधंवीर्यनाशंचबलहानिंशिरोरुजाम् ॥

अर्थ–अशुद्ध रूपेकी भस्म पाण्डुरोग, खुजली, गलग्रह, मलबंध, वीर्य नाश, बलहानि और मस्तकशूल उत्पन्न करे ।

अशुद्ध दोषशांति.

शर्करामधुसंयुक्तंसेवयेद्योदिनत्रयम् ।
अपक्वरौप्यदोषेणविमुक्तःसुखमश्नुते ॥

अर्थ–मिश्री और सहत तीन दिन खानेसे रौप्य विकार मिट जाता है ।

इतिश्री दत्तराम माथुर निर्मित रसराज सुन्दरे रौप्य प्रकरणं समाप्तम्

अथ ताम्र प्रकरणम्.

तत्रादौ ताम्रोत्पत्ति लिख्यते.

रैवेर्यत्कान्तिदंतेजःपतितंधरणीतले ।
तस्मात्ताम्रसमुत्पन्नमिदमाहुःपुराविदः ॥

अर्थ–सूर्य्यका कान्ति देनेवाला तेज पृथ्वी पर पडनेसे ताँमा प्रगट हुआ ।

ताम्रके भेद.

म्लेच्छंनैपालकंचेतिद्विविधंताम्रमीरितं ।

अर्थ–तांबा दो प्रकारका है १ म्लेच्छ और दूसरा नैपाल ।

म्लेच्छ ताम्रके लक्षण.

कृष्णंरूक्षमतिस्तब्धंश्वेतंचापिघनासहं ।
क्षालितंचपुनःकृष्णमेतन्म्लेच्छस्यलक्षणम् ।
लोहनागयुतंशुल्वंदुष्टंमृत्यौत्यजेद्बुधः ॥

अर्थ–जो तांमा-काला, सूखा, कडा, सफेद, घनकी चोटके योग्य न हो, धोनेसे फिर कालौंच ले आवे ये लक्षण म्लेच्छताम्रके हैं और लोहे सीसेसे मिला हुआ दुष्ट तांमा मारनेमें त्याज्य है ।

नेपाल ताम्रके लक्षण.

जपाकुसुमसंकाशंस्निग्धंमृदुघनक्षमं ।
लोहनागोज्झितंताम्रंनेपालंमृत्यवेशुभम् ॥

अर्थ–जो तांबा चिकना और रंगमें जपा (दुपहरिया) फूलके समानहो, घनकी चोटके योग्य हो जिसमें लोहे सीसेका मेल न हो वह मारनेमें श्रेष्ठ है ।

सदोषत्वमाह.

नविषंविषमित्याहुस्ताम्रंतुविषमुच्यते ।
एकोदोषोविषेसम्यक्ताम्रेत्वष्टौप्रकीर्तिता ॥

अर्थ–पंडित विषको विष नहीं कहते, किन्तु ताम्रको ही विष कहते हैं; क्योंकि विषमें एक दोष है और तामेमें आठदोष हैं ।

ताम्रे दोषाः

अतःपरंताम्रसमाश्रितांश्चदोषांश्चवक्ष्येबहुधा विलोक्य । वांतिर्भ्रांतिःसंक्लमस्तापशूलेकंडुत्वंवैरेचतावीर्यहंतृ ॥ अष्टौदोषाःकीर्तिता स्ताम्रमध्येतेषांसर्वेशोधनंकीर्त्तयिष्ये ॥

अर्थ–१ वांति, २ भ्रांति, ३ ग्लानि, ४ दाह, ५ खुजली, ६ दस्त, ७ वीर्यनाश ८ शूल ये आठदोष तांबेमें रहते हैं, इसलिये तांमेका शोधन कहता हूं सो सुनो ।

वीर्ययत्कार्त्तिकेयस्य इतिपाठान्तरम् ।
शुक्रंयत्कार्त्तिकेयस्य पतितंधरणीतले । तस्मादेतत्समुत्पन्नं ताम्रमाहुपुराविदः ॥

ताम्र शोधन.

तक्रंतैलंधेनुमूत्रंचवांतिभ्रांतिंहन्यात्कांजिकं कौलथांभः । वज्रीदुग्धंधेनुदुग्धंक्लमंचतापंहन्याच्चिंतिणीनिंबुतोयं ॥ शूलंहन्यात्कन्यकाशीर्पितोयंहन्याद्दुग्धंगोघृतंकंडुताच । रेचंहन्यात्सौरणंमस्तुतोयंक्षौद्रंद्राक्षावीर्यहंतृत्वमाशु ॥ तप्तानितप्तानिचपत्रकाणिताम्रस्य सूक्ष्माणिविशोधयेद्वासप्तैववारांश्चपृथक्पृथक्वैततःपरंशुद्धतराणिनूनम् ॥

अर्थ—छाछ तेल वा गोमूत्रका शोधा हुआ तांबा वमन दूर करता है, और कांजी तथा कुल्थीके काढेमें भ्रांतिनाशक, थूहरके दूध और गौके दूधमें ग्लानि नाशक, इमली वा नींबूके रसमें संताप नाशक, ग्वारपट्ठे और नारियलके रसमें शूलनाशक, दूध और गोघृतमें खुजली नाशक और जिमीकंद तथा दहीकेजलमें दस्त नाशक, सहत तथा दाखके रसमें शोधाभया वीर्य दोषको दूर करता है। इन कही हुई औषधियोंमें ताँमेके छोटे और पतले पत्र आगमें तपा १ कर सात २ वार बुझावे तो तांबा उत्तम शुद्ध होवे। अथवा-तेल मठामें तांबेकी विशेष शुद्धी होती है, अथवा थूहर आक इनके दूध और नोनको मिलाय खरलकर इस कल्कको तांबेके पत्रोंपर लेप करे और अग्निमें तपाय २ पीछे ३ वार निर्गुंडीके रसमें बुझावे । अथवा थूहर और आकके दूधमें बुझानेसे ताम्र बहुत शुद्ध उत्तम हो, अथवा तांबेके पत्र गोमूत्रमें इमली और नोन डालकर तेज आंचमें एक प्रहर तक पचानेसे उत्तम शुद्ध होवें ।

ताम्र मारणकी प्रथम विधि.

पलानिपंचशुद्धानिताम्रपत्राणिबुद्धिमान् । गृहीत्वायोजयेत्तत्रतदर्द्धंशुद्धपारदम् ॥ मर्दयेन्निंबुकद्रावैस्त्रिदिनान्युभयंभिषक । ताम्रपत्रैःसमंशुद्धंगंधकंतत्रनिक्षिपेत् ॥ मर्दयित्वाघटीयुग्मंकाचकुप्यांनिधापयेत् । यामानष्टौपचेदग्नौस्वांगशीतलमुद्धरेत् ॥ एपताम्रेश्वरोहन्यात्कुष्ठादीनाखिलान्गदान् धातुपुष्टिकरश्चैवसूतिकारोगनाशनः ॥

अर्थ—१० पैसेभर अंगूठेके नखकी बराबर छोटे और पतले शुद्ध तांबेके पत्र और ५पैसेभर शिंगरफका निकाला पारा दोनोंको कागजी नींबूके रसमें पहरभर घोटे, फिर दूसरे दिन रसको निकाल डाले, इस प्रकार तीन दिन नींबूके रसमें घोटे और प्रतिदिन रसको निकाल डाले, चौथे दिन पारे संयुक्त तांबेके पत्रोंको धो डाले, पारेके संबंधसे जो तांबेके पत्र सफेद हुए हैं उनको खरलमें डाल १० पैसेभर शुद्ध गंधक डाल दोनोंको दो घडी पर्य्यंत विनारसके घोटे, पीछे एक शीशीमें भर मुख बंदकर वालुकायंत्रमें ८ प्रहरकी आंच देवे, [बहुतसे वैद्य शीशीका मुख खुला रखते हैं-और यह यादर है कि जिस हांडीमें शीशी धरे उसके पेंदेमे पैसेकी बराबर छेदकर उसके गिर्द मिट्टी लगाकर शीशी बैठाल बालूसे भरे] ऐसा करनेसे ताम्रेश्वर बनकर तयार हो जब, शीतल हो तब शीशीको फोडकर नीचे जो तांबा हो उसे निकाल ले, और शीशीके ऊपर जो सिंदूर हो उसे जुदा निकाले, इस एक रत्ती रसको लौंग चूरेके साथ खानेसे श्वास दूर हो, धातुपुष्ट हो कोढसे आदिले सब रोगोंका नाश करे प्रसूत

तिलपर्णिरसैस्ताम्रपत्राणिपरिलेपयेत् ।
शुभ्रवर्णाभवेद्भस्मनात्रकार्याविचारणा ॥

अर्थ–तिलपर्णीके रसका तांबेके पत्रोंपर लेपकर गजपुटमें फूंक दे तो तांमेकी सफेद भस्म हो, यह भस्म उत्तम है ।

तांमेकी तीसरी विधि.

शुद्धार्कपत्रंचरसार्द्धलिप्तंद्विभागगंधान्वितदुग्धिकांबु । स्मृतंततोभस्मपुटैर्दिनैकंतदाशुमृत्युंसमुपैतिताम्रम् ॥

अर्थ–अर्द्धभाग पारा, १ भाग गंधक दोनोंको दुद्धीके रसमें खरल कर तांबेके एक भाग शुद्धपत्रों पर लेप करे और गजपुटमें फूंक देवे तो तांवा मरे ।

सोमनाथी तांबेकी विधि.

सूताद्द्विगुणितंताम्रंपत्रंकन्यारसामृतम् ।
पिष्टातुल्येनवलिनाभांडमध्येविनिक्षिपेत् ॥
छिन्नंशरावकेणैतत्तदूर्ध्वंलवणंक्षिपेत् ।
मुखेशरावकंदत्वावन्हियामचतुष्टयं ॥
ज्वालयेदवचूर्ण्यैतद्वल्लमात्रंप्रयोजयेत् ।
पिप्पलीमधुनाशार्कसर्वरोगेपुयोजयेत् ॥
श्वासंकासंक्षयंपांडुमग्निमांद्यमरोचकम् ।
गुल्मप्लीहयकृन्मूर्च्छाशूलंपक्तयुर्च्वमुद्धतं ॥
दोषत्रयसमुद्भूतानामयान्जयतिध्रुवम् ।
रोगानुपानसहितंजयेद्धातुगतंज्वरम् ॥
रसेरसायनेचैवयोजयेद्युक्तमात्रया ।
सोमनाथाभिधंताम्रंपुराप्रोक्तंचिकित्सकैः ॥

अर्थ–पारेसे दूने शुद्ध तामेके पत्र लेवे दोनोंको ग्वारपट्टेके रसमें घोटे पीछे दूनी गंधक मिलाकर फिर घोटे, पश्चात् एक सरवेमें नमक बिछाय इस पीठीको रख ऊपरसे फिर नोन बिछावे और दूसरे सरवेसे मुख बंदकर गजपुटमें ४ प्रहरकी अग्नि देवे, तदनन्तर स्वांगशीतल होने पर इसको निकाल कर बारीकपीस शीशीमें रखछोडे, काम पडने पर ३ रत्ती तामे की भस्म-पीपल और सहतके साथ देवे तो रोगमात्रका नाश करे, और श्वास, खाँसी, खई, पीलिया, मन्दाग्नि, अरुचि, गोला, तापतिल्ली, मूर्च्छा, परिणाम शूल तथा त्रिदोषज-रोग, और धातुगत रोगोंको अनोपानके साथ शीघ्र नाश करे, रस और रसायनमें अपनी युक्तिसे मात्रा कल्पना करे, यह **सोमनाथ नाम ताम्र** पुराने वैद्योंने कहा है ।

दूसरी विधि.

पारा १ भाग, गंधक १ भाग, हरताल चौथाई भाग-मनसिल अष्टमांश, इन सबकी खरलमें घोटकर बारीक कजली करे और तांबेके पतले पत्रोंपर लेपकर ४ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे और स्वांगशीतल होनेपर निकाल लेवे ।

गुण । इस ताम्रभस्मको प्रत्येक रोग पर ६ रत्ती नित्य अनुपानके साथ खाय तो सर्व रोग नाश करे और परिणामशूल, उदरशूल, पांडु, ज्वर, गोला, तापतिल्ली, खई, मंदाग्नि, श्वास, खांसी, और ग्रहणी, इन रोगोंका नाशकरे, यह सोमनाथीताम्र है ।

ताम्र भस्मकी परीक्षा.

वर्हिकंठच्छविनिभंताम्रंभवतिकेवलं ।
पिष्टंचूर्णत्वमायातिसरसंचेत्सचंद्रकम् ॥

अर्थ–जिस तांबेका मोरकीसी गर्दन कासा रंगहो और पीसनेमें सहज चूर्ण हो जाय और पारेके संयोगसे चमकने लगे उसे उत्तम जानना ।

रसेंद्रेणविनाताम्रंयःकरोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानिजायंतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–जो मनुष्य विना पारे ताम्रकी भस्म करे तो इस भस्मके खानेसे पेटमें कृमी रोग

प्रगट होता है ।

ताम्र मारणकी सुगमरीति.

रसगंधकयोःकृत्वाकज्जलीमर्द्धजांतथा ।
पत्रांलिंपेत्कंटवेध्यंम्रियतेताम्रमातपे ॥

अर्थ–तांमेसे आधे पारे गंधककी कजली कर तांबेके कंटकवेधी पत्रोंपर लेपकर धूपमें रखे तो तांबा भस्म होजाय ।

अम्लपिष्टंमृतंताम्रंसूरणस्थंवहिर्मृदा ।
पुटेत्पंचामृतंवापित्रिधावांत्यादिनाशनः ॥

अर्थ–तांबेकी भस्मको अम्लवर्गमें घोट जिमीकंदमें रख इसीके टुकडेसे मूं बंद करे, पश्चात् गजपुटमें रखकें फूंक दे, इसी प्रकार तीन पुट पंचामृत (सोंठ, मूसली, गिलोय, शतावर, गोखरू) के देनेसे तांमेके वांति भ्रांति आदि सर्व दोप दूर होवें और अमृतकेसमान गुण करे।

अथ ताम्र गुणा.

कुष्ठघ्नीहृज्वरकफमरुच्छ्वासकासार्त्तिशोफस्त
न्द्राशूलोदरकृमिवमींपांडुमोहातिसारान् ।
अर्शोगुल्मक्षयभ्रमशिरोव्याधिमेहादिहि
काःशुद्धंशुल्वंहरतिसततंवन्हिवृद्धिंकरोति ।

अर्थ–शुद्ध रीतिसे भस्म किया ताम्र कोढ, ज्वर, कफ, वादी, श्वास, खांसी, तंद्रा, शूल, उदर, कृमिरोग, वांति, पांडु, मोह, अतिसार, बवासीर, गोला, खई, भ्रम, मस्तकव्याधि, और प्रमेहका नाशकरे, अग्निको बढावे।

ताम्र भक्षणके अनुपान.

साल्मलीरससंयुक्तंघृतमाक्षिकसंयुतं ।
रक्तिकंताम्रभस्मंतुपण्मासंनित्यमभ्यसेत् ॥
दुग्धंखंडंचानुपानंप्रदद्यात्साज्यंभोग्यंत्याज्य
मम्लेनयुक्तं । वीर्यपुष्टिंदीपनंदेहदार्ढ्यंदि-
व्यादृष्टिजायतेकामरूपं ॥

अर्थ–तांमेकी भस्म सेमरके रस संयुक्त १ रत्ती नित्य सहत और घृत मिलाकर छः महीने पर्यंत खाय और इसपर मिश्री मिला दूध पीवे तथा घृतमिला दिव्य मिष्ट पदार्थ भोजन करे, खट्टा नखाय तो पुष्टता, अग्निदीपन, वीर्यकी दृढता, देहपुष्ट, दिव्य दृष्टि और कामके समान सुन्दररूप हो ।

पूर्वेषांमतमालोक्यभिषगाधुनिकैर्बुधैः ।
स्वबुध्यादापयेत्ताम्रंरोगनाशनवस्तुभिः ॥

अर्थ–पूर्व वैद्योंकी सम्मतिको देख और आधुनिक चतुर वैद्योंकी सम्मति लेकर वैद्य अपनी बुद्धिके अनुसार रोग नाशक वस्तुओंके साथ ताम्रभस्म रोगीको देवे ।

कैंचुआ और मोर पंखसे ताम्र निकालनेकी विधि.

वर्षासुवृष्टिसंक्लिन्नेभूगर्भेसंभवंतिहि ।
जंतवःकृमिरूपायेतेभूनागइतिस्मृताः ॥
चतुर्विधास्तुभूनागास्वर्णादिखनिसंभवाः ।
स्वर्णादिभूमिसंभूतादुर्लभास्तेप्रकीर्त्तिताः ॥
ताम्रभूमिभवाःप्रायःसुलभागुणवत्तराः ॥

अर्थ–वर्षामें जमीन गीली होनेसे जो कृमिरूप जानवर पैदा हो उन्हे कैंचुआ कहतेहैं वो पृथ्वीके भेदसे चार प्रकारके है तिनमें सुवर्णकी खानेसे प्रगट दुर्लभ है, विशेष करके तांबेकी धरतीके प्रगट भूनाग मनुष्योंको मिलते हैं और ये गुणवाले हैं ।

ताम्रभूभवभूनागानष्टपिष्टसमेत्यतान् ।
गुडगुग्गुललाक्षोर्णामत्स्यपिण्याकटंकणैः ॥
दृढमेतांश्चसंयोज्यमर्दयित्वाधमेत्सुखम् ।
मुंचंतिताम्रवत्सत्वंतद्वत्पक्षोपिवर्हिणाम् ॥

अर्थ–तांमेकी पृथ्वीमें प्रगट भूनाग (कैंचूओं) को लेकर उनमें गुड, गूगल, लाख, ऊन, छोटी मछली, खल, और सुहागेको

मिलाकर घोटे, पीछे वंकनालमें रख कर धोंके तो तांबेके समान सत्व निकले । इसी प्रकार मोर पंखोंसेभी तांबा निकलता है ।

भूनाग सत्वके गुण.

भूनागसत्वंशिशिरंसर्वकुष्ठव्रणमणुत् ।
तद्युक्तंजलपानेनस्थावरंजंगमंविषम् ॥
विषंनश्यतिसूतोत्रगतःसूलेग्निसंदृढां ।
एवंमयूरपिच्छोत्थसत्वस्यापिगुणामताः ॥

अर्थ—कैंचुएका सत्व शीतल तथा सर्व कुष्ठ, व्रण, स्थावर जंगम विष, विष, इनका नाश करे, और पारेके साथ योग करनेसे पारा अग्निस्थाई हो ऐसेही मोर पांखके निकले सत्वके गुण हैं ।

अथ तुत्थताम्र.

तुत्थस्यटंकणंपादंचूर्णयन्मधुसर्पिषा ।
तुत्थेनमिश्रितंध्मातंकोष्ठीयंत्रेदृढाग्निना ॥
धामितंद्रवतेसत्वंकीरतुंडसमप्रभम् ।

अर्थ—लीलाथोतेका चतुर्थांश सुहागा मिलावे फिर सहत और घृत मिलाकर घोटे पीछे कोष्टियंत्रमें तीव्र अग्निसे धमावे तो लाल रंगका सत्व निकले । अथवा । लीला थोतेको एक दिन कंजाके तेलमें घोटे उसमें चतुर्थांश सुहागा मिलाय तुला यंत्रमें रखकर फूंके । अथवा । मनुष्यके काले वाल मिलाकर फूंके तो लाल रंगका ताम्र निकले, ऐसेही भूनाग (कैंचुए) का सत्व निकलता है तथा मोरपंखोंसे निकलता है इन तीनों सत्वोंकी रविवारके दिन अंगूठी बनावे और इस अंगूठीको पानीसे, धोकर पीवे तो तत्काल विष दूर हो, और जिस स्त्रीके बालक हुआ चाहे वो पीवे तो तत्काल प्रसूता हो, यत्नपूर्वक देनेसे शूल, ग्रहबाधा, त्रिदोषपीडा, और भूतबाधा नाश होवे, व्रणको भरदे, नेत्रोंमें डाले तो हित करे, एसे भालुकीने कहा है ।

मंत्र.

रामवत्सोमसेनानीमुद्रितेतितथाक्षरं ।
हिमालयोत्तरेपार्श्वेस्वकर्णश्चमरुद्रुमः ॥
तत्रशूलसमुत्पन्नंतत्रैवविलयंगतः ॥

अर्थ—पूर्व कहे पानीको मंत्रित करनेका यह मंत्र है ।

ताम्रकी द्रुति.

लवणक्षारमूत्राणिक्षाराश्चौषधसंभवाः ।
एषांक्षारसमस्तेषांऔषधीकंदसंभवाः ॥
येचान्येद्रावकंकल्कंफलत्रयकटुत्रयं ।
कुलत्थक्काथतोयंचसर्वंमृदग्निनापचेत् ॥
गालयेद्वस्त्रयोगेनपुनःपाकंचकारयेत् ।
तेनैवभावयेच्चैवशुद्धंशुल्वस्यचूर्णकम् ॥
एकविंशतिवारांश्चभावयित्वाविशोषयेत् ।
लादिमध्येतुभूगर्भेधान्यराशौचभास्करे ॥
सप्ताहंधारयेत्तं तुदोलायांचैवस्वेदयेत् ।
एकविंशद्दिनेजातेशुल्वस्येवद्रुतिर्भवेत् ॥
साद्रुतिसर्वतोत्कृष्टारसरूपाचनिर्मला ।

अर्थ—सब नोन, सब मूतोंके क्षार, सब औषधियोंके क्षार, कंदोंके क्षार, और जो द्राव करने वाली वस्तु हैं, त्रिफला, त्रिकुटा इन सबको कुलथीके काढेमें मंदाग्निसे पचावे, पीछे वस्त्रमें छान फिर पक्ककरे, जब गाढा हो जावे तब शुद्ध तांबेके चूर्णमें भावना देवे, ऐसे २१ पुट देकर सुखा लेवे पीछे लीदमें, पृथ्वीमें, धानकी राशिमें, धूपमें सात २ दिन रखकर पूर्वोक्त दोला यंत्रमें स्वेदन करे, ऐसे २१ दिन करनेसे तांबेकी पारेके समान निर्मल द्रुति हो ।

ताम्र.जनितदोषकी शान्ति.

मुनिव्रीहीसितापानंधान्याकंवासितासहः ।

ताम्रदोषमशेषंवैपिवन्हन्यादिनत्रयैः ॥

अर्थ-सामत्रिया वा धनियेको खांडके साथ मिलाकर जलसे पीवे तो तांमेका संपूर्ण दोष दूर हो जावे ।

इतिश्री माथुरदत्तराम निर्मित रसराज सुंदरे ताम्र प्रकरणं समाप्तम्

अथवंगप्रकरण प्रारम्भः

खुरकंमिश्रकंचेतिद्विविधंवंगमुच्यते ।
खुरकंचगुणैःश्रेष्ठंमिश्रकंनरसेहितम् ॥

अर्थ-वंग दो प्रकारका है एक खुरक और दूसरा मिश्रक इनमें खुरक श्रेष्ट है ।

खुरकके लक्षण.

धवलंमृदुलंस्निग्धंद्रुतद्रावीचगौरवम् ।
निःशब्दखुरवंगंस्यान्मिश्रकंश्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ-जो रांगा सफेद, नरम, चिकना, जल्द पिगलनेवाला, भारी, शब्दरहित हो उसे खुरकवंग कहते हैं, और मिश्रवर्ण अथवा काला हो उसे मिश्रक कहते हैं ।

अथवंगशोधनं.

त्रपूमूत्रवर्गेम्लवर्गेवहूनांजलेक्षारतोयेचवक्रा कैवर्गे । ततःक्षालयित्वाकदंवस्यनीरेशुभंक्षा लयेत्तप्तकंसप्तवारान् ॥

अर्थ-रांगको तपाकर मूत्रवर्ग, अम्लवर्ग, सब क्षारोंके पानी, थूहरके दूध, आकके दूध, प्रत्येकमें सात २ वार बुझावे, पीछे गरमको सातवार कदंवके पानीसे धोवे तो रांग शुद्ध हो।

द्रावयित्वानिशायुक्तंक्षिप्तंनिर्गुंडिकारसे ।
विशुध्यतित्रिवारेणखुरवंगंनसंशयः ॥

अर्थ-रांगको पिघलाकर हल्दीके चूर्ण मिले निर्गुंडीके रसमें तीनवार बुझावे तो खुरकवंग शुद्ध होवे ।

वंगमारणकी पहिली विधि.

मृत्पात्रेद्राविते वंगेक्षिपेत्तत्रसुवर्चिकाम् ।
घर्षयेल्लोहदार्व्यातुयावत्तस्मात्तनूनपात् ॥
निसृत्यप्रदहेत्सर्वंस्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
सुवर्चिकापनोदार्थंसलिलैःक्षालयेन्मुहुः ॥
ततोतिनिर्मलंग्राह्यंवंगभस्मभिषग्वरैः ।

अर्थ-आदपाव शुद्ध रांगको एक बडे ठिकडेमें पिघलाकर दो पैसेभर कच्चा सोरा डाले और लोहेकी कलछीसे चलता जाय जब कीचसा गाढा होजाय तब फिर दो पैसेभर सोरा डालकर रगडे, जब फिर कीचसा होजाय तब और दो पैसेभर सोरा डालकर रगडे, इस प्रकार छः वार डाले छहोंवार कीचसा होजाय तब न डाले, जब ठीकरेमें अग्नि जलकर शान्ति होजाय तब उतार छुरीसे सब रांगको खुरचले और पीसकर एक प्यालेमें भर पानीसे प्यालेको भरदे और उस भस्मको पानीमें मलकर थोडी देर रहनेदे जब रांग नीचे बैठ जाय तब पानीको निकाल डाले इस प्रकार तीन वार धोवे जब सोरेकी राख दूर होजाय और रांग मात्रकी सफेद भस्म रहजाय उसे सुखाकर रख छोडे जिस योगमें चाहे उसमें मिलावे ।

दूसरी विधि.

अथभस्मसमंतालंक्षिप्त्वाम्लेनविमर्दयेत ।
ततोगजपुटेपक्त्वापुनरम्लेनमर्दयेत् ॥
तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ।
एवंदशपुटैःपक्वंवंगंभवतिमारितम् ॥

अर्थ-शोरेकामारा रांग जो पहली विधिमें कह आये है उसकी जितनी भस्म हो उतनीही शुद्ध हरताल डाले और कागजी नींबूके रसमें एक प्रहर घोटे, पीछे सराव संपुटमें रख गजपुटमें फूंकदे फिर रांगकी दशांश हरताल

डालकर नींबूके रसमें पहरभर घोटे और गज-पुटमें फूंके, ऐसे दस आंच देनेसे रांग निरुत्थ भस्महो अर्थात् मित्रपंचकसेभी नजीवे, मित्र-पंचक आगे लिखेंगे।

वंगकी धातुवेधी भस्म तीसरी.

श्वेताभ्रंश्वेतकाचंचविषसैंधवटंकणम्। स्नुहिक्षीरेदिनंमर्धतेनवंगस्यपत्रकम्॥ लेप्यंपादांशकैकल्कैर्चाधमूषागतंधमेत्। द्रावेयातेततोवंगंपूर्वतैलेचढालयेत्॥ वार्यादिलेपमेकत्रसप्तवाराणिकारयेत्। पुत्रजीवोत्थतैलेचढालयेत्सप्तवारकम्॥ तद्वंगंजायतेतारंशंखकुन्देन्दुसन्निभम्।

अर्थ–सफेद अभ्रक, सफेद कांच, विष, सेंधानोन, सुहागा इन सबको थूहरके दूधमें घोटकर रांगके पतले २ पत्रोंपर चतुर्थांश लेपकरे, अंधमूषामें रखकर फूंके जब वंग पतला हो तब पूर्वोक्त औषधियोंके निकाले हुए तेलमें बुझावे पीछे नेत्रावाला आदि रूखडियोंका लेपकर सातवार फूंके, पुत्रजीवी-(जीयापोता)के तेलमें सात २ वार बुझावे तो वंग शंख-कुन्दपुष्प व चंद्रमाके समान सफेद चांदी होजाय।

चौथी विधि.

वंगेघर्षणकालएवभिषजःक्षिप्त्वायवानीरजो। मध्येप्यंक्रमशःशिलाजतुतथाभस्माप्यपामार्गजं। क्षिप्त्वानिंवदलान्यरुष्कपिशितैर्भांडेतु चिंचात्वचो। भूयात्संस्तरसंस्थितानिपुरतः कुर्वन्तिभस्मान्यपि॥

अर्थ–रांगको कढाईमें गलाय तिस्मे क्षण २ में अजमायनका चूरा थोडा २, अथवा शिलाजीत वा ओंगेकी भस्म, वा नीमके पत्तेव. भिलाएका चूर्ण वा इमलीका चूर्ण डालताजाय, ये प्रत्येक वंगके मारक पदार्थ हैं, अर्थात् इन हर एकसे वंगकी भस्म होती है।

पांचवीं विधि.

वंगभस्मसमंकान्तंव्योमभस्मंचतत्समं। मर्दयेत्कनकांभोभिर्निंबपत्ररसैरपि॥ दाडिमस्यमयूरस्यरसेनचपृथक्पृथक्। भूपालावर्त्तभस्माथविनिक्षिप्तंसमांशकम्॥ गोमूत्रकशिलाधातुजलैःसम्यग्विमर्दयेत्। ततोगुग्गुलतोयेनमर्दयित्वादिनाष्टकम्॥ विशोष्यपरिचूर्ण्याथसमभागेनयोजयेत्। भृष्टवब्बूरनिर्यासैराकुलीवीजचूर्णकैः॥ ततोक्षिपेत्करंडान्तर्विधायपटगालितं। गोतक्रेपिष्टरजनीसारेणसहयापयेत्॥

अर्थ–वंगकी भस्मके समान कान्तिलोहकी भस्म ले, और उतनीही अभ्रककी भस्म मिलाकर धतूरेके पत्ते, नीमके पत्ते, अनारके पत्ते, और ओंगा इन प्रत्येकके रसमें अलग २ मर्दन करे पश्चात् राजावर्त्त मणिकी भस्म समान मिलाय गोमूत्र और शिलाजीतके पानीमें घोटे, इसी प्रकार ८ दिन गूगलके पानीमें घोटे, पीछे सुखाकर पीसडाले और बबूलका गोंद और निरमिलीके बीजोंको पीसकर मिलावे पीछे कपरछान कर शुद्ध पात्रमें भर रख छोडे और हलदी मिली गौकी छाछके साथ इस वंगको १२ रत्ती पिलावे।

चतुर्भिर्वल्लकैस्तुल्यंरम्यंवंगंरसायनम्। निश्चितंतेननश्यंतिमेहाविंशतिभेदकाः॥ शालयोमुद्गसूपंचनवनीतंतिलोद्भवं। पटोलंतिक्ततुंडीरंतक्रंपथ्यायशस्यते॥

अर्थ–इस रीतिसे यह वंग भस्म रसायन है यह २० प्रकारके प्रमेहोंको निश्चय दूर करे, चांवल, मूंगकी दाल, मक्खन, तेलके पदार्थ परवल, कंदूरी, और छांछ, ये इसके पथ्य हैं।

तालकंकर्कटास्थीनिशंखशुक्तीवराटिका ।
सिंधुकर्पूरसंयुक्तंमारयेद्वंगपर्वतम् ॥

अर्थ–हरताल, कैंकडेकी हड्डी, शंख, सीप, कौंडी, नोंन, और कपूर, ये औषधी वंगपर्वत समानको भस्म करती हैं ।

वंगभस्मके गुण.

बल्यंदीपनपाचनंरुचिकरंमज्ञाकरंशीतलं ।
सौंदर्यैकविवर्द्धनंत्वतरुजंनीरोगताकारकं ॥
धातुस्थैर्यकरं क्षयक्षयकरं सर्वप्रमेहापहं ।
वंगंभक्षयतोनरस्यनभवेत्स्वप्नेपिशुक्रक्षयः ॥

अर्थ–शुद्ध रीतिसे भस्म किया वंग बलकारक, दीपन, पाचन, रुचिकर्त्ता, बुद्धि बढाने वाला, शीतल, कांतीकर, बुढापेको दूर करे, निरोग करे, धातुको स्थिर करे, खई और प्रमेह मात्रको दूर करे, वंग खानेवाले मनुष्यके स्वप्नेमेंभी वीर्य स्खलित नहीं होवे ।

वंगके अनुपान.

कर्पूरसार्द्धंमुखगंधनाशंजातीफलैःपुष्टिकरंनराणां । तुलसीपत्रसंयुक्तंप्रमेहंनाशयेध्रुवम् ॥
घृतेनपांडुरोगंचटंकणैर्गुल्मनाशनम् ।

अर्थ–वंग भस्म कपूरके साथ खानेसे मुखकी दुर्गंधिका नाश करे, जायफलके संग पुष्टता, तुलसीपत्र संयुक्त प्रमेहोंका नाश, घृतके साथ पांडुरोग, और सुहागेके साथ गुल्मरोगका नाश करे ।

हरिद्रारक्तपित्तघ्नीमधुनाबलवृद्धिकृत् ।
खंडयासहपित्तघ्नंनागवल्याचबंधनम् ॥
पिप्पल्याचाग्निमांद्यत्वंनिशयाचोर्ध्वश्वासस्त्वद् । चंपकस्वरसेनैवदुर्गंधिंनाशयेद्ध्रुवम् ॥
निम्बकस्वरसेनाद्यंदेहेदहनशांतये ।
कस्तूरीवंगसंयुक्तंभक्षणाद्वीर्यरोधकृत् ॥
खदिरकाथयोगेनचर्मरोगान्जयेदसौ ।
पूगीफलस्यसार्द्धेनाजीर्णंनाशयतेक्षणात् ।
नवनीतसमायुक्तमस्थिजीर्णनवंभवेत् ॥

अर्थ–हल्दीके संग रक्तपित्तको शांति करे, सहतके साथ बलबढावे, मिश्रीके साथ पित्त शांति करे, पानके संग जिकडी हुई देहको खोले, पीपलके साथ अग्निमंदको, हल्दी संयुक्त ऊर्ध्व श्वासको, चंपाके साथ दुर्गंधिको, नींबूके रस संयुक्त दाहको कस्तूरीके संग वीर्यका स्तंभन करे, खैरके काढे चर्म रोग सुपारीके साथ अजीर्णको. दूर करे और मक्खनके साथ पुरानी हडडियोंको नवीन करे ।

दुग्धसार्द्धंभवेत्तुष्टिर्विजयास्तंभनंभवेत् ।
लशुनेर्वातजांपीडांनाशयेन्नात्रसंशयः ॥
समुद्रफलसंयोगान्निर्गुंड्यासहभक्षणात् ।
कुष्टंनाशयतेक्षिप्रंसिंहनादेमृगाइव ॥
आघाटजटिकायोगात्खंडत्वंनाशयेद्ध्रुवं ।
देवपुष्पस्यसंयोगेसमुद्रफलयोगतः ॥
नागपत्ररसैर्लेप्याल्लिंगवृद्धिप्रजायते ।
गोरोचनलवंगेनतिलकोमोहनंभवेत् ॥
एरंडजटिकायोगेनघर्षयित्वाचवंगकम् ।
लेपयेच्चललाटेचतेनशीर्षगदंजयेत् ॥

अर्थ–दूधके साथ तुष्टि, भांगके साथ स्तंभन, ल्हसनके साथ वात पीडाकानाश, समुद्रफल और संभालूके साथ कुष्ठनाश, चिरचटाकी जडके साथ नपुंसकता, लौंग और समुद्रफल मिले पानके रसके साथ लिंगपर लेप करनेसे लिंग वृद्धिकरे, गोरोचन और लौंगके साथ तिलक मोहन करता है, अंडकी जडके साथ वंगको घिसकर लगाना मस्तकपीडाको दूर करता है ।

कौञ्जेऽपामार्गमूलेनप्लीहेटंकणसंयुतं ।
रसोनतैलयुक्तस्यमपस्मारनिषूदनम् ॥

पुत्रास्यैरासभीक्षीरैस्तक्राढ्यंवातगुल्मनुत् ।
यवानिकायुतंवातेवाजिगंधायुतंतुवा ॥
जलोदरेत्वजाक्षीरसंयुतंगुणकृद्भवेत् ।
जातीफलाश्वगंधाभ्यांकटिपीडानिवारणं ॥

अर्थ–कुवडेपन दूर करनेको ओंगाकी ज़डके साथ, लहसनके रसके तेलमें मिलाय नस्य देना मृगी रोगमें, तापतिल्लीमें सुहागेके साथ, पुत्रोत्पत्तीके निमित्त गधीके दूधमें, छाछके साथ वायगोलामें, अजमायनके संग वा असगंधके साथ वादीमें, जलंधरमें वकरीके दूधके संग, कमरपीडामें जायफल और असगंधके साथ देनी चाहिये ।

अशुद्ध वंगके दोष.

पाकेनहीनःखलुवंगकोसौकुष्ठानिगुल्मानिमहांतिरोगान् । पांडुप्रमेहापचिवातशोणितं वलापहारंकुरुतेनराणाम् ॥

अर्थ–कच्ची वंग भस्म-कोढ, गोला, घोर-व्याधि, पांडुरोग, प्रमेह, अपचि, और वात रक्तको उत्पन्न करे, तथा वलका नाश करे ।

वंगविकार शांति.

मेपशृंगीसितायुक्तांयःसेवतिदिनत्रयं ।
वंगदोपविमुक्तोसौसुखंजीवतिमानवः ॥

अर्थ–जो मनुष्य मेंढासिंगीको मिश्रीके साथ तीन दिन खाय तो वंगविकार शांति होवे ।

इतिश्री वंगप्रकरणं संपूर्णम्.

अथ जसद प्रकरणम्.

खर्परंद्विविधंप्रोक्तंजसदंशवकंतथा ।
रसोपिजसदंप्रोक्तंखर्परंचगुणात्मकम् ॥

अर्थ–खपरिया दो प्रकारका है, एक जसद (जस्त) दूसरा शवक ये जस्ताभी खपरियाका भेद है, परंतु इनमें खपरिया गुणयुक्त है ।

जस्त शुद्धि.

जसदंगालयेत्पूर्वंदुग्धमध्येतुढालयेत् ।
एकविंशतिवारांश्चखर्परंशुद्धिमिष्यते ॥

अर्थ–जस्तका शोधन और मारण वंगके समान जानना, परंतु तोभी इसका मारण विशेष कहता हूं । जस्तको २१ वार गला २ कर दूधमें बुझावे तो शुद्ध होवे ।

अथ मारणम्.

जसदंलोहजेपात्रेद्रावयित्वापुनर्धमेत् ।
अत्यंततप्तेनिंवस्यपत्रमेकंविनिक्षिपेत् ॥
घर्षणाल्लोहदंडेनवन्हिरुत्तिष्ठतिध्रुवम् ।
यथायथाभवेत्घृष्टिर्भस्मीभावस्तथातथा ॥
भस्मीभूतंपृथक्कृत्यवर्पयेचत्पुनःपुनः ।
नेत्रयोगेपुसर्वेपुभस्मीभूतमिदंशुभम् ॥

अर्थ–लोहेके वडे और गहरे कलछेमें ६ पैसेभर जस्ता डाल भट्टीमें रख खूब धोंके गरम होने पर दो तीन नीमके पत्र डाल लोहेके मूसलेसे रगडे, रगडनेसे आग निकलती है जिससे जस्तेकी धानकीखीलके तरह सफेद भस्मी होजाती है, उस भस्मको अलग निकाल कर फिर रगडे और घोटे, इसी प्रकार जब तक सब भस्म न होजाय तब तक घोटे, ऐसा करनेसे जस्तेकी भस्म हो, यह भस्म केवल अंजनके कामकी है, खानेके काम की नहीं यह खानेसे वादी करती है, इसको १ रत्ती पीसकर नेत्रोंमें आंजे तो नेत्रके सब रोगोंको दूर करे । अथवा भस्म १० पैसेभर और काली मिरचका चूर्ण पैसेभर, दो पैसेभर मक्खन, तीनोंको एक महीने पर्यंत कागजी नीबूके रसमें घोट आध २ रत्तीकी गोलियां वनावे, और एक गोलीको बूंदभर वासे पानीमें घिसकर प्रातःकालनेत्रोंमें लगावे तो धुंधको दूरकरे

दूसरी विधि.

जसदस्यचतुर्थांशंपारदंगंधकंप्रिये ।
मर्दयेत्खल्वकंसम्यक्कन्यानिंबुरसैःपृथक् ॥
लेपयेत्तेनपत्राणिगजाह्वेपाचयेत्पुटे ।
एकमेवपुटेनैवभस्मसाज्जसदंभवेत् ॥

अर्थ—जस्तके पत्रोंका चतुर्थांश पारा, और गंधक मिलाकर ग्वारपटेके रसमें खरलकर नीवूके रसमें खरलकरे, पश्चात् पत्रों पर लेपकर सरावसंपुटमें रख गज पुटमें फूंक देतो एकही पुटमें जस्तकी भस्म हो ।

गुंजाद्वयंतुजसदंसर्वरोगान्व्यपोहति ।

अर्थ—दो रत्ती जस्तकी भस्म सब रोगोंको नाश करती है ।

सामान्यगुणाः

जसदंतुवरंतिक्तंशीतलंकफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यंपरमंमेहंपांडुंश्वासंचनाशयेत् ॥

अर्थ—जस्तकी भस्म-कसैली, कडवी, शीतल, कफ, पित्त, प्रमेह, पीलिया और श्वास काश नाश करे, नेत्रोंको परमहित है ।

जस्तके अनुपान.

पुराणेगोघृतेनैव्यंताम्बूलेनप्रमेहजित् ।
अग्निमन्थेनाग्निकरंत्रिसुगंधैस्त्रिदोषनुत् ॥

अर्थ—जस्तेकी भस्म-पुराने गोघृतसैं नेत्रोंको हित करे पानकेसाथ प्रमेहका नाश करे, अरणीकेसाथ अग्नि बढावे, त्रिसुगंधके साथ खानेसे सन्निपातको दूरकरे ।

सतंदुलहिमैर्हंतिखर्जूरमायुजंज्वरम् ।
यवानिकालवंगाभ्यांयुतंशीतज्वरंजयेत् ॥

अर्थ—पित्तज्वरमें चांवलके हिम और खजूरके साथ, और शीतज्वरमें लौंग तथा अजमायनके साथ खाय ।

खर्जूरतंडुलहिमैरक्तातीसारनाशकृत् ।
शर्कराजाजिसंयुक्तमतिसारंवमिंजयेत् ॥

अर्थ—खजूर और चांवलके हिमके साथ रक्तातिसारका नाशकरे, जीरे और मिश्रीके साथ, वांति और अतिसार नष्ट होवें ।

सदोषजस्तकेदोष.

अपक्वंजसदंरोगान्प्रमेहाजीर्णमारुतान् ।
वमिंभ्रमिंकरोत्येनंशोधयेन्नागवत्ततः ।

अर्थ—कच्चाजस्त, प्रमेह, अजीर्ण, शरदी वमन, भ्रम, इतने रोग प्रगटकरता है, अतएव इसको नागके समान शोधन करे ।

अथास्य शांति.

बालाभयांसितायुक्तांसेवयेद्योदिनत्रयं ।
जसदस्यविकारोस्यनाशमायातिनान्यथा ॥

अर्थ—छोटी हर्डे और मिश्री तीन दिन सेवन करनेसे जस्तविकार शांतिहोवें ।

इतिश्री रसराजसुंदरे जसदप्रकरणं समाप्तं.

अथ नागप्रकरणं लिख्यते.

उत्पत्ति.

दृष्ट्वाभोगीसुतांरम्यांवासुकिस्तुमुमोचयत् ।
वीर्यंजातस्ततोनागःसर्वरोगापहोनृणाम् ॥

अर्थ—पहिले वासुकीनाग भोगीनागकी सुंदर कन्याको देखकर वीर्य परित्याग करता हुआ इसीसे सर्व रोग नाशक सीसा प्रगट हुआ ।

नागंचद्विविधंप्रोक्तंकुमारंसमलंतथा ।
कुमारंरसमार्गेषुयोजनीयंगुणाधिकम् ॥

अर्थ—वह सीसा दो प्रकारका है कुमार और शमल तिनमें कुमार रस क्रियामें योजना करनेमें उत्तम है ।

नागकी परीक्षा.

द्रुतोयातेमहाभारंछेदेकृष्णंसमुज्ज्वलं ।
पूतिगंधिवहिःकृष्णंशुद्धंशीशमतोन्यथा ॥

अर्थ–जो पतला करनेसे भारी, तथा तोडनेमें अंदरसे काला वा उज्ज्वल निकले और वास आती हो, बाहरसे काला दीखे, ऐसे सीसेको शुद्ध जानना इससे व्यतिरिक्त अशुद्ध हैं।

नागशोधनम्.

फलत्रिकजकषायेवाकुमारीरसेवाकरिवरसलिलेवागालयेत्सप्तवारं । खदिरदहनतप्तं लोहपात्रेस्थितंसत्तदनुसपदिनागोजायतेशुद्धभावः ॥

अर्थ–लोहपात्रमें खैरकी लकडीसे सीसेको गलाकर त्रिफलाके काढे, ग्वारपट्टेके रस, और हाथीके मूत्रमें सात २ वार बुझावे तो सीसा शुद्ध हो, अथवा अग्निमें पिघलाय छेददार हांडीमें आकका दूधभर उसमें तीनवार बुझावे तो सीसा शुद्ध हो।

नागमारणम्.

त्रिभिःकुंभिपुटैर्नागोवासारसविमर्दितः ।
सशिलोभस्मतामेतितद्रजःसर्वमेहनुत् ॥

अर्थ–सीसा वा मनसिलका चूर्ण अडूसेके रसमें खरलकर गजपुटमें फूंक दे ऐसे तीन पुटमें सीसेकी उत्तम भस्म हो।

दूसरी विधि.

भागैकमहिफेनस्यनागभागचतुष्टयम् ।
घर्षणान्निंवकाष्ठेनमंदवन्हिप्रदानतः ॥
नागभूतिर्भवेच्छ्वेतावीर्यदाढर्चकरीमताः ।

अर्थ–सीसेकी चौथाई अफीमले दोनोंको खिपरेमें डालकर अग्नि देवे और नींबूकी लकडीसे चलाता जाय तो सीसेकी सफेद भस्म हो और खानेसे वीर्यको वढावे।

तीसरी विधि.

कुडवंनागपत्राणांकुनटयाःस्यात्पलार्द्धकम् ।
तंदुलीयरसैर्यामंयामंवासारसैस्तथा ॥
संमर्द्यचक्रिकांकृत्वाघर्मेसंशोष्यतापुनः ।
सरावसंपुटेकृत्वापचेद्वन्योपलैर्भिषक् ॥
एवंसप्तपुटैर्नागोभस्मीभवतिनिश्चितम् ।
द्विगुंजोयंध्रुवंहन्यात्प्रमेहानखिलान्गदान् ॥

अर्थ–८ पैसेभर सीसेके-चनेकी दालके समान छोटे २वर्क बनावे, उनमें पैसेभर मनसिल डाल चौलाईके रसमें एक प्रहर घोटे और पीछे एक प्रहर अडूसेके रसमें घोटकर धूपमें सुखादे, पश्चात् सराव संपुटमें रख जंगली उपलोकी १० आंच दे, इसी प्रकार मैनसिल वार २ डाल और घोट २ कर सात आंच और दे तो सीसाभस्म हो, दो या चार रत्ती भस्म बडी इलायचीके चूर्ण और सहतके साथ खाय तो प्रमेह और मूत्रस्राव आदि सर्व रोग नाश होवें।

नागकी हरितभस्म.

खर्परेनिहितंनागंरत्रिमूलेनघर्षयेत् ।
यामत्रिकैर्भवेद्भस्महरिद्वर्णमदूषणम् ॥

अर्थ–खीपडेमें शीशाडाल चूल्हेपर चढाय अग्नि दे और आककी जडसे रगडता जायतो ३ प्रहरमें सीसेकी हरे रंगकी भस्म होवे।

तथापीली भस्म.

शिलागंधककर्पूरंकुंकुमंमर्दयेत्समम् ।
जंवीरस्यद्रवैर्यामंतत्समंनागपत्रकम् ॥
लिप्त्वालिप्त्वापुटेपाच्यंयावत्षष्टिपुटंभवेत् ।
तंनागंविद्युदाभासंजायतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–मनसिल, गंधक, कपूर, और केशरको जंभीरीके रसमें घोट सीसेके कंटकवेधी पत्रों पर लेपकर गजपुटमें फूंकदे इस प्रकार ६० पुट देनेसे शीशेकी विजली अर्थात् सोनेके समान पीलीभस्म होवे।

तथा लाल भस्म.

कुमारीपादयातेनतत्क्षणान्म्रियतेफणी ।
पुटेनशतकेनापिसिंदूरंकेवलंभवेत् ॥
तारेताम्रेतथावंगेशतवेधीभवेद्ध्रुवम् ।

अर्थ–सीसेको पिगलाकर ग्वारपट्ठेके मूसलेसे रगडेतो तत्क्षण सीसा भस्म होवे, और ग्वारपट्ठेके रसमें सीसेके पत्र खरल कर गजपुटमें फूंके ऐसे १०० पुट देनेसे सिंदूरके समान भस्म हो, इसको चांदी वा तांबेमें गलाकर डाले तो इसका सतांशभाग वेधकर सुवर्ण करे ।

सातवीं विधि.

तांबूलीरससंपिष्टंशिलालेपात्पुनःपुनः ।
द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागोनिरुत्थोयातिभस्मतां ॥

अर्थ–पानके रसमें मैनसिल घोटकर सीसेके कंटक वेधी पत्रों पर लेपकर सरावसंपुटमें रखकर फूंकदे इस प्रकार ३२ पुट देनेसे सीसेकी निरुत्थभस्म होवे ।

आठवीं विधि.

भूनागागस्तिपत्राणिपिष्ट्वापात्रंविलेपयेत् ।
वासापामार्गतत्क्षारंतत्रनागयुतंक्षिपेत् ॥
गुरूक्तितश्चतुर्थांशंवासादर्व्याविघट्टयेत् ।
यामैकेनभवेद्भस्मततोवासारसान्वितम् ॥
मर्दयेत्संपुटेनैकंनागसिंदूरकंशुभम् ।

अर्थ–कैंचुए और अगस्तवृक्षके पत्ते पीस एक पात्रमें लेपकरे, उसमें सीसा भर चूल्हे पर चढावे, जब सीसा पिगलजाय तब अडूसा और ओंगाकाक्षार सीसेका चतुर्थांश ले थोडा २ डालकर अडूसेकी मोटी लकडीसे रगडता जाय तो सीसा एक प्रहरमें भस्म हो, फिर अडूसेके रसमें खरलकर गजपुटमें फूंके तो सीसेकी लालभस्म होवे ।

नवम विधि.

पलद्वयंमृतंनागंहिंगुलंचपलद्वयम् ।
शिलाकर्षमिताग्राह्यासर्वतुल्यंहिगंधकम् ॥
निंबुनीरेणसंमर्द्यततोगजपुटेपचेत् ।
तदानागेश्वरोयंस्यान्नागराजसुतोपमः ॥

अर्थ–शुद्ध सीसेकी भस्म ८ तोला, हिंगुल ८ तोला, मनसिल तोलेभर, गंधक १७ तोला, सबको नींबूके रसमें खरलकर गजपुटकी आंच देवे तो यह नागेश्वर रस तयार हो ।

नागभस्मके गुण.

क्षयपवनविकारेगुल्मपांड्वामयेषुश्वयकृमिकफशूलेमेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदेचैनष्टवन्होप्रशस्तः शुभविधिकृतनागःकामपुष्टिंददाति ॥

अर्थ–सीसेकी भस्म खई, बादी गोला, पीलिया, श्रम, कृमि, कफरोग, शूल, प्रमेह, खांसी, संग्रहणी, बवासीर आदि गुदाके रोग, और मंदाग्निका नाश करे, कामदेवको बढावे ।

नागके अनुपान.

मृतंनागंसितायुक्तंमायुंवायुंशिरोव्यथां ।
नेत्ररोगंशुक्रदोषंप्रलापंदाहकंजयेत् ॥
प्रददातिरुचिंकामंवर्द्धयेत्पथ्यसेविनः ।
स्वबुद्ध्याकल्पयेद्धीमाननुपानंगदेषुच ॥

अर्थ–शीशेकी भस्म मिश्रीके साथ खानेसे वात, पित्त, मस्तकरोग, नेत्ररोग, शुक्रदोष, प्रलाप, और दाहको दूर करे, अन्नमें रुचि और पथ्यसेवीके कामदेवकी वृद्धि करे, चतुरमनुष्य सब रोगोंमें अपनी बुद्धिसे अनुपान कल्पना करे।

अशुद्धनागदोष.

कुष्टानिगुल्मारुचिपाण्डुरोगान्क्षयंकफंरक्तविकारकृच्छ्रं । ज्वराश्मरीशूलभगंदराद्यंनागंत्वपक्कंकुरुतेनराणां ॥

अर्थ–अशुद्ध सीसेकी भस्म-कुष्ठ, गुल्म, अरुचि, पांडु, खई, कफरोग, रक्तविकार,

मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, पथरी, शूल, भगंदर, इन रोगोंको प्रगटकरे ।

नागदोष शांति.

हेमंहरीतकींसेवेत्सितायुक्तंदिनत्रयम् ।
अपक्वनागदोषेणविमुक्तःसुखमेधते ॥

अर्थ–सुवर्ण भस्म और हड खांडके साथ ३ दिन खानेसे अपक्व नागदोष निस्संदेह शांति होवें ।

इतिश्री रसराजसुंदरे नागप्रकरणं समाप्तम्.

अथ लोहप्रकरणं तत्रादौ उत्पत्ति.

पहले देव और दैत्योंने मिलकर समुद्र मंथन किया उसमें देवताओंका जीवन अमृत प्रगट हुआ उसे जब देवताओंने पान किया तो बहुत सूक्ष्म बिन्दु उडकर पृथ्वीमें गिरे उनको श्रीशिवजीने पत्थररूप लोहा बनाकर पर्वतोंमें छुपा दिया, इस प्रकार पापसे रोग पीडित मनुष्योंके लिये यह लोहा पैदा हुआ ।

लोहभेद.

मुंडस्तीक्ष्णंतथाकांतंभेदास्तेषांत्रयोदश:

अर्थ–लोहा तीन प्रकारका है यथा मुंड, तीक्ष्ण, कांत इन तीनोंके १३ भेद हैं ।

यथा.

मृदकुंडंचकांडारंत्रिविधमुंडमुच्यते

अर्थ–मुंड लोहेके तीन भेद हैं यथा मृदु, कुंड, कांडार ।

खरसारंचहोचालंतारवद्दंत्रिडंतथा ।
काललोहंगजाख्यंचपड्विधंतीक्ष्णमुच्यते ॥

अर्थ–तीक्ष्ण (फौलाद) लोहा ६ प्रकारका है, यथा खरसार, होत्ताल, तारवद, त्रिड, काललोह, और गजाख्य ।

कांतलोहंचतुर्द्धोक्तंरोमकंभ्रामकंतथा ।
चुंबकंद्रावकंचैवगुणास्तस्योत्तरोत्तरा: ॥

अर्थ–कान्तलोह ४ प्रकारका है-यथा रोमक, भ्रामक, चुंबक और द्रावक इनमें उत्तरोत्तर अधिक गुण हैं ।

पंचमंतुकचित्प्रोक्तंकर्पणंचरसार्णवे ।
यद्यदाकरसंभूतंतत्तद्देशजरोगनुत् ॥

अर्थ–कहीं २ पंचम कर्पण नामका लोहा कहा है, यह जिस देशकी खानसे प्रगट हो उसी देशके रोगोंको दूर करे ।

खरसारके लक्षण.

जो नेत्रवालाके पुष्पके रंगके समान हो वह सार वा खरसार कहाता है, वह स्थूल और लघुके भेदसे दो प्रकारका है, एक औड्र यानी उडियादेशका, दूसरा कलिंगज । जो थूहरके पत्तेके समानहो और जिसमें छेद हों, सो औड्र और जो तोताके पिंजरेके वर्ण समान तथा नरम हो वह कलिंगज कहलाता है अर्थात् कलिंगदेशमें पैदा होता है ।

गजवल्लीतिविख्यातासर्वलोहस्यमातरा: ।
स्थूललघ्वंगभेदेनतत्स्याद्वज्रादिसंभव: ॥

अर्थ–सब लोहोंकी माता गजवेलि नाम विख्यात स्थूल और लघुके भेदसे दो प्रकारकी है, यह वज्रके लोहसे प्रगट है, यह वज्रलोहा दश प्रकारका है ।

असितंकाललोहाख्यौरक्तंलोहितवज्रकौ ।
मायूरवज्रकंचान्यदन्यत्तित्तिरवज्रकम् ॥
रोहिणीवज्रकंचान्यदन्यद्वाशुकवज्रकम् ।
एवंदशविधंवज्रंगुणवानुत्तरोत्तरम् ॥

तत्रोत्पत्तिमाह पुरालोमिलदैत्यस्यनिहतस्यसुरैर्युधि ।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानिविविधानिच ॥

पत्रंनदृश्यते लोहेतीक्ष्णं लोहंतदुत्तमम् ।
कांतादिखलु भेदानि ज्ञातव्यानि विशेषत:

अर्थ–असित, काल, लोह, रक्त, लोहित, वज्रक, मयूरवज्र, तित्तिरवज्रक, रोहिणीवज्र, शुकवज्र, ये गोरख संहिताके मतसे दश प्रकारका वज्र संज्ञक लोहा है इनमें क्रमसे एक से दूसरा अधिक गुणवाला है।

पांड्य लोहके लक्षण.

जो घिसनेसे गोल होजाय और जिसमें सुवर्ण कीसी रेखा प्रतीत हों उसे पांड्यलोहा कहते हैं वह सफेद और स्याहके भेदसे दो प्रकारका है।

कान्त लोहके भेद.

एकास्यंद्विमुखास्यंचवेदास्यंशंखचक्रिकं।
सर्वतोमुखमित्येवमुत्तमाधमकान्तकम् ॥
भेदानांलक्षणंयच्चनब्रूमस्तानिगौरवात्।

अर्थ–पहले जो चुंबक और भ्रामक कांतलोहके भेद कहे हैं उसीके एकमुख, द्विमुख, चतुर्मुख, शंखचाक्रिक और सर्वतोमुख ये छःभेद है और ये उत्तम मध्यम और कनिष्टसे अनेक भेद हैं, परंतु हमने ग्रंथविस्तारके भयसे मुख्य २ लिखे हैं सब नहीं लिखे।

मुंडंतुवर्त्तुलंभूमौपर्वतेषुचदृश्यते।
गजवल्यादितीक्ष्णंस्यात्कांतंचुंबकसंभवं ॥
मुंडात्कटाहपत्रादिजायतेतीक्ष्णलोहतः।
खड्गादिशस्त्रभेदास्युकांतलोहंतुदुर्लभम् ॥

अर्थ–मुंडलोहा पृथ्वी वा पर्वतोंमें वर्त्तुलरूपसे मिलता है और तीक्ष्णलोहा गजवेलि आदिसे प्रगट होता है, कांतलोह चुंबक पत्थरसे। मुंडलोहसे कड़ाई-तवा आदि वस्तु बनते हैं, तीक्ष्णलोहके तलवार आदि शस्त्र बनाते हैं, और कांतलोह दुर्लभ है।

किट्टाद्दशगुणंमुंडंमुंडात्सारंचतुर्गुणं।
सारादौड्रंद्विगुणितंकालिंगंचततोष्टधा ॥
तस्माद्भद्रंदशगुणंभद्राद्वज्रंसहस्रधा।
वज्रात्पष्टिगुणंपांड्यंकांतिजंशतधाततः ॥
सर्वलोहोत्तमंयस्मात्तस्मात्कोटिगुणंमतं।
यल्लोहेयद्गुणंप्रोक्तंतत्किट्टमपितद्गुणं ॥

अर्थ–कीटसे दशगुण मुंड, मुंडसे दशगुण सार, सारसै द्विगुणाविशेष उडिया देशका लोह, इससे आठ गुणा कलिंगदेशीय लोह जिस्सै सौगुण विशेष भद्र संज्ञकलोह, भद्रसे हजारगुण विशेष वज्र लोह, वज्रसे साठगुण विशेष पांड्यलोह, और पांड्यसे सौगुण विशेष कांतिलोहमें गुण कहते हैं, जितने गुण जिस लोहमें है उतनेही गुण उसकी कीटमेंजानने।

कांतेलक्षगुणंप्रोचुःरसकर्मविशारदाः।
स्फटिकोत्थंकोटिगुणंविद्युत्संभूतदुर्लभम् ॥

अर्थ–कांतलोहमें लक्ष, और स्फटिकके लोहमें करोड गुणहैं, तथा विजलीसे पैदा लोह पृथ्वी पर दुर्लभ है, अब प्रथम कहे लोहोंके गुण भाषामें पृथक् पृथक लिखते हैं।

मृदु लक्षण.

जो शीघ्र पतला होजाय और घनकी चोटसे न फूटे, चिकना और नरमहो तो मृदुलोह कहलाता है ये उत्तम है।

कुंड लक्षण.

घनकी चोटसे कठिनतासे टूटे सो कुंडलोह मध्यम है।

कांडार लक्षण.

जो घनकी चोटसे शीघ्र टूटकर अंदरसे काला निकले उस मुंडको कांडारलोहका भेद कहते हैं।

तीक्ष्णके छः भेदोंके पृथक् २ लक्षण तिनमें प्रथम खरके लक्षण.

कठिन और तोडनेमें अंदर टेढीरेखा पारेकीसी मालूम हों और बोझा रखनेसे न नवे उसे

खरलोह कहते हैं।

सार लक्षण.

जो पृथ्वीसे प्रगट पीला और कुटिल रेखा संयुक्त तोडनेमें अति कठिन हो उसे सारलोह कहते हैं।

होत्ताल लक्षण.

जो काला और पीला कुटिल रेखा संयुक्त तोडनमें अति कठिन हो उसे होत्ताललोह कहते हैं।

तार लक्षण.

जो वज्रके समान प्रकाशित, सूक्ष्म रेखा संयुक्त काला और भारी हो उसको तारलोह कहते हैं।

काल लक्षण.

जो काला और नीला, चिकना और भारी घनकी चोटसे न टूट उसे काललोह कहते हैं।

कांतलोहकीपरीक्षा

पात्रेयस्मिन्प्रसरतिजलेतैलबिंदुर्नलिप्तो। हिंगुर्गंधंविसृजतिनिजंतिक्ततांनिंबकल्कः ॥ पाच्यंदुग्धंभवतिशिखराकारतानैतिभूमौ। कांतंलोहंतदिदमुदितंलक्षणोक्तंतथान्यत् ॥

अर्थ—कांतिलोहके पात्रमें पानी भरकर तेलकी बूंद डाले तो फैले नहीं, और हींग रखनेसे हींगकी वास न आवे, नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय, दूध औटानेसें उफने नहीं किंतु पर्वतकी समान ऊंचा होजाय, उसे कांतलोह कहते हैं। अव कांतलेहके भ्रामकादि भेदोंको अलग २ लिखते हैं तहां प्रथम।

भ्रामकके लक्षण.

भ्रामयेल्लोहजातिंतुतत्कान्तंभ्रामकंमतम्। चुंबयेच्चुम्बकंकांतंकर्पयेत्कर्पकंतथा ॥ साक्षाद्द्रावयेलोहंतत्कांतंद्रावकंभवेत्। तद्रोमकांतंस्फुटिताद्यतोरोमोद्गमोभवेत् ॥

अर्थ—जो लोहकी जाति मात्रको भ्रमावे उस कांतको भ्रामक कहते हैं, और जो अन्य लोहको चुम्बन कर लेवे-उसे चुंवक कहते हैं, और जो आकर्पण करे-उसे कर्पक, तथा नरम करदे-उसे द्रावक, और जो तोडनेसे रुएँसे मालूम दे उसे रोमक नाम कांतलोह जानना।

पीतंरक्तंतथाकृष्णंत्रिवर्णंस्यात्पृथक्पृथक्। क्रमेणदेवतास्तत्रब्रह्माविष्णुमहेश्वराः ॥

अर्थ—कांतलोहका पीला, काला और लाल रंग हैं, उनके क्रमसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव देवता जानने, इसमें पीला स्पर्शवेधी और काला रसायन संयोगमें लेने लायक, तथा लाल वर्णवाले कांति लोहको पारेके बंधनमें लेना चाहिये, और भ्रामक अधम है चुम्बक मध्य, और कर्पक उत्तम, तथा द्रावक उत्तमोत्तम है।

कांताभावेतीक्ष्णलोहंचग्राह्यंतल्लोहंवैसंमृदुत्वं विधत्ते। मुंडंत्याज्यंसर्वथानैवग्राह्यंयस्मान्मुंडे भूरिदोषावदंति ॥

अर्थ—कांतलोहके अभावमें तीक्ष्ण लोह लेना चाहिये, वह उत्तम और नरम होता है और मुंडलोहको कदाचित् ग्रहण न करे, क्योंकि इसमें वहुत दोप रहते हैं।

अशुद्धन्तुमृतंलोहमायुर्हारिरुजाकरम्। कुष्ठांगमर्दहृत्पीडांदद्यात्तस्मात्सुशोधयेत् ॥

अर्थ—विना शुद्धीके मरालोहा आयुष्यको घटावे, तथा रोग, कोढ, अंगोंका टूटना, हृदयपीडाको करे इस वास्ते लोहको शुद्ध करे।

लोह शोधनम्.

गुरुताद्दृढताक्लेदीकश्मलीदाहकारक।

अस्मदोपःसुदुर्गंधोसप्तदोपायशस्यच ॥

अर्थ–भारीपना, दृढता, क्लेद, कश्मल, दाह कर, गिरिदोप और दुर्गंध ये सात दोप लोहमें स्थित हैं ।

तथा दूसरा प्रकार.

गरलंक्रमवांतिवीर्यहाइतिदोपाभवदंतिशोधकाः । अथशोधनभावकान्पुटान्विधिनैकेनवदंतिशूरयः ॥ शशरक्तेनसंलिप्तंचिंचार्कपयसायसं । दलंहुतानेध्मातंसिक्तंत्रैफलवारिणा ॥ एवंत्रिशःकृतेलोहंशुद्धिमाप्नोत्यसंशयम् ।

अर्थ–लोहमें विप, क्रम, वमन और वीर्यनाश दोप रहते हैं–इसलिये लोहशोधन कहताहूं, लोहेपर शशेके रुधिरका लेपकर अग्निमें तपाय त्रिफलाके काढेमें बुझावे, इसप्रकारे तीन पुट देकर इमली और आकके दूधका अलग २ लेपकर तपा २ कर तीन २ वार त्रिफलाके काढेमें बुझावे तो कान्तादि लोह शुद्ध होवें ।

तीसरा प्रकार.

सर्वलोहानितप्तानिकदलीमूलवारिणा ।
सप्तधाभिर्निषिक्तानिशुद्धिमायांत्यथोत्तमम्

अर्थ–सब लोहोंको तपा २ कर केलाकी जडके रसमें सातवार बुझावे तो शुद्ध होवें । यह सुगमरीति है ।

शुद्धिमायातितीक्ष्णंचमुंडंनिर्गुंडिसेचनात् ।
इतराणिचलोहानिसर्वाण्युल्लूकविष्टया ॥

अर्थ–सम्हालूके रसमें तीक्ष्ण और मुंडलोह बुझानेसे शुद्ध होते हैं, और बाकी, उल्लूकी बीठके रसमें लोह शुद्ध होते हैं ।

समुद्रलवणोपेतंतप्तंनिर्वापितंखलु ।
त्रिफलाक्वथितेनूनंगिरिदोपमयस्त्यजेत् ॥

अर्थ–लोहको तपाय २ समुद्रनोन संयुक्त त्रिफलाके काढेमें बुझानेसे लोहमें जो पर्वतदोप रहता है वह दूर हो ।

शुद्ध लोहकी परीक्षा.

नविस्फुलिंगानचबुद्बुदायदायदानचैपांपटलंनशब्दः । मूपागतंरत्नसमंस्थिरंचतदाविशुद्धंप्रवदन्तिलोहम् ॥

अर्थ–जिसमें चिन्गारी न निकलें, पानीमें बुझानेसे बबूला न निकलें, तथा पर्त्त न हो मूपमें रखनेसैं रत्नके समान स्थित रहे, उसे शुद्ध लोह कहते हैं ।

सम्यगौपधकल्पानांलोहकल्पप्रशस्यते ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनलोहमादौविमारयेत् ॥

अर्थ–सब औपाधियोंके कल्पमें लोहकल्प श्रेष्ट है, इस लिये प्रथम लोहका मारण करे।

नातःपचेत्पंचपलादर्वागुर्ध्वंत्रयोदशात् ।
आदौमंत्रस्ततःकर्मकर्त्तव्यंमंत्रमुच्यते ॥

अर्थ–लोहेको पाँच पलसें कम और तेरह पलसे जियादा न फूंके, प्रथम मंत्रको पढ पीछे मारण आदि कर्म करे मंत्र यह है ओ३म् अमृतोद्भवाय स्वाहा ।

नरसेनविनालोहंनलोहंचाभ्रकंविना ।
एकत्वेनशरीरस्यबंधोभवतिदेहिनाम् ॥
पारदेनविनालोहंयःकरोतिपुमानिह ।
उदरेतस्यकीटानिजायंतेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–पारे अथवा अभ्रक विना लोह और शरीरकी एकता नहीं हो, और देहमें लोहा ठहरे नहीं, इस लिये लोहमें पारद वा अभ्रकका संस्कार करे । जो वैद्य पारेके विना लोहकी भस्म करते हैं, वह भस्म रोगीके पेटमें कृमी पैदा करती है, इसमें संशय नहीं है।

फौलादकी भस्म.

शुद्धंलोहभवंचूर्णपातालगरुडीरसैः ।
मर्दयित्वापुटेद्वन्हौदद्यादेवंपुटत्रयम् ॥
पुटत्रयंकुमार्याश्चकुठारछिन्नकारसैः ।
पुटपट्कंततोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥

अर्थ–फौलादके चूर्णको पाताल गरुडी (छिल हिंटा) के रसमें खरल कर, सराव संपुटमें रख कपरमिट्टी करे, और आरने कंडोंके तीन पुट दे, इसी प्रकार ग्वार पट्ठेके रसमें घोटकर ३ पुट दे और हड संकरीके रसमें घोटकर ६ वार गजपुटमें फूंके तो तीक्ष्ण फौलाद लोहकी भस्म होवे।

दूसरी विधि.

द्वादशांशेनदरदंतीक्ष्णचूर्णस्यमेलयेत् ।
कन्यानीरेणसंमर्द्ययामयुग्मंतुतत्पुनः ॥
शरावसंपुटेकृत्वापुटेद्गजपुटेनवैः ।
सप्तधैवंकृतंलोहंरजोवारितरंभवेत् ॥

अर्थ–फौलादके चूर्णका बारहवां हिस्सा हिंगुल मिलाकर ग्वार पट्ठेके रसमें दो प्रहर खरल करे, पश्चात् सराव संपुटमें रख कपर मिट्टीकर गजपुटमें फूंक दे ऐसे सात पुट देनेसे लोहकी भस्म पानीपर तैरने लगे ।

तीसरी विधि.

शुद्धंसूतंद्विभागंधंखल्वेकृत्वाथकज्जलीं ।
द्वयोःसमंलोहचूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
यामद्वयात्समुधृत्यतद्गोलंताम्रपात्रके ।
आच्छाद्येरंडपत्रैश्चयामार्द्धेत्युष्णताभवेत् ॥
धान्यराशौन्यसेत्पश्चात्रिदिनान्तेसमुद्धरेत् ।
संपेष्यगालयेद्वस्त्रेसत्यंवारितरंभवेत् ॥
कांततीक्ष्णंतथामुंडंनिरुत्थंजायतेध्रुवं ।

अर्थ–पारा १ भाग, और गंधक २ भाग, दोनोंकी खरलमें कजली करे, फिर दोनोंकी बराबर लोह चूर्ण ले ग्वार पट्ठेके रसमें दो प्रहर घोट गोला बनावे और तांबेके पात्रमें अंडके पत्तोंसे ढक दो प्रहर धूपमें रखे, पश्चात् धानकी राशिमें तीन दिन गाढे, चौथे दिन निकाल पीसकर एक वस्त्रमें छान ले तो यह सार पानीपर तैरने लगे इसी रीतिसे कान्त, तीक्ष्ण, और मुंड तीनों लोहोंकी निरुत्थ भस्म होती है, इसे सुवर्ण पर्पटीमें डालते हैं, और योगराज योगमें डालते हैं नवायसचूर्णमें डालते हैं, तब वह औषधि गुण करती हैं, और खांसी दूर करनेको लोह रसायनके साथ देते है ।

चतुर्थ विधि.

लोहचूर्णपलंखल्वेसोरकस्यपलंतथा ।
अश्वगंधापलंचापिसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
कुमार्याद्धिदिनंपश्चाद्गोलकंऋभुपत्रकैः ।
संवेष्ट्यचमृदालिप्त्वापुटेद्गजपुटेनच ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसिंदूराभमयोरजः ।
मृतंवारितरंग्राह्यंसर्वकार्यकरंपरम् ॥

अर्थ–लोह चूर्ण, शोरा और असगंध प्रत्येक चार २ तोला मिलाकर १ दिन ग्वार पट्ठेके रसमें खरल करे और गोला बनाय अंडके पत्तोंमें रख ७ कपर मिट्टीकर गजपुटमें फूंकदे, फिर स्वांग शीतल होनेपर निकाले इसका रंग सिंदूरके समान हो और पानीमें तैरे यह सब कार्योंमें उत्तम है ।

लोहकी सर्वोत्कृष्ट भस्म.

आदौलोहविचूर्णितंतदनुगोतोयेस्यभाव्यं दिने । रात्रौचैवपुटाश्चविंशतिमिताकूर्माख्य यंत्रेशुभे ॥ एवंवैत्रिफलाजलस्यकथिताभा वाश्चपट्टीपुटाः । कन्यायारसभावनाश्चकथि ताचाष्टौचवैद्यैःपुटाः ॥ वज्राकौंहलिनींगु डीद्विरजनीगुंजातुरंगीघना । निर्गुंडीगरुडी

कुठेरकनकंवन्हिश्चमत्स्यालताः ॥ हेमीहंस पदीतथामृतलताभृंगेन्द्रवृक्षेदिने। रात्रौतद्रस कौपृथक्पृथगहौसप्तवभावाःपुटाः ॥ राजी तक्रयुतंसुखल्वकतलेपिष्टादिनेकंदृढं । भावा श्चैवपुटाश्चसप्तकथितासर्वैश्चवैद्याधिपैः ॥ प श्चात्पाःकथिताभवादिनदिनेनित्यंपुनःसूर भिः। रात्रौसप्तपुटाश्चतन्निगदितायंत्रेचकूर्मा भिधैः ॥ पश्चाद्भावपुटाश्चपंचसततंपंचामृता नांपुन स्तश्चूर्णंचदशांशकं सुदरदमुत्क्वाथ्य नारीपये ॥ गोदुग्धंयदिवात्रयोपिसततंपि ष्टाचभावाःपुटेत् । पश्चादर्द्धसुपारदेनशुचि नागंधेनकन्यारसैः ॥ तच्चूर्णंपरिमर्द्दयेद्दृढतं रसंपाचयेत्संपुटे । पश्चात्केवलकन्यकाशुचि रहैर्भस्मत्रिशःपाचयेत् ॥ पश्चात्कज्जलिसन्नि भंजलतरंशुद्धंचलोहंभवे देवंमोक्तवलाजलै परिद्दतंतल्लोहमुक्तंशुभम् ॥

अर्थ—शुद्ध लोहके चूर्णको दिनमें गोमूत्रमें खरलकर रात्रिको गजपुटमें फूंकदे, इस प्रकार कच्छप यंत्रमें २० पुट देवे, इसी प्रकार त्रिफलाके रसकी भावना दे २ कर ६० वार गजपुटमें फूंके, पीछे ग्वारपट्ठेके ८ गजपुट दे तथा थूहर, आक, कलयारी, गोंदी, हलदी, दारुहल्दी चिरमिठी, असगंध, नागरमोथा, निर्गुंडी, पातालगरुडी, वनतुलसी, धतूरा, चित्रक, कुटकी, कांगनी, मछेछी, सोनजुही, हंसपदी, गिलोय, भांगरा और कूडा प्रत्येकके क्वाथ वा रसमें दिनको खरल करे, रात्रिको गजपुटमें फूंके, इस प्रकार सात २ दिन करे इसी तरह राई और छाछकी सात २ भावना देवे, पीछे पंचामृतकी भावना देकर पांचवार गजपुटमें फूंके पीछे इस लोहका दसवां भाग शिंगरफ डाल स्त्रीके दूधमें खरलकरे, पश्चात् गोदुग्धकी तीन भावना देकर तीन वार गजपुटमें फूंके, पीछे लोहका अर्द्धभाग पारा और इतनीहीं गंधक तीनोंको मिलाकर ग्वारपट्ठेके रसमें खूब घोटे, फिर सरावसंपुटमें रख गजपुटमें फूंक दे, फिर निकाल केवलकुमारी (ग्वारपट्ठे) के रसकी ३ भावना देकर गजपुटमें फूंके तो लोहेकीभस्म कज्जलके समान पानीमें तैरने योग्य शुद्ध होवे, इसमें वलाके रसका पुट और देवे तो उत्तम सर्वोत्कृष्ट भस्म होवे।

छठी विधि.

तीक्ष्णस्यचूर्णंससितंसगंधंरसेनसंमर्द्यभृंगकुमार्याः। पाकीकृतंकांस्यपुटांतरस्थंसूर्य्यात पेमृत्युमुपैतियुक्तम् ॥

अर्थ—पोलाद लोहचूर्ण, पारा और गंधक तीनोंको घीग्वारके रसमें घोट कासेके पात्रमें सूर्यकी धूपमें रखदे तो लोहकी भस्म होवे।

पुटके गुण.

लोहानामपुनर्भावोयथोक्तगुणकारिता। सलिलेतरणं वापिपुटनादेवजायते ॥

अर्थ—लोहोंका फिर न जीना, यथार्थ गुणका करना, तथा पानीमें तैरना ये सब पुट देनेसे होते हैं।

पुटनात्स्याल्लघुत्वंचशीघ्रव्याप्तिश्चदीपनं। जारितादपिसूतेन्द्राल्लोहानामधिकागुणाः ॥

अर्थ—हलकापन तथा शीघ्र देहमें फैलना, और जठराग्निको प्रबल करना, ये सब गुण पुट देनेसे होते हैं, लोहभस्ममें पारदभस्मसैं विशेषगुण हैं, अब कई एक धातुओंमें जो २ पुट देने चाहियें वह लिखते हैं।

स्वर्णरौप्यवधेज्ञेयंपुटंकुक्कुटकाभिधम्। ताम्रेकाष्टादिजोवन्हिर्लोहेगजपुटानिच ॥

अर्थ—सोने, और चांदीमें कुक्कुटपुट,-

तथा ताम्रमें काष्ठादिक अग्नि, और लोहमें गजपुटकी अग्नि देना चाहिये ।

रसादिद्रवपाकानांप्रमाणंज्ञानजंपुटम् ।
नेष्टोन्यूनाधिकःपाकःसुपाकहितमौषधं ॥

अर्थ–पारेसे आदिले सब धातुमात्रके पाकमें जितने पुट लिखे हैं, उतनेही देने कम या-जियादा न देने चाहिये क्योंकि औषधि यथार्थ पकी हितकारी होती हैं ।

लोह भस्मके गुण.

लोहंमृतंकज्जलसंनिभंतुभुंक्तेसदायोरसराज युक्तं । नतस्यदेहेभवंतिरोगामृतोपिकामः पुनरेतिधामः ॥

अर्थ–लोह भस्म-रंगतमे काजलके समान पारदयुक्त सेवन करनेवालेकी देहमें रोग कभी उत्पन्न नहीं हो, और गया कामदेव फिर पैदा हो॥

आयुःप्रदातावलवीर्यकर्त्तारोगस्यहर्त्तामदन स्यकर्त्ता । अयःसमानंनहिंकिंचिदन्यद्रसा नंश्रेष्ठतमंवदंति ॥

अर्थ–आयुष्य, बल और वीर्यको बढावे, रोगोंका नाश करे, काम पैदा करे, ऐसी लोह भस्मके समान दूसरी श्रेष्ठ रसायन नहीं है, यह वैद्य कहते हैं ।

लोह भस्मके अनुपान.

शूलेहिंगुघृतान्वितोमधुयुतोकृष्णापुराणज्वरे वातेसाज्यरसोनकःश्वसनकेक्षौद्रान्वितंत्र्यूप णंशीतेव्यालतादलंसमरिचंमेहेवरासोपला दोपाणांत्रतयेनुपानमुदितंसक्षौद्रमार्द्रोदकम्। घृतेनवातकेदेयंमधुनापित्तकेज्वरे ॥
श्लेष्मपित्तेचार्द्रकेणनिर्गुंड्याशीतवातके ।
शुंठीवातेसितापित्तेकफेकृष्णात्रिजातके ॥
संधिरोगेवरारोहेप्रोक्तंलोहानुपानकम् ।

अर्थ–शूलमें हींग और घृतके साथ, जीर्णज्वरमें सहत और पीपलके साथ, वातमें लहसन और घृतकेसाथ, श्वासमें सोंठ, मिरच, पीपल और सहतके साथ, शीतमें मिरच और पानके साथ, प्रमेहमें त्रिफला और खांडके साथ, त्रिदोषमें सहत और अदरकके रसमें, वातज्वरमें घृतसे, पित्तज्वरमें सहतसे, कफ-पित्तज्वरमें अदरकके रससे, और ८० प्रकारके वातमें सम्हालूके रससे वातमें सोंठके साथ, पित्तमें मिश्रीके संग, कफमें पीपलके संग, संधिरोगमें दालचीनी, इलायची, तमालपत्र, इनके साथ लोहकी भस्म खानी चाहिये।

वल्लंवल्लार्द्धमानंचयथायोगेनयोजयेत् ।
त्रिफलाल्लोहचूर्णंचवलीपलितनाशनम् ॥
कज्जलीमधुकृष्णाभ्यांश्लेष्मरोगनिवारणम्।
खंड्यासचतुर्ज्जातंरक्तपित्तनिवारणं ॥
पुनर्नवात्वगाक्षीरैर्वलवृद्धिकरंपरं ।
पुनर्नवारसेनैवपांडुरोगनिसूदनम् ॥
हरिद्रालोहचूर्णंचपिप्पल्यामधुनासह ॥
विंशतिंचप्रमेहाणांनाशयेन्नात्रसंशयः ।

अर्थ–लोह भस्म ३ या १॥ रत्ती रोगोक्त अनुपानके साथ दे, वलीपलित नाशके अर्थ त्रिफलाके साथ देवे, कफरोगमें पारे गंधककी कजली, पीपल और सहतके साथ, रक्तपित्तमें मिश्री और चतुर्जातके साथ, बलवृद्धिके लिये पुनर्नवा और गोदुग्धके साथ, पांडुरोगमें पुनर्नवाके रसमें, और २० प्रकारके प्रमेहोंमें हलदी, पीपल और सहतके साथ लोह भस्म देनी चाहिये ।

शिलाजतुसमायुक्तंमूत्रकृच्छनिवारणं ।
वासकःपिप्पलीद्राक्षालोहंचमधुनासह ॥
गुटिकांभक्षयेत्प्रातःपंचकासनिवारणं ।
ताम्बूलेनसमायुक्तंभक्षयेत्लोहमुत्तमम् ॥

अग्निदीप्तकरंवृष्यंदेहकांतिविवर्द्धनम् ।
त्रिफलामधुसंयुक्तंसर्वरोगेपुयोजयेत् ॥
पथ्यासितालोहभस्मयथोक्तगुणदंभवेत् ।
किमत्रबहुनोक्तेनदेहलोहकरंपरं ॥
येगुणामृतरूप्यस्यतेगुणाःकान्तभस्मनः ।
कांताभावेप्रदातव्यंरूप्यमित्याहभैरवः ॥

अर्थ—मूत्रकृच्छ्रमें शिलाजीतकेसंग, पांच प्रकारकी खासीमें अडूसा, पीपल, दाख और लोहभस्मकी गोली बनाकर सहतकेसंग खावे, मंदाग्निमें पानके साथ, देहकी कांतिको बढावे और वृष्य है, त्रिफला और सहतकेसाथ सब रोगोंको नाश करे, छोटी हरड और मिश्रीकेसाथ पूर्वोक्त गुण करे, बहुत कहना कुछ जुरूर नहीं यह देहको लोहेकेसमान करती है, और जो अमृत गुण करता है वही कांत-लोह करता है, जब कान्तिलोहकी भस्म न मिले तब रूपेकीभस्म देनी चाहिये ।

लोहसेवनमें अपथ्य.

कुष्मांडंतिलतैलंचमापान्नंराजिकातथा ।
मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥

अर्थ—पेठा, तिल, तेल, उड़द, राई, मदिरा, खट्टे पदार्थ, इन वस्तुओंको लोहका सेवन करने वाला त्याग दे ।

मत्स्यजीवकवार्ताकंमापंचकारवेल्लकं ।
व्यायामंतीक्ष्णमद्यंचतैलाम्लंदूरतस्त्यजेत् ॥

अर्थ—मछली, जीवकका साग, बैंगन, उड़द, करेले, डंडकसरत, लाल मिरच आदि तीखे पदार्थ, मद्य, तेल, खटाई, इन पदार्थोंको लोहभस्म सेवन करनेवाला त्याग देवे ।

अमृतीकरण.

तोयाष्टभागशेषेणत्रिफलापलपंचकं ।
घृतंकाथस्यतुल्यंस्याद्घृततुल्यंमृतायसं ॥
पाचयेत्ताम्रपात्रेचलोहदार्व्याविचालयेत् ॥
योगवाहंमयाख्यातंमृतंलोहंमहारसम् ।
इत्थंकांतस्यतीक्ष्णस्यमुंडस्यापिद्वयंविधि ॥

अर्थ—५पल त्रिफलेमें अठगुना जल डालकर काढा बनावे, जब आठवां हिस्सा जल रहे तब छानकर इसकी बराबर गोघ्रत और इतनीही लोहभस्म दोनोंको ताम्रपात्रमें पकावे, और लोहकी कलछेसे चलाता जाय, जब जल और घृत जलजाय केवल लोहकी भस्म-मात्र रहजाय, तब उतारे यह मैंने योगोंमें देने योग्य लोहभस्मकी विधि कहीं है, इसी रीतिसे कांति तीक्ष्ण और मुंडकी विधि जाननी चाहिये ।

भक्षणका मंत्र.

ओ३म् अमृतेन्द्रं भक्षयायिनमःस्वाहा

लोहपाक.

लोहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुमध्यखरस्तथा ।
पंकशुष्करसौपूर्वौवालुकासदृशःखरः ॥

अर्थ—मृदु मध्य और खरके भेदसे लोहपाक तीन प्रकारका है, तहां कीचके समान मृदु और जिसका रस सूख गया वह मध्यम और वालूरेतसा खर है ।

तावल्लोहंपुटेद्वैद्योयावच्चूर्णिकृतोजले ।
निस्तरंगोलघुस्तोयेसमुत्तरतिहंसवत् ॥

अर्थ—लोहा जबतक जलमें हंसके समान न तैरे तबतक पुट देता रहे ।

तावच्चमर्दयेल्लोहंयावत्कज्जलसंन्निभं ।
करोतिनिहितंनेत्रेनैवपीडामनागपि ॥

अर्थ—लोहेको जबतक पीसेकि तबतक काजलके समान न हो और नेत्रोंमें लगानेसे पीड़ा न करे ।

यथायथाप्रदीयंतेपुटास्तुबहुचायसे ।

तथातथाविवर्द्धंतेगुणाशतसहस्रशः ॥

अर्थ–लोहमें जितने जियादा पुट लगे, उतनेही विशेष गुण बढते जाते हैं ।

लोह भस्मकी परीक्षा.

सर्वमेवमृतंलोहंध्मातव्यंमित्रपंचकैः ।
यदेवंस्यान्निरुत्थंतत्सेव्यंवारितरंहितत् ॥

अर्थ–अष्टलोहोंकी भस्ममें मित्रपंचक मिलाकर अग्निमें धमानेसे जो नहीं जीवे, तथा पानीमें जो तैरे उसका सेवन करना चाहिये ।

मध्वाज्येमृतलोहंचरूप्यंसंपुटगेक्षिपेत् ।
रुध्वाध्मातंचसंग्राह्यंरूप्यंवैपूर्वमानकम् ॥
तदालोहंमृतिंविद्यादन्यथामारयेत्पुनः ।

अर्थ–सहत, घृत, लोहभस्म और चांदीको एकत्र कर संपुटमें धमानेसे चांदी ज्यों की त्यों रहे तो जानना लोहकी भस्म होगई, और जो चांदी वढजाय तो फिर लोहकी भस्म करे।

लोहका द्रावण.

देवदाल्यारसैर्भाव्यंगंधकंदिनसप्तकम् ।
तेनभवापमात्रेणलोहास्तिष्ठंतिसूतवत् ॥

अर्थ–देवदालीके फलके रसमें ७ दिन गंधकको भिगोकर चूर्ण करे, उसको तपाये हुए लोहमें डाले तो लोहा पारेके समान पतला होकर रह जायगा ।

तीक्ष्णमारणयोगेनकांतमारणमिष्यते ।
शुद्धिश्चतादृशीज्ञेयासेवनंतुतथैवहि ॥

अर्थ–जिस प्रकार तीक्ष्ण (फौलाद) का मारण कहा है उसी प्रकार कांतलोहका मारण जानो, और शुद्धि तथा सेवनकी विधिभी उसी प्रकार जाननी ।

अशुद्ध लोहके अपगुण.

अल्पौषधस्तोकपुटैर्हीनगंधकपारदैः ।
अपकलोहजंचूर्णमायुःक्षयकरंपरम् ॥

अर्थ–जिस लोहमें लिखे अंदाजसे थोडी औषधि पडी हों और थोडे पुट दिये गये हों और जिसमें पारा गंधक थोडे पडे हों ऐसी लोहकी कचीभस्म आयुष्यका नाश करती है ।

पंढत्वकुष्ठामयमृत्युदंभवेत्हृद्रोगशूलौकुरुते स्मरींच । नानारुजानांचतथाप्रकोपंकरोति हृल्लासमशुद्धलोहम् ॥

अर्थ–नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृद्रोग, शूल, पथरी, और नाना प्रकारके रोग, खालीरद्द ये और कच्चालोह करता है ।

लोह विकार शांति.

मुनिरसपिष्टविडंगंमुनिरसलीढंचिरस्थितंघर्मे द्रावयतिलोहदोपान्वन्हिर्नवनीतपिंडमिव

अर्थ–यदि लोहा खानेसे देहमें विकार मालूम हों तो अगस्तवृक्षके रसमें वायविडंग पीसकर उसी रसमे मिलायके खाय, पीछे बहुत देर तक धूपमें बैठे तो लोहके दोपोंको यह दवा पतला कर निकाल दे जैसे अग्नि माखनको पिगलाय देती है ।

आरग्वधस्यमज्जायारेचनंकीटशांतये ।
भवेदप्यतिसारश्चपीत्वादुग्धंतुतान्जयेत् ॥
यदिलोहविकारेणउदरेशूलसंभवः ।
तदाभ्रकंविडंगंतुविडंगरससंयुतं ॥
पिवेद्वाखंडमधुनाएलाचूर्णंदिनत्रयम् ।
सेवयेदितिशेपः ॥

अर्थ–लोह खानेसे जो पेटमें कृमि पडगई हों तो पहले अमलतासका गूदा खावे जिससे सब कृमि दस्तद्वारा निकलजावें, पश्चात् दूध पीवे और जो लोहविकारसे पेटमें दरद होता हो तो अभ्रकभस्म और वायविडंगका चूर्ण वायविडंगके रसके साथ पीवे, अथवा खांड और सहतके संग इलायचीका चूर्ण

तीन दिन खाय ।

इतिश्री रसराजसुंदरे लोहप्रकरणं समाप्तम्.

अथ मंडूर प्रकरण लिख्यते.

ध्मायमानमयोवन्हौपरित्यजतियन्मलं ।
सकिट्टसंज्ञांलभतेतद्नेकविधंमतम् ॥

अर्थ–अग्निमें लोहा तपानेसे जो मैल निकलता है उसे कीटी कहते हैं, वह अनेक प्रकारकी है । अथवा । लोहा तपानेसे जो मैल निकलता है उसको मंडूर कहते हैं ।

मंडूर वा कीटीके लक्षण.

ईषच्छविगुरुस्निग्धंमुंडकिट्टंजगुर्बुधाः ।
भिन्नांजनाभंयत्किट्टंविशेषाद्गुरुनिर्व्रणं ॥
निःकोटरंचविज्ञेयंतीक्ष्णकिट्टंमनीषिभिः ।
पिंगरूक्षंगुरुतरंतदश्मवत्कोटरम् ॥
छिन्नेचरजतच्छायंस्यात्किट्टंस्थितकांतजं ।

अर्थ–जिस कीटमें अल्प रंग, भारी और चिकनी हो उसे मुंडलोहकी कीटी जाननी । और जो काजलके समान काली हो भारी और व्रण रहित तथा छिद्र न हों उसे तीक्ष्ण (फौलाद) की जाननी । तथा पीली, रूक्ष, भारी और जिसमें वृक्षकीसी खोंतर न हो फोडनेसे चांदी कीसी झलक दे उसे कांतलोहकी कीटी जानना ।

कीटीग्रहण.

अकोटरंगुरुस्निग्धंदृढंशतसमाधिकं ।
चिरोत्थितजनस्थानेसंस्थितंकिट्टमाहरेत् ॥

अर्थ–छिद्र रहित, भारी, चिकनी, दृढसौ वर्षसेंभी अधिक दिनकी निकाली हुई ऐसी जन स्थान (पुरानी वस्ती) की कीटी लेनी उचित है।

शतोत्थमुत्तमंकिट्टंमध्यंचाशीतिवार्षिकम् ।
अधमंषष्टिवार्षीयंततोहीनंविषोपमम् ॥

अर्थ–सौ वर्षकी कीटी उत्तम होती है, अस्सी वर्षकी मध्यम, और साठ वर्षकी अधम जाननी इससे कम वर्षोंकी विषके समान जाननी।

मंडूर बनानेकी विधि.

अक्षांगारैर्धमेत्किट्टंलोहजंतद्द्रवांजलैः ।
सेचयेत्तप्ततप्तंतत्सप्तवारंपुनःपुनः ॥
चूर्णयित्वाततःकाथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः ।
आलोड्यभर्जयेद्वन्हौमंडूरंजायतेवरम् ॥

अर्थ–बहेडेकी लकडीके कोले कर उनमें पुरानी कीटको खूब धमावे, लाल होनेपर गोमूत्रमें बुझावे, ऐसें सातवार कर चूर्ण करे फिर इससे दूना त्रिफलेका काढा एक हंडियामें भरे, उसमें पिसी हुई कीटको डाल उसका मुंह अच्छी तरह बंदकर कपर मिट्टी कर आरने कंडेके गजपुटमें फूंक दे, जब स्वतःशीतल होजाय तब उसको हांडीसे निकालले तो कीटीका शुद्ध मंडूर होवे यह मंडूर उत्तम है ।

हंसमंडूरकी विधि.

मंडूरंमर्दयेत्श्लक्ष्णंगोमूत्रेष्टगुणेःपचेत् ।
त्र्यूषणंत्रिफलामुस्ताविडंगंचव्यचित्रकः ॥
दार्वीग्रन्थीदेवदारूतुल्यंतुल्यंविचूर्णयेत् ।
एतन्मंडूरतुल्यंचपाकान्तेमिश्रयेत्तत ॥
भक्षयेत्कर्षमात्रंतुजीर्णान्तेतक्रभोजनम् ।
पाण्डुशोफंहलीमंचउरूस्तंभंचकामलाम् ॥
अर्शांसिहंतिनोचित्रंहंसमंडूरकाह्वयम् ।

अर्थ–पहले मंडूरको त्रिफलाके काढेमें खूब घोटे, पीछे अठगुने गोमूत्रमें पूर्वोक्त रीतिसे फूंके, पीछे इन औषधियोंको मिलावे सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, मोथा, वायविडंग, चव्य, चित्रक, दारु हलदी, पीपलामूल, देवदारु फिर सवा तोले नित्य खाय,

पचनेपर इसके ऊपर छाछ पीवे तो पांडु, सूजन, हलीमक, पैरोंका रहजाना, कामला, बवासीर, इन रोगोंको यह हंसमंडूर नाश करे, इसमें आश्चर्य नहीं है ।

इति मंडूरप्रकरणं समाप्तम्.

मिश्रधातुकांसा पित्तल और भस्म

अंष्टभागेनताम्रेणद्विभागंकुटिलंयुतम् ।
एकत्रद्रावितंतत्स्यात्कांस्यंतद्भोजनेशुभं ॥

अर्थ–८ भाग तांबा और २ भाग रांग दोनोंको मिला तायकर ढालनेसे कांसा बनता है, इसके पात्र भोजन करनेके लिये उत्तम होते हैं ।

ताम्रंत्रपुजमाख्यातंकांस्यंघोषंचकंसकं ।
उपधातुर्भवेत्कांस्यंद्वयोस्तरणिरंगयोः ॥

अर्थ–तांबे और रांगसे कांसा बनता है, इसे घोष और कंसकभी कहते हैं यह तांबे और रांगकी उपधातु है ।

कांस्यके भेद.

कांस्यंचद्विविधंप्रोक्तंपुष्पतैलकभेदतः ।
पुष्पंश्वेततमंतत्रतैलकंतुकफमदम् ॥
एतयोप्रथमंश्रेष्ठंसुसेव्यंरोगशांतये ।

अर्थ–फूल और तैलकके भेदसे कांसा दो प्रकारका है, प्रथम श्रेष्ठ और दूसरा कफ प्रगट करताहै, फूल कांसा सफेद होता है, इसे रोग शांतके लिये सेवन करे ।

उत्तम कांसेके लक्षण.

श्वेतंदीप्तंमृदुज्योतिःशब्दाढयंस्निग्धनिर्मलं ।
घनांगसहसूत्रांगंकांस्यमुत्तममीरितम् ॥

अर्थ–श्वेत, प्रकाशमान, नरम, उज्ज्वल, शब्दकरनेवाला, चिकना, निर्मल, घनकी चोट सहने वाला, और लकीरदार कांसा उत्तम होता है ।

पीतल.

रीतिर्हिचोपधातुःस्यात्ताम्रस्यजसदस्यच ।
पित्तलस्यगुणाज्ञेयाःस्वयोनिसदृशोबुधैः ॥

अर्थ–पीतल, ताम्र और जस्तकी उपधातु जाननी इसमें ताम्र और जस्तेकेसे गुण हैं ।

पीतलके भेद.

रीतिकाद्विविधाप्रोक्तातत्राद्याराजरीतिका ।
काकतुंडीद्वितीयासातयोराद्यागुणाधिका ॥

अर्थ–पीतल, राजरीति और काकतुंडीके भेदसे दो प्रकारकी है, । उनमें पहिली (राजरीतिमें) विशेषगुण हैं ।

परीक्षा.

संतप्ताकांजिकेक्षिप्ताताम्रास्याद्राजरीतिका
काकतुंडीतुकृष्णास्यात्नासौसेव्याहिरीतिका

अर्थ–पीतलको तपाकर कांजीमें बुझानेसे तांबेकासा रंग निकले उसे राजरीति कहते है, और काली होजाय उसे काकतुंडी कहते हैं इसका सेवन वर्जित है ।

उत्तम पीतलके लक्षण.

गुर्वीमृद्वीचपीताभासारांगीताडनक्षमा ।
सुस्निग्धामसृणांगीचरीतिरेतादृशीशुभाः ॥

अर्थ–भारी, नरम, पीली, कठोर, घनकी चोट सहने वाली, चिकनी और समान गुलगुली पीतल मारणकर्ममें शुभ है ।

अधम.

पांडुपीताखरारूक्षाबर्बरीताडनेऽक्षमा ।
पूतिगंधातथालघ्वीरीतिर्नेष्टारसादिषु ॥

अर्थ–किंचित् पीत, खरदरी, रूखी, भ्रष्ठ, चोट लगनेसे टूटजाय, दुर्गंधिवाली और हलकी पीतल त्याज्य हैं ।

कांस्य पित्तल शुद्धि.

त्रिक्षारंपंचलवणंसप्तधाम्लेनभावयेत् ।

रीतिकाशुद्धपत्राणितेनकल्केनलेपयेत् ॥
रुध्वागजपुटेपक्वाशुद्धियायातिनान्यथा ॥

अर्थ—सज्जीखार, जवाखार, सुहागा और पांचो नोन इनको खटाईकी सात २ भावना देकर पीतलके पत्रोंपर लेपकरे और गजपुटमें फूंके तो पीतल शुद्ध हो, अथवा सह्मालूके रसमें छोटी हरडका चूरण डालकर उसमें पीतलके पत्रोंको बुझावे अथवा अम्लवर्गमें औटावे वा तेल, छाछ, गोमूत्र, कांजी, कुलथी, इन प्रत्येकके काढेमें सात २ वार पीतल और कांसेके पत्रोंको गरमकर २ बुझावे तो शुद्ध होवें।

गोमूत्रेणपचेद्यामंकांस्यपत्राणिवुद्धिमान् ।
दृढाग्निनाविशुध्यंतिपकान्यम्लद्रवेपिवा ॥

अर्थ—कांसेके पत्रोंको पहरभर गोमूत्र वा अम्लवर्गमें औटावे तो शुद्ध होवें।

मारणकी प्रथम विधि.

म्रियतेनात्रसंदेहोगंधतालात्पुटेनच ।

अर्थ—कांसे वा पीतलके समान गंधक और हरताल लेकर आकके दूधमें घोट पत्रोंपर लेप करे, और सराव संपुटमें वंदकर गजपुटमें फूंकदे तो मरें लेकिन दो २ पुट देवे ।

दूसरी विधि.

अर्कक्षीरंवटक्षीरंनिर्गुंडीक्षीरकातथा ।
ताम्ररीतिध्वनिवधेत्समगंधकयोगतः ॥

अर्थ—तांवे, पीतल और कांसेके मारनेके वास्ते समान गंधक लेकर आक, वड, सम्हालूके दूधमें घोट पत्रोंपर लेपकर गजपुटमें फूंकनेसे भस्म होवे ।

तीसरी विधि.

कांस्यकंराजरीतिंचताम्रवच्छोधयेद्भिषक् ।
ताम्रवन्मारणंचापितयोर्ज्ञेयंभिषग्वरैः ॥

अर्थ—कांसे और पीतलका तांवेके समान शोधन और मारण जानना, यह श्रेष्ठवैद्य कहते हैं।

कांस्य पितलकी वेधीभस्म.

आरंतारंसमंकृत्वामृतवंगंनियोजयेत् ।
एषाराजवतीविद्यापितापुत्रंनकथ्यते ॥

अर्थ—पीतल और चांदी दोनोंको समान लेकर गलावे, पश्चात् वंगभस्म डाले तो चांदी हो, यह चांदी वनानेकी विधि पिता पुत्रसे नहीं कहता ।

पीतल भस्मके गुण.

सकलमेहमरुद्गुदजांकुरंग्रहणिकाकफपांडुभवं तथा । श्वसनकामलशूलभवारुजंहरतिभस्म तदाकरसंभवम् ॥

अर्थ—पीतलकी भस्म-संपूर्ण प्रमेह, वादी, ववासीर, संग्रहणी, कफ, पांडुरोग, श्वास, खांसी, कामला और शूलका नाशकरे ।

कांस्यभस्मगुणा.

कांस्यंकषायंतिक्तोष्णंलेखनंविसदंसरम् ।
गुरुनेत्रहिमंरूक्षंकफपित्तहरंपरम् ॥

अर्थ—कांसेकी भस्म—कसेली, कडवी, गरम, लेखन, स्वच्छ, सर, भारी, नेत्रोंको हित, रूखी, कफ और पित्तकी नाशक होती है ।

कास्य पितलके दोष.

विविधरोगचयंकुरुतेभ्रमंगुदरुजंह्यतिमेहरुजांगणं । विविधतापकमातनुतेतनावमृतमारकमाशुहिमृत्युदम् ॥

अर्थ—कच्ची पीतल-अनेक प्रकारके रोग, भ्रम, ववासीर, प्रमेह, अनेक प्रकारके ताप उत्पन्न करे, यथार्थ जिसकी भस्म न हुई हो ऐसी पीतल तत्काल प्राणनाश करती है ।

वर्त्तलक्षणोत्पत्ति.

कांस्यंरीतिस्तथाताम्रंनागवंगचपंचमं ।
एकत्रद्रावितैरेतैःपंचलोहमजायते ॥

अर्थ—कांसा, पीतल, तांबा, सीसा और बंग पांचों धातुओंको रसरूपकर एकत्र ढालनेको (पंचधातु) अर्थात् भर्त्त कहते हैं, इसीको पंचरसभी कहते हैं ।

पंचलोहका शोधन.

आदौतैलादिकेशोध्यंपश्चात्तसंचमूत्रके ।
निषिक्तंशुद्धिमायातिपंचलोहंनसंशयः ॥

अर्थ—भर्तके पत्रोंको तपाय प्रथम मूत्रवर्गमें और पीछे तेलमें बुझावे तो पंचलोहकी शुद्धि होवे

पंचरसका मारण.

अर्कक्षीरेणसंपिष्टंगंधकंताललेपितम् ।
पंचकुंभीपुटेभर्त्तम्रियतेयोगवाहकम् ॥

अर्थ—गंधक और हरताल बराबर ले दोनोंको आकके दूधमें खरलकरे, पीछे भर्तके पत्रोंपर लेप कर सराव संपुटमें रख कपरमिट्टी करे, पश्चात् पांच गजपुट देवे तो भर्तकी भस्म होवे ।

वृत्त लोहका शोधन मारण.

कांस्यकंरीतिलोहादिजातंतद्वर्त्तलोहकम् ।

अर्थ—कांसे, पीतल और लोहेके मिलानेसे वृत्तलोह बनता है, इसका मारण और शोधन भर्त्तकी तरह करे ।

मित्र पंचक.

घृतमधुगुग्गुलगुंजाटंकणमेततुपंचकंमित्रं ।
जीवयतिसप्तधातूनंगाराग्नौतुधमनेन ॥

अर्थ—घृत, सहत, गूगल, घूंघची और सुहागा इनको मित्रपंचक कहते हैं, धातुकी कच्ची या पक्कीकी परीक्षा करनी हो तो उसधातुकी भस्ममें पांचों वस्तु मिलाय घरियामें रख बंकनालकी धोंकनीसे धोंके तो कच्ची धातु जी उठती है ।

निरुत्थी करण.

गंधकंचोत्थितंभस्मतुल्यंखल्वेविमर्दयेत् ।
दिनैकंकन्यकाद्रावैरुध्वागजपुटेपचेत् ॥
इत्येवंसर्वलोहानांकर्त्तव्यंतुनिरुत्थितम् ।

अर्थ—जो मित्रपंचकसे जी उठे उसमें समान गंधक डालकर १ दिन घीगुवारके रसमें खूब घोटे पीछे संपुटमें रख कपरमिट्टीकर गजपुटमें फूंकेतो निरुत्थभस्म हो । इस रीतिसे सर्वलोह सोने, चांदी आदिकी निरुत्थभस्म करनी चाहिये ।

अपक्क धातुजारण.

हयनखगजदंतं माहिषं शृंगमूलं ।
अजनखशशकं वै मेषशृंगंप्रयुक्तं ॥
मधुघृतगुडजातं टंकणंभेदतैलं ।
मितिपटुसमकांगं सर्वलोहंमृतित्वम् ॥

अर्थ—घोडेकेनख, हाथीदांत, भैंसकेसींगकी जड, बकरी और शशाके नख, मेंढेकासींग, सहत, घृत, गुड, घूंघची, सुहागा, तेल और नोंन को समान लेकर इनमें कच्चीधातुको घोट आंच देवे तो समस्त लोहमात्र मरें ।

सबधातुओंकी भस्मका वर्ण.

स्वर्णकपोतकंठाभमारमेवंसदाभवेत् ।
शुल्वंमयूरकंठाभंतारवंगौसमोज्ज्वलौ ॥
कृष्णसर्पनिभंनागंतीक्ष्णंकज्जलसन्निभं ।
तदाशुद्धंविजानीयाद्भ्रांतिभ्रांतिविवर्जितम् ॥

अर्थ—कदाचित् कोई अशुद्ध भस्म लेआवे उसके जाननेको भस्मोंके वर्ण कहते है—सोने, तथा पीतलकी भस्म, कबूतरके कंठ वा पिंडुकियोंके कंठकेसमान होती हैं, और तांबेकी भस्मका मोरकंठके समान नीलारंग होता है, चांदी तथा बंगकी भस्म सफेद होती है, सीसेकी कालेसर्पके समान होती है, लोहभस्म काजलके समान काली होती है, इन सब धातुओंकी ऐसी भस्म होतो जानना कि

शुद्ध है, ऐसी भस्मोंसे वांति, भ्रांति नहीं होती, और रंगोंकी अशुद्ध जाननी चाहियें ।

भस्म खानेका प्रमाण.

सेवनस्यप्रमाणंतुकथयिप्यामिसांमतम् । वल्लार्द्धंकनकंहिमुमकथितंरूप्यंचशुल्वंतथा ॥ तीक्ष्णंवंगभुजंगमारनिचयोवल्लार्द्धंवल्लोन्मितः । तत्तुल्याशुभपिप्पलीनिगदिताक्षौद्रंचकर्षोन्मितं ॥ सेव्यसंपरिहृत्यग्रीष्मशरदौताम्रं सुसेव्यंनरैः ॥

अर्थ—भस्म खानेका प्रमाण यह है-सोने, चांदी और तांबेकी १॥ रत्ती, तथा लोह वंग नाग और पितल इनकी ४ रत्ती, जिस भस्मको खाय उसकी बराबर पीपल और सहत मिला कर सदैव सेवन करे, परंतु ताम्रभस्मको ग्रीष्म और शरद ऋतुमें न खाय ।

धातुसे धातु मारण.

तालेनवंगंदरदेनतीक्ष्णंनागेनहेमंशिलयाच नागं। शुल्वंतथागंधवरेणनित्यंतारंचमाक्षीकवरेणहन्यात् ॥

अर्थ—हरितालसे वंग, शिंगरफसे लोह, सीसेसे सोना, मनसिलसे सीसा, गंधकसे तांवा और सोनामक्खीसे रूपा मारना चाहिये । धातुसे मरीधातु उत्तम होती है ।

सप्तधातु द्रावण.

पीतमंडूकगर्भेतुचूर्णितंटंकणंक्षिपेत् । रुध्वाभांडेक्षिपेद्भूमौत्रिसप्ताहात्समुद्धरेत् ॥ तत्समस्तंविचूर्ण्याथद्रुतेलोहेप्रवापयेत् । तिष्ठंतिरसरूपाणिसर्वलोहानिनान्यथा ॥

अर्थ—पीले मेंडकके पेटमें सुहागेका चूर्णभर एक पात्रमें रख, मुख बंदकर कपर मिट्टीदे जमीनमें गाडदे २१ दिन बाद निकाल चूर्ण कर रख छोडे और अष्टलोहोंमें किसीएक लोहको गलाय उसमें डाले तो वह लोह पानी के समान पतले होकर रहजायँ ।

दूसरी विधि.

तीक्ष्णचूर्णंतुसप्ताहंपक्वाधात्रीफलद्रवैः । लोलितंभावयेद्धर्मेक्षीरकंदद्रवैःपुनः ॥ सप्ताहंभावितंसम्यक्सप्तावसंपुटकेततः । धमितंद्रवतांयातिचिरंतिष्ठंतिसूतवत् ॥

अर्थ—लोह चूर्णको ७ दिन आमलेके रसमें भिगोकर धूपमें रखे तदनंतर क्षीर कंदमें ७ दिन भिगोकर धूपमें रखे पीछे मूसमें रखकर अग्निमें धमावे तो लोह बहुत दिन पर्यन्त पानीसा रहे ।

सप्तधातुओंके अपगुण ।

स्वर्णंसम्यगशोधितंश्रमकरंस्वेदावहंदुःसहं । रौप्यंजाठरजाडयमांद्यजननंताम्रंवमिभ्रांतिदं ॥ नागंचत्रपुचांगदोपदमथोगुल्मादिदोपप्रदम् । तीक्ष्णंशूलकरंतुकांतमुदितंकार्श्यामयस्फोटदं ॥ अशुद्धौहितौस्याद्यदिमुंडतीक्ष्णौक्षुधापहौगौरवगुल्मदायकौ । कांतायसंक्लेदकतापकारकं रीत्यौचसंमोहनक्लेशदायके ॥

अर्थ—कमसुधा सोना-श्रम, स्वेद और दुःख कारक होता है । अशुद्ध रूपा-पेट जकडे मंदाग्नि करे । अशुद्ध तांवा वमन और भ्रांति करे । सीसा और रांगा अशुद्ध देह बिगाडें, गोला आदि रोगोंको करें । अशुद्ध फौलाद शूल पैदा करे । अशुद्ध कांत कृशताका रोग और विस्फोटक पैदा करे। मुंड तथा तीक्ष्णलोह अशुद्ध हों तो शरीरको अहित करें, क्षुधानाश, जडता और गोलाको करें अशुद्ध कांतलोह क्लेद और ताप करे । पीतल और कांसे अशुद्ध हों तो मोह और

दुःख कारक जानने चाहियें ।

इतिकथितपथेयोमारयेदष्टलोहम् ।
प्रकृतिपुरुषभेदंदेशकालौविदित्वा ॥
उपचरतिरुजार्त्तंधर्ममूर्तिर्यशोर्थी ।
सभवतिनृपगेहेदेववत्पूजनीयः ॥

अर्थ–जो पुरुष इस प्रकार देश, काल, प्रकृति और मनुष्योंके भेद जानकर अष्टलोह मारण करता है, और रोगी मनुष्यको देता है उसको धन,धर्म और यशकी प्राप्ति होती है और राजमान्य होता है ।

श्रीमान्माथुरवंशभूषणमणिःश्रीघासिरामो द्विजः । जातस्तस्यसुतास्त्रयसमभवन्श्रीराम हर्य्याख्यकाः ॥ सोमान्ताहरिचन्द्रसूनुरभव च्छ्रीकृष्णलालाभिधः । मान्यस्सर्वजनैःस्त दुद्भवस्त्वहंश्रीदत्तरामस्सुधिः ।

अर्थ–श्रीमान्माथुरवंशभूषणमें मणिकेसदृश श्रीघासीराम विप्रवर्य्य प्रगट हुए, तिनके परम धार्मिक गुणवान् श्रीचंद्र, रामचंद्र, हरिश्चंद्र, तीन पुत्र प्रगट हुए उनमें श्रीहरिश्चन्द्रजीके सर्वमान्य श्रीयुत् कन्हैयालाल हुए तिनका पुत्र में दत्तराम हूं ।

त्रिशुद्धमार्त्तंडगुणाङ्कभूसमेश्रीविक्रमस्योर्जे रमोत्सवेभृर्गौ।श्रीदत्तरामेणमयाद्यखंडःसमा पितःश्रीरसराजसुन्दरः ॥ प्रथमभागस्येति शेषः

अर्थ–श्रीमन्महाराजाधिराज विक्रमादित्यके संवत्सर १९३९ कार्त्तिकवदी ३० भृगुवारको यह रसराजसुन्दरके प्रथमखंडका पूर्वार्द्ध मुझ दत्तरामने समाप्त किया ।

समाप्त.
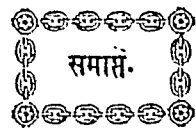
अथसप्तोपधातु प्रकर्णम्.

तत्रादौ सप्तोपधातु.

माक्षिकंतुत्थकाभ्रौचनीलांजनशिलालका ।
रसकश्चेतिविज्ञेयाएतेसप्तोपधातवः ॥
विमलायाऽष्टमंचात्रकेचिद्रसविदोविदुः ।

अर्थ–सोनामक्खी, नीलाथोथा, सुरमा, मनसिल, हरताल, खपरिया ये सात उपधातु हैं, कोई रूपामाखी आठवीं उपधातु कहते हैं । यह मत रसार्णवका है ।

अन्यच्च.

सुवर्णमाक्षिकंतद्वत्तारमाक्षिकमेवच ।
तुत्थंकांस्यंचरितिश्चसिंदूरंचशिलाजतु ॥
एतेसप्तसमाख्याताविद्वद्भिरुपधातवः ।

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, नीलाथोथा, कांस्य, पित्तल, सिंदूर, शिलाजीत, ये सात उपधातु पंडितोंने कही हैं ।

तथाचग्रन्थान्तरे.

स्वर्णजंस्वर्णमाक्षीकंतारजंतारमाक्षिकं ।
तुत्थताम्रभवंज्ञेयंकंकुष्टंवंगसंभवम् ॥
रसकोजसदाज्जातोनागाच्छिदूरसंभवः ।
लोहाज्जातंलोहकिट्टमेतासप्तोपधातवः ॥

अर्थ–सुवर्णसे सोनामक्खी प्रगटी है, रूपे (चांदी) से रूपामक्खी, तांबेसे नीलाथोथा, वंगसे कंकुष्ट, जस्तसे खपरिया, सीसेसे सिंदूर, और लोहेसे लोहकीट प्रगट हुई है। यह मत हमको मन्तव्य है ।

सुवर्णादि धातूके अभावोंमें ग्राह्य पदार्थ.

अभावेमुख्यधातूनांप्रयोज्यास्तूपधातवः ।
कुर्वन्तितद्गुणालोकेवहुयत्नेनशोधिताः ॥

अर्थ–मुख्य सुवर्णादि धातुओंके न मिलनेसे उपधातुओंको काममें लाना चाहिये, वह

उपधातु बहुयत्नसे शोधित धातुकेसे गुण करती है

अन्यच्च.

स्वर्णाभावेमृतंताप्यंततोपिस्वर्णगैरिकम् ।
रूप्यादीनामलाभेतुप्रक्षिपेद्विमलादिकम् ॥

अर्थ–स्वर्णके अभावमें सोनामक्खी लेनी चाहिये, और सोनामक्खीके अभावमें सोनागेरू लेना चाहिये, और रूप्यादिके अभावमें रूपामक्खी आदि डाले ।

उपधातुओंका शोधन.

त्रिकटुर्केवरार्केचभावयेद्द्विभावना ।
कर्त्तव्याश्चोपधातूनांपूर्वदोषापनुत्तये ॥

अर्थ–संपूर्ण उपधातुओंको त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) के अर्क और त्रिफला (हर्ड, वहेडा, आवला) के रसकी बारह बारह भावना देनेसे शुद्धी होवे ।

उपधातुओंका शोधनमारण.

पादांशंसैंधवंदत्वातूपधातून्विमर्दयेत् ।
दशधाचाम्लवर्गेणकटाहेलोहसंभवे ॥
घर्षयेल्लोहदंडेनप्रत्येकंचमुहूर्त्तकम् ।
यथासिंदूरवर्णत्वंधातूनांदशमारणं ।

अर्थ–उपधातुओंका चतुर्थांश सैंधानिमक डालकर मर्दन करे, तथा लोहकी कडाहीमें दश भावना अम्लवर्गकी देवे, और लोहेके मूसलेसे घोटता जाय, प्रत्येक औषधिको दो २ घडी घोटे इस प्रकारकी क्रियासे दश धातुओंकी भस्म सिंदूरके समान स्वरूपवान होजाती है ।

अथ स्वर्णमाक्षिक प्रकरणम्.

माक्षिकोत्पत्ति.

कृष्णस्तुभारतंकृत्वायोगनिद्रामुपागतः ।
तस्यपादतलंविद्धंव्याधेनमृगशंकया ॥
येतत्रपतिताभूमौक्षताद्रुधिरबिंदवः ।
स्तेनिंबफलाकाराजातामाक्षिकगोलकाः ॥

अर्थ–कृष्ण भगवान भारत युद्धके अंतमें योगनिद्राको प्राप्त हुए, उस समय किसी बधिकने मृगकी शंकासे प्रभूका चरणार्विंद बाणसे वेधा, उस समय जो रुधिर चरणके क्षत (घाव) से पृथ्वीमें गिरा उससे निंबोलीके आकार माक्षिक उपधातु प्रगट हुई ।

तथाच.

सुवर्णशैलप्रभवोविष्णुनाकांचनोरसः ।
तापीकिरातचीनेषुयवनेषुचनिर्मितः ॥
ताप्यसूर्यांशुसंतप्तोमाधवेमासिदृश्यते ।
मधुरःकांचनाभासःसाम्लोरजतसन्निभः ॥
किंचित्कषायमुभयःशीतपाकोकटुर्लघुः ।
तत्सेवनाज्जराव्याधिविषैर्नपरिभूयते ॥

अर्थ–सुवर्णके पर्वतसे उत्पन्न सुवर्णका रस विष्णु भगवानने तापी, किरातदेश, चीनकी बलायत, और यवन देशोंमें निर्माण किया, वही तापी देशमें होनेवाला जो ताप्यमाक्षिक है सो सूर्य्यकी किरणसे तप्त होकर वैशाख महीनेमें दिखलाई देता है, उसकी सुवर्ण कीसी कांति होती है, और सवादमें मीठा ये सुवर्ण माक्षिकके गुण हैं । और रूपामाखी चांदीके समान और खट्टी होती है । तथा दोनों कुछ कपैली, शीतल, कटु और हल्की हैं, इन दोनोंके खानेसे बुढापा जाय और इनके विषसे मनुष्य पीडित नहीं होता ।

तथाच.

स्वर्णमाक्षिकमाख्यातंतापीजंमधुमाक्षिकं ।
ताप्यमाक्षिकधातुश्चमाक्षिकंचैवतन्मतम् ॥
किंचित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितं ।
उपधातुःसुवर्णस्यकिंचित्स्वर्णगुणैःसमम् ॥

अर्थ–तापी नदीके किनारे जो स्वर्णमाक्षिक होती है, उसको मधुमाक्षिक कहते हैं,

वो सुवर्णके समान दिखलाई देती है इसीसे उसे स्वर्णमाक्षिक कहते हैं । और ताप्यमाक्षिकभी कहते हैं, ये सब माक्षिकही कहलाते हैं, ये सुवर्णकी उपधातु हैं इसीसे किंचित् सुवर्णकेसे गुण हैं ।

नकेवलंस्वर्णगुणावर्त्ततेस्वर्णमाक्षिके ।
द्रव्यान्तरस्यसंसर्गात्सत्यन्येपिगुणायतः ॥
किंतुतस्यानुकल्पत्वात्केचिदूनागुणाःस्मृताः
तथापिकांचनाभावेदीयतेस्वर्णमाक्षिकं ॥
तपतीतीरजातस्त्वादित्येवंतद्द्वितीयकं ।
कान्यकुब्जोद्भवंताप्यंविज्ञेयंस्वर्णवर्णकं ॥
तपतीतीरगंतत्सुपंचवर्णमुदाहृतम् ।

अर्थ-परंतु स्वर्णमाक्षिकमें केवल सुवर्णके ही समान गुण नहीं हैं,-किंतु द्रव्यांतरके संयोगसे औरभी अनेक गुण हैं, परंतु सुवर्णके अनुकल्प होनेसे कुछ गुण न्यून हैं, तथापि सुवर्णके अभावमें इसको देते हैं, यह तपती नदीके तीर होता है । और दूसरा कान्यकुब्ज अर्थात् कन्याकुमारीके पास होता है, वह सोनेके वर्णके समान होता है । और तापीके किनारेका पंचवर्ण होता है ।

द्वयोर्माक्षिकयोर्लक्षणम्.

माक्षिकोद्विविधोहेममाक्षिकस्तारमाक्षिकः ।
तत्राद्यंमाक्षिकंकान्यकुब्जोत्थंस्वर्णसन्निभं ॥
तपतीतीरसंभूतंपंचवर्णसुवर्णवत् ।

अर्थ-माक्षिक दो प्रकारका है यथा सुवर्णमाक्षिक और तारमाक्षिक इनमें सुवर्ण माक्षिक कान्यकुब्जमें होता है, और सुवर्णके समान होता है, तथा तपती नदीके किनारे पैदा होनेवाला सुवर्णमाक्षिक पांचवर्णका और सोनेके समान होता है ।

तथाच.

स्वर्णाभंस्वर्णमाक्षीकंनिःकोणंगुरुतायुतम् ।
कालिमांविकरेत्तत्कुकरेघृष्टेनसंशयः ॥

अर्थ-सुवर्णके समान स्वर्णमाक्षिक होता है, उसमें कोने नहीं होवे, तथा भारी और हाथपर घिसनेसे कालौंच देता है ।

मारणयोग्य लक्षण.

स्वर्णवर्णगुरुस्निग्धमीषन्नीलच्छविच्छटं ।
कषेकनकवद्धृष्टंतद्धितंहेममाक्षिकम् ॥
पाषाणबहुलप्रोक्तस्ताराख्योसौगुणाऽल्पकः

अर्थ-सुवर्णकासा वर्ण, भारी, चिकना किंचित् नीलछवि, कसौटी पर घिसनेसे सोनेकीसी झलक देवे, उसको हेम माक्षिक जानना, और जिसमें बहुतसे पत्थरके टुकडेहो उसे अल्पगुण वाला रौप्यमाक्षिक जानना ।

अन्यच.

माक्षिकोद्विविधस्तत्रपीतःशुक्लोविभागतः ।
चतुर्द्धाकरसंस्थानंविज्ञेयंक्षेत्रभेदतः ॥
कदंबगोलकाकारंमुक्तकापुटसन्निभम् ।
तथांगुलीयकाकारंभस्मकर्त्तरिकासमम् ॥
तारमाक्षीकविमलाःसुपीतश्चसुलोहितः ।
सुवर्णमाक्षिकंतेषुप्रवरंसप्तवर्णकम् ॥
तद्वद्रजतवर्णंचहीनाः शुक्तिपुटादयः ।
गुणतश्चसुवर्णेनप्रवरःपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-पीले और सफेदके भेदसे माक्षिक दो प्रकारका है, वही आकर (खान) के भेदसे और क्षेत्रभेदसे चार प्रकारका है, एक कदंबके फूलके समान गोल, दूसरा मोतीकी सीपके समान, तीसरा अंगूठीके आकार और चौथा भस्म और कतरनीके समान होता है इनके चार नाम हैं यथा सुवर्णमाक्षिक, विमल, सुपीत, और सुलोहित इन चारोंमें सुवर्णमाक्षिक सातवर्णका श्रेष्ठ है, और चांदीके

वर्ण समान शुक्ति पुटादि (सीपकेसदृश) अधम है गुणमें तथा सुवर्णसे पैदा होनेके कारण सुवर्णमाक्षिक उत्तम है ।

अशोधित माक्षिकके अपगुण ।

अशुद्धंमाक्षिकंकुर्य्यादांध्यंकुष्ठंक्षयंक्रमीन् ।
शोधनीयंप्रयत्नेनतस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥

अर्थ–अशोधित माक्षिक अंधपना, कुष्ठी, खई और कृमी इत्यादि रोगोंको करता है, इस कारण अवश्य शोधन करना चाहिये ।

तथाच.

मंदानलत्वंबलहानिग्रंविष्टंभतांनेत्रगदान्सकुष्ठान् । करोतिमालांव्रणपूर्वकंचशुध्यादिहीनंखलुमाक्षिकंच ॥

अर्थ–मंदाग्नि, बलहानि, अफरा, नेत्ररोग, कुष्ठ, कंठमाला, और व्रण इन रोगोंको अशोधित माक्षिक करता है, इसलिये शुद्धि अवश्य करनी चाहिये ।

सुवर्ण माक्षिक शोधनं.

कांजिकेनिंबुगोमूत्रेजयन्त्याःस्वरसेभिपक् ।
सुवर्णमाक्षिकंचैवतारमाक्षिकमेवच ॥
वध्वागाढांबरेसम्यक् दोलायंत्रेत्र्यहंपचेत् ।
शुध्यतेनात्रसंदेहःसर्वयोगेपुयोजयेत् ।

अर्थ–सोनामक्खी या रूपामक्खीको वस्त्रमें बांध एक हांडीमें दोलायंत्रके समान लटकाय देवे, और उस हांडीमें गोमूत्र, नींबूका रस, कांजी, अरणीका रस, चारोंको सेर २ ले मिलाकर भरदेवे, और पोटलीको उसके बीचमें अधर लटकाय दे और उसके नीचे तीन दिन दीपकाग्नि बालकर स्वेदन करे तो दोनों माक्षिक शुद्ध होवें ।

तैलेनैरंडजेनादौयाममात्रंविमर्दयेत् ।
सच्छिद्रेसंपुटेधृत्वापचेत्त्रिशद्वनोपलैः ॥

अर्थ–तदनन्तर बारीक पीसकर थोडासा अंडीका तेल डाल प्रहरभर घोट टिकडी बनाय सरावसंपुटमें रखे ऊपरके ढकनमें छोटासा छिद्र करदे पीछे १ सेर आरने उपलोंकी आंचदे और स्वांग शीतल होनेपर निकाल नीचे लिखे रसोंमें घोटे ।

देवदालीहंसपदीवटार्कंचस्नुहीपयः ।
पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंभूधरेचत्रिधात्रिधा ॥
म्रियतेनात्रसंदेहःसत्यंगुरुवचोयथा ।

अर्थ–हंसपदीके रसकी ७ भावना दे, फिर टिकडी बांध सरावसंपुटमें रख दोसेर उपलीकी आंच दे, अथवा भूधरयंत्रमें रख आंच दे इसी प्रकार देवदाली (बंदाल) के रसकी ७ भावना देवे, और वडकी जटाओंकी ७ भावना दे आंच देवे, तथा आकके दूधकी सात भावना देकर आंच देवे तो सुवर्णमाक्षिककी निस्संदेह भस्म होवे, यद्यपि मूलमें तीन २ भावना लिखी हैं परंतु सात २ देनी चाहियें ये वृद्धवैद्योंकी सम्मति है । इस सुवर्णमाक्षिकसे अपची, गंडमाला, सूजन, मिरगी, श्वास, खांसी, खई ये रोग नाश होवें, योगराज योगमे इस प्रकार फुंके स्वर्णमाक्षिकको वैद्य डालते हैं, तब वो गुण करता है । भूधरयंत्रके लक्षण आगे यंत्राध्यायमें लिखेंगे ।

प्रकारान्तरेण शुद्धी.

एरण्डतैलेलुगाम्बौसिद्धंशुध्यतिमाक्षिकं ।
सिद्धंवाकदलीकंदतोयेनघटिकाद्वयं ॥
तप्तंक्षिप्तंवराकाथेशुद्धिमायातिमाक्षिकं ।

अर्थ–सुवर्णमाक्षिकको अंडीके तेल मातुलुंग (बिजौरानींबू) के रस अथवा केलाके कंदके रसमें दोघडी पाचन करे तो शुद्ध होवे, अथवा सुवर्णमाक्षिकको तपाकर त्रिफलाके

काढेमें बुझावे तो शुद्ध होवे ।

तथा तीसरी विधि.

माक्षिकस्यत्रयोभागाःभागैकंसैंधवस्यच ।
मातुलुंगद्रवैर्वाथजंवीरोत्थद्रवैःपचेत् ॥
चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंसलोहितम् ।
भवेत्ततस्तुसंशुद्धिःस्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥

अर्थ–३ पैसाभर स्वर्णमाक्षिक और पैसाभर सेंधानिमक दोनोंको पीसकर कडाहीमें डाल चूल्हे पर चढाय नीचे तेज आंच दे और कडाहीमें विजौरे अथवा जंभीरीका रस डालता जाय और कलछीसे चलाता जाय, जब स्वर्णमाक्षिक और कडाही दोनोंका लाल रंग होजाय तब सुवर्ण माक्षिकको शुद्ध हुआ जानना।

तथा चौथी विधि.

अगस्तिपत्रनिर्यासैःशिग्रुमूलंसुपेषितं ।
तन्मध्येपुटितंशुद्धंनिम्बुजाम्लेनपाचितं ॥

अर्थ–माक्षिकको अगस्तियाके पत्तोंके रस और सहंजनेकी जडके रसमें घोटकर गजपुटकी आंच दे तदनंतर नींबूकी खटाईके रसमें घोटे तो सोनामक्खी शुद्ध होवे ।

अथमारणं.

पिष्ट्वाकुलित्थस्यकषायकेणतक्रेणवाजस्यहि मूत्रकेण । संचालयेद्वैद्यपतिःक्रमातन्मृतिंव्रजेत्सुंदरिहेममाक्षिकं ॥

अर्थ–सोनामक्खीको कुलथीके काढे, छाछ और बकरीके मूत्रमें क्रम पूर्वक कडाहीको चूल्हे पर चढाकर कलछीसे घोटे तो सोनामक्खी की भस्म होवे ।

तीसरी विधि.

मातुलुंगाम्बुगंधाभ्यांपिष्टंमूषोदरेस्थितं ।
पंचक्रोडपुटैर्दग्धंम्रियतेमाक्षिकंखलु ॥
एरण्डस्नेहगव्याद्यैर्मातुलुंगरसेनच ।
खर्परस्थंदृढंपक्वंजायतेधातुसन्निभं ॥
एवंमृतंरसेयोज्यंरसायनविधावपि ।

अर्थ–सोनामक्खीको विजोरे और गंधक संयुक्त घोटकर पांचवार वाराहपुट देवे तो मरे इस प्रकार मरे माक्षिकको एक बडे खपरेमें चूल्हे पर चढाय अंडीके तेल, विजौरेके रस और घृत इनमें घोटनेसे धातुके समान होजाय, इसको रसायन विधिमें देना चाहिये ।

वाराहपुटके लक्षण.

अरत्निमात्रेगर्त्तेयद्दीयतेपूर्ववत्पुटं ।
करीषाग्नौतुतत्प्रोक्तंपुटंवाराहसंज्ञितं ॥

अर्थ–कोहनीसे छोटी अंगुली पर्यंत इतना वडा गढेला खोदकर पूर्वरीति (जैसे गज पुटादिकोंमें कहआये हैं) उस क्रमसे आरने उपलोंकी अग्नि देनेको वाराहपुट कहते हैं ।

चौथी विधि.

माक्षिकस्यचतुर्थांशंगंधंदत्वाविमर्दयेत् ।
उरुबूकस्यतैलेनततःकार्य्यासुचक्रिका ॥
सरावसंपुटेकृत्वापुटेद्गजपुटेनच ।
धान्यस्यतुषमूर्ध्वाऽधोदत्वाशीतंसमुद्धरेत् ॥
सिंदूराभंभवेद्भस्ममाक्षिकस्यनसंशयः ।

अर्थ–सोनामक्खीकी चतुर्थांश गंधक डालकर दोनोंको खरल करे, तदनंतर अंडीका तेल डालकर टिकिया बनाय सराव संपुटमें रख गजपुटमें फूंकदे, जब शीतल होजाय तब निकालले इसकी सिंदूरके समान लालभस्म होवे, यह भस्म उत्तम है यह टोडरानंदमें लिखा है ।

पांचवीं विधि.

तैलेतक्रेगवांमूत्रेआरनालेकुलत्थके ।
शोधयेत्रिफलाक्षारेमाक्षिकंवन्हितापितं ॥
ततःपरंपुटंदेयंकुमारीरसमर्दितम् ।

कृत्वासुचक्रिकांशुष्कांकुक्कुटाख्येपुटेपचेत्।
सप्तविंशतिसंख्यास्तिततःस्यादमृतोपमम् ॥

अर्थ—तेल, छाछ, गोमूत्र, कांजी, कुलथीका काढा, त्रिफलाका काढा इनमें सोनामक्खीको तपा २ कर बुझावे, तो शुद्ध होवे। तदनंतर घीगुवारके रसमें घोटकर टिकिया बनाय सुखाकर कुक्कुटपुटमें २७ आंच दे तो अमृतके समान भस्म होवे, कुक्कुट पुटकी विधि सुवर्णके प्रकर्णमें लिख आये हैं।

छठी विधि.

किमत्रचित्रंकदलीरसेनसुपाचितंसूरणकंदसंपुटे।वातारितैलेनपुटेनताप्यंपुटेनदग्धंवरपुष्टिमेति ॥

अर्थ—सुवर्ण माक्षिकका चूर्णकर खिपडेमें नींबूके रस सहित डाल नीचे अग्नि जलावे, और लोहेकी कलछीसें चलाता जाय, इस प्रकार दो प्रहर करनेसे लालरंग होजाय तब उतार शीतल कर ३ बल्ल (बल्ल ३ रत्तीका होता है.) सहत और पीपलके साथ सेवन करनेसे बलको बढावे, और पांडुरोग, कामला, वातपित्त, हलीमक इन रोगोंको दूर करे, ।

सृतमाक्षिकके गुण.

स्यान्माक्षिकस्तिक्तसुदीपनःकटुर्दुर्नामकुष्टामयभूतनाशनः। पाण्डुप्रमेहक्षयनाशनोलघुःसत्वंमृतंतस्यसुवर्णवद्गुणः ॥

अर्थ—सुवर्ण माक्षिक तीखा है, अग्निको दीपन करे, कडवा है, बवासीर, कोढ, भूत, पांडुरोग, प्रमेह और खईका नाश करे। हलका और इसका मृतसत्व सुवर्णके समान गुण करे।

तथाच.

सुवर्णमाक्षिकंस्वादुतिक्तंवृष्यंरसायनं।
चक्षुष्यंवांतिहृत्कंठ्यंपांडुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविषकण्डूत्रिदोषमपिनाशयेत्।

अर्थ—सुवर्ण माक्षिक, स्वादिष्ट, कडवा, वृष्य और रसायन है। नेत्ररोग, वमन, कंठरोग, पीलिया, प्रमेह, बवासीर, सूजन, उदररोग, खुजली; और त्रिदोषज रोगोंका नाश करे।

स्वर्णमाक्षिकका सत्व निकालना.

त्रिशांशनागसंयुक्तंक्षारैरम्लैश्चवर्तितं।
ध्मातंबंकटमूषायांसत्वंमुंचतिमाक्षिकं ॥

अर्थ—माक्षिकका तीसरा हिस्सा सीसा मिलाकर क्षारगण और अम्लवर्ग संयुक्तको मूषामें रख बंकनालधोंकनीसे धोंके तो माक्षिक सत्व छोडता है।

सीसासंयुक्तमाक्षिककापृथक्करना

सप्तवारंपरिद्राव्यंक्षिप्तंनिर्गुंडिकारसे।
माक्षीकसत्वसंमिश्रंनागंनश्यतिनिश्चितम् ॥

अर्थ—सीसा मिले सुवर्ण माक्षिक सत्वको सातवार तपा २ कर निर्गुंडीके रसमें बुझानेसे माक्षिक सत्वमें सीसेकों नष्ट करदे।

दूसरी विधि.

क्षौद्रगंधर्वतैलाभ्यांगोमूत्रेणघृतेनच।
कदलीकंदनीरेणभावितंमाक्षिकंखलु ॥
मूषायांमुंचतिध्मातंसत्वंशुल्वनिभंमृदुः।

अर्थ—सहत और अंडीके तेल वा गोमूत्र और घृत तथा कदली कंदके रसकी वारंवार भावना देकर माक्षिकको मूषामें रख बंकनालसे धोंके तो तांबेके समान वर्णका नरम सत्व निकले।

तीसरी विधि माक्षिक सत्वका स्वरूप.

गुंजाबीजसमच्छायंद्रुतिद्रावेचशीशवत्।
ताप्यसत्वंविशुद्धंतद्देहलोहकरम्परम् ॥

अर्थ—पूर्वनीके समान लालवर्ण होवे, और द्रुति तथा द्राव सीसेके समान नरम हो, वह माक्षिक सत्व शुद्ध जानना, यह देहको लोहके समान करता है।

तथा भक्षण विधि.

माक्षीकसत्वेनरसस्यपिष्टींकृत्वाविलीनेचबलिंनिधाय। संमिश्र्यसंमर्द्यचखल्वमध्येनिक्षिप्यसत्वंद्रुतिमभ्रकस्य ॥ विधायगोलंलवणाख्ययन्त्रेपचेद्दिनार्द्धंमृदुवन्हिनाच। स्वतःसुशीतेपरिचूर्ण्यसम्यक्वल्लोन्मितंव्योपविडंगयुक्तं ॥ संसेवितंक्षौद्रयुतंनिहन्तिजरांसरोगंत्वपमृत्युमेव। दुःसाध्यरोगानपिसप्तवासरैर्नतेनतुल्योस्तिसुधारसोपि ॥

अर्थ—माक्षिक सत्वमें पारा डालकर पिट्टी करे, जब पारा मिल जाय तब गंधक डालकर खरलमें घोटे, तदनंतर इसमें अभ्रकसत्व डाले और घोटकर मिलावे पश्चात् एक हांडीमें नमक भर गोलेको रख ऊपर और नमक भर भट्टीपर चढाय दो प्रहरकी मंदाग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब हांडीसे निकाल कर खूब बारीक पीसे, और ३ रत्तीके अंदाज सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग और सहतके साथ मिलाकर भक्षण करे तो बुढापा और रोग, अल्पमृत्यु तथा असाध्य रोगोंको सात दिनमें दूर करे। इसके समान अमृतभी नहीं है। इसमें जो पारा और गंधक डाले जायँ वह शुद्ध होवें, यह प्रयोग हमारा परीक्षा किया हुआ है। अभ्रकद्रुतिके प्रतिनिधिमें अभ्रक सत्व डालना चाहिये। यह रहस्य वार्त्ता हमने मनुष्योंके उपकारार्थ लिखी है।

माक्षिक सत्वद्रावण.

एरण्डोत्थेनतैलेनगुंजाक्षौद्रंचटंकणं। मर्दितंतस्यवापेनसत्वमाक्षिकजंद्रवेत् ॥

अर्थ—अंडीका तेल, घूंघची, गुड, सहत और सुहागा इनको पीसकर डालनेसे माक्षिक सत्व द्रवरूप होजाय।

स्वर्ण माक्षिकानुपान.

अनुपानंवराव्योपंवेल्लंसाज्यंहिमाक्षिकम् ॥

अर्थ—त्रिफला, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) काली मिरच, मक्खन, और सहत ये सुवर्ण माक्षिकके अनुपान हैं अर्थात् इनके साथ देना चाहिये।

अपक्व माक्षिकके दोष.

अपक्वमाक्षिकेणाशुदेहेसंक्रमतेरुजा। तद्दोषविनिवृत्यर्थमनुपानंब्रवीम्यहम् ॥

अर्थ—कच्चे सुवर्ण माक्षिकके खानेसे देहमें अनेकरोग प्रगट होते हैं उनकी शान्तिके निमित्त अनुपान कहता हूं।

माक्षिक दोष शान्ति.

कुलत्थस्यकषायेणमाक्षीकविकृतिंजयेत्। दाडिमस्यत्वचोवापिप्रोक्ताविकृतिनाशिनी।

अर्थ—कुलथीके काढेसे अथवा अनारके काढेसे माक्षिकका विकार शांति होवे।

इतिश्री सुवर्णमाक्षिकप्रकरणं समाप्तम् ॥

रौप्य माक्षिक प्रकरण प्रारम्भः

तारमाक्षिकोत्पत्ति

तारमाक्षिकमन्यत्तुभवेतद्रजतोपमम्। किंचिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितं। १ अनुकल्पतयातस्यततोहीनगुणाःस्मृताः ॥ नकेवलंरौप्यगुणावर्त्ततेतारमाक्षिके ॥ २ ॥ द्रव्यांतरस्यसंसर्गोसत्यन्येपिगुणायतः।

अर्थ—रौप्यमाक्षिक स्वर्णमाक्षिकका दूसरा भेद है, यह चांदीके समान होता है, और

इसमें चांदीका मेल होनेसे तारमाक्षिक कहलाता है, चांदीके अभावमें दिया जाता है, इससे इसमें चांदीकी अपेक्षा कुछ न्यून गुण है, इसमें रौप्य (चांदी) केही केवल गुण नहीं हैं किन्तु अन्यद्रव्योंका संयोग होनेसे औरभी वहुत गुण हैं।

अथास्य शोधनम्.

कर्कोटीमेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनं ॥ ३ ॥ भावयेदातपेतीव्रेविमलाशुध्यतिध्रुवं ॥

अर्थ–रूपामाखीको ककोडा, मेंढासिंगी, जंभीरी प्रत्येकके रसमें सात २ वार धूपमें खरलरखकर घोटे तो शुद्ध होवे।

अथ मारणम्.

कुलत्थस्यकषायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत् । तैलेनवाजमूत्रेणम्रियतेतारमाक्षिकम् ॥

अर्थ–शुद्ध रौप्यमाक्षिकको कुलथीके काढेमें १ दिन घोटे, इसी प्रकार तिलके तेल और वकराके मूत्रमें एक २ दिन घोटकर सरावसंपुटमें रख गजपुटकी आंच दे तो रौप्यमाक्षिक भस्म होवे।

तथाच.

स्वर्णमाक्षिकवज्ज्ञेयंतारमाक्षिकमारणं। विमलायागुणाःकिंचिन्न्यूनाःकनकमाक्षिकात् ॥

अर्थ–रूपामक्खीका शोधन, मारण, सत्वपातनादि कर्म सुवर्णमाक्षिकके समान जानने रौप्यमाक्षिकमें सुवर्णमाक्षिककी अपेक्षा कुछ न्यूनगुण हैं।

रौप्य माक्षिकके गुण.

माक्षिकोरजतहाटकप्रभःशोधितोतिगुणदः सुसेवितः मेहकुष्ठकृमिशोफपांडुतापस्मृतिंहरतिसोश्मरींजयेत् ॥

अर्थ–रौप्यमाक्षिक रूपेके समान और सोनेके समान तेजस्वी होता है, यह शुद्ध किया हुआ अत्यंत गुणदायक है, इसके सेवनसे प्रमेह, कोढ, कृमि, सूजन, पीलिया, अपस्मार, तथा पथरी आदि रोग दूर होते हैं।

अथ विमला माक्षिक भेदः

तापीजंद्विविधंवदन्तिविमला माक्षीकभेदादिह । त्रेधाधातुसुवर्णकांस्यरजतच्छायानुकारादिदम् ॥ तिस्रोप्यस्रयुताश्चतुस्त्रिफलिकावृत्तास्वनामश्रियो । मध्येतुत्रिफलाम्बुशुध्यतिदिनंवासाजशृंगीरसे ॥ स्विन्नाजंभरसेपितालवलिनावस्त्वंशकेनाम्भसा । जम्भस्यैवपरिप्लुतादशपुटैर्जीवेन्नयोगानुगाः ॥

अर्थ–ताप्यमाक्षिक, विमला और माक्षिकके भेदसे दो प्रकारका है, इन दोनों भेदोंमें प्रथम जो तापिज है उसके तीन भेद हैं, यथा एक सुवर्णसदृश सुवर्ण विमला, दूसरा कांश्य विमला, तीसरा रौप्यविमला, इन तीनोंमें सुवर्ण कांसी तथा रूपेकी झलक होनेसे उसी २ धातुके नामसे कहे हैं। इन तीनोंके लक्षण चपटे, त्रिकोण, चौकोण, और गोल क्रमसे अपने २ सोभायुक्त होते हैं, इनमें कांश्यविमला श्रेष्ठ है, इनकी शुद्धी त्रिफलाके काढे तथा अडूसे, मैंढासिंगी [कोई मैंढासिंगीकी जगह भांगरा कहते हैं] इनके रसमें तथा जंभीरी नींवूके रसमें पूर्वोक्त तीनों विमलाओंका चूर्णकर वस्त्रमें वांध दोलायंत्र कर लटका देवे, तदनंतर शुद्ध हरताल, शुद्धगंधक, इनको विमलाका अष्टमांश डाल जंभीरी नींवूके रसमें खरलकरे, पीछे गजपुटकी आंच दे इस प्रकार दश पुटोंमें विमलाकी भस्म होवे, इस भस्मको उक्त प्रयोगोंमें देना चाहिये यह सर्व रोगोंको दूर करे।

विमलाके भेद.

विमलोद्विविधप्रोक्तोहेमाद्यस्तारपूर्वकः ।
तृतीयःकांश्यविमलःतत्तत्कांत्यासलक्ष्यते ॥
वर्तुलःकोणसंयुक्तःस्निग्धश्चफलकान्वितः ।
मरुत्पित्तहरोवृष्योविमलोतिरसायनः ॥
पूर्वोहेमक्रियासूक्तोद्वितीयोरूप्यकृन्मतः ।
तृतीयोभेषजेतेषुपूर्वपूर्वगुणोत्तरः ॥

अर्थ—विमला-सुवर्ण और रौप्यके भेदसे दो प्रकारका है, कांस्यविमला तीसरा है, ये. सुवर्ण आदिकी कांतिसे जाने जाते हैं, ये गोल, कोणयुक्त, चिकने और भालदार होते हैं, तथा वादी, पित्तको हरण करता वृष्य हैं, रसायन है, सुवर्ण विमला सुवर्णके कार्यमें कहा है। दूसरा रौप्य माक्षिक चांदीके कर्ममें कहा है। तीसरा कांस्य माक्षिक औषधिके कार्यमें कहा है। इनमें क्रमसे एकसे दूसरेमें विशेष गुण हैं।

तथाच.

माक्षीकोद्विविधादिमःकनकरुक्दुर्वर्णवर्णोऽपरं । कांश्यश्रीकमुशंतिकेचनपरंसर्वेविपूर्वत्विषः ॥ निःकोणागुरवःकिरंतिनिभृतंघृष्टाःकरेकालिमां ।

अर्थ—माक्षिक दो प्रकारका है तिनमें प्रथम सुवर्ण माक्षिक, दूसरा दुर्वर्ण अर्थात् रौप्य माक्षिक और कोई आचार्य तीसरा कांस्य माक्षिक कहते हैं तीनों माक्षिक विमलकांति वाले होते हैं। विमलाओंका स्वरूप कहते हैं-कोण रहित, भारी, तथा हाथपर घिसनेसे कालोंच देते हैं।

शुद्धी माह.

स्विन्नास्तेरुबुतैलतुंगसलिलैर्यामेनशुध्यंतिच।

अर्थ—इन तीनोंको १ प्रहर अंडीके तेलमें पचावे, अथवा विजौरेके रसमें घोटे तो शुद्ध होवे।

पक्वावाघटिकाद्वयेनकदलीकर्कोटिकाकंदयोः।

अर्थ—अथवा केलाकी जडके रस वा ककोडाके रसमें दोघडी पर्यंत औटानेसे विमलाकी शुद्धी होवे।

रुब्वाकूर्मपुटैस्त्रिभिःपटुतरंलुंगाम्बुगंधप्लुताःस्युर्भस्मानिजघन्यमध्यसुभगास्तेव्युत्क्रमेणोदिता ॥ वृष्याःपाण्डुपटीयसोवलकरायोगोपयोगाःपुनः ।

अर्थ—इस प्रकारके शुद्ध विमलाके चूर्णमें विजोरेका रस और गंधक डालकर घोटे, पश्चात् सराव संपुटमें रख कूर्मयंत्र (कच्छयंत्र) में ३ आंच देवे तो स्वर्ण माक्षिक-कांस्य माक्षिक और रौप्य माक्षिककी भस्म होवे। कांस्य, रौप्य, सुवर्ण-तीनों क्रमसे अधम मध्य और उत्तम कहे हैं, इनकी भस्म-वृष्य (शुक्र वढाने वाली) पांडुरोगको दूर करे, बलकारक, और योगकेसाथ अनेक गुण करे। कूर्म यंत्र आगे मध्यखंडमें कहेंगे।

विमला शोधनकी दूसरी विधि.

आटरूपजलेस्विन्नोविमलोविमलोभवेत् ।

अर्थ—अडूसेके जलमें औटानेसे विमला शुद्ध होता है।

तीसरी विधि.

जंम्बीरस्वरसेस्विन्नोमेषशृंगीरसेथवा ।
आयातिशुद्धिविमलांधातवश्चतथापरे ॥

अर्थ—जंभीरीके रस अथवा मेंढासिंगीके रसमें विमला शुद्ध होता है, तथा और धातुभी शुद्ध होती हैं।

मारणकी तीसरी विधि.

गन्धाश्मलकुचाम्लैश्चम्रियतेदशभिःपुटैः

अर्थ—गंधक और बढलके रसकी दशपुट

देनेसे तीनों प्रकारकी विमला शुद्ध हो ।

विमलाका सत्वपातन.

सटंकलकुचद्रावैर्मेषशृंग्याश्चभस्मना ॥
पिष्टोमूषोदरेलिप्तःसंशोष्यचनिरुध्यच ।
षट्प्रस्थकोकिलैर्ध्मातोविमलःश्वेतसन्निभः ॥
सत्वंमुंचतितद्युक्तोरसस्यात्सरसायनः ।

अर्थ–सुहागा, बडलका रस, मेंढासिंगी और विमलाकी भस्म, चारोंको एकत्र घोट मूषमें रख ल्हेस दे, पश्चात् छःप्रस्थ (छः सेर) पक्के कोलेमें रख बंकनाल धोंकनीसे धोंके तो विमलाका सफेद सत्व निकले, इस रसको रसायनमें देना चाहिये ।

तथा दूसरी विधि.

विमलोशिग्रुतोयेनकांक्षीकासीसटंकणं ।
वज्रकंदसमायुक्तंभावितंकदलीरसे ॥
मोक्षकक्षारसंयुक्तंध्मापितंमूकमूषगं ।
सत्वंचंद्राऽर्कसंकाशंपततेनात्रसंशयः ॥

अर्थ–विमलाको सहजनेके रस, फिटकरी, कसीस, सुहागा और वज्रकंदके रसमें मिलाकर घोटे, तदनंतर केलाके रसकी भावना दे फिर मोक्षक (मोखावृक्ष) का खार मिलाय मूषामें रख अग्निमें धोंके तो चंद्र सूर्यके समान प्रकाश वाला सत्व निकले ।

सत्व भक्षण विधि

तत्सत्वंसूतसंयुक्तंपिष्टिंकृत्वासुमर्दितं ।
त्रिलीनेगंधकेक्षिप्त्वाजारयेत्त्रिगुणालकम् ॥
शिलांपंचगुणंचापिनलिकायंत्रकेखलु ।
तारभस्मदशांशेनतावद्वैक्रांतकंमृतम् ॥
सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यपटेनपरिगाल्यच ।
निक्षिप्यकूपिकामध्येपरिपूर्य्यप्रयत्नतः ॥

अर्थ–निकाले हुए सत्वमें शुद्ध पारा मिलाकर पिष्टीकरे, जब सत्व मिलजाय तब शुद्ध गंधक डाले, फिर दूनी हरिताल डालकर जारण करे, और पांचगुना मनसिल जारण करे, इन सबको नलिकायंत्रमें जारण करना चाहिये, जब इस प्रकार विमलाकी भस्म सिद्ध होजाय तब उसका दशांश रूपरस और इतनीहीं वैक्रांतिमणिकी भस्म डाले, इन सबको मिलाय चूर्णकर कपरछन करे, और किसी चीनी या सीसेके पात्रमें रखछोडे ।

भस्मके गुण.

लीढोव्योमवरान्वितोविमलकोयुक्तोघृतैः सेवितो । हन्यादुर्भगकृज्जरांश्वयथुकंपांडुप्रमेहारुचिः ॥ मूलार्त्तिग्रहणींचशूलमतुलंयक्ष्मामयंकामलां । सर्वान्पित्तमरुद्भवान्किमपरैर्योगैरशेषामयान् ॥

अर्थ–विमलाकी भस्म-अभ्रक, त्रिफला (हर्डा, बहेडा, आंवला) तथा गौकेस्खनके साथ खानेसे स्वरूप बिगाडने वाला जरा (बुढापा) सूजन, पांडुरोग, प्रमेह, अरुचि, बवासीर, संग्रहणी, घोरशूल, खई, कमलबायु, और संपूर्ण पित्त तथा वात रोगोंको अलग २ अनुपानोंके साथ दूर करे ।

तथानुपान.

विषव्योषवराज्येनविमलःसेवितोयदि ।
भगंदरादिकान्रोगान्नृणांगच्छंतिदुस्तराः ॥

अर्थ–विमलाको सिंगियाविष, सोंठ, मिरच पीपल, हरड, बहेडा, आंवला और घृत इनके साथ सेवन करनेसे मनुष्योंके भगंदरादि असाध्य रोग दूर होवें ।

विमला विकारकी शांति.

विकारोयदिजायेतविमलायानिषेवणात् ।
शर्करासहिताभक्ष्यामेषशृंगीदिनत्रयम् ॥

अर्थ–अपक्व विमलाके खानेसे यदि वि-

कार प्रगटहो तो मिश्रीके साथ मेंढासिंगीका चूर्ण ३ दिन खाना चाहिये।

अथ तुत्थ (नीलाथोथा) प्रकरणम्

नीलेथोथेकी उत्पत्ति.

पीत्वाहालाहलंवांतंपीतामृतगरुत्मता।
विषेणाऽमृतयुक्तेनगिरौमरकताह्वये॥
तद्वांतहिघनीभूतंसंजातंसस्यकंखलु।
एकधासस्यकस्तुत्थःशिखिकंठसमाकृतिः॥
तुत्थस्यैवभवेद्भेदःखर्परंतद्गुणंभवेत्।
शिखिकंठसदृक्छायंभाराढ्यंतुत्थकंतुतत्॥
द्रव्यंविषयुतंयत्तद्द्रव्याधिकगुणंभवेत्।
हालाहलंसुधायुक्तंसुधाधिकगुणंभवेत्॥
सस्यकंतुत्थकंचैवनामभेदप्रकीर्तितम्।

अर्थ—प्रथम गरुडने हालाहल विषको पान किया जब चित्त घबडाया तब अमृत पीया पश्चात् अमृत और विष संयुक्त मर्कत (अन्न) के पर्वत पर वमन (रद्द) की वही वमन दृढ होकर सस्यक नामसे प्रसिद्धी हुआ, इस सस्यकका दूसरा भेद तुत्थ (नीलाथोथ) हैं, इनका रंग मोरकी गर्दनके समान होता है, और तुत्थका दूसरा भेद खपरिया हैं, इनमें मोरकी गर्दनके समान रंगवाला और भारी तुत्थक होता हैं, यह विषयुक्त होनेसें विषके समान, और अमृतयुक्त होनेसें अमृतके समान गुण करते हैं, जो वस्तु अधिकहो उसीके समान गुण करें सस्यक और तुत्थक यह केवल नामभेद है वास्तवमें दोनों एकही हैं।

सस्यक शुद्धि.

सस्यकःशुद्धिमाप्नोतिरक्तवर्गेणभावितं।
स्नेहवर्गेणसंसिक्तंसप्तवारमदूषितम्॥

अर्थ—रक्तवर्गकी भावना देकर ७ वार स्नेहवर्गमें औटानेसे तुत्थक शुद्ध होवे। परन्तु प्रत्येक वार रक्तवर्गकी भावना देकर स्नेहवर्गमें औटावे तो शुद्धहो रक्तवर्ग, और स्नेहवर्ग दोनों मध्य खंडमें कहेंगे।

तथा दूसरा प्रकार.

दोलायंत्रेणशुस्विन्नंसस्यकंप्रहरत्रयम्।
गोमहिष्याजमूत्रेणशुद्ध्यतेतुत्थकंपरम्॥

अर्थ—गौ, भैंसा, और बकरा तीनोंके मूत्रमें दोलायंत्र द्वारा सस्यकको स्वेदन करने से शुद्ध होवे।

तीसरी विधि

ओतोविष्ठासमंतुत्थंसक्षौद्रंटंकणान्विम्।
त्रिविधंपुटितंशुद्धंवांतिभ्रांतिविवर्जितम्॥
अम्लवर्गेणलुलितंस्नेहसिक्तंहितुत्थकं।
दोलायांवाजिगोमूत्रेदिनंपक्वंविशुध्यति॥

अर्थ—मोरचूतके समान बिल्लीकी विष्टा ले, उसमें सहत और सुहागा डाल खरल करे, पश्चात् सरावसंपुटमें रख कपरमिट्टी कर फूंके इस प्रकार ३ बार करनेसे नीलाथोथा वमन और भ्रांति रहित शुद्ध हो, अथवा-नीलेथोथे को अम्लवर्गमें खरलकर स्नेहवर्गमें स्वेदन करे, अथवा घोडाके मूतमें दोलायंत्र द्वारा पकानेसे नीलाथोथा शुद्ध हो। अथवा गोमूत्रमें औटानेसे शुद्ध हो।

चौथी विधि.

विष्ट्यामर्दयेतुत्थंमार्जारककपोतयोः।
दशांशंटंकणंदत्वापचेन्मृदुपुटेततः॥
पुटेदघ्नापुटंक्षौद्रंदेयंतुत्थविशुद्धये।

अर्थ—बिल्ली और कबूतरकी बीठमें नीलाथोथा खरल कर नीलेथोथेका दशांश सुहागा डाल सराव संपुटमें रख कपरमिट्टी कर आरने उपलोंकी हलकी आंच देवे, पश्चात् निकाल दहीका पुट देकर अग्नि देवे इसी प्रकार सह-

तका पुट दे तो नीलाथोथा शुद्ध होवे ।

अथ मारण.

लकुचद्रावगंधाश्मटंकणेनसमन्वितम् ।
अंधमूषागतंद्वित्रीकुक्कुटैर्मृत्युमाप्नुयात् ॥

अर्थ–गंधक, सुहागा और नीलाथोथा तीनोंको कठलके रसमें खरल कर अंधमूषामें रखकर फूंके इस प्रकार दो तीन कुकुटपुटोंमें नीलाथोथेकी भस्म हो ।

सत्व निकालना.

सस्यकस्यतुचूर्णंतुपादसौभाग्यसंयुतं ।
करंजतैलमध्यस्थंदिनमेकंनिधापयेत् ॥
अंधमूषासुमध्यस्थंध्मापयेत्कोकिलात्रयं ।
इन्द्रगोपाकृतिंचैवसत्वंपततिशोभनम् ॥

अर्थ–सस्यक (नीलाथोथे) के चूर्णमें चतुर्थांश सुहागा मिलाय १ दिन कंजाके तेलमें भिगोवे, पश्चात् अंधमूषमें रख पक्के कोलोंमें वंकनालसे धौंके तो इंद्रगोप (वीरवहुट्टी) के समान लाल सत्व निकले ।

दूसरी विधि.

निम्बुद्रवाल्पटंकाभ्यांमूषामध्येनिरुध्यच ।
ताम्ररूपंपरिध्मातंसत्वंमुंचतिसस्यकम् ॥

अर्थ–नींबूके रसमें नीलाथोथे और सुहागेको मिलाकर मूषयंत्रमें रख भट्टीमें वंकनालसे धौंकनेसे ताम्रके समान सत्व निकले ।

तीसरी विधि.

गुग्गुलुर्टंकणंलाक्षास्वर्जिसर्जिरसंपटुः ।
ऊर्णागुंजाक्षुद्रमीनमस्थीनिशशकस्यच ॥
गुंजामध्वाज्यसंयुक्तंपिण्याकंचअजापयैः ।
तुत्थस्यचदशांशेनप्रक्षिप्तंवटिकीकृतम् ॥
ध्मातंचअंधमूपायांसत्वंपततिशोभनम् ।

अर्थ–गूगल, सुहागा, लाख, राल, सज्जी, नमक, ऊन, घूंवची, छोटी मछली, ससेकी हड्डी, सहत, घृत, खल (तेल निकालनेके वाद जो वचे) और वकरीका दूध इन सवको तुत्थका दशांशले तुत्थमें मिलाकर गोला वनाय मूषामें रख अग्निमें वंकनालसे धौंके तो उत्तम सत्व निकले ।

विनाअग्नितुत्थकासत्वनिकालना.

अथवातुत्थकंचूर्णंनिंवुनीरेविनिक्षिपेत् ।
धारयेल्लोहपात्रेचयावत्सप्तदिनानिवैः ॥
लोहपात्रात्समुद्धृत्यसत्वंग्राह्यंसुशोभनं ।
सिद्धयोगमिदंख्यातंहुताशनपुटंविना ॥

अर्थ–तुत्थ (नीलाथोथे) को लोहपात्रमें चूर्णकर उसमें नींबूका रस भरकर सातदिन रक्खा रहने दे, आठवें दिन तुत्थका सत्व पात्रकी पैंदीमें बैठजाय उसे लेना चाहिये । यह सिद्धयोग विना अग्निके सत्व निकालना कहा है। भूनाग सत्वके प्रकरणमें मोर पंखसे तांवा निकालनेकी विधि कह आये हैं, इसे ताम्रप्रकरणमें देखना चाहिये तथापि यहां मोर पंखसे ताम्र निकालनेकी विधि स्पष्ठ कहते हैं ।

मोरपंखसे ताम्र निकालना.

मयूरपक्षमादायज्वालयेदाज्यसर्पिषा ।
खलगुग्गुलमीनोर्णाटंकणंसर्जिकामधु ॥
गुंजापिप्पललाक्षाचघृतंचैकत्रकारयेत् ।
धमेतदंधमूषायांनागताम्रंप्रजायते ॥

अर्थ–मोर पंखकी राख घृत मिलाकर करे, उसमें खल, गूगल, छोटी मछली, ऊन, सुहागा, राल, सहत, गुंजा (घूंवची) पीपलकी लाख और घृत सवको मिलाय अंधमूषामें रख वंकनालसे धौंके तो मोरपंखसे तांवा निकले इसे नागताम्र कहते हैं ।

भूनागसत्व निकालनेका प्रकारांतर.

भुजंगसमादायचतुःप्रस्थसमन्वितम् ।
प्रक्षाल्यरजनीतोयैःशीतलैश्चजलैरपि ॥
उपोषितमयूरंचशूरंवाचरणायुधम् ।
क्रमेणचारयित्वाथतद्विष्टांसमुपाहरेत् ॥
क्षाराम्लैसहसंपेष्यविशोष्यचखरातपे ।
ततःखरखरकेक्षिप्त्वाभर्जयित्वामपिचरेत् ॥
मपिंद्रावणवर्गेणसंयुक्तंसुप्रमर्दितं ।
निरुध्यकोष्टिकामध्येप्रधमेत्घटिकाद्वयम् ॥
शीतलीभूतमूषायांखोटमाहृत्यपेषयेत् ।
प्रक्षाल्यरवकान्शुद्धान्समादायप्रयत्नतः ॥

अर्थ–४ सेर केंचुओंको हल्दीके पानीसे धोकर पश्चात् शीतल जलसे धोवे, फिर भूँखे मोर वा भूँखे मुर्गेको खिलावे, जब वह बीठकरें उसे इकट्ठीकर उसमें खार और खटाई मिलाकर पीस डाले, फिर तेज धूपमें सुखाकर चालनीमें भूँने जबतक कोलके समान काले होवें, पश्चात् द्रावणवर्गमें मिलायके मर्दन करे, और मूषामें रख दो घडीपर्य्यंत वंकनालसे धोंके, फिर स्वांग शीतल होनेपर निकालकर खंगडको पीसे और जलसे शुद्धकर उसमेंसे तांबेके रवाओंको युक्तिसे निकाल लेवे ।

विषहरणमुद्रिका (अँगूठी)

तुत्थसत्वंनागताम्रंहेमंचैवसमांशकम् ।
मुद्रिकेयंविधातव्याशूलघ्नीतत्क्षणाद्भवेत् ॥
चराचरविषंभूतंडाकिनीचगदंजयेत् ।
कनिष्टकांधार्यमाणेविषघ्नीसर्वदाभवेत् ॥
रामवत्सोमसेनानीमुद्रितेयंतदाक्षरैः ।
हिमालयोत्तरेतीरेअश्वकर्णोमहाद्रुमः ॥
तत्रशूलंसमुत्पन्नंतत्रैवनिधनंगतः ।
मंत्रेणानेनमुद्रांवुनिपीतंरुसमंत्रितम् ॥
सद्यःशूलहरंप्रोक्तंसत्यंभालुकिभाषितं ।
अनयामुद्रयातप्तंतैलमग्नांसुनिश्चितम् ॥
लेपितंहंतिवेगेनशूलंयत्रक्वचिद्भवेत् ।
सद्योत्रत्तुकरंनार्याःसद्योनेत्ररुजापहं ॥

अर्थ–नीलाथोथेका सत्व, नागताम्र (कैचुएका तांमा) इनकी बराबर सोना डालकर अंगूठी बनाना चाहिये, यह अंगूठी तत्काल स्थावर और जंगम विषों तथा भूतबाधा और डाकिनीका विष इनको दूरकरे, उसको दाहिने हाथकी छोटी अंगुलीमें नित्य पहरना चाहिये, **रामवत्सोमसेनानी** इस मंत्रसे जलको सात वार मंत्रित कर उसमें अंगूठीको धोकर पिलानेसे शीघ्रही शूल (दर्द) का नाश करे, यह भालुकी महात्माने कहा है। इस अंगूठीको तेलमें डालकर अग्निपर औटावे, फिर इस तेलको दर्दकी जगह लगावे तो दर्द उसी समय नष्ट होवे, कष्टीस्त्री इसके धुले जलको पीवे तो तत्काल प्रसूती होवे, और नेत्ररोगीके नेत्र अच्छे होवें ।

अथ तुत्थसत्वमारण.

पाषाणभेदीमत्स्याक्षीद्रवैःद्विगुणगंधकम् ।
सत्वस्यलेपयेत्पिष्टंरुध्वागजपुटेपचेत् ॥
समांशेनपुनर्गंधंदत्वाद्रावैश्चलोलयेत् ।
एवंसप्तपुटैःपक्वसत्वभस्मंभवेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ–पाषाणभेद और मछेछीके रसमें सत्वसे दूनी गंधक लेकर खरल करे, पीछे उस पिष्टीमें सत्वका लेपनकर गजपुटमें फूंके, फिर सत्वके समान गंधक डाल मछेछी और पाषानभेदके रसमें खरलकर गजपुटमें फूंके इस प्रकार सातवारमें सत्वकी भस्म निश्चय होवे।

दूसरी विधि.

सत्वस्यद्विगुणंसूतंगंधंदेयंचतुर्गुणं ।
जंबीराम्लेनतत्सर्वंमर्दयेत्प्रहरत्रयम् ॥
आदौमूषान्तरेक्षिप्त्वाथसूरस्यतुपत्रकम् ।

आछाद्यधूर्त्तपत्रैश्चरुध्वागजपुटेपचेत् ॥
स्वांगशीतंतुसंचूर्ण्यमृतंभवतिनिश्चितम् ।
एवंसप्तविधंकृत्वानिरुत्थंचमृतंभवेत् ॥

अर्थ—सत्वसे दूना पारा और चौगुनी गंधक डालकर जंबीरीनींबूके रसमें ३ प्रहर मर्दनकर पीछे मूषामें रख धतूरेके पत्तोंसे आच्छादित कर गजपुटमें फूंकदे, जब स्वांग शीतल होजाय तव चूर्ण करे इस प्रकार सात-वार करनेसे निरुत्थभस्म होवे ।

तुत्थसत्वभस्मके गुण.

निश्शेषदोषविषहृत्गुदशूलमूलकुष्ठाम्लपित्ति कविबंधहरंपरंच । रासायनंवमनरेचकरंगर ग्रंचित्रापहंगदितमत्रमयूरतुत्थम् ॥

अर्थ—सकल दोषोंको, विष, गुदाका शूल, बवासीर, कोढ, अम्लपित्त, और अफराको दूर करे, रसायन है, वमन और रेचन करे चित्रकुष्टको हरे, ये गुण नीलेथोथेके कहे हैं।

तुत्थ विकार शांति.

जंम्बीररसमादाययःपिवेच्चदिनत्रयं ।
तस्यतुत्थकशांतिस्यात्तद्वछाजेनवारिणा ॥

अर्थ—जंबीरीका रस पीनेसे तुत्थक विकार शांति होवें, अथवा धानकी खीलोंका पानी पीनेसेशांति होवें ।

इतिश्री रसराजसुंदरे तुत्थप्रकरणम्

चपल.

यत्रजातौनागवंगौचपलस्तत्रजायते ।
गौरश्वेतारुणकृष्णश्चपलस्तुचतुर्विधः ॥
हेमाभश्चैवताराभोविशेषाद्रसवन्धकः ।
शेषौतुमध्यौलाक्षावच्छीघ्रद्रावीतुनिष्फलौ॥
वंगवद्द्रवतेवन्हौचपलस्तेनकीर्त्तितः ॥
क्षीयतेनापिवन्हिस्थःसत्वरूपोमहावलः ।
ईदृशश्चपलोवास्याद्धादीनांवादसिद्धये ॥

अर्थ—जिस खानसे सीसा और रांग प्रगट होता है । उसीसे चपल (सीसेका भेद) प्रगट होता है वह गोर, सफेद, लाल और कालेके भेदसे चार प्रकारका है । इनमें सोंने और रूपेके समान जो चपल हैं उनको पारदके बंधन कर्त्ता जानने, और बाकी लाखके समान शीघ्र अग्निमें पतले हो जाते हैं उन्हें निष्फल जानना, वंग (रांग) के समान अग्निपर पतले होनेसे इनको चपल कहते हैं (अब कार्य्यमें ग्रहणयोग्यमें लक्षण कहते हैं) जो अग्निमें फूंकनेसे नष्ट नहीं होता, सत्वरूप, महाबली ऐसा चपल धातुवादकी सिद्धीके अर्थ लेना चाहिये ।

चपलका स्वरूप.

चपलस्फटिकच्छायःषड्सस्निग्धकोगुरुः ।
महारसेषुकेश्चिद्धिचपलःपरिकीर्त्तितः ॥
अयंतूपरसःकैश्चित्पठितोन्यैरसेषुच ।

अर्थ—चपल-स्फटिक मणिके समान स्वच्छ, छः कोनेवाला चिकना और भारी होता है, कोई आचार्य इसको महारसोंमें गणना करते हैं और कोई उपरसोंमें कहते हैं।

नाग संभवचपलके लक्षण.

त्रिंशत्पलमितंनागंभानुदुग्धेनमर्दितम् ।
विलिप्यपुटयेत्तावद्यावत्कर्षावशेषितम् ॥
नतत्पुटसहस्रेणक्षयमाप्नोतिसर्वथा ।
चपलोयंसमुद्दिष्टोवार्त्तिकैर्नागसम्भवः ॥
तत्पृष्ठहस्तसंस्पृष्टःकेवलोबध्यतेरसः ।

अर्थ—३० पल सीसा आकके दूधमें खरल कर संपुटमें रख फूंकदे जबतक १ कर्ष बाकी रहे तबतक ऐसा करता रहे, यह १ कर्ष बचाहुआ सीसा हजार पुटोंमेंभी नष्ट नहीं होवे, यह नागसंभव चपल कहाता है, इसको

हथेलीपर रख पारेके साथ मर्दन करे तो पारा बद्ध (कायम) होजाता है ।

चपल शोधनम्.

विषोपविषधान्याम्लैर्मर्दितश्चपलस्तथा। जंवीरकर्कोटकशृंगवेरैर्विभावनाभिश्चपलस्यशुद्धिः

अर्थ-विष, उपविष और कांजीमें खरल करनेसे तथा जंबीरी नींबू, ककोडा और अदरखके रसकी भावना देनेसे चपल शुद्ध होवे ।

चपल मारण.

मारयेत्पुटपाकेनचपलोगिरिमस्तके ।
ताम्रवन्मारणंचापिचपलस्यप्रशस्यते ॥

अर्थ-त्रायमाण अथवा मौलसिरीके पुटपाकसे चपलकी भस्म होवे, अथवा ताम्रके समान चपलका मारण करे ।

दूसरी विधि.

शैलंसुचूर्णयित्वातुधान्याम्लोपविषैर्विषैः
पिंडंवध्वातुविधिवत्पातयेच्चपलंतथा ॥

अर्थ-शिलाजीतका चूर्णकर उसमें चपलको डाल विष और उपविषसे गोला बांध संपुटकर फूंके तो चपल मरे ।

चपलका सत्व निकालना.

सत्वमंवरवद्ग्राह्यंसूतवंधकरंपरम् ।

अर्थ-चपलका-सत्व अभ्रक सत्वकी विधिसे निकालना चाहिये, चपलका सत्व पारेका बांधनेवाला है ।

चपलका गुण.

गुल्मामशूलशोषेषुप्रमेहेषुज्वरेषुच ।
प्रदरेषुप्रयोक्तव्यःचपलस्त्वमृतोपमः ॥
चपलोलेखनःस्निग्धोदेहलोहकरोमतः ।
रसराजसहायस्यात्तिक्तोष्णोमधुरोमतः ॥
त्रिदोषघ्नोतिवृष्यश्चरसवंधविधायकः ।

अर्थ-गोला, आमवात, शूल, शोष, प्रमेह, ज्वर, और प्रदररोग इनमें इस अमृतोपम चपलको देना चाहिये चपल-लेखन और चिकना है, देहको लोहके समान कठोर करे, पारेका सहायक है, तिक्त, गरम और मीठा है, त्रिदोषको दूर करे, अत्यंत वृष्य (शुक्र पैदा करनेवाला) है, पारेको बांधनेवाला है ।

कंकुष्ठ (मुरदाशंख)

हिमवत्पादशिखरेकंकुष्ठमुपजायते ।
तत्रैकंनलिकाख्यंचतदन्यद्रेणुकंमतं ॥

अर्थ-हिमालय पर्वतकी शिखरोंमें मुरदाशंख प्रगट होता है, वह दो प्रकारका है एक नलिकाख्य, दूसरा रेणुक ।

नलिकाके लक्षण.

पीतप्रभंगुरुस्निग्धंकंकुष्ठशिलयासमं ।
मृद्वतीवशलाकाभंसच्छिद्रंनलिकाभिधं ॥

अर्थ-पीला, भारी, चिकना, शिलाके समान, अत्यंत नम्र, सलाकाके सदृश जिसमें छिद्रहो उसे नलिक कंकुष्ठ कहते हैं यह श्रेष्ठ है

रेणुका कंकुष्ठके लक्षण.

रेणुकाख्यंतुकंकुष्ठंश्यामंपीतरजोन्वितं ।
त्यक्तसत्वंलघुप्रायःपूर्वस्माद्धीनसत्वकं ॥

अर्थ-रेणुका कंकुष्ठ काला, पीला, धूलसे लिहसा, सत्वरहित और हलका होता है, यह पहलेकी अपेक्षा हीनगुणवाला है ।

कंकुष्ठके नाम.

कंकुष्ठंकाककुष्ठंचवरांगंकोलवालुकं ।
उपधातुस्तुवंगस्यइतिभालुकिभाषितम् ॥

अर्थ-कंकुष्ठ, काककुष्ठ, वरांग, कोलवालुक, ये मुरदाशंखके नाम है, ये वंगकी उपधातु हैं, यह भालुकी आचार्यने कहा है ।

वाग्भटस्तु.

सद्योजातस्यकरिणःशकृत्कंकुष्ठमुच्यते ।

यद्वासद्यःप्रसूतस्यवाजिबालस्यविट्स्मृतं ॥
नालंवावाजिबालस्येत्येवंनानाविधंमतं ।
आप्तवाक्यात्प्रमाणंतुसर्वेषांवचनंजगुः ॥

अर्थ–वाग्भट ग्रंथकर्त्ता कहता है कि सद्यजात हाथीका विष्टा कंकुष्ठ है, अथवा सद्जाए घोडेके बच्चेकी विष्टा है, अथवा घोडेके बच्चेका नाल है, ऐसे अनेक प्रकारके मत हैं आप्त वाक्य प्रमाण होनेसे सबके वचन कहे हैं।

कंकुष्ठकी शुद्धि.

कंकुष्ठंशुद्धतांयातित्रिधाशुण्ठ्यंवुभावितं ।

अर्थ–सोंठके जलमें तीन वार भिजोनेसे कंकुष्ठकी शुद्धी होवे।

रसेरसायनेश्रेष्ठंनिःसत्वंबहुवैकृतं ।
सत्वोत्कर्षोस्यनप्रोक्तोयस्मात्सत्वमयंहितत् ।

अर्थ–शुद्ध किया मुरदाशंख-रस और रसायनमें श्रेष्ठ है, और जो सत्त्व रहित है सो बहुत विकार करता है, इसका सत्व निकालना नहीं कहा क्योंकि यह स्वयं सत्वरूप है।

मुरदाशंखके गुण.

कंकुष्ठंतिक्तकटुकंवीर्योष्णंचातिरेचनं ।
नाशयेदामपार्तिश्चरेचयेत्क्षणमात्रतः ॥
व्रणोदावर्त्तशूलार्त्तिगुल्मप्लीहगुदार्त्तिनुत् ।
कंकुष्ठंनाशयेच्छीघ्रंकठोदरजलोदरं ॥

अर्थ–कंकुष्ट-तीखा, कडवा, वीर्य्यकेरोगोंको दूर कर्त्ता, अत्यंत रेचन, आमवात नाशक, क्षणमात्रमें दस्त लावे, व्रण, उदावर्त्त, शूल, गोला, तापतिल्ली, बवासीर, कठोदर और जलोदरको मुरदाशंख शीघ्र नाश करे।

कंकुष्ठेपथ्यम्.

भजेदेनंविरेकार्थंग्राह्यंतुयवमात्रया ।
वर्बुराकुलिकाकाथजीरसौभाग्यटंकणं ॥
कंकुष्ठंविषनाशायभूयोभूयोपिवेन्नरः ।

अर्थ–विरेचनके अर्थ इसको जौके समान ग्रहण करे, और बंबूल, मेंढासिंगी, जीरा, सिंदूर और सुहागेकेसाथ मुरदाशंखको विषनाशनार्थ वारंवार सेवन करे।

रसक (खपरिया)

रसकोद्विविधप्रोक्तोदर्दुरःकारवेल्लकः ।
सदलोदर्दुरःप्रोक्तःनिर्दलःकारवेल्लकः ॥
सत्वपातेशुभःपूर्वोद्वितीयश्चौषधादिषु ।

अर्थ–रसक दो प्रकारका है, दर्दुर और कारवेल्लक, इनमें दलदार दर्दुर और दलरहित कारवेल्लक होता है, इनमेंभी सत्वपातनमें पहिला शुभ है, और औषधादिकमें दूसरा लेना।

पीतकृष्णस्तथारक्तःकचित्संदृश्यतेभुविः ।
नागार्ज्जुनेनसंदिष्टौरसकश्चकलंवुकौ ॥

अर्थ–पीला, काला और लाल खपरिया किसी २ पृथ्वीमें दीखता है नागार्जुन आचार्य्यने इसके रसक और कलंवुक दो भेद कहे हैं।

रसदर्पणेतु.

मृत्पाषाणगुडैस्तुल्यस्त्रिविधोरसकोमतः ।
पीतस्तुमृत्तिकाकारःश्रेष्ठस्यात्सतुपत्तलः ॥
गुडाभोमध्यमःस्थूलोःपाषाणाभःकनिष्ठकः॥

अर्थ–मिट्टी पत्थर और गुडके सदृश होनेसे खपरिया तीन प्रकारकी है। इनमें मिट्टीके आकार पीली और पत्रवान श्रेष्ठ है गुडके समान मध्यम और पत्थरके समान स्थूल अधम है।

रसपद्धतौ.

रसकंतुत्थभेदःस्यात्खर्परंचापितत्स्मृतम् ।
येगुणास्तुत्थकेप्रोक्तास्तेगुणारसकेस्मृताः॥

अर्थ–रसक-तुत्थका भेद है, इसे खर्परभी कहते हैं, जो गुण तुत्थमें हैं वही रसक (खपरिया) में हैं।

अथास्य शोधनम्.

कटुकालांवुनिर्यासैरालोड्यरसकंपचेत् ।
शुद्धंदोषविनिर्मुक्तंपीतवर्णतुजायते ॥

अर्थ–कडवीतूंबीके रसमें खपरियाको मिलाकर औटानेसे दोषरहित शुद्ध पीले वर्णकी होती है ।

द्वितीय प्रकार.

पुंसांचमूत्रेरसकस्यचूर्णगोमूत्रकेसत्वपचेद्दिनानि। एषोहिदोलावरयंत्रशुद्धः संयोजनीयः सकलेतुकार्य्ये ।

अर्थ–खपरियाको मनुष्यके मूत्र वा गोमूत्रमें दोलायंत्रद्वारा पचानेसे शुद्ध होवे इसको सर्व कार्य्योंमें योजना करे ।

तीसरा प्रकार.

खर्परःपरिसंतप्तःसप्तवारांनिमज्जितः ।
वीजपूररसस्यांतर्निर्मलत्वंसमश्नुते ॥

अर्थ–खपरियाको तपा २ कर सातवार बिजौरेके रसमें बुझानेसे शुद्ध होता है ।

चौथा प्रकार.

नृमूत्रेवाश्वमूत्रेवातक्रेवाकांजिकेथवा।
वृंताकमूषिकामध्येनिरुध्यगुटिकाकृतिः ॥
ध्माताध्मातासमाकृष्यढालयित्वाशिलातले।
प्रताप्यमज्जितंसम्यक्खर्परःपरिशुद्ध्यति ॥

अर्थ–खपरियाको मनुष्य वा घोडेके मूत्रमें अथवा छाछ तथा कांजीमें पीस गोला बनाय मूषामें रख कपर मिट्टीकर अग्निमें फूंके पीछे निकाल पत्थरपर पीस तपाय फिर मूत्रादिमें डबोवे इस प्रकार बहुत देरतक करनेसे खपरिया शुद्ध होवे ।

रसश्चरसकश्चोभौयेनाग्निसहनौकृतौ ।
देहलोहमयीसिद्धिर्दासीतस्यनसंशयः ॥

अर्थ–जिस पुरुषने रस (पारा) रसक (खपरिया) ये दोनों अग्निस्थायी करलिये, उसकी देह लोहके समान होजाती है यह निस्संदेह सिद्धि दायी है ।

अस्थिरोग्निगतोत्यर्थंदह्यतेक्षणमात्रतः ।
तस्यस्थैर्यकरंद्रव्यंनान्यदस्तीतिभूतले ॥

अर्थ–अग्निमें स्थिर न रहना, क्षणमात्रमें फुकजाना, ये खपरियाके धर्म हैं। इसको अग्नि स्थायी करने वाली औषधि पृथ्वी पर नहीं है, यह टोडरानंदने लिखा है, ।

अग्निस्थायी करनेकी विधि.

शुद्धंकिंचुलजंसत्वंतद्रसैर्वापिमार्दितम् ।
स्थैर्यंभजेत्सरसकोनान्यैःकोटिशतैरपि ॥

अर्थ–केंचुएके तांबेके बुरादेको केंचुएके रसमें घोटे इसके साथ खपरियाको अग्निमें रखे तो खपरिया अग्निस्थायी होवे, और करोड उपायोंसेभी अग्निस्थायी नहीं होवे, यहभी टोडरानंदने लिखा है ।

दूसरी विधि.

हरिद्रात्रिफलारालसिंधुधूमैःसटंकणैः ।
भल्लातयुक्तैर्पादांशैःसाम्लैसंमर्द्यखर्परम् ॥
लिप्तंवृंताकमूषायांशोषयित्वानिरुध्यच ।
मूषामुखोपरिन्यस्यखर्परंप्रधमेत्ततः ॥
खर्परेभवतेज्वालासानीलाभासितायदि ।
तदासंदंशतोमूषानीत्वाकृत्वाह्यधोमुखीं ॥
शनैरास्फालयेद्भूमौयथानालंनभज्यति ।
वंगाभंपतितंसत्वंसमादायनियोजयेत् ॥
एवंद्वित्रीचतुर्वारैःसर्वसत्वंविनिःसरेत् ।

अर्थ–हलदी, हरड, वहेडा, आंवला, राल सैंधानोन, मनसिल, सुहागा, और भिलाए, इनको खपरियाकी चतुर्थांश ले सबको नींबूके रसमें घोट पिट्ठीको वृंताकमूषा (बैंगनके आकार मूष) में रख मूषाको सुखाय बंदकर

अग्निमें रख बंकनालसैं धोंके, जब खपरियामें सफेद नीली ज्वाला निकलें तब मूषाको सहज सडासीसे पकड पृथ्वीपर इस प्रकार उडेले कि जिस्में सत्वकी नाली न टूटे, तो वंगके समान सत्व निकले इस प्रकार दो तीन या चार वारमें सब सत्व निकालकर कार्यमें लावे।

तीसरी विधि.

यद्वाजलयुतांस्थालींनिखनेत्कोष्टिकोदरे।
सच्छिद्रंतन्मुखेमल्लंतन्मुखेधोमुखींक्षिपेत् ॥
मूषोपरिशिखिश्चात्रभक्षिप्यमधमेद्दृढं।
पतितंस्थालिकानीरेसत्वमादाययोजयेत् ॥

अर्थ—अथवा जलयुक्त थालीको कोष्टिकाके भीतर रख उसमें जो छेदहो उसे मल्ल (मुख मूदनेके मसालें,) से बंदकर मूषाका मुख नीचेकी तरफ रखे, पीछे उस स्थालीके ऊपर अग्निरख खूब धोंके तो मूषामेंसे सत्व टपक २ कर उस थालीके जलमें गिरे, उसे कार्य्यमें लावे।

रसक मारण.

लाक्षागुडासुरीपथ्याहरिद्रासर्जटंकणैः।
सम्यक्तच्चूर्ण्यतत्पक्वंगोदुग्धेनघृतेनच ॥
सत्वंवंगाकृतिर्ग्राह्यंरसकस्यमनोहरम्।

अर्थ—लाख, गुड, राई, हरड, हल्दी, राल, सुहागा, इन सब औषधियोंको पीस खपरिया मिलाय और गोदुग्ध और घृतका संपुट दे अग्निमें रखकर फूंके तो वंगके समान सुंदर सत्व निकले।

तत्सत्वंतालकोपेतंनिक्षिप्यखलुखर्परे।
मर्दयेल्लोहदंडेनभस्मीभवतिनिश्चितम् ॥

अर्थ—उस खपरियाके सत्वमें हरितालको मिलाय खीपरेमें रख लोहेके मूसलेसे घोटे तो भस्म होवे।

तथा दूसरी विधि.

खर्परंपारदेनैवचूर्णयित्वादिनंपचेत्।
वालुकायंत्रमध्यस्थंशोभनंभस्मजायते ॥

अर्थ—खपरियाको पारेके साथ घोट वालुकायंत्रमें एक दिन पचावे तो सुंदरभस्म होवे

तीसरी विधि.

खर्प्परंपत्रकंकृत्वालवणांतर्गतंपचेत्।
जायतेशोभनंभस्मसर्वरोगापहंस्मृतम् ॥

अर्थ—खपरियाके पत्रकर नोनके बीच रख अग्नि देवे तो शुद्ध भस्म होवे, और सब रोगोंको हरण करे।

चौथी विधि.

हंसपदी, वंदाल, वडका दूध, आकका दूध थूहरकादूध, प्रत्येक दूधमें खपरियाको पृथक २ तीन २ आंच दे-तो भस्म हो। परंतु प्रत्येक दूधमें घोट सुखाय टिकडी बांध सरावसंपुटमें रख आंच देनी चाहिये।

अग्निस्थाई करनेकी दूसरी विधि टोडरानंदसे.

कन्यकादलमादायतद्दलंकारयेद्द्विधा।
एकस्मिन्तद्दलेधृत्वाखर्परंमापवत्कृतम् ॥
द्वितीयमपरंदत्वोपरिष्टात्कन्यकादलं।
द्वितीयमपरंचास्तेयद्विधाकृतमस्तुतत् ॥
निरुध्यतेदलंतत्तुखरसूत्रस्यमध्यगं।
क्रियतेस्वेदतेतावद्यावन्सूत्रक्षयोभवेत् ॥
एवंदिनत्रयंशोध्यक्रियतेतद्दलस्यच।
त्रिवारंक्रियतेप्येवंतद्दलेखर्परस्यच ॥
अक्लेशंजायतेनूनमग्निस्थायीचखर्परः।
यदिवन्हौविनिक्षिप्तःखर्परोधूमवान्भवेत् ॥
तदापुनर्दलेदेयःखर्परोद्दढतांव्रजेत्।
क्षारिकालवणेपश्चात्खर्परःपाच्यतेपुनः ॥
दिनद्वयंभवेदेवंपातःखर्परकस्यच।
पुनरग्नौपरीक्षेतखर्परोदृढमुत्तमः ॥

यदिधूम्रोद्गमोभूयात्खर्परःपाच्यतेतदा ।
पुनरादीयतेतत्रभूनागतनुजद्रवः ॥
भावयेत्पुटयेत्सप्तभावनाभिश्चखर्परः ।

अर्थ–ग्वारपट्ठेको लेकर उसकी दो फांक कर एकमें खपरियाके छोटे २ टुकडे कर रखे और दूसरेसे ढक बांध दे और गधाके मूत्रमें मूत्र सूखने पर्य्यंत स्वेदन करे, ऐसे ३ दिन स्वेदन कर घीग्वारके पट्ठोंसे निकाल नवीन घीग्वारके पट्ठोंमें उसी प्रकार रख स्वेदन करे, ऐसे ३ बार यानी ९ दिन स्वेदन करनेसे क्लेशरहित अग्निमें ठहरने वाला खपरिया होवे, उसको अग्निमें रखकर परीक्षा करे, अगर धूँआं न निकले तो जानेकि शुद्ध होगया। जो धूँआं निकले तो फिर घीग्वारके पट्ठोंमें रख स्वेदन करे तो खपरिया दृढ हो। तदनंतर खारीनोनमें दो दिन पचावे, तो खपरिया मरे, इस प्रकार करके फिर अग्निपर रखे जो धूँआं निकल तो फिर पचावे, ७ भावना केंचुएके अर्कको दे तो खपरिया निश्चय अग्निस्थायी और दृढ होवे ।

खपरियाके गुण.

त्रिदोषजित्पित्तकफातिसारक्षयज्वरघ्नोरस कोतिरूक्षः । नेत्रामयानांमकरोतिनाशंस्या द्रंजकःकामलनाशनश्च ॥

अर्थ–त्रिदोषको जीते, पित्त, कफ, अतिसार, खई और ज्वरका नाश करे, अत्यन्त रूक्ष है, नेत्र विकारोंका नाश करे, देहमें रंग पैदाकरे और कामला रोगको दूर करे ।

खर्परानुपान.

तद्भस्ममृतकांतेनसमेनसहयोजयेत् ।
अष्टगुंजामितंचूर्णंत्रिफलाकाथसंयुतं ॥
कांतपात्रस्थितंरात्रौतिलजप्रतिवापकं ।
निषेवितंनिहन्त्यशुमधुमेहमपिध्रुवम् ॥
पित्तक्षयंचपांडुंचश्वयथुंगुल्ममेवच ।
रक्तगुल्मंचनारीणांप्रदरंसोमरोगकं ॥
योनिरोगानशेषांश्चविषमाँश्चज्वरानपि ।
रजशूलंचश्वासंचहिध्मिनांचविशेषतः ॥

अर्थ–खपरियाकी भस्मके समान कांतलोहकी भस्म डाले, और दोनोंको मिलाय ८ गुंजाके प्रमाण त्रिफलाके काढे और तिलके तेलमें मिलाय रात्रिभर कांतलोहके पात्रमें रख छोडे इसका सेवन मधु प्रमेहको दूर करे, पित्तरोग, खई, पीलिया, सूजन, वायगोला, रक्तगुल्म, स्त्रियोंके प्रदररोग, सोमरोग, संपूर्ण योनिरोग, विषमज्वर, रजशूल, श्वास, हिचकी, इन रोगोंको यह खपरियाकी भस्म दूर करे, इस प्रकार शोधित खपरिया मालती वसंतमें डालते हैं।

अशोधित खर्परके दोष.

अशुद्धःखर्प्परःकुर्य्याद्वांतिभ्रांतिविशेषतः
तस्माच्छोध्यःप्रयत्नेनयावद्वांतिविवर्जितः ॥

अर्थ–अशुद्ध खपरिया वांति और भ्रांति करती है, इससे यत्नपूर्वक शोधना चाहिये जबतक वांति विवर्जित होवे ।

रसक विकार शांति.

रसकनिषेवणतोयदिरोगाःप्रादुर्भवंतिमनुजानां । तेनाशमाप्नुवंतिपीतंगोमूत्रसप्ताहात् ॥

अर्थ–यदि खपरियाके खानेसे मनुष्योंके विकार होवें तो सात दिन गोमूत्र पीनेसे नाश होवें ।

अथ सिंदूरप्रकरणम्.

सिंदूरोत्पत्ति

महागिरिषुचाल्पीयपाषाणांतस्थितोरसः ।
शुष्कश्शोणःसमिर्दिष्टोगिरिसिंदूरसंज्ञया ॥

अर्थ–हिमालयादि बडे २ पर्वतोंके छोटे

२ पत्थरके टुकडोंमें रहा जो पारा वह सूर्यकी किरणोंसे सूखकर लाल होगया उसे सिंदूर कहते है।

तथा नाम और गुण.

सिंदूरंरक्तरेणुश्चनागगर्भचसीसकं।
सीसोपधातुःसिंदूरंगुणैस्तत्सीसवन्मतं।
संयोगजप्रभावेणतस्याप्यन्येगुणाःस्मृताः॥

अर्थ–सिंदूर, रक्तरेणु, नागगर्भ, और सीसक ये सीसेके नाम हैं यह सिंदूर-सीसेका उपधातु है, और गुणोंमें सीसेके समान है लेकिन संयोग प्रभावसे औरभी गुण कहे हैं।

औषध योग्य सिंदूर.

सुरंगोग्निसहःसूक्ष्मस्निग्धःस्वच्छोगुरुर्मृदुः।
सुवर्णकरजःशुद्धःसिंदूरोमंगलप्रदः॥

अर्थ–उत्तम रंगदार, अग्नि सहनेवाला, सूक्ष्म, चिकना, स्वच्छ, भारी, नरम और सुवर्ण-रजत-खानका, शुद्ध ऐसा मंगल देनेवाला है

शोधन.

दुग्धाम्लयोगतस्तस्यविशुद्धिर्गदिताबुधैः।

अर्थ–दूध और खटाईके योगसे पंडितोंने सिंदूरकी शुद्धी कही है।

दूसरी विधि.

सिंदूरंनिंबुकद्रावैःपिष्ट्वाघर्मेविशोषयेत्।
ततस्तंदुलतोयेनयथाभूतंविशुद्धयति॥

अर्थ–सिंदूरको नींबूके रसमें घोटकर धूपमें सुखावे पीछे चांवलोंके पानीसे घोटकर धूपमें सुखावे तो शुद्ध होवे।

सिंदूरके गुण.

सिंदूरमुष्णंवीसर्पकुष्ठकंडूविषापहं।
भग्नसंधानजननंव्रणशोधनरोपणम्॥

अर्थ–सिंदूर-गरम है, तथा विसर्प, कुष्ट, खुजली, और विषका नाशकरे, हड्डियोंको जोडे, व्रणको शुद्ध करे और भरे।

सिंदूरमारणंतद्वत्सत्वपातंतथैवच।
भक्षणस्यप्रयोगोपिनदृष्टकुत्रचिन्मया॥

अर्थ–सिंदूरका मारण, सत्वपातन और खानेकी विधि हमने कहीं लिखी नहीं देखी इस कारण नहीं लिखी।

तथाच.

सिंदूरस्यप्रयोगोहिनदृष्टःकुत्रचित्पृथक्।
तस्माद्युक्तस्थलेयोज्यमुपदेशगुरोरिति॥

अर्थ–सिंदूरका प्रयोग किसी ग्रंथमें नहीं लिखा देखा, इससे जहां योग्य हो उस जगह मल्हम और लेपादिकोंमें योजना करना यह गुरुउपदेश है।

ग्रंथान्तरे.

गिरिसिंदूरकंयत्तुगिरौपाषाणजंभवेत्।
किंचिद्धिंगुलतुल्यंतद्रसबंधेहितंविदुः॥
धातुवादेपितत्पूज्यंनेत्ररोगघ्नमीरितम्।

अर्थ–गिरिसिंदूर पहाडोंके पत्थरोंसे पैदा होता है इसमें कुछ गुण हिंगुलके समान हैं, यह रसबंधनमेंभी लेना चाहिये, और यह नेत्ररोगोंको दूर करता है।

लोहकी उपधातु जो कीटी है उसके शोधन, मारण और गुण पीछे कीटी प्रकरणमें लिख आये हैं।

अथोपरस प्रकरण प्रारंभः

द्विधासूतोत्रिधागंधोष्टधाखंतालमष्टधा।
भिन्नांजनंचकासीसंगैरिकंत्रिरसाइमे॥

अर्थ–दो प्रकारका पारा, तीन प्रकारकी अभ्रक, आठही प्रकारकी हरताल, तथा सुरमा, कसीस और तीन प्रकारके गेरू ये रस हैं। परंतु ये रस नहीं हैं उपरस हैं क्योंकि पूर्व पारेके प्रकरणमें लिख आये हैं।

एकएवरसोज्ञेयःवहुधोपरसाःस्मृताः ।

अर्थ–अर्थात् रस जो पारा है वह एकही है और उपरस वहुतसे हैं। इसीसे गंधक, अभ्रकादिकी उपरस संज्ञा है, इनमें पारे और गंधकका प्रकरण लिख चुके हैं, अब क्रमसे अभ्रकादिकोंको लिखते हैं ।

तत्रादौ अभ्रक प्रकरणम्.

तस्योत्पत्ति.

पुरावधायवृत्रस्यवज्रिणावज्रमुद्धृतं ।
विस्फुलिंगास्ततस्तस्यगगनेपरिसर्पतः ॥
तेनिपेतुर्घनध्वानाछिखरेषुमहीभृतां ।
तेभ्यएवसमुत्पन्नंतत्तद्गिरिषुचाभ्रकं ॥
तद्वज्रवज्रजातत्वाद्भ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
गगनात्पतितंयस्याद्गगनंचततोमतम् ॥

अर्थ–पहले वृत्रासुर दैत्यके मारनेको इंद्रने वज्र उठाया, उससे अग्निकी चिनगारी निकलकर सव आकाशमें फैलगयीं, वे मेघके समान शव्द करती हुई पर्वतोंपर गिरीं, उनसे उन पर्वतोंमे अभ्रक उत्पन्न हुई, इसीसे इसको वज्र कहते है । और अभ्रसे–जो प्रगटी इसीसे इसकी अभ्र संज्ञा है, और गगन (आकाश) से गिरी इसलिये इसको **गगन** कहते हैं ।

तथा उत्पत्ति.

कदाचिद्गिरिजादेविहरंदृष्ट्वामनोहरं ।
मुमोचयत्तदावीर्यंतज्जातंशुभ्रमभ्रकम् ॥

अर्थ–एकसमय महादेवजीके सुंदर स्वरूपको देख श्रीपार्वतीजीका वीर्य स्खलित हुआ, उसीसे यह अभ्रक प्रगट हुआ ।

तथाभ्रकजातयः

ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्तस्याचतुर्विधं ।
क्रमेणैवसितंरक्तंपीतंकृष्णंचवर्णतः ॥

अर्थ–ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्रके भेदसे अभ्रक चार प्रकारकी है । उन चारोंके क्रमसे सफेद, लाल, पीत, और काले वर्ण हैं ।

चारोंवर्ण परत्वकार्य.

प्रशस्यतेसितंतारेरक्तंतत्ररसायने ।
पीतंहेमनिकृष्णंतुगदेशुद्धतयापिच ॥

अर्थ–चांदीके कर्ममें सफेद अभ्रकलेनी, रसायन कर्ममें लाल, सुवर्ण कर्ममें पीली, और काली अभ्रक औषध कर्ममें तथा स्वस्थदेहधारियोंको लेनी चाहिये ।

कृष्णाभ्रकके भेद.

पिनाकंदर्दुरंनागंवज्रंचेतिचतुर्विधम् ।
कृष्णाभ्रकथितंप्राज्ञैस्तेषांलक्षणमुच्यते ॥

अर्थ–पिनाक, दर्दुर, नाग, और वज्र ये चारभेद काली अभ्रकके पंडितोंने कहे हैं । इनके लक्षण कहते हैं ।

पिनाक अभ्रकके लक्षण.

मुंचत्यग्नौविनिक्षिप्तंपिनाकंदलसंचयं ।
अज्ञानाद्भक्षणंतस्यमहाकुष्ठप्रदायकम् ॥

अर्थ–पिनाक अभ्रक अग्निमें डालनेसे दलसंचय अर्थात् पत्तोंको छोडती है यह अज्ञान वस होकर खानेसे महाकुष्ठ करती है ।

दर्दुरके लक्षण.

दर्दुरंत्वग्निनिक्षिप्तंकुरुतेदर्दुरध्वनिं ।
गोलकान्वहुशःकृत्वातस्यान्मृत्युप्रदायकम् ।

अर्थ–दुर्दर अभ्रक अग्निमें डालनेसे मेंडककीसी ध्वनि करे, तथा पेटमें गोलेका रोग प्रगट करे इसके भक्षणसे मृत्यु होवे ।

नागके लक्षण.

नागंतुनागवद्वन्हौफूत्कारंपरिमुंचति ।
तद्भक्षितमवश्यंतुविदधातिभगंदरं ॥

अर्थ–नागअभ्रक अग्निमें डालनेसे सांपके समान फुंकार मारे, इसके खानेसे भगंदर

रोग अवश्य होवे ।

वज्राभ्रकके लक्षण.

वज्रंतुवज्रवत्तिष्ठेन्नचाग्नौविकृतिंव्रजेत्
सर्वाभ्रेषुवरंवज्रंव्याधिवार्धिक्यमृत्युजित् ॥

अर्थ–वज्राभ्रक अग्निमें डालनेसे वज्रके समान जैसीकी तैसी रहजाय, विकारको प्राप्त न होवे यह सबमें श्रेष्ट है व्याधि बुढापा तथा मृत्युको दूर करती है ।

तथा दूसरे लक्षण.

यदंजननिभंक्षिप्तंनवन्हौविकृतिंव्रजेत् ।
वज्रसंज्ञंहितंयोज्यमभ्रंसर्वत्रनेतरम् ॥

अर्थ–जो अभ्रक काला तथा अग्निमें तपानेसे विकारको प्राप्त नहो, वह वज्राभ्रक है, यह सर्वत्र हितकारक और योग्य है, दूसरे प्रकारका अच्छा नहीं होता ।

दिशापरत्व अभ्रक.

अभ्रमुत्तरशैलोत्थंबहुसत्वंगुणोत्तरं ।
दक्षिणाद्रिभवंस्वल्पसत्वमल्पगुणोत्तरं ॥

अर्थ–उत्तरके पर्वतोंसे प्रगट अभ्रकमें सत्व बहुत होता है, और गुणभी बहुत हैं तथा दक्षिणके पर्वतोंसे प्रगटीहुईमें सत्व और गुण कम होते हैं ।

भूमि लक्षण.

अभ्रगृहेतस्यथलंभिपग्भिस्तद्खानयित्वा पुरुषप्रमाणं तद्वारवत्सत्वफलप्रदंस्याद्गुणाधिकंस्वल्पगुणंततोन्यत् ।

अर्थ–अभ्रक लेनी होतो उसकी खानको पुरुषके समान गहरी खोदे, जब कीचके समान निकले तब लेवे, यह बहुत सत्व तथा अधिक गुणदाता है, इससे दूसरी हीनगुण जाननी ।

मारणार्थ अभ्रकलेना.

गजहस्तादधस्ताद्यत्तत्स्थितंभारवत्तरं ।
खननेभ्रंहितंग्राह्यंमारणार्थंगुणाधिकं ॥

अर्थ–आठ हाथ नीची जो भारवान अभ्रक है उसे खोदकर मारणार्थ लेनी चाहिये, यह गुणोंमें श्रेष्ठ है ।

तथाभ्रंकृष्णवर्णाभंकोटिकोटिगुणाधिकं ।
स्निग्धंपृथुदलंवर्णसंयुक्तंभारतोधिकम् ॥
सुखनिर्मोचपत्रंचतदभ्रंशस्तमीरितम् ।

अर्थ–कृष्णाभ्रकमें करोडों गुण हैं (इसके लक्षण) जो चिकनी और मोटे दलकी हो तथा सुंदर वर्णयुक्त बहुत भारी और जिसके पत्र सहजमें अलग होजायँ वह अभ्रक श्रेष्ठ है।

अशोधिताभ्रमारणे दोषमाह.

पीडांविधत्तेविविधान्नराणांकुष्ठंक्षयंपांडुगदंचशोफं । हृत्पार्श्वपीडांचकरोत्यशुद्धमभ्रंहि तद्गुरुवन्हिहृत्स्यात् ॥

अर्थ–मनुष्योंकैं अनेक प्रकारकी पीडा करे । तथा कोढ, खई, पीलिया, सूजन, हृदय और पसवाडोंमें पीडा करे । भारी है, जठराग्निको मंद करनेवाली ये अपगुण अशोधित अभ्रक करती है ।

अभ्रक शोधनम्.

वज्राभ्रकंवन्हितप्तंनिःक्षिपेत्सप्तसप्तधा ।
गोदुग्धेत्रिफलाक्वाथेकांजिकेसुरभीजले ॥
शुद्धिमायातिमलतःप्रक्षिप्तंवात्रिधात्रिधा ।

अर्थ–वज्राभ्रकको तपा २ कर गोदुग्ध, त्रिफलाके काढे, कांजी, और गोमूत्रमें सात २ वार अथवा तीन २ वार बुझावे तो शुद्ध होवे।

दूसरा प्रकार.

अथवाबदरीक्वाथेध्मातमभ्रंविनिःक्षिपेत् ।
मर्दितंपाणिनाशुष्कंधान्याभ्रादतिरिच्यते ॥

अर्थ–अभ्रकको तपा २ कर बार २ बेरके

काढेमें बुझावे, पीछे सुखाकर हाथोंसे मर्दन करे तो धान्याभ्रकसेभी उत्तम होवे ।

तीसरी विधि.

आदौसुतापितंकृत्वागगनंसप्तधाक्षिपेत् ।
निर्गुंडीस्वरसेसम्यग्गिरिदोषप्रशांतये ॥

अर्थ–प्रथम अभ्रकको तपा २ कर सातवार सम्हालूके रसमें बुझावे तो अभ्रकका गिरि (पर्वत) का दोष शान्ति होवे ।

धान्याभ्रक करण विधि.

चूर्णाभ्रंशालिसंयुक्तंवध्वाकंवलकेश्लथं ।
त्रिरात्रंकांजिकेस्थाप्यंतक्लिन्नंमर्दयेद्दृढं ॥
तन्नीरेएवयत्नेनयावत्सर्वंस्रवेत्ततः ।
कंवलाद्गलितंश्लक्ष्णंमारणादौप्रशस्यते ॥

अर्थ–अभ्रक चूर्ण और धानका तुष दोनोंको कंवलमें ढीला बांधकर तीनरात कांजीमें भिगोकर गीलेहीको उस जलसे खूब मर्दन करे, इस प्रकार कंवलसे अभ्रकके रवा निकल कर सब पानीमें आजावें, इसको धान्याभ्रक कहते हैं । यह मारण कर्ममें प्रशंसा योग्य है।

दूसरी विधि.

चूर्णाभ्रंशालिसंयुक्तंवस्त्रेवद्धंहिकांजिके ।
निर्यातंमर्दनात्तद्धान्याभ्रमितिकथ्यते ॥

अर्थ–अभ्रकके टुकडोंमें धानको मिलाय कपडेमें बांध कांजीमें भिगोय मीडडाले. उस मीडनेसे जो पानीमें महीन अभ्रक निकले उसे धान्याभ्रक कहते हैं, यह रसवाग्भटके वार्त्तिकाध्यायमें लिखा है ।

मारण.

अंगारोपरिविन्यस्तंध्मातमेवदलीकृतं ।
निक्षिपेत्कांजिकेकृष्णमभ्रकंवन्हिसन्निभं ॥
ततोस्यकांजिकस्थस्यचिरंघर्मेविधारयेत् ।
पेषणंचविधातव्यंपौनपुण्येनपंडितैः ॥
चाङ्गेरीस्वांगनिर्यासैरप्येवविधिमाचरेत् ।
तण्डुलीयकमूलस्यरसेनापिततःपरम् ॥
ततोस्मिन्खदिरांगारैर्नीतेनीतेग्निवर्णतां
क्षिपेत्पुनःपुनःक्षीरेयथानिश्चंद्रिकंभवेत् ।

अर्थ–काली अभ्रकको अंगारोंपर तपा २ कर जुदे २ वर्ककर कांजीमें भिगोकर पात्रको धूपमें रखदे, पीछे निकाल वारंवार बुद्धिमान वैद्य पीसे, पीछे चूकाके रसमें भिगोकर पीसे, तदनन्तर चौलाईकी जडके रसमें भिगोकर पीसे (परन्तु यह यादरहे कि रसमें भिगोकर दो तीन दिन धूपमें रखकर पीसा जाय) पश्चात् टिकिया बांधकर सुखाय बार २ खैरके कोलेमें तपा २ कर दूधमें बुझावे जबतक निश्चन्द्र न हो यह मारणकी साधारण विधि कही है ।

मारणकी दूसरी विधि.

धान्याभ्रंगुडतुल्यंचश्रेष्ठंक्षीरेणमर्दितं ।
कुर्य्यात्सुचक्रिकांशुष्कांसम्यग्गजपुटेपचेत् ॥
ततोधत्तूरपत्तूरकुमारीशशिवाटिका ।
प्रत्येकंस्वरसेनैवपुटाद्दाशुमृतिंव्रजेत् ॥

अर्थ–धान्याभ्रकके समान गुड लेकर गोदुग्धमें घोटे, पीछे टिकिया बनाकर धूपमें सुखाले, और गजपुटमें रखकर फूंकदे पश्चात् निकाल धतूरेके पत्तोंके साथ घोट गजपुटमें फूंके, इसी प्रकार जलपीपल. ग्वारपाठे और शशिवाटिका (कमोदनी) के रसकी भावना देतो अभ्रक शीघ्र निश्चंद्र भस्म होवे ।

तथा तीसरी विधि

केनाप्यस्यतृणस्यापिरसेनापिप्रमर्दितम् ।
पुटितंदशधाभस्मंनिश्चंद्रंजायतेध्रुवम् ॥

अर्थ–केना (कुना) तृणके रसमें धान्याभ्रकको घोटकर दशपुट देवे तो निश्चंद्र (चम-

क रहित) भस्म निश्चय होवे । यह रससिंधुमें लिखा है ।

चौथी विधि.

धान्याभ्रकस्यभागैकंभागार्द्धंटंकणस्यच ।
पिष्ट्वातदंधमूषायांरुध्वातीव्राग्निनापचेत् ॥
विचूर्ण्ययोजयेद्योगेभेषजानामसंशयः ।

अर्थ–धान्याभ्रक १ भाग, सुहागा आधाभाग, दोनोंको पीस अंधमूषामें रख बंदकर तीव्र अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजाय तब निकाल पीसकर औषधियोंके योगमें दे ।

पांचवीं विधि.

कृत्वाधान्याभ्रकंतच्चशोधयित्वाविमर्दयेत् ।
वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यक्गजपुटेक्षिपेत् ।
पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसप्तवारान्पुनःपुनः ॥
ततोवटजटाक्काथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयं ।
म्रियतेनात्रसंदेहःप्रयोज्यःसर्वकर्मसु ॥

अर्थ–प्रथम धान्याभ्रक कर ककरौंदेके रसमें १ दिन खरल करे पश्चात् दो २ पैसे भरकी टिकियां बांध धूपमें सुखा लेवे, और टिकियोंके ऊपर नीचे आकके पत्ते रख एक ठीकरेमें दो सेर उपलोंकी आंच दे इस पूर्वोक्त क्रियाको १४ बार करे [इसी तरह गोमूत्रमें एक २ दिन घोटकर आंच दे ऐसे ७ आंच दे, इसी प्रकार ७ आंच त्रिफलाके रसमें घोटकर दे और ७ आंच आकके दूधमें घोटकर दे] और ३ आंच वटकी जटाओंके रसमें घोटकर दे और विशेष लालकिया चाहे तो ७ आंच दे तदनंतर इसी रसमें घोटकर गजपुटमें फूंके तो अभ्रककी निश्चंद्रलाल भस्म होवे, इसको दो रत्ती इलायचीके साथ दे ।

छठी विधि.

धान्याभ्रकस्यभागौद्वौभागैकंशुद्धगंधकम् ।
वटक्षीरेणसंमर्द्यअंधमूषांनिरोधयेत् ॥
पचेद्गजपुटेनैववारमेकंमृतोभवेत् ।

अर्थ–धान्याभ्रक २ भाग, शुद्ध गंधक १ भाग, दोनोंको वडके दूधमें घोंट अंधमूषा संपुटमें रख गजपुटकी आंच दे तो एकही आंचमें अभ्रक भस्म होवे । यह एकपुटी भस्म है।

सातवीं दशपुटी भस्म.

धान्याभ्रंकासमर्दस्यरसेनपरिमर्दितं ।
पुटितंदशवारेणम्रियतेनात्रसंशयः ॥
तद्वन्मुस्तारसेनापितंदुलीयरसेनच ।

अर्थ–धान्याभ्रकको कसौंदीके रसमें घोट २ कर दस आंच देवे, तो अभ्रक निस्संदेह मरे । इसी प्रकार नागरमोथाके रस वा चौलाईके रसमें घोटकर दशपुट देनेसेभी अभ्रकभस्म हो।

आठवी साठ पुटी भस्म.

पीतामलकसौभाग्यपिष्टंचक्रीकृताभ्रकं ।
पुटितंषष्टिवाराणिसिंदूराभंप्रजायते ॥
क्षयाद्यखिलरोगघ्नंभवेद्रोगापनुत्तये ।

अर्थ–धान्याभ्रकमें हारिताल आंवलेका रस और सुहागा मिलाकर घोटे, पीछे टिकरी बनाकर अग्नि दे, इस प्रकार ६० अग्नि देनेसे सिंदूरके समान लालभस्म होवे । यह भस्म क्षयादिक सकल रोगोंगो नाश करे ।

नवीं ४१ पुटी भस्म.

धान्याभ्रकंसमादायमुस्ताक्काथैर्दिनत्रयं ।
तद्वत्पुनर्नवानीरैःकासमर्दरसैस्तथा ॥
नागवल्लीदलरसैःसूर्य्यक्षारैःपृथक्पृथक् ।
दिनेदिनेमर्दयित्वाक्काथैर्वटजटोद्भवैः ॥
दत्वापुटत्रयंपश्चात्रिपुटैःस्नुकजटाजलैः ।
त्रिगोक्षुरकषायेण।त्रिपुटेद्वानरीजलैः ॥
मोचाकंदरसैःपाच्यंत्रिवारंकोकिलाक्षकैः ।
रसैःपुटेत्ततोधेनुक्षीरैरष्टपुटेन्मुहुः ॥

दध्नाघृतेनमधुनास्वच्छयासितयातया ।
एकमेकंपुटंदद्यादभ्रमेवंमृतिर्भवेत् ॥
सर्वरोगहरंव्योमजायतेयोगवाहकम् ।
कामिनीमददर्पघ्नंशस्तंमरणनाशनम् ॥
वृष्यमायुष्करंभुक्तंप्रजावृद्धिकरंपरम् ।

अर्थ–धान्याभ्रकको ३ दिन मोथाके काढेमें मर्दन करे, फिर पुनर्नवा (सांठ) के रस, कसोंदीके रस, पानके रस, शोरा, इन प्रत्येकमें तीन २ पुट दे। तदनंतर वडकी जटाके रसके तीन पुटदे, और थूहरके दूध, गोखरूके काढे, कौंचके रस, मोचाकंद (कदलीकंद) के रस, तालम खानेके रस वा काले गन्नेके रस प्रत्येकमें तीन २ पुट देकर गोदुग्धके आठपुट दे, तदनंतर दही, मक्खन, सहत, सफेद चीनी, प्रत्येकका एक २ पुट दे (प्रथम १ दिन जिस औषधिमें घोटे उसको रात्रिमें आंच दे और प्रातःकाल निकाल कर उसीमें घोटे यदि जिस औषधिका एकही पुट लिखा है उसे १ दिन घोटकर रात्रिमें अग्नि देकर दूसरे दिन दूसरी औषधिमें घोटे, यह पुट देनेकी प्रणाली है) इस प्रकार इन सब औषधियोंका पुट देनेसे अभ्रककी दिव्य भस्म होवे। यह सब रोगोंको दूर करने वाली है, योगोंमें डालने योग्य है, स्त्रियोंके मदको हरण करे, मृत्युको जीते, वीर्य बढावे, आयुको बढावे, इसके खानेसे संतानकी वृद्धि होवे।

मारणकी दशम विधि.

पुनर्नवांकुमारींचचपलांवानरींतथा ।
मुशलींचेक्षुवल्लींचतथातामलकीरसैः ॥
प्रत्येकैकेनपुटयेत्सप्तवारंपुनःपुनः ।
अर्कसेहुंडदुग्धेनप्रदेयासप्तभावना ॥
एवंसम्म्रियतेवज्रंसर्वरोगहरंपरम् ।

अर्थ–सांठ, घीगुवार, पीपल, कौंच, मूसली, ईख, और भूयआंवलेके रसोंकी सात २ पुट देवे, पश्चात् आक और थूहरके दूधकी सात २ भावना दे, प्रत्येक भावना पर अग्निमें फूंकता जाय तो अभ्रकभस्म सर्वरोग हरणकर्त्ता बने

मारणकी ग्यारहवीं विधि.

२० पुटीभस्म.

वटमूलत्वचःक्राथैस्तांबूलीपत्रसारतः ।
वासामत्स्याक्षिकाभ्यांवामीनाक्ष्यासकठिल्ल या ॥ पयसावटवृक्षस्यमर्दितंपुटितंघनं । भवेद्विंशतिवारेणासिंदूरसदृशंघनम् ॥

अर्थ–वडकी जडकी छालके काढे, पानके रस, अडूसा, मछेछी, सफेदकनेर, लालपुनर्नवा (सांठ) वडके दूध, इन प्रत्येक औषधियोंमें पुटदेकर अग्नि दे इस प्रकार २० पुट देनेसे सिंदूरके समान लालभस्म होवे।

वारहवीं विधि.

दुग्धत्रयंकुमार्यांम्बुगंगापुत्रंनृमूत्रकं ।
वटांकुरमजारक्तमेभिरभ्रंसुमर्दितं ॥
शतधापुटितंभस्मजायतेपद्मरागवत् ।

अर्थ–वड, थूहर और आकका दूध, घीगुआरका रस, नागरमोथा, बैलका मूत्र, वडकी जटाओंका रस, वकरीका रुधिर, इन प्रत्येकमें काले धान्याभ्रकको घोट १०० पुट देनेसे अभ्रककी पुखराजमणिके समान सपेद भस्म होवे।

सफेद अभ्रककी भस्म.

अभ्रकंत्रिफलाशुद्धंक्षिपेत्शुक्तेचतुर्गुणे ।
चत्वारिंशदिनान्येवस्थापयेत्तत्रबुद्धिमान् ॥
पलार्द्धंपारदंशुद्धंपलंवंगरजंनवम्।
कुसुमंचसमादायमर्दयेद्भिषगुत्तमः ॥
उभयोर्गुटिकामेकांकृत्वातत्रैवनिःक्षिपेत् ।

दंडेनचालयेन्नित्यंत्रिदिनंनाधिकंततः ॥
मर्यादादिवसेपूर्णेखल्वेक्षिप्त्वाविमर्दयेत् ।
घनत्वमागतंदृष्ट्वाचक्रिकांकारयेद्बुधः ॥
घर्मेसंशोप्यविधिनाततोगजपुटेपचेत् ।
पुनःशुक्तांतरेणैवमर्दयेदेकवासरे ॥
वन्योत्पलैःपचेदेवंकुर्याद्वारत्रयंततः ।
भस्मीभूतमिदंखादेद्गुंजामात्रंनिरंतरं ॥
अंधोपिदिव्यदृष्टिःस्यातीव्रोवन्हिश्चजायते ।
वातपित्तकफातंकान्तथैवरुधिरामयान् ॥
प्रमेहान्नाशयेत्सर्वान्नात्रकार्याविचारणा ।
अतीवपुष्टजनकोव्रणत्वग्दनाशनंपरं ॥
कुष्ठंप्लीहोदरंग्रंथिक्रमीक्ष्वेडविनाशनम् ।

अर्थ–सफेद शुद्ध अभ्रकको १२ तोलेको पूर्वोक्त रीतिसे दूधमें शोधे फिर उसके टुकडे कर छः पैसेभर टुकडोंको आधसेर सिरकेमें ४० दिन भिगोवे, तदनंतर शुद्धपारा पैसेभर और बंबूलके फूल दो पैसेभर दोनोंको मिलाकर घोटे, पीछे गोला बनाकर पूर्वोक्त सिरकेमें डालदे तीन दिन बाद उस सिरकेको खूब औटावे जब गाढा होजाय तब एक टिकिया बनाय सरावसंपुटमें रख गजपुटकी आंच दे, अथवा ४ सेर उपलोंकी आंचदे, स्वांग शीतल होजाय तब निकाल एक दिन सिरकामें फिर घोटे और टिकिया बनाय पूर्वोक्त क्रमसे आंच दे इस प्रकार तीन आंच देनेसे भस्म होवे। इस भस्मको नेत्रहीन १ रत्ती प्रतिदिन खाय तो दिव्यनेत्र होवें, मंदाग्नि अत्यन्त तीव्र होवे, वात, पित्त, कफजनित सब रोग दूर होवें, रुधिरविकार तथा २० प्रकारके प्रमेह दूर होवें, देहको अत्यंत पुष्ट करे, व्रण, कुष्ठ, तापतिल्ली, उदररोग, गांठ, कृमिरोग, क्ष्वेड, कानके सब रोग दूर होवें, यह क्रिया अत्यन्त चमत्कृत है और हमारी अनुभवकी हुई है इसमें सन्देह नहीं है।

तेरहवीं विधि.

वज्रार्कोद्भवदुग्धधेनुसलिलैर्ब्राह्मीरुदंतीवलावासाचित्रकशाल्मलीवलवराकूष्मांडिकादाडिमी जातीगोक्षुरशंखपुष्पलतिकामेदामृतावर्वरी । द्राक्षामूलकराक्षसीतुलसिकामुंडीविशालामदा ॥ गोजिह्वासलिलैर्विदारिलतिकाशृंग्युग्रगंधाजटा । शतपुष्पातपनोद्भवैश्वरसकैःसंवेष्टयेद्वैचराट् ॥ रात्रौसंपरिपाचयेद्गजपुटेसप्तवारान्पृथक् । न्यग्रोधस्यजटारसस्यसततंकशेशतोयस्यच ॥ भावाश्चैवपुटाश्चविंशतिमिताघृष्टाकपित्थस्यवै । चिंचिण्याफलकोद्भवैश्चसलिलेश्रीमत्पुटेनांचितैः ॥ पश्चान्निंबुरसेनधेनुपयसासंमिश्र्यगौडस्यच। द्राक्षाखंडघृतस्यरम्यमधुनावारांश्चपंचादश ॥ पश्चाचंद्रिकयोर्विवर्जितमथाभ्रंवैसुशुद्धंभवेद्रक्तंरम्यतरंसुसेव्यमवनीशानांगणैस्सर्वदा ।

अर्थ–शुद्ध वज्राभ्रकको थूहरके दूध, आकके दूध, गोमूत्र, ब्राह्मी, रुद्रवंती, खरेटी, अडूसा, चित्रक, सेमलके रस, नागरवेल, हरड, बहेडा, आंवला, पेठेका रस, चमेली, गोखरू, अनारके पत्ता, संखाहूली, मेदा, गिलोय, वनतुलसी, दाख, मूली, राक्षसी (एकांगीमुरा) तुलसी, गोरखमुंडी, इंद्रायन, मदा (धायके फूल,) गोभीकारस, विदारीकंद, कांकडासिंगी, वच, जटामांसी, सौंफ और जमालगोटा इनके रस तथा काढेमें यथा संभव भावना देकर गोला कर सुखालेवे। उसपर ७ कपरमिट्टीकर गजपुटमें फूंकदे, और शीतल होने पर निकालके फिर पूर्वोक्त रसोंमें घोटे और गजपुटमें फूंके इस प्रकार ७ आंच देवे,

पीछे वडकी जटाओंके रस और भांगरेके रसमें भावना देकर गजपुटमें फूंके, ऐसे इन दोनोंके सात २ पुट देवे, पीछे कैंथके रस, इमलीके रसकी, तथा कोदोंके काढेकी पुट देकर गजपुट देवे, तदनंतर नीबूके रस, गोदुग्ध, गुड, दही, खांड, घृत और सहत इन सबके १९ पुट दे, ऐसा करनेसे अभ्रककी निश्चंद्र शुद्ध और लाल तथा सुंदर राजाओंके खाने योग्य भस्म होवे।इसमें ऊपर लिखी औषधियोंके प्रत्येकके दिनमें पुटदे और रातको अग्निमें फूंके।

चौदहवीं विधि.

शुद्धधान्याभ्रकंमुस्तंशुंठीषड्भागयोगितं ।
मर्दयेत्कांजिकेनैवदिनंचित्रकजैरसैः ॥
ततोगजपुटंदद्यात्तस्मादुत्धृत्यमर्दयेत् ।
त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेदेवंपुटैस्त्रिभिः ॥
बलागोमूत्रमुसलीतुलसीसूरणद्रवैः ।
मर्दितंपुटितंवन्हौत्रित्रिवेलंव्रजेन्मृतिं ॥

अर्थ–शुद्ध धान्याभ्रका छटा भाग नागरमोथा तथा सोंठका चूर्ण धान्याभ्रकमें मिलाय १ दिन कांजीमें खरल करे, और गजपुटमें संपुटकर फूंक दे। पीछे निकाल १ दिन चित्रकके रसमें घोट कपरमिट्टीकर आरनेउपलोंके गजपुटमें फूंके, शीतल होनेपर निकाल त्रिफलाके काढेमें नित्य खरलकर कर गजपुटमें फूंके, इस प्रकार तीन गजपुट दे, पीछे बलाके रस वा काढेकी, गोमूत्र, मूसलीके काढे, तुलसीके पत्तोंके रस, और जमीकंदका रस इन पांचोकों पृथक् २ अभ्रकमें डालकर खरल करे प्रत्येक रसके तीन २ गजपुट दे इस प्रकार अग्नि देनेसे अभ्रककी दिव्य भस्म होवे।

पंदरहवीं अरुणभस्मकी विधि.

नागबलाभद्रमुस्तादुग्धंतुंवटकस्यच ।
यद्वावटजटातोयैर्हरिद्रावारिणापुटेत् ॥
मंजिष्ठाकाथतोयेनसर्वैरेभिर्यथाक्रमं ।
पुटितंभावनायोगाद्वरमेतत्पुटेन्मुहुः ॥
जायतेह्यरुणंचातिभस्मवज्राभ्रकोद्भवम् ।

अर्थ–शुद्ध वज्राभ्रकको नागवला, नागरमोथा, वडकादूध, अथवा वडकी जटाओंका रस, हल्दीका पानी, मजीठका काढा, इन सबकी क्रमसे भावना दे और प्रत्येक भावनाका उत्तम पुट दे। तो दिव्य लाल भस्म हो।

सोलहवीं विधि.

ततोधान्याभ्रकंकृत्वापिष्टामत्स्याक्षिकारसैः।
चक्रीकृत्वाविशोष्याथपुटंदत्वाभ्रकेतथा ॥
देयंपुटंहिषड्वारंपुनर्नवरसैःसहः ।
कलांशंटंकणेनापिसंमर्द्यचक्रिकाकृतं ॥
ऊर्द्धभागेपुटेत्तद्वत्सप्तवारंप्रयत्नतः ।
एवंवासारसेनापितंदुलीयरसेनच ॥
प्रपुटेत्सप्तवाराणिपूर्वप्रोक्तविधानतः ।
एतत्सिद्धंघनंसर्वयोगेषुविनियोजयेत् ॥

अर्थ–धान्याभ्रकको मछेछीके रसमें खरल कर टिकिया बनाय धूपमें सुखाय सरावसंपुटमें रख गजपुटमें फूंकदे, तदनंतर पुनर्नवा (साँठ) के रसकी छःपुट देकर अभ्रकका सोलहवां हिस्सा सुहागा डाल खरलकर टिकिया बनावे, और गढेला खोद नीचे टिकिया रख ऊपर अग्नि जलावे ऐसे ७ पुटदे, इसी प्रकार अडूसे और चौलाईके रसोंकी सात २ भावना देवे और गजपुटकी अग्निदे तो यह अभ्रकसिद्ध होवे इसे सब योगोंमें डाले।

सत्तरहवीं विधि सहस्रपुटी भस्म.

वज्राभ्रकंकुट्टयित्सुखल्वेगोदुग्धतप्तेनचासिंच नीयं। तल्लोहपात्रेमृदुरग्निपक्वं घृतेनार्किचिच्च विलोलयित्वा ॥ शालीविमिश्रेणसुवस्त्रम

व्येवव्यादृढंपोटलिकांभपात्रे । विघृप्यतोयां तरसंस्थितंते धान्याभ्रकंशुद्धभवेच्चपश्चात् ॥ खल्वेसुरम्येदृढधर्पयित्वाजलं चतुःपष्टिवन स्पतीनां । सूर्यातपेशोष्यदिनांतकालेवनोत्प लानांपुटमाचरेच्च । एवंविधंमारितमभ्रकंचव नप्पतीनांक्रमएवमुक्तं ॥

अर्थ–वज्राभ्रकको खरलमें डालकर कूटे, पीछे अग्निमें तपाय. गोदुग्धमें बुझाय लोहपात्रमें घृत डाल उसमें इस अभ्रकको डाल मंदाग्निसे पचावे, पीछे धानसे आधी अभ्रक ले दोनोंको कंवल या गाढीगजीकी थैलीमें रख भिगोदे पीछे एक बडे पात्रमें (कठोटी-परात आदि) में उस अभ्रकको डाल थैलीको खूब मसले, दो प्रहर पीछे जब सब अभ्रक निकलंकर पानीमें आजाय तब पानीको नितार अभ्रकको निकाल ले यह. धान्याभ्रक शुद्ध होवे । पीछे इसे खरलमें डाल ६४ औषधियोंके रसमें दिनमें घोट सूर्यकी धूपमें सुखाय रातको आरने उपलोंकी आगमें फूंके इस प्रकार अभ्रकको मारे । अब औषधियोंका क्रम लिखते हैं.

औषधियोंके नाम.

दुग्धंरवेर्वैवटदुग्धवज्रिकुमारिकानामानिलारि तिक्ता । मुस्तागुडूचीविजयात्रिकंटवर्ताकि नीपर्णिद्वयंचगुल्मं ॥ सिद्धार्थकोवैखरमंज रीणांवटप्ररोहंअजशोणितंच । विल्वाग्निमं थोग्निसतिंदुकानाहरीतकीपाटलिकासमूहः॥ गोमूत्रधात्रीकलिमंभकुंभीतालीसपत्रंचसता लमूली । वृपाश्वगंधामुनिभृंगराजरंभाजलं सार्द्रसुसप्तपर्णम् ॥ धत्तूरलोध्रंचसदेवदारुवृं दासदूर्वाद्वयकासमर्दः । मरीचकंदाडिमका कमाचीसशंखपुष्पीनतनागवल्ली ॥ पुनर्नवा मंडुकपर्णिकाचइंद्रावणीभार्गिचदेवदाली । कपित्थलिंगीकटुकिंशुकानां कोपातकीमूप कपर्ण्यनंता ॥ मीनाक्षिकाकारवितैलपर्णी कुंभीतथाद्रीचशतावरीणां ॥

अर्थ–आक, वड, और थूहर इनका दूध, घीगुवारका रस, अंडीकी जडकारस, कुटकी, मोथा, गिलोय, भांग, गोखरू, कटेरी, शालिपर्णी, पृष्टपर्णी, सफेदसरसों, खरमंजरी, वडकी जटा, बकरेका रुधिर, वेल, अरणी, चित्रक, तेंदू, हरड, पाढलकी जड, गोमूत्र, आंवले, वहेडा, जलकुंभी, तालीसपत्र, मूसली, अडूसा, असगंध अगस्तियाका रस, भांगरा, केलेका रस, सतोना धतूरा, लोध, देवदारू, तुलसी, दोनों दूब, कसोंदी, मिरच, अनारदानेका रस, काकमाची (मकोय)शंखपुष्पी, वालछड,पानका रस, सांठ, मंडूकपर्णी (ब्राह्मी) इंद्रायण, भारंगी, देवदाली, कैथ, शिवलिंगी, कटुवल्ली, ढाकका रस, तोरई, मूपकपर्णी, जवासा, मछेछी, कलोंजी, तैलपर्णी (कोईये औपधि विशेप कहते हैं पंचांगुलकारस, टुंटक, गुड, सुहागा, मालती, सप्तपर्णी (सतवन) नागवला, अतिबला, महाबला, सतावर, कौंचकीजडका रस, गाजर, गर्जर, प्याज, लहसन, उटंगण, अमरवेल, हिलमोचिका, दुद्धी, पातालगरुडी, जटामांसी, दूध, दही, घृत, सहत, खांड, धाय और पालंकिका ।

एभिश्चतोयैः स्थितखल्वमध्येविघर्पयेच्छुप्क भवंतथैव । वनोत्पलानांपुटमग्निशीतंपुनःपुन खल्वतलेविघर्पेत् ॥ एभिःक्रियांपोडशवारमे कंवल्लीजलानांपुटमारभेच्च निश्चंद्रगोपारुणरं गतुल्यंभस्मंसुधादिव्यरसायनंच । नानानु पानैरजरामरंच शरीरिणांसेव्यामिदंवरिष्टं गु णैःसहस्त्रावधिसेवकानांसमस्तरोगारिरसप्र सिद्धं ॥

अर्थ–अभ्रकको खरलमें डाल इन औषधियोंके रसमें घोटे, जब सूखजाय तब आरने उपलोंकी आगमें फूंकदे फिर आगमेंसे निकालकर घोटे और अग्निदे इस प्रकार प्रत्येक औषधिके १६ पुट देने चाहियें, जो औषधि रसयोग्य हो उसका रस डाले, और क्काथयोग्यके क्वाथका पुटदे, तो यह अभ्रक निश्चंद्र, (चमकरहित) लालभस्महो यह अमृतके तुल्य दिव्य रसायन है, अनेक अनुपानोंके संयोगसे देहको अजर अमर करती है इसलिये मनुष्यके इस श्रेष्ठभस्मका सेवन करना चाहिये। सेवन करनेवालेको हजारोंगुण करे यह समस्त रोगोंकी शत्रु प्रसिद्ध है।

कार्य्यपरत्वपुट संख्या.

दशादिस्तुशतांतःस्यात्पुटोवैव्याधिनाशने।
शतादिस्तुसहस्रांतंपुटोदेयोरसायने॥

अर्थ–दशसे लेकर सौपर्यंत रोगोंके नाशार्थ पुट देने चाहियें, और सौसे लेकर हजार तक रसायनके निमित्त पुट कहे हैं।

भावनाऔर पुटकानिर्णय.

सहस्रपुटपक्षेतुभावनापुटनंभवेत्।
मर्दनंतुतथानस्यादितिवैद्यवराजगुः॥

अर्थ–हजार पुटोंमें तो रसकी भावनामात्रही पुट कहा है, उसमें मर्दन न करे, ऐसे श्रेष्ठवैद्य कहते हैं, परंतु शतपुटोंमें मर्दन अवश्य करे।

मृत भस्मकी परीक्षा.

निश्चंद्रंचसुसूक्ष्मंचलोचनांजनसन्निभं।
तदामृतमितिप्रोक्तमभ्रकंचान्यथामृतम्॥

अर्थ–चमकरहित, बहुतबारीक, काजलके समान, जो अभ्रककी भस्म है उसे शुद्ध जाननी, अन्यथा कची जाननी।

तथाच.

मृतंनिश्चंद्रतांयातंमरणंचामृतोपमं।
सचंद्रंविषवद्ज्ञेयंमृत्युकृत्बहुरोगकृत्॥

अर्थ–जिस अभ्रककी भस्म निश्चंद्र हो वह अमृतके तुल्य है, और चमकदार होतो विषके समान प्राणहर्त्ता और अनेकरोग कर्त्ता जाननी।

अमृती करणं.

त्रिफलात्वक्कषायस्यपलान्यादायषोडश।
गोघृतस्यपलान्यष्टौमृताभ्रस्यपलान्दश॥
एकीकृतेलोहपात्रेविपचेन्मृदुवन्हिना।
द्रवेजीर्णेसमादाययोगवाहेप्रयोजयेत्॥
अन्येषामपिधातूनाममृतीकरणंह्ययं।

अर्थ–त्रिफलाका काढा १६ पल, गोघृत ८ पल, मृतअभ्रक १० पल, इनको एकत्रकर लोहकी कडाहीमेंमंदाग्निसे पचावे जब जल और घी जलजाँय केवल अभ्रक मात्र बाकी रहे तब उतार शीतलकर रखछोडे और योगोंमें देवे, यह अभ्रकका अमृतीकरण कहा है इसी प्रकार औरभी धातुओंका अमृतीकरण जानना कोई आचार्य केवल घृतमेंही अमृतीकरण करना लिखते हैं।

यथा.

तुल्यंघृतंमृताभ्रेणलोहपात्रेविपाचयेत्।
घृतंजीर्णंततश्चूर्णंसर्वकार्येषुयोजयेत्॥

अर्थ–अभ्रककी भस्मके समान गोघृत लेकर लोहेकी कडाहीमें चढाय उसमें अभ्रकको पचावे, जब घृत जलकर अभ्रकमात्र रहजाय तब उतार सब कामोंमें दे।

मृताभ्रकके गुण.

रोगान्हत्वादृढवलचयंवीर्यवृद्धिंविधत्ते।
तारुण्याढ्यंरमयतिशतंयोषितांनित्यमेव॥

दीर्घायुस्मान्जनयतिसुतान्सिंहतुल्यप्रभावा
न्। मृत्योर्भीतिंहरतिसततंसेव्यमानंमृताभ्रम्
अर्थ—रोगोंको जीत, दृढवलसमूह और वीर्यको वढावे, तरुणता करे, सौं स्त्रियांसे नित्य भोग करनेकी सामर्थ्यहो, दीर्घायु और सिंहके समान पराक्रमी पुत्रोंको पैदा करे, निरंतर मृताभ्रकका सेवन मौतके भयकोभी दूरकरे।

अन्यच्च.

गौरीतेजपरममृतंवातपित्तक्षयघ्नं ।
प्रज्ञावोधिप्रशमितजरांवृष्यमायुष्यमग्र्यं ॥
वल्यंस्निग्धंरुचिदमकफंदीपनंशीतवीर्यं ।
तत्तद्योगैःसकलगदहृद्वद्धयोमसूतेन्द्रवीजम् ॥

अर्थ—श्रीपार्वतीजीका तेज अर्थात् अभ्रक अत्यन्त अमृत है, वात, पित्त और खईका नाश करे, वुद्धि वढावे, वुढापेको दूर करे, वृष्य (वीर्य कर्त्ता) है आयुको वढावे, वलकर्त्ता, चिकना है, रुचिकर्त्ता, कफनाशक, दीपन और शीतवीर्य है, पृथक् २ योगोंके साथ सकल रोगोंको दूर करे और पारदको वांधने वाला है, ।

वयस्तंभकारीजरामृत्युहारीवलारोग्यधारी
महाकुष्ठहारी मृतंत्वभ्रकंसर्वरोगेपुयोज्यं सदा
सूतराजस्यवीर्येणतुल्यं देहदार्ढ्यस्यसिध्यर्थं
त्रिगुंजंभक्षयेत्परं । नातःपरतरंकिंचिज्जरा
मृत्युविनाशनम् ॥

अर्थ—आयुष्यका स्तंभन करे, वुढापे और मृत्युको हरे, वल और आरोग्यताको करे, महा कुष्ठको दूर करे, मरी अभ्रक सव रोगोंमें देनी चाहिये, क्योंकि इसमें सदैव पारेके समान गुण हैं, देहकी दृढताके अर्थ ३ रत्ती खानी चाहिये, इसके सिवाय वुढापे और मृत्युकी हर्त्ता दूसरी औषधि नहीं है।

अन्यच्च.

मृताभ्रकंकामवलप्रदंचविषंमरुच्छ्वासभगंदरा
ख्यं । मेहभ्रमंपित्तकफंचकासंक्षयंनिहन्त्ये
वयथानुपानात् ॥

अर्थ—मृताभ्रक कामदेव और वलको वढावे-विष, वादी, श्वास, भगंदर, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खांसी, और खई, इन रोगोंको अनुपानके साथ सेवनसे दूर करे ।

अनुपान.

शुद्धाभ्रंनतुवल्लकद्वयमितंकृष्णामधुभ्यांयुतं
मेहश्वासविषंचकुष्ठमतुलंवातंचपित्तंकफम् ॥
कासक्षीणक्षतक्षयंग्रहणिकापांडुंभ्रमंकामलां।
गुल्माद्यंचतथानुपानविधिनामृत्युंचजेजीयते

अर्थ—शुद्ध अभ्रककी भस्म १ रत्तीसे लेकर दो वल्ल (६ रत्ती) पर्यंत-पीपल और सहतके साथ खानेसे प्रमेह, श्वास, विष, कुष्ठ, वात, पित्त, कफ, खांसी, क्षीणता, खई, व्रण, संग्रहणी, पांडुरोग, भ्रम, कामला और गोलाका नाश करे, और अनुपानके साथ खानेसे मृत्युकोभी जीते ।

दूसरा प्रकार.

अभ्रकंचनिशायुक्तंपिप्पलीमधुनासह ।
विंशतिंचप्रमेहाणांनाशयेन्नात्रसंशयः ॥
अभ्रकंहेमसंयुक्तंक्षयरोगविनाशनं ।
रौप्यहेमाभ्रकंचैववयातुवृद्धिकरंपरं ॥
गोक्षीरशर्करायुक्तंपित्तरोगविनाशनं ॥
शैलजंपिप्पलीचूर्णमाक्षिकंसर्वमेहहृत् ।
अभयागुडसंयुक्तंवातरक्तंनियच्छति ॥
स्वर्णयुक्तंक्षयंहंतिधातुवृद्धिंकरोतिच ।
रक्तपित्तंनिहंत्याशुएलाशर्करयासह ॥

अर्थ—अभ्रकभस्म प्रातःकाल हलदी पीपल और सहतके साथ खानेसे २० प्रकारके

प्रमेहोंको दूर करे। सोंनेके वर्कोंके साथ खई को, चांदी सोंना और अभ्रक तीनोंकी भस्म मिलाकर खानेसे धातुको बढावे। मिश्री मिले गोदुग्धके साथ पित्तरोगोंको, शिलाजीत पीपल, सुवर्णमाक्षिककी भस्म इनके साथ सर्व प्रमेहोंको, हरड और गुडके साथ वात-रक्तको, सोंनेकेवर्कोंके साथ खई रोगको और धातुको बढावे, छोटी इलायची और मिश्रीके साथ रक्तपित्तको दूर करे।

सिताऽमृतासत्वयुतंमेहंनाशयतेध्रुवं।
वरामधुघृतैःशार्कंशुक्रकृच्चक्षुरोगहृत् ॥
एलागोक्षुरभूधात्रीशर्करासहितंतथा।
गोदुग्धेनयुतंहंतिमूत्रकृच्छ्रंप्रमेहकं ॥
त्रिपुगंधवराव्योपशर्करानागकेशरं।
माक्षिकेणनिहंत्याशुपांडुरोगंक्षयंज्वरम् ॥

अर्थ–मिश्री और गिलोयसत्वके साथ प्रमेहको दूर करे। त्रिफला, सहत और घृतके साथ शुक्रको बढावे, और नेत्ररोगोंको दूरकरे। इलायची, गोखरू, भूंयआंवला, मिश्री और गो-दुग्धके साथ अभ्रक-मूत्रकृच्छ्र और प्रमेहको दूर करे। तज, पत्रज, इलायची, हर्ड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, मिश्री और नागकेसरके चूर्णके साथ सहत मिलाकर अभ्रक लेवे तो पांडुरोग, खई और ज्वरको दूर करे।

तथान्च.

वेल्लंव्योपसमन्वितंघृतयुतंवल्लोन्मितंसेवितं।
दिव्याभ्रंक्षयपांडुसंग्रहणिकाशूलंचकुष्ठामय
म् ॥ सर्वश्वासगदंप्रमेहमरुचिंकासामयंदुर्द्धरं
मंदाग्निंजठरव्यथांपरिहरेच्छोपामयान्निश्चितं

अर्थ–वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, और गोघृतके साथ ३ रत्ती अभ्रककी भस्म खाय तो खई, पांडुरोग, संग्रहणी, शूल, कोढ, सब प्रकारके श्वासरोग, प्रमेह, अरुचि, खांसी, मंदाग्नि, उदररोग, शोपरोग, ये सब निश्चय दूर होवें।

अभ्रकसत्व विधि.

ऊर्णासर्जरसंचैवक्षुद्रमीनसमन्वितम्।
एतत्सर्वंतुसंचूर्ण्यछागदुग्धेनपिंडिका ॥
कृताध्माताखरांगारैःसर्वसत्वान्निपातयेत्।

अर्थ–ऊन, राल, छोटीमछली, सबको पीस अभ्रककीभस्म मिलाय बकरीके दूधसे छोटी २ गोलियां बनाकर भट्टीमें रखे और बंकनालसे धोंके तो सत्व निकले इस प्रकार सर्व सत्व निकाले।

तथादूसरी विधि.

चूर्णीकृतंगगनपत्रमथारनालेधृत्वादिनैकमथ
रस्थितसूरणंच। भाव्यंरसैस्तदनुमूलरसैः
कदल्याःपादांशटंकणयुतंसफरीसमिश्रं ॥
पिंडीकृतंतदहुधामहिपीमलेनसंशोष्यकोष्टग
तमाशुधमेन्महाग्नौ सत्वंपतत्यतिरसायनजार
णार्थयोग्यंभवेत्सकलरोगचयंनिहंति ॥

अर्थ–अभ्रक चूर्णको १ दिन कांजी तथा १ दिन जमीकंदके रसमें भिजोय दे, तदनंतर केला कंदके रसमें भावना देकर चतुर्थांश सुहागा और छोटी मछली मिलाय छोटी २ गोलियां बनावे, धूपमें सुखाकर कोष्टिकामें रख बंकनाल धोंकनीसें महाग्नि देवे तो सत्व निकले। यह अत्यंत रसायन है, जारणयोग्य तथा सब रोगोंको दूर करे।

वैद्यनाथस्तु.

गुडःपुरस्तथालाक्षापिण्याकंटंकणंतथा।
ऊर्णासर्जरसश्चैवक्षुद्रमीनसमन्वितम् ॥
एतत्सर्वंतुसंचूर्ण्यछागदुग्धेनपिंडिकाः।
कृत्वाध्माताःखरांगारैःसत्वंमुंचतिनिश्चितम्

पाषाणमृत्तिकादीनांव्योमसत्वस्यकाकथा ।

अर्थ-वैद्यनाथ कहता है कि गुड, गुग्गुल, लाख, खल, सुहागा, ऊन, राल, छोटीमछली, इन सबको पीस अभ्रक मिलाय बकरीके दूधमें पिंडी बांध धूपमें सुखाय घरियामें रख बंकनाल धोकनीसे धोंके तो सत्व निकलकर नीचे बैठजाय, यह क्रिया पत्थर और मिट्टी तकका सत्व निकाल देती हैं, अभ्रक सत्व निकालना तो कितनी बडी बात है ? ।

सत्वका एकत्र करना.

कणशोयद्भवेत्सत्वंमूषायांप्रणिधापयेत् ।
मित्रपंचकयुक्ध्मातमेकीभवतिघोषवत् ॥

अर्थ-अभ्रक सत्वके कणोंको एकत्रकर उनमें मित्रपंचक मिलाय मूषामें रख तीव्राग्नि देनेसे सब सत्वके रवा मिलकर कांसेके समान होजायँ ।

अभ्रकसत्वकी भावना विधि.

१० सेर मृताभ्रकको ७ दिन केलाके रसमें घोटे, तथा ७ दिन जमीकंदके रसमें घोटे, तथा ७ दिन मोथाके क्वाथकी भावना दे, पीछे धूपमें सुखाय ढाईसेर सुहागा फुलाकर डाले-तथा आगे लिखी औषधियोंको डाले, चिरमिठी, गूगल, लाख, ऊन, सज्जी, राल, छोटीमछली, जवाखार, खल, जमीकंद, केंचुआ, हरड, बहेडा, आंवला, चित्रक, क्षीरकंद, धतूरेकेवीज, कलहारी, पाढ, नलबीज, गंधक, मोम, गोखरू, सेंधानोंन, संचरनोन, विडनोन, सामरनोंन, सहत, साँखला, ससेकीहड्डी, कबूतरकीवीठ, सोंठ, पीपल, मिरच, गोखरू, सरसों, तेलजीवन, भैंसकादूध, दही, घृत, मूत्र, ये सब १ भाग सबको कूट पीसकर तीन २ टंककी, टिकरी बांधे, फिर सुखाय कोष्टीयंत्रमें रख नीचे पक्के कोलोंकी अग्निदे वंकनाल धोंकनीसे धोंकेतो नरम सत्व निकल नीचे बैठजाय, उसको निकाल खंगरको तोड चुंबकसे सत्वको निकाल लेवे, फिर पूर्वोक्त मसाला डालकर धोंके ऐसा तीन बार करनेसे सब सत्व निकल आवे, यह सोंने के समान लाल निकले, कदाचित् मरीअभ्रक न मिले तो धान्याभ्रककाही सत्व निकाले, परंतु यह सत्व कांसेके समान निकलेगा ।

अभ्रक सत्व शोधन.

अथसत्वकणांस्तांतुमुस्ताकाथाम्लकांजिकैः।
शोधनीयंगुणोपेतंमूषामध्येनिरुध्यच ॥
सम्यक्पकंसमाहृत्यद्विवारंप्रधमेत्ततः ।
इतिशुद्धंभवेत्सत्वंयोग्यंरसरसायने ॥

अर्थ-अभ्रक सत्वके कणोंको मोथाके काढे, अम्लवर्ग, और कांजीमें शोधकर मूषामें रख कपरमिट्टी दे अग्नि देवे, पश्चात् निकाल पूर्वोक्त औषधियोंमें रख फिर अग्नि देवे तो अभ्रक सत्व शुद्ध होकर पारेका बंधन करे और रसायनके योग्य हो ।

अभ्रक सत्व मारण.

सूततुल्यंव्योमसत्वंतयोस्तुल्यंचगंधकम् ।
कुमारीस्वरसैर्मर्द्यंयंत्रेसैकतकेपचेत् ॥
द्विनद्वयांतेसंग्राह्यंभक्षयेन्मासमात्रकम् ।
क्षयंशोषंतथाकासंप्रमेहंचापिदुष्करम् ।
पांडुरोगंचकार्श्यंचजयेच्छीघ्रंनसंशयः ॥

अर्थ-पारा और अभ्रकसत्व दोनों एक २ भाग, दोनोंके समान गंधकले सबको घीगुआरके रसमें घोट दो दिन वालुकायंत्रमें अग्नि दे तो अभ्रक सत्व मरे, पश्चात् शीतलकर रख छोडे, इसका १ महीना सेवन करे तो खई, शोष, खांसी, असाध्यप्रमेह, पांडुरोग, कृशता, इनको शीघ्र नाश करे, यह काकचंडेश्वरग्रंथमें लिखा है

तथा दूसरी विधि.

सत्वस्यगोलकंध्मातंसस्यसंयुक्तकांजिकैः ।
निर्वाप्यतत्क्षणेनैवकुट्टयेल्लोहपारया ॥
संप्रताप्यघनंस्थूलकणान्क्षिप्त्वाथकांजिके ।
तत्क्षणेनसमाहृत्यकुट्टयित्वारजश्चरेत् ।
गोघृतेनचतच्चूर्णंभर्जयेत्पूर्ववद्विधा ॥
धात्रीफलरसैस्तद्वद्धात्रीपत्ररसेनवा ।
भर्जनेभर्जनेकार्यंशिलापट्टेचपेषणं ॥
ततःपुनर्नवावासारसैःकांजिकमिश्रितैः ।
प्रपुटेद्दशवाराणिदशवाराणिगंधकैः ॥
एवंसंशोधितंव्योमसत्वंसर्वगुणोत्तरम् ।
यथेष्टंविनियोक्तव्यंजारणेचरसायने ॥

अर्थ—अभ्रकसत्वके पिंडको तपा २ कर धानयुक्त कांजीमें बुझावे, पीछे निकाल लोहेके खरलमें लोहेके भारी मूसलेसे कूटे, उसमें जो वडे२ टुकडे रहें उनको अग्निमें तपाय उसी धानयुक्त कांजीमें बुझावे और कांजीमेंसे जल्दी निकाल कूटकर रेतके समान करे, पीछे उस चूर्णको गोघृतमें भूँन पूर्वोक्त रीतिसे कांजीमें भिगोवे, तीन वार भूँने इसी प्रकार आंवलोंके रसमें तीन वार भूँने, और आंवलोंके पत्तोंके रसमें भूँने, परंतु जब २ भूँने तब तब एक वडी शिलपर पीसता जाय, तदनंतर पुनर्नवा (सांठ) और अडूसा तथा कांजी इन सबको मिलाकर दशपुट दे, इसी प्रकार गंधकके दशपुट दे यह शोधित अभ्रकसत्व सर्वगुणयुक्त होवे, इसको स्वेच्छापूर्वक पारेके जारणमें और रसायनमें योजना करे।

सत्वस्य मृदु करणं.

मधुतैलवसाऽऽज्येषुद्रावितंपरिभावितं ।
मृदुस्याद्दशवारेणसत्वंलोहादिकंखरं ॥

अर्थ—सहत, तेल, चर्वी, घृत इनमें सत्व को गला २ कर दश २ वार बुझानेसे सत्व और लोहादि कठोरधातु मृदु (नरम) होवें।

पट्टचूर्णंविधायाथगोघृतेनपरिप्लुतम् ।
भर्जयेत्सप्तवाराणिचुल्लीसंस्थितखर्परे ॥
अग्निवर्णंभवेद्यावद्वारंवारंविचूर्णयेत् ।
तृणंक्षिप्त्वादहेद्यावत्तावद्वाभर्जनंचरेत् ॥
ततःसगंधकंपिष्ट्वावटमूलकषायतः ।
पुटेद्विंशतिवाराणिवाराहेणपुटेनच ॥
पुनर्विंशतिवाराणित्रिफलोत्थकषायतः ।
त्रिफलामुंडिकाभृंगपत्रपथ्योक्षभृंगकैः ॥
भावयित्वाप्रयोक्तव्यंसर्वरोगेषुमात्रया ।
सत्वाभ्रादपरंकिंचिन्निर्विकारंगुणाधिकं ॥
एवंचेच्छतवाराणिपुटपाकेनसाधितं
गुणवज्जायतेत्यर्थंपरंपाचनदीपनं ॥
क्षुधांकरोतिचात्यर्थंगुंजार्द्धमितिसेवया ।
तत्तद्रोगहरैर्योगैःसर्वरोगहरंपरं ॥

अर्थ—पूर्वोक्त मृतसत्वको शिलापर चूणकर गोघृतमें मिलाय सातवार कडाहीमें भूने, जब अग्निके समान लाल होजाय तव निकालकर पीसे, फिर गोघृत मिलाकर भूँने, जव लाल होजाय और तिनका लगतेही जल उठे तव तक भूने इस प्रकार सात वार भूँनकर गंधक मिलाय वडकी जडके काढेमें घोट वाराहपुटमें रख फूंक दे इस प्रकार २० वाराहपुट दे, ऐसे ही २० पुट त्रिफलाके काढेके देकर त्रिफला, गोरखमुंडी, भांगरेके पत्ते, अडूसा और मूलीके रसोंकी भावना दे तो दिव्य भस्म होवे, यह अभ्रकसत्वकी भस्म निर्विकार और गुणोंमें अधिक है, इसका १००वार पुटपाककी विधिसे साधन करे, तो अत्यन्त गुणवान हो, यह अत्यंत पाचन, दीपन और क्षुधाकारक है, इसे आधरत्ती सेवन करनी चाहिये, यह अनेकरोग हर्त्ता योगोंके साथ खानेसे सब रोगोंको दूर

करे, सत्वकी भस्मके अनुपान अभ्रकके तुल्य मानने चाहियें ।

द्रुति (पारेकेसमान) करना.

द्रुतयोनैवनिर्दिष्टाशास्त्रेदृष्टापिचेद्ध्रुवं ।
विनाशंभोप्रसादेननसिध्यंतिकदाचन ॥

अर्थ—यद्यपि द्रुति शास्त्रमें लिखी है परंतु हमने किसीको करते नहीं देखा, क्योंकि द्रुति विना श्रीशिवजीकी प्रसन्नताके सिद्ध नहीं होती, यह बात इस प्रकार है तो भी शास्त्रमें लिखी है, और किसीको प्रारब्धवश तथा श्रीसदाशिवजीकी भक्तिसे सिद्ध होजाती है इस लिये हम यहां लिखते हैं ।

अभ्रकद्रुतिका प्रथमप्रकार.

अगस्त्यपत्रनिर्यासैमर्दितंधान्यकाभ्रकम् ।
शूरणोदरमध्येतुनिक्षिप्तंलेपितंमृदा ॥
गोष्ठभूमिंखनित्वातुहस्तमात्रेहिपूरितम् ।
मासान्निसारितंत्तत्तुजायतेपारदोपमम् ॥

अर्थ—अगस्तियाके पत्तोंके रसमें धान्याभ्रकको घोटकर जमीकंदको पोलाकर उसमें भर दे, जमीकंदके टुकडोंसे ही उसका मूं बंद करे, ऊपर कपरमिट्टी कर घोडा बंधनेकी जगह हाथ भर ओंडी जमीन खोदके गाड़दे, एक महीने बाद निकाले तो अभ्रककी पारेके समान पतली द्रुति होवे ।

तथा दूसरी विधि.

स्वरसेनवज्रवल्याःपिष्टंसौवर्चलान्वितंगगनं ।
पक्वंशरावसंस्थंबहुवारंभवतिरसरूपं ॥

अर्थ—धान्याभ्रकको वज्रवल्लीमें संचरनोन मिलाकर पीसे पश्चात् सरावसंपुटमें रख अग्निमें पचावे, इस प्रकार बहुवार करनेसे पारेके समान द्रुति होवे ।

तीसरी विधि.

निजरसपरिभावितनाकंचुकिकंदोत्थचूर्णपरिवापात् ॥ द्रुतिमास्तेऽभ्रकसत्वंतथैवसर्वाणिलोहानि ॥

अर्थ—कंचुकीशाकके चूर्णको इसीके रसकी भावना देकर अभ्रक सत्वमें डाले तो उसकी द्रुति हो तथा सर्वलोहकी द्रुति हो ।

चौथी विधि.

शुद्धकृष्णाऽभ्रपत्राणिपीलूतैलेनलेपयेत् ।
घर्मेशोष्याणिसप्ताहंलिप्त्वालिप्त्वापुनःपुनः ॥
मर्दितंचाम्लवर्गेणतद्वत्शोष्याणिचाथवै ।
स्नुह्यर्कार्जुनवन्हीनांकटुतुंब्यांसमाहरेत् ॥
क्षारक्षारत्रयंचैतदष्टकंचूर्णितंसमं ।
वज्रकंदंक्षीरकंदंवृहतीकंटकारिका ॥
वनवृंताकमेतेषांद्रवैर्भाव्यंदिनत्रयं ।
अनेनक्षारकल्केनपूर्वपत्राणिलेपयेत् ॥
आतपेकांस्यपात्रेचस्थालीलेप्यंपुनःपुनः ।
एवंदिनत्रयंकुर्याद्द्रुतिर्भवतिनिर्मला ॥

अर्थ—काले शुद्ध अभ्रकके पत्रोंपर पीलूके तेलका लेपकर धूपमें सुखावे इस प्रकार बार २ सात दिन तक पूर्वोक्त तेलका लेप कर २ धूपमें सुखावे, पीछे अम्लवर्ग (अम्लवर्ग पारदके प्रकरणमें पहले लिख आये है,) घोटे, और उसी प्रकार सुखावे, तदनंतर थूहर आक, अर्जुना, चित्रक, कडवीतूंबी, इनके खार तथा सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, इन आठोंका चूर्णकर पीछे वज्रकंद, क्षीरकंद, बडीकटेरी, वनकावेंगन, इनके रसमें पूर्वोक्त क्षार मिलाकर घोटे, पीछे इस पिट्ठीको अभ्रकके पत्रोंपर लेपकर कांसेकी थालीमें रखदे, जब लेप सूखे तब फिर लेप करे, इस प्रकार तीन दिन करनेसे पारेके समान अभ्रककी निर्मल द्रुति होवे ।

पांचवां प्रकार.

कर्कोटीफलचूर्णंतुमित्रपंचकसंयुतं ।
एततुल्यंचधान्याभ्रमम्लैर्मर्द्यंदिनावधिः ॥
अथमूषागतंध्मातंतद्द्रुतिर्भवतिध्रुवम् ।

अर्थ-ककोडाके फलके चूर्णको मित्रपंचक (घृत, सहत, गुग्गुल, घूंघची, गुड) इनमें धान्याभ्रकको मिलाय अम्ल वर्गमें १ दिन खरल करे, फिर मूषामें रखके भट्टीमें वंकनाल धौंकनीसें धौंके तो अभ्रककी द्रुति होय ।

छटी विधि.

धान्याभ्रकंचगोमासंअभ्रपादंचसैंधवं ।
स्नुह्यर्कपयसाद्रावैर्मुनिजैर्मर्दयेत्र्यहम् ॥
तद्गोलंकदलीकंदेक्षिप्त्वावाह्येमृदालिपेत् ।
करीषाग्नौत्र्यहंपाच्यंद्रुतिर्भवतिनिर्मला ॥

अर्थ-धान्याभ्रक, गौकामांस, अभ्रकका चतुर्थांश सैंधानमक, इनको थूहर, आक इनके दूध तथा अगस्तियाके रसमें तीन दिन घोटकर गोलाबनाय केलाके, कंदमें, रख कपर मिट्टी देकर आरने उपलोंकी ३ दिन आंच देवे तो निर्मल द्रुति होवे ।

सातवां प्रकार.

अभ्रकंनरतैलेनभावितंचसुचूर्णितं ।
गोपेन्द्रलेपितामूषाधमनाद्द्रुतिमाप्नुयात् ॥

अर्थ-अभ्रकको रामकपूरके तेलकी भावना देकर चूर्ण करे, और मूषामें रख मूषाको गोपेंद्र (बीरवहुट्टी) के रुधिरसे लेप कर अग्निमें धमन करनेसे अभ्रककी द्रुति होवे ।

आठवां प्रकार.

श्वेताभ्रकंचसंचूर्ण्यगोमूत्रेणतुभावयेत् ।
कदलीफलसंयुक्तंभावयेत्तद्विचक्षणः ॥
धमेतदंधमूषायांत्रिवारंचपुनःपुनः ।
द्रुतिर्भवतितद्व्यंनात्रकार्याविचारणा ॥
अनेनैवप्रकारेणकुर्याद्द्रुतिसुशोभना ।

अर्थ-श्वेत अभ्रकका चूर्णकर गोमूत्रकी भावना देकर केलेके कंदकी भावना दे, तदनंतर अंधमूषामें रख दो तीन वार खूब धौंके तो अभ्रककी द्रुति होवे, इस प्रकार उत्तम द्रुति करनी चाहिये ।

अनेक द्रुतिमेलापनं.

कृष्णागरुनाभिशिलैरसोनसितरामठैरिमाद्रुतयः। सोष्णेमिलंतिमर्द्याःश्रीकुसुमपलासवीजरसैः ॥

अर्थ-कालीअगर, कस्तूरी, मनसिल, सफेद लहसन और हींग इन औषधियोंको सब धातुओंकी द्रुतियोंको एकत्रकर उनमें डालकर घोटे पीछे धूप वा अग्निकी गरमीमें रख लौंग और ढाकके वीजोंके रसमें घोटे तो सब द्रुति मिलकर एक होजायँ ।

भाग्यंविनाभ्रद्रुतयोजायतेनकदापिहि ।
विनाशंभोःप्रसादेननसिध्यंतिकदाचन ॥
तथापिशास्त्ररूढत्वात्कदाचित्भाग्ययोगतः

अर्थ-अभ्रकद्रावण भाग्योदय तथा श्रीशिवजीकी प्रसन्नता विना कभी सिद्ध नहीं होती, परंतु शास्त्रमें कदाचित् भाग्ययोगसे सिद्ध हो इसलिये कही है ।

अभ्रकवेधी क्रिया.

श्वेताभ्रंश्वेतकांचंचविषसैंधवटंकणं ।
स्नुहीक्षीरैर्दिनंमर्द्यंतेनवंगस्यपत्रकम् ॥
लेप्यंपादांशकल्केनचांधमूषागतंधमेत् ।
यावद्द्रावयतेवंगंपूर्वंतैलेचढालयेत् ॥
वार्यादिलेपमेकंचसप्तवाराणिकारयेत् ।
पुत्रजीवोत्थतैलेनढालयेत्सप्तवारकं ॥
तद्वंगंजायतेतारंशंखकुन्देन्दुसन्निभं ।

अर्थ-सफेदअभ्रक, सफेदकाच, सिंगिया-

विष, सेंधानोन, और सुहागा इनको एकदिन थूहरके दूधमें घोट, रांगके पत्रोंपर लेपकर अंधमूषामें रख धोंकनीसे धोंके जब जानेकि वंग गलनेलगा तब पहले तेलमें ढालदे, फिर पूर्वोक्त लेपकर आंचमें तपाय पुत्रजीव (जीया पोता) के तेलमें ढाले इसप्रकार सातवारमें वह वंग-शंख कुन्द और चंद्रमाके समान सफेद चांदी होजाय।

दूसरा प्रकार.

पीताभ्रंगंधकंसूतंरक्तपुष्पंचतुर्थकम्।
वज्रीक्षीरेणसंयुक्तंवंगंतारायतेक्षणात्॥

अर्थ-हरताल, अभ्रक, गंधक, पारा, तथा रक्तपुष्प, इनका चूर्णकर थूहरके दूधमें घोटे पीछे रांगको गलाकर उसमें डाले तो रांगकी चांदी हो।

अभ्रकमें पुटदेनेके गुण.

अभ्रस्त्वष्टादशपुटाद्वातहाद्विगुणेनच।
पित्तघ्नस्त्रिगुणेनैवकफहामेहशोफहा॥
अम्लपित्तामवातादिरोगेस्याद्गजकेशरी।
अभ्रंशतपुटादूर्ध्वंबीजसंज्ञांध्रुवंलभेत्॥
वीर्यौजःकांतिमूलश्चसबीजोदेहधारकः।

अर्थ-अठारहपुटकी अभ्रक वातनाशक, छत्तीसकी पित्त नाशक, और ५४ की कफ प्रमेह और सूजनका नाश करे, तथा अम्ल-पित्त और आमवातादि हाथीरूप रोगोंके मारनेको सिंहरूप है। १०० पुटके उपरांत अभ्रक बीजसंज्ञाको प्राप्त होती है, सबीज अभ्रक वीर्य पराक्रम कांतिका कारण है, तथा देहको धारण करता है यह क्षीरस्वामीका मत है।

अभ्रक कल्प.

निश्चंद्रमभ्रकंभस्मधात्रीव्योषविडंगकं।
निष्कैकंभक्षयेत्प्राज्ञोवर्षमेकंनिरंतरं॥
द्वितीयेतुपुनर्वर्षेभक्षयेद्गुटिकाद्वयम्।
एवंसंवत्सरेणैवगुटिकैकांप्रवर्द्धयेत्॥
त्रिवर्षस्यप्रयोगोयमभ्रकस्यप्रकीर्त्तितः।
अनेनक्रमयोगेनव्योमःशतपलंनरः॥
अश्नाद्भवेन्नसंदेहोवज्रकायोमहाबलः।
मासत्रयेणरक्ताक्षंक्षयकासंसुदारुणं॥
पंचकासांश्चहृद्गुल्मग्रहण्यार्शोभगंदरं।
आमवातंतथाशोफंपांडुरोगंसुदारुणं॥
मृत्युकल्पंमहाव्याधिंवातपित्तकफोद्भवं।
हन्त्यष्टादशकुष्ठानिनृणांपथ्याशिनांध्रुवं॥
अत्रगुटिकायाप्रमाणंनोक्तंतदर्थंसंशयोनकर्त्तव्यः किन्तुचिकित्सकवरैःस्वबुध्याकल्पनीयं सूपशाकादिपुलवणप्रक्षेपवत्इतिवृद्धाः॥

अर्थ--निश्चंद्र यानी चमक रहित अभ्रककी भस्म, आंवले, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, इन सबको समान भाग लेकर पीसे और चार २ माशेकी गोलियां बनावे, १गोली नित्य १ वर्ष पर्यंत खाय, दूसरे वर्ष दो गोली प्रतिदिन खाय, इस प्रकार प्रतिवर्ष एक २ गोली बढावे, यह अभ्रकका तीनवर्षका प्रयोग है, इस क्रमसे १०० पल अभ्रक खाय तो वज्रके समान दृढदेह होजाय, तीन महीनेके प्रयोगसे महाबलवान और लालनेत्र होजायं, और खई पांचप्रकारकी, उग्र खांसी, हृदयरोग गोला, संग्रहणी, बवासीर, भगंदर, आमवात, शोप (सूखना) पांडुरोग, मृत्युकेसमान महाव्याधि, वात, पित्त और कफसे प्रगट अठारह कोढ, ये सब पथ्यसे रहनेवाले मनुष्यके दूर होवे। इसमें गोलीका प्रमाण नहीं लिखा उसका संशय नहीं करना किन्तु बुद्धिमान वैद्य गोलीके प्रमाणको बुद्धिसे कल्पना करे, जैसे रसो-

ईके शाकादिकोंमें नोन डालनेकी कल्पना करते हैं यह वृद्धोंका मत हैं ।

अभ्रक सेवनमें अपथ्य.

क्षाराम्लंद्विदलंचैवकर्कटीकारवेल्लकम् ।
वृंताकंचकरीरंचतैलंचाभ्रेविवर्जयेत् ॥

अर्थ-खट्टा, खारा, दोदलका अन्न (मूंग, चना, मसूरादि) ककडी, करेला, वैंगन, करीलका शाक [ककाराष्टक] और तेलको अभ्रक खानेवाला त्याग दे ।

अपक्क भक्षणे दोषाः

चन्द्रिकादियुतमभ्रकंहठाज्जीवितंचझटिति प्रणाशयेत् । व्याघ्ररोमइवचोदरस्थितंवात नौवितनुतेगदान्बहून् ॥

अर्थ-यदि अभ्रक चमकदारहो तो तत्काल प्राण हरे, जैसे वघेरेका रोम पेटमें रहनेसे अनेक रोग देहमें करता है ।

तच्छांति.

उमाफलंवनेपिष्ट्वासेवयेद्योदिनत्रयम् ।
अशुद्धाभ्रकदोषेणविमुक्तःसुखमेधते ॥

अर्थ--३ दिन आमलेको जलमें पीसकर, पिये तो अशुद्ध अभ्रकके दोषोंसे रहित हो सुख भोगे ।

इतिश्री रसराजसुंदर ग्रंथेअभ्रक प्रकरणं समाप्तम्.

अथ हरिताल प्रकरणः प्रारंभः

संध्यायांनारसिंहेनहिरण्यकशिपुर्हतः ।
तच्छर्दितमभूतालस्तत्कक्षांलेखनाश्रितः ॥

अर्थ-पहले नरसिंह भगवानने सायंकालमें हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा उसकी छर्दिसे हरताल प्रगट हुई यह उसकी कांखमें रहतीथी ।

हरितालके भेद.

हरितालंद्विधाप्रोक्तंपत्राख्यंपिंडसंज्ञितं ।
तयोराद्यंगुणैःश्रेष्ठंततोहीनगुणंपरम् ।

अर्थ-हरिताल पत्राख्य और पिंडसंज्ञक दो प्रकारकी है. इनमें पत्राख्य यानी तवकिया हरिताल उत्तम गुणवाली है, और दूसरी-हीन गुण है ।

मतान्तरम्.

हरितालंचतुर्धोक्तंपिंडाख्यंपत्रसंज्ञिकम् ।
गोदंतंवकदालंचक्रमाद्गुणकरंपरम् ॥

अर्थ-हरिताल (पिंडाख्य, पत्रसंज्ञक, गोदंती, और वकदाल) चार प्रकारकी है क्रमपूर्वक एकसे दूसरी अधिक गुणवाली है ।

पिंडतालके लक्षण.

निष्पत्रंपिंडशदृशंस्वल्पसत्वंतथालघु ।
स्त्रीपुष्पहारकंस्वल्पगुणंतत्पिंडतालकं ॥

अर्थ-पत्ररहित गोलेके समान थोडे सत्ववाली, हलकी, स्त्रियोंके पुष्पकी नाशक, थोडे गुणवाली पिंडसंज्ञक हरिताल कहाती है ।

पत्रतालके लक्षण.

स्वर्णवर्णंगुरुस्निग्धंसपत्रंचाभ्रपत्रवत् ।
पत्राख्यतालकंविद्याद्गुणाढ्यंतद्रसायनं ॥

अर्थ-सुवर्णकासा वर्ण, भारी, चिकनी, अभ्रककेसे पत्तोंवाली, पत्राख्य (तवकिया) हरिताल कहाती है यह गुणकरके युक्त और रसायन है ।

गोदंतीहरिताल.

दीर्घखंडंमतिस्निग्धंगोदंताकृतिकंगुरु ।
नीलरेखान्वितंमध्येपीतंगोदंततालकं ॥

अर्थ-लंबे २ टुकडेहों, अत्यंत चिकनी, गौके दांतके समान और भारीहो, तथा जिसके बीचमें नीली तथा पीली रेखा हो उसे गोदंतीहरिताल कहते हैं । आज कल पंसारी

लोग सफेद सेलखडीके समान छोटे २ टुकडोंको गोदंती हरिताल बताते हैं, और मूर्ख वैद्य उसे गोदंतीके बदलमें लेजाते हैं।

वकदाली हरिताल.

अतिस्निग्धंहिमप्रख्यंसपत्रंगुरुतायुतं ।
तत्तालंवकदालंस्यादिद्रकुष्ठहरंत्विदम् ॥

अर्थ–अत्यंत चिकनी, वर्फकेसमान, पत्रयुक्त, भारी, ऐसी हरिताल वकदाल संज्ञक जाननी यह कुष्ठको हरण करती है।

मारणयोग्य हरिताल.

पिंडतालंमृतौत्याज्यंपत्रालंमृत्यवेहितम् ।
गोदंतंतुगलत्कुष्ठेश्वेतंकुष्ठेऽतिमंविदुः ॥

अर्थ–पिंडताल मारणकर्ममें त्याज्य कही है। और तबकिया ग्राह्य है, गोदंती गलत्कुष्टमें और सफेदकुष्ठमें वकदाल हरिताल ग्रहण करनी चाहिये।

हरितालके गुण.

हरितालंकटुस्निग्धंकषायोष्णंहरेद्विषं ।
कंडुकुष्ठार्शरोगासृक्कफपित्तमरुद्व्रणान् ॥

अर्थ–हरिताल-कडवी, चिकनी, कसैली, और गरम है। विषको दूर करे, कोढ, बवासीर, रुधिरविकार, (कफ, पित्त, वादी) से प्रगट विकार तथा फोडा ये सब दूर हो ये गुण शुद्धहरितालके हैं।

अशुद्ध हरितालके गुण.

अशुद्धतालमायुघ्नंकफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटांगसंकोचान्कुरुतेऽतःप्रशोधयेत् ॥

अर्थ–अशुद्धहरिताल आयुका नाशकरे, कफ वात और प्रमेहको प्रगटकरे, तथा ज्वर, हडकल, अंगसंकोच, इनरोगोंको करे। इसलिये हरितालको अवश्य शोधे।

नाम भेद कथन.

हरितालीतिविख्यातात्रिपुलेकेपुविश्रुता ।
शृणुतस्यापरंनामहंसराजइतिश्रुतम् ॥
तयासंभक्षितस्तालःसुधारूपःप्रजायते ।

अर्थ–हरितालीनामसे त्रिलोकीमें विख्यात कि जिसका दूसरानाम हंसराज विख्यातहै, इसके साथ हरताल खानेसे चंद्रमाके समान रूप करै।

हरिताल शोधन.

कूष्मांडत्रितयेस्विन्नंतालंशुध्यतिनान्यथा ।

अर्थ–पेठे (कुम्हडे) के ऊपर चारअंगुलकी टांकी देकर उसमें हरितालको कपडेमें बांधकर रखदे, और उसी टांकीसे बंद करदे, फिर एक खिपरेमें नीचेके भागकी तरफसे रख नीचे चार प्रहरकी आंचदे जिससे सब पेटा गलजाय, जब चार अंगुल बाकी रहे तब हरितालकी पोटली निकालले इसी प्रकार दूसरे और तीसरे पेठेमें पचावे, पीछे पोटली निकाल शुद्धपानीसे धोडाले तो हरिताल शुद्धहो।

तथा दूसरी विधि.

तालकंकणशःकृत्वावध्वापोटलिकांततः ।
दोलायंत्रेणयामैकंसचूर्णेकांजिकेपचेत् ॥
यामैकंदोलयातद्वत्कूष्मांडकरसेततः ।
तिलतैलेपचेद्यामंयामंचत्रैफलेजले ॥
दोलायंत्रेचतुर्यामंपकंशुद्ध्यतितालकं ।

अर्थ–हरितालके छोटे २ टुकडे कर पोटलीमें बांधे कांजीमें दोलायंत्रद्वारा १ प्रहर पचावे, इसीप्रकार १ प्रहर पेठेके रसमें पचावे, और १ प्रहर तिलके तेलमें, १ प्रहर त्रिफलाके काढेमें, ऐसे चारों वस्तुओंमे चार प्रहर पचानेसे हरितालकी शुद्धी होवे।

तीसरी विधि.

स्विन्नंकूष्माण्डतोयेवातिलक्षारजलेपिवा ।
तोयेवाचूर्णसंयुक्तोदोलायंत्रेणशुध्यति ॥

अर्थ-हरितालको पेठेके पानी वा तेल तथा क्षारगणके पानी अथवा चूनेके जलसे दोलायंत्र द्वारा औटानेसे शुद्ध होवे।

चौथी विधि.

शोधयेत्परयायुक्त्याएतत्पत्रीकृतंशुभम्।
वस्त्रेणपोटलींबध्वांकांजिकेशोधयेत्र्यहम्॥
कूष्माण्डरसमध्येतुत्र्यहंदुग्धेनशोधयेत्।
वटदुग्धेत्र्यहंशोध्यंतालकंशुद्धिमाप्नुयात्॥

अर्थ-हरितालके न्यारे २ पत्रकर उनकी पोटली कर ३ दिन कांजीमें पचावे, पीछे पेठेकेरस, दूध, वडकेदूध, इनमें तीन २ दिन पचावे. तो हरितालशुद्ध होवे।

पांचवीं विधि.

तालकंकणशःकृत्वादशांशेनचटंकणं।
जंबीरोत्थद्रवेक्षाल्यंकांजिकेक्षालयेत्पुनः॥
स्वेद्यंवाशाल्मलीतोयेतालकंशुद्धिमाप्नुयात्।

अर्थ-हरितालके टुकडेकर उनका दशवां हिस्सा सुहागा मिलाय जंबीरीके रसमें औटावे, फिर कांजीमें औटावे और सेमलके रसमें औटावे तो हरितालशुद्ध हो।

शुद्ध हरितालके गुण.

शोधितंहरितालंतुकांतिवीर्यविवर्द्धनं।
कुष्ठादिपापरोगघ्नंजरामृत्युहरंपरं॥

अर्थ-शुद्ध हरिताल-कांति और वीर्यको बढावे, कुष्ठादि पापरोगोंको दूरकरे, बुढापे और मृत्युका हरण करे।

हरिताल मारणं.

पत्राख्यंतालकंशुद्धंपौनर्नवरसेनतु।
खल्वेविमर्दयेदेकंदिनंपश्चाद्विशोषयेत्॥
संशोष्यगोलकंकृत्वाचक्राकारमथापिवा।
ततःपुनर्नवाक्षारैस्थाल्यामर्द्धंमपूरयेत्॥
तत्रतद्गोलकंधृत्वापुनस्तेनैवपूरयेत्।
आकंठंपिठरंतस्यपिधायरोधयेन्मुखं॥
स्थालींचूल्ल्यांसमारोप्यक्रमाद्वह्निंविवर्द्धयेत्।
एवंतुम्रियतेतालंमात्रातस्यैवरक्तिका॥
अनुपानान्यनेकानियथायोग्यंप्रयोजयेत्॥

अर्थ-शुद्ध तबकिया हरितालको पुनर्नवा (सांठ) केरसमें घोट उसको सुखाय गोला वा टिकियां बनावे, पीछे सांठके खारसे आधी हँडिया भर उसके बीचमें टिकियाओंको रख ऊपरसे उसीखारको हँडियामें दाबकर भर दे, और ऊपर कपरमिट्टी कर चूल्हेपर चढाय क्रमसे मंद मध्य और तेज आंच देवे, इस प्रकार हरितालकी सफेदभस्म होवे, इसकी मात्रा १ रत्तीकी है अनेकअनुपानोंके साथ यथायोग्य रोगोंमें देवे।

तथा दूसरी विधि.

स्वर्णपत्रंशुद्धतालंपलानांदशसंज्ञकम्।
कौमारीद्रवप्रस्थेनमर्दयेत्तालकंशुभं॥
निंबुप्रस्थरसेचैववाणपुंखरसैःपुनः।
प्रस्थंवज्रीरसेनैवमर्कपिंगपतिंपृथक्॥
मर्दयेचदृढंखल्वेयावद्भवतिगोलकं।
गोलकंशोषयेत्पश्चात्घर्मेसप्तादिनानिवै॥
पलाशभस्मकूष्माण्डेक्षिप्तोपरिचगोलकं।
दत्वोपरिपुनर्भस्मभांडवक्त्रंनिरुंधयेत्॥
चूल्ल्यामारोपयेद्यत्नात्पावकंज्वालयेत्क्रमात्।
मंदमध्यहठाग्नीनांयामानांचद्विपष्ठिकं॥
स्वांगशीतलमादायशुभ्रंतालंमृतंध्रुवम्।
तंदुलंतंदुलार्द्धंवानागवल्लीदलैर्लिहेत्॥

अर्थ-दशपल सोनेके पत्रोंके समान शुद्ध-हरितालको १ सेर घीग्वारकेरसमें घोट १ सेर नीबूके रसमें घोटे, सेर वाणपुंख (सरफोका) के रसमें, सेर थूहरके दूधमें, और १ सेर आकके दूधमें गोलाबंधनेपर्यंत घोटे, पश्चात् गोलेको ७ दिन

धूपमें रखकर सुखावे, फिर एक बडे पात्रमें ढाककी भस्म भर उसमें गोलेको रख फिर ऊपर तक उसी भस्मको भर मुखको ढकदे, और यत्नपूर्वक चूल्हेपर चढाय बासठप्रहर क्रमसे मंदमध्य और तेज आंच उसके नीचे जलावे, फिर शीतल होनेपर उतार ले यह हरितालकी सुंदरभस्म होवे इसे एक अथवा आधे चांवलभर नागरपानके साथ खाय तो उग्ररोग दूर होवें ।

अष्टादशानिकुष्ठानिज्वरमष्टविधंहरेत् ।
पथ्यंमकुष्ठचणकंलवणस्नेहवर्जितम् ॥

अर्थ—अठारहकुष्ठ, आठप्रकारके ज्वर इनको दूर करे, इसपर मोठ, चना, विना-तेल, गुड और लवनके खाय ।

तीसरी विधि

तालंविचूर्णयेत्सूक्ष्मंमर्द्यनागार्जुनीद्रवैः ।
सहदेव्यावलायाथमर्दयेद्दिवसद्वयम् ॥
तत्तालरोटकंकृत्वाततच्छायांविशोषयेत् ।
हंडिकायंत्रमध्यस्थंपलासभस्मकोपरि ॥
पाच्यंचवालुकायंत्रेविहितंचंडवन्हिना ।
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥

अर्थ—हरितालका सूक्ष्मचूर्णकर दुद्धी, सहदेई और वला (खिरेटी.) इनके रसोंमें दो-दिन खरलकरे, पीछे उस हरितालकी रोटीसी वनाय छायामें सुखालेवे, फिर एकहांडीमें ढाककी राख भर उसके वीचमें रोटीको रख वालुकायंत्रमें पचावे, तीव्र अग्निदे, जव स्वांगशीतल होजाय तव उतारकर सव रोगोंमें देवे।

चौथी विधि.

पलमेकंशुद्धतालंकुमारीरसमर्दितं ।
सरावसंपुटेक्षिप्त्वायामानद्वादशकंपचेत् ॥
स्वांगशीतंसमादायतालकंचमृतंभवेत् ।
गलत्कुष्ठंहरेच्चैवतालकंचनसंशयः ॥

अर्थ—१ पल शुद्ध हरितालमें घीग्वारका रस डालकर खूवघोटे, पीछे टिकिया बनाय धूपमें सुखाय सरावसंपुटमें रख १२ प्रहरकी आंचदे और स्वांगशीतल होनेपर निकाले तो हरितालकी भस्म होवे, यह निस्संदेह गलित्कुष्ठको दूर करे ।

पांचवींविधि.

वंदालीं तालमादाय निर्मलंखल्वमध्यगं ।
दिनसप्तकपर्य्यंतं कुमारीद्रवमर्दितम् ॥
काचकुप्यांविनिक्षिप्य मुखमुद्घाटयेत्ततः ।
विरच्यवालुकायंत्रं वन्हिंदद्याच्छनैःशनैः ॥
ततोधूमोस्यनीलाभः पीतवर्णस्तुसर्वथा ।
मुखमार्गेततःप्राज्ञोन्यसेल्लोहशलाकिकां ॥
तस्यतालस्यमध्येसाभ्राम्यतेचक्षणंक्षणं ।
आकृष्यनीयतेसार्द्रा सशलाकाविलोक्यते ॥
नीलंपीतंयदाकिंचित्स्वेदरूपंजलंभवेत् ।
दिनैकमपरंस्वेद्यं दद्याद्वापिदिनद्वयम् ॥
जलरूपंयदास्वेदो दृश्यतेतालकस्यवै ।
शीतलंक्रियतेतत्र स्वांगशीतंयथाभवेत् ॥
खर्जूरखोटिकाकारं तालसत्त्वंमहोज्ज्वलं ।
गुरुरूपंदृढंप्राप्य करस्पर्शेचसौख्यदम् ॥

अर्थ—शुद्धवकदाली हरितालको खरलमें ७ दिन ग्वारपट्ठेके रसमें घोंटे, पीछे सुखाकर आतिशी शीशीमें भरें, और शीशीका मुख खुला रहनेदे, पीछे वालुकायंत्रमें रख मंदाग्निदे जव शीशीके मुखसे नीला वा पीला धूँआं निकले तव चतुरवैद्य शीशीमें लोहेकी सलाई डाल उसे चारोंओर घुमाय हरितालसे बाहर निकाले यदी वह सलाई गीली और रंग नीला वा पीला हो तों एक या दो दिन और स्वेदन करे, परंतु बार २ परीक्षा करता रहे जव स्वेद जलके

समान स्वच्छ हो जाय तब शीतल कर उतार ले, यह छुहारेकी गुठलीके समान उज्ज्वल सत्व होता है। भारी और दृढ तथा छूनेसे सुखदाता होता है।

टंकमात्रंविचूर्ण्याथ मदद्यात्कुष्ठिनोपर।
क्षुद्बोधोजायतेत्यर्थं मत्यर्थंशुभगंवपुः॥
अत्यर्थंपच्यतेभुक्त मत्यर्थंसुखमाप्नुयात्।
अरुणौदुंबरंकुष्ठ मृक्षजिह्वंकपालकं॥
काकणंपुंडरीकंच दद्रुकुष्ठंसुदुस्तरं।
तथाचर्मदलंहन्या द्विसर्पंचापिकर्कशं॥
सिध्मंविचर्चिकांपामां श्वेतकुष्ठंचनाशयेत्।
गरंदूषीविषंहन्या न्मासमात्रोपसेवनात्॥

अर्थ–इसमेंसे ४ माशे हरताल पीसकर कोढीको देवे तो अत्यंत भूँखलगे, और सुंदर देह होवे, अत्यंत क्षुधा और सुखवढे, अरुण-कोढ, उदुंबर, ऋक्षजिह्व, कपाल, काकन, पुंड-रीक, दाद, चर्मदल, कठोरविसर्प, सिध्म, वि-चर्चिका, खाज, सफेदकोढ, दूषीविष इन सवको १ महीना सेवन करनेसे नाश करे। परंतु याद रहे कि ४ मांशेकोही क्रमसे १ महीना खाय इकट्टी न खाजाय, यह विधि राजराजेश्वर चिंतामणीमें लिखी है।

छठीविधि.

सूक्ष्मंविचूर्णंशुचितालकस्य संभावयेद्विंशति वासरांश्च। अश्वत्थतोयैःशुचिखल्वमध्ये घृष्ट्वाविदध्यात्दृढगोलकोपि॥ अश्वत्थभू स्यार्धभृतेचभांडे न्यसेत्ततोगोलकएवमंदं। संपूर्णभूत्वाथशरावकेयं निरुध्यमुंचेचगजाह्व यांते॥ सहस्रवन्योत्पलसंयुतेवै मूतिंव्रजेद्या मचतुष्टयेन। निर्धूममेनंयदिलोहतप्तं मुंचेत्सु शुद्धंशुभशुक्लवर्णं॥

अर्थ–शुद्ध हरितालको २१ दिन पीपलके रसमें खरलकर गोला बनाय धूपमें सुखालेवे, फिर एक वडी हंडियाले आधीमें पीपरकी राख भर गोला रख वाकीको उसी राखसे भरदे, और खीपरेसे मुख वंदकर ७ कपरमिट्टी करे, गजपुटमें हजार उपलोंकी आंच दे तो ४ प्रह रमें शुद्धभस्म होवे (इसकी परीक्षा इस प्रकारकरे) एक लोहेकी गरम सलांग पर डाले यदि धूँआ नदे और सफेद होजाय तो शुद्ध जाने।

सातवींविधि.

एकोविभागोशुचितालचूर्णभागद्वयंसुन्दरधू मसारं। मध्येविभूतिशुभतालकचूर्णमेतच्च स्योपरिःपरिददेचसुधूमसारः। प्रपूरयेद्भूमि कयाथभांडे शरावकेणैवततोनिरुंध्यात् वि मुच्यचूल्ह्यांचहिरण्यरेतां दद्देतुयोयामचतुष्ट यंच एतैःप्रकारैर्मृतिमेवतालंनिर्धूममेवंकिल शुक्लवर्णम्॥

अर्थ–शुद्ध हरिताल १ भागमें दो भाग धूमसा मिलाकर एक मटकेमे इमली वा पीपलकी राख भर उसके वीचमें रखे, उसके ऊपर उ-सी राखको कंठतक भर देवे, और मुख पारीसे ढककर कपरमिट्टी कर चूल्हेपर चढाय ४ प्रहर की अग्नि दे तो हरितालकी निर्धूम और सफेद भस्म होवे।

आठवीं विधि.

शुद्धंतालंचूर्णयित्वाकन्याकुष्मांडजैर्द्रवैः।
दध्नात्रिभावितंशुष्कंगोलंकृत्वानिधापयेत्॥
हंडिकायांपटुक्षारैःपूर्णयेचषडंगुलं।
क्षारेणाच्छाद्यचपुनर्लोहपात्रेनिधापयेत्॥
पुनःक्षारंतुचाकंठंपूरयित्वाक्रमाग्निना।
द्वात्रिंशत्प्रहरंपाच्यंभस्मस्याच्चूर्णसन्निभं॥
ससितंतंदुलोन्मानंवातरक्तज्वरप्रणुत्।

अर्थ–शुद्ध हरितालको ग्वारपट्टे और पेठे-

के रसमें खरल करे, पीछे दहीकी ३. भावना देकर सुखालेवे, तदनंतर एक वडी हांडीमें नोन और खार छः२ अंगुल विछाय उसके विचमें गोलेको रखे और ऊपरसे खार भरकर वंदकरे, और हाडीको चूल्हेपर चढाय क्रमसे मंद मध्य तेज आंच ३२ प्रहर देवे तो हरितालकी चूनेके समान सफेद्भस्म होवे इसमेंसे १ चांवलकी वरावर देवे तो वातरक्त दूर होवे।

नवीं विधि.

जंवीरद्रवमध्येतुप्रक्षाल्यंनटमंडनं।
दशांशंटंकणंदत्वाखंडशःपरिमेलयेत् ॥
चतुर्गुणेगाढपटेनिवध्यप्रहरद्वयं।
दोलायंत्रेणसुस्वेद्यप्रदीपप्रमितेनले ॥
चूर्णतोयेकांजिकेचकूष्मांडेनिंवतैलके।
त्रिफलाम्बुततःपश्चात्क्षालयित्वाम्लवारिणा ॥ ततःपलाशमूलत्वक्परिपिष्टंप्रशोपयेत्। महिपीमूत्रसंपिष्टंपुनस्तंपरिशोपयेत् ॥
तद्गोलकंसरावाभ्यांसंपुटीकृत्ययत्नतः।
खातेगजपुटेकृत्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
अजादुग्धैःपुनःपिष्ट्वाशोपयेद्गोलकीकृतं ॥
आकंठंभस्मपालासंहंडिकायांविनिःक्षिपेत्।
सम्यक्चूर्णस्यकुडवंदत्वातत्रविचक्षणैः ॥
स्थापयेद्गोलकंतत्रपुनश्चूर्णस्यभस्मच।
यथाधूमोवहिर्यातितथातांचविमुद्रयेत् ॥
द्वात्रिंशत्प्रहराग्निंचचूल्ह्यांभक्तवदर्पयेत्।
स्वांगशीतंसमुधृत्यसचूर्णनटमंडनं ॥
हिमकुन्देन्दुसंकाशंनिर्धूमंकृष्णवर्त्मना।

अर्थ–हरिताल अथवा मनसिलको जंवीरीके रससे प्रक्षालनकरे (धोवे) पीछे हरितालके छोटेछोटे टुकडे कर हरतालकादशांश सहागा डाल चारतहके कपडेमें वांध दोलायंत्रद्वारा चूनेके पानी, कांजी, पेठेकेरस, नीमकेतेल वा रस, त्रिफलाकेकाढे, प्रत्येकमें दो २ प्रहर औटावे। तदनंतर नीवूकेरस, ढाककी जडकीछाल, भैंसकेमूत्रमें घोटकर गोला वनावे और सरावसंपुटमें रख कपरमिट्टीकर गजपुटमें फूंके स्वतः। शीतल होनेपर निकाल वकरीके दूधमें घोटे और सुखाकर गोला वनावे, पश्चात् एक मटकेमें ढाककी राख भरकर उसके वीचमें गोलेको रख वाकी खालीको पूर्वोक्त राखसे खूव भर मुखवंद कर देवे, यानी मुखको ढकना देकर चूने और गुडसे संधियोंको वंदकरे, अथवा ढाककीभस्म और चूनेके वीचमें गोलेको रखकर मुखवंदकरे जिससे उसका धुआं वाहर न निकले, फिर ३२ प्रहरकी अग्निदेवे और जहांसे धुआं निकले वहीं ढाककी राख और चूनेसे वंद करे, स्वांग शीतल होनेपर सावधानीसे हरितालको निकालले यह भस्म वर्फ, चंद्रमा, कुंदके फूलके समान निर्धूम और सफेदहोवे।

अथगुणा.

रक्तिकास्यप्रदातव्याःपुराणगुडयोगतः।
पथ्यंचचणकस्योक्तंरोटिकापष्टिकोदनं ॥
निर्लोणकंचनिष्पन्नंखादयेच्चैकविंशतिः।
दिनानिनिर्वातगतःसर्वव्यापारवर्जितः ॥
गलत्कुष्ठंपुंडरीकश्चित्रंकापालिकंतथा।
औदुंवरंरक्तजिह्वंकाकणंस्फोटमेवच ॥
वातस्तुपांडूरोगंचदद्रुपामाविचर्चिका।
विसर्पमर्द्धशीर्पंचविपादिंचभगंदरम् ॥
सर्वंयथाक्रमंहंतिसेवितंहरितालकं।
अन्यानपिव्रणान्सर्वानंधकारमिवांशुमान् ॥

अर्थ–१ रत्ती हरिताल पुराने गुडके साथ खाय और पथ्यमें चनाकी रोटी साठीचांवल तथा और पदार्थ सव अलौने खाय और २१ दिन तक सव कामोंको छोडकर पथ्यसे रहे तो

सर्वरोग रहित होजाय । गलित्कुष्ठ, पुंडरीक, सफेदकोढ, कापालिक, औदुंबर, रक्तजिह्व, काकण, फोडा, पांडुरोग, दाद, छाजन, खाज, विसर्प, अर्द्धांगवात, तथा ८० प्रकारकीवात, विपादिका और भगंदरको हरिताल यथाक्रम सेवन करनेसे नाशकरे, औरभी व्रणादिरोगोंका नाश करे जैसे सूर्य्योदय अंधकारका नाश करताहै ।

दशवीं विधि.

एतच्चतालकंशुद्धंकर्षैकंमृतलोहकम् ।
किंचिद्धेमंतथारूप्यंसर्वमेकत्ररोधयेत् ॥
कांचकूप्यांमृदालिप्त्वासप्तवारान्मुहुर्मुहुः ।
तालकंकांचकुप्यांतःप्रदद्देतःप्रयत्नतः ॥
वज्रमुद्रांमुखेकृत्वाकिंवामधुरवन्हिना ।
संस्थाप्यवालुकायंत्रेपचेद्यामचतुष्टयं ॥
स्वांगशीतलमुधृत्यपूजयेच्चेष्टदेवतां ।
खल्वेविचूर्णयेत्पूतंरसभांडेनिधापयेत् ॥

अर्थ–शुद्धहरिताल और लोहभस्म दोनों एक २ तोला, थोडा सोना, थोडी चांदी, सबको एकत्र कर कांचकी शीशीमें भर सात कपरमिट्टीकरे, और वालुकायंत्रमें रखकर शीशीपर वज्रमुद्राकर मधुरअग्निसे चार प्रहर पचावे, स्वांगशीतल होनेपर उतारलेवे, और हरितालको निकाल खरलमें डाल घोटडाले और किसी उत्तम शीशीमें रखदे, तदनंतर इष्टदेवका पूजनकर रोगीको दे ।

ग्यारहवीं विधि.

विमलपत्रकतालसुखंडशःकृततदोत्तरवस्त्रविवेष्टयेत् धृतमथोत्तरपात्रघटोदरे जलरसेस्थिरदोलकयाशुभैः । प्रहरयुग्मकृशानुक्रमादिभिःस्वतनुशीतलस्वेद्यपुनस्ततःमहिषिमूत्रक्रमेणकुमारिका सघनचूर्णरसेशरपुंखिका । सजलनिंबुसुपक्वरसेपुनः सुदृढकोकिलपक्वद्रवे ततः । इदमिहकृतस्वेद्यप्रयत्नतो भवति शुद्धमिदंनटमंडनम् ।

अर्थ–तत्वकिया हरितालके जुदे २ पत्र लेकर एक अच्छे वस्त्रमें बांध पोटलीको नेत्रवालाके रसमें दोलायंत्रद्वारा दोप्रहर पचावे, शीतल होनेपर निकाल भैंसके मूत्र, घीगुवारके रस, नागरमोथाके काढे, रसफोकाकेरस, नीबूकेरस, और ईखकेरस इन प्रत्येकमें दोलायंत्र द्वारा औटावे तो हरिताल शुद्ध होवे ।

अथ मारण.

कूष्मांडतोयेनदिनंविमर्द्य निंबूरसेगोभिरसेत थैव । सनाकछिक्कादिकुलत्थितोये धत्तूरजं चार्द्रकभृंगराजं ॥ नागार्जुनीवासहदेविकां च सब्रह्मदण्डीद्रवकिंशुकानां । एरंडमूलंल शुनंपलांडु सुवर्णवल्लीरसकाकमाचीं ॥ गोपालिकांवज्रिपयोर्कदुग्धं खल्वेविमर्द्यदिनमेकविंशत् । पृथक्पृथक्मासचतुर्दशांते चक्राकृतिवर्त्तुलरोटिकाभं ॥ अश्वत्थभूत्याभृदुहंडिकायांमधोर्ध्वमध्यस्थिततालकंच । सुपूर्णपात्रंदृढभस्मसंस्था मुखेसरावंमृतकर्पटंच दद्याच्चूल्ह्योपरिरक्षिणीयमग्निक्रमेणापि दिनानिचाष्टौ ॥ शिवस्यपूजांद्विजभोजनंच निष्कासयेद्युतिमान्शुभ्रतालः । कुन्देन्दुशंखादिभासमानं तालंभवेद्वामृततुल्यसिद्धं ॥ सुवर्णरौप्यादिकरंडमध्ये रक्षेत्ततोतालकभस्मयुक्त्या ।

अर्थ–शुद्धहरितालको १ दिन पेठेके रसमें घोट नीबू, गोभी, नकछिकनी, कुलथी, धतूरा, अदरक, भांगरा, दुद्धी, सहदेई, ब्रह्मदंडी, ढाक, अंडकीजड, लहसन, प्याज, मालकांगनी, मकोय, कचारिया, थूहर, आक इनके रस

और दूधोंमें यथासंभव २१ दिन घोटे, इस प्रकार जब चौदह महिने वीतजाँय तब रोटीके समान चंदिया बनावे, तदनंतर, एक मिट्टीके बडे पात्रमें पीपलकी राखभर टिकिया रख ऊपरसे फिर दवाकर राख भरदे, और मुखपर ढकनादे कपरमिट्टीकर चूल्हेपर चढावे, और नीचे क्रमसे मंद मध्य तेज आँच आठ दिन देकर नवें दिन श्रीशिवजीका पूजन कर ब्राह्मण भोजन कराय बडी सावधानीसे हरिताल-को निकाले, यह हरिताल कुंदके फूल चंद्रमा तथा शंखके समान श्वेत और अमृतके तुल्य सिद्ध होवे, इसे सोने वा चांदीके पात्रमें यत्नसे राखे।

अथ गुण.

मात्राततस्तंदुलकप्रमाणं रोगानुसारैरनुपान मध्ये। द्विकालपथ्यं लवणाम्लतीक्ष्णं वर्ज्यं ततोवातलतैलपक्कं त्रिःसप्तवारंह्यथमंडलंवा गुणैर्मृतोतालकधूम्रहीनं ॥ कुष्ठानिचाष्टादश वातरक्तं ससन्निपातंचभगंदराणि। अपस्मृतिर्वातव्रणांश्चसर्वे फिरंगरोगादिकश्लीपदानि ॥ सर्वोपदंशप्रभृतिंश्चशोफा सूतिर्गदा श्वासमनेकवातं। कासादिदुष्टानपिपीनसाना मर्शादयोग्राःग्रहणीविकारं॥ मेदोर्बुदगृध्रसि गंडमाला कव्यामवातादिकमग्निमांद्यं। मूत्रादिकृच्छ्रादिकमेहजालं शोफैश्चसर्वैःक्षयराज यक्ष्मा सर्वेकफाश्चापिचपित्तरोगंवातेतथा-व्याधिज्वरादिकानां॥सवालसूर्य्योदयमंधकारं नाशंयथासेविततालभस्मः सुवर्णवत्कांतिकरोतिकाम रामाशतानांविलसेन्मनुष्यः॥

अर्थ–इस हरितालको १ चांवलके अनुमान यथायोग्य अनुपानके साथ दोनों समय यानी प्रातःकाल और सायंकालमें देवे-इसका खानेवाला नमकीन, खट्टा, चर्परा, वादी, तेलका पका इत्यादि पदार्थोंको त्याग दे। इस धुआं रहित हरितालको २१ या ४० दिन सेवन करे तो ये रोग दूर होवें, अठारह प्रकारके कोढ, वातरक्त, सन्निपात, भगंदर, विस्मर्ण (भूलका रोग), मृगी, संपूर्ण व्रणरोग, फिरंगरोग, श्लीपद, उपदंशप्रभृतिरोग, सूजन, प्रसूत, श्वास, वादीके अनेक रोग, खांसी पीनस, ववासीर, संग्रहणी, मेदरोग, अर्बुद, गृध्रसी, प्रमेह, गंडमाला, कमरके रोग, आमवात, मंदाग्नि, मूत्रकृच्छ्र, शोफरोग, खई, राजयक्ष्मा, सब कफकेरोग, वातरोग, पित्तरोग, बुढापेसे आदिले सब रोग नष्ट होवें। जैसें सूर्य्योदयसे अंधकार जाता रहता है। इस प्रकार हरिताल सेवनसे सब रोग मिट जाते हैं। देहकी सुवर्णके समान कांति हो और १०० स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति देती है।

तेरहवींविधि.

शुद्धंतालं समादायद्रोणपुष्पीरसैर्भिषक्। दिनानिसप्तकंमर्द्यंयंत्रेविद्याधरेक्षिपेत्। यामानष्टौपचेदग्नौस्वांगशीतलमुद्धरेत्। ऊर्द्धपात्रंगतंसत्त्वंग्रहीत्वामर्दयेत्पुनः॥ त्रिदिनंतद्रसैरेवततोयंत्रेपुनःपचेत्। तदधोज्वालयेदग्निम ष्टयाममतंद्रितःएवंपुनःपुनःकुर्य्याद्यावत्सत्त्वं स्थिरंभवेत्॥ स्थैर्यसत्त्वस्यनियतंजायतेसप्तमेहनि। अष्टमेर्कस्यदुग्धेनमर्दयेत्त्वेकवासरं। यामानष्टौपचेदग्नौकुर्य्यादेवंत्रिवारकं ॥ गलित्कुष्ठंतथाशोथंवातरक्तसमुद्भवं। वातरक्तेपुसर्वेपुयोज्यंगुंजाद्वयोन्मितं॥ चोवचीनीभवंचूर्णंगृहीत्वाटंकमात्रकम्। गुंजामात्रेणतालेनमिश्रितैर्मधुनालिहेत्॥ तस्यनश्यतिमूलेन फिरंगाख्योमहागदः। व्रणाश्शुष्यंतिसर्वे

वे फिरंगोत्थानसंशयः ॥ शीघ्रंश्लेष्मामयंह न्याद्नलंचविवर्द्धयेत् ।

अर्थ-शुद्ध हरितालको खरलमें डाल ७ दिन गोमाके रसमें घोटे, जब गाढा होजाय तब दो २ पैसेभरकी टिकिया बांधे और धूपमें सुखाकर डमरूयंत्रमें ८ प्रहरकी आंच दे, जब शीतल होजाय तब ऊपरकी हांडीमेंसे छुरीसे सत्वको खुलच ले । तदनंतर उस सत्व-को ३ दिन गोमाके रसमें घोट टिकरी बनाय धूपमें सुखाय फिर डमरूयंत्रमें आठ प्रहरकी आंच देकर उडा लेवे, इस प्रकार ७ आंच देनेसे हरिताल अग्निस्थाई होवे । आठवें दिन आकके दूधमें घोट टिकिया बांध धूपमें सुखाय डमरूयंत्रमें ८ प्रहर खूब आंच दे इस प्रकार ३ आंच देनेसे हरिताल सिद्ध होवे। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है, वातरक्तसे जि-सकी उंगलियें गिरतीहो वह इससे थम जावें, वातरक्तकी सूजन और चकत्ते दूर होवें, गांठ दूरहो, वातरक्तकी वात दूर हो, नाककी प-पडी दूर होवें, चारमाशे चोवचीनीके चूर्ण और सहतके साथ १ रत्ती खाय तो (फिरं-गवात) गरमी दूर हो, और फिरंगरोगसे लिंगमें जो घाव हो जाते हैं वह इससे सूख जाते हैं, कफरोग दूर होवें दूनी भूँख लगे ।

चौदहवीं विधि.

शुद्ध हरितालको ७ दिन कागजी नीबूके रसमें घोटे । ग्वारपट्ठे, गोमा, गंगतिरिया, इनके रसोंमें सात २ दिन घोटकर पैसे २ भ-रकी टिकियां बनावे और धूपमें सुखाय डम-रूयंत्रमें ८ प्रहरकी आंच दे, शीतल होनेपर ऊपरकी हांडीका लगाहुआ हरितालका सत्व उसे छुरीसे खुलच ले, पश्चात् आकके दूधमें घोट टिकिया बनाय धूपमें सुखाय डमरूयंत्र में ८ प्रहरकी आंचदे उडाय लेवे, इसप्रकार आकके दूधमें घोट २ कर २२ आंचदे, जब अग्निस्थायी होजाय तब इसकी भस्म करे. सो लिखते है। पूर्वोक्त टिकरीको एक हांडीमें ढाक-की भस्मके बीचमे रख उसके ऊपर और ढा-ककी राख दबाकर भर देवे, पीछे मुखबंदकर २४ प्रहर अग्निदेवे, तो उस टिकरीका-का-लारंग निकले । फिर आकके दूधमें १ दिन घोट टिकिया बनाय धूपमें सुखाय उसीप्रकार हाँडीमें १२ प्रहरकी आंचदे, तदनंतर उस टि-करीको सरवासंपुटमें रख दोसेर आरने उपलों-की आंचदे, शितल होनेपर निकाल लेवे। दो-रत्ती खानेसे रुधिर विकार दूर होवे, धातुपुष्ट होवे, ये दोनों क्रिया श्रीपूज्यपाद कल्याण भट्टकी अनुभूत हैं । इसमें कुछ दोष नहीं है, इसके खानेसे कुछ फसाद नहीं होता ।

पंदरहवीं विधि.

पैसेभर तबकिया हरितालको जलपीपलके रसमें घोट टिकिया बनाय धूपमें सुखाय डम-रूयंत्रमें रख १२ प्रहरकी तेज अग्निदे तो हरिताल सिद्ध होवे । इसमेंसे १ रत्ती ह-रिताल दो मासे चोवचीनीके साथ खाय तो फिरंगवात, घाव और गांठ सहित दूर हो, त-था वातरक्तकी गांठ और सूजन दूर होवे, परंतु इस क्रियासे खानेमें यह दोष है कि उंगलियोंका कफ सूख जाता है, कफ सूख-नेके सबब उंगली नवती नहीं कहीं २ ऐसा-भी हुआ है । सर्वत्र ऐसा नहीं होता ।

सोलहवींविधि.

गोमूत्रेभावयेत्तालंदिनैकंसेरमात्रकम् ।
स्फोटयित्वाप्रमाणेनतंदुलस्यनचाधिकं ॥

चुल्हिकायांनिवेश्याथकांजिकंतत्रदीयते ।
वस्त्रेणाछाद्ययत्नेन पर्णचूर्णेनलिप्यते ॥
तस्योर्द्धदीयतेतालंचर्णतालोपरिक्षिपेत् ।
उपरिष्टात्पुनर्लिप्त्वातेनचूर्णेनतालकं ॥
पालिकांतूपरिप्राज्ञःपुनर्दत्त्वामृदार्पितां ।
रुध्वायाममथोवह्निंकुर्याचुल्यांसमंततः ॥
पुनस्तेनप्रकारेण द्विवेलांतालकंतथा ।
कदलीफलदंडस्यद्रवेणपरिमर्दयेत् ॥
याममेकपुनस्तालं शोषयित्वाचतत्तथा ।
पुनर्याममंपुनर्याममेवंवेलात्रयंबुधः ॥
कुरुमर्दनशोषंचतंदुलीयरसेनतं ।
गंडदूर्वारसैस्तद्वत्तथापुष्पफलद्रवैः ॥
सर्वैतिक्ताकाकमांचीरसैस्तद्वत्प्रमर्दयेत् ।
सैहुंडपयसादद्याद्गुडसौभाग्यपीतिका ॥
पादंकृत्वाकाचकुंभे क्षिपेद्यंत्रेथसैकते ।
यामंद्वादशपर्यंतमग्निंकुर्यादहर्निशं ॥
कदलीफलादिकंकर्मयत्कृतंविघ्रतंपुरा ।
तथैवचपुनःकुर्यात्पड्यामंवह्निदीपकं ॥
पुनस्तदेवतत्कर्मद्वियामंवह्निदीपनं ।
एवंतालकसत्त्वंस्यादधस्तिष्ठतिनिश्चितं ॥
खोटिकाभंगुरुतरंसोज्ज्वलंतारसन्निभं ।
वह्निसंयोगतोनैवसमुड्डीयप्रयातितत् ॥

अर्थ–सेरभर तबकिया हरितालको गोमूत्रमें १ दिन भिगोकर दूसरे दिन चांवलकेसे टुकडेकर एक लंबे चौडे कपडेपर चूनेका लेपकर उसमें हरितालको रख ऊपरसे चूना विछाय पोटली बांधे, एक हांडीमें कांजी भर दोलायंत्रकी विधिसे उसमें पोटलीको लटकाय हंडियाके मुखको परियासे ढक कपरमिट्टीकर चूल्हेपर चढाय १ प्रहर उसके नीचे अग्नि जलावे, कांजी सूखनेपर उतारलेवे इस प्रकार दो बार कांजीमें स्वेदन कर १ प्रहर केलेकी जडके रसमें घोट और सुखाकर फिर उसी रसमें घोटे ऐसे तीनवार करनेके पश्चात् चौलाई कटवीतूंबी और पुष्पफलके रसमें तीन २ वार घोटकर सुखावे, पीछे कुटकी और मकोयके रसोंमें घोटे और सुखावे, थूहरके दूध, गुडके जल, सुहागा और हलदी इनमें हरितालको खरल करे, पश्चात् आतिशी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें १२ प्रहरकी आंच दे, पीछे केलेकी जडआदिके रसमें पूर्व रीत्यानुसार मर्दन करे, और छःप्रहर मंदाग्निसे पचावे, फिर पूर्वोक्त रीतिसे मर्दन कर दो प्रहर अग्नि दे इस प्रकार निश्चय हरितालका सत्व अग्निस्थायी होवे खांडकेसमान, भारी, उज्ज्वल, चांदीके समान हो और यह अग्निके संयोगसे नहीं उडता है।

सत्तरहवीं विधि.

सेरभर शुद्ध हरितालको ४ प्रहर घीग्वारके रसमें खरलकरे, जब गाढा होजाय तब चंदिया बनाकर धूपमें सुखावे, एकहंडियामें ढाककीराख भर अभ्रकके टूक बिछाय उस चंदियाको रख भोडलके पत्रोंसे ढक पूर्वोक्त राखको मुखपर्य्यंत भरदे और ढकनेसे हंडियाका मुख बंदकर कपरमिट्टीकरे और सुखाकर १२ प्रहरकी आंचदे, और स्वांग शीतल होनेपर खोल ऊपर लगे सत्वको हंडियासे खुरच ले इसीप्रकार गोमा, संखाहूली, थूहर, आक, वड, गेंदाकीपत्ती, भैंसकादूध, आँवलेकीपत्ती, नागदोन, कुकुरभांगरा, मोरशिखा, विषखपरा, जलपीपल, कालाधतूरा, अमरवेल, ओंगा, सहंजना, चिरमिठी, नकछिकनी, सहदेई, सिंगियाविषका काढा, राईकारस, पथरसंगा, गोभी, प्याज, नीबू, कुल्हाडा, हुल-

हुल, सरफोका, दुद्धी, अदरक, सोनजुही, लहसन, कँगही, धत्रा, चीता, सफेदआक, इन औपधियोंमें जिनका काढा लिखा है उनके-काढेमे और वाकियोंमें जिनमें दूध निकले उन उनके दूधमें और रस निकले उनके रसमें एक २ दिन घोट टिकिया बांध डमरू-यंत्रमें उडायलेवे, तो हरितालका सत्वअमृत-केसमान बने। राईके समान मात्रा सेवन करनेसे महाकुष्ठादि असाध्य रोग ४२ दिनमें निश्चय दूर होवें, भूख अत्यन्त वढे, बहुतस्त्रियोंसे गमन करनेकी शक्तिहोवे, ७ दिन सेवन करनेसे संपूर्ण वीर्यरोग नष्ट होवे। स्त्रियोंके प्रदरसोमादि रोग नष्ट होवें। भगंदर, बवासीर, राजरोग, खई, उपदंश, फिरंगवात इत्यादि सकल दुष्टरोग ऐसे नाश होवें जैसे पवनके वेगसे वादलोंके समूह परंतु यह याद रहेकि प्रथम वमनआदि पंचसंस्कार करके तब हरितालको खाय, इसके खानेसे कुछ फसाद नहीं होता। यह प्रयोग अनुभूतहै इसकी वैद्य रक्षा करे.।

अठारहवीं धातुवेधी भस्म की विधि.

रुदंतीहरितालेनरसेनसहमर्दयेत्।
ताम्रपत्रमलेपेन दिव्यंभवतिकांचनं॥

अर्थ–शुद्धहरिताल और पारा दोनोंको खरलकर रुदंति (रुद्रवंती) के रसमें खरलकर तांवेके पत्रोंपर लेपकर अग्निमें फूंकेतो सुवर्णहोवे।

उन्नीसवीं विधि.

तालंताप्यंदरदकुनटीसूतकः सार्द्धभागंखल्वे कृत्वात्रिदिनमथितंकाकमाचीद्रवेण । तेना लेप्यंरविशशिदलंखर्परेवह्नितुल्यं । शुल्वा तीतंभवतिकनकंसंवलंपांथिकानां।

अर्थ–हरिताल, हिंगुल, मनसिल, पारा, इनको आधा २ भाग लेकर ३ दिन मकोयके रसमें खरलकरे, पीछे एकभाग तांवा या रांग लेकरपत्र कराय उनपर इसका लेप करे और खीपडेमें आंच देवे तो उत्तम सोना होजाय, परंतु यह मार्गस्थ (परदेशियों) को उपयोगी होताहै।

वीसवीं विधि.

समतालंशिलांपिष्ट्वादेवदाल्याद्रवैर्दिनम्।
द्रावैरीश्वरलिंग्याश्चदिनमेकंविमर्दयेत्॥
नागंवंगंरसंतुल्यंचूर्णितंपलपंचकम्।
पूर्वकल्केनसंयुक्तंसमालोड्यपुटेत्॥
एवंपुनःपुनःपाच्यंपूर्वकल्केनसंयुतं।
भवेत्पष्टिपुटेर्शीघ्रंवंगस्तंभकरंपरं॥
शतभागेनदातव्यंवेधंतारेकरोत्ययं।

अर्थ–शुद्धहरिताल और मनसिल दोनोंको १ दिन देवदालीके रसमें खरल करे, तदनंतर एकदिन शिवलिंगीके रसमें खरलकर पीछे सीसा वंग तथा पारा इनको एकत्र कर खरलकरे, फिर २० तोले इस चूर्णको पूर्वकल्कके साथ घोटकर अग्निमें फूंकदे इसप्रकार ६० पुटदेनेसे यह भस्म उत्कृष्टरीतिसे वंगका स्थंभन करे यह रूपेके रसमें मिलानेसे शतांशवेध करे।

भस्म परीक्षा.

तालंमृतंयथाज्ञेयंवह्निस्थंधूमवर्जितं।
सधूमंनमृतंप्राहुर्वृद्धवैद्याइतिस्थिति॥
इयंपरीक्षावृद्धानांमुखेभ्यश्रुतामया
पद्येननिवद्धापरंरसशास्त्रेकुत्रापिनदृष्टा॥
भवतुसलेयंनह्यमूलाप्रसिद्धिरितिन्यायात्।

अर्थ–हरितालकीभस्म अग्निमें डालनेसे धूआं न देय तो शुद्ध जाननी। यदि धूँआं

देतो कच्ची जाननी। यह वृद्धवैद्योंका वाक्यहै यह परीक्षा हमने वृद्धवैद्योंके मुखसे सुनीहै. परंतु प्राचीन वडेवैद्योंके पद्यबंध श्लोक किसी शास्त्रमें नहीं देखे, तथापि यह वात सत्यहै. क्योंकि (नह्यमूलाप्रसिद्धिः) अर्थात् विना मूलके प्रसिद्धी नहीं होती, इससे यह वार्ता सत्यहीहै।

हरितालभस्मके गुण.

अशीतवातान्कफपित्तरोगान् कुष्ठंचमेहंचगुदामयांश्च निहंतिगुंजार्द्धमितंतुतालं षड्वल्लखंडेनसमंचयुक्तं ॥

अर्थ—आधरत्ती हरितालभस्मको छःवल्ल मिश्रीके साथखानेसे ८० प्रकारकी वायु, कफ, पित्त, कुष्ठ, प्रमेह और ववासीरका नाश करे।

हरितालके अनुपान.

एवंतन्त्रियतेतालंमात्रातस्यैवरक्तिका ।
अनुपानान्यनेकानियथायोग्यंप्रयोजयेत् ॥
गुडूच्यादिकपायेणगदान्येतान्व्यपोहति ।
सोपद्रवंवातरक्तंकुष्ठान्यष्टादशानिच ॥

अर्थ—१ रत्ती हरितालभस्मको यथायोग्य अनुपानके साथ देवे, गिलोयके काढेके संग खायतो उपद्रव सहित वातरक्त दूर होवे, अठारहप्रकारके कोढ नाश होवें।

सर्वरक्तविकारेषुदेयगात्रहरिद्रया ।
सुहालाहलजीराभ्यामपस्मारहरंपरं ॥
समुद्रफलयोगेनजलोदरविनाशनः ।
देवदालीरसैर्युक्तंभगंदरहरंपरं ॥
फिरंगदोषजंरोगंजातंहंतिसुदुस्तरं ।
मंजिष्ठादिकपायेणकुष्ठमष्टादशंजयेत् ॥
त्रिफलाशर्करायुक्तंपांडुरोगंजयत्यसौ ।
शुंठीचूर्णयुतंहन्यादामवातंसुदुर्जयं ॥
सौवर्णभस्मयोगेनरक्तपित्तविकारनुत् ।
तंदुलीयरसैशाकंज्वरमष्टविधंजयेत् ॥
एवंसर्वेषुरोगेषुस्वबुध्याकल्पयेद्भिषक् ।

अर्थ—सव रुधिरविकारोंमें आमियांहलदीके साथ देवे, विष और जीरेकेसाथ अपस्मार (मृगी) को दूरकरे, समुद्रफलके साथ जलंधरविकारोंमेंदेवे, भगंदरमें देवदालीके रसमें. फिरंगवातमेंभी इसीके साथदेवे, मंजिष्ठादि काढेके साथ १८ प्रकारके कोढोंको दूर करे। त्रिफला और मिश्रीके साथ पांडुरोगमेंदेवे, आमवातमें सोंठके चूर्णयुतदेवे, सुवर्णकी भस्मके साथ रक्तपित्त विकार दूर होवें। चौलाईके रसके साथ ८ प्रकारके ज्वर दूर हो, इस प्रकार सव रोगोंमें वैद्य अपनी बुद्धीके अनुसार अनुपान कल्पना करे।

हरितालसत्वकीविधि

जयपालसत्ववातारिवीजमिश्रंचतालकं ॥
कूपिस्थंवालुकायंत्रेसत्त्वंमुंचतियामतः ।

अर्थ—हरितालभस्म वा शुद्धहरिताल ऽ॥ जमालगोटेके वीज ऽ॥ अंडीकेवीज ऽ॥ तीनोंको मिलाकर १ प्रहर घोटे, पीछे आतिशी शीशीमें भर वालुकायंत्र द्वारा पहरभर तेज आंचदेवे, तो हरितालका सत्व निकलकर शीशीके मुखमें आ लगे उसे खुरच ले।

दूसरीविधि

शुद्धचूर्णस्यपादांशमर्द्दयेन्नवसादरं ॥
चूर्णाद्द्विगुणतोयेनतत्तोयेनिर्मलंपचेत् ।
शनैर्लवणपाकेनयावत्तुल्यवर्णभवेत् ॥
अथतत्तालकंशुद्धंपारदंटंकणैर्युतं ।
टंकणार्द्धेनतच्चूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
शरपुंखाद्रवैरेवशुद्धंतत्कूपिकोदरे ।
पचेद्यामाष्टकंयावत्सत्वरूपेणतिष्ठति ॥

अर्थ–विनाबुझाचूना ऽ१, नौसादरऽ।, दोनोंको ऽ२ सेर पानीमें पकावे, जब गाढे होकर खारके समान होजाय तब निकालकरऽ।। हरिताल ऽ≈ सुहागा और पैसेभर खार लेकर तीनोंको घीगुवार और सरफोकाके रसोंमें दो २ प्रहर खरलकरे, पीछे शीशीमें भर वालुकायंत्रमें ८ प्रहर आंचदेवे तो निस्संदेह सत्व निकले।

तीसरी विधि

लाक्षाराजितिलाःशिग्रूटंकणंलवणंगुडः
तालकार्द्धेनसमिश्र्यंछिद्रमूषांनिरोधयेत् ।
पुटेत्पातालयंत्रेणसत्वंपततिनिश्चितम् ।।

अर्थ–लाख, राई, तिल, संहजनेकीछाल, सुहागा, नोन गुड, इन सब पदार्थोंको हरिताल के आधेभाग, और हरिताल १ भाग लेकर खरलमें घोट सछिद्रमूषामें डाल उसे बंदकर पातालयंत्रमें पुट देवे तो निश्चय सत्व निकले।

चौथी विधि

पलैकंतालकंशुद्धंतत्समंटंकणंभवेत् ;
मर्दयेन्मेषिकाक्षीरैःकुष्मांडद्रवजैःपुनः
कन्यानिंबुकनीरेणवज्रार्कपयसातथा ।।
वातारितैलसंयुक्तंमर्दयेत्सकृदेवतु ।
वटकान्कारयेत्पश्चान्मध्वाज्येनसमन्वितान्
काचकूप्यांविनिक्षिप्यःलेपयेमृत्स्नकर्पटैः
वालुकायंत्रगंकुर्य्यात्पचेदिनचतुष्टयम् ।।
सत्वंकुलिशसंकाशंमूर्ध्वेतिष्ठतिनान्यथा ।

अर्थ–शुद्धहरिताल और सुहागा एक २ पल, दोनोंको बकरीके दूध, पेठेकेरस, ग्वारपाठेकेरस, निंबूकेदूध, थूहरकेदूध, आककेदूध, अंडीकेतेल, प्रत्येकमें एक२दिन घोटे, पीछे सहत और घृत डालकर गोला बनावे, पश्चात् आतिशी शीशीमें रख कपरमिट्टी कर वालुकायंत्रमें ४ दिनकी आंच देवे, तो शीशीके मुखपर हीरेके समान सत्व लगे उसे निकाल लेवे।

पाँचवीं विधि

कुलित्थकाथटंकणमाहिषघृतमधुयुक्तं हरितालंशुद्धंदद्यादाज्येनभावितं ।। हंडिकायां क्षिप्त्वाउपरिसंलग्नसछिद्रंपालिकांदत्वासंधिलेपंकृत्वाक्रमेणवन्हियामचतुष्टयं दद्यात् यावन्नलिकातोधाधूमोगच्छति ततःपांडुरधूमे दृष्टेअग्निपूर्णंकुर्यात्पश्चादग्निस्थितस्थालीमुत्तार्यसत्वंग्राह्यम् ।।

अर्थ–हरितालको सुहागे, भैंसकेघृत, सहत, कुलथीके काढे, इनकी भावना दे हंडियामें डाल उसपर सछिद्र ढकना ढाँक संधियोंको लेपकर बंदकरे, और उसछेदमें एक लंबी नली लगाय हंडियाको चूल्हेपर रख ४ प्रहर अग्निदे, जब नलीमें होकर पीला धुआं निकले तब अग्निको बंदकर हंडियाको उतार शीतलकर ऊपरकी हंडियामें जो सत्व है उसे निकाल लेवे।

सत्वकेगुण और अनुपान

वातरक्तेतिदुःसाध्येसततंतंदुलोन्मितं ।
दद्याच्चणकचलक्षंपथ्यार्थेघृतसंयुतम् ।।
द्विसप्तदिवसैःकांतिर्जायतेरोगवर्जितः ।

अर्थ–हरितालसत्व दुस्साध्य वातरक्तमें चांवलभर देवे, पथ्यमें चनाकीरोटी तथा घृत देवे तो१४ दिनमें रोग वर्जित, कांतियुक्त होवे।

हरितालकी योजना

श्वासेकासेक्षयेकुष्ठेपित्तेचवातशोणिते ।।
दद्रुपामाव्रणेवातेतालकंचप्रदापयेत् ।

अर्थ–श्वास, खांसी, खई, कुष्ठ, पित्त, वातरक्त, दाद, खाज, व्रण, वादी, इन रोगोंमें हरिताल देनी चाहिये।

अशुद्धहरितालके दोष

अशुद्धतालंखलुपीतवर्णं सधूमकंवातचयंच पित्तं पंगुत्वकुष्ठंतनुतेचतेनदेहस्यनाशंप्रकरोतिसद्यः ॥

अर्थ–कच्चीहरितालका पीलावर्ण, अग्निपर रखनेसे धुआंदे, इसको खानेसे वातपित्तकेरोग, पंगापन, और कोढ उत्पन्न होवे तथा तत्काल देहका नाश करे ।

अशुद्धकीशांति

अजाजीशर्करायुक्तंसेवयेत्रोदिनत्रयं ।
विकृतिर्तालजंहन्यात्रयथादालिद्रमुद्यमे ॥

अर्थ–जीरा और मिश्री मिलाकर ३ दिन सेवन करनेसे हरिताल विकार नाश होवें, जैसे उद्योगसे दरिद्र ।

तथाच

यवासकरसंचैवकूष्मांडस्वरसंतथा ।
राजहंसरसेनापिविकृतितालकंजयेत् ॥

अर्थ–जवासे वा पेठेका रस पीनेसे हरिताલके विकार शांति होवें, और हंसराजरूखडी-रससेभी हरितालके विकार दूर होवें ।

तालकपथ्याऽपथ्य

एतद्भेपजसेविनांलवणाम्लौविवर्जयेत् ।
तथाकटुरसोवन्हिमातपंदुस्तरंत्यजेत् ॥
लवणंयः परित्यक्तुंनशक्नोतिकयंचनः सतु सैंधवमश्नीयान्मधुरोपरसोहितः ॥

अर्थ–हरिताल सेवन कर्त्ताको नोनके और खट्टे पदार्थ वर्जित हैं । तथा कटुरस अग्निसे तापना, और धूपमें रहनेको त्यागदे, यदि नोन न छोडसके तो सेंधानोन मंदाखाय, और मीठारस खाय ।

इति श्रीमाथुर दत्तराम पाठक प्रणीते रसराजसुंदरे हरितालप्रकरणंसमाप्तम्

अथांजनप्रकरणम्

अंजनकेनाम

अंजनंयामुनंचापि कापोतांजनमित्यपि ।

अर्थ–अंजन (सुरमा) दो प्रकारका है; एक यामुन. दूसरा कापोतांजन कहलाता है.

तथाभेद

स्रोतोजनंतुद्विविधं श्वेतकृष्णविभेदतः ।
तत्रस्रोतांजनंरूक्षं सौवीरंश्वेतमीरितं ॥

अर्थ–सुरमा सफेद और कालेके भेदसे दोप्रकारका है, इनमें कालास्रोतांजन रूक्ष है, और सफेद सौवीरांजन कहाता है ।

मतान्तर

सौवीरमंजनंप्रोक्तं रसांजनमतः परम् ।
स्रोतांजनंतदन्यच्चपुष्पांजनमतःपरं ॥
नीलांजनंतथाप्रोक्तं स्वरूपमिहवर्ण्यते

अर्थ–सौवीरांजन, रसांजन, स्रोतोंजन, पुष्पांजन, नीलांजन, ये अंजन (सुरमा) के पांचभेद है । यह रसदर्पणमें लिखे हैं । अब इनके स्वरूप कहते हैं ।

सौवीरांजनकेलक्षण

सौवीरमंजनंधूम्रं रक्तपित्तहरंहिमं ।
विषनेत्रामयहरंव्रणशोधनरोपणम् ॥

अर्थ–सौवीरांजन धुएके रंगका. रक्त-पित्तको दूर करे, शीतल, विषरोग और नेत्ररोगको दूरकरे । व्रणको शुद्ध करे, और रोपण करे. ।

रसांजनके लक्षण

पीतचंदननिर्यासं रसांजनमितीरितं ।
तत्काथजंवाभवतिपीताभंवत्करोगनुत् ॥
श्वासहिक्काहरंवर्ण्यं वातपित्तास्रनाशनं ।
नेत्र्यंसिध्माविषछर्दि कफपित्तास्र कोपनुत् ॥

अर्थ–पीलेचंदनके गोंदके समान रसांजन

होता है, अथवा पीलेचंदनके काढेके समान होताहै। यह मुखरोग, श्वास, हिचकीको दूर करे। देहकावर्ण स्वच्छ करे, वात, पित्त, रुधिरविकार, नेत्ररोग, सिध्म, विष, वमन, कफ, और पित्तका हरण करे.।

स्रोतांजनकेलक्षण

वल्मीकशिखराकारं भिन्नमंजनसन्निभं।
घृष्टंतुगैरिकाकार मेतत्स्रोतांजनंस्मृतं॥
रसांजनंतरुभवं स्रोतांजननदीभवम्।

अर्थ–जो सर्पकी बांबीके शिखरके समान तथा काजलके समान काला हो और घिसनेमें गेरूके समान दीखे ये स्रोतांजनके लक्षणहै रसांजन वृक्षसें प्रगट होताहै, और स्रोतांजन नदीसे।

पुष्पांजनकेलक्षण

पुष्पांजनंसितंस्निग्धं हिमंनेत्रामयापहं।

अर्थ–पुष्पांजन-सफेद, चिकना, शीतल होताहै, और नेत्रके सब रोगोंको दूर करने वालाहै।

नीलांजनकेलक्षण

नीलांजनंपरं नेत्र्यं छर्दिहिक्कानिवारणं।
रसायनंसुवर्णघ्नंलोहमार्दवकारकं॥

अर्थ–नीलांजन-नेत्रोंको परम हित है, वमन और हिचकीका नाशक है, रसायनहै सुवर्णका भस्म कर्ता और लोहेको नम्र करे।

तथाच

नीलांजनंनीलवर्णं स्निग्धंगुरुतरंस्मृतं

अर्थ–नीलांजनका नीलवर्ण होताहै, और चिकना तथा भारी होताहै.।

अंजनशुद्धि

अंजनान्याशुशुध्यंति भृंगराजनिजद्रवैः

अर्थ–सब अंजनोकी शुद्धी भांगरेके रसमें खरल करनेसे होतीहै।

दूसराप्रकार

त्रिफलावारिणाशोध्यंतद्द्वयंशुद्धिमृच्छति।
भृंगराजरसेवापि स्रोतः सौवीरकंशुचिः॥

अर्थ–स्रोतांजन और सौवीरांजनको त्रिफलाके काढे वा भांगरेके रसमें औटानेसे शुद्धहो

तीसराप्रकार

गोसकृद्रसमूत्रेषुघृतक्षौद्रेवसासुतत्।
भावितं बहुशः तच्चशुद्धिमायातिह्यंजनं॥

अर्थ–गोवरकेरस, गोमूत्र, घृत, सहत, वसा (चर्वी) इनकी बहुतवार भावना देनेसे अंजन सुरमा शुद्धहोवे।

सर्वांजनान्चूर्णयित्वाजंबीरद्रवभावितं।
दिनैकमातपेशुष्कंभवेत्कार्येषुयोजयेत्॥

अर्थ–सब अंजनोंका चूर्णकर १ दिन जंबीरीके रसमें भावना देकर धूपमें सुखा लेतो शुद्ध होवे, इनकी सबकार्योंमें योजना करे।

सूर्यावर्त्तादियोगेषु शुद्ध्यतिश्चरसांजनं।
सर्वेचअंजनादेवितूर्णंबध्नातिसूतकं॥

अर्थ–सूर्यावर्त्त (कालाभांगरा अथवा हुल हुल) केरसमें अंजन खरलकरनेसे शुद्ध होताहै हे देवी ? सर्वअंजन पारेके बद्धक है.

रसांजनोत्पत्ति

दार्वीक्वाथमजाक्षीरे पादपक्वंयथाघनं।
तदारसांजनंख्यातंनेत्रयोः परमंहितं॥

अर्थ–दारुहलदीके काढेको बकरीके दूधमें मिलाकर औटावे और गाढाहोनेपर उतारले इसीको रसांजन कहते हैं। यह नेत्रोंको परमहितकारक है।

कुलत्थांजनकेगुण

कुलत्थिकातुचक्षुष्या कषायाकटुकाहिमा।
विषविस्फोटकंकंडूव्रणार्त्तेश्चनिवर्हणः॥

अर्थ—कुलत्थिकांजन—नेत्रोंको हितकर्ता, कषेला, कडवा और शीतलहै. विष, विस्फोटक, खुजली और व्रणका नाश करे ।

कुलित्थदृक्प्रसादश्च चक्षुष्याश्चकुलत्थकः ।
कुंकुणालिनिहंताचकुंभकारिमलापहः ॥

अर्थ—कुलत्थांजन दृष्टिको उत्तमकरे, नेत्रोंको हितकर्ता, तथा कुंकुणरोग (बालकोंके जो होता है) और कुंभका मलका नाशक है ।

नीलांजनकी शुद्धि

नीलांजनंचूर्णयित्वा जंबीरद्रवभावितम् ।
दिनैकमातपेशुद्धंभवेत्कार्येपुयोजयेत् ॥
एवंगैरिककासीसं टंकणानिवराटिका ।
शंखस्तोरीचकंकुष्टं शुद्धिमायातिनिश्चितं ॥

अर्थ—सुरमेके चूणको १ दिन जंबीरीके रसमें खरलकर धूपमें सुखादे तो सुरमाशुद्ध होवे, इसे रोगादिकोंमें योजना करे, इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, कौडी, शंख, मनसिल, मुरदासंगकी शुद्धी होतेहैं ।

अंजनसत्वनिकालनेकी विधि

मनोह्वासत्ववत्सत्वमंजनानांसमाहरेत् ।
राजावर्त्तकवत्सत्वं ग्राह्यंस्रोतोंजनादिकं ॥

अर्थ—मनसिलके सत्वके समान सब अंजनोंका सत्व निकाले, अथवा राजावर्त्तमणिके सत्वके समान निकाले, मनसिल और राजावर्त्तके सत्वको इनके सत्वप्रकर्णमें विधि कहेंगे ।

हीराकसीस

कासीसंत्रिविधंप्रोक्तं सितंस्यामंचपीतकं ।
पीतंचपुष्पकाशीसंनगरीयोभवेन्मृदु ॥
तैजिकंकालमेघाभंनीलस्यान्मुक्तकालिकं ।
श्यामंपीतंभवेचान्यदुत्तमाऽधममध्यमम् ॥

अर्थ—हीराकसीस सफेद काली और पीली तीन प्रकारकी है, पीत पुष्पकासीस कहातीहै यह श्रेष्ठ नहीं है-नरम होती है, और काली मेघके समान एक तैजिक कहाती है और नीली मुक्तिकालिक कहाती है,यह काली पीली मिली हुई होती है-ये क्रमसे उत्तम मध्यम और अधम होती है ।

मतांतर

कासीसंवालुकाख्यैकं पुष्पपूर्वमथापरं ।
क्षाराम्लंगुरुधूम्रंचशोष्णंवीर्यंविषापहम् ॥
वालुकापुष्पकाशीसं श्वित्रघ्नंकेशरंजनम् ।

अर्थ—हीराकसीस वालुक और पुष्पवालुक दोप्रकारकी है, वह खारी, खट्टी, भारी, धूंएकेरंग और गरम है वीर्य और विषकी नाशक तथा चित्रकुष्ठको दूर करे, और बालोंको रंगती है ।

अथशोधन

सकृद्भृंगाम्बुनास्विन्नं कासीसंनिर्मलंभवेत् ।
अथवाभावयेद्घर्मेदिनंजंबीरवारिणा ॥

अर्थ—हीराकसीसको एक बार भांगरेके रसमें पचावे, अथवा एक दिन जंभीरीके रसकी भावना देकर धूपमें सुखावे तो शुद्धहोवे ।

दूसरीविधि

कासीसंचूर्णयित्वाथजंबीरद्रवभावितं ।
दिनैकमातपेशुष्कं सर्वकार्येषुयोजयेत् ॥

अर्थ—कासीस को १ दिन जभीरीके रस की भावना देकर धूपमें सुखावेतो शुद्ध होवे, इसे सर्वकार्यमें देवे ।

तीसरीविधि

कासीसंशुद्धिमाप्नोति पित्तैश्चरजसास्त्रियः ।
अथवानिंबुनीरेण शुद्धिर्भवतिनिश्चितम् ॥

अर्थ—हीराकसीस वकरे आदिकेपित्त या स्त्रियोंके रजके रुधिरसे शुद्ध होवे, अथवा नीबूके रसकी भावना देनेसे शुद्ध होवे ।

हीराकसीसका सेवन

वलिनाहतकासीसंकांतकासीसमीरितं ।
उभयंसमभागंहित्रिफलावेल्लसंयुतं ॥
निष्कमात्रंघृतेक्षौद्रेप्लुतंशाणमितंददेत् ।
सेवितंहंतिवेगेनश्वित्रपांडुक्षयामयान् ॥
गुल्मप्लीहंगदंशूलंमूत्ररोगमशेषतः ॥
नाशयेन्नात्रसंदेहो गोगोयंपरिकीर्तितं ॥
रसायनविधानेन सेवितंवत्सरावधि ।
आमसंशोषणे श्रेष्ठं मंदाग्निपरिदीपनं ।
वलितंपलितैः सार्द्धंविनाशयतिनिश्चितं ॥
जयतेसर्वरोगांश्च तृणवन्हिहुतंयथा ।

अर्थ—गंधकसें कसीस और कांतकासीस दोनों मरेहुए इनकी बराबर त्रिफला और कालीमिरच दोनों लेवे, इनमें घृत और सहत तीन २ मांशे मिलाकर ४ मासे नित्य खाय, तो रसायन विधिसे १ वर्षपर्यंत सेवन करनेसे चित्रकुष्ठ, पांडुरोग, खई, गोला, प्लीह, शूल, मूत्रके सर्वरोग दूरहों और आमवातको शोषण करे, मंदाग्निको दीपनकरे, गुजलट और सफेद बाल होजायऐसे बुढापेको दूरकरे, और सर्वरोगोंको नष्ट करे जैसे तृणको अग्नि भस्म करदेती है ।

कसीसके गुण

पुष्पादिकासीसमतिप्रशस्तं शोष्णंकषाया म्लमतीवनेत्र्यं विषानिलंश्लेष्ममतिव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्नंकचरंजनंच॥ पित्तापस्मारशमनंर सवद्गुणकारकम् ॥ वातश्लेष्महरंकेश्यंनेत्रकं डूविषप्रणुत् । मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनंप रिकीर्तितं ॥

अर्थ—हीराकसीस अतिप्रशस्त, गरम, कषेला, खट्टा, नेत्रोंको हितकारक, विष, वादी, कफ, व्रण, चित्रकुष्ठ, और खईको दूरकरे बालोंको रंगदेवे, पित्त और मृगीको दूरकरे, पारेके समान गुणकरे, खुजली, मूत्रकृच्छ, और पथरीको दूर करे ।

सत्वपातन

तुवरीसत्ववत्सत्वकासीसस्यसमाहरेत्

अर्थ—हीराकसीसका सत्व फिटकरीके समान निकालना चाहिये सो आगें लिखेंगे ।

अथगैरिक (गेरू)

गैरिकंद्विविधंप्रोक्तं पाषाणं स्वर्णगैरिकं ।
पाषाणगैरिकंप्रोक्तंकठिनंताम्रवर्णकम् ।
अत्यंतशोणितंस्निग्धंमसृणंस्वर्णगैरिकं ।
परैस्त्रितयमप्युक्तंपाषाणाख्यंतुगैरिकम् ।

अर्थ—गेरू, पाषाणगैरिक और स्वर्णगैरिकके भेदसें, दोप्रकारकाहै कठिन और तांबेके रंगके समान पाषाणगैरिक कहाताहै, और जो अत्यंत लाल, चिकना और स्वच्छहो उसे स्वर्णगैरिक कहतेहैं कोई स्वर्णगैरिक, रक्तगैरिक और पाषाणगैरिक तीनप्रकारका कहते हैं ।

तथाशोधन

गैरिकंतुगवांदुग्धैर्भावितंशुद्धिमृच्छति ।
अथवाकिंचिदाज्येनभ्रष्टंशुद्धंप्रजायते ।
गैरिकंसत्वरूपंहिनन्दिनापरिकीर्तितम् ।

अर्थ—गेरू गौकेदूधमें खरल करनेसे शुद्धहोता है, अथवाथोडा घृत मिलाकर भूँननेसे शुद्धहोता है । गेरूकासत्व इसलिये नहीं कहा कि यह स्वयं सत्व रूप है यह नंदीआचार्यने कहा है ।

तथागुण

स्वादुस्निग्धंहिमंनेत्र्यंकषायंरक्तपित्तनुत् ।
हिध्मावमिविषघ्नंचरक्तघ्नंस्वर्णगैरिकम् ।
पाषाणगैरिकंचान्यत्पूर्वस्मादल्पकंगुणैः ।

अर्थ–स्वादिष्ट, चिकना और शीतलहै, नेत्रोंको परम हितकारक और कषेलहै, रक्तपित्त, हिचकी, वमन, विष और संपूर्ण रुधिरविकारोंको दूर करे. यह स्वर्णगैरिकके गुण हैं, और पाषाणगैरिकमें स्वर्णगैरिकसें थोडे गुण हैं।

केरप्युक्तंपचेत्पंचक्षाराम्लेस्निग्धगैरिकम्।
उपतिष्ठतिसूतेन्द्रंएकत्वंगुणवत्तरम्।

अर्थ–कोई कहता है कि स्वर्णगैरिकको पंचक्षार और अम्लवर्गमें पचाकर पारेमें मिलानेसे मिलजाता है। किसी आचार्यके मतमें पारद गंधक हरिताल और अभ्रकादि महारस हैं।

अथ उपरस

पारदाद्दरदोजातोटंकणंगंधकात्तथा।
स्फटिकाभ्रकतोजातोहरितालान्मनःशिला
अंजनाच्छुक्तिशंखाद्याःकाशीसःशंखमर्दरः
गैरिकान्मृतिकाजातातस्मादुपरसाइमे।

अर्थ–पारेसे हिंगुल गंधकसेसुहागा, अभ्रकसे स्फटिकमणि, हरितालसे मनसिल, सुरमासें सीप, शंख, कसीस, समुद्रफेन और गेरूसे मृतिका प्रगट हुई इसीसे ये सब उपरस हैं।

उपरसोंकाशोधन

त्रिक्षारे लवणेद्वेयमम्लवर्गेत्रिधापचेत्।
पचेदुपरसाशुद्धाः जायंतेदोषवर्जिताः।
रसाभावेप्रदातव्यातस्यैवोपरसाइमे।
सेवितोवहुकालंच सर्वतःकुरुतेगुणान्।

अर्थ–सब उपरसोंको जवाखार, सज्जीखार और सुहागा नोन और अम्लवर्ग इन हरेकमें तीन २ वार पचावे तो शुद्धहोवे इनको रसोंके अभावमें देना चाहिये, ये वहुत दिनोंमें गुणकारक होते हैं।

हिंगुलवनानेकी विधि

अशुद्धंपारदंभागंचतुर्भागंतुगंधकम्।
उभौक्षिप्त्वालोहपात्रेक्षणंमृद्वग्निनापचेत्।
कृत्वाथखंडशःसम्यक्कांचकुप्यांनिरुंध्यच।
वस्त्रमृत्तिकयासम्यक्काचकूपींप्रलेपयेत्।
सर्वतोंगुलमानेनछायाशुष्कंतुकारयेत्।
वालुकायंत्रगेतुदिनंमृद्वग्निनापचेत्।
क्रमवृद्ध्याग्निनापश्चात्पचेद्दिवसपंचकं।
सप्ताहंतुसमुद्धृत्यहिंगुलः स्यान्मनोहरः।

अर्थ–विनासुधा पारा १ भाग, गंधक ४ भाग, दोनोंको लोहपात्रमें मंदाग्नि देवे, और जव दोनों एक होजाय तो शीतल होनेपर डेला जो वंधगयाहै उसके टुकडेकर आतिशी शीशीमें भर शीशीपर अंगुलभर मोटी कपरमिट्टी करे और सुखाकर वालुकायंत्रमें १ दिन मंदाग्निसे पचावे, क्रमसे मंद मध्य और तेज आंचसे पांचदिन पचावे, पीछे सातवेंदिन निकाले तो सुंदरहिंगुल (शिगरफ) वने।

हिंगुलके भेद

दरदस्त्रिविधः प्रोक्तोचमारः शुकतुंडकः।
हंसपादस्तृतीयः स्याद्गुणवानुत्तरोत्तरं।

अर्थ–हिंगुल-चमार, शुकतुंड, और हंसपादके भेदसे ३ प्रकारकाहै इनमें क्रमसे एकसे दूसरेमें अधिक गुणहै।

तीनोंकेन्यारे२ लक्षण

चमारः शुकवर्णः स्यात्सपीतः शुकतुंडकः।
जपाकुसुमसंकाशोहंसपादोमहोत्तमः।
श्वेतरेखाप्रवालाभोहंसपाकइतिस्मृतः।

अर्थ–चमार नामक हींगलू शुक (लोध) के वर्णका होताहै, शुकतुंड पीलेरंगका तथा जपा (दुपहरिया) के फूलके समान लाल, और अतिउत्तम हंसपादहींगलू होता है, कोई

सफेद रेखायुक्त मूंगाके समान रंगवालेको हंसपाक कहते हैं ।

हिंगुलका शोधन

सप्तकृत्वार्द्रकद्रावैः लकुचस्यांबुनापिवा ।
शोपितोभावयित्वाचनिर्दोपोजायतेखलु ।

अर्थ—हींगलूमें अदरक और बडहलके रसोंकी सात २ भावना देकर सुखावे तो शिंगरफ़ निश्चय दोपरहित होवे ।

दूसरीविधि

मेपीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितं ।
सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् ।

अर्थ—हिंगलूको भेडके दूध और अम्लवर्गकी सात २ भावना देनेसे शुद्ध होताहै ।

हिंगुलमारणम्

चणकाभानिखंडानिदरदस्यतुकारयेत् ।
शीशजेचायसेपात्रेस्थाप्यंतच्चधमेद्दृढं ।
जातायामुष्णतायांवैततोद्रव्याणिसेचयेत् ।
द्रवतुल्यंद्रवद्रव्यमेपास्याद्वन्हिभावना ।
मेपीक्षीरेणदशधादशधाक्षीरिजार्कजैः ।
दीप्तवर्गेणदशधाविरेकार्कैश्चपंचधा ।
पंचधादुग्धवर्गेणअंतरास्तस्यभावनाः ।
अयंशतार्कदरदोनानारोगविनाशकः ।
क्षुद्बोधस्यकरोनित्यंयोगवाहीनिगद्यते ।

अर्थ—हींगलूकी डलीके चनेकी बराबर टुकड़े कर सीसेके वा लोहकेपात्रमें अग्निपर गरम करे, जब पात्र लाल होजाय तब हींगलूके समान भेड़का दूध डालकर जलावे, इस प्रकार दशवार जारणकरे, इसी प्रकार दशवार आकका दूध जारणकरे, और दीप्तिवर्गमें दशवार, पीलूके रसमें पांचवार और दुग्धवर्गमें पांचवार, ऐसे बराबर भावना देतो हिंगलू तयार हो यह शतार्कहिंगुलू अनेक रोगोंका नाश कर क्षुधाको बढ़ावे, इसे योगवाही कहा है ।

दूसरी विधि.

वल्लमात्रंतालपिष्टंशरावेस्थापयेत्ततः ।
तस्मिन्कर्पसमंदेयंसकलंदरदस्यच: ।
पूरयेदार्द्रकरसैर्द्विगुणंतत्रबुद्धिमान् ।
पुष्पाणिशाणमात्राणिपरितः स्थापयेत्ततः ।
शरावसंपुटेदत्त्वाचुल्यांमध्याग्निनापचेत् ।
घटिकात्रयपर्यंततत: उत्तार्यपेपयेत् ।
तांबूलेगुंजमात्रंतुदेयंपुष्टिकरंपरं ।
पांडौक्षयेचशूलेचसर्वरोगेपुयोजयेत् ।

अर्थ—हरिताल १ वल्ल (३ रत्ती) को पीस सरवेमें रख उसमें १ तोले हिंगलूके टुकडे डाले, पीछे दोतोले अदरकका रस डालकर सुखावे, फिर पुष्प (लौंग) चारमांशे डाल सराव संपुटमें रख चूल्हेपर चढाय ३ घडी मंदाग्निसे पचावे, पीछे उतार पीसकर १ रत्ती नागरवेल पानके साथ खायतो बहुत पुष्टताकरे, पांडुरोग, खई, शूल और सब रोगोंमें देवे ।

मतान्तरसेशोधन विधि

जयंत्या स्वरसे मूत्रे कांजिके निंबुनीरके ।
दोलायंत्रे त्र्यहंपाच्यं. दरदादिविशुध्यति ।

अर्थ—हींगलू आदिशब्दसे हरिताल, खपरिया स्वर्णमाक्षिक, रूपामाक्षिक, मनशिल, अभ्रक, नीलाथोथा, सुहागा, सुरमा, विप, शिलाजीत, शंख, गूगल, कंकुष्ठ, इनमेंसे जिसे शुद्ध करना हो उसे एक कपड़ेमें बांध दोलायंत्रकी रीतिसे जयंतीके रसमें३दिन स्वेदन करे तो हींगलू और पूर्वोक्त रसकादि शुद्ध होवें, इसीरीतिसे डलीका शिंगरफ शुद्ध होवे, भेडके दूधमें सुधा शिंगरफ पीसा जाताहै, बहुतसी न गह पिसा शिंगरफ काममें नहीं आता डेलाही काममें आताहै इसीसे यह शोधन उत्तम है ।

हिंगुलपाक विधि

हिंगुलंद्विपलंशुद्धं वध्वावस्त्रेचतुर्गुणे ।
पट्पलंकंदरीमूलं सम्यक्संकुट्य बुद्धिमान्॥
ततस्तस्मिन्परिक्षिप्यगोलमेकंप्रकल्पयेत् ।
एरंडपत्रैराछाद्य मृदांसंलेपयेत्दृढं
पचेत्तद्गोलकं विद्वानुपलैर्दशभिस्ततः ॥
एवंसम्यक्प्रकारेण पुटमेकोत्तरंशतं ।
दत्त्वामतिदिनंखादेल्लवंगस्यानुपानतः॥
गुंजामात्रंगुणैस्तुल्यं प्रागुक्तस्यरसस्यच ।

अर्थ—तदनंतर दो.२ पैसेभरकी १२ डली शिंगरफकी ले, चार तह कपडेकी थैली वनाय-उसमें रखे, और एकडोरीसे वांध ८। कंदरी-की लुगदीकर बीचमें थैलीको रख गोला वनाय अंडके पत्तोंसे लपेट भट्टीलगावे, और धूपमें सुखाय पांच ऊपर और पांच नीचे, ऐसें ऊपलोंकी आंच दे, बीचमें गोलाको न रखे ऊपर एक अँगारा रखे, जब शीतल होजा-य तब गोलाको निकाल लेय, इस प्रकार १०८. आंचदे हरबार पाव २ भर कंदरीकी लुगदी कर थैलीके बीचमें रख अंडकेपत्ते लपेट दो अंगुल मोटी मिट्टी चढाय दश उपलोंकी आंचदे, परंतु उपले न तो मोटे न वहुत पतले होवें, इस प्रकार परिपक्व शिंगरफ चंद्रोदयसे अधिक है, कामिक और क्षुधाको वढानेवाला है, इसमेंसे १ तोला शिंगरफ १ तोले लौंगके साथ पीस कर दो २ रत्तीकी मात्रा करे, और प्रातःकाल खाय तो पूर्वोक्त चंद्रोदयकेसे गुण करे।

तथाचौथीविधि

४ पैसेभर शिंगरफका डलीको ७ दिन हंसप-दीके रसमें घोटे, बंदाल केरस, वडकी जटाओं के रस, आकके दूध, थूहरके दूध-इनमें सात २ दिन घोटकर पैसे २ भरकी टिकिया वनाय धूपमें सुखाय सराव संपुटमें रख सेरभर उपलों में फूंके तो यह हींगलू एकही आंचमें भस्म-होजाय दो रत्ती लौंगके चूर्णके साथ खायतो भूंख वहुत वढे और देह पुष्ट होवे ।

१ कंदरी नाम प्याज का है

हिंगुलकेअनुपान और गुण

तंहिंगुलंसुतनु खंडपटेदृढेन कंचूकमध्यगतयु क्तिमतानिवेश्य. पश्चात्पलांडुदृढकंदगतोंतर स्थःमृत्स्नाविलेप्य रविशोष्यदिनांतयामे । दत्त्वावनोत्पलदशक्रममग्निदग्धं तंशीतलंद्वि तियचैव दिनेतथैव । एवंविधैःशतपुटैश्चपुटां तकाले वृतांकमेवफलमध्यगतंतथाच । देया नितानिसदृशंशतधाक्रमेण वृंदावनीफलभ-वांतरमध्यभागे देयंचतच्छतपुटं क्रमएपउ-क्तःपकाम्रवेतसफलोदर वै क्रमेण । गुंजा-मितार्द्ध मितयेसहिपर्णखंडे भक्ष्यंनरोश्वसन कासज्वरादिकातां हन्याद्यथामृगपतिः करि-णेवकामं । रामासुवश्यकरदिव्यशरीरकारिं-मेधास्मृतिंवितनुतेसुरसायनंच देयोनुपाने-त्रिसुगंधिसात्म्यंयुक्त्याविचार्यवलमग्नि वि-वर्द्धनाय ॥

अर्थ—हिंगुलको पतले और मजबूत कपडेमें बांधे, पीछे उस पोटलीको चूकाकी लुगदीमें गोला वनाय कांदेके वीचमें रख कपरमिट्टीकर धूपमें सुखाय सायंकालको १० आरने उपलों-की आंच देवे, इसप्रकार कांदेके १०० पुट देकर १०० पुट बैंगनमें रखकर देवे, तदनंतर १०० पुट इन्द्रायनमें देवे, इसीप्रकार पके अमलवेतकेसौ पुटदेवें, तो हिंगुलदिव्य होवे इसको नागरवेल पानके साथ आधरत्ती खाय तो श्वास, खांसी ज्वरादि रोग नष्ट होवे, जैसे सिंह हाथियोंका नाश करे उसी प्रकार यह

रोगोंका नाश करता है, स्त्रियोंको परमप्रियहो दिव्य देह करे, मेधा और स्मरणशक्ति बढावे तथा यह रसायन है, त्रिसुगंधके साथ सेवन करनेसे बल और अग्निको बढावे, बाकी अनुपान वैद्य अपनी बुद्धिके अनुसार कल्पना करे।

दरद्केगुण

तिक्तंकषायंकटुहिंगुलंस्यान्नेत्रामयघ्नं कफपित्तहारी। हृल्लासकुष्ठंज्वरकामलाच प्लीहामवातौ च गदंनिहंति

अर्थ–हिंगलू कडवा, कषैला और तीखा है नेत्ररोग, कफ, पित्त, हृल्लास (सूखीखाँसी) कोढ, ज्वर, कामला, तापतिल्ली और आमवातका नाश करे।

दूसरेगुण

तिक्तोष्णंहिंगुलंदिव्यंरसगंधसमुद्भवं।
मेहकुष्ठहरंरुच्यंवल्यंमेधाग्निवर्द्धनं॥
हिंगुलःसर्वदोषघ्नो दीपनोतिरसायनः।
सर्वरोगहरोवृष्यो जारणेलोहमारणे॥
एतस्मादाहृतःसूतोजीर्णगंधःसमोगुणैः।

अर्थ–पारे और गंधकसे उत्पन्न हिंगुल, दिव्य और कटु है, सर्व दोषोंका नाश कर्त्ता, अग्निको दीपन करे, रसायन है। सर्वरोगोंका हर्त्ता, वीर्यकोवढावे, लोहके जारण तथा मारणमें शुभ है इसके निकलेहुए पारेके गुण षट्गुण गंधक जारण किये हुए पारेके समान हैं, हिंगुलसे पारा निकालनेकी। विधि पारदप्रकरणमें लिख आये हैं।

अशुद्धहिंगुलके अपगुण

अशुद्धो दरदःकुर्यात्कुष्ठंक्लैव्यंक्लमंभ्रमं।
मोहंचशोधयेत्तस्मा त्सिद्धवैद्यस्तुहिंगुलं॥

अर्थ–अशुद्ध हिंगुल,-कोढ, नपुंसकत्व, क्लम, भ्रम और मोहको करता है। इससे सिद्धवैद्य हिंगुलका यथायोग्य शोधन करे।

अस्यशांति

उत्पद्यतेयदाव्याधिर्दरदस्यनिषेवणात्।
तदासूतकवत्सर्वं कुर्यात्सर्वंप्रतिक्रिया॥

अर्थ–यदि अशुद्ध हिंगुल सेवनसे रोग प्रगटहो तो पारेके समान शांति विधि करना चाहिये।

इतिहिंगुलप्रकरणम्

टंकण (सुहागा)

टंकनस्त्रिविधःप्रोक्तःस्फाटिकाभोगुडप्रभः।
तृतीयःपांडुरःप्रोक्तःशृणुतस्यगुणागुणं॥
पर्यायोपांडुरस्यापिनीलकंठेतिविश्रुतः।
सोत्तमोनीलकंठश्च स्फाटिकाभश्चमध्यमः॥
गुडाभश्चाधमःप्रोक्तो रसशास्त्रविशारदैः॥

अर्थ–सुहागा ३ प्रकारकाहै एक फिटकरीके समान, दूसरा गुडके समान, तीसरा पीला होता है, इनके गुणागुण कहते हैं पीले सुहागेको नीलकंठभी कहते हैं, वह नीलकंठ उत्तम होता है, फिटकरीके समान मध्यम और गुडके समान अधम होता है। ऐसे रसज्ञाता वैद्य कहते हैं।

सुहागेकीशुद्धि

जंबीरजरसेनैव अहोरात्रंविभावयेत्।
टंकणःशुद्धिमायातिनात्रकार्याविचारणा॥

अर्थ–सुहागा एक दिन रात जंभीरीके रसकी भावना देनेसे शुद्ध होवे।

दूसरीविधि

टंकणोशुध्यते ह्याशुगोमयेनावृतोभिये

अर्थ–सुहागा गोवरमें रखनेसे शुद्ध होवे।

तथागुण

टंकणोद्रावणोभेदी विषहारीज्वरापहः।

गुल्मामशूलशमनो वातश्लेष्महरःपरः ॥
तथैवबन्हिकृत्स्वर्ण रूप्ययोःशोधनःपरः।

अर्थ–सुहागा द्रव अर्थात् जलरूप कर्त्ता, भेदीहै, विषरोग, ज्वर, गोला, आमवात, शूल, वात और कफका नाशक हैं। जठराग्नि को बढावे सुवर्ण और चांदीको शुद्ध करता है।

अशुद्धसुहागेकेदोष

अशुद्धष्टंकणोवांति भ्रांतिकारीप्रयोजितः।
अतस्तंशोधयेद्वन्हौ भवेदुत्फुल्लतःशुचिः ॥

अर्थ–अशुद्ध सुहागा-वांति (वमन) और भ्रांति (भौंर) करता है, इसलिये इसे अग्निपर रख फुलावे तो शुद्ध हो।

तुरटी (फिटकरी)

सौराष्ट्रभूमिसंभूता. मृत्स्नासातुवरीमता।
वस्त्रेपुलिप्यतेयासौ मंजिष्ठारसबंधनी ॥
स्फटिकाछिछिकाचेतिद्विविधापरिकीर्त्तिता।
ईषत्पीतागुरुस्निग्धा पैत्तिकाविषनाशिनी
निर्भराशुभ्रवर्णाचस्निग्धाःसाम्लापरामता।
साफुल्लतुवरीप्रोक्ताःलेपात्ताम्रंचरंगदाः।
सौराष्ट्रीचामृताकांक्षीस्फटिकामृत्तिकामता ॥
आढकीतुवरीधन्यामृत्स्नामृत्सूरमृत्तिका।
व्रणकुष्ठहरासर्वाकुष्टघ्नीचविशेषतः ॥
दुकूलेपुचसर्वेपु लेपनाद्रंजनीभवेत्।
उत्तमालिप्यतेयोसौमंजिष्ठारंगवर्धिनी ॥

अर्थ–सौराष्ट्र[1] देशकी पृथ्वीमें एक प्रकार-की मिट्टी होती है उसे तुवरी (गोपीचंदन) कहते हैं, इसका कपडेपर लेप करनेसे मंजीठ-के रंगके समान लाल धव्वा पड जाता है, यह पारेको बांधने वाली है इसके स्फटिक और छिछिका दोभेद हैं इनमें स्फटिका अर्थात् गोपीचंदन किंचित्पीला, भारी, चिकना होता है। पित्त और विषके विकारोंको दूर करता है दूसरी भारी और सफेद. चिकनी और खट्टी होतीहै। इसे फुल्लतुवरीभी कहते हैं लेप करनेसे तांवेके समान होजाता है। इसके नाम सौरा-ष्ट्री, अमृता, कांक्षी, स्फटिका, आढकी, तुवरी, धन्या मृत्स्ना और सूर मृका हैं। ये सब गोपीचंदन व्रण और कोढको हरें, परंतु विशे-षकर कोढको दूर करती हैं। और सबप्रकार के वस्त्रों पर लेप करनेसे अपना रंग लाती हैं, परंतु उत्तम गोपीचंदन वही कहाता है जो सफेद वस्त्रपर मंजीठके समान रंग देवे।

फिटकरीका शोधन

तुरटीकांजिकेक्षिप्त्वात्रिदिनाच्छुद्धिमृच्छति।

अर्थ–फिटकरी ३ दिन कांजीमें भिगोने-से शुद्ध होती है।

तथा

स्फटिकानिर्मलाश्वेताश्रेष्ठास्याच्छोधनंकचि
त् नदृष्टंशास्त्रतोलोकेवन्हावुत्फुल्लयंतिहि ॥

अर्थ–फिटकरी निर्मल तथा श्वेत उत्तम होती है, उसका शोधन किसी शास्त्रमें नहीं लिखा परंतु लोकमें मनुष्य इसे आगमें फुलाकर शुद्ध करते हैं।

तथासत्वपातन

क्षाराम्लमर्दिताध्माता सत्वंमुंचतिनिश्चितं

अर्थ–फिटकरीको क्षारवर्ग तथा अम्लवर्ग में घोटकरः भट्टीमें रख वंकनाल धोंकनीसे धोंक नेसे सत्व निकलता है।किसीके मतसे फिटकरी के दो भेद हैं तुवरी और सौराष्ट्रि इनसें तुवरीके तो भेद कहचुके अत्र सौराष्टिके गुण कहते हैं।

सुसैंधवसमानाचकषायास्फटिकामता ॥ व्र
णारक्षतशूलघ्नीस्फटिकीसूतघातिनी । सुरा

[1] अहमदावादकाठियावारके समीप देशोंको सौराष्ट्र देश और भाषामें सोरठदेश कहते हैं।

ष्टिकायत्शोधनंकारयेद्रसचिंतकः ॥

अर्थ-सैंधवनोनके समान और कषेली फिटकरी कहाती है, यह व्रण. उरक्षत और शूलको तत्क्षण दूर करे, पारेका मारण करे, इसका शोधन पूर्वोक्त रीतिसे करे।

तथागुण

कांक्षीकषायाकटुकाम्लकंठ्या केश्याव्रणघ्नी विषनाशनीचा चित्रापहानेत्रहितात्रिदोषशां तिमंदापारदरंजनीच ॥

अर्थ-फिटकरी कषेली, तीखी, खट्टी, कंठ और केशोंको हित है, व्रणकोअच्छा करे विषका हरण करे, चित्रकोढको दूर करे, नेत्रों को हित है, सन्निपातको शांतिकरे और पारेको रंगती है।

सत्वकीदूसरीविधि

गोपित्तेनशतंवारान्सौराष्ट्रींभावयेत्ततः ॥
धमित्वापातयेत्सत्वंक्रामणंचातिगुह्यकम्।

अर्थ-फिटकरीको गौके पित्तेकी १०० भावना देकर सुखाय भट्टीमें रख वंकनालधोंकनीसे धोंके तो सत्व निकले यह वातगुह्य है

मनशिल

तालकस्यैवभेदोस्तिमनोह्वाप्रोच्यतेजनैः ॥
तालकस्त्वतिपीतःस्याद्भवेद्रक्तामनःशिला।

अर्थ-मनसिल हरितालकाही भेद है हरताल बहुत पीली होती है और मनसिल लालवर्णकी होती है।

मनशिलकी निरुक्ति

मदायतनसंभूतामनोह्वातेनकीर्त्तिता।
सापीवरीहेमवर्णामनोह्वाविविधामता।

अर्थ-श्रीमहादेवजी पार्वतीसे कहते हैं कि यह मनसिल हमारे घर (हिमालय) में उत्पन्नहुई इसीसे इसे मनोह्वा कहते हैं, और जो सुवर्ण सदृश हो उसे पीवरी कहते हैं यह अनेक प्रकारकीहै।

तथाभेद

मनःशिलात्रिधाप्रोक्ताश्यामांगीकरवीरिका
द्विखंडाख्याचतासांतुलक्षणंनिनिबोधमे ॥
श्यामारक्ताचगौराचभाराढ्याश्यामिकामता
तेजस्विनीचानिर्गौरातानाभाःकरविरिकाः।
चूर्णभूतातुरक्तांगीसभाराखंडपूर्विका ॥
त्रिविधासुचश्रेष्ठास्यात्करवीरामनःशिला।

अर्थ-मनशिल तीन प्रकारकी है १ स्यामांगी, २ करवीरिका, ३ द्विखंडा। इनके तीनोंके लक्षण मुझसे सुनो यह वर्णमें श्याम लाल और क्रमसे गौर है जो भारीहो उसे श्यामिका कहते हैं, और जो तेजयुक्त काली ताम्रके समान हो उसे करवीरिका, और चूर्णके समान बारीक लालवर्णकी तथा भारीको द्विखंडा कहते हैं, इनमें करवीरिका उत्तम है।

अशुद्धमनशिलकेदोष

अश्मरीमूत्रकृच्छ्राणिअशुद्धाकुरुतेशिला।
मंदाग्निर्मलबंधंचकुरुतेतेनशोधयेत् ॥

अर्थ-अशुद्ध मनसिल पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मंदाग्नि, और मलबंध रोग करे, इससे इसका शोधन करना चाहिये।

तथाशुद्धि

जयंतिकाद्रवेदोलायंत्रेशुद्धामनः शिलाः।

अर्थ-मनसिलको भांगरे, हलदी और अदरकके रसोंमें दोलायंत्र द्वारा पाचन करने से शुद्ध होवे।

दूसरीविधि

अगस्तिपत्रतोयेनभावितंसप्तवारकं।
शृंगवेररसैर्वापिविशुध्यतिमनःशिला ॥

अर्थ-मनसिलको अगस्तियाके पत्तोंके रस

अथवा अदरकके रसकी भावना देवे तो शुद्ध होवे ।

तीसरीविधि

भृंगागस्तिजयंतीनामार्द्रकस्यरसेपुच ।
दोलायंत्रेणसंस्विन्नाविशुध्यतिमनःशिला ॥

अर्थ–मनसिलको भांगरा, अगस्तिया, हल्दी और अदरकके रसमें दोलायंत्र द्वारा पचन करनेसे शुद्ध होवे ।

चौथीविधि

पचेत्त्र्यहमजामूत्रैर्दोलायंत्रेमनःशिलां ।
भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाशुद्धिमृच्छति ॥

अर्थ–दोलायंत्रमें मनसिलको बकरीके मूत्रमें ३ दिन औटावे, तदनंतर खरलमें डाल बकरीके पित्तेकी भावना देनेसे मनसिल शुद्ध होवे ।

मनसिलमारणकीभाषाविधि

अर्थ–हंसपदी, वंदाल, वड़, आक, थूहर प्रत्येकके दूधमें मनसिलको एक २ दिन घोट कर अग्निदेता जाय और सातआंच डमरूयंत्रमें टिकिया बांधकर चार २ प्रहरकी देवे तो मनसिलमरे ।

सत्वपातन

तालवच्चशिलासत्त्वंग्राह्यंतैरेवचौषधैः ।

अर्थ–जिस प्रकार हरितालका सत्व निकाला जाताहै उसी प्रकार और उन्हीं औषधियोंसे मनसिलका सत्व निकालना चाहिये ।

सत्वपातनकीदूसरीविधि

नागांशंगुग्गुलुंग्राह्यंलोहकिट्टंचसर्पिषा ।
मर्दयित्वांधमूषायांध्यानात्सत्वंविमुंचति ॥

अर्थ–मनसिलका आठवां भाग गूगलले, उसमें लोहकी कीटी और घृत मिलाकर घोटे पश्चात् अंधमूषामें रख वंकनाल धोंकनीसे धोंकेतो मनसिल सत्व छोडे ।

तथागुण

मनःशिलागुरुर्वर्ण्यासरोष्णालेखनीकटुः ।
तिक्तास्निग्धाविषश्वासकासभूतविषास्रनुत् ।

अर्थ–मनसिल-भारी, वर्णकारक, सर, उष्ण, लेखनी, तीखी, कड़वी और चिकनी है, विषके विकार, श्वास, खांसी, भूतबाधा और रुधिर विकारोंको नाश करे ।

तथाच

मनःशिलासर्वरसायनाख्या तिक्ताकटूष्णा कफवातहंत्री सत्वात्मिकाभूतविषाग्निमांद्यकंडुंचकासक्षयहारिणीच ।

अर्थ–मनसिल-सर्वरसायन हैं, कड़वी, तीखी और गरम है, कफवातको दूरकरे, सत्व वाली हैं, भूत, विषदोष, मंदाग्नि, खुजली, खाँसी और खईको दूर करे ।

अशोधितशिलाकेदोष

मनःशिलामंदवलंकरोतिजंतुन्ध्रुवंशोधनमंतरेण । मलस्यबंधंकिलमूत्ररोगंसशर्करंकृच्छ्रगदंचकुर्यात् ॥

अर्थ–अशुद्ध मनसिल बलनाशकरे, मलबंध, मूत्ररोग, शर्करा, कृच्छ्ररोग और कृमिरोग उत्पन्न करे ।

तथाशांति

गोक्षीरंमाक्षिकयुतंपिवतेयोदिनत्रयं ।
कुनटीतस्यदेहेचविकारंनकरोतिहि ।

अर्थ–गौके दूधमें ३ दिन सहत मिलाकर पीनेसे मनसिल देहमें विकार नहीं करे ।

शंख

द्विधासदक्षिणावर्ति वामावर्त्तिः शुभेतरः
दक्षिणावर्तिशंखस्तु पुण्ययोगादवाप्यते ।
यद्गृहेतिष्ठतेसोवै सलक्ष्म्याभाजनं भवेत् ॥

दक्षिणावर्त्तशंखस्तु त्रिदोषघ्नः शुचिर्निधिः
ग्रहालक्ष्मिक्षयः क्ष्वेडक्षामताक्षि क्षयक्षमी ।

अर्थ-शंख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त दोप्रकारका है, जिनमें दक्षिणावर्त्त पुण्ययोगसे मिलता है, जिसके घरमें दक्षिणावर्त्त शंख रहता है उसके अटूट लक्ष्मी वास करती है, और वा त्रिदोष नाशक, पवित्र तथा नौ निधोंमें एकनिधि है।और ग्रह तथा अलक्ष्मीकी पीड़ा, खई, विष, कृशता, तथा नेत्र रोगोंको दूर करनेको समर्थ है ।

शंखश्चविमलश्रेष्ठश्चंद्रकांतिसमप्रभः ।
अशुद्धोगुणदोनैव शुद्धश्चसगुणप्रदः ।

अर्थ-जो शंख सफेद चंद्रकांतिके समान हो वह उत्तम है, और अशुद्ध गुणकारक नहीं है, शुद्ध कियाहुआ गुण करता है ।

शोधन

साम्लैःसकांजिकाभिश्चदोलाखिन्नःसशु-द्ध्यति ।

अर्थ-शंखको अम्लवर्ग और कांजीमें दोलायंत्र द्वारा पचावे तो शुद्ध होवे ।

तथागुण

शंखःक्षारोहिमोग्राहीग्रहणीरेचनाशनः ।
नेत्रपुष्पहरोवर्ण्यस्तारुण्यपिटिकाप्रणुत् ।

अर्थ-शंख-खारी, शीतल, ग्राहक तथा वर्णको सुधारने वाला है।संग्रहणी और दस्तोंको बंदकरे, नेत्रके फूले और जवानीके मुँहासों-को दूरकरे ।

खडिया

खटींगौरखटीचेति द्विधाप्यामलिनास्मृता ।
मृदुपाषाणसदृशी खटीशुभ्रादिकागुरुः ॥

अर्थ-खटी और गौरखटीके भेदसे खडि-या दो प्रकारकी है, इनमें खडिया कुछ का-ली होती है, और गौरखडिया नरम पत्थरके समान बहुत सफेद और भारी होती है यह उत्तम है ।

तथागुण

खटीदाहास्रनुच्छीता मधुराविषशोफजित् ।
कफघ्नीनेत्रयोःपथ्या लेखनीबालकोचिता॥
तद्वत्पाषाणखटिकाव्रणपित्तास्रजिद्धिमा ।
लेपादितद्गुणाप्रोक्ता भक्षितामृत्तिकासमा ॥

अर्थ-खडिया-दाह और रुधिर विकारोंको दूर करे, शीतल और मधुर है विष और शो-फको दूर कर कफका नाशकरे । नेत्रोंकोपथ्य, लेखन और बालकोंको हितकारक है पाषाण-खडियाव्रण, पित्त तथा रुधिरविकारोंका नाश करे शीतलहै ये गुण लेप करनेसे करती है खानेमें मिट्टीके समान अवगुण करती है ।

कौडी

वराटिकात्रिधाप्रोक्ता श्वेताशोणात्रिधापरा ।
पीताचतीक्ष्णाचक्षुष्याश्वेताशोणाहिमाव्रणा
अतिबिंदुभिरश्वैतैर्लांछितोरेखयाथवा ।
बालग्रहहरानाना कौतुकेषुचपूजिता ॥
पीतागुल्मयितापृष्ठे रसयोगेषुयोजयेत् ।
सार्द्धनिष्कप्रमाणासौ श्रेष्ठायोगेषुयोजयेत्॥
निष्कप्रमाणामध्यासाहीनापादोननिष्कका

अर्थ-कौडी सफेद लाल और पीली ३ प्रकारकी है, जिनमें पीली तीक्ष्ण और नेत्रोंको हितकारक है, लाल शीतल तथा व्रणको हित-है, जिसपर कालोंची लिये बिंदु और रेखाहों वह बालग्रहनाशक तथा अनेक कौतुकोंमें उ-पयोगी है, और जो पीलीहो जिसकी पीठपर गांठहों उसे रसयोगमें देना चाहिये, जो व-ज़नमें १॥ तोला हो वह उत्तम है, तोलेभरकी मध्यम तथा पौनतोलेकी कौडी अधम है ।

दूसराप्रकार

पीताभाग्रंथिलापृष्टेदीर्घवृत्तावराटिका ।
रसवैद्यैर्विनिर्दिष्टा सावरावरसंज्ञका ॥
सार्द्धनिष्कभराश्रेष्ठादंतैर्द्वादशभिर्युता ।
रसेरसायनेयोज्या निष्कभाराचमध्यमा ॥
पादोननिष्कभाराच कनिष्ठापरिकीर्तिता ।

अर्थ–पीली और पिछाड़ीके भागमें गांठदार लंबी और गोलहो उस कौड़ीको रसज्ञाता वैद्योंने श्रेष्ठकहा है इनके वर और अवर दो भेदहै, जो कौडी छः माशेकी १२ दांत युक्त हो वह श्रेष्ठ है, उसे रस और रसायनमें योजना करे ४ माशेकी मध्यम और ३ माशेकी कनिष्ठ जाननी ।

शोधन

वराटाकांजिकेस्विन्नायामाच्छुद्धिमवामुयात् ।

अर्थ–कौड़ियां-कांजीमें १ प्रहर औटानेसे शुद्धहोती हैं ।

मारण

अंगाराग्नौस्थिताध्माता सम्यक्मोत्फुल्लिता यदा स्वांगशीता मृतासातुपिष्ट्वा सम्यक्प्रयोजयेत् ।

अर्थ–कौडीको अंगारोंपर रखकर जब अच्छीतरह फूलजाय तब अग्निपरसे उठाय शीतलकर पीसे और सब कार्य्योंमें योजनाकरे ।

गुण

कपर्दिकाहिमानेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रवाग्निमांद्यघ्नीपित्तास्रकफनाशिनी ॥
परिणामादिशूलघ्नीवृष्यातीसारनाशिनी ।
नेत्र्यान्संग्रहणींहंति कटुष्णादीपनीमता ॥
पाचनीवातकफहा श्रेष्ठासूतस्यजारणे ।
तदन्येपुंवराटास्युःगुरवःश्लेष्मपित्तदाः ॥

अर्थ–कौंडी शीतल और नेत्रोंको हित है, फोडा, खई, कर्णस्राव, मंदाग्नि, पित्त, कफ, और परिणामशूलका नाश करे, वृष्यहै, अतिसार, संग्रहणीको शमन करे, कटु, गरम, दीपन और पाचन है वात कफकी नाशक, पारेजारणमें उत्तमहै ये गुण हैंइन तीनप्रकारकी कौडियोंके सिवाय एक कडडेहोते हैं वह भारी और कफपित्त कर्त्ता होते हैं ।

मोतीकीसीप

मुक्ताशुक्तिः कटुस्निग्धाश्वासहृद्रोगहारिणी।
शूलप्रमथनीरुच्या मधुरादीपनीपरा ॥

अर्थ–मोतीकीसीप कटु और चिकनी है, श्वास, शूल, हृद्रोग, इनका नाशकरे, रुचिकारी, मीठी और दीपनी है ।

जलसीप

जलशुक्तिःकटुस्निग्धादीपनीगुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरीरुच्या पाचनीबलदायिनी ॥

अर्थ–जलकीसीप-कडवी, चिकनी, दीपन, रुचिकर्त्ता, पाचन और बलदायक है गोला, शूल और विषदोषको दूर करे ।

सीपोंकाशोधन

शोधनंशंखवत्तस्यामृतिः प्रोक्ताकपर्दिवत्

अर्थ–दोनों प्रकारकी सीपोंका शोधन शंखके समान, और मारण कौडीके समान है

गुण

शुक्तिश्चशिशिरापित्तरक्तज्वरविनाशनी ।

अर्थ–शीप शीतल है, पित्त रुधिरविकार तथा ज्वरको नाश करे ।

छोटेशंख (घोंघा)

शंबुकाशीतलानेत्ररुजांस्फोटविनाशनी ।
शीतज्वरहरीतीक्ष्णाग्राहीदीपनपाचनी ।

अर्थ–छोटेशंख शीतल हैं, फोडोंको दूर करे, शीतज्वरका नाश करे, तीक्ष्ण, ग्राही

दीपन, पाचन तथा नेत्ररोग हर्त्ता हैं ।

तथा शोधन

शंखवच्छोधनंकुर्याद्यामंशुध्यतिशंबुका ।
शुक्तिवद्भस्मकंकुर्यात्सर्वयोगेषुयोजयेत् ॥

अर्थ—छोटेशंखोंका शोधन बडोंकी तरह करे और सीपके समान भस्म कर सब योगोंमें देवे।

सिकता (वालू)

वालुका सिकताप्रोक्ताशर्करारेतजापिच ।
वालुकामधुराशीतासंतापश्रमनाशिनी ।
सेकप्रयोगतश्चैवशाखाशैत्यनिलापहा ।
तद्वल्लेखनीप्रोक्ताव्रणोरक्षतनाशनी ।

अर्थ—रेतको वालू, सिकता, वालुका, शर्करा और रेतजाभी कहते हैं। यह मधुर और शीतल हैं, संताप और श्रमको सेकनेसे दूरकरे, तथा हाथ पाओंकी शीतलता और वादीकोभी सेकनेसे दूर करे, लेखनी है व्रण और उरःक्षतका नाश करे ।

वालूसे लोहरज ग्रहणका प्रकार

शर्कराभ्यश्चुंबकेनकेचिद्गृह्णंत्ययोरजः
सुकरंत्विदमाख्यातंतंचसंशोध्यमारयेत्

अर्थ—कोई मनुष्य चुंबकपत्थरसे वालूमेंसे लोहेके कण निकालते हैं यह बात सीधी है उनको शोधकर मारण करे ।

शिलाजीतकी उत्पत्ति

महार्णवांभोमृतमंथनोत्थः स्वेदोगिरेर्योंवगरे ततः प्राक्। समंदरस्याप्रृतमंथनाचसोमेनसंपर्कमियायदिव्यम्। ब्रह्माणमिंद्रंप्रतिपूज्यसम्यक्हितायपुंसांप्रददौनगेभ्यः। सोमोऽमृतंकल्पगुणंतुभूमौशिलाजतुस्यादितिनिर्विचिंत्यहितंप्रजानांसुखदंनिदाघेनगात्स्रवेद्भास्करतापनाच प्रभावतश्चोत् कटभारभावा संसृज्यतेयेनचधातुनातत् । तदात्मकंतंप्रवदंति तज्ज्ञातस्मात्परीक्ष्यंचदनंतवीर्यं ।

अर्थ—अमृत निकालनेके लिये जब देव और दैत्योंने मंदराचल पर्वतको समुद्रमें डालकर मथा, उस समय उस पर्वतमें स्वेद (पसीना) प्रगट हुआ वह समुद्रमें गिरा फिर वही समुद्रमथनेसे चंद्रमाके सदृश प्रगट हुआ, उस समय सब देवगणोंने ब्रह्मा और इन्द्रका पूजनकर मनुष्योंके कल्याणार्थ उसे सब पर्वतोंको दिया, अर्थात् यह सोम (शिलाजीत) अमृतकल्पके समान गुणकारक पृथ्वीमें शिलाजीत नामसे प्रगट हुआ, यह प्रजाका हित और सुखदाता शिलाजीत ग्रीष्म (गरमी) में सूर्यकी धूपसें तप्तहोकर पर्वतोंसें वहता है, धातुओंसे स्रवनेके कारण इसमें भारी गुण हैं, इसे तदात्मक अर्थात् तत्तद्धातुरूपात्मक कहते हैं, इस कारण इसकी परीक्षा करे क्योंकि यह अनंतवीर्य्य वाला है ।

सुवर्णरूप्यंत्रपुसीसताम्रलोहात्स्रनेनैव मतः शिलानः। समुद्भवंचास्यवदंतिवैद्याः सर्वोत्तमंविंध्यनगोद्भवंच ।

अर्थ—सोना, चाँदि, रांग, सीसा, तांवा, और लोहेस शिलाजीतकी उत्पत्ति है-यह वैद्य कहते हैं, सबसे उत्तम विंध्याचल पर्वतसे प्रगट शिलाजीत होता है ।

कांचनशिलाजीतके लक्षण

मधुरंचसतिक्तंचजपापुष्पनिभंचयत् ।
स्निग्धंघनंगैरिकाभंसुशीतंकांचनात्स्रुतं ।

अर्थ—मीठा, कडवा, जपा (गुडहर) के फूलके समान लाल, चिकना, गाढा, गेरूके समान और शीतल सुवर्णसे प्रगट शिलाजीतके गुण हैं ।

रौप्यशिलाजीतके लक्षण

रौप्याकरादिन्दुमृणालवर्णं सक्षारकट्वम्लर-संविदाहि । मेहामजीर्णज्वरपांडुशोप प्ली-हाढ्यवातंशमयेद्धिसद्यः ।

अर्थ–चांदीकीखानसे प्रगट शिलाजीतका वर्ण चंद्रमा और कमलके समानस्वच्छ तथा सफेद होता है।खारी, तीखा, खट्टा है । दाह, प्रमेह, अजीर्ण, ज्वर, पांडुरोग, शोप, तापति-ल्ली और वादीको शीघ्र नाश करे ।

ताम्रशिलाजीतके लक्षण

मयूरकंठोपमचापपक्षवर्णं सतिक्तंकटुचापि-ताम्रम् । तिक्तंह्यनुष्णंचसुलेखनंच मेहाम्ल-पित्तज्वरशोपहारी ।

अर्थ–मोरके कंठ वा पपैयाके पंखोंके समान जिसका वर्ण, कडवा और तीखा, लेखन, प्रमेह, अम्लपित्त, ज्वर और शोपका हर्त्ता ऐसा ताम्र शिलाजीत है ।

वंगशिलाजीतके लक्षण

किंचित्सतिक्तंकटुसांद्रमृत्स्नंत्रपुप्रसूतंत्रपुव-र्णगंधं । शोथप्रमेहज्वरशोपहारि शीताम्ल-पित्तंविनिहंतिसद्यः

अर्थ–कुछ कडवा, तीखा, गाढा, मृतिकाके समान वंगके समान वर्ण, और गंधवालाजो होता है वह सूजन, प्रमेह, ज्वर, शोप, शीत और अम्लपित्तका नाशक रांगसे प्रगट शि-लाजीत होता है ।

सीसकशि०के ल०

नागात्सतिक्तमृदुचोष्णवीर्यंवर्णादतः स्या-त्कुसुमेनतुल्यं ॥ रसेनतस्यात्कटुकप्रधानं दर्णोजतेजःप्रवलंददाति ।

अर्थ–सीसका शिलाजीत तीखा, नम्र उष्णवीर्यवाला, पुष्पके सदृशवर्ण, इसमें कटु रस प्रधान है. वर्ण ओज और तेजको देता है ।

लोहशि०के ल०

गोमूत्रगंधिकृष्णं गुग्गुल्वाभंविशर्करंमृत्स्नं।सि द्धमनम्लकषायंकृष्णायससंजंशिलाजतुप्रवरं॥

अर्थ–गोमूत्रकीसी गंधवाला, गुग्गुलके स-दृश, धूलरहित, मिट्टीके समान, शुद्ध थोडा क-पैला और काला लोहका शिलाजीत होता है।

शिलाजीतकेभेद

शिलाजतुद्विधाप्रोक्तोगोमूत्राद्योरसायनः । कर्पूरपूर्वकश्चान्य स्तत्राद्योद्विविधःपुनः ॥ ससत्त्वश्चाथ निःसत्त्वस्तयोपूर्वोगुणाधिकः।

अर्थ–शिलाजीत दो प्रकारका है गोमूत्र शिलाजीत और कपूर जिसमें गोमूत्र शिला-जीत रसायन हैं इसकेभी दोभेद हैं १ सत्वसहित दूसरा सत्वरहित जिनमें सत्वस-हित शिलाजीतमें अधिक गुण हैं ।

मतान्तर

शिलाजतुद्विधाज्ञेयंतत्राद्यंगिरिभवं । द्वितीयंस्यादूपरायांमृत्तिकाजलयोगतः ॥

अर्थ–शिलाजतु-एक पर्वतसे प्रगट और दूसरा ऊपरभूमिसे प्रगट दो प्रकारका है, ऊपरभूमींमें मिट्टी और पानीके योगसे बनता है।

उत्पत्ति

ग्रीष्मेतीव्रार्कतप्तेभ्यो माधवेभ्योहिभूभृतां । स्वर्णरूप्यार्कगर्भेभ्योशिलाधातुविनिस्सरेत्

अर्थ–ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी किरणोंसे तप्त सुवर्ण चांदी और तांबेकी खानवाले पर्वतोंसे शिलाधातु (शिलाजीत) निकलता है ।

निदाघेघर्मसंतप्ता धातुसारंधराधराः । निर्यासवत्प्रमुंचंति शिलाजतुप्रकीर्त्तितं ॥

अर्थ–सूर्यकी किरणोंकी गर्मीसे पर्वत तप्त होते हैं उनमें धातुओंका साररूप गोंदके समान पतला पदार्थ निकलता है, उसे शिला-

जीत कहते हैं ।

तथाभेद

सौवर्ण राजतं ताम्र मायसं च चतुर्विधं ।
शिलाजतु हि विज्ञेयंतत्तल्लक्षण लक्षितं ॥

अर्थ—शिलाजीत सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस चारप्रकारका है । और वो सफेद आदिभेदोंसें जाना जाता है, इसका स्पष्टार्थ यह है कि एक सोनेकीखान-दूसरा चांदीकीखान, और तीसरा तांबेकी खान तथा चौथा लोहेकी खान वाले पर्वतसे पैदा होता है, इनमें जिस धातुके लक्षण मिलें उसे उसी धातुका सार यानी शिलाजीत जानना।

परीक्षा

स्वर्णगर्भगिरेर्जातो जापापुष्पनिभोगुरुः ।
मधुरंकटुतिक्तंचशीतलंचरसायनं ॥

अर्थ—सोनेकी खानसे प्रगट शिलाजीत जपापुष्पके समान लाल, भारी, मधुर, तीखा, कडवा, शीतल और रसायन है ।

रूप्यगर्भगिरेर्जातं मधुरंपांडुरंगुरुः। शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णंक्षयरोगजित् ॥

अर्थ—चांदीकी खानवाले पर्वतसे प्रगट शिलाजीत पीला, मीठा, भारी, कफवातनाशक, कटु, गरम और खईरोगको जीतने वाला है।

ताम्रगर्भगिरेर्जातं नीलवर्णघनंगुरुः ।
मयूरकंठसदृशंतीक्ष्णमुष्णंचजायते ॥

अर्थ—तांबेकी खानवाले पर्वतसे प्रगट शिलाजीत नीला, गाढा, भारी, मोरकंठके समान नीलवर्ण, तीखा और गरम होता है ।

लोहेजटायुपक्षाभं तिक्तकंलवणंभवेत् ।
विपाकेकटुकंशीतं सर्वश्रेष्ठमुदाहृतं ॥

अर्थ—लोहेका शिलाजीत गीधकी पंखके समान कालेवर्णवाला, कडवा, नमकीन, पकनेके समय तीखा और शीतल है । यह सर्वोत्तम है ।

समाप्तोयं प्रथम खण्डः

मध्यम खण्डप्रारम्भः

शिलाजीतकीदूसरी परीक्षा

गोमूत्रगन्धं यत्कृष्णं स्निग्धं मृदुतथागुरुः
तिक्तंकषायं शीतं च सर्वश्रेष्ठंतदायसं ॥

अर्थ—लोह शिलाजीत गोमूत्रके समान गन्धवाला, काला, चिकना, नम्र और भारी कडवा, कसेला और शीतल सर्वोत्तम होता है।

तीसरीपरीक्षा

यत्तुगुग्गुलसंकाशंतिक्तंचलवणान्वितम् ।
विपाकेकटुकंशीतं सर्वश्रेष्ठंतदायसं ॥

अर्थ—जो शिलाजीत गूगलके सदृशहो कडवा खारा और जिसका पाक तीखा और शीतलहो वह सब शिलाजीतोंमें उत्तम है ।

द्विविधशिलाजीत

शिलाधातुर्द्विधाप्रोक्तो गोमूत्राद्योरसायनः ।
कर्पूरपूर्वकश्चान्य स्तत्राद्योद्विविधःपुनः ॥
ससत्त्वश्चैव निसत्त्वःस्तयोःपूर्वगुणाधिकः ।

अर्थ—शिलाजीत दो प्रकारका है, पहला गोमूत्र संज्ञक जो रसायन है, और दूसरा कपूर संज्ञक, गोमूत्र संज्ञकके दोभेद है ससत्व और निसत्व इनमें ससत्व अधिक गुण वाला है ।

वर्णभेदसे गुणभेद

वातपित्तेतुसौवर्णं श्लेष्मपित्तेतुराजतम्।
ताम्रजंकफरोगेषु लोहजंतत्रिदोषनुत् ॥
विद्यादौषहुतंत्रेषु तत्रलोहयुतोधिकम् ।

अर्थ—वातपित्तके विकारमें सौवर्ण शिलाजीत देवे, तथा कफपित्तमें रजत (चांदी) वर्णका, केवलकफ विकारमें ताम्रवर्ण और लोह शिलाजीत त्रिदोष नाशक हैं, इसको तंत्र मंत्र विद्यादिमें देते हैं। इसीकारण लोहशिलाजीतमें अधिक गुण हैं।

शिलाजीतशोधन

तच्छोधनमृतेव्यर्थ मनेकमलमेलनात् ।
शिलाजतुसमानीय लोहजंलक्षणान्वितम् ॥
वहिर्मलमपाकर्तुं क्षालयेत्केवलाम्बुना ।

अर्थ—शिलाजीतमें अनेक मल (कूडे) का मिलाप होनेसे जबतक शुद्ध न कियाजाय, निष्प्रयोजन है अतएव प्रथम लोहेकी खानवाले पर्वतमें जो शिलाजीत सर्व लक्षण युक्त प्रकट होवे उसको बाहर की शुद्धिके निमित्त केवल जलसे धो डाले।

तथा दूसरा प्रकार

लौहेस्थितंनिंब गुडूचिसर्पिःयथातथावत्परिभावयेत्तत्।संतानिकाकीटपतंगदंश दुष्टौषधी दोषनिवारणाय ।

अर्थ—शिलाजीतकी उत्पत्तिके समयकीट पतंग दंश और दुष्टऔषधिका मेल होता है, इसकारण सर्वदोष हरणार्थ लोहमात्रमें नीम. गिलोय और घीकी भावना देवे तो शुद्ध होवे।

तथा तीसरा प्रकार

उष्णेचकालेरवितापयुक्ते व्यभ्रेनिवातेसमभूमिभागे। चत्वारिपात्राण्यपिचायसानि न्यस्तानितत्रापिकृतावधानः ॥ शिलाजतुश्रेष्ठमवाप्यपात्रे प्रक्षिप्यतस्मात् द्विगुणंचतोयं। उष्णंतदर्द्धंकथितश्चदत्त्वा विशोषयेतन्मृदितं यथावत् । सुवस्त्रपूतं प्रविधायतत्तु संस्थापनीयं पुनरेवतत्र ॥ ततस्तुयत्कृष्णमतीवचोर्ध्वे संतानिकावद्रविरश्मितप्तं। पात्रात्तदन्यत्रततो निदध्यात् तस्यान्तरेचोष्णजलंनिधाय ॥ ततश्चतस्मादपरत्रपात्रेतस्माच्चपात्रादपरत्रभूयः पुनस्ततोऽन्यत्रनिधायकृत्स्नंयत्संहृतं तत्पुनराहरेच्च । यदाविशुद्धंजलमच्छमूर्ध्वेमसत्रभावान्मलमेत्यधस्तात् ॥ तदातुत्याज्यंसलिलं मलंहि शिलाजतुस्याज्जलशुद्धमेव। चतुर्थपात्राद्गलितंहिसर्वंपरीक्षणीयंखलुवैद्यवर्य्यैः॥

अर्थ—गरमीके दिनोंमें जब कडी धूप निकले और आकाश बद्दल तथा पवन रहित हो, उस समय समान भूमिमें चार लोहपात्र स्थापन करे, उनमेंसे प्रथमपात्रमें शिलाजीतके टुकडे २ कर डालदेवे, और शिलाजीतसे दूना जल डाले, और उससे आधा गरमजल डाल उसे धीरे २ हाथसे मल वस्त्रमें छानडाले, उस छने जलको पात्रमें भरकर धूपमें रखदेवे जब उसपर मलाई जमजाय तब उसको उतारकर दूसरे पात्रमें रखता जाय, जब मलाई जमना बंद होजाय तब दूसरे पात्रमें जो मलाई जमाकी है उसमें गरम जल डालकर धूपमें रख देवे, उसमें जो मलाई जमती जाय उसे निकाल २ कर तीसरे पात्रमें जमा करे, इसी प्रकार चौथे पात्रमेंभी करे, इस चौथे पात्रमें जो मलाई पडती जाय उसे निकाल २ कर प्रथम पात्रमें रखे. इसी प्रकार चार पांच वार करे जब पात्रमें ऊपर पानी स्वच्छ रहे तब जानेकि शिलाजीत शुद्ध होगया, उस जलको फैंक देवे और शिलाजीतको निकाल लेवे, इसकी परीक्षा आगे कहैंगे उसके

अनुसार करे ।

चतुर्थ प्रकार

शिलाजतुं समानीय ग्रीष्मेतप्तंशिलाच्युतं । गोदुग्धेस्त्रिफलाक्वाथै भृंगद्रावैश्चमर्दयेत्॥ आतपेदिनमेकैकं तच्छुष्कंशुद्धतांव्रजेत् ।

अर्थ-ग्रीष्मकी अत्यन्त गरमी पडनेपर पर्वतोंसे जो शिलाजीत प्रगट हो उसको गोदुग्ध, त्रिफलकेकाढे और भांगरेके रसकी एक २ दिन भावना देकर सुखालेवे, तो शिलाजीत शुद्ध होवे ।

पंचम प्रकार

सुख्यांशिलाजतुशिलांसूक्ष्म खण्डप्रकल्पितां। निक्षिप्यात्युष्णपानीये यामैकंस्थापयेत्सुधीः मर्दयित्वाततोनीरं गृन्हियाद्वस्त्रगालितं। स्थापयित्वाचमृत्पात्रे धारयेदातपेबुधः॥उपस्थितं घनंचास्य तत्क्षिपेदन्यपात्रके। धारयेदातपे धीमानुपरिस्थंघनंनयेत् एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतुः। भूयात्कार्यक्षमंवन्हौ क्षिप्तंलिंगोपमंभवेत् । निर्धूमं च ततः शुद्ध सर्व कर्मसुयोजयेत्। अधस्थितं च यच्छेषं तस्मि न्नीरंविनिक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्घर्मे पूर्ववच्चै वतन्नयेत् ॥

अर्थ-शिलाजीत निकलनेवाले उत्तम पत्थर को देखकर लावे, उसके फोडकर टुकडे २ कर उनको अत्यन्त गरम पानीमें डाल एक प्रहर पर्यन्त रक्खा रहने दे तदनन्तर उनको हाथसे खूब मलकर वस्त्रमें छान लेवे, उस छनेहुए जलको मिट्टीके पात्रमें भरकर धूपमें रखदेवे, ज्यों २ उसके ऊपर मलाई जमती जाय त्यों २ आहिस्ता २ उतार २ कर दूसरे पात्रमे रखता जाय, जब मलाई इकट्ठी होजाय तब तब गरमजल डाल पूर्वोक्त रीतिमें छानकर धूपमें रख देवे, इसपर जो मलाई पडे उसको तीसरे वर्त्तनमें रखता जाय, ऐसे बार २ दोमहीने तक करे तो शिलाजीत अग्निमें रखनेसे निर्धूम होवे, और लिंगके समान ऊँचा होजावे, इस प्रकार शिलाजीतको शुद्धकर सर्व कर्म्मोंमें योजना करे, पीछे पात्रमें नीचे जो शेष रहे उसमें गरमपानी डाल मलकर धूपमें रख पूर्वोक्त विधिसे उसकी मलाई उतार लेवे ।

शुद्धकी भावना

त्रिफलावारिगोदुग्ध मूत्रैर्भाव्यंशिलाजतु । स्वल्पंस्वल्पंविधानेन स्थापयेत्काचभाजने ॥ अगर्वादि शुभैर्धूपैः धूपयेत्तत्प्रयत्नतः । मात्र याशिलयापश्चात्स्निग्धं शुद्धंयथाविधि ॥ एकत्रिसप्तसप्ताहं कर्षमर्द्धपलंपलं । हीनमध्यो त्तमोयोगो शिलाजस्यक्रमात्ततः ॥ क्षीरेणा लोडितंकुर्य्या च्छीघ्रंरसफलप्रदम् हन्याद्रो गानशेषांश्च जीर्णेहनिमिताशनः ॥

अर्थ-शुद्ध शिलाजीतको त्रिफलाके काढे गोदुग्ध और गोमूत्रकी भावना देवे, पीछे काँचके पात्रमें रख अगरादिकी धूनी देवे, पीछे स्निग्ध और वमनविरेचनसे शुद्ध हुए प्राणीको इसमेंसे एक कर्ष वा अर्द्धपल वा पल-उत्तम मध्यम वा कनिष्ठमात्रा दूधके साथ मिलाकर १ वा २१ वा ७ सप्ताह सेवन करे तो सम्पूर्ण रोगोंका नाश करे और शीघ्र रस का फल देवे, जब मात्रापच जावे तब परिमाणका उत्तम भोजन करे ।

शुद्धकी परीक्षा

वन्हौक्षिप्तंतुनिर्धूमं पत्कालिंगोपमंभवेत् । तृणाग्रेणांभसिक्षिप्त मधोगलतितंतुवत् ॥ गोमूत्रगंधंमलिनंशुद्धंज्ञेयंशिलाजतु ।

अर्थ-जो शिलाजीत अग्निमें डालनेसे नि-

धूम पक होकर लिंगके समान खडा होजाय. तिनकाके अग्रभागपर रखकर जलमें डालनेसे तँतुओंके समान फैलकर नीचे बैठे गोमूत्रकीसी दुर्गंधिदे, और मलिनहो ऐसे शिलाजीतको शुद्ध जानना ।

शिलाजीतके गुण

रसोपरससूतेन्द्ररत्नलोहेषु येगुणाः । वसंतितेशिलाधातौः जरामृत्युजिगीषया । शिलाजकटुतिक्तोष्णंकटुपाकंरसायनं छर्दिरोगन्तथाहन्तिकम्पमेहाश्मशर्कराः । मूत्रकृच्छ्रंक्षयंश्वासंवातमर्शांसिपांडुता। अपस्मारमथोन्मादं शोफकुष्ठोदरकृमीन् ।

अर्थ-रस, उपरस, पारद, रत्न और सुवर्णादिक अष्टलोहोंमें जो गुण है वो सब मृत्यु और बुढापेको जीतनेवाले शिलाजीतमें रहते हैं, शिलाजीत-तीखा, कडवा और गरम है। पाकके समय तीखा, रसायन और छेदि यह कंप, प्रमेह, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, खई श्वास, वादी, बवासीर, पांडुरोग, मृगी, उन्माद, सूजन, कोढ, कृमि इन सबका नाश करे।

विशेषगुण

न सोस्तिरोगोभुविसाध्यरूपो योह्यस्यजेयंनजयेत्प्रसह्य तत्कालयोगैर्विविधैःप्रयुक्तंस्वास्थ्यंतनौ यद्विपुलं ददाति ।

अर्थ-ऐसा कोई असाध्यरोग पृथ्वीपर नहीं है जो शिलाजीतके खानेसे नजाय, तत्काल अनेक योगोंके साथ देनेसे देहमें स्वस्थता करे ।

शिलाजीतकेअनुपान

एलापिप्पलिसंयुक्तं माषमात्रंतुभक्षयेत् मूत्रकृच्छ्रंमूत्ररोधं हंतिमेहंतथाक्षयं सर्वानुपानैःसर्वत्ररोगेषु विनियोजयेत् जयत्यभ्यासतोनूनंस्तान्स्तान्रोगान्नसंशयः ।

अर्थ-छोटी इलायची और पीपलके साथ एकमासे शिलाजीतखाय तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, प्रमेह, और खईका नाश करे। और सब रोगोंमें अनुपानके साथ देनेसे उन्हीं २ रोगोंकी अभ्यासके साथ नष्ट करे ।

पथ्यापथ्य

व्यायामातपमारुतचेतःसंतापगुरुविदाहादि उपयोगादपिपरितोद्विगुणं परिवर्जयेत्कालं पिबेन्माहेन्द्र सलिलंकौपंप्रास्त्रावणांवुवा कुलत्थान्कामार्चींच कापोतांश्वसदात्यजेत् ।

अर्थ-शिलाजीत खाने वाला दंडकसरत, धूप, पवन और चित्तको सन्तापकारक वस्तुओंको त्यागदे, भारी तथा दाहकारी वस्तुओंकोभी त्यागदे, जितने दिन शिलाजीत सेवन करे उससे दूनेदिन त्यागरक्खे, महेन्द्र (वर्षा संबंधी) वा कूवा वा झरनेका जल पिये, कुलथी मकोय और कबूतरकामांस कदाचित् सेवन न करे ।

शिलाजीतकीभस्म

शिलायांगंधतालाभ्यां मातुलुंगरसेनच पुटितंहिशिलाधातुम्रियतेष्टोत्पलेनच। भस्मीभूतशिलोद्भवंसमतुलंकान्तिं च वैक्रांतिकं युक्तं च त्रिफलाकटुत्रयघृतैर्वल्येन तुल्यंभवेत् पाण्डायक्ष्मगदेतथाग्निसदने मेहेच मूलामये गुल्मप्लीहमहोदरेबहुविधे शूलेचयोन्यामये

अर्थ-शिलाजीतमें गंधक और हरिताल मिलाय बिजौरेके रसका पुटदे आठ उपलोंकी अग्नि देवे, इसप्रकार आठपुट देनेसे शिलाजीतकी भस्म होवे, पीछे शिलाजीत की भस्मकी बराबर कान्तलोहकी भस्म और वैक्रांतमणिकी भस्मोंको मिलाकर त्रिफला. त्रिकुटा और

घृतके साथ एकत्र बलाबल देखकर देवे तो पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, मंदाग्नि, प्रमेह, गुदाकीबीमारी, गोला, तापतिल्ली, उदरकेघोर विकार, शूल और योनिविकार नाश होवें।

शिलाजीतकासत्त्व

पिष्टेद्रावणवर्गेण साम्लेनगिरिसंभवं।
रुद्ध्वामूषोदरे ध्मातं कोकिलैः सत्वमृच्छति।
सत्वमुंचेच्छिलाधातु र्थोत्तमंलोहसन्निभं॥

अर्थ–शिलाजीतको द्रावणवर्ग और अम्लवर्गमें घोटकर मूषामें बंदकर भट्टीमें रख कोयलोंकी अग्निदेनेसे सत्व निकले, यह लोहेके सदृश निकलता है।

दूसराशिलाजीत

द्वितीयंसोरकाख्यंस्या च्छ्वेतवर्णंशिलाजतु
अग्निवर्णप्रदं तद्धितंमूत्रामयेपुच।

अर्थ–दूसरा सोरकाख्य अर्थात् सोरा नामसे प्रसिद्ध शिलाजीत होता है, वह सफेद रंगका होता है यह अग्निकर्त्ता और देहका उत्तमवर्ण करे और मूत्ररोगमें हित है।

इसकेगुण

पाण्डुरं सिकताकारं कर्पूराभंशिलाजतु।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीमेह कामलापाण्डुनाशनं॥
एलातोयेनसंमिश्र्यं सिद्धंसिद्धमुपैतितत्।
नतस्यमारणं सत्त्वपातनंविहितंबुधैः।

अर्थ–कुछ २ पिलाई लिये कर्पूरके और वालूके समान सोरा शिलाजीत होता है, यह मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह, कामला और पाण्डुरोगका नाश करे, इसको इलायचीके जलमें मिलानेसे शुद्धी होवे इसका मारण और सत्वपातन पंडितोने नहीं कहा।

अशुद्धसेवनके दोष

अशुद्धंदाहमूर्च्छार्दीन् भ्रमपित्तास्रशोणितं
शिलाजतुप्रकुरुते मांद्यमग्निश्चविड्ग्रहं।

अर्थ–अशुद्ध शिलाजीत, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, मन्दाग्नि और मलका रुकना इन रोगोंको करे।

शिलाजीतकेविकारोंकी शान्ति

मरिचंघृतसंयुक्तं सेवयेद्दिनसप्तकम्
शिलाजतुभवंदोषं शान्तिमाप्नोतिनिश्चितम्।

अर्थ–कालीमिरच घृतसंयुक्त सात दिन सेवन करे तो शिलाजीतके विकार शान्तिहों

इति रसराजसुन्दरे शिलाजतुप्रकर्णसमाप्तम्

अथसाधारणरसाः

कंपिल्लश्चपलो गौरीपाषाणोनरसारकः
कपर्दीवन्हिजारश्च गिरिसिंदूरहिंगुलौ
केदारशृंगमित्यष्टौ साधारणरसास्मृताः
रससिद्धिकराःप्रोक्तानागार्जुनपुरस्सरैः॥

अर्थ–कंपिल्ल, चपल, गौरीपाषाण (संमल वा संखिया) नौसादर, कौडी, वन्हीजार, गिरिसिंदूर, हिंगुल, केदारशृंग, ये आठसाधारण रस है पारदकी सिद्धिकर्त्ता नागार्जुन आदि आचार्य्योंने कहे है।

साधारणरसोंका शोधन

साधारणरसाःसर्वेमातुलुंगार्द्रकाम्बुना।
त्रिवारंभाविताशुष्का भवेयुर्दोषवर्जिताः॥

अर्थ–सब साधारण रस बिजौरे और अदरखके रसकी तीन ३ भावना देकर सुखानेसे दोषरहित अर्थात् शुद्ध होते हैं।

कांपिल्ल.

इष्टिकाचूर्णसंकाशश्चंद्रिकावान्प्रभेदनः
सौराष्ट्रदेशखनिजसहिकंपिल्लकोमतः

अर्थ–ईटके चूर्ण (कूकुए) के सदृश चमकदार, रेचक, सौराष्ट्रदेश (सोरठ देश काठियावार)के देशकी खानिसे उत्पन्नको कंपिल्ल

(कबीला) कहते हैं ।

कांपिल्लके गुण.

पित्तज्वराध्मानविबंधनिघ्नः श्लेष्मोदरार्तिकृमिगुल्मवैरी । व्रणामशूलज्वरशोफहारी कंपिल्लकोनेकगदापहश्च ॥

अर्थ–पित्तज्वर, अफरा, बद्धकोष्ट, कफविकार, उदररोग, कृमिरोग, गोला, व्रणरोग, आमवात, शूलरोग, ज्वर, और सूजन इन सब रोगोंको नाशकरे यह कांपिल्ल अनेक रोग नाश करता है चपल के गुणदोष पहले कह आए है इसवास्ते यहां नहीं लिखे ।

गौरीपापाण.

गौरीपापाणकः पीतोविकटोहृतचूर्णकः रसबंधकरःस्निग्धो दोषघ्नोवीर्यकारकः ।

अर्थ–पीला गौरीपापाण (संमल) विकट और हृतचूर्णक कहलाता है, यह पारेका बंद्धक और चिकना है, त्रिदोप नाशक और वीर्य्यको बढावे ।

गौरीपापाणकःप्रोक्तोद्विविधःश्वेतपीतकः । श्वेतःशंखसमःपीत दाडिमाभःस्मकीर्तितः॥ श्वेतःकृत्रिमकःप्रोक्तःपीतःपर्वत संभवः । विषकृत्यकरौताहि रसकर्मणिपूजितौ ॥ दुर्लभोः कृष्णवर्णाभो जरामृत्युहरोभुवि ।

अर्थ–गौरीपापाण (संखिया) दो प्रकारका है. सफेद और पीला तहां सफेद शंखके समान, और पीला अनारके समान इनमें सफेद कृत्रिम यानी बनाया हुआ, और पीला पर्वतसे निकलता है, ये दोनो विषके कर्म (मारणादि) करते हैं, और पारदकर्ममें पूजित हैं यानी संखिया पारेका बद्धक है, बुढ़ापे और मृत्युका हर्त्ता तथा काला संखिया दुर्लभ है ।

जोडावनाना

चतुःकर्षरसंग्राह्यं गौरीपापाणकंसमं निंबुनीरेणसप्ताहं मर्दयेत्कुशलोभिषक् ॥ घनभावेसमुत्पन्ने तस्मादुधृत्यरक्षयेत्। पेटिकांताररजांरम्यां निर्मिमीयमनीपया ॥ पलमात्रस्यमेधावी तन्मध्येपिष्टिकांक्षिपेत् । तस्योपरिपुटं देयं यथोद्घाटंभवेन्नच॥ त्रिंशद्वन्योत्पलैरग्नि प्रदद्याद्दृढसिस्थितः। उक्तताम्रंपलोर्द्धंतुवन्हिनाद्रवतांनयेत् द्रवीभूतेच ताम्रेच गुंजापंचमितंखलु। निक्षिपेच्छंखसंयुक्तं पारदंतस्यमध्यकं ॥ तत्ताम्रंजायतेशुभ्रं शंखकुन्देन्दुसन्निभं तत्समंरौप्यकंदत्वाप्रधमेद्दृढवन्हिना । जायतेसकलंरौप्यं साधकानांसुखावहं ॥

अर्थ–पारा और संखिया दोनोंको चार २ कर्ष ले, सात दिन नीबूके रसमें खरल करे, जब गाढा होजाय तब खरलसे निकालकर रख छोडे, और एक चांदीकी डिबिया ऐसी बनवावेकि जिसमे एक पल पारेकी लुगदी आजावे, उसमें पारे और संखियाकी पिट्ठीको भर बंदकर ऐसी कपरमिट्टी करे कि जिससे डिबिया खुले नहीं, पीछे सुखाकर एकान्तमें ३० आरने उपलोंकी आंच देवे, तो आधी डिबिया समेत सब चांदी होजाय, पीछे दो कर्ष शुद्ध तांबेको आंचमें तपाय पतलाकर उसमें पूर्वोक्त डिबियाकी पाँच रत्ती चांदी डाले तो वह तांबा शंख, कुन्द, चन्द्रमाके समान सफेद होजाय पीछे सफेद तांबेकी बराबर चांदी मिलाय अग्निमें रख खूब धमावे तो सब चांदी होजायःयह अनुभव कराहुआ है मिथ्या नहीं है।

नवसादर

नवसारः समाख्यात चुल्लिकालवणाभिधः। रसेन्द्रजारणंलोह जारणंजठराग्निकृत् ॥

प्लीहंगुल्मास्यशोपघ्नंभुक्तमांसादिजारणं ।
विडाग्र्यं च त्रिदोषघ्नं चुल्लिकालवणंमतं ॥

अर्थ–नवसादरको चुल्लिका लवण भी कहते है, यह पारद और सुवर्णादि अष्टलोहों के जारणमें ग्राह्य है । इसके खानेसे जठराग्नि बढे, तापतिल्ली, वायगोला, मुखसूखना बंदहो, भोजन किये मांसादिक जारण होवें, यह पारे के सब विडोंमें अग्रवर्त्ती है. त्रिदोषको दूर करे ऐसा यह चुल्लिका लवण है ।

तथाउत्पत्ति

करीरपीलुजैः काष्ठैः पच्यतेचेष्टकोद्भवः ।
क्षारोसौनवसारःस्याचुल्लिकालवणस्मृतः ॥
मनुष्यशूकराणांसविष्टांतः कीटवद्भवेत् ।
क्षारेषुगणनातस्य स्वर्णशोधनकः परः ॥
इष्टिकादहनेजातं पाण्डुरंलवणंलघुः ।
शंखद्रावेरसेपूज्योमुख्यकर्मणिपारदे ॥
विडद्रव्योपयोगीच क्षार वत्तद्गुणास्मृताः ।

अर्थ–करीर और पीलूकी लकड़ीसे ईटका खार पकानेसे नौसादर खार होता है, उसी को चूलिका लवण कहते हैं, यह मनुष्य और शूकरके विष्टासे कीटके समान ईटोंके पजावेमें होता है, इसकी क्षारोंमें गणना है। यह सुवर्णका शोधन करता हैं, और ईटोंके पकाने में पीले रंगका लवण होता है सो हलका है, शंखद्राव रसमें पड़ता है और मुख्य पारेके कर्ममें लिया जाता है, यह विड द्रव्य (पारेकी वद्धक वस्तू) का उपयोगी है इसके क्षारोंके समान गुण हैं ।

अग्निजार

सामुद्रेणाग्नितप्तश्चजरायुर्वहिरुत्सृतः ।
संशुष्कोभानुतप्तेनसोग्निजारइतिस्मृतः ॥
जराभंदहनस्यापिपिच्छलंसागरप्लवं ।
जरायुतश्चतुर्वर्ण्यश्रेष्ठंतंसर्वलोहितं ॥

अर्थ–अग्निजार समुद्रमें वड़वाग्निके जोर से तप्त होकर जरायुके सदृश पदार्थ बाहरको आता है और सूर्यकी धूपसे सूख जाता है, उसीको अग्निजार कहते हैं, अथवा समुद्रमें जरायुके समान अग्निके तेजसे पिच्छल तथा समुद्रमें तैरनेवाला ऐसा पदार्थ उत्पन्न होता है, यह जरायु चारवर्णका होता है जिनमें ताम्रवर्णका उत्तम होता है ।

अग्नि जारके गुण.

स्यादग्निजारः कटुरुष्णवीर्यः समीरत्द्रोग कफापहश्च । पित्तप्रदःसोधिकसन्निपातः शूलाग्निशीतामयनाशकश्च ।

अर्थ–अग्निजार-तीखा, उष्णवीर्य, वात और कफरोग नाशक, पित्त बढाने वाला, सन्निपात, शूल, मंदाग्नि, और शीत संबंधी विकारोंका नाशक है ।

अब्धितीरेग्निनक्रस्यजरायुःशुष्कतांगतः ।
अग्निजाररसुतत्प्रोक्तंसक्षारोजारणेहितः ॥
अग्निजारस्त्रिदोषघ्नोधनुर्वातादिवातनुत् ।
वर्द्धनोरसवीर्यस्यदीपनोजारणस्तथा ॥
तदाब्धिक्षारसंशुद्धंतस्माच्छुद्धिर्नसस्यते ।

अर्थ–समुद्र किनारे अग्निनक्रका जरायु सूखकर बाहर आ जाता है उसको अग्निजार कहते हैं, यह क्षार जारणकर्ममें उत्तम है, अग्निजार त्रिदोष नाशक, धनुर्वात (जिससे कमानके सदृश देह हो जावें) इत्यादि वातरोगोंको दूर करे। रस और वीर्यको बढावे, दीपन और जारण कर्त्ता अग्निजार समुद्रका खार स्वयं शुद्ध है इसी कारण इसकी शुद्धी नहीं कही ।

समुद्रफेन

समुद्रफेनश्चक्षुष्योलेखनःशीतलःशरः ।
कर्णस्रावरुजागुल्महरःपाचनदीपनः ॥
अशुद्धःसकरोत्यंगभंगंतस्माद्विशोधयेत् ।

अर्थ–समुद्रफेन नेत्रोंको हित, सर, लेखन, कानके वहने और पेटके गोलेको दूर करे, जठराग्निको दीपन करे, अशुद्ध अंगभंग करे इसलिये शुद्ध जरूर करले ।

तथाशुद्धि

समुद्रफेनःसंपिष्टोनिंबुतोयेनशुद्ध्यति ।

अर्थ–समुद्रफेन नीबूके रसमें पीसनेसे शुद्ध होता है ।

बोल

बोलगंधरसप्राणमिन्द्रगोपरसाःसमाः ।
बोलंतुत्रिविधंप्रोक्तंरक्तंस्याममनुष्यजं ॥

अर्थ–बोलके गंधरसप्राण, इंद्रगोपरस, सम, ये नाम हैं, बोल तीन प्रकारका है काला, लाल, और मनुष्यज ।

लालबोलके लक्षण

बोलंरक्तहरंशीतंमध्यंदीपनपाचनं ।
मधुरंकटुकंतिक्तंग्रहस्वेदत्रिदोषनुत् ॥
ज्वरापस्मारकुष्ठघ्नंगर्भाशयविशोधनं ।
चक्षुष्यंचसरंप्रोक्तंरक्तबोलंभिषग्वरैः ॥

अर्थ–लालबोल वहते रुधिरको रोकने वाला, शीतल, पवित्र, दीपन, पाचन, मीठा, तीखा, कड़वा, ग्रह, स्वेद, (पसीना) और त्रिदोषको दूर करे. ज्वर, मृगी, कोढ़का नाश करे, गर्भाशयका शोधन करे, नेत्रोंको हित और दस्तावर है इसको बीजाबोल कहते हैं।

कालेबोलके लक्षण

श्यामबोलंतीक्ष्णगंधंदद्रुकुष्ठविषापहं ।
भग्नास्थिसंधिजननंत्रिदोषशमनंहिमं ॥
धातुकांतिवयस्थैर्यबलोजोवृद्धिकारकं।

अर्थ–कालाबोल-तीक्ष्ण गंधवाला, दाद खुजली और विषके विकारोंका नाशक है । टूटी हड्डी जोडनेवाला, त्रिदोष नाशक, शीतल, धातु कान्ति और अवस्थाको स्थिर करता है, बल और ओजहका बढानेवाला, इसको मुसब्बर कहते हैं। दूसरा मानुषबोल जो मनुष्यके रुधिरसे बनता है इसको भाषामे मिमियाई कहते है, इसके गुणभी श्यामबोलके समान है कोई श्यामबोलकोही मिमियाई कहते हैं परन्तु वह मिमियाई नहीं है ।

गुग्गुलं

भगवन्गुग्गुलोर्योगोयथावीर्यंयथागुणं ।
वक्तुमर्हसियोगेषुयेषुचास्यप्रशस्यते ॥
एवमुक्तेनशिष्येणप्रत्युवाचमहातपाः ।
मरुद्भूमौप्रजायन्तेप्रायशःसुरपादपाः ॥
भानोर्मयूखैःसंतप्ताग्रीष्मेमुंचतिगुग्गुलुं ।
हिमार्त्तिदेचहेमन्तेविधिवत्तत्समाहरेत् ॥
जातरूपनिभंशुभ्रंपद्मरागनिभंकचित् ।
कचिन्महिषसंकाशंयक्षदेवतवल्लभं ॥
विधानंतस्यविधिवन्नियोगाद्वदतोमम ।

अर्थ–अत्रिऋषिका शिष्य पूंछता है कि हे भगवान् ! मेरे आगे गूगलके योग वीर्य और गुण वर्णन कीजिये, उसके वचन सुन महातपाऋषि कहते हैं कि गूगलके वृक्ष मारवाड देशमें होते हैं, वो ग्रीष्ममें सूर्यकी गर्मीसे तप्त होकर गुग्गुल छोडते हैं उसको शरदीके दिनोंमें विधिपूर्वक ग्रहण करना चाहिये, वह गूगल चांदी वा पुखराजमणि तथा भैंसेके नेत्रोंके समान कान्तिवाला होता है, यक्ष देवताका परमप्रिय है उसके विधानको श्रवणकर ।

गुण

त्रिदोषशमनेवृष्यःस्निग्धोबृंहणदीपनः ॥

गुग्गुलुकटुकाःपाकेबलवर्णप्रवर्द्धनः ।
आयुष्यःश्रीकरःपुण्यःस्मृतिमेधाविवर्द्धनः॥
पापप्रशमनंश्रेष्ठः शुक्रार्त्तवकरोमतः ।
वर्णगंधरसोपेतंगुग्गुलुंमात्रयायुतं ॥
भेषजैःसहनिःकाथ्योयथाव्याधिहरःपृथक्।
मात्रावशिष्टंतंशात्वागालयेच्छुक्लवाससा ॥
मृन्मयेहेमपात्रेचस्फाटिकेराजतेपिवा ।
पुण्येतिथिपुनक्षत्रेक्षीणाहाररसमन्वितः ॥
हुताग्निपर्युपासीतदेवब्राह्मणभक्तितः ।
प्रविश्यचशुभाकीर्णमंदिरेवसतिस्फुटं ॥

अर्थ–गुग्गुल त्रिदोषको शमन कर्ता, वृष्य (वीर्य्यको बढानेवाला) और चिकना है, बृंहण, दीपन और पचनेके समय तीखा है, बल और वर्णको बढानेवाला, आयु और शोभाको देनेवाला, पुण्य स्मृति तथा मेधाको बढावे, पापोंको दूरकरे, वीर्य और आर्तव करे, यह वर्ण गंधयुक्त अनेक रोग हरनेवाली औषधियोंके काढेकेसाथ औटानेसें शुद्ध होता है, जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उतारकर सफेद महीन वस्त्रमें छान लेवे और उसकी मिट्टी दूरकर स्फटिक वा चांदीके पात्रमें रखछोडे, फिर शुभ तिथि और नक्षत्रमें अग्नि देवता और ब्राह्मणका पूजन कर सेवनका प्रारम्भ करे, और उत्तम स्थानमें निवास करे ।

शोधनकी दूसरीविधि

महिषंगुग्गुलंशुभ्रंसंग्राह्यंपलपंचकं ।
प्रस्थमात्रेतुगोमूत्रेक्षिप्त्वासंविपचेद्भिषक् ॥
दोलायंत्रस्यविधिनापादशेषंसमाहरेत् ।
अनेनविधिनासम्यक्गुग्गुलःशुद्धतांव्रजेत् ॥
सर्वकर्मसुसंयोज्ययोगेचफलदायकः ।

अर्थ–उत्तम भैसागूगल ५ पल (२० तोले) ले उसकी पोटली बांध एक पात्रमे एक प्रस्थ (१ सेर) गोमूत्रभर उसमें पोटली दोलायंत्रकी विधिसे लटकाय देवे, फिर मंदाग्निसे पचावे, जब गोमूत्र चतुर्थांश शेष रहे तबचूल्हेसे उतार लेवे, पीछे पोटलीको खोलकर धूपमें सुखालेवे, यह सफेद होजायगा, इसके कंकर और तिनके बीनकर साफ करे । इसप्रकार गूगल शुद्ध होता है, इसको सर्व कर्मोमें योजना करे, जिस २ योगमें यह गूगल पडे उससे लिखे गुणोंको करे है । यद्यपि रसकपूर बनाने और खानेकी विधि पारेके प्रकरणमें लिख आये है, तथापि नवीन पाठ होनेसे यहां भी लिखते हैं ।

रसकपूरकी विधि

पारदःस्फटिकाचैवहिराकासीसमेवच ॥
सैंधवंचसमांशेनविंशांशंनवसादरं ।
खल्वेविमर्द्यसर्वाणिकुमारीरसभावना ॥
क्रमवृद्धाग्निनापक्वोरसःकर्पूरसंज्ञकः ।

अर्थ–पारा, फिटकरी, हीराकसीस, और सैंधानिमक सबको समान भाग ले, सबका बीसवां भाग नवसादरले, सबको खरलमे ग्वारपट्ठेके रसकी भावनादे सुखाकर सीसोमें भर क्रमसे मंद मध्य और तेज अग्निदे तो रसकपूर नामक रस बनकर तयार हो ।

तथातीसरी विधि

गैरिकतुवदरीकटुकासैंधवगंडीरजःकुडवं ।
प्रत्येकंदृढहंडयांकृत्वारसभूयरजदेयं ॥
कुडवमिताथतदूर्ध्वंदेयाहंडीतथास्यमुखे
अथतत्संधेर्मुद्रांकृत्वातदधोहुताशनोज्वाल्यः
अर्मणपट्कप्रमितैर्दारुभिन्यूनातिदुर्बलस्थूलैः
अग्निक्रमेणदद्याद्बुरुदर्शितवर्त्मनाद्युनिशं ॥
तदनुततोयंत्रवरादुत्तार्यःकर्पूरसन्निभंसूतं ।
आदायकाचकुंभेनिधायनवसादरंदद्यात् ॥

संमर्द्यचाथकाष्टैरर्धमणैसंमितंपचेद्रसं ।
चुल्हिदंडिकमध्येवितस्तिचतुरंगुलावकाशंतु
कुर्यात्क्रमेणमंतर्दधःमज्वाल्यमध्यमंचाग्नि ।
धवलान्युपरिलग्नंयुत्तचासंगृह्यरक्षयेद्यत्नात्

अर्थ–गेरू, फिटकरी, कुटकी, सेंधानिमक और ईंटकाचूर्ण इनको पाव २ भरलें हँडिओंमें भर उसमें पारारखे, पीछे पावभर पूर्वोक्त चूर्णको पारेके ऊपर रखकर दूसरी हँडीसे उसका मुख बंदकर सन्धियोंको अच्छीतरह लेपकर बंद करदे, पीछे भट्टीपर चढाय ३ मन लकडी वा उपलोंकी अग्नि गुरुकी बताई हुई रीतिसे रातदिन देवे, तो रसकपूर बनकर तयार हो फिर अचकसे उन हांडियोंको उतार मुहँ खोल ऊपरकी हांडीमें जो सफेद रसकपूर लगरहा हो उसको निकाल लेवे, पीछे उसको बराबरका नवसादर डालकर पीसे फिर काचकी कुप्पी (शीशी) में भरकर बीससेर लकडीकी आंचदेवे, इस प्रकारकि हांडी और अग्निका एकबालिश्त और चारअंगुलका फासिला रहे, इस प्रकार मध्यमाग्नि दे जब शीतल होजाय तब ऊपर जो चन्द्रमाके समान सफेद भस्म लग रहीहो उसको निकाल यत्नसे रख छोडे ।

रसकपूरके अनुपान

वल्लंवल्लार्द्धमानेनजीर्णेगुणसमंददेत् ।
यथोचितानुपानेनसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥
दुग्धोदनंतुपथ्यंदेयंचास्मिश्वतांबूलं ।
हरतिसमस्तान्रोगान्कर्पूराख्योरसोनृणां॥

अर्थ–रसकपूर तीन वा डेढ रत्तीके प्रमाण पुराने गुडके साथ खानेको देवे, अथवा रोगोक्त अनुपानके साथ देवे और इसके ऊपर पानका बीडा खाय तथा दूधभातका पथ्यदे तो संपूर्ण रोगोका नाश करे ।

रत्नोपरत्नोंकीउत्पत्ति

मणयोपिचविज्ञेयाःसूतबंधस्यकारकाः ।
देहस्यधारकानृणांजराव्याधविनाशकाः ॥

अर्थ–मणि (रत्न) भी पारदके बंधन कर्त्ता, देहको धारणकर्त्ता, बुढापे और व्याधिके दूरकर्त्ता होती है ।

तथानिरुक्ति

धनार्थिनोजनाःसर्वेरमंतेस्मिन्नतीवयत् ।
अतोरत्नमितिप्रोक्तंशब्दशास्त्रविशारदैः॥

अर्थ–धनार्थी सब मनुष्य इससे रमण करते हैं, और इच्छा करते हैं इसीसे शब्दशास्त्र जाननेवाले उसको रत्न कहते हैं ।

नामानि

रत्नंक्लीबेमणिःपुंसिस्त्रियामपिनिगद्यते ।
तत्तत्पाषाणभेदोस्तिवज्रादिश्चयथोच्यते ॥

अर्थ–रत्नशब्द नपुंसकलिंग और मणि पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग है रत्नपाषाणके अनेक भेदोंसे हीरा पन्नादि कहाते हैं ।

नवरत्नोंकीगणना

वज्रंविद्रुममौक्तिकंमरकतंवैदुर्य्यगोमेदकं ।
माणिक्यंहरिनीलपुष्पदशदारत्नानिनाम्ना नव। यान्यन्यान्यपिसंतिकानिचिदिहत्रैलोक्यसीम्निस्फुटं। नाम्नातान्युपरत्नसंज्ञकत मान्याहः परीक्षाकृतैः ।

अर्थ–हीरा, मूंगा, मोती, पन्ना, वैदूर्यमणि, गोमेद, माणिक, नीलम, पुखराज ये नौ प्रकारके पत्थर नवरत्नके नामसे विख्यात हैं इस पृथ्वीपर और जो रत्नके समान पत्थर मिलते हैं उनको जौहरी लोग उपरत्न कहते हैं

१ द्विपदृयवनितादीनांस्वगुणविशेषेणरत्नशब्दोस्ति । इहतूपलरत्नाना मधिकारोवज्र पूर्वाणाम् ।

नवग्रहोंके ९ रत्न

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणितार्क्षंचपुष्पंभिदूरंचनीलं। गोमेदकंचाथविदूरजंचक्रमेणरत्नानिनवग्रहाणां ॥

अर्थ—माणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य ये सूर्यादि नवग्रहोंके ये नवरत्न कहाते हैं।

तीसराप्रकार

मुक्ताफलंहीरकंचवैदूर्यंपद्मरागकं।
पुष्परागंचगोमेदंनीलंगारुत्मतंतथा ॥
प्रवालमुक्तान्येतानिमहारत्नानिवैनव।

अर्थ—मोती, हीरा, वैदूर्य, पद्मराग, पुखराज, गोमेद, नीलम, पन्ना, मूंगा, ये मोतीसे आदिले महारत्न हैं।

चौथाप्रकार

पुंवज्रंगरुडोद्गारंमाणिक्यंवासवोपलं।
वैदूर्यंपुष्पगोमेदंमौक्तिकंसप्रवालकं ॥
एतानिनवरत्नानिसदृशानिसुधारसैः।

अर्थ—हीरा, पन्ना, माणिक, इंद्रमणि, वैदूर्य, पुखराज, गोमेद, मोती, मूंगा ये अमृतके तुल्य नवरत्न हैं।

मणिवर्ग

वैक्रान्तःसूर्यकांतश्चहीरकंमौक्तिकंतथा।
चन्द्रकान्तस्तदाचैवराजावर्त्तस्तथैवच ॥
गरुडोद्गारकश्चैवज्ञातव्यामणयोअमी।
पुष्परागंमहानीलंपद्मरागंप्रवालकं ॥
वैदूर्यंचतथानीलमेतेचमणयोमताः।

अर्थ—वैक्रान्त, सूर्यकान्त, हीरा, मोती, चन्द्रकान्त, राजावर्त, पन्ना, पुखराज, महानीलम, पद्मराग (माणिक) मूंगा, वैदूर्य, नीलमणि, ये सब मणिवर्ग है।

रत्नोपरत्नभेद

उपरत्नानिचत्वारिमहारत्नानिपंचधा।
प्रवालंगरुडोद्गारंवैदूर्यंपुष्परागकं ॥
उपरत्नंसमाख्यातंरत्नशास्त्रार्थकोविदैः।

अर्थ—चार उपरत्न और पांच महारत्न हैं। मूंगा, पन्ना, वैदूर्य और पुखराज इन चारोंको रत्नशास्त्रके ज्ञाता उपरत्न कहते हैं, बाकी हीरा, पन्ना, गोमेद (पीलीमणि) नीलम और मोती ये पांच महारत्न हैं।

मणिरसः

राजावर्त्तंचपुष्पंचमौक्तिकंविद्रुमंतथा।
वैक्रान्तश्चसमायुक्ताएतेमणिरसास्मृताः ॥

अर्थ—राजावर्त्त, पुखराज, मोती, मूंगा, वैक्रान्त संयुत सब मणिरस कहाते हैं। यह रत्नपद्धतिमें लिखा है।

सर्व रत्न शोधनकी आवश्यकता

रत्नोपरत्नान्येतानिशोधनीयानियत्नतः।
अशुद्धानितुकुर्वंत्यव्रणान्रोगांश्चतन्वते ॥

अर्थ—जितने रत्न और उपरत्न हैं उनका यत्न पूर्वक शोधन करे, क्योंकि अशुद्ध रत्न और उपरत्न अवगुण और रोग करते हैं।

शोधन

शुद्धत्यम्लेनमाणिक्यंजयंत्यामौक्तिकंतथा।
विद्रुमंक्षीरवर्गेणतार्क्ष्यंगोदुग्धतःशुचि ॥
पुष्परागंसैंधवेनकुलित्थकाथसंयुते।
तंदुलीयजलेवज्रंनीलंनीलीरसेनच ॥
रोचनाद्भिश्चगोमेदंवैदूर्यंत्रिफलाजलैः।
एतान्येतेपुसंस्विन्नान्याशुशुध्यंतिदोलया ॥

अर्थ—माणिक अम्लवर्गमें शुद्ध होता है,

---

१ वज्रेन्द्रनीलमरकतकर्केतनपद्मरागरुधिराख्याः। वैदूर्यपुलकविमलकराजमणिस्फटिकशशिकांताः। सौगंधिकगोमेदकशंखमहानीलपुष्परागाख्या। ब्रम्हमणिर्ज्योतीरससस्यकमुक्ताप्रवालानि।

मोती जयंती (अरनीकेरसमें) मूंगादुग्धवर्ग-में, पन्नागोदुग्धमें, पुखराज सेंधेनिमक मिले कुलथीके काढेमें, हीराचौलाईके रसमें, नीलम-नीलके रसमें गोमेद्गोरोचनके जलमें, और वैदूर्यत्रिफलाके काढेमें शुद्धहोता है । इन रत्नोंको कहेहुए रसोंमें दोलायंत्र द्वारा स्वेदन करनेसे शुद्धी होती है ।

हीराआदिरत्नोंकेमारणमेंदोष

नहन्याद्धीरकादीनिनवरत्नानिबुद्धिमान् ।
महामौल्यानितेषांतुवधाद्रौरवमृच्छति ॥
यद्वातदवनीजातस्तज्जातीयानिलक्षणैः ।
स्वल्पमौल्यानितेषान्तुवधेनास्तिहिपातकम्॥

अर्थ–बुद्धिमान पुरुष हीरकादि नवरत्नोंका मारण न करे, ये वहुमूल्य होते हैं, इनके मारनेसे रौरवनर्कमें पडता है। अथवा कोई मनुष्य कहते हैं कि हीरा आदिके वदले पृथ्वीमें होनेवाले उसीजातिके रत्न देखकर मारण करनेसे पाप नहीं होता ।

हीराविना और रत्नोंका मारण

लकुचद्रावसंपिष्टैःशिलातालकगंधकैः ॥
वज्रंविनान्यरत्नानिम्रियंतेष्टपुटैःखलु ।

अर्थ–मनासिल गंधक और हरितालको समान भाग ले वडहलके रसमें पीस पुटदे तो आठपुटसे हीरा विना सव रत्नोंकी भस्म होवे

दूसरीविधि

हिंगुसैंधवसंयुक्तेक्षिप्तेक्काथेकुलत्थके ॥
रत्नानांसप्तसप्तानांभवेद्भस्मत्रिसप्तधा ।

अर्थ–सातरत्न और सातउपरत्नोंको कुलथीके काढेमें सेंधानिमक और हींग डालकर २१ पुट देवे तो भस्म होवे ।

तीसरीविधि

माक्षिकंगंधकंतालंदरदंचमनःशिला ॥
पारदंटंकणंदत्वायामभेकंप्रपेषयेत् ।
रत्नानिपिष्टयित्वातुदृढंगजपुटेपचेत् ॥
मारणंसर्वरत्नानांपुटेनैकेनजायते ।

अर्थ–सोनामक्खी, गंधक, हरिताल, हींगलु, मनासिल, पारा और सुहागेको एकत्रकर उसकी वरावर रत्नले, गजपुट दे तो सव रत्नोंकी एकही पुटसे भस्म होजावे ।

रत्नोपरत्नकेगुण

रत्नानिचोपरत्नानिचक्षुष्याणिसराणिच॥
शीतलानिकषायाणिमधुराणिशुभानिच ।
धृतानिमंगलान्याशुतुष्टिपुष्टिकराणिच ॥
ग्रहलक्ष्मीविषक्ष्वेडपापसंतापनाशयेत् ।
यक्ष्मापाण्डुप्रमेहार्शकासंश्वासंभगंदरं ॥
ज्वरंविसर्पकुष्ठार्त्तिशूलकृच्छ्रव्रणामयान् ।
घ्नंत्यायुष्यंयशःकीर्तिपुण्यंचवर्द्धनंभृशम् ॥

अर्थ–सव रत्न और उपरत्नोंकी भस्म नेत्रोंको आनंददायी, दस्तावर, शीतल, कषैली मीठी और शुभ है । इन रत्नों और उपरत्नोंके धारणकरनेसे तत्काल मंगल तुष्टि और पुष्टि होती है । नवग्रह, अलक्ष्मी, विषवाधा, पाप और संतापका नाश करे। तथा खई, पीलिया, प्रमेह, ववासीर, खांसी, श्वास, भगंदर, ज्वर, विसर्प, कुष्ठ पीडा, शूल, मूत्रकृच्छ्र, और व्रणका नाशकरे आयु, यश, कीर्त्ति, और पुण्यको वढाते हैं ।

हीराकीउत्पत्ति

दधीच्यस्थ्नःसमुत्पन्नाःपतिताश्चकणाःक्षितौ
विकीर्णास्तेतुवज्राख्यंभजन्तेतच्चतुर्विधं ॥[1]

अर्थ–पहले जव विश्वकर्माने इन्द्रके नि-

---

१ रत्नानामुत्पत्तिप्रदर्शनार्थंमतभेदमाचार्याणाम्-रत्नानिवलादैत्याद्दधीचतोऽन्येवदंतिजातानि । केचिद्भुवःस्वभावाद्वैचित्र्यंप्राहुरुपलानाम् ।

मित्त वृत्रासुरके मारनेको दधीचऋषीकी हड्डीसे वज्रवनायाथा, उसके वनानेमें जो हड्डियोंके कण पृथ्वीपर गिरे वही कालपाकर हीराके नामसे विख्यात होगया, वह हीरा चार प्रकारका है।

दूसराक्रम

पूर्वंमंदरमथनाज्जलनिधौमत्युद्गतायासुधा। तांभायःपिवतांसुरासुरगणानामाननाद्विंदवः येभूमौपतिताविकर्त्तनकरव्रातैःपुनःशोषिता। स्तेवज्राण्यभवन्भवेनकथितंपूर्वंमृडानींप्रति॥

अर्थ–पहले देवता और राक्षसोंने क्षीरसागरमें मंदराचल पर्वतको डालकर मथन कियाथा उस समय अमृत उत्पन्नहुआ, उसको जब देव और दानव पीने लगे उस समय उनके मुखसे जो अमृतकी बूंदे पृथ्वीपर गिरी वही सूर्य्यकी किरणोंसे सूखकर वज्र (हीरा) होगयी, यह महादेवजीने पार्वतीप्रति कहा है

अज्ञानसेरत्नोंकामोलकहनेमेंदोष

अज्ञानाकुरुतेमौल्यंसन्मुक्तामणिहीरकान्। इहामुत्रपरत्रेचरौरवंनरकंव्रजेत्॥

अर्थ–जो मनुष्य अज्ञानसे मोती, मूंगा, मणि, हीरा आदिका मोलकहता है वह इसलोकमें दुःख और परलोकमें रौरवनर्क पाता है।

तथाच

अज्ञानात्कथयेदन्यंरत्नमौल्यंकदाचनः। कुर्य्याचनिग्रहंसम्यक्मंडलीतस्यविक्रयी॥ अधमस्योत्तमंमौल्यमुत्तमस्याधमंतथा। स्नेहन्मोहाद्भयात्कुर्युःसद्यकुष्टंभवेन्मुखे॥

अर्थ–जो मनुष्य अज्ञानसे रत्नोंका मोलकहता है; उसको राजा दंडदेवे, और जो अधम रत्नका मोल उत्तम, तथा उत्तमका अधम प्यारसे अथवा मोहसे किंवा भयसे कहे उसके मुखमें तत्काल कोढ होवे।

रत्नपरीक्षा

ग्राहकोभक्तिपूर्वेणसमाहूयविचक्षणः। आसनंगंधमाल्याद्यैःतद्वंद्यंतुमपूजयेत्॥ वीक्ष्यसम्यक्गुणान्दोषान्रत्नानांचविशारदः। दापयेत्कुरुसंज्ञांचलक्षमेकैकसन्निधौ॥

अर्थ–रत्नका ग्राहक भक्तिपूर्वक रत्नपरीक्षकको बुलावे, और आसन. गंध (चंदन) मालाआदिसे पूजनकर पीछे उसको रत्न निकालकर देवे, और कहेकि इसकीपरीक्षा कीजिये, तबवोवैद्य उसको समीपसे अच्छीतरह गुणदोषदेखकर और मनमें निश्चयकर मोल कहे।

लक्षयेद्वैद्यशास्त्रज्ञोशाणोत्कर्षणलेखनैः। लोहानियानिसर्वाणिसर्वरत्नानियानिच॥

अर्थ–शास्त्रज्ञाता वैद्य सर्व लोह (चांदी सोंनाआदि) की और सब रत्नोंकी परीक्षा कसौटी पर घिसकर वा सानपर घिसकर करे।

तानिवज्रेणलेख्यानिसचतेनविलिख्यते। अभेदमन्यजातीनांलोहवज्राग्निसन्निधौ॥ नचान्यभेदकंतस्यवज्रंवज्रेणभिद्यते।

अर्थ–संपूर्ण लोह और रत्नोंको हीरासे घिसकर परीक्षाकरे क्योंकि सम्पूर्णजातिके लोहोंसे तथा अग्निसेभी हीरातोडनेमें नहीं आता इसकी तोडनेवाली और वस्तु नहीं यह अपने आपहीसे टूटता है।

हीराकीचारजाति

वज्रंजातिविशेषेणचतुर्वर्णसमन्वितं। प्रयत्ने नचतद्वर्णंप्रविचार्यपृथक्पृथक्॥ सुस्निग्धः स्फटिकःप्रभाशशिकलाशंखाभवर्णोत्तमो। स्यारक्तद्युतिमग्नियंगुकुसुमच्छायंतथाक्षत्रियः वैश्यश्चारितपीतवर्णरुचिरोयौवासदीप्तिर्भवेत्। शुद्रकृष्णमुखस्तथाविरचितोवर्णेच-

तुर्भिःशुभैः ॥ ख्यातमेतद्विशेषेणवज्राणां-
वर्णलक्षणं ।

अर्थ–हीरा जातिकी विशेषताकरके और चारप्रकारके रंगोंसे उनके वर्ण जुदे २ विचारने चाहियें, जो हीरा चिकना और फटिकमणिके समान कांतिवाला तथा शंखके समान सफेद होवे, वह ब्राह्मणवर्ण कहलाता है।और जो रंगमें लाल तथा प्रियंगुके फूलके समानहो उसे क्षत्रीयवर्णजानना।कुछ काला तथा पिला तथा रुधिरकेसमान दीप्तवाला हो उसे वैश्यवर्ण । और जो शुद्ध कालेमुखका होवे वह शूद्रवर्ण है, इनचारोंवर्णो करके शुभकहा है ये हीराकेवर्ण लक्षण हैं ।

तथाच

श्वेतंद्विजाभिधंरक्तंक्षत्रीयाख्यंतदीरितम् ।
पीतंवैश्याख्यमुदितंकृष्णस्याच्छूद्रसंज्ञकं ॥

अर्थ–सफेद हीरा ब्राह्मण, लाल क्षत्री, पील वैश्य और कालेरंगका शूद्र संज्ञक होता है।

धारणकरनेकाफल

धारणाद्यत्फलंपुंसांकथयामिपृथक्पृथक ।
सप्तजन्मान्तरेविप्रोविप्रवज्रस्यधारणात् ॥
लभेद्वीर्यमहत्वंचदुर्जयोजयमाप्नुयात् ।
सर्वसप्ताङ्गसंपूर्णक्षत्रीवज्रस्यधारणात् ॥
प्रगल्भकुशलोदक्षोवलवान्धनसंग्रही ।
प्राप्नोतिफलितंचैववैश्यवज्रस्यधारणात् ॥
वहुपार्जितवित्तेनधनवान्चसमृद्धिमान् ।
साधूपरोपकारीचशूद्रवज्रस्यधारणात् ॥

अर्थ–अव इनके धारणका जुदा २ फल कहते हैं, चारोंवेदोंके अनुष्ठान करनेसे जो फल होता है वहीफल ब्राह्मणहीरा धारण करनेसें होवे और सातजन्म ब्राह्मणकुलमें होवें । क्षत्रीवर्णके हीरे धारण करनेसे महत्व और दुर्जय जय पावे और संपूर्ण सातों अंगयुक्तहो। बुद्धिमान, चतुर, वली, धनका संग्रहकर्त्ता, वैश्यवर्णहीरा धारण करनेसे होवे । अपनेभुजोपार्जित धनसे धनवानहो, साधुस्वभाववाला परोपकारी शूद्रजातिका हीरा धारण करनेसे होवे

जातिभेदसे गुण

विप्रोरसायनेप्रोक्तःसर्वसिद्धिप्रदायकः ।
क्षत्रियोव्याधिविध्वंसीजरामृत्युहरःपरः ॥
वैश्योधनप्रदःप्रोक्तोतथादेहस्यदार्ढ्यकृत् ।
शूद्रोनाशयतिव्याधीन्वयःस्तंभंकरोतिच ॥
स्त्रीपुंनपुंसकाश्चेतिलक्षणीयाश्चलक्षणैः ।

अर्थ–ब्राह्मण हीरा रसायनक्रियामें सर्व सिद्धिदाता है । क्षत्रीयसंपूर्ण व्याधि, बुढापे, और मृत्युका हरणकर्त्ता है । वैश्यजाति हीरा धनदाता, और देहका दृढकर्त्ता है। शूद्रजातीय संपूर्ण व्याधियोंको दूरकरें तथा देहका स्तंभन करे और हीराके लक्षणस्त्री नपुंसक और पुरुष विशेष जानने चाहिये ।

वज्रंचात्रिविधंप्रोक्तंनरोनारीनपुंसकं ।
पूर्वंपूर्वमिहश्रेष्ठंरसवीर्याविपाकतः ॥

अर्थ–हीरा तीन प्रकारका है-स्त्री, पुरुष और नपुंसक इनमें क्रमसे रस वीर्य और विपाकके भेदसे । अधिक अधिक गुण है ।

पुरुषसंज्ञकहीराकेगुण

अष्टास्त्रचाष्टफलकंपट्कोणमतिभासुरम् ॥
अंवुदेन्दुधनुर्वारितरंपुंवज्रमुच्यते ।

अर्थ–जो हीरा अष्टाधार और उसमें आठ जगह फलक (आवले) छःकोने, और अत्यंत चमकदारहो जलमें इंद्रधनुषके समान चमके तथा जो जलमें तैरे-उसे पुरुषसंज्ञक हीरा कहते हैं ।

तथास्त्रीनपुंसक

तदेवचिपटाकारंस्त्रीवज्रंवर्तुलायतं ॥
वर्त्तुलंकंठकोणाग्रंकिंचिद्गुरुनपुंसकं ।
स्त्रीपुंनपुंसकंवज्रंयोग्यंस्त्रीपुंनपुंसके ॥
व्यत्ययान्नैवफलदंपुंवज्रेणविनाक्वचित् ।

अर्थ-कुछ चपटा और गोल हीरा स्त्री संज्ञक है, और जो गोलहो और कौने भीतरे हो तथा भारी हो उसे नपुंसक जानना। ए तीनों प्रकारके हीराक्रमसे स्त्री, पुरुष तथा नपुंसकोंको यथाक्रम देने चाहियें, पुरुषको पुरुष हीराके विपरीत और हीरा देनेसे गुण नहीं करता, अर्थात् पुरुषको स्त्रीसंज्ञक और स्त्रीको नपुंसक देनेसे गुण नहीं करते, परन्तु पुरुष संज्ञक सबको गुण करता है।

मतान्तर.

सुवृत्ताःफलसंपूर्णास्तेजोयुक्तावृहत्तराः ।
पुरुषाहीरकास्तेच रेखाविन्दुविवर्जिताः ॥
रेखाविन्दुसमायुक्ताःषडस्रास्तेस्त्रियःस्मृताः ।
त्रिकोणाश्चसुदीर्घाश्चविज्ञेयास्तेनपुंसकाः ॥
सर्वेषुपुरुषाःश्रेष्ठावेधकारसवंधकाः ।

अर्थ-जो हीरा गोल, गाँठदार, साबित तेजस्वी, वडा और रेखा तथा विन्दुरहितहो वह पुरुषसंज्ञक है। जो रेखा विन्दुयुक्त तथा षट्कोण होवे उसे स्त्रीसंज्ञक जानना। जो त्रिकोण तथा लंवाहो वह नपुंसककहलाता है इन सबमें पुरुषसंज्ञक श्रेष्ठ हैं, यह पारेका बद्धक और वेधक है।

वज्राणांगुणदोषाः

गाढस्रासश्चबिंदुश्चरेखाचजलगर्भता ।
सर्वरत्नेष्वमीपंचदोषाः साधारणामताः ॥
क्षेत्रतोयभवादोषारत्नेपुनलगंतिते ।

अर्थ-गाढ, त्रास, बिंदु, रेखा और जलगर्भता ये पांचदोष संपूर्ण रत्नोंमें साधारण होते हैं और क्षेत्र दोष रत्नोंको नहीं लगे।

मतान्तर.

दोषाःपंचगुणाःपंचछायाचैवचतुर्विधाः ।
मलोविन्दुर्यवोरेखाभवेत्काकपदंतथा ॥
दोषाः पंचसमुद्दिष्टाः शुभाशुभफलप्रदाः ।
मूल्यंद्वादशकंप्रोक्तंवज्रस्यापिमहात्मनः ॥
धारासूत्रंस्थितंकोणेवज्रमध्येभवेद्यदि ।
तत्स्थानेमंगलंप्रोक्तंरत्नज्ञानविशारदैः ॥
वन्हेर्भयंभवेन्मध्ये तीक्ष्णधारासुदंष्ट्रिणः ।
रत्नविद्भिरिदंज्ञेयंतथाद्व्यंकोणमाश्रितं ॥

अर्थ-हीरामें ५ दोष, और ५ गुण हैं चारप्रकारकी छाया ये होती है, मल, बिन्दु, यव, रेखा और काकपद, ये पांच दोष है ये शुभ अशुभ फल देते हैं। और हीराकामोलभी बारह प्रकारका है, जिस हीरेके कोणमें धार वा सूतसा प्रतीत होवे अथवा एक लक्षण बीचमें होवे तो उस स्थानमें मंगल होवे, ऐसा रत्नोंके जानने वाले कहते हैं। और रत्नके बीचमें सर्पाकार तीखी रेखा तथा दोकोंने होवे तो, उसे पास रखनेमें अग्निका भय हो, ऐसे रत्नज्ञाता (जौहरी) कहते हैं।

विन्दुके भेद

आवर्त्तवर्त्तकश्चैवभालोविंदुर्यवाकृतिः ।
गुणदोषान्वितेवज्रेविन्दुर्ज्ञेयश्चतुर्विधः ॥
आवर्त्तेविपुलंवर्त्तेवृत्तकेप्ययवाकृतिः ।
आयुःश्रियःक्षयोरक्तेदेशेषुचपदाकृतिः ॥
रक्तपीतशितच्छायावर्णाढ्यश्चपदाश्रयः ।
तेषुदोषगुणासर्वेलक्ष्यंतेचपृथक्पृथक् ॥
गजवाजिक्षयोरक्तेपीतेवंशक्षयस्तथा ।
आयुर्धान्यंधनंलक्ष्मीशितेयवपदाश्रये ॥
सव्यंचैवापसव्यंचछेदेछिदार्थगोपिवा ।

अर्थ-आवर्त्तक, वर्त्तक, भाल, विन्दु, य-

वाकृति, बिन्दु इन गुणदोषोंयुक्त हीरामें चार प्रकारके बिन्दु भेद जानने, आवर्त्तक बिन्दु वडा होता है, और वर्त्तक बिन्दु गोल और छोटा होता है, यवाकृति बिंदु जौ के आकारका होता है, यदि बिन्दु लाल होतो आयु, लक्ष्मीका क्षय क्रमसे करे, इसकी पदाकृतिकोभी देखना। यदि हीराकी पदाश्रय छाया लाल होवे तो हाथी घोडोको भय हो, पीली हो तो वंशक्षय, यवपदाश्रय सफेद छाया होतो आयु धन धान्य और लक्ष्मी इनको नाश करे, इनमें रेखा जोंका सव्य और अपसव्य तथा छेद्य और छेदार्द्धभी देखना चाहियें सो आगे लिखते हैं।

रेखाओंके भेद.

वज्रेचतुर्विधारेखावुधैरेवोपलक्ष्यते।
सव्याचायुःप्रदाज्ञेयानापसव्याशुभप्रदा॥
ऊर्ध्वाचासिप्रहारायछेदोछेदायबंधुभिः।

अर्थ–हीराकी चार प्रकारकी रेखा पंडितों करके जाननी चाहियें, यदि वो रेखा सव्य (दक्षिणावर्त्त) होवें तो आयुको बढावें, और अपसव्य (वामावर्त्त) हो तो अशुभ जाननी और ऊपर हों तो तल्वारका प्रहार करावें, छेद होतो बन्धुनाश करावे।

षट्कोणंलघुतीक्ष्णाग्रंबृहत्पद्मदलोपिवा।
वज्रेकाकवलोपेतेध्रुवंमृत्युंविनिर्दिशेत्॥
सवाह्याभ्यंतरेभिन्नेभग्नेकोणेपुवर्त्तुले।
नसमर्थोभवेत्तत्तुशुभाशुभफलोदये॥

अर्थ–छःकोणवाला, हलका और जिसका अग्रभाग तीक्ष्णहो तथा कमलदलके सदृश लंबाहो उस हीरेको काकवलोपेत कहते हैं, इसको निश्चय मृत्युकारक जानना। और जो हीरा भीतर बाहरसे भिन्न टूटा और गोल कोनोंवाला हो वह शुभाशुभ फल नहीं देता।

शुभाशुभ हीराके लक्षण.

लघुरष्टांगषट्कोणंतीक्ष्णंधारासुनिर्मलं।
गुणपंचकसंयुक्तंतद्वज्रंदेवभूषणम्॥

अर्थ–जो हीरा हलका, अष्टांगयुक्त, षट्कोण, धारा तीखी होवे, और निर्मलहो वह पंचगुणयुक्त हीरा देवताओंका भूषण हैं।

छायाके भेद.

श्वेतारक्तातथापीताकृष्णाछायाचतुर्विधा॥
सितच्छायाभवंसर्वंशशिछायासुलक्षणं।
धाराविन्दुश्चरहितेसर्वलक्षणसंयुते॥
तद्वज्रंतोलयेच्छम्यक्पश्चान्मूल्यंविनिर्दिशेत्।

अर्थ–सफेद, लाल, पीली और काली चारप्रकारकी छाया हैं। सफेद चंद्रछाया कहलाती है, सो उत्तम। प्रथम धारा विन्दु रहित सर्व लक्षणयुक्त हीरेको तोले, फिर मोल कहे

तोल और मोल.

पूर्वंपिंडसमंकुर्याद्वज्रतौल्यप्रमाणतः।
सपिंडंत्रिविधंज्ञेयंलघुसामान्यगौरवैः॥
अष्टाभिःसितसिद्धार्थैस्तंदुलश्चप्रकीर्त्तितः।
तंदुलस्यप्रमाणेनवज्रमौल्यंस्मृतंबुधैः॥
गुरुत्वेवार्द्धमौल्यंस्यात्सामान्येमध्यमंस्मृतं।
लाघवेचोत्तमंमौल्यंयुत्तमाधममध्यमं॥
गुरुत्वेत्रिविधंमौल्यंत्रिविधंलाघवेतथा।
सामान्येषट्विधंज्ञेममेवंद्वादशधास्मृतं॥

अर्थ–प्रथम हीराकी तोल पिंडके अनुसार करे, सो पिंड लघु सामान्य और गौरव तीन प्रकारका है, आठ सफेद सरसोंका एक चांवल होता है, चांवलके प्रमाणसेही पंडितोने हीराका मोल कहा है, चांवल गुरूहो अर्थात् तोलमें तो चांवलके बराबर हो, परन्तु चांवलसे छोटा दीखे तो उसका मोल आधा

होता है, सामान्यमें मध्यम, तथा लघुहो अर्थात् दीखनेमें तो बडा दीखे परन्तु तोलमें चांवलकी बराबर हो तो उसका उत्तम मोल होता है। इसप्रकार उत्तम, मध्यम और अधमके भेदसे गुरुत्वमोलके तीन भेद है इसीप्रकार लाघव (हलके) के भी तीन भेद हैं और समान्य मौल्यके छःभेद हैं इस प्रकार तोल और मोलके बारह भेद हैं।

मौल्य.

मनसाभावयेत्पिडंयवमात्रैकतंदुलं ॥
तत्पिडसमवज्रंतुज्ञात्वामूल्यंविनिर्दिशेत् ।
गात्रेणयवमात्रश्च गुरुत्वंतंदुलेनच ॥
मूल्यंपंचशतंतस्य वज्रस्यचविनिर्दिशेत् ।
यवद्वयसमंपिंडंलाघवंतंदुलोपमं ॥
मूल्यंचतुर्गुणंतस्यत्रिभिचाष्टगुणंभवेत् ।
चतुर्भिःद्वादशंप्रोक्तंपंचभिःशोडषंस्मृतं ॥

अर्थ-प्रथम मनमें पिंडका अनुमान करे, अर्थात् कितने यवके बराबर रत्नका मुटापा है और कितने चांवल अनुमान तोलमें है, इस प्रकार हीराकी मनमें कल्पना करे, पीछे इसका मोल कहे। जो हीरा मुटावमें जौके समान होवे, और चांवल बराबर तोलमें तो उसकी कीमत ५०० रुपया जाननना जो मोटा दोजौके समान और तोलमें एक चांवल होतो २००० रुपये और मुटानमें तीन जौके समान और तोलमें एक चांवल होतो चारहजार ४००० रुपयेका होवे, और मुटाव चारयवके समान और तोल एकचांवल हो तो ६००० रुपये कहना, और जो मुटावमें पांचयव तथा तोलमें एकचांवलका होतो उसका मोल ८००० आठ हजार रुपया कहा है।

षट्विन्दुर्यस्यवज्रस्यख्यापनाद्यदिनिर्गुणं ॥
सपादयवषट्कस्यपादहीनंचतंदुलं ।
अष्टाविंशतिकंमूल्यंकथितंचभिषग्वरैः ॥
सप्तमंपिंडमौल्यंचद्विसहस्रंविनिर्दिशेत् ।
यावत्पिंडनिभंरूपंदापयेद्विचतुर्गुणं ॥
पिंडशास्त्रेभवेद्वज्रंपादांशंलघुतोयदि ।
अष्टादशगुणंमौल्यंरत्नकोशेप्रभाषितं ॥
द्वौयवौलघुवज्रस्यषट्त्रिंशत्स्थापयेद्गुणान् ।
त्रिपादोपरितेवज्रंचत्वारिंशद्गुणंभवेत् ।
पिंडपादाधिकंवज्रंतौल्यंतद्गुणतोव्रजेत् ॥
क्षपितेद्विगुणंमौल्यंरत्नकोशेप्रभाषितं ।

वज्रमणेर्मूल्यपरिज्ञानार्थेपाठांतरम् ॥

सितसर्षपाष्टकंतंडुलोभवेत्तंडुलैस्तुविंशत्या
तुलितस्यद्वेलक्षेद्व्यूनंद्विघ्निनितेचैतत् ॥
पादत्र्यंशार्द्धोनंत्रिभागपंचांशषोडशांशाश्च ।
भागश्चपंचविंशतिकःस्यात्साहस्रिकश्चैव ॥

अर्थ-ये श्लोक एक बहुत प्राचीन पुस्तकसें लिखे हैं सो जहां तहां अशुद्ध है, दूसरी प्रति नहीं मिली इस कारण शुद्ध नहीं किया गया और प्राय अशुद्धताके कारण टीका नहीं लिखी जिस किसीको इसका अर्थ जानना हो वह किसी पढेलिखे जौहरीसे जानले।

यवसप्तकगात्रन्तुयदिवारितरंभवेत् ॥
वज्रस्यास्यत्विदंमौल्यंद्विसहस्रगुणंभवेत् ।
दोषेमकाशितेवज्रेसमूल्यंयत्रयद्भवेत् ॥
हीनत्वंप्राप्यतेतत्तुमौल्यंशतगुणाधिकम् ।

अर्थ-जो हीरा सात यवके समान मोटाहो और जलमें तैरे उस हीराका मोल दोहजार गुणा जानना और जिस्में दोष मालूमदें उसका उत्तम हीरेसे सौगुना मोल कम होजाता है।

हीरेकी परीक्षाका प्रकारान्तर.

भस्माभंकाकपादंचरेखाक्रान्तंतुवर्तुलं ॥
आधारमलिनंबिंदुंसत्रासेस्फुटितंतथा ।

नीलाभंचिपिटंरूक्षंतद्वज्रंदोपलंत्यजेत् ॥१॥
यत्पापाणतलेनिकाशनिकरेनोघृष्यतेनिष्ठुरे।
यच्चान्योपललोहमुद्गरमुखैर्लेखान्नयात्याहनं।
यच्चान्यंनिजलीलयैवदलयेद्वज्रेणवाभिद्यते
तज्जात्यंकुलिशंवदंतिकुशलाःश्लाघ्यंमहार्घं
चतत् ॥

अर्थ–भस्म (राख) के समान रंगवाला रेखायुक्त, त्रिकोण, गोल आधारमें मलिनवर्ण, विंदुयुक्त, खरदरा, फूटा, नीलवर्ण चिपटा और रूखा ऐसा हीरादोषयुक्त त्याज्य है, जो पत्थर वा कसौटीपर घिसनेसे घिसे नहीं, जो लोह वा किसी और पदार्थसे फूटे नहीं और आप दूसरे पदार्थको लीलापूर्वक फोडदे, अथवा आप हीरासे फूटे उसको हीराके परीक्षक उत्तमहीरा कहते हैं, इसका घरमें रखना शुभ दायक होता है यह वहु मौल्यपदार्थ है ।

स्त्रियःकुर्वन्तिकायस्यकान्तिस्त्रीणांसुखप्रदाः
नपुंसकाःस्त्ववीर्याःस्युरकामाःसत्ववर्जिता।
स्त्रियःस्त्रीपुप्रदातव्याःक्लीवाःक्लीवेप्रयोजयेत्।
सर्वेभ्यःपुरुपायोज्योवलदावीर्य्यवर्द्धना ः॥

अर्थ–स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंको कान्ति और सुखदायक है और नपुंसकजातिकाहीरा हीनवीर्य है, ये निष्काम और सत्वरहित है, स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंको देवे, और नपुंसक जातिका नपुंसकको तथा पुरुषजातिका सबके लिये श्रेष्ठ है उसको औषधियोंमें डालना चाहिये और यह वल वीर्य्य वर्द्धक है ।

अशुद्ध हीराके दोष.

अशुद्धवज्रंकुरुतेकुष्ठंपार्श्वव्यथांतथा ।
पांडुतापंगुरुत्वंचतस्मात्संशोध्यमारयेत् ॥

अर्थ–अशुद्ध हीरा-कुष्ठ, पसवाडोंमें पीडा पीलिया, ज्वर और देहमें भारीपन करता है इसलिये प्रथम शोधकर मारण करे ।

हीराकाशोधन.

व्याघ्रीकंदगतंवज्रंदोलायंत्रेणपाचयेत् ।
सप्ताहंकोद्रवक्वाथैःकुलिशंविमलंभवेत् ॥

अर्थ–हीराको व्याघ्रीकंदके बीचमें रख कोदोंके काढेमें दोलायंत्रकी विधिसे सात दिन पचावे तो शुद्ध हो ।

दूसरी विधि.

कुलत्थक्वाथकेस्विन्नंकोद्रवक्वाथितेनवा ।
एकयामावधिस्विन्नंवज्रंशुध्यतिनिश्चितं ॥

अर्थ–कुलथी वा कोदोंके काढेमें एकदिन दोलायंत्र द्वारा पचानेसे हीराशुद्ध हो ।

तीसरी विधि.

कुलित्थकोद्रवक्वाथैदोलायंत्रेविपाचयेत् ।
व्याघ्रीकंदगतंवज्रंमृदालिप्तंपुटेपचेत् ॥
अहोरात्रात्समुधृत्यहयमूत्रणसेचयेत् ।
वज्रीक्षीरेणवासिंचेत्कुलिशंविमलंभवेत् ॥

अर्थ–हीराको दोलायंत्रद्वारा कुलथी वा कोदोंके काढेमें पचावे, पश्चात् व्याघ्रीकंद (कटेरीकीजड) में रख ऊपर कपरमिट्टीकर संपुटमें रखकर फूंकदेवे, जब एक दिनरात व्यतीत होजाय तब निकालकर घोडेके मूत्र वा थूहरके दूधमें बुझावे तो हीराशुद्ध होवे ।

चौथी विधि.

गृहीत्वान्हिशुभेवज्रंव्याघ्रीकंदेविनिःक्षिपेत् ।
महिषीविष्टयालिप्त्वाकरीपाग्नौविपाचयेत् ॥
त्रियामंचचतुर्यामंपंचयामेश्वमूत्रके ।
सेचयेत्पाचयेदेवंसप्तरात्रेणशुध्यति ॥

अर्थ–हीराको व्याघ्रिकंदमें रख ऊपरसे भैंसका गोवर लेपकर उपलोंकी आं। तीन

१ स्वच्छविंदुत्वमंस्निग्धंसौदर्यंलघुलेखनम् । षडारं तीक्ष्णधारंचसुशांपार्श्वयांदिशेत् ।

चार प्रहर देवे, पीछे निकाल घोडेके पिशावमें बुझावे ऐसा ७ वार करनेसे हीराशुद्ध होवे ।

हीराका मारण.

त्रिवर्षरूढकर्पासमूलमादायपेषयेत् ।
त्रिवर्षानागवल्यावाबीजद्रावैःप्रपेषयेत् ॥
तद्गोलकेक्षिपेद्वज्रंरुध्वागजपुटेपचेत् ।
एवंसप्तपुटैर्नूनंकुलिशंभस्मजायते ॥

अर्थ—तीनवर्षकी कपासकी जडकी लुगदीमें अथवा तीनवर्षकी नागरवेलके बीजोंकी लुगदीमें हीराको रख सात कपरमिट्टीदे गजपुटमें फूंकदे इसप्रकार सातपुटोंमें हीराकी भस्म होवे ।

दूसरी विधि.

त्रिसप्तकृत्वासंतप्ताःखरमूत्रेणशुध्यति ।
मत्कुणस्तालकंपिष्ट्वातद्गोलेकुलिशंक्षिपेत् ॥
प्रध्मातंवाजिमूत्रेणसिक्तंपूर्वक्रमेणच ।
भस्मीभवतितद्वज्रंशंखशीतांशुपांडुरं ॥

अर्थ—हीराको तपा २ कर २१ बार गधेके मूत्रमें बुझावे, तो हीराशुद्धहो, पीछे हरितालमें खटमल मिलाकर घोटे और उसकी लूगदीमें रखकर अग्नि देवे जब खूब अग्नि लगजाय तब निकालकर घोडेके पिशावमें बुझावे इसप्रकार २१ बार करनेसे हीराकी भस्म सफेद शंख वा चंद्रमाके तुल्य होजाय ।

तीसरी विधि.

हिंगुसैंधवसंयुक्तेकाथेकौलत्थजेक्षिपेत् ।
तप्तंतप्तंपुनर्वज्रंभूयाच्चूर्णंत्रिसप्तधा ॥

अर्थ—हींग कुलथी और सैंधोनिमक के काढेमें हीराको तपा२ कर २१ वार बुझानेसे हीरा की भस्म होवे ।

चतुर्थ विधि.

मेषशृंगंभुजंगास्थिकूर्मपृष्ठाम्लवेतसं ।
शशदंतंसमंपिष्ट्वावज्रीक्षीरेणगोलकं ॥
कृत्वातन्मध्यगंवज्रंम्रियतेध्मातवन्हिना ।

अर्थ—मेंढेकासींग, सांपकीहड्डी, कछवेकीपीठ, अमलवेत, ससेकेदांत, इनको समानभाग ले चूर्णकर थूहरके दूधमें घोटकर गोला बनावें, उसके बीचमें हीरेको रख सातकपरमिट्टीकर गजपुटमें फूंक देवे तो हीरेकी भस्म होवे ।

पांचवीं विधि.

विलिप्तंमत्कुणस्यांत्रैःसप्तवारंविशोधितं ।
कासमर्दरसेपूर्णेलोहपात्रेनिवेशयेत् ॥
सप्तवारंपरिध्मातंवज्रभस्मंभवेत्खलु ।
वज्रचूर्णंभवेद्गूर्ण्यंयोजयेच्चरसादिषु ॥
ब्रह्मज्योतिमुनीन्द्रेणक्रमोयंपरिकीर्त्तितः ।

अर्थ—हीराको तपाके खटमलकी आतोंका लेपकर सुखाले, पीछे कसौंदीके रससे भरे पात्रमें रखकर अग्नि देवे, जब सूख जावे तब फिर अग्निमें तपावे और खटमलोंका लेपकर उसीप्रकार कसौंदीके रसमें रखकर अग्निदेवे इसप्रकार सातवार करनेसे निश्चय हीराकी भस्म होवे, यह भस्म कांतिदायक है, इसको रसादिकोंमे डाले यह ब्रह्मज्योति मुनींद्रका कहा योग है ।

छठी विधि.

वज्रंमत्कुणरक्तेनचतुर्वारंविभावितं ।
सुगंधिमूषिकामांसैर्वर्त्तितंपरिमर्द्यच ॥
पुटेत्पुटैर्वराहाख्यैस्त्रिंशद्वारंततःपरं ।
ध्मात्वाध्मात्वाशतंवारान्कुलत्थेकाथकेक्षिपेत्
अन्यरुक्तःशतंवारंकर्त्तव्योयंविधिक्रमः ।
कुलत्थकाथसंयुक्तःलकुचद्रावपिष्टया ॥
शिलयालिप्तमूषायांवज्रंक्षिप्त्वानिरुध्यच ।
अष्टवारंपुटेत्सम्यक्विशुष्कैश्चवनोत्पलैः ॥
शतवारंततोध्मात्वानिक्षिप्तंशुद्धपारदे ।
निश्चितंम्रियतेवज्रंभस्मंवारितरंभवेत् ॥

सत्ववाक्सोमसेनानीएतद्वज्रस्यमारणं ।
दृष्टंप्रत्ययसंयुक्तमुक्तवान्रसकौतुकी ॥

अर्थ-हीराको खटमलके रुधिरकी चार भावना देकर सुगंधमूसा (छछूंदर) के मांसमें मर्दन कर वाराहपुटमें फूंकदेवे, इसप्रकार सातपुटदे पीछे उस हीराको तपा २ कर कुलथीके काढेमें सौवार बुझावे, और आचार्य्य यह कहते हैं कि प्रथम सौवार खटमलोंके रुधिरकी भावनादेकर पीछे कुलथीके काढेमें बुझावे पश्चात् कुलथीके काढेमें वडेलका रस मिलाकर मनसिलको पीस हीरापर लपेट घडियामें रख आंचमें फूंकदेवे, इसप्रकार सूखे आरने उपलोंके आठपूट देवे, तदनन्तर सौवार हीराको तपातपाकर शुद्ध पारेमें बुझावे, इसप्रकार करनेसे निश्चल जलमें तैरनेवाली हीराकी भस्म होवे। यह सोमसेनानी सत्यवक्ताका कहा हैं उस रसकौतुकीका यह प्रयोग देखा और आजमाया है ।

सातवीं विधि.

विलिप्तमत्कुणस्यास्रेसप्तवारंविशोषितं ।
कासमर्द्दरसेपूर्णेलोहपात्रेनिवेशितं ॥
सप्तवारंपरिध्मातंवज्रंभस्मंभवेत्खलु ।
ब्रह्मज्योतिर्मुनीन्द्रेणक्रमोयंपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-हीराको खटमलके रुधिरमें लपेटकर सुखालेवे, पीछे एक छोटे लोहेके पात्रमें कसोदीका रस भर उसमें हीराको डालकर धमावे पश्चात् हीरापर फिर खटमलका रुधिर लपेट कसोंदीके रसमें डाल धमावे, इसप्रकार सात वार करनेसे निश्चय हीराकी भस्म होवे यह ब्रह्मज्योतिका कहा क्रम है ।

आठवीं विधि.

नीलज्योतिर्लताकंदेव्युष्टंघर्मेविशोषितं ।
वज्रंभस्मत्वमायातिक्रमवद्ज्ञानवन्हिना ॥

अर्थ-हीराको नीलज्योतिलताके कन्दमें रख धूपमें सुखाय यथासंभव अग्नि देनेसें हीराकीभस्म होवे ।

नवीं विधि.

मदनस्यफलोद्भूतरसेनक्षोणिनागरैः ।
कृतकल्केनसंलिप्यपुटेद्विंशतिवारकम् ॥
वज्रचूर्णभवेद्गुर्णंयोजयेचरसादिषु ।

अर्थ-मेनफलके रसमें अलसी और सोंठको मिलाय कल्क बनाय उसमें हीराको लपेट अग्निमें धमावें इसप्रकार २० पुटदेनेसे हीराकी उत्तम भस्म होवे, इसको रसादिकोमें मिलाकर काममें लावे ।

ब्रह्मजातीय हीराका मारण.

गरुडंगंधकंतालंवदरीरससंप्लुतं ।
अश्वत्थस्वरसैर्भाव्यंपुटेत्पिडंसरक्तकं ॥
म्रियतेतेनयोगेनब्रह्मरत्नानितत्वतः ।

अर्थ-छिरहटा, गंधक, हरिताल इनको बेरके रसमें घोटकर पीपलके पत्तोंकी भावनादे, फिर खटमलके रुधिरकी भावना देवे तो ब्राह्मण जातिका हीरा भस्म हो ।

क्षत्रीजातीय हीराका मारण.

नीलंचशंखचूर्णंचशिलाभूनागशूरणं ।
म्रियतेक्षत्रजातीनांपुटैःस्वाभिर्नसंशयः ॥

अर्थ-नील, शंखकाचूरा, मनसिल, केंचुए और जमींकंदका रस इनको एकत्र पीस पुट देनेसें क्षत्रीजातिके हीराकी भस्म हो ।

तथा वैश्यजातीयका मारण.

स्नुह्यर्ककरवीरंचभूनागंदरदंवटाः ।
उत्तमावारुणीक्षीरैर्वैश्यानांमारणंपुटैः ॥

अर्थ-थूहर, आक, कनेर, केंचुआ, शिंगरफ, वडकादूध, उत्तम दारू और दूधकी भावना

देंकर फूंकेतो वैश्यजातिके हीराकी भस्म हो ।

शूद्रजातीय हीराका मारण.

गंधाश्मकंघृतंतालंमेषशृंगंसमांशकं ।
विषंकांतंस्नुहीक्षीरंनारीपुष्पंपयप्लुतं ॥
एभिर्विलिप्तमूषायांधमनादन्यमारणं ।

अर्थ—गंधक, घृत, हरताल, मेंढासिंगी, सहत, विष, कान्तलोह, थूहरका दूध, स्त्रीके रजोदर्शका रुधिर और दूधको एकत्र पीस हीरामें पुटदे, मूषामें रख वंकनाल धोंकनीसे धोंकनेसे सर्वजातिके हीरोंकी भस्म होवे ।

हीरादि सबरत्नोंका मारण.

रसहंसंशिलातालंगरुडंगंधटंकणं ।
भूनागंविमलंवंगंमेषशृंगंसचुम्बकं ॥
शुक्रःशोणितसंयुक्तंस्वेदनौषधिभावितं ।
मूषालेपप्रयोगेणरत्नानांमारणंध्रुवं ॥
एवंवज्रभवंभस्मंवज्रस्थानेनियोजयेत् ।

अर्थ—पारा, शिंगरफ, मनसिल, हरिताल, पन्नाकाचूर्ण, गंधक, सुहागा, केंचुए, विमल, वंग, मेंढेकासींग, चुंबक पत्थरका चूर्ण, और पुरुषकावीर्य और रुधिर इन सबको पीसकर इसमें स्वेदन औषधियोंकी भावना देवे, पीछे इसको मूषामें लेपकर बीचमें हीरादिरत्नोंको रख धोंके तो निश्चय सब रत्न इस प्रकार मरे, हीराकी भस्मको जिस प्रयोगमें हीराकीभस्म लिखी हो मिलावे ।

तद्वज्रंचूर्णयित्वाथकिंचिट्टंकणसंयुतं ।
खरभूनागसत्वेनविषेनावर्त्ततेध्रुवं ॥
तुल्यस्वर्णेनतद्ध्मातंयोजनीयंरसादिषु ।

अर्थ—फुके हीराकीभस्ममें बीसवां हिस्सा थोडासा सुहागा मिलावे, फिर कंचुएके गरम सत्वमें डाले और बराबरका सोना डालकर अग्निपर धमावे तो सत्व निकले फिर इसको सर्व रसोंमें मिलाकर खाय ।

त्रिगुणेनरसेनैवसंमर्धगुटकीकृतं ।
मुखेधृतंकरोत्याशुचलदंतविबंधनं ॥

अर्थ—हीराकभिस्मसे तिगुना शुद्ध पारा मिलावे और गुटिका बनालेवे इस गुटिकाको मुखमें रखे तो हिलते दांत दृढ होवें ।

भस्मसेवनकी विधि.

सूतंभस्मार्द्धसंयुक्तंमृतवज्रस्यभस्मकं ।
मृताभ्रसत्वमुभयोस्तुलितंपरिमर्दितं ॥
क्षौद्राज्यसंयुतंमाझैःगुंजामात्रंचसेवितं ।
निहंतिसकलान्रोगान्सत्यंसत्यंवदाम्यहं ॥
एवंवज्रभवंभस्मंसेवनीयंनृभिस्सदा ।
त्रिसप्तदिवसैर्नृणांगंगांभइवपातकं ॥

अर्थ—हीराकीभस्म एक भाग, पारेकीभस्म अर्द्धभाग, इन दोनोंके समान मरे अभ्रकका सत्व लेकर घृत और सहतमें सबको घोटकर एक रत्ती नित्य खाय तो सब रोगोंको दूरकरे। इसप्रकार हीराकीभस्म मनुष्यको सदा सेवन करनेसे २१ दिनमें गंगाजलके समान शुद्ध देह करे ।

त्रिंशद्भागमितंहिवज्रभसितंस्वर्णकलाभागिकं।तारंचाष्टगुणासितामृतवरंरुद्रांशकंचाभ्रकं पादांशंखलुताप्यकंवसुगुणंवैक्रांतकंपड्गुणं॥ भागोप्युक्तरसैःरसोयमुदितःपाड्गुण्यसंसिध्यये ॥

अर्थ—हीराकीभस्म तीसभाग, सुवर्णभस्म १६ भाग, रूपरस ८ भाग, सिंगियाविष ११ भाग, अभ्रकभस्म ११ भाग, सोनामक्खीकी भस्म ८ भाग, वैक्रांतिमणिकी भस्म ६ भाग पारेकी भस्म १ भाग, इन सबको एकत्रकर रखछोडे इसको पड्गुणकी सिद्धीके निमित्त पूर्वाचार्य्योंने कहा है ।

हीराकी भस्मके गुण.

आयुःप्रदंसद्गुणदंचवृष्यंदोपत्रयः प्रशमनंसकलामयघ्नं सूतेन्द्रबंधवधसद्गुणदंप्रदीप्तिंमृत्युंजयेत्तदमृतोपममेववज्रं

अर्थ–मनुष्यकीआयु और श्रेष्टगुणोंकी वृद्धी करे. वृष्य है, तीनोंदोषोंको शमन करे, सकल रोगोंको दूरकरे, पारेकी बद्धक तथा मारण कर और पारेके उत्तमगुण प्रगट करनेवाली अग्निको दीप्तकरे, मौतकोजीते, अमृतके समान गुणकारक हीराकी भस्म है।

वज्रंचषड्रसोपेतंसर्वरोगापहारकं ॥
सर्वाघशमनंसौख्यंदेहदार्ढ्यंरसायनं।

अर्थ–हीरा षट्रसंयुक्त संपूर्ण रोगनाशक, तथा सकलपाप हरणकर्त्ता, सुख और देहका दृढकर्त्ता तथा रसायन है।

तीसरे गुण.

वज्रंसमीरकफपित्तगदांश्चहन्याद्वज्रोपमंचकुरुतेवपुरुत्तमश्री । शोषक्षयज्वरभगंदरमेहमेदपांडूदरश्वयथुहारिचषड्रसाढ्यं।आयुःपुष्टिंचवीर्यंचवर्णंसौख्यंकरोतिच।सेवितंसर्वरोगघ्नंमृतंवज्रंनसंशयः ॥

अर्थ–हीराकी भस्म-वात पित्त और कफके विकारोंका नाश करे, देहको वज्रके समान दृढ और उत्तमकरे शोष, खई, ज्वर, भगंदर प्रमेह, मेद, पांडु, उदर और सूजनका नाश करे, छःरसयुक्त है आयु और वीर्यको पुष्ट करे, देहका वर्ण उत्तम तथा सुखकरे माराहीरा खानेसे निस्संदेह सकलरोग नाश हो।

हीरा भस्मके अनुपान.

कुष्ठेखादिरत्वक्क्ष्वथयापवनजेगृहशृंगवेरंमधु। देयंकासमलासम्पासयिकृनौवायोपणात्वणा। पित्तेदाहसितासमंज्वरगणेछिन्नाजलेनिक्तके । वज्रंमारितशुक्लभस्मगदहृद्योज्यं भिषग्युक्तिभिः ॥

अर्थ–कोढमें खैरकी छालके साथ, वातव्याधि तथा वातरक्तमें अदरखकेरस और सहदकेसाथ, खांसी कफ और श्वासमें अद्रखके रस, कालीमिरच, दालचीनी और पीपलके साथ, पित्त और दाहमें मिश्रीकेसाथ, सबज्वरोंमें गिलोय और चिरायतेके काढेके साथ हीराकी भस्म देवे, यह सर्वरोग नाशक है परंतु सबरोगोंमें अनुपान वैद्य अपनी युक्तिसे कलपना करे।

वज्रमृदुकरणं.

मातुलुंगांतरेवज्रंरुध्वावाह्यमृदालिपेत्।
पुटेत्पश्चात्समुध्दृत्यएवंशतपुटैःपचेत् ॥
नागवल्याद्रवैर्लिप्तंतत्पत्रैर्णवेष्टयेत्।
भूमध्येचस्थितंयावत्तद्वज्रंमृदुतांव्रजेत् ॥

अर्थ–हीराको बिजोरेमें रख कपरमिट्टीकर अग्निमें रख फूंकदे इसप्रकार १०० पुटदे, पीछे नागरबेलके रसमें लपेट ऊपरसे उक्तबेलके पत्ते बांध जमीनमें गाढदे तो थोडे दिनमें हीरा मोमके समान नरमहोजाय यह (रसेन्द्रकोश) में लिखा है

हीराकीद्रुति.

वज्रवल्यांतरस्थंचकृत्वावज्रंनिरुत्थितं।
अम्लभाण्डगतंस्वेद्यंसप्ताहाद्द्रवतांव्रजेत् ॥

अर्थ–हीराको वज्रवल्लीकी लुगदीमें रख फूंकदे जब निरुत्थ होजाय तब अम्लवर्गके पात्रमें डाल स्वेदन करे तो हीराकी पारेके समान द्रुति होवे

अशुद्ध वज्रके दोष.

पीडांविधत्तेविविधांनराणांकुष्ठंक्षयंपांडुगदंचदुष्टं। हृत्पार्श्वपीडांकुरुतेतिदुस्सहामशुद्ध

वज्रंगुरुमात्महंत्यजेत् ॥

अर्थ-अशुद्ध (कच्चा) हीरा मनुष्योंको अनेकपीडा करे. कोढ, खई, पांडुरोग, हृदय और पसवाडोंमें दुस्सह पीडा करता है, भारी तथा प्राणहारक है इसलिये अशुद्धहीराको त्याग देवे

हीराके विकारोंकी शान्ति.

सितामधुघृतैःशार्कं गोदुग्धंदिनसप्तकं ।
विधिनासेवितंहंति वज्रदोषंचिरोत्थितं ॥

अर्थ-मिश्री, सहत, घी और दूधको मिलाकर ७ दिन विधिसे सेवन करे तो हीरेकादोष नष्ट हो।

मूंगाकी उत्पत्ति.

बालार्ककिरणरक्तासागरसलिलोद्भवेजलल ताया । नत्यजतिनिजंरूपंनिकषेघृष्टापिसा-स्मृताजात्या ॥

अर्थ-समुद्रके जलमें लाल रंगकी मूंगाकी वेल होती है, वह प्रातःकालके सूर्यकी लालकिरणोंके समान वेल प्रगट होती है उसको प्रवाल (मूंगा) कहते है, उनमेंसे जो कसौटीपर घिसनेसे अपने रंग और कांतिको न छोडे वह मूंगा अमृतके समान गुण करता है।

शुभमूंगाके लक्षण.

पकविम्बफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकं ।
स्निग्धमव्रणकंस्थूलंप्रवालंसप्तधाशुभं ॥

अर्थ-पकी कंदूरीके समान; गोल, वक्रता-रहित, चिकना, छिद्रादिकरहित, मोटा, कुछ थोडालंबा, ऐसा सातप्रकारका मूंगा शुभ है।

अशुभमूंगाके लक्षण.

आररंगजलाक्रान्तिवक्रंसूक्ष्मंसकोटरं ।
रूक्षंकृष्णंलघुश्वेतंप्रवालमशुभंत्यजेत् ॥

अर्थ-रंगमें पीतलके समान जलकीसीकांति टेढा, बारीक, छिद्रसहित, रूखा, काला, छोटा, और सफेद मूंगा अशुभ है ।

मूंगाके गुण.

प्रवालंमधुरंसाम्लंकफपित्तादिदोषनुत् ।
वीर्यकांतिकरंस्त्रीणांधृतेःमंगलदायकं ॥
क्षयेपित्तास्रकासघ्नंदीपनंपाचनंलघु ।
विषभूतादिशमनंविद्रुमंनेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-मूंगामधुर, खट्टा, दीपन, पाचन, तथालघु (हलका) है, तथा वीर्य और कांति को बढावे, स्त्रियोंको धारण करनेसे मंगलकर्त्ता है। कफ, पित्त, त्रिदोष, खई, रक्तपित्त, खांसी, विष, भूतबाधा और नेत्ररोगोंका नाश करे।

मूँगाका मारण.

मौक्तिकस्यविधिर्योक्तःप्रवालेपितथाविधिः

अर्थ-जो विधि मोतीके मारणकी है वही विधि मूंगाकेमारणकी जाननी चाहिये ।

मोतीकी उत्पत्ति.

शुक्तिःशंखोगजःक्रोडफणीमत्स्यश्चदर्दुरः ।
वेणुश्चाष्टौसमाख्यातासुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥

अर्थ-पंडितोंने मोतीकी उत्पत्ति-सीपी, शंख, हाथी, शूकर, सर्प, मछली, मेंडक और बांससे कही है ।

गजमौक्तिक.

यद्दंतावलकुंभसंभवमदःपीतारुणंमंदरुक् ।
धारीदभ्रतयात्ररत्नमधमंकांभोजकुंभोद्भवं ॥

अर्थ-गजमुक्ता--कांबोजदेशके बलवान हाथीके गंडस्थलसे किंचित्लाल तथा पीतवर्ण उत्पन्न होता है, इसको स्त्रियां धारण करती हैं यह हलकारत्न है ।

वाराह मौक्तिक.

एकाकीससुखेननिस्पृहतयायःकाननंगाहते।
तस्यानादिवराहवंशजनुषःकोलस्यमूर्भिस्थ

तं ॥ कंकोलाकृतिमिंदुवत्सधवलंदैवादवाप्नो तित स्तोमर्त्यैसमुपासतेसनिधिभिर्मर्त्योध नाधीशवत् ॥

अर्थ—श्रीआदिवाराह वंशमें जो शूकर प्रगट हुआ वह अकेलाही वनमें निस्पृहता पूर्वक विचरता है, उसके मस्तकमें वेरके समान वडा और चंद्रमाके समान सफेद मोती होता है, यह दैवेच्छासे हाथ लगता है, जिसके पास यह मोती होता है वह पुरुष अटूट संपत्तिवान होता है।

वेणुमौक्तिक.

मुक्तासंतिकुलाचलेपुकरकाकान्त्युद्भवावंश जा। कर्कंधूफलवंधवोनिदधतेकंठेपुशुद्धांगना

अर्थ—कुलाचलपर्वतमें वर्फके समान सफेद. वेरके समानवडा, मोती वांसोंसे प्रगट होता है उसको पवित्रस्त्री गलेमें धारण करती है।

मत्स्यजमौक्तिक.

प्रोष्टीगर्भगतस्तुमौक्तिकमणि र्नागसमःपाट- लीपुष्पाभःसनलभ्यतेभुविजनैरस्मिन्कलौ पापिभिः ॥

अर्थ—मत्स्यजमौक्तिक मच्छीकेपेटमें गजमुक्ताके समान रंगमें पाढरपुष्पके समान होता है, यह इस पृथ्वीपर कलयुगी पापी जीवोंको नहीं प्राप्त होता।

दर्दुरमुक्ता.

यन्मेघोदरसंभवंतदवनींमप्राप्तमेवामरैः। व्योमस्थैरपनीयतेविनिपतद्वर्षापुमुक्ताफलं॥ तिग्मांशोरपिदुर्निरीक्ष्यमकृशंसौदामिनीस न्निभं। देवानामपिदुर्लभंनमनुजस्यैतस्यमा प्तिपुनः ॥

अर्थ—वर्षाऋतुमें जो मेंडक मेघोदरसे उत्पन्नहो वह पृथ्वीपर न गिरे, उसके पेटमें मोती उत्पन्न होता है उसको देवता ग्रहण करलेते हैं। वह सूर्यके समान तेजवाला विजलीके सदृश होता है वो मनुष्यको तो कव प्राप्तहो सक्ता है देवताओंकोभी दुर्लभ है।

शंखमुक्ता.

शंखस्याच्युतहारिणोजलनिधौयेवंशजाःकंबु का स्तेप्वंतःकिलमौक्तिकंभवतवैतच्छुकता- रानिभं ॥ कापोतांडसमंसवृत्तमसकृत्श्रीकं स्वरूपंलघु स्निग्धंस्पर्शकृतंचतेचनपुनर्मर्त्यैस्त दासाद्यते ॥

अर्थ—पांचजन्य शंखके वंशमें प्रगट ऐसे शंख समुद्रमें होते हैं, जिनके बीचमें तारागण के समान प्रकाशित, कबूतरके अंडेके समान वडा और गोल मोती होते हैं, वो पानीदार, हलके, चिकने, तथा लक्ष्मीकारक होते हैं। वो एक मनुष्यके स्पर्शकरनेसे दूसरेके पास नहीं जाते।

सर्पजमुक्ता.

शेषस्यांन्वयिनांफणांसुफणिनांयन्मौक्तिकं जायते। वृत्तंनिर्मलमुज्ज्वलंशशिरुचिश्याम च्छविश्रीकरं ॥ कंकोलाकृतिकेपिकोटिसु कृतैःप्राप्नोतिचेन्मानवः। सस्याद्वाजिगजा धिकोनृपसमोजातोपिनीचेकुले ॥ आस्तेस द्मनिचेत्सुपन्नगमणिस्तेयातुधानामराः। ह र्तुंरंध्रमवेक्षतेइतरतःकुर्यान्मिहाशान्तिकम् ॥

अर्थ—सर्पज मौक्तिक शेपनागके वंशमें उत्पन्न सर्पोकेफणमें होता है, वह गोल, निर्मल, चकचकाहटवाला, चंद्रमाके समान, सफेद शोभायमान, आकारमें वेरके समान होता है यह मोती करोडजन्म पर्यन्त पुण्यकर्त्ताके हाथ लगता है, जिसके पास यह रहे उसके घर हाथी घोडाआदिकी वृद्धी होकर नीचकुलकाभी

मस्तक समान हो, इसकी चोरी करनेको राक्षस छिद्र देखा करते हैं, इसलिये इसके मिलनेकी शांति करे।

सीप मौक्तिक

पटप्येतेस्वपिरविमणीवजगतिख्यातिगतारु तिमणी। नाम्नाशुक्तिमतीवचोत्तमगुणासि धौसमुज्जृम्भते॥ तस्यागर्भभवतुकुंकुमनिभजा तीफलाकृत्तिना स्थूलस्निग्धमतीवनिर्मलमल भूमामकाशसदा॥

अर्थ—चांदीके समान झलकदार सीप उत्तम है, वह समुद्रमें उत्पन्न होती है, उसमें लाल जायफलके समान गोल, चिकना, अत्यन्त निर्मल मोती निकलता है।

लक्षण

श्वेतस्निग्धमतीवमधुरतरस्यात्पारसीकोद्भव। रूक्षकाचनवर्णकाएतस्याद्वैरमाक्तिक॥ शोणतर्मलसमभवविदुरितिस्निग्धतयादोपज। चातुर्वर्ण्यगुतगुलक्षणमितिश्लक्ष्णवविश्रीकर

अर्थ—जो मोती फारसके समुद्रमें प्रगट होता है, वह सफेद, चिकना और अत्यन्त तेजस्वी प्रगट होता है, अरबके समुद्रमें रूखा जिसमें सुवर्णकीसी झाक होती है, अन्य समुद्रोंका मोती लाल, अतिचिकना, दोषयुक्त, चारवर्णयुक्त उत्तमलक्षणवाला शोभायमान होता है।

मौक्तिकपरीक्षा

यद्दिन्त्र्यमाक्तिकव्यंगकायशुक्तिस्पर्शरक्त ताचा पिधत्ते। मत्स्याक्ष्यक्रल्लमुक्त तद्धार्यश्रीगतादोषदायी॥

अर्थ—जो मोती फीका, व्यंग, सीपसे चिपटा, लालवर्ण, मछलीके नेत्र सम चिह्नित रूखा, ऊंचा, नीचा, ऐसा होवे उसको बुद्धिमान धारण न करे यह दोषकारक है।

शुभमोतीके लक्षण

नक्षत्राभवृत्तमत्यंतमुक्तास्निग्धस्थूलनिर्व्रणनि र्मलम्। न्यस्तंश्चेगौरवयत्तुलायानिर्मोल्यत न्मौक्तिकासिद्धिदायि॥

अर्थ—जो मोती नक्षत्रके समान गोल, चिकना, मोटा, निर्व्रण, निर्मल, तथा तोलमें भारी होवे। वह महामोलवान मोती सिद्धिदायक है।

मोतीका शोधन

लवणक्षारसंशोधिनिपात्रेगोमूत्रपूरितेक्षिप्त। मर्दितमपिशालितुर्षैवदविक्रुतमौक्तिकजात्य

अर्थ—गोमूत्रमें निमक डालकर उसमें मोतीको दोलायंत्रकी विधिसे स्वेदन कर देवे, फि उसमेंसे निकाल धानकी तुषाओंमें डालकर मले यदि वह मोती विकारको प्राप्त न होतो शुद्ध जाने।

मणिमुक्ताप्रवाल शोधन

स्वेदयेदोलिकायंत्रेजयन्त्यास्वरसेनच। मणिमुक्ताप्रवालानायामकशोधनभवेत्॥

अर्थ—मणि मोती और मूगाको जयतीके रसमें दोलायंत्र विधिसे एकप्रहर स्वेदन करनेसे शुद्ध हों।

दूसरा प्रकार

मौक्तिकशोधयेदम्लैः काञ्जिकैर्निम्बुद्रवैः। गोमूत्रेशोधयेत्पश्चाच्छोधयेत्पयसातथा॥

अर्थ—मोतीको अम्लवर्ग, कांजी, नीबूके रस, गोमूत्र और दूधमें शोधन करे।

मुक्ताप्रवालमारण

कुमारीतण्डुलीयेनस्तन्येनचविपाचयेत्। मत्स्येऽकसप्तधारचतसप्तानिकुल्मश॥ उक्तमाशिकनन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत्।

अर्थ—मोतीको तपा २ कर घीगुवारके

रस, चौलाईकेरस, तथा स्त्रीकेदूधमें, सात २ वार बुझावे और सोनामक्खीके मारणकी तरह मोती और मूंगाका मारण करे।

दूसरी विधि.

गंधपारदयोरैक्यान्मौक्तिकानिविमर्दयेत्।
भावयेदुग्धयोगेनशरावःसंपुटेक्षिपेत् ॥
घस्रमृत्तिकयोर्लेपाज्ज्वालयेद्धस्तिजेपुटे।
स्वांगशीतलमुधृत्य चूर्णभांडेनिधापयेत् ॥

अर्थ—मोतीको गंधक और पारेकी कजली में दूध डालकर खूब घोटे, तदनंतर सराव संपुटमें रख कपरमिट्टीकर गजपुटमें फूँकदे, स्वांगशीतल होनेपर भस्मको काँचकी शीशोमें भर रख छोडे।

मुक्ताभस्मके गुण.

मौक्तिकंसमधुरंसुशीतलंदृष्टिरोगशमनंविषापहं। राजयक्ष्मपरिकोपनाशनंक्षीणवीर्यबलपुष्टिवर्द्धनं ॥

अर्थ—मोतीकीभस्म मधुर और शीतल है नेत्ररोग, विषरोग और राजयक्ष्मा (खई) का नाश करे, क्षीणवीर्य और क्षीणबलकानाश करे

अन्यच्च.

कफपित्तक्षयध्वंसी कासश्वासाऽग्निमान्द्यजित्। पुष्टिदंवृष्यमायुष्यं दाहघ्नंमौक्तिकंमतम् ॥

अर्थ—कफ, पित्त, खई, श्वास, खांसी और मन्दाग्निका नाश करे, पुष्टिकरे, वीर्य और आयुष्यको बढावे, दाहको जीते।

मोतीकी द्रुति.

मुक्ताफलानिसप्ताहं वेतसाम्लेनभावयेत्।
जंबीरोदरमध्येतुधान्यराशौनिधापयेत् ॥
पुटपाकेनतच्चूर्णंद्रवतेसलिलंयथा।
कुरुतेयोगराजोयंरत्नानांद्रावणंशुभं ॥

अर्थ—मोतीको अम्लवेतके रसकी भावना देकर नीबूके भीतरभर धानकीराशिमें गाडदे पीछे उसमेंसे निकाल पुटपाक करे, तो मोतीका चूर्ण जलके समान होवे।

पन्नाकीपरीक्षा.

स्वच्छंचसच्छायंस्निग्धंगात्रंचमार्द्रवसमेतं। अव्यंगंबहुरंगंशृंगारीमरकतंशुभंविभृयात्॥ शर्करिलकलिलरूक्षंमलिनंलघुहीनकांतिकल्मापं। त्रासयुतंविकृतांगंमर्कतममरोपिनोपभुंजीत ॥

अर्थ—स्वच्छ, सच्छाया, चिकना, मृदु, अव्यंग और बहुरंग पन्ना शृंगारकर्त्ता मनुष्यको धारण करना चाहिये, जो खरदरा, मलिन, हलका, कांतिहीन, कल्मषयुक्त, त्रासयुक्त, और विकृतांग पन्नाहो उसके देवताभी धारण न करे।

दूसरी परीक्षा.

हरिद्वर्णंगुरुस्निग्धंस्फुटरश्मिरयंशुभं।
भासुरंभास्वनंताक्ष्यगात्राभंसर्वसंमतम् ॥

अर्थ—जो पन्ना हरा, भारी, कान्तिवान, चिकना, तेजस्वी, दीप्तयुक्त, गरुडकान्तके समान कांतिवालाहो वह शुभ है।

अशुभपन्नाके लक्षण

कपिलंकर्कशंनीलंपांडुकृष्णंचलाघवं।
चिपिटंविकृतंकृष्णंरूक्षंतार्क्ष्यंनशस्यते ॥

अर्थ—कपिलवर्ण, कठोर, नीला, पीला, काला, हलका, चपटा, विकृत और रूक्ष पन्ना अच्छा नहीं।

शोधन प्रकार.

शोधनंमारणंरत्नप्रकर्णेकथितंमया।

अर्थ—पन्नाका शोधन और मारण रत्न प्रकर्णमें कह आये हैं।

गुण.

मरकतंहिविषघ्नंशीतलंमधुरंसरं।

अम्लपित्तहरंरुच्यंपुष्टिदंभूतनाशनं ॥

अर्थ–पन्ना-विपनाशक, शीतल, मधुर, रेचक, अम्लपित्तहर्त्ता, रुचिकर्त्ता, पुष्टिकर्त्ता, और भूत नाशक है ।

दूसरे गुण.

ज्वरछर्दिविपश्वाससंतापाग्नेश्च्यमांद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्नंतार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ–गरुडमणि (पन्ना) ज्वर, वमन, विप, श्वास, संताप, मंदाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूरकरे ओज और धातुको बढावे ।

वैदूर्य्यमणि.

घृष्टंयदात्मनास्वच्छंस्वच्छायानिकपाश्मनि।
स्फुटंमदर्शयेदेतद्वैदूर्यंजात्यमुच्यते ॥

अर्थ–जो वैदूर्यमणि घिसनेसे अपने तेजको न छोडे, स्पष्टदीखे, उसको जातिवंत तथा उत्तम जाननी । वैदूर्यमणि काले काले और पीलेरंगमिले रंगकी होती है ।

वैदूर्यके दोप.

विच्छायंमृच्छिलागर्भंलघुरूक्षंचसक्षतं ।
सत्रासंपरुपंकृष्णंवैदूर्यंदूरतस्त्यजेत् ॥

अर्थ–जो वैदूर्यगतच्छाया और मिट्टी तथा पत्थर जिस्में दीखतेहों तथा हलका, रूक्ष्य, सछिद्र त्रासयुक्त, खर्दरा और कालाहो उसे दूरहीसे त्याग देवे ।

वैदूर्यके और लक्षण.

एकंवेणूपलासपेशलरुचामायूरकंठत्विपा ।
मार्जारेक्षणपिंगलाचविदुपाज्ञेयंत्रिधाछायया
यद्गात्रंगुरुतादधातिनितरांस्निग्धंतुदोपोज्झितं
वैदूर्यंविमलंवदंतिसुधियःस्वच्छंचतच्छोभनं।

अर्थ–एक जातिका वैदूर्यमणि वंसपत्रके समान, दूसरा मोरकेकंठके समान तीसरा, बिलावके नेत्रोंके सदृश पीला, ऐसा तीन रंगतका होता है। तिनमें जो शरीरपर धारण करनेसे भारी मालूमहो तथा चिकना दोपरहित और स्वच्छ होवे ऐसा वैदूर्यमणि बुद्धिवान उत्तम समझे ।

वैदूर्यकेगुण.

वैदूर्यमुष्णमम्लंचकफमारुतनाशनं ।
गुल्मादिदोपशमनंभूपितंचशुभावहं ॥

अर्थ–वैदूर्यमणि उष्ण, खट्टा, भूपणार्ह, और मंगलकर्त्ता, कफ वादी तथा गुल्मादिदोपोंका नाशक है ।

अशुद्धगोमेदके लक्षण

कुरंगश्वेतकृष्णांगंरेखात्रासान्वितंलघु ।
विच्छायशर्करारंगेगोमेदंविबुधस्त्यजेत् ॥

अर्थ–जो गोमेदमणि हरिणकेसे रंगकी सफेद, काली, रेखायुक्त, त्रासयुक्त, हलकी, छायारहित, खर्दरी और दुष्टरंगकी हो उसे पंडित त्यागदेवे । पीलेरंगकीमणिको गोमेद कहते हैं ।

उत्तमगोमेदकेलक्षण.

पीतछागसमच्छायंस्निग्धंस्वच्छसमंगुरु ।
निर्दलंमसृणंदीप्तंगोमेदंशुभमष्टधा ॥

अर्थ–गोमेद, पीलीबकरीकी कांतिके समान, चिकनी, स्वच्छ, समान, भारी, पत्तरहित, सचिक्कण, कांतसहित, इन आठलक्षणयुक्त शुभ है ।

गोमूत्राभंयद्गुरुस्निग्धशुक्लंशुद्धछायंगौरवंयच्चधत्ते । हेम्नारक्तंश्रीमतांयोग्यमेतद्गोमेदाख्यंरत्नमाख्यातिसंतः ॥

अर्थ–गोमूत्रके समान, भारी, चिकनी, कुछसफेद, शुद्धछायायुक्त, गौरवतायुक्त, सुवर्णके समान आरक्त, ऐसे लक्षणोंयुक्त गोमेदमणि श्रीमतोंके योग्य कही है ।

गोमेदकेगुण.

गोमेदकोम्लश्चोष्णश्चवातकोपविकारनुत् ।
दीपनःपाचनश्चैवधृतोयंपापनाशनः ॥

अर्थ—गोमेदमणि खट्टी, गरम, दीपन, पाचन, धारण करनेसे पापोंकी नाशक और वातके सब विकारोंको नाश करती है ।

माणिक्य.

तद्रक्तंयदिपद्मरागमथतत्पीतातिरक्तंद्विधा । जानीयात्कुरुविंदकंयदरुणंस्यादेपसौगंधिकम् ॥ तन्नीलंयदिनीलगंधकमितिज्ञेयंच तुर्धाबुधैः॥माणिक्यंकपघर्षणेप्यविकृतरागेण जात्यंजगुः ॥

अर्थ—लाल-पद्मरागसदृश, तथा पीलापन लिये अत्यन्त लाल होवे, और हिंगुलके समान अरुणवर्ण होकर लालकमलके सदृश, होवे सो अतिउत्तम है, तथा जो नीलवर्ण होवे सो नीलमाणिक्यये दोप्रकार हुए. ऐसे माणिकके चार भेद ह इन चारोंमें जो कसौटीपर विसनेसे विकृतिको प्राप्त न होवे ज्योंका त्यों तेज वान रहे वो उत्तम जातिवंत माणिक्य(लाल) है

प्रकारान्तर.

स्निग्धंगुरुगात्रयुतंदीप्तंस्वच्छंसुरंगकंरक्तं ।
इतिजात्यंमाणिक्यंकल्याणंधारणात्कुरुते ॥

अर्थ—जो माणिक-गोल, सुंदर, झलकयुक्त स्वच्छ, उत्तम रंगदार तथा लाल होवे, उसे जातिवंत जानना यह धारण करनेसे कल्याण करता है ।

अशुभ.

विच्छायमभ्रपिहितमतिकर्कशशर्करंविधूमंच
विरूपंरागविमलंलघुमाणिक्यंनधारयेद्धीमान् ॥

अर्थ—जो माणिक कुरंग जिसपर बादलके समान दोषहों, खर्दरा, शर्करायुक्त, विधूम, रंगकामलीन, विरूप और हलकाहो उसे बुद्धिवान धारण न करे ।

माणिक्यकेगुण.

माणिक्यंमधुरंस्निग्धंवातपित्तविनाशनं ।
रत्नप्रयोगेप्रज्ञातंरसायनकरंपरं ॥

अर्थ—जो माणिक मीठा, चिकना, वात-पित्तनाशक, रत्नप्रयोगमें श्रेष्ट वह रसायन कारक है ।

हरिनील.

मृच्छर्कराश्मकलिलो विच्छायोमलिनोलघुः,
रूक्षस्फुटितगर्त्तश्च वर्ज्योनीलःसदोपकः ॥

अर्थ—हरिनील (इंद्रमणि) मिट्टी, कंकर पत्थर, मिली होवे; और बुरेरंगकी मलीन, लघु रूक्ष, फूटी तथा गड्ढेवाली ऐसी नील दोष-युक्त जानकर त्याग देवे ।

उत्तमनील.

ननिम्नोनिर्मलोगात्रे मसृणोगुरुदीप्तकः ।
तृणग्राहीमृदुर्नीलो दुर्लभोलक्षणान्वितः ॥

अर्थ—जो बाजमें नीची न हो, निर्मल, चकचकाहट युक्त, भारी, तेजस्वी, तिनकाको पकडनेवाली और मृदु लक्षणोंयुक्त नीलमणि-दुर्लभ है ।

नीलकेवर्णभेद.

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाःक्रमादिमे कथिताः। विप्रादिवर्णसिद्ध्यै धारणमस्या पिवज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ—सफेद, लाल, पीली और काली इन चारप्रकारके रंगोंकी नीलमणि क्रमसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य शूद्र संज्ञक जाननी इसका धारण करना हीराके समान फलदायक है ।

नीलपरीक्षा.

आनंदचंद्रिकाकारः सुंदरःक्षीरतप्तकः ।

यःपात्रंरंजयत्याशु सजात्योनीलउच्यते ॥

अर्थ-जिस नीलमें आनंदहोवे, चकचका-हटवाला, सुंदर, जिस्को अग्निमें तपाकर दूधमें डालनेसे पात्र नीलादीखे वो उत्तम है ।

जलनीलेंद्रनीलंच शक्रनीलंतयोर्वरं ।
श्वेतगर्भितनीलाभं लघुतज्जलनीलकं ॥
कार्ष्ण्यगर्भितनीलाभं सभारंशक्रनीलकं ।

अर्थ-नीलम, जलनील और इन्द्रनीलके भेदसे दोप्रकारकी है, इनमें इन्द्रनील उत्तम है, उसके लक्षण कहते हैं जो नीलश्वेत मिश्रित और हलकीहो वह जलनील और जो भीतरसे काली. नीली प्रभायुक्त और भारीहो उसे इन्द्रनील कहते हैं ।

उत्तमोत्तमनील.

एकच्छायं गुरुस्निग्धं स्वच्छंपिंडितविग्रहं ।
मृदुमध्येलसज्ज्योति सप्तधानीलमुत्तमम् ॥

अर्थ-एकछाया, भारी, चिकनी, स्वच्छ, गोल, बीचमें कुछ नम्र और ज्योतिवान् ऐसी सातप्रकारकी नीलमणि उत्तम जाननी ।

अधम.

कोमलंविहितंरूक्षं निर्भारंरक्तगंधिच ।
चिपिटाभंसरूक्षंचजलनीलंचसप्तधा ॥

अर्थ-पांचवर्णयुक्त, अधोभागमें संपूर्णवर्ण-वाला, आधेभागमें कोमल, रूखी, हलकी, रुधिरकीसी गंधवाली, और चपटी ऐसी जल-नील सातप्रकारकी है ।

नीलकेगुण.

श्वासकासहरंवृष्यं त्रिदोषघ्नंसुदीपनं ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नंनीलमीरितं ॥

अर्थ-श्वास, खांसी, त्रिदोष, विषमज्वर और बवासीरको दूरकरे तथा वृष्य है, जठराग्निको दीप्तनकरे, पापोंका नाश करे, नीलममें इतने गुण हैं ।

पुखराज.

पुष्परागंगुरुस्वच्छं स्थूलंस्निग्धंसमंमृदु ।
कर्णिकारप्रसूनाभमसृणंशुभमष्टधा ॥

अर्थ-पुखराज भारी, स्वच्छ, मोटी, चिकनी, समान, मृदु, कनेरके पुष्पकीसी कांतिवाली झलकदार ऐसी आठप्रकारका पुखराज शुभ है ।

अधम.

निष्प्रभंकर्कशंरूक्षं पीतस्यामंनतोन्नतं ।
कपिलंकलिलंपाण्डुं पुष्परागंपरित्यजेत् ॥

अर्थ-जो पुखराज निष्प्रभ, कडा, रूखा, पीला, काला, ऊंचा, नीचा, कपिल (नीला पीला मिला) कलिल और पांडुरंगहो वह त्याज्य है ।

मतान्तर.

कृष्णंविद्वंकितंरूक्षं धवलंमलिनंलघु ।
विच्छायंशर्कराभासं पुष्परागंसदोषलं ॥

अर्थ-जो काला, विंदुओंसे, चिन्हित, व्यंगवाला, सफेद, मलिन, हलका, बुरेरंगका, छाया रहित, कंकरकेआकार, पुखराज दोषयुक्त त्यागने योग्य है ।

सुच्छायपीतगुरुगात्रसुरंगशुद्धं ।
स्निग्धंचनिर्मलमतीवसुवृत्तशीलं ॥
तत्पुष्परागममलं कलयेदमुष्य ।
पुष्णातिकीर्तिमतिशौर्य सुखायुरर्थान् ॥

अर्थ-जो पुखराज-स्वच्छ, पीला, भारी, उत्तम रंग वाला, शुद्ध, चिकना, निर्मल, गोल और तेजस्वीहो वह उत्तम है यह कीर्ति, शूरता सुख, आयु और धनको बढावे ।

१ पुष्परागपरीक्षा-पृथ्वीविकाशेयत्पुष्परागमधिकमात्मीयम् । नखलुपुष्परागोऽन्यतयापरीक्षयोक्त्त ॥ १ ॥

पुखराजकेगुण.

पुष्परागंविषच्छर्दि कफवाताग्निमांद्यजित् । दाहकुष्ठार्शशमनं दीपनंलघुपाचनं ॥

अर्थ—पुखराजमणि विषवाधा, वमन, कफ वातरोग, मंदाग्नि, दाह, कोढ और ववासीरका नाशकरे, दीपन और पाचन है ।

वाजूवंद आदिमें नवरत्न रखनेका क्रम ।

प्राच्यादिकुलिशस्यमौक्तिकमणिराग्नेय कोद क्षिणादिग्वल्लिप्रभवस्य नैऋतककुभ्गोमेदसौ वारुणी । नीलस्यांतदिगिविदूरजमणे र्वायोः कुवेरस्यदिग्पुष्पस्याथ हरिन्मणेर्हरहरिच्छेप स्यशेषाहरित् ॥

अर्थ—यदि दुष्टग्रहको वाजू वा चौकी आदि बनवावे तो नवरत्नोंको इस प्रकार रक्खे, हीरा पूर्वमें. मोतीअग्निकोण, मूंगादक्षिण, गोमेद नैऋत, नीलम पश्चिम, वैदूर्य वायव्य, पुखराजउत्तर, पन्नाईशान, और पन्नाहीवीचमें जडाजाय, इस प्रकार अंगूठी आदिमें नगोंको जडवाना चाहिये ।

नवग्रहरत्नदान.

माणिक्यंतुरवेः वुधस्यगरुडोद्गारोगुरोः पुष्पकं । गोमेदोतमसः प्रवालमवनीसूनोर्विधोर्मौक्तिकं ॥ नीलोमंदगतेःकवेस्तुकुलिशं केतोर्विडालाक्षकं । रत्नंरत्नविदोवदंति विहितं दानेथवाधारणे ॥

अर्थ—सूर्यकामाणिक, वुधकापन्ना, वृहस्पतिकापुखराज, राहुकागोमेद, मंगलका मूंगा चंद्रकामोती, शनिकानीलम, शुक्रकाहीरा, केतुकावैदूर्य, इस प्रकार ग्रहोंके प्रसन्नतार्थ रत्नोंका दान अथवा धारणकरना चाहिये ऐसा रत्नज्ञाता कहते हैं ।

पञ्चरत्न.

पुष्परागंमहानीलं पद्मरागंचवज्रकं । प्रोक्तंमरकतंशुभ्रंपञ्चरत्नवराःशुभाः ॥

अर्थ—पुखराज, नीलम, माणिक, हीरा, और पन्ना ये पांचरत्न सब रत्नोंमें उत्तम है

सर्वरत्नोंकाशोधनतथामारण.

वज्रवत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा । प्रोक्तंनमारणंतेषांरत्नज्ञैःपृथगेवहि ॥

अर्थ—सब माणिक आदि रत्नोंका शोधन और मारण हीराके समान जानना इनका पृथक् नहीं कहा ।

उपरत्न.

वैक्रान्तःसूर्यकांतश्चचन्द्रकांतस्तथैवच । राजावर्त्तोलालसंज्ञःपेरोजाख्यस्तथापरे ॥ नीलपीतादिमणयोप्यन्येविषहराहिये । वन्ह्यादिस्तंभकायेचतेसर्वेहिपरिक्षकैः ॥ उपरत्नेषुगणितामणयोलोकविश्रुताः । रत्नादीनामलाभेतुग्राह्यंतस्योपरत्नकं ॥ मौक्तिकस्याप्यभावेतुमुक्ताशुक्तिंप्रयोजयेत् ।

अर्थ—वैक्रान्त, सूर्यकांत, चन्द्रकांत, राजावर्त्त, लाल, फीरोजा, और नीली तथा पीलीमणि विषहरणकर्त्ता तथा अग्नि स्तंभक जो रत्न हैं वो सब परीक्षकोंने उपरत्नोंकी गणनामें रक्खे हैं । जहां रत्न न मिले तहांउसकी प्रतिनिधिमें उसका उपरत्न लेना योग्य है मोतीके अभावमें मोतीकी सीप लेनी चाहिये ।

उपरत्नोंके गुण.

गुणायथैवरत्नानामुपरत्नेषुतेतथा । तेषुकिंचित्ततोहीनाविशेषोयमुदाहृतः ॥

अर्थ—जो गुण रत्नोंमें हैं वही उपरत्नोंमें हैं, परंतु रत्नोंकी अपेक्षा उपरत्नोंमें किंचित् न्यून हैं यह विशेष कहा है ।

वैक्रान्तकी उत्पत्ति.

दैत्येन्द्रोमाहिषःसिद्धःसहदेहसमुद्भवः ।
दुर्गाभगवतिदेवीतंशूलेनाविमर्दयत् ॥
तस्यरक्तंतुपतितंयत्रयत्रस्थितंभुवि ।
तत्रतत्रतुवैक्रान्तंवज्राकारंमहारसम् ॥
विंध्यस्यदक्षिणेचास्तिउत्तरेचास्तिसर्वतः ।
विकृतयतिलोहानितेनवैक्रांतिकःस्मृतः ॥

अर्थ—दैत्यपति महिषासुर और देवताओं-का घोर युद्ध हुआ, तब उस महिषासुरको भगवती शूलसे मारती हुई, उसकी देहसे रुधिर जहां २ पृथ्वीमें गिरा वहां २ वैक्रांति मणि हीराके सदृश महारस प्रगट हुई।यह विंध्यां-चलके दक्षिण भागमें तथा उत्तरमें सर्वत्र प्राप्त होती है, यह लोहेको विकृत करती है इसीसे इसको वैक्रान्त कहा है ।

मतान्तर.

देव्याहतेमहादैत्येमहिषासुरसंज्ञके ।
तद्देहरुधिरोद्भूताबिंदुर्यत्रयत्राहि ॥
पर्वतेषुविकारास्तुवैक्रांताइतिविश्रुताः ।

अर्थ—जब भगवतीने महिषासुरको मारा उसकी देहसे जो रुधिरकी बूंद जिस २ पर्वतमें गिरी उसीके विकारसे यह वैक्रान्तिमणि प्र-गट हुई यह रसेन्द्रकल्पद्रुमका लिखा हैं ।

तथाच.

दैत्येन्द्रोमाहिषःसिद्धःतस्यदेहात्समुद्भवः ।
अवध्यःसर्वदेवानांवलोनाममहासुरः ॥
त्रिदिवस्योपकारार्थंत्रिदिवैःप्रार्थितोमुखे ।
देवैःसमस्तैःशक्राद्यैःस्तुतिंदुर्गांप्रचक्रमुः ॥
तदादेवीभगवतीतंवज्रेणविनाशयत् ।
तस्यरक्तंतुपतितंयत्रयत्रस्थितंभुवि ॥
तत्रतत्रतुवैक्रान्तंवज्राकारंमहीधरं ।
वज्रसंज्ञाकृतोदेवैःनाममाप्तस्तुचोत्तमम् ॥
संभूत्वारत्नकूटानिवज्रेणहतमस्तकः ।
मूर्ध्निवर्णोत्तमोजातोभुजयोःक्षत्रियःस्मृतः ॥
वैश्योनाभिप्रदेशेतुपादाच्छूद्रस्तथैवच ।
सुरदैत्योरगैःसिद्धैःयक्षगंधर्वकिन्नरैः ॥
मुकुटेकटिसूत्रेचकटकादिविभूषणे ।
खचिताऽनेकरत्नानांत्रैलोक्येप्वपिदुर्लभाः॥

अर्थ—दैत्येन्द्र महिषासुर सिद्धकी देहसे प्रगट हुआ सर्व देवताओंसे अवध्य वलनामा महा असुर उसको स्वर्गके उपकारार्थ संग्राममें सब इन्द्रादिक देवता दुर्गाकी स्तुति करते हुए, तब भगवती देवताओंकी प्रसन्नतार्थ उसको वज्रसे मारती हुई, तब उसकी देहसे रुधिर जहां २ पृथ्वी और पर्वतादिकोमें गिरा वहां २ हीराकेसमान वैक्रांतमणि प्रगट हुई, इसकी देवोंने वज्रसंज्ञाकी इसप्रकार इसका उत्तम नाम पडा, वज्रसे जब उसका मस्तक तोडा सो रत्नखचित पर्वतोमें इसकी उत्पत्ति हुई जो उसके मस्तकके रुधिरसे बना वो ब्रा-ह्मणवर्ण वैकान्त प्रगट हुआ । भुजासे क्षत्री-वर्ण, नाभिसे वैश्यवर्ण, और पैरोंके रुधिरसे शूद्रवर्ण वैकान्त प्रगट हुआ, देव, दैत्य, सर्प, सिद्ध, यक्ष, गंधर्व और किन्नर इसको मुकट-कटिसूत्र-कडे-आदिभूषणोंमें अनेक रत्नोंसहित धारण करते हुए,यह रसेंद्रपद्मकोशसे लिखाहै ।

शुभवैक्रांतके लक्षण.

अष्टास्रश्चाष्टफलकःषट्कोणोमसृणोगुरुः ।
शुद्धमिश्रितवर्णैश्चयुक्तोवैक्रान्तमुच्यते ॥

अर्थ—आठ कोने, आठ फलक, छः कोने, चमचमाहट, भारी, शुद्ध, मिलेहुए वर्णका वै-क्रान्त उत्तम कहाता है ।

वैक्रान्तके वर्ण.

श्वेतोरक्तश्चपीतश्चनीलपारावतच्छविः ।
श्यामलःकृष्णवर्णश्चकर्बुरश्चाष्टधाहिसः ॥

अर्थ—सफेद, लाल, पीला, नीला, कबूतर के रंगका, श्याम, कृष्ण, कबरा, ये आठ प्रकारका वैक्रान्तमणि होता है।

मतान्तर

वैक्रान्तश्वेतपीतादिभेदेनाष्टप्रकारक।
स्वर्णरूप्यादिकेवर्णैस्वस्ववर्णःशुभोमतः॥
वैक्रान्तकृष्णवर्णोयःषट्कोणवसुकोणकः।
मसृणोगुरुतायुक्तोनिर्मलःसर्वसिद्धिदः॥

अर्थ—वैक्रान्तमणि सफेद पीले आदि रंगके आठ प्रकारवाली है, सुवर्ण रूपे आदि करके अपने २ वर्णोका उत्तम होता है जो कालेरंगका, और ६ तथा आठकोन वालाहो और चमचकाहट युक्त भारी और निर्मलहो वह सर्वसिद्धिदायक होता है।

अन्य प्रकारान्तर

श्वेतःपीतस्तथारक्तोनीलःपारावतप्रभः।
मयूरकण्ठसदृशश्चान्योमरकतप्रभः॥
देहसिद्धिकरकृष्णपीतेपीतंसितेसित।
सर्वार्थसिद्धिदरक्ततथामरकतप्रभ॥
शेषेद्वेनिष्फलेवर्ज्येवैक्रान्तमितिसप्तधाः।

अर्थ—सफेद, पीला, लाल, नीला, कबूतरकेरंगका, मोरकी गर्दनवाला, पन्नाके सदृश हरा, इन में काला देहकी शुद्धी करता है, सुवर्णबनानेमें पीला, चांदीबनानेमें सफेद और सर्व सिद्धिके निमित्त लाल और हरा वैक्रान्तमणि लेना योग्य है। बाकी दोरंगका नीला और कबूतरकेरंगका सो निष्फल और वर्जित है, ऐसे सात प्रकारका वैक्रान्तमणि जानना।

वैक्रान्तकी ग्रहणविधि

यत्रक्षेत्रेस्थितश्चैववैक्रान्तस्तत्रभैरव।
विनायकंचसंपूज्यगृह्णीयाच्छुद्धमानस॥

अर्थ—जिस स्थानमें वैक्रान्त होवे वहा भैरव और गणपतिका शुद्ध मनसे पूजनकर मणि गृहणकरे, किसी पुस्तकमें (शुभमुहूर्तेतु कार्यंसंपूज्यबलिपूर्वक) ऐसा लिखा है अर्थ शुभ मुहूर्तमें गणपति और भैरवका बलिआदिसे पूजनकर पीछे मणिको निकाले।

वैक्रान्तका शोधनमारण

वैक्रान्तवज्रवच्छोध्यनीलवालोहिततथा।
हयमूत्रेणतत्सेच्यतप्ततप्तत्रिसप्तधा॥
ततस्तुमेषशृङ्ग्युत्थपञ्चाङ्गेगोलके क्षिपेत्।
पुटेन्मूषापुटेरुन्ध्याकुर्यादेवंचसप्तधा॥
वैक्रान्तभस्मतांयातिवज्रस्थानेनियोजयेत्।

अर्थ—वैक्रान्त नीली हो वा लाल दोनों का हीराके समान शोधन करे, पीछे तपा २ कर १४ बार घोडेके मूत्रमें बुझावे, पीछे मेढासिंगीका पञ्चाङ्ग उसको कूटपीस गोला बना उसमें मणिको रख मिट्टीके सरावोंसे बंदकर ऊपर कपरौटी कर आरने उपलोंकी आँचसे गजपुटमें फूँकदे, इस प्रकार सातवारमें मणिकी भस्म होवे, इसको हीराकी भस्मके अभावमें देवे।

दूसरा प्रकार

वैक्रान्तवज्रवच्छोध्यध्मातं नृमूत्रके।
रजस्त्वमृतिमायातिवज्रस्थानेप्रयोजयेत्॥

अर्थ—वैक्रान्तमणिका हीराके समान शोधन करे, उसको अग्निमें तपाकर मनुष्यके मूत्रमें बुझावे, और इसका मारणभी हीराके सदृश होता है उसको हीराके अभावमें देवे।

तीसरा प्रकार

कुलित्थक्वाथसंस्विन्नोवैक्रान्तःपरिशुध्यति।
मृयतेपुटेर्णानिम्बुकद्रवसंयुतम्॥

अर्थ—वैक्रान्तकुल्थीके काढेमें औटानेसे शुद्ध होवे, और नींबूके रसमें गधक पीस

वैक्रान्तको उसमें लपेट अग्निदेवे इसप्रकार आठवारमें मणिकी भस्म हो।

चौथा प्रकार.

वैक्रान्तकस्तुविधिवत्रिदिनंविशुद्धोसंस्वेदितोक्षारपटूनिदत्वा अम्लेषुमूत्रेषुकुलित्थरंभानीरेथवाकोद्रववारिपक्वः ॥

अर्थ–वैक्रांतमणि-क्षारवर्ग, लवणवर्ग, अम्लवर्ग, मूत्रवर्ग, कुलथीका काढा, केलेकारस, अथवा कोदोंके काढेमें तीन ३ दिन स्वेदन करनेसे शुद्ध होवे।

पंचम प्रकार.

वैक्रान्तेपुचतप्तेपुहयमूत्रेविनिक्षिपेत्।
पौनपुण्येनवाकुर्यात्द्रवंदत्वापुटंतनु ॥
भस्मीभूतंतुवैक्रान्तंवज्रस्थानेनियोजयेत्।

अर्थ–वैक्रान्तको तपाकर घोडेके पेशावमें डालदे इस प्रकार बार ३ करे जब खूब गरम होजाय तब घोडेके मूत्रमें बुझावे तो भस्महोवे इसको हीराके अभावमें देवे।

वैक्रांतानुपान.

भस्मत्वंसमुपागतोविकृतकोहेम्नामृतेनान्वितो। पादांशेनकलाज्यवल्लसहितोगुंजोन्मितःसेवितः ॥ यक्ष्माणंज्वरणश्चपाण्डुगुदजंश्वासंचकासामयं। दुष्टंसंग्रहणीमुरःक्षतमुखान्रोगान्जयेदेहकृत् ॥

अर्थ–वैक्रान्तभस्म १ रत्ती, सुवर्णभस्म चौथाईरत्ती, पीपल, मिरच और मक्खनके साथ खानेसे खई, ज्वर, पाण्डु, बवासीर, श्वास, खांसी, असाध्यसंग्रहणी, और उरक्षत आदि रोगोंका नाश करे।

सूतभस्मार्द्धसंयुक्तःनीलवैक्रान्तभस्मकं।
मृताभ्रसत्वमुभयोस्तुलितंपरिमर्दितं ॥
क्षौद्राज्यसंयुतःप्रातर्गुंजामात्रंनिषेवितं।
निहंतिसकलान्रोगान्दुर्जयानन्यभेषजैः ॥
त्रिसप्तदिवसैर्नॄणांगंगांभइवपातकं।

अर्थ–पारेकीभस्म १ भाग, नीलवैक्रान्तकी भस्म आधाभाग, दोनोंके समान मरीअभ्रक इन सबको सहत और घृतमें मिलाकर प्रातःकाल एकरत्ती नित्य खाय तो संपूर्ण दुर्जय (असाध्य) रोगोंको दूरकरें, २१ दिवस सेवन करनेसे देहको गंगाजलके समान पवित्र करे

वैक्रांत भस्मके गुण.

वैक्रान्तवज्रसदृशोदेहलोहकरोमतः।
विषघ्नोरसराजस्यज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत् ॥
वैक्रान्तस्तुत्रिदोषघ्नःषड्सोदेहदार्ढ्यकृत्।
पांडूदरज्वरश्वासकासयक्ष्मप्रमेहनुत् ॥

अर्थ–वैक्रान्तकेगुण हीराके समान है यह देहको दृढकरे, पारेका विष दूरकरे, ज्वर, कोढ, खई, त्रिदोष, पाण्डु, ज्वर रोग, श्वास, खाँसी और क्षयका नाश करे, प्रमेहको जीते, यह षट्रसयुक्त हैं।

वैक्रांतका सत्वपातन.

सत्वपातनयोगेनमर्दितश्चवटीकृतः ॥
मूषास्थोघटिकाध्मातोवैक्रान्तःसत्वमुत्सृजेत्।

अर्थ–प्रथम जो सत्वपातनके योग कह आये हैं, उनमें वैक्रान्त मर्दनकर गोलाकरे उसको मूषमें रख एकघडी प्रचंड अग्निमें धमावे तौ वैक्रान्तमणि सत्त्वको छोड देवे।

दूसरा प्रकार.

मोक्षमोरटपालशक्षारगोमूत्रभावितं।
वज्रकंदनिशाकल्कंफलचूर्णसमन्वितम् ॥
तत्कल्कंटंकणंलाक्षाचूर्णंवैक्रान्तसंभवं।
शरावेणसमायुक्तंमेषशृंगीद्रवान्वितं ॥
पिंडितंमूकमूषास्थंध्मापितेचहठाग्निना।
तत्रैवपततेसत्वंवैक्रान्तस्यनसंशयः ॥

अर्थ–मोक्षवृक्ष (मोखावृक्ष) मोरट (शोरा या खैर इतिदक्षिणी भाषा प्रसिद्ध) और ढाक इनतीनोंके खारको गोमूत्रकी भावना देवे तदनंतर वज्रकंद (थूहरकीजड) हल्दीका कल्क इनमें कंकोलका चूर्ण मिलाकर मेढासिंगीका रस मिलाय गोला बनावे उसको वज्रमूषामें रख प्रचंड अग्निसे धमावे तो वैक्रान्तका सत्व निश्चय निकले।

तीसरा प्रकार.

वैक्रान्तस्यपलंचैकंकर्षैकंटंकणस्यच।
रविक्षीरैर्दिनैर्भाव्यंमर्द्यंशिग्रुदिनैर्द्रवं॥
गुञ्जापिण्याकवन्हीनांप्रतिकर्षाणियोजयेत्।
एतेनगुटिकांकृत्वाकोष्टयंत्रेधमेद्दृढं॥
शंखकुंदेन्दुसंकाशंसत्ववैक्रान्तजंभवेत्।

अर्थ–चारतोले वैक्रान्त-दोतोले सुहागा. दोनोंको एक दिन आकके दूधमें घोट सहजनेके रसमें एकदिन घोटे, पीछे घूंघची-खल. तथा चित्रकको एक २ तोलाले उसमें वैक्रांतको खरलकरे और गोला बनाय कोष्टयंत्रमें रख वंकनालसे धोंकेतो शंख कंदपुष्प और चंद्रमाके समान सफेद सत्व निकले।

संपूर्ण रत्नोंका शोधनमारण.

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रेजयंत्यास्वरसेनच।
मणिमुक्ताप्रवालानांयामैकंशोधनंभवेत्॥
कुमार्यास्तंदुलीयेनस्तन्येनचनिषेचयेत्।
प्रत्येकंसप्तवेलंचतप्ततप्तानिकृत्स्नशः॥
मौक्तिकानिप्रवालानितथारत्नान्यशेषतः।
क्षणाद्विविधवर्णानिम्रियंतेनात्रसंशयः॥
उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताःप्रवालानिचमारयेत्।
वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मारयेत्तथा॥

अर्थ–सूर्यमणि मोती और मूंगाको दोलायंत्रमें डालकर जयंती (अरनी) के रसमें एकप्रहर स्वेदन करे तो शुद्ध होवेइसी प्रकार हीरा, पन्ना, पुंखराज (पीलेरंगकीमणि) माणिक (लालरंगकीमणि) इसको फारसीमें आफत कहते हैं, इन्द्रनील (स्यामता लिये नीलेरंगकी) गोमेद (पीलापन लिये लाल) वैदूर्य (जमीन हरी ऊपर तीनसफेद सूत) मोती और मूंगा ये नवरत्नकहाते हैं। हीराको फारसीमें अलमास कहतेहैं, और खोटे हीराके भाषामें काँसुला कहते हैं और संस्कृतमें वैक्रान्त कहते हैं और खोटी नीलमणिको नीलीकहते हैं, खोटा माणिक तामडा कहाता है, खोटा पुखराज करकत कहाता है, इनको गुवारके रस चौलाईके रस और स्त्रीकेदूधमें गरमकर२ सात२ वार बुझानेसे मोती मूंगा तथा और अनेकप्रकारके रत्न भस्महोवे; तथा मोती मूंगा आदिका सोनामक्खीके समान मारणकरे अथवा पन्ना, पुखराज, मांणिक, इन्द्रनील, वैदूर्य, मोती और मूंगा आदिका हीराके समान शोधनमारण करे।

रसोपरस.

सिद्धंपारदमभ्रकंचविविधान्धातुंश्चलोहानि चप्राहुःकिंचमणीनथश्चसकलान्संस्कारतःसिद्धिदान्॥यत्संस्कारविहीनमेषुहिभवेद्यचान्यथासंस्कृतं तन्मर्त्यंविषवद्विहंतितदिहज्ञेयाबुधैःसंस्क्रिया। यत्संकृताशुभगुणानथचान्यथावैदोषांश्चयद्यपिदिशंतिरसादयोमी॥ याश्चेहसंतिखलुसंस्कृतयस्तदन्तेनात्राभ्यधायि बहुविस्तरभीतिभाग्भिः॥

अर्थ–पारा, अभ्रक, अष्टधातु, सप्तउपधातु रत्न, और उपरत्न, एसंस्कार करनेसे गुणदायक होते हैं। अगर इनका संस्कार न हुआ होतो ये मनुष्यके विषके समान प्राण हरलेते

हैं। रसोपरसादि विधिपूर्वक संस्कार करनेसे जो गुण करते हैं सो अविधि संस्कारकरनेसे अवगुण करते हैं सो सब शास्त्रमें लिखे हैं उन सबको ग्रन्थविस्तारभयसे नहीं लिखते।

सूर्यकान्त.

शुद्धःस्निग्धोनिर्व्रणेनिस्तुपस्तुयोनिर्घृष्टोव्योमनैर्मल्यमेति। यःसूर्यांशुस्पर्शनिष्ठ्यूतवन्हिर्जात्यःसोयंचक्ष्यतेसूर्यकान्तः॥

अर्थ–सूर्यमणि चिकनी, व्रणरहित, निस्तुप, घिसनेसे आकाशके समान स्वच्छहो, सूर्यकी किरणोंमें रखनेसे जलउठे उसको जातिवंत सूर्यकान्तमणि कहते हैं।

गुण.

रविकान्तोभवेदुष्णोनिर्मलश्चरसायनः।
वातश्लेष्महरोमेध्यःपूजनाद्रवितोषकृत्॥

अर्थ–सूर्यकान्तिमणि गरम, निर्मल और रसायन है वादी और कफका नाश करे बुद्धिको बढावे,इसके पूजनसे सूर्य प्रसन्न होते हैं।

चंद्रकान्त.

स्निग्धंश्वेतंपीतमात्राच्छमंतर्द्धत्तेचित्तेस्वच्छयायन्मुनीनां। यच्चैसावंयातिचंद्रांशुसंगाज्जात्यारत्नंचन्द्रकांताख्यमेतत्॥

अर्थ–चंद्रकान्तिमणि, चिकनी, सफेद वा पीली, मुनीश्वरोंके अंतःकरणके समान निर्मल तथा चांदनीमें रखनेसे जलछोडे उसे जातिवंत जानना।

गुण.

चन्द्रकान्तस्तुशिशिरःस्निग्धःपित्तास्त्रतापनुत्। शिवप्रीतिकरःस्वच्छोग्रहालक्ष्मीविनाशनः॥

अर्थ–चंद्रकान्तिमणि शीतल, चिकनी, शिवकी प्रीतिबढानेवाली और स्वच्छ होती है पित्तरक्त, दाह, ग्रहपीडा और अलक्ष्मीकी बाधाको दूरकरे।

राजावर्त्त.

राजावर्त्तोल्परुक्तोरुनीलमामिश्रितप्रभः।
गुरुत्वमसृणःश्रेष्ठस्तदन्योमध्यमःस्मृतः॥

अर्थ–राजावर्त्त (खेटी) थोडालाल-कुछ नीलता मिश्रित, भारी, चकचकाहटयुक्त ऐसा उत्तम होता है। इसके विपरीत मध्यम इसको दक्षिणीभाषामें गोविन्दमणि कहते हैं।

निर्गारमसितमसृणंनीलंगुरुनिर्मलंपहुच्छायं। शिखिकंटसमंसौम्यंराजावर्त्तंवदंतिजात्यमणिः॥ राजावर्तोद्विधाप्रोक्तःगुटिकाश्चूर्णभेदतः।

अर्थ–राजावर्त्त-गढेलारहित, काला, चिकना, नीलवर्ण, भारी, निर्मल, बहुत छायायुक्त, मोरकी गर्दनकेसेरंग, और सौम्य जातिवंत होता है, यह गुटिका और चूर्णकेभेदसे दो प्रकारका है।

गुण.

प्रमेहक्षयदुर्नामपाण्डुश्लेष्मानिलापहः।
दीपनःपाचनोवृष्योराजावर्त्तोरसायनः॥
राजावर्त्तोगुरुस्निग्धोशिशिरःपित्तनाशनः।
सौभाग्यंकुरुतेनृणांभूषणेपुप्रयोजितः॥

अर्थ–प्रमेह, खई, बवासीर, पांडुरोग, कफ और वातविकारोंका नाश करे। दीपन, पाचन, वृष्य, रसायन, भारी, चिकना, शीतल और पित्त नाशक है। भूषणमें धारण करनेसे सौंदर्यदाता ये राजावर्त्तके गुण हैं।

राजावर्त्तका शोधन.

शिरीषपुष्पार्द्ररसैःसंतप्तश्चनिमज्जितः।
सप्तवारंभवेत्शुद्धोराजावर्त्तोनसंशयः॥

अर्थ–सिरसके फूलके रस और अदरकके

रसमें राजावर्त्तको तपा २ कर७ वारबुझावे तो शुद्ध होवे ।

दूसरा प्रकार.

निंबुद्रवैःसगोमूत्रैःसक्षारैःस्वेदतोखलु ।
द्वित्रिवारेणशुध्यंतिराजावर्त्तादिधातवः ॥

अर्थ-राजावर्त्तको गोमूत्र और क्षारयुक्त नींबूके रसमें दोतीनवार स्वेदन करनेसे शुद्धी होवे । आदि शब्दसे मोती, मूंगा, फीरोज आदिभी शुद्ध होते हैं ।

राजावर्त्त मारण.

लुंगांबुगंधकोपेतोराजावर्त्तोविचूर्णितः ।
पुटनात्सप्तवारेणराजावर्त्तोमृतोभवेत् ।

अर्थ-राजावर्त्तके चूर्णमें गंधक मिलाय बिजौरेके रसमें घोट शरावेमें रख गजपुटमें फूँके, इस प्रकार सात वारमें राजावर्त्तकी भस्म होवे ।

राजावर्त्तका सत्वपातन.

राजावर्त्तस्यचूर्णंतुकुनटीघृतमिश्रितं ।
विपचेदायसेपात्रेमहिषीक्षीरसंयुतं ॥
सौभाग्यपंचगव्येनपिंडीवद्धंतुकारयेत् ।
धामितंखदिरांगारैःसत्वंमुंचतिशोभनम् ॥

अर्थ-राजावर्त्तके चूर्णमें मनसिल और घृत मिलाय लोहपात्रमें दूधमें औटावे तदनन्तर सुहागा पंचगव्य (दूध, दही, घृत, गोमूत्र, गोवर) से पूर्वोक्त राजावर्त्तका गोलाबनाकर परियामें रख खैरसारके कोलोंमें बकनालमें धोंकेतो राजावर्त्त सत्व छोडे ।

फीरोजा.

पिरोजंहरितस्यामंभस्मांगंहरितंद्विधा ।
पिरोजसुकषायंस्यान्मधुरंदीपनंपरं ॥
स्यादरंजंगमंचैवसंयोगाचयथाविषम् ।
तत्सर्वंनाशयेच्छीघ्रंशूलभूतादिदोषजं ॥

अर्थ-फीरोजा पत्थर-भस्मांग और हरा दोप्रकारका होता है यह कसेला, मधुर और दीपन है, संयोगसे स्थावर जंगम विष, शूल तथा भूतादिकोंका दोष नाश करता है ।

स्फटिक.

यद्गंगातोयबिंदुच्छविविमलतमंनिस्तुषंनेत्र्य-हृद्यं । स्निग्धंशुद्धांतरालंमधुरमातिहिमंपित्तदाहास्रहंता ॥ पाषाणेयन्निघृष्टंस्फुटितमपिनिजांस्वच्छतांनैवजह्यात्तज्जात्यंजात्वलंभ्यंशुचिमपिचिनुतेशैवरत्नंचरत्नम् ॥

अर्थ-जो स्फटिकमणि गंगाजलके समान स्वच्छ अग्निके समान, चकचकाहटदार, विंदुरहित, नेत्र और हृदयको हितावह, चिकना, जिसका भीतरकाभाग शुद्ध, मधुर, अत्यंत शीतलहो, पित्त-दाह-रुधिरविकारको शान्तिकरे, पत्थरपर घिसनेसे जिसकी स्वच्छता न जाय, उसे जातिवंत जानना इसको रत्नोंमें शिवप्रिय जानना ।

स्फटिकके गुण.

स्फटिकःसमवीर्यःस्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत् । तस्याक्षमालांजपतोधत्तेकोटिगुणंफलम् ॥

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्य, है, पित्त दाह तथा शोषका नाश करे, इसकी माला जपनेसे करोडगुणा फल हो ।

सर्व रत्नोंके लक्षण.

स्यामंस्यादिन्द्रनीलस्त्वतिमसृणतनुश्चाति-

१ स्फटिककी उत्पत्ति और परीक्षा । कावेरीविंध्ययवनचीननेपालभूमिषु । लांगलीव्यकिरन्मेदोदानवस्यप्रयत्नतः ॥ आकाशशुद्धंतैलाख्यमुत्पन्नंस्फटिकंततः । मृणालशंखधवलंकिंचिद्वर्णान्तरान्वितं ॥ नतत्तुल्यंहिरत्नानामथवापापनाशनम् । संस्कृतंशिल्पिनासद्योमूल्यंकिंचिल्लभेत्ततः ॥

गारुत्मतःस्यान्नीलच्छायोऽतिदीप्तोऽप्यथपि हरिमणिःसूर्यतप्ताग्निमुक्स्यात् ॥ चंद्रांशुस्पर्शतोंभःस्रवतिशशिमणिःपुष्परागस्तुपुष्प प्रख्यःश्रीवज्रमुच्चैर्घनसहप्रभितोसंविशेल्लोह पिंडे ॥ वैदूर्ययद्विडालेक्षणरुचिगदितंस्याच्च गोमेदरत्नंगोमूत्राभंविधूमंज्वलदनलनिभंपद्म रागंवदंति । मुक्ताशंखप्रवालंसरिदधिपतिजं विश्वविख्यातमेतद्राजावर्त्तेतुपीतारुणमृदुसुर भिक्षोणिजातोत्थमाहुः ॥

अर्थ–इन्द्रनीलमणि श्यामवर्ण-अत्यन्त चिकनी, गरुडमणि (पन्ना) चिकनी-नील-तालिये चकचकाहट वाली हरिन्मणि । सूर्य-मणि सूर्यकेतेजसे अग्नि प्रगट करे, चंद्रकांति-मणि चंद्रमाकी कांतिसे स्रवे, पुष्पराग फूलके परागके समान पीला, हीरा जो निहाईपर घनकी चोट लगानेसे निहाई तथा घनमें प्रवेश होजाय, वैदूर्यमणि बिलावके नेत्रोंके समान कांतिवाली, गोमेद गोमूत्रके वर्ण, पद्मराग निर्धूम अग्निके समान, मोती शंख और मूंगा समुद्रमें होते हैं ये सब विख्यात हैं राजावर्त्त पीत और अरुणवर्ण, चिकना और स्वच्छ होता है । ये सब खानसे प्रगट होते हैं ।

सत्वपातनार्थं सामान्य शोधन.

महारसानांसर्वेषां रसानांशुद्धिरुच्यते ।
तथाचोपरसानांच शास्त्रदृष्टेनवर्त्मना ॥
वंध्याकंदंपीतवेणी सुलकांवर्तयायसी ।
वारिपिप्पलिकाचैव कदलीसपुनर्नवा ॥
कोशातकीमेघनादो वज्रकंदश्चलांगली ।
एपांचैवरसैःसम्यक् पटुक्षीराम्लसंयुतैः ॥
भावितव्यारसाःसर्वे विषोपविषभिःक्रमात् ।
महारसाश्चसर्वेपि शुद्ध्यंत्युपरसास्तथा ॥
पश्चाध्मातावियुंचंति सत्वंबहुलमुत्तमम् ।

सत्व पातन.

गुडगुग्गुलसौभाग्यं लाक्षासर्जरसःपटु ।
ऊर्णागुंजाक्षुद्रमीन मस्थीनिशशकस्यच ॥
तथामध्वाज्यपिण्याकं तुल्यंपेष्यमजापयैः ।
सर्वतुल्यंचधान्याभ्रं भूनागामृतिकाथवा ॥
कांतपाषाणचूर्णंवा कठिनोपरसाश्रये ।
मेलयेन्माहिषैपंच दृढंसर्वगुटीकृताः ॥
कर्षमात्रप्रमाणांच कोष्ठ्यंत्रेदृढंधमेत् ।
अंगारैर्खदिरोद्भूतैः त्रिवारंधमनाद्ध्रुवं ॥
निर्मलंपततेसत्वं असाध्यस्याप्यसंशयः ।

सत्व पडनेकी परीक्षा.

शुक्रदीप्तःसशब्दश्च यदावैश्वानरोभवेत् ।
तदासत्वंतुपतितं जानीयान्नान्यथाक्वचित् ॥
तथाग्नौदक्षिणावर्त्ते सत्वंप्रपतितंवदेत् ।

सत्व नम्र करनेकी विधि.

यदिसत्वंतुकठिनं भवेत्तत्रमृदुक्रिया ।
सत्वंसमस्तंसंग्राह्यं काचकिट्टंविवर्जयेत् ॥
निक्षिप्यवज्रमूषायां वंकनालेनसंधमेत् ।
स्तोकंस्तोकंददन्नागं समद्वित्रिचतुर्गुणं ॥
यावत्सकोमलंताव त्ससत्वंयोजयेद्रसे ।

प्रकारान्तर.

अथवाकठिनंसत्वं वज्रमूषांतरेस्थितं ।
समटंकणसौवीरं द्रोणपुष्पीरसेनवं ॥
खदिरांगारकेध्मातं ढालयेद्वोघृतेनवै ।
कोमलंजायतेसत्वं नात्रकार्याविचारणा ॥

नम्रसत्वके खाने और पारेमें मिलानेका प्रमाण.

नसत्वंकठिनंसूते देहेवाक्रमतेक्वचित् ।
तस्मात्सत्वंचलोहंच मृदुंकृत्वाप्रयोजयेत् ॥
इतिरसार्णवे ।

सत्व पातन काले वन्हि लक्षणं

आवर्त्तमानंकनकेपीतातारेसितप्रभा ।

शुल्वेनीलनिभातीक्ष्णेकृष्णवर्त्मासुरेश्वरी ॥ वंगेज्वालाकपोताभानागेमलिनधूसरा । शैलेतुधूसरादेविआयसेकपिलप्रभा ॥ अयस्कान्तेधूम्रवर्णाशस्येचलोहिताभवेत् । वज्रेनानाविधाज्वालात्वासत्वेपांडुरप्रभा ॥

शुद्ध सत्वकी परीक्षा.

नविस्फुलिंगानचबुद्बुदायदा यदानचैषांप-टलंनशब्दः । मूषागतंरत्नसमस्थिरंच तदा-विशुद्धंप्रवदन्तिसत्वम् ॥

तथाच.

शुल्वेदीप्तिःसशब्दःस्या यदावैश्वानरोभवेत् । लोहावर्त्तसमंज्ञेयं सत्वंपततिनिर्मलं ॥

घरिया बनानेका प्रमाण.

षोडशांगुलविस्तीर्णा हस्तमात्रायताशुभा । धातुसत्वनिपातार्थं कोष्ठिकावरवर्णिनी ॥ वंसखादिरमाधूक बदरीदारुसंभवैः । परिपूर्णाद्दढांगारै रथवातेनकोष्ठकैः ॥ भस्त्रयाज्वालमार्गेण उज्वलयेच्चहुताशनं । इतिरससिंधौ ॥

सत्व और द्रुतिके गुण.

यस्यद्रव्यस्ययत्सत्वं तद्गुणस्तच्छताधिकं । द्रुतिःशतगुणातस्माद्रसयुक्तात्ततोधिका ॥

मूष बनानेका क्रम.

प्रविततमुखभागःसंवृतांतःप्रदेशः स्थलविर-चितवीरांतर्जेलिकोष्ठकंस्यात् । वकगलक-समानंचक्रमालंविधेयं ससुषिरनलिकान्या-मृन्मयादीर्घवृत्ता ॥ सिद्धासिध्यसमानित्यं-सूरास्त्यागसमन्विताः । असिद्धेनोपहास्ये-तनासिद्धेप्यभिनंदति ॥

विष प्रकरणम्.

शृणुदेविप्रवक्ष्यामि यत्रोत्पन्नंमहाविषं । भेदांस्तस्यवरारोहे यत्रतत्रसविस्तरं ॥

देवदैत्योरगाःसिद्धा अप्सरोयक्षराक्षसाः । पिशाचाःकिन्नराश्चैव मिलित्वाचवरानने ॥ एकतोबलिराजश्च ब्रह्माद्याश्चतथैकतः । मंथानंमंदरंकृत्वा नागराजेनवेष्टितं ॥ क्षीराब्धिमथनंतत्र मारब्धंसुरसुंदरि । निर्गतास्तत्ररत्नानि कामधेन्वादयःप्रिये ॥ अमलाकमलोत्पन्ना पश्चादुच्चैःश्रवाततः । ऐरावतोमहाकायो निर्गतंदेविचामृतं ॥ अतीवमथनादेवि मंदरावातवेगतः । अहिराजश्रमादेवि विषज्वालाविनिर्गता ॥ ततोतिघोरासाज्वालानिमग्नाक्षीरसागरे । मलयाऽनलसंकाशःक्रुद्धाःकालइवोत्कटः ॥ तंदृष्ट्वाविबुधासर्वेदानवाश्चमहाबलाः । विषण्णावदनाःसद्यःप्राप्ताश्चैवमदंतिकं ॥ ततस्तैःप्रार्थ्यमानोहमपिबंविषमुत्तमं । ततोवशिष्टमभवन्मूलरूपेणतद्विषं ॥ पत्ररूपेणकुत्रापिमृत्तिकारूपतःक्वचित् । कंदरूपेणकुत्रापित्रयोदशविधंविषम् ॥

अर्थ—हे पार्वती ! मैं तेरे आगे विषकी उत्पत्ति तथा स्थान और भेद कहताहूँ, तू सुन पहले देवता-दैत्य-सर्प-सिद्ध-अप्सरा-यक्ष-राक्षस-पिशाच और किन्नरोंने मिलकर समुद्रको मथा एक ओर सब दैत्य राक्षसोंको ले राजा बलिखडा हुआ, दूसरी ओर सब देवताओंको साथले ब्रह्माजी खडे हुए । उन्होंने मंदराचलकीरई, वासुकीसर्पकी नेती (डोरी) बनाकार, हे सुरसुन्दरी ! सबने समुद्र मंथनका प्रारंभ किया, उसमें कामधेनु आदि चौदहरत्न निकले, लक्ष्मी उच्चैश्रवाघोडा, ऐरावत हाथी तदनंतर अमृत पीछे अत्यन्त मथन करने और मंदराचलके घमरके देनेसे हे देवि ! सर्पको अत्यन्त श्रम होनेसे मुखसे विषकी ज्वाला उत्प-

न्न हुई वह घोरज्वाला क्षीरसागरमें लीन हो-गई तदनंतर वही अग्निके समान तथा क्रोधित कालके समान हलाहलविष प्रगट हुआ, उस-को सब देव दानव देखकर मलिनमुख होते हुए मेरे समीप आकर स्तुतिकी, तब मैं प्रसन्न होकर विषको पीता हुआ, जो मेरे पीनेसे बाकी रहा वह कहीं जडरूप, कहीं पत्ररूप, कहीं मिट्टी और कहीं कंदरूपसे प्रगट हुआ उसके तेरह भेद हैं ।

विषभेद.

तेषुश्रेष्ठंकंदविषंत्रयोदशविधंस्मृतं ।
कर्कटंकालकूटंचवत्सनाभंहलाहलं ॥
वालुकंकर्दमंचैवसक्तुकंमूलकंतथा ।
सर्षपंशृंगकंदेविमुस्तकंचमहाविषं ॥
हरिद्रकमितिप्रोक्तंत्रयोदशविधंविषं ।

अर्थ–पूर्वोक्त विषोंमें कंदविष उत्तम है, वह तेरह प्रकारका है कर्कट १, कालकूट २, वत्सनाभ ३, हलाहल ४, वालुक ५, कर्दम ६, सक्तुक ७, मूलक ८, सर्षप ९, शृंगक १०, मुस्तक ११, महाविष १२, और हरिद्रक

कहे हुए विषोंके वर्ण.

कर्कटंकपिवर्णस्यात्काकचंचुनिभंपुनः ।
कालकूटंततोज्ञेयंवत्सनाभंतुपाण्डुरं ॥
भंगुराकंदवद्देविनीलवर्णंहलाहलं ।
वालुकंवालुकाभंचकर्दमंकर्दमोपमं ॥
सक्तुकंश्वेतवर्णस्याच्छुक्लकंदंतुमूलकं ।
सर्षपंपीतवर्णस्याच्छृंगकंकृष्णपिंगलं ॥
मुस्ताभंमुस्तकंप्रोक्तंरक्तवर्णंमहाविषं ।
हरिद्रंपीतवर्णंविषभेदाःप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ–कर्कटविष-कपिवर्ण अर्थात् बंदरके-रंगका होता है, कालकूट कौएकी चौंचकेवर्ण, वत्सनाभ पीला भंगुरकंदके समान, हलाहल, नीला, वालुक-वालूके रंग, कर्दम कीचसा, सक्तुकश्वेत, मूलककी सफेद गांठ, सर्षप पीला, शृंगक (सींगिया) काला और पीला, मुस्त-क नागरमोथाके समान, महाविष लाल और हरिद्रक विष हरदीके रंग होता है ये विषके भेद हैं ।

मतान्तर.

विषंचगरलंक्ष्वेडंकालकूटंचनामतः ।
अष्टादशविधंज्ञेयंविषकंदमिमंबुधैः ॥
तेष्वष्टौसौम्यभेदाःस्युभक्षणात्घ्नंतिमानवं ।
दशोग्रभेदास्संस्पर्शादाघ्राणाद्वापिमारकाः ॥
सक्तुकोमुस्तकश्चैवकौर्मोदारकसार्षपः ।
सैकतोवत्सनाभश्चश्वेतशृंगीतथैवच ॥
एतानिभेषजकृतेविषाण्यष्टौसमाहरेत् ।
जराव्याधिहराणिस्युविधिनाशीलितानिहि

अर्थ–विष, गरल क्ष्वेड और कालकूट नामोंसे प्रसिद्ध है । कंदविष १८ प्रकारका पंडितोंने कहा है, जिनमें आठ सौम्य हैं जि-नके खानेसे मरता है, और बाकी दश उग्र जिनके छूने तथा सूंघनेसेही मृत्यु होती है, तहां सक्तुक, मुस्तक, कौर्म, दारक, सार्षप, सैकत, वत्सनाभ और श्वेतशृंगिक ए आठ सौम्य हैं ए औषधियोंमें ग्रहण करने योग्य हैं, इनको विधियुक्त खानेसे बुढापे और व्याधियोंका नाश होता है ।

लक्षण.

चित्रमुत्पलकंदाभंसुपेष्यंसक्तुवद्भवेत् ।
सक्तुकंतुविजानीयाद्दीर्घरोगंमहोत्कटं ॥
ह्रस्ववेगंचरोगघ्नंमुस्तकंमुस्तकाकृतिः ।
स्थूलसूक्ष्मकणैर्युक्तंश्वेतपीतैर्विरोमकः ॥
ज्वरादिसर्वरोगघ्नःकंदःसैकतउच्यते ।
यःकंदोगोस्तनाकारोदीर्घःपंचमथांगुलात् ॥

नस्थूलोगोस्तनादूर्ध्वंद्विविधोवत्सनाभकः।
आशुकारीलघुस्त्यागीशुक्लकृष्णोन्यथाभवेत्
प्रयोज्योरोगहरणेजारणेचरसायने ॥
गोशृंगद्विविधोशृंगीश्वेतःस्याद्बहिरंतरे।
एतानिसक्तुकादीनिवातरक्तेत्रिदोषके ॥
महोन्मादापस्मृतिषुकुष्ठेषुचनियोजयेत् ॥

अर्थ—जो चित्रवर्ण कमलकंदके समान और सहजमें पिसजाय तथा सत्तूके समान होवे, उसे सात्कुकविष कहते हैं, जिसका वेग हलका, रोगनाशक, नागरमोथाके समान हो वह मुस्तक, कछवेके सदृश कौर्म, सर्पफणके सदृश दारक,यह ज्वरनाशक है और पीलीसरसोंके समान सार्षप, छोटेबडे कणोंयुक्त सफेद किंवा पीला विरोमक, ज्वरादि सर्वरोगोका, नाशक कंदरूप सैकत, जो कंदरूप गौकेथनके समान पांच अंगुल बहुत मोटा वत्सनाभ, यह सफेद और काले रंगोंकरके दो प्रकारका है जिनमें सफेद शरीरमें जियादा गुण करता है, यह हलका और दस्तावर है काला इसके विपरीत गुण करता है, इसे रोग नाश करने और रसायन विषयमें देना चाहिये, गोशृंगविष दोप्रकारका है एक बाहर भीतर सफेद तथा दूसरा काला ए कहे हुए सक्तुकादिक विष वातरक्त, त्रिदोष, प्रमेह, उन्माद, अपस्मार (मृगी) और कुष्ठरोगोंमें देने चाहिये।

मतांतर.

कालकूटंवत्सनाभःशृंगकश्चप्रदीपन।
हालाहलोब्रह्मपुत्रहरिद्रःसक्तुकस्तथा॥
सौराष्ट्रकइतिप्रोक्ताविषभेदाअमीनव।

अर्थ—कालकूट, वत्सनाभ, शृंगक, प्रदीपन, हालाहल, ब्रह्मपुत्र, हारिद्रक, सक्तुक और सौराष्ट्रिक ये विषके नौ भेद हैं।

वर्ज्य विष.

कालकूटस्तथामेषशृंगीदर्दुरकस्तथा।
हालाहलश्चकर्कोटीग्रंथिहारिद्रकस्तथा॥
रक्तशृंगीकेशरश्चयमदंष्ट्रश्चपंडितैः।
त्याज्यानीमानियोगेषुविषाणिदशतत्वतः॥

अर्थ—कालकूट, मेष, शृंगी, दर्दुरक, हालाहल, कर्कोटी, ग्रंथि, हारिद्रक, रक्तशृंगी, केशर और यमदंष्ट्र, इन १० विषोंको योगमें डालनेको पंडितोंने मना किया है।

लक्षणान्तर.

वृत्तःकंदोभवेत्कृष्णोजंबीरफलवच्चयः।
तत्कालकूटंजानीयात्घ्राणमात्रान्मृतिप्रदं॥
मेषशृंगाकृतिःकंदोमेषशृंगीतिकथ्यते।
दर्दुराकृतिकंदस्यादर्दुरःकथितस्तुसः॥
गोस्तनाभंफलंगुच्छंस्तालवृक्षच्छदस्तथा।
तेजसायस्यदह्यंतेसमीपस्थाद्रुमादयः॥
असौहालाहलोज्ञेयोकिष्किंधायांहिमालये।
दक्षिणाब्धितटेचास्तेकौंकणेपिचजायते॥
अनलोवहिरंतश्चहालाहलमुदाहृतम्।
कर्कोटकाभंकर्कोटंरेखाभ्यंतरतोमृदुः॥
हरिद्राभंगवग्रंथिःसःस्यात्कृष्णोतिभीषणः।
मूलाग्रयोस्तुवृत्तःस्यादापीतःपीतगर्भकः॥
कंचुकाढ्यःस्निग्धपर्वोहारिद्रःसक्तुकंदकः।
गोशृंगघ्राणयात्रेणनासयासृक्प्रवर्त्तते॥
कंदोलघुश्चास्तिनवद्रक्तःशृंगीतितद्विषं।
शुष्कार्द्रवस्तुकिंजल्कमध्येतत्केशरंविदुः॥
स्वदंष्ट्राख्यपसंस्थानंयमदंष्ट्रेतिचोच्यते।
रसायनेधातुवादेविषवादेक्वचित्क्वचित्॥
दशैतानिप्रयुंजीतनभैषज्येरसायने।

अर्थ—जिसका कंद जंबीरी नींबूके समान गोल और काला हो उसे कालकूट विष जानना, इसकी गंध वा स्पर्शसेही मनुष्य मरजाता है,

जिसका कंद मेंढेके सींगके समान हो वह मेष-शृंग, और जिसका कंद मेंडकके समान हो उसे दर्दुरविष, जिसका दांखोंके समान गुच्छा और पत्ते ताडकेसे हो जिसके तेजसे पासके सब वृक्ष दहन हो जावे उसे हालाहलविष कहते हैं, यह किष्किंधा हिमालय दक्षिणीय समुद्र किनारे और कोंकण देशमें होता है, जो भीतर बाहर अग्निके समान और जिसपर कर्कोटक सर्प कीसी रेखा हों और नम्र हो उसे कर्कोटक, जिसकी जड हल्दीकी गांठके आकार और काली हो उसे कृष्णक, जिसका कंद जडसे ऊपरतक गोल भीतरसे पिलाई लिये और अधिक छालवाला गांठ चिकनी ऊपर काँटे और हल्दीके समान पीला हो वह सक्तुक कहाता है। जिसके कंदके सूँघनसे नाकसे रुधिर निकले और वह गौके थनोंके समान छोटा हो उसे रक्तशृंगीविष कहते हैं। कुछ गीला और कुछ सूखा जिसके फूल केशरके तुल्य हो वह केशरविष कहाता है, कुत्तेकी डाढके आकार यमदंष्ट्र कहलाता है, ये दश-विष रसायन रूप जो धातुवाद और विषोंमें कहीं २ दिये जाते हैं इनको औषधियोंमें न डालना न रसायनमें देने।

मतांतर.

वत्सनाभोहरिद्रश्चसक्तुकःसप्रदीपनः।
सौराष्ट्रिकःशृंगिकश्चकालकूटस्तथैवच ॥
हालाहलोब्रह्मपुत्रोविषभेदाअमीनव।

अर्थ–वत्सनाम, हरिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृंगिक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र ये विष के नौ भेद हैं।

परीक्षा.

पलाशपत्रवत्पत्रंतद्बीजसदृशंफलं।
स्थूलकंदोभवेत्तस्यप्रभावस्तुमहान्स्मृतः ॥
सिंदुवारसदृक्पत्रोवत्सनाभ्याकृतिस्तथा।
तत्पार्श्वेनतरोर्वृद्धिर्वत्सनाभसभाषितं ॥
वर्णतोहरितोयस्माद्दीप्तिमान्दहनप्रभः।
महामारीकरोघ्राणात्कथितःसप्रदीपनः ॥
वर्णतःकपिलोयस्मात्तथाभवतिसारकः।
ब्रह्मपुत्रःसविज्ञेयोजायतेमलयाचले।

अर्थ–जिसके ढाकके से पत्ते और बीजहो और कंद मोटा हो उसका प्रभाव बहुत भारी उसे कालकूट कहते है, पत्ते निर्गुंडीके समान और वच्छनागकासा आकार जिसके पास दूसरा वृक्ष न लगे वह वत्सनाभ कहाता है, जिसका कंद हरे रंगका अग्निके समान जिसके सूंघनेसें महामारीकारोग हो वह प्रदीपन विष कहाता है, जिसका कंद कपिलवर्ण सारक (दस्तावर) हो उसे ब्रह्मपुत्रविष कहते हैं यह मलयाचल पर्वतमें होता है।

विषके वर्ण.

चतुर्धावर्णभेदेनविषंज्ञेयंमनीषिभिः।
ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्राःश्वेतरक्ताश्चपीतकाः ॥
कृष्णवर्णःक्रमाज्ज्ञेयोवर्णानामानुपूर्वशः।

अर्थ–वर्णभेदसे विष चार प्रकारका है ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र इन चारोंका रंग क्रमसे सफेद, लाल, पीला और काला जानों

कार्यपरत्वग्राह्य विषय.

मारणेकृष्णवर्णस्याद्रक्तस्तुरसकर्मणि।
पीतवर्णःक्षुद्रकार्येश्वेतवर्णोरसायने ॥

अर्थ–कालाविष मारणार्थ,लाल रस कर्ममें पीला क्षुद्र कर्ममें, और सफेद रसायनिक कर्ममें लेना चाहिये।

मतांतर.

ब्राह्मणःपाण्डुरस्तेषुक्षत्रियोरक्तवर्णकः।

वैश्यःपीतप्रभःकृष्णोवर्णश्चशूद्रउच्यते ॥
ब्राह्मणोदीयतेरोगे क्षत्रियोविषभक्षणे ।
वैश्योव्याधिषुसर्वेषुसर्पदंष्ट्रेचशूद्रकः ॥

अर्थ–कुछ पिलाई लिये सफेद ब्राह्मण, लाल क्षत्री, पीला वैश्य, और काला शूद्रसंज्ञक विष होता हैं, इनमेंसे ब्राह्मणविषको रोगोंमें, क्षत्रीको विषप्रयोगमें, सम्पूर्ण व्याधियोंमें वैश्य, और सर्पके काटे पर शुद्ध विष देते हैं।

प्रकारांतर.

रसायनेविषंविप्रोदेहपुष्टौतुबाहुजः ।
कुष्ठनाशेप्रयुंजीतवैश्यःशूद्रस्तुघातकः ॥

अर्थ–ब्राह्मणविषे रसायनमें, क्षत्री देहपुष्टिमें,वैश्यकुष्ठ नाशमें और शूद्रविष मारणमें देना चाहि ये।

ग्रहण योग्य विष.

उद्धृतफलपाकेननवंस्निग्धंघनंगुरुः ।
अव्यापन्नंविषहरैरवातातपशोषितं ॥

अर्थ–विषको फल पकनेके पीछे ग्रहण करें और नवीन, चिकना, घना और भारीहो, तथा विषहरन वस्तुओंकरके दूषित नहो, पवन और आतपसे शोषित नहो, ऐसा विषलेकर शुद्ध करे।

शोधनका प्रथम प्रकार.

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान्कृत्वातुभाजने ।
तत्रगोमूत्रकंक्षिप्त्वाप्रत्यहंनित्यनूतनं ॥
शोषयेत्त्रिदिनादूर्ध्वंकृत्वातीव्रातपेततः ।
प्रयोगेषुप्रयुंजीतभागमानेनतद्विषं ॥

अर्थ–विषके छोटे २ टुकडेकर मिट्टीके पात्रमें डाल गोमूत्रभरदे,तीन दिनतक नित्यनया मूत्रडाल २ कर धूपमें रखे, पुराना मूत्र निकाल डाला करे, तीसरेदिन निकालकर सुखादे इसको प्रयोगमें भागप्रमाण डाले।

दूसरा प्रकार.

रक्तसर्षपतैलेनलिप्तेवाससिधारितं ।
सक्तुकंमुस्तकंशृंगीवालुकासर्षपाह्वयं ॥
वत्सनाभंकर्कटंचकालकूटादिकंततः ।
नजात्यन्यत्प्रयोक्तव्यंविषंतीक्ष्णेचवारिते ॥

अर्थ–विषको लाल सरसोंके तेलसे चुपड वस्त्रमें रखकर सुखालेवे तो सक्तुक, मुस्तक, सिंगिया, वालुक, सर्षप, वत्सनाभ, कर्कट और कालकूट विष शुद्धहों अन्य रीतिसे विष न देना क्योंकि तीक्ष्ण विषका अन्यथा देना वर्जित है।

तीसरा प्रकार

विषभागांश्चकणवत्स्थूलान्कृत्वातुस्वेदयेत् ।
दुग्धेचघटिकाषट्चशुद्धिमायातितद्विषम् ॥

अर्थ–विषके मोटे २ टुकडे टुकडे कर ६ घडी गोदुग्धमें स्वेदन करे तो शुद्ध होवे।

चौथा प्रकार.

खण्डीकृत्यविषंवस्त्रेपरिबद्धंतुदोलया ।
अजापयसिसंस्विन्नंयामतःशुद्धिमाप्नुयात् ॥
विषग्रंथिमलेन्यस्यमाहिषेदृढमुद्रितं ।
करीषाग्नौपचेद्यामंवस्त्रपूतंविषंशुचि ॥

अर्थ–विषकी गांठको टुकडे २ कर कपडेकी पोटलीमें बांध बकरीके मूत्रमें एक प्रहर स्वेदन करे तो शुद्ध होवे, अथवा भैंसके गोबरमें विषकी गांठको चारों औरसे ढक देवे पीछे आरने उपलोंकी एकप्रहर अग्निदे पीछे निकाल वस्त्रमें छानले तो विषशुद्ध होवे।

पांचवा प्रकार.

कणशोवत्सनाभंचकृत्वाबध्वाचपर्पटे ।
दोलायंत्रेजलक्षीरेप्रहराच्छुद्धिमृच्छति ॥

---

१ रसायनेविषंविप्रंक्षत्रियंदेहपुष्टये । वैश्यकुष्ठविनाशाय-शूद्रंदद्याद्वधायहि ।

अजादुग्धेभावितस्तुगव्यक्षीरेणशोधयेत् ।

अर्थ–वच्छनागविषके बारीक टुकडे करके पोटली बांध दोलायंत्रमें पानी और दूध मिलाकर एक प्रहर पचन करावे तो शुद्ध हो ।

विषमारण.

समटंकणंसंपिष्टंतद्विषंमृदुमुच्यते ।
योजयेत्सर्वरोगेषुनविकारंकरोतिहि ॥

अर्थ–विषकेसमान सुहागा डालकर घोटे तो विषका मरण हो इसको सर्व रोगोमें देना विकार नहीं करता ।

दूसरा प्रकार.

तुल्येनटंकणेनैवद्विगुणेनोपणेनच ।
विषंसंयोजितंशुद्धंमृतंभवतिसर्वथा ॥

अर्थ–विषके समान सुहागा और दुगुनी कालीमिरच मिलाकर घोटे तो शुद्ध हो और मरे ।

विषकेगुण.

विषंरसायनंबल्यंवातश्लेष्मविकारनुत् ।
कटुतिक्तकषायंचमदकारिसुखप्रदं ॥
व्यवायिरुधिरोद्दाहिकुष्ठंवातास्रनाशनं ।
अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगंदरं ॥
गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसिनाशयेद्विधिसेवितं ।

अर्थ–वच्छनागविष रसायन, बलकर्त्ता, वातकफ विकारनाशक, तीखा, कडवा, कसेला मादक, सुखकर्त्ता, व्यवाई, कोढ, वातरक्त, मंदाग्नि, श्वास, खांसी, तापतिल्ली, उदर, भगंदर, गोला, पांडुरोग, और बवासीरको-विष विधिसे सेवन करे तो नाश करे ।

गुणांतर.

विषंप्राणहरंप्रोक्तंव्यवायिचविकाशिच ।
आग्नेयंवातकफहृद्योगवाहीमदावहं ॥
तदेवयुक्तियुक्तंतुप्राणदायिरसायनं ।
पथ्याशिनांत्रिदोषघ्नंबृंहणंवीर्यवर्द्धनं ॥
येदुर्गुणाविषेऽशुद्धेतेस्युर्हीनंविशोधनात् ।
तस्माद्विषंप्रयोगेषुशोधयित्वाप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–विषप्राणहर्त्ता, व्यवायि (प्रथम सर्व देहमें व्याप्त होकर पीछे पचे) विकाशि (ओजको सुखा संधियोंके बंधनको ढीला करे) आग्नेय, वातकफका हरणकर्त्ता, योगवाही और मदकर्त्ता है यही विधिसे सेवन करनेसे प्राणदाता और रसायन है, पथ्यसे सेवन करे तो त्रिदोष नाशक है, बृंहण, और वीर्यका बढानेवाला है, जो अवगुण अशुद्ध विषमें है वो शुद्धमें नहीं इसी कारण शुद्धकर प्रयोगमें डाले ।

विषसेवन प्रकार.

नानारसौषधैर्येतुदुष्टायांतीहनोगदाः ।
तेनश्यंतिविषेदत्तेशीघ्रवातकफोद्भवाः ॥
शरद्ग्रीष्मवसंतेचवर्षासुचतुदापयेत् ।
हेमंतेशिशिरेचैवविधिनामत्रयार्पयेत् ॥
चातुर्मासेहरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि ।
दातव्यंसर्वरोगेषुघृताशिनिहिताशिनि ॥
क्षीराशिनिप्रयोक्तव्यंरसायनरतोनरः ।
ब्रह्मचर्यविधानंहिविषकल्पेसमाचरेत् ॥
पथ्येस्वस्थमनाभूत्वातदासिद्धिर्नसंशयः ।
आचार्येणतुभोक्तव्यंशिष्यप्रत्ययकारकं ॥
विषेशुद्धिर्हितदपिमात्रयानान्यथाभवेत् ।
सर्वरोगप्रशमनंदृष्टिपुष्टिकरंविषं ॥

अर्थ–जो वातकफात्मक रोग नाना प्रकारकी औषधि सेवनसे नहीं जाते वे विषसेवनसे तत्काल नष्ट होवे, शरदऋतु, ग्रीष्म, वर्षा, वसंत, इनमें विधिपूर्वक विष दे । तथा हेमंत और शिशिर ऋतुमें दे इसके चार महीनेके सेवनसे कोढ और लूतादि रोग नाश होवे । इ-

सको सब रोगोंमें दे, पथ्य घृत, दूध, सेवन करे, इसका सेवनकर्त्ता ब्रह्मचर्यसे रहे, पथ्यसे रहे, प्रसन्नचित्त रहे, तो विपकल्पकी सिद्धि होवे, प्रथम शिष्यका संदेह दूर करनेको वैद्य आप सेवन करे, शुद्धविपकीभी अन्यथा मात्रा नहीं हो सक्ती विपसेवनसे सर्व रोग नाश हों तथा दृष्टि पुष्टि करे ।

विपं मात्राका प्रमाण.

प्रथमेसार्षपीमात्राद्वितीयेसर्षपद्वयं ।
तृतीयेचचतुर्थेचपंचमेदिवसेतथा ॥
षष्ठेचसप्तमेचैवक्रमवृद्ध्याविवर्द्धयेत् ।
सप्तसर्षपमात्रेणप्रथमंसप्तकंनयेत् ॥
एवंमात्राविपंदेयंतृतीयेसप्तकेक्रमात् ।
वृद्ध्याहानिप्रदातव्यंचतुर्थेसप्तकेतथा ॥
एवंसप्तसमायातेपरांमात्रांभिपग्वरः ।
स्थिरीकुर्याद्यथेच्छंतुततस्त्यागंतुकारयेत् ॥
सेवनक्रममेतत्तुविपकल्पस्तुईरितः ।
एवंमात्रासेवनस्याद्गुंजामात्रंतुकुष्ठवान् ॥
एवमेवाष्टपर्यन्तंपरामात्राधिकामता ।
विधिनामात्रयाकालेभवेत्पथ्याशिनांनृणां॥

अर्थ-विपको पहले दिन सरसोंके समान मात्रा लेनी, दूसरे दिन दो सरसोंकी बराबर इसी प्रकार प्रतिदिन एक २ बढाकर सातवे दिन सात सरसोंके प्रमाण लेवे, और दूसरे सप्ताहमेंभी सातही सरसों लेवे, तीसरे सप्ताह अर्थात् १४ दिनके उपरांत पंद्रहवें दिन मात्रा फिर बढावे, जब चौथा सप्ताह आवे उसमें एक दिन कम और एक दिन विशेप इस क्रमसे देवे, इस प्रकार सात सप्ताहपर्यंत यानी ४९ दिन बढावे तो परमावधिकी मात्रा होवे, उसको जबतक इच्छा हो तबतक भक्षण करे तदनंतर घटाता जाय, इसप्रकार विपकल्पका प्रमाण कहा है, कुष्ठीको एक रत्तीके प्रमाण दे, और नित्य अठ गुणा प्रमाण बढावे, यह बहुत भारी मात्रा होती है, इस विप सेवनमें रोगके सदृश समयपर पथ्य करावे ।

दूसरा प्रकार.

एकाष्टकंभवेद्यावद्भ्यस्तंतिलमात्रया ।
सर्वरोगहरंनृणांजायतेशोधितंविपं ॥

अर्थ-प्रथम आठ दिन शुद्धविपको तिल प्रमाण देवे, पीछे एक २ तिल नित्य बढावे इसप्रकार मात्रा बढानेसे सर्व व्याधि नाश हो।

विपानुपान.

शिखिकर्किरसोपेतंविपमज्वरजिद्विपं ।
विपयष्ट्याह्वयंरास्नासेव्यमुत्पलकंदकं ॥
तंदुलोदकपीतानिरक्तपित्तस्यभेपजं ।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारुकटुत्रयं ॥
पद्मकंक्षौद्रममृताविपंचश्वासकासजित् ।
सितारसविपक्षीरप्रवालमधुनान्विताः ॥
क्षौद्रेशीतमधुक्षीररजनीकुटजत्वचः ।
च्यवनःप्राशनोपेतंविपंक्षपयतिक्षयं ॥

अर्थ-विप-नीलाथोथा और पारायुक्त सेवन करनेसे विपमज्वरका नाश करे, मुलहटी रास्ना, खस, कमल गट्टेका चूर्ण और चांवलोंके धोवनके साथ रक्तपित्तको, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, कमलगट्टा, सहत और गिलोयके रसके साथ श्वास और खांसीका नाश करे। मिश्री, पारा, सिंगिया विप, दूध, मूंगाकी भस्म और सहतके साथ वमनका नाश करे। सहत, पित्तपापडेका रस, मद्य, नोन, हल्दी, कूडाकी छाल तथा च्यव-

---

१ विपभक्षणकामुहूर्त्त-चराचरेंदुलघुहृदुचित्रा । विपाशनेभानुकवीन्दुर्भामान् यईहतेनेकविधानितावत्सकालकृत्वानिसेर्वेतविना ॥ १ ॥

नप्राशावलेहके साथ विष सेवन करे तो खई नाश हो ।

विजयापिप्पलीमूलंपिप्पलीद्वयचित्रकैः ।
पुष्कराह्वसटीद्राक्षायवानीक्षारदीप्यकैः ॥
सितायष्टीद्विबृहतीसैंधवैःपालकैःपचेत् ।
सविषार्द्धपलैःप्रस्थघृतात्तज्जीर्णभुक्पिबेत् ॥
दुर्नामिमेहगुल्मार्शोतिमिरक्रमिपांडुका ।
गलग्रहग्रहोन्मादकुष्ठानिचनियच्छति ॥

अर्थ–भांग, पीपलामूल, छोटी पीपल, गज पीपल, चित्रक, पुहकर मूल, कचूर, दाख, अजवायन, जवाखार, अजमोद, मिश्री, मुलहटी, दोनों कटेरी, सेंधानोन निसोथ और विष प्रत्येक आधा २ पल ले एक प्रस्थ घृतमें भूनकर अनुमान माफिक खाय जब विष पच जाय तब ऊपरसे घृतपान करे तो बवासीर, गोला, प्रमेह, अर्म रोग, तिमिर, कृमि, पांडु, गलग्रह, उन्माद और कुष्ठको दूर करे।

मुस्तावत्सकपाठाग्निव्योषप्रतिविषाविषं ।
धातकीमोचनिर्यासंचूतास्थिग्रहणीहरं ॥
कृच्छ्रघ्नविषपथ्याग्निदंतीद्राक्षानिशावृषाः ।
शिलाजतुविषंत्र्यूषक्षुदावर्त्ताश्मरीहरं ॥

अर्थ–नागरमोथा, कुडाकी छाल, पाढ, चित्रक, सोंठ, मिरच, पीपल, अतीस, सिंगिया-विष, धायके फूल, मोचरस और आमकी गुठलीको मिलायकें खानेसे संग्रहणी नाश होवे, हर्ड, चित्रक, दंती, दाख, अतीस, अडूसा, शिलाजीत और त्रिकुटाके साथ विषसेवन करनेसे पथरी और उदावर्त्तका नाश होवे।

गोमूत्रक्षारसिंधूत्थविषपाषाणभेदकं ।
वज्रवद्दारयेत्येतदेकतःपीतमश्मरी ॥
त्रिफलासर्जिकाक्षारैःविषंगुल्मप्रभेदनं ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलंविषंशूलहरंपरं ॥
विषंद्रवंतीमधुकंद्राक्षारास्नासटीकणाः ।
विषवेल्लमिशिक्षीरंगुल्मप्लीहानिवर्हणं ॥
प्लीहोदरघ्नंपयसाशताह्वाक्रमिजिद्विषम् ।

अर्थ–गोमूत्र, सेंधानोन, विष, पाषाणभेद, ए खानेसे पथरीको वज्रके समान तोडे । त्रिफला और सज्जीखारके साथ विष खानेसे गोला, पीपल, पीपलामूलके साथ शूल, द्रवंती, महुआ,दाख, रास्ना, कचूर, पीपल, वायविडंग, सोंफ, और दूधकेसाथ गोला, तापतिल्ली।और सोंफके साथ विष खानेसे कृमिरोगका नाश करे

वायसीमूलनिःक्वाथ्यपीतंकुष्ठहरंविषं ।
पयसाराजवृक्षत्वक्त्रायंतीवाकुचीवला ॥
प्लीहघ्नीवाकुचायांचविषंक्वाथेनकुष्ठजित् ।
अवल्गुजैलकजयाविडक्षारद्वयंविषं ॥
लेपःससैंधवःपिष्टोवारिणाकुष्ठनाशनः ।
चित्रकार्कजहस्तिपिप्पलीवाकुचीविषैः ॥
सचार्द्रकैलजगजकरंजफलसैंधवैः ।
सव्योपस्वर्जिकाक्षारयवक्षारनिशाद्वयैः ॥
पानाद्यैःशीलितंकुष्ठदुष्टनाडीव्रणापची ।

अर्थ–मकोयकी जडके काढेके साथ विष कोढको दूरकरे, अमलतासकी छाल, त्रायमान, बावची, खरैटी और दूधकेसाथ तापतिल्ली को, सुहागे और विषका काढा कोढको। बावची, एलुआ, सज्जीखार, जवाखार, सेंधानोन और सिंगियाविष इनको जलमें पीस लेप करे तो कोढनाश होवे। चित्रक, आक, गजपीपल, बावची,वच्छनागविष,कपूर, एलुआ, नागकेशर, कंजाका फल, सेंधानोन, त्रिकुटा सज्जीखार, जवाखार, हलदी, औरदारुहलदी के सेवनसे कोढ नाडीव्रण और अपची दूर होवे ।

विषंभल्लातकीद्वीपिगुंजानिंबफलैर्जयेत् ।
लेपोम्लपित्तेश्वित्राणिपुंडरीकंचदारुणं ॥

ककुंदरुरुष्कद्वीपिस्पृक्कापत्रैलवालुकं ।
पिष्टंखादिरतोयेनत्रिरात्रमुषितंपिबेत् ॥
श्वित्रीविषेणसंघृष्टंततस्फोटान्किलासजान् ।
कंकणेनविभिद्याशुलेपैर्लिंपेच्चकोष्ठकैः ॥
अथवाकरवीरार्कमूलवाकुचिकाविषैः ।
वस्तांबुपिष्टैःसद्वीपिद्वीपिपिप्पल्यरुष्करैः ॥
लाक्षासुरीचमंजिष्ठाकुष्ठपद्मकशारिवा ।
गुंजामहीकुरवकोलांगलीवज्रकंदकः ॥
वाराहीकंदकास्फोतसप्ताह्वोगिरिकर्णिका ।
अर्कोश्वमारयोर्मूलंनागपुष्पंनतंनिशे ॥
दंतीविषंहस्तिविषंपिप्पल्योमरिचानिच ।
तत्तैलंकटुतैलंवाश्वित्रस्याभ्यंजनंपचेत् ।
सवर्णकरणंश्रेष्ठमास्तिनयस्यवचोयथा ॥

अर्थ–वच्छनागविप, भिलावा, चित्रक, चूंनची, निवौली, इनका लेप अम्लपित्त, चित्रकुष्ट, पुंडरीक, कुष्ठका नाश करे । कुंदरू, भिलाए, गजपीपल, सफेदलजालू, पत्रज और एलुआको खैरके पानीमें पीसकर तीनदिन रख छोडे, तदनन्तर विषमिलाकर कोढपर लेपकरें तो कोढके फोडे दूरहों । अथवा कनेर, आककीजड, बावची, वच्छनागविप तथा चित्रक, गजपीपल, और भिलाएको बकरीके मूत्रमें पीसकर लगावे तो अथवा लाख, राई, मजीठ कूठ, पद्माख, सारिवा, घूंघची, कुटकी, कुरवक कलयारी, थूहर, वाराहीकंद, कोविदार, सतवन, इन्द्रजौ, आक, कनेर, इनकी जड; नागकेशर, छड, हल्दी, दंती, वच्छनागविप, हस्तिविप, पीपल, मिरच इनको इन्हीऔपधियोंकेतेलमें अथवा कडवे तेलमेंमिलाकरश्वित्रकोढवालेके उवटना करे तो सुवर्णकेसमानदेहकारूपहो जावे ।

एरंडतैलत्रिफलागोमूत्रंचित्रकंविपं ।
सर्पिषासहितंपीतंवातात्त्वियमपोहति ॥
कोरकंचीरनिष्काथैर्लांगलीविपसर्षपैः ।
गंधकंकोलमरिचैःसस्नुक्क्षीरैर्विपाचितं ॥
जयेज्ज्योतिष्मतीतैलमनलत्वग्गदानपि ।

अर्थ–अंडकातेल, त्रिफला, गोमूत्र, चीता, और विषको घृतके साथ पिये तो वादीकी पीडा नाशहो । ग्वारपाठा, सीसम, कलियारी वच्छनागविप, सरसो, गंधक, अंकोल, मिरच, थूहरकादूध, इनको मालकांगनीके तेलमें औटाकर लगानेसे वादीकृतत्वचाके रोग नाश हों।

स्वरसंबीजपूरस्यवचाब्राह्मीरसंघृतं ।
वंध्यापिबतिसविपंसपुत्रैःपरिवार्यते ॥
वीरालांगलिकादंतिविपपाषाणभेदकैः ।
प्रयोज्यंमूढगर्भाणांप्रलेपोगर्भमोचनः ॥
देवदारुविपंसर्पिगोमूत्रंकंटकारिका
वचावाक्स्खलनंहंतिबुद्धेश्चपरिवर्द्धनं ॥

अर्थ–बिजौरेका स्वरस, वच, ब्राह्मीकारस, और नवीन घृतमें विप मिलाकर पीनेसे वंध्या गर्भवती हो । सफेद कनेर, कलियारी, दंती, वच्छनाग विप और पापाणभेदका लेप मूढगर्भका मोचन करे। देवदारु, विप, गोघृत, कटेरी और वचका सेवन जीभके विकार नाशकर बुद्धि बढावे ।

विषंसर्पिःसिताक्षौद्रंतिमिरापहमंजनं ।
विषंचैकमजाक्षीरकल्पितंघृतधूपितं ॥
विपंधात्रीफलरसैरसकृत्परिवारितं ।
अंजनंशंखसहितंप्रगाढंतिमिरंजयेत् ॥
विपमिन्द्रायुधंस्तन्येघृष्टंकाचेत्विदंजनं ।
बीजपूररसैर्घृष्टंविपंतद्वत्सितान्वितं ॥
विपंमागधिकाद्विचनिशेकाचघ्नमंजनम् ।

अर्थ–घृत, मिश्री और सहतमें विपको घिसकर लगावे तो तिमिर रोग नाश हो । अथवा केवल विपकोही बकरीके दूधमें लगावे

तो और घृतकी धूनी दे, अथवा विषमें शंखकी नाभि मिलाकर आंवलेके रसकी भावना देकर अंजन करे तो घोर तिमिर नाश हो। हीरा और विषको स्त्रीके दूधमें घिसकर लगानेसे कांचको नष्ट करे, बिजौरेके रसमें मिश्री और विषको घिसकर नेत्रोंमें लगावे तो विषका नाश करे। पीपल, गजपीपल, हलदी और विषका अंजन करनेसे कांचरोग नाश हो।

शुक्रार्मजविषंकृष्णायुक्तंगोमूत्रभावितं।
समुद्रफेनस्फटिकीकुरुविंदंरसांजनं॥
कूर्मपृष्ठंचतुल्यानितेभ्योर्धांशंमनःशिला।
अर्द्धमानानिमरिचसैंधवायोरजांसिच॥
अथोयथोत्तरांदद्यादयसाचसमंविषं।
आगारधूमसहितैर्वस्तमूत्रेणकल्कितैः॥
भल्लातकाग्निसम्पाकाविषैर्गोमूत्रपेषितैः।
लेपोविचर्चिकादद्रुरसिकाकिटिभापहा॥

अर्थ—पीपलके साथ विष गोमूत्रमें घिसकर लगानेसे शुक्रार्म रोग नष्ट हो। समुद्रफेन, फिटकरी, हिंगुल, रसोत और कछवेकी पीठ बराबर ले सबसे आधी मनसिल तथा मनसिलसे आधी मिरच तथा सेंधानोन और लोहचूर एकसे दूसरा अधिक भाग लेवे, लोहचूरके समान वच्छनागविष ले और घरका धुआं सबको बकरीके दूधमें घिसकर लगावे। अथवा भिलाए, चित्रक, अमलतासकागूदा, और विषको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे विचर्चिका, दाद, रसिका, कीटभ और कुष्ठनाश हों।

सम्पाकपत्रंत्वङ्मूलंविषंतक्रंचतुर्गुणं।
विषंतुंबुरुबीजानिवाजिगंधाम्लवेतसं॥
हरिद्रावायसीरास्नाहरितालंमनःशिला।
पटोलनिंबपत्राणिकणागंधकसैंधवं॥
विषंदारुशिरीषास्थितक्रैर्लेपेनकुष्टजित्।
करंजकरवीरार्कमालतीरक्तचंदनैः॥
आस्फोताकुष्ठमंजिष्ठासप्तच्छदनिशानतैः।
सिंधुवारवचाक्ष्वेलैर्गवांमूत्रेचतुर्गुणे॥
सिद्धंकुष्टहरंतैलंदुष्टव्रणविशोधनम्।

अर्थ—अमलतासके पत्ते, छाल और जडमें विषको मिलाकर चौगुनी छाछमें मिलाकर लेप करे, अथवा विष, तुंबरूके बीज, असंगध, अमल, बेत, हरदी, वायसी, रास्ना, हरिताल, मनसिल, पटोलपत्र, नींबके पत्र, पीपल, गंधक, सेंधानोन, इनको छाछमें मिलाकर लेप करे, अथवा विष, देवदारु, सिरसकी छाल, इनको छाछमें मिलाकर लेप करे तो कुष्ट रोग नाश हो। कंजा, कनेर, आक, मालतीके फूल, लालचंदन, सपेद कोयल, कूठ, मजीठ, सतवन, हलदी, छड़, सिंधुवार, वच और विषको चौगुने गोमूत्रमें औटाकर पीछे तेल डालकर तेल बनावे तो यह तेल कोढ और दुष्ट फोडोंका नाश करे।

कुष्ठाश्वमृगभृंगार्कमूलस्नुकुक्षीरसैंधवैः।
तैलंसिद्धंविषावाप्यमभ्यंगात्कुष्ठजित्परं॥
भद्रश्रीदारुमरिचद्वेहरिद्रेत्रिवृत्घनैः।
गोमूत्रपिष्टैसहसाविषस्यार्द्धपलेनच॥
ब्राह्मीरसार्कजक्षीरगोशकृद्रससंयुतं।
प्रस्थंसर्षपतैलस्यसिद्धमाशुव्यपोहति॥
रसक्रियेयमधुनापिल्लशुक्रार्मकाचनुत्।
अभीक्ष्णंशीततोयेनसिंचेन्नेत्रेविषांजिते॥

अर्थ—कूठ, कनेर, कस्तूरी, भांगरा, आककी जड, थूहरका दूध, सेंधानोन, कमलगट्टा, और विष मिलाकर तेल बनावे, इसके लगानेसे कुष्ठरोग शांति होवे। चंदन, देवदारु, मिरच, हल्दी, दारुहल्दी, निसोथ, नागरमोथा, इनको एकर पल और विष आधापल लेकर सबको गोमूत्रमें

पीसे। ब्राह्मीकारस, आकका दूध, और गोवरका पानी एक २ प्रस्थ ले तेलमें डालकर तेल बनावे, यह रसक्रिया है इसको नेत्रोमें लगावे तो शुक्लार्म और कांचरोगका नाश करे जब विषको नेत्रोंमें लगावे तब शीघ्र शीतलजलसे नेत्रोंको धो डाले।

रक्तचंदनमंजिष्ठातिंतिडीफलसूतकैः।
अयसालोध्रकतकनिशाशंखकणोपणैः॥
मनःशिलाकरंजाक्षबीजोग्राफेनसैंधवैः।
अजाक्षीरःसमविषैर्वर्त्तयोविहिताहिताः॥
शुक्लार्ममांसपिल्लेपग्रंथिगंडार्बुदेपच।

अर्थ–लालचंदन, मजीठ, इमलीके फल-पारा, लोहचूर, लोध, कतक, हलदी, शंखनाभि, सोंठ, मिरच, पीपल, मनसिल, कंजाकी मिंगी, बच, समुद्रफेन, सेंधानोन, वच्छनाग विष, इन सबको बराबरले बकरीके दूधमें वत्ती बनावे यह वत्ती शुक्लार्मरोग, मांसपिल्ल, गांठ, गंडरोग, अर्बुद इत्यादि नेत्रविकारोंको हितकारक है।

रसोनकंदमरिचविषसर्षपसैंधवैः।
पिल्लेक्षणहितंकार्यंसुरसारसपेषितैः॥
पूरयेत्सर्पिषाचानुसर्पिरेवचपाययेत्।
मधूकसारमधुकविषक्षीरजलैर्घृतं॥
पक्वंसंतर्पणंश्रेष्ठंनक्तांध्यत्वचिरोत्थितं।
अंजनंनरपित्तेनरोचनंमधुशृंगिभिः॥
स्वर्जिकाक्षारसिंधुत्थशुक्तशुक्तवरंविषं।
कर्णयोःपूरणंतीव्रकर्णशूलनिबर्हणं॥

अर्थ–सफेद लहसन, मिरच, विष, सरसों और सेंधेनोनको तुलसीके रसमें पीसकर नेत्रोंमें लगावे और घृतसे नेत्रोंको पूर्ण करे और घृत भोजनको दे तो संपूर्ण नेत्ररोग नाश हो, महुआ, विष, दूध, जल, और घृतको एकत्र कर नेत्रोंको तर्पण करे तो नक्तांध्य(रतोंध) थोडे दिनका नाश हो। गोरोचन, सहत, काकडासिंगी, सज्जी, सेंधानोंन, सिरका, कांजी और वच्छनाग विषको मिलाकर कानोंमें डालनेसे कर्णशूल नाश हो।

प्रपौंडरीकंमंजिष्ठाविषतिंदुसमुद्भवैः।
निहंतिसाधितंतैलंगंडूषेणमुखामयान्॥
शालाखदिरकंकोलजातीकर्पूरचंदनैः।
बोलाब्दवालैर्द्विगुणविषैसारांबुपेषितैः॥
समूत्रावटिकाक्लृप्ताघृताद्घ्नंतिमुखामयान्।
कटुतैलंविषंनस्यंपलिकारुंपिकापहं॥

अर्थ–कमलपुष्प, मजीठ, विष, और कुचलासे तेलको बनाकर कुल्हेकरेनेसे मुखरोग नाश हों। शालकी छाल, कत्था, कंकोल, जायफल, भीमसेनी कपूर, चंदन, बोल, नागरमोथा और सुगंधिवालाको समान ले और हरएककी मात्रासे दूना विष ले, खैरसार और गोमूत्रसे गोलियां बनाकर मुखमें रखे तो मुखके सर्व रोग दूरहों। कडवे तेलमें विष मिलाकर नस्यलेनेसे पलिका और अंरुपिका दूर होवे।

गुंजाटंकणशिग्रुमूलरजनीसम्पाकभल्लातका।
स्नुह्यर्काग्निकरंजसैंधववचाकुष्ठाभयालांगली।
वर्षाभूपटभूशिरीभूवरणव्योषाश्वमारोविषं॥
गोमूत्रंशमयेद्विलुप्तमपचीग्रंथ्यार्बुदश्लीपदान्।

अर्थ–घूंवची, सुहागा, सहजनेकीजड, हलदी, अमलतास, भिलावा, थूहर, आक, चित्रक, कंजा, सेंधानोन, वच, कूठ, हर्ड, कलियारी, केंचुए, पटभू, शिरसकीछाल, सोंठ, मिरच, पीपल, कनेर और वच्छनागविषको गोमूत्रमें पीसकर लगानेसे इंद्रलुप्त, अपची, गांठ, अर्बुद, श्लीपद इनका नाश हो।

विषभक्षणके अधिकारी.

अशीतियस्यवर्षाणिचतुर्वर्षाणियस्यवा।
विषंतस्यनदातव्यं दत्तंचेद्रोगकारकं ॥
नक्रोधितेनपित्तार्तेनक्लीवेराजयक्ष्मणि।
क्षुत्तृष्णाश्रमकर्माध्वसेविनिक्षयरोगिणे ॥
गर्भिण्यांबालवृद्धेचनविषंराजमन्दिरे।
नदातव्यंनभोक्तव्यंविषंव्याधौकदाचन ॥

अर्थ–८० वर्ष वा ४ वर्षकी अवस्था वाले-को विषखानेको न दे, यदि खाय तो रोग करे। क्रोधी, पित्तप्रकृति, नपुंसक, खईवाला, भूँखा प्यासा, परिश्रमी, मार्गचला, गर्भिणी, बालक, बूढा, राजा और राजाके परिकर मात्रको विष भक्षण न करावे।

विषसेवनमें पथ्य.

घृतंक्षीरंसिताक्षौद्रंगोधूमास्तंडुलानितत्।
मरिचंसैंधवंद्राक्षामधुरंपानकंहिमं ॥
ब्रह्मचर्यंहिमंदेशंहिमंकालंहिमंजलं।
विषस्यसेवकोमर्त्योभजेदितिविचक्षणः ॥

अर्थ–विष सेवनकर्त्ता घृत, दूध, मिश्री, सहत, गेंहू, चावल, काली मिरच, सेंधानोन, दाख, मधुर और शीतल, पदार्थ तथा ब्रह्मचर्य, शीतलऋतु, और शीतलजल ऐसे पदार्थ सेवन करे।

मात्राधिक भक्षणकी परीक्षा.

मात्राधिकंयदामर्त्यःप्रमादाद्भक्षयेद्विषं।
अष्टौवेगास्तदातेनजायंतेतस्यदेहिनः ॥
उद्वेगंप्रथमेवेगेद्वितीयेवेपथुर्भवेत्।
वेगेतृतीयेदाहःस्याच्चतुर्थेपतनंभवेत् ॥
फेनस्तुपंचमेवेगेषष्ठेविकलएवच।
जडतासप्तमेवेगेमरणंचाष्टमेभवेत् ॥
विषवेगानितिज्ञात्वामंत्रतंत्रैर्विनाशयेत्।
यावन्नाष्टमवेगंतुसंप्राप्नोतिहिमानवः ॥

अर्थ–यदि मनुष्य प्रमादसे विषकी अधिक मात्रा खाय लेवे तो विषके प्रभावसे उसको ८ वेग होते हैं, प्रथम उद्वेग, दूसरा कंप, तीसरा दाह, चौथा जमीनपर गिरना, पांचवां मुखसे झाग डालना, छठा विकलता, सातवां जडता, और आठवां मरण, इन विषवेगको जानकर तंत्रमंत्रसे शांति करे अष्टम वेगसे पहले यत्न करे।

विष निवारण विधि.

अतिमात्रांयदाभुक्तंवमनंतस्यकारयेत्।
अजादुग्धंददेत्तावद्यावद्वांतिर्नजायते ॥
अजादुग्धंयदाकोष्ठेस्थिरीभवतिदेहिनः।
विषवेगंततोऽजीर्णंजानीयात्कुशलोभिषक् ॥

अर्थ–किसीने बहुत विष खा लियाहो उसे वमन करावे, जहांतक वमन बंद न हो बकरीकादूध पिलावे, जब दूध पचजाय तब जाने विष उतर गया।

दूसरा प्रकार.

विषंहन्याद्रसःपीतोरजनीमेघनादयोः।
सर्पाक्षिटंकणंवापिघृतेनविषहृत्परम् ॥

अर्थ–हलदी, चौलाई, सर्पाक्षी और सुहागा घृतकेसाथ भक्षण करे तो विषके वेगकी शान्ति हो।

तीसरा प्रकार.

पुत्रजीवकमज्जावापीतानिंबकवारिणा।
विषवेगंनिहंत्येववृष्टिर्दावानलंयथा ॥

अर्थ–जीयापोताकी छाल नींबूके रसमें मिलाकर पीनेसे विष ऐसे शान्तहो जैसे वर्षासे दावानल।

चौथाप्रकार.

गोघृतपानाद्धरते विषंचगरलंचकर्कोटी। सकलविषोपविषशमनी त्रिमूलीसुरभिजिह्वाच

अर्थ–वांझ ककोडा घृतकेसाथ पीनेसे विष और गरलका नाशहो, उसी प्रकार त्रिमूली और गोभीभी विष नाशक हैं।

अधिक विषोपचार.

अतिमात्रंयदाभुक्तं तदाज्यंटंकणंपिबेत् ।
विषंसवेगतोनाश माशुमाप्नोतिनिश्चितं ॥

अर्थ–अधिक विष खानेसे जिस समय अवगुण करे उस समय घृतमें सुहागा मिलाकर पिलावे, तो वेग सहित वर्त्तमान विषका निश्चय नाश हो।

विषसेवनमें कुपथ्य.

कट्वम्ललवणंतैलं दिवास्वप्नंऽनलातपान् ।
अभ्यस्तेपिविषेयत्ना द्दर्जनीयान्विवर्जयेत्॥

अर्थ–तीखा, खट्टा, नोन, तेल, दिनका सोना, अग्निसे तापना, और धूपका डोलना. विषाभ्यासी मनुष्य त्याग दे, और जो वर्जित वस्तु हैं उनकोभी त्याग दे।

घृतरहित विषसेवनके उपद्रव.

दृग्विभ्रमंकर्णरुजमन्यान् चानिलजान्गदान्। विषंरूक्षाशिनःकुर्यान्मृत्यु मेवत्वजीर्णतः

अर्थ–दृष्टिभ्रमण, कर्णपीडा, और वातज रोग ये अवगुण विषपर रूखे पदार्थ सेवन करनेसे करता है, विषका अजीर्ण मृत्यु करता है।

उपविषाणि.

स्नुह्यर्कलांगलीगुंजा हयारिविषमुष्टिका ।
जेपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातयः ॥

अर्थ–थूहर, आक, कलियारी, घूंघची, कनेर, कुचला, जैपाल (जमालगोटा) धतूरा और अफीम ये नौ उपविष हं।

मतान्तर.

भल्लातकंचातिविषं चतुर्भागंचखाखसं ।
करवीरंद्विधाप्रोक्त महिफेनंद्विधामतं ॥
धत्तुरश्चचतुर्धास्यात् द्विगुंजाचैवनिर्विषी ।
विषमुष्टिलांगलीच गणश्चोपविषाह्वयः ॥

अर्थ–भिलाए, अतिविष, चार प्रकारके खसखस, दोप्रकारकी कणेर, दो प्रकारकी अफीम चारप्रकारका धतूरा, दो प्रकारकी गुंजा, कुचला और कलयारी यह उपविषाख्य गण है।

शोधन.

पंचगव्येषुशुद्धानि देयान्युपविषाणिच ।
विषाभावप्रयोगेषु गुणस्तुविषसंभवाः ॥

अर्थ–उपविष पंचगव्य (दूध, दही, घृत गोमूत्र, गोवर) में शुद्ध करे इनको विषाभावमें देवे इनके गुण विषोंके समान हैं।

आक.

अर्कद्वयंसरंवातं कुष्ठंकंडूविषापहम् ।
निहंतिप्लीहगुल्मार्शं यकृत्श्लेष्मोदरक्रमीन्॥

अर्थ–सफेद और लाल दोनों आक दस्तावर, वादी, कोढ, खुजली, विष, तापतिल्ली, गोला, ववासीर, यकृत, कफोदर और कृमिरोगका नाश करे।

कलयारी.

लांगलीशुद्धिमायाति दिनंगोमूत्रसंस्थितं ।
कलयारीसराकुष्ठ शोफार्शोव्रणशूलनुत् ॥
तीक्ष्णोष्णक्रमिनुल्लघ्वी पित्तलागर्भपातनी।

अर्थ–कलियारीके टुकडोंको एक दिन गोमूत्रमें भिगोवे तो शुद्ध हो, यह दस्तावर है, कुष्ठ, सूजन, ववासीर, यकृत, कफोदर और कृमिरोग का नाश करे, व्रणरोग नाशक, तीखी, गरम, पित्तकर्त्ता, हलकी तथा गर्भपातनकर्त्ता है।

गुंजा.

गुंजाकांजिकसंस्विन्ना प्रहराच्छुध्यतिध्रुवम्।
गुंजालघुर्हिमारूक्षा भेदनीश्वासकासजित्॥
कृष्णाक्रमिकुष्ठकंडू श्लेष्मपित्तव्रणापहा ।

अर्थ–घूंघची (गुंजा) को कांजीमें डाल एक प्रहर दोलायंत्रमें पचावे तो शुद्ध हो यह हलकी, शीतल, रूखी, भेदक, श्वास, खाँसी, इनको दूसरी कालीगुंजा कृमि, कोड, खुजली,

कफ, पित्तविकार और व्रणको दूर करे।

कनेर.

हयारीविषवच्छोध्यं गोदुग्धेगोलकेनतु।
करवीरद्वयंनेत्ररोगकुष्ठव्रणापहं ॥
लघूष्णंकृमिकंडूघ्नं भक्षितंविषवन्मतम्।

अर्थ–दोनो प्रकारकी कनेरोंके टुकडे २ कर गोदुग्धमें दोलायंत्रद्वारा एक प्रहर पचावे तो शुद्धहों, यह हलकी, गरम, नेत्ररोग, कोढ, व्रण, कृमिरोग और खुजलीको दूर करें, खानेसे विष समान गुण करे।

कुचला.

दोलायंत्रेणसंस्वेद्यं कांजिकेप्रहरद्वयं।
किंचिदाज्येनसंभृष्टो विषमुष्टिर्विशुद्ध्यति ॥

अर्थ–कांजीके पानीमें कुचलाको दोप्रहर दोलायंत्रद्वारा स्वेदनकर घृतमें भूने तो शुद्ध हो विषमुष्टिःकटुस्तिक्तस्तीक्ष्णोष्णः श्लेष्मवातहा। सारमेयविषोन्माद हरोमदकरःसरः॥

अर्थ–कुचला, तीखा,कडवा, चरपरा,गरम, मादक और दस्तावर है वादी कफके विकार,तथा कुत्तेके विषको नाश करे,तथा उन्माद करे।

जमालगोटा.

नविषंविषमित्याहु र्जैपालोविषमुच्यते।
शोधितश्चविरेकेषु चमत्कृतिकरःपरः ॥

अर्थ–विषको विष नहीं कहते किंतु जैपाल (जमालगोटा) को पंडित विष कहते हैं वह शुद्ध-दस्तोंमें अत्यंत चमत्कारी है।

जैपाल शोधन.

पंचगव्येषुसंशोध्य दूरंकार्यैतुजिह्विका।
ततोम्लवर्गेदशधा क्षारवर्गेत्रिधापुनः ॥
कुमारीकोद्रवंभस्म जलेचैवविशोधयेत्।
एवंशुद्धस्तुजैपालो वांतिदाहविवर्जितः ॥

अर्थ–जमालगोटेको पंचगव्यमें शोध इस की जीभको निकाल फेंक दे, तदनंतर दशवार अम्लवर्ग और तीनवार क्षारवर्गमें घीगुवारके रसमें अरहरकी राखके जलमें शोधे तो जमालगोटा वमन और दाह रहित होवे।

दूसरा प्रकार.

जैपालंरहितंत्वगंकुररसैर्चाह्निर्मलेमाहिषे। निक्षिप्तंत्र्यहमुष्णतोयविमलं खल्वेसवासोर्दितं ॥ लिप्तंनूतनखर्परेषु विगतस्नेहोरजःसन्निभं। निंबुकांबुविभातितश्च बहुशःशुद्धोगुणाच्छोभवेत् ॥

अर्थ–जमालगोटेको तीन दिन भैंसके गोबरमें गाढ उसके वल्कल और जीभको दूरकर गरमपानीसे धों वस्त्रसहित खरलमें डाल मर्दन करे, पीछे कोरे खिपडेपर लेप करे तो उसका तेल सूखजाय, पीछे नींबूके रसमें बहुत देरतक घोटे तो शुद्ध और गुणोंमें निर्मल होवे।

तीसरा प्रकार.

वस्त्रेबध्वातुजैपालं गोमयस्थोदकेन्यसेत्।
पाचयेद्यामभात्रंतु जेपालःशुद्धतांव्रजेत् ॥

अर्थ–जमालगोटेको पोटलीमें बांध गोबरसे दोलायंत्रद्वारा एकप्रहर पचानेसे और इसकी जीभ निकालनेसे शुद्ध होवे।

चौथा प्रकार.

जेपालनिस्तुषंकृत्वा दुग्धेदोलायुतेपचेत्।
अंतर्जिह्वांपरित्यज्य युंज्याच्चरसकर्मणि ॥

अर्थ–जमालगोटेका वल्कल दूरकर पोटली बांध दूधसे दोलायंत्रद्वारा पचावे और भीतरसे जिह्वाको निकालडाले तो शुद्धहो इसको रसकर्ममें डाले।

जमालगोटाके गुण.

जैपालोतिगुरुस्तिक्तो वांतिकृत्ज्वरकुष्ठनुत्।
उष्णोगुरुर्व्रणःश्लेष्मकंडूकृमिविषापहः ॥

अर्थ–जमालगोटा अत्यन्तभारी, कडवा, गरम, वमनकर्त्ता, तथा ज्वर, कोढ, व्रण, कफ, खुजली, कृमि और विष बाधाका नाश करे ।

धतूरा.

धत्तूरबीजंगोमूत्रे चतुर्यामोषितंपुनः ।
कंडितंनिस्तुषंकृत्वा योगेषविनियोजयेत् ॥

अर्थ–धतूरेके बीजोंको चारप्रहर गोमूत्रमें भिगो तदनंतर निकालकर सुखाय भूसी दूर करे तो शुद्ध हों पीछे प्रयोगमें डाले ।

धतूरेके गुण.

धत्तूरोमदवर्णाग्नि वातकृत्ज्वरकुष्टनुत् ।
उष्णोगुरुव्रणश्लेष्मा कंडूकृमिविषापहः ॥

अर्थ–धतूरा उन्माद, कांति, अग्नि, वायुका और ज्वर तथा कुष्ठ गरमी तथा भारी व्रण, कफ, खुजली, कृमिरोग विषको दूर करे ।

अफीम.

अहिफेनंशृंगवेरं रसैर्भाव्यंत्रिसप्तधा ।
शुद्धयुक्तेपुयोगेषु योजयेतद्विधानतः ॥

अर्थ–अफीमको अदरकके रसकी२१ भावना देनेसे शुद्ध हो तदनंतर योगोंमें डाले ।

अफीमके गुण.

आफुकंशोषणंग्राहि श्लेष्मघ्नंवातपित्तलं ।
मदकृद्दाहकृच्छुक्र स्तंभनायासमेहकृत् ॥
अतिसारेग्रहण्यांच हितंदीपनपाचनं ।
सेवितंदिवसैःकश्चित्भ्रमयत्यन्यथार्त्तिकृत् ॥

अर्थ–अफीम-शोषक, ग्राही, कफहर्त्ता, बात-पित्त और मदकर्त्ता, दाह और शुक्रका स्तंभन करे, परिश्रम, प्रमेहको करे, अतिसार और संग्रहणीमें हितकारक दीपन और पाचन है । बहुत दिनके सेवन कर्त्ताको समयपर न मिलनेसे शरीरमें पीडा करे ।

भाँग.

बब्बुलत्वकषायेण भंगासंस्वेद्यशोषयेत् ।
गोदुग्धभावनांदत्वा शुष्कांसर्वत्रयोजयेत् ॥

अर्थ–भांगको बबूलके काढेमें स्वेदनकर गोदुग्धकी भावना देकर सुखानेसे शुद्ध हो इसको सर्व योगोंमें मिलावे ।

भाँगकेगुणदोष

विजयाकटुकषायोष्णा तिक्तावातकफापहा ।
संग्राहीवाक्प्रदावल्या मेधाकृद्दीपनीपरा ॥

अर्थ–भांग-तीखी, कषेली, गरम, कटु, वात-कफकी दूर करने वाली, और संग्राही है वाणीकी वृद्धिकरे, बलकर्त्ता, मेधाकर, तथा अग्निको दीपन करे ।

थूहर.

सैहुंडोरोचनस्तीक्ष्णो दीपनःकटुकोगुरुःशूलमष्ठीलकाध्मानगुल्मशोफोदरानिलान् हंतिदोषान्यकृत्प्लीह कुष्ठोन्मादाश्मपांडुताः॥

अर्थ–थूहर-रुच्य, कडवी, तीखी, गरम, दीपन और भारी है । शूल, अष्ठीलिका, अफरा, गोला, सूजन, उदररोग, बादी, त्रिदोष, यकृत् प्लीह, कोढ, उन्माद, पथरी और पांडुरोगका नाश करे ।

संखिया (सोमल.)

गौरीपाषाणकःप्रोक्तो द्विविधःश्वेतपीतकः ।
श्वेतःशंखस्यसदृशो पीतोदाडिमकःप्रभः ॥
श्वेतःकृत्रिमकःप्रोक्तो पीतःपर्वतसंभवः ।
विषकर्मकरौतौहि रसकर्मणिपूजितौ ॥
कृष्णरक्तविभेदेन चतुर्धाकथ्यतेकचित् ।

अर्थ–संखिया दोप्रकारका है सफेद और पीला, सफेद शंखके समान उज्ज्वल, और पीला अनारके समान, जिनमें सफेद बनाहुआ और पीला पर्वतसे निकलता है, ये दोनों विष सदृश कार्य करते हैं, और पारद कर्ममें पूज-

नीय है, पारेका बंधन करते हैं, परंतु कही काले और लालके भेदसे चार प्रकारके माने जाते हैं।

विषविकारोंकी शान्ति.

अफीमकेविषकीशांति.

वृहत्क्षुद्रारसंदुग्धं पलमानानिसेवणात् ।
नागफेनविषंयाति सजीवतिचिरंपुमान् ॥
उग्रासिंधुतथाकृष्णा मज्जामदनकंफलं ।
तप्तनीरेणतद्देय महिफेनंविषंजयेत् ॥
टंकणंनीलतुत्थंच घृतयुक्तंचदापयेत् ।
तेनवांतिर्भवेत्सद्य नागफेनविषंजयेत् ॥

अर्थ—बडी कटेरीका एक पल रस दूधके साथ पीनेसे अफीमका विष नाश हो, और मनुष्य जीवे तथा वच, सैंधानोन, पीपल, मैनफलकी छाल, इनको गरमजलके साथ खाय तो अफीमका विष दूरहो, अथवा सुहागा, नील, नीलाथोथा सबको पीस घृतमें मिलाकर पिये तो वमन होकर अफीमका विष दूर हो।

धतूरेके विषकी शान्ति.

वृंताकफलवीजस्य रसोहिपलमात्रकं ।
भक्षणाद्भुक्तधत्तूर विषंनश्यतिनिश्चितं ॥
कर्पासास्थितथापुष्प जलेनोत्काथ्यपानतः।
धतूरस्यविषंहंति तथालवणसेवनात् ॥
गोदुग्धप्रस्थमेकंतु शर्करास्यात्पलद्वयं ।
तत्पानतोविषंयाति धत्तूरस्यतुनिश्चितं ॥

अर्थ—बेंगनके बीजोंका एक पल रस पीनेसे धतूरेका विष निश्चय शांतिहो, और बिजौरे और कपासका फूल जलमें औटाकर पीनेसेभी नाश हो अथवा निमक खानेसे वा सेरभर गोदुग्धमें दो पल मिश्री डालकर गरम २ पीवे तो धतूरेका विश नाश हो।

वच्छनाग (सिंगिया विषकी शान्ति.)

पटवणस्यवृक्षस्यरसंपलप्रमाणकं ।
शर्करायुक्तपानेनवत्सनागविषंहरेत् ॥

अर्थ—हीरवण वृक्षके एकपल रसमें मिश्री मिलाकरपीनेसे वच्छनाग विषकी शांति होवे।

भिलाएके विषकी शांति.

स्वरसोमेघनादस्यनवनीतेनसंयुतः ।
भल्लातकभवंशोफंहंतिलेपेनतत्क्षणात् ॥
दारुसर्षपमुस्तानिनवनीतेनलेपयेत् ।
भल्लातकविकारोऽयंसद्योगच्छतिनिश्चितं ॥
नवनीतंतिलंदुग्धंपुनःखंडयुतेनच ।
लेपनात्च्छमयंयातिभल्लातकव्यथात्वरं ॥

अर्थ—चौलाईकारस और मक्खन मिलाकर भिलवेकी सूजन पर लेप करे तो तत्क्षण दूर हो। अथवा देवदारु-सरसों और नागरमोथाको मक्खनमें मिलाकर लेप करे तो सूजन दूर हो- मक्खन-तिल-मिश्री और दूध मिलाकर लेपकरे तो भिलवेकी व्यथा दूरहो, अथवा नीम-तिली और तिलका तेल औटाकर लगानेसे भिलवेकी व्यथा तत्क्षण दूर हो।

भांगके विषकी शांति.

शुंठीगोदधियुक्ताचपानेभृंगाविकारनुत् ।

अर्थ—सोंठका चूर्ण गौके दहीके साथ सेवन करनेसे भांगका विकार नाश हो।

गुंजा (घूंघची) विषकी शान्ति.

मेघनादरसोग्राह्यःशर्करायुक्तपानतः ।
उच्चटायाविकारस्यशांतिःस्याद्दुग्धसेवनात्॥
मधुखर्ज्जूरिमृद्वीकावृक्षम्लाम्लाचदाडिमौ ।
परूषरामलेश्चैवयुक्तोसद्यविकारनुत् ॥

अर्थ—चौलाईके रसमें मिश्री मिलाकर पीनेसे गुंजाविष नाशहो इसपर दूध पिये वा सहत, छुहारे, दाख,तंतडीक, खट्टा अनार, फालसे और आंवलेंको एकत्र कर खानेसे गुंजाका

विष मिटे।

कनेरविषकी शांति.

सितायुक्तसदादेयंदधिवामाहिषंपयः।
तथार्कत्वचापीताकणवीरविषापहा॥

अर्थ–मिश्रीमिला भैंसका दूध वा दही वा आककी छाल पियेतो कनेरकाविष दूर हो।

थूहर विषकी शांति.

शीतवारिसितायुक्ता पानेवज्रीविषापहा।
वस्त्रवायुतथाकार्या शीतच्छायांचसेवयेत्॥
चिंचापत्रजलेपिष्ट्वा मर्दयेत्शांतिकृत्सदा।
हेमगैरिजलेपाने स्नुहीचार्कविकारनुत्॥

अर्थ–शीतलजलमें मिश्रीमिलाकर पानकरे वा कपडेकी पवन और शीतल छायाका सेवनकरे अथवा इमलीके पत्ते जलमें पीसकर लगावे तो थूहरविष शांतिहो। अथवा सुवर्ण गेरिकको जलमें पीसकर पीनेसे थूहर और आकका विकार नाश हो।

जैपाल विकार शांति.

धान्यकंसितयायुक्तं दधिनासहयःपिवेत्।
देहेजैपालजांव्याधिंनाशमाप्नोतिनिश्चितं॥

अर्थ–धनियां और मिश्री दहीमें मिलाकर सेवन करे तो जमालगोटेकी सब व्याधि नाश हों।

अथ लोहाष्टक.

सुवर्णरजतंताम्रं त्रपुसीसकमायसं।
षडेतानिचलोहानिकृत्रिमौकांस्यपित्तलौ॥

अर्थ–सोना, चांदी, ताँबा, रांगा, सीसा और लोहा ये छः लोह हैं और कांसी पीतल दो बने लोह हैं।

षट् लवण.

लवणानिषडुच्यंतेसामुद्रंसैंधवंविडं।
सौवर्चलंरोमकंचचूलिकालवणंतथा॥

अर्थ–नोन छःप्रकारका है सामुद्र, सैंधा, विड, काला, रोमक और चूलिका।

क्षार त्रय.

क्षारत्रयसमाख्यातंयवस्वर्जिकटंकणं।

अर्थ–जवारखार, सज्जीखार और सुहागा ये तीनों क्षारत्रय के नामसे प्रसिद्ध हैं

मधुर त्रय.

घृतंगुडोमाक्षिकंचविज्ञेयंमधुरत्रयं।

अर्थ–घृत, गुड और सहत ये तीनों मधुरत्रय कहलाते हैं।

वसा वर्ग.

जंबूकमंडूकवसावसाकच्छपसंभवा।
कर्कोटीशिशुमारीचगोशूकरनरोद्भवा॥
अजोष्ट्रखरमेषाणांमहिषस्यतथावसा।
वसावर्गसमाख्यातंपूर्वाचार्य्यैःसमासतः॥

अर्थ–स्यार, मेंडक, कछवा, केंकडा, सूस, गौ, सूअर, मनुष्य, बकरा, ऊंट, गधा, मेंढा और भैंसा इन तेरहोंकी वसाको पूर्वाचार्य वसावर्ग कहते हैं।

मूत्र वर्ग.

मूत्राणिहस्तिकरभमहिषीखरवाजिनां।
गोजावीनांस्त्रियःपुंसांपुष्पंवीजंतुयोजयेत्॥

अर्थ–हाथी, ऊंट, भैंसा, गधा, घोडा, गौ, बकरी, मेंढा, और स्त्रियोंका रज और पुरुषोंका वीर्य, मूत्रवर्ग कहलाते हैं।

माहिष पंचक.

महिषांबुदधिक्षीरंसाभिसारंशकृद्रसः।
तत्पंचमाहिषंज्ञेयंतद्वच्छागलपंचकम्॥

अर्थ–भैंसकामूत्र, दही, दूध, घृत और गोवरका रस ये माहिष पंचक कहाता है इसी प्रकार बकरीका छागल पंचक होता है।

अम्ल वर्ग.

अम्लवेतसजंबीरनिंबुकबीजपूरकं ।
चांगेरीचणकाम्लंचअम्लीकंकोलदाडिमं ॥
अंबष्टातिंतिडीकंचनारंगरसपत्रिका ।
करवंदंतथाचान्यदम्लवर्गःप्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ–अम्लवेत, जंबीरी, नींबू, बिजौरा, लोनियां, चनाखार, इमली, बेर, अनारदाना, चूका, तितिडीक, (कोकम) नारंगी, रसपत्रिका, और करोंदासे आदिले औरभी खट्टीवस्तु अम्लवर्ग कहलाती हैं ।

चणकाम्लश्चसर्वेषामेकएवप्रशस्यते ।
अम्लवेतसमेकंवासर्वेषामुत्तमोत्तमं ॥
रसादीनांविशुद्ध्यर्थंद्रावणेजारणेहितं ।

अर्थ–सब खटाइयोंमें चनाकी खटाई उत्तम है, अम्लवेतकी उत्तमोत्तम है पारे आदिके शोधन, द्रावण, जारणमें हितकर्ता है ।

अम्ल पंचक.

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुल्लिकाचुल्लिकारसं ।
पंचाम्लकंसमुद्दिष्टंतचोक्तंचाम्लपंचकम् ॥

अर्थ–बेर,अनारदाना,तितिडीक,लोनियां और चूका ये पंचाम्ल और अम्लपंचक कहाते हैं ।

पंच मृत्तिका.

इष्टिकागैरिकालोणंभस्मवल्मीकमृत्तिका ।
रसप्रयोगकुशलैःकीर्त्तिताःपंचमृत्तिका ॥

अर्थ–ईंट, गेरू, नोन इनके चूर्ण और राख, बांबीकी, मिट्टी, ये रसप्रयोग ज्ञाताओंने पांच मिट्टी कही हैं ।

विष वर्ग.

शृंगिकंकालकूटंचवत्सनाभंसकृत्रिमं ।
पित्तंचविषवर्गोयंसवरःपरिकीर्त्तितः ॥
रसकर्मणिशस्तोयंतद्भेदंनवधापिच ।
अयुक्त्यासेवितश्चायंमारयत्येवनिश्चितं ॥

अर्थ–सिंगिया, कालकूट, वत्सनाभ, कृत्रिम और पित्त यह विषवर्ग कहा है । यह रसकर्ममें श्रेष्ठ है उपविषके नौ भेद हैं । विषको अयुक्ति पूर्वक खानेसे मार डालता है ।

उपविष.

लांगलीविषमुष्टिश्चकरवीरजयातथा ।
तिलकःकनकोर्कश्चवर्गोह्युपविषात्मकः ॥

अर्थ–कलयारी,कुचला,कनेर,भांग, तिलकवृक्ष,धतूरा,और आक उपविष वर्ग कहलाता है।

दुग्धवर्ग.

हस्त्यश्ववनिताधेनुगर्द्धभीःछागिकोपिवा ।
उष्ट्रकीदुंबराश्वत्थभानुन्यग्रोधतिल्वकं ॥
दुग्धिकाक्षुग्गणंचैतत्तथैवोत्तमकंठिका ।
एषांदुग्धेविनिर्दिष्टोदुग्धवर्गोरसादिषु ॥

अर्थ–हथिनी, घोडी, स्त्री, गौ, गधी, बकरी, ऊंटनी, गूलर, पीपल, आक, वड, हिंगोट, दुद्धी, थूहर, और उत्तमकंठिका इनके दूधको दुग्धवर्ग कहते है ।

विट (विष्टा) वर्ग.

पारावतस्यचापस्य कपोतस्यकलापिनः ।
गृध्रस्यकुक्कुटस्यापि विनिर्दिष्टोहिविड्गणः॥
शोधनंसर्वलोहानां पुटनाल्लेखनात्खलु ।

अर्थ–कबूतर, नीलकंठ, पिंडुकिया, मोर, गीध, और मुरगाकी वीठको विड्गण कहते हैं यह सर्व लोहका पुट देनेसे शोधन करे ।

रक्तवर्ग.

कुसुंभंखदिरोलाक्षा मंजिष्टारक्तचंदनं ।
आक्षीववंधुजीवश्च तथाकर्पूरगंधिनी ॥
माक्षिकंचेतिविज्ञेयो रक्तवर्गोतिरंजनः ।

अर्थ–कसूम, खैर, लाख, मजीठ, लाल चंदन, सहजना, दुपहरिया, कपूरगंधि, सोनामक्खी, यह रक्तवर्ग कहलाता है ।

पीतवर्ग.

किंशुकःकर्णिकारश्च हरिद्राद्वितियंतथा ।
पीतवर्गसमादिष्टो रसराजस्यकर्मणि ॥

अर्थ–ढाक, कनेर, दोनों हलदी यह पीतवर्ग पारदकर्ममें कहा है ।

श्वेतवर्ग.

तगरःकुटजःकुंदो गुंजाजीवंतिकातथा ।
सितांभोरुहकंदश्च श्वेतवर्गउदाहृतः ॥

अर्थ–तगर, कूडाकाफूल, कुंदकाफूल, गुंजा (घूंघची) का फूल, अरनीकाफूल, सफेदकमलकाफूल, और कंद, यह सफेदवर्ग कहाता है ।

कृष्णवर्ग.

कदलीकारवल्लीच त्रिफलानीलिकानलः ।
पंकःकासीसवालाम्र कृष्णवर्गउदाहृतः ॥

अर्थ–केला, करेला, त्रिफला, नील, चित्रक, कीच, कसीस, और नयाआम. यह कृष्णवर्ग कहाता है ।

द्रावणगण.

गुडगुग्गुलगुंजाज्य सारघैट्टंकणान्वितैः ।
दुर्द्रवाखिललोहादे द्रावणायगणोमतः ॥

अर्थ–गुड, गूगल, घूंघची, घृत, नौसदर, सुहागा, यह कठिन धातुओंके द्राव करनेको द्रावणगण कहा है ।

क्षाराःसर्वेमलंहन्यु रम्लाःशोधनजारणं ।
मांद्यंविषाश्चनिघ्नंति स्निग्ध्यंस्नेहाःप्रकुर्वते ॥

अर्थ–क्षारवर्गकी भावना देनेसे पारा आदि धातुओंका मल नष्टहो, अम्लवर्गकी भावना शोधन और जारणमें हित है, विषवर्ग धातुओंकी मंदता दूर करे, घृत तैलादि स्नेहवर्ग धातुओंमें चिकनाहट पैदा करें ।

रसानांतौल्यम्.

त्रुटिःस्यादणुभिःषड्भिः तैर्लिक्षाषड्भिरीरिता। ताभिःषड्भिर्भवेद्यूकःषड्यूकास्तुरजः स्मृतः । षड्रजःसर्षपःप्रोक्तस्तैषड्भिर्यवईरितः ॥ एकागुंजायवैःषड्भिःनिष्पावस्तुद्विगुंजकः । स्याद्गुंजात्रितयंवल्लो द्वौवल्लौमाषउच्यते ॥

अर्थ–छःअणुकी १ त्रुटि, छःत्रुटिकी १ लिक्षा, छःलिक्षाकी १ यूक, छःयूकका १ रज, ६ रजकी १ सरसोंका, ६ सरसों १ यव, ६ जौका १ रत्ती, २ रत्तीका १ मटर, ३ रतीका १ वल्ल दो वल्लका १ मासा होता है ।

द्वौमाषौधरणंतद्वौ शाणनिष्ककलाःस्मृताः ।
निष्कद्वयंतुवटकं सचकोलइतीरितः ॥
स्यात्कोलत्रितयंतोलः कर्षोनिष्कचतुष्टयं ।
उदुंबरंपाणितलंसुवर्णं कवलग्रहः ॥
अक्षंविडालपदकं शुक्तिपाणितलद्वयं ।
शुक्तिद्वयंपलंकेचिद् न्येशुक्तित्रयंविदुः ॥
तदेवकथितंमुष्टिः प्रकुंचंबिल्वमित्यपि ।

अर्थ–दो मासेका १ धरण, दो धरणका शाण, शाणका सोलहवांभाग १ निष्क, दो निष्कका १ वटक, इसीको कोलभी कहते है ३ कोलका १ तोला, ४ निष्कका कर्ष, जिसको उदुंबर, पाणितल, सुवर्ण, कवलग्रह, अक्ष और विडालपदकभी कहते हैं । दो पाणितलकी शुक्ति, दो शुक्तिकी पल, किसी के मतमें ३-शुक्तिका पल कहा है, इसीको मुष्टि, प्रकुंच और बिल्वभी कहते है ।

पलद्वयंतुप्रसृतं तद्वयंकुडवोंजलिः ।
कुडवौमानिकातौस्या त्प्रस्थंद्वौमानिकेस्मृते॥
प्रस्थद्वयंशुभौस्तौद्वौ पात्रकेद्वयमाढकं ।
तैश्चतुर्भिर्घटोमाणिः नल्वनर्मणशूर्पकाः ॥
द्रोणश्चशब्दाःपर्यायाःपलानांशतकंतुला ।
चत्वारिंशत्पलशतं तुलाभारःप्रकीर्तितः ॥

अर्थ-दोपलका १ प्रसृत, दोप्रसृतका १ कुडव वा अंजली, दो कुडवकी १ मानिका दो मानिकाका १ प्रस्थ, दो प्रस्थका १ पात्रक, दो पात्रकका १ आढक, ४ आढकका १ घट वा मणि वा नल्वक वा शूर्पक वा द्रोण कहलाता है, १००० पलकी १ तुला, और ४०० पलका १ भार होता है परंतु शारंगधरके मतसे १००० पलका १ भार होता है सोही ठीक है।

टंक १ कर्ष ४ पलं १६ चापि कुडवं ६४ प्रस्थ २५६ माढकं। १०२४ द्रोणो ४०९६ द्रोणी १६३८४ खारिकेति ६५५३६ क्रमादेतेचतुर्गुणाः। रसार्णवादिशास्त्राणिनिरीक्ष्यकथितोमया। रसोपयोगियत्किंचिद्दिङ्मात्रंतत्प्रदर्शितम् ॥

अर्थ-टंक, कर्ष, पल, कुडव, प्रस्थ, आढक, द्रोण, द्रोणी और खारी ये प्रत्येक क्रमसे एकसे दूसरी चौगुनी संख्या कही है। अर्थात् टंकसे चौगुना कर्ष, और कर्षसे चौगुना पल, इत्यादि औरभी जानों मैंने रसार्णवादि शास्त्रोंको देखकर कहा है। रसका जो कुछ उपयोगीथा उसका दिङ्मात्र दिखला दिया है।

पुटोंकीसंज्ञा और रीति.

महापुट.

घनचौरसकेगर्त्तेहस्तद्वितयमात्रके।
करीषैरर्द्धपूर्णेचमुद्रितंचशरावकं ॥
संस्थाप्यचान्यकारीषैःपूरितेशुभगर्त्तके।
अग्निमज्वाल्यशीतेचगृन्हीयात्तुशरावकं ॥
एतन्महापुटंचोक्तंकृतिभिःपूर्वसूरिभिः।

अर्थ-फैलावमें चौकोर दो हाथका गढा करे, उसको आधा आरने उपलेंसें भरे, पीछे औषधियुक्त शरावपर कपरमिट्टी कर सुखाय पश्चात् गढेके बीचमें रखे, पीछे बाकीके गढेको आरने उपलेंसे पूर्णकर बंद करदे, फिर आग लगादे स्वांगशीतल होनेपर सरावको निकाले इसको पहले वैद्य महापुट कहते हैं।

गजपुटके लक्षण.

घनचौरसकेसार्द्धेहस्तेचैवतुगर्त्तके।
पूर्ववद्दीयतेचाग्निस्तत्पुटंगजसंज्ञितं ॥
माहिषंवेत्तिसंज्ञेयंसूरिभिःसमुदाहृतं।

अर्थ-घनाकार डेढहाथ चौडा गढेला हो उस आधेमें उपलाभर बीचमें सरावका संपुट रख अग्निदे इसको गजपुट वा माहिषपुट कहते हैं।

वाराहपुट लक्षण.

अरत्निमात्रेगर्त्तेयद्दीयतेपूर्ववत्पुटं।
करीषाग्नौतुतत्प्रोक्तंपुटंवाराहसंज्ञितं ॥

अर्थ-अरत्निमात्र (अंगूठेसे उंगलीतक) गढेमें पूर्वोक्तरीतिसे आरने उपलोंको अग्निदेनेको वाराहपुट कहते हैं।

कुक्कुटपुट लक्षणं.

वितस्तिमात्रगर्तेयत्पुटयेत्तुकौक्कुटम्।

अर्थ-बालिश्तभर चौडे लंबे गढेमें पूर्वप्रकार अग्निदेनेको कुक्कुटपुट कहते हैं।

कपोतपुट लक्षण.

वितस्तिमात्रकेगर्त्तेसप्तभिर्वाथवाष्टभिः।
वन्योत्पलैःपुटंदद्यात्तत्तुकापोतसंज्ञितम् ॥

अर्थ-बालिश्तभरके गढेमें सात आठ उपलोंकी अग्निदेनेको कपोतपुट कहते हैं।

गोवरपुट लक्षण.

चूर्णीकृतकरीषाग्नौभूमावेवतुयत्पुटं।
दीयतेतत्तुकृतिभिर्गोवरंसमुदाहृतम् ॥

अर्थ-पृथ्वीपर उपलोंका बारीक चूराकर उसपर औषधियोंको रख कपरमिट्टी कर स-

राव रखे उसको उपलोंके चूरेसे बंदकर अ-
ग्निदेवे इसको गोवरपुट कहते हैं ।

कुंभपुट लक्षण.

मृद्घटेबहुछिद्रंचकृत्वांगुलसमानिवै ।
चत्वारिंशत्ततस्तस्मिन्शीतमुल्मुकचूर्णकं ॥
अर्द्धमापूरयित्वाचमुखेदद्याच्छरावकं ।
कर्पटेनमृदालिप्तशाछायाशुष्कंचकारयेत् ॥
तस्मिनंगारकान्क्षिप्यचुल्यांवाथेष्टकासुच ।
निधायत्रिदिनाच्छीतंगृहीत्वोषधिमाहरेत् ॥
एतत्कुंभपुटंज्ञेयंकथितंशास्त्रदर्शिभिः ।

अर्थ–मिट्टीकी गागरमें उंगलीके समान छे-
दकर उस आधीमें कोलेभर पीछे औषधी रख
उसका मुख सरावसे बंदकर ऊपरसें कपरमि-
ट्टीकर छायामें सुखाय आगके अंगारे डाल चू-
ल्हे वा ईटों पर रख अग्निदे पीछे उतारकर
तीन दिन शीतल होनेदे जब शीतल होजाय
तब औषधियोंको निकाले इसे कुंभपुट कहते हैं।

भांडपुट लक्षण.

स्थूलभांडंतुषापूर्णं मध्येमूषासमन्वितं ।
वन्हिनाविहितेशकंतद्भांडपुटमुच्यते ॥

अर्थ–बडे घडेको धानके तुषोंसेभर बीचमें
मूषको रखे पीछे अग्निसे यथायोग्य पाककरे
इसको भांडपुट कहते हैं ।

वालुकापुट.

अधस्तादुपरिस्ताच्चचक्रिकाछाद्यतेखलु ।
वालुकाभिःप्रतप्ताभिःयत्रतद्वालुकापुटं ॥

अर्थ–मूषको ऊपरनीचे वालूसेभर औषधि-
योंको परिपक्व करे उसे वालुकापुट कहते हैं

भूधरपुट.

वन्हिमित्रात्क्षितौसम्यक्निखनेत्र्यंगुलादधः।
उपरिष्टात्पुटंयत्रपुटंतद्भूधराह्वयम् ॥

अर्थ–दो अंगुल जमीन खोद उसपर धरि-
याको रख ऊपरसे पुटदेकर अग्निदे इसे भूध-
रपुट कहते हैं ।

लावकपुट.

ऊर्ध्वंषोडशिकामूत्रैः तुषैर्वागोवरैः पुटं ।
यत्रतल्लावकाख्यंस्यात्सुमृदुद्रव्यसाधने ॥

अर्थ–मूसा पर मूत्र, तुष, और उपलोंका
पुट जहांदिया जाय उसे लावकपुट कहते हैं
यह पुट नम्रवस्तु बनानेको उत्तम है ।

अथ यंत्राध्यायः

अथयंत्राणिवक्ष्यंतेरसतंत्राण्यशेषतः ।
समालोक्यसमासेनसोमदेवेनसाम्प्रतम् ॥

अर्थ–अब संपूर्ण रसग्रंथोंको देखकर संक्षे-
पसे सोमदेव यंत्रोंको कहते हैं ।

यंत्रशब्दकी निरुक्ति.

स्वेदादिकर्मनिर्मातुंवार्त्तिकेन्द्रैः प्रयत्नतः ।
युज्यतेपारदोयस्मात्तस्माद्यंत्रमितिस्मृतं ॥

अर्थ–स्वेदादि कर्मनिर्माण करनेको आचा-
र्योंकरके यत्नपूर्वक पारा योजना किया जाता
है जिनमें इस कारण इनको यंत्र कहते हैं ।

कचची यंत्र

नातिह्रस्वांकाचकूपींनचातिमहतींदृढाम् ।
वाससाकर्दमाक्तेनपरिवृत्यासमंततः ॥
संलिप्यमृदुमृत्स्नाभिःशोषयेद्रविरश्मिना ।
निधायभेषजंतत्रमुखमाच्छादयेत्ततः ॥
कठिनाद्दृढयाद्यापिपचेद्यत्नुविधानतः ।
कचचीयंत्रमेतद्धिरसादिपचनेमतम् ॥

अर्थ–कांचकी सीसी
न बहुत बडी न छोटी
दृढ हो उसपर मुलतानी
मिट्टिसे कपरमिट्टी करे
और धूपमें सुखावे पीछे
उसमें औषधीभर मुख
बंदकर वालुकायंत्रादिमें
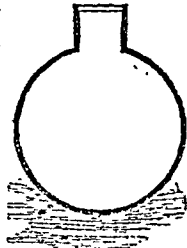
स्थापन कर विधिपूर्वक पाक करे इसप्रकार कपडा चढी सीसीको कवचीयंत्र कहते हैं इससे पारदादिकी पाकक्रिया होती है।

दोला यंत्र.

निवद्धंत्वौपधंसूतंभूर्जेत्तुत्रिगुणाम्बरे।
रसपोटलिकांकाष्ठेदृढंबध्वागुणेनाहि॥
संधायपूर्णकुंभांतःस्वावलंबनसंस्थितां।
अधस्तादुज्ज्वालयेद्वान्हिंतत्तदुक्तक्रमेणहि॥
दोलायंत्रमिदंप्रोक्तंस्वेदनाख्यंतदेवाहि।

अर्थ—औपधि मिला पारा लेकर तीन वार भोजपत्रसे लपेटे पीछे कपडेकी पोटलीमें बांध एक या डेढ वालिस्तके छोटे काठसे बांधकर घडेमें लटका दे, और जिसमें पाचन करना हो उसमें आधा घडा जल भरदे फिर उस पोटलीको उसके अंदर इस तौरसे लटकावे जिसमें उसका पैंदा पेंदीसे न मिले, पीछे उस घडेको चूल्हेपर चढाय कहे प्रमाण अग्नि दे इसको दोलायंत्र कहते हैं, और स्वेदनीयंत्रभी कहते हैं.
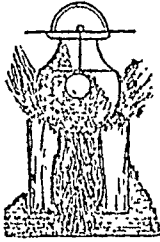
साम्बुस्थालीमुखेबद्धंवस्त्रेस्वेद्यंनिधायच॥
विधायपच्यतेयंत्रेस्वेदनंतच्चथास्मृतम्।

अर्थ—अथवा जलयुक्त पात्र मुखपर कपडा वांध उसमें जिसको स्वेदन किया चाहते हैं उसको रख भाफ दे और पचनं करावे इसको स्वेदनयंत्र कहते हैं।

गर्भ यंत्र.

स्थूलभांडस्यगर्भेतुइष्टिकांस्थापयेत्ततः।
पत्रस्थाप्यंचेष्टिकोर्ध्वंद्रव्यंस्थूलेचभांडके॥
पश्चान्मुखेचान्यभांडंघटिकासदृशंददेत्।
साधुलेपंततःकृत्वाजलदत्वोर्ध्वपात्रके॥
अग्निमुज्वालयेन्मंदंतप्तनीरंपुनस्त्यजेत्।
पुनःशीतजलंदत्वातप्तंचेत्तत्यजेत्पुनः॥
एवंकृतेचोर्द्धभांडेलग्नंतैलादिकंस्रवेत्।
अंतस्थेसूक्ष्मपात्रेचतच्चग्राह्यंप्रयत्नतः॥
गर्भयंत्रमिदंख्यातंसुगंध्यर्कादिसाधने।

अर्थ—एक वडा घडा चूल्हेपर चढाय उसके पैंदेमें ईट रख उसपर दूसरा पात्र रखे उसमे चारो और औपधि भरदे, पीछे घडेके मुखपर घडियाके समान पात्र रख संधि वंदकर घडेके तेल मंदी २ अग्नि जलावे, मुख ढक्कनमें पानी भरदे, जब वह पानी गरम होजाय तव निकालकर दूसरा शीतल भरदेवे, इस प्रकार वारम्वार गरमजल निकाल २ कर शीतल जलभरता रहे, इस प्रकार करनेसे ऊपरके पात्रकी पेंदीमें भाफजमती है, वही शीतल जल ऊपर रहनेके कारण टपक २ कर भीतर के कटोरेमें गिरती रहती है, उसको सावधानीसे निकाल लेवे, इसको गर्भयंत्र कहते हैं इसके द्वारासुगंधित अर्क (गुलावजलआदि) वनाते है।
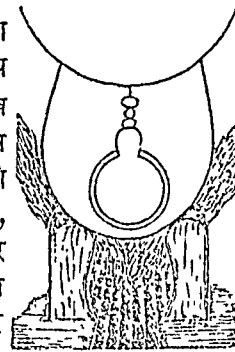
प्रकारान्तर.

गर्भयंत्रंप्रवक्ष्यामि पिष्टिकाभस्मकारकं।
चतुरंगुलदीर्घांतु त्र्यंगुलोन्मितविस्तराम्॥
मृन्मयींतुदृढांमूपां वर्तुलेकारयेन्मुखम्।
लवणंविंशतिभागो भागएकस्तुगुग्गुलोः॥
सुश्लक्ष्णंपेपयित्वातु वारंवारंपुनःपुनः।

मूषालेपंदृढंकृत्वा लवणाद्यंमृदादिभिः ॥
करेतुषाग्निनाभूमौ स्वेदयेन्मृदुमानवित् ।
अहोरात्रंत्रिरात्रंवा रसेन्द्रोभस्मतांव्रजेत् ॥

अर्थ–पारेकी पिष्टि के भस्मकर्त्ता गर्भयंत्र-को कहताहूं, चार अंगुल लंबी और तीन अंगुल चौडी मिट्टीकी दृढ मूष बनावे उसका गोल मुख करे, तदनंतर नोनके वीस भाग और एक भाग गूगलको महीन पीसकर मूषापर दृढ लेप करे, लवणादि मिट्टीमें प्रथम पारेकी पिष्टी रखे, पीछे मुखबंद कर लेप करे, पीछे जमीनमें गढा खोदकर तुषाग्निसे मंद मंद स्वेदन करे तो एक दिन रात्रि वा तीन रात्रिमें पारा भस्म होवे ।
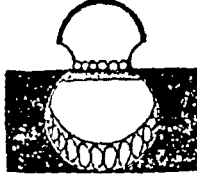
हंसपाकयंत्र.

खर्परंसिकतापूर्णं तत्कृतस्योपरिन्यसेत् ।
अपरंखर्परंतत्र शनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥
पंचक्षारैस्तथामूत्रै लवणंचविडंततः ।
हंसपाकःसआख्यातो यंत्रतद्वार्तिकोत्तमैः ॥

अर्थ–एक बडा खपरा वालूका भरा ले, उसमें औषधियोंको रख ऊपरसे दूसरे खपरेसे मुखसे मुख मिलाकर दृढ बंद करदेवे, इसप्रकार पांचों क्षारोंमें मूत्रोंमें नोनोंमें मंदाग्निसे पाक करे इस यंत्रको हंसपाक कहते हैं ।
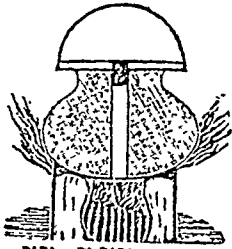
विद्याधरयंत्र.

अधःस्थाल्यांरसंक्षिप्त्वा विदध्यात्तन्मुखोपरि।
स्थालीमूर्ध्वमुखींसम्यक्निरुध्यमृद्वमृत्स्नया॥
ऊर्ध्वस्थाल्यांजलंक्षिप्त्वा चुल्यामारोप्ययत्न तः। अधस्ताज्ज्वालयेद्वह्निं यावत्प्रहरपंचकम्
स्वांगशीतात्ततोयंत्रा द्गृह्णीयाद्रसमुत्तमम् ।
विद्याधराभिधंयंत्र मेतत्तज्ज्ञैरुदाहृतम् ॥

अर्थ–भीतरसे चिकनी दो हांडी ले प्रथम एकमें घुटा हुआ डलीका शिंगरफ अथवा घुटा हुआ पारा डाल दूसरी हांडीसे मुखसे मुख मिलाकर बंद करे, और दोनोंकी संधि मुल्तानी मिले कपडेसे बंद करदे, और उपरकी हांडीमें जल भरदे जब जल गरम होजाय तब निकालकर दूसरा शीतल भरदे, उन दोनोंको चूल्हेपर चढा नीचे अग्नि जलावे, इस प्रकार पांच प्रहर अग्नि देवे, पीछे स्वांग शीतल होनेपर ऊपरकी हांडीमें जो पारा लगा हो उसको युक्तिसैं निकाल लेवे, इसको यंत्रज्ञाता विद्याधरयंत्र कहते हैं ।
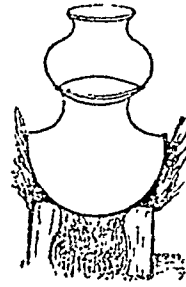
डमरूयंत्र.

यंत्रस्थाल्युपरिस्थालिं न्युब्जांदत्वानिरुध्यते
यंत्रंडमरुकाख्यं तद्रसभस्मकृतेहितम् ॥

अर्थ–एक हांडाके मुखसें दूसरी हांडीका मुख जोडकर संधियोंको मुल्तानी मिट्टीसे बंद करे, इसको डमरूयंत्र कहते हैं । यह यंत्र पारदकी भस्मके लिये उत्तम है ।
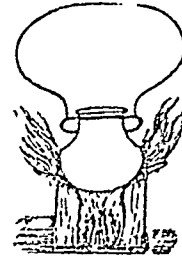
ऊर्ध्वनलिकायंत्र.

भांडकंठादधच्छिद्रे वेणुनालंविनिक्षिपेत् ।
समानंकरकांवापि भांडवत्केनिवेशयेत् ॥

संधिलिप्त्वाचनालाग्रे काचभांडंनिधापयेत्।
अधस्तात्मासवेद्वास्यं टंकयंत्रमितिस्मृतम् ॥

अर्थ-एक घडालेकर उसके गलेमें छेदकरें उसमें वांस या नरसलकी समान नली जो पोलीहो प्रवेश कर मुखपर उतनाही बडा ढकना देकर लेपदे, नलीके मुखपर कांचका पात्र देवे, पीछे पूर्वोक्त घडेको भट्टीपर रख नीचे अग्नि जलावे तो अग्निके ऊपरवाले पात्रमेंसे औषधियोंका अर्क खिंचकर दूसरे पानीवाले पात्रमें इकट्ठा होवे इसको टंकयंत्र कहते हैं, इसीसे अत्तारलोग सब प्रकारकें अर्क खींचते हैं।
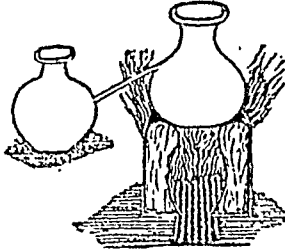
वालुका यंत्र.

भांडेवितस्तिगंभीरेमध्येनिहितकूपिके ।
कूपिकाकंठपर्यन्तेवालुकाभिश्चपूरिते ॥
भेषजंकूपिकासंस्थंवन्हिनायत्रपूजिते ।
वालुकायंत्रमेतद्धीयंत्रतंत्रबुधैःस्मृतं ॥

अर्थ-बालिस्तभरगहरा मिट्टीका पात्र ले उसकी पैदीमें पैसेके बराबर छिद्र कर उसपर टिकटी रक्खे कि जिसके दोनोंतर्फ छेद रहें, पीछे उसमें आतिशी शीशीमें औषधि रख मुखबंद करदे, पीछे वालुकायंत्रको चूल्हेपर चढाय प्रयोगमें कहे प्रमाण पचन करावे इसको यंत्रवेत्ता पुरुष वालुका यंत्र कहते हैं ।
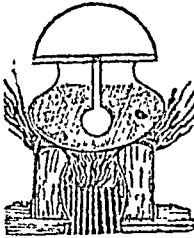
भूधर यंत्र.

वालुकासुसमस्तांगंगतेमूषारसान्विता ।
दीप्तोपलैः संवृणुयाद्यंत्रंभूधरनामकम् ॥

अर्थ-मूषमें पारा भरकर बंदकरे, फिर उसको वालूसे परिपूर्णकर वालूपर आरने उपलोंकी अग्नि देवे उसको भूधरयंत्र कहते हैं ।
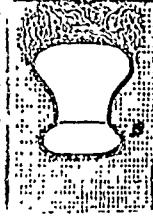
पाताल यंत्र.

हस्तप्रमाणंनिम्नंचगर्त्तंकृत्वाप्रयत्नतः ।
तस्मिन्भांडंचसंस्थाप्यतथान्यंपात्रमाहरेत् ॥
तस्मिन्नौषधवर्गंचदत्वान्यंचशरावकं ।
मुखेसंस्थाप्यछिद्राणिकृत्वाचैवशरावके ॥
शरावसहितंपात्रंगर्त्तस्थंभाजनेन्यसेत् ।
संधिलेपंततःकृत्वागर्त्तमापूर्यमृत्स्नया ॥
पश्चादग्निंचप्रज्वाल्यस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ।
पश्चात्तत्पात्रमध्यस्थंपात्रंयुक्त्यासमाहरेत् ॥
तदंतस्थंचतत्तैलंगृण्हीयाद्विधिपूर्वकं ।
पातालाख्यमिदंयंत्रंभाषितंशंभुनास्वयं ॥

अर्थ-एक हाथ गहरा गडा खोद उसमें बडे मुखका पात्र रखें पीछे दूसरे पात्रमें औषधि रखकर उसके ऊपर छेदवाला शरावढकदे और उस शराव समेत गढेवाले पात्रके ऊपर उलटा रखे ताकिदोनोंका मुख मिलजावे, पीछे संधिलेपकर उस गढेको मिट्टीसे भरदेवे और ऊपर अग्नि जलावे तो शरावके छिद्र द्वारा तेल वा अर्कखिंचकर नीचेके पात्रमें गिरेगा, पीछे स्वांगशीतल होनेपर तेल वा अर्कके पात्रको युक्तिसे निकाल लेवे इसको पातालयंत्र कहते है यह शिवने कहा है ।

तेजोयंत्र.

भाण्डेचार्द्धप्रमाणेनद्रव्यंसंस्थाप्यंप्रयत्नतः ।

तन्मुखेद्विनलीयंत्रंसंस्थाप्यंचनिरोधयेत् ॥
पश्चान्मंदाग्निमज्वाल्यजलंदत्वोर्द्धपात्रके ।
तत्तसनलिकाद्वारानिःसार्यंचपुनःपुनः ॥
नीचस्थनलिकावक्त्रेभांडंस्थाप्यंद्वितीयकम् ।
तस्मिनर्कश्चसंयायीगृण्हीयात्तुविशेषतः ॥
तेजोयंत्रमितिख्याततंतथान्यैर्लवकंमतं ।

अर्थ–एक वडा पात्रले उसको आधा द्रव्यसेभर उसपर दोनलीका यंत्र रखे पीछे संधि लेपकर नीचे मंदाग्नि जलावे, और ऊपरके पात्रमें जलभरदे जब जलगरम होजाय तब नलीद्वारा निकाल डाले इसीप्रकार जब २ गरमहो तब २ निकाले नीचेकी नलीके मुखपर एकपात्र स्थापनकरे, उसमें सब अर्क खिंचकर इकट्ठा होवे इसको तेजोयंत्र कहते हैं, और कोई इसको लवकयंत्रभी कहते हैं ।

कच्छपयंत्र.

खर्परंमथुकंसम्यक् विस्तारंतस्यमध्यतः ।
आलवालंपुटेकृत्वा तन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥
ऊर्ध्वाधस्तुविडंदत्वामल्लेनारुध्ययत्नतः ।
ऊर्ध्वदेवंपुटंतस्ययंत्रंकच्छपसंज्ञकम् ॥
जारणार्थंरसस्योक्तंगंधादीनांविशेषतः ।
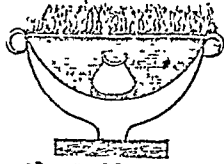
अर्थ–मोटा और वडा खपराले उसके बीच थांवलासा बनावे उसमें पारा भरदेवे उसके ऊपर नीचे विडदेवे, तदनन्तर मल्ल ऊपर लेपकर बंदकरे, उसको ढकना देकर उसके ऊपर अग्निका पुट देवे, यह पारदकी गंधकजारणको कच्छपयंत्र कहा है ।

तुला यंत्र.

वृन्तकाकारमूषेद्वेतयोःकुर्यादधःखलु ।
प्रदेशमात्रांनलिकांमृदालिप्तासुगंधिकां ॥
तत्रैकस्मिन्क्षिपेत्सूत मन्यस्यांगंधचूर्णकं ।
निरुध्यमूषयोर्वक्त्रंवालुकायंत्रकेक्षिपेत् ॥
गंधाधोज्वालयेदग्नितुलायंत्रमुदाहृतम् ।
वालगंधाश्मसाराणांजारणार्थमुदाहृतम् ॥

अर्थ–बैंगनके आकार दो मूषवनावे उनके नीचे प्रदेश संधि (अंगूठोसे लेकरतर्जनी तवको प्रादेश कहते है) इतनी वडी नली वनावे उन दोनोंको जोडकर मिट्टीसे संधिलेपकर एक मूषामें पाराभर दूसरेमें गंधकका चूर्ण भरे पीछे उनको वालुकायंत्रमें रखकर गंधकके नीचे अग्नि जलावे तो पारेका जारण होवे इसको तुलायंत्र कहते है इससे हरिताल, गंधक, लोह इनका जारण होता है ।

जल यंत्र.

उपर्यापस्तलेतापोमध्येचरसगंधकौ ।
जलयंत्रमिदंगोप्यंयंत्रंश्रेष्टंसमीरितं ॥
अस्मिन्स्वर्णादिभस्मत्वंगंधकादिंचजारयेत् ।
कृत्वालोहमयींपात्रींमधोमुखसमन्वितां ॥
मुखमध्येक्षिपेद्द्रव्यंपात्रवक्त्रंनिरोधयेत् ।
लोहचक्रिकयारुध्वातत्संधिंसाधुलेपयेत् ॥
तस्मिन्कोष्टेक्षिपेदस्छांगंलोहरजोन्वितं ।
पुनःपुनश्चसंशुष्केपुनरेभिश्चलेपयेत् ॥
लोहवत्तचवव्वूलकाथेनपरिमर्दितं ।
जीर्णेष्टकारजःसूक्ष्मगुडचूर्णसमन्वितम् ॥
लेपयेत्खलुतत्प्रोक्तंदुर्भेद्यंसलिलैःखलु ।
खटिकांपटुकिटंश्चमहिषीदुग्धमर्दितैः ॥
यत्तयामृत्स्नयारुद्धोनगंतुंक्षमतेरसः ।
विदग्धवनितागौढप्रेम्णाबद्धःपुमानिव ॥
ततोजलंविनिक्षिप्यवन्हिमज्ज्वालयेदधः ।
अथवाकारयेन्मूषापात्रलग्नामधोमुखीं ॥
लोहानामनुरूपाश्चतन्मूषामुखरोधिनीं ।
दत्वाचान्यातयोसंधिंविलेप्याजामृगादिभिः

जलमूर्ध्वेविनिक्षिप्यनिस्संदेहंविपाचयेत् ।
जलयंत्रंतुबहुभिर्दिनैरेवहिजायते ॥

अर्थ—ऊपर जल, नीचे अग्नि बीचमें पारा गंधक रखकर पचन करे, उसको जलयंत्र कहते है। इसमें सुवर्ण, अभ्रकसत्व, गंधकादि जारण करे। एक लोहका बडा पात्र बनावे जिसका मुख नीचेको हो उसमें पाराआदि द्रव्य भर पात्रका मुख ढकदे, लोहेकी टिकयासे ढक उसकी संधियोंको दृढ बंदकर संधियोंपर लोह चूर बकरेके रुधिरमें सानकर लगावे, उसे बार २ सुखा २ कर लेप करे, पीछे पुरानी ईटका कूकुआ, गुड इनको चूरके काढेमें मिलाकर लेप करे तो यह जलके भेदनेमें नहीं आवे, अर्थात् पानी नहीं मरे-और उसपर खडिया-नोन और लोहचूरको भैंसके दूधमें खरलकर लेप करे तो पारा इस मुद्राको त्यागकर नहीं जावे, जैसे चतुर और युवास्त्रीके प्रेममें फंसा मनुष्य उसे छोडकर नहीं जाता, पीछे ऊपर जल भरकर नीचे अग्नि जलावे, अथवा पात्रसे चिपटी नीचामुख ऐसी मूष बनावे उस पर पत्र जमाकर मुख बंदकरे और उसकी संधियोको पूर्वोक्त प्रकार बंद करे और ऊपर जलभरकर निस्संदेह अग्निपर पाचन करे-यह जलयंत्र बहुत दिनोंमें सिद्ध होता है।
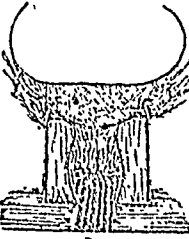
गौरी यंत्र.

गौरीयंत्रंप्रवक्ष्यामिसुखदंजारणाविधौ ।
अष्टांगुलोच्छ्रायांकृत्वाचतुरस्रांसमेष्टिकां ॥
सतुनागात्समुत्कृत्यमध्येचूर्णेनलेपयेत् ।
श्लक्ष्णंरसकृतांपिष्टिंकृत्वाभाग्यवद्वताभ्रजां॥
रूप्यजांहेमजांवापिसत्वेनापिविनिर्मितां ।
निवेश्यतत्रचोर्ध्वाधोबलेश्चूर्णंपिधायच ॥
तस्यांपिष्ट्याश्चतुर्थांशंवारंवारंविशोषयेत् ।
वत्क्रोखर्परचक्रींतुदत्वालेप्यविशोष्यच ॥
ऊर्ध्वंहयखुराकारंपुटंदद्याल्लघुत्पलैः ।
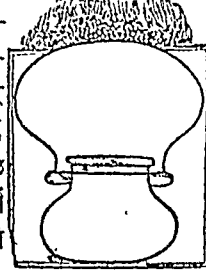
अर्थ—अब जारणविषे सुखकारक गौरीयंत्रको कहताहूं च न.कार आठ अंगुल लंबी चौडी और ऊंची समचरातल ईंट लेकर उसके बीचमें गंढाकरे, उसको काँचसे साफकर बीचमें चूनालेप करे, तदनन्तर अभ्रकसत्वका सोने और चांदीमें घोटी पारेकी पिट्ठीको पूर्वोक्त ईंटके गढेमें भरकर ऊपरनीचे गंधकका चूर्ण बिछावे परन्तु चूर्ण पारेका चतुर्थांश लेवे, पीछे गढेके मुखपर खीपडेकी टिकरी रख संधिलेपकर सुखाय उसके ऊपर घोडेके खुरके समान आरने उपलोंकी अग्नि देवे इसको गौरीयंत्र कहते हैं।

कोष्ठीयंत्र.

हस्तप्रमाणंदीर्घार्रं गण्टसंख्यांगुलंतिर्यक्।
समभूभागेघटितं हृत्तंमृत्कर्मसंपन्नं ॥ वातायन
द्विवृत्त भस्त्रीमुखतुल्यमित्यधोभागे । प्रथमे-
त्पगुत्रशान्ताले भैस्राभिर्त्रोऽभ्रसत्वार्थे ॥
इदमेवकोष्ट्यंत्रंपूर्णंविद्याद्यथोचितांगारैः ।

अर्थ—एक ऐसी लकडीले जो ऊपरसे
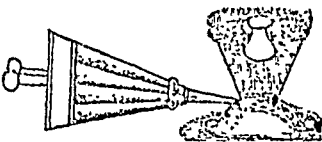
नवी हुई हो लंबी एक हाथ और चौडी ४ अंगुलहो-परंतु ८ अंगुल तिरछीहो उसको समान

पृथ्वीपर रख भीगी हुई गाढी मिट्टी उसपर चढावे और दोनों सुडौल गोल मुखकरे, परंतु नीचेमुख छोटा बनावे, पीछे सावधानीसे अचक लकडीको निकाल लेवे, तदनंतर धूपमें सुखाकर पीछे भट्टी वा अंगीठीमें छेदकर उस कोष्ठिकाको अच्छेप्रकार रखदे और उसके पिछले भागमें पशूकी वसाकी नाल अथवा धौंकनी बांध तदनंतर भट्टीमें पक्के कोलेडाल अभ्रकादि सत्व निकालनेको रखे, और अग्निदे धौंकनीसे खूब धमावे इसे कोष्टीयंत्र कहते हैं. इसकी क्रिया लुहारोंसे भलेप्रकार मालूम होसक्ती है ।

वज्रमूषा.

वर्तुलागोस्तनाकारा वज्रमूषाप्रकीर्तिता ।
द्वौभागौतुपदग्धस्य एकोवल्मीकमृत्तिका ॥
लोहकिट्टस्यभागैकं श्वेतपाषाणभागकं ।
नरकेशसमंकिंचित् छागीक्षीरेणपाचयेत् ॥
यामद्वयंदृढंमर्द्य तेनमूषाचसंपुटं ।
शोषयित्वारसंक्षिप्त्वा तत्कल्कैःसंधिलेपितं ॥
वज्रमूषाइदंस्यातां सम्यक्सूतस्यमारणे ।

अर्थ—दोभाग तिनकोंकी राख एकभाग वांबीकी मिट्टी एक भाग, लोहकीट, एकभाग सफेद पत्थरका चूरा और कुछ मनुष्यके वाल डाले, सबको एकत्रकर बकरीके दूधमें औटाय दोप्रहर पर्यन्त अच्छीतरह घोटे पीछे उस मिट्टीकी गौके थनके सदृश गोल और लंबी बनावे पीछे उसका ढकना बनायकर धूपमें सुखाय उसमें पाराभर ढकनासे ढक देवे और संधियोंको उसी मिट्टीसे बंदकरे यह पारा मारनेको वज्रमूष कहा है, इसीको अंध मूष कहते है ।
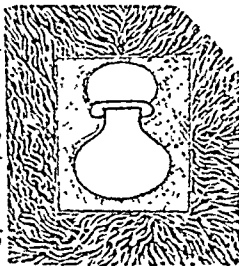
चक्रयंत्र.

गर्त्तवाह्येभवेद्वक्रो मध्येगर्त्तेरसंकुरु ।
चक्रयंत्रमिदंसिद्धं वाह्येगर्त्तेबृहत्पुटं ॥

अर्थ—पहले गोलाकार एक गढा खोदे, और उसकी थोडी दूर पर खाई खोदे, पहले गढेमें पारा रखे, और दुसरेमें अग्निका पुटदे, इसको चक्रयंत्र कहते हैं ।

इष्टिकायंत्र.

मध्येगर्त्तसमायुक्ता मिष्टिकांकारयोद्भिषक् ।
गर्त्तेचैवसमेश्लक्ष्णे तस्यांसूतादिकंन्यसेत् ॥
दत्वोपरिसरावंच संधिमृल्लवणैर्लिपेत् ।
तदूर्ध्वंसिकतांकिंचित् दद्यादेयंपुटंलघु ॥
इष्टिकायंत्रमेतद्धि जारयेद्गंधकादिकम् ।

अर्थ—बीचमें गढेलायुक्त एक ईट लेवे, उस गढेलेमें पारे आदिकी पिट्ठी भर सरावसे मुख बंदकर उसकी संधियोंको नोंन और मिट्टीसे बंदकर पीछे एक गढा खोद उसमें ईटको रख ऊपरसे थोडी वालू बुरकदे, पीछे ईटपर थोडा अग्निका पुटदे, उसको इष्टिका यंत्र कहते हैं ।

कोष्ठिकायंत्र.

षोडशांगुलविस्तीर्णं हस्तमात्रायतंसमं ।
धातुसत्वनिपातार्थं कोष्ठिकापरिकीर्तितं ॥
वंशखादिरमाधूक वदरीदारुसंभवैः ।
परिपूर्णदृढांगारै रर्धवातेनकोष्टके ॥
भस्त्रयाज्वालमार्गेण ज्वालयेचहुताशनं ।

अर्थ—कोष्ठिकायंत्र १६ अंगुल विस्तारमें एक हाथ लंबा होना चाहिये, यह संपूर्ण धातुओंके सत्वपातनार्थ कहा है-बांस, खैर,

महुआ, और बेरकी लकडीके कोलोंसे उसको पारिपूर्णकर नीचेके मार्गमें अर्थात् धोंकनीके धमानेसे अग्निको प्रज्वलित करे, इसको कोष्टिकायंत्र अर्थात् (धोकनी) यंत्र कहते हैं यह कोष्टिकायंत्रका दूसरा प्रकार कहा।

वक्रयंत्र.

दीर्घकंठीकाचकुप्यांगिलयेत्काचभांडकम् ।
तिर्यक्कृत्वापचेच्चूल्यांवक्रयंत्रमिदंस्मृतं ॥

अर्थ–बड़ी गर्दनकी एक शीशी लेवे, उस शीशीके कंठाग्रभागको दूसरी कांचकी शीशीमें प्रवेश करदेवे, इसको वक्रयंत्र कहते हैं। पीछे उस आधारपात्रको वालुकायंत्रमें स्थापित कर नीचे अग्नि जलावे तो उस शीशीको औषधियोंका रस साफहोकर दूसरी शीशीमें प्राप्तहो जिसमें रस इकट्ठा हो उसको किसी जलके पात्रमें स्थित करे।

नाडिकायंत्र.

विनिधायघटेद्रव्यंकनीयांशमधोमुखं ।
घटमन्यंमुखेतस्यस्थापयित्वापयोमुखं ॥
मृदुमृद्भिःसमालिप्यनाडिकांविनिवेशयेत् ।
यंत्रात्कुंडलितांभित्वाजलद्रोणीमहत्तमाम् ॥
आधारभांडपर्यंतंततश्चूल्यांविधारयेत् ।
अधस्ताज्ज्वालयेद्वन्हियावद्वाष्पोविशेदधः
गृह्णीयादाधारगतंनिर्मलंरसमुत्तमम् ।
नाडिकायंत्रमेतद्धिमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ–एक घडेमें औषधीभर दूसरा छोटापात्र उसके मुखपर रख दोनोंके मुख चिकनी मिट्टीसे ल्हेसदे, पीछे उस यंत्रमे एक गोल नल लेकर दूसरे जलके पात्रमें डालदे जलपात्रसेभी निकाल दूसरे आधारपात्रमें डाले पीछे पूर्वोक्त यंत्रको चूल्हेपर रख नीचे आग्नि जलावे तो अग्निके ऊपरवाले घडेका द्रव्य भाफरूप होकर नलके रस्ते जलपात्रमें शीतल और इकट्ठा होकर नीचेके आधारपात्रमें गिरे उसगिरे हुए निर्मल पारेको सावधानीसे निकाल लेवे इस यंत्रके द्वारा गुलावजलादि उत्तम २ अर्क निकाले जाते है इसे नाडिकायंत्र कहते हैं।
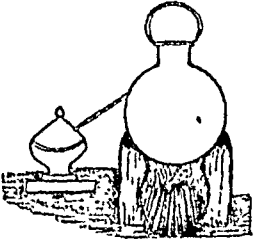
वारुणीयंत्र.

ऊर्द्धतोयसमायुक्तंजलद्रोणीविवर्जितं ।
तोयसंवेष्टिताधारमृजुनाडीसमन्वितं ॥
यंत्रंतद्वारुणीसंज्ञंसुरासाधनकर्मणि ।

अर्थ–पूर्वोक्त नाडिकायंत्रके समीप जल द्रोणी अर्थात् जलपात्र रहता है परंतु जलद्रोणी रहित केवल ऊपर जलका पात्रही रहे, उसको वारुणीयंत्र कहते है, इसका नल सीधा होता है इसयंत्रका आधार भांडजलका पात्र ऊपर रहता है इसके द्वारा दारू खींचते हैं।

दूसरा प्रकार.

बीजद्रव्यंघटेदत्वासंछाद्यांन्येनतन्मुखं ।
मृदामुखंविलिप्याथनाडींवंशादिसंभवाम् ॥
यंत्रादाधारगांकृत्वास्नावयेद्विधिनारसं ।
वारुणीयंत्रमेतद्धिसुरासंसाधनेशुभम् ॥

अर्थ–एक प्रकारका और सामान्य वारुणीयंत्र होता है, एक मद्य (शराब) निकालनेको घडालेवै उसका मुख किसी छोटे पात्रके मुखसे मिलाकर बंद करे, संधियोंको मुल्तानी मिट्टीसे ल्हेसदे, पीछे उसे ऊपरके पात्रमें मिलादे, उस आधारपात्रके नीचे शीतलजल भरारखे, इस प्रकार बना वारुणीयंत्र सुरा (मद्य) आदि बनानेको शुभ है।

तिर्यक्पातन यंत्र.

घटेरसंविनिक्षिप्यसजलंघटमन्यकं ।
त्रिर्यक्मुखद्वयोःकृत्वातन्मुखंरोधयेत्सुधीः ॥
रसाधोज्वालयेदग्निंयावत्सूतोजलंविशेत् ।
तिर्यक्पातनमित्युक्तंसिद्धैर्नागार्जुनादिभिः

अर्थ—दो बडे २ घडे तिरछे रखे, दोनेके मुख आपसमें मिलादेवे, इसको तिर्यक्पातनयंत्र कहते हैं। एक घडेमें पारा और दूसरेमें जल भरे दोनोंका मुख मिलाकर संधि भले प्रकार बंद करे, पारेवाले घडेके तले अग्नि जलावे, अग्निके प्रभावसे पारा उडकर जलवाले घडेमें प्रवेश करेगा, इस क्रियाको तिर्यक्पातन कहते हैं। शेषयंत्र रसराजसुंदरकेपरिशिष्टभागमेंलिखेजायंगे।

मानातंत्रान्वीक्ष्यस्वमतंसंयोज्ययत्नतश्शुभगं ।
रसराजसुंदरेऽस्मिन्मध्यमखंडस्तुपूर्णतांनीतः ॥

इतिश्री मध्यमखंडः समाप्तः

अथोत्तरखंडप्रारंभः

अधुनात्रमहेसद्यश्चमत्कारकरान्रसान् ।
रसतंत्राणिभूरिणिविलोक्यजनतुष्टये॥१॥

अर्थ—अब अनेक रस तंत्रोंके देखकर वैद्योंकी प्रसन्नताके अर्थ तत्काल चमत्कार दिखानेवाले रसोंको कहते है।

महामृत्युंजयरसः

सूतकंचविषंनागंगंधकंचचतुष्टयं ॥
समंसर्वंविमृष्टव्यंशिखिनाचदिनद्वयम् ॥१॥
तस्यकल्कस्यपादंकंमृणमयेदृढभाजने ॥
क्षिप्त्वाहेम्नोपिकर्षण्यापत्रिकासममात्रिका२
दातव्यातस्यकल्कस्यत्तोपरिष्टात्समंततः ॥
पुनःशरावकंदत्वाकुर्यात्संधिनिरोधनम्॥३
विशोष्यवालुकांदद्यादुपरिष्टात्दृढायसी ॥
याममेकमथोचूल्ह्यांपाचयेन्मंदवन्हिना ॥४॥
अन्यामेवमिमांहेमपत्रिकांमारयेत्क्रमात् ॥
अवशिष्टस्यकल्कस्यतस्याप्युपरिपत्रिकां ॥५
समावस्थांचसकलंहेमचूर्णंरसस्यच ॥
विषभागैकमेतस्यचतुर्भागंचमौक्तिकं ॥ ६ ॥
गंधकंभागमेकंस्यात्तस्मात्पूर्वोक्तदोषधात् ॥
मर्दयेदेकतःकृत्वाचित्रकस्यरसेनतु ॥ ७ ॥
पुटित्वाकिंचिदेवंतदिष्टंरूपंतदुद्धरेत् ॥
हन्यात्सर्वानयंरोगान्रोगयोगानुपानतः॥८

अर्थ—पारा शुद्ध १ तोले, संखिया विष शुद्ध, १ तोले, सीसा शुद्ध १ तोले, गंधक शुद्ध १ तोले, प्रथम सीसेको गलाय उसमें तोलेभर पारा मिलादेवे, पीछे शीतलकर दोनोंकों खरलमें डालकर घोटे, जब महीन होजावे तब इसमें गंधक डालकर कजली करे, पीछे

विषकाचूर्ण डालकर चीतेके रसमें दो दिन खरल करे, जब गाढा होजाय तब बहुत बारीक १ तोले सोनेके पत्र उसी पिट्टीके आस पास लपेट देवे, पीछे इसको सराव संपुटमें रखकर उसके ऊपर एक कपरोटी कर सुखालेवे, पीछे एक हांडीमें रख ऊपर संपुट करे और चार अंगुल वालू भरे, और लोहेकी कटोरीसे ढकदेवे, फिर उस कटोरीकी संधी गीली चिकनी मिट्टीसे बंदकर देवे, पीछे चूल्हे पर चढाकर एक प्रहर मन्दाग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब उतारलेवे, संपुटमें से पारेकी भस्म निकालकर तोले, जितनी भस्म तोलमें होवे उसका चतुर्थांश शुद्ध विष डाले, यदि चारभाग पारेकी भस्म और सोनेके वर्क होवें तो उनके बराबर ४ भाग मोती डाले और विषके बराबर १ भाग गंधक डाले, दो दिन चीतेके रसमें घोटे, जब गाढा हो जाय तब फिर सोनेके वर्क पिट्टीसे लपेटकर सराव संपुटमें रख कपरोटी करे, पीछे हांडीमें रख चारअंगुल वालू बिछाय फिर लोहेकी कटोरीसे पूर्वोक्त प्रकार मुहबन्दकर दो प्रहर आंच देवे [परंतु यहभी याद रहेकि ऐसा मोटा पात्रभी न ले जिसमें बिलकुल आंच न लगे, और ऐसा पतलाभी न लेवे जो रस बिलकुल बिगड जावे, इस रसके बनानेमें बहुत होशियारी चाहिये] जब स्वांगशीतल होजाय तब निकालकर बहुत उत्तम शीशीमें भर रख छोडे, इसमेंसे बलाबल देखकर १ रत्तीसे ३ रत्ती तक वैद्य अपनी बुद्धिबलसे मात्रा देवे जिसरोगके अनुपानसे देवे उसी २ रोगका नाश करे।

अथ अनुपान.

पित्ताधिकेपुरोगेपुशाल्मलीद्रवमिश्रितः ॥
क्षयेकासेऽम्लपित्तेचश्वासेपानाल्पयेपुच ॥९
शाल्मलीद्रवसंमिश्रंबल्यंपुष्ट्यैप्रयोजयेत् ॥
मरिचेनसमंदेयःकफरोगेपुपारदः ॥ १० ॥
पिप्पल्यावातरोगेपुमाक्षिकेणसमन्वितः ॥
शूलेपुपरिणामेपुघृताढ्योमधुमिश्रितः॥११॥
गुडूचीजीरकाभ्यांचस्वरदोपेप्रशस्यते ॥
नाशयत्यचिरेणाश्मुदराण्यतिवेगतः॥१२॥
वारणप्रतिमंकुर्य्याच्छरीरमजरामरं ॥
नशक्यतेगुणान्वक्तुंरसस्यप्रलयेपिच ॥१३॥

अर्थ-सेमलकै रससे इस रसको खाय तो पित्तके रोग दूर करे, खई, खांसी, अम्लपित्त और श्वास इनको दूर करे, तथा इसी अनुपानसे देहको पुष्टि करे। और काली मिरचके संग खाय तो कफ रोगोंको दूर करे। पीपलके संग खाय तो वादीके रोग नाश होवें। वातज्वरके काढेसें खाय तो वातज्वरको दूर करे। पित्तज्वरके काढेसें खाय तो पित्तज्वर जाय। कफज्वरके काढेसें खाय तो कफज्वर नष्ट होवे। सन्निपातके काढेसें खाय तो सन्निपात जाय। विषमज्वरके काढेसें खाय तो विषमज्वर शान्ति होवे। इसी प्रकार जिस २ रोगके काढे या चूर्ण या अवलेहके साथ खाय वह २ रोग दूर होवें। घृत और शहदके साथ खाय तो शूल रोग दूर होवे। ऊंटनीके दूध अथवा नारायण चूर्णके साथ खाय तो उदररोग नाश होवे। गिलोय और जीरेके साथ खाय तो स्वरभंग दूर होवे। इस रसका सेवन करनेसे हाथीके समान देह पुष्ट होवे। और बलवान होय सफेद बाल काले होवें, तथा मृत्यु और वृद्धावस्थारहित देह होवे। इसके गुण प्रलय

पर्य्यंत नहीं कहनेमें आवे ।

नवज्वरे लघुमृत्युंजयोरसः

कर्षशंभूद्भवस्यैकंकर्षस्याद्दरदस्यच ॥
जैपालस्यचशुद्धस्यत्रयमेतद्दिनद्वयम् ॥ १ ॥
वृद्धदारुकनीरेणखल्वेकृत्वाविमर्दयेत् ॥
ततोदुंवरपर्णैश्चस्वरसेनविभावयेत् ॥ २ ॥
शृंगवेररसेनापुंरविवारंविमर्दयेत् ॥
गुंजामात्रावटींकृत्वासितयासहभक्षयेत् ॥३॥
मृत्युंजयरसोनामनवज्वरहरःपरः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा धेलेभर, शिंगरफ धेलेभर, शुद्ध जमाल गोटेके बीज धेलेभर, तीनोंको विधारेके रसमें २ दिन घोटे । कठूंमरके रसमें २ दिन घोटे । अदरकके रसकी १२ भाव नादेवे, पीछे १ रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे, १ गोली ४ रत्ती मिश्रीके साथ खाने को देवे तो नवीनज्वर दूर होवें यदि इस रसके खानेसे गरमी मालूम होतो छाछ और भात खानेको देवे ।

अपरोमृत्युंजयोरसः

ताप्यतालकजैपालवत्सनाभंमनःशिलाः ॥
ताम्रगंधकसूतंचतुल्यंस्याद्रसमर्दितः ॥ १ ॥
मृत्युंजयइतिख्यातःकुकुटेपुटपाचतः ॥
वल्लद्वयंप्रयुंजीतयथेष्टंदधिभोजनं ॥ २ ॥
नवज्वरंसन्निपातंहन्यादेपमहारसः ॥

अर्थ–सोनामक्खी, हरताल, जमालगोटा, वच्छ नागविष, मनसिल, तांबेकीभस्म, और पारा ये सब शुद्धले पीछे तुलसीकेरसमें ४ प्रहर घोटे, पीछे इसको सराव संपुटमेंरखकर कुक्कुट पुटमें फूंके तो यह मृत्युंजयरस बनकर तय्यार होवे, इसको ६ रत्ती रोगोंका बलाबल देखकर मिश्रीकेसाथ देवे, और इसके ऊपर इच्छा पूर्वक दहीका भोजन करावे तो नवीनज्वर और सन्निपात यह महारस दूरकरे ।

चतुर्थ मृत्युंजयोरसः

द्विक्षारंत्र्यूपणंपंचलवणंशतपुष्पिका ॥
समभागमिदंसर्ववस्त्रपूतंसमाचरेत् ॥ १ ॥
तत्समौरसगंधौचकृत्वाकज्जलिकांशुभां ॥
सर्वमेकत्रसंखल्वेमर्दयेद्दिवसत्रयं ॥ २ ॥
अयंमृत्युंजयोनाम्नासन्निपातहरःपरः ॥
कफाधिकेप्रयोक्तव्योरक्तिकापंचमात्रकः ॥ ३ ॥
शूलमामरुजंचैवत्वंह्निमाद्यंचविड्ग्रहं ॥ वात
श्लेष्मभवान्रोगान्कास्वाश्वासौचनाशयेत् ॥४

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, सोंठ, मिरच पीपल, सैंधानिमक, सोंचरानिमक, खारीनिमक, साम्हरनिमक, और सौंफ, प्रत्येक पैसा २ भर लेवे, सबको कूट पीस कपरछन करे । यह चूर्ण ११ पैसाभर होवे तो इसमें ११ पैसाभर ही शुद्ध पारा डाले, और ११ पैसाभर शुद्ध गंधक मिलावे, प्रथम पारे गंधककी कजली करे, पीछे पूर्वोक्त चूर्ण मिलावे, ३ दिन खरल करे, यह मृत्युंजय नामसे विख्यात रस कफाधिक सन्निपातको दूरकरे, शूलको, आमजन्य विकारोंको, मन्दाग्निको, कोष्टको, वादीको, कफके रोगोंको, खांसी और श्वासको दूरकरे, इसकी २ रत्तीकी मात्रा है।

त्रैलोक्यडंबररसः

सूतार्कगंधचपलाजयपालतिक्ता ।
पथ्यात्रिवृच्चविपतिंदुकजान्समांशान् ॥
संभाव्यवज्रपयसामधुनात्रिवल्लं ।
त्रैलोक्यडंबररसोऽभिनवज्वरघ्नः ॥ १ ॥

अर्थ–पारा, तांबा, गंधक, पीपल, जमालगोटा, कुटकी, हरड, निसोत, वच्छनागविष, और कुचला इन सबका चूर्णकर थूहरके दूधकी भावना देवे फिर संपुटमें रखकर फूंक देवे, जब

स्वांग शीतल होजावे तब निकालकर शहतके साथ ८ रत्ती तक बलाबल देखकर मात्रा देवे, यह त्रैलोक्यडंबररस नवीनज्वरका नाश करे यह रसरत्नसमुच्चयमें लिखा है।

ज्वरगजहरीरसः

दरदजलदयुक्तंशुद्धसूतंचगंधं । प्रहरमथसुपिष्टंवल्लयुग्मंचदद्यात् ॥ ज्वरगजहरिसंज्ञंशृंगवेरोदकेन । प्रथमजनितदाहीक्षीरभक्तेनभोज्यं ॥

अर्थ–शिंगरफ, नागरमोथा, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, इन सबको १ प्रहर खरलमें डालकर घोटे, पीछे इसमेंसे ६ रत्ती अदरकके रसमें खानेको देवे तो हाथीरूप ज्वरके मारनेको यह रस सिंहरूप है। इसके खानेसे प्रथम दाह होता है, उसकी शांतिके लिये दूधभातका पथ्य भोजन है।

तरुणज्वरे धूम्रकेतुरसः

दद्यात्समंसूतसमुद्रफेनं । हिंगुलगंधंपरिमर्द्य यामं ॥ नवज्वरेवल्लयुगंत्रिघस्रं। मार्द्रांबुनायं ज्वरधूम्रकेतुः ॥

अर्थ–शुद्धपारा १=पैसाभर, शुद्धगंधक १ पैसेभर, दोनोंकी कजलीकर पीछे समुद्रफेन १ पैसाभर, शिंगरफ १ पैसाभर, दोनों कजलीमें मिलाकर १ प्रहर घोटे। परंतु किसी वैद्यकी यह सम्मति है कि ३ दिन घोटे पीछे २ रत्तीकी गोली बनाकर रखे १ गोली अदरकके रसमें ३ दिनतक देवे तो तरुणज्वर छूटजाय, गमार मनुष्यको ६ रत्ती देवे, पठान (मुसल्मानोंकी जातिविशेष) को भी ६ रत्ती तथा बालकको १ रत्ती अदरकके रसके साथ देवे तो तरुणज्वर दूर होवे।

तरुणज्वरे इभसिंहरसः

शुद्धंसूतंसमंगंधंलोहताम्रंचशीशकं ॥ मरिचंपिप्पलीव्यस्तंसमभागंविचूर्णयेत्॥१॥ अर्द्धभागंविषंशुद्धंमर्दयेद्वासरद्वयं ॥ शृंगवेररसेनाथदद्याद्गुंजामितंभिषक् ॥ २ ॥ नवज्वरेमहाघोरेवातेसंग्रहणीगदे ॥ नवज्वरेभसिंहोयंसर्वरोगेपुयुज्यते ॥ ३ ॥

अर्थ–पाराशुद्ध, गंधकशुद्ध, लोहामारा, तांबामारा, सीसामारा हुआ, मिरचका चूर्ण, पीपरकाचूर्ण, जुदे २ एक एक तोले लेवे। विषशुद्ध ६ मासे, सबको खरलमें डाल अदरकके रसमें २ दिन घोटे, पीछे इसकी २ रत्तीकी गोली बनावे, और १ रत्तीकी जुदी गोली बनावे सुकुमार मनुष्यको १ रत्ती देवे, और बलवानको २ रत्तीकी गोली अदरकके रसमें देवे तो तरुणज्वर दूर होवे बात और संग्रहणी रोगकोभी दूर करे, और यह सर्व रोंगोंपर चले है।

नवज्वरे उदकमंजरीरसः

सूतोगंधष्टंकणःसोपणश्च । सर्वैतुल्यंशर्करामत्स्यपित्तैः ॥ भूयोभूयोमर्दयेत्तंत्रिरात्रं। वल्लो देयःशृंगवेराम्बुनाच ॥ तापेशीतंव्यंजनैस्तक्रभक्तं। वृन्ताकाढ्यंपथ्यमेतत्प्रदिष्टं ॥ अन्हेवोग्रंहन्तिसद्योज्वरंतु । पित्ताधिक्येमूर्ध्नितोयंविदध्यात् ॥

अर्थ–पाराशुद्ध १ पैसाभर, शुद्धगंधक १ पैसाभर, सुहागाभुना १ पैसाभर, मिरचकाली १ पैसाभर, मिश्री ४ पैसाभर, रोहूमछलीका पित्ता ३ पैसेभर, प्रथम पारे गंधककी कजली करै, पीछे सुहागा मिरचकाली और मिश्री मिलाय १ पैसाभर पित्ता मिलाकर एक दिन घोटे दूसरे दिन पैसाभर पित्ता मिलाकर घोटे, तीसरे दिन पैसाभर पित्ता मि-

लाकर फिर घोटे, परंतु अदरकका रस डालता जाय, पीछे इसमेंसे १ रत्तीके प्रमाण अदरकके रसमें खानेको देवे, बलवानको ३ रत्ती देवे बलवानका १ दिनमें नवीनज्वर जाय इसपर पथ्य भटा (बैंगन) का भुर्ता और भात खानेको देवे यदि बहुत दाह होवे तो छाछ पीनेको देवे, और मस्तकके ऊपर शीतल जलका तरडा देवे।

दीपिकारसः

संतप्तसीसभागंचपारदंगंधकंकणा ॥
समभागंपृथक्कृत्वमेलयेच्चयथाविधि ॥ १ ॥
जंबीरस्यरसेसर्वंमर्दयेच्चदिनत्रयम् ॥
मेघनादकुमार्य्याश्चरसेचापिदिनत्रयम् ॥२॥
दिनद्वयमजामूत्रेगवांमूत्रेदिनत्रयम् ॥ ,,
भावयेच्चयथायोग्यंतस्मिन्नेतानिदापयेत्॥ ३
सैंधवंचित्रकंभागंसौवर्चलवणंतथा ॥
तेनसंमेलनंकृत्वाभावयेच्चपुनःक्रमात् ॥ ४ ॥
अनेनविधिनासम्यक्सिद्धोभवतितद्रसः ॥
शर्करावृतसंयुक्तंदद्याद्वल्लत्रयंरसं ॥ ५ ॥
गोधूमस्योदनंपथ्यंमाषसूपंचवास्तुकं ॥
धात्रीफलसमायुक्तंसर्वज्वरविनाशनम् ॥६॥
दीपिकारसइत्येषस्तंत्रज्ञैःपरिकीर्तितः ॥

अर्थ—सीसा १ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, और पीपल १ भाग, इन सब को पीसकर ३ दिन जंभीरीके रसमें घोटे। चौलाई तथा ग्वारपट्ठेके रसमें ३ दिन घोटे। बकरीके मूत्रमें ३ दिन घोटे। गौमूत्रमें ३ दिन घोटे। पीछे इतनी औषधि और मिलावे सैंधानोंन, चित्रक, संचरनोन, सबको मिलाकर क्रमसे फिर पूर्वोक्त रसोंकी भावना देवे। इस प्रकार करनेसे यह रस सिद्ध होवे इसकी मात्रा बलाबल देखकर मिश्री और मक्खनके साथ ९ रत्ती देवे। इसके ऊपर गेंहूका यूष, चांवल, उड़द, मूंग, बथुएका साग, और आंवलेका पथ्य देवे तो सर्वज्वरोंका नाश करे इसको शास्त्रके ज्ञाता दीपिकारस कहते हैं।

भैरवरसः

विषमहौषधिमागधिकोषणाशुमणिरिक्तकमार्द्रकमर्दितं। क्रमविवर्धितमुद्गलितंज्वरंहरतिभैरवएषरसोवरः ॥

अर्थ—विष, सोंठ, पीपल, काली मिरच, तांबेकी भस्म, और हींगलू ये औषधि क्रमसे बढती लेवे, पीछे इनको आकके दूधमें और अदरकके रसमें घोटे तो यह भैरवरस बने। इसकी बलाबल देखकर मात्रा देवे तो घोर वातज्वरको दूर करे। इसकी मात्रा आधी रत्तीकी हैं।

कफज्वरेरसपर्पटः

शुद्धंसूतंद्विधागंधंमर्द्यंभृंगीरसैःक्षणं ॥
पाचयेल्लोहपात्रस्थंचाल्यंतुचटुकेनच ॥ १ ॥
लोहभस्माथवाताम्रंपादांशेनविनिःक्षिपेत्॥
पाच्यंमचालयेन्नैवयामार्द्धंमृदुवन्हिना ॥ २॥
तत्क्षिपेत्कदलीपत्रेगोमयस्योपरिस्थिते ॥
तत्पत्रंधारयेदूर्ध्वंतदूर्ध्वंगोमयंक्षिपेत् ॥ ३ ॥
ततःसंचूर्णयेत्खल्वेनिर्गुंड्याभावयेद्दिनं ॥
जयन्तीत्रिफलाकन्यावासाभार्ङ्गीकटुत्रयैः॥४
भृंग्यग्निमुनिमुण्डीभिर्भावयेत्सप्तसप्तधा पृथक् ॥
आर्द्रकस्यद्रवैःपश्चाद्भावयेद्दिनसप्तकं ॥ ५ ॥
अंगारैःस्वेदयेत्पश्चात्पर्पटाख्योमहारसः ॥
चतुर्गुंजामितोदेयःसम्यक्श्लेष्माधिकेज्वरे॥६
वासाशुंठीभयाक्वाथमनुपानंप्रकल्पयेत् ॥
चव्यकस्यरसैर्वाथपेयंश्लेष्मज्वरापहं ॥ ७ ॥

अर्थ—शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, इन दोनोंकी कजलीकर भांगरेके रसमें खरल

करे, पीछे उस कजलीको लोहेके पात्रमें भर चूल्हेपर चढाकर मन्दाग्नि देवे, और उस कजलीको हिलाता जाय, पीछे इसमें लोहे या तांबेकी भस्म चतुर्थांश डाले, और उसके नीचे मन्द अग्नि देवे लोहभस्म डालकर हिलावे नहीं, उसी तरह पचावे। ऐसे आध प्रहर करे पीछे केलेके पत्तेको गोवरके ऊपर रख उस गरम कजलीको उसके ऊपर ढाल देवे, और उसे शीघ्र केलेके पत्तेसे ढक देवे, जब शीतल होजाय तब खरलमें डालकर चूर्णकर निर्गुंडी (सम्हालू) के रसमें एक दिन घोटे त्रिफला, ग्वारपट्ठा, अरणी, अडूसा, भारंगी, त्रिकुटा, (सोंठि, मिरच, पीपल) भांगरा, चित्रक, अगस्तिया, और गोरख मुंडी, इनकी पृथक् पृथक् भावना एक २ दिन देवे, पीछे अदरकके रसमें सातदिन घोटे, फिर अग्नि पर रखकर पर्पटीकी विधिसे यह पर्पटी बनाय लेवे, इस पर्पटीको कफज्वरकी अधिकतामें ४ रत्तीके प्रमाण देवे, और अडूसा, सोंठ, हरड, इनका काढा बनाय अनुपान देवे, अथवा चव्यका काढा इसके ऊपर पीवे तो कफज्वर दूर होवे।

द्वितीयउदकमंजरीरसः

नवज्वरविनाशायवक्ष्याम्युदकमंजरीं।
रसगंधौसमौस्यातांमरिचंतत्समंक्षिपेत्॥
भावनामत्स्यपित्तेनमर्दयेद्दिवसत्रयं।
टंकणस्यसमंभस्मशर्करासर्वसंमिता॥
आर्द्रकस्यरसेनायंदीयतेवल्लमात्रकं।

अर्थ—नवीनज्वरके दूर करनेको उदकमंजरी रस कहते हैं. पारा, गंधक, बराबर लेवे। दोनोंकी बराबर कालीमिरच ले, सबको खरलमें डाल रोहू मछलीके, पित्तेमें, ३, दिन बराबर घोटे पीछे सुहागेकी भस्म, बराबरकी, मिलावे, और इन सबकी बराबर मिश्री मिलावे। नवीनज्वर वालेको इसमेंसे ३ रत्ती अदरकके रसके साथ देवे।

विनोदविद्याधररसः

रसंगंधंमृतंलोहंत्रिकुटात्रिफलातथा।
कटुकीत्रिवृच्चबृहतीहेमार्कटंकणंविषं॥
एतानिसमभागानिसमांशांतिंतिडीफलं।
चूर्णयित्वाततःसम्यक्मर्दयेत्स्वर्जिकांबुना॥
दंतीक्वाथेततःसम्यग्वटिकावल्लमात्रजा।
विद्याधरविनोदाख्यंदद्याच्चैवनवज्वरे॥
शूलेगुल्मेतथापांडौग्रहण्यर्शक्रमीन्हरेत्।
अजीर्णेत्वामवातेचप्लीहोदरविबंधजित्॥
दातव्यःसर्वरोगेषुनाशयेन्नात्रसंशयः।

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, मृतलोह (सार) सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, कुटकी, निसोत, कटेरी, सुवर्ण भस्म, और ताम्रभस्म, सुहागा, सींगिया विष, इन सबको बराबर लेवे और सबकी बराबर पकी इमलीके फल लेवे, इन सबको कूट पीस सज्जीखारके जलमें घोटे, पीछे दंतीके काढेमें घोटे, और इसकी गोली तीन २ रत्तीकी बनावे यह विनोद विद्याधर रस है. इसको नवीनज्वरमें देवे इसके सेवनसे शूल, गोला, पांडुरोग, संग्रहणी, बवासीर, कृमिरोग, अजीर्णरोग, आमवात, प्लीहोदर, तथा कब्जियत दूर होय इसको सब रोगोंमें देवे तो सर्व रोग नष्ट करे.

महाज्वरांकुश.

शुद्धंसूतंविषंगंधंप्रत्येकंशाणसम्मितं॥
धूर्त्तबीजंत्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत्।
हेमाव्हाकारयेदेषांचूर्णंसूक्ष्मंप्रयत्नतः॥
जंबीरजीरकैर्देयंचूर्णंगुंजाद्वयोन्मितं।
आर्द्रकस्यरसेनापिज्वरंहन्तित्रिदोषजं॥

एकाहिकंद्वाहिकंचत्र्याहिकंचचतुर्थकं ।
विषमंचज्वरंहन्यात्नवंजीर्णंचसर्वथा ॥
महाज्वरांकुशोनाम्नारसोयंसर्वसंमतः ।

अर्थ—शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, प्रत्येक एक २ टंकलेवे । धतूरेके बीज ३ टंक चोक (प्रसिद्ध है) १२ टंक, इन सबको कूट पीस बहुत बारीक चूर्णकर रख छोडे, पीछे इसमेंसे बलाबल देखकर जंभीरीके रसमें वा जीरेके साथ अथवा अदरकके रसमें इसको २ रत्तीके अन्दाज देवे, तो त्रिदोषज, इकतरा, द्वाहिक, तिजारी, चौथैया और विषमज्वर मात्रको तथा नवीन और पुराने सब प्रकारके ज्वरोंका नाश करे, इस सर्वसंमत रसका नाम महाज्वरांकुश है ।

ज्वरघ्नी गुटिका.

एकोभागोरसाच्छुद्धाद्देयःपिप्पलीशिवा ।
आकारकरभोगंधकटुतैलेनशोधितः ॥
फलानिचेन्द्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअमी ।
एकत्रमर्द्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसैः ॥
माषोन्मितांवटींकुर्य्याद्द्यात्सद्योज्वरेबुधः ।
छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीवटिकामता ॥

अर्थ—शुद्ध पारा १ भाग, और शुद्ध एलुआ, पीपल, हरड, अकरकरा, कडवे तेलमें सोधी गंधक, और इन्द्रायणके फलका गूदा इन सबको चार २ भाग लेवे । सबको कूटपीस इन्द्रायनके रसमें खरल करे और एक २ मासेके प्रमाण गोलियां बनावे, और गिलोयके रसके साथ रोगीको देवे तो नवीनज्वर दूर होवे इसको ज्वरघ्नी गुटिका कहते हैं ।

लीलावतीवटी.

पारदोगंधकश्चैवविषंहैमवतीतथा ।
पंचमन्दानिवीजंचक्रमवृद्धानियोजयेत् ॥
एषालीलावतीनामलीलयाज्वरनाशिनी ।
निंबुनीरेणवटिकाकर्त्तव्यामुद्गसन्निभा ॥

अर्थ—पारा, गंधक, सींगिया विष, चौक, जमालगोटा, इनको क्रमसे बढती भाग लेके, सबको कूट पीस कर नींबूके रसमें मूंगके समान गोली बनावे इस गोलीका लीलावती नाम है, यह लीला पूर्वक ज्वरका नाश करे।

नवज्वर हरीरसः

रसंगंधंचदरदंजेपालंक्रमवर्द्धितं ।
दंतीरसेनसंपिष्यवटीगुंजामिताकृता ॥
प्रभातेसितयासार्द्धमसिताशीतवारिणा ।
एकेनदिवसेनैपानवज्वरहरीभवेत् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, हिंगलू, जमालगोटा, ये क्रमसे बढती भाग लेवे । सबको कूट पीस दंतीके रसमें घोटे और १ रत्तीकी गोली बनावे, प्रातःकाल मिश्री वा शीतल जलके साथ खावे तो एकही दिनमें नवीनज्वर नष्ट होवे।

नवज्वरहरीवटी.

रसोगन्धंविषंशुंठीपिप्पलीमरिचानिच ।
पथ्याविभीतकंधात्रीदन्तीबीजंचशोधितम् ॥
चूर्णमेषांसमांशानांद्रोणपुष्पीरसैःपुटेत् ।
वटींमाषनिभांकुर्य्याद्भक्षयेन्नूतनेज्वर ॥

अर्थ—शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सिंगिया विष, सोंठ, पीपल, मिरच, हरड, बहेडा, आंवला, शुद्ध जमालगोटा, सबको समान लेवे और सबको पीस गोमाके रसका पुट देवे, पीछे घोटकर उडदके समान गोली बना इसके खानेसे नवीनज्वर नाश होवे ।

विद्याधर रसः

रसोगंधस्ताम्रःत्रिकटुकटुकाटंकणवरा ।
तूंबूदंतीहिमद्युमणिविषमेतत्समिदं ॥
समस्तैस्तुल्यंस्याद्विमलजयपालोद्भवरजः।

ततःस्नुक्क्षीरेणमगुणमृदितंदन्तिसलिलैः ॥ त्रिगुंजाभामौढंजयतिवटिकासाममतुलं । ज्वरंपाण्डुंगुल्मंग्रहणिगदकीलोदररुजः ॥ मरुच्छूलाजीर्णंपवनमथसामंकृतगदं । विवन्धंप्लीहानंप्रबलमपिविद्याधररसः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, तांवेकी भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, कुटकी, सुहागा, हरड, वहेडा, आंवला, निसोथ, दंती, धतूरेके बीज, आक, इन सबको बराबर लेवे, और इन सबकी बराबर जमालगोटा लेवे, सबको कूट पीस थूहरके दूधमें घोटे, पीछे दन्तीके काढेमें घोटे, तदनन्तर ३ रत्तीकी गोली बनावे इसके खानेसे नवीनज्वर, पांडुरोग, गोला, संग्रहणी, कीलोदर, वायशूल, अर्जीण, बादी, आमवात, कृमिरोग, विवंध, तापतिल्ली, इन सब रोगोंको विद्याधर रस दूर करे ।

विश्वतापहरणरसः

सूतशुल्वनलिकांवलितिक्तांदन्तिवीजचपलं विषतिन्दू । पथ्ययासहविचूर्ण्यसमांशंहेमवारिसहितंदिनमेकं ॥ वल्लयुग्मगुटिकासहतोयैर्नाशयेदधिकज्वरमाशु । विश्वतापहरणोत्रचपथ्यंमुद्गयूषसहितंलघुभुक्तं ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, तांवेकी भस्म, खपरिया गंधक, कुटकी, जमालगोटा, चपल, सिंगिया विष, कुचला, और हरड, इन सबको बराबर लेवे और धतूरेके रसमें १ दिन घोटे, पीछे ६ रत्ती की गोली बनाकर जलके साथ खावे तो ज्वर को दूर करे, इस विश्वतापहरण रसके ऊपर मूंगकायूप और हलका भोजन पथ्य देवे ।

अन्यमतेन विश्वनामान्तर.

रसहिंगुलगंधंचजैपालंमर्दितंत्रिभिः । दंतीकाथेनसंमर्द्यरसोज्वरहरःपरः ॥ नवज्वरंमहाघोरंनाशयेद्यामामात्रतः । आर्द्रकस्यरसेनाथदापयेद्रक्तिकाद्वयं ॥ शर्करादधिभक्तंचपथ्यंदेयंप्रयत्नतः । शीततोयंपिवेच्चानुचेक्षुमुद्गरसोहितः ॥ शीतभंजीरसोनाम्नासर्वज्वरकुलान्तकृत् ।

अर्थ–शुद्ध पारा, हींगलू, गंधक, जमालगोटा, इन सबको, पीस दंतीके काढेसे तीन दिन घोटे, इसके सेवनसे महाघोर नवीनज्वर, एक प्रहरमें नष्ट होइ, इसको अदरकके रसमें दो रत्ती देवे । दही, बूरा और भात भोजनको देय, इस रसको खाकर शीतलजल पीवे, और मूंगका यूप तथा ईखका रस पीना इसपर हित है । इस रसको शीतभंजीर रस कहते हैं । यह सर्वज्वरोंको कालरूप है ।

पुनः पाठान्तरं.

समभागानुपादयरसहिंगुलगंधकान् । जैपालंतैःसमंसर्वंगृह्णीयादिदमादरात् ॥ त्रिदिनंदन्तिकाक्वाथैःशीतभंजीरसोभवेत् । गुंजाद्वयंःसितायुक्तंस्त्रिदोपोत्थंज्वरंजयेत् ॥ पथ्यंदध्योदनंदेयंपातव्यंशीतलंजलं । अपिमुद्गेक्षुरसकःशोभनंसूतसेविनः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, हींगलू और गंधक तीनों वराबर लेवे इन सबकी बराबर शुद्ध जमालगोटा लेवे, सबको खरलमें डार तीन दिन पर्य्यंत दंतीके काढेमें घोटे, तो यह शीतभंजीर रस बने । इसमेंसे दो रत्ती मिश्रीके साथ खाइ, तो त्रिदोपज्वर दूर होवे। इसपर दही, भात पथ्य देवे । और शीतलजल पीवे, तथा मूंगका यूप और ईखका रस पीनेको दे ।

नवज्वरांकुशः

क्रमेणवृद्धान्रसगंधहिंगुलान्नैकुम्भवीजानथदन्तिवारिणा । पिष्टास्यगुंजाचज्वरापहा

भवेज्जलेनचार्द्रासितयामयोजिता ॥

अर्थ–पारा, गंधक, हिंगलू, और जमालगोटा, ये क्रमसे बढती भाग लेवे, पीछे खरलमें डार दंतीके काढेसे घोटकर एक रत्तीकी गोली बनावे, जलके साथ वा अदरकके रसमें अथवा मिश्रीके साथ खाय तौ नवीनज्वर दूर होवें।

गदमुराररिसः

हिंगुलंचविषंव्योषंटंकणंनागराऽभया ।
जयपालसमायुक्तंसद्योज्वरविनाशनम् ॥

अर्थ–हिंगुल, सिंगियाविष, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, नागरमोथा, और हरड इनमें जमालगोटा मिलाय गोली करे, इसके सेवन करनेसे नवीनज्वर दूर होइ।

ज्वरमुरारिरसः

रसबलिफणिलोहव्योमताम्राणितुल्या ।
न्यथरसदलभागोनागरंतत्प्रभृष्टं ॥
भवतिज्वरमुरारिश्चास्यगुंजार्द्रवारिः ।
क्षपयतिदिवसेनप्रौढमामज्वराख्यं ॥

अर्थ–पारा, गंधक, नागेश्वर, सार, अभरक, नामेश्वर, ये सब बराबर लेवे, सोंठ छः भाग लेवे, इसको अदरकके रसमें एकरत्ती देवे। तो यह ज्वरमुरारीरस एकही दिनमें नवीनज्वरको दूर करे।

त्रिपुर भैरवरसः

विषंटंकंबलिम्लेच्छदन्तीबीजंक्रमाद्वहु ।
दंत्यम्बुमर्दितंयामंरसस्त्रिपुरभैरवः ॥
वल्लंत्र्यूपणचार्द्रस्यरसेनसितयाऽथवा ।
दत्तोनवज्वरंहन्तिमांद्यमालिन्यशोषहा ॥
हन्तिशूलंसविष्टंभमर्शांसिक्रिमिजान्गदान् ।
पथ्यंतक्रेणयुंजीतरसेस्मिन्रोगहारिणे ॥

अर्थ–सिंगियाविष, सुहागा, गंधक, हींगलू, जमालगोटा, ये क्रमसे बढती भाग लेवे. पीछे दंतीके रसमें एक प्रहर घोटै तो त्रिपुर भैरव रस बने. इसको तीन रत्ती सोंठ, मिरच, पीपलके चूर्णमें अथवा मिश्रीके संग अथवा अदरकके रसमें देय तो नवीन ज्वर, मंदाग्नि, मलिनता, क्षईरोग, शूल, अफरा, बवासीर, कृमि रोग आदिको नष्ट करे-इसमें छाछका पथ्य देवे।

प्रचण्डरसः

अमृतंपारदंगंधंमर्दयेमहरद्वयं ।
सिंदुवाररसैःपश्चाद्भावयेदेकविंशति ॥
तिलप्रमाणंचददेन्नवज्वरविनाशनम् ।
उद्वेगेमस्तकीतैलंतक्रंचैवतुपाययेत् ॥

अर्थ–शुद्ध विष, पारा, गंधक इनको खरलमें डार दो प्रहर घोटे पीछे निर्गुंडीके रसकी २१ भावना देवे, पीछे इसमेंसे तिलके प्रमाण रोगीको देवे तो नवीन ज्वर दूर होवे। यदि रद्द वा दस्त हो तो मस्तगीका तेल और छाछ पिलावे।

नवज्वररिपुरसः

पात्रंताम्रचयंप्रताप्यबहुशोनिर्वाप्यपंचामृते ।
गोमूत्रेऽग्निजलेचतद्द्विगुणितंम्लेच्छेनपिष्टेनच।
लिप्त्वासम्मृदांशुकैरथपुनःसामुद्रंयामंपचेत् ।
यंत्रेलावणिकेनवज्वररिपुःस्याद्गुंजयासंमितः
अत्रआर्द्रकरसानुपानं ॥

अर्थ–तांबेके पत्रोंको अग्निमें तपाय पंचामृत (सोंठ, मूसली, गिलोय, सतावर और गोखरू) इनके काढेमें बुझावे, तदनंतर इसी प्रकार गोमूत्रमें और चीतेके काढेमें बुझावे, पीछे तांबेके पत्रोंसे दूना शिंगरफ लेवे, और पीसकर तांबेके पत्रोंपर लेप कर सरावसंपुटमें धर सात कपरोटी करे, पीछे अग्निमें धर चार प्रहर लावणिकयंत्रमें आंच देवे तो यह रस बनकर तैयार होवे, एक रत्ती देवे तो नवीन

ज्वर दूर होवे, इसको अदरकके रसमें खाय।

पर्णखण्डेश्वररस

समांशंयोजयेत्खल्वेरसंगंधंशिलाविषं।
निर्गुंडीस्वरसैर्मर्द्यंत्रिरात्रंचार्द्रकद्रवैः॥
गुंजैकंभक्षयेत्पूर्णैर्ज्वरंहन्तिमहद्भुतम्।

अर्थ-पारा, गंधक, शुद्ध मनसिल, और सिंगिया विष, इन सबको बराबर लेवे और खरलमें डाल निर्गुंडी (सम्हालू) के रसमें तीन रात्रि घोटे, पीछे अदरकके रसमें घोटे, तदनंतर एक रत्ती पानके रससे खावे तो तत्काल ज्वर दूर करे।

स्वच्छन्दभैरवरसः

ताम्रभस्मंविषंहेम्नःशतधाभावितंरसैः।
गुंजार्धंसंजयेत्सन्निपातंवाभिनवज्वरं॥
आर्द्राबुशर्करासिंधुयुतःस्वच्छन्द्रभैरवः।
इक्षुद्राक्षासिताभिर्वादधिपथ्यंरुचौददेत्॥

अर्थ-तांबेकी भस्म, सिंगिया विष, सुवर्णकी भस्म, इनमें आर्द्रकादिरसोंकी भावना देय इसमेंसे आधरत्ती खानेको देवे तो सन्निपात और नवीनज्वर दूर होवें। इसको अदरक, मिश्री, सैंधानोंन, इनमेंसे किसीके साथ देवे और ईखकारस, दाखकारस, अथवा मिश्रीका शरवत, दही ये पथ्य देवे, यह स्वच्छन्द भैरव रस है।

द्वितीयस्वच्छंदभैरवः

रसंगंधंसैंधवंचसमभागंविमर्दयेत्।
लोहेचलोहदण्डेननिर्गुंड्याःस्वरसेनच॥
काष्ठनालेनमूषायांवालुकायंत्रपाचितं।
पर्णेनसहदातव्यंरसंरक्तिचतुष्टयम्॥
सर्वज्वरहरःश्रेष्ठोरसःस्वच्छंदभैरवः।

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सेंधानोन, ये तीनों वस्तु बराबर लेवे, इनको लोहेके पात्रमें डाल लोहेके मूसरासे निर्गुंडीके रसमें घोटे, पीछे लकडीके नलवासे मूषमें धर वालुकायंत्रमें पचावे, इसको पानके संग ४ रत्ती खानेको देवे तो सर्वज्वर दूर करे-यह स्वच्छंद भैरव रस है।

रत्नगिरीरसः

सूताभ्रताम्रचूर्णानिगंधश्चार्द्धशिलोहकम्।
लोहार्द्धंमृतवैक्रान्तमर्दयेद्भृंगजद्रवैः॥
पर्पटीरसवत्पाच्यंचूर्णितंभावयेत्पृथक्।
शिग्रुवासकनिर्गुंडीगुडूच्यग्निकभृंगजैः॥
क्षुद्रामुंडीजयंत्याथमुनिब्राम्ह्याथतिक्तकैः।
कन्यायाश्चद्रवैर्भाव्यंद्वित्रिवारंपृथक्पृथक्॥
ततोलघुपुटेपक्वंस्वांगशीतंसमुद्धरेत्।
मापोदनःकणाधान्यःयुक्तश्चाभिनवज्वरे॥
कुर्याज्ज्वरविनिर्मुक्तंरोगिणंघटिकाद्वयात्।
अयंरत्नागिरिर्नामरसोयोगस्यवाहकः॥
मुद्गान्नंमुद्गयूपंवासनीरंतक्रभक्तकं।
रसयुक्तंपथ्यमस्मिन्शाकंसर्वज्वरोदितं॥

अर्थ-शुद्ध पारा, अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, शुद्ध गंधक, सबका आधाभाग लोहभस्म, लोहसे आधी वैक्रांतकी भस्म, इन सबको भांगरेके रसमें खरल करे। तदनन्तर पर्पटी रसके समान पचाय पीछे चूर्णकर उक्त औषधोंकी न्यारी २ भावना देवे। सहजना, अडूसा, निर्गुंडी, गिलोय, चीता, भांगरा, कटेरी गोरखमुंडी, अरनी, अगस्तिया, ब्रम्ही, कुटकी और ग्वारपाठा, इनके रसकी पृथक् २ तीन भावना देवे। तदनन्तर लघु पुटमें पक्व करे, जब स्वांग शीतल होजाय तब इसको १ मासे पीपल और धनियेके साथ नवीनज्वर वालेको देवे तो दो घडीमें रोगीको ज्वररहित कर देवे, यह रत्नगिरी नाम रस है। पृथक् २ अनु-

पानोंके साथ अनेक रोगोंको दूर करता है। पथ्य मूंगका यूप अथवा सावित पक्क मूंग तथा छाछ और भात भोजनको देवे, तथा पारेमें जो पथ्य लिखे हैं सो देवे, और जो शाकज्वरमें कहे हैं सो खानेको देवे। इस रसमें पारेकी प्रतिनिधि चन्द्रोदय डाले। और चन्द्रोदयके अभावमें शुद्ध पारा लेवे।

सर्वज्वरे भेदक मंजरीरसः

समांशंमरिचैसार्द्धतालकंटंकणोवलिः।
मत्स्यपित्तंतृतीयांशंशर्करामखिलैसमाः॥
शृंगवेररसेनात्रद्विगुंजतुलितोरसः।

अर्थ-शुद्ध हरताल, सुहागा, गंधक, और काली मिरच, सब समान भाग लेवे। सबको कूट पीस रोहू मछलीका पित्ता तिसरा भाग डालकर घोटे, पीछे सुखाकर सबकी बराबर मिश्री मिलावे. इस रसको दो रत्ती अदरकके रसमें देवे।

द्विभुजोरसः

म्लेच्छंद्विगुणजैपालंभागवद्रोगंनिवारयेत्।

अर्थ-शिंगरफ और जमालगोटा, दोनों बराबर लेकर दोनोंको घोटकर रोगीको देवे तो नवीन ज्वर दूर होवे।

प्राणेश्वररसः

शुद्धंसूतंतथागंधंमृताभ्रंविपसंयुतं।
समंतन्मर्दयेचालमूलीनीरैस्त्र्यहंबुधः॥
पूरयेत्कूपिकान्तेनमुद्रयित्वाथशोपयेत्।
सप्तभिर्मृत्तिकावस्त्रैर्वेष्टयित्वाथशोपयेत्॥
पुटेत्तत्कुंभपात्रेणस्वांगशीतंसमुद्धरेत्।
गृहीत्वाकूपिकामध्यान्मर्दयेद्दिनमेकतः॥
अजाजीचित्रकंहिंगुस्वर्जिकाटंकणंचयत्।
गुग्गुलुपंचलवणंयवक्षारोयवानिका॥
मरिचंपिप्पलीचैवप्रत्येकंरसमानतः।
एपांकपायेणपुनर्भावयेत्सप्तधातपे॥
नागवल्लीदलयुतःपंचगुंजरसेश्वरः।
दद्यान्नवज्वरेतीव्रेसोष्णंवारिपिवेदनु॥
प्राणेश्वरोरसोनामसन्निपातंनियच्छति।
शीतज्वरेदाहपूर्वेगुल्मशूलेत्रिदोपजे॥
वांछितंभोजनंदद्यात्कुर्य्याच्चन्दनलेपनम्।
तापोद्रेकस्यशमनंवालभापणगायनैः॥
जायतेनात्रसन्देहःस्वास्थ्यंचभजतेनरः।

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अभ्रकभस्म सिंगिया विष, सबको मूसलीके रसमें तीन दिन खरल करे, पीछे सुखाय कांचकी आतिशी शीशीमें भरे, मुखपर मुद्रा कर सात कपरोटी करे, पीछे सुखाय कुंभ पुटकी आंच देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब शीशी फोडकर रस निकाल लेवे। फिर एक दिन खरलमें डाल इन औषधियोंमें खरल करे. जीरा, चीता, हींग, सज्जी, सुहागा, गूगल, पांचों नमक, जवाखार, अजमायन, मिरच, और पीपल सब पारेके समान पृथक् पृथक् लेवे, इनके काढेकी सात २ भावना देवे तो यह रस बने इसमेंसे २ रत्ती नागरवेल पानके रसमें नवीन ज्वरमें देवे और इसके ऊपर गरम जल पीवे यह प्राणेश्वर रस है-सर्व सन्निपातोंको दूर करे, दाह पूर्वक शीत ज्वरमें, गोलमें, शूलमें देवे इसपर जो रोगीकी इच्छा हो सो भोजन देवे, शरीरमें चंदन लगावे, तापकी वृद्धिमें बालकोंसे बोलना और गाना हित है तथा इस औषधिके खानेसे देहमें स्वस्थता होवे।

ज्वरांकुशः

ताम्रंगंधंरसोपेतंगुंजामरिचपूतना।
समीनपित्तंजैपालंतुल्यान्येकत्रमर्दयेत्॥
गुंजाचतुष्टयंचास्यनवज्वरहरःपरः।

ज्वरांकुशःसन्निपातेभैरवेणप्रकाशितः ॥

अर्थ–तांबेकी भस्म, गंधक, पारा, चिरमिठी, मिरच, हरड, रोहू मछलीका पित्ता, और जमालगोटा, इन सबको खरलमें डाल घोटे, इसमेंसे चार रत्ती नवीनज्वर वालेको देवे, और सन्निपातमें देवे तो दोनोंको दूर करे यह भैरवने कहा है।

हुताशन रसः

नागरंकर्षमात्रंस्यात्कर्षमात्रंचटंकणं ।
मरिचंचार्द्धकर्षंस्यात्तावद्दग्धावराटिका॥१॥
विषंकर्षचतुर्थांशंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ।
रसोहुताशनोनाम्नाखाद्यंगुंजामितंज्वरे ॥२

अर्थ–सोंठ टंक ४, सुहागा टंक ४, मिरच टंक ४, कौडीकी भस्म टंक २, सिंगिया विष टंक १, सबको मिलाकर चूर्ण करे यह हुताशन रस एक रत्ती ज्वर वालेको खाना चाहिये।

रोमवेधरसः

शृंगीसर्पविषंसूतंगंधकंचसमांशकं ।
संमर्द्यन्यस्यमृत्पात्रेजलदेशेनिधापयेत् ॥ १॥
एकविंशद्दिनात्सिद्धंगुंजैकंसघृतंतनौ ।
अभ्यंगान्नाशयेत्सर्वान्नवांश्चविविधज्वरान्॥२
रोमवेधइतिख्यातस्तार्क्ष्यःसर्पगणानिव।
धन्वन्तरिविनिर्दिष्टःकौतुकार्थंमहीभुजां॥३॥

अर्थ–सिंगियाविष, सर्पकाविष, पारा, गंधक ये सब बराबर लेवे, सबको खरलमें डालकर घोटे, पीछे किसी मिट्टीके पात्रमें भर मुख बंदकर जलमें गाड देवे, जब इक्कीस दिन बीतें निकाल लेवे, १ रत्तीरस मक्खनमें मिलाकर सर्व देहमें मालिश करे तो सब प्रकारके अनेक ज्वर नष्ट होवें। यह रोमवेधनामसें विख्यात रसज्वरोंको ऐसे है जैसे सर्पोंको गरुड। संपूर्ण राजाओंके आश्चर्यके निमित्त धन्वंतरि भगवानने कहा है।

सर्वेश्वररसः

रसाद्द्विगुणितोगंधश्चतुर्भागस्तुटंकणं ।
तथाष्टभागोजैपालस्त्र्यहंसंमर्दयेद्दृढं ॥ १ ॥
वल्लोनवज्वरंहन्तिरसःसर्वेश्वराभिधः ।
वल्लद्वयंहरीतक्यायुक्तोवातज्वरंतथा ॥ २ ॥
द्विवल्लोमल्लखंडेनपीतःक्षौद्रयुतंकफं ।
गुंजाजीर्णज्वरंघोरंमतिलंघितवांस्तथा ॥३॥
वल्लस्तुसूतिकारोगेपिप्पलीमधुसंयुतः ।
पंचवर्षस्यबालस्ययवमात्रोज्वरंजयेत् ॥ ४ ॥
गुंजाभिवृद्ध्याविषमान्यावच्चातुर्थकावधि ।
मल्लखंडेनसंयुक्तोहन्याद्दोषत्रयंतथा ॥ ५ ॥
यवानीकृमिशत्रुभ्यांवल्लोहन्यात्कृमीनपि ।
एवंसर्वगदान्हंतिरसोभैरवभाषितः ॥ ६ ॥

अर्थ–पारा भाग १ गंधक भाग २ सुहागा भाग ४ जमालगोटा भाग ८ इन सबको तीन दिन खरल करे, पीछें इसमेंसे एक वल्ल देवेतो नवीनज्वरको नष्ट करे, इस रसको सर्वेश्वर कहते हैं. ६ रत्ती हरडके साथ खाय तो वातज्वर नष्ट होवे। मिश्री और शहद के संग ६ रत्ती खाय तो कफज्वर दूर होवे, १ रत्ती जीर्णज्वर, ३ रत्ती पीपल और शहदके साथ खाय तो प्रसूति रोग नष्ट होवे। पांच वर्षके बालकको एक जबके प्रमाण देवे तो ज्वर जाय, विषज्वरोंमें रत्ती २ की वृद्धीसे देवे तो संतत, अन्येद्यु, तिजारी और चातुर्थिक ज्वर दूर होवे खांडके साथ त्रिदोष दूरकरे। अजमायन और वाय विडंगके साथ ३ रत्ती कृमिरोगको दूरकरे, इस प्रकार यह रस सर्व रोगोंको नष्ट करे है, यह श्रीभैरवने कहा है।

कल्पतरुरसः

शुद्धंशंकरशुक्रमक्षतुलितंमारारिनारीरजः ।

स्तावत्तावदुमापतिस्फुटगलालंकारवस्तुस्मृतं तावत्येवमनःशिलाचविमलातावत्तथाटंकणं शुंठीद्व्यक्षमितंकणाचमरिचंदिक्पालसंख्याक्षकं ॥ १ ॥ विषादिवस्तुनिशिलोपरिष्टाद्विचूर्णयेद्वासिशोधयेच्च । ततस्तुखल्वेरसगंधकौचचूर्णंचतद्यामयुगंविमर्द्य ॥ २ ॥ कल्पतरुर्नामधेयोयथार्थनामारसश्रेष्ठः । वातश्लेष्मगदानयहरतेमात्रास्यगुंजैका ॥ आर्द्रकेण सममेषभक्षितो हन्तिवातकफसम्भवंज्वरं । श्वासकासमुखसेकशीततावन्हिमांद्यमरुचिच नाशयेत् ॥ ४ ॥ नस्येनाश्वेवहरतिशिरोर्त्तिकफवातजांमोहंमहांतमपिचप्रलापंक्षवथुग्रहम्

अर्थ–पारा, गंधक, विष, मनसिल, सोनामक्खी, सुहागा, ये सब शुद्ध कर प्रत्येक एक एक तोला लेवे । सोंठ दो तोला, काली मिरच ८ तोला, पीपल ८ तोले, इसप्रकार सबको ले प्रथम पारे गंधककी कजली कर पीछे पूर्वोक्त औषधि कजलीमें मिला देवे । सबको दो प्रहर खरल करे तो यह कल्पतरु नाम रस बनकर तय्यार होवे । इसको एक रत्ती खानेको देवे तो वातकफके रोग नष्ट होवे. और इसी रसको अदरकके रसमें देवे तो वातकफके ज्वर नाश होवे । श्वास, खांसी, मुखसे लार बहना, शीत, मंदाग्नि और अरुचि इनका नाश करे । और जिसके नस्य लेनेसे मस्तकपीडा हुई हो उसको दूर करे तथा मस्तककी कफवातकी पीडा दूर होवे । मोह प्रलाप (बकवाद) छींकका रुकना इनको दूर करे ।

वातज्वरेसामान्यज्वरचिकित्सोक्त ।
महाज्वरांकुशःप्रदेयः ॥

अर्थ–वातज्वरमें सामान्य ज्वरमें जो पिछाडी महाज्वरांकुश लिख आये है उसे देना योग्य है ।

हिंगुलेश्वररसः

तुल्यांशंचूर्णयेत्खल्वेपिप्पलींहिंगुलंविषं ।
द्विगुंजंमधुनादेयंवातज्वरनिवृत्तये ॥

अर्थ–पीपल, हिंगुल, और विष तीनोंको खरलकर दो रत्ती सहतके साथ देवे तो वातज्वर दूर होवे ।

रविसुन्दररसः

ससिंधुजंचित्रकबीजशंखंमरीचयुक्तंविषभागयुक्तं । दन्तीरसैर्भावनयात्रियुक्तंरसःप्रसिद्धोरविसुन्दरोऽयं। वातज्वरार्त्तेसकलामयत्वमंदानलत्वंशिरसोगुरुत्वं । सर्वनिहंत्युग्रतरंविकारंगुंजाप्रमाणावटिकाकृतावा ॥ कुलत्थयूपस्त्वथवातुकृष्णशालीकृतंमण्डपिवेद्धितेन । कोष्टाग्निवृद्धिंविदधातिरूपंनिहन्तिवातज्वरवातदोषं ॥

अर्थ–सेंधानोन, चीता, पारा, शंखकीभस्म काली मिरच और सिंगिया विष इन सबको दंतीके रसकी तीन भावना देवे तो यह रविसुन्दर रस बने, वातज्वर और संपूर्णरोग मन्दाग्नि, मस्तकभारी होना, इन सब घोर विकारोंको दूर करे, इसकी मात्रा एक रत्तीकी है, कुलथीका यूष वा पीपल अथवा चावलोंके साथ देवे तो कोठेकी अग्नि बढे, रूपबढावै और वातज्वर तथा वातके विकार दूर होवें ।

शीत भंजीररसः

पारदंरसकंतालंतुत्थंगन्धकटंकणं ।
सर्वमेतत्समंशुद्धकारवेल्याद्रवैर्दिनं ॥ १ ॥
मर्दयेत्तेनकल्केनताम्रपात्रोदरंलिपेत् ।
अंगुलार्धार्धमानेनतंपचेत्सिकताव्हये ॥ २ ॥
स्वेदावाग्निनातुल्यांताम्रपृष्ठंगतोयदा ।
यंत्रेयावत्स्फुटंत्येवंव्रीहयस्तस्यपृष्ठतः ॥ ३ ॥

ततःसुशीतलंग्राह्यंताम्रपात्रोदराद्भिषक् ।
शीतभंजीरसोनामचूर्णयेन्मरिचैःसमं ॥ ४ ॥
नागवल्लीपर्णखंडेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरं ।
त्रिदिनाद्विषमंतीव्रंएकद्वित्रिचतुर्थकम् ॥ ५ ॥

अर्थ—पारा, खपरिया, हरिताल, लीलाथोथा, गंधक, और सुहागा, सब शुद्ध किये हुए बराबर लेवे, सबको कूट पीस करेलाके रसमें मर्द्दन करे । पीछे इसको किसी तांबेके पात्रके भीतर लेप कर देवे, चौथाई अंगुलके अनुमान लेपकरे, पीछे उसको वालुकायंत्रमें रख चूल्हे पर चढाकर लकडीकी आंचसे पचावे, और वालूके ऊपर धान रख देवे जब उस वालूमें धान खिलजावें तब जानेकि रस सिद्धि हो गया । पीछे स्वांग शीतल होने पर तांबेके पात्रमेंसे उस रसको निकाल लेवे, इस शीतभंजीर नामक रसको काली मिरचके साथ चूर्ण करे, इसमेंसे पांचरत्ती पानके साथ खाय तो तिजारी, एकतरा, दो दिनका और चातुर्थिकज्वर दूर होवें ।

दूसराशीत भंजीररसः

सूततालशिलातुल्याःमर्दयेत्कर्कटीरसे ।
ताम्रपात्रेविनिक्षिप्यतत्कल्कंकज्जलीकृतं ॥ १ ॥
विपचेद्वालुकायंत्रेयथोक्तविधिनाततः ।
दद्यान्मरिचचूर्णेनमाषमात्रंभिषग्वरः ॥ २ ॥
प्रपिबेदुष्णतोयेनचुलुकंशीतकेज्वरे ।
शीतभंजीरसःसोयंशीतज्वरनिवारणः ॥

अर्थ—पारा, हरिताल, मनसिल, ये तीनों बराबर लेवे । सबको खरलमें पीसकर ककडीके रसमें पीस तांबेके पात्रके भीतर लेप कर देवे । पीछे उसको वालुकायंत्रमें विधिपूर्वक पचावे, स्वांगशीतल होनेपर उतार मिरचके चूर्णसे एक मासे रोगीको देवे, शीतज्वर वाला इसे खाकर एक चुल्लु गरम जल पीवे, तौ शीतज्वर नाश हो.

कूष्मांडचूर्णतिलजमविशुद्धतालं । गाढंविमर्द्यसुखवीसलिलेनतुल्यं ॥ सूतेनहिंगुलभुवासिकताख्ययंत्रे । गोलंविधायपरिवृत्तकपालमध्ये पात्रेणतंदिनपतेरपिधायरुध्वा ॥ संधितयोर्गुडसुधाखटिकाशिवाभिः । वन्हौपचेन्मृदुनिचात्रशिरःस्थशालि ॥ वैवर्ण्यमात्रमवधिंगविधायधीमान् । वल्लंततःसुरसमिश्रममुंप्रदद्यात् रसर्पिःसिताकणपयोमधुचानुपेयं । जेतुंज्वरान्सविषमानिहवांत्यशांत्यै ॥ मौलौसुशीतलजलस्यददीतधारां। अथामनामाररसराजमौली । भूपागणिन्तं मृतजीवनाख्यं । सुधारसेनैवरसेनयेन । संजीवनंस्यात्सहसातुराणां ॥

अर्थ—पेठेमें, चूनेमें और तिलके खारमें शोधी हरिताल लेवे, उसको करेलेके रसमें घोटे पीछे इसमें हिंगुलमें पारा निकाल डालकर घोटे पीछे इसका गोला बनाकर वालुकायंत्रके बीचमें रख बडे खपरेमें रखदेवे, और शीशीका मुख गुड, चूना, खडिया और मेथीको मिलाकर बंद करदेवे । पीछे उस वालुकायंत्रके मुखपर धान बिखेर देवे, पीछे उस यंत्रको चूल्हेपर चढाकर अग्नि देवे, जब धान खिलजावें तब उस यंत्रको उतार लेवे, शीतलकर उसमेंसे औषधिको युक्तिसे निकाल लेवे, पीछे इसमेंसे तीन रत्ती खानेको देवे ऊपर घृत, मिश्री, दूध, शहत मिलाकर पीवै तो विषमज्वर मात्रको दूर करे, इसके खानेवाले मनुष्यके मस्तकपर शीतल जलकी धार देवे यह संपूर्ण रसोंका राजा है मृतसंजीवनाख्य नाम है यह अमृतके तुल्य है ।

पित्तज्वरे क्षीरसारोरसः

मृतरसगगनार्कमुण्डतीक्ष्णंसताप्यं ।
सबलिसममिदंस्यात्पष्टिकावारिपिष्टं ॥
तदनुसलिलजातैर्वासकैर्गोस्तनीभि ।
र्मृदितमथविदारीवारिणाघस्रमेकं ॥ १ ॥
घृतमधुसहितोयंनिष्कमात्रावटीस्यात् ।
क्षपयतिगदपित्तंपाण्डुरोगक्षयंच ॥
भ्रममदमुखशोषंदाहतृष्णासमुत्थान् ।
मलयजमिहपेयंचारुपानंसचन्द्रम् ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभरककी भस्म, तांबेकी-भस्म, मुंडलोहकी भस्म, पोलादकीभस्म, सोना-मक्खीकीभस्म, और गंधक सब बराबर लेवे, सबको साठी चांवलके पानीसे खरल करे।पीछे अडूसा, दाख, विदारी, इनके रसमें खरल करे, पीछे घृत, शहत मिलाय एक २ टंककी गोली बनावे, इसके खानेसे पित्तके सब विकार दूर होवें। पांडुरोग,खई,भौंर,मस्तपन,शोप, दाह,प्यास,इत्यादि रोग नष्ट होवें और इसके ऊपर कपूर चन्दन मिला पानी पीना चाहिये।
शीतभंजीरसोप्यत्रगुंजैकासितयासह ।
पित्तज्वरंहरेत्पूर्गवर्ममुस्तानुपानतः॥

अर्थ–एक रत्ती शीतभंजीरस मिश्रीके साथ खाय, ऊपर पित्तपापडा और मोथाका काढा पीवे तो पित्तज्वर दूर होवे ।

कफज्वराधिकार.

कफकुठाररसः

पारदंगन्धकंव्योषंमृतताम्रंमृतायसं ।
कंटकारीफलद्रावैर्भाव्यंतद्यामयुग्मकं ॥
रोहिण्यास्तुरसेनैवधत्तूरस्वरसेनच ।
गुंजाद्वयंपर्णखण्डैर्देयंश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ–शुद्ध पारा,शुद्ध गंधक,सोंठ, मिरच, पीपल, तांबेकी भस्म,लोहेकी भस्म, इन सबको कटेरीके फलोंके रसमें दो प्रहर खरल करे,पीछे कुटकीके काढेमें और धतूरेके रसमें घोटे, पीछे नागरपानके साथ देवे, तो कफज्वर दूर होवे, यह भैपज्यसारामृत संहितामें लिखा है ।

ताम्रभस्मयोगः

मृतताम्रंचमरिचंलवंगंकुंकुमंकणा ।
भार्गीसमांशचूर्णस्यान्नागवल्लीदलान्वितं ॥
माषैकंसार्द्धमाषंवाकफव्याधिविनाशनम् ।

अर्थ–तांबेकी भस्म, मिरच, लौंग, केशर, पीपर, और भारंगी, सब बराबर ले कूट पीस कर धररक्खे, एक मासे अथवा डेढ मासे पानमें रखकर खाय तो कफव्याधि दूर होवे
कफकेतुरसोप्यत्रदेयस्यात्श्लेष्मजेज्वरे ॥

अर्थ–इस कफज्वरमें कफकेतु रस देवे तो कफज्वर दूर होवे, सो आगे लिखेंगे ।

सर्वज्वरेनस्यं.

शुद्धतुत्थंपलैकंचभावयेज्जालनीरसैः ।
शतविंशतिवारंचनिम्बुनीरैस्तथैवचः ॥
शुष्कंनस्यंप्रदातव्यंसर्वज्वरविनाशनम् ।
यस्मिन्नासापुटेदत्तंतदर्धांगज्वरापहं ॥

अर्थ–शुद्ध तूतिया एक पलको कडवी तोरईके रसमें १०० पुट देवे, पीछे जंभीरी नींबूके रसकी २० भावना देवे, फिर सुखाकर रख छोडे, इसका नाश लेवे तो तत्क्षण ज्वर दूर होवे। नाकके जिस नथनेसे नास लेवे उसी आधेअंगकाज्वर दूर होवे ।

पर्पटीरसः

विमर्दिताभ्यांरसगंधकाभ्यांनीरेणकुर्य्यादि हगोलकन्तं । भाण्डेनवीनेविनिवेश्यपश्चात्त द्गोलकस्योपरिताम्रपात्रं ॥ १ ॥ सार्द्धंमृद् र्त्तैविनिरुध्यधीमानुद्दीपयेद्दीपकृशानुनास्य । अधस्ततःसिध्यतिपर्प्पटीयंनवज्वरारन्यक्-

शानुमेवः ॥ २ ॥ विलिप्यपूर्वरसनांचता लुदेशंचसिंधुद्भवजीरकार्द्रैः । यद्धोन्मितामाद्रकतोयमिश्रामेनांनियोज्यस्थगयेत्पटेन॥ ३ घर्म्मोद्गमोयावदतःपरंचतक्रोदनंपथ्यमिहप्रयोज्यं । कुर्य्यादिनानांत्रितयंयदित्थंज्वरस्यशंकापितदाभवेत्किं ॥ ४ ॥

अर्थ-पारे गंधककी कजली कर जल डाल कर गोला बनावे, पीछे नये बासनमें उस गोलेको रख तांवेके पात्रसे उस बरतनका मुख बन्द करदे, पीछे उसको चूल्हे पर चढा कर नीचे ३ घडी दीपकके समान अग्नि देवे। तो पर्पटी बनकर तय्यार होवे, यह नयेज्वर रूप वनकी अग्निको मेघके समान शांति करता है। इसके खाने वाला प्रथम सैंधानोंन जीरा, अदरक, इनसे अपनी जीभ पर लेप कर लेवे। पीछे इस रसमेंसे ३ रत्तीके अनुमान अदरकके रसमें खाय और खाकर सो रहै, ऊपरसे गाढा कपडा ओढले। जब तक पसीना न आवै तब तक ओढे रहे, उसके ऊपर छाछ और भातका भोजन यथेष्ट करे, इस प्रकार तीन दिन करे तो फिर ज्वरकी शंका कदाचित नहीं होवे।

वातपित्तज्वरेज्वालामुखीरसः

खण्डितंहारिणंशृंगंज्वालामुख्यारसैःसमम् ।
रुध्वाभाण्डेपचेचूल्ह्यांतद्भस्मंचूर्णयेत्पुनः ॥
अष्टांशंत्रिकटुंदद्यान्निष्कमात्रंतुभक्षयेत् ।
नागवल्यारसैःसार्द्धंवातपित्तज्वरापहं ॥
अयंज्वालामुखोनाम्नासर्वज्वरकुलांतकृत् ।

अर्थ-हरिणके सींगका टुकडा लेवे, उसको ज्वालामुखीके रसमें घोटे, पीछे उसको एक हंडियामें रख उसका मुख बंदकर चूल्हे पर चढा देवे, और नीचे आग बलावे जब भस्म होजाय तब उतार उस हंडियामेंसे भस्म निकाल कर पीस डाले, भस्मका आठवां हिस्सा त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) डारे। इसकी मात्रा एक टंककी है, इसको पानमें रख कर खाय तो वातपित्तज्वर दूर होवें, यह ज्वालामुखरस सर्व ज्वरोंका नाश करता है।

चन्द्रशेखररसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंमरिचंटंकणंतथा ।
चतुःतुल्यासितायोज्यामत्स्यापित्तेनभावयेत्।
त्रिदिनंमर्दयेत्तेनरसोयंचन्द्रशेखरः ।
द्विगुंजमार्द्रकद्रावैर्देयंशीतोदकंपुनः ॥ २ ॥
तक्रभक्तंचवृंताकंपथ्यंतत्रप्रदापयेत् । त्रिदिनात्पित्तश्लेष्मोत्थमत्युष्णंनाशयेज्वरम्॥३॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, मिरच, सुहागा, ये चारों वस्तु बराबर लेवे। और सबकी बराबर मिश्री मिलावे, सबको खरलमें डाल रोहू मछलीके पित्तेमें ३ दिन घोटे तो यह चन्द्रशेखर नाम रस तय्यार होवे। दो रत्ती अदरकके रसमें देवे, ऊपर शीतल जल पिलावे, और इसमें छाछ, मिलाकर भातका भोजन करे, तथा बेगनका भुर्त्ता खाय तो तीन दिनमें पित्तकफज्वर दूर होवे।

सूर्यशेखररसः

सूतकंटंकणंभृष्टंगन्धंशुद्धंसमंसमं ।
द्विगुणंसूतकादेयंजैपालंतुपवर्ज्जितं ॥
सैंधवंमरिचंचिंचात्वक्क्षारःशर्करापिच।
मत्येकंसूततुल्यंस्याज्जंवीरैर्मर्दयेद्दिनं ॥
सूर्य्यशेखरनामोयंरसोगुंजाद्वयोन्मितः ।
भक्षितंतप्ततोयेनवातश्लेष्मज्वरापहं ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध सुहागा, शुद्ध गंधक, ये तीनों वस्तु समान लेवे, पारेसे दुगना शुद्ध जमालगोटा मिलावे तथा सैंधानोंन, मिरच,

इमली, तज, जवाखार, और मिश्री ये सब पारेके बराबर डाले, पीछे इनको जंभीरीके रसमें घोटे तो यह सूर्यशेखर रस बनकर तय्यार होवे। इसको २ रत्ती गरमजलके साथ लेवे तो वातकफज्वर दूर होवे। शीतज्वरकोभी दूर करता है। यह रसेंद्र चिंतामणि और रसप्रदीपमें लिखा है। अन्यग्रंथोंमें इस रसको शीतारि कहते हैं।

वटिकाः

अमृतवराटकमरिचैस्त्रिपंचनवभागिकैः क्रमशः। वटिकामुद्गसमानावातश्लेष्मत्रिदोषमांद्यहरी ॥

अर्थ-तीन भाग शुद्ध विष, कौडीकी भस्म ९ भाग, और मिरच ९ भाग, सबको पीसकर मूंगके समान गोली बनावे तो वातकफज्वर, सन्निपात, मन्दाग्नि दूर होवे

नवचन्द्ररसः

शंभोर्बीजंगरलगतमथांकोलबीजंचतीक्ष्णं।
चेतोधात्रीसमलवमिदंमार्कवंवेदभागं ॥
श्लक्ष्णंपिष्टाद्दहनसलिलैर्मग्नमात्रंत्रियामं।
भृंगस्याद्भिर्भवतिरसराट्नव्यचन्द्राभिधानः॥
वल्लंनिंबार्द्रकसलिलतोयाममात्रंसुचित्रं।
हन्यात्तीव्रज्वरमभिनवंगौल्यसेवांप्रकुर्यात् ॥
द्राक्षादाडिमतक्रभक्तिदधिवादद्याद्रसेन्द्रोपरि ॥ १ ॥

अर्थ-धतूरेके बीज, सिंगियाविष, अंकोलके बीज, फोलादकी भस्म, हितावली, ये सब बराबर लेवे, और चौथा भाग भांगरेका लेवे। इनसबको चीतेके रसमें महीन पीस कर तीन प्रहर भांगरेके रसमें भिगो रक्खे तो नवचन्द्ररस सिद्धि होवे। पीछे तीन रत्ती नींब और अदरकके रसमें पिये तो एक प्रहरमें तीव्रज्वर दूर होवे। इसके ऊपर मिष्ट पदार्थ सेवन करे तथा दाख, बलायती अनार, छाछ, भात, दही इनका सेवन करे।

ज्वरांतकरसः

दरदोत्थितसूतेन्द्रंबलिमभ्रंचपार्वतं।
द्वंद्वंविमर्दितंकारवल्लीतोयेनभावितं॥
सप्तधामीनपित्तेनमर्दनास्याद्रसोत्तमः।
द्विवाराभिनवंशृंगवेरतोयेनभावयेत् ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोवातश्लेष्मज्वरंजयेत्।
तथानुपानयोगेनजीर्णज्वरमपोहति ॥
चातुर्थकादीन्विषमान्निश्चयेनज्वरांतकः।

अर्थ-हींगलूका निकला हुआ पारा, शुद्ध गंधक, अभरक, संखिया इन सबको करेलेके रसमें घोटे। तदनन्तर सात भावना रोहू मछलीके पित्तेकी देवे, पीछे दोवार अदरकके रसमें भिगोकर पीपलके चूर्णके साथ लेवे तो वातकफज्वर दूर होवे। और अनुपान योगसे पुराना ज्वर दूर करे। चातुर्थिक, तिजारी आदिज्वरोंको यह रस कालरूप है

सन्निपातानलरसः

रसभस्मसमंगन्धंताम्रभस्मद्वयोःसमं।
ताम्रांशंखर्परंयोज्यंखर्परांशंचहिंगुलं ॥
अम्लवेतसभागंचयामंखल्वेविमर्दयेत्।
अभावेअम्लवेतस्यक्षारंचणकसंभवं ॥
जम्बीरैर्मर्दितंरुध्वापुटैकंभूधरेपचेत्।
आदायचूर्णयेत्खल्वेहिंगुकर्पूरत्र्यूषणैः ॥
चत्वारःसमतुल्यंस्यात्सप्तधाह्यार्द्रकद्रवैः।
मर्दयेच्चमहाराष्ट्र्यानिर्गुंड्यकरवीरजैः ॥
एतैर्द्रवैःपृथक्भाव्यंसप्तधासप्तधाक्रमात्।
चूर्णयित्वातुपद्गुंजंदापयेदार्द्रकद्रवैः ॥
सन्निपातानलःसोयंरसःस्यात्सन्निपातजित्

अर्थ-चन्द्रोदय १ भाग, गंधक १ भाग,

तांबेकी भस्म २ भाग, खपरिया २ भाग, हिंगुल २ भाग, अमलवेत २ भाग, सबको एक प्रहर खरल करे। यदि अमलवेत न मिले तो चनाखार डाले, पीछे जंभीरीके रसमें खरल कर सराव संपुटमें रख भूधरपुटमें फूंक देवे। पीछे शीतल कर खरलमें घोटे। हींग, कपूर, सोंठ, मिरच, पीपल, चारोंवस्तु समान लेवे, सात भावना अदरकके रसकी देवे, पीछे फिटकरी, निर्गुंडी और कनेर इनके रसमें सात सात भावना देवे। पीछे चूर्ण कर ६ रत्ती अदरकके रसमें देवे तो यह सन्निपातानल रस सन्निपातको दूर करे।

भस्मेश्वरोरसः

भस्मषोडशनिष्कंस्यादारण्योपलसम्भवः।
निष्कत्रयंचमरिचंविषनिष्कंविचूर्णयेत् ॥
रसोभस्मेश्वरोनामवातश्लेष्मामयापहः।

अर्थ–आरने उपलोंकीभस्म निष्क १६, मिरचटंक १२, सिंगियाविषटंक ४, सबका चूर्ण करे तो यह भस्मेश्वर रस वातकफके विकारोंको दूर करे।

स्वच्छन्दभैरव रसः

रसस्यद्विगुणंगन्धंशुद्धंसंमर्दयेत्क्षणं।
प्रतिलोहंसूतसममष्टलोहंमृतंक्षिपेत् ॥
ब्राह्मीजयंतीनिर्गुण्डीविषमुष्टिःपुनर्नवा।
नीलिकागिरिकर्ण्यर्ककृष्णधत्तूरभृंगिकं ॥
वृषभंकाकमाचीचद्रवैरेतैर्विमर्दयेत्।
मर्दयेत्रिदिनंखल्वेततःपित्तैर्विभावयेत् ॥
मत्स्यमाहिषमायूरैर्यावत्सिक्तंद्रवैरसः।
शताव्हाजीवनीरास्नावाजिगन्धाफणेर्लता॥
कर्चूरोनागराचैलासर्पाक्षीसुरसस्त्वचः।
जातबालस्यविष्टाचकणागोक्षुरसंयुतं ॥
समैरेभिःकृतांमूषांपूर्वोक्तंवेशयेद्रसं।
तन्निरुध्यततोभांडेमृन्मयेरोधयेत्पुनः ॥
सावकेणदृढंसंधिंलिंप्याकर्पटमृत्तिकां।
अल्पाग्निनादिनंपाच्यंरसमादायचूर्णयेत् ॥
पूर्वोक्तैर्भावयेत्पित्तैःरसस्वच्छंदभैरवः।
आर्द्रकस्यरसैर्देयंसन्निपातेत्रिगुंजकं ॥
दशमूलेननिर्गुंड्याःकाथंचानुपाययेत्।
सन्निपातंनिहंत्याशुपथ्यंसाध्यंयथोदितं ॥

अर्थ–शुद्ध पारा लेवे, पारेसे दूनी शुद्ध गंधक लेवे, तदनंतर सोना, चांदी, रांग, तांबा, सीसा, लोहा, कांसा, और पीतल ये आठ लोह हैं-प्रत्येककीभस्म पारेके बराबर डाले, पीछे ब्राह्मी, अरनी, सम्हालू, कुचला, साँठ, नीली कोयल और आक, कालाधतूरा, भांगरा, अडूसा, मकोय, इनके रसमें तीन दिन खरल करे। पीछे मछली, भैंसा और मोर इनके पित्तेकी भावना देवे। पीछे शतावर, जीवनीयगण, रायसना, असगंध, नागरवेल, कचूर सोंठ, इलायची, सरफोका, तुलसीकीछाल, पीपल, गोखरू, और सद्जाए बालककी विष्टा, सबको बराबर लेवे, कूट पीसकर मूष बनावे। इस मूषमें पूर्वोक्त घुटे हुए पारेको रख, पीछे इन्ही औषधियोंसें मुख बंदकर मट्टीके बरतनमें रखे, उसका मुख सरवासें बंद करे, और संधियोंको बंदकर कपरमिट्टी करे, पीछे चूल्हेपर चढाकर मंदमंद आंचसे एक दिन पचावे, पीछे उतार मूषामेंसे रस निकालकर पूर्वोक्त मछली, भैंसा और मोरके पित्तोंमें घोटे तो स्वच्छन्दभैरव रस बने, इसको तीन रत्ती अदरकके रसमें सन्निपातवालेको देवे। इसके ऊपर दशमूल और निर्गुंडीका काढा पिलावे और पथ्यसे रहै तो सन्निपात दूर होवे।

संधिकारीरसः

शुद्धंसूतंद्विधागंधंमारितंचाभ्रकंसमं ।
त्रिक्षारंजीरकंव्योपंत्रिफलालवणंःसमं ॥
चित्रकस्यकपायेणदिनैकंमर्दयेद्दृढं ।
पंचगुंजमिदंखादेत्संधिकारीरसःस्मृतः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, अभरककी भस्म दो भाग, सज्जीखार, नवाखार, चनाखार, जीरा, सोंठ, मिरच पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, और नोन ये सब बराबर लेवे। सबको चीतेके काढेमें एक दिन खरल करे. तो यह संधिकारी रस बने, ५ रत्ती रोगीको देवे तो संधिक सन्निपात दूर होवे।

मृतसंजीवनरसः

शुद्धसूतंद्विधागन्धंखल्वेनकृतकज्जलीं ।
अभ्रलोहद्वयोर्भस्मताम्रभस्मसमंसमं ॥
विपतालककंकुष्ठशिलाहिंगुलचित्रकं ।
हस्तिशुंडीसातिविपाञ्यूपणंहेममाक्षिकं ॥
भृंगीकुम्भीमेघनादंप्रतिचूर्णरसांशकं ।
त्रिदिनंमर्दयेत्खल्वेद्रवैराद्रकसम्भवैः ॥
निर्गुंडीविजयाद्रावैस्त्रिदिनंमर्दयेत्पुनः ।
जम्बीरस्यचचांगेर्याद्रवैःसंमर्दयेद्दिनं ॥
काचकुप्यांनिवेश्याथवालुकायंत्रगंपचेत् ।
द्वियामांतेसमुधृत्यमर्दयेचार्द्रकद्रवैः ॥
दिनैकंशोपितंचूर्णंत्रिगुंजंसन्निपातजित् ।
मृतसंजीवनोनामरसोयंशंकरोदितः ॥
मृतोपिसन्निपातेनजीवत्येवनसंशयः ।
सक्षीरंदापयेत्पथ्यंदेयंचानंदभैरवः ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, इन दोनोंकी कजली करे अभरककी भस्म, लोहभस्म और तांवेकी भस्म प्रत्येक गंधककी बराबर लेवे सिंगिया विप, हरताल, मुरदारसंग, मनसिल, हींगलू, चित्रक, इन्द्रायण, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, सोनामक्खी, भांग, निसोत, चौलाई, ये प्रत्येक पारेकी बराबर ले, खरलमें डाल तीन दिन अदरकके रसमें घोटे, तदनंतर निर्गुंडी और भांगरेके रसमें तीन दिन घोटे, पीछे जंभीरी निंबू और चूकाके रसमें तीन दिन खरल करै, पीछे काचकी आतिशी शीशीमें भर दो प्रहर पचावे, तदनंतर शीशीसे निकाल अदरकके रसमें एक दिन घोटे पीछे सुखाकर रख छोडे, तीन रत्ती रोगीको दे तो सन्निपातज्वर दूर होवे यह श्रीशंकरका कहा मृतसंजीवन रस है, सन्निपातके मेरे हुएकोभी जिलाता है इसके ऊपर दूधका पथ्य देवे और आनन्दभैरव रस देवे।

भैरवी गुटिका.

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमर्दयेद्भिक्षुकद्रवैः ।
दिनंभाव्यंचमर्द्यंचशोपयित्वातुभृंगिजैः ॥
चतुर्धाभावयेद्द्रावैस्तिलपर्ण्याद्रवैश्चतत् ।
भावनाभिश्चशोप्याथचूर्णयेद्वस्त्रगालितं ॥
चूर्णतुल्यमृतंताम्रंताम्रादष्टांशकंविपं ।
कृष्णासिताविडंगानिकृष्णजीराशनंवला ॥
ताम्रार्द्धमतिचूर्णस्यात्सर्वमेकत्रकारयेत् ।
यामैकंभृंगिजैर्द्रावैर्मर्दयेत्कल्कतांगतं ॥
स्निग्धभांडगतंपाच्यंपिंडंयावत्कृशाग्निना ।
चणकाभावटीयोज्याचित्रकार्द्रकसैंधवैः ॥
सम्यक्त्रिदोपजंहन्तिसन्निपातंसुदारुणं ।
भैरवीगुटिकाख्यातादध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, इनको गोरखमुंडीके रसमें एक दिन भावना देवे, और एक दिन मर्दन करे, पीछे सुखाकर भांगरेके रसकी चार भावना देवे, पीछे हुलहुलके रसकी भावना देकर सुखा लेवे,

फिर पीस कपडछन कर तदनन्तर चूर्णके तुल्य तांबेकी भस्म, तांबेका आठवां हिस्सा सिंगियाविष, पीपल, मिश्री, वायविडंग, काला जीरा, खैरसार, बला (गुलसकरी) ये सब प्रत्येक तांबेकी भस्मकी आधी २ लेवे। सबका चूर्णकर पूर्वोक्त औषधी मिलाय एक प्रहर भांगरेके रसमें खरल करे, पीछे सुखा चिकने बरतनमें भर मंदाग्निसे पचावे, जब पिंडके समान गाढा होजाय तब चनेके समान गोलियां बनावे. इनको चित्रक, अदरक, सैंधा निमकके साथ देवे तो घोर सन्निपातको दूर करे इसको भैरवी गुटिका कहते हैं. इसपर दही भातका पथ्य देवे।

त्रिगुणाख्योरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतताम्रकं।
त्रिभिस्तुल्यंगवांक्षीरैःमर्दयेदातपेदृढं॥
निर्गुंड्याथद्रवैर्मर्द्यंदिनैकन्तंचगोलकं।
त्रियामंवालुकायंत्रेऽंधमूषागतंपचेत्॥
आदायचूर्णयेत्खल्वेह्यष्टमांशंविषंक्षिपेत्।
त्रिगुणाख्योरसोनामदेयोगुंजाद्वयंद्वयं॥
पंचकोलंपिवेच्चानुपथ्यंछागपयेनच।

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, तांबेकी भस्म, सब समान लेवे। सबके बराबर गौका दूध लेवे, फिर औषधि डाल धूपमें खरल करे, पीछे निर्गुंडीके रसमें एक दिन खरल करे, पीछे उसका गोला बनाकर अंधमूषामें रख कर बालुकायंत्रमें तीन प्रहर पचावे, पीछे निकाल खरलमें डाल चूर्ण करे। इसका आठवां हिस्सा सिंगियाविष डाले, तो यह त्रिगुणाख्यरस तय्यार होवे, इसकी मात्रा दो रत्तीकीहै, इसको खाकर पीछे पंचकोलका काढा पीवे इस पर बकरीका दूध पीना पथ्य है।

सन्निपातगजांकुशः

मृतंसूतंमृतंचाभ्रंशुद्धतालकमाक्षिकैः।
हिंगुलंतुल्यतुल्यंस्यात्मर्दयेत्खल्वकेद्रवैः॥
वंध्यापटोलनिर्गुंडीसुगंधानिम्बचित्रकैः।
धत्तूरलांगलीपाठाभृंगीजंवीरजद्रवैः॥
त्रिदिनंमर्दयेदेभिश्चूर्णंकृत्वाविमिश्रयेत्।
त्रिक्षारंसैंधवंव्योषंविषंमधुकसारकं॥
तुल्यंतुल्यंविचूर्ण्याथपूर्वोक्तंचरसंसमं।
एकीकृत्यभवेत्सिद्धंसन्निपातगजांकुशम्॥
सन्निपातंनिहंत्याशुमाषमात्रंप्रयोजयेत्।

अर्थ–चन्द्रोदय, मरी अभरक, शुद्ध हरताल, शुद्ध सोनामक्खी, हींगलू, ये सब बराबर लेवे। पीछे बांझककोडा, पटोल पत्र, निर्गुंडी, सुगंधवाला, नीम, चीता, धतूरा, कलयारी, पाढ, भांगरा और जंभीरी इनके रसमें पृथक् २ दिन तीन घोटे। पीछे चूर्ण कर ये चीज और मिलावै। सज्जीखार, जवाखार, चनाखार, सैंधानिमक, सोंठ, मिरच, पीपल, सिंगियाविष, मुलेठीकासत, सब बराबरले पूर्वोक्त औषधियोंको मिला देवे तो सन्निपात गजांकुश रसबने, मात्रा एक उडदकी बराबर देनेसे सन्निपात दूर होवे।

प्राणेश्वररसः

रसंगन्धंसमंशुद्धंमृताभ्ररससम्मितं।
दिनैकंतालमूल्याश्चवराहीरसमर्दितं॥
मुशल्यावाद्रवैर्मर्द्यंयथालाभंदिनंततः।
निरुध्यकाचकुप्यांतर्वालुकायंत्रगंपचेत्॥
दिनंवाभूधरेपच्यात्समादायविचूर्णयेत्।
त्रिक्षारंपंचलवणंत्रिफलाव्योषचित्रकैः॥
सजीरकैःसेन्द्रयवैःहिंगुगुग्गुलदीप्यकैः।
सर्वैःसमैःपूर्वसमंचूर्णीकृत्यविचूर्णयेत्।
माषमात्रंप्रदातव्यंकिंचिदुष्णोदकंपिवेत्॥
सन्निपातानलंभ्रंशग्रहणींसज्वरांप्रणुत्।

कुर्य्यात्प्राणपरित्राणंमतःप्राणेश्वरोरसः ॥

अर्थ–पारा गंधक समान ले, और पारेके समान अभ्रककी भस्म लेवे, एक दिन मूसली केही रसमें घोटे, तथा वराही कंदके रसमें घोटे, अथवा मूसलीकेही रसमें जितने दिन होसके घोटे; पीछे सुखाकर काचकी शीशीमें भरे और वालुकायंत्रमें पचावे, अथवा एक दिन भूधरयंत्रमें पचावे पीछे शीशीसे निकाल खरलमें डाल चूर्ण करे, तदनंतर तीनों खार, पांचोनोन, त्रिफला, त्रिकुटा, चीता, जीरा, इन्द्रजौ, हींग, गूगल और अजमायन, प्रत्येक पारेके समानले चूर्णकर पूर्वोक्त रसमें मिला देवे। मात्रा इसकी एक उडदके बराबर गरम जलके साथ देवे तो सन्निपात, संग्रहणी, ज्वर इनको दूरकरे। यह रस प्राणोंकी रक्षा करता है इसीसे इसको प्राणेश्वर रस कहते हैं।

सर्वांगसुन्दर रसः

मृद्वग्निनाद्रुतेगन्धेचत्वारिपलसम्मितं।
सूताभ्रमृतमेकैकंक्षिप्त्वागंधेऽवतारयेत् ॥
मागधीमरिचंहिंगुदीप्यजीरकचित्रकैः।
पलैकैकंविपंचूर्णंकृत्वाखल्वेततःक्षिपेत्।
सर्वेषांपंचगुणितंमृततात्रंपरिक्षिपेत् ॥
आर्द्रकैर्मर्दयेद्द्रावैःद्रवैरेरण्डजैश्चवा।
दिनैकंशोपयेत्तंचभाव्यंशिग्रुद्रवैर्दिनं ॥
सर्पाक्ष्यावामृताकन्याअर्कभृंगिपुनर्नवैः।
आर्द्रकस्यद्रवैर्भाव्यंदिनान्ततंनिरोधयेत् ॥
दिनंवावालुकायंत्रेसमादायविचूर्णयेत्।
जातीफलंचकर्पूरंकंकोलंमधुमिश्रितं ॥
रसस्यार्द्धमिदंयोज्यं मापमात्रंचभक्षयेत्।
अनुपानपिवेच्चास्यक्काथंत्रिकटुसंभवं ॥
सन्निपातहरःसोयंरसःसर्वांगसुन्दरः।

अर्थ–चार पल शुद्ध गंधकको अग्नि पर ताय कर उसमें चंद्रोदय, अभ्रककी भस्म एक २ पल डाले गंधकको उतारले, पीछे पीपर, मिरच, हींग, जीरा, अजमायन और विष एक २ पल लेवे सबको खरलमें डाल चूर्ण करे और सबसे पांच गुनी तांबेकी भस्म डाले पीछे अदरकके रससे घोटे तथा अंडकेरसमें घोटे पीछे एक दिन सुखाय सहजनेके रसकी एक दिन भावना देवे तदनन्तर सरफोका, गिलोय, घीगुवार, आक, भांगरा और पुनर्नवा (सांठ) इनके रसकी एक २ दिन भावना देवे और अदरकके रसकी भावना देवे, पीछे सायंकालमें सब औषधियोंको शीशीमें भरकर एक दिन वालुका यंत्रमें पचावे, पीछे शीशीसे निकाल लेवे। जायफल, भीमसेनी,कपूर, कंकोल, शंहत, ये सब रससे आधे लेने चाहियें उडदके समान खाय ऊपर त्रिकुटाका काढा पीवे तो सन्निपात दूर होवे यह सर्वांगसुन्दररस है।

रक्तमारेश्वररसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंदिनंकंचार्द्रकद्रवैः।
मर्दयित्वातुतद्गोलंगोलांशैस्ताम्रसंपुटे ॥
क्षिप्त्वानिरुध्यतत्संधिंमूपातांचनिरुध्यच।
रात्रौगजपुटेपाच्यंप्रातरादायचूर्णयेत्।
गुंजैकंनागरैसार्द्धंसघृतंसन्निपातनुत् ॥
अनुपानेपिवेत्पश्चात्तत्रवारिपलत्रयं।
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृपार्त्तंशीतलंजलं ॥
कृशंचकुरुतेस्थूलंरक्तमारेश्वरोरसः।

अर्थ–शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, दोनोंको एक दिन अदरकके रसमें खरल करे, पीछे गोला बनावे, गोलके बराबर तांबा लेवे, उस तांबेका संपुट बनावे, फिर संपुटमें पारे गंधककी कजली रख मुख मूंद संधियोंको बंद करे, पीछे गजपुटमें रख-

कर फूंक देवे, प्रातःकाल स्वांग शीतल हो- जानेपर संपुटको निकाल उसमेंसे रस लेवे, इस रसको १ रत्ती सोंठ और घृतकेसाथ देवे तो सन्निपात दूर होवे। इसे खाकर ऊपरसे दो पल गरम जल पीवे, दही भात भोजन करे, और प्यासमें शीतलजल पीवे, यह रस कृश मनुष्यको मोटा करे इस रसको मारेश्वर कहते हैं।

सूचिकाभरणोरसः

अहिफेनंमृतंताम्रंहिंगुलंशृंगिकंविषं।
मत्स्याजगजपित्तेनमाहिषेणविभावितं॥
दातव्यंसूचिकाग्रेणशीततोयंपिवेदनु।
रसंचार्द्रकतोयेनअनुपानंप्रकल्पयेत्॥
शीतांगेस्यसितापयःसहचरेद्त्तोपुनर्जीवति।
दत्तोयोत्रससूचिकाभरणकःसूच्यग्रमात्रोरस
किंवाद्वादशरंध्रचर्मसुभिपक्शस्त्रेणकृत्वापदं।
मर्द्यचार्द्रकवारिणाद्रुततरंसंज्ञालभेद्राशुहि॥

अर्थ-अफीम, तांबेकी भस्म, हिंगुल, सिंगियाविष, इनको मछली, बकरा, हाथी और भैंसा इनके पित्तेकी भावना देवे तो यह रस सिद्धि होय। इसमेंसे सुईके अग्रभागके समान शीतांग सन्निपातवालेको देवे, ऊपर शीतल जल पिलावे, तथा अदरकका रस पिलावे, तथा शीतांगवाले मनुष्यको इसप्रकार देवे उसको कहते हैं कि मिश्री,दूध और पियावांसेका रस इनमें मिलाकर देवे तो मरा मनुष्यभी जी उठे, अथवा माथेको छूरी, अथवा तलवार आदिसे गोदकर उसमें यह सूचिका भरण रस अदरकके रसमें मिलाकर भर थोडी देर उँगलीसे रगडे तो शीघ्र संज्ञा हो जाय।

बृहत्सौभाग्यवटी.

सौभाग्यंविषहिंगुवन्हित्रिफलाव्योपंचजीरद्वयं। एलाकुष्ठलवंगगन्धकरसान्जातीफलंचाभ्रकं॥ द्वौक्षारौचायसंमुस्तंकट्फलंलवणत्रयं। एतानिसमभागानिश्लक्ष्णंचूर्णंतुकारयेत्॥ अपामार्गस्यनिर्गुंड्याभृंगराजस्यच द्रवैः। आर्द्रकस्यरसेनापिनागवल्लीरसेनच॥ भावयेत्सप्तवारंसलोहदण्डेनमर्दयेत्। माषद्वयानुमानेनवटिकांकारयेद्बुधः॥ आर्द्रकस्य रसेनापिभक्षयेत्प्रातरेवहि। ज्वरंचाष्टविधंहन्तिसशीतंसन्निपातकम्॥

अर्थ-सुहागा, विष, हींग, चीता, त्रिफला, त्रिकुटा, दोनों, जीरे, इलायची, कूठ, लौंग, गंधक, पारा, जायफल, अभ्रक, सज्जीखार, जवाखार, सार, मोथा, कायफल, सैंधानमक, संचरनमक, साम्हरनामक. ये सब समान भाग लेकर चूर्ण करे, पीछे ओंगा, निर्गुंडी, भांगरा, अदरक, और नागरवेलके पान प्रत्येककी सात २ भावना देवे और लोहेके मूसलेसे घोटता जाय, गोली दो उडदके प्रमाण बनावे। अदरकके रसके साथ प्रातःकाल खिलावे तो आठ प्रकारके ज्वर और शीतांग सन्निपातको दूर करे।

लघुसौभाग्यवटी.

सौभाग्यंविषजीरपंचलवणंव्योपाभयाक्षामला। निश्चन्द्राभ्रकशुद्धगन्धकरसैरेकीकृतंभावयेत्॥ निर्गुंडीयुतभृंगराजकटुपापामार्गपत्रोत्थसत्प्रत्येकंस्वरसेनसिद्धवटिकाघ्नंतित्रिदोषामयं॥ १॥ येषांशैत्यमतीवदेहमखिलंस्वेदार्द्रंचार्द्रीकृतं। निद्राघोरतरांसमस्तकरणव्यामोहदुष्टंजयेत्॥ तंद्राश्वासमतीवकासनिचितंमूर्च्छारुचितृट्ज्वरं। येषांवैपरिहृत्यजीवितमसौगृह्णातिमृत्योर्मुखात्॥ २॥

अर्थ-सुहागा, विष, जीरा, पांचोनोंन, त्रिकुटा, हरड, बहेडा, आंवला, शुद्ध अभ्रक-

की भस्म, शुद्धगंधक, शुद्धपारा, सब समान लेवे। सबका चूर्णकर निर्गुंडी, भांगरा, अडूसा, ओंगा, इन प्रत्येककी भावना देकर गुटिका बनावे, इसके खानेसे त्रिदोष दूर होवे, जिनकी देह शीतसे व्याकुल होय पसीनासे गीली होय घोरनिद्रा और संपूर्ण इन्द्रियोंके मोहको दूर करे। तन्द्रा, श्वास, खांसी, मूर्च्छा, अरुचि, प्यास, ज्वर, इनको दूर करे और जो मौतके मुखमें रोगी जाय पहुंचे उसकोभी मौतसे बचावे।

सन्निपातांतकः

रसगंधकशुमणितीव्रविषत्रिकटुनिटंकणयुता मुहुः। शिखिसूकराणिमिषपित्तवरैःपरिमर्द्य भावितमथाग्निरसैः ॥ १ ॥ गुटीकृतंद्विगुणवल्लमितंघनसारजीरककणार्द्ररसैः। अति शैत्यत्वमोहयुतमत्तिचिराज्जयतिज्वरंतमपि-मृत्युकरम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, तांबेकी भस्म, अकरकरा, विष, त्रिकुटा, सुहागा, सब बराबर लेकर चूर्ण करे। मोर, सूअर और मछली इनके पित्तेकी सात २ भावना देवे पीछे चीतेके रसकी भावना देवे, पीछे छःरतीकी गोली बनावे इस गोलीको कपूर जीरा, पीपल, और अदरकके रससे खाय तो अत्यंत शीत और मोह युक्त ज्वरका नाश करे।

आनन्दभैरवीगुटिका.

विषंत्रिकटुकंगन्धंटंकणंमृतशुल्वकं।
धत्तूरस्यतुबीजानिहिंगुलंनवमंस्मृतं ॥
एतानिसमभागानिदिनैकंविजयाद्रवः।
मर्दयेच्चणकाभावुवटिकानन्दभैरवी ॥
भक्षयेच्चपिबेच्चानुरविमूलकषायकं।
सन्योषंहन्तिनोचित्रंसान्निपातंसुदारुणम् ॥

अर्थ–विष, त्रिकुटा, गंधक, सुहागा, तांबेकी भस्म, धतूरेके बीज, और हिंगुल ये सब बराबर लेवे, सबको कूट पीस भांगरेके रसकी एक दिन भावना देवे, पीछे चनेके बराबर गोलियां बनावे, इस गोलीको आनन्दभैरवी गुटिका कहते हैं। इसके ऊपर आकका और अंडका काढा त्रिकुटा मिलाय पीवे तो दारुण सन्निपात दूर होवे।

ब्रह्मवटी.

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंरससाम्यंमृतंक्षिपेत्।
कृष्णाभ्रताम्रलोहश्चमर्दयेत्र्यूषणद्रवैः ॥
आर्द्रकस्यद्रवैःपश्चात्क्रमाद्भावैर्दिनंदिनं।
कृष्णजीरकवुक्कानमजमोदाजयंतिका ॥
यवानीतिलपर्णीचब्राह्मीधत्तूरभृंगिराट्।
यवानीचार्द्रिकर्णीचशिग्रोहस्तिकशुंडिका।
श्वेतापराजितावासाचित्रकानांद्रवैश्चतम् ॥
भावयेद्वटिकाकार्यावदरास्थिसमोपमा।
योज्येयंयामयामांतेमरिचैरार्द्रकद्रवैः ॥
इयंब्रह्मवटीनामसन्निपातकुलांतकी।
पथ्यंस्यान्मुद्गयूषेणदिवास्वापंचवर्जयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ भाग, शुद्ध गंधक दोन भाग, और पारेके बराबर सिंगियाविष डाले वज्राभ्रककी भस्म, ताम्र भस्म, और लोहकी भस्म, इन सबको त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल)के काढेसे मर्दन करे। पीछे अदरकके रसमें क्रम पूर्वक दिन दिनमें भावना देवे। पीछे कालाजीरा, वुक्कान, अजमोद, अरनी, अजमायन, हुलहुल, ब्राह्मी, धंतूरा, भांगरा, सफेद सिरकंद, हथशुंडी, सेतकोयल, अडुसा, चित्रक, इनके रसकी भावना देकर बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे यह गोली रोगीको प्रहर २ पश्चात् देवे। मिरच और अदरक-

के रसमें इसको ब्रह्मवटी कहते हैं । सन्नि-पातके समूहको कालरूप है । इसके खाने वाला मूंगकायूष पीवे, और दिनको न सोवे ।

जलस्नायीरसः

भस्मसूतंसमंगन्धंतयोस्तुल्यामनःशिला ।
माक्षिकंपिप्पलीव्योषंप्रत्येकंचाशिलासमं ॥
चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवैः ।
सप्तधाभावयेत्शुष्कंदेयंगुंजाद्वयंहितम् ॥१॥
तालपर्णीरसंचानुपंचकोलमथापिवा ।
जलस्नायीरसोनामहन्तिदोषत्रयोद्भवं ॥
जलयोगोहिकर्त्तव्यस्तेनवीर्यंभवेद्रसैः ॥

अर्थ-चन्द्रोदय, शुद्धगंधक, इन दोनोंके बराबर मनसिल, सोनामक्खी, पीपल, त्रिकुटा, प्रत्येक मनसिलके बराबर लेनी चाहिये । सबका चूर्णकर मछली और मोरके पित्तेकी सात २ भावना देवे, पीछे सुखाकर रख छोडे इसमें से २ रत्ती रस तालपर्णी (मूसली) के रसमें अथवा पंचकोलके रसमें देवे जब इस रसकी गरमी होवे तब शीतलजलसे न्हिलावे तो यह जलस्नायी रस त्रिदोषको दूर करे इसका नाम जलचूडा रस है ।

सन्निपातांतकरसः

मृतंसूतंसमंगन्धंदरदंशुद्धखर्परं ।
रसस्यद्विगुणौदेयौमृतताम्राम्लवेतसौ ॥
जंबीरोत्थैर्द्रवैर्मर्द्यंभूधरेपाचयेल्लघु ।
हिंगुत्रिकटुकर्पूरंपंचैतानिसमंसमं ॥
पूर्वस्यैतत्समंचूर्णमार्द्रकस्यद्रवैःसह ।
महाराष्ट्रीचनिर्गुंडीजयन्तीपिप्पलीद्वयं ॥
भृंगराजद्रवैर्भाव्यंप्रत्येकंभावनापृथक् ।

१ पाठान्तर ॥ भस्मसूतंसमंगन्धगन्धंपादंमनःशिला विषपिप्पलिमाक्षीकंप्रत्येकंचाशिलासमं मितिपाठेयुक्तःरसो-नस्वरसंचागुपिवेद्वापंचकोलजं इतिपाठःशुद्धः

दातव्यंतचतुर्गुंजमार्द्रकस्यद्रवैःसह ॥
सन्निपातंनिहंत्याशुसन्निपातांतकोरसः ।

अर्थ-चन्द्रोदय, शुद्ध गंधक, हींगलू, शुद्ध खपरिया ये सब बराबर लेवे । तांबेकी भस्म और अमलवेत ये दोनों पारेसे दूने २ लेने चाहियें । पीछे इन दोनोंको जंभीरीके रसमें खरल करे, तदनन्तर भूधरयंत्रमें रखकर पचावे, पीछे उसमेंसे निकाल खरलमें डाल चूर्ण करे, और ये औषधि और मिलावे । हींग, त्रिकुटा, और कपूर ये पांचो वस्तु पूर्वोक्त औषधियोंके सम मिलावे, पीछे अदरकके रसमें घोटे तथा जलपीपल, निर्गुंडी, अरनी, पीपल, गजपीपल, और भांगरा प्रत्येककी भावना पृथक् २ देवे इस रसकी मात्रा ४ रतीकी है अदरकके रसमें देवे, यह सन्निपातांतकरस सन्निपातको शीघ्रही दूर करे ।

सन्निपातकृतांतकः

शुद्धसूतंसमंगन्धंबृहतीकंटकारिका ।
सक्षौद्रैःपेषयेद्यामंसंशुष्कंभावयेद्द्रवैः ॥
रक्तशालिनिकावासाभृंगीश्वेतापराजिता ।
रुद्रंतीविजयाब्राह्मीनिर्गुंडीचित्रकद्रवैः ॥
कपिकच्छुकमूलैश्चमरिचैश्चकषायकैः ।
सप्ताहंभावयेदेतैर्धूमसारंचनिक्षिपेत् ॥
रसतुल्यंभवेत्तंचदिनंपित्तैश्चभावयेत् ।
मत्स्यमाहिषमायूरज्योतिष्मत्याश्चतैलकैः ॥
चणमात्रावटीकुर्याद्भक्षयेत्सन्निपातजित् ।
अभावेसतिपित्तानांविषमुष्टिन्तुषड्गुणं ॥
क्षिपेद्रसस्यतत्सिद्धिःसन्निपातकृतांतकः ।
सेव्योदध्योदनंपथ्यंघृताभ्यक्तंचकारयेत् ॥
धाराशिरसिदातव्यासर्वांगेशीतलैर्जलैः ।

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, दोनों बरा-

वर लेवे कटेरी और ऊंटकटेराकारस और सहत इनसे दोनोंकी कजली करे। पीछे सुखाकर लाल चांवलोंका पानी, अडूसा, भांगरा, कोयल, रुद्रवंती, भांग, ब्राह्मी, निर्गुंडी, चित्रक, कौछकी जड इनके रसकी तथा मिरचके काढेकी सात २ भावना देवे। पीछे इनमें धूमसार पारेके समान मिलावै, तदनन्तर मछली, भैंसा, और मोर इनके पित्तोंकी भावना देवे। पीछे मालकांगनीके तेलकी भावना देकर चनाके वरावर गोली वनावे इसके खानेसें सन्निपात दूर होवे। यदि मछली आदिके पित्ते न मिलें तो पित्तोंसे छः गुना कुचला डालै तो यह सन्निपातकृतांतक रस सिद्धि होवे। पथ्य दही भात घृत है, जब रसकी गरमी होवे तव मस्तकपर शीतल जलकी धारा देवे।

विश्वमूर्त्तिरसः

स्वर्णनागार्कपत्राणांगुंजापंचपृथक्पृथक्।
त्रयाणांत्रि १० ःसूतःसर्वंस्वल्वेविमर्दयेत् ॥
क्षिप्त्वाजम्बीरमध्येत्तद्दोलायंत्रेदिनत्रयं।
पाचयेद्दारनालेनतस्मादुधृत्यचूर्णयेत् ॥
ऊर्ध्वागोगंधकंदत्वातालकंचरसोन्मितं।
लोहसम्पुटकंरुध्वाभाण्डेक्षिप्त्वामपूरयेत् ॥
लवणैश्चर्णितैरेवत्र्यहंमन्दाग्निनापचेत्।
आदायचूर्णयेत्श्लक्ष्णंदेयंगुंजाचतुष्टयं ॥
आर्द्रकस्यरसैःसार्द्धंशीघ्रपथ्यंनदापयेत्।
विश्वमूर्त्तिरसोनामसन्निपातज्वरान्तकृत् ॥
अर्कमूलत्वचकाथमरिचैर्मिश्रितंपिवेत्।
दशमूलकपायंवाअनुपानंसुखावहम् ॥

अर्थ–सोनेके, सीसाके, तांबेके पत्र पृथक् २ पांच पांच रत्ती लेवे, तानोंसे तिगुना पारा लव, सवको खरलमें डाल घोटे, पाछे जंभीरीके रसमें डाल दोलायंत्रमें तीन दिन पचावे, पीछे कांजीमें पचाकर कांजीसे निकाल चूर्ण करे, तदनन्तर उस चूर्णके ऊपर नीचे गंधक देवे, और पारेके वरावर हरताल लेवे उसकोभी उस चूर्णके ऊपर वुरक दे, पीछे लोहेके संपुटमें वन्दकर किसी वडे पात्रमें रख वालू भरकर नीचे अग्नि जलावे। पीछे इसी प्रकार नोंनमें घोटकर तीनदिन मन्दाग्निसे पचावे, फिर उस संपुटसे निकाल कर वारीक चूर्ण करे, अदरकके रसमें चार रत्ती रोगीको देवे, शीघ्रही पथ्य न देवे यह विश्वमूर्तिरस है-सन्निपातज्वरको दूर करता है, इस रसके ऊपर आककी जडका काढा काली मिरच मिलाकर पीवे, अथवा दशमूलका काढा पीना चाहिये।

सिद्धवटीः

शुद्धसूतस्तथागन्धःकाकाण्डंसैंधवंसमं।
सद्योवालस्यविष्टाचद्रवैर्ब्राह्म्याविमर्दयेत् ॥
गुटिकावदराकाराभक्षिताघोरनाशिनी।
इयंसिद्धवटीनामसन्निपातंनियच्छति ॥
पूर्वोक्तिनानुपानेनसन्निपातंनियच्छति।

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, कौआके अंड, सैंधानिमक, ये सव वरावर लेवे, तत्काल हुए वालकका मल इन सवको ब्राह्मीके रसमें घोटे। पीछे वेरके समान गोलियां वनावे, यह सिद्धवटी है संपूर्ण सन्निपातको दूर करती है इसमें अनुपान पूर्वोक्त रसके अनुसार हैं।

सन्निपातविध्वंसकः

सूतंगन्धंसमंशुद्धंतालकंमाक्षिकंतथा।
मृतंताम्राभ्रकंवोलंविषंधत्तुरवीजकम् ॥
क्षारत्रयंवचाहिंगुपाठाशृंगीपटोलकम्।
वंध्यानिम्वत्रयंशुंठीकन्दलांगलिजंसमं ॥
सिन्दुवारद्रवैर्भद्यंसर्वजम्वीरजैर्द्रवैः।
दिनैकंवटिकाकार्याचणकाभांचभक्षयेत् ॥

अत्युग्रंसन्निपातन्तुसर्वोपद्रवसंयुतं ।
निहन्यादनुपानेनदशमूलार्कजेनवा ॥
कषायेणनसन्देहपथ्यंदध्योदनंहितं ।
रसोविध्वंसकोनामसन्निपातस्यनिश्चितं ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, गंधक समान लेवे, हरताल, सोनामक्खी, तांबेकीभस्म, अभरककी भस्म, बोल, सिंगियाविष, धतूरेके बीज, तीनों-क्षार, बच, हींग, पाढ, काकडासिंगी, पटोल-पत्र, बांझककोडी, तीनों नींव, (नींव, बकायन. चिरायता) सोंठ, कलयारी ये सब बराबर लेवे। सबको निर्गुंडी और जंभीरीके रसमें पृथक् २ खरल करे। एक दिन पीछे चनाके समान गोलियां बनावे। इसके खानेसे घोर सन्निपात उपद्रव सहित दूर होवे, इसके ऊपर दश मूलका काढा पिलावे और दही भात खानेको देवे, यह सन्निपातविध्वंसक रस है अनुपानसे अनेक रोग दूर करे।

महाविजयपर्पटी.

शुद्धंसूतंसमंगन्धंखल्वेकृत्वातुकज्जलीं ।
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेतद्दर्व्याचालयन्पचेत् ॥
सूततुल्यंमृतंताम्रंताम्रपादंविषंक्षिपेत् ।
रक्तवर्णंभवेद्यावत्तावमृद्वग्निनापचेत् ॥
पातयेत्कदलीपत्रेगोमयासनसंस्थिते ।
आच्छाद्यतेनपत्रेणऊर्ध्वंदेयंचगोमयम् ॥
आदायचूर्णितंसिद्धंमहाविजयपर्पटी ।
त्रिगुंजंभक्षयेदेतांसन्निपातनिवृत्तये ॥
मधुसारैःपंचकोलैर्लीढंस्यादनुलेहयेत् ॥

अर्थ-शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, दोनों बराबर लेवे। पीछे इनकी कजलीको कढाईमें घृत सहित डाल नीचे आच देवे करछीसे धीरे २ चलाता जाय, पारेकीबराबर मरा तांबा, और तांबेसे चौथाई विष डाले, जबतक लाल रंग न हो तबतक मन्दाग्निसे पचावे। पीछे धरतीमें गोबरका चौका लगाकर केलेका पत्ता बिछावे। उसके ऊपर कजलीको डाल देवे, ऊपरसे दूसरे केलेके पत्तेसे ढक गोबरसे ढांक देवे, पीछे इस पर्पटीको निकाल चूर्ण कर लेवे यह महाविजय पर्पटी है, सन्निपात दूर करनेको तीन रत्ती खावे और पंचकोलका काढा इसके ऊपर पीवे।

वारिसागरोरसः

शुद्धंसूतंद्विभागन्धंचतुर्भागंमृताभ्रकं ।
निर्गुंडीकाकमाचीचधत्तूरार्द्रकचित्रकैः ॥
गिरिकर्णीजयन्तीचतिलपर्णीचभृंगजैः ।
दंडोत्पलंशिग्रुदन्तीकदम्बंकेशराजकः ॥
जयाकृष्णामहाराष्ट्रीएभिर्मर्द्यंक्रमाद्द्रवैः ।
भतियामंतुतत्शुष्कंकटुतैलेनलोलयेत् ॥
सरावसंपुटेरुध्वावालुकायंत्रगंपचेत् ।
यामैकेनसमुधृत्यचूर्णितंतंत्रिगुंजकं ॥
त्र्यूषणंपंचलवणंक्षारत्रीणिद्विजीरकं ।
वचार्द्रकयवानीचसमभागंतुचूर्णयेत् ॥
अनुपानंचतुर्माषंसन्निपातहरंहितं ।
माहिषंदधिसंयुक्तंपथ्यंस्याद्रसवीर्यकृत् ॥
साध्यासाध्येप्रयोक्तव्योरसोयंवारिसागरः॥

अर्थ-शुद्ध पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रकभस्म ४ भाग लेवे। इनको निर्गुंडी, मकोय, धतूरा, अदरक, चित्रक, श्वेत सिरकंद, अरनी, हुलहुल, भांगरा, सहजना, दंती, कदंब, केशर, भाँग, पीपल महाराष्ट्री इनके रस. में मर्दन क्रमसे करे एक १ प्रहर। पीछे सुखाय कडवे तेलमे घोटे, तदनन्तर सराव संपुटमें रख वालुकायंत्रमें पचावे, एक प्रहर उपरान्त संपुटसे निकाल चूर्ण करे, ३ रत्ती यह रस सोंठ, मिरच, पीपल, पांचोंनोंन,

तीनोंक्षार, दोनों जीरे, वच, अदरक, अज-वायन, सब समान लेवे सबको कूट पीस ४ मासे खानेको देवे तो सन्निपात दूर करे इसके ऊपर भैंसका दही खिलावे तो रस पराक्रमवाला होवे यह रस साध्यासाध्य सन्निपातको दूर करता है यह वारिसागर रस है।

मार्त्तंडरसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंगन्धपादंचटंकणं ॥
ताम्रपात्रेक्षिपेत्पिष्टंजयंत्यालोलयेद्द्रवैः ॥
तिलपर्णीतथाजातीपिप्पलीमूलपत्रकम् ।
द्रवैरेषान्तुसप्ताहंशोष्यंपेश्यंचभावयेत् ॥
ताम्रपात्रात्समुद्धृत्यकृत्वागोलंतुशोषयेत् ।
वस्त्रेवध्वामृदालेप्याभूधरेस्वेदयेत्पुटेत् ॥
द्वियामान्तेसमुद्धृत्यचूर्णयेदौषधैसहः ।
विषकर्पूरजातीनांरालंचास्यदशांशतः ॥
भावयेद्विजयाद्रावैःदिनमेकंचमर्दयेत् ।
गुंजाचतुःसकर्पूरंमधुनासन्निपातजित् ॥
मार्त्तण्डोयंरसोनामअसाध्यंसाधयेत्ध्रुवं ।
दशमूलंपिबेच्चानुपथ्यंचमुद्गयूषकैः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, बराबर लेवे गंधकसे चौथाई सुहागा, इन सबको तांबेके पात्रमें डाल जयंतीके रसमें घोटे, पीछे हुरहुर, तथा चमेली, पीपलामूल और पत्रज इनके रसमें सात दिन सुखावे और घोटे, पीछे तांबेके पात्रसे निकाल गोला बनावे, उस गोलेको सुखाकर कपरमिट्टी करे पीछे उसको भूधरयंत्र में दो प्रहर आंचदे तदनन्तर उसमेंसे निकालकर सबका चूर्ण करे और उसमें इन औषधियोंका चूर्ण मिलावे । विष, कपूर, जायफल, छोटी इलायची, ये पूर्वोक्त रसका दसवां भाग डाले पीछे इसमें भांगके रसकी एक दिन भावना देवे, इसमेंसे ४ रत्ती भीमसेनीकपूर और शहतमें मिलाकर देवे तो सन्निपात दूर होवे, यह मार्तंडरस असाध्यको अच्छा करे, इसके ऊपर दशमूलका काढा और मूंगका यूष देवे ।

पंचवक्ररसः

शुद्धंसूतंविषंगन्धंमरिचंटंकणंकणा ।
मर्दयेत्धूर्त्तजैर्द्रावैर्दिनमेकंचशोषयेत् ॥
पंचवक्ररसोनामद्विगुंजः सन्निपातजित् ।
अर्कमूलकषायंचसव्योषमनुपाययेत् ॥
पूर्ववद्दापयेत्पथ्यंजलयोगन्तुकारयेत् ।

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध विष, काली मिरच, सुहागा, पीपल, इन सबको धतूरेके रसमें १ दिन घोटे सुखावे तो पंचवक्र रस बनाकर तय्यार होवे, दो रत्ती खानेसे सन्निपात नष्ट होवे, त्रिकुटा मिला आककी जडका काढा इसके ऊपर पीवे, मार्तंडरसके सदृश पथ्य देवे और जो इस रसको खावे जब इस रसकी गरमी बढे तब उसपर जलकी धारा गिरावे ।

द्वितीयसूचिकाभरणः

हृद्धात्रीदरदंतुल्यंगरलेनसुमर्दितं ।
मुद्गप्रमाणावटिकानाभिहृत्तालुदेशके ॥
कुशेनचर्मनिर्भिद्यविमृष्यार्द्रकवारिणा ।
रसप्रभावमात्रेणनेत्रमुद्घाटयेत्क्षणात् ॥
सावधानोभवत्येवनिश्चैतन्यप्रवर्त्तते ।
ततःस्त्वेकांसुवटिकांदद्यादार्द्रकवारिणा ॥
सर्वथासुखमाप्नोतिभोजयेद्दधिभक्तकं ।
सूचिकाभरणोनामरसःपरमदुर्लभः ॥

अर्थ–हृद्धात् (हितवल्ली रूखडी) शिंगरफ दोनों बराबर लेवे, पीछे दोनोंको घोट मूंगके समान गोलियां बनावे-नाभि, हृदय, तालुआ, इनको कुश आदिसे चीरकर अदरकके

रसमें पूर्वोक्त गोलीको घिसकर भर देवे तो इस रसके प्रभावसे रोगी तत्क्षण नेत्र खोल देवे सावधान होजाय । यदि लगानेसे चैतन्यता न हो तौ एक गोली अदरकके रसमें पिला देवे तो सर्वथा सुख होवे । इसके ऊपर दही भात खाय यह सूचिकाभरण रस परम दुर्लभ है।

सोमपाणिरसः

सूतनिष्कंगन्धनिष्कंमर्द्दयेच्चित्रकद्रवैः ।
माषैकंमृततीक्ष्णस्यमृतशुल्वंचमाक्षिकम् ॥
माषैकंचविमिश्रेतपूर्वसूतेथमर्द्दयेत् ।
धत्तूरात्रिफलाकन्यावृद्धदार्व्यार्द्रकद्रवैः
केशभद्रस्यमांडुक्यानिर्गुंड्याभृंगिचित्रकैः ।
वायसीनिंबवातारिशक्राशनद्रवैरपि ॥
प्रतिद्रावपलैकैकंदत्वाखल्वेविमर्दयेत् ॥
रसांशंत्र्यूपणंक्षिप्त्वाचणकाभावटिंकुरु ।
चतस्रःसन्निपातार्तेदापयेज्जीरकार्द्रवैः ॥
कपायंपंचमूलोत्थमनुपानंप्रशस्यते ।
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंतृपार्तौशीतलंजलं ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ निष्क, गंधक १ निष्क दोनोंको चित्रकके रसमें घोटे, पीछे लोहभस्म १ मासे,तांबेकी भस्म १ मासे, सोनामक्खी १ मासे, सबको पारे गंधककी कजलीमें मिला देवे, पीछे धतूरा, त्रिफला, ग्वारपठ्ठा, विधायरा, अदरक, भांगरा; ब्राह्मी, निर्गुंडी, भांग, चित्रक, कंजा, नींब अंड, और इन्द्रजौ, सबके रसकी पृथक् २ भावना देवे । एक २ पल रस डालके घोटे पीछे पारेके बराबर त्र्यूपण (सोंठ, मिरच पीपल) डार चनाके बराबर गोली बनावे । सन्निपात वालेको अदरक और जीरेके साथ देवे, और इसके ऊपर पंचमूलका काढा देवे, तथा दही भात खानेको देवे प्यास लगे तब शीतलजल पीवे यह सोमपाणिरस सन्निपातको शीघ्रही दूर करता है ।

मृतोत्थापनकोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंशिलालिविपहिंगुलं ।
मृतकांताभ्रताम्रायस्तालकंचसमंसमं ॥
अम्लवेतसजम्बीरचांगेरीणांरसेनच ॥
निर्गुंड्याहस्तिशुंड्याश्चद्रवैर्मर्द्यंदिनद्वयं ।
रुद्ध्वातुभूधरेपच्यात्दिनान्तेतंसमुद्धरेत् ॥
चित्रकस्यैकपायेणमर्दयेत्प्रहरद्वयं ।
मापमात्रप्रदातव्यंहिंगुव्योपार्द्रकद्रवैः ॥
कर्पूरेणानुपानस्यान्मृतोत्थापनकोरसः ।
पीडितःसन्निपातेनगतश्चापियमालयं ॥
तत्क्षणाद्दापयेत्सत्यंपथ्यंक्षीरेणयोजयेत् ॥
गुंजाद्वयंप्रदात्तव्योरसोह्यानन्दभैरवः ॥
स्वच्छन्दभैरवोवाथदशमूलैस्तुगुंजकम् ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ भाग, शुद्धगंधक २ भाग, मनासिल, विप, हींगलू, कांतलोहकीभस्म, अभ्रककी भस्म, तांवेकी भस्म, सार, हरताल ये सब बराबर लेवे इनको कूट पीस अमलवेत जंभीरी, चूका इनके रसकी तथा निर्गुंडी, हथशुंडी, इनके रसमें दोदो दिन खरल करे । पीछे भूधरयंत्रमें रखकर एक दिन पचावे, पीछे उसमेंसे उडदके समान हींग, सोंठ, मिरच, पीपल और अदरक इनके रसमें देवे और कपूरका अनुपान करावे, तो यह मृत्तोत्थापन रस मरे हुए मनुष्यको भी जिला देवे इस रसको खिलाकर तत्क्षण दूध पथ्य देवे और इसके ऊपर दो रत्ती आनन्दभैरव अथवा स्वच्छन्द भैरव रस दशमूलके काढेके साथ देवे ।

मृतसंजीवनरसः

नागंसुद्राचितंकृत्वाशुद्धसूतंसमंक्षिपेत् ।
सूतात्द्विगुणगन्धंचचूर्णीकृत्यशनैःशनैः ॥
निक्षिप्यचालयेद्दंडैःसार्द्रनिर्गुंडिसंभवे ॥

नागसूतंमृतंज्ञात्वाहिमज्वालानिवर्जितं ॥
चुल्ह्यादुत्तार्ययत्नेनक्षारंधवलनाभिजं ॥
चूर्णितंसूततुल्यंचनिक्षिपेन्मर्दयेत्तथा ॥
दरदंपारदंतुल्यंयोजयेत्सम्प्रदायवित् ॥
यवनेष्टभवंचूर्णंतत्तुल्यंयोज्ययत्नतः ॥
विमर्द्यवस्त्रपूतंचकृत्वारक्षेत्सुभाजने ॥
गुंजैकंवाद्विगुंजम्वाआर्द्रकस्वरसेनच ॥
जिव्हकेसन्निपातेचप्रकुर्यात्प्रतिसारणं ॥
प्रकृतिंचानयेजिव्हांस्तम्भंचापिहनुग्रहं ॥
तथाचपिच्छलास्यंचमन्यास्तंभशिरोग्रहं ॥
अर्दितंचजयेद्दाशुश्रीमद्गोरक्षशासनात् ॥
गुंजामात्रंचदातव्यंवहुदोषेधृतेसति ॥
शुष्कांविचेष्टितांजिव्हांशुकजिव्होपमांस्तथा
प्रकृतिंचानयेत्क्षिप्रंनात्रकार्य्योविचारणा ॥
मृतसंजीवनोह्येपसंप्रदायक्रमागतः ।
नागादिद्रावणार्थेपुलोहपात्रंप्रकल्पयेत् ॥

अर्थ–सीसेको तपाकर उसमें उतनाही पारा डाले, तदनंतर पारेसे दूनी गंधकको पीस थोडी २ डालता जाय और लोहेके मूसलासे चलाता जाय। जब गंधक पूरी होजाय तब निर्गुंडीका रस डाले, जब जानेकि पारे और सीसामें ज्वाला नहीं उठे तब पारा सीसा मरा-जान चूल्हेसे उतारले, इसमें सुहागा पारेके बराबर डालकर फिर घोटे, पीछे हींगलू और लहसन ये दोनों पारेके समान पृथक् २ डारे सबको पीस कपडछन कर डाले, इसको किसी सीसी आदि पात्रमें रख छोडे इसमेंसे १ रत्ती अथवा २ रत्ती अदरकके रससे जीभ पर लेप करे, तो जीभको अपनेवर्ण परले आवे। और वातकफको दूर करे, गले-के रोग, कानके रोग, जिव्हास्तंभ, हनुग्रह, तथा मुखका लिहसासा रहना, मन्यास्तंभ, मस्तक पीडा, अर्दितवात, इनको शीघ्र दूर करे गोरखनाथके वचनसे। यदि विशेष दोष हो तो १ रत्ती देय तो सूखी जीभको, बिगडी जिभको, तथा तोताकीसी जीभको अपनी प्रकृति परले यह मृतसंजीवनी रस संप्रदायके क्रमसे प्राप्ति हुआ है। सीसे आ-दिके गलनेको लोहपात्र लेवे।

कालाग्निरुद्रोरसः

त्रिक्षारैःपंचलवणैर्दिनैकंमर्दयेद्रसं ।
राजिकानागरंहिंगुएभिर्मूषांचकारयेत् ॥
मूषांतर्मर्दितंसूतंरुध्वावस्त्रेणवंधयेत् ।
सारनालेघटेपाच्यादोलायंत्रेदिनान्तकः ॥
आदायमर्दयेत्खल्वेसूततुल्यैर्द्रवैद्रवैः ॥
निर्गुंड्याभृंगिधत्तूरैःजयन्त्यातिलपर्णिका ॥
मंडूक्याकाकमाच्याचगिरिकर्ण्यार्द्रकद्रवैः ॥
करवीराग्निपाठायारेभिर्भव्यंक्रमाद्रसं ॥
मरिचंगन्धकंतुल्यंक्षिप्त्वापित्तैर्विभावयेत् ॥
मायूरमत्स्यवाराहछागमाहिपजैरपि ॥
समस्तैरथवाव्यस्तैर्दिनैकंभावयेत्ततः ॥
रसःकालाग्निरुद्रोयंद्विगुंजंभक्षयेद्नु ।
शर्करामधुतोयंचपाययेत्स्नापयेज्जलैः ॥
दाडिमंइक्षुदंडश्चदध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ।
शैत्योपचारैरन्यैश्चसन्निपातंनिवारयेत् ॥
त्र्यूपणंपंचलवणंशतपुष्पानिजीरकं ।
क्षारत्रयंसमांशेनचूर्णमेभिःपलत्रयम् ॥

अर्थ–तीनोंक्षार, पांचोंनोन, इनमें एक दिन पारेको मर्दन करे। पीछे, राई, सोंठ, हींग, इनकी मूष बनाय उसमें पारा धर मुख बंदकर कपर मिट्टी करे, पीछे पक्के घडेमें कां-जी भरके दोलायंत्रमें औटावै, एकदिन पीछे उसमेंसे निकाल खरलमें डाल इन औषधियों-के रसकी क्रमसे भावना देय, निर्गुंडी, भांग,

धतूरा, अरनी, हुरहुर, ब्राह्मी, काकमाची, सफेदसिरकंद, अदरक, कणेर, चित्रक, और पीछे मिरच, गंधक दोनों बराबर डाल मोर, मछली, सूअर, बकरी, भैंसा इनकें पित्तोंकी न्यारी २ अथवा एकही दिन सबकी भावना देय तो यह कालाग्निरुद्ररस बने । दो रत्ती खाय, ऊपरसे मिश्री सहत मिला जल पीवे, और शीतल जलसे स्नानकरे। वलायती अनार, पौंडेकी गंडेली, दही, भात यह भोजनको देवे तथा और जो शीतल वस्तु होंय देवे तो सन्निपात दूर होय । सोंठ, मिरच, पीपल, पांचोनोंन, सौंफ, दोनों जीरे, तीनों क्षार, ये सब बराबर लेके चूर्ण करे इसमेंसे तीन पल चूर्ण रसके ऊपर खाय ।

(चक्रिका) टिकिया

रसंगन्धंविषंचैवधत्तूरंमरिचंतथा ।
शोधितंचतथातालंमाक्षिकंचसमांशकम् ॥
दंतीक्वाथेनसंभाव्यंगुंजामात्रांतुचक्रिकां ।
साध्यासाध्यान्विहन्त्याशुसन्निपातांस्त्रयोदश ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सिंगियाविष, धतूरेके बीज, कालीमिरच, तथा शोधी हरताल और सोनामक्खी, सब बराबर ले सबको दंतीके काढेसे खरलकर एक रत्तीके समान टिकिया बनावे तो साध्य असाध्य तेरह प्रकारके सन्निपातोंको दूरकरे ।

द्वितीयचक्रिका

शम्भोकण्ठविभूषणंसमरिचंतालंतथापारदं ।
देवीबीजयुतंसुशोधितमिदंजैपालबीजोत्तमं॥
दंतीमूलयुतंसमागधिफलंसर्वंसमांशंनयेत् ।
तत्सर्वंपरिमर्द्यचार्द्रकरसैःगुंजाप्रमाणंरसम् ॥
दद्यात्घोरतरेत्रयोदशविधेदोषेचचक्राह्वयं।
तन्द्रादाहसमन्वितेचतृषयासंपीडितेमानवे ॥

अर्थ–सिंगियाविष, कालीमिरच, हरताल, पारा, गंधक, शुद्ध जमालगोटा, दंतीकीजड, और पीपल, ये सब समान लेवे सबको कूट पीस अदरककें रसमें खरल कर एक रत्तीकी टिकिया बनावे । एक टिकिया अदरकके रसमें तेरह सन्निपातोंमे देवे तो सब सन्निपात दूर होवें, तन्द्रा, दाह, और तृषासे पीडितभी सन्निपातवाला मनुष्य अच्छा होय ।

वीरभद्ररसः

शुद्धंसूतंमृतंचाभ्रंगन्धकंचपलंपलं ।
आर्द्रकस्यद्रवैःखल्वेदिनमेकंविमर्दयेत् ॥
वीरभद्ररसख्यातोमाषकंसन्निपातजित् ।
चित्रकार्द्रकसिंधूत्थमनुपेयंजलैःसह ॥
पथ्यंक्षीरोदनंदेयंद्विवारंचरसंहितम् ।

अर्थ–शुद्ध पारा, अभ्रककी भस्म, और गंधक एक २ पल लेय । इनको अदरकके रसमें एक दिन खरल करे, तो यह वीरभद्ररस बने इसमेंसें एक उडदके समान खाय तो सन्निपात दूर होय । इसके ऊपर चित्रक, अदरक और सैंधानोन जलके साथ पीवे तथा दूधभात पथ्य दो वार देय ।

ब्रह्मरंध्ररसः

रसाभ्रगंधकंतालंहिंगुलंमरिचंतथा ।
टंकणंसैंधवोपेतंसर्वांशममृतंतथा ॥
सर्वपादसमोपेतंमहिषीपित्तमर्दितं ।
ब्रह्मरंध्रेप्रयोक्तव्यंसंन्यासेज्ञानसंगमे ॥
सहस्रकलशैःस्नानंलेपनंचन्दनादिभिः ।
इक्षुमुद्गरसंभोज्यंतक्रभक्तंयथेप्सितम् ॥

अर्थ–पारा, अभ्रक, गंधक, हरिताल, हिंगलु मिरच, सुहागा और सैंधानोंन सब समान लेवे और सबके समान विष लेवे । और सब औषधियोंका चतुर्थांश भैंसेका पित्ता डालकर

अदरकके रससे घोटे, पीछे इस रसको संन्यासकी अज्ञान अवस्थामें मस्तकको छुरी आदिसे चीरकर भर देवे, जब रसकी गरमी होय तब हजार घडे शीतल जलसे न्हिलावे, चन्दन आदि शीतल वस्तु ओंका लेप करे, ईख और मूंग तथा छाछ भातका यथेच्छ भोजन कराना चाहिये ।

अग्निकुमाररसः

दशनिष्कंशुद्धसूतंशुद्धगन्धंचतत्समं ।
सार्द्धनिष्कंविषंचैवहंसपद्याद्रवैर्दिनं ॥
हस्तिशुंड्याद्रवैर्वाथमर्दितंवटिकांकुरु ।
काचकुप्यांनिवेश्याथमृदासंलेपयेद्बहि ॥
शुष्कासावालुकायंत्रेक्रमवृद्धयाग्निनापचेत् ।
षट्यामांतेसमुधृत्यसार्द्धनिष्कविषेणच ॥
सहसंचूर्णयेत्श्लक्ष्णंरसोह्यग्निकुमारकः ।
गुंजैकंपर्णखण्डेनदातव्यःसन्निपातजित् ॥
कासश्वासक्षयंपाण्डुमन्दाग्निंचविनाशयेत् ।

अर्थ–शुद्ध पारा निष्क १०, शुद्ध गंधक निष्क १०, सिंगियाविष निष्क १॥, सबको हंसपदीके रसमें एक दिन खरल करे । अथवा हथशुंडीके रसमें मर्द्दन कर गुटका करे । पीछे आतिशी शीशीमें भर कपरमिट्टी कर सुखावे जब सूखजाय तब वालुकायंत्रमें क्रमसे मंद, मध्य, तेज छःप्रहर आंच देवे । पीछे शीशीमेंसे निकाल डेढ निष्क विष मिलावे । चूर्ण करै तो अग्निकुमार रस बने, इसमेंसे एक रत्ती रस पानके संग खाय तौ सन्निपात, खांसी, श्वास, खई, पांडुरोग, मन्दाग्नि इनको दूर करे ।

अर्केश्वररसः

मृतसूतंमृतंताम्रंमृततीक्ष्णंचटंकणं ।
खर्परंत्रिकटुंतालंअर्कक्षीरेणमर्दयेत् ॥
दिनैकेनभवेत्सिद्धंनाम्नाह्यर्केश्वरोरसः ।
अर्कक्षीरेणवैनस्यंसन्निपातहरंपरं ॥

अर्थ–चंद्रोदय, तांबेकी भस्म, सार, सुहागा, खपरिया, त्रिकुटा, हरिताल, इनको आक दूधसे खरल करे, यह अर्केश्वर रस एक दिनमें सिद्धि होता है । आकके दूधमें नस्य देय तो सन्निपात दूर करे ।

कुलवटी.

शुद्धंसूतंमृतंताम्रंमृतनागंमनःशिला ।
तुत्थंचतुल्यतुल्यांशंदिनमेकंविमर्दयेत् ॥
द्रवैश्चोत्तरवारुण्याचणकाभांवटींकुरु ।
सन्निपातंनिहन्त्याशुनस्यमात्रेसुदारुणं ॥
एषाकुलवटीनामजलेपिष्ट्वाप्रयोजयेत् ।

अर्थ–शुद्धपारा, तांबेकी भस्म, नागेश्वर, मनसिल, लीलाथोथा, ये सब बराबर लेवे, एक दिन इन्द्रायणके रसमें घोटे चनाके समान गोली बनावे । यह दारुण सन्निपातको नास लेनेसे दूर करे, इसको जलमें पीसकर नास देना चाहिये ।

उन्मत्तरसः

रसंगन्धंचतुल्यांशंधत्तूरफलजैर्द्रवैः ।
मर्दयेद्दिनमेकन्तुतत्तुल्यंत्रिकटुंक्षिपेत् ॥
उन्मत्ताख्योरसोनामनस्येस्यात्सन्निपातजित्

अर्थ–पारा, गंधक दोनों समान लेय धतूरेके फलसे एक दिन खरल करे । पीछे इसमें गंधक पारेके तुल्य सोंठ, मिरच, पीपल, मिलावे, यह उन्मत्ताख्यरस नाश लेनेसे सन्निपातको दूर करे ।

स्वच्छंदनामकरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंसूतांशंमृतहेमकं ।
मृतंरौप्यंचताम्रंचसूततुल्यंपृथक्पृथक् ॥
सूर्यावर्त्तस्तुनिर्गुंड्यातुलसीचार्द्रकद्रवैः ।

भृंग्योन्मत्ताद्रिकर्णीनामग्निवर्ण्याग्निमंथयोः ॥
तिलपर्णीचित्रकयोकाकमाच्यारसेनच ।
मर्दयेत्रिदिनंखल्वेशुष्कंपित्तैश्चभावयेत् ॥
मत्स्यवाराहमहिषछागमायूरजैर्दिनं ।
अन्धमूषागतंपाच्यंवालुकायंत्रगंदिनं ॥
आदायचूर्णितंखादेत्मापैकंचार्द्रकद्रवैः ।
निर्गुंड्यादशमूलैश्चकषायंमरिचैःपिवेत् ॥
अभिन्यासंनिहत्याशुरसःस्वच्छन्दनामकः।
पथ्यंस्यान्मुद्गयूपेणजीरेणाज्यंचदापयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ भाग, शुद्ध गंधक दो भाग, सुवर्णकी भस्म, चांदीकी भस्म, तांबेकी भस्म ये सब पारेके समान पृथक् २ डाले। भांगरा, निर्गुंडी, तुलसी, अदरक, भांग, धतूरा सुपली, अग्निवर्णी, अरनी, हुल्हुल, चित्रक, मकोय, इनके रसमें ३ दिन खरल करे, जब सूख जाय तब मछली, सूअर भैंसा, बकरी, मोर, इनके पित्तेकी भावना देवे, पीछे अंधमूपा संपुटमें धरके एक दिन वालुकायंत्रमें पकावे। पीछे उसमेंसे निकाल चूर्णकर एक माशे अदरकके रससे खाय, ऊपर निर्गुंडी, दशमूल इनका काढा मिरच मिलाकर पीवे यह स्वच्छन्द नाम रस अभिन्यास सन्निपातको दूर करे। मूंगका यूप, जीरा, और घृत मिलायके पथ्य देवे।

जयमंगलरस

मृतसूताभ्रकान्तंचतीक्ष्णंआरंचमुण्डकं ।
तालकंमाक्षिकंव्योपंविषटंकणचित्रकं ॥
समांशंमर्दयेत्खल्वेपाठानिर्गुंडिविल्वजैः ।
द्रवैर्यष्ट्यादिकैर्वाथरुध्वापाच्यंतुभूधरे ॥
पुटेकेनभवेत्सिद्धंरसोयंजयमंगलः ।
दशमूलकषायेणमापैकंसन्निपातजित् ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रककी भस्म, कान्तलोहकी भस्म, फौलादकी भस्म, आरलोहकी भस्म, मुंडलोहकी भस्म, हरताल, सोनामक्खी, त्रिकुटा, विष, सुहागा, चित्रक, सब बराबर लेय। खलमें पीस पाठ, निर्गुंडी, वेल, मुलहटी, इनके रसमें खरल करके सुखावे। पीछे अंधमूषामें धर वालुकायंत्रमें एक पुट देवे तो यह जयमंगलरस सिद्धि होय। दशमूलके काढेसे एक मासे खाय तो सन्निपातको नष्ट करे

सन्निपातभैरवरसः

हिंगुलस्यविशुद्धस्यसार्द्धतोलचतुष्टयं ।
गंधकस्यविषस्यापिप्रत्येकंतोलकद्वयम् ॥
समापकंद्वयंचैवकनकोतोलकत्रयं ।
मापैकाधिकतोलैकंटंकनस्यतथैवच ॥
संमर्द्यजंबीररसैःवटिच्छायाविशोपिताः ।
गुंजैकपरिमाणस्तुकारयेत्कुशलोभिपक् ॥
एकान्तुभक्षयेत्तस्यगालयित्वार्द्रकद्रवैः ।
घोरेत्रिदोषेदातव्यःसन्निपातकभैरवः ॥

अर्थ–शुद्ध हिंगुल ४॥ तोले, गंधक २ तोले, विष दो तोले-दो मासे, धतूरेके बीज ३ तोले, सुहागा १ तोला १ मासे, सबको जंबीरी नीबूके रसमें खरल करे, गोली १ रत्तीकी बनावे उनको छायामें सुखाय धर रक्खे इनमेंसे १ गोली अदरकके रसमें घोलके देवे यह सन्निपातका नाशक सन्निपातभैरव है।

सूचिकाभरणरसः

रसगंधकनागंचविषंस्थावरजंगमं ।
मत्स्यमायूरवाराहछागपित्तैश्चभावयेत् ॥
सूचिकाभरणोनामभैरवेणप्रकाशितः ।
सूचिकाग्रेणदातव्यःसन्निपातकुलान्तकः ॥
शृंगवेरांबुनाचास्यमात्रांसम्यक्पिवेल्लघु ।

अर्थ–पारा, गंधक, सीसा, स्थावरविष (काष्ठविष हलाहल ब्रह्मपुत्रादि) जंगमविष

(सर्प आदिका) ये सब बराबर लेवे सबको खरलकर मछली, सूअर, मोर, और बकरी इनके पित्तेकी भावना देवे यह **सूचिकाभरण रस** भैरवने प्रकाश किया है, सुईके अग्र भागमें जितना लगे उतना रोगीको अदरकके रसमें देवे तो सन्निपातको दूर करे ।

सूचिकाभरण.

अमृतंगरलंदारुंसर्वंतुल्यंचहिंगुलं ।
पंचपित्तेनसंमर्द्यसर्षपाभावटींचरेत् ॥
वटिकासूचिकाग्रेनसन्निपातंकुलांतकृत् ।
तिलंचतिलतैलंचभोजनंदधिभक्तकम् ॥
सहस्रशोदृष्टफलेयंवटिका ॥

अर्थ–काष्ठविष, सर्प विष, और छिलहिंटा प्रत्येक एक २ भाग । हींगलू तीन भाग सब को मछली, मोर, भैंसा, बकरी, और सूअर इन पांच पित्तोंकी भावना देवे । पीछे इसकी सरसोंके बराबर गोली बनावे, यह **सूचिकाग्रवटिका** सन्निपातोंके समूहको नष्ट करती है इसको सेवन करनेवाले रोगीकी देहमें तिलतैलादिका मर्दन करना, तथा दहीभातका भोजन पथ्य हैं ।

बृहत्सूचिकाभरणरसः

रसगंधकनागाभ्रंविषंस्थावरजंगमं ।
मत्स्यमाहिषमायूरछागपित्तैर्विभावयेत् ॥
सूचिकाभरणोनामभैरवेणप्रकाशितः ।
दातव्यंसूचिकाग्रेणपयःपेटीजलेनच ॥
त्रयोदशेसन्निपातेविशूच्यामतिसारके ।
त्रिदोषजेतथाकासेदापयेत्कुशलोभिषक् ॥
पयःपेटिशतंदद्यात्भोजनंदधिभक्तकं ।
तथासुभर्ज्जितंमासंलेपनंतिलचंदनैः ॥
रोगिणोयत्प्रियंद्रव्यंतस्मैतच्चप्रदापयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, सिंगियाविष, सर्प विष, इन सबको खरल कर मछली, भैंसा मोर और बकरी इनके पित्तोंकी भावना पृथक् २ देवे तो यह भैरवका कहा हुआ **सूचिकाभरण रस** तयार होवे । इसको सुईके नाकूसे उठाकर नारियलके जलके साथ देवे तो तेरह प्रकारके सन्निपात, विशूचिका, अतिसार, त्रिदोषजनित खांसी इन सबको दूर करे । इसमें सौ नारियलके गोलोंका जल पिलावे । और दही भात भोजनको देवे तथा भुनामांस, तैल मर्दन और चन्दन लगावै । रोगीको जो वस्तु प्रिय लगे वो वैद्यको देना चाहिये ।

विजयभैरवरसः

पारदंगन्धकंतुल्यसैंधवंविषमुष्टिकं ।
कटुतुम्बीलसुनकोवचागुंजाकरंजकम् ॥
कुष्टंसमरिचंपिष्ट्वाधत्तूरजलजैरसैः ।
तदौषधेनवर्त्तिस्तुतिलतैलंमसाधयेत् ॥
पातालयंत्रवद्युक्त्यातैलंविजयभैरवं ।
सन्निपातापहंप्रोक्तंमहावातप्रणाशनम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, गंधक दोनों बराबर लेय, सैंधानोंन, कुचला, कडवी तूंबी, लहसन, बच, चिरमिठी, कंजा, कूठ, और मिरच इन सबको धतूरेके रसमें पीस एक कपडे पर लपेट बत्ती बनावे । उसमें तिलका तेल सिद्ध करे अथवा इन औषधियोंका पातालयंत्रसे तेल निकाले, यह विजय भैरव तेल है यह सन्निपात घोर वातको दूर करता है ।

त्रिनेत्ररसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतताम्रकं ।
त्रिभिस्तुल्यैःगवाक्षीरैर्मर्दयेदातपेखरे ॥
मर्दयेद्दिनमेकंतुनिर्गुंडीशिग्रुजद्रवैः ।
विधायगोलन्तंगोलमंधमूषागतंपचेत् ॥
त्रियामंवालुकायंत्रेततःखल्वेविमर्दयेत् ।

अष्टमांशंविषंतत्रनिक्षिपेत्तेनमर्दयेत् ॥
त्रिनेत्राख्योरसोह्येषदेयोगुंजाद्वयोन्मितं ।
पंचकोलकषायेणछागीदुग्धेनवासह ॥
रसेनानेनभुक्तेनसन्निपातज्वरोमहान् ।
संक्षयंव्रजतिक्षिप्रंकर्त्तव्योनात्रसंशयः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, बराबर लेय पारेकी चतुर्थांश तांबेकी भस्म लेय, तीनोंकी बराबर गौका दूध लेवे। उसमें पूर्वोक्त औषधि धूपमें धरके घोटे। तदनंतर निर्गुंडी और सहजनेकेरसमें तीन दिन घोटे। गोला बनाय उसको अंधमूषमें धर तीन प्रहर बालूयंत्रमें पचावे। पीछे उसमेंसे निकाल खरलमें घोटे। इस रसमें अष्टमांश विष डाले तो यह त्रिनेत्ररस बने इसमेंसे २ रती पंचकोलके काढेसे अथवा बकरीके दूधके साथ देय इस रसके खानेसे महासन्निपातज्वर दूर होय।

लोकनाथरसः

पंचभिर्लवणैःसूतंत्रिभिःक्षारैस्तथैवच ।
मर्दयेद्दोषनाशायगुणाधिक्यविधिक्रिया ॥
एवंसंशोध्यसूतेन्द्रंराजिकाहिंगुशुंडिभिः ।
चूर्णितैःपिंडिकांकृत्वातन्मध्येसूतकंक्षिपेत् ॥
ततस्तांस्वेदयेत्पिंडीवस्त्रेबध्वातुषोदकैः ।
दोलायंत्रगतंयत्नाद्दिवायामचतुष्टयम् ॥
एवंशुद्धंरसंकृत्वाक्रमेणानेनमर्दयेत् ।
गिरिकर्णीतथाभृंगवारिनिर्गुंडिकातथा ॥
जयंतीशृंगवेरंचमंडूकीचातिलछटी ।
काकमाचीतथोन्मत्तरूबूकश्चततःपरं ॥
एतासामौषधीनांचरसतुल्यैरसैःक्रमात् ।
ततस्तुसूतराजस्यकार्यामरिचमात्रका ॥
वटिकासन्निपातस्यनिवृत्त्यर्थंभिषग्वरैः ।
इयंश्रीलोकनाथेनसन्निपातनिवृत्तये ॥
कीर्त्तितावटिकापुण्याद्दृष्टप्रत्ययकारिका ।
इमांमाप्यत्वरीयस्मात्सन्निपातन्तुनश्यति ॥
मयूरमीनवाराहछागमाहिषसम्भवैः ।
प्रत्येकंचाथसप्तैर्वाभाविताचेदियंभवेत् ॥
ढालयेत्तत्रतोयानिसुशीतानिबहूनिच ।
शर्करादधिसंयुक्तभक्तमस्मिन्प्रदापयेत् ॥
ईक्षवश्चतथायोज्याःरसवीर्यविवृद्धये ।
शीतेद्रव्येभवेद्वीर्यपित्तवर्द्धेमहारसे ॥

अर्थ–पारेको पांचो नोंनमें, तीनों क्षारोंमें दोष नष्ट करनेके अर्थ और गुणाधिक्यके लिये मर्दन करे। इस प्रकार पारेका शोधन करे, पीछे राई, हींग, और कुकुआको पीस उसकी पिंडी बनावे उसमें पारेको धरके उस पिंडीको कपडेमें बांधके तुषोदकके पानीमें दोलायंत्रकी विधिसे स्वेदन करे। चार प्रहर इस प्रकार पारेको शुद्ध करे। पीछे मर्दन संस्कार करे, कोयल, भांग, निर्गुंडी, अरनी, अदरक, ब्राह्मी, हुरहुर, मकोय, धतूरा, अंड इन औषधियोकारस पारेके तुल्य डाले प्रत्येकके रसमें पृथक् २ घोटे, पीछे इस पारेकी मिरचके बराबर गोली करे, यह सन्निपात दूर करनेके निमित्त लोकनाथ सिद्धने गोली कही है। इस रसमें मोर, मछली, सूअर, बकरी, भैंसा, इनके पित्तोंकी सात २ भावना देय तो अत्यंत गुणकरे। इसको रोगीको खवाय बहुतसे शीतल जलका तर्डा दे, ज्यों २ जल डाले त्यौं २ इस रसका गुण बढता है, और दही मिश्री मिलाकर भात भोजन करावे, पौंडा गन्नेका रस पिलावे औरजो शीतल वस्तु अनार, अंगूर आदि हैं उनको खिलावे शीतल वस्तु खानेसे गुण होता है।

त्रिदोषहारीरसः

रसबलिशिलिलालतालतुत्थोदधिमलटंकनि कुंभजामृताख्यं । विलुलितमहिपित्ततस्त्रि

धास्याद्रुधिरगतस्तुरसस्त्रिदोषहारी ॥

अर्थ–पारा, गंधक, हरिताल, लीलाथोथा, दही, कपूर, सुहागा, जमालगोटा, और विष इन सबको सर्पके पित्तेकी तीन भावना देय तो रुधिरगत त्रिदोषको दूरकरे।

वेतालरसः

शुद्धंसूतंविषंगन्धंमरिचालंसमाक्षिकं।
मर्दयेच्छिलयातावद्यावज्जायेतकज्जली॥
आर्द्रकस्यरसेनाथकारयेद्वटिकाशुभाः॥
गुंजामात्रंप्रदातव्यंद्वादशेसन्निपातके।
साध्यासाध्यंनिहंत्याशुसन्निपातंत्रिदोपजं॥
ईशेनकथितःशुद्धोवेतालाख्योमहारसः।
कंठेह्यपिगतैःप्राणैर्यमदूतान्निवारयेत्॥

अर्थ–शुद्ध पारा २९,शुद्ध विष २९, शुद्ध गंधक, २९, मिरच २९, हरिताल २९, सुवर्ण माक्षिक भस्म २९, इन सब वस्तुओंको एकत्र कर एक प्रहर घोटे। पीछे अदरकके रसमें एक प्रहर घोटे। एक रत्तीकी गोली करे, एक गोली अदरकके रससे खाय तो सर्व प्रकारके साध्यासाध्य सन्निपात दूर होवें। यह श्रीशिवजीकाकहा वेताल नाम रसहै कंठगत प्राण वाले रोगीको यमदूतोंसे बचा देवे

सन्निपातसूर्यरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंप्रगृह्यतत्पादभागंरवितारहेमं भस्मीकृतंयोजयमर्दयीत दिनत्रयंवन्हिरसेन घर्मे॥ १॥ विषंचदत्वात्रिकलाप्रमाण म जादिपित्तैःपरिभावयेच्च। वल्लद्वयंचास्य ददीतवन्हिकटुत्रयार्द्रद्रवसम्प्रयुक्तं॥ २॥ तैलेनवाभ्यज्यवपुश्चकुर्यात्स्नानंजलेनापि सुशीतलेन। यावद्भवेदुःसहशीतमस्यमूत्रं पुरीषंचशरीरकम्पः॥ ३॥ पथ्येयदीच्छा परिजायतेऽस्यमरीचखण्डंदधिभक्तकंच॥ स्वल्पंददीतार्द्रकमस्यशाकं दिनाष्टकंस्नान विधिंचकुर्यात्॥ ४॥

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक २ भाग, तांबे की भस्म, चांदीकी भस्म, सोनेकी भस्म, ये प्रत्येक पारेकी चतुर्थांश लेय। सबको खरलमें डाल चीतेके रसमें तीन दिन मर्दन करे, पीछे पारेका सोलहवां भाग विष डाल बकरी, मोर, भैंसा, आदिके पित्तेसे घोटे। इसकी छः रत्तीकी मात्रा है, चीता, त्रिकुटा, अदरक, इनके साथ दे पीछे देहमें तेलकी मालिश करावै, शीतल जलसे स्नान करावै, जबतक दुःसह शीत और मूत्र मल न उतरे। तथा जब तक कंप न होय तबतक स्नान करावै। यदि रोगीको पथ्यपर इच्छा होवे तौ काली मिरच, मिश्री, दही और भात खिलावै और अदरकका थोडा शाक देवे, आठ दिनतक स्नान करावे।

त्रिदोषनिहारसूर्यः

रसेनगन्धंत्रिगुणंकृशानुरसैर्विमर्द्याष्टदिनानि घर्मे। रसाष्टभागंत्वमृतंचदत्वाविमर्दयेद्वन्हि जलेनकिंचित्॥ १॥ पित्तैस्तुसंभावितए पदेयस्त्रिदोषनीहारविनाशसूर्यः।

अर्थ–शुद्ध पारा १ भाग, शुद्धगंधक ३ भाग, दोनोंको धूपमें धर चीतेके रससे तीन दिन मर्दन करे। पारेका आठवां हिस्सा विष डाल के फिर चीतेके रससे घोटेपीछे बकरी, भैंसा आदिके पित्तोंकी भावना देय तौ यह त्रिदोष रूप कोहलके नाशको सूर्यरूप रस बने।

चिन्तामणिरसः

सूतंगन्धकमभ्रकंसमलवंसूतार्धभागंविषं॥
तत्र्यंशंजयपालमम्लमृदितंतद्गोलकंवेष्टितं।
पत्रैर्भुजभुजंगवल्लिजनितैर्निक्षिप्यखातेपुटं॥
दत्वाकुक्कुटसंज्ञिकंसहदलैःसंचूर्ण्यतत्रक्षिपेत्।

भागार्द्धंजयपालबीजममृतंतत्तुल्यमेकीकृतं ॥
गुंजानागरसिंधुचित्रकयुतासर्वज्वरान्नाशयेत्
शूलंचग्रहणीगदंसजठरंदध्यम्लसंसेविनां ॥
तापेसेचनकारिणांगदवतांसूतस्यचिन्तामणे
अयमेवरसोदेयोमृतकल्पेगदान्तरे ॥
सन्निपातेतथावातेत्रिदोषेविषमज्वरे ॥ ३ ॥
अग्निमांद्येग्रहण्यांचशूलेवातिसृतौपुनः ।
शोथेदुर्नाम्निचाध्मानेवातेसामेनवज्वरे ॥

अर्थ-पारा, गंधक, अभ्रक भस्म, सब बराबरले पारेसे आधाविष और पारेका तीसरा भाग जमालगोटा इन सबको खटाईमें घोट गोला बनाय नागरवेलिके पत्तोंसे लपेटे । पीछे गढेला खोद कुक्कुटपुटकी आंच देय । पीछे पत्तों समेत चूर्ण कर इसमें विषका आधा भाग जमालगोटा, और जमालगोटेकी बराबर विष डाले पीछे इसमेंसे एक रत्ती सोंठ, सैंधानोंन, चीता, इनके संग खाय तो सर्वज्वर, शूल, संग्रहणी, उदररोग, दूर होय । इसपै दही-खटाई खानी चाहिये । बहुत गरमी मालूम होय तो शीतल जलका मस्तक पर तर्डा दिलावे । यह मृततुल्य रोगोंमें रस देना चाहिये, सन्निपात और वात तथा विषमज्वरमें मन्दाग्नि, संग्रहणी, शूल, सूजन, बवासीर, अफरा, आम सहित नवीन ज्वर दूर होय ।

अग्निकुमाररसः

द्वौकर्षौगन्धकस्याथसूतकस्यतथैवच ।
यत्नतस्तूभयंमर्द्यहंसपादीरसैर्दिनं ॥
कल्कस्यवटिकांकृत्वानिक्षिपेत्काचभाजने ।
कर्षैकममृतंतत्रक्षिप्त्वावक्त्रंनिरोधयेत् ॥
कूपिकायाःपरौभागौवालुकाभिश्चपूरयेत् ।
अहोरात्रिर्भवेत्सार्द्धंतावत्तत्रपचेद्रसं ॥
दीपमात्रंसमारभ्यपावकंवर्द्धयेच्छनैः ।
स्वांगशीतलतांज्ञात्वासमाकृष्यरसंततः ॥
तोलार्द्धममृतंदत्वातोलार्द्धंमरिचंतथा ।
भक्षयेद्रक्तिकामेकांसर्वरोगविनाशनीं ॥
सन्निपातंतथावातंशूलंमन्दाग्नितामपि ।
नाशयेद्ग्रहणीगुल्मयक्ष्मपांडुगदानपि ॥

अर्थ-गंधक २ कर्ष, पारा २ कर्ष दोनोंको हंसपदीके रसमें घोटे, पीछे कल्कको गोली करके काचकी सीसीमें भरे. तदनंतर एक कर्ष विष डाले, पीछे मुख बंदकर वालुकायंत्रमें बारह प्रहरकी आंच दे । क्रमसे दीपक कीसी मंद फिरमध्य फिर तेज आंच दे, स्वांग शीतल होनेपर रसको निकाल लेवे, पीछे इसमें छः मासे विष और छः मासे मिरच मिलाकर खाय तौ सर्वरोग नष्ट होवे, सन्निपात, वादी, शूल, मन्दाग्नि, संग्रहणी, गोला, खई, पांडुरोग, और मस्तपनको दूरकरे ।

सन्निपाततूलानलोरसः

त्र्यूषणंपंचलवणंत्रिक्षारंजीरकद्वयम् ।
शताव्हागन्धसूताभ्रंयामंसर्वंविमर्दयेत् ॥
चित्रकार्द्रकसिंधुत्थैःपंचगुंजंप्रयोजयेत् ।
सन्निपातेज्वरादौचसामेजीर्णेपिवैद्यराट् ॥
पानीयंपाययित्वातुनिर्वातेस्थापयेत्ततः ।
दधिभक्तंप्रदातव्यंक्षुधाहीनेपुनर्ददेत् ॥
रसंवातेचमन्दाग्नौप्रयुंजीतयथाविधिः ।

अर्थ-त्रिकुटा, पांचौ नोंन, तीनों क्षार, दोनों जीरे, सोंफ, गंधक, पारा, अभ्रकभस्म, सबको एक प्रहर घोटे । चित्रक, अदरक, और सैंधेनोंनके साथ ५ रत्ती सन्निपातमें ज्वरकी आदिमें सामज्वर और जीर्णज्वरमें वैद्य देवे । इसके ऊपर पानी पिलाके वातरहित स्थानमें रोगीको रखे दही, भात, भोजन करावे भूख न लगै तो फिर मात्रा देय, मन्दाग्नि

और वादीमें विधिसे देय ।

भैरवरसः

शुद्धसूतंमृतंताम्रंसमंटंकणगन्धकं ।
जंवीरफलमध्यस्थेदोलायंत्रेपचेद्दिनं ॥
मर्दयेद्भावयेद्द्रावैःशिग्रुवासार्द्रनिंवुजैः ।
सर्पाक्षीविजयाब्राह्मीमीनाक्षीहंसपादिका ॥
हस्तिशुंडीरुद्रजटाधूर्त्तवातारिवायसी ।
दिनैकंमर्दयेदासांलोहसंपुटगंपचेत् ॥
दिनैकंवालुकायंत्रेसमुधृत्याविचूर्णयेत् ।
तालकंदीप्यकंव्योपंविपंजीरकचित्रकौ ॥
एभीरससमैर्मिश्रंत्रिगुंजंभक्षयेत्सदा ।
सन्निपातज्वरंहन्तिमुद्गयूषाशिनःसुखम् ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, तांवेकी भस्म इनकी वरावर सुहागा और गंधक लेय । सवको जंवीरी नींवूके रसमें दोलायंत्रकी विधिसे पचावे. पीछे सहजना, अडूसा, अदरक, नींवू, सरफोका, भांग, ब्राह्मी, मछेछी, हंसराज, हथशुंडी, रुद्र जटा, धतूरा, मकोय, अरंड इनके रसमें एक दिन मर्दन करे । पीछे लोहके संपुटमें रखके वालुकायंत्रेमें १ दिन पचावे । पीछे उसमेंसे निकाल चूर्ण करे, हरताल, अजमोद, त्रिकुटा, विप, जीरा और चित्रक इनके रसके साथ तीन रत्ती इस रसको खाय तो सन्निपात दूर होय, पथ्य मूंगका यूप पीवे ।

अर्द्धनारीनाटेश्वररसः

पैलंकभावयेत्तालंकूष्मांडकफलद्रवैः ।
त्रिःसप्तकृत्वाश्चूर्णाद्भिस्तथाकर्कटिकारसैः ॥
चतुःशाणाहिनिर्मोकयुक्तकूप्यांनिरोधयेत् ।
विपचेद्वालुकायंत्रेद्वादशप्रहरंततः ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यद्विशाणंतुत्थकंक्षिपेत् ॥
अंजनात्सज्वरंहन्तिसद्योगुंजामितोरसः ।
अर्द्धनारीश्वरोह्येपकृपयाशंकरोदितः ॥
देवदालीरसैर्भाव्यंवारमष्टोत्तरंशतं ।
तद्वन्निवूरसैंतुत्थंसएवद्गुणदायकः ॥

अर्थ–हरताल१पलको पेठेकेरसकी २१ भावना देवे, और घोटे, पीछे वांझककोडाके रसकी २१भावना देय, पीछे इसमें चार शांण सांपकी कांचली डाल घोटे, शीशीमें भर १२ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे, जव स्वांग शीतल होजाय तव निकालके दो शाण लीलाथोथा मिलावे, इसके एक रत्ती अंजन करनेसे शीघ्र ज्वर दूर होय यह अर्द्धनारीश्वररस श्री-शिवजीने कृपा पूर्वक कहा है । अथवा १०८ वार देवदालीके रसकी भावना लीलाथोथेमें देय तथा नींवूके रसकी १०८ भावना लीलाथोथेमें देय तौ इस अंजनसे ज्वर दूर होय ।

पानीयवटिका.

रसमापकचत्वारिइष्टिकागुंडकेग्रहः ।
शोपयित्वाततःशोध्योतीक्ष्णपर्णतथार्द्रके ॥
स्वर्णधत्तूरसत्वेचवृद्धदारुद्रवेतथा ।
कन्यकानिजसत्वेचरसशोधनमुत्तमम् ॥ २॥
गंधकंरसतुल्यंतुप्रक्षाल्यन्तन्दुलांवुना ।
कृत्वातैलसमंदर्व्यांनिर्वाप्यचित्रकद्रवे ॥३॥
द्वाभ्यांकज्जलिकांकृत्वालोहचूर्णस्यमापकं ।
सुवर्णमाक्षिकंचापितत्रलोहसमंददेत् ॥ ४ ॥
कृत्वाकंटकवेध्यन्तंताम्रंकज्जललेपितं ।
मुहूर्तंधम्यतस्ताम्रंद्रुतंचूर्णत्वमाप्नुयात् ॥५॥
एकीकृत्यतुतत्सर्वंततःप्रस्तरभाजने ।
मर्दयेताम्रदण्डेनदत्वाचैपांनिजद्रवम् ॥६॥
प्रथमेकेशराजश्चद्वितीयेग्रीष्मसुन्दरः ।
तृतीयेभृंगराजश्चचतुर्थेभेकपर्णिका ॥ ७ ॥
पंचमेचनिसुन्दारपष्टेचरसपूर्तिका ।
सप्तमेपारिभद्रश्चअष्टमेरक्तचित्रकः ॥ ८ ॥
शक्राशनंचनवमेदशमेकाकमाचिका ।

एकादशेतथानीलीद्वादशेहस्तिशुंडिका ९॥
अमीषामौषधीनान्तुप्रत्येकंतुपलद्रवम् ।
मर्दयेत्तुप्रयत्नेनद्वादशाहेनसाधकः ॥ १० ॥
ततःपारदमानन्तुदत्वात्रिकटुगुण्डकम् ।
वटिकांराजिकांतुल्यांछायाशुष्कांसमाचरेत्।
ततःशम्बूकजेपात्रेकर्त्तव्यावटिकात्त्रियम् ।
शरावेशंखपात्रेवाकृत्वासलिलगालितम् १२
अत्यन्तदोषदुष्टायज्ञानशून्यायरोगिणे ।
ऊर्द्धयोनिसमभ्यर्च्यप्रदद्याद्गुटिकाद्वयम्॥१३
ढक्कयेत्तंततःपश्चात्तरंस्थूलपटादिभिः ।
मलमूत्रागमात्सद्यःससाध्योभवतिध्रुवम् १४
दध्यन्नंतुततोदद्यात्पिवेद्वारियथेप्सया ।
दद्याद्वातहरन्तैलमभ्यंगायसदैवहि ॥ १५ ॥
चिरज्वरेपिवेद्वारिपंचमूलीप्रसाधितम् ।
ग्रहण्यांरक्तपित्तेचापिवेदतिविषांगदी॥१६॥
पिवेत्पर्पटजंवारिघोरेकम्पज्वरेतथा ।
तथाज्वरातिसारेचजीरकस्यजलंपिवेत्॥१७
मन्दाग्नौकामलायांचसंग्रहेग्रहणीगदे ।
कासेश्वासेसदाकार्यापानीयवटिकात्वियम्॥

अर्थ—पारा ४ मासे लेवे उसको पारेको प्रथम लाल ईटके चूर्ण (कूकुआ) में खरल करे, पीछे तुंवरू, अदरक, स्वर्ण धतूरेके पत्ता, विधायरा, और घीगुवार इनके रसमें पारेको पृथक् २ खरल करे। पीछे पारेके समान गंधक लेय उसको चांवलोंके पानीसे धो लोहेकी करछीमें तपावै। जव गल जावे तव उसको चित्रकके रसमें डाल देवे, इस प्रकार शोधित गंधक और पारेकी कजली करे। इस कजलीको शुद्ध तांवेके कंटक वेधी पत्रोंपर लेप कर तांवेकी थालीमें वंदकर चूल्हेपर चढाय नीचे आंच देवे इस प्रकार दोघडी आंच देनेसे तांवेकी भस्म होय। पीछे लोह चूर्ण एक मासा, सोनामक्खी १ मासा, ऊपर कही हुई ताम्र भस्म ४ मासे, सवको एकत्रकर खरलमें डाल तांवेके मूसलासे खरल करे। पीछे हरे भांगरेकी प्रथम, और दूसरे ग्रीष्म सुन्दर (गिमाशाक इति वंगदेश प्रसिद्ध) तीसरे भांगरेकी, चतुर्थ मंडूक पर्णीकी, पंचम निर्गुंडीकी, छटेलता कुटकीकी, सातवें नींव, अथवा कांटेदार नींवकी, आठवें लाल चीतेकी, नवम भांगकी, दशम मकोयकी, ग्यारहवें नील वृक्षकी, वारहवें हथशुंडीकी, इन प्रत्येक औषधियोंके पल २ मात्र रसकी भावना देवे। इस प्रकार बारह दिन घोटे, पीछे पारेके समान त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) डाले सवको खरलकर राईके समान गोली वनावे। और छायामें सुखा लेवे, परंतु तांवेहीके दंडसे घोटे, पीछे इन गोलियोंको शंख अथवा मिट्टीके सरवामें रखे। जलमें घोलके रोगीको देवे, अत्यंत दोषकी वृद्धीमें वेहोशरोगीको उर्द्धयोनि दुर्गाकी पूजा करके दो गोली देवे, और उसी समय रोगीको कपडोंसे ढक देवै। मलमूत्रकी वाधा रोगीको होतेही रोग दूर हुआ जानना। इसमें दही भातका भोजन देवे,। और यथेच्छ जल पीवै और वात हरण कर्त्ता तेलोंकी नित्य मालिश करावे। पुराने ज्वरमें इन गोलियोंको खाय ऊपर पंचमूलका काढा पीवे, और **संग्रहणी** तथा **रुधिर गिरनेमें** अतीसके काढेके साथ लेवे, और घोर कंपज्वरमें पित्तपापडेके काढेसे लेवे, और ज्वरातिसारमें जीरेके जलके संग लेवे, मन्दाग्नि, कामला,संग्रहणी, खांसी, श्वास, इन रोगोंमें सदैव पानीय वटिका सेवन करे।

द्रष्टफलापानीयवटिका.

अनाथनाथोजगदेकनाथः श्रीलोकनाथःप्रथ
मःप्रसन्नः । जगादपानीयवटींसुपद्वींतामेवव
क्ष्यामिगुरुप्रसादात् ॥ १॥ जयार्कस्वरसंचैव
निर्गुंडीवासकंतथा। वाट्यालकंकरंजश्चसूर्य्या
वर्त्तकचित्रकौ ॥ २॥ ब्राह्मीवनंसर्पपंचभृंग
राजंविनिक्षिपेत्। दन्तीचत्रिवृताचैवतथारग्व
धपत्रकम् ॥ ३ ॥ सहदेवामरंभण्डीतथात्रि
पुरभण्डिका। मण्डूकपर्णीपिप्पल्योद्रोणपुष्प
कवायसी ॥ ४ ॥ गुंजाकिनीकेशराजस्तथा
योजनमल्लिका । आसारिणेतिविख्यातोध
त्तूरःकनकस्तथा ॥ ५ ॥ त्रैलोक्यविजयाचै
वतथास्वेतापराजिता। प्रत्येकंकार्पिकंचैवरस
माकृष्यभाजने ॥ ६ ॥ एकैकंचरसंदत्वाम
र्दयेल्लोहदंडतः। चण्डातपेचसंशोष्यक्षीरंतत्र
पुनःक्षिपेत् ॥ ७ ॥ स्नुहीक्षीरंचार्कदुग्धंवटदु
ग्धंतथैवच। प्रत्येकंकार्पिकंदत्वामर्दयेच्चपुनः
पुनः ॥ ८ ॥ सुमर्दितंचसंज्ञात्वायदापिंडत्व
मागतम् । द्रव्यान्येतानिसंचूर्ण्यवस्त्रपूतानि
कारयेत् ॥ ९ ॥ दग्धहीरंचातिविषांविषमु
ष्टितथाभ्रकं । पारदंशोधितंचैवगंधकंविषमा
क्षुरं ॥ १० ॥ हरितालंविषंचैवमाक्षिकंचम
नःशिला । प्रत्येकंचचतुर्मापसर्वचूर्णीकृतंच
तत् ॥ ११ ॥ प्रक्षिप्यमर्दयेत्सर्वंशोपयित्वापु
नःपुनः। सुमर्दितंचतंदृष्ट्वाचांगेरीस्वरसेनचः
॥ १२ ॥ उत्थाप्यभेषजंदृष्ट्वायदापिंडत्वमा
गतं। तिलप्रमाणंगुटिकाःकारयेन्मतिमान्भि
षक् ॥ १३॥ त्रिदोपजनितोवैद्यमुक्तोऽपिन्न
हुसम्मतः। लंघनैर्वालुकास्वेदैःप्रक्रान्तोदीन
दर्शनः ॥ १४ ॥ संपूज्यकरुणाधारंप्रणम्यच
त्वसर्पणम् । शरावेवारिणाघृष्ट्वाविंशतिवटि
काःपिवेत् ॥ १५ ॥ पीततद्भेपजंपश्चात्वस्त्रै
राच्छादयेन्नरम्। रसलग्नंवपुर्ज्ञात्वादद्याद्वारि
सुशीतलम् ॥ १६ ॥ शरावप्रतिमम्वारिपा
तव्यंचपुनःपुनः। सन्निपातज्वरंचैवदाहंचैव
सुदारुणम् ॥ १७ ॥ कासंश्वासंचहिक्कांचवि
ड्ग्रहंचाश्मरींजयेत् । मूत्ररोगविवंधेतुदातव्यं
क्षीरसंयुतम् ॥ १८ ॥ पंचतृणकृतंकार्थदात
व्यंचपुनःपुनः । पानीयवटिकाह्येपालोकना
थेननिर्मिता ॥ १९ ॥ लोकानामुपकाराय
सर्व्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ २० ॥

अर्थ—अनाथोंके नाथ जगतके एकही रक्षक ऐसे लोकनाथके प्रथम प्रसन्न होकर परम सुंदर पानीयवटिकाको कहते हुए उसी वटीकोमें गुरू कृपासे कहाता हूं । अरनी, आक, निर्गुं-डी, अडूसा, वला (गुलसकरी) कंजा, हुल-हुल, चीता, ब्राह्मी, वनसरसों भांगरा, दंती, निसोथ, अमलतासके पत्ता, सहदेवी, अमरकं-द, मजीठ, त्रिपुरभंडी (वडभाट इतिवंगदेश प्रसिद्धि) कोई २ रुद्रजटा कहते हैं । मंडू-कपर्णी, पीपल, गोमा, मकोय, चिर्मिठी, भांग-रा, योजन मल्लिका (हाफरमाली) आसारण, कनकधतूरा, भांग और सफेदकोयल, इन सब प्रत्येकका रस एक २ कर्ष लेवे । और पत्थर के खरलमें लोहके मूसलासे खरल करे पीछे धूपमें रखकर सुखा लेवे । पीछे इसमें थूहर, आक, वड, इन प्रत्येकका दूध एक २ कर्ष डा-ले, और लोहके मूंमलासे घोटता जावे, जब घुटते घुटते गोलासा वंधने लगे, तव पारा ४ मासे, गंधक ४ मासे, दोनोंकी कजली कर पूर्वोक्त पिंडमें मिलाकर घोटे, पीछे इतनी औषधि कपरछन कर और डालै । हीराकी भस्म, अतीस, कुचला, अभरक, सिंगिया विष, हरताल, सर्पविष, सोनामक्खी, और मनसिल प्रत्येक चार २ मासेले । उसी गोलामें डाल-

कर घोटे, फिर धूपमें सुखाकर चूकाके रसमें खरल करे। जब गोलासा होने लगे तब तिलके प्रमाण गोलियां बनावे। जो रोगी त्रिदोषसें व्याकुल हो रहाहो, तथा जिसको वैद्योंने असाध्य जानकर छोड दिया हो, तथा लंघन और वालूसे पसीने लाना इत्यादि कर्म करनेसे जो रोगी दीन होगया हो, उसको करुणाधार शिवका पूजन कर और सूर्य्यको प्रणामकर अदरकके रस तथा जलसे मिट्टीकी सरैयामें घोल वृद्ध वैद्यकी संमतिसे रोगीको पिलावे। और पिलाकर कपडे उढाय सुला देवे, दो या तीन घडी पश्चात् शीतल जल पिलावे, जितना सरैयामें मावे उतना वारंवार जल देवे तो सन्निपातज्वर, घोर दाह, खांसी, श्वास, हिचकी, मलकारुकना, पथरी, इनको दूर करे, तथा मूत्ररोग यानी मूत्रके रुकनेमें दूधके साथ गोली देवे और तृणपंचकका काढा पिलावे, यह पानीयवटिका लोकनाथ (शिव) ने जगतके कल्याणार्थ रची है।

सूचिकाभरणरसः

विषंपलमितःसूतःशाणकंचूर्णयेद्वयम्।
तच्चूर्णसम्पुटेःकृत्वाकाचलिप्तशरावयोः ॥
मुद्रांकृत्वाथसंशोष्यततश्चूल्यांनिवेशयेत्।
वन्हिशनैःशनैःकुर्य्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥
ततःउद्घाव्यतन्मुद्रामुपरिस्थंशरावकात्।
यावत्सूच्यामुखेलग्नंकूप्यांनिर्य्यातिभेषजम्॥
तावन्मात्ररसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातिनि।
क्षुरेणमाच्छितेमूर्ध्नितत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोऽपिहिजीवति।
तथैवसर्प्पदष्टोऽपिमृतावस्थोऽपिजीवति ॥
यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते।

अर्थ–विष १ पल, पारा ४ मासे, दोनोंको एकत्र चूर्ण कर काचलिप्त सरवामें रख कपरमिट्टी कर सुखा लेवे। पीछे चूल्हेपर चढाय दो प्रहर मंदाग्नि देवे। स्वांग शीतल होनेपर मुद्रा दूर कर ऊपरके सरवामे लगे हुए पारेको निकाल लेवे सन्निपातवाले रोगीको जितना शीशीमेंसे सुईके अग्रभागमें आवे उतनी मात्रा देनी चाहिये। प्रथम छुरी आदिसे मस्तकको गोदकर उसमें रसको भरकर उंगलीसे मल देवे, औषधिका रुधिरसें स्पर्श होते ही मूर्च्छित मनुष्यभी जी उठे। उसी प्रकार सांपका काटा हुआ मनुष्य मरेके तुल्यभी होगया हो वहभी इससे जी उठे, यदि इस रसमें गरमी होवे तो मीठी वस्तु भोजनको देवे।

चिन्तामणिरसः

सूतंगन्धकमभ्रकंसमनवंसूतार्द्धभागंविषं।
तत्चंत्र्यंशंजयपालमम्लमृदितंतद्गोलकंवेष्टितं॥
पत्रैर्मंजुभुजंगवल्लिजनितैर्निक्षिप्यखातेपुटं।
दत्वाकुक्कुटसंज्ञकंसहदलैःसंचूर्ण्यतत्रक्षिपेत्॥
भागार्द्धजयपालबीजममृतंतत्तुल्यमेकीकृतं।
गुंजात्र्यूषणसिंधुचित्रकयुतान्सर्वान्ज्वरान्नाशयेत् ॥ शूलंसंग्रहणीगदंसजठरंदध्यन्नसंसेविनां। तापेसेचनकारिणांगदवतांसूतस्यचिंतामणे ॥ अयमेवरसेदेयोमृतकल्पेगदातुरे।

अर्थ–पारा १ तोला, गंधक १ तोला, अभ्रक १ तोला, विष ६ मासे, जमालगोटा ४ मासे, इन सबको एकत्रकर नींबूके रसमें घोटे पीछे गोला बनाकर उसके ओरपास पानोंको लपेटे, पीछे कपरमिट्टीकर कुक्कुटयंत्रमें फूंक देवे। स्वांग शीतल होनेपर खरलमें डाल पीसे पीछे इसमें आधा तोला जमालगोटा और आध तोला विष मिलाकर अदरकके रससे १ रत्तीकी गोली करे, एक गोली त्रिकुटा, सैंधा-

नोंन और चित्रककी छालके चूर्णके साथ लेवे तो सर्व ज्वर दूर होवे । तथा शूल, संग्रहणी, उदररोगमें देवे. दहीभातका भोजन करावे शीतल जलसे स्नान करावे, इस रसको मरे तुल्य मनुष्यको देवे.

अर्द्धनारीनाटेश्वररसः

जयपालत्वगंकोलहपत्रराजफलानिचः ।
तिलपर्ण्याश्वबीजानिसमभागानिचूर्णयेत् ॥
तुल्यार्द्धभागसंयुक्तंनस्यंसंज्ञाप्रबोधनं ।
सन्निपातंजयेच्चातिनिद्रातंद्राशिरोरुजां ॥
श्वासकासमलापानिकफमुग्रंचतत्क्षणात् ।
तृतीयोरसराजस्यदर्द्धनारीश्वरोरसः ॥

अर्थ—जमालगोटा, तज, अंकोलके पत्र, परवल, हुरहुर, अजमोद, ये समान लेवे. और चूर्णकर इसमें अर्द्ध भाग लीलाथोथा डाले, इसका नास लेनेसे संज्ञा हो आवे. सन्निपात, अत्यन्त निद्रा, तंद्रा, मस्तकपीडा, श्वास, खांसी, प्रलाप, उग्रकफ इनको तत्क्षण दूर करे.

लहरीतरंगोरसः

मृतायोभ्रार्कवंगानांशुद्धपारदगन्धयोः ।
पंचविंशतिभागास्युःपृथक्पंचविषस्यच ॥
नवसादरतःपंचभागाद्द्वादशटंकणात् ।
भावनोदरमुख्याश्चभावयेत्कन्दकाद्रवैः ॥
एकविंशतिवारंचतावदार्द्रकजैरसैः ।
सप्तधाधूर्त्ततैलेनतथाकन्यारसेनच ॥
काचकुप्यांचसंशोध्यवालुकायंत्रगंपचेत् ।
यामद्वात्रिंशकंयावत्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
गुंजाद्वयंत्रयंवापियथायोग्यंचभक्षयेत् ।
सन्निपातंनिहंत्याशुराजयक्ष्माणमुद्धतं ॥
रोगव्रह्मात्रलहरीतरंगोयंमहारसः ।

अर्थ—लोहभस्म, अभ्रकभस्म, ताम्रेकीभस्म, वंग, शुद्ध पारा, गंधक ये सब २९ भाग । विष ९ भाग, नौसादर ९ भाग, सुहागा १२ भाग, इन सबको ग्वार पट्ठेके रसकी २१ भावना देय, और अदरकके रसकी २१ भावना दे, और धतूरेके तेलकी ७ भावना, फिर ७ घीगुआरके रसकी, पीछे आतिशी शीशीमें भरके वालुका यंत्रमें ३२ प्रहर पचावे । स्वांग शीतल होनेपर निकाल लेवे इसकी मात्रा २ रत्तीकी है।यह रस सन्निपात, राजयक्ष्मा आदि घोर रोगोंको दूर करे यह लहरीतरंगरस है।

मृतसंजीवनीरसः

विषंटंकणजैपालहिंगुलानिविमर्दयेत् ।
क्रमवृद्धानियामैकंशुण्ठीवारिभिश्चशोपयेत् ॥
चित्रकव्योपसिन्धुत्थैःसमोदेयोद्विगुंजकः ।
तापंजयेत्सकर्पूरंचन्दनेनविलेपयेत् ॥
निदध्यात्कांस्यपात्रंचदाहयुक्तंचवीजयेत् ।
शाल्यन्नंतक्रसहितंभोजयेत्पलसम्मितं ॥
अवलोमैथुनंजह्यात्सन्निपातेमहाज्वरे ।
विषमेचत्रिदोपोत्थेद्विदोपेचैकदोपजे ॥
दाहपूर्वेशीतपूर्वेसंततादिज्वरेपुच ।
आमवातेमरुच्छूलेप्लीहगुल्मेजलोदरे ॥
आढयवातेग्निमांद्येचप्रयुंजीतरसोत्तमः ।
मृतसंजीवनःख्यातोनियुक्तोरससागरे ॥

अर्थ—विष, सुहागा, जमालगोटा, हींगलू, इनको क्रमसे बढती लेवे । सबको सोंठके जलसे एक प्रहर मर्दन करे, पीछे सुखाय दो रत्ती रस चित्रक, त्रिकुटा, सैंधानोन, इनके संग देय तो ज्वर दूर होय । इस रसको खिलाकर कपूर मिला चंदन लगावे, और इसके खानेसे जियादा गरमी मालूम हो तो कांसेके पात्रसे हाथ पैरोंको रगडे, पंखा करे, दही भात भोजन करावे, निर्बल होय तो मैथुन न करे । यह सन्निपात, विषम, त्रिदोष, द्विदोष, एक

दीपको, दाह पूर्वक, शीतपूर्वक, संतत आदि संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे। आमवात, वायशूल, तापतिल्ली, जलोदर, वातके रोग, मंदाग्नि इन रोगोंमें यह रस देय। यह मृतसंजीवनीरस रससागरग्रंथमें लिखा है।

राजचंडेश्वररसः

सूतंगन्धंविषंशुल्वंभावनाःस्युपृथक्पृथक्।
निर्गुंड्यार्द्रकजद्रावैःसप्तधाचपुनःपुनः॥
गुंजामात्रावटींकृत्वादद्यादार्द्रकवारिणा।
ज्वरांश्चसत्रिदोषांश्चनाशयेन्नात्रसंशयः॥
तैलाभ्यंगंजलस्नानंदधितक्रनिषेवणं।
गात्रेचचन्दनालेपस्ततस्तांबूलचर्वणं॥
इक्ष्वाम्लकदलीद्राक्षाखर्जूराणांचभक्षणम्।
राजचण्डेश्वरोनामसर्वदोषनिकृंतनः॥
इतिकश्यपसंहितायां।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, तांबेकीभस्म इन सबको खरलमें डाल निर्गुंडी, अदरक, इनके रसोंकी पृथक् २ सात २ भावना देवे। पीछे १ रत्तीकी गोली बनावे और अदरकके रसमें एक गोली देवे तो त्रिदोषज, नित्यज्वर, दूर होवे। तेललगाना, शीतलजलसे स्नान, दही छाछका भोजन, देहमें चन्दन लगाना, बीडा-चबाना, ईख, आम, केलाकी गहर, खजूर ये पथ्य हैं, यह राजचंडेश्वर रस सर्व रोग दूर करे।

अभिन्यासहररसः

सूतगन्धकलोहानिरौप्यंसम्मर्दयेत्त्र्यहं।
सूर्यावर्त्तश्चनिर्गुंडीतुलसीगिरिकर्णिका॥
अग्निपर्ण्यार्द्रकंवन्हिविजयाचजयासह।
काकमाचीरसैरासांपंचपित्तैश्चभावयेत्॥
अन्धमूषागतंपश्चाद्वालुकायंत्रगंदिनं।
आदायचूर्णितंखादेन्माषैकंचार्द्रकद्रवैः॥
निर्गुंडीदशमूलानांकषायंशोषणंपिवेत्।
त्रिदोषजंज्वरंहन्तिअभिन्यासहरोरसः॥
छागीदुग्धेनमुद्गैर्वापथ्यमत्रप्रयोजयेत्।

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, लोह भस्म, चांदीकी भस्म, इनको, हुरहुर, निर्गुंडी, तुलसी, कोयल, अग्निपर्णी, अदरक, चीता, भांग, अरनी, मकोय, इनके रसमें तीनदिन खरल करे। पीछे पांचपित्त (मोर, भैंसा, बकरी, सूअर, और मछली) की भावना देवे, तदनन्तर वालुकायंत्रमें अंधमूषामें धरके पचावे, एकदिनतक पीछे स्वांगशीतल होनेपर निकाल चूर्णकर एकमासे अदरकके रसमें खाय ऊपर निर्गुंडी, दशमूल, और त्रिकुटाका काढा पीवे यह अभिन्यासहररस त्रिदोष ज्वरको दूरकरे, बकरीका दूध और मूंगका यूष पथ्य है।

रहस्य

येरसाःपित्तसंयुक्ताःभोक्ताःसर्वत्रशंभुना।
जलसेकावगाहार्द्यैर्वलिनस्तेतुनान्यथा॥
रसजनितविदाहेशीततोयाभिषेको।
मलयजघनसारोलेपनंमन्दवातः॥
तरुणदधिसिताढ्यांनारिकेलीफलांभो।
मधुरशिशिरपानंशीतमन्यच्चशस्तं॥

अर्थ–जिन रसोंमें बकरी आदिके पित्तोंकी भावना कही है, वे शीतल जलका तर्डादेनेसे और स्नान करनेसे बली होते हैं, यह सर्वत्र जानलेना।

नष्टभैरवरसः

मृतसूतार्कतीक्ष्णानिटंकणंखर्परंसमं।
सन्योषमर्कदुग्धेनदिनंसंमर्दयेद्दृढं॥
अर्कक्षीरयुतंनस्यंसन्निपातहरंपरं।

अर्थ–चन्द्रोदय, तांबेकी भस्म, लोह भस्म, सुहागा, खपरिया, सोंठ, मिरच, पीपल, इन सबको बराबरले आकके दूधमें एक दिन

खरलकर नाश लेवे तो सन्निपात दूर होवे ।

भैरवांजनरसः

सूततीक्ष्णकणागन्धमेकांशंजयपालकं ।
सर्वैस्त्रिगुणितंजम्भवारिपिष्टंदिनाष्टकम् ॥
नेत्रांजनेनहंत्याशुसर्वोपद्रवयुक्ज्वरं ।

अर्थ–शुद्धपारा, लोहभस्म, पीपल, गंधक १ भाग, जमालगोटा ३ भाग, सबको जंबीरीके रसमें आठदिन खरलकर नेत्रोंमें आंजनेसे सर्वोपद्रवसंयुक्त ज्वर दूर होय ।

मोहांधसूर्यनस्यं.

गन्धेशौलसुनांभोभिर्मर्दयेद्याममात्रकं ।
तस्योदकेनसंयुक्तंनस्यंतत्प्रतिबोधकृत् ॥
मरिचेनसमायुक्तंहन्तितन्द्रामलापकान् ॥

अर्थ–गंधक पारेको एक प्रहर लहसनके रसमें खरल करे, पीछे लहसनके जलसे नाश लेय तो संज्ञा होय । अथवा मिरच मिलाकर नाश लेय तो तन्द्रा और प्रलाप दूर होय ।

रसचूडामणिः

सूतभस्मंविषंताम्रंजयपालंसुगन्धकम् ।
हेमतैलेनसंमर्घ्यततोलघुपुटंददेत् ॥
भावयेत्कनकद्रावैःरजामहिषमत्स्यजैः ॥
पित्तैर्पृथक्सप्तमितंविषधूमेनशोषयेत् ।
सप्तवारंत्रिवारंवापश्चाद्दार्द्रेणभावयेत् ॥
रसचूडामणिःसिद्धःसाक्षात्श्रीभैरवंमहः ।
ततोस्यराजिकांयुंज्यादर्द्धंजार्द्धंचार्द्रनिम्बुयुक् ॥
महाघोरेसन्निपातेनवेवाप्यनवेज्वरे ।
जलावगाहनंकुर्यात्सेचनंव्यजनानिलम् ॥
तत्क्षणान्मंगलस्नानंकुसुमंचन्द्रचन्दनं ।
पथ्यंयथेप्सितंखादेत्खादेद्द्राक्षेक्षुदाडिमं ॥
सितांसमूलसफलंकांजिकंस्नानमेववा ।
शूलेगुल्मेग्निमांद्यादौग्रहण्युदरपाप्मसु ॥
वातेसर्वांगकैकांगगतेवाप्यानिलेतथा ।
प्रसूतिवातेसामेवास्त्वानुपानैःप्रयोजयेत् ॥
रक्तदोषंविनाचैनंयोजयेद्वर्जयेदिह ।
तैलाम्लराजिकामीनक्रोधशोकाध्वचंक्रमम् ।
बिल्वारनालमुशलीफलवृन्ताकमैथुनं ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, विष, तांबेकी भस्म, गंधक, सबको धतूरेके तेलमें घोट लघुपुटमें फूंक देवे, पीछे धतूरेके रसकी भावना देवे. और बकरी, भैंसा, मछली, इनके पित्तोंकी सात २ भावना पृथक् २ देवे तथा विषके धुँएसे सात वार अथवा तीन वार सुखावे पीछे अदरकके रसकी भावना देवे तो यह चूडामणिरस सिद्धि होय यह श्रीभैरवका साक्षात् तेजरूप है । इसमेंसे एक राई अथवा आध रत्ती अथवा चौथाई रत्ती नींबूके रसके साथ देय तो घोर सन्निपात, नवीन ज्वर दूर होवे । इसका खानेवाला जलसे स्नान करे, और शीतल जलका मस्तकपर तर्डा दिलावे, पंखा करावे, तत्क्षण मंगल स्नान, पुष्पोंकी माला आदि धारण करना और कपूर मिला चन्दन लगाना हित है । दाख (अंगूर) पौंडागन्नेकारस, वलायती-अनार, मिश्री, कंद, फल, इत्यादि यथेष्ट पथ्य भोजन करे, कांजीसे स्नान इत्यादि कर्म करै तौ शूल, गोला, मंदाग्नि, संग्रहणी, उदररोग, सर्वांग अथवा एकांग वादके रोग, प्रसूतके रोग, आमवात, इन रोगोंमें अनुपानके साथ देवे । रुधिरके रोगोंको छोडके सर्व रोगोंमें देवे इसका खानेवाला इन वस्तुओंको छोड देवे-तेल, खटाई, राई, मछली, क्रोध, शोक, रास्ताचलना, बेल, कांजी, मूशलीफल, बेंगन, और मैथुन करना ।

द्वितीयचिंतामणिः

रसंगन्धंमृतंशुल्वंमृतमभ्रंफलत्रिकं ।

त्र्यूषणंजयपालंचसमंखल्वेविमर्द्दयेत् ॥
द्रोणपुष्पीरसैर्भाव्यंशुष्कंतद्वस्त्रगालितं ।
चिन्तामणिरसोह्येषस्त्वजीर्णानांमशस्यते ॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिसर्वशूलहरःखलु ।
गुंजैकंवाद्विगुंजम्वा आमरोगहरंपरं ॥

अर्थ–पारा, गंधक, तांवेकी भस्म, अभ्रक की भस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, जमालगोटा, सब बरावर लेवे, और सबको खरलमें डाल गोमाके रसमें खरल करे । पीछे सुखाय कपडछन कर लेवे । यह चिंतामणिरस अजीर्णरोगमें हित है । आठ प्रकारके ज्वर और सर्व शूलों को दूर करे, एक वा दो रत्ती खाय तो आमवातको नष्ट करे ।

मृतोत्थापनकोरसः

विषंचदरदंतुल्यंमर्द्दयेद्वासरद्वयम् ।
अम्लवेतसजंवीरंचांगेरीणांरसेनच ॥
निर्गुंडीहस्तिशुंड्याश्चएवंधर्मेविपाचयेत् ।
चित्रकस्यकषायेणद्वियामंमर्द्दयेत्ततः ॥
माषमात्रमदातव्योहिंगुव्योषार्द्रकद्रवैः ।
किंचित्कर्पूरसंयुक्तोमृतोत्थापनकोरसः ॥
पीडितःसन्निपातेनमृतोयातियमालयम् ।
मत्येतितत्क्षणादेवरसस्यास्यप्रभावतः ॥

अर्थ–विष, हींगलू, दोनों वरावर लेय । दो दिन घोटे, पीछे अम्लवेत, जंभीरी, चूका, निर्गुंडी, हथशुंडी, इनके रसमें धूपमें खरल करे । चित्रकके काढेसे दोप्रहर खरल करे । इसमेंसे एक मासे रस हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, और थोडा कपूर मिलाकर अदरकके रससे देय, तो यह मृतोत्थापन रस सन्निपातसे पीडित मरकर यमराजके घरभी गया होवहभी इस रसके प्रभावसे तत्क्षण उलट आवे ।

कनकसुन्दररसः

कनकस्याष्टशाणास्युःसूतोद्वादशभिर्मतः ।
गंधोपिद्वादशमोक्तस्ताम्रंशाणद्वयोन्मितं ॥
अभ्रकंस्याच्चतुःशाणंमाक्षिकंचद्विशाणकं ।
वंगोद्विशाणःसौवीरंत्रिषाणंलोहमष्टकम् ॥
विषंत्रिषाणकंकुर्य्याल्लांगलीपलसंमिता ।
मर्द्दयेद्दिनमेकन्तुरसैरम्लफलोद्भवैः ॥
दद्यान्मृदुपुटंवन्हौततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ।
माषमात्रोरसोदेयःसन्निपातेसुदारुणे ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवरसोनस्यरसेनच ।
किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगंदरं ॥
ज्वरंगरमजीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ।

अर्थ–धतूरेके बीज आठशाण, शुद्धपारा १२ शाण, शुद्ध गंधक १२ शाण, तांवेकी भस्म २ शाण, अभ्रक ४ शाण, सोनामक्खीकी भस्म २ शाण, वंगभस्म २ शाण, कालासुर्मा ३ शाण, अष्टलोह (सोना, चांदी, रांगा तांवा, सीसा, कांसा, जस्ता, पीतल) की भस्म २ शाण, सिंगियाविष ३ शाण, कलियारी १ पल, इन सबको जंभीरीनीवू आदि खट्टे फलोंके रसमें घोटे एक दिन तक, पश्चात् मृदुपुट देय, पीछे निकाल कर चूर्ण कर डाले, १ मासे रस अदरकके रसके साथ देवे अथवा लहसनके रससे देवे तो घोर सन्निपात दूर होवे, किलाससे आदिले सर्व प्रकारके कुष्ठ, भगंदर, ज्वर, विष, अजीर्ण आदि सब रोग दूर होवें ।

वडवाख्यरसः

पटुनापुरयेत्स्थालीतन्मध्येपटुमूषिकां ।
तन्मध्येरामठींमूषांतन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥
विषंनिघृष्यसूतांशंवारिणालोड्यसप्तभिः ।
कृतेत्रिभिःसंगुणितेतेनचैवंदहेच्छनैः ॥
वन्हिमज्वालयेचुल्ल्यांहठाद्यामचतुष्टयं ।

तद्भस्मतिलमात्रन्तुदद्यात्सर्वेषुपाप्मसु ॥
ग्रहण्यांजठरेशूलेमन्दाग्नौपवनामये ।
युक्तमेतान्निहन्त्येवंकुर्य्यात्वहुतरंक्षुधां ॥
तापेशीतक्रियांकुर्यात्वाडवाख्येरसोत्तमे ।

अर्थ—एक हांडीमें नोनभरे उसके बीच नोनका मूप बनाकर रक्खे उसमें हींगका मूप धरे, उस हींगकी मूपमें पारा भरे, फिर पारेके समान विषका चूर्णकर उसको जलमें सान २१ वार मूप पर लेप करे, हांडीके नीचे अग्निजलावे, क्रमसे मंद मध्य तेज आंच देवे, चारप्रहर हठाग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब उतार लेवें, इसमेंसे एक तिलके प्रमाण सर्व रोगोंमें देवेतो संग्रहणी, उदर, शूल, मंदाग्नि, वादीके रोग, ये सब रोग दूर होवें. भूंख बढावे, यदि इसके खानेसे गरमी मालूम हो तो शीतल क्रिया करे.

सूचिकाभरण.

विषंरसंकलैकांशंकाचलिप्तासरावकं ।
रुध्वाचूल्लांमन्दवन्हौपचेद्यामद्वयंतथा ॥
स्वयंशीतेचगृह्णीयादुपरिस्थंसरावकात् ।
वायुवर्ज्यंक्षिपेत्कुप्यांसन्निपातेऽहिदष्टके ॥
सूच्याग्रेचमदातव्यंछन्नंजाग्रतिमानवः ।
गुणंतुपूर्ववत् ॥

अर्थ—पारेका सोलहवां भाग विष लेवे, पीछे सरावमें कांचका लेपकर विष और पारा भरे, सरावका मुख बंदकर चूल्हेपर चढावे, मंदाग्निसे दो प्रहर पचावे, जब स्वांगशीतल होजाय तब ऊपरके सरावमें लगे पारेको धीरे से निकाल लेवे। पवन रहित स्थानमें इसे शीशीमें भर देवे सन्निपातमें और सर्पके काटेमें एक सरसोंके समान अदरक वा पानके रसके साथ देवे तो मनुष्यका मोह दूर होवे कोई विष शब्दसे संखसार लेते हैं।

सूचिकाभरणरसः

विषंपलमितंसूतःशाणिकश्चूर्णयेद्द्वयम् ।
तच्चूर्णंसम्पुटेकृत्वाकाचलिप्तसरावयोः ॥
मुद्रांकृत्वाचसंशोष्यततश्चूल्ह्यांनिवेशयेत् ।
वन्हिंशनैःशनैःकुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥
ततःउद्घाटयतन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात् ।
संलग्नयोभवेद्धूमस्तंगृन्हीयाच्छनैःशनैः ॥
वायुःस्पर्शोयथानस्यात्तथाकूप्यांनिवेशयेत् ।
यावच्छूच्यामुखेलग्नंकूप्यान्नियातिभेषजं ॥
तावन्मात्रोरसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातके ।
क्षुरेणप्रहृतेमूर्द्धितत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥
रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोपिहिजीवति ।
तथैवसर्पदष्टस्तुमृतावस्थोहिजीवति ॥
यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदापयेत् ।

अर्थ—शुद्ध सिंगिया विष १ पल, शुद्ध पारा २ शाण, दोनोंका चूर्णकर काचलिप्त सरावमें भरे, पीछे उस सरावका मुख बंदकर मुद्रा करे, धूपमें सुखाय चूल्हेपर चढावे, नीचे धीरे २ अग्नि देवे। दोप्रहर पीछे स्वांग शीतल होने पर उतार लेय, सावधानीसे मुद्राको दूर करे, ऊपरकी सरावमें लगे पारेके धुंएको धीरेसे खुरच लेवे, जिससे हवा न लगे ऐसे यत्नसे भस्मको शीशीमें भर देवे, सन्निपातवालेको जितना सुईके मुखपर लगे उतना लेकर प्रथम छुरीसे पछना लगा कर उसमें भर देवे, और उँगलीसे रगड देवे. इस भस्मका रुधिरमें मेल होतेही मूर्च्छा जाती रहे: इसी प्रकार सर्पका काटा मुर्देके सदृशभी जीवे यदि रोगीको गरमी मालूम हो तो मधुर वस्तु खिलावे.

सूचिकाभरणरसः

खंडीकृत्यविषंकृष्णंसार्कदुग्धेल्पभांडके ।

सकांजिकेसगरलेद्द्याच्चूल्ल्यांविनिःक्षिपेत्॥
सप्ताहंततउधृत्यश्लक्ष्णंसंचूर्ण्ययत्नतः।
सूचिकाभरणोनामरसोगुप्ततमोभवेत्॥
संज्ञानाशेविचेष्टस्यवल्लःकांजिकपेषितः।
ब्रह्मरंध्रेप्रयोक्तव्यःसाखास्वतिहिमोदये॥

अर्थ–काले संखियाके टूक-आकके दूधमें भिगोय छोटे पात्रमें रख देवे, पीछे कांजी और सर्पके जहरमें डालकर चूल्हेपर चढाय अग्नि देवे, सात दिन पर्य्यन्त पीछे उतारके सुखावे। और उसका चूर्णकर रख छोडे यह सूचिकाभरण रस अति गुप्त है। संज्ञानाशमें और विचेष्टामें ३ रत्ती रस कांजीमें पीस मस्तक चीरके लगावे, तथा हाथ पैर आदिमें चीरा देकर लगावे तो अतिशीत दूर होय।

मंथानभैरवरसः

शुद्धंसूतंतथागन्धंलोहंताम्रंचसीसकं।
मरिचंपिप्पलीविश्वंसमभागानिचूर्णयेत्॥
अर्द्धभागंविषंदद्यान्मर्दयेद्वासरद्वयम्॥
शृंगवेरानुपानेनदद्याद्गुंजाद्वयोन्मितं।
नवज्वरेमहाघोरेसन्निपातेसुदारुणे॥
शीतज्वरेदाहपूर्वेगुल्मशूलेत्रिदोषजे
वांच्छितंभोजनंदद्यात्कुर्य्याच्चन्दनलेपनम्॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, लोहभस्म, सीसेकीभस्म, मिरच, पीपल, सोंठ, ये सब बराबर लेवे। और चूर्णकर इसमें पारेसे आधा विष डाले पीछे दोदिन खरल करे। अदरकके रससे दोरत्ती रोगीको देवे तो नवीन (तरुण) ज्वर, घोर सन्निपात, शीतज्वर, दाहज्वर, गोला, सन्निपातका शूल ये सब दूर होवे। इसके ऊपर वांछित भोजन करावे और चंदनका लेप करे।

पंचवक्त्ररसः

रसोगन्धकटंकणःशोषणोदंफणीपिप्पली
त्र्यंपधत्तूरपिष्टः। जयेत्सन्निपातंद्विगुंजोऽ
नुपानंभवेदर्कमूलांबुसव्योषचूर्णम्॥

अर्थ–पारा, गंधक, सुहागा, मिरच, पीपल, सीसेकीभस्म, इन सबको धतूरेके रसमें पीसे दोरत्ती खानेसे सन्निपात दूर होवे। इस रसके ऊपर आककी जड और त्रिकुटाका काढा पीवे।

रसराजेन्द्रः

सूतस्यशुद्धस्यपलंपलंताम्रमयोरजः।
अभ्रंनागंपलंवंगंपलंगंधकतालकं॥ १॥
पलंशुद्धविषंचूर्णंसर्वमेकत्रकारयेत्।
मर्दयेत्काकमाच्याश्चतत्रसाररसेनचः॥ २॥
मत्स्यवाराहमायूरछागमाहिषपित्तकैः।
मर्दयेत्भिन्नभिन्नंचत्रिकटोरम्बुभिस्तथा॥ ३
आर्द्रकस्वरसैःपश्चात्शतवारान्मुहुर्मुहुः।
सिद्धोयंरसराजेन्द्रोधन्वंतरिप्रकाशितः॥४॥
गुंजामात्रंरसंदद्यात्सुरसारससंयुतं।
मेघधारामवाहेणधारितंवारिमस्तके॥ ५॥
अनिवारोयदादाहस्तदादेयाचशर्करा।
भोजनंदधिसंयुक्तंवारमेकंतुदापयेत्॥ ६॥
ईश्वरेणहतःकामःकेशवेनचदानवाः।
पावकेनहतंशीतंसन्निपातेरसस्तथा॥ ७॥

अर्थ–शुद्धपारा १ पल, तांबेकीभस्म १ पल तथा लोहेकीभस्म १ पल, अभ्रक १ पल, सीसा १ पल, वंग १ पल, गंधक, हरिताल १ पल, शुद्ध विषका चूर्ण १ पल, सबको एकत्रकर मकोयके रसमें घोटे। पीछे खैरसारसे घोटकर मछली, सूअर, मोर, बकरी, और भैंसा इनके पित्तोंसे पृथक् २ मर्दन करे, पीछे त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) के काढेसे खरल करे फिर अदरकके रसकी १०० भावना देय, तो

यह धन्वंतरि प्रकाशित रसराजेन्द्ररस सिद्धि होवे। इस रसको १ रत्ती तुलसीके रसके साथ खानेको देवे और जब गरमी होवे तब मस्तक पर जलका तर्डा देवे यदि जलधारा डालनेसेभी दाह न जावे तो मिश्रीका शरबत पिलावे और दही खानेको देवे, तो जैसे श्रीशिवजीने कामको भस्म किया, और श्रीविष्णुने जैसे दैत्योंको मारा, और जैसे अग्निसे शीतनष्ट होता है. इसी प्रकार इस रसराजेन्द्रके सेवनसे सन्निपात दूर होता है।

स्वेदशैत्यारिरसः

ताम्रशुंठ्यर्कमूलानिद्विनिष्कानि पृथक्पृथक्। ऐक्यतःपंचलवणात्पलंपिष्ट्वापुटंददेत् ॥ गन्धेशशंखभस्मानिवेदनिष्कमितानिच। देवदालीरसैःपिष्ट्वात्रिदिनंकेकिपित्तकः ॥ स्वेदशैत्यापनुत्यर्थंवल्लमात्रंप्रयोजयेत्। दध्नासंमर्दयेत्पात्रेजलयोगंसमाचरेत् ॥ पथ्यंघृतंसिन्धुमुद्गाइक्षुखर्जूरगोस्तनी ॥

अर्थ–तांबा, सोंठ, आककी जड प्रत्येक पृथक् २ दो दो तोले लेवे। और पांचोंनोन ८ तोला, सबको पीस एकत्रकर पुटपाककी रीतिसे पुटपाक करे। पीछे इसमें गंधक ४ तोला, पारा ४ तोला, शंखभस्म ४ तोला, मिलाय देवदालीके रस और मोरके पित्तेसे तीनदिन खरल करे, तीनरत्तीके प्रमाण गोली बनावे। शीत पसीना दूर करनेको एक गोली देवे। इस गोलीको दहीमें पीस कर देवे, जल देना वर्जित है। और इसकी गरमी होवे तब मस्तकपर जलका तर्डा दिलाना चाहिये। और पथ्यमें घृत, सैंधानोंन, मूंग, ईख, छुहारा और मुनक्का देवे।

द्वितीयपंचवक्त्ररसः

गन्धेशटंकमरिचंविषंधत्तूरजैर्द्रवैः। दिनंविमर्दितंशुष्कंपंचवक्त्रोभवेद्रसः ॥ द्विगुंजमार्द्रनीरेणत्रिदोषज्वरहृत्परम्।

अर्थ–गंधक, पारा, सुहागा, कालीमिरच और विष ये सब समान लेवे। सबको धत्तूरेके रससे एकदिन खरलकर सुखा लेवे, तो यह पंचवक्त्ररस बने दो रत्ती अदरकके रससे देवेतो सन्निपात दूरहोवे।

सन्निपातसूर्य्योरसः

हिंगुलंगन्धकंताम्रंमरिचंपिप्पलीविषं। शुंठीकनकबीजंचश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥ विजयापत्रतोयेनत्रिदिनंभावयेत्सुधीः। द्विगुंजंपर्णखंडेनअर्कक्वाथंपिबेदनु ॥ निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान्। वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंचविशेषतः।

अर्थ–हिंगलू, गंधक, तांबा, काली मिरच, पीपल, विष, सोंठ, और धत्तूरेके बीज सबको बराबर ले चूर्णकर भांगके पत्तोंके रसकी तीन दिन भावना देवे। पीछे दो रती पानके टुकडेमें देवे, इसके ऊपर आककी जडका क्वाथ देवे तो सर्व सन्निपात जनित दारुणपीडा तथा, वातक पैतिक और कफज इन विकारोंको दूर करे।

चिंतामणिरसः

रसविषगन्धकटंकणताम्रयवक्षारकंव्योषम्। तालफलत्रयकंचक्षौद्रंदत्वाचशतवारान् ॥ सम्मर्द्यरक्तिकमितावटिकाःकुर्य्याद्द्विपक्वमाद्र। शुंठीपिष्टेनसममेकाद्वेवाथवातिस्रः ॥ संभाश्यनारिकेलीजलमनुपेयंप्रयुंजीत। भेदानन्तरमेवप्रक्षालितभक्ततत्रमुपयोज्यम् ॥ शोपात्सैंधवजीरंतक्रंभक्तंप्रयोक्तव्यम्। प्रशमयतिसन्निपातज्वरंतथाजीर्णमिषमंच ॥ स्त्री

ह्रानंचाध्मानंकासंश्वासंचवन्हिमांद्यंच । चिंतामणीरसोऽयंकिलनियतंभैरवेणनिर्दिष्टः ॥

अर्थ-पारा, विष, गंधक, सुहागा, तांबा, जवाखार, (सोंठ मिरच, पीपल) तालफल, हरड, बहेडा, आंवला, इन सबको बराबर लेवे, सबको कूट पीस शहतमें १०० बार खरल करे, पीछे एक रत्तीके प्रमाण गोली बनावे, पीछे एक वा दो वा तीन गोली सोंठकें चूर्णके साथ शहत मिलाकर खाय, ऊपर नारियलका जल पीवे । जब दस्त होवे तब धुले हुए चांवलोंका भात दहींकेसाथ भोजन करावे । तथा सैंधानोंन, जीरा, छाछ मिले भातका भोजन करावे तो सन्निपातज्वर, जीर्णज्वर, विषमज्वर, तापतिल्ली, अफरा, खांसी, स्वास, और मंदाग्निको यह चिन्तामणिरस दूर करता है । यह भैरवने कहा है ।

घोरनृसिंहोरसः

भागैकंमृतताम्रस्यद्विभागंमृतलोहकम् । त्रिभागंमृतवंगंचचतुर्भागंमृताभ्रकम् ॥
माक्षिकंरसगन्धौचतथाशुद्धामनःशिला । चत्वार्येतानिताम्रस्यप्रत्येकंतुल्यमेवच ॥
गरलंचाभ्रतुल्यंस्यात्त्रिकटुश्चाभ्रतुल्यकः । एतत्सर्वंसमंदेयंविषमाख्यंतथैवच ॥
एतत्सर्वस्यद्रव्यस्यद्विगुणंकालकूटकम् । मत्स्यमाहिषमायूरघृष्टिपित्तैर्विभावयेत् ॥
चित्रकस्यद्रवेणैवप्रत्येकंयाममात्रकं । सर्षपाभावटीकार्य्याशोषयेदातपेततः ॥
दापयेद्वटिकामेकांपयःपेटीरसेनच । त्रयोदशेसन्निपातेविशूच्यामतिसारके ॥
त्रिदोषजेतथाकासेद्रापयेत्कुशलोभिषक् । पयःपेटीशतंदद्यात्भोजनंदधिभक्तकं ॥
अयंघोरनृसिंहाख्यंरसानांमुत्तमोरसः ।

अर्थ-तांबा एक भाग, लोह १ भाग, वंग ३ भाग, अभ्रक ४ भाग, स्वर्णमाक्षिक १ भाग, पारा १, गंधक १ भाग, मनसिल १ भाग, कालेसर्पकाविष ४ भाग, त्रिकुटा ४ भाग, कुचला २२ भाग, काष्टविष ८८ भाग, ये सब द्रव्यले सबको कूट पीसकर रोहित मछली, भैंसा, मोर, और शूकर इनके पित्तोंसे खरल करे । इसीप्रकार चीतेके रससे खरल करे, एक २ वस्तूसे तीन २ प्रहर खरल करे, पीछे सरसोंके समान गोली बनाकर धूपमें सुखालेवे, पीछे नारियलके जलसे एक गोली रोगीको देवे तो १३ सन्निपात, विशूचिका, (हैजा) अतीसार, त्रिदोषकी खाँसी, दूर होवें । १०० नारियलका जल पिलावे, और दहां, भात भोजनको देवे यह घोर नृसिंहरस सर्व रसोंमें उत्तम है ।

प्रतापतपनोरसः

गन्धकंहिंगुलंतालंसूतकंलोहटंकणं । खर्परंसर्जिकाक्षारंमंजिष्ठंहिंगुलंसमं ॥
रसेनमर्दितंपिण्डंनिर्गुंडीहस्तिशुण्डयोः । अष्टयामंपचेत्कूप्यांनिरुध्यसिकताव्हये ॥
ततःसिद्धंसमादायरक्तिकामार्द्रकेनच । सन्निपातविनाशायप्रतापतपनोरसः ॥
दधिभक्तंतथादुग्धंछागमांसंचभोजयेत् ॥

अर्थ-गंधक, हिंगुल, हरिताल, पारा, लोहा, सुहागा, सज्जीखार, मजीठ, और हिंगुल ये सब बराबर लेवे । सबको निर्गुंडी, और हथशुंडीके रसमें खरल करे, पीछे वालुकायंत्रमें शीशी चढाय ८ प्रहर आंच देवे, जब सिद्धि-होजावे तब एक रत्ती अदरकके रसमें रोगीको देवे तो सन्निपातको यह प्रतापतपन रस दूर करे । इसके ऊपर दही, भात तथा बक-

रीका दूध और मांसका भोजन करावे ।

सन्निपातभैरवः

पारदंगन्धकंतालंवत्सनाभंत्रिभिःसमं ।
दारुमूपंचगरलंसर्वंचसमहिंगुलं ॥
मुद्गप्रमाणावटिकांकारयेत्कुशलोभिषक् ।
सन्निपातेवटीमेकामार्द्रद्रावैःप्रदापयेत् ॥
रसोमहाप्रभावोऽयंसन्निपातस्यभैरवः ।

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक १ भाग, हरताल १ भाग, विष ३ भाग, दारुविष १ भाग, काले सर्पका विष १ भाग, हिंगुल ८ भाग, इन सबको एकत्र मर्दन कर मूंगके समान गोली बनावे सन्निपात रोगमें एक गोली अदरकके रसमें देवे यह महा प्रभाववाला सन्निपातोंको भैरव स्वरूप है ।

द्वितीयसन्निपातभैरवः

रसंविषंगंधकंचहरितालंफलत्रयं ।
जयपालंत्रिवृत्स्वर्णताम्रसीसाभ्रलोहकम् ॥
अर्कक्षीरंलांगलीचस्वर्णमाक्षिकमेवच ।
समंकृत्वारसैनैषांत्रिंशद्वारंचमर्दयेत् ॥
अर्कश्वेतालम्बुपाचसूर्यावर्त्तश्चकारवी ।
काकजंघाशोणकश्चकुष्ठंव्योषविकंकतम् ॥
सूर्यमणिश्चंद्रकान्तेनिर्गुंडीशजटापिच ॥
धत्तूरंदन्तिपिप्पल्यादशाष्टांगमिदंशुभं ।
रसतुल्यंप्रदातव्यंदत्वातोयचतुर्गुणम् ॥
शिष्टैकगुणतोयेनभावनाविधिरिष्यते ।
भावनायांभावनायांशोषणंमुहुरिष्यते ॥
ततश्चवटिकांकृत्वाभैरवायवलिंददेत् ।
रसोऽयंश्रीसन्निपातभैरवोज्वरनाशनः ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्तंज्वरंहन्तिनसंशयः ॥
सन्निपातज्वरंहन्तिजीर्णंचविषमंतथा ।
एकाहिकंद्व्याहिकंचचातुर्थकमपिध्रुवम् ॥
ज्वरंचजलदोषोत्थंसर्वदोषसमाकुलं ।
भैरवस्यप्रसादेनजगदानंदकर्पटी ॥

अर्थ–पारा, विष, गंधक, हरिताल, त्रिफला, जमालगोटा, निसोथ, धत्तूरेके बीज, तांबा, सीसा अभरक, लोह, आकका दूध, कलियारीकी जड, सोनामक्खी, इन सब वस्तुओंको बराबर लेवे । सबको कूट पीस आगे लिखी औषधियोंकी ३० भावना देवे । सफेद आक, घीया, हुलहुल, कालाजीरा, काकजंघा, शोणक, कूट, त्रिकुटा, विकंकत, सूर्यमणि, चंद्रकांत, निर्गुंडी, रुद्रजटा, धतूरा, दंती, और पीपल इनके रस औषधियोंके समान लेवे । और औषधियोंसे चौगुना पानी डाले, सबका क्वाथ करे, जब चतुर्थांश रहे, तब उतार कर छान लेवे, इस रसकी भावना देवे । प्रत्येक भावनाको सुखाता जावे । पिछली भावना पर गोली बनावे । यह गोली श्रीभैरवको बलिदान देकर खावे तो यह सन्निपात भैरवरस सर्वोपद्रव संयुक्त ज्वरोंका नाश करे । सन्निपात ज्वर, विषमज्वर, जीर्णज्वर, एकाहिक, द्व्याहिक, चातुर्थिक तथा जलके विकारोंसे जो ज्वर प्रगट होवे सबको दूर करे श्रीभैरवकी कृपासे आनन्दकर्पटीने यह रस कहा है ।

संजीवनोरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंविमर्द्यरसप्रमाणानिभवंत्यमूनि । शिलानलव्योषविषाभ्रकाणिभृंगंत्रिवृं माक्षिकतन्दुलीयाः ॥ कुम्भीभमुंडीमृततालकश्चसताम्रशाकोयमरालपादः । कंकुष्टकंचेतिदिनत्रयंतदाद्याद्रीद्भुनासर्वमथोविमर्द्यः ॥ निवेश्यकूप्यांरसमत्रदेयो । जम्बीरनिर्गुण्डिजयाभिधानां ॥ नवप्रमाणानिरसःपलालिचांगेरिकायाःस्वरसःपलैकं । ततःसुवध्वासिकताख्ययंत्रेचतुर्दशाहानिपचेत्सुशीते ॥ त

द्रावयेदार्द्रकजेनसूतोमृताख्यसंजीवनइत्यपूर्वः । वल्लोस्यसर्वान्जयतिप्रयुक्तो गदान् सदार्द्रप्रवयुक्प्रभावान् । प्राणेशवत्सर्वमिह प्रयोज्यंत्रयंत्रिदोषेसविशेषवीर्यः ॥

अर्थ–पारेसे गंधक दूनी लेवे, और मनसिल, चीता, त्रिकुटा, विष, अभ्रक, भांग, संखिया, सोनामक्खी, चौलाई, जमालगोटा, हथशुंडी, हरितालभस्म, ताम्रभस्म, हंसपदी, कंकुष्ठ ये सब पारेके समान लेवे, और सबको तीन दिन अदरकके रसमें घोटे। पीछे सुखाकर सीसीमें भरे, और उसमें जंबीरी, निगुंडी, अरनी, इसका रस ९ पल लेवे। और चूकाका रस एक पल लेके उसी शीशीमें भरे फिर वालुकायंत्रमें १४ दिन पचावे, स्वांग शीतल होनेपर शीशीसे निकाल अदरकके रससे घोटे, तो यह मृतसंजीवनरस बने, तीनरत्ती रस संपूर्णरोगको दूरकरे। और प्राणेश्वररसके सदृश पथ्य देवे सन्निपातमें बहुतकाम देता है।

अंजनवटीः

पारदंटंकमेकन्तुद्विटंकंगन्धकंतथा ।
मरिचंनवटंकंस्यात्सर्वंवैकज्जलीकृतं ॥
कारवेल्लिरसैर्मर्द्यमेकविंशतिसंख्यकम् ।
गुंजामात्रांवटींकुर्यात्तयाह्यंजनमाचरेत् ॥
सर्वान्ज्वरानिहंत्याशुसत्यंशंकरभाषितम् ।

अर्थ–पाराटंक १, गंधकटंक २, मिरच टंक ९, सबको पीस कज्जली करै। पीछे उसमें करेलेका रस डालके २१ वार घोटे। पीछे एक रत्तीके प्रमाण गोली बनावे, इस गोलीको जलमें घिसके अंजन करे तो सर्व प्रकारके ज्वर नाश होवें। यह श्रीशिवजीका कहा प्रयोग सत्य है। किसी जगह "कदलीपत्रतोयेन" ऐसा पाठ है, अर्थात् केलेके पत्तेके रसके २१ पुट देके गोली करे।

वाडवरसः

पटुनापूरयेत्स्थालींतन्मध्येपटुमूषिकां ।
तन्मध्येरामठीमूषांतन्मध्येपारदंक्षिपेत् ॥
विषंविघृस्यसूतांशंवारिणालोडयत्सप्तभिः ।
कृतैस्त्रिभिःसंगुणितेतेनचैवदहेच्छनैः ॥
वन्हिप्रज्ज्वालयेच्चूल्यांहठाग्रामंचतुष्टयं ।
तद्रसमतिलमात्रंतुदद्यात्सर्वेषुपाप्सु ॥
ग्रहण्यांजठरेशूलेमंदाग्नौपरिणामजे ।
युक्तमेतन्निहंत्याशुकुर्याद्वहुतरांक्षुधाम् ॥
तापेशीतक्रियांकुर्यात्वाडवाख्योमहारसः॥

अर्थ–एक हांडीमें सैंधानीमक पीसकर भरे उसके बीचमें नोनकी मूष धरे, नोनकी मूषके बीचमें हींगकी मूंप धरे, उस हींगकी मूषमें पारा भरे, पारेके समान विष लेवे उसको इक्कीस वार घिसकर उसी पारेके साथ मिला देवे। पीछे चूल्हे पर चढाकर चारप्रहर अग्नि देवे, इस रसकी भस्म तिल प्रमाण सब रोगोंमें देवे संग्रहणी, उदररोग, शूल, मन्दाग्नि, परिणामशूल, इन सब रोगोंको दूर करे। और जठराग्निको प्रवल करे, यदि गरमी होवे तो शीतल क्रिया करनी चाहिये।

मृत्युंजयरसः

सूतंगन्धकटंकणंशुभविषंधत्तूरवीजंकटुं ।
नीत्वाभागयथोत्तरंद्विगुणितंचोन्मत्तमूलांबुना ॥ कुर्यान्माषवटींसुखातिसुखदांसर्वान्ज्वरान्नाशये देशश्रीशिवशासनात्प्रजनितःसूतंचमृत्युंजयः ॥ नारिकेरसितायुक्तं वातपित्तज्वरंजयेत् । मधुनाश्लेष्मपित्तोत्थं ज्वरंसंनाशयेत्ध्रुवम् ॥ सन्निपातज्वरंघोरं नाशयेत्दार्द्रनीरतः ।

अर्थ–पारा १ मासे, गंधक २ मासे,

सुहागा ४ मासे, विष ८ मासे, धतूरेके बीज १६ मासे सात रत्ती । अर्थात् सब मिलाकर ३२ मासे इन सबको धतूरेकी जडके रसमें खरल करके १ मासेके प्रमाण गोली बनावे । इसके सेवन करनेसे सर्व ज्वर नाश होवे, परम सुख दाता यह श्रीमहादेवजीने कहा मृत्युंजय पारद है, नारियलके जल और मिश्रीसे वातपित्तज्वर दूर होवें, सहतसे कफ पित्त-ज्वर दूर होवें । अदरकके रससे सन्निपात-ज्वरको दूर करे ।

श्रीसन्निपातमृत्युंजयोरसः

विषंसूतकगन्धौचपित्तंमत्स्यवराहयोः ।
आजमायूरपित्तेचमहिष्याश्चापियोजयेत् ॥
हरितालंचसव्योषंवानरीबीजसंयुतं ।
अपामार्गंचित्रमूलंजयपालंचकल्कयेत् ॥
एतत्सर्वसमांशेनअजामूत्रेणमर्दयेत् ।
मापेनसदृशीकार्यावटिकासद्भिषक्वरैः ॥
महाज्वरेमहाशीतेमहाशीतज्वरेपिच ।
मज्जेगतेसन्निपातेविषूच्यांविषमज्वरे ॥
असाध्येमानवेयुंज्यादेकाहाज्वरनाशिनी ।
जलोदरेशैथिलांगेनासास्रावेचपीनसे ॥
अजीर्णेमूर्च्छनाभावेश्लेष्मभावेऽतिदुर्ज्जये ।
शोथकामलपांड्वादिसर्वरोगापहारकः ॥
सन्निपातजयेद्धेतज्ज्ञानज्योतिप्रकाशितः ।
भृंगराजरसेनायंरसराजःप्रदीयते ॥
निर्वातेनिर्ज्जनेस्थानेबहुवस्त्रसमावृते ॥
प्रस्वेदःक्षणमात्रेणजायतेचिन्हमीदृशं ।
मूर्छितःपततेभूमौदह्यमानःपुनःपुनः ॥
एवंचिन्हंसमालोक्यवदेन्नरुज्यमारुते ।
पथ्यंयद्याचतेरोगीतद्दातव्यंप्रयत्नतः ॥
दध्योदनंशीतजलंदातव्यंतद्विचक्षणैः ।
एवंमहारसःश्रेष्ठःशम्भुनामेरितोभुवि ॥
कृपयासर्वभूतानांज्ञानज्योतिःप्रकाशितः ।

अर्थ—विष, पारा, गंधक, मछलीकापित्ता, सूअरकापित्ता, बकरीकापित्ता, मोरकापित्ता, भैंसेकापित्ता, हरिताल, त्रिकुटा, कौंचकेबीज, औंगाकीजड, चीतेकीजड, और जमालगोटा ये सर्व वस्तु समान लेवे । सबको शिलापर पीस बकरीके मूत्रमें खरल करे, उडदके प्रमाण गोली बनावे-घोरज्वरमें, घोर शीतमें, और महान शीतज्वरमें,मज्जागत ज्वरमें, सन्निपातमें, विशूचिकामें, विषमज्वरमें, असाध्य रोगीको यह गोली देवे तो एकदिनमें ज्वर दूर करे. जलोदर, शिथिलता, नाकटपकना, पीनस, अ-जीर्ण, मूर्च्छा, कफजन्य घोर उपद्रव, सूजन, कामला, पांडुरोग, आदि सर्व रोगोंको यह रस श्रीज्ञानज्योति शिवजीने प्रकाश किया है । भांगरेके रसमें इस रसको देवे और इसके खानेके बाद पवन रहित और मनुष्य रहित स्थानमें बहुत वस्त्र उढाकर सुला देवे । तो एकही क्षणमें पसीने आकर ये चिन्ह होते हैं। मूर्छित होकर पृथ्वीपर गिरना, देहमें बारंबार दाह होना, ऐसे चिन्ह वैद्य देखकर रोगीका रोगगया कहे, और रोगी जो पथ्य मांगे वही देवे ।दही, भात, शीतल जल दे यह महा-रस सर्व प्राणियोंकी दया विचार श्रीशिवजीने प्रकाश किया है ।

प्रभाकरः

रसेनगन्धंद्विगुणंकृशानुरसैर्विमर्द्यष्टदिनंसुय । में । रसाष्टभागंत्वमृतंचदद्याद्विपाचयेद्वन्हि रसेनकिंचित् ॥ पित्तश्चसंभावितएषदेयो त्रिदोषनीहारविनाशसूर्यः । अत्रभैरवरुधि रत्वर्णध्यायेत् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग,

एकत्र कर चीतेके रससे आठदिन खरलकरे धूपमें सुखाकर पारेका अष्टमांस सिंगियाविष डालकर चीतेके रसमें पकावे । पश्चात् मछली आदिके पित्तोंकी भावना देकर एक रत्तीकी गोली बनावे, यह रस सन्निपात रूप अंधकारके दूर करनेमें सूर्य्यके समान है, इस रसका सेवन कर्ता रोगी रुधिरवर्ण भैरवका ध्यान करे ।

कालाग्निभैरवोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमर्द्दयेद्गोक्षुरद्रवैः ।
भावितंचविशोष्याथचूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
चूर्णतुल्यंमृतंताम्रंताम्रादष्टांशकंविषं ।
हिंगुलंरसभागंचद्वौभागौकनकस्यच ॥
बाणभागात्रगोदन्तःनेत्रभागामनःशिला ।
टंकणंनेत्रभागंचऋतुभागंचखर्परम् ॥
ब्रह्मभागंचजैपालंनेत्रभागंहलाहलम् ।
माक्षिकंचाग्निभागंचलोहवंगैकभागकम् ॥
सर्वान्खल्वोदरेक्षिप्त्वाक्षीरेणार्कस्यमर्दयेत् ।
दशमूलकषायेणमर्दयेद्दिनमात्रकम् ॥
पंचमूलकषायेणतथैवचविमर्दयेत् ।
चणकाभावटींकृत्वाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥
सर्वंत्रिदोषजंहन्तिसन्निपातंसुदारुणम् ।
पूर्ववद्दापयेत्पथ्यंजलयोगंचकारयेत् ॥
पथ्यंशाल्योदनंदेयंदधिभक्तसमन्वितं ।
कालाग्निभैरवोनामरसोऽयंभूरिपूजितः ॥

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक २ भाग, दोनोंकी कजलीकर गोखरूके रसमें खरल करे, पीछे शुष्ककर चूर्णकरे, फिर चूर्णके बराबर मरा तांबा-तांबेका आठवां हिस्सा विष, हींगलू १ भाग, धतूरेके बीज २ भाग, गोदंती हरिताल २ भाग, मनसिल ३ भाग, सुहागा ३ भाग, खपरिया ६ भाग, जमालगोटा १ भाग, हलाहलविष ३ भाग, सोनामक्खी ३ भाग, लोह १ भाग, वंग १ भाग, सबको खरलमें पीस आकके दूधसे खरल करे । पीछे दशमूलके काढेसे एक दिन खरल करे, इसी प्रकार पंचमूलके काढेसे १ प्रहर खरल करे । पीछे इसकी चनेके बराबर गोली बनावे, बलाबल देखकर देनी चाहिये । यह सर्वसन्निपातोंको दूर करे । पहले रसोंके सदृश पथ्य देवे । जलका तर्डा मस्तक पर देवे । तथा दहीभातका भोजन करावे, यह कालाग्नि भैरवरस सत्पुरुषों करके माननीय है ।

त्रैलोक्यचिंतामणि.

रसभस्मत्रयोभागाःद्विभागंचभुजंगमं ।
कालकूटंचषड्भागंभागैकंतालकंतथा ॥
गोदन्तंगगनंतुत्थंशिलागन्धकटंकणं ।
जयपालोन्मत्तदन्तीकरवीरंचलांगली ॥
पलासमूलजैर्नीरैःसप्तधाभावितंदृढं ।
चित्रमूलकषायेणचार्द्रकस्यचवारिणा ॥
मत्स्यमाहिषमायूरछागवाराहडुण्डुभम् ।
प्रत्येकंदशधामर्द्यंशिलाखल्वेनसंक्षयात् ॥
धान्यद्वयांवटींकुर्यात्शुद्धवस्त्रेणधारयेत् ।
दातव्यंचानुपानेननारिकेलोदकेनच ॥
ताम्बूलंचततोदद्यात्भक्ष्यंशीतोपचारकं ।
तिलतैलेसदास्नानंघृतमत्स्यादिभोजनम् ॥
शीताम्लंदधिसंयुक्तंपुराणान्नंचभक्षयेत् ।

अर्थ–पारा ३ भाग, सर्पविष २ भाग, कालकूट विष ६ भाग, हरिताल १ भाग, गोदंती १ भाग, अभ्रक १ भाग, लीलाथोथा १ भाग, मनसिल १ भाग, गंधक १ भाग, सुहागा १ भाग, जमालगोटा १ भाग, धतूरेके बीज १ भाग, दंती १ भाग, कनेरकी जड १ भाग, कलियारीकीजड १ भाग, इन सब व-

स्तुओंमें ढाककी जडके काढेकी सात भावना देवे। चित्रकके काढेमें, अदरकके रसमें, रोहूमछलीकापित्ता, भैंसेकापित्ता, मोरकापित्ता, बकरीकापित्ता, वाराहकापित्ता, डुंडुभसर्पकापित्ता, प्रत्येकमें दश २ वार खरल करे. पीछे दो चांवलके अनुमान गोली बनावे। उनको सफेद स्वच्छ कपडेपर सुखालेवे। इस गोलीको नारियलके जलके साथ देवें और इसके ऊपर तांबूल खावे तथा सर्व शीतल वस्तु खावे। तिलके तेलका लगाना, सदैव स्नान करना, घृत मछलीका भोजन, तथा शीतल, खट्टे, दही, और पुराना अन्नखाना हित है।

रसेश्वरः

रसेनगन्धंद्विगुणंगृहीत्वातत्पादगन्धंरविताल्हेमं। भस्मीकृतंयोजितमर्दयेच्चादिनत्रयं वन्हिरसेनघर्मे। विषंचदत्वात्रिकलाप्रमाणमजादिपित्तैपरिभावयेच्च ॥ गुंजाद्वयंचास्य ददीतमात्रांकटुत्रयेणार्द्ररसैःप्रयुक्तं ॥ तैलेन चाभ्यक्तवपुश्चकुर्यात् स्नानंजलैनैवसुशीतलेन ॥ यावद्भवेदुःसहमस्यशीतं मूत्रंपुरीषंच शरीरकंपः ॥ पथ्येयदिच्छापरिजायतेऽस्य मरीचखण्डंदधिभक्तकंच ॥ अल्पंददीतार्द्रकमात्रशाकं दिनाष्टकंस्नानमिदंचपथ्यम् ॥

अर्थ–पारा ८ तोला, गंधक १६ तोला, तांबा २ तोला, हरिताल २ तोला, सोना २ तोला, इन सबकी भस्मको चीतेके रसमें तीन दिन खरल करे। पीछे इनका १६ वां भाग विष डाले, बकरी आदि पांचौ पित्तोंकी भावना देकर दो रत्तीके प्रमाण गोली बनावे। एक गोली अदरकके रसके साथ देवे तथा त्रिकुटाके काढेके साथ देवे। देहमें तेललगाना, शीतल जलसे स्नान करना, जब तक अत्यन्त शीत-मल मूत्रका उतरना-और देहमें कम्प होना न हो तब तक पूर्वोक्त कर्म करे, यदि रोगीकी भोजन करनेकी इच्छाहो तो काली मिरच मिला दही, और मिश्री भात खिलावे और थोडा २ अदरकका शाक देवे। और आठ दिन पर्य्यन्त शीतलजलसे स्नान कियाकरे।

वडवानलरसः

कान्तंचसूतंहरितालगन्धं समुद्रफेनंलवणानि पंच ॥ नीलांजनंतुत्थकमेवरूप्यं भस्मप्रवालानिवराटिकांश्च ॥ वैक्रांतशम्बूकसमुद्रशुक्ति सर्वाणिचैतानिसमानिकुर्य्यात् ॥ सूतं भवेद्द्वादशभागकंच स्नुह्यर्कदुग्धेनविमर्दयेच्च दिनत्रयंवन्हिरसैस्ततश्च निवेशयेत्ताम्रजसंपुटेतत् ॥ मृदाचसंलिप्यरसंपुटेतद्रसस्ततः स्याद्वडवानलाख्यः ॥ तत्पादभागेनविषं नियोज्य कृशानुतोयेनपचेत्क्षणंतत् ॥ वातप्रधानेचकफप्रधाने नियोजयेतन्नृपणचित्रयुक्तं ॥ दोषत्रयोत्थेपिचसन्निपाते वाताधिकत्वादिहसूतकोक्तः ॥

अर्थ–कांतलोह, पारा, हरिताल, गंधक, समुद्रफेन, पांचौनोन, नीलांजन, (सुरमा) नीलाथोथा, रूपा, मूंगाकी भस्म, कौडीकी भस्म, वैक्रांत (कांसुला) शंख और समुद्रकी सीपकी भस्म, ये सब भस्म समान लेवे. तथा पारा बारह भाग ले सबको खरलमें मर्दन कर थूहर, आक-इनके दूधसे तीन दिन खरल करे उसी प्रकार चीतेके रससे ३ दिन खरल करे, तांबेके संपुटमें बन्दकर उसपर कपरमिट्टी कर सुखावे, पीछे चूल्हेपर चढाकर अग्नि देवे. फिर चूल्हेसे उतार उस भस्मका चतुर्थांश विष डाले, और चीतेके रससे घोटकर फिर अग्नि देवे तो यह रस सिद्धि होवे वातप्रधान,

कफ प्रधान रोगोंमें त्रिकुटाका चूर्ण और चीतेके रससे देवे, सन्निपात तथा वाताधिक्य में यह वडवानल पारा कहा है ।

अर्कमूर्त्तीरसः

लोहाष्टकंमारितमर्कभागं सूतंद्विभागंद्विगुणंच गन्धं। विमर्दयेद्वन्हिरसेनतापेदिनत्रयंचात्रवि षंकलांशं ॥ निक्षिप्यपित्तैःपरिभावितोऽयंर सोऽर्कमूर्त्तिर्भवतित्रिदोषे। ताम्रस्यपात्रेतुदि नैकमात्रंनिम्बूरसेनापिचपित्तवर्गैः ॥ क्षुद्राग्रे कोत्थेनरसेनसूतःत्रिदोषदावानलएषसिद्धः गुंजात्रयंत्र्यूषणयुक्तमस्यदद्दीतचित्रार्द्ररसेन वापि ॥ नासापुटेचापिनियोजनीयागुंजा स्यशुंठीमरिचेनयुक्ता [यदिताम्रपात्रेजम्बी रादिरसैःपुनरपिभावयेत्तदात्रिदोषदावान लोभवति] ॥

अर्थ–अष्टलोह (सोना, चांदी, तांवा, सीसा, जस्ता, रांग, लोहा और पीतल) की भस्म बारह भाग लेवे, पारा दो भाग, गंधक ४ भाग, इन सबको धूपमें रखके तीन दिन चीतेके रससे खरल करे, पीछे सब औषधि- योंका सोलहवां भाग विष डाले, और बकरी आदिके पित्तोंकी भावना देवे । तो यह रस बने । यदि इस रसको ताँवेके पात्रमें रखके नीवूके रसकी तथा बकरी आदिके पित्तोंकी भावना देवे तथा कटेरी और अदरकके रसकी भावना देवे तो त्रिदोष दावानल कहाता है इसकी दो रत्तीकी मात्रा त्रिकुटाके चूर्ण और अदरक तथा चीतेके रसके साथ देवे । तथा नांस देवे, नांसमें एक रत्ती रस सोंठ, मिरच के साथ देवे तो सर्व सन्निपातोंको दूर करे,

त्रिदोष दावानल कालमेघः

तालेनवंगंशिलयाचनागंरसै सुवर्णरवितारप त्रं । गन्धेनलोहंदरदेनसर्वंपुटैर्मृतंयोजयतुल्य भागं ॥ तत्तुल्यसूतंद्विगुणंचगंधंतुल्यंचगन्धेन समानभागं । निम्बूत्थतोयेनविमर्द्यसर्वंगोलं मकृत्वाथमृदाविलिप्य ॥ पुटंचदत्वाथविम र्दयेनंगन्धेनतुल्येनकृशानुनीरैः । विषंचद त्वाथकलाप्रमाणंमिषत्कृशानुत्थरसैःपचेत्तु ॥ पित्तैस्तथाभावितएषसूतात्रिदोषदावानल कालमेघः । वल्लंददीतास्यचपूर्वयुक्तयाददो षरंतमधुपिप्पलीभिः ॥ मुद्गश्चशाल्यन्नमिह प्रशस्तंपथ्यंभवेत्कोष्णमिदंदिवान्ते । रसे श्वरादिकालमेघांतारसाः वातोल्वणेसन्निपा तेप्रयोज्याः ॥ इतिसारकौमुद्यांमाधवः ।

अर्थ–हरितालसे वंग, मनसिलसे सीसा, पारेसे सुवर्ण, तांवे तथा चांदीके पत्र तथा गंधकसे लोहा भस्म किया हुआ लेवे । अथवा हींगलूसे सर्वधातु फुकी हुई लेवे । इन सबकी भस्म बराबर लेके सबकी बराबर पारा और पारेसे दूनी गंधक और गंधकके बराबर नीला थोथा, सबको नीवूके रसमें खरल करे गोला बनावे उसके ऊपर कपरमिट्टी कर पुटपाक करे तदनंतर पारेके समान गंधक डाल चीतेके रसमें खरल करे, पीछे सबका सोलहवां भाग विष डाल, चीतेके रससे घोट कुछ पाक करे, इसमें बकरी आदिके पित्तोंकी भावना देवे तो यह त्रिदोष दावानल कालमेघ रस सिद्ध होय । इसकी दोरत्तीके प्रमाण गोली करे एक गोली पूर्वोक्त प्रकारके अनुसार देवे, दाह प्रधानज्वरमें पीपलके चूर्ण और सहत के साथ देवे सायंकालमें रोगीको मूंग चांवल दही, दूध भोजनको देवे। रसेश्वर रससे लेकर कालमेघ पर्य्यंत जितने रस है वो वातोल्वण सन्निपातमें देने चाहिये । यह सारकौमुदीमें

माधवने कहा है ।

श्रीप्रतापलंकेश्वरोरसः

अपामार्गस्यमूलानांचूर्णचित्रकमूलजैः ।
वल्कलैर्मर्दयित्वाथरसंवस्त्रेणगालयेत् ॥
तेनसूतसमंगन्धमभ्रकंपारदंविषं ।
टंकणंतालकंचैवमर्दयेद्दिनसप्तकम् ॥
त्रिदिनंमुशलीकन्दैर्भावयेत्घर्मरक्षितं ।
मूषांचगोस्तनाकारामापूर्योपरिढक्कयेत् ॥
सप्तभिर्मृत्तिकावस्त्रैर्वेष्टयित्वापुटेल्लघु ।
रसतुल्यंलोहभस्ममृतवंगमहिस्तथा ॥
मधूकसारजलदंरेणुकंगुग्गुलंशिलां ।
चाम्पेयंचसमांशंस्याद्भागार्द्धंशोधितंविषं ॥
तत्सर्वंमर्दयेत्खल्वेभावयेद्विषनीरतः ।
आतपेसप्तधातीव्रमर्दयेत्वटिकाद्वयम् ॥ ६ ॥
कटुत्रयकषायेणकनकस्यरसेनच ।
फलत्रयकषायेणमुनिपुष्परसेनच ॥ ७ ॥
समुद्रफेननीरेणविजयापत्रवारिणा ।
चित्रकस्यकषायेणज्वालामुख्यारसेनच ॥८
प्रत्येकंसप्तधाभाव्यंतद्वत्पित्तैश्चपंचभिः ।
सर्वस्यसमभागेनविषेणपरिपूरयेत् ॥ ९ ॥
विमर्द्यमूर्च्छयित्वाचरक्षयेत्कूपिकोदरे ।
गुंजैकंवन्हिनीरेणशृंगवेररसेनच ॥ १० ॥
दद्याच्चरोगिणेतीव्रमोहविस्मृतिशान्तये ।
क्षुरेणतालुमाहत्यवर्षयेद्वार्द्रनीरतः ॥ ११ ॥
नोद्घटन्तेयदादन्तास्तदाकुर्यादसुंविधिं ।
सेचयेन्मंत्रविद्वैद्योवारांकुम्भशतैर्नरं ॥ १२॥
भोजनेच्छायदातस्यजायतेरोगिणःपरम् ।
दध्योदनंशितायुक्तंदद्याच्चकंसजीरकम्॥१३
पानेपानंसिताजातंयदिच्छेतदद्दातितत् ।
एवंकृतेनशांतिस्याच्चापस्यचरुजस्यच ॥१४
सचंद्रंचन्दनरसालेपनंकुरुशीतलं ।
यूथिकामल्लिकाजातीपुन्नागवकुलावृताम् १५
विधायशैय्यांतत्रस्थंलेपनैश्चन्दनैर्मुहुः ॥
हावभावविलासोक्तैःकटाक्षैश्चंचलेक्षणैः १६
पीनोत्तुंगकुचापीडैःकामिनीपरिरम्भणैः ।
रम्यवीणाविनादोक्तैःगायनैःश्रवणामृतैः ॥
पुण्यश्लोककथाद्यैश्चसन्तापहरणंकुरु ।
दद्याद्वातेपुसर्वेषुसिन्धुजैःसहवन्हिभिः ॥ १८
दद्यात्कणामाक्षिकाभ्यांकामलाक्षयपांडुषु
तत्तद्रोगानुपानेनसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ १९॥
अयंप्रतापलंकेशःसन्निपातहरःपरः ॥ २०॥

अर्थ–ओंगाकीजड, चीतेकी जडकीछाल, दोनोंको जलमें पीसकर कपडेमें छांन लेवे । पीछे इस रसके समान पारा, गंधक, अभ्रक, विष, सुहागा, और हरिताल, सबको लेकर उसी चीते और ओंगाके रसमें ७ दिन खरल करे, पीछे ३ दिन मूसलीके रसमें खरल करे, और धूपमें सुखावे । तत्पश्चात् इसको मूषामें धर ढकनासे ढक देवे, पीछे इस पर सात कपरमिट्टी कर लघुपुटमें फूंक देवे, फिर लोह भस्म, वंगभस्म, सीसाकी भस्म, मुलहटी, नागरमोथा, रेणुक, गुग्गुल, मनसिल और नागकेशर, इन सबको पारेके समान लेवे और अर्द्ध भाग विष, सबको कूट पीस सिंगिया-विषके,क़ाढेसे सात भावनादे, फिर दो २ घडी धूपमें रखकर घोटे पीछे त्रिकुटाके काढेसे धतूरेके रससे, त्रिफलाके काढेसे, अगस्तिया पुष्पके रससे, समुद्र फेनके रससे, भाँगके रससे, चीतेके काढेसे, और ज्वालामुखीके रससे प्रत्येककी सात २ भावना देवे । उसी प्रकार बकरी, वाराह, मछली, भैंसा, और मोर इनके पित्तोंकी पृथक् २ सात २ भावना देवे पीछे सबके समान विष मिलाकर खरल करे फिर पूर्व लिखित पारदादि सहित सर्व औषधि

इकट्ठीकर काँचकी सीसीमें भरकर रख छोडे, एक रत्ती यह रस चीतेके रससे अथवा अदरकके रससे रोगीका मोह दूर करनेको देवे तथा छुरेसे तालुएको चीरकर इस रसको अदरकके रसमें पीसकर भर देवे, तो रोगी होशमें आजावे। यदि इस प्रकारसेभी रोगीके दांतोंकी वत्तीसी न खुले तो यह विधिकरे कि मंत्रपढकर १०० घडे शीतलजलसे रोगीको स्नानकरावे। तो सन्निपातकी मूर्च्छा जाती रहै यदि रोगीको भोजनकी इच्छाहो तो दही, भात, मिश्री तथा जीरा मिली छाछ देवे। पीनेको शरवत् देवे, जिस वस्तुपर इच्छाहो वही देवे। इस प्रकार करनेसे रसकी गरमी और रोगकीशांति होती है। तथा कपूर, केवडे मिले चन्दनको लगावे, और चमेली, पुन्नाग, मौरसिरीके फूलोंकी सेज वनाकर उसपर सोवे, वार २ चन्दन लगाता रहे। हाव, भाव कटाक्षादि विलासवत्ती स्त्रियोंसे आलिंगन करना। रमणीक शब्दवाले वीणा आदि वाजोंका सुनना, सुननेमें प्रिय ऐसे गीतोंका सुनना, भारतादि शास्त्रोंका सुनना, इत्यादि कर्मोंसे इस रसकी गरमीको दूर करे सर्व वातरोगोंमें चीतेके चूर्ण और सेंधेनोन-के साथ देवे। कामला, क्षई, पांडुरोग, आदिमें पीपलका चूर्ण और सहत इनके साथ देवे। पृथक २ अनुपानसे सर्व रोगोंमें देना चाहिये, यह प्रतापलंकेशरस सर्व सन्निपात हरण कर्त्ता है।

कफकेतुरसः

टंकणंमागधीशंखंवत्सनाभंसमंसमं।
आर्द्रकस्वरसेनाथदापयेद्भावनात्रयम्॥
गुंजामात्रंप्रदातव्यमार्द्रकस्वरसैर्युतम्।
पीनसेश्वासकासेचशिरोरोगेगलग्रहे॥
कफरोगान्निहंत्याशुकफकेतुरयंरसः।

अर्थ-सुहागा, पीपल, शंखकी भस्म, वत्सनागविष, इन सवको वरावर लेकर अदरकके रसकी ३ भावना देवे, एक रत्तीकी गोली बनावे। एक गोली अदरकके रसके साथ देवे तो पीनस, श्वास, खांसी, मस्तकरोग, गलेके रोग और कफके रोगोंको यह कफकेतुरस दूर करता है।

द्वितीयकफकेतुरसः

दग्धशंखंत्रिकटुकंटंकणंसमभागिकं।
विषंचपंचभिस्तुल्यमार्द्रतोयेनमर्दयेत्॥
वारत्रयंरक्तिकांचवटींकुर्याद्विचक्षणः।
प्रातःसायंचवटिकाद्वयमार्द्रकवारिणा॥
कफकेतुःकंठरोगंशिरोरोगंचनाशयेत्।
पीनसंकफसंघातंसन्निपातंसुदारुणम्॥

अर्थ-शंखकीभस्म, त्रिकुटा, सुहागा, ये सब वरावर लेवे और सबकी वरावर विष लेवे। सबको अदरकके रसमें खरलकरे, इस प्रकार तीन भावना देकर एक रत्तीके अनुमान गोली बनावे। सायंकाल और प्रातःकाल दो गोली अदरकके रसके साथ खावे तो यह कफकेतुरस कंठके रोगोंको शिरके रोगोंको,पीनस और कफसमूह और सन्निपातको दूर करे।

श्लेष्मकालानलोरसः

हिंगुलंसम्भवंसूतंगन्धकंमृतताम्रकं।
तुत्थंमनोह्वातालंचकट्फलंधूर्त्तबीजकम्॥
हिंगुंसमाक्षिकंकुष्ठंत्रिवृद्दंतीकटुत्रिकं।
व्याधिघातफलंवंगंटंकणंसमभागकं॥
स्नुहीक्षीरेणवटिकांकारयेत्कुशलोभिषक्।
विज्ञायकोष्ठकालंचयोजयेद्रक्तिकांक्रमात्॥
वातश्लेष्मणिमन्दाग्नौपित्तश्लेष्माधिकेऽपिच।

जीर्णज्वरेचश्वयथौसन्निपातेकफोल्वणे ॥
वल्लासमवलंत्यक्त्वाधातुंवातात्मकेनयेत् ।
सेवनात्सर्वरोगघ्नःश्लेष्मकालानलोरसः ॥

अर्थ—हींगलूसे निकाला पारा, गंधक, विष, तांबा, नीलाथोथा, मनसिल, हरिताल, कायफर, धतूरेके बीज, हींग, सोनामक्खी, कूठ, निसोथ, दंती, त्रिकुटा, अमलतासकागूदा, वंग और सुहागा, सब समानले। सबको कूट पीस थूहरके दूधसे एक २ रत्तीकी गोली बनावे। रोगीका कोठा तथा देश कालको विचारकर एक गोली देवे। वात कफके रोगोंमे मन्दाग्निमें, पित्तकफके रोगोंमें, जीर्णज्वरमें, सूजनमें, कफोल्वण सन्निपातमें देवे, प्रबलकफको, और संपूर्ण वातके रोगोंको दूर करे इस श्लेष्मकालानल रसके सेवनसे सर्व रोग दूर होवे

स्वल्पकस्तूरीभैरवोरसः

हिंगुलंचविषंटंकंजातीकोषफलंतथा ।
मरिचंपिप्पलीचैवकस्तूरीचसमांशिका ॥
गुंजाद्वयंततःखादेत्सन्निपातेसुदारुणे ।

अर्थ—हिंगुल, विष, सुहागा, जायफल, मिरच, पीपल, सब बराबर लेवे। और सबकी बराबर कस्तूरी डाले। दो रत्तीके अनुमान रोगीको देवे तो दारुण सन्निपात दूर होवे।

मध्यकस्तूरीभैरवोरसः

मृतंवंगंखर्परंचहिरण्यंताररतालकं ।
एतेषांसमभागेनकर्षमेकंपृथक्पृथक् ॥
मृतंकांतपलंदेयंहेमसारंद्विकार्षिकं ।
रसभस्मलवंगंचजातिकाफलमेवच ॥
वक्ष्यमाणौपधैर्भाव्यंमत्येकंदिनसप्तकं ।
द्रोणपुष्पीरसैर्वापिनागवल्यारसेनच ॥
द्विचन्द्रोत्रिकटुर्देयोयत्नतोवटिकांचरेत् ।
वातात्मकेसन्निपातेमहाश्लेष्मगदेषुच ।
त्रिदोषजनितेघोरेसन्निपातातिदारुणे ॥
नष्टगर्भेनष्टशुक्रेप्रमेहेविषमज्वरे ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेमहाशोथेमहागदे ॥
स्त्रीणांशतंगच्छतिचनचशुक्रक्षयोभवेत् ।
एतान्सर्वान्निहंत्याशुतमसूर्योदयेयथा ॥

अर्थ—वंगकीभस्म, खपरिया, सुवर्ण, चांदी, हरिताल, इन सबको एक २ कर्ष लेवे। कांतलोहकी भस्म एकपल, कस्तूरी दो कर्ष, पारेकी भस्म दो कर्ष, लौंग दोकर्ष, जायफल दोकर्ष, इन सबको आगे जो औषधि लिखते हैं उनके रसकी सातदिन भावना देवे। गोमाके रससे, नागरवेल पानके रससे, खरलकरे। कपूर और कबीला, त्रिकुटा मिलाकर यत्नपूर्वक गोली बनावे। वातात्मक सन्निपातमें, घोरकफके रोगोंमें, त्रिदोष जनित सन्निपातमें, नष्टगर्भमें, नष्टशुक्रमें, प्रमेह और विषमज्वरमें, खांसी, श्वास, खई, गोला, और सूजन इन रोगोंमें इस रसको देवे। सौस्त्री गमन करनेसेभी शुक्रक्षीण न होवे। यह रस सर्व रोगोंको नष्ट करताहैं। जैसे सूर्यके उदयसे अंधकार नष्ट होता है।

बृहत्कस्तूरीभैरवोरसः

मृगमदशशिसूर्य्यौधानकीशूकशिंबी ।
रजतकनकमुक्ताविद्रुमंलोहपाठाः ॥
कृमिरिपुघनविश्वावारितालाभ्रधात्री ।
रविदलरसपिष्टंसर्वरोगान्तकारी ॥ १ ॥
कस्तूरीभैरवःख्यातसर्वज्वरविनाशनः ।
आर्द्रकस्यरसैःपेयोविषमज्वरनाशनः ॥
द्वंद्वजान्भौतिकान्वापिज्वरान्कामादिसम्भवान् । अभिचारकृतांश्चैवतथाशस्त्रकृतान्पुनः
निहन्याद्रक्षणादेवडाकिन्यादियुतांस्तथा ।
विल्वचूर्णनीरकाभ्यांमधुनासहपानतः ॥
आमातिसारंग्रहणींज्वरातीसारमेवच ।

अग्निदीप्तकरःशान्तःकासरोगनिकृन्तनः ॥
क्षपयेद्दक्षणादेवमेहरोगंहलीमकम् ।
जीर्णज्वरंनूतनंवाद्विकालीनंचसंततम् ॥
प्रक्षिप्तंभौतिकंवापिहंतिसर्वान्विशेषतः ।
एकाहिकंद्वाहिकंवात्र्याहिकंचचतुर्थकम् ॥
पंचाहिकंपष्ठसंस्थंपाक्षिकंमासिकंतथा ।
सर्वान्ज्वरान्निहंत्याशुभक्षमाणमथार्द्रकैः ॥

अर्थ-कस्तूरी, कपूर, तांवा, धायकेफूल, कौंचकेवीज, चांदी, सोना, मोती, मूंगा, लोह, पाढ, वायविडंग, मोथा, सोंठ, नेत्रवाला, हरिताल, अभरक, आंवले, इन सव औपधियोंको आकके पत्तोंके रसमें खरल कर रस तयार करे यह सर्व रोगांतकारी है। यह कस्तूरी भैरव नामसे प्रसिद्धि रस सर्वज्वर नाशक है अदरकके रससे पिये तो सर्व विपमज्वर नाश करे। द्वंद्वज (इकतरा, तिजारी आदि) भौतिक और काम, क्रोधजनितज्वर, अभिचार जनितज्वर, तथा शस्त्रकृत और डाकिनी आदिके ज्वरोंको यह रस सेवन करतेही नाश करे। वेलकाचूर्ण जल और शहत इनके साथ सेवन करे तो आमातिसार, संग्रहणी, ज्वरातिसारको दूर करे। अग्निको दीप्तकरे, खांसी, प्रमेह, हलीमक, अजीर्णज्वर, नवीनज्वर, दो समय आनेवाला, संततज्वर और भौतिकज्वर, एकाहिक, द्वाहिक, त्राहिक, चातुर्थिक, पंचाहिक, छठे दिनका, पाक्षिक, मासिकज्वर इत्यादि सर्व रोगोंको अदरकके रसके साथ भक्षण करनेसे दूर करे।

कालानलरसः

रसंगन्धंमृताभ्रंचटंकणंचमनःशिला ।
हिंगुलंगरलंदारुंविपंताम्रंचतत्समं ॥
विडालपदमात्रन्तुसर्वंशुद्धंविचूर्णयेत् ।
भावनाचमदातव्यंलांगलीमूलकंतथा ॥
घोपामूलंतथादेयंमूलंलोहितचित्रकम् ।
अपुप्पफलभूधात्रीमूलंभ्रमररुद्रकम् ॥
छागवाराहमायूराःमहिपोमत्स्यएवच ॥
एतेपांचददेत्पित्तमार्द्रकस्यरसेनच ।
मल्येकमार्दितंशुष्ककणामात्राप्रमाणतः ॥
अत्रभ्रमरोभ्रमरेष्टाभागोइत्यर्थः ।

अर्थ-पारा, गंधक, अभ्रककी भस्म, सुहागा, मनसिल, हींगलू, सर्पविप, देवदारु, सिंगियाविप, और तांवा सव एक २ तोले लेवे। सवका चूर्ण कर कलियारीके रसकी भावना देवे। काकडासिंगीके रसकी, ऊंटकटेराके रसकी, पनसके रसकी, आंमलेकी, सोनापाठ, मौरसिरीके रसकी पृथक् २ भावना देवे। पीछे वकरी, सूअर, भैंसा, मोर, मछली इनके पित्तोंकी भावना पृथक् २ अदरकके रससे देवे। वहुत छोटी गोली करे। इस गोलीको सन्निपातमें देवे।

मृतसंजीवनीसुरा.

गुडंद्रोणसमंग्राह्यंवर्पादूर्द्धंपुरातनम् ।
वार्वूरीत्वचमादायदापयेत्पलविंशतिम् ॥१॥
दाडिमीवृपभोचंचुवराक्रान्ताऽरुणातथा ॥
अश्वगन्धादेवदारुविल्वश्योनाकपाटलाः २
शालपर्णीपृष्टपर्णीवृहतीद्वयगोक्षुरं ।
वदरीन्द्रवारुणीचित्रंस्वयंगुप्तापुनर्नवा ॥३॥
एपांदशपलान्भागान्कुट्टयित्वाउदूखले ।
सुगंभीरेचमृद्भांडेतोयमष्टगुणंक्षिपेत् ॥ ४ ॥
गुडसंगोलनंकृत्वाएतैसम्पूरयेद्बुधः ।
मुखेशरावकंदत्वारक्षयेद्दिनविंशतिम् ॥ ५॥
पोडशाद्दिवशादूर्द्धंद्रव्यानीमानिदापयेत् ।
पूगमस्थद्वयंचात्रकुट्टयित्वाविनिक्षिपेत् ॥६॥
धत्तूरदेवपुष्पंचपद्मकौशीरचन्दनम् ।

शतपुष्पोयवानीचमरिचंजीरकद्वयम् ॥ ७ ॥
शुंठीमांशीत्वगेलाचसजातीफलमुस्तकम् ।
ग्रन्थिपर्णीतथाशुंठीमेंथीमेपीचचन्दनं ॥ ८ ॥
एषांद्विपलिकान्भागान्कुट्टयित्वाविनिक्षि
पेत् । मृन्मयेमोचिकायंत्रेमयूराख्येऽपियंत्रके ॥
यथाविधिप्रकारेणचालनन्दापयेद्बुधः ।
बुद्धिमान्सोज्ज्वलंकृत्वाउद्धरेद्विधिवत्सुराम्
एतन्मद्यंपिबेन्नित्यंयथाधातुवयःक्रमं ।
देहदार्ढ्यकरंपुष्टिबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥ ११ ॥
सन्निपातज्वरेघोरेविषूच्यांचमुहुर्मुहुः ॥
शीतेदेहेप्रयोज्योयंमृतसंजीवनीसुरा ॥ १२ ॥

अर्थ—एकवर्षका पुरानागुड ३२ सेर लेवे, वबूलकीछाल ८० तोले, अनारकीछाल, अडूसेकीछाल, मोचरस, वराहीकंद, मजीठ, असगंध, देवदारु, वेलगिरी, श्योनाक, पाढलकीछाल, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, छोटीकटेरी, वडीकटेरी, गोखरू, वेर, इन्द्रायण, चीता, तालमखाना, सांठकीजड, प्रत्येक औषधि दश २ पल लेवे। तथा जल २९६ सेर सव औषधियोंको कूटकर उस जलमें डाले, सवको एक वडे मिट्टीके पात्रमें भर उसमें गुड घोल देवे। पीछे इस पात्रका मुख वंदकर वीस दिन रक्खा रहने देवे, जब १६ दिन व्यतीत होजावें तब इतनी वस्तु और डाले। दक्षिणी सुपारी ४ सेर कूटकर डाले। धतूरा, लौंग, पद्माख, खस, लालचन्दन, सौंफ, अजमायन, कालीमिरच, दोनों जीरे, कचूर, जटामांसी, दालचीनी, छोटी इलायची, जायफल, नागरमोथा, अग्निपर्णी, सोंठ, मैथी, मेढासिंगी, और सफ़ेदचन्दन प्रत्येक दो २ पल लेवे। सवको कूटकर उसी पात्रमें डालदे, पीछे उसी प्रकार मुख वंदकर चारदिन रक्खा रहने देवे, पीछे वकयंत्र द्वारा अथवा मिट्टीके मयूरयंत्र द्वारा जो मोचियोंके होता है। उसके द्वारा यथा विधि इस आसवको निकाले। वुद्धिवान् पुरुष इसं शरावको उज्ज्वल पात्रमें भरकर रख छोडे। इसको वलावल, दोष, धातु और अवस्था देखकर देवे तो देहको दृढकरे, पुष्टकरे, वल, वर्ण और अग्निको वढावे। सन्निपातमें घोरज्वरमें विषूचिका (हैजा) में तथा शीतांगमें इस मृतसंजीवनी सुराको देना चाहिये।

मृगमदासवः

मृतसंजीवनीग्राह्यंपंचाशत्पलसंमिताः ।
तदर्द्धंमधुसंग्राह्यंतोयंमधुसमंतथा ॥ १ ॥
कस्तूरीकुडवंतत्रमरिचंदेवपुष्पकं ।
जातीफलंपिप्पलीत्वक्भागद्विपलिकांक्षिपेत्
भांडेसंस्थाप्यरुद्धाचनिदध्यान्मासमात्रकं ।
विशूचिकायांहिकायांत्रिदोषप्रभवेज्वरे ॥
वीक्ष्यकोष्टबलंचैवभिषक्मात्रांप्रयोजयेत् ॥

अर्थ—मृतसंजीवनी आसव ५० पल लेवे, शहत २५ पल, जल २५ पल, कस्तूरी ४ पल, मिरच, लौंग, जायफल, पीपल, तज, प्रत्येक दो २ पल लेवे। सवको कूट एकत्र कर उस जल और शराव, शहतमें मिलाय पात्रमें भर मुख वंदकर एक महीने रखा रहने देवे, पीछे इस अर्कको विषूचिका, हिचकी, तथा त्रिदोष जनित ज्वरमें कोष्ट और वलावल देखकर देवे तो सर्व रोग नष्ट होवें।

इतिसन्निपाताधिकारः

अथविषमज्वराधिकारः

ज्वरमातंगकेशरीरसः

पारदंगन्धकंचैवहरितालंसमाक्षिकम् ।
कटुत्रयंतथापथ्याक्षारौद्वौसैंधवंतथा ॥ १ ॥

निम्बस्यविषमुष्टेश्चबीजंचित्रकमेवच ।
एषांमाषमितंभागंग्राह्यंप्रतिसुसंस्कृतम् ॥२॥
द्विमाषंकनकफलंविषंचापिद्विमाषकम् ।
निर्गुंडीस्वरसेनैवशोषयेतत्प्रयत्नतः ॥३॥
सार्द्धगुंजाप्रमाणेनवटीकार्यासुशोभना ।
सर्वज्वरहरीचैषाभेदनीदोषनाशनी ॥ ४ ॥
आमाजीर्णप्रशमनीकामलापाण्डुरोगहा ।
वन्हिदीप्तकरीचैषाजठरामयनाशनी ॥ ५ ॥
उष्णोदकानुपानेनदातव्यंहितकारिणी ।
भाषितोलोकनाथेनज्वरमातंगकेशरी ॥ ६ ॥

अर्थ–पारा, गंधक, हरिताल, सोनामक्खी त्रिकुटा, हरड, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोंन निबौरी, कुचला, चीतेकीछाल, प्रत्येक एक एक मासे लेवे । जमालगोटा दो मासे, सिंगियाविष दो मासे, सबको कूट छान निर्गुंडीके रसमें खरलकर १॥ रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे । यह सर्वज्वरोंको हरण करे, दस्तावर है, तथा सर्व दोष नाशिनी है । आमाजीर्ण, कामला, पांडुरोग, उदररोग इन सबको दुर करै । अग्नि दीप्त करे । इस गोलीको गरम जलके साथ लेवे यह लोकनाथका कहा ज्वरमातंग केशरी रस है ।

सुंवलादिज्वरांकुशः

श्वेतक्षारंतुत्थकंचतालकंशंखभस्मच ।
समभागंसमादायचूर्णंकृत्वातुभावना ॥
कारवेल्लरसेनैवसप्तधापरिकीर्तिता ।
सिद्धोरसोनागवल्लीदलेगुंजामितोबुधैः ॥
शीतज्वरेप्रयुक्तोयंनाशयेद्विषमज्वरान् ।
अयंज्वरांकुशोनाम्नाविख्यातोरसराजके ॥
पथ्यंशीघ्रंप्रदातव्यंगोदुग्धेनसहौदनं ।

अर्थ–सुंवलखार, नीलाथोथा, हरिताल, शंखकी भस्म, सबको बराबर ले सबका चूर्ण करे । और करेलेके रसकी सात भावना देवे । जब रस सिद्धि होजावे तब नागरवेलिके पानमें एक रत्ती खाय तो यह शीतज्वरादि विषमज्वरोंको नाश करे । यह ज्वरांकुश रसराजग्रंथमें विख्यात है इसके ऊपर शीघ्र दूध भातका पथ्य देना चाहिये ।

तालकादिज्वरांकुशः

तालकंशुक्तिकाचूर्णंतुल्यंतत्रोभयोरपि ।
नवमांशंचतुत्थंस्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥
तत्तुसंशुष्कमुपलैर्वन्यैर्गजपुटेपचेत् ।
शीतंतच्चूर्णयेच्चूर्णंगुंजामात्रंसितायुतं ॥
प्रभातेभक्षयेत्तेनयातिशीतज्वरःक्षयम् ।
वांतिर्भवतिकस्यापिकस्यापिनभवत्यपि ॥
एकेनदिवसेनैवशीतज्वरहरंपरं ।
मध्यान्हसमयेपथ्यंभक्तंशिखिरणीयुतं ॥

अर्थ–हरिताल, सीपका चूर्ण, दोनों बराबर लेवे, इनका नवमांश नीलाथोथा डाले, सबको घीगुवारके रसमें खरल करे, फिर सुखाकर आरने कंडोंसे गजपुटमें फूंकदे जब शीतल होजाय तब पीसके एक रत्ती मिश्रीके साथ प्रातःकाल देवे तो शीतज्वर दूर होवे । इसके खानेसे किसीको रद्द होती है, किसीको नहीं एकही दिनमें शीतज्वर दूरहो मध्यान्हमें शिखरण भातका पथ्य देवे ।

द्वितीयतालकादिज्वरांकुशः

एकंकर्षंभवेत्तालंद्विकर्षंतुत्थकंभवेत् ।
पट्कर्षंभृष्टशुक्तीनांचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥
धत्तूरपत्रस्वरसैर्मर्दयेद्यामभात्रकम् ।
निधायभाजनेलोहेसंमर्द्यक्रमशोबुधैः ॥
उपर्य्यग्नेःस्थापयित्वातद्रसंशोषयेद्भिषक् ।
पुनःपश्चाद्पिष्टंमातर्गृहीत्वाकिंचिदग्नितः ॥
कोष्णंकृत्वाकल्कमेतत्ततोवन्ध्यःप्रसाधितः ।

चणकप्रमितास्तासामेकाशर्करयासह: ।
शीतज्वरंनिहंत्येवसर्वंनास्त्यत्रसंशय: ॥

अर्थ—हरिताल १ कर्ष, लीलाथोथा २ कर्ष, सीपकीभस्म ६ कर्ष, सबको एकत्रकर धतूरेके पत्तोंके रसमें एक प्रहर घोटे । तदनंतर लोहेके पात्रमें भरके मर्दन करे, पीछे इस पात्रको अग्निपर रखकर सुखा देवे । पीछे प्रातःकाल कुछ गीलाकर अग्निपर घोट चनेके प्रमाण गोली बनावे । एक गोली मिश्री वा कच्ची खांडसे खाय तो शीतज्वर मात्रको दूरकरे ।

तुत्थकादिज्वरांकुशः

तुत्थशंबूकतालानांद्विगुणानांयथोत्तरम् ।
चूर्णंकुमारिकाद्रावैर्घृष्ट्वागोलंप्रकल्पयेत् ॥
द्वाभ्यामेरंडपत्राभ्यांतद्गोलंबध्यतेबुधैः ।
सरावसंपुटेधृत्वापुटेद्गजपुटेनतु ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यचूर्णयित्वानिधापयेत् ।
गुंजात्रयंसितायोज्याखादेत्सर्वज्वरापहम् ॥
पथ्यंक्षीरोदनंदेयंनिहंतिविषमज्वरान् ।

अर्थ—लीलाथोथा, सीपकीभस्म, हरिताल, प्रत्येक एक एकसे दूनी लेवे । सबका चूर्णकर घीगुवारके रससे खरल करे । पीछे गोला बनाकर अरंडके पत्तोंसे चारों और लपेटे । सराव संपुटमें रख गजपुटमें फूक देवे । स्वांग शीतल होनेपर निकालकर चूर्ण करे । तीनरत्ती चीनीके साथ खाय तो सर्वज्वर दूर होवें, और दूध भातका पथ्य देवे ।

लंकेश्वरोरसः

तालकंमाक्षिकंतुत्थंहरबीजंसगंधकम् ।
कर्कोटीपत्रतोयेनमर्दयेद्दिनसप्तकं ॥
चुल्यांपाच्यंचतुर्यामंसशर्करंज्वरापहः ।
अयंलंकेश्वरोनामशीतमातंगकेशरी ॥ १ ॥

अर्थ—हरिताल, सोनामक्खी, नीलाथोथा, पारा, गंधक, सबको ककोडाके रसमें सातदिन घोटे । पीछे चूल्हेपर चढाकर ४ प्रहर पचावे । इस रसको मिश्रीके साथ खायतो सर्वज्वर दूर होवें । यह लंकेश्वर रस शीतज्वर रूप हाथीको सिंह रूप है ।

मेघनाद वा आरादिज्वरांकुशः

आरंकांस्यंमृतंताम्रंत्रिभिस्तुल्यंतुगन्धकं ।
क्राथेनमेघनादस्यपिष्ट्वारुध्वापुटैःपचेत् ॥
षड्भिस्तुजायतेसिद्धोमेघनादोज्वरापहः ।
पर्णखंडेनमाषैकंविषमज्वरनाशनम् ॥

अर्थ—लोहभस्म, कांसेकीभस्म, तांबेकीभस्म, तीनोंकी बराबर गंधक सबको चौलाईके काढेसे घोटे । पीछे संपुटमें रखकर फूंक देवे छः पुटसे भस्म होवे । यह मेघनादरस पानके साथ खानेसे विषमज्वरको दूरकरे ।

मनःशिलादिज्वरांकुशः

मनःशिलाबलिरसैर्भागैर्वन्हिकरेन्दुभिः ।
कुमारीरससम्पिष्टैःकृत्वागोलन्तुशोभनम् ॥
युगभागमितेसूक्ष्मेताम्रसम्पुटकेन्यसेत् ।
ततस्तुवालुकायंत्रेपचेद्यामंतुचाष्टकम् ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यचूर्णयित्वानिधापयेत् ।
गुंजात्रयंशर्करयाह्यार्द्रकस्यरसेनच ॥
दद्यात्समस्तविषमान्ज्वरान्हन्तिनसंशयः ।
पथ्यंक्षीरोदनंदेयंमुद्गयूषोरसोदनम् ॥

अर्थ—मनसिल, पारा, गंधक, ये क्रमसे ३—१ और २ भागले सबको ग्वारपट्ठेके रससे घोटकर गोला बनावे, पीछे मनसिलआदि सबसे दूने तांबेका संपुट बनाय उसमें घुटी हुई औषधि धरे, और वालुका यंत्रमें आठ प्रहर पचावे । स्वांग शीतल होने पर रसको निकाल चूर्ण करे, इसमेंसे तीन रत्ती खांड वा अदरकके रसके साथ खावे तो सर्व विषमज्वर

दूर होवें, दूध, भात और मूंगका यूप पथ्य देवे।

तालेश्वररसः

संमर्धरम्भासलिलेनतालंचूर्णेनतुल्यंदिवसत्र येण । शुद्धंसखण्डंविनिहन्तिमुद्गमानंपयोन्ना सिनयेततापम् ॥

अर्थ–हरितालको केलाके रससे तीन दिन खरल करे पीछे मूंगके समान गोली बनावे खांडके साथ १ गोली खाय ऊपर दूध, भात खाय तो ज्वर जाय ।

रससिन्दूरादिवटी

रससिन्दूरटंकैकंटंकैकंगन्धकस्यच ।
टंकणंत्रिकुटानांचटंकैकंचप्रदापयेत् ॥
रक्तिकाद्वितयंतुत्थंयोजयेद्वैद्यसत्तमः ।
भृंगराजरसैर्भाव्यंवटींकुर्याद्विचक्षणः ॥
आर्द्रकस्यानुपानेनप्रदेयंरक्तिकाद्वयम् ।
एकाहिकंद्वाहिकंवातृतीयकचतुर्थकं ॥
विपमंचत्रिदोपोत्थंहंतिसत्यंनसंशयः।

अर्थ–रससिंदूर १ टंक, गंधक १ टंक, सुहागा १ टंक, त्रिकुटा १ टंक, लीलाथोथा २ रत्ती, सबको भांगके रसकी भावना देकर गोली बनावे । अदरकके रसके साथ दो रत्ती खावे तो इकतरा, द्वाहिक, तिजारी, चौथैया, विपम और त्रिदोपज ज्वर दूर होवें ।

महाज्वरांकुशः

तास्रपत्राणितालंचसममम्लेनमर्दयेत् ।
तयोस्तुल्यंचभल्लातमधोर्ध्वेतच्चदापयेत् ॥
सरावसंपुटेदग्धंस्वांगशीतंविचूर्णयेत् ।
वज्रीक्षीरेणसंमर्द्यभूधरेतत्पुटेत्पुनः ॥
पंचगुंजामितंखादेदार्द्रकस्यरसेनवा ।
महाज्वरांकुशोनामसर्वज्वरनिकृंतनः ॥
एकाहिकंद्वाहिकंचतृतीयकचतुर्थकौ ।
अन्तर्वेगंधातुगंचविपमंचनियच्छति ॥

अर्थ–कंटकवेधी तांबेके पत्र और हरिताल दोनों बराबर लेवे, सबको खटाईमें खरल करे पीछे दोनोंके बराबर भिलावा लेवे । उसको तांबे हरितालके ऊपरदेके सराप संपुटमें फूंक-देवे, स्वांगशीतल होजाय तब चूर्ण कर थूहरके दूधसे खरल करे, फिर भूधरयंत्रमें रखकर फूंक देवे । पीछे इसमेंसे पांचरत्ती रस अदरकके साथ खाय तो यह महाज्वरांकुश रस सर्वज्वरोंको दूर करे । एकाहिक, द्वाहिक, तिजारी, चौथैया, अंतर्वेगी, धातुगत और विपमज्वर सब नष्ट होवें ।

महाज्वरांकुशरसः

पारदोगन्धकश्चैवविपंकनकक्षीरिका ।
कनकस्यचबीजानिरोहिणीशरपुंखिका ॥
रामसेनोऽमृताजाजीकारवीवरवर्णिनी ।
विश्वाचचपलातीक्ष्णंमागधीमूलभक्षकः ॥
शिवादन्त्योद्भवंवीजंधात्रीवैताम्रभस्मकं ।
कान्तीभस्मंरौप्यभस्मंसर्वंचैवसमांशकम् ॥
सूक्ष्मचूर्णविधायाथजम्बीरेणविमर्दयेत् ।
त्रियामांतेवटिंकुर्याद्गुंजामानंप्रमाणतः ॥
सर्वज्वरघ्नीवटिकातुलसीस्वरसेनच ।
पित्तज्वरंनिहंत्याशुसितयादाहपूर्वकम् ॥
विश्वयाचयदायुक्ताहन्याद्वातपूर्वकम् ।
पिप्पलीक्काथयुक्तातुश्लेष्माणंहन्तिसत्वरं ॥
शीतपूर्वंदाहपूर्वंज्वरमष्टविधंतथा ।
अनुपानविशेपेणहंतिसत्यंनसंशयः ॥
महाज्वरांकुशोनाम्नाविख्यातोरसराजके ॥

अर्थ–पारा, गंधक, विप, चोक, धतूरेके बीज, कुटकी, शरफोका, चिरायता, गिलोय, जीरा, सौंफ, हलदी, सोंठ, पीपल, मिरच, पिपलामूल, बहेडा, हरड, जमालगोटा, आंमला ताँबेकी भस्म, कान्तलोहकी भस्म, रूपेकी

भस्म, सत्र समान लेवे। सबका चूर्ण कर जंबीरीके रससे ३ प्रहर खरल करे, पीछे १ रत्तीके सदृश गोली बनावे। एक गोली तुलसीके रससे खाय तो सर्वज्वर दूर होवें। दाह युक्त पित्तज्वर मिश्रीके साथ खानेसे दूर होवे। सोंठके साथ वातज्वरमें, पीपलके काढेसे कफज्वरमें शीतपूर्वक, दाह पूर्वक आदि अष्टविधज्वर अलग अलग अनुपानोंसें दूर होवें यह महाज्वरांकुश रस रसराजग्रंथमें लिखा हुआ है और संसारमें वृहद्वटी नामसे विख्यात है।

शांकरीज्वरांकुशः

हरिद्राचसुधाक्षारंसिन्दूरंजातिकाफलं।
एतानिपलमात्राणिगृह्णीयात्तुसुधीनरः॥
हरितालंचभल्लातंपृथक्पलचतुष्टयम्।
एषांकृत्वासूक्ष्मचूर्णभावयेत्रिःपृथक्पृथक्॥
काकमाचीभृंगराजसूरणस्यरसैःक्रमात्।
अर्कदुग्धैःस्नुहीक्षीरैस्तद्वद्देयंपुटत्रयं॥
सुष्कंतुहंडिकामध्येकृत्वादेयंसरावकं।
पश्चाद्वैसंधिसंरोधंगुडलवणक्षारकैः॥
हंडिकांभस्मनापूर्यवरण्योपलजेनवै:।
तस्यामुखंमुद्रयित्वामृद्भिःपटयुतैर्ध्रुवम्॥
पश्चाच्चूल्ल्यांसमादायहठाग्निंतुदिनार्धकम्।
स्वांगशीतलमुत्तार्यतोलयेत्सिद्धमौषधं॥
तस्यसिद्धस्यषष्ठांशंमरिचंदीयतेबुधैः।
सूक्ष्मचूर्णविधायाथमात्रागुंजाद्वयंददेत्॥
पर्णपत्रेणमतिमान्सशीतज्वरसंज्ञकम्।
दाहयुक्तंतुविषमज्वरान्सर्वान्व्यपोहति॥
सत्यमुक्तंशंकरेणसर्वलोकस्यश्रेयसे।

अर्थ–हलदी, नौसादर, सिंदूर, जायफल, इन सबको एक २ पल लेवे। हरिताल और भिलावा प्रत्येक चार २ पल लेवे, सबको मिलाकर चूर्ण कर पीछे मकोय, भांगरा, जमीकन्द प्रत्येककी तीन २ भावना देवे। उसी प्रकार आकके दूधकी, थूहरके दूधकी, तीन २ भावना देवे. तदनंतर सुखाकर हांडीमें भरे उसके मुखको सरावसे बंदकर उसकी संधियोंको गुड नोन और चूनसे बंदकरे हांडीको राखसें भर देवे और मुख बंदकर कपरमिट्टी करे, पीछे चूल्हे पर चढाकर दो प्रहर हठाग्नि देवे स्वांग शीतल होने पर उतार लेवे. पीछे सिद्ध हुई औषधियोंको तोल उसका छटा हिस्सा मिरच मिलावे. सबको पीस बारीक चूर्ण करे. दो रत्तीकी मात्रा पानके साथ शीतज्वरमें देवे तो दाह युक्त और विषमज्वर सब दूर होवें. श्रीशिवजीने जगतके कल्याणार्थ सत्य कहा है।

महाज्वरांकुशः

पलैकंहरितालंचस्नुहीक्षीरेणभावयेत्।
भावनात्रिप्रदातव्यंततोमुद्रांप्रकल्पयेत्॥
सरावसम्पुटेकृत्वाततोगजपुटेपचेत्।
स्वांगशीतलकंज्ञात्वापुनःखल्वेविनिक्षिपेत्॥
तुलसीपत्रतोयेनमर्दयेद्याममात्रकम्।
ततोमात्रांप्रयुंजीतगुंजात्रयमितांबुधैः॥
महाज्वरांकुशोनामसर्वज्वरनिवारणः।

अर्थ–हरिताल १ पल लेकर थूहरके दूधमें खरल करे। ऐसे तीन भावना देकर पीछे मुद्राकर सराव संपुटमें धरकर गजपुटमें फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब निकालकर खरलमें पीसे, और तुलसीके पत्तोंका रस डालकर एक प्रहर घोटे पीछे तीनरत्तीकी मात्रा देवे, यह महाज्वरांकुश सर्वज्वर नाशक है।

महाज्वरांकुशः

सूतंगन्धंविषंतुल्यंधत्तूरबीजंत्रिभिःसमं।

चतुर्णांद्विगुणंव्योपंचूर्णंगुंजाद्वयंहितं ॥
जम्बीरस्यतुमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनतु ।
महाज्वरांकुशोनामज्वराणांमूलकृंतनः ॥
एकाहिकंद्व्याहिकंचत्र्याहिकंचचतुर्थकम् ।
रसोदत्तोनुपानेनज्वरान्सर्वान्व्यपोहति ॥

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धगंधक, शुद्धविष, तीनोंको बराबर लेकर इन सबकी बराबर धतूरेके बीज लेवे। चारोंसे दूना त्रिकुटा, सबका चूर्णकर दो रत्ती जंबीरीके गूदेसे अथवा अदरकके रससे खावे तो यह महाज्वरांकुश एकाहिक, द्व्याहिक, तिजारी, चातुर्थिक आदि सर्वज्वरोंको दूर करे।

ज्वरांकुशः

रसस्यद्विगुणंगन्धंगन्धतुल्यंतुटंकणं ।
रसतुल्यंविषंयोज्यंमरिचंपंचधाविषात् ॥
कट्फलंदंतिबीजंचप्रत्येकंमरिचोन्मितं ॥
महाज्वरांकुशोनाम्नामर्दयेद्यामसात्रकं ।
एकाहिकंद्व्याहिकंचतथैवचतृतीयकं ॥
मासिकंपाक्षिकंचापिदिनारात्रौतथैवच ।
शीतज्वरेपुदातव्यंहंतिसत्यंनसंशयः ॥

अर्थ-एकभाग शुद्धपारा, दोभाग गंधक, दोहीभाग सुहागा, पारेके बराबर विष, विषसे पांचगुनी मिरच, कायफर, जमालगोटा, प्रत्येक मिरचके समान लेवे सबको कूट पीसकर चूर्ण करे। और एक प्रहर घोटे तो यह महाज्वरांकुश, एकाहिक, द्व्याहिक, तृतीयक, चातुर्थिक, मासिक, पाक्षिक, दिन और रात्रिमें आनेवाले सर्व शीतज्वरोंको नाश करे।

विषमज्वरांकुशलोहं

रसेनुक्तौदुग्धभक्तंसनीरंतक्रभक्तकं ।
अजादुग्धंकेवलंवाघृतंवासाधितंहितं ॥
रक्तचन्दनह्रीबेरंपाठोशीरकणाशिवा ।
नागरोत्पलधात्रीभिस्त्रिमदेनसमन्वितः ॥लोहेनिहन्तिविविधान्समस्तान्विषमज्वरान् ॥

अर्थ-पारे भक्षणमें जो पथ्य कहे हैं वो अथवा दूध, भात। छाछ, भात अथवा केवल बकरीका दूध, अथवा बना हुआ घृत, अथवा लालचन्दन, हौबेर, पाढ, खस, पीपल, हरड, सोंठ, कमलगट्टा, आंमला, त्रिमद, (मोथा चित्रक और विडंग) इनको लोहेकी भस्ममें मिलाके खानेसे अनेक प्रकारके समस्त विषमज्वर दूर होवें।

विद्यावल्लभरसः

रसम्लेच्छशिलातालंचन्द्रद्व्यग्न्यर्कभागिकं ।
पिष्ट्वातुमुशलीतोयैस्ताम्रपात्रोदरेक्षिपेत् ॥
न्युब्जेसरावेसंरुध्यवालुकामध्यगंपचेत् ।
स्फुटंतिव्रीहयोयावत्तच्छिरस्थाःशनैःशनैः॥
संचूर्ण्यशर्करायुक्तंद्विवल्लंसम्प्रयोजयेत् ।
नाशयेद्विषमान्पंचतैलाम्लादिविवर्जयेत् ॥

अर्थ-पारा १ भाग, शिंगरफ दो भाग, मनसिल ३ भाग, हरिताल १२ भाग, सबको मूशलीके रसमें घोटे, पीछे उसका तांबेके पात्रके भीतर लेप कर देवे। और सराव संपुटसे बंदकर दे, फिर वालुकायंत्रमें पचावे, जब वालूमें धान भुनजाय तब उतार लेवे। चूर्णकर मिश्रीके संग ६ रत्ती देवे तो पांच प्रकारके विषमज्वर दूर होवें, इसका सेवन करने वाला तेल खटाई न खाय।

रामज्वरापहारीरसः

रसेन्द्रगंधौविषटंकणौचसहंसपाकंकटुकत्रयंच सर्वैःसमंतज्जयपालबीजंविमर्दयेदार्द्रकजद्रवेण ॥ संशोष्यसंपेष्यभवेत्सुसिद्धोरसस्तुधत्तूरसितार्द्रतोयैः । ददीतवल्लंविषमज्वरेवाजीर्णज्वरेवाथनवज्वरेवा ॥ वनान्निवृत्तायरघू

त्तमायपुरासुपेणेनस्वयंप्रदिष्टः । तदाप्रभृत्ये
वचरामनामज्वरापहारीतिरसःप्रसिद्धः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, विष, सुहागा, हिंगुल, त्रिकुटा, (सोंठ, मिरच, पीपल) सब बराबर लेवे । और सबकी बराबर जमालगोटा, सबको अदरकके रससे खरल करे । पीछे धनूरेके रससे खरलकरे, तो रससिद्धि होय । विषमज्वर. तरुणज्वर, जीर्णज्वरमें, अदरकके रस और मिश्रीके साथ देवे । तो सर्वज्वर दूर होवे । जब श्रीरामचन्द्रजीवनसे पधारे तब स्वयं सुषेणवैद्यने यह रस कहा तबहीसे रामज्वरापहारी नामसे विख्यात हुआ ।

मेघनादरसः

आरंकांश्यंमृतंताम्रंत्रिभिस्तुल्यंतुगन्धकं ।
रसेनमेघनादस्यपिष्टारुध्वापुटेपचेत् ॥
संचूर्ण्यपर्णखण्डेनदातव्योविषमापहः ।
मात्रास्यगुंजाद्वितयंपथ्यंदुग्धोदनंहितं ॥
पंचामृतंपलंचैकमनुपानंप्रकल्पयेत् ।

अर्थ—लोह, कांसा, तांबेकी भस्म, तीनों बराबर लेवे. सबकी बराबर गंधक, सबको चौलाईके रससे खरल करे, पीछे संपुटमें रख कर फूंक देवे. स्वांग शीतल होने पर निकाल कर चूर्ण कर पानके टुकडेके साथ दो रत्ती खाय तो विषमज्वर दूर होवे. दूध, भात पथ्य देवे पंचामृत १ पल, इसके ऊपर अनुपान देवे ।

संजीवनाभ्रं.

वज्राभ्रमारितंकृत्वाकर्षयोग्यंसुचूर्णितं ।
जीरकंकाणकंबीजंकर्षंवासारसेनच ॥
कंटकारिरसेनैवधात्रीमुस्तारसेनच ।
गुडूचीस्वरसेनैवपलांशेनपृथक्पृथक् ॥
मर्दयित्वावटीकार्य्याद्विगुंजामात्रानियोजिता॥
विषमाख्यान्ज्वरान्सर्वान्प्लीहानंयकृतंतथा ।
रक्तपित्तंवातरक्तंग्रहणीश्वासकासकौ ॥
अरुचिंशूलहृल्लासावर्शांसिचविनाशयेत् ।
जीवनानन्दमेवेदमभ्रंवृष्यंबलप्रदम् ॥
रसायनवरश्रेष्ठंधातुसंवर्द्धनंपरम् ॥

अर्थ—वज्राभ्रककी भस्म १ कर्षका चूर्ण कर उसमें जीरा, काकतुंडीके बीज १ कर्ष मिलाय अडूसा, कटेरी, आमला, नागरमोथा, और गिलोय इनके एक २ पल रससे पृथक् २ मर्दन करे. पीछे एक २ रत्तीकी गोली बनावे इस गोलीके खानेसे विषमज्वर, तापतिल्ली, यकृतरोग, वमन, रक्तपित्त, वातरक्त, संग्रहणी, श्वास, खांसी, अरुचि, शूल, हृल्लास, और बवासीर, इनको दूर करे यह जीवनानन्द अभ्रक है बलकर्त्ता, वृष्य, रसायन और सर्व धातु बढाने वाली है ।

शीतकेशरीरसः

पारदंगन्धकंतुत्थंदरदंचविषंसमं ।
विषादष्टगुणंयोज्यंमरिचंविश्वभेषजं ॥
अश्वगंधाथविजयाकासमर्दकठिल्लकः ।
चतुर्णांचरसैरेतच्चूर्णंयत्नेनमर्दयेत् ॥
तुलस्यास्तुदलैःसार्द्धंभक्षितोरक्तिकामितः ।
हंतिशीतज्वरंघोरंनाम्नायंशीतकेशरी ॥

अर्थ—पारा, गंधक, नीलाथोथा, शिंगरफ, विष, ये सब समान लेवे. विषसे अठगुनी काली मिरच, और सोंठ लेवे. असगंध, भांग कसौंदी, और करेला इन चारोंके रसमें, पूर्वोक्त औषधियोंको खरल करे, पीछे तुलसीके पत्तोंके साथ एक रत्ती खानेको देवे, तो यह शीतकेशरी रस शीतको दूर करे ।

शीतभंजीरसः

सूतकंगन्धकंचैवहरितालंमनःशिला ।
एकनिष्कंद्विनिष्कंचचतुर्निष्कंतथैवच ॥

पंचनिष्करसैःकारवेल्याःकल्कमकल्पयेत् ।
ताम्रपत्राणितुल्यानितेनकल्केनलेपयेत् ॥
शरावसंपुटेकृत्वाततोचुल्ल्यांनिधापयेत् ।
धान्यस्फुटनमात्रेणततोचार्यःप्रयत्नतः ॥
ततःसंचूर्णयेद्देवरसःक्षौद्रेणभावितः ।
यवैकमात्रयाहन्तिघोरंशीतज्वरंध्रुवं ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, हरिताल, मनसिल, ये क्रमसे १, २, ४, ९ निष्क लेवे, सबको करेलेके रससे खरल कर बराबर तांबेके पत्रों पर लेप कर दे, सराव संपुटमें रख बालुकायंत्रमें पचावे । वालूके ऊपर धानरखे जब धान खिल जावें तब उतार लेवे चूर्णकर इस रसको १ रत्ती शहतके साथ खावे तो घोर सन्निपातज्वर दूर होवे ।

शीतभंजीररसः

तालकंतुत्थकंताम्रंरसंगन्धंमनःशिलां ।
कर्पैकर्पमयोक्तव्यंमर्दयेत्रिफलाम्बुभिः ॥
गोलंन्यसेत्सम्पुटकेपुटंदत्वाप्रयत्नतः ।
ततोनीत्वार्कदुग्धेनवज्रदुग्धेनसप्तधा ॥
क्काथेनदन्त्याःश्यामायाभावयेत्सप्तधापुनः ।
माषमात्रंरसंदिव्यंपंचाशन्मरिचैर्युतं ॥
गुडंगद्याणकंचैवतुलसीदलयुग्मकं ।
भक्षयेत्रिदिनंभक्त्याशीतारिर्दुर्लभंपरं ॥
पथ्यंदुग्धोदनंदेयंविषमंशीतपूर्वकं ।
दाहपूर्वंहरन्त्याशुतृतीयकचतुर्थकौ ॥
द्वाहिकंसततंचैववैवर्ण्यंचनियच्छति ।

अर्थ–हरिताल, नीलाथोथा, तांबेकीभस्म, पारा, गंधक, मनसिल, इन सबको एक २ कर्ष लेवे । त्रिफलाके रससे खरलकर गोला बनावे. उस गोलेको संपुटमें रखकर पुट देवे, अर्थात् अग्नि देवे. पीछे स्वांग शीतल होनेपर उतार आक और थूहरके दूधकी सात २ भावना देवे. दंती और निसोथके काढेकी सात २ भावना देवे तो रस सिद्धि होय, पीछे ५० मिरच और १ गद्याणक (६ मासे) गुड तथा दो दलतुलसीके सबको पीसकर तीन दिन यह शीतारिरस परम दुर्लभ भक्तिसे भक्षण करे, और दूधभात पथ्य लेवे तो शीतज्वर, दाहज्वर, तृतीयक, चतुर्थक, इकतरा, और नित्य आनेवाला इत्यादि सर्वज्वर दूर होवें ।

पंचाननज्वरांकुशः

शंभोकंठविभूषणंसमरिचंदैत्येन्द्ररक्तोरविः । पक्षंसागरलोचनंशशियुतंभागोऽर्कसंख्यान्वितं ॥ खल्वेतंखलुमर्दितंरविजलैःगुंजैकमात्रंततः । सिद्धोयंज्वरदंतदर्पदलनेपंचाननाख्योरसः ॥ पथ्यंचदेयंदधितक्रभक्तंसिंधूत्थयुक्तंसितयासमेतं । गन्धानुलेपोहिमतोयपानंपयःपिबेद्दाडिमभक्ष्ययुक्तं ॥

अर्थ–विषदोभाग, कालीमिरच, ४ भाग, गंधक २ भाग, शिंगरफ १ भाग, तांबेकीभस्म १२ भाग, सबको खरलमें डालकर आकके जलसे खरलकर एक रत्तीकी गोली बनावे । यह रस ज्वररूप हाथीके दांत तोडनेको सिंहरूप है. इस पर दही, छाछ, भात, सैंधानोन, और मिश्री पथ्य है. चंदन लगाना, शीतलजल पीना, दूधपीना, और बलायती अनार, अंगूरोंका खाना हित है ।

तरुणज्वरारिरसः

जैपालगन्धंविषपारदंचतुल्याकुमारीस्वरसेनमर्द्यं । अस्याद्विगुंजांहिसितोदकेनख्यातोरसोयंतरुणज्वरारिः ॥ १ ॥ दातव्यएषोऽहनिपंचमेवापष्ठेथवासप्तमएववापि । जातेविरेकेविगतंज्वरंःस्यात्पटोलमुद्गान्ननिषेवणेन॥

अर्थ–जमालगोटा, गंधक, सिंगियाविष,

पारा इन सबको बराबर लेवे. और घीगुवार रससे घोटे, इसमेंसे २ रत्ती मिश्रीके शरबतके साथ देवे, इस तरुणज्वरारि रसको पांचवे, छठवें अथवा सातवें दिन देना चाहिये, दस्तों- के होतेही ज्वर दूर होवे. इसमें परवल और मूंगका यूप पथ्य देवे ।

श्रीमृत्युंजयोरसः

विषस्यैकंतथाभागंमरिचंपिप्पलीकणा ।
गन्धकस्यतथाभागंभागस्यात्टंकणस्यच ॥१
सर्वत्रसमभागंस्यात्द्विभागंहिंगुलंभवेत् ।
जम्बीरस्यरसेनात्रभाव्यंहिंगुलशोधितम् ॥२
रसश्चेत्समभागःस्यात्हिंगुलंनेष्यतेतदा ।
गोमूत्रेशोधितश्चात्रविषंशौरविशोषितं ॥ ३
चूर्णयेत्खल्वमध्येतुमुद्गमात्रांवटींचरेत् ।
मधुनालेहनंप्रोक्तंसर्वज्वरनिवृत्तये ॥ ४ ॥
दध्युदकानुपानेनवातज्वरनिवर्हणः ।
आर्द्रकस्यरसैःपानंदारुणेसन्निपातके ॥ ५॥
जम्बीररसयोगेनह्यजीर्णज्वरनाशनः ।
अजाजीगुडसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ॥६॥
जीर्णज्वरेमहाघोरेपुरुषेयौवनान्विते ।
पूर्णमात्राप्रदातव्यापूर्णवटिचतुष्टयं ॥ ७॥
अतिक्षीणेऽतिवृद्धेचशिशोचाल्पवयस्यपि ।
तुर्यमात्राप्रदातव्याव्यवस्थासारनिश्चिता॥८
नवज्वरेप्रदानेचयामैकान्नाशयेज्वरान् ।
अक्षीणेचकफेभावेदाहेचवातपैत्तिके ॥ ९ ॥
सितांदद्यात्प्रयत्नेननारिकेलाम्बुनिर्भयं ।
अयंमृत्युंजयोनामरससर्वज्वरापहः॥१० ॥
अनुपानप्रभेदेननिहन्तिसकलान्गदान् ।

अर्थ–विष १ भाग, मिरच १ भाग, पीपल १ भाग, गंधक १ भाग, सुहागा १ भाग, हींगलू २ भाग, [यहां पर हिंगुलको जंबीरी के रससें शुद्ध कर डालना चाहिये. यदि सब औषधियोंके समान एक भाग पारा डाल देवे तो फिर हिंगुल न डाले, और विषको गोमूत्रमें शोधके धूपमें सुखाके डाले] सबको खरलमें डाल अदरकके रससे घोटे, मूंगके समान गो- लियां बनावे. सर्वज्वरोंमें साधारण अनुपान सहत है. अर्थात् सर्वज्वरोंमें सहतके साथ देवे वातज्वरमें दहीभातके अनुपानसे देवे. दारुण सन्निपातमें अदरकके रसके साथ देवें, अजीर्णज्वरमें जंवीरीके रसके साथ देवे. जीरे और गुडके साथ देनेसे विषमज्वर दूर होवे. महाघोर जीर्णज्वर वाले पुरुष जवानको चारगोली देनी चाहियें. यह पूर्ण मात्रा इस रसकी जाननी चाहिये । अति क्षीण और अतिवृद्ध तथा बालकको चौथाई मात्रा अर्थात् एक गोली देनी चाहिये, नवीनज्वरमें इसकी मात्रा देनेसें एक प्रहरमें ज्वरको दूर करे. क- फाधिक्यमें तथा वात पित्तकें दाहमें नारियल के जलमें मिश्री मिलाकर शरबतके साथ नि- र्भय होकर देवे । यह मृत्युंजय नामका रस सर्वज्वर नाशक है, अनुपानके भेदोंसे सकल रोगोंका नाश करता है ।

श्रीरामरसः

गन्धकंपारदंतुल्यंमरिचंचत्रिभिसमम् ॥
बीजंनैकुंम्भकंमर्धदन्तीकाथेनयामकम् ।
द्विवल्लंशूलविष्टंभानिलमामज्वरंजयेत् ॥
श्रीशिवेनस्वयंप्रोक्तंरसंश्रीरामसंज्ञकम् ।

अर्थ–शुद्धगंधक, शुद्धपारा, काली मिरच, बराबर ले तीनोंकी बराबर जमालगोटा लेवे, सबको खरलमें डाल चूर्णकर दंतीके काढेसे १ प्रहर घोटे ४ रत्ती खानेसे शूल, विष्टंभ, वादी, नवीनज्वरको जीते. श्रीशिवका कहा यह रामसंज्ञक रस है ।

वैद्यनाथवटी

शाणंगन्धमथोरसस्यचतथाकृत्वाद्वयोकज्जलीं । तिक्ताचूर्णमथाक्षमेवसकलंरौद्रेत्रिधा भावयेत् ॥ पश्चात्तत्सुखवीरसेननतुवाऽक्काथेमलेत्रैफले । संशोष्यावटिकाकलायसदृशी कार्याबुधैःयत्नतः ॥ ज्ञात्वादोषबलंरसेनसुखवीपत्रस्यपर्णस्यवा । एकद्वित्रिचतुःक्रमेण वटिकांदद्यात्कदुष्णाम्बुना ॥ हन्तिशूलनिचयंनवज्वरं। पाण्डुतामरुचिशोथसंचयम् ॥रेचनेचदधिभक्तभोजनं। वैद्यनाथसुकुमाररेचनं॥भाव्यंद्रव्यसमंक्वाथंक्वाथश्चाष्टावशेषितः ।

अर्थ–गंधक ४ मासे, पारा ४ मासे, दोनोंकी कजलीकर दो तोले कुटकीका चूर्णमिलावे, पीछे इसमें करेलेके रस वा त्रिफलाके काढेकी ३ भावना देकर मटरके समान गोलियां बनावे। रोगीके दोष और बलको विचार करेले के पत्तों वा पानके रसमें एक वा दो वा तीन अथवा चार गोली देवे, अथवा गरम जलके साथ देवे तो शूल, नवीनज्वर, पांडुरोग, अरुचि, सूजन, इन रोगोंको दूर करे. जब दस्त होवें तब दही, भात, भोजन करावे यह वैद्यनाथका कहा हुआ सुकुमार विरेचन है, द्रव्यके समान अन्य द्रव्यकी भावना देवे।

प्रतापमार्तंडरसः

त्रिषहिंगुलजैपालटंकणंक्रमर्गादितं ।
रसःप्रतापमार्तण्डसद्योज्वरविनाशनः ॥

अर्थ–विष, हींगलू, जमालगोटा और सुहागा प्रत्येक समान लेके जलसे घोट पीछे एक रत्तीकी गोली बनावे. यह प्रतापमार्तंडरसके सेवन करनेसे नवीनज्वर दूर होवे।

चंडेश्वररसः

रसंगन्धंविषंताम्रंमर्दयेदेकयामकम् ।
आर्द्रकस्वरसेनैवमर्दयेत्सप्तवारकम् ॥
निर्गुंड्याःस्वरसेपश्चान्मर्दयेत्सप्तवारकम् ।
गुंजैकार्द्ररसेनैवदत्तांहंतिज्वरंक्षणात् ॥
वातजंपित्तजंश्लेष्मद्विदोषजमपिक्षणात् ।
सुशीतलजलेस्नानंतृषार्थेक्षीरभोजनं ॥
आम्रंचपनसंचैवचंदनागुरुलेपनं ।
एतत्समोरसोनास्तिवैद्यानांहृदयंगमः ॥
एषचंडेश्वरोनामसर्वज्वरकुलांतकृत् ।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, और तांबा ये सब बराबर लेवे, सबको एक प्रहर खरलकर पीछे अदरकके रसकी सात भावना देवे. तथा निर्गुंडीके रसकी सात भावना देवे, पीछे १ रत्ती अदरकके रसके साथ देवे तो तत्कालज्वर दूर होवे. वातज, पितज, कफज, और द्विदोष जनितज्वर क्षणमात्रमें दूर होवें. शीतल जलसे स्नान करे, प्यासमें दूध पीवे, आम पनसको खाय, चन्दन और अगरका लेप करे. इस रसके समान वैद्योंका मन चुरानेवाला दूसरा रस नहीं है, यह चंडेश्वररस सर्वज्वरोंको दूर करता है।

अग्निकुमाररसः

मरिचोग्राकुष्ठमुस्तैःसर्वैरेवसमंविषं ।
पिष्ट्वाचार्द्ररसेनैववटिकारक्तिकामिता ॥
आमज्वरेप्रथमतःशुंठ्याचमधुपिष्टया ।
आर्द्रकस्यरसेनापिनिर्गुंड्याश्चकफज्वरे ॥
पीनसेचप्रतिश्यायेआर्द्रकस्यचवारिणा ।
अग्निमांद्येलवंगेनशोथेसदशमूलकः ॥
ग्रहण्यांसहशुंठ्याचदशमूल्यातिसारके ॥
सामेचधान्यशुंठीभ्यांपक्वेचकुटजंमधु ।
सन्निपातज्वरारम्भेपिप्पल्यार्द्रकवारिणा ॥
कंटकार्यारसैःकासेश्वासेतैलगुडान्वितम् ।
पीत्वावटीद्वयंरोगीस्वास्थ्यंसमुपगच्छति ॥

सर्वेषांमेवरोगाणामामदोषप्रशान्तये ।
अग्निवृद्धिकरोनाम्नाविख्यातोऽग्निकुमारकः

अर्थ–काली मिरच २ मासे, बच २ मासे कूठ २ मासे, मोथा २ मासे, विष ८ मासे ले, सबको अदरकके रसमें घोटकर १ रत्तीकी गोली बनावे । आमज्वरकी प्रथम अवस्थामें सोंठका चूर्ण और सहत इनके साथ देवे । कफज्वरमें निर्गुंडी और अदरकके रसके साथ देवे । पीनस, और सरेकमां रोगोंमें अदरकके रसके साथ देवे, मन्दाग्निमें लौंग के साथ देवे, सूजनमें दशमूलके काढेके साथ देवे. संग्रहणीमें सोंठके संग, अतिसारमें दशमूलके संग, आमातिसारमें धनिये सोंठके साथ, पक्वातिसारमें कुडाकी छालके काढे और सहतके साथ, सन्निपातज्वरके प्रारंभमें पीपर और अदरकके रसके साथ, खांसीमें कटेरीके काढेके साथ, श्वासमें तेल गुडके साथ देवे. दो गोली पीतेही स्वास्थ होवे. सर्व रोगोंके आमदोष दूर करनेको यह रस देवे, अग्निका वृद्धि करने वाला यह अग्निकुमार रस कहाता है इसकी दोरत्तीकी मात्रा है

ज्वरसिंहरसः

पारदंगन्धकंतालंभल्लातकमथैवच ।
वज्रीक्षीरसमायुक्तमेकत्रचविमर्दयेत् ॥
मृत्तिकाभाजनेस्थाप्यंमुद्रितव्यंविचक्षणैः ।
अग्निंज्वालयेत्तत्रप्रहरद्वयसंख्यया ॥
शीतलंखल्लयेत्तत्रभावनाचप्रदीयते ।
भृंगराजरसैस्तत्रगंडदूर्वाभवैरसैः ॥
चित्रकस्यरसेनापिभावनादीयतेपुनः ।
पश्चात्संचूर्णयेद्यत्नात्कूपिकायांचधारयेत् ॥
ज्वरमुत्पद्यतेयस्यचतुर्थेचापरेपुनः ।
माषैकंचरसंदेयंतत्क्षणान्नाशमेज्वरं ॥
ज्वरःशान्तेःपरंपथ्यंदेयंमुद्गौदनंपयः ।

अर्थ–पारा, गंधक, हरिताल, भिलावा, इन सबको बराबर लेकर, थूहरके दूधमें खरल करे, पीछे मिट्टीके वर्त्तनमें रख मुख बंदकर कपरमिट्टी करे, पीछे चूल्हे पर चढाकर दो प्रहर अग्नि देवे, पीछे शीतल होने पर खरल में डालकर भांगरेके रसकी भावना देवे, सफेद दूबके रसकी, चित्रकके रसकी, पृथक् २ भावना देवे, पीछे यत्न पूर्वक पीस कर सीसीमें भरकर धररक्खे, जिसको ज्वरआता हो उसको प्रथमके चार दिन त्यागकर पांचवे दिन अथवा छठे या सातवें दिन १ मासे रस देवे तो तत्क्षण ज्वरको दूर करे, जब ज्वर शांतहो जावे तब मूंग और भात तथा दूध पथ्य देना चाहिये ।

अचिन्त्यशक्तीरसः

रसगंधकयोर्ग्राह्यंप्रत्येकंमाषकद्वयम् ।
भृंगकेशाख्यनिर्गुंडीमंडूकीपत्रसुन्दरः ॥
श्वेतापराजितामूलंशालिश्वकाणमाविषम् ।
सूर्यावर्त्तःसितश्चैषांचतुर्माषकसम्मितैः ॥
प्रत्येकंस्वरसैःखल्वेशिलायामंवधानतः ।
स्वर्णमाक्षिकमाषश्चदत्वामरिचमाषकम् ॥
नैपालंताम्रदंडेनदद्यात्सरकज्जलद्युतिं ।
वटीमुद्गोपमाकार्य्याछायाशुष्कातुरक्षिता ॥
प्रथमेवटिकास्तिस्रःकृत्वानवशरावके ॥
ततःसमर्पणंसूर्य्येपूजयित्वाप्रणम्यच ।
वारिणागालयित्वातुपातुंदेयश्चरोगिणे ॥
स्वेदोपवासरचितेक्लान्तेचात्यबलेतथा ।
द्वितीयेन्हिवटीयुग्मंवटीमेकांतृतीयके ॥
यावन्तोवटिकादेयास्तावज्जलशरावकं ।
तृष्णायांचरसंदद्याज्जाङ्गलानांजलंतृपि ॥
लुलायदधिसंयुक्तंभक्तंभोज्यंयथेप्सितं ॥

लावपक्षीरसोदेयःसंस्कृतःसैंधवादिभिः ।
पथ्यमग्निबलंवीक्ष्यवारिभक्तरसंतथा ॥
शिरश्चलनशूलादौतैलंनारायणादिच ।

अर्थ–पारा, गंधक, प्रत्येक दो दो मासे लेकर दोनोंकी कजली करके भांगरा, खस, निर्गुंडी, ब्राह्मी, गोमा, सफेद्कोयलकी जड, कमलकंद, काकतुंडी, विष, सफेद हुरहुर प्रत्येक चारचार मासे औषधियोंके रसकी भावना देवे, पीछे सोनामक्खी १ मासा, कालीमिरच १ मासा, सबको तांबेके मूसलेसे घोटकर कजलीके समान करे । पीछे मूंगके समान गोली बनावे उनको छायामें सुखाकर अच्छीतरह रख छोडे, पहले दिन तीन गोली शरवामें रखकर जलमें घोले पीछे सूर्यका पूजन कर प्रणाम करे, और उस पूर्वोक्त गोलियोंके पानीको पी जावे, जिसने पसीना और उपवास किया हो तथा क्लेशित शरीर और अतिनिर्बली पुरुषको ३ गोली प्रथम दिवस देवे, दूसरे दिन २ गोली, तीसरे दिन १ गोली देवे. जितनी गोली देवे उतनीही सरैया जलकी देनी चाहियें. और प्यासमें जंगली जीवोंके मासका रस तथा शीतल जल देवे भैंसके दही, और भातका भोजन यथेच्छित करना चाहिये. लवा पक्षीके मांसके रसमें सैंधानिमक आदि मसाला मिलाकर देना चाहिये. अग्निका बलाबल देखकर पथ्य देना चाहिये. इसके सेवन करनेसे शिरका घूँमना, तथा मस्तकशूल होवे तो नारायणतैल आदिका मर्द्दन करावे ।

रससंगलोक्तोज्वरमुरारिरसः

शुद्धंसूतंशुद्धगंधंविषंचदरदंपृथक् ।
कर्षप्रमाणंकर्षार्द्धंलवंगंमरिचंपलं ॥ १ ॥
शुद्धंकनकबीजंचपलद्वयमितंतथा ।
तृवृताकर्षमेकंचभावयेद्दन्तिकाद्रवैः ॥ २ ॥
सप्तधाचततःकुर्य्याद्गुटींगुंजामिताशुभा ।
मुरारिज्वरनामायंरसोज्वरकुलांतकः ॥ ३ ॥
अत्यंताजीर्णपूर्णेचज्वरेविष्टंभसंयुते ।
सर्वांगग्रहणीगुल्मेचाम्लवातेम्लपित्तके ॥ ४ ॥
कासेश्वासेयक्ष्मरोगेऽप्युदरेसर्वसंभवे ।
गृध्रस्यांसंधिमज्जस्थेवातेशोथेचदुस्तरे ॥ ५ ॥
यकृतोप्लीहरोगेचवातरोगेचिरोत्थिते ।
अष्टादशेकुष्टरोगेसिद्धोगहननिर्मितः ॥ ६ ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, शुद्धविष, हींगलू, प्रत्येक १ तोला. लौंग ६ मासे, काली मिरच १ पल, शुद्ध धतूरेके बीज २ पल, निसोथ १ तोला, सबको एकत्रकर दंतीके काढेसे खरल करे. सात भावना देकर एक २ रत्तीकी गोली बनावे. यह ज्वरमुरारि रस सबज्वरोंको काल रूप है. अजीर्ण, संग्रहणी, गुल्म, आमवात अम्लपित्त, खाँसी, श्वास, खई, उदर, गृध्रसी, वादीकी सूजन, यकृत और प्लीहरोग, वादीके रोग, अठारह प्रकारका कुष्टरोग, इनको दूरकरे ।

ज्वरमुरारिरसः

हिंगुलंचविषंव्योषंटंकणंनागराभया ।
जयपालसमायुक्तंसद्योज्वरनिवारणम् ॥
सर्वचूर्णसमंजयपालचूर्णसर्वपिष्टाकलाय ।
प्रमाणावटीकार्य्या ॥

अर्थ–हिंगुल, विष, त्रिकुटा, सुहागा, सोंठ, हरड और जमालगोटा, इन सबको एकत्रकर पीसे, पीछे अदरकके रससे मटरके समान गोली बनावे. इसके सेवनसे नवीनज्वर दूर होय परन्तु जमालगोटा सब औषधियोंके समान लेना चाहिये ।

ज्वरकेशरीरसः

शुद्धंसूतंविषंव्योषंगन्धंत्रैफलमेवच ।
जयपालसमंकृत्वाभंगतोयेनमर्दयेत् ॥
गुंजामात्रावटीकार्य्याबालानांसर्षपाकृतिः ।
सितयाचसमंपीतापित्तज्वरविनाशनी ॥
मरिचेनप्रयुक्तासासन्निपातज्वरापहा ।
पिप्पलीजीरकाभ्यांचदाहज्वरविनाशिनी ॥
ज्वरकेशरिनामायंरसोज्वरविनाशकः ।

अर्थ–शुद्धपारा, विष, त्रिकुटा, गंधक, त्रिफला, और जमालगोटा, सब समान लेवे. भांगेरेके रससे खरल करे, पीछे एक २ रत्तीकी गोली बनावे. बालकके वास्ते सरसोंके समान गोली बनावे, मिश्रीके संग खाय तो पितज्वर दूर होवे. मिरचके संग देनेसे सन्निपातज्वर दूर होवे. पीपर जीरेके साथ खानेसे दाहज्वर दूर होवे. यह ज्वरकेशरीरस सर्वज्वरोंका नाश करता है ।

ज्वरभैरवोरसः

त्रिकटुत्रिफलाटंकविषगंधकपारदं ।
जयपालसमंमर्द्यंद्रोणपुष्पीरसैर्दिनं ॥
ताम्बूलेनसमंह्येतत्खादेद्गुंजामितांवटीं ।
मुद्गयूषंशिखरणीपथ्यंदेयंप्रयत्नतः ॥
नवज्वरंत्रिदोषोत्थंजीर्णंचविषमज्वरं ।
दिनैकेननिहंत्याशुरसोयंज्वरभैरवः ॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, सुहागा, विष, गंधक, पारा, और जमालगोटा, सबको समान लेकर गोमाके रससे १ दिन खरल करे. पानके साथ एक रत्तीकी गोली खानेसे नवीनज्वर, त्रिदोषज्वर, विषमज्वर, और जीर्णज्वर इन सब ज्वरोंको यह ज्वरभैरव रस १ दिनमें दूर करे. इसके ऊपर मूंगका यूष और शिखरण भोजन करना पथ्य है ।

अर्द्धनारीश्वरोरसः

रसगंधामृतंचैवसमंशुद्धंचटंकणं ।
मर्दयेत्खल्लमध्येतुयावत्स्यात्कज्जलप्रभं ॥१॥
नकुलारिमुखेक्षिप्त्वामृदासम्वेष्टयेद्बहिः ।
स्थापयेन्मृन्मयेपात्रेऊर्ध्वाधोलवणंक्षिपेत् ॥२
भांडवक्त्रंनिरुध्याथचतुर्यामंहठाग्निना ।
स्वांगशैत्यंसमुध्धृत्यखल्लेकृत्वातुकज्जलीं ॥३॥
गुंजामात्रंप्रदातव्यंनस्यकर्मणियोजयेत् ।
वामभागेज्वरंहन्तितत्क्षणाल्लोककौतुकम् ॥४
कुर्य्याद्दक्षिणभागेनचारोग्यंनिश्चितंभवेत् ।
गोप्याद्गोप्यतमंप्रोक्तंगोपनीयंप्रयत्नतः ॥५॥
अर्द्धनारीश्वरोनामरसोऽयंकथितोभुवि ॥६॥

अर्थ–पारा, गंधक, विष और सुहागा सबको समान ले खरलमें डाल कजली करे, जब कज्जलके समान होजावे तब इनको कालेसर्पके मुखमें भरे, ऊपर कपरमिट्टी देकर एक मिट्टीका पात्रले, प्रथम उसमें नोंन बिछाय उसमें पूर्वोक्त संपुट रख ऊपर फिर नोंन भर देवे. पीछे उस पात्रका मुख सरावसे बंदकर चूल्हे पर रख चार प्रहर तीव्र आंच देवे. जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाल खरलमें डाल कजली करे, १ रत्ती इस रसकी नाश देनी चाहिये वाए नथनेमें नास देनेसे तत्क्षण ज्वर दूर होवे. और दहने नथनेमें नास लेनेसे अरोग्य होय. यह अतिगोप्य किसीसे न कहे इसे अर्द्धनारीश्वर रस कहते है ।

श्रीरसराजः

भागैकंरसराजस्यभागैकंहेममाक्षिकं ।
भागद्वयंशिलायाश्चगन्धकस्यत्रयोमताः ॥१॥
तालकोऽष्टादशोभागोशुल्वस्याद्भागपंचकं ।
भल्लातकस्त्रयोभागाःसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥२॥
वज्रीक्षीरेप्लुतंकृत्वाद्दढेमृन्मयभाजने ।
विधायसुदृढांमुद्रांपचेद्यामंचतुष्टयम् ॥ ३ ॥

स्वांगशीतंसमुद्धृत्यखल्लयेत्तुदृढंपुनः ।
गुंजाचतुष्टयंचास्यपर्नखण्डेनदापयेत् ॥ ४ ॥
रसराजःप्रसिद्धोयंज्वरमष्टविधंजयेत् ।

अर्थ–पारा १ तोले, सोनामक्खी १ तोले, मनासिल २ तोले, गंधक ३ तोले, हरताल १८ तोले, तांबेकी भस्म ९ तोले, भिलाये ३ तोले, सबको एकत्रकर चूर्ण करे. पीछे थूहरके दूधमें खरल करे सराव संपुटमें रख कपरमिट्टी चढाय ४ प्रहर पचावे, जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाल खरलमें डालकर घोटे, इस रसको ४ रत्ती नागरवेल पानके रसमें देवे तो यह रसराज प्रसिद्धि रस आठ प्रकारके ज्वरोंको दूर करे ।

मुद्रोत्घाटकोरसः

पारदंगन्धकश्चैवत्रिक्षारंलवणत्रयं ।
गुग्गुलुर्वत्सनाभंचप्रत्येकंतुद्विमाषकं ॥
कृष्णोन्मत्तजटानीरैर्भावयेत्सप्तवारकम् ।
गोक्षुरेन्द्रकुमारीपकरंजंचित्रतेजिका ॥
भूकुरुवकलताभिश्चत्रिफलाबृहतीरसैः ।
मर्दितावटिकाकार्य्याकृष्णलाफलसन्निभा ॥
ततोवटीद्वयंदत्वायत्नैःवस्त्रादिभिर्वृतः ।
रसःसर्वज्वरंहन्तिक्षणमात्रान्नसंशयः ॥

अर्थ–पारा २ मासे, गंधक २ मासे, तीनों खार, प्रत्येक दो दो मासे, तीनोंनोंन प्रत्येक दो २ मासे, गूगल २ मासे, विष २ मासे सबको काले धतूरेके रसमें खरल करे. सात वार उसीप्रकार गोखरू, इन्द्रजौ, घिगुआर, चौलाई, और कंजाके बीज, चीतेकी छाल, लताकुटकी, लालफूलका पियावांसा, त्रिफला, और कटेरीके काढेसे पृथक् २ भावना देकर एक २ रत्तीकी गोली बनावे, दो गोली अदरकके रससे देवे, जब रोगी इस औषधिको सेवन करचुके तब कपडोंसे ढककर सुलादेवे, तो शीघ्रही ज्वर दूर होवे ।

शीतारिरसः

पारदंगन्धकंटंकंशुल्वंचूर्णसमंसमं ।
पारदाद्विगुणंदेयंजैपालंतुपवर्जितं ॥
सैंधवंमरिचंचिंचात्वक्भस्मशर्करापिच ।
प्रत्येकंसूततुल्यंस्याज्जंबीरैर्मर्दयेदिनम् ॥
द्विगुंजंतप्ततोयेनवातश्लेष्मज्वरापहः ।
रसःशीतारिनामायंशीतज्वरहरःपरः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सुहागा, तांबा, प्रत्येक एक २ भाग लेवे. और पारेसे दूना जमालगोटा लेवे, सैंधानोंन १ भाग, काली मिरच १ भाग, इमलीकी छालकी भस्म १ भाग, मिश्री १ भाग सबको एकत्र कर जंबीरीके रसमें १ दिन घोटे, पीछे दो रत्तीके प्रमाण गोली बनावे. एक गोली गरम जलसे लेवे तो वातकफज्वर दूर होवें. यह शीतारि नामा रस शीतज्वरको हरण करता है ।

त्र्याहिकारिरसः

रसकेनसमंशंखशिखिग्रीवंचपादिकम् ॥
गोजिव्हयाजयन्त्याचतन्दुलीयैश्चभावयेत् ।
प्रत्येकंसप्तसप्ताथशुष्कंगुंजाचतुष्टयं ॥
जरणेनघृतेनाद्यात्त्र्याहिकज्वरशान्तये ।
अत्ररसकंखर्परंशिखिग्रीवंतूतियाद्वयोपादांशं

अर्थ–खपरिया और शंख दोनोंको समान लेकर दोनोंको चतुर्थांश तूतिया लेवे, तीनोंको गोभी, अरनी, चौलाई, प्रत्येकके रसकी पृथक् २ सात २ भावना देवे, पीछे सुखाकर ४ रत्तीकी मात्रा पुराने घृतके साथ देवे तो तिजारी दूर होवे ।

चातुर्थकारीरसः

हरितालंशिलातुत्थंशंखचूर्णंचगंधकं ॥

समांशंमर्दयेत्प्राज्ञःकुमारीरससंयुतं ।
शरावसंपुटेकृत्वादत्वागजपुटेपचेत् ॥
कुमारिकारसेनैवंवल्लमात्रावटीकृता ।
दत्ताशीतज्वरंहन्तिचातुर्थकविशेषतः ॥
मरीचघृतयोगेनतक्रंपीत्वाचरेद्वटीम् ।
एतयावमनंभूत्वाज्वरस्तस्माद्विनश्यति ॥

अर्थ-हरिताल, मनसिल, लीलाथोथा, शंखकीभस्म, गंधक सब समान लेवे. सबको घीगुवारके रसमें खरलकर सराव संपुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे. पीछे उसको निकाल घीगुवारके रसमें घोट दो रत्तीकी गोली बनावे इस रसके देनेसे शीतज्वर दूर हो, और विशेष करके चातुर्थक ज्वरको शीघ्र दूर करे. मरिच और घृतके योगसे और छाछके अनुपानसे गोली खाय, इसके खानेसे वमन होती है बस वमन होतेही तत्काल ज्वर दूर होवे.

रात्रिज्वरेविश्वेश्वरोरसः

पारदंरसकंगन्धंतुल्यांसम्मर्दयेद्रसं ।
अश्वत्थजेत्र्यहंपच्याद्रसेकोलकमूलजे ॥
निदग्धिकारसेकाकमाचिकायांरसेतथा ।
द्विगुंजावात्रिगुंजावागोक्षीरेणप्रदापयेत् ॥
रात्रिज्वरंनिहंत्याशुनाम्नाविश्वेश्वरोरसः ।

अर्थ-पारा, खपरिया, गन्धक, तीनों बराबर लेवे. सबको पीसकर पीपलकी जडके रस, कटेरीकी जडके रस, मकोयके रस प्रत्येकमें तीन २ दिन खरल करे, पीछे दो वा तीन रत्तीके प्रमाण गौके दूधमें देवे तो रात्रिज्वरको शीघ्र दूर करे इसका नाम विश्वेश्वर रस है ।

विक्रमकेशरीरसः

शुल्बमेकंद्विधातारंमर्दयेद्विधिवद्भिषक् ।
पश्चाद्विषंरसंगन्धंमेलयित्वातुभावयेत् ॥
एकविंशतिवारांश्चनिंबूकवल्कलद्रवैः ।
रसःसिद्धःप्रदातव्योगुंजामात्रःज्वरांतकृत् ॥
सर्वज्वरहरःख्यातोरसोविक्रमकेशरी ।

अर्थ-तांबा १ भाग, चांदी २ भाग, दोनोंको खरल करे. पीछे विष १ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, सबको खरल करनीबू रसकी २१ भावना देवें, तो यह रस सिद्धि होवें, १ रत्ती खानेसे सर्वज्वर दूर होवें इस रसको विक्रमकेशरीरस कहते हैं ।

✓ ज्वरकालकेतुरसः

रसंविषंगन्धकताम्रकंचमनःशिलारुप्करतालकंच । विमर्द्यवज्रीपयसासमांशंगजाह्वयेत त्रपुटंविदध्यात् ॥ १ ॥ द्विगुंजमस्यैवमधुप्रयुक्तंज्वरंनिहंत्याष्टविधंमहोग्रं। पुराभवान्यैःकथितोभवेननृणांहितायज्वरकालकेतुः २॥

अर्थ-पारा, विष, गंधक, तांवा, मनसिल, भिलाया, हरिताल, सबको थूहरके दूधमें खरल कर सराव संपुटमें रख गजपुटमें फूंक देवे. २ रत्ती शहतके संग खाय तो आठ प्रकारके ज्वर दूर होवें. यह कालकेतु रस पहले श्रीशिवजीने मनुष्योंके कल्याणार्थ पार्वतीजीसे कहा था ।

त्रिपुरारिरसः

दरदोत्थन्तुसंशुद्धंरसंताम्रंचगन्धकं ।
क्वाथेनमेघनादस्यसर्वंकुर्य्यात्समांशकं ॥
रसार्द्धमृतरूप्यंचशृंगवेराम्बुमर्दितं ।
द्विगुंजंमधुनादेयंसितयार्द्ररसेनवा ॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिवारिदोषभवंतथा ।
प्लीहानमुदरंशोथमतीसारंविनाशयेत् ॥
रोगानेतान्निहंत्याशुत्रिपुरंशंकरोयथा ।

अर्थ-हिंगुलोत्थपारा, तांबा, गंधक, लोह भस्म, अभरक, विष, प्रत्येक एक २ तोला

लेवे. रूपरस आधा तोला लेवे, सबको एकत्र कर अदरकके रसमें खरलकर दो रत्तीकी गोली बनावे, १ गोली शहत अथवा मिश्री वा अदरकके रसके साथ देवे तो आठ प्रकार के ज्वर अथवा दुष्टजल जनित ज्वर, प्लीह, उदर, सूजन, और अतिसार इनको दूर करे जैसे शिवने त्रिपुरको मारा इस प्रकार यह रोगोंको दूर करता है ।

मेघनादरसः

तारंकाश्यंमृतंताम्रंत्रिभिस्तुल्यंचगन्धकम् ।
क्काथेनमेघनादस्यपिष्ट्वारुध्वापुटेपचेत् ॥
षड्भिःपुटैर्भवेत्सिद्धोमेघनादोज्वरापहः ।
भक्षयेत्पर्णखण्डेनविषमज्वरनाशनः ॥
अस्यमात्राद्विगुंजास्यात्पथ्यंदुग्धोदनंहितं ।
नागरातिविषामुस्तभूनिंबामृतवत्सकैः ॥
सर्वज्वरातिसारघ्नंक्काथमस्यानुपाययेत् ।
तरुणंवाज्वरंजीर्णंतृष्णादाहंचनाशयेत् ॥

अर्थ–चांदी, कांसा, तांबेकी भस्म, प्रत्येक एक २ तोला, लेवे. गंधक ३ तोला, सबको चौलाईके काढेमें पीस गजपुटमें रख फूंक देवे. इस प्रकार ६ पुट देनेसे मेघनादरस सिद्धि होता है इस रसको पानके साथ खाय तो विषमज्वर दूर होवे. इस रसकी मात्रा दो रत्तीकी है तथा सोंठ, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, और कुडाकी छाल यह सर्व ज्वरातिसारघ्नकाथ इसके ऊपर पिलाना चाहिये, तरुणज्वर, अथवा जीर्णज्वर दाह और तृष्णा इन सबको दूर करै.

जयमंगलोरसः

हिंगुलंसंभवंसूतंगन्धकंटंकणंतथा ।
ताम्रंवङ्गंमाक्षिकंचसैन्धवंमरिचंतथा ॥ १ ॥
समंसर्वंसमुधृत्यद्विगुणंस्वर्णभस्मकं ।
तदर्द्धंकांतलोहंचरूप्यभस्मंचतत्समं ॥ २ ॥
एतत्सर्वंविचूर्ण्याथभावयेत्कनकद्रवैः ।
शेफालिदलजैश्चापिदशमूलरसेनच ॥ ३ ॥
किराततिक्तककाथैस्त्रिवारम्भावयेत्सुधीः ।
भावयित्वाततःकार्यागुंजाद्वयमितावटी ॥४॥
अनुपानप्रयोक्तव्यंजीरकंमधुसंयुतं ।
जीर्णज्वरमहाघोरंचिरकालसमुद्भवं ॥ ५ ॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा ।
पृथक्दोषांश्चविविधान्समस्तान्विषमज्वरान् ॥ मेदोगतंमांसगतंमस्थिमज्जगतंतथा ।
अन्तर्गतंमहाघोरंवहिस्थंचविशेषतः ॥ ७ ॥
नानादोषोद्भवंचैवज्वरंशुक्रगतंतथा ।
निखिलंज्वरनामानंहन्तिश्रीशिवशासनात् ॥
जयमंगलनामायंरसःश्रीशिवनिर्मितः ।
वलपुष्टिकरश्चैवसर्वरोगनिवर्हणः ॥ ९ ॥

अर्थ–हिंगुलसे निकाला हुआ पारा १ तोला, गंधक १ तोला, सुहागा १ तोला, तांबेकी भस्म १ तोला, वंगभस्म १ तोला, सोनामक्खीकी भस्म १ तोला, सैंधानोंन १ तोला, काली मिरच १ तोला, सोनेकी भस्म २ तोला, कांतलोहकी भस्म १ तोला, रूपेकी भस्म १ तोला, सबको एकत्रकर धतूरेके रसकी भावना देवे, निर्गुंडीके रसकी, तथा दशमूलके काढेकी, चिरायता और कुटकीके काढेकी, पृथक् २ तीन २ भावना देवे । पीछे २ रत्तीकी गोली बनावे । इस गोलीको जीरे और शहतके साथ देवे, तो घोर, जीर्णज्वर, अति प्राचीन तथा आठ प्रकारके ज्वर, साध्य असाध्य सब प्रकारके ज्वर नष्ट हो । मेदोगत, मांसगत, अस्थिगत, मज्जागत, और शुक्रगतज्वर तथा अनेक दोषोंसे होने वाले सर्व प्रकारके ज्वर दूर होवें यह शिवका नि-

र्माण किया हुआ जयमंगल रस है बलकरे, पुष्टिकरे, और सर्व रोगोंको दूर करे ।

ज्वरकुंजरपारीन्द्ररसः

मूर्च्छितंरसकर्षैकंतदर्धंजारिताभ्रकम् ।
तारंताप्यंचरसजंरसकंताम्रकंतथा ॥
मौक्तिकंविद्रुमंलोहंगिरिजंगैरिकंशिला ।
गन्धकंहेमसारंचपलार्द्धंचपृथक्पृथक् ॥
क्षीरावीसुरवल्लीचशोथघ्नीगणिकारिका ।
तामलाज्योत्स्निकाचैवसतिक्तातुसुदर्शना ३
अग्निजिव्हापूतितैलागृध्रपर्णीप्रसारणी ।
प्रत्येकंस्वरसंदत्वामर्दयेत्त्रिदिनावधि ॥४॥
भक्षयेत्पर्णखण्डेनचतुर्गुंजाप्रमाणतः ।
महाग्निकारकोरोगशंकरघ्नःप्रयोगराट् ॥५॥
सततंसततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकान् ।
ज्वरान्सर्वान्निहंत्याशुभास्करस्तिमिरंयथा
कासंश्वासंप्रमेहंचसशोथंपांडुकामलाम् ॥
ग्रहणीक्षयरोगंचसर्वोपद्रवसंयुतम् ॥ ७ ॥
ज्वरकुंजरपारीन्द्रःपृथितःपृथिवीतले ।

अर्थ—मूर्च्छित पारा २ तोले, अभ्रककी भस्म १ तोला, रूपेकी भस्म, सोनामक्खीकी भस्म, खपरिया (अथवा रसोजन) सीसकी भस्म, ताम्र भस्म, मोतीकी भस्म, मूंगाकीभस्म लोह भस्म, शिलाजीत, गेरू, मनसिल, गंधक हेमसार (अत्युत्तम सुवर्णकेवर्क) अथवा कोई २ तूतिया कहते है ये सर्व वस्तू प्रत्येक चार २ तोला लेवे, और सबको एकत्र कर दुद्धी, तुलसी, पुनर्नवा (सांठ) अरनी, भूय आंवला, तोरईकी वेलका रस, चिरायता, सुदर्शना, कलयारी, लताकुटकी, मुद्गपर्णी, और प्रसारणी, इनके रससे तीन दिन खरल कर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे, एक गोली पानके साथ खाय तो अग्निको प्रज्ज्वलित करे, संकर रोगोंको नष्ट करे. सतत, संतत, अन्येद्यु, तृतीयक, और चातुर्थकादि सब्रज्वरों का नाश करे जैसे सूर्यकी किरण अंधकारका नाश करे।

विद्यावल्लभोरसः

रसम्लेच्छशिलातालश्चंद्रद्व्यग्न्यार्कभागिकाः
पिष्ट्वातान्सुखवीतोयैस्ताम्रपात्रोदरेक्षिपेत् ॥
न्यस्तंशरावेसंरुध्वावालुकायंत्रगंपचेत् ।
स्फुटंतिव्रीहयोयावत्तच्छिरस्थाशनैःशनैः २
संचूर्ण्यशर्करायुक्तंद्विवल्लंभक्षयेत्ततः । विष
माख्यान्ज्वरान्हंतितैलाम्लादिविवर्जयेत् ॥

अर्थ—शुद्ध पारा, शुद्ध हींगलू, मनसिल, हरिताल, क्रमसे १ भाग, दोभाग, तीन भाग, और १२ भाग लेवे. सबको करेलेके रसमें पीस तांबेके पात्रमें भरे. ऊपर शराव ढककर कपरमिट्टी कर वालुकायंत्रमें पचावें । बालूके ऊपर धान रख देवे । जब धान खिलजावें तब चूल्हेसे उतार खरल करके पीछे इसमेंसे ४ रत्ती चीनीके साथ नित्य भक्षण करे तो सर्व विषमज्वरोंको दूर करे । इस पर तेल खटाई आदिको न खावे ।

शीतारिरसः

कूष्मांडक्षारचूर्णोदकतिलजपृथक्पाचितंशु द्धतालं । तुल्यंसूतेनपिष्ट्वात्रिदिवसमसकृत् कारवेल्लीरसेन ॥ क्षिप्त्वातत्खर्परांतर्दिनप तिपिहितंरंध्रमप्यंधयेत्तम् । नोरंध्रंचूर्णपथ्या गुडलवणखटीमृद्भिरप्यन्तरालं ॥ १ ॥ तद्वालुकापूर्णघटेविदध्याच्छनैःपचेत्तावदुपर्य मुष्य । व्रीहिर्विवर्णत्वमुपैतियावत्ततस्तुशीतंविदधीतचूर्णं ॥ २ ॥ सिद्धंतचसमाददीततुलसीतोयेनवल्लोन्मितं । पश्चात्क्षौद्रकणासिताज्वपयसाकृत्वानुपानंगदी ॥ भुंजीता

थपयोऽन्नमुद्गसहितंसाम्यंचहन्यान्नृणां । तापं कालवशेनसंचितमयंशीतारिनामारसः॥३॥

अर्थ–पेठेके खारमें, चूनेके जलमें, और तिलके खारमें जल मिलाकर पृथक् २ हरिताल को पचावे. इस प्रकार शुद्ध हरिताल लेवे. उसमें बराबरका पारा मिलाय तीन दिन करेले के रसमें खरल करे, पीछे उसको शराव संपुटमें बन्दकर उस शरावके मुखको तांबेके पात्रसे बंदकरे. और उसके छिद्रोंको हरडके चूर्ण, गुड, नोन, खडिया, और मुल्तानीमिट्टी इन सबको मिलाकर इससे बंदकरे, पीछे इस पात्रको वालुकायंत्रमें रखकर भट्टीपर चढाकर पचावे, और इस पात्रके मुखपर धान बखेर देवे. जब धान खिलजावें तब उतार लेवे. और उसमेंसे रसको निकाल लेवे. इस रसमेंसे दो रत्ती तुलसीके रसके साथ देवे । पीछे शहत, पीपर, मिश्री, मक्खन, मिलाहुआ दूध पीवे. पथ्य दूध, अन्न, मूंगका यूप और घृत है. इस रसके सेवन करनेसे बहुत दिनकाभी संचितज्वर नष्ट होवे ।

ज्वरशूलहरोरसः

रसगन्धकयोःकृत्वाकज्जलींभाण्डमध्यगं ।
तत्राधोवदनांताम्रपात्रींरुध्यशोपयेत्॥१॥
पादांगुष्ठप्रमाणेनचुल्लांज्वालेनतांदहेत् ।
यामद्वयंततस्तस्थंरसपात्रंसमाहरेत् ॥ २ ॥
चूर्णयेद्रक्तियुगलंतृतीयंवाविचक्षणः ।
ताम्बुलीदलयोगेनदद्यात्सर्वज्वरेष्वमुम् ॥३
जीरसैन्धवसंलिप्तवक्त्रायज्वरिणेहितं ।
स्वेदोद्गमोभवत्येवदेविसर्वेषुपाप्मसु ॥ ४ ॥
चातुर्थकादीन्विपमान्वमागामिनंज्वरं ।
साधारणंसन्निपातंजयत्येवनसंशयः ॥ ५ ॥

अर्थ–पारा, गंधक दोनोंकी कजलीकर एक पात्रके बीचमें भरके उसके ऊपर औंधेमुख तांबेके कटोरी ढक देवे, उसके ऊपर कपर मिट्टी कर धूपमें सुखा लेवे. पीछे उसको चूल्हेपर चढाकर उसके नीचे पैरके अंगूठेके समान मोटी लकडीकी अग्नि जलावे, दो प्रहर अग्नि देवे. जब स्वांग शीतल होजाय तब उतार उसमेंसे दो वा तीनरत्ती रसले पीसकर पानमें सर्वज्वर मात्रमें देवे. प्रथम ज्वरवाले मनुष्यका मुख जीरे और सेंधेनोनसे लिप्त कराकर पीछे इस रसको देवे. इस रसके सेवन करनेसे पसीनेके आतेही चातुर्थकादि सर्व विपमज्वर नाश होवें. और साधारण सन्निपातभी दूरहो ।

षडाननोरसः

आरंकांश्यंमृतंताम्रंदरदंपिप्पलीविषं ।
तुल्यांशंमर्दयेत्खल्लेयामंचगुडचीरसैः ॥ १ ॥
गुंजामात्रंरसंदेयंगुंजामात्रंलिहेत्सदा ।
ज्वरंमन्दानलंचैववातपित्तज्वरेषुच ॥ २ ॥
ज्वरेवैपम्यतरुणेजीर्णेचैवविशेषतः ।
मुद्गान्नंमुद्गयूपम्वातक्रभक्तंचकेवलं ॥ ३ ॥
नारिकेलोदकंदेयंमुद्गपथ्यंविशेषतः ।
षडाननोरसोनामसर्वज्वरकुलान्तकृत् ॥४॥

अर्थ–पीतलकी भस्म १ तोला, कांसेकी भस्म १ तोला, तांबेकी भस्म १ तोला, हींगलू १ तोला, पीपल १ तोला, सिंगियाविष १ तोला, सबको खरलमें डाल गिलोयके रससे एक प्रहर घोटे । इसकी एक २ रत्तीकी गोली बनाकर १ गोली नित्य खाया करे तो ज्वर, मन्दाग्नि, वातपित्तज्वर, विपमज्वर, तरुणज्वर, और जीर्णज्वर नष्ट होवें। पथ्य मुद्गान्न तथा मूंगका यूप छाछ और भात देवे तथा नारियलका जल देवे. और मूंगका पथ्य वि-

शेष करके देना चाहिये. यह षडाननरस सर्व ज्वरोंके कुलको काल रूप है ।

कल्पतरुरसः

रसंगन्धंविषंताम्रंसमभागंविचूर्णयेत् ।
भावयेत्पंचभिःपित्तैःक्रमशःपंचवासरं ॥ १ ॥
निर्गुंडीस्वरसेनैवमर्दयेत्सप्तवासरं ।
आर्द्रकस्यरसेनैवभावयेच्चत्रिधापुनः ॥ २ ॥
सर्षपाभावटीकार्य्याछाययापरिशोषिता ।
ततःसप्तवटीयोज्यायावन्नत्रिगुणाभवेत्॥३॥
वयोऽग्निदोषकंबुध्वाप्रयोज्याभिषजाम्वरैः ।
अनुपानंचोष्णजलंकज्जलीपिप्पलीयुतम्॥४
पानावशेषेमस्त्राप्यवस्त्रैराच्छादयेन्नरम् ।
घर्म्माभ्यगमनंयावत्ततोरोगात्प्रमुच्यते॥५॥
रोगिणंस्नापयित्वातुभोजयेत्ससितंदधि ।
एषकल्पतरुर्नामरसःपरमदुर्लभ ॥ ६ ॥
असाध्यंचिरकालोत्थंजीर्णंचविषमज्वरं ।
हन्तिज्वरातिसारौचग्रहणींपाण्डुकामलाम्॥७
नदेयःश्वासकासेचशूलयुक्तनरेतथा ।
गोपनीयंप्रयत्नेननदेयोयस्यकस्यचित्॥८॥

अर्थ—पारा, गंधक, सिंगियाविष, और तांबेकी भस्म, सब बराबर लेवे । सबको खरलमें डाल पांच दिन पांच पित्तोंकी भावना देवे पीछे संभालूके रससे सातदिन खरल करे, तथा अदरकके रसकी तीन भावना देवे । पीछे सरसोंके समान गोली बनावे, और छायामें सुखा लेवे इक्कीस दिन पर्य्यंत नित्य सेवन करे, बलाबल देखकर सातसे बढावे, इसके ऊपर पारे गंधककी कजली और पीपलका चूर्ण गरमजलके साथ देवे । औषधि खाकर कपडा ओढकर सोजावे । पसीनोंके आतेही रोगसे रोगी छूट जावे । पीछे रोगीको शीतलजलसे न्हिलाकर मिश्री दही भोजन करावे, यह कल्पतरु नाम रस परम दुर्लभ है असाध्य बहुत कालके पुराने विषमज्वरको ज्वरातिसारको, संग्रहणी, पांडु, कामला, इन सब रोगोंको नष्ट करे । इस रसको श्वास, खांसी और शूल वाले रोगीको न देवे इस रसको वैद्य किसीको न बतावे गुप्त रक्खे ।

तालांकोरसः

तालकस्यचभागौद्वौभागन्तुत्थस्यशुक्तिका ।
चूर्णकानांचतुर्भागंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ १ ॥
यामैकेनततःपश्चात्रुध्यागजपुटेपचेत् ।
अस्यगुंजाद्वयंहन्तिवातिकंपैत्तिकंज्वरं ॥ २ ॥
शीतज्वरंविशेषेणतृतीयकचतुर्थकौ ॥ ३ ॥

अर्थ—हरिताल २ तोला, तूतिया १ तोला, सीपकीभस्म ४ तोला, सबको एकत्रकर घीगुवारके रससे एक प्रहर खरलकरे; पीछे सरवा संपुटमें रख कपरमिट्टीकर गजपुटमें फूंक देवे. इस रसको १ रत्ती खायतो वातिकज्वर, पैत्तिकज्वर, शीतज्वर और विशेष करके तृतीयक और चातुर्थिकज्वर दूर होवें ।

ज्वरारिअभ्रकम्

अभ्रंताम्रंरसंगन्धंविषंपंचेतिसमंसमं ।
द्विगुणंधूर्त्तबीजंचव्योषंपंचगुणंमतं ॥ १ ॥
जलेनवटिकाकुर्याद्यथादोषानुपानतः ।
अभ्रंज्वरारिनामेदंसर्वज्वरविनाशनम्॥२॥
वातिकान्पैत्तिकांश्चैवश्लैष्मिकान्सन्निपातकान् । विषमाख्यान्द्वंद्वजांश्चधातुस्थान्द्विषमज्वरान् ॥ ३ ॥ नाशयेन्नात्रसन्देहोवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा । प्लीहानंयकृतंगुल्ममग्निमांद्यंसशोथकम् ॥ ४ ॥ कासंश्वासंतृषाकम्पंदाहंशीतंवमिंभ्रमिम् ॥

अर्थ—अभ्रक, ताम्रभस्म, पारा, गंधक, और विष ये सब वस्तु दो २ मासे लेवे. और

धतूरेके बीज ४ तोला लेवे. त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) १० तोले लेवे. सबको जलमें पीसकर एक रत्तीके सदृश गोली बनावे. दोषानुसार इसको पृथक् २ अनुपानसे देवे, तो यह ज्वरारि नामक अभ्रक सर्व ज्वरोंको नष्ट करे. वातिक, पैत्तिक, कफजन्य, सन्निपातज, विषमज्वर, द्वंद्वज, धातुस्थ, सर्व विषमज्वरोंको दूर करे. जैसे इन्द्रका वज्र वृक्षोंका नाश करता है। प्लीहरोग, कलेजेके रोग, गुल्मरोग, मन्दाग्नि, सूजन, श्वास, खांसी, प्यास, कंप, दाह, शीत, वमन, और भ्रमरोग, इन सबके यह ज्वरारिअभ्रक नाश करनेवाला है।

जीवनानन्दाभ्रम्.

वज्राभ्रंमारितंकृत्वाकर्षयुग्मंविचूर्णयेत् ।
जीरंकनकबीजंचकर्षंवासारसेनच ॥ १ ॥
कंटकारीरसेनैवधात्रीमुस्तरसेनच ।
गुडूच्यास्तरसेनैवपलांशेनपृथक्पृथक् ॥ २॥
मर्दयित्वावटीकार्य्यागुंजामात्राप्रयोजिता।
विषमाख्यान्ज्वरान्सर्वान्प्लीहानंयकृतंव मिं।३।रक्तपित्तंवातरक्तंग्रहणींश्वासकासकौ।
अरुचिंशूलहृल्लासावर्शांसिचविनाशयेत् ।।४
जीवनानन्दनामेदमभ्रंवृष्यबलप्रदं ।
रसायनंवरंश्रेष्ठमग्निसंदीपनंपरं ॥ ५ ॥

अर्थ–वज्राभ्रककी भस्म कर ४ तोला लेवे. जीरा दो तोला, धतूरेके बीज दो तोला, सबको एकत्र कर चूर्ण कर अडूसा, कटेरी, आंवला, नागरमोथा और गिलोय इन प्रत्येकके एक २ पल रसमें पृथक् २ मर्दन करे, पीछे एक २ रत्तीके प्रमाण गोली बनावे यह १ गोली विषमज्वरवाले रोगीको देवे तो सर्व विषमज्वर दूर होवे. तापतिल्ली, यकृत, वमन, रक्तपित्त, वातरक्त, संग्रहणी, श्वास, खांसी, अरुचि, शूल, हृल्लास (सूखीरद्) बवासीर इन सबको नष्ट करे। इस अभ्रकको जीवनानन्द अभ्रक कहते हैं, यह वीर्यकर्ता, बलकर्ता है. सर्व रसायनोंमें श्रेष्ठ है और अग्निको दीप्त करता है।

चन्दनादिलोह.

रक्तचन्दनन्हीवेरंपाठोशीरकणाशिवा ।
नागरोत्पलधात्रीभिःत्रिमदेनसमन्वितः १
लोहोनिहन्तिविविधान्समस्तान्विषमज्वरा न्। त्रिमदंमुस्तकंचित्रकविडंगंसर्वसमंलोहं २
ॐअमृतोद्भवायस्वाहा।इतिमंत्रेणमर्दनम्।ॐ अमृतेहुं ॥ इतिमंत्रेणभक्षणं । द्वादशद्रव्यसमं लोहम् ॥ रक्तिकाद्वयंमधुनालिहेत् । पश्चात्मुस्तकानुचर्वणंकर्त्तव्यम् वृद्धोपदेशात् ॥

अर्थ–लालचंदन, नेत्रवाला, पाढ, खस, पीपल, हरड, सोंठ, कमलगट्टा, आंवले, मोथा, चीता, और वायविडंग सब बराबर लेवे. और सबकी बराबर लोहभस्म, (सार) लेवे. यह लोह सर्व विषमज्वरोंको नाश करता है. इसकी मात्रा दोरत्तीकी शहतके साथ खाय. पीछे मोथाको चबावे,यह वृद्ध पुरुषोंकी संमतिहै।

श्लेष्मशैलेन्द्रोरसः

गन्धकंपारदंचाभ्रंभूपर्णंजीरकद्वयम् ।
शटीशृंगीयवानीचपुष्करंरामठंतथा ॥ १ ॥
सैंधवंयावशूकंचटंकणंगजपिप्पली ।
जातिकोषाजमोदाचलोहंयासलवंगकम् ॥२
धत्तूरबीजंजयपालंकट्फलंचित्रकंतथा ।
प्रत्येकंकार्षिकंचैषांश्लक्ष्णचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥३
पाषाणेविमलेपात्रेचूर्णंपाषाणमुद्गरैः ।
बिल्वमूलरसंदत्वाचार्कचित्रकदन्तिका ॥ ४
शिखरीकांजिकावासानिर्गुंडीगणकारिका ।
धत्तूरकृष्णजीरंचपारिभद्रकपिप्पली ॥ ५ ॥

कंटकार्य्यार्द्रयोश्चैवमूलान्येतानिदापयेत् । एषांमूलरसंदत्वाघृष्टमातपशोषितं ॥ ६ ॥ गुंजाप्रमाणावटिकांकारयेत्कुशलोभिषक् । चतुर्विषवटींखादेन्नित्यमार्द्रकवारिणा॥७॥ उष्णतोयानुपानेनश्लेष्मव्याधिंव्यपोहति । विंशतिश्लेष्मकांश्चैवशिरोरोगांश्चदारुणान् ॥ ८ ॥ प्रमेहान्विंशतिंचैवपंचगुल्मनिषूदनम् । उदरान्यंत्रवृद्धिंचाप्यामवातविनाशनम् ॥ ९ ॥ पंचपाण्डुामयान्हन्तिकृमिस्थौल्यामयापहं । सोदावर्त्तज्वरंकुष्ठंगात्रकंडूामयापहम् ॥ १० ॥ यथाशुष्केन्धनेवन्हिस्तथावन्हिविवर्द्धनः । श्लेष्मामयिकृपाहेतोरसेन्द्रोमुनिभाषितः ॥ ११ ॥ श्लेष्मशैलेन्द्रकोनामरसेन्द्रगुटिकास्मृता ।

अर्थ—गंधक, पारा, अभ्रककी भस्म, त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) सफेदजीरा, कालाजीरा, कचूर, काकडाशृंगी, पोहोकरमूल, हींग, सैंधानमक, जवाखार, सुहागा, गजपीपल, जायफल, अजमोद, लोह, जवासा, लोंग, धतूरेके बीज, जमालगोटा, कायफर, चित्रक, प्रत्येक चार ४ टंक लेवे. सबका सूक्ष्म चूर्णकर स्वच्छ पाषाणके खरलमें डाल मूसलेसे घोटे, वेलकीजडके रसमें, आक, चित्रक, दन्ती, चिरचिटा, कांजी, अडूसा, निर्गुंडी, अरनी, धतूरा, कालाजीरा, इनके रसमें तथा पीपल, कटेरी, अदरक, इनके रसमें पृथक् २ भावना देकर धूपमें सुखा लेवे. एक रत्तीके प्रमाण गोली बनावे. चार गोली अदरकके रसमें खाय, और ऊपर गरम जल पीवे तो कफके २० प्रकारके रोगोंको, मस्तकके रोगोंको, २० प्रकारकी प्रमेहको, ५ प्रकारके गुल्म रोगोंको, उदररोग, अंत्रवृद्धि, आमवात, ५ प्रकारके पांडुरोग, कृमिरोग, मेदरोग, उदावर्त्त, ज्वर, कुष्ठ, खुजली, इन सब रोगोंको यह रस दूर करे. जैसे सूखे ईंधनमें अग्नि बढती है. इस प्रकार अग्निको बढावे. कफपीडित मनुष्योंकी कृपा विचार मुनीश्वरने यह रस कहा है, यह श्लेष्मशैलेन्द्र नाम गुटिका कहलाता है ।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलंकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्द्धौरसगन्धकौ । तदर्द्धंचन्द्रसंज्ञस्यजातिकोषफलंतथा ॥ १ ॥ वृद्धदारुकबीजंचबीजधत्तूरकस्यच । त्रैलोक्यविजयाबीजंविदारीमूलमेवच ॥ २ ॥ नारायणीतथानागबलाचातिबलातथा । बीजंगोक्षुरकस्यापिनैचुलंबीजमेवच ॥ ३ ॥ एतेषांकार्षिकंचूर्णपर्णपत्ररसैःपुनः । निष्पिष्यवटिकाकार्य्यात्रिगुंजाफलमानतः ४ निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्चतुर्विधान् । वातोत्थान्पैत्तिकांश्चैवनास्त्यत्रनियमःक्वचित् ॥ ५ ॥ कुष्ठमष्टादशाख्यंचप्रमेहान्विंशतिंतथा । नाडीव्रणंव्रणंघोरंगुदामयभगन्दरं ॥ ६ ॥ श्लीपदंकफवातोत्थंरक्तमांसाश्रितंचयत् । मेदोगतंधातुगतंचिरजंकुलसम्भवं ॥ ७ ॥ गलशोथमंत्रवृद्धिमतिसारंसुदारुणम् । आमवातंसर्वरूपंजिव्हास्तंभंगलग्रहम् ॥ ८ ॥ उदरंकर्णनाशाक्षिमुखवैकृतमेवच । कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ ९ ॥ सर्वशूलंशिरःशूलंस्त्रीणांगदनिषूदनं । वटिकांप्रातरेकैकांखादेन्नित्यंयथाबलम् ॥ १० ॥ अनुपानमिहप्रोक्तंमांसपिष्टंपयोदधि । वारिभक्तसुरासिन्धुसेवनात्कामरूपधृक् ॥ ११ ॥ वृद्धोपितरुणिंगच्छेन्नच शुक्रस्यसंक्षयः । नचलिंगस्यशैथिल्यंनकेशोयान्तिपक्वतां ॥ १२ ॥ नित्यंस्त्रीणांशतंग

च्छन्मत्तवारणविक्रमः । द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकःपरः ॥ १३ ॥ प्रोक्तःप्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना । रसोलक्ष्मीविलासन्तुवासुदेवजगत्पते ॥ १४ ॥ अभ्यासाद्यस्यभगवान्लक्षनारीसुवल्लभः । [रसगन्धककर्पूरजातीकोपजातीफलानांपंचानांप्रत्येकंपलार्द्धंवृद्धदारुकबीजादीनांनवद्रव्याणांप्रत्येकंकर्षइतिभट्टादिव्यवहारः] ॥

अर्थ—अभ्रकभस्म १ पल, पारा आधा पल, गंधक अर्द्ध पल, कपूर १ तोला, जायफल, विधायरेके बीज, धतूरेके बीज, भांगके बीज, विदारीकन्द, शतावर, नागबला, खरेटी, गोखरू, बेतके बीज, ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे. सबको कूट पीस पानोंके रसमें खरल कर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे । इस गोलीके खानेसे सर्व सन्निपातके रोग तथा कायिक, वाचिक, मानसिक और आगंतुज रोग, वातके, पित्तके, अठारह प्रकारके कोढ, बीस प्रकारके प्रमेह, घोरव्रण, बवासीर, भगंदर, श्लीपद, कफवातोत्थरोग, रुधिर, मांसाश्रित रोग, मेदगत, धातुगत, पुरानेरोग, कुलपरंपराके रोग, गलशोथ, अंत्रवृद्धि, अतिसार, आमवात, सर्व प्रकारका जिव्हास्तंभ, गलग्रह, उदररोग, कर्णरोग, नासिकारोग, नेत्ररोग, मुखरोग, खांसी, पीनस, खई, गुदाकेरोग, स्थूलताकारोग, दुर्गन्धि, सर्व प्रकारके शूल, मस्तकशूल, स्त्रियोंकेरोग, इन सब रोगोंकी यह रस दूर करे। बलाबल देखकर एक गोली प्रातःकाल नित्य सेवन करे इस पर मांस, गेहूंका चून, मैदा, दूध, दही, मद्यका सेवन पथ्य है. इसके सेवनसे वृद्ध मनुष्यभी तरुण होजाता है, अक्षय वीर्य होवे, लिंग कभी शिथिल न हो, न कभी सफेद बाल होवे, सौ स्त्रियोंसे भोग करनेका बल होवे, मतवाले हाथीके समान पराक्रम हो, दो लाख योजनकी दृष्टि होवे । यह रस परम पुष्टकारक है । यह लक्ष्मी विलासका प्रयोग नारदजीने रासके समय कृष्ण भगवानसे कहाथा । इस रसके अभ्याससे श्रीवासुदेव भगवान एकलाख स्त्रियोंके प्यारे हुऐ।

विषमज्वरान्तकलोहः

पारदंगन्धकंतुल्यंसूतार्द्धंजीर्णताम्रकं । ताम्रतुल्यंमाक्षिकंचलोहंसर्वसमंनयेत् ॥१॥ जयन्त्यास्वरसेनैवकोकिलाख्यरसेनच । वासकार्द्रपर्णरसैःपंचभाचविमर्दितः ॥ २ ॥ पृथक्कलायमानन्तुवटिकांकारयेद्भिषक् । विषमज्वरान्तनामायंविषमज्वरनाशनः ॥ वन्हिदीप्तिकरोहृद्यप्लीहगुल्मविनाशनः । चक्षुष्योबृंहणोवृष्यःश्रेष्ठःसर्वरुजापहः ॥

अर्थ—पारा, गंधक दोनों समान लेवे. पारेसे आधी, पुरानी तांबेकी भस्म लेवे, तांबेके समान सोनामक्खी, और सबके तुल्य लोह भस्म, सबको अरनीके रसमें तालमखानेके रसमें, अडूसेके रसमें, अदरक और पानके रसमें पृथक् २ पांच २ भावना देकर मटरके समान गोलिया बनावे । यह विषमज्वरान्तकलोह सर्व विषमज्वरोंका नाश करे. अग्निको दीप्त करे, हृदयको हित करता है, तापतिल्ली और गोलाके रोगोंको दूर करे, नेत्रोंको पथ्य है, बृंहण और वृष्य है । सर्व रोगनाशक ये परमोत्तम है ।

विषमज्वरांतलोह.

(पुटपक्वः)

हिंगुलंसम्भवंसूतंगन्धकेनसुकज्जलं । पर्पटीरसवत्पाच्यंसूतांघ्रिहेमभस्मकम् ॥१॥

लोहताम्रमभ्रकंचरसस्याद्विगुणंतथा ।
वंगकंगेरिकंचैवप्रवालंचरसार्द्धकम् ॥ २ ॥
मुक्ताशंखंशुक्तिभस्ममदेयंरसपादकम् ।
मुक्तागृहेचसंस्थाप्यपुटपाकेनसाधयेत् ॥ ३॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायद्विगुंजाफलमानतः ।
अनुपानंमयोक्तव्यंकणाहिंगुससैंधवम् ॥ ४॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिवातपित्तकफोद्भवम् ।
प्लीहानंयकृतंगुल्मंसाध्यासाध्यमथापिवा॥५
सततंसततोत्थंचविषमज्वरनाशनं ।
कामलांपाण्डुरोगंचशोथंमेहमरोचकं ॥ ६ ॥
ग्रहणीमामदोषंचकासंश्वासंचतत्रतत् ।
मूत्रकृच्छ्रातिसारंचनाशयेदविकल्पतः ॥७॥
अग्निंचकुरुतेदीप्तंबलवर्णप्रसादनः ।
विषमज्वरान्तकोनाम्नाधन्वन्तरिप्रकाशितः

अर्थ–शुद्ध पारे और गंधककी कजली करे, पीछे पर्पटीकी विधिसे पचावे, पीछे इसमें पारेकी चतुर्थांश सुवर्ण भस्म मिलावे, तदनन्तर सार, तांबेकी भस्म, अभ्रककी भस्म, प्रत्येक पारेसे दूनी लेवे । वंगभस्म, गेरू मूंगाकी भस्म, प्रत्येक पारेसे आधी लेवे । मोतीकी भस्म, शंखकी भस्म, सीपकी भस्म, प्रत्येक पारेकी चतुर्थांश लेवे । सब वस्तुओंको खरल कर सीपमें भर पुटपाककी रीतिसे सिद्धिकरे । इसमेंसे नित्य प्रातःकाल दो रत्ती पीपल, हींग और सैंधे निमकके साथ खाव तो आठ प्रकारके ज्वर, तिल्ली, यकृत, गोला, ये साध्य असाध्य सब प्रकारके रोग दूर होवे. सतत, संतत ज्वरोंको, कामला, पांडुरोग, सूजन, प्रमेह, अरुचि. संग्रहणी, आमदोष, खांसी, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार इन सब रोगोंका नाश करे, अग्निको दीप्तकरे, बलवर्णको बढावे, यह धन्वंतरिका प्रकाशित विषमज्वरांतक लोह है ।

सर्वज्वरहरलोहम्.

चित्रकंत्रिफलाव्योपंविडंगंमुस्तकंतथा ।
श्रेयसीपिप्पलीमूलमुसीरंदेवदारुच ॥ १ ॥
किराततिक्तकंवालंकटुकीकंटकारिका ।
सौभांजनस्यबीजंचमधुकंवत्सकंसमम् ॥ २ ॥
लोहतुल्यंगृहीत्वातुवटिकांकारयेत्भिषक् ।
सर्वज्वरहरोलोहःसर्वज्वरकुलांतकृत् ॥ ३ ॥
वातिकंपैत्तिकंश्लेष्मद्वंद्वजंसन्निपातकम् ।
जीर्णज्वरंचविषमंरोगसंकरमेवच ॥ ४ ॥
प्लीहानमग्रमांसंचयकृतंचविनाशयेत् ॥

अर्थ–चीतेकी छाल, त्रिफला, त्रिकुटा, वायविडंग, नागरमोथा, सफेद कटेरी, पीपलामूल, खस, देवदारु, चिरायता, परवलके पत्ते, नेत्रवाला, कुटकी, कटेरी, सहजनेके बीज, मुलहटी, इन्द्रजौ, सब औषधि समान लेवे. सबकी बराबर लोहभस्म ले, अदरकके रस वा पानीसे गोली बनावे. यह लोह सर्वज्वरोंके कुलको कालरूप है. वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक, द्वंद्वज, सन्निपातज, जीर्णज्वर, विषमज्वर, रोगसंकर, फियारोग, तथा अग्रमांस और कलेजेके रोगोंको दूर करे ।

बृहत्सर्वज्वरहरलोहम्.

द्विपलंजारितंलोहंरसगन्धंद्वितोलकं ।
तोलकंत्रिफलाव्योपंविडंगंमुस्तकंतथा ॥ १ ॥
श्रेयसीपिप्पलीमूलंहरिद्रेद्वेचचित्रकम् ।
आर्द्रकस्यरसेनैववटिकांकारयेद्भिषक् ॥ २॥
गुंजाद्वयंवटींकृत्वाभक्षयेदार्द्रकद्रवैः ।
सर्वज्वरहरंलोहंसर्वज्वरविनाशनम् ॥ ३ ॥
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसन्निपातिकम् ।
विषमज्वरभूतोत्थज्वरंप्लीहानमेवच ॥ ४ ॥
मासजंपक्षजंचैवतथासंवत्सरोत्थितम् ।
सर्वान्ज्वरान्निहन्त्याशुसत्यंश्रीशिवशासनात्

अर्थ–शुद्ध लोहभस्म ८ तोला, पारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, त्रिफला १ तोले, त्रिकुटा १ तोले, वायविडंग १ तोले, नागरमोथा १ तोले, गज पीपल, पीपलामूल, हलदी, दारुहलदी, चीतेकी छाल, प्रत्येक एक २ तोला लेवे। सबको कूट पीस अदरकके रससे घोटकर गोली बनावे। एक रत्तीके प्रमाण गोली अदरकके रससे खाय तो सर्व ज्वर नष्ट होवे। वातिकज्वर, पैत्तिकज्वर, श्लैष्मिकज्वर, सन्निपातज्वर, विषमज्वर, भूतोत्थज्वर, तिल्ली, महीनेमें आनेवाला ज्वर, पखवारेमें आनेवाला ज्वर, वर्ष दिनमें आनेवालाज्वर इत्यादि सर्वज्वर नाश होवे। यह श्रीशिवजीका कहा विषमज्वरांतक लोह है।

बृहत्सर्वज्वरहरलोहम्.

पारदंगन्धकंशुद्धंताम्रमभ्रंचमाक्षिकम्।
हिरण्यंतारतालंचकर्षमेकंपृथक्पृथक्॥
मृतकान्तंपलंदेयंसर्वमेकीकृतंशुभम्।
वक्ष्माणौषधैर्भाव्यंप्रत्येकंदिनसप्तकम्॥२॥
कारवेल्लरसेनापिदशमूलरसेनच॥
पर्पटस्यकषायेणक्वाथेनत्रैफलेनच॥ ३॥
काकमाचीरसैनैवनिर्गुंड्याःस्वरसेनच।
पुनर्नवार्द्रकांभोभिर्भावनांपरिकल्प्यच॥४॥
रक्तिकादिक्रमेणैववटिकांकारयेद्भिषक्।
पिप्पलीगुडसंयुक्तागुटिकावीर्यवर्द्धनी॥ ५॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिचिरकालसमुद्भवं।
विविधंवारिदोषोत्थंनानादोषोद्भवंतथा॥६
सततादिज्वरंहन्तिसाध्यासाध्यान्नसंशयः।
क्षयोद्भवंचधातुस्थंकामशोकभवंतथा॥ ७॥
भूतावेशज्वरंचैवऋक्षदोषोद्भवंतथा।
अभिघातज्वरंचैवअभिचारसमुद्भवं॥८॥
अभिन्यासंमहाघोरंविषमंचत्रिदोषजं।
शीतपूर्वंदाहपूर्वंविषमंशीतलंज्वरं॥ ९॥
प्रलेपकंज्वरंघोरंअर्द्धनारीश्वरंतथा।
प्लीहज्वरंतथाकासंचातुर्थकविपर्ययम्॥१०॥
पांडुरोगगणान्सर्वानग्निमांद्यंमहागदं।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुपक्षार्द्धेनात्रसंशयः॥११
शाल्यन्नंतक्रसहितंभोजयेद्द्विजसंयुतम्।
ककारपूर्वकंसर्ववर्ज्जनीयंविशेषतः॥ १२॥
मैथुनंवर्जयेत्तावद्यावन्नोबलवान्भवेत्।
सर्वज्वरहरंश्रेष्ठमनुपानंप्रकल्पयेत्॥ १३॥

अर्थ–शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म, सोनामक्खीकी भस्म, सोनेकी भस्म, चांदीकी भस्म, हरिताल, ये सब प्रत्येक एक २ तोला लेवे. कांतलोहकी भस्म ४ तोला, सबको एकत्र कर आगे जो औषधी कहते हैं उनकी सात दिन भावना देवे, करेलेका रस, दशमूलका काढा, पित्तपापरेका काढा, त्रिफलेका काढा, मकोयका रस, निर्गुंडीका रस, सांठका रस, अदरकका रस, इन सबकी पृथक्२ भावना देवे. पीछे क्रमसे १ रत्ती, २ रत्ती, ३ रत्तीकी, गोलियां बनावे. बलाबल देखकर १ गोली पीपल और गुडके साथ खाय तो इस रसका वीर्य बढे. आठ प्रकारका ज्वर, पुराना ज्वर, दुष्टजल जनितज्वर, अनेक दोषजनित ज्वर, साध्य असाध्य संततादि विषमज्वर, खईसे उत्पन्नज्वर, धातुगतज्वर, कामज्वर, शोकज्वर, भूतावेशज्वर, नक्षत्र जनितज्वर, अभिघातजनित, अभिचारजनित, शीतलगके आनेवाला, दाह लगके आनेवाला, विषमशीतल, अभिन्यास, त्रिदोषजनित विषम, प्रलेपक, अर्द्धनारीश्वर, इन सब ज्वरोंको प्लीहज्वर, खांसी, चातुर्थकका विपरीतज्वर, पांडुरोग, मन्दाग्नि, इन सब रोगोंको एकही सप्ताहमें दूर करे. जब

रोगीकी भोजन करनेकी इच्छा होवे तब दही भात भोजन ब्राह्मणोंके साथ करावे. और ककार आदिमें जिनके ऐसे सर्वपदार्थ त्याज्य हैं. मैथुन कराना भी निषेध है, यह सर्वज्वरहरलोह है।

मकरध्वजोरसः

दलंस्वर्णपलैकंचरसेन्द्रंचपलाष्टकं।
रसस्यद्विगुणंगन्धंअन्योन्यंकज्जलीकृतं॥१॥
कुमारिकारसैर्भाव्यंकाचपात्रेनिधापयेत्।
वालुकायंत्रगेरुध्वाक्रमाद्दिनत्रयंपचेत्॥२॥
सांगशीतंसमुद्धृत्यपुष्पारुणसमप्रभं।
यवमात्रप्रदातव्यमहिवल्लीदलेनच॥ ३॥
एतदभ्यासतश्चैवजरामरणनाशनम्।
अनुपानविशेषेणकरोतिविविधान्गुणान्॥४
ज्वरंत्रिदोषजंघोरंमन्दाग्नित्वमरोचकम्।
अन्यांश्चविविधान्रोगान्नाशयेन्नात्रसंशयः५

अर्थ–सोनेके वर्क ४ तोले, शुद्ध पारा३२ तोले, गंधक ६४ तोले, सबको मिलाकर कजली करे. पीछे घीगुवारके रसमें खरलकर धूपमें सुखाय आतिशी शीशीमें भरे, उसपर कपरमिट्टीकर वालुकायंत्रमें रख शीशीका मुख बंदकर तीन दिन अग्निसे पाक करे, जब स्वांगशीतल होजावे तब उस शीशीको फोड लाल पुष्पके समान इस मकरध्वजरसकी नालको निकाल लेवे. इसमेंसे एक जवके समान पानमें रखकर खानेको देवे. इस रसके अभ्याससे बुढापा और अकालमृत्युका भय दूर होवे. पृथक् २ अनुपानसे अनेक गुणकरे, त्रिदोषजनितज्वर, मन्दाग्नि, अरुचि और अनेक प्रकारके रोग, इस रसके सेवनसे दूर होते हैं. इस रसको मकरध्वजरस कहते हैं. वास्तवमें यह चन्द्रोदयरस है।

पंचाननज्वरांकुशः

पारदंगन्धकंशृंगीविषंचोकंहरीतकी।
धत्तूरस्यचबीजानिमत्स्यपित्ताविभीतकं॥
कैरातममृतासत्वंजीरकंकारवीजगत्।
पिप्पलीपिप्पलीमूलसमभागंविचूर्णयेत्॥
जम्बीरनिम्बुनीरेणमर्दयेत्प्रहरत्रयं।
वटीकलायसदृशीविषमज्वरनाशिनी॥
शीतज्वरंचपलयादाहंचसितयाहरेत्।
रसोज्वरांकुशोनामपंचाननइतिस्मृतः॥
बहुधायमनुभूतोभिषग्भिर्नात्रसंशयः।

अर्थ–पारा, गंधक, काकडासिंगी, विष, चोक, हरड, धतूरेके बीज, कुटकी, बहेडा, चिरायता, गिलोयसत्वजीरा, सौंफ, सोंठ, पीपल, पीपलामूल, इन सबको बराबर लेवे। और जंबीरी नींबूके रससे तीन प्रहर घोटे। पीछे मटरके समान गोलियां बनावे। इसके खानेसे विषमज्वर दूर होवे शीतज्वरमें पीपलके साथ देवे, दाहज्वरमें मिश्रीके साथ देवे। यह पंचाननज्वरांकुश नामसे प्रसिद्धि है यह वैद्योंने अनेकबार आजमाया है।

शीतभंजीररसः

तालकंतुत्थकंचूर्णंशुक्तिभागैकवर्द्धितं।
धत्तूरपत्रजरसैःपक्तव्यंभाण्डकेभिषक्॥

अर्थ–हरिताल १ भाग, नीलाथोथा २ भाग, सीपकी भस्म ३ भाग, धतूरेके पत्तोंके रसमें घोट पूर्वविधिसे वैद्य इस रसको बनावे।

रविसुन्दररसः

द्विभागतालेनहतंचताम्रं रसंचगन्धंचसमानमाहुः। विषंसमंचद्विगुणंचताम्रं त्रिसप्तवारेण दिवाकरांशौ॥ विमर्द्यनिंबस्यरसेनचूर्णं गुंजैकदत्तःसितयायुतश्च। ज्वरांकुशोयंरविनामविद्वान् ज्वरंनिहन्त्यष्टविधंसमग्रम्॥

अर्थ–दुगनी हरितालसे मृततांबा, शुद्ध

पारा. शुद्ध गंधक, सब समान लेवे । सबके बराबर विष, और दूनी तांबेकी भस्म, सबको आकके रसमें २१ बार खरल करे । और १२ बार नीमके रसमें घोटे, इसमेंसे १ रत्ती रस मिश्रीके साथ देवे । तो यह रविसुन्दर नामज्वरांकुश आठ प्रकारके ज्वरोंको दूर करे।

सर्वज्वरांकुशवटी.

शुद्धंसूतंतथागन्धंमरिचंनागरंकणा ।
त्वचंजैपालकंकुष्टंभूनिम्बंमुस्तकंपृथक् ॥
चूर्णयित्वासमांसन्तुकज्जल्यासहमेलयेत् ।
निर्गुंड्याःस्वरसेचापि आर्द्रकस्यरसेतथा ॥
भावनांकारयित्वातुवटिकांकारयेद्भिषक् ।
वटिकांभक्षयित्वातुवस्त्रवेष्टंचकारयेत् ॥
एषाज्वरांकुशवटीसर्वज्वरविनाशिनी ।
पृथक्दोषांश्चविविधान्समस्तान्विषमज्वरा-
न्॥ प्राकृतंवैकृतंचापिवातश्लेष्मकृतंचयत् ।
अन्तर्गतंबहिःस्थंचनिरामंसाममेववा ।
ज्वरमष्टविधंहन्तिवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

अर्थ–शुद्ध पारा, गंधक, काली मिरच, सोंठ, पीपल, तज, जमालगोटा, कूठ, चिरायता, नागरमोथा, प्रत्येक बराबर लेवे. प्रथम पारे गंधककी कजलीकर उसमें उक्त औषधियोंका चूर्ण मिलावे. पीछे इसको संभालू और अदरकके रसकी भावना देकर गोली बनावे इस गोलीको खाकर पीछे वस्त्र ओढकर सो जावे तो यह ज्वरांकुशवटी सर्वज्वरोंको दूर करे. जैसे वात, पित्त, और कफज्वर, सन्निपात, विषम ज्वर, प्राकृत, वैकृत, तथा वातकफज्वर, अंतर्वेग, बहिर्वेग, निराम और सामज्वर, तथा आठ प्रकारके ज्वरोंका यह नाश करे. जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्ष नष्ट होता है ।

बृहज्ज्वरांकुशः

पारदंगन्धकंताम्रंहिंगुलंतालमेवच ।
लोहंवंगंमाक्षिकंचखर्परंचमनःशिला ॥
मृताभ्रकंगैरकंचटंकणंदन्तिबीजकम् ।
सर्वाण्येतानितुल्यानिचूर्णयित्वाविभावयेत्
जम्बीरतुलसीचित्रंविजयातिन्तिडीरसैः ।
एभिर्दिनत्रयंरौद्रेनिर्जनेखल्लमर्दयेत् ॥
चणमात्रांवटिंकृत्वाछायाशुष्कान्तुकारयेत् ।
महाग्निजननीचैपासर्वज्वरविनाशिनी ॥
एकजंद्वंद्वजंचैवचिरकालसमुद्भवं ।
एकाहिकंद्व्याहिकंचत्रिदोषप्रभवंज्वरं ॥
चातुर्थकंतथात्युग्रंजलदोषसमुद्भवं ।
सर्वान्ज्वरान्निहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा
नातःपरतरंकिंचिज्ज्वरनाशायभेषजम् ।
महाज्वरांकुशोनामरसोयंमुनिभाषितम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, ताम्रभस्म, हिंगुल, हरिताल, लोहभस्म, वंग, सोनामक्खीकी भस्म, खपरिया, मनसिल, अभ्रककी भस्म, गेरू, सुहागा, और जमालगोटा, सबको समान लेकर सबको जंभीरी, तुलसी, चीता, भांग, और तिंतिडी इनके रसोंकी भावना पृथक् २ तीन २ दिन धूपमें देवे [कोई पचावे ऐसा कहते हैं] इन पूर्वोक्त रसोंकी भावना पृथक् २ तीन २ दिन देवे. पीछे चनेके समान गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे । यह गोली महाग्नि कर्ता है । और सर्व ज्वर नाशक है । एक दोषसे दो दोषसे बहुत दिनोंके आनेवाले तथा एकाहिक, द्व्याहिक, त्रिदोषज, चातुर्थक, जलदोषजनित, संपूर्ण ज्वरोंको दूर करे । जैसे सूर्य अंधकारका नाश करता है इससे परे ज्वरनाशक और औषधि नहीं हैं. यह महा ज्वरांकुशरस मुनीश्वरने कहा है ।

सर्वज्वरेज्वरांकुशः

दारुमूषांशिखिग्रीवांरसकंचपृथक्पृथक् ।
टंकत्रयानुमानेनगृहीत्वाकनकद्रवैः ॥
मर्दयेत्रिदिनाकार्यावटीचणकसन्निभा ।
मरिचैरेकविंशत्यासप्तभिस्तुलसीदलैः ॥
खादेद्वटीद्वयंपथ्यंदुग्धभक्तसशर्करं ।
तरुणंविषमंजीर्णंहन्यात्सर्वज्वरंध्रुवं ॥

अर्थ–दारुमूसी, लीलाथोथा, खपरिया प्रत्येक तीन ३ टंक लेवे । सबको धतूरेके पत्तोंके रसमें तीन दिन खरल कर चनेके समान गोलियां बनावे. २१ कालीमिरच और ७ पत्ते तुलसीके इनके साथ दो गोली खाय इसके ऊपर मिश्री मिला दूधभात खाय तो तरुणज्वर, विषमज्वर और जीर्णज्वर दूर होवे ।

ज्वरांकुशरसः

शुद्धंसूतंविषंगन्धंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमं ।
चतुर्णांद्विगुणंव्योषंहेमक्षीरीविभावितं ॥
चतुर्वारंघर्मशुष्कंचूर्णंगुंजाद्वयोन्मितं ।
जंबीरकस्यमज्जाभिरार्द्रकस्यरसेनच ॥
महाज्वरांकुशोनामसमस्तज्वरनाशनः ।
एकाहिकंद्व्याहिकंवात्र्याहिकंचचतुर्थकम् ॥
विषमंचत्रिदोषोत्थंहन्तिसद्योनसंशयः ।

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्ध विष, शुद्ध गंधक, और सबकी बराबर धतूरेके बीज, और सबसे चौगुना त्रिकुटा ले सबको चोककी चार भावना दे सुखाकर ४ रत्ती जंभीरोके रस वा अदरकके रससे खाय तो यह ज्वरांकुश एकाहिक, द्वाहिक, तृतीयक, चातुर्थक आदि समस्त ज्वरोंको दूर करे ।

ज्वरांकुशः

ससारावैष्णवीसेनाअचलाकादिकंकणा ।
रागरुद्रोपमोपेतामौढामस्तकशालिनी ॥

अर्थ–पारा, हरिताल, मनसिल, पीपल, तांबेकी भस्म इन सबको करेलेके रसमें घोट तांबेके पात्रके भीतर लेपकर संपुट बंदकर वालुकायंत्रमें रखे, और वालूके ऊपर धान रखे, पीछे अग्नि देवे । जब धान खिलजावे तब उतार लेवे । तो यह ज्वरांकुश बने गुण पूर्वोक्त ज्वरांकुशके समान है ।

चातुर्थिकनिवारणरसः

त्रिभागंतालकंविद्यादेकभागंतुपारदं ।
तदर्द्धंगन्धकंचैवतदर्द्धंतुमनःशिला ॥
कारवल्लीदलरसैर्मर्दयेत्प्रहरत्रयम् ।
पाचितावालुकायंत्रेचातुर्थिकनिवारणः ॥

अर्थ–हरिताल ३ भाग, पारा १ भाग, पारेसे आधी गंधक, और गंधकसे आधी मनसिल, सबको करेलेके रससे तीन प्रहर मर्दन करे, पीछे वालुकायंत्रमें पचावे तो यह रस चौथैयाज्वरको दूर करे ।

चातुर्थिकगजांकुशः

स्याद्रसेनसमायुक्तोगन्धकःसुमनोहरः ।
ह्रियावलित्रिगुणितोनिर्गुंडीरसमर्दितः ॥
सप्तवाराणितद्योज्यमार्द्रकस्वरसेनतु ।
संततादिज्वरंहन्याच्चातुर्थिकगजांकुशः ॥

अर्थ–गंधक, पारा, दोनोंको एक २ भाग ले और ह्रियावली ३ भाग ले इनको निर्गुंडीके रसमें खरल करे । और ७ वार अदरकके रसमें घोटे इसके देनेसे संततादिज्वर दूर होवे. यह चातुर्थिक ज्वरांकुश कहाता है ।

चन्द्रोदयरसः

रसगन्धौतथावंगमभ्रकंसमभागतः ।
मेलयित्वातुवंगेनसमंसूतंविमर्दयेत् ॥
तत्रैकीकृत्यगन्धाभ्रैःपेष्यंजम्बीरवारिणा ।
सामान्यपुटमादद्यात्सप्तधासाधितंरसं ॥
कुमार्य्याचित्रकेणापिभावयित्वाथसप्तधा ।

गुडेनजीरकेणापिज्वरेजीर्णेप्रयोजयेत् ॥
कासेश्वासेकुमार्याचत्रिफलाक्वाथयोगतः ।
उन्मादेचधनुर्वातममृताक्वाथयोगतः ॥
इत्येवंरोगतापघ्नोरसश्चन्द्रोदयाह्वयः ।

अर्थ—पारा, गंधक, वंग, अभ्रक, इनको समान लेवे । पीछे पारे और वंगको मिलाकर खरल करे । पीछे इसमें गंधक और अभ्रक मिलावे । तदनन्तर जंभीरीके रससे खरल करे इस प्रकार सात पुट देवे । इसी प्रकार घीगुवार और चित्रककी सात २ भावना देवे, पीछे इसको गुड और जीरेके साथ जीर्णज्वरमें देवे । खासी, श्वासमें घीगुवार और त्रिफलाके साथ देवे. उन्माद, धनुर्वात, इनमें गिलोयके योगके साथ देवे इत्यादि रोग तापका नाशक चन्द्रोदय रस है ।

जीर्णज्वरारिरसः

नागंवंगंरसंताम्रंगन्धकंटंकणंतथा ।
सूतंविषंचनेपालंहरितालंसमंतथा ॥
वटक्षीरेणमर्द्याथसर्वंकुर्य्यात्सुगोलकं ।
तंगोलंभाण्डमध्येतपाचयेद्दीपवन्हिना ॥
ततस्तुशीतलंकृत्वाभृंगराजेनमर्दयेत् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिमर्दयेच्चपुनःपुनः ॥
चणप्रमाणवटिकारसेनार्द्रस्यदापयेत् ।
गुंजाद्वयमयोगेणज्वरंजीर्णंहरत्यसौ ॥

अर्थ—सीसेकी भस्म, वंगकी भस्म, खपरिया, तांवेकी भस्म, गंधक, सुहागा, पारा, विष, जमालगोटा, हरिताल, ये सब बराबर लेवे. सबको बडके दूधमें खरल करे, गोला बनावे उस गोलाको भांडेमें रखकर भट्टीपर चढाय दीपकाग्निसे पकावे. पीछे उस गोलेको शीतलकर रस निकाल भांगरेके रससे मर्दन करे, अदरकके रससे घोटे, पीछे चनेके बराबर गोलियां बनावे. एक गोली अदरकके रसकेसाथ देवे, दो रत्ती रस खानेसे जीर्णज्वर नष्ट होवे।

प्रतापलंकेश्वररसः

प्रत्येकंरसगन्धयोर्द्विपलयोःकृत्वामशींशुद्धयोरस्यांम्लेच्छलुलायलोचनमनोधात्रीप्रकुंषत्रयं ॥ पथ्यायावदरत्रिकंत्रिकटुपद्पाणंवचाधर्मिणी । वेल्लांभोधरपत्रकंद्विरदकिंजल्काश्वगन्धाह्वया ॥ पिष्ट्वैतत्समधूकसारमखिलंकर्पोन्मितंन्यस्यतत् । भोन्मृधाथकरंजकाऽमृतयुतंसागस्तिकन्यूपणैः ॥ भूधात्रीविजयासरित्पतिफलज्वालामुखीमार्कवैः । प्रत्येकंविदधीतनिश्चलमतिःसप्तक्रमाद्भावनाः ॥ पित्तैरथोपंचविधायपंचभिःकरंजमात्रामृतधूपनंततः । दत्वार्द्रकस्यस्वरसेनतंद्धुलाकृतिंविदध्याद्गुटिकांभिषग्वरः ॥ देयैकासन्निपातेप्रतिहतविषयेमोहनेत्रप्रसुप्त्योः । स्याद्गुल्मेसाजमोदापतनविकृतिपुत्र्यूपणेनग्रहण्यां॥दातव्याजीरकेणद्विपतुरगनृणांप्राणसंरक्षणाय । कारुण्यांभोधिरेतद्रसकसमरसंवैद्यनाथोभ्यधत्त ॥

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, दोनों २ पल लेवे । दोनोंकी कजलीकर पीछे इसमें हींगलू, भैंसागुग्गुल, हितालीये प्रत्येक १२ तोला लेवे. हरड, वेरतीनों, त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) प्रत्येक १॥ तोला. वच, रेणुक, वायविडंग, नागरमोथा, पत्रज, नागकेशर, असगंध ये सब चार २ टंक लेवे. सबको मुलहटीके सत्तमे घोटे. कंजा, विष, अगस्तिया, त्रिकुटा, भूय आंवला, भांग, समुद्रफल, ज्वालामुखी, और भांगरा, प्रत्येकके रसकी सात २ भावना देवे. पीछे मछली, भैंसा, मोर, सूअर, और बकरी इनके पित्तोंकी भावना देवे. पीछे

कंजा और विषकी धूप देकर अदरकके रससे घोट चांवलके समान गोली बनावे. मोह, बेहोशी और नेत्रमुंदे हुए, ऐसे सन्निपातमें एक गोली देवे. गोलाके रोगमें एक गोली अजमोदकेसाथ देवे. गिरपडा हो उसको सोंठ, मिरच, और पीपलके चूर्णके साथ देवे. संग्रहणीरोगमें जीरेके साथ एक गोली देवे. हाथी, घोडा और मनुष्योंके प्राणरक्षणार्थ करुणासागर वैद्यनाथने दिया है. यह मतापलंकेश्वर रस है।

जीर्णज्वरघ्नीवटीः

शुद्धंजैपालटंकन्तुकट्वीटंकेद्वयोन्मितां।
गैरिकंटंकमेकंचकन्यानीरेणमर्दयेत् ॥
कलायसदृशीकार्य्यावटिकान्तंचभक्षयेत्।
शीतलेनजलेनैपावटीजीर्णज्वरापहा ॥

अर्थ-जमालगोटा १ टंक, कुटकी २ टंक, गेरू १ टंक, सबको घीगुवारके रसमें खरल करे, पीछे मटरके समान गोली बनावे. और शीतलजलके साथ खाय तो जीर्णज्वर दूर होवे।

ज्वरांकुशः

रसतोद्विगुणंगन्धंगन्धतुल्यन्तुटंकणं।
रसतुल्यंविषंयोज्यंमरिचंपंचधाविषात् ॥
कट्फलंदन्तिबीजंचप्रत्येकंमरिचान्वितं।
ज्वरांकुशोरसोह्येषचूर्णयेद्यामभात्रकम् ॥
मापैकेणनिहंत्याशुज्वरंजीर्णंत्रिदोषजुत्।

अर्थ-पारा १ भाग, गंधक २ भाग, सुहागा २ भाग, विष १ भाग, काली मिरच ५ भाग, कायफर ५भाग, जमालगोटा ५ भाग, सबको कूट पीस एक प्रहर घोटे, एक मासे खानेसे जीर्णज्वर और सन्निपात दूर होवे।

लघुमालनीवसंत.

रसकयुगलभागंवह्निजंभागमेकं।
द्वितयमथसुखल्वेमर्दयेन्मृत्क्षणेन ॥
भवतिघृतविमुक्तोनिम्बुनीरेणयाव-
ज्ज्वरहरमधुकुल्यामालनीमाग्वसन्तः ॥

अर्थ-खपरिया २ भाग, काली मिरच १ भाग, दोनोंको खरलमें डाल गौके मक्खनसे घोटे, पीछे नींबूके रसमें जब तक चिकनाई दूर न हो तब तक घोटे तो वसंतमालनी रस बने. इसको सहत और पीपलके चूर्णके साथ खाय तो जीर्णज्वर दूर होवे।

स्वर्णमालनीवसंत.

स्वर्णमुक्तादरदमरिचंभागवृध्यागृहीतं।
खर्परंघ्टौप्रथममखिलंमर्दयेन्मृत्क्षणेन ॥
यावत्स्नेहोव्रजतिविलयंमर्दनेदीयतेसौ।
गुंजाद्वंद्वंमधुमगधयामालनीमाग्वसन्तः ॥
जीर्णज्वरेधातुगतेतिसारे रक्तान्वितेरक्तजदृष्टिरोगे। घोरेव्यथेपित्तकृतेथरोगेवलप्रदोदुग्धयुतंचपथ्यं ॥ वसन्तोमालिनीपूर्वःसर्वरोगहरःशिवोः। गर्भिण्यादेयमेतच्चजयंतीपुष्पकैर्युतं ॥ सर्वज्वरहरंश्रेष्ठंगर्भपालनमुत्तमम्।

अर्थ-सोनेके तबक १ मासे, छोटे अनविंधे मोती २ मासे, सिंगरफ ३ मासे, काली मिरच ४ मासे, खर्परिया ८ मासे, प्रथम सबको १ प्रहर मक्खनसे घोटे। पीछे पूर्वोक्त प्रकारसे कागजी नींबूके रससे घोटे। जबतक चिकनाई दूर न होवे, तबतक घोटे, जो गुण पहले मालनीवसंतके हैं, सोई इसके गुण हैं और जो इसके गुण है वही उसके गुण हैं, विशेष यह नेत्ररोगपर बहुत चलता है। तिमिर, धुंध, अच्छा होवे. इसमेंसे दो रत्ती रस पीपल और सहतके साथ देवे, तो जीर्णज्वर, धातुगतज्वर, रक्तातिसार, रक्तजबवासीर, घोरव्यथा, पित्तरोग जाय, बलकर्त्ता है. इसपर दूध पीना पथ्य है। यह मालनी

वसंत रस बालकके सर्व रोगोंको दूर करता है. गर्भिणीको जयंतीपुष्पके साथ देवे। सर्व ज्वर दूर करे गर्भकी रक्षा करे।

बृहन्मालनीवसंतोरसः

वैक्रान्तमभ्रंरविताप्यरौप्यंगन्धःप्रवालंरसभस्मलोहं। सटंकणंशम्बुकभस्मसर्वंसमस्तमेतद्घवरीरजन्योः॥ द्रवैर्विमर्द्यमुनिसंख्ययाच कस्तूरिकाशीतकरेणपश्चात्। वल्लप्रमाणेमधुपिप्पलीभ्यांजीर्णज्वरेधातुगतेप्रदेयः॥ छिन्नोद्भवासत्वसितायुतश्चसर्वप्रमेहेषुचयोजनीयः। कृच्छ्रास्मरींनिहन्त्याशुमातुलुंगार्द्रकद्रवैः। रसोवसंतनामायंमालनीपदपूर्वकः॥ इतिभैषज्यसारामृतसंहितायां॥

अर्थ–वैक्रान्त (कासुले) की भस्म, अभ्रककी भस्म, तांबेकी भस्म, सोनामक्खीकी भस्म, चांदीकी भस्म, शुद्ध गंधक, मूंगाकी भस्म, चन्द्रोदय, लोहेकी भस्म, सुहागा, शंखकी भस्म, ये सब बराबर लेवे। सबको खरलमें घोटे शतावरके रसकी सात भावना देवे। पीछे हल्दीके रसकी सात भावना देवे, तथा कपूर और कस्तूरीको जलमें घोलकर भावना देवे। पीछे इस रसकी टिकिया बनावे और इसमेंसे ३ रत्ती रस शहत और पीपलके साथ जीर्णज्वर और धातुज्वरमें देवे। और गिलोयसत्व तथा मिश्रीके साथ प्रमेह रोगमें देवे। और अदरक और बिजौरेके साथ मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोगमें देवे। यह मालनी-वसंतरस भैषज्यसारामृत संहितामें लिखा है।

रसपर्पटी.

जयापत्ररसेनाथवर्द्धमानरसेनच।
भृंगराजरसेनापिकाकमाच्यारसेनच॥
रसंसंशोध्ययत्नेनतत्समंशोधयेद्बलिं।
भृंगराजरसैःपिष्ट्वाशोषयेदर्करश्मिभिः॥
सप्तधावात्रिधावापिपश्चाच्चूर्णन्तुकारयेत्।
चूर्णयित्वासमंतेनरसेनसहमर्दयेत्॥
नष्टसूतंयदाचूर्णंभवेत्कज्जलसन्निभं।
निर्धूमेवदरांगारेद्रवीकुर्य्यात्प्रयत्नतः॥
तत्रतंमहिषीविष्टास्थापितेकदलीदले।
निःक्षिप्यतदुपर्य्यन्यत्पत्रंदत्वाप्रपीडयेत्॥
शीतलांतांततःपत्रात्समुद्धृत्यविचूर्णयेत्।
एवंसिद्धाभवेद्व्याधिघातिनीरसपर्पटी॥
ज्वरादिव्याधिभिर्व्याप्तंविश्वंदृष्ट्वापुराहरः।
चकारकृपयायुक्तःसुधावद्रसपर्पटीं॥
रक्तिकासम्मितांतावद्भृष्टजीरकसंयुतां।
गुंजार्द्धभृष्टहिंग्वाढ्यांभक्षयेद्रसपर्पटीं॥
रोगानुरूपैर्भैषज्यैरपितांभक्षयेद्बुधः।
पिबेत्तदनुपानीयंशीतलंचुलुकत्रयम्॥
प्रत्यहंवर्द्धतेतस्याएकैकांरक्तिकाभिषक्।
नाधिकांदशगुंजातोभक्षयेत्तांकदाचन॥
एकादशदिनारम्भात्तातथैवापकर्षयेत्।
एवमेतासमश्नीयान्नरोविंशतिवासरान्॥
शिवंगुरुंतथाविप्रान्पूजयित्वाप्रणम्यच।
श्रद्धयाभक्षयेदेतांक्षीरमांसरसाशनः॥
ज्वरांश्चग्रहणींचापितथातीसारमेवच।
कामलांपाण्डुरोगंचशूलंप्लीहजलोदरं॥
एवमादीन्गदान्हत्वाहृष्टपुष्टश्चवीर्यवान्।
जीवेद्वर्षशतंसाग्रंवलीपलितवर्जितः॥

अर्थ–अरनीके पत्तोंसे, वा सफेद अरंडके रससे, भांगरेके रससे, और मकोयके रससे, पारेको शुद्ध करे. फिर पारेके बराबर गंधक भांगरेके रसमें पीस सुखा देवे. इस प्रकार सात अथवा तीन भावना देवे. पीछे चूर्णकर पारे गंधककी कजली करे. जब काजलके समान होजाय तब धुआं रहित बेरके कोलोंमें कज-

लीको पिघलावे. पीछे भैंसके गोवरमें केलाका पत्ता रखकर उसपर उस कजलीकी चाशनीको डाल दूसरा पत्ता ढक कपडेकी पोटलीसे दाव देवे. पीछे शीतल होनेपर उस पर्पटीको निकाल चूर्ण करे. इस प्रकार व्याधिघातिनी पर्पटी सिद्धि होय. ज्वरादिव्याधियोंसे पीडित विश्वको देख प्रथम श्रीमहादेवजीनें कृपाकर अमृतके समान यह पर्पटी कही है. इस्को १ रत्ती भुनेजीरे और आध रत्ती हींगके साथ इसकी पर्पटी करे. इसको रोगानुसार न्यारे २ अनुपानसे देवे. इसको खाकर ३ चुल्लु पानी पीवे. ऐसे प्रतिदिन १ रत्ती बढावे इस प्रकार दश रत्तीतक बढावे,पीछे एक २ रत्ती नित्य घटावे. इस प्रकार २० दिन पर्यंत सेवन करे. शिव, गुरू और ब्राह्मणोंका पूजन तथा प्रणामकर श्रद्धापूर्वक भक्षण करे. और दूधभात पथ्य खाय तो ज्वर संग्रहणी, अतिसार, कामला, पांडुरोग, शूल, तापतिल्ली, जलोदर, इत्यादिक रोग दूर होवे. देहको हृष्ट-पुष्ट करे. वृद्धावस्थारहित १०० वर्ष जीवे ।

जीर्णज्वरहररसः

नागंवंगंरसंताम्रंगन्धकंटंकणंतथा ।
शुद्धंविषंचजैपालंहरितालंसमंतथा ॥
वटक्षीरेणमर्द्याथसर्वेकुर्यात्तुगोलकं ।
तंगोलंभाण्डमध्येतुपाचयेद्दीपवन्हिना ॥
तंगोलंशीतलंकृत्वाभृंगराजेनमर्दयेत् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिमर्दयेच्चपुनःपुनः ॥
चणप्रमाणवटिकान्रसेनार्द्रस्यदापयेत् ।
गुंजाद्वयप्रयोगेणज्वरंजीर्णंहरत्यसौ ॥

अर्थ–सीसेकी भस्म, वंग, खपरिया, तांबेकी भस्म, गंधक, सुहागा, पारा, विष, और जमालगोटा, हरिताल, सबको बडके दूधमें खरलकर गोला बनावे। उस गोलाको किसी दूसरे पात्रमें रखकर दीपकके समान अग्नि देवे, पीछे उस गोलेको शीतल कर उस रसको भांगरेके रसमें खरल करे। तथा अदरकके रसमें खरल करे, पीछे चनेके समान गोलियां बनावे, एक गोली अदरकके रसके साथ खानेको देवे. दो रत्ती रसके खानेसे जीर्णज्वर यानी पुराना ज्वर दूर होवे ।

कज्जली.

शुद्धसूतंतथागन्धंखल्वेतावद्विमर्दयेत् ।
सूतंनदृश्यतेयावत्किन्तुकज्जलवद्भवेत् ॥
एषाकज्जलिकाख्यातावृंहणीवीर्यवर्द्धनी ।
नानानुपानयोगेनसर्वव्याधिविनाशिनी ॥
एतत्कज्जलिकाविधानंरसप्रदीपेप्रोक्तम् ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, दोनोंको खरलमें डालकर जबतक मर्दन करे जबतक पारा दीखनेसे बंद न हो और दोनोंकी कजली काजलके समान होजाय, यह कजली पुष्ट करे, और वीर्यको बढावे, अनेक अनुपानोंके साथ सर्व रोग दूर करे यह कजलीकी विधि रसप्रदीपग्रंथमें कही है ।

कज्जल्याःप्रकारान्तरं.

कंटकारीसिन्धुवारस्तथापूतिकरंजकं ।
एतेषांरसमादायकृत्वाखर्परखण्डकं ॥ १ ॥
प्रक्षेप्यंगन्धकंतत्रतांचमृद्वग्निनादहेत् ।
गन्धकेस्नेहतापन्नेतत्समंपारदंक्षिपेत् ॥ २ ॥
मिश्रीकृत्यततोद्वाभ्यांद्रुतंतमवतारयेत् ।
आमर्दयेत्तथाचतुयथास्यात्कज्जलप्रभम् । ३।
ततस्तुरक्तिकामस्यमापकंजीरकस्यच ।
माषकंलवणस्यापिपर्णेकृत्वानिधापयेत् ॥४
ज्वरेत्रिदोषजेघोरेजलमुष्णंपिवेदनु ।
छर्द्यांशर्करयादद्यात्सामेदद्यात्तथागुडम्।५।
क्षयेछागभवक्षीरंप्रदद्यादनुपानकम् ।

रक्तातिसारेकुटजमूलवल्कलजंरसम् ॥ ६ ॥
रक्तवान्तौतथादद्यादुदुम्बरभवंजलं ।
सर्वव्याधिहरश्चायंगन्धकःकज्जलीकृतः॥७॥
आयुर्वृद्धिकरश्चैवमृतंचापिप्रबोधयेत् ।

अर्थ—कटेरी, निर्गुंडी और कंजा इनका रस एक, खीपरामें भर उसमें गंधक डाल, नीचे अग्नि बरावे. मन्द अग्निसे पचावे जब गंधक पतली होजावे तब गंधकके समान शुद्ध पारा मिलावे. दोनोंको मिला शीघ्र चूल्हेपरसे उतार लेवे. पीछे खरलमें डाल जबतक घोटे, तबतक कज्जलके सदृश होवे. पीछे इस १ रत्ती कजलीको १ मासे जीरे १ मासे नोंनकेसाथ पानमें रखकर खाय तो घोर त्रिदोषजनितज्वर इसके ऊपर गरमजल पीनेसे दूर होवे. छर्दिरोगमें मिश्रीके साथ, सामज्वरमें गुडके साथ देवे, खईरोगमें बकरीके दूधकेसाथ देवे. रक्तातिसारमें कुडाकीछालके रसमें देय. रुधिरकी वमनमें गूलरके जलके साथ देवे. यह गंधककी कजली सर्वरोग नाशक है. आयुकी वृद्धिकर्त्ता है. मृततुल्य मनुष्यकोभी जिलावे।

इतिश्री माथुरदत्तरामनिर्मिते रसराजसुंदरे उत्तरखण्डे ज्वराधिकारः समाप्तः

अथज्वरातिसाराधिकारः

सिद्धप्राणेश्वरोरसः

गन्धेशाभ्रंपृथक्वेदभागमन्यच्चभागिकम् ।
सर्जिटंकयवक्षाराःपञ्चैवलवणानिच ॥
वराव्योपेन्द्रबीजानिद्विजीराग्नियवानिका ।
सहिंगुबीजसारंचशतपुष्पासुचूर्णिता ॥
सिद्धप्राणेश्वरःसूतःप्राणिनांप्राणदायकः ।
माषैकंभक्षयेदस्यनागवल्लीदलैर्युतम् ॥
उष्णोदकानुपानंचदद्यात्तत्रपलत्रयं ।
ज्वरातिसारेऽतिसृतौकेवलेवाज्वरेऽपिच ॥
घोरेत्रिदोषजेरोगेग्रहण्यामसृगामये ।
वातरोगेचशूलेचशूलेचपरिणामजे ॥

अर्थ—गंधक, पारा, अभ्रक, प्रत्येक ४ मासे, सज्जिखार, सुहागा, जवाखार, पांचौंनोंन, त्रिफला, त्रिकुटा, इन्द्रजौ, दोनों जीरे, चित्रक, अजमायन, हींग, वांयविडंग, ओर सौंफ प्रत्येक एक २ मासे लेवे. सबको कूट पीस एक २ मासेकी गोली बनावे. यह सिद्धप्राणेश्वर पारा प्राणियोंको प्राणदायक है. १ गोलीको पानमें रखकर ऊपर गरमजल पीवे, तो ज्वरातिसार वा केवलज्वर, त्रिदोषके रोग, संग्रहणी, रुधिरके उपद्रव, वातरोग, शूल, और परिणामशूल,इत्यादिक रोगोंको यह रस दूर करे।

गगनसुन्दरोरसः

टंकणंदरदंगन्धमभ्रकंचसमंसमं ।
दुग्धिकायारसेनैवभावयेच्चदिनत्रयम् ॥
द्विगुंजंमधुनादेयंश्वेतसर्ज्जस्यवल्लकं ।
विविधंनाशयेद्रक्तंज्वरातीसारमुल्वणं ।
पथ्यंतक्रंपयश्छागमामशूलंविनाशयेत् ।
अग्निवृद्धिकरोह्येषरसोगगनसुन्दरः ॥

अर्थ—सुहागा, हींगलू, गंधक, अभ्रक, ये सब बराबर लेवे. दुद्धीके रससे तीन दिन खरल करे. पीछे दो २ रत्तीकी गोली बनावे १ गोली शहत और २ रत्ती सफेद रालके साथ देवे तो अनेक प्रकारके रुधिर विकार और ज्वरातिसार नष्ट होवे. इसपर छाछ, बकरीका दूध पीवे तो आमशूलको नष्ट करे, अग्निको प्रबल करे, यह गगनसुन्दर रस है।

कनकप्रभावटी.

सुवर्णबीजंमरिचंमरालं पादंकणाटंकनकंविपंच। गन्धंजयाद्रिर्दिवसंत्रिमर्द्य गुंजाप्रमाणं

वटिकांविदध्यात् ॥ एषातिसारग्रहणीज्वराग्निमांद्यानिहन्यात्कनकप्रभेयं । दध्योदनंपथ्यमनुष्णवारिमासंभजेत्तित्तिरलावकानां॥

अर्थ–धतूरेके बीज, काली मिरच, हंसपदी, पीपल, सुहागा, सिंगियाविष, और गंधक ये सब वस्तु समान लेवे । सबको भांगके रसमें खरल कर १ रत्तीकी गोली बनावे इस रसके सेवन करनेसे अतिसार, संग्रहणी, ज्वरातिसार और मन्दाग्नि इन रोगोंको यह कनकप्रभावटी दूर करे । इसपर दही, भात, शीतलजल तथा तीतर और लवापक्षी आदिका मांस खाना पथ्य है ।

इतिज्वरातिसाराधिकारःसमाप्तः

अतिसाररोगचिकित्सा.

आनन्दभैरवरसः

दरदंवत्सनाभंचमरिचंटंकणंकणा ।
चूर्णयेत्समभागेनरसोह्यानन्दभैरवः ॥
गुंजैकंवाद्विगुंजावाबलंदृष्ट्वाप्रयोजयेत् ।
मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलत्वचं ॥
चूर्णितंकर्षमात्रंतुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ।
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंगवाजंतक्रमेववा ॥
पिपासायांजलंशीतंविजयाचहितानिशि ।

अर्थ–शिंगरफ, विष, मिरच, सुहागा, पीपल, सबको बराबर लेकर पीसे तो आनन्दभैरवरस सिद्धि होय. एक वा दो रत्ती बलाबल देखकर देवे और इसके ऊपर कुडाकी छालका चूर्ण शहतके साथ भक्षण करे, तो त्रिदोषजनित अतिसार दूर होवे । दहीं भात अथवा गौ और बकरीकी छाछ पथ्य देवे । शीतलजल और रात्रिमें भांग पीना हित है ।

सुश्लक्ष्णतीक्ष्णचूर्णन्तुरसेन्द्रसमभागिकम् ।
कांचनाररसैर्घृष्ट्वासर्वातीसारनाशनम् ॥

अर्थ–फौलादकी भस्म और पारा दोनों बराबर लेकर कचनारके रसमें पीसकर गोली बनावे । इसके खानेसे सब प्रकारके अतिसार नष्ट होवे ।

दर्दुराह्वसूतः

पिष्टःसमेनतीक्ष्णेनकांचनाराम्बुमर्दितः ।
पुटपाकोतिसारघ्नःसूतोऽयंदर्दुराह्वयः ॥

अर्थ–समान लोहभस्मके साथ पारेको पीसकर और कचनारके रसकी भावना दे पुटपाक करे,तो यह दर्दुराह्व पारा अतिसारको दूर करे.

वातातिसारेवातारि.

शुद्धसूतंमृतंगन्धंलोहकंचैवमाक्षिकं ।
पथ्याशृंगीविषंतुल्यमग्निमंथंचटंकणम् ॥
तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेशुंठीनिर्गुंडिकारसैः ।
द्विगुंजावटिकांखादेत्सर्ववातोपशांतये ॥

अर्थ–शुद्धपारा, विष, गंधक, लोहकीभस्म, माक्षिकभस्म, हरड, सिंगियाविष, अरनी, सुहागा, सब बराबर लेवे. सबको खरलकर सोंठ और निर्गुंडीके रसमें खरल करे और दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह सर्व वातातिसार शान्तिकरे ।

अमृतार्णवरसः

हिंगुलोत्थंरसंलोहंगन्धकंटंकणंशटी ।
धान्याकंवालकंमुस्तंपाठाजीरघनप्रिया ॥
मल्लेकंतोलकंचूर्णंछागीक्षीरेणपेषयेत् ।
माषाभावटिकाकार्य्यारसोयममृतार्णवः ॥
वटिकांभक्षयेत्प्रातर्गहनानन्दभाषितां ।
धान्यजीरकचूर्णेनविजयाशाल्वीजतः ॥
मधुनाछागदुग्धेनमंडेनशीतवारिणा ।
कदलीमोचकरसैःकंटकारीद्रवेणवा ॥
अतिसारंजयेदुग्रमेकजंद्वंद्वजंतथा ।

दोपत्रयसमुद्भूतमुपसर्गसमन्वितं ॥
शूलघ्नोवन्हिजननोग्रहण्यर्शोविकारनुत् ।
अम्लपित्तप्रशमनःकासघ्नोगुल्मनाशनः ॥

अर्थ–हींगलूसे निकाला पारा, लोहभस्म, गंधक, सुहागा, कचूर, धनियां, नेत्रवाला, नागरमोथा, पाढ, जीरा और अतीस, प्रत्येक एक २ तोला लेवे. सबका चूर्णकर बकरीके दूधसे पीस एक २ मासेकी गोलियां बनावे. इस रसको अमृतार्णव कहते हैं. यह गहनानन्द सिद्धकी कही हुई गोली धनियां, जीरा, भांग, शालबीज, शहत, बकरीका दूध, भातका मांढ, शीतलजल, केलाकी जडकारस, मोचरस अथवा कटेरीका रस, इनमेंसे किसी एकके साथ खावे तो घोर अतिसारको दूर करे। एकदोपज, द्विदोपज, त्रिदोपज, उपद्रवयुक्त सब अतिसार दूर होवे । शूल, संग्रहणी, बवासीर, अम्लपित्त, खांसी, और गोला इन रोगोंका नाश करे. और अग्निको प्रज्वलित करे।

आनन्दभैरवरसः

हिंगुलंवत्सनाभंचमरिचंटंकणंकणा ।
मर्दयेत्समभागंचरसोह्यानन्दभैरवः ॥
गुंजैकमर्द्धगुंजांवाबलंज्ञात्वाप्रदापयेत् ।
मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यपलंत्वचं ॥
चूर्णितंकर्षमात्रंतुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ।

अर्थ–हिंगुल, विप, मिरच, सुहागा, पीपल, सब बराबर लेकर घोटे तो यह आनन्द-भैरवरस तयार होवे. १ रत्ती अथवा आधी रत्ती बलाबल देखकर शहतके साथ देवे, इसके ऊपर कूडाकी छाल १ पलका काढा पीवे तो त्रिदोपजन्य अतिसार दूर होवे.

महारसः

भस्मसूतस्यतीक्ष्णस्यमरिचाज्यंसमंसमं ।
सुकुक्षीरकाकमाचीभ्यांमर्दयेद्याममात्रकं ॥
निरुध्यभूधरेपाच्यंदिनैकेनमहारसं ।
निष्काद्धंभावयेच्चानुपाययेद्दधिसंयुतम् ॥
सर्पाक्षीकर्पमात्रंतुपीत्वावातातिसारनुत् ।

अर्थ–पारेकी भस्म, फौलादकी भस्म, मिरच और घृत ये सब वस्तु बराबर लेवे । सबको कूट पीस थूहरके दूध और मकोयके रसमें एक प्रहर खरल करे । पीछे सरावसंपुटमें बंदकर भूधरयंत्रमें रखकर एक दिन पचावे, तो यह महारस सिद्ध होवे । इसमेंसे डेढ मासे अनुपानके साथ देवे । और ऊपर दही तथा शरफोका मिलाय दश मासे खानेको देवे, तो वातातिसार दूर होवे ।

द्वितीयमहारसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंमरिचंटंकणंकणा ।
स्वर्णबीजसमंमर्द्यभृंगिद्रावैर्दिनार्द्धकं ॥
सूततुल्योरसोयोज्योरसःकनकसुन्दरः ।
योज्योगुंजाद्वयंहन्तिवातातीसारमद्भुतं ॥
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यमाज्यंवाथगवांदधि ।

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, काली मिरच, सुहागा, पीपल, तथा धतूरेके बीज, इन सबको बराबर ले खरलमें डाल भांगरेके रसकी आधे दिन भावना देवे । पीछे इसमें पारेके समान कनकसुन्दर रस मिलावे तो यह महारस दो रत्ती देनेसे अद्भुत वातके अतिसारको दूर करे । इसके ऊपर दही भातका पथ्य देना चाहिये. "सूततुल्योरसोयोज्यः" इस जगह कोई आचार्य कहते हैं कि "सूततुल्यं विषंयोज्यं" अर्थात् पारेके तुल्यविप लेवे ।

जातीफलरसः

पारदाभ्रकसिन्दूरंगन्धंजातीफलंसमं ।
कुटजस्यफलंचैवधूर्त्तबीजानिटंकणं ॥

व्योपंमुस्ताभयंचैवचूतबीजंतथैवच ।
बिल्वकंसर्ज्जबीजंचदाडिमीवल्कजीरकं ॥
एतानिसमभागानिनिःक्षिपेत्खल्वमध्यतः ।
विजयास्वरसेनैवमर्दयेत्श्लक्ष्णचूर्णितम् ॥
गुंजाफलप्रमाणन्तुवटिकांकारयेद्भिषक् ।
राकांकुटजमूलत्वक्कषायेणप्रयोजयेत् ॥
आमातिसारंहरतिकुरुतेवह्निदीपनम् ।
मधुनाबिल्वशुंठेनरक्तंग्रहणिकांजयेत् ॥
शुंठीधान्यकयोगेनचातिसारंनिहंत्यसौ ।
जातीफलरसोह्येषग्रहणीगदहारकः ॥

अर्थ—पारा, अभ्रकभस्म, रससिन्दूर, गंधक, जायफल, इन्द्रजौ, धतूरेके बीज, सुहागा, त्रिकुटा, नागरमोथा, हरड, आमकी गुठली, बेलगिरी, सालके बीज, अनारकी छाल, जीरा ये सब वस्तु बराबर लेवे । सबको कूट पीस भांगके पत्तोंके रसमें खरल करे । एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. १ गोली कूडाकी छालके काढेसे देवे । तो आमातिसारको दूर करे । अग्निको प्रज्वलित करे । रक्तसंग्रहणी रोगमें शहत और बेलगिरीके चूर्णके साथ देवे । और सोंठ धनियेके साथ देवे तो अतिसार दूर होवे । यह जातीफलरस संग्रहणी रोगका नाशक है ।

सुधासाररसः

पृथक्पलिकगंधाश्मसूतसंजातकज्जालिं ।
प्रद्राव्यनिक्षिपेद्व्योमपलिकंगतचंद्रकम् ॥
काष्ठेनालोड्यतत्सर्वंक्षिपेत्कुटजपत्रके ।
पुनःसंचूर्ण्ययत्नेनभावयेत्तदनन्तरं ॥
बालतिन्दुफलद्रावैःक्षीरकोदुम्बरैस्तथा ।
अरलुत्वग्रसैश्चापिदुग्धनीस्वरसैस्तथा ॥
पुटपक्वस्यबालस्यदाडिमस्यरसैःशुभैः ।
कृष्णकांबोजकामूलरसैःकुटजवल्कलैः ॥
तुल्यांशविश्वगांधारीचूर्णंद्विपलिकंक्षिपेत् ।
मुस्तावत्सकदीप्याग्निमोचसारंसजीरकम् ॥
वत्सनाभंचकर्षांशंप्रत्येकंतत्रनिक्षिपेत् ।
विचूर्ण्यभावयेद्भूयःशुंठीक्वाथेनसप्तधा ॥
सुधासारइतिख्यातःसुधारससमद्युतिः ।
दीपनःपाचनोग्राहीहृद्योरुचिकरःस्तथा ॥
दोषनयातिसारंचदुर्जयंभेषजान्तरैः ।
आमंचैवामरक्तंचज्वरातीसारमेवच ॥
सातिसारीविषूचींचप्रतिवघ्नातितत्क्षणात् ।
स्त्रीणांमानव्यतिक्रान्तिरिवपुष्पफलोदयं ॥
पिष्टंविश्वाष्टकल्केनपिधायखलुचक्रिकां ।
निक्षिपेत्स्वेदनीयंत्रेपकार्थंघटिकावधिः ॥
आकृष्यतज्जलैरेवंसंप्रमर्द्यहरेद्रसं ।
सुधासाररसंतत्रक्षिप्त्वाधान्यकसंमितं ॥
पूर्वोदितेपुरोगेपुप्रदद्दीतभिषग्वरः ।
गोतक्रेणाजदुग्धावापथ्यंदेयंहितंमितं ॥
बालरम्भाफलंगुर्वीफलंबिल्वफलंतथा ।
आम्रपेशीचमधुकंवृन्ताकंचप्रशस्यते ॥
सर्वातिसारग्रहणींचहिक्कांमन्दाग्निमानाहमरोचकंच । निहन्तिसद्योविहितामपाकेद्वित्रिप्रयोगेणरसोत्तमोयम् ॥

अर्थ—गंधक ४ तोले, पारा ४ तोले, दोनोंकी कजली करे । पीछे इस कजलीको अग्निमें तायकर इसमें निश्चंद्र अभ्रककी भस्म ४ तोला डाले, पीछे किसी लकडीसे उसको मिलावे । तदनन्तर गोबरसे पृथ्वी लीप उसपर कूडाके पत्र बिछाय उसपर अभ्रक मिली कजलीको ढाल देवे । जब पपडी जम जावे तब उठा खरलमें डालकर घोटे । और इसमें नये कुचलेके रस, गूलरके दूध, सोन पाढरकी छालके रस, और दुद्धीके रसकी भावना देकर घोटे । तथा पुटपाक किये हुए कच्चे अनारके रसमें घोटे ।

गुंजाकी जडके रसमें, कूडाकी छालके काढेमें, पृथक् २ खरल करे । पीछे सबकी बराबर ल्हसनका चूर्ण डाले, पीछे नागरमोथा, कूडाकी छाल, अजमायन, चित्रक, मोचरस, जीरा, विष, प्रत्येक एक २ तोला डाले । सबका चूर्णकर सोंठके काढेकी सात भावना देवे, तो अमृतके तुल्य यह सुधासार रस बने. यह दीपन है, पाचन है, ग्राही है, हृदयको हित है, और रुचि कर्ता है । जो किसी औषधिसे न जावे ऐसा त्रिदोषजनित अतिसार दूर होवे। आम, आमरक्त, ज्वरातीसार, अतिसार, संयुक्त विशूचिका। इनको तत्क्षण बन्द करे । जैसे वसन्तऋतुके आतेही स्त्रियोंका मान नष्ट हो जाता है । पारे गंधकको अष्टावशेष सोंठके काढेमें घोट टिकिया बनावे, और कपडेमें बांधकर आध घडीपर्यन्त स्वेदनीयंत्रसे स्वेदन करे, पीछे उन टिकियाओंको निकाल उसी जलसे खरल करे पीछे इसमें सुधासाररस १ मासे डालकर घोटे पीछे गोलियां बनावे, इस गोलीको बलाबल देखकर पूर्वोक्त रोगोंमे देनी चाहिये । गौके मठे वा बकरीके दहीमें देना चाहिये ।.केलाकी फली, सुपारी, बेलका फल, आमकी गुठली, महुआ और बैंगन इतनी वस्तू इसपर खाना पथ्य है. यह रस सर्व प्रकारके अतिसार, संग्रहणी, हिचकी, मंदाग्नि, अफरा, अरुचि, इत्यादि रोगोंको दो तीन बारके खानेसेही नष्ट करे ।

अभयनृसिंहोरसः

दरदंचविषंव्योषंजीरकंटंकणंसमं ।
गन्धकंचाभ्रकंचैवभागैकंशुद्धसूतकम् ॥
आहूकंसर्वतुल्यंस्यान्मर्दयेन्निम्बुकद्रवैः ।
एकैकंभक्षयेचानुजीरकंमधुनासह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसज्वरंवाथविज्वरं ।
सर्वरूपमतीसारंसंग्रहंग्रहणींजयेत् ॥
रसोऽभयनृसिंहोऽयमतीसारेसुपूजितः ।

अर्थ-हींगलू, विष, त्रिकुटा, जीरा, सुहागा, गन्धक, अभ्रक और पारा, ये सब समान भाग लेवे । सबके बराबर अफीम लेवे । सबको नींबूके रसमें खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे । जीरेके चूर्ण और शहतके साथ एक गोली नित्य सेवन करे, तो ज्वरसहित वा ज्वररहित त्रिदोषके सन्निपातको दूर करे । तथा सब प्रकारके अतिसार, संग्रहणीको दूर करे । यह अभय नृसिंहरस अतिसार रोगमें माननीय है ।

लोकेश्वररसः

द्वौभागौगन्धकस्याष्टौशंखचूर्णस्ययोजयेत् ।
एकमेवरसस्यांशमर्कक्षीरेणमर्दयेत् ॥
चित्रकस्यद्रवेणैवशोषयित्वापुनःपुनः ।
एकीकृत्यरसेनाथक्षारंदत्वातदर्धकम् ॥
अर्कक्षीरेणकुर्वीतगोलकानथशोषयेत् ।
निरुध्यचूर्णलिप्तेथभाण्डेदद्यात्पुटंततः ॥
लोकनाथरसोह्येषसर्वातीसारनाशनः ।
गोतक्रेणनिहन्त्याशुग्रहणीगदमुत्कटं ॥
गुंजाचतुष्टयंचास्यमरिचाज्यसमन्वितं ।
दद्दीतदधिभक्तंचग्रहण्यांचविशेषतः ॥

अर्थ-गंधक २ तोले, शंख भस्म ८ तोले, पारा १ तोले, सबको आकके दूधसे खरल करे। पीछे चित्रकके रससे वारंवार खरल करे। पीछे सबको सुखाकर एकत्र कर इस रससे आधा आकका खार मिलाय, आकके दूधसे गोला बांधे । उसको धूपमें सुखाय सराव संपुटमें रख कपरमिट्टि कर पकावे तो यह लोकनाथरस सिद्ध होवे । यह सब अतिसारोंको दूर

करे। गौकी छाछके साथ लेवे, तो घोर संग्रहणीको दूर करे। ४ रत्ती यह रस काली मिरच और घृतके साथ संग्रहणी रोगमें देवे और दही भातका पथ्य देना चाहिये।

कर्पूररसः

हिंगुलंचाहिफेनंचमुस्तकेन्द्रयवंतथा।
जातीफलंचकर्पूरंसर्वसंमर्घयत्नतः॥
जलेनवटिकाकार्य्याद्विगुंजापरिमाणतः।
ज्वरातिसारणेचैवतथातीसाररोगिणे॥
ग्रहणीषट्प्रकारेचरक्तातीसारउल्वणं।
(अत्रकेचित्टंकणमप्येकभागमिच्छंति)॥

अर्थ—हिंगुल, अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ, जायफल और कपुर सबको समान ले जलसे खरल कर, दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, [किसी वैद्यकी यह सम्मति है कि इसमें एक भाग सुहागा मिलावे,] एक गोली नित्य खाय तो ज्वरातिसार, अतिसार, छः प्रकारकी संग्रहणी और घोर रक्तातिसार ये सब दूर होवे।

नागसुन्दर.

नागभस्मरसव्योमगन्धैरर्द्धपलोन्मितैः।
कुर्वीतकज्जलींश्लक्ष्णांप्रक्षिपेत्तदनन्तरं॥
द्विपलोन्मितरालायांद्रुतायांपरिमिश्रिता।
भृष्टैर्यक्षाक्षसिन्धूत्थवचाव्योपद्विजीरकैः॥
सपथ्याविजयादिव्यैस्तुल्यांशैरवचूर्णितैः।
मेलयेत्प्राक्तनंकल्कंभावयेत्तदनन्तरं॥
महानिम्बत्वचासारैःकाम्बोजीमूलजद्रवैः।
रसैर्नागवलायाश्चगुडूच्याश्चत्रिधात्रिधा॥
ततश्चगुटिकाकार्य्यावदरास्थिप्रमाणतः।
हन्यादेवहिनागसुन्दररसोवल्लोन्मितःसेवितो
नानातीसरणंतथागुदपरिभ्रंशंतथार्त्तिविषं।

अर्थ—सीसेकी भस्म, पारा, अभ्रक, गंधक प्रत्येक २ तोला लेवे। प्रथम गंधक पारेकी कजली करे, पीछे इस कजलीमें सब औषधी मिलावें, तदनन्तर ८ तोले राल ले किसी पात्रमें रख अग्निपर पिघलावे, पीछे, इसमें पूर्वोक्त कजलीको मिला देवे। पीछे भुना बहेडा, सैंधानोन, वच, त्रिकुटा, दोनों जीरे, हरड, भांग ये सब बराबर लेकर चूर्ण करे, पीछे पूर्वोक्त पारे गंधककी कजलीमें मिलाय इसमें बकायनकी छालके काढे, घूंघचीकी जडके रस, नागवलाके रस, तथा गिलोयके रस, प्रत्येककी तीन ३ भावना देवे। फिर बेरकी गुठलीके समान गोलियां बनावे इस नागसुन्दर रसके सेवन करनेसे, अनेक प्रकारके अतिसार, तथा गुदाकी कांच निकलना, और विषरोगोंको दूर करे।

सूतादिवटी.

मृतंसूतंमृतंस्वर्णंमृतंताम्रंसमंसमं।
तुल्यंचखादिरंसारंतथामोचरसंक्षिपेत्॥
द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम्।
चणकाभावटींकृत्वाखादेज्जीरकसंयुताम्॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसज्वरंनाशयेद्ध्रुवम्।

अर्थ—पारेकी भस्म, सुवर्ण भस्म, ताम्रभस्म, सब बराबर लेकर इन तीनोंकी बराबर खैरसार और मोचरस लेवे.। सबको सेमरकी जडके रससे, दो प्रहर खरल कर चनेके समान गोलियां बनावे. १ गोली जीरेकेसाथ खाय तो त्रिदोषजन्य अतिसार ज्वरसहित दूर होवे।

चतुःसमागुटी.

अभयानागरंमुस्तंगुडेनसहयोजितं।
चतुःसमेयंगुटिकात्रिदोषघ्नीप्रकीर्त्तिता॥
आमातिसारमानाहंसविबन्धंविशूचिकां।
कृमीनरोचकंहन्यादीपयत्याशुचानलं॥

अर्थ—हरड, सोंठ, नागरमोथा, सबके समान गुड मिलाकर गोलियां बनावे तो यह

चतुःसमागुटिका, त्रिदोषातिसार, आमातिसार, अनाह, विबंध, विशूचिका, कृमिरोग, अरुचि, इन रोगोंको शान्ति करे. और जठराग्नि दीपन करे. [जहां जहां पारेकी भस्म लिखी होवे तहां २ चंद्रोदय डालना चाहिये।]

लोकनाथरसः

शुद्धंसूतंद्विभागन्धंमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
संजातेकज्जलंश्लक्ष्णंतेनपूर्यावराटिका ॥
टंकणंचगवांमूत्रेपिष्ट्वालेप्यंमुखंततः ।
वराटिकाःप्रयत्नेनरुध्वाभाण्डेपुटेपचेत् ॥
स्वांगशीतंतथाभाण्डमुत्तार्यचवराटिका ।
ततोसूक्ष्मंकृतंचूर्णंलोकेश्वररसःस्मृतः ॥
चतुर्गुंजाप्रमाणेनलीढंदधिमधुसमं ।
अतीसारंग्रहण्यार्शोनाशयेत्तत्क्षणादपि ॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, दोनोंको दो प्रहर घोटकर कजली करे. उस कजलीको पीले रंगकी कौडीमें भरे. कौडीके मुखको गोमूत्रसे पिसे सुहागेसे बंद करे। मुद्राकर अग्निका पूट देवे. जब शीतल हो जाय तब निकाल लेवे । ' ने महीन पीसे तो लोकनाथरस सिद्धि होवे. चार रत्ती रस दही शहतके साथ खाय तो अतीसार, संग्रहणी दूर होवे. [पीली कांति और जिसकी पीठ भी पीली होवे तथा मुख चौडा और तोलमें छः मासेकी होवे ऐसी कौडिको लेना चाहिये]

शंखोदररसः

मृतभस्मवल्लिर्लोहंविषंत्रिकटुकंसमं ।
पिष्ट्वानिम्बुजतोयेनशंखमभिश्चतुर्गुणं ॥
क्षिप्त्वामृद्गंशुकैर्लिप्त्वाभाण्डेगजपुटेपचेत् ।
शीतेचमाग्निपंक्षिप्त्वावल्लमात्रंप्रयोजयेत् ॥
जातीफलंचविजयामधुनातिसृतौददेत् ।
ग्रहण्यांचित्रकार्द्राम्बुविजयाविश्वभेषजं ॥
पृथक्देयंसमधुनामरीचंश्चघृतान्वितं ।
वन्हिमांद्यक्षयेतद्वदुदरोत्थानिलामये ॥
पथ्यंदध्याचतक्रेणक्षीरशाकैश्चसंयुतम् ।

अर्थ–पारेकी भस्म, गंधक, लोह, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, सब बराबर लेवे. नींबूके रससे खरल कर सब औषधियोंके वजनसे चौगुने वजनका शंख ले उसमें सब औषधियोंको भर ऊपर कपरमिट्टी देकर सरावसंपुटमें रख गजपूटमें फूंक देये । जब स्वांगशीतल हो जाय तब निकाल एक भाग विष मिलावे और दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे । एक गोली जायफल, भांग और शहतके साथ देवे तो अतीसार दूर होवे. संग्रहणीमें चित्रक, अदरक, नेत्रवाला, भांग, सोंठ, और शहतके साथ देवे. तथा मिरच घृतकेसाथ मंदाग्निमें खई उदरके रोग, और वादीके रोगोंमें देवे. दही, छाछ, दूध, और शाक ये संग्रहणी रोगमें पथ्य है ।

तृप्तिसागररसः

रसभस्मंतुभागंकंरसाद्द्विगुणगन्धकम् ।
गंधकाद्द्विगुणंचाभ्रंनिश्चन्द्रंमर्दयेत्ततः ॥
दिनैकंकटुतलेनरुध्वाचुल्यांविपाचयेत् ।
यामैकंवालुकायंत्रेसमुधृत्यविमर्दयेत् ॥
हयमारकमूलोत्थैरसैर्यामंनिरुध्यच ।
पूर्ववत्पाचयेच्चुल्यांसमादायविमिश्रयेत् ॥
त्रिक्षारंपंचलवणंनिष्कामिद्वयजीरकैः ।
विडंगेनचतत्तुल्यंयुक्तोयंतृप्तिसागरः ॥
भक्षयेन्मापमात्रंचसन्निपातातिसारजित् ।
सज्वरांग्रहणींहन्तिसानुपानंविनारसः ॥

अर्थ–पारेकी भस्म १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक ४ भाग, ये सब पदार्थ एकत्र मर्दन कर सरसोंके तेलसे १ दिन खरल करें, पीछे शीशीमें भर मुख बंद कर एक प्रहर वा-

लुकायंत्रमें पचावे। तदनन्तर कनेरकी जडके रसमें खरल करे, १ प्रहर पीछे पूर्वोक्त रीतिसे शीशीमें भरकर पचावे. पश्चात् उस रसको शीशीसे निकाल सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, सैंधानोंन, साम्भरनोंन, कचियानोंन, कालानोंन, सामुद्रनोंन, चित्रक, सफेद जीरा, काला जीरा, वायविडंग, हरएक ३ मासे ले सबका चूर्ण कर इस रसमें मिला देवे. तो यह तृप्तिसागररस बने. इसमेंसे १ मासे देवे तो सन्निपातके अतिसारको दूर करे. ज्वरसहित संग्रहणी इन सब रोगोंको विना अनुपानही दूर करे।

आनन्दरसः

जातीफलंसैन्धवहिंगुलंचवराटशुंठीविषहेम बीजं। सपिप्पलीकंवटिकांचकुर्य्याद्गुंजाप्रमाणंजठरामयघ्नी ॥ निहन्तिवातंकफशूलमात्र मामातिसारंग्रहणीविकारं । निहन्तिशुष्कं सितयासमेतंरसोयमानन्दइतिप्रदिष्टः ॥

अर्थ–जायफल, सैंधानोंन, हिंगलू, कौडीकी भस्म, सोंठ, सिंगिया विष, धतूरेके बीज और पीपल, ये सब समान भाग लेवे। सबको पीस एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे। इस गोलीको खांडके साथ खानेसे उदररोग, वात, कफशूल, आमातिसार, संग्रहणी, योनिरोग, इनको दूर करे. इस रसको आनन्दरस कहते हैं।

गंगाधरोरसः

मुस्तंमोचरसंलोध्रंकुटजत्वक्तथैवच ।
बिल्वास्थिधातकीपुष्पमहिफेनन्तुगन्धकं ॥
शुद्धंहिपारदंचैवसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ।
रसोगंगाधरोनाम्नामाषमात्रंप्रयोजयेत् ॥
वल्लमात्रमिदंखादेद्गुडतक्रसमन्वितं ।
सर्वातिसारंग्रहणींप्रशमंयातिवेगतः ॥
सरिद्वेगप्रवाहघ्नंपथ्यंतक्रौदनंतथा ।

अर्थ–नागरमोथा, मोचरस, लोध, कुडेकी छाल, बेलगिरी, धायके फूल, अफीम, गंधक, और पारा. प्रथम पारेकी कजली करे। पीछे पूर्वोक्त औषधियोंका चूर्ण मिलाय छोतरानके रससे १ रत्तीकी गोली बनावे. १ गोली गुड और छाछके साथ देवे तो यह गंगाधर नामक रस सब अतिसार, संग्रहणी, इनको दूर करे। यह रस नदीके सदृश वेगकोभी बंद करनेवाला है। इसपर दही भात खाना पथ्य है। यह लक्ष्मणोत्सव ग्रंथमें लिखा है।

अतिसारेभसिंहोरसः

पारदंगन्धकंशुद्धमहिफेनंचतत्समं ।
मर्दयेद्विजयाद्रावैर्धत्तूरस्यरसैःपुनः ॥
जातीफलचतुर्थांशंमाषमात्रन्तुभक्षयेत् ।
अतिसारेभसिंहोयंविख्यातोरससागरे ॥

अर्थ–पारा, गंधक, दोनों शुद्ध लेवे, और पारेके तुल्य अफीम लेवे, सबको भांगके रसमें घोटे, पीछे धतूरेके रससे खरल करे, और एक २ मासेकी गोली बनावे। १ गोली चौथाई जायफलके साथ खाय तो सब प्रकारके अतिसार रोगोंको दूर करे, इसको अतिसारेभसिंहरस कहते हैं. यह शिवानुभव ग्रंथमें लिखा है।

चन्द्रप्रभावटी

मृतंसूतंमृतंचाभ्रंमृतंस्वर्णसमंसमं ।
तुल्यंचखादिरंसारंतथामोचरसंक्षिपेत् ॥
द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयं ।
चणकाभावटीखादेन्निष्कैकंजीरकैःसह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसज्वरंनाशयेद्ध्रुवं ।

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रककी भस्म, सोनेकी भस्म, ये सब समान लेवे। इनके बराबर

ही खैरसार और मोचरस लेवे. सबको सेमरकी जडके रसमें दो प्रहर मर्दन करे. और चनेकी बराबर गोलियां बनावे. १ गोली ३ मासे जीरेके साथ खाय तो ज्वरसहित त्रिदोषका अतिसार दूर होवे।

पंचामृतपर्पटी

रसायसंचताम्राभ्रसर्वैर्द्विगुणगन्धकम् ।
लोहपात्रेबादराग्नौमृदुपाकोभवेद्रसः ॥
लेपयेत्कदलीपत्रेकर्त्तव्यारसपर्पटी ।
पंचामृतापर्पटीचरसोवन्हिप्रदीपनः ॥
ज्वरातिसारकासघ्नीकामलापाण्डुमेहजित् ।
अनुपानंमलेबद्धेज्वरेजीर्णेजमूत्रकम् ॥
पलंपथ्यंतुतैलाम्लवर्ज्यमन्यत्सुयुक्तितः ।

अर्थ-पारा, लोहभस्म, तांबेकी भस्म, अभ्रककी भस्म, इन सबको बराबर लेवे। और गंधक दो भाग लेवे सबको लोहपात्रमें रख बेरकी आंचसे मन्द २ पचावे। जब सब मिल जावें तब उनको केलाके पत्तेपर ढाल देवे. तो पंचामृत पर्पटी सिद्ध होवे, यह अग्निदीपक, ज्वर, अतीसार, खांसी, कांमला, पांडुरोग, और प्रमेह इनका नाश करे। मल रुकनेमें और जीर्णज्वरमें ४ तोले बकरीके मूत्रमें देवे. तेल, खटाईको छोड और सब वस्तु युक्तिसे देवे।

नृसिंहपोटलीरसः

रसश्चगन्धपाषाणःप्रत्येकंकर्षमात्रकम् ।
श्लक्ष्णचूर्णंद्वयोःसम्यक्प्रकुर्यात्कुशलोभिषक् ॥ एतच्चूर्णंपीतवर्णाकपर्दाभ्यन्तरेकृतं ।
शरावसम्पुटेकृत्वालिप्त्वासंमृतगोमयैः ॥
सतीव्राग्नौपचेत्तावद्यावद्गच्छतिभस्मतां ।
समुद्भृत्यास्मनासर्वंचूर्णितंसकपर्दकं ॥
गव्येनसर्पिषानित्यंभक्षयेद्रत्तिकाद्वयम् ।
ज्वरातीसारकंसर्वंहन्याच्चूर्णचतुर्जयं ॥
अतिसारंसमग्रंचग्रहणींसर्वजांतथा ।
चिरज्वरंचमन्दाग्निंक्षीणज्वरहरंचतत् ॥
रसराजनृसिंहस्यमतापोटलिकाहिता ।
हितासर्वज्वरीणान्तुसर्वातीसारिणांशुभा ॥

अर्थ-पारा और गंधक दोनों एक २ कर्ष लेकर कजलीकर पीली कौडीके अन्दर भरे। दो सराव के संपुटके अन्दर उन कौडियोंको रख कपरमिट्टीकर अग्निमें रख देवे। जब कौडी भस्म होजाय तब निकाल लेवे, उन कौडियों को पीसकर चूर्ण करे, इस चूर्णको २ रत्ती न बीन मक्खनके साथ खाय तो पुरानाज्वर दूर होवे। मंदाग्नि, मंदज्वर, इत्यादिक नष्ट होवे। ज्वरातिसार, अतिसार, संग्रहणी, दूर होवे। यह नृसिंहपोटली सर्वज्वर और अतिसारोंको दूर करती है।

अतिसारदलनोरसः

दरदाम्बुचकर्पूरंवत्सबीजंसुचूर्णितं ।
भावितंखाखसक्षीरैःसर्वातीसारनाशनं ॥
सूतपानीयतःसिद्धतक्रेनेदंद्रुतंभवेत् ।
नाम्नातीसारदलनमनुभूतंमहीतले ॥

अर्थ-हींगलू, नेत्रबाला, कपूर, कूडाके बीज, इन सबका चूर्णकर अफीमकी भावना देवे। पीछे पानीसे गोली बनाकर छाछके साथ भक्षण करे तो संपूर्ण अतिसार दूर होवे. यह अतिसारदलनरस अनुभूत है।

कनकसुन्दररसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंमरिचंटंकणंतथा ।
स्वर्णबीजंसमंमर्द्यंभृंगद्रावैर्दिनार्द्धकं ॥
सूततुल्यंविषंयोज्यंरसःकनकसुन्दरः ।
युक्तोगुंजाद्वयंहन्तिग्रातातीसारमद्भुतं ॥
दध्यन्नंदापयेत्पथ्यमाजंवाथगवांदधि ॥२॥

अर्थ—शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, काली मिरच, सुहागा, इन सबके बराबर धतूरेके बीज लेवे। सबको भांगरेके रसमें दो प्रहर घोटे, पीछे पारेके बराबर शुद्ध सिंगिया विष मिलवे तो यह **कनकसुन्दररस** बने। दो रत्ती खानेसे वातातिसारको शीघ्र दूर करे। इसके ऊपर भात तथा बकरीया गौका दही भोजन करना पथ्य है।

करुणासागररसः

रसभस्मद्विधागन्धस्तस्मात्द्विघ्नंमृताभ्रकं। दिनंसर्षपतैलेनपिष्टायामंविपाचयेत् ॥ रसंमार्कवमूलोत्थैर्निर्य्यासैःसंविमर्द्य च । त्रिक्षारपंचलवणंविषंव्योषाग्निजीरकैः ॥ सचित्रकैःसमानांशैर्युक्तैःकारुण्यसागरः । माषद्वयंप्रयुंजीतरसस्यास्यातिसारके ॥ सज्वरेविषमेवाथसशूलेशोणितोद्भवे । निरामेशोथयुक्तेवाग्रहण्यांसानुपानकम् ॥ अनुपानंविनाप्येषःकार्य्यसिद्धिंकरिष्यति।

अर्थ—चन्द्रोदय १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, अभ्रक भस्म ४ भाग, इन सबको सरसोंके तेलमें १ दिन घोटे। पीछे सरात्र संपुट करके वालुके यंत्रमें १ प्रहर पचावे। जब स्वांग शीतल होजावे तब निकाल भांगरेकी जडकी रसकी भावना देवे। पीछे ढाकके गोंद और मोचरसके साथ भांगरेके रसमे घोटे, पीछे सज्जीखार, जवाखार, सुहागा और पांचौनोन, शुद्ध सिंगियाविष व्योष (सोंठ, मिरच, पीपल) चीता, जीरा, और वायविडंग ये सब बराबर लेवे। सबको खरल करे, तो यह **करुणासागररस** सिद्ध होवे। दोमासे देनेसे अतिसारज्वर, विषमज्वर, शूल, रुधिरविकार, निराम और सूजन युक्त संग्रहणीमें अनुपानके साथ सेवन करनेसे सबको दूर करे। यह रस विना अनुपानकेभी कार्य्य सिद्ध करता है।

इतिश्री रसराजसुन्दरे उत्तरखण्डे अतिसाराधिकारःसमाप्तः

अथ संग्रहणी रोगाधिकारः

लघुलाईचूर्ण.

कर्षंगन्धकमर्द्धंपारदमुभेकुर्याच्छुभांकज्जलीं। त्र्यक्षंत्र्यूषणतश्चपंचलवणंसार्द्धंचकर्षंपृथक् ॥ भृष्टंहिंगुचजीरकद्वययुतंसर्वार्द्धभंगायुतं । खादेट्टंकमितंप्रवृत्तिगदवांस्तक्रस्यबिल्वेनच॥

अर्थ—गंधक ४ मासे, पारा २ मासे, दोनोंकी कजली करे इस कजलीमें सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक कर्ष २ भर लेवे। पांचोंनोन, दोनो जीरे, भुनीहींग, एक २ कर्ष लेवे। सब औषधियोंसे आधी भांग लेवे। सबका कूटपीस चूर्ण करे। इस चूर्णमेंसे १ टंक अतिसार वाला बेलगिरीके कादेसे अथवा छाछसे लेवे तो अतिसार दूर होवे।

मध्यलाईचूर्ण.

शाणंशाणंरसंगन्धंतयोःकुर्य्याच्चकज्जलीं। मृताभ्रंभ्रष्टबाल्हीकंत्रिसुगन्धंचवालुकं ॥ जातीफलंलवंगंचकुष्टंजीरंकुलिंजनं । व्योषंमोचरसंबिल्वंकारवीपद्पट्टनिच ॥ एतानिशाणमात्राणिभ्रष्टभंगाखिलैःसमाः। लाईचूर्णमितिख्यातंरुच्यंदीपनपाचनं ॥ प्रातस्तक्रेणशाणन्तद्देयंशाणार्द्धकंनिशि । अतक्रंहन्त्यतीसारंग्रहणींचप्रवाहिकां ॥

अर्थ—पारा १ शाण, गंधक १ शाण, दोनोंकी कजली करे। अभ्रककी भस्म, भुनीहींग, त्रिसुगंध (इलायची, तज, नागकेशर) जायफल, लौंग, कूट, जीरे, कुलिंजन, सोंठ, मिरच, पीपल, मोचरस, बेलगिरी, सौंफ, छःनो-

न, ये सब शाणमात्र अर्थात् चार २ मासे लेवे। सब औषधियोंके समान भुनी भांग लेवे। सबका कूट पीस चूर्ण करे, इस लाईचूर्णको छाछेकसाथ खानेसे रुचि करे, दीपन, पाचन है, प्रातःकाल ४ मासे और रातको २ मासे लेवे। और विना छाछके लेनेसे अतिसार और संग्रहणी दूर करे।

वृहल्लाईचूर्ण.

त्रिकटुत्रिफलाचैवविडंगंजीरकद्वयम् ।
भल्लातकंयवानीचाहिंगुलंलवणत्रयम् ॥
गृहधूमंवचाकुष्ठंरसोगन्धकमभ्रकं ।
क्षारत्रयाजमोदाचचित्रकंगजपिप्पली ॥
मुस्तामोचरसंपाठालवंगंजातिपत्रकं ।
समभागंकृतंचैपांचूर्णंश्लक्ष्णंविनिर्मितं ॥
शक्राशनस्यचूर्णन्तुसर्वतुल्यंप्रदापयेत् ।
मन्दाग्निकासदुर्नामप्लीहपांडुरुचिज्वरान् ॥
विष्टंभंसंग्राहिशूलंहन्यान्नानातिसारजित् ।
आमवातापहंवल्यंसूतिकादोपनाशनं ॥
वर्जनीयंचमाषाम्लंस्नानंपिशितभोजनं ।
पथ्यंकांजिकमत्रापिदधितक्रमथापिवा ॥
वृहल्लाईचूर्णमिदंलाईभाषितमुत्तमम् ।

अर्थ-त्रिकटु (सोंठ, मिरच, पीपल,) त्रिफला (हरड, बहेडा, आंवला) वायविडंग, दोनोंजीरे, भिलावा, अजमायन, हिंगुल, नोन, घरकाधूआं, वच, कूठ, पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमोद, चित्रक, गजपीपल, नागरमोथा, मोचरस, पाढ, लौंग, जाविञी, ये सब बराबर लेवे। सबका चूर्णकर सबके बराबर इन्द्रजवका चूर्ण लेवे। इस चूर्णके खानेसै मंदाग्नि, खांसी, बवासीर, तापतिल्ली, पांडुरोग, अरुचि, ज्वर, विष्टंभ, शूल, और अनेक प्रकारके अतिसार, आमवात, प्रसूतरोग, इतने रोग दूर होवे और बलकर्ता है। इसपर उडदका पदार्थ, मांस भक्षण, स्नान आदि वर्जित है। कांजी पीना, दही छाछ पीना हित है। यह लाई धायका कहा वृहल्लाईचूर्ण है।

मध्यलाविकाचूर्ण

अभ्रंपारदगंधकंकरिकणाभल्लातजातीफलं ।
क्षारंहिंगुविडंगपंचलवणारंधूमकुष्ठावचा ॥
द्वेजीरेत्रिफलाजमोदमरुणाव्योषंयवानीत
तश्चूर्णंसर्वमिदंसमेनरजसाशक्राशनेनान्वितं ।
मन्दाग्निग्रहणीप्रमेहहरणंदुर्नामकासापहं ।
शोथानीकवमित्वशूलनिचयंनानातिसारंज्व
रं ॥ हन्यादामसमीरणंरुचिगदान्लूतामयंपा
ण्डुतां । सर्वेऽन्येपिशमंप्रयान्तिनियतंरोगा
स्तुवातादयः ॥ प्रातश्चाक्षमितारंनालसहिता
भुक्ताचसालाविका । कुर्यात्कान्तिमयंवपु
श्चमतिदंगम्भीरनादंतथा ॥ अंभोभिस्त्वथवा
नुपानविधिनाभक्षेच्चतांमस्तुभिः । स्वेच्छा
भक्षणतोभवेत्प्रमुदितोसद्वैद्यनिर्देशनात् ॥

अर्थ-अभ्रकभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, गजपीपल, भिलावा, जायफल, जवाखार, हींग, वायविडंग, पांचोनोंन, लोहभस्म, ग्रहधूम, कूठ, वच, सफेदजीरा, कालाजीरा, त्रिफला, अजमोद, मजीठ, त्रिकुटा, और अजमायन इन सब औषधियोंको बराबर लेवे। और सबकी बराबर भांगको पीसकर मिलावे, तो यह लाविकाचूर्ण मंदाग्नि, संग्रहणी, प्रमेह, बवासीर, खांसी, सूजन, वमन, शूलरोग, अनेक प्रकारके अतिसार, आमवात, अरुचि, लूतारोग, पांडुरोग, और वातादिक सब रोगोंको दूर करे। इसमेंसे प्रातःकाल एक तोले नित्य कांजीके साथ खाय तो देहको उज्वल करे, बुद्धि बढावे,

सिंहकासा नाद करे, जलके साथ अथवा अन्य अनुपानके साथ अथवा छाछके साथ रोगके अनुसार वैद्यकी आज्ञासे खाना चाहिये ।

महतीलाविकाचूर्ण.

पारदंगन्धकंलोहंत्र्यूपणंलवणानिच ।
क्षारत्रयंयमान्यौचमुस्तकंगजपिप्पली ॥
कुटजेन्द्रयवौहिंगुशतपुष्पाहिफेनकं ।
ग्रहधूमवचाकुष्ठंविडंगंजीरकद्वयम् ॥
अभ्रकंचित्रकंपाठालवंगंत्रिफलाशुभा ।
जातीफलंसकर्पूरंत्वगेलापत्रकेशरं ॥
एतानिसमभागानिशक्रांशनसमानिच ।
यथाव्याधिवलिखादेद्दीपयेज्जठरानलं ॥
अवश्यंजारयत्याशुभक्षंचैवातिभोजनं ।
नाशयेद्ग्रहणीशोथमामंचैवामवातकम् ॥
कामलांपाण्डुरोगंचकासंश्वासंजलोदरं ।
प्लीहानंपीनसंशूलंकुष्ठंक्रिमिगदंतथा ॥
सेव्यमानोभवेत्कांक्षासगच्छेत्प्रमदाशतं ।
जीवेद्वर्षशतंसाग्रंवलीपलितनाशनं ॥
वातश्लेष्मविकारेपुशस्यतेचतुपोदकैः ।
अलावीमहतीचैवसर्वरोगविनाशिनी ॥

अर्थ-पारा, गंधक, लोहभस्म, त्रिकुटा, पांचौनोन, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, अजमायन, खुरासानी, अजमायन, नागरमोथा, गजपीपल, कूडाकी छाल, इन्द्रजौ, हींग, सौंफ, अफीम, घरकाधूँआ, वच, कुट, वायविडंग, दोनोंजीरे, अभ्रक, चित्रक, पाठ, लौंग, त्रिफला, जायफल, कपूर, दालचीनी, वा तज, इलायची, पत्रज, और केशर इन सबको वरावर लेवे । और सबकी वरावर भांग लेवे, रोगीकी अवस्थाके अनुसार खानेको देवे तो अग्निको प्रज्वलित करे। अत्यन्त भोजन किया हुआभी तत्क्षण भस्म होवे । संग्रहणीरोग, सूजन, आमवात, कामला, पांडुरोग, खांसी, श्वास, जलोदर, प्लीह, पीनस, शूल, कोढ, कृमिरोग, ये सब दूर होवे । इसके खानेवाला सौ स्त्रियोंसे भोग करे, वली पलितरहित सौ वर्ष जीवे, वातकफके विकारोंमें तुषोदकके साथ देना चाहिये । यह सर्व रोग नाशक महतीलाविकाचूर्ण कहाता है ।

वज्रकपाटरसः

मृतसूताभ्रकंगन्धंयवक्षारंसटंकणम् ।
वचाजयासमंसर्वंजयन्तीभृंगजद्रवैः ॥
सजंवीरैरुयहंमर्द्यशोपयेत्तंचगोलकम् ।
मन्दवन्हौशनैःस्वेद्यंयामार्द्धंलोहपात्रके ॥
रससाम्येप्रतिविषादेयामोचरसस्तथा ।
भावयेद्विजयाद्रावैःशोप्यंपेश्यंचसप्तधा ॥
रसोवज्रकपाटोयंनिष्कार्द्धंमधुनालिहेत् ।

अर्थ-पारेकीभस्म, अभ्रककीभस्म, गंधक, जवाखार, सुहागा, वच, और अरनी इन सबको वरावर लेवे । सबको अरनी और भांगरेके रसमें तथा जंबीरीके रसमें तीन दिन खरल करे । पीछे उस औषधीका गोला बनाकर धूपमें सुखालेवे, पीछे उस गोलेको किसी लोहेके पात्रमें रखकर मंदाग्निसे दो प्रहर स्वेदन करे । पीछे इसमें पारेके समान अतीस और मोचरस मिलाकर भांगके रसकी सात भावना देवे । और दो २ मासेकी गोलीयां वनावे, तो यह वज्रकपाटरस बने १ गोली शहतके साथ खानेसे संग्रहणी नष्ट होवे ।

ग्रहणीकपाटरसः

तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः ।
द्विभागोगन्धकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेदिमान् ॥
कपित्थस्वरसैर्गाढंमृगशृंगेततःक्षिपेत् ।
पुटेन्मध्यपुटेनैवततउद्धृत्यमर्दयेत् ॥

बलारसैःसप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा ।
लोध्रमतिविषामुस्तधातकीन्द्रयवामृता ॥
प्रत्येकमेतत्स्वरसैर्भावनास्यात्रिधात्रिधा।
माषमात्रोरसोदेयोमधुनामरिचैस्तथा ॥
हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणींसर्वजामपि ।
कपाटोग्रहणीरोगेरसोयंवन्हिदीपनः ॥

अर्थ—रूपेकी भस्म, मोतीकी भस्म, सुवर्ण भस्म, और लोहभस्म, इन सबको एक २ भाग लेवे. गंधक २ भाग ले, पारा तीन भाग ले, सबको एकत्रकर कैथके रससे खरल कर हिरणके सींगमें भर उसपर कपरमिट्टी करे, और मध्यपुटकी अग्निमें फूंक देवे. फिर उसमेंसे निकाल बलाके रससे सातवार घोटे, ओंगाके रसकी तीन भावना देवे। लोध, अतीस, नागरमोथा, धायके फूल, इन्द्रजौ, और गिलोय इनमेंसे प्रत्येकके रसकी तीन २ भावना देवे. पीछे एक२ मासेकी गोलियां बनावे. एक गोली काली मिरचोंके चूर्ण और शहतकेसाथ देवे तो सब अतिसार और सब प्रकारकी संग्रहणीको दूर करे. यह संग्रहणीके बंद करनेको कपाटरूप है. और अग्निको दीप्त करे।

द्वितीयग्रहणीकपाटोरसः

रसेन्द्रगन्धातिविषाभयाभ्रक्षारद्वयंमोचरसंवचाच। जैपालजम्बीररसेनघृष्टःपिण्डीकृतःस्याद्ग्रहणीकपाटः॥ अस्यार्द्धमाषंमधुनाप्रभातेशम्बूकभस्माज्यमरीचयुक्तम्। सर्वातिसारंग्रहणींज्वरंचशूलाग्निमांद्यंचह्यरोचकंच॥ निहन्तिसद्यश्चतथामवातं द्वित्रिप्रयोगेनरसोत्तमोयं।

अर्थ—पारा, गंधक, अतीस, हरड, अभ्रकभस्म, सज्जीखार, जवाखार, मोचरस, वच, और कुरैया इन सबको जंबीरीके रसमें घोटकर आधे २ मासेकी गोलियां बनावे। एक गोली शहत शंखभस्म और मक्खन और मिरचोंके साथ प्रातःकाल सेवन करे तो यह ग्रहणीकपाटरस सब प्रकारके अतिसारोंको और संग्रहणी, ज्वर, शूल, मंदाग्नि, अरुचि, और आमवात इनका दो तीन वार खानेसे शीघ्र दूर करे।

तृतीयग्रहणीकपाटोरसः

टंकणंक्षारगन्धंचरसंजातीफलानिच ।
विश्वंखदिरसारंचजीरकंश्वेतधूपकम् ॥
कपिकच्छुकबीजंचतथैवव्रकपुष्पकम् ।
एषांशाणंसमादायश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥
बिल्वपत्रककार्पासफलंशालिंचदुग्धिका ।
शाल्मलीमूलकुटजंत्वचःकंचटपत्रकम् ॥
सर्वेषांस्वरसैनैववटिकाकारयेद्भिषक् ।
रक्तिकैकाप्रमाणेनखादेद्वन्हिवटीद्वयम् ॥
दधिमण्डयुतःपेयःपलमात्रप्रमाणतः ।
अतियोगमतिक्रान्तांग्रहणींयोद्धतांजयेत् ॥
आमशूलंश्वासकासंज्वरंशोथंप्रवाहिकां ।
ज्ञात्वानिलाकृतिंतत्रकार्यंनैवात्रयुक्तितः ॥
रक्तस्रावकरंद्रव्यंकार्यंनैवात्रयुक्तितः ।
कृष्णवार्त्ताकमत्स्यंचदधितक्रंचशस्यते ॥
ज्ञात्वानिलाकृतिंतत्रजलंतैलंप्रदापयेत् ।

अर्थ—सुहागा, गंधक, पारा, जायफल, सोंठ, खैरसार, जीरा, राल, कौंछके बीज, और अगस्तियाके पुष्प, इन प्रत्येक औषधियोंके चार २ मासा लेवे। और सबका चूर्णकर बेलके पत्तोंके रसकी, कपासके फलकी, शालिंच, दुद्धी, सेमलका मूसला, कूडाकी छाल, पनिया चौलाई, इन सबके रसकी भावना देकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, दो गोलियां एक पल छाछ वा मांडके साथ

लेवे, तो संग्रहणी दूर होवे. आमशूल, श्वास, खांसी, ज्वर, सूजन, प्रवाहिका, इनको दूर करे। इस रसके स्राव (दस्तकारक) वस्तू न खाना चाहिये काले बेंगन, मछली, दही, और छाछ इनका सेवन हितकारक है।

चतुर्थग्रहणीकपाटोरसः

रसगन्धकयोश्चापिजातीफललवंगयोः।
प्रत्येकंशाणमानंचश्लक्ष्णंचूर्णीकृतंशुभम्॥
सूर्य्यावर्त्तरसेनैवविल्वपत्ररसेनच।
शृंगाटकस्यपत्राणांरसैःप्रत्येकशःपलैः॥
चण्डातपेनसंशोष्यवटिकांकारयेद्भिषक्।
विल्वपत्ररसेनैवदापयेद्रक्तिकाद्वयम्॥
दध्नाचभोजनीयंचग्रहणीरोगनाशनः।
पाण्डुरोगमतीसारंशोथंहन्तियथाज्वरम्॥
ग्रहणीकपाटनामारसःपरमदुर्लभः।

अर्थ—पारा, गंधक, जायफल, लौंग, प्रत्येक छः छः मासे लेवे। सबको एकत्र कर चूर्ण करे, पीछे हुरहुर, वेलपत्र और सिंवाडेके पत्ते, प्रत्येकके एक २ पल प्रमाण रसमें खरल करे, पीछे दो २ रत्तीकी गोलियां बनाकर धूपमें सुखावे। एक गोली वेलगिरीके रससे देवे इसके ऊपर दही खाय तो संग्रहणी, अतीसार, पांडुरोग, सूजन, ज्वर आदिरोग दूरहोवे।

पंचमग्रहणीकपाटोरसः

श्वेतसर्जस्यशुद्धस्यगन्धकस्यरसस्यच।
शुभेन्दिपृथगादायचूर्णमापचतुष्टयम्॥
एकीकृत्यशिलाखल्वेदद्याचेपान्तदारसम्।
सूर्यावर्त्तस्यविल्वस्यशृंगाटस्यचपत्रजम्॥
प्रत्येकंपलमेकैकंदापयेद्ग्रहणीगदे।
दापयेत्सततोयत्नाद्दधिभक्तंसमाचरेत्॥
असंवृत्तगुदद्वारंकपाटमिवढक्कयेत्।
अतश्चग्रहणीरोगंकपाटोऽयंरसःस्मृतः॥

अर्थ—सफेदराल, शुद्धगंधक, पारा, प्रत्येक चार २ मासे लेवे। चूर्ण कर हुरहुर, वेलपत्र, सिंघाडेके पत्र इन प्रत्येकके एक २ पल रससें पृथक् २ खरल करे। फिर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इसका सेवन करनेसे प्रवल संग्रहणी नाश होवे। इसके ऊपर दही भात खाना पथ्य है, खुले हुए गुदाके द्वारको किवाडोंकी तरह बंद कर देता है, इसी लिये इस रसको ग्रहणी कपाट रस कहते हैं।

षष्ठग्रहणीकपाटोरसः

गिरिजाभवबीजकज्जलीपरिमृद्यार्द्ररसेन।
शोधिताकुटजस्यतुभस्मना॥
पुनरस्तुद्विगुणेनाथविमृद्यपरिमिश्रिता।
मर्दयित्वाप्रदातव्यंसम्यग्गुंजाचतुष्टयम्॥
अजाक्षीरेणदातव्यंक्वाथेनकुटजस्यवा।
यूपंदेयंमयूरस्यवारिभक्तंचशीतलम्॥
दध्नासहपुनर्देयंग्रासाद्वौरक्तिकाद्वयम्।
वर्द्धयेद्दशपर्य्यन्तंह्रासयेत्क्रमशस्तथा॥
निहन्तिग्रहणींसर्वांविशेषात्कुक्षिमार्द्रवम्।

अर्थ—पारा १ तोला, गंधक १ तोला, दोनोंको पीस उत्तम कजली करे, पीछे इसमें कुडाकी छालकी भस्म ४ तोले मिलाकर अदरकके रससे खरल करे। इसको बकरीके दूधमें अथवा कुडाकी छालके काढेसे प्रातःकाल ४ रत्ती देवे. तथा भोजनके पहले दो रत्तीकी मात्रा दहीमें मिलाकर देवे. नित्य एक रत्ती मात्रा बढावे दश रत्तीतक बढावे, और उसी प्रकार दशसे घटाकर चार पर्य्यन्त ले आवे। पथ्य इसपर मोरके मासका यूप, शीतल जल और अन्न। इस रसके सेवन करनेसे सब प्रकारकी संग्रहणी और कूखकी नम्रता दूर होवे।

सप्तमग्रहणीकपाटोरसः

दरदंगन्धपाषाणंतुगाक्षीर्य्याहिफेनकम् ।
तथावराटिकाभस्मसर्वक्षीरेणमर्दयेत् ॥
रक्तिकायुग्ममानेनछायाशुष्कांवटींचरेत् ।
ग्रहणींविविधांहन्तिरक्तातीसारमुल्बणं ॥

अर्थ—हींगलू, गंधक, वंशलोचन, अफीम, और कौडीकी भस्म, इन सबको समान लेकर दूधसे खरल करे, दो २ रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे, इसके खानेसे संग्रहणी और रक्तातिसार दूर होवे यह लघुसंग्रहणीकपाटरस कहाता है ।

अष्टमबृहत्संग्रहणीकपाटोरसः

शुद्धाहिफेनबलिसूतकपर्दभस्महालाहलोषण विशुद्धसुवर्णबीजैः । अम्भोधिपंक्तिकरशैल धराद्विंशत्यंशैर्विचूर्णिततमःग्रहणीकपाटः॥ वल्लोस्यहन्तिमधुनासहजीरकेणमुक्तोतिसार मपिसंग्रहणीमुदग्राम् । आमंविपाच्यसहसा जनयत्यवश्यंवैश्वानरंजठरमार्त्तिनमार्त्तिभाजम् ॥

अर्थ—शुद्ध अफीम ४ भाग, गंधक १० भाग, पारा २ भाग, कौडीकी भस्म ७ भाग, हलाहल १ भाग, त्रिकुटा ८ भाग, और शुद्ध धतूरेके बीज २० भाग लेवे । सबका चूर्ण करे तो यह ग्रहणीकपाटरस सिद्ध होवे । दो रत्ती रस शहद और जीरेके साथ सेवन करनेसे प्रबल संग्रहणी और अतिसारको दूर करे, आमको पचाय अग्निको प्रज्वलित करे ।

नवमग्रहणीकपाटोरसः

मुक्तासुवर्णरसगन्धटंकणंघनंकपर्दोऽमृततुल्य भागम् । सर्वैःसमंशंखकचूर्णयुक्तंखल्वेचमा व्योतिविपाद्रवेण ॥ लोहस्यपात्रेपरिपाचि तश्चसिद्धोभवेत्संग्रहणीकपाटः । वातोत्तरा यांमरिचाज्ययुक्तः पित्तोत्तरायांमधुपिप्पली भिः ॥ श्लेष्मोत्तरायांविजयारसेनकटुत्रये णापियुतोग्रहण्याम् । क्षयेज्वरेष्वर्शसिविड् विकारेसामेतिसारेऽरुचिपीनसेच ॥ मोहेच कृच्छ्रेगतधातुवृद्धौगुंजाद्वयंचापिमहामयघ्नम्।

अर्थ—मोतीकीभस्म, सुवर्णभस्म, पारा, गंधक, सुहागा, नागरमोथा, कौडीकीभस्म, और विष ये सब समान भाग लेवे । सबकी बराबर शंखभस्म लेवे । पीसकर लोहेके पात्रमें अतीसके रसकी भावना देवे, तो संग्रहणीकपाट रस सिद्ध होवे । वातजन्य ग्रहणीमें मिरच और घृतके साथ देवे, पितजन्यग्रहणीमें शहत और पीपलके साथ देवे । और कफजन्य संग्रहणीमें भांगकेरस अथवा त्रिकुटाके साथ देना चाहिये । खई, ज्वर, बवासीर, मलके विकार, आमातिसार, अरुचि, पीनस, मोह, धातुक्षीण, इन रोगोंमें २ रत्ती देनेसे सबको दूर करता है ।

दशमग्रहणीकपाटोरसः

पारदात्द्विगुणोगन्धस्ताभ्यांतुल्यंकटुत्रिकम्।
अजाजीटंकणंधान्यंहिंगुजीरयवानिका ॥
मत्येकंद्विगुणंसूताद्रुचकंचचतुर्गुणम् ।
सर्वेपांचसमादेयादग्धासूक्ष्मवराटिका ॥
सर्वमेकीकृतंचूर्णमाषमात्रमितंततः ।
तक्रेणालोड्यमतिमान्भक्षयेत्सततंनरः ॥
ग्रहणीकपाटकोह्येपहितःस्याद्ग्रहणीगदे ।

अर्थ—पारा २ तोले, गंधक ४ तोले, त्रिकुटा, ८ तोले, जीरा ४ तोले, सुहागा ४ तोले, धनिया ४ तोले, हींग ४ तोले, आजवायन ४ तोले, संचरनोन ८ तोले, कौडीकी भस्म ४ तोले, सबका चूर्ण कर एक मासे नित्य छाछके साथ पीवे तो संग्रहणी दूर होवे ।

रसपर्पटी.

श्रीविन्ध्यवासिपादान्नत्वाधन्वन्तरिंचसुरभि
पजं । रसगन्धकपर्पटिकापरिपाटीपाटवंव
क्ष्ये ॥ मर्द्दरसेजयन्त्याःपश्चादेरंडसम्भूते ।
आर्द्रकरसेचसूतंपत्ररसैकाकमाच्याश्च ॥
मन्नमुदितानुपूर्व्यामर्द्दनशुष्कंकरेणगृह्णीयात् ।
प्रस्तरभाजनमध्येशुद्धिरियंपारदस्योक्ता ॥
शुकपुच्छसमच्छायोनवनीतसमद्युतिः ।
मसृणःकठिनःस्निग्धःश्रेष्ठोगन्धकइष्यते ॥
कृत्वाभद्रंगन्धकमतिकुशलःक्षुद्रतण्डुलाकारं।
तद्भृंगराजरसैरनंतरंभावयेत्पात्रे ॥
तदनुचशुष्कंकुर्य्याद्धूलिसमानंचसप्तधारौद्रे।
तदनुचशुष्कंचूर्णंकृत्वाविन्यस्यलौहिकामध्ये
निर्धूमवदरकाष्ठांगारेन्यस्तंविलाप्यतैलसमं।
पात्रस्थितभृंगराजरसमध्येढालयेन्निपुणः ॥
तस्मिन्प्रविष्टमात्रंकठिनत्वंयातिगन्धकचूर्णं।
पुनरपिरौद्रेशुष्कंकेतकरजसासमानतांनीतं॥
शुद्धेसुतेशोधितगन्धकचूर्णेनतुल्यताकार्य्या।
तावन्मर्द्दनमनयोर्यावन्नकणोपिदृश्यतेसूते ॥
पश्चात्कज्जलसदृशंचूर्णंलौहीस्थितंनियत्नेन।
निर्धूमवदरकाष्ठांगारेन्यस्तंविलाप्यतैलसमम्
सद्योगोमयनिहितेकदलिदलेढालयेन्मृदुनि।
लौहीस्थितमवशिष्टंकठिनंतन्नगृहीतव्यं ॥
पश्चात्पर्पटरूपापर्पटिकाकीर्त्यतेलोकैः ।
मयूरचन्द्रिकाकारंलिंगंयत्रतुदृश्यते ॥
तत्रसिद्धंविजानीयाद्वैद्योनैवात्रसंशयः ।
समुदितपात्रेभरणाद्वदनीयापर्पटीमनुजैः ॥
जीरकगुंजेहिंगोरर्द्धंखादेच्चवातलेजठरे। जीर
कहिंगुरसेनत्वनुपानंसलिलधारयाकार्य्यम्।
रसगन्धकपर्पटिकाभक्षणमात्रेतुनाम्भसःपानं
प्रथमंगुंजायुगलंप्रतिदिनमेकैकवृद्धितोभक्ष्यम्
दशगुंजापरिमाणान्नाधिकमदनीयमेवविंश
तिदिनानि । वातातपकोपमनश्चिन्तनमाहा
रसमयवैषम्यं ॥ व्यायामश्चायासःस्नानंव्या
ख्यानमहितमन्यन्तं । पाकेस्तोकंसर्पिजीरक
धन्याकवेशवारैश्च ॥ सिधूद्भवेनरंद्धनमोदन
धान्यानिशालयोभक्ष्याः ।\कृष्णंवातिगल
फलमविद्धकर्णाचवास्तूकं ॥ अक्षतमुद्गःसहि
तःकदलिदलसहितंपटोलंच । क्रमुकफलशृं
गवेराभक्ष्याशाकेपुकाकमाचीच ॥ लावक
वर्त्तकतित्तरमयूरमांसंचहिततरंभवति । मुद्ग
ररोहितमीनावदनीयाकृष्णमत्स्याश्च ॥
नीरंक्षीरंव्यंजनमदनीयंपंचकदलंच । रम्भा
फलदलवल्कलमूलानांवर्जनंकार्यं ॥ तिक्तं
निम्बादिकमपिनाद्यंनोष्णंतथान्नंच । अनू
पमांसजलचरपतत्रिपललंचसर्वथात्याज्यम्॥
स्त्रीणांसम्भाषणमपिकडकश्चकृष्णमत्स्येपु ।
नाम्लंनदधिशाकंपर्पट्याभक्षणेभक्ष्यम् ॥
गुडखण्डशर्करादिकइक्षुविकारोनभक्ष्यइक्षुश्च
नदलंनफलंनलताप्यदनीयाकारवेल्लस्य ॥
स्तोकंघृतमिहभक्ष्यंपथ्येसाकांक्षमुत्थानं ।
क्षुत्पीडायांभोजनमवश्यकार्य्यंमहानिशायां
च॥समजलमिश्रंपक्वंक्षीरंयद्वाधिकंचजलपक्वं।
कथमपिभोजनसमयातिक्रमजातेज्वरेविरेके
च॥ वमनेचनारिकेलसलिलंदुग्धंचपातव्यं।
स्वप्नेजातेरमितेविरेकतःक्षीरमेवपातव्यं ॥ न
जायतेबुभुक्षालक्ष्यालक्ष्याप्रतीयतेयदिवा ।
अशक्तिर्झिनझनमस्तकशूलाद्यैर्नूनमवधार्य्या
किंवहुवाच्यंरोगीयदायदाभवतिसाकांक्षः ।
पाययितव्यंदुग्धंतदातदानिर्भयीभूयः ॥
विहिताकरणेचास्यामविहितकरणेचरोगाद्य
न्नानाम्।व्यापत्तयोपिवहुधादृष्टाःप्रमाणिकैर्व
हुशः ॥ तस्मादवधातव्यंभवितव्यंभोजनेनि
पुणैः । एवमियंक्रियमाणाभवतिश्रेयस्करी
नियतं ॥ अर्शोरोगंग्रहणींसामांशूलातिसा

रैश्च । कामलपाण्डुव्याधिंप्लीहानंचातिदारुणंहन्ति ॥ गुल्मजलोदरभस्मकरोगनिहन्त्यामवातांश्च । अष्टादशैवकुष्ठान्यशेषशोथादिरोगांश्च ॥ इयमम्लपित्तशमनीत्रिदोषदमनीक्षुधातिकमनीया । अग्निंनिमग्नमुदरे ज्वालाजटिलंकरोत्याशु ॥ रसगन्धकपर्पटिकात्वपवार्यव्याधिसंघातं । वलिपलितशून्यं पुरुषंदीर्घायुषंकुरुते ॥ व्याधिप्रभावहरणादपमृत्युत्राशनाशकरणाच्च । मर्त्यानाममृतघटीरसगन्धकपर्पटीजयति ॥ शम्भुंप्रणम्यभक्त्यापूजांकृत्वाचविष्णुचरणाब्जे । रसगन्धकपर्पटिकाभक्ष्यातेनातिसिद्धिदाभवति ॥ नृणांसरुजांध्रुवमियमारोग्यांसततशीलिता कुरुते । श्रीवत्सांकविनिर्मितसम्यग्रसपर्पटी श्रेष्ठा ॥ उक्तमेवहिकर्त्तव्यंनानारोगतयातथा । औषधक्रियर्यैवात्रकर्त्तव्याचोत्तरक्रिया ॥ प्रत्यवायविनाशार्थंक्षेत्रपालवलिंन्यसेत् । कृतमंगलकःप्रातर्योगिनिनामतःपरं ॥ भक्षणपूर्ववलिदानमंत्रः- ॥ ॐ क्षं क्षें क्षेत्रपालायनमः । क्षेत्रपालस्यसामान्यवलिमंत्रः ॥ ॐ ह्रींह्रेंदिव्याभ्योयोगिनीभ्योमातृभ्यः। क्षेत्रीभ्योभूतेभ्यः ॥ शालिकीभ्योनमोनमो ह्रींसामान्ययोगिनीनांवलिः । ॐगन्धकमहाकालायस्वाहा ॥ ॐब्रह्मकोपिणीरक्षरक्षस्वाहा । विशेषवलिः ॥ अत्रपारदस्यनैसर्गिकदोषत्रयशोधनंचावश्यकंकार्यम् । यदुक्तम् ॥ मलशिखिविषनागोपिरसस्यनैसर्गिकादोषाः । मूर्च्छांमलेनकुरुतेशिखिनादाहं विषेणहिक्कांच ॥ ग्रहकन्याहरतिमलंत्रिफलावन्हिंचचित्रकस्तुविषम् । तस्मादेभिर्वारान् संमूर्च्छयेत्रसप्तसप्तैव इति ॥ गृहकन्याघृतकुमारीतस्यदलरसेनखल्लनम् । त्रिफलायाश्चूर्णेनखल्लनं ॥ चित्रकस्यपत्ररसेनमूर्च्छनम् । तदैवनैसर्गिकदोषापहारानन्तरं । जयन्त्यादिद्रव्यचतुष्टयरसेनमूर्च्छनमधिगंतव्यम् ।

अर्थ—श्रीविंध्यवासिके चरणोंको प्रणाम कर तथा देववैद्य धन्वन्तरिको प्रणाम कर रस (पारा) और गंधक पर्पटीकी उत्तम परिपाटीको में कहता हूं. प्रथम पर्पटीकी क्रियामें पारेके मलदोष, अग्निदोष, तथा विषदोष अवश्य दूर करने चाहिये. वह दोष दूर करनेकी प्रणाली यह है कि ८ तोले पारा लेवे, उसको घीगुवारके रससे मर्दन करे. इस प्रकार करनेसे मलदोष दूर होवे, इसी प्रकार त्रिफलाके चूर्णमें मर्दन करनेसे अग्निदोष दूर होवे, तथा चीतेके पत्तोंके रसमें पारा खरल करनेसे विषदोष दूर होवे. पश्चात् यथाक्रम जयन्ती (अरनी) के पत्ते, अंडके पत्ते, अदरक और मकोयके पत्तोंके रसमें पारेको डबोकर क्रमपूर्वक मर्दनद्वारा शुद्ध करे तब इस पारेको पर्पटीकी क्रियामें लेना उचित है. इस पारेके साथ गंधक मिलावे उसकी परीक्षा यह है. जो गंधक तोताकी पूंछके समान हरे रंगकी कांतिवाली, और मक्खनके समान दीप्तवाली, चिकनी, कठिन और स्निग्ध हो उसे श्रेष्ठ जानना चाहिये. ऐसी गंधक ८ तोले लेवे, उसको छोटे २ चांवलोंके समान टुकडे करे, पीछे भांगरेके रसकी ७ भावना देकर धूपमें सुखाय धूलके समान चूर्ण करे. पश्चात् इस गंधकको लोहेकी कलछीमें रख धुआंरहित वेरकी अग्निमें गलाय भांगरेके रसमें बुझा देवे. रसमें डालतेही गंधकका पिंड बंध जाता है. फिर इस गंधकको धूपमें सुखाकर चूर्ण करे. केतकीके पुष्पके रजके समान

सूक्ष्म करे, पीछे इस प्रकार शुद्ध पारा और शुद्ध गंधक दोनों समान भाग लेवे. दोनोंकी उत्तम रीतिसे कजली करे, यावत् निश्चन्द्र अर्थात् पारा दीखनेसे बन्द होजाय. सब चूर्णको कजलीके समान होनेपर लोहेकी बडी कलछेमें रखकर निर्धूम बेरकी लकडीके कोयलोंमें गलाकर तेलके समान पतली करे. पीछे गोवरके ऊपर केलेका पत्ता बिछाकर उस पत्तेके ऊपर पूर्वोक्त पिघली हुई कजलीको ढाल देवे, और तत्क्षण दूसरे पत्तेसे ढक किसी कपडेकी पोटली बनाकर उससे दाब देवे कि जिससे वो पिघली हुई कजली फैल जावे. पीछे पिघली हुई कजलीका जो कुछ अंश कठोर कलछीमें रह गया हो उसको उसीमें रहने देवे, लेना न चाहिये।

अब पर्पटीकी परीक्षा कहते हैं. जो पर्पटी मोरकी चन्द्रिकाके आकार होवे वो उत्तम होती है. इस पर्पटीको मूल आदि नक्षत्रोंमें जो औषधि भक्षणके हैं सेवन करना उचित है. तथा इसके बनाने और सेवन करनेके समय पूजाका विधान लिखा है, वो पद्धतिके अनुसार करना चाहिये. वातके रोगमें २ रत्ती जीरे और १ रत्ती हींगके साथ देना चाहिये. पर्पटी खानेके पश्चात् शीघ्रही जल पीना चाहिये, पहले दिन दो रत्तीकी मात्रा देवे, फिर प्रतिदिन एक २ रत्ती बढाना चाहिये. इस प्रकार दश रत्तीतक बढावे. दश रत्तीसे जियादा मात्राका बढाना वर्जित है. २१ दिन पर्यंत औषधि सेवन करना चाहिये. पर्पटीका सेवन करनेवालेको पवन खाना, धूपमें डोलना, क्रोध, अत्यंत चिंता, भोजन समयका उल्लंघन करना, डंड कसरत, परिश्रम, स्नान, बहुत बोलना, ये सब बातें त्याज्य हैं. घृत, सैंधानोन और जीरा तथा अनेक प्रकारके मसालोंसे सिद्ध किये हुए व्यंजनादि, साठी चांवलोंका भात, काले वेंगन, पाढका शाक, बथुवेका शाक, वगैरे कीडोंकी खाई हुई मूंग, परवल, सुपारी, अदरक, मकोयका शाक, लवा, बतक, तीतर, और मोर, इन पक्षियोंका मांस, जलमुर्गी, रोहू मछली, तथा काले रंगकी मछली और दूध जल मिलाकर बनाई हुई ल्हस्सी, इन सब वस्तुओंका खाना हित है. केलाकी फली, पत्ता, वक्कल और जड तथा नीमसे आदि ले कडवी वस्तु, गरम अन्न, जलके किनारे रहनेवाले शूकरादि, तथा जलके रहनेवाले पक्षियोंका मांस, खट्टी द्रव्य, दही, शाक, तथा काले रंगकी मछलियोंमें गडक मछली, इन सबका खाना वर्जित है। और पर्पटीके खानेवालेको स्त्रियोंसे बोलनाभी वर्जित है। गुड, खांड, और ईख आदि पदार्थोंका खानाभी वर्ज्जित है। करेलेके पत्ते, फल लता कदाचित् न खाने चाहिये। और घृत थोडा खाना चाहिये। भूँख लगतेही भोजन करना चाहिये। यदि अर्द्ध रात्रिको भूख लगे तो उसी समय भोजन करना चाहिये। तथा भोजन समयके व्यतिक्रम करनेसे वमन अथवा ज्वर प्रगट होवे तो बराबर शीतल जल मिला अथवा अधिक जल मिला दूध पीना चाहिये। अथवा वमन होनेमें नारियलका जल वा दूध मिलाकर पीवे। यदि स्वप्नान्तरमें वीर्य्य पतन हो जावे तो दूध पीना चाहिये। भूँख लगी है या नहीं इसका यथार्थ ज्ञान होनेसे इस प्रकार परीक्षा करे कि जब देह शक्तिरहित हो जावे और मस्तकमें शूल तथा झनझनाहट

होने लगे तब जाने कि भूंख लगी है, ये भूंखके उपद्रव जानकर उसे उसी समय भोजन कराना चाहिये। बहुत कहनेसे क्या है रोगीको जब जब भूंख लगे तब २ निर्भय होकर दूध पिलाना चाहिये। उक्त निषेध आचरणोंके करनेसे यथाविहित आचरणोंके न करनेसे अनेक प्रकारकी व्यापत्ति (रोग) होते है। यह प्रमाणीक मनुष्योंकी देखी हुई वार्त्ता है, इसीसे सावधान होकर पूर्वोक्त भोजनादिका नियम विधिपूर्वक पालन करना चाहिये। इस प्रकार पर्पटी भक्षण करना हितकारी होता है। पर्पटी सेवनसे बवासीर, संग्रहणी, शूल, अतिसार, कामला, पांडुरोग, प्लीहके रोग, गुल्म, जलोदर, भस्मक, आमवात, अठारह प्रकारका कुष्ठ, सर्व सोथ रोग, और अम्लपित्तको शमन करे, सन्निपातको दमन कर्ता है, भूंख बढावे, मन्दाग्निको प्रज्वलित करे, यह रस गंधककी कजली रोग समूहोंका नाश करती है।- जिसके देहमें गुजलट पडगयी हो और सफेद बाल हो गये हो उसको दीर्घायु करे। व्याधिप्रभावको हरण करे और अकाल मृत्युके दूर करनेको यह अमृतकी घटी रूप है। श्रीशिवजीको प्रणाम कर और श्रीविष्णुके चरण कमलोंका पूजन कर पर्पटी खानेसे सिद्धिकर्त्ता होती है। यह श्रीवत्सांककी कही हुई है. परमोत्तम रसपर्पटी हैं, विघ्न न हो इसलिये क्षेत्रपालको बलिदान देना चाहिये। मंगलाचरण करके प्रातःकाल इस पर्पटीका सेवन करना उचित है। इस पर्पटीके सेवन कर्त्ताको दूध अन्न इनके साथ मिला औरभी आहार देना उचित है। नोन और जलका सेवन करना वर्जित है, जिसको प्यास अति व्याकुल करे वह नारियलका जल पीवे।

लोहपर्पटी.

समौगन्धरसौकृत्वाकज्जलीकृत्ययत्नतः।
शुद्धलोहस्यचूर्णन्तुरसतुल्यंप्रदापयेत् ॥
एकीकृत्यततोयत्नाल्लोहपात्रेप्रमर्दितम्।
घृतप्रलिप्तदर्व्यान्तुस्वेदयेन्मृदुनाग्निना ॥
द्रवीभूतंसमाहृत्यढालयेत्कदलीदले।
चूर्णीकृत्यसुखार्थायपथ्यभुग्भिःप्रसेव्यते ॥
शीतोदकानुपानंवाक्राथंवाधान्यजीरयोः।
लोहेनपर्पटीह्येषाभक्ष्यालोकस्यसिद्धिदा ॥
रक्तिकैकांसमारभ्यवर्द्धयेद्रक्तिकाक्रमात्।
सप्ताहंवाद्वयंवापियावदारोग्यदर्शनम् ॥
सूतिकांचज्वरंचैवग्रहणीमतिदुस्तराम्।
आमशूलातिसारांश्चपाण्डुरोगंसकामलाम् ॥
प्लीहानमग्निमांद्यंचभस्मकंचतथैवच।
आमवातमुदावर्त्तंकुष्ठान्यष्टादशैवतु ॥
एवमादींस्तथारोगान्गराणिविविधानिच।
हन्त्यनेनप्रयोगेणवपुष्मान्निर्मलःसुधी ॥
जीवेद्वर्षशतंपूर्णंवलीपलितवर्जितः।
भोजनंरक्तशालीनांत्यक्त्वाशाकंविदाहिच
आमवातप्रकोपंचचिन्तनंमैथुनंतथा।
मातरुत्थायसंसेव्याविधिनायुःप्रवर्द्धिनी ॥

अर्थ-पारा २ तोले, गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली कर इसमें २ तोले शुद्ध लोहकी भस्म मिलावे। पीछे लोहेकी कलछीमें रखकर तीनोंको मर्दन करे, पीछे उस कजलीको घृतसे लिप्त कर कलछीमें रख मंदाग्निसे स्वेदित करे, जब कजली द्रवीभूत होजावे तब अग्निपरसे उतारकर पूर्व रीतिके अनुसार पत्तेपर ढाल देवे. तो यह लोहपर्पटी सिद्ध होवे। पीछे इसका चूर्ण कर किसी उत्तम

पात्रमें भरकर रख देवे. इसको पथ्य सेवन कर्ता मनुष्यको सेवन करना उचित है । इस पर्पटीको शीतल जलके साथ या धनिये और जीरेके साथ खाना उचित है । एक २ रत्तीसे बढावे सात या चौदह दिन अथवा जबतक रोग दूर न हो तबतक सेवन करे तो प्रसूत रोग, ज्वर, घोर संग्रहणी, आमशूल, अतिसार, पांडुरोग, कामला, प्लीहरोग, मन्दाग्नि, भस्मकरोग, आमवात, उदावर्त्त, अठारह प्रकारका कुष्ठरोग, तथा विषके उपद्रव, इन सबको दूर करे । निर्मल देह हो बुद्धि बढे, वलीपलित रहित सौ वर्षकी पूर्ण आयु हो, भोजनमें लाल चांवलोंका भात देवे, तथा दाहकारक पदार्थ और शाकादि द्रव्य देना वर्जित है। लोहपर्पटी सेवन करनेवालोंको चिन्ता और मैथुन करना वर्जित है, प्रातःकाल उठकर सेवन करनेसे आयुको बढावे ।

स्वर्णपर्पटी.

रसोत्तमंपलंशुद्धंहेमतोलकसंयुतम् ।
शिलायांमर्दयेत्तावद्यावदेकत्वमागतम् ॥
गन्धकस्यपलंचैवलोहपात्रेततोदृढे ।
मर्दयेत्दृढपाणिभ्यांयावत्कज्जलतांव्रजेत् ॥
ततःपरंविधानज्ञःपर्पटींकारयेत्सुधीः ।
रत्तिकादिक्रमेणैवयोजयेदनुपानतः ॥
ग्रहणींविविधान्हन्तिवृष्यासर्वरुजापहा ।

अर्थ–शुद्ध पारा ८ तोला, सुवर्णकी भस्म १ तोला, दोनोंको खरल करे जब दोनों एकत्र होजावे तब इसमें ८ तोला गंधक मिलाकर लोहपात्रमें खरल करे, जब काजलके समान होजावे तब पूर्वोक्त रीतिके अनुसार पर्पटी बनालेवे । इसकी १ रत्तीसे मात्रा बढानी चाहिये. इसके सेवन करनेसे संग्रहणी, राजयक्ष्मा आदि अनेक रोग दूर होवे ।

स्वर्णपर्पटीकापाठान्तरम्

शुद्धंसूतंपलमितंतुर्य्यांशंस्वर्णसंयुतम् ।
मर्दयेन्निम्बुनीरेणयावदेकत्वमाप्नुयात् ॥
प्रक्षाल्योष्णांबुनापश्चात्पलमात्रेसुगन्धके ।
द्रुतेलोहमयेपात्रेवादरानलयोगतः ॥
प्रक्षिप्यचालयेल्लोहांमन्दलोहशलाकया ।
ततःपाकंविदित्वातुरम्भापत्रेशनैःक्षिपेत् ॥
गोमयस्थेतदुपरिरम्भापत्रेणयंत्रयेत् ।
शीतंतच्चूर्णितंगुंजाक्रमवृद्धंनिषेवयेत् ॥
माषमात्रंभवेद्यावत्ततोमात्रांनवर्द्धयेत् ।
सक्षौद्रेणोपणेनैवलेहयेद्द्विपगुत्तमः ॥
ग्रहणींहन्तिशोपंचसुवर्णरसपर्पटी ।
सद्योवलकरीशुक्रवर्द्धनीवन्हिदीपनी ॥
क्षयकासश्वासमेहशूलातीसारपाण्डुनुत् ।

अर्थ–शुद्ध पारा ८ तोले, सुवर्ण भस्म २ तोले, दोनोंको खरलमें डाल नींबूके रससे खरल करे । जब दोनों एक होजावे, तब गरम जलसे धुली हुई गंधक ८ तोले मिलावे, सबकी कजली कर लोहकी कडाहीको घृतसे चुपड उसमें कजलीको रखकर बेरकी लकडीकी आंचसे पिघलावे । और लोहकी सलाईसे चलाता जाय. जब तेलके सदृश पतली होजाय तब केलेके पत्तेपर ढाल देवे । और दूसरे पत्तेसे ढक देवे, शीतल होनेपर चूर्ण कर रख छोडे, एक रत्तीसे बढावे सो एक मासे तक देवे । मासेसे अधिक मात्रा न देवे, त्रिकुटाके चूर्ण और शहतके साथ इस पर्पटीको सेवन करनेसे संग्रहणी, शोषरोग, खई, खांसी, श्वास, प्रमेह, शूल, अतिसार, और पांडुरोग, इन सबको दूर करे । शीघ्र बल करे, वीर्य्यको बढावे, और मन्दाग्निको प्रबल करती है ।

पंचामृतपर्पटी.

अष्टौगन्धकतोलकंरसदलंलोहंतदर्द्धंशुभं । लोहार्द्धंचवराभ्रकंसुविमलंताम्रंतथाभ्रार्द्धिकम् ॥ पात्रेलोहमयेचमर्दनविधौचूर्णीकृते चैकतो । दर्व्यांवादरवन्हिनाऽतिमृदुनापाकं विदित्वादले ॥ रम्भायालघुढालयेत्पटुरियंपंचामृतापर्पटी । ख्यातार्क्षौद्रघृतान्विताम तिदिनंगुंजाद्वयंवृद्धितः ॥ लोहेमर्दनयोगतः सुविमलंभक्षक्रियालोहवत् । गुंजाष्टावथवा त्रिकंत्रिगुणितंसप्ताहमेवंभजेत् ॥ नानावर्णग्रहण्यामरुचिसमुदयेदुष्टदुर्नामकादौ । छर्द्यां दीर्घातिसारेज्वरभरकलितेरक्तपित्तेक्षयेपि॥ वृष्याणांवृष्यराज्ञीवलिपलितहरानेत्ररोगैकहंत्री । तुन्दंदीप्तस्थिराग्निपुनरपिनवकंरोगिदेहंकरोति ॥

अर्थ–गंधक ८ तोला, पारा ४ तोला, लोहभस्म २ तोला, अभ्रक १ तोला, ताम्रभस्म आधा तोला, इन पांचो द्रव्योंको लोहेके पात्रमें एकत्र कर खरल करे. पीछे इस कजलीको लोहेकी कलछीमें रखकर वेरकी लकडीकी मृदु अग्निसे पिघलाकर केलाके पत्तेपर ढाल देवे तो यह पंचामृत पर्पटी बने. इसकी मात्रा २ रत्तीकी है. इस पर्पटीको लोहेके पात्रमें पीस शहत और घृतके साथ सेवन करनी चाहिये. दो रत्तीसे ८ या १० रत्तीतक बढाना चाहिये. इस प्रकार एक सप्ताह पर्यंत सेवन करनेसे अनेक प्रकारकी संग्रहणी, अरुचि, वमन, बहुत कालका उत्पन्न हुआ अतिसार, बवासीर, ज्वर, रक्तपित्त और क्षई रोग इनको दूर करे. वृष्य औषधियोंकी महाराणी अर्थात् सर्वोत्तम है. वली पलित और नेत्ररोगोंकी हरणकर्त्ती है. जठराग्निको प्रबल करके रोगीकी देहको फिर नवीन करती है.

विजयपर्पटी.

गन्धकंशुद्रितंकृत्वाभाव्यंभृंगरसेनतु ।
सप्तधावात्रिधावापिपश्चाच्छुष्कंविचूर्णयेत् ॥
चूर्णयित्वायसेपात्रेकृत्वावन्हिगतंसुधीः ।
द्रुतंभृंगरसेक्षिप्तंततउद्धृत्यशोषयेत् ॥
तंचगन्धंपलंचैकंगन्धार्द्धंशुद्धपारदम् ।
सूतार्द्धंभस्मरौप्यंचतदर्द्धंस्वर्णभस्मकं ॥
तदर्द्धंमृतवैक्रान्तंमौक्तिकंचविनिक्षिपेत् ।
एकीकृत्यततःसर्वंकुर्य्यात्पर्पटिकांशुभाम् ॥
लोहपात्रेसमरसंमर्दितंकज्जलीकृतम् ।
वदराङ्गारवन्हिस्थंलोहपात्रेद्रवीकृते ॥
मयूरचन्द्रिकाकारंलिङ्गंवायदिदृश्यते ।
मृदौनसम्यग्भंगस्यान्मधोभंगश्चरूप्यवत् ॥
खरेलघुर्भवेद्भंगोरूक्षःसूक्ष्मोऽरुणच्छविः ।
मृदुमध्यौतथाखाद्यौखरस्त्याज्योविषोपमः॥
ज्वरव्याधिशताकीर्णंविश्वंदृष्ट्वापुराहरः ।
चकारपर्पटीमेतांयथानारायणोऽमृतं ॥
आदौशंकरमभ्यर्च्यद्विजातीन्प्रणिपत्यच ।
प्रभातेभक्षयेदेनांमात्रक्तिद्वयसम्मिताम् ॥
रक्तिकादिक्रमाद्वृद्धिभक्षान्नैवदशोपरि ।
आरोग्यदर्शनंयावत्तावद्ह्रासस्ततःपरम् ॥
अजीर्णेभोजनंनैवपथ्यकालेव्यतिक्रमः ।
घृतसैन्धवधन्याकहिंगुजीरकनागरैः ॥
शस्यतेव्यंजनंसिद्धंपित्तेस्वाद्वम्लमाक्षिकम् ।
कृष्णमत्स्येनदुग्धेनमांसेनजांगलेनच ॥
जांगलेपुशशच्छागौमत्स्येरोहितमद्गुरौ ।
पटोलपत्रंचतथाकृष्णवार्ताकुजालिका ॥
सुस्विन्नपूगैस्ताम्बूलैरेलाकर्पूरसंयुतैः।
क्षुधाकालेव्यतिक्रान्तेयदिवायुःप्रकुप्यति ॥
झिझिनीतिशिरःशूलेविरेकेवमथौतथा ।
तृष्णायांचाधिकेपित्तेनारिकेलाम्बुनिर्भयम्

नारिकेलपयःपेयंद्विभक्षंक्षीरमेवच ॥
स्वप्नेशुक्रच्युतौचैवचंपकंकदलीदलम् ।
वर्जनिम्बादिकंशाकंपाकाम्लंकांजिकंसुराम् ।
कदलीफलपत्रांग्रित्रपुपालाम्बुकर्कटी ।
कूष्माण्डंकारवेल्लंचव्यायामंजागरंनिशि ॥
नपश्येन्नस्पृशेद्गच्छेत्स्त्रियंजीवितुमिच्छति ।
यद्यौषधेस्त्रियंगच्छेत्कर्त्तव्यातुप्रतिक्रिया ॥
दुर्वारांग्रहणींहन्तिदुःसाध्यांबहुवार्षिकीम् ।
आमशूलमतीसारंसामंचैवसुदारुणम् ॥
अतीसारंपडर्शांसियक्ष्माणंसपरिग्रहम् ।
शोथंचकामलांपाण्डुप्लीहानंचजलोदरम् ॥
पक्तिशूलंचाम्लपित्तंप्रमेहान्विषमज्वरान् ।
वातपित्तकफोत्थांश्चज्वरान्हन्तिसुदारुणान्॥
जीर्णेऽपिपर्पटींकुर्वन्वपुपानिर्मलःसुखी ।
जीवेद्वर्षशतंश्रीमान्वलीपलितवर्जितः ॥
प्रातःकरोतिसततंनियतंद्विगुंजायस्तांसविन्द
तितुलांकुशमायुषस्य । आयुश्चदीर्घमनघंवपु
पःस्थिरत्वंहानिंवलीपलितयोरतुलंवलंच ॥

अर्थ—गंधकके छोटे २ टुकडे कर भांगरेके रसकी सात या तीन भावना देकर धूपमें सुखाकर चूर्ण करे, पीछे लोहेके पात्रमें रख अग्निमें गलाय सांठ और भांगरेके रसमें डाल देवे, पीछे उस रसमेंसे गंधकको निकाल सुखा लेवे. इस प्रकार शोधी हुई गंधक ८ तोला, शुद्ध पारा ४ तोला, रूपेकी भस्म २ तोला, सोनेकी भस्म १ तोला, वैक्रांतकी भस्म आधा तोला, और मोतीकी भस्म ३ मासे, सबको एकत्र कर खरल करे, पीछे इस कजलीको लोहेकी कलछीमें रख बेरकी लकडीके अंगारोंमें गलावे, जब कजलीकी कान्ति मोरकी पूंछकी चन्द्रिका कीसी होजावे तब पाक सिद्धि हुआ जाने. उस समय पर्पटीकी विधिसे इसको बना लेवे, कज्जलीका पाक तीन प्रकारका होता है. मृदु, मध्य, और तीक्ष्ण, इनमें मृदु और मध्यपाककी पर्पटी सेवन करनी चाहिये. और खरपाककी पर्पटी विषके समान होती है. इसीसे इसको न खावे, दो रत्तीसे आरंभ कर दश रत्तीतक मात्रा बढावे, दश रत्तीसे अधिक मात्रा वर्जित है. जब रोग नष्ट होजावे तब क्रमसे घटाता जाय. नित्य प्रातःकाल औषधि खावे. अजीर्णमें भोजन और पथ्यकालका व्यतिक्रम करना बुरा है. धनियां, हींग, जीरा, सोंठि, घृत और सैंधानिमक इनसे बने व्यंजन सेवन करना चाहिये. पित्तकी आधिक्यतामें खट्टी, मधुर द्रव्य और शहत सेवन करे. काली मछली, दूध और जंगली जीवोंका मांस पथ्य है. जंगली जीवोंमेंभी शशेका और बकरीका मांस तथा मछलियोंमें रोहू मछली और मुद्गर मछली उत्तम है. शाकोंमें पटोलपत्र, काले बैंगन, और तोरई औटाई हुई सुपारी. इलायची और भीमसेनी कपूर मिश्रित तांबूल खाना हित है. आहार समयके व्यतिक्रम होनेसे वायु कुपित होकर मस्तकमें झिनझिन शब्द और शूल, दस्त और वमनको कराती हैं. अत्यन्त प्यास और पित्तकी वृद्धिमें निर्भय होकर नारियलका जल पीनेको देवे. जलोंमें नारियलका जल और नित्य दो वार दूध पीना अच्छा है. यदि स्वप्नमें वीर्य पतन होवे तो दूध पीवे. चंपा, कदलीदल, नीमका शाक, खट्टे पदार्थ, कांजी, दारू, केलाकी गहर, पत्रांग्रि, खीरा, घीया, ककडी, पेठा, करेला, दंड कसरत करना, रात्रिमें जागना, इत्यादि बातें निषेध है. जीवनेच्छु पुरुषको

स्त्रीका देखना, गमन करना और स्पर्श करना वर्जित है. यदि आवश्यकतासे स्त्रीगमन करे तो उसकी विधिपूर्वक प्रतिक्रिया अर्थात् इलाज करे. इस पर्पटीके सेवन करनेसे दुर्निवार और बहुत कालकी संग्रहणी, आमशूल, अतीसार, आम, छः प्रकारकी बवासीर, खई, सूजन, कामला, पांडुरोग, प्लीह, जलोदर, अम्लपित्त, वातरक्त, प्रमेह, विषमज्वर, वातपित्त, कफके रोग, वेर ज्वर, इन सबको नष्ट करे. इसके सेवनसे बुड्ढा मनुष्यभी दिव्य देहवाला हो जाय. और वली पलित वर्जित सौ वर्ष जीवे. दो रत्ती नित्य प्रातःकाल खानेसे कामदेवके तुल्य होवे दीर्घआयुः स्थिर देह और बलिष्ट होवे ।

तंत्रान्तरोक्तविजयपर्पटी.

रसंवज्रंहेमतारंमौक्तिकंताम्रमभ्रकम् ।
सर्वतुल्येनगन्धेनकुर्य्याद्विजयपर्पटीम् ॥
दुर्वारांग्रहणींहन्तिदुःसाध्यांवहुवार्षिकीम् ।
आमशूलमतीसारंचिरोत्थमतिदारुणम् ॥
प्रवाहिकांपडर्शांसियक्ष्माणंसपरिग्रहम् ।
शोथंचकामलांपाण्डुप्लीहगुल्मजलोदरम् ॥
पक्तिशूलमम्लपित्तंवातरक्तंचमिभ्रमिम् ।
अष्टादशविधंकुष्ठंप्रमेहान्विषमज्वरान् ॥
पूर्वोक्तान्येचतेसर्वेरोगाःसंयांतिसंक्षयम् ।
नानारोगसमाकीर्णेविश्वंदृष्ट्वापुराहरः ॥
चकारपर्पटीमेतांयथानारायणःसुधाम् ।

अर्थ–पारा, हीराकीभस्म, सुवर्णकीभस्म, मोतीकीभस्म, तांबेकीभस्म, और अभ्रककीभस्म प्रत्येक एक २ भाग लेवे । और गंधक सात भाग ले, सबको एकत्र कर कजली करे, और पूर्वोक्त रीतिसे पर्पटी बना लेवे इसके गुण पूर्वोक्त विजय पर्पटीके समान हैं ।

अग्निकुमाररसः

रसंगन्धंविषंव्योषंटंकणंलोहभस्मकम् ।
अजमोदाहिफेनंचसर्वतुल्यंमृताभ्रकम् ॥
चित्रकस्यकषायेणमर्दयेद्याममात्रकम् ।
मरिचाभावटींखादेदजीर्णग्रहणींतथा ॥
नाशयेन्नात्रसन्देहोगुह्यमेतच्चिकित्सितम् ।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, त्रिकुटा, सुहागा, लोहभस्म, अजमोद, और अफीम सबको समान लेवे । और सबकी बराबर शुद्ध अभ्रककी भस्म, सबको मिलाय अभ्रक चित्रकके काढेसे एक प्रहर खरल करे । और मिरचके समान गोलियां बनावे । एक गोली खानेसे अजीर्ण और संग्रहणी रोग नाश होवे यह औषधि गोप्य है ।

ग्रहणीशार्दूलवटिका.

जातीफलंदेवपुष्पमजाजीकुष्टटंकणम् ।
विडंत्वगेलाधत्तूरंफणिफेनंसमंसमम् ॥
प्रसारणीरसेनैवसंमर्द्यावटिकाकृता ।
यथादोषानुपानेनसेविताग्रहणींहरेत् ॥
नानावर्णमतीसारंदारुणांचप्रवाहिकाम् ।
नाम्नाग्रहणिशार्दूलवटिकाग्राहिणीपरम् ॥

अर्थ–जायफल, लौंग, जीरा, कूट, सुहागा, विडनोंन, दालचीनी, इलायची, धतूरेके बीज, और अफीम सब समान लेवे. सबको गंध प्रसारणीके रसमें खरल कर दो २ रत्ती की गोलियां बनावे । अनुपान बेलगिरी और सोंठका काथ, आदि है । इसके सेवन करनेसे अनेक प्रकारकी संग्रहणी, अतिसार, घोर प्रवाहिका, ये दूर होवे इसको ग्रहणी शार्दूल गुटका कहते हैं. यह रस ग्राही है ।

ग्रहणीगजेन्द्रवटिका.

रसगन्धकलोहानिशंखटंकणरामठम् ।
शटीतालीशमुस्तानिधान्यजीरकसैन्धवम् ॥

धातक्यातिविषाशुंठीग्रहधूमोहरीतकी । भल्लातकंतेजपत्रंजातीफललवंगकम् ॥ त्वगेलावालुकंविल्वंमेथीशक्राशनस्यच । रसैःसंमर्द्यवटिकारसवैद्येनकारिता ॥ गहनानन्दनाथेनभाषितेयंरसायने । ग्रहणीगजेन्द्रसंज्ञेयंश्रीमतालोकरक्षणे ॥ ग्रहणींविविधांहन्तिज्वरातीसारनाशिनी । शूलगुल्माम्लपित्तांश्चकामलांचहलीमकम् ॥ वलवर्णाग्निजननीसेविताचचिरायुषी । कण्डूंकुष्ठंविशर्पंचगुदभ्रंशंकृमिंजयेत् ॥ माषद्वयवटींखादेच्छागीदुग्धानुपानतः । वयोग्निवलमावीक्ष्ययुक्त्यावात्रुटिवर्द्धनम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, शंखचूरा, सुहागा, हींग, कचूर, तालीस पत्र, नागर मोथा, धनियां, जीरा, सेंधानोंन, वायकेफूल, अतीस, सोंठ, ग्रहधूम, हरड, भिलाये, तेज पात, जायफल, लोंग, दालचीनी, इलायची, नेत्रवाला, वेलगिरी, मेथी, ये सव वरावर लेवे. सवको भांगके रससे खरल कर एक २ रत्ती की गोलियां वनावे, यह गहनानन्दने रसायन प्रकरणमें कहा है। इसको ग्रहणीगजेन्द्ररस कहते हैं। इसका सेवन करनेसे अनेक प्रकारकी संग्रहणी, ज्वर, अतिसार, शूल, गोला, अम्लपित्त, कामला, हलीमक, खुजली, कुष्ठ, विसर्प, गुदभ्रंश और कृमिरोग इनको दूर करे वल, वर्ण, और अग्निको वढावे। इसके सेवन से दीर्घ आयु होती है। वकरीके दूधके साथ १ रत्तीसे २ माशे पर्य्यन्त अवस्था अग्नि और वल देखकर देवे।

चंडसंग्रहगदैककपाटरसः

हिंगुलोत्थितमहेश्वरवीजंपातयंत्रविधिनाहरणीयम्। गन्धटंकणमृताभ्रतुल्यकंकोकिलाक्षमथचायसखल्वे ॥ मर्द्दनीयमभिधारणयुक्तेधूमहीनदहनोपरिसंस्थे। यावदेषजलशोषणदक्षोजीरकाद्रकयुतेनसवल्लः ॥ संग्रहज्वरमतीसृतिगुल्मानर्शसांचविनिहन्तिसमूहं। वासुदेवकथितोरसराजश्चंडसंग्रहगदैककपाटः॥

अर्थ–हींगलूका निकाला पारा, उसको पातना यंत्र द्वारा शुद्ध करे। पीछे गंधक, सुहागा, अभ्रककीभस्म, इन सवको वरावर लेकर लोहेके खरलमें डाल तालमखानेके रसकी भावना देवे। परन्तु यह भावना तप्तखल्वमें देवे, जव रस सूख जावे तव इसका चूर्णकर रख छोंड दो रत्ती रस जीरेके चूर्ण और अदरकके साथ देवे तो संग्रहणी, ज्वर, अतिसार, गोला, ववासीर, इनको दूर करे यह वासुदेव आचार्य्यका कहा चंडसंग्रहगदैक कपाट रस कहाता है।

जातीफलाद्यावटी.

जातीफलंटंकणमभ्रकंचधत्तूरवीजंसमभागचूर्णं । भागद्वयाढ्यंफणिफेनयुक्तंगन्धालिकापत्ररसेनमर्द्यम् ॥ चणप्रमाणावटिकाविधेयामधुप्रयुक्ताग्रहणीगदेषु । रोगेषुदद्यादनुपानभेदैर्युक्त्याविदध्यादतिसारवत्सु॥ सामेषुरक्तेषुसशूलकेषुपक्केष्वपक्केषुगुदामयेषु। पथ्यंसदध्योदनमत्रदेयंरसोत्तमोयंग्रहणीकपाटः॥

अर्थ–जायफल १ तोला, सुहागा, १ तोला, अभ्रक १ तोला, धतूरेके वीज १ तोला, अफीम २ तोला ले। सवको एकत्र कर गंध प्रसारणीके पत्तोंके रससे मर्दन करके चनेके समान गोलियां वनावे। संग्रहणी रोगमें शहतके साथ देवे. और रोगोंमें दोषको विचार अनुपान कल्पना करे। यह रस संग्रहणीको दूर करे पथ्यमें दही भात देवे।

ग्रहण्यारिरसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंसूतांशंमृतमभ्रकम् ।
मर्दयेन्मातुलुंगाम्लैःशोष्यंपेष्यंचसप्तधा ॥
त्र्यूषणंनीलिकामूलंधत्तूरस्यचबीजकम् ।
एकैकंसूततुल्यंस्यात्सर्वंतद्विजयाद्रवैः ॥
श्वेतापराजिताकन्यामत्स्याक्षीकाकमाचिका
आर्द्रकःपर्पटोवह्निःकदल्यातालुमूलका ॥
द्रवैर्दिनत्रयंभाव्यंमाषमात्रंचभक्षयेत् ।
ग्रहण्यारिरसोनामअसाध्यंसाधयेद्ध्रुवम् ॥
द्विपलंजीरकंक्काथमनुपानंप्रदापयेत् ।
श्वासज्वरामशूलास्रमतिसारंचिरंतनम् ॥
अरुचिंराजयक्ष्माणंमन्दाग्निंचविनाशयेत् ।

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगंधक, पारेकी बराबर अभ्रककी भस्म, लेकर सबको बिजौरेके रसमें सातवार खरल करे । त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल) नीलकाकी जड, धतूरेके बीज ये प्रत्येक पारेके समान लेवे. सबको भांग, सफेद कोयल, घीगुवार, मछेछी, मकोय, अदरक, पित्तपापडा, चीता, केला, और मूसली इनके रसकी पृथक् २ तीन दिन भावना देवे. पीछे एक २ मासेकी गोलियां बनावे, १ गोली नित्य जीरेके काढेसे खाय तो यह ग्रहण्यारिरस असाध्य संग्रहणीको, श्वासज्वर, आमशूल, रुधिर विकार, पुराना अतीसार, अरुचि, राजयक्ष्मा, और मन्दाग्निको दूर करे।

हिरण्यगर्भपोटलीरसः

एकांशोरसराजस्यग्राह्यौद्वौहाटकस्यच । मुक्ताफलस्यचत्वारोभागाःषड्दीर्घनिःस्वनात् ॥ त्र्यंशंबलेर्वराटयाश्चटंकनोरसपादिकः ।
पक्वनिम्बुकतोयेनसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
मूषामध्येन्यसेत्कल्कंतस्यवक्त्रंनिरोधयेत् ।
गर्तेऽरत्निप्रमाणेनपुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः ॥
सांगशीतलतांज्ञात्वारसंमूषोदरान्नयेत् ।
ततःखल्वोदरेमर्द्यंसुधारूपंसमुद्धरेत् ॥
एतस्यामृतरूपस्यदद्याद्गुंजाचतुष्टयम् ।
घृतमाक्षिकसंयुक्तमेकोनत्रिंशदूषणैः ॥
मन्दाग्नौरोगसंघेचग्रहण्यांविषमज्वरे ।
गुदांकुरेमहाशूलेपीनसेश्वासकासयोः ॥
अतिसारेग्रहण्यांचश्वयथौपांडुकेगदे ।
सर्वेषुकोष्ठरोगेषुयकृत्प्लीहादिकेषुच ॥
वातपित्तकफोत्थेषुद्वंद्वजेषुत्रिजेषुच ।
दद्यात्सर्वेषुरोगेषुश्रेष्ठमेतद्रसायनम् ॥

अर्थ–पारा १ तोला, सुवर्णभस्म २ तोला, मोतीकी भस्म ४ तोला, कांसेकी भस्म ६ तोला, गंधक ३ तोला, कौडीकी भस्म ३ तोला, सुहागा २ मासे, इन सब वस्तुओंको एकत्रकर नींबूके रससे खरल करे । पीछे सुखाकर मूषामें भरे. उसका मुख बन्द कर देवे. पीछे एक बालिस्तका गड्ढा खोद तीस आरने उपलोंकी उस मूषाको अग्नि देवे. जब स्वांग शीतल होजाय तब उस मूषामेंसे रसको निकाल लेवे, खरलमें चूर्ण कर किसी शीशी आदि पात्रमें भरकर रख देवे. इस अमृततुल्य रसकी मात्रा ४ रत्तीकी है. घृत, शहत और २९ काली मिरचोंके साथ देवे तो मंदाग्नि, संग्रहणी, विषमज्वर, बवासीर, महाशूल, पीनस, श्वास, खांसी, अतिसार, सूजन, पांडुरोग सब उदर विकार, यकृत और प्लीहके रोग, तथा वातकफ और पित्तसे होनेवाले, तथा द्वंद्वज और त्रिदोषज, सर्व रोगोंको दूर करे. यह परमोत्तम रसायन है ।

अर्कलोकेश्वररसः

शुद्धंसूतंपलंचार्कक्षीरैर्मर्द्यंपुनःपुनः ।
द्विपलंशुद्धगन्धंचमहाकम्बुपलाष्टकम् ॥

ऊर्ध्वंवन्हिरसैर्भाव्यौशोष्यौपेष्यौदिनत्रयं । मेलयेत्पूर्वसूतेनतदर्द्धंटंकणंक्षिपेत् ॥ अर्कक्षीरैःपुनःसर्वंयामैकंमर्दयेद्दृढम् । तच्छुष्कचूर्णंलिप्तेथमाण्डेरुध्वापुटेपचेत् ॥ चतुर्गुंजामितंखादेन्मरिचाज्येनसंयुतम् । देयंदध्योदनंपथ्यंविजयासगुडानिशि ॥ ग्रहणीदोपनाशार्थंनास्त्यनेनसमम्भुवि । ग्रहणींनाशयेत्सर्वामर्कलोकेश्वरोरसः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा ४ तोले, उसको आकके दूधमें खरल करे. पीछे शुद्ध गन्धक ८ तोले, और बडे शंखकी भस्म ३२ तोले, दोनोंको चीतेके रसमें तीन दिन खरल करे. पश्चात् उस पूर्वोक्त पारेको इस चूर्णमें मिला देवे, और १ तोला सुहागा इसमें और मिलावे सबको मिलाकर एक प्रहर आकके दूधमें खरल करे. पीछे उसको एक हांडीके भीतर लेपकर सुखा लेवे, पीछे संपुटमें रखकर फूंक देवे. जब शीतल होजावे तब निकालकर ४ रत्ती रस मिरच और मक्खनके साथ खाय. इस पर दही भातका पथ्य देवे. और रात्रिमें गुड मिली हुई भांग पीनी चाहिये. संग्रहणी दोषके दूर करनेको इससे बढकर दूसरी औषधि पृथ्वीपर नहीं है. सब प्रकारकी संग्रहणीको यह अर्कलोकेश्वररस दूर करता है।

अग्निसुतरसेन्द्रः

भागोदग्धकपर्दकस्यचतथाशंखस्यभागद्वयम् भागौगन्धकसूतयोर्मिलितयोःपिष्टामरीचादपि ॥ भागस्यत्रितयंनियोज्यसकलंनिम्बूरसेचूर्णितम् । नाम्नावन्हिसुतोरसोयमचिरान्मांद्यंजयेद्दारुणम् ॥ घृतेनखण्डात्सहभक्षितेनक्षीणान्नरान्हस्तिसमंकरोति । सन्मागधीचूर्णघृतेनलीढ्वानरःप्रमुच्येद्ग्रहणीविकारात्॥ शोषज्वरारोचकशूलगुल्मान्पांडूदराशग्रहणीविकारान् । तक्रानुपानाज्जयतिप्रमेहान्युक्त्याप्रयुक्तोग्निसुतोरसेन्द्रः ॥

अर्थ–शंखकी भस्म १ भाग, कौडीकी भस्म २ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, और काली मिरच ३ भाग, सबको एकत्रकर नींबूके रससे खरल करे तो यह वन्हिसुतरस शीघ्र मन्दाग्निको दूर करे. घृत और खांडके साथ खानेसे क्षीण मनुष्यको हाथीके समान बली करे. और मिरचके साथ खानेसे संग्रहणी दूर होवे. शोष, ज्वर, अरुचि, शूल, गोला, पांडु, उदर, बवासीर, संग्रहणी, इनको दूर करे. छाछके साथ खानेसे प्रमेह रोग दूर होवे. इस अग्निसूतरसको युक्तिके साथ सब रोगोंमें देना चाहिये ।

अथशीघ्रप्रभावोरसः

पारदंगन्धकंव्योमतीक्ष्णंतालंमनःशिलां । सौवीरमंजनंशुद्धंविमलंचसमांशकम् ॥ एभिःकज्जलिकांकृत्वास्वल्पतैलेनभर्जयेत् । ग्रंथिकंजीरकंचित्रंदीप्यकंमुस्तकंविषं ॥ वालाम्रंवालविल्वंचमोचसारंसमांशकं । विचूर्ण्यपूर्ववत्कल्कंतदर्द्धेनविनिक्षिपेत् ॥ पुनर्विमर्दयेद्यत्नादेकरूपंभवेद्यथा । भावयेत्सप्तवाराणिपंचकोलकषायतः ॥ अरलुत्वग्रसेनापिदशवाराणिभावयेत् । अनेनक्रमयोगेनरसोनिष्पद्यतेह्ययम् ॥ जगधोविश्वजनाम्बुनासहरसःशीघ्रप्रभावाभिधो । निष्कार्द्धप्रमितोमहाग्रहणिकारोगेतिसारामये ॥ आध्मानेग्रहणीभवेऽरुचिहरो वातेचमन्दानले । भुक्त्वापिमलेपुनश्चलमलाशंकासुहिक्कासुच ॥

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, हरताल-

भस्म, मनसिल, शुद्धसुरमा, विमलाकीभस्म, इन सबको बराबर ले सबकी कजली कर थोडे तेलमें भूने । पीछे पीपला मूल, जीरा, चीता, अजमायन, नागरमोथा, सिंगियाविष, आमकी-गुठली, वेलगिरी, मोचरस, इन सबको समान लेकर उस कजलीके अर्द्धभाग मिलावे, पीछे सबको घोटकर एक रूप करे । पीछे पंचकोल के कांढेकी सात भावना देवे, और अरलूकी छालके काढेकी दश भावना देवे, इस क्रमसे यह रस बने इस शीघ्र प्रभाव रसकों सोंठ और नागरमोथाके काढेके साथ २ मासे सेवन करनेसे संग्रहणी, अतिसार, अफरा, अरुचि, वात, मन्दाग्नि, मलके मुक्त होनेपर फिर मल निकलनेकी शंका, और हिचकी इन सब रोगोंको दूर करे ।

द्वितीयजातीफलाद्यावटी.

विशुद्धसूतस्यचगन्धकस्यप्रत्येकमापंतुचतुष्टयं च । विधायशुद्धोपलपात्रमध्येसुकज्जलींवैद्यवरःप्रयत्नात् ॥ जातीफलंशाल्मलिवेष्टमुस्तं सटंकणंसातिविषंसजीरम् । प्रत्येकमेषांमरिचस्यशाणप्रमाणमेकेविषमापकंच ॥ विचूर्ण्यसर्वाण्यवलोड्यपश्चाद्विभावयेत्पत्रभवैरमीपाम् । रसैरसोन्मानमितैरसालवंशौचभद्रोत्कटंकंवटीच ॥ इन्द्रालिकेन्द्राशनकंसज़स्तुन्नयन्तिकादाडिमकेशराजौ । अविद्धकरणापिचभृंगराजौविभाव्यसम्यक्वटिकाविधेया ॥ कोलास्थिमानाचवहुप्रकारंसामंनिहन्त्यत्रयथानुपानम् । कुर्य्याद्विशेपादनलाबलम्वंकासंचपंचात्मकमम्लपित्तम् ॥ हेयंनिहन्तिग्रहणींप्रवृद्धां मर्त्यस्यजीर्णग्रहणीमसाध्याम् ॥ चिरोद्भवांसंग्रहकोष्ठदुष्टिशोथंसमग्रंगुदजानसाध्यान् । आमानुवद्धंत्वतिसारमुग्रंजयेद्धृशंयोगशतैरसाध्यम् ॥ विवर्जनीयात्विहभृष्टमत्स्यामत्स्यःस्तथापाण्डुरवर्णएवरम्भाफलंमूलमथोदनंचवुधैर्विधेयंनकदाचिदत्र ।जातीफलाद्यावटिकांविधेयोयशोर्थिनोवैद्यवरस्यहृद्या । अनेकसम्भावितमर्त्यलोकानानाविधव्याधिपयोधिनौका ।

अर्थ–पारा ४ मासे, गंधक ४ मासे, एकत्र मर्दन कर कजली करे । पीछे जायफल, मोचरस, नागरमोथा, सुहागा, अतीस, जीरा और मिरच प्रत्येक आधा २ तोला लेवे । विष १ मासे इन सबको कजलीमें मिलाकर चूर्ण करे । पीछे आमके पत्ते, बांसके पत्ते, गन्धप्रसारिणीके पत्ते, जल चौलाईके पत्ते, निर्गुडीके पत्ते, भांगके पत्ते, जागनके पत्ते, अरनीके पत्ते, अनारके पत्ते, केशराज (भांगरेका भेद) पाढ और भांगरा इनके रसकी भावना दे खरल कर बेरकी गुठलीके समान गोलियां बनावे । यह अनुपानके साथ अनेक रोग दूर करती हैं, अग्निको प्रबल करे, खांसी, अम्लपित्त, असाध्य संग्रहणी, बहुत कालसे प्रगट उदरकी अशुद्धि, सूजन और गुदाके रोग, और आमातिसार, इत्यादि सब रोग नष्ट होवें । इस औषधि सेवन करने वाले को भुनी मछली, तथा पीले रंगकी मछली, केलाकी गहर और कन्द आदि शाक और भात ये वर्जित हैं । यह जातिफल गुटिका यशोर्थी वैद्योंके मनका चुराने वाला है । अनेक रोगरूप समुद्रमें डूबे हूए मनुष्यको यह गोली नौका रूप है ।

पियूषवल्लीरसः

सूतवंगन्धकंचाभ्रंतरंलोहंसटंकणम् ।
रसांजनंमाक्षिकंचशाणमेकंपृथक्पृथक् ॥

लवंगंचन्दनंमुस्तंपाठाजीरकधान्यकम् ।
समंगातिविपालोध्रंकुटजेन्द्रयवंत्वचम् ॥
जातीफलंविश्वनिम्बंकनकंदाडिमच्छदम् ।
समंगाधातकीकुष्ठंप्रत्येकंरससम्मितम् ॥
भावयेत्सर्वमेकत्रकेशराजरसैःपुनः ।
चणकाभावटीकार्य्याछागीदुग्धेनपेपिता ॥
अनुपानंप्रदातव्यंदग्धविल्वसमंगुडं ।
अतिसारंज्वरंतीव्रंरक्तातीसारमुल्वणं ॥
ग्रहणींचिरजांहन्तिशोथंदुर्नामकंतथा ।
आमशूलविवंधन्ध्वंसंग्रहग्रहणीहरं ॥
पिच्छामदोषंविविधंपिपासादाहरोगकम् ।
हृल्लासारोचकच्छर्दिंगुदभ्रंशंसुदारुणम् ॥
पक्वापक्वमतीसारंनानावर्णसवेदनम् ।
कृष्णारुणंचपीतंचमांसधावनसन्निभम् ॥
प्लीहगुल्मोदरानाहंसूतिकारोगसंकरम् ।
असृग्दरंनिहन्त्येववन्ध्यानांगर्भदंपरं ॥
कामलांपाण्डुरोगंचप्रमेहानपिविंशतिम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुमासार्द्धेनात्रसंशयः ॥
पीयूषवल्लीवटिका अश्विभ्यांनिर्मितंपुरा ।
कश्यपायददेऽश्विभ्यांततःप्रापप्रजापतिः ॥
धन्वंतरिस्ततःप्रापदेवतानांपतिस्ततः ।
परम्पराप्राप्तएषरसस्त्रैलोक्यदुर्लभः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, अभ्रक, रौप्यभस्म, लोहभस्म, सुहागा, रसौत, सोनामक्खी, लौंग, लालचन्दन, नागरमोंथा, पाढ, जीरा, धनियां, अतीस, लोध, कूडाकी छाल, इन्द्रजौ, तज, जायफल, सोंठ, नीमकीछाल, धतूरेके वीज, अनारका वक्कल, धायकेफूल, कूट, प्रत्येक आधा २ तोला लेवे । इन सवको एकत्र कर भांगरेके रससे खरल करे, और वकरीके दूध-से घोटकर चनेके प्रमाण गोलियां वनावे । इस गोलीको वेलका भुर्त्ता और गुडके साथ देवे. (परंतु गुड और वेलका भुर्त्ता समान लेना चाहिये) इस रसके सेवन करनेसे अ-तीसार, ज्वर, रक्तातिसार, पुरानीसंग्रहणी, सूजन, ववासीर, आमशूल, मलवंध, आमदोष, प्यास, दाह, हृल्लास, अरुचि, वमन, गुदभ्रं-श, पक्व अपक्व अतिसार, प्लीहरोग, गुल्म, उदर, अफरा, प्रसूत, असृदर, वंध्यारोग, का-मला, पांडु, प्रमेह इन सव रोगोंको एकपक्ष मात्रमें दूर करे । यह पीयूषवल्लीरस प्रथम अश्विनी कुमारने निर्माणकर कश्यप ऋषिको दिया । कश्यपने दक्ष प्रजापतिको दिया, दक्ष प्रजापतिने इन्द्रको और इन्द्रसे धन्वंतरिको प्राप्ति हुआ । इस प्रकार यह रस त्रिलोकोंमें दुर्लभ परम्परासे इस पृथ्वीमें प्राप्त हुआं है ।

नृपतिवल्लभोरसः

जातीफललवंगाब्दत्वगेलाटंकरामठम् ।
जीरकंतेजपत्रंचयवानीविश्वसैंधवम् ॥
लोहमभ्रंरसोगन्धस्ताम्रंप्रत्येकशःपलम् ।
मरिचंद्विपलंदत्वाछागीक्षीरेणपेषयेत् ॥
धात्रीरसेनवापेष्यंवटिकाःकुरुयत्नतः ।
श्रीमद्गहननाथेनविचिन्त्यपरिनिर्मितम् ॥
सूर्यवर्त्तजसाचायंरसोनृपतिवल्लभः ।
अष्टादशवटींखादेत्पवित्रःसूर्यदर्शकः ॥
हन्तिमन्दानलंसर्वमामदोषंविशूचिकाम् ।
प्लीहगुल्मोदराष्ठीलायकृत्पांडुत्वकामलाम् ॥
हृच्छूलंपृष्ठशूलंचपार्श्वशूलंतथैवच ।
कटिशूलंकुक्षिशूलंमानाहंक्षंष्ट्रशूलकम् ॥
कासश्वासामवातांश्चश्लीपदंशोथमर्वुदम् ।
गलगण्डंगण्डमालामम्लपित्तंचगर्दभीम् ॥
कृमिकुष्ठानिदद्रूणिवातरक्तंभगन्दरम् ।
उपदंशमतीसारंग्रहण्यर्शःप्रमेहकम् ॥
अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातंसुदारुणम् ।

ज्वरंजीर्णंतथापाण्डुतन्द्रालस्यंभ्रमक्लमम् ॥
दाहंचविद्रधिंहिक्कांजडगद्गदमूकताम् ।
मूढंचस्वरभेदंचव्रध्मवृद्धिविसर्पकान् ॥
ऊरुस्तम्भंरक्तपित्तंगुदभ्रंशारुचिंतृषाम् ।
कर्णनासामुखोत्थांश्चदंतरोगांश्चपीनसान् ॥
शौन्यंचशीतपित्तंचस्थावरादिविषाणिच ।
वातपित्तकफोत्थांश्चद्वंद्वजान्सन्निपातकान्॥
सर्वानेवगदान्हन्तिचण्डांशुरिवपापहा ।
बलवर्णकरोहृद्यआयुष्योवीर्य्यवर्द्धनः ॥
परंवाजीकरःश्रेष्ठगहनोमंत्रसिद्धिदः ।
अरोगीदीर्घजीवीस्याद्रोगीरोगाद्विमुच्यते ॥
रसस्यास्यप्रसादेनबुद्धिमान्जायतेनरः ।

अर्थ–जायफल, लौंग, नागरमोथा, तज, इलायची, सुहागा, हींग, जीरा, तेजपात, अजमायन, सोंठ, सैंधानोन, लोहभस्म, अभ्रक, पारा, गंधक, और तांबेकी भस्म, प्रत्येक एक २ पल लेवे । मिरच २ पल लेवे, इन अठारहों औषधियोंको बकरीके दूधमें अथवा आमलेके रसमें पीस आध २ मासेकी गोलियां बनावे, इस औषधिके सेवन करनेसे मन्दाग्नि, संग्रहणी, शूल, खांसी, श्वास तथा सूजन आदि उक्त रोग सब नष्ट होवे । बलवर्णको बढावे, आयु वृद्धि करे, वीर्यको पुष्ट करे, यह रस अत्यंत वाजीकर है. इसके सेवनसे मनुष्य रोगरहित हो पूर्ण आयुको प्राप्त हो. यह गहननाथ सिद्धका कहा हुआ नृपतिवल्लभरस है।

बृहन्नृपवल्लभोरसः

रसगन्धकलोहाभ्रंनागंचित्रंचमुस्तकं ।
टंकजातीफलंहिंगुत्वगेलावन्हिवंगकम् ॥
तेजपत्रमजाजीचयवानींविश्वसैन्धवान् ।
प्रत्येकंतोलकंचूर्णंतथामरिचताम्रयोः ॥
निरुत्थंतुमृतंहेमंतथामापचतुष्टयम् ।
आर्द्रकस्यरसेनैवधात्र्याश्चस्वरसैस्तथा ॥
भावयित्वाप्रदातव्यंचणमात्रंभिषग्वरैः ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायपथ्यंभक्षेद्यथोचितम् ॥
अग्निमांद्यमजीर्णंचदुर्नामग्रहणींजयेत् ।
आमाजीर्णप्रशमनंसर्वरोगनिषूदनम् ॥
नाशयेदौदरान्रोगान्विष्णुचक्रमिवासुरान्।
ग्रंथांतरेऽस्यराजवल्लभसंज्ञा ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, अभ्रक, शीशेकीभस्म, चीतेकी छाल, नागरमोथा, सुहागा, जायफल, हींग, दालचीनी, इलायची, चीतेकी जडकी छाल, बंगभस्म, तेजपात, कालाजीरा, अजमायन, सोंठ, सैंधानिमक, काली मिरच, और तांबेकी भस्म, प्रत्येक एक २ तोला लेवे । और सुवर्णभस्म आधा तोला इन सब वस्तुओंको एकत्र कर अदरकके रस तथा आमलेके रससे खरल करे और चनेके प्रमाण गोलियां बनावे । प्रातःकाल एक गोली नित्य खाय और पथ्यसे रहे तो मंदाग्नि, अजीर्ण, बवासीर, संग्रहणी, आमाजीर्ण इत्यादि सब रोग दूर होवे । इसको ग्रंथांतरोंमें राजवल्लभ रस कहते हैं ।

चित्राम्बररसः

शुद्धंसूतंमृतंचाभ्रंगन्धकंमर्दयेत्समम् ॥
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेयामंमृद्वग्निनापचेत् ।
चालयेल्लोहदंडेनअवतार्यविभावयेत् ॥
त्रिदिनंजीरकक्वाथैर्मापैकंभक्षयेन्नरः ।
रसश्चित्राम्बरोनामग्रहणींरक्तसंयुताम् ॥
शमयेदनुपानेनआमशूलप्रवाहिकाम् ।

अर्थ–शुद्धपारा, अभ्रकभस्म, गंधक, सब समान लेकर घृतमें लिप्त लोहपात्रमें एक प्रहर मन्दाग्निसे पचावे । और लोहके मूसलासे चलाता जाय पीछे उतार शीतल कर तीन दिन

जीरेके काढेसे खरल करे। एक २ मासेकी गोलियां बनावे, १ गोली अनुपानके साथ खानेसे यह चित्रांवर रस रक्त मिली संग्रहणी, आम, शूल, और प्रवाहिकाको दूर करे।

अभ्रवटिका.

अथशुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्याभ्रकस्यच ॥
प्रत्येकंकर्षमानन्तुग्राह्यंरसगुणैषिणा ।
ततःकज्जलिकांकृत्वाव्योमचूर्णंप्रदापयेत् ॥
केशराजस्यभृंगस्यनिर्गुंड्याश्चित्रकस्यच ।
ग्रीष्मसुन्दरकस्याथजयन्त्याःस्वरसंतथा ॥
मण्डूकपर्ण्याःस्वरसंतथाशक्राशनस्यच ।
श्वेतापराजितायाश्चस्वरसंपर्णसम्भवम् ॥
दापयेत्तत्रतुल्यंचविधिज्ञःकुशलोभिषक् ।
रसतुल्यंप्रदातव्यंचूर्णंमरिचसम्भवम् ॥
शुभेशिलामयेपात्रेवर्षणीयंप्रयत्नतः ।
शुष्कमातपसंयोगाद्वटिकांकारयेद्भिषक् ॥
कलायपरिमाणान्तुखादेत्तान्तुप्रयत्नतः ।
दृष्ट्वावयश्चाग्निबलंयथाव्याध्यनुपानतः ॥
हन्तिकासंक्षयंश्वासंवातश्लेष्मभवंरुजम् ।
परंवाजीकरःश्रेष्ठोबलवर्णाग्निवर्द्धनः ॥
ज्वरेचैवातिसारेचसिद्धएषप्रयोगराट् ।
नातःपरतरःश्रेष्ठोविद्यतेऽभ्ररसायनः ॥
चतुर्थकेज्वरेश्रेष्ठःसूतिकातंकनाशनः ।
भोजनेशयनेपानेनास्त्यत्रनियमःक्वचित् ॥
दधिचावश्यकंभक्ष्यंप्राहनागार्जुनोमुनिः ।

अर्थ–पारा २ तोले, गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली करे। पीछे अभ्रक २ तोले, काली मिरचका चूर्ण २ तोले, सुहागा १ तोले, सब कजलीमें मिलाय केशराज (कुकर भांगरा) भांगरा, निर्गुंडी, चित्रक, ग्रीष्मसुन्दर जिसको बंगाली (गिमाशाक) कहते हैं। अरनी, ब्राह्मी, भांग, सफेद कोयलके पत्ते, इन प्रत्येकके दो २ तोले रसकी भावना पृथक् २ देवे। पत्थरके खरलमें घोट कुछ सुखाय मटरके समान गोलियां बनावे। अवस्था, अग्निका बलाबल विचार इस औषधको देवे, तो खांसी, क्षय, श्वास, तथा वात कफके विकार, ज्वर, अतिसार, चातुर्थकज्वर, प्रसूत इत्यादि सब रोग नष्ट होवें। यह प्रयोग श्रेष्ठ है. इस प्रयोगराजसे परे दूसरा नहीं है। इसे अभ्ररसायन कहते हैं। इस औषधिपर भोजनका, सोनेका और पीनेका कोई नियम नहीं हैं। संग्रहणी रोगवालेको इस औषधिके ऊपर दही अवश्य खाना चाहिये. यह नागार्जुनने कहा है।

महाभ्रगुटिका.

अभ्रकंपुटितंताम्रंलोहंगन्धकपारदम् ।
कुनटीटंकनक्षारंत्रिफलाचपलंपलम् ॥
गरलस्यतथामाषचतुष्कंचैवचूर्णयेत् ।
तत्सर्वंभावयेदेपांरसैःप्रत्येकशःपलैः ॥
देवराजाशनाख्यस्यकेशराजाख्यकस्यच ।
सोमराजस्यभृंगाख्यराजस्यश्रीफलस्यच ॥
पारिकद्राग्निमंथस्यवृद्धदारस्यतुम्बरोः ।
मण्डुकपर्णीनिर्गुंडीपूतिकोन्मत्तकस्यच ॥
श्वेतापराजितायाश्चजयन्त्याश्चार्द्रकस्यच ।
ग्रीष्मसुन्दरकस्याढरुपकस्यरसेनच ॥
रसैस्ताम्बूलवल्याश्चपत्रोत्थैर्भावयेत्पृथक् ।
द्रवेकिंचित्स्थितेचूर्णंमरिचस्यपलंक्षिपेत् ॥
ततःश्चैववटींकुर्य्यान्मात्रांदद्याद्यथोचिताम् ।
ज्वरेचैवातिसारेचकासेश्वासेक्षयेतथा ॥
सन्निपातज्वरेचैवविविधेविषमज्वरे ।
क्षयरोगेषुसर्वेषुक्षीणशुक्रेचयक्ष्मणि ॥
ग्रहण्यांचिरभूतायांसूतिकायांविशेषतः ।
शोथेशूलेतथामध्येस्यविरेचामवातके ॥

मन्दानलेऽबलेचैवसकलेश्लेष्मजेगदे ।
पीनसेऽपीनसेचैवपकेऽपकेविशेषतः ॥
वातश्लेष्मणिवातेवाविविधेचेन्द्रियस्थिते ।
वातवृद्धेवृतेपित्तेवलासेनावृतेऽपिच ॥
अष्टासूदररोगेपुकुष्ठरोगेप्रशस्यते ।
अजीर्णेकर्णरोगेचकृशेस्थूलेचयक्ष्मणि ॥
अयंसर्वगदेष्वेवरसोवैपरिकीर्तितः ।
महाभ्रवटिकासेयंपरंश्रेष्ठोरसायनः ॥

अर्थ–अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गंधक, पारा, मनसिल, सुहागा, जवाखार, त्रिफला, ये सब प्रत्येक ८ तोला लेवे । विष आधा तोला. सबको एकत्र कर उक्त रसोंमें खरल करे । भांगके पत्ते, केशराज, सोमराज, (सोमवल्ली) भांगरा, वेलपत्र, नीमकेपत्ते, अरनी, विधायरा, तुंबरू ब्राह्मी, निर्गुंडी, चौलाई, धतूरा, सफेद कोयल, जयंती (अरनीका भेद) अदरक, ग्रीष्मसुन्दर, अडूसा, और नागरवेलके पत्ते इन सबके आठ २ तोला रसमें पृथक् २ खरल करे । जब कुछ रसका अंश बाकी रहे तब आठ तोला मिरचका चूर्ण मिलावे । एक रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे । इसका सेवन करनेसे संग्रहणी, अतिसार, प्रसूतिका, आदिरोग सब नष्ट होवें । यह महाभ्र गुटिका परमोत्तम रसायन है ।

महागंधकम्

रसगन्धकयोःकर्षंग्राह्यमेकंसुशोधितम् ॥
ततःकज्जलिकांकृत्वामृदुपाकेनसाधयेत् ।
जात्याः फलंतथाकोषोलवंगारिष्टपत्रके ॥
एतेषांकर्षमात्रेणतोयेनसहमर्दयेत् ।
मुक्तागृहेपुनःस्थाप्यंपुटपाकेनसाधयेत् ॥
गुंजाषट्कप्रमाणेनप्रत्यहंभक्षयेन्नरः ।
एतत्प्रोक्तंकुमाराणांरक्षणायमहौषधम् ॥
ज्वरघ्नंदीपनंचैवबलवर्णप्रसाधनम् ।
दुर्वारंग्रहणीरोगंजयत्येवप्रवाहिकाम् ॥
सूतिकांचजयेदेतदपिवैद्यविवर्जिताम् ।
कासश्वासातिसारघ्नंवाजीकरणमुत्तमम् ॥
बालरोगंनिहंत्याशुसर्वोपद्रवसंयुतम् ।
पिशाचादानवादैत्याबालानांयेविघातकाः
मंत्रौषधवरास्तिष्ठेत्तत्रसीमांत्यजंतिते ।
बालानांगदयुक्तानांक्षीणांचापिविशेषतः ॥
महागन्धकमेतद्धिसर्वव्याधिनिषूदनम् ।

अर्थ–पारा २ तोले, गंधक २ तोले, दोनोंकी कजली कर इस कजलीमें थोडा जल डाल कीचके समान कर लोहपात्रमें कुछ गरम करे । पीछे जायफल, जावित्री, लौंग, और नीमके पत्ते प्रत्येक दो २ तोला लेकर चूर्ण कर पूर्वोक्त कजलीमें मिला देवे । सबको घोट पीछे इन सब औषधियोंको एक सीपमें भरे, दूसरी सीपसे ढक केलाके पत्तेसे लपेट देवे, ऊपरसे कपरमिट्टी कर मंदाग्निसे पुटपाक करे, जब कुछ लालवर्ण होजावे तब अग्निसे उतार लेवे, उसको खरलमें डालकर घोटे । इसमेंसे छः रती रस अनुपानके साथ देवे तो इस औषधिके खानेसे संग्रहणी, अतिसार, और प्रसूतके रोग और ज्वरादि सब रोग दूर होवे । यह बालकोंकी रक्षाके अर्थ महा औषधि कही है, यह महागंधक सर्व रोग नाशक है । विशेष करके बालकोंके उदररोग आदिको अत्यन्त उपकारी है ।

श्रीवैद्यनाथवटिका.

रसस्यशाणंसंग्राह्यंकांजिकेनतुशोधयेत् ।
चित्रकस्यरसेनापित्रिफलायाश्चबुद्धिमान् ॥
रसार्द्धंगंधकंशुद्धंभृंगराजरसेनवा ।
द्वाभ्यांसंमूर्च्छनंकृत्वास्वरसैःशाणसंमितैः ॥

खल्वयेत्तुशिलाखल्लेक्रमशोवक्ष्यमाणजैः ।
निर्गुंडीमंडुकीश्वेताकुचेलाग्रीष्मसुन्दरैः ॥
भृंगाह्वकेशराजैश्चजयेन्द्राशनकोत्कटैः ।
सर्षपाभावटीकृत्वादद्यातांग्रहणीगदे ॥
सामवाहेग्निमांद्येचज्वरप्लीहोदरेषुच ।
वातश्लेष्मविकारेषुतथाश्लेष्मगदेषुच ॥
दधिमस्तुविनिक्षिप्यमर्दयित्वायथाबलम् ।
दातव्यगुडिकाःसप्तरोगिणेग्रहणीगदे ॥
अम्बुतक्राणिसेवास्तुकुर्वीतस्वेच्छयाबहु ।
श्रीमतोवैद्यनाथेनलोकानुग्रहकारिणा ॥
स्वभ्रान्तेब्राह्मणस्येयंभाषितालिखितेनतु ।

अर्थ–आधा तोला पारा ले कांजीमें और चीतेके रसमें और त्रिफलाके काढेमें शोधन करे । पीछे भांगरेके रसमें शुद्ध की हुई गंधक २ मासे मिलाकर कजली करे । पीछे निर्गुंडी, मंडूकपर्णी (ब्राह्मी) सफेद कोयल, पाढ, भांगरा, केशराज, जयंती (अरनी) भांगके पत्र और दालचीनी इनके रसमें खरल कर सरसोंके बराबर गोलियां बनावे । संग्रहणीवाले मनुष्यको एक वार सात गोलीकी मात्रा देवे, पथ्य दही, छाछ, भात देवे इसमें यथेच्छ छाछ पीवे. यह गोली श्रीवैद्यनाथकी कही हुई है ।

खसर्पणवटी.

पक्वेष्टकाहरिद्राभ्यामगारधूमकेनच ।
शोधितंपारदंचैवकर्षार्द्धंतुलयाधृतम् ॥
भृंगराजरसैःशुद्धंगन्धकंरससंमितम् ।
द्वाभ्यांकज्जलिकांकृत्वाभावयेत्तुभेषजैः ॥
सिंधुवारदलरसेरसेमंडूकपर्णिकाम् ।
केशराजरसेचापिग्रीष्मसुन्दरजेरसे ॥
रसेऽपराजितायाश्चसोमराजीरसेतथा ।
रक्तचित्रकपत्रोत्थेरसेचपरिभावितम् ॥
रसमानसमानेनछायायांशोषयेद्भिषक् ।
सर्षपाभाश्चगुटिकाःकारयेत्कुशलोभिषक् ॥
ततःसप्तवटींदद्याद्दधिमस्तुसमाप्लुताः ।
नित्यंदध्नाचभोक्तव्यंकोष्ठदुष्टिंनिवृत्तये ॥
ग्रहणीमतिसारंचज्वरदोषंचनाशयेत् ।
अग्निदार्ढ्यकरंश्रेष्ठमामपर्पटिकाह्वयम् ॥

अर्थ–इंटका कूकुआ, हलदीका चूर्ण, और घरके धुँएमें शोधा हुआ पारा, १ तोला, तथा भांगरेके रसमें शुद्ध की हुई गंधक १ तोला, दोनोंको एकत्र कर कजली करे । पीछे निर्गुंडी, मंडूकपर्णी (ब्राह्मी) कुकरभांगरा, ग्रीष्मसुन्दर, कोयल, सोमराज, लाल चित्रकके पत्ते, इन प्रत्येकका दो २ तोले रस लेकर खरल कर सरसोंके समान गोलियां बनावे । दहीके मट्ठेके साथ सात गोली सेवन करनी चाहिये । और नित्य दही खावे तो इस रससे संग्रहणी, अतिसार, और ज्वर दूर होवे अग्निको प्रज्वलित करे ।

ग्रहणिकामदवारणसिंहः

सूरभिपारदहिंगुलचित्रकान्गगनभ्रष्टसुटंकणजातिकान् । कनकबीजमथाऽतिविषाकटुत्रयहरीतकिभस्मसुदीप्यकान् ॥ गरलबिल्वकलिंगकपित्थकान्नलदमोचकदाडिमभांतकी । जलदशाल्मलिपिच्छयुतान्समान्कनकसाम्यहिफेनमिदंदृढम् ॥ कनकपत्ररसैःपरिमर्दयेन्मरिचमानवटीमधुसंयुता । विनिहरेद्ग्रहणीगदमुत्कटंज्वरयुतामसतींचविशूचिकाम् ॥ अग्निमांद्यमथशूलविबन्धंगुल्मशूलमथपाण्डुममंदम् । सरुधिराममतीवसमुत्कटंग्रहणिकामदवारणसिंहः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, हिंगुल, चीता, अभ्रकभस्म, भुना सुहागा, धतूरेके बीज, अतीस, सोंठ, मिरच, पीपल, छोटी हरड, उपलेकी राख, अ-

जमायन, विष, वेलगिरी, इन्द्रजो, कैथ, नेत्रवाला, मोचरस, अनारकी छाल, धायके फूल, नागरमोथा, सेमलका मूसला, धतूरेके बीजोंकी बराबर अफीम इन सबको बराबर ले, धतूरेके पत्तोंके रसमें खरल कर मिरचके समान गोलियां बनावे। एक गोली शहतके साथ देनेसे, ज्वरयुक्त संग्रहणी, दुष्ट विशूचिका, मन्दाग्नि, शूल, गोला, पांडुरोग, तथा रक्तस्रावयुक्त आम इन रोगोंका नाश करे। इसको ग्रहणिकामदवारणसिंह रस कहते है।

अगस्तिसूतराजरसः

रसबलिसमभागंतुल्यहिंगूलयुक्तम्। द्विगुणकनकबीजंनागफेनेनतुल्यम् ॥ सकलविहितचूर्णंभावयेद्भृंगनीरैः। ग्रहणिजलधिशोषेसूतराजोह्यगस्तिः ॥ त्रिकटुकमधुयुक्तोसर्ववांतिंचशूलं। कफपवनविकारंवन्हिमांद्यंचनिद्राम् ॥ घृतमरिचयुतोऽयंगुंजमात्रःप्रवाहिं। हरतिषडतिसारान्जीरजातीफलेन ॥

अर्थ–पारा, गंधक और हींगलू प्रत्येक एक २ तोला लेवे। धतूरेके बीज और अफीम दो तोला लेवे, सबको एकत्र कर भांगरेके रसकी भावना देवे, यह अगस्ति सूतराज. सोंठ, मिरच, पीपल और शहतके साथ एक रत्ती खानेको देवे। इससे वमन, शूल, कफ, वातके विकार, मंदाग्नि और घोर निद्राको दूर करे। घृत और मिरचके चूर्णके साथ देवे तो प्रवाहिका दूर होवे। तथा छः प्रकारके अतिसारमें जीरा और जायफल इनके चूर्णसे देवे।

क्षारताम्ररसः

शंखक्षारार्कभूतिंचवराटंलोहभस्मकं। अयोमलंयवक्षारंटंकणक्षारमेवच ॥ त्रिकटुसैन्धवंतुल्यंभृंगतोयेनमर्दयेत्। आद्रूषरसैर्मर्द्यमार्द्रकस्वरसेनच ॥ चणमात्रांवटींकृत्वारसोयंक्षारताम्रकः। श्वासेकासेमतिश्यायेपुराणज्वरपीडिते ॥ मन्दाग्नौग्रहणीदोषेत्वनुपानंयथोचितम्। सेवयेत्सप्तरात्रेणनाशयेन्नात्रसंशयः ॥ चिरकालानुबन्धेचसेवयेन्मण्डलावधि। तत्तद्व्याधिहितंपथ्यंनियमेनसमाचरेत् ॥

अर्थ–शंखकीभस्म, जवाखार, तांबेकीभस्म, कौडीकीभस्म, लोहभस्म, मंडूर, जवाखार, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, और सैंधानोन, इन सबको समान भाग लेकर भांगरेके रसमें, अडूसेके रसमें, और अदरकके रसमें, पृथक् २ खरल कर चनेके समान गोलियां बनावे। यह क्षार ताम्ररस, श्वास, खांसी, पीनस, पुराना ज्वर, मंदाग्नि और संग्रहणी दोष इनमें यथोक्त अनुपानके साथ देवे तो सात दिनमें सब रोग दूर होवे। और बहुत पुराने रोगमें एक मंडलपर्यंत देवे। तथा व्याधिके अनुसार इसमें पथ्य देवे।

पूर्णचन्द्ररसः

सूतंगन्धंचाश्वगन्धागुडूचीयष्टीतोयैर्मर्दयेदेकघस्रम्। शुद्धंशंखंमौक्तिकंलोहकिट्टंभस्मीभूतं सूततुल्यंतुदद्यात् ॥ भूकुष्माण्डैस्तावदेवंविमर्द्यगोलंकृत्वाभूधरेतंपुटेच्च। चूर्णंकृत्वानागवल्लीरसेन दद्यादेतंमर्दयित्वैकयामम् ॥ मध्वाज्याभ्यांपूर्णचन्द्रोरसेन्द्रः। पुष्टिंवीर्यंदीपनंचैवकुर्यात् ॥ प्रायोयोज्यःपित्तरोगेग्रहण्यामर्शोरोगेपित्तजेधोलयुक्तम्। स्त्रीणांतापे शाल्मलीनीरयुक्तम् ॥ योज्यंचाज्यंवाशताह्वाविपक्वम्।

अर्थ–पारा, गंधक, इनको असगंध, गि-

लोय, और मुलहटी, इनके काढेमें एक दिन घोटे। पीछे छोटे शंख, मोती और मंडूर इनकी भस्म पारेके समान डालकर भूकुहडाके रसमें एक दिन घोट गोला बनावे। उसको भूधर यंत्रमें पचावे। जब शीतल हो जावे तब उसमेंसे निकाल चूर्ण कर पानके रससे १ प्रहर खरल कर गोलियां बना लेवे, इस पूर्णचन्द्ररसेन्द्रको शहत घृतके साथ देनेसे पुष्टी करे, वीर्य्य बढावे, अग्निको दीप्त करे, यह रसप्राय पित्तरोगमें, पित्तकी संग्रहणीमें, खूनी बवासीरमें, छाछके साथ देना चाहिये। स्त्रियोंके संतापमें सेमरके रसके साथ देवे। अथवा घृत और शतावरके रसके साथ देवे।

सूतराज.

रसगन्धाभ्रकाणांचभागानेकद्विकाष्टकान्। संचूर्ण्यसर्वरोगेषुयुंज्याद्दद्धचतुष्टयम् ॥ ग्रहणीक्षयगुल्मार्शोमेहधातुगतज्वरान्। निहन्तिसूतराजोयंमण्डलस्यचसेवनात् ॥

अर्थ—पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक ८ भाग, इस प्रमाण लेकर पीस डाले। इसमेंसे ८ रत्ती सब रोगमें देवे. इससे संग्रहणी, खई, गोला, बवासीर, प्रमेह और धातुगत ज्वर, इनको यह सूतराज एक मंडल सेवन करनेसे दूर करे।

सूतादिवटी.

सूतकंगन्धकंलोहंविषचित्रकपत्रकम्। विडंगरेणूकामुस्तमेलाग्रंन्थिककेशरम् ॥ फलत्रिकंत्रिकटुकंशुल्वभस्मतथैवच। एतानिसमभागानिदीयतेद्विगुणोगुडः ॥ कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे। लूतायांग्रहणीमांद्येशूलेपार्श्वामयेतथा ॥ हस्तपादादिरोगेषुगुटिकेयंप्रशस्यते।

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, चीतेकी छाल, पत्रज, वायविडंग, पित्तपापडा, नागरमोथा, इलायची, पीपलामूल, नागकेशर, त्रिफला, त्रिकुटा, और तांबेकी भस्म ये सब समान लेवे। और गुड २ भाग लेवे. सबको मिलाकर गोलियां बनावे। यह रस खांसी, श्वास, खई, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, लूता, संग्रहणी, मन्दाग्नि, शूल, पांसुओंका रोग, और हाथ पैरोंके रोग इन सबको यह गोली दूर करे।

पारदादिवटी.

पारदंगन्धकंतारममृतंचालुशुल्वकम्। त्रिफलात्रिसुगन्धंचचित्रकोशीररेणुका ॥ रजनीद्वयसंयुक्तंसम्पेष्यवटकीकृतम्। ग्रहण्यष्टविधंशूलंशोथातीसारनाशनम् ॥

अर्थ—पारा, गंधक, रूपेकीभस्म, विष, तांबेकीभस्म, त्रिफला, त्रिसुगंध (तज, पत्रज, इलायची) चीतेकी छाल, नेत्रवाला, पितपापडा, हलदी, दारु हलदी, इन सबको एकत्र घोटकर गोलियां बनावे। यह पारदादिगोली संग्रहणी, आठ प्रकारका शूल, सूजन, और अतिसारको दूर करे।

वराटादियोग.

दग्ध्वावराटकान्पीतान्त्र्यूषणंटंकणंविषं। गन्धकंशुद्धसूतंचसमंजम्बीरजैर्द्रवैः ॥ मर्दयेद्भक्षयेन्मापंमरीचाज्यंलिहेदनु। निहन्तिग्रहणीरोगानपथ्यंतक्रोदनंहितम् ॥

अर्थ—पीली कौडीकीभस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा, विष, गंधक, और शुद्ध पारा इन सबको समान लेवे। सबको जंवीरीके रसमें घोटकर एक एक मासेकी गोलियां बनावे, १ गोली मिरचके चूर्ण और घृतके साथ लेवै तो संग्रहणी दूर होय। इसके ऊपर छाछ

और भात खाना पथ्य है ।

ज्वालालिंगरसः

शुद्धंसूतंमृतंस्वर्णंमरिचंतुत्थकंसमम् ।
ज्वालामुख्याग्निजैर्द्रावैर्जलंमन्दंविपाचयेत्
दिनैकंमर्दयेत्खल्वेगुंजामात्रंचभक्षयेत् ।
ज्वालालिंगरसोनामत्रिदोषेयोजयेत्सदा ॥
कर्षैकंवन्हिमूलन्तुतक्रेपिष्टापिबेदनु ।
तक्रारिष्टयुतंपथ्यंशाल्यन्नंभक्षयेत्सदा ॥

अर्थ–शुद्धपारा, सोनेकीभस्म, काली मिरच, नीलाथोथा, सब समान लेवे । सबको ज्वालामुखी, और चीतेके रसमें मंदाग्निसे एक दिन पचावे और इन्हीं दोनों औषधियोंके रससे खरल करे, पीछे एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे । इस ज्वालालिंग रससे त्रिदोषकी संग्रहणी दूर होवे । इस रसके ऊपर एक तोले चित्रककी जडको पीसकर पीवे, तथा छाछ, मद्य, और भात खाना पथ्य है ।

हंसपोटलीरसः

निष्कैकंमर्दितंसूतंद्विनिष्कंमृततीक्ष्णकम् ।
शिखितुत्थंतीक्ष्णतुल्यंकर्षार्द्धंगन्धमौक्तिकम्
विषंनिष्कंचतत्सर्वंभृंगार्द्रासुरसारसैः ।
अग्निपर्णीहरिद्राचलांगलीकंदजैर्द्रवैः ॥
मरिचैर्मधुनालेह्यंमाषैकंहंसपोटली ।
हन्तिसंग्रहणींचैवअतिसारंचपांडुतां ॥
दौर्बल्यंगुल्मश्वासंचकासंहिक्कामरोचकम् ॥
क्षौद्रेणविजयानिष्कंलेहयेदनुपानकम् ।

अर्थ–पारा ३ मासे, लोहभस्म ६ मासे, मोचरस ६ मासे, गंधक ६ मासे, मोतीकीभस्म ६ मासे, और विष ३ मासे । सबको एकत्र कर भांगरा, अदरक, तुलसी, अग्निपर्णी, हलदी और कलियारी इनके रसमें खरल करके एक २ मासेकी गोलिया बनावे, १ गोली मिरचके चूर्ण और शहतके साथ खावे, तो यह हंसपोटलीरस संग्रहणी, अतिसार, पांडुरोग, दुर्बलता, गोला, श्वास, खांसी, हिडकी और अरुचि इनको दूर करे । इसके ऊपर शहतमें मिलाकर ३ मासे भांगका चूर्ण चाटे ।

राजावर्त्तरसः

मृतंसूतंमृतंशुल्बंयष्टीकंराजवर्त्तकम् ।
तुल्यांशंमर्दयेदाज्येक्षणंमृद्वग्निनापचेत् ॥
सितामध्वाज्यमहितंनिष्कार्द्धंभक्षयेत्सदा ।
राजावर्तरसोनामग्रहणीरोगनाशनः ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, ताम्रभस्म, मुलहठी, और राजावर्त्त, (सुवर्ण वर्णकी मणि) की भस्म, ये सब बराबर लेकर घृतमें खरल कर कुछ थोडी देर पचावे । मंदाग्निसे तदनन्तर उतार लेवे । इसमेंसे डेढ मासे शहत, मिश्री और मक्खनके साथ खाय, तो यह राजावर्त्तरस संग्रहणीको दूर करे ।

चन्द्रप्रभावटी.

मृतंसूतंमृतंस्वर्णंमृतंताम्रंसमंसमम् ।
तुल्यंचखादिरंसारंतथामोचरसंक्षिपेत् ॥
द्रवैःशाल्मलिमूलोत्थैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
चणमात्रांवटींभक्ष्येन्निष्कंकंजीरकैःसह ॥
त्रिदोषोत्थमतीसारंसत्वरंनाशयेद्ध्रुवम् ।

अर्थ–चंद्रोदय, सुवर्णभस्म, तांबेकीभस्म, सब बराबर ले. सबकी बराबर खैरसार, और मोचरस डाले । सबको खरल कर सेमलके मूसलेके रसमें दो प्रहर खरल करे । पीछे चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. १ गोली ३ मासे. जीरेके साथ खाय तो तत्काल त्रिदोष जन्य अतिसार और संग्रहणी दूर होवे ।

हिंगुलेश्वररसः

तोलकैकंसमादायशुद्धंहिंगुलगंधयोः ।

मापद्वयंजीर्णताम्रंसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
शिलायांशिलयायामंशाल्मलीसत्वभावितम्
गुंजाद्वयंवटींकुर्य्यात्प्रयत्नेनभिषग्वरः ॥
संमर्घमधुनाखादेदतिसारनिपीडितः ।
ग्रहणीरोगसंयुक्तःसंग्रहग्रहणीयुतः ॥
प्रवाहिकाक्रांततनुरग्निमांद्यादिकंजयेत् ।
धान्यकंजीरकक्काथमनुपानंप्रयोजयेत् ॥
हिंगुलेश्वरनामोयंरसःसर्वगदापहः ।

अर्थ–शुद्धहींगलू १ तोला, गंधक १ तोला, पुरानी तांबेकीभस्म २ मासे, सबको एकत्र करके सेमलके रससे खरल करे। दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे। एक गोलीको अतिसारवाला मनुष्य शहतके साथ खाय इससे संग्रहणी, प्रवाहिका, मंदाग्नि, आदिरोग दूर होवे. इस गोलीको खाकर ऊपर धनिये और जीरेका काढा पीवे। यह हिंगुलेश्वर रस सर्व रोग नाशक है।

लघुसिद्धाभ्रक.

समांशरसगन्धाभ्रदरदंचविशोधितम् ।
लोहखल्वेविनिक्षिप्यगवाज्येनसमन्वितम् ॥
मर्दकेनापिलोहेनमर्दयेद्दिवसद्वयम् ॥
द्रोणीचुल्यांन्यसेत्खल्वंसांगारायप्रयत्नतः॥
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयंलघुसिद्धाभ्रकोमतः ।
वल्लतुल्योरसोजीरवारिणासहितःप्रगे ॥
पीतोहरतिवेगेनग्रहणीमतिदुर्धराम् ।
अतिसारंमहाघोरंसातिसारज्वरंतथा ॥
पाचनोदीपनोहृद्योगात्रलाघवकारकः ।
नागार्ज्जुनेनकथितःसद्यःप्रत्ययकारकः ॥

अर्थ–पारा १ तोला, गंधक १ तोला, अभ्रक १ तोला, शुद्ध हींगलू १ तोला, सबको एकत्र कर लोहेके खरलमें गौके घृतके साथ दो दिन लोहेके मूसलेसे खरल करे। पीछे द्रोणीके आकार बने हुए चूल्हेपर चढाकर नीचे मन्दाग्निसे इस रसको सिद्ध करे। यह लघुसिद्धाभ्रक दो रत्ती जीरेके जलके साथ प्रातःकाल देवे. तो घोर संग्रहणी, अतिसार, ज्वरातिसार, इनको दूर करे। पाचन और दीपन है। हृदयको हितकारी और देहको लाघव करता है। यह नागार्ज्जुनका कहा सद्य पर्चादिखानेवाला है।

सर्वारोग्यवटी.

रसंपलमितंतुल्यशुद्धनागेनसंयुतम् ।
द्रावयित्वायसेपात्रेसतैलेनिक्षिपेत्क्षितौ ॥
ततोघृतंविनिक्षिप्यगंधकंतद्विलोडयच ।
पुनरायसपात्रेतुक्षिप्त्वाग्रद्राव्यनिक्षिपेत् ॥
तत्तुल्यंजारयेत्तालंपुनःसंचूर्ण्यपूर्ववत् ।
तत्तुल्यांजारयेत्सम्यक्कुनटींपरिशोधिताम् ॥
तत्तुल्यंचूर्णितेतस्मिन्क्षिपेन्नागंनिरुत्थकम् ।
तावदेवमृतंताम्यंसर्वमन्यच्चतत्समम् ॥
तीक्ष्णायःखर्परंव्योमहिंगुलंचशिलाजतु ।
पृथक्कर्षसमानेनपट्कोलंपट्पलंमिशी ॥
दीप्यकंचचतुर्जातंरेणुकोशीरवेल्लकम् ।
तुम्बरुर्भार्ङ्गिकारास्नाकंकोलंचोरपुष्करम् ॥
रिंगणींचिरतिक्तंचवीजान्युन्मत्तकस्यच ।
पलद्वयंचलांगल्याःसर्वेषांद्वादशांशकम् ॥
वत्सनाभंसितम्भूरिविनिक्षिप्यततःपरम् ।
त्रिफलानांदशांत्रीणांकशायेणततःपरम् ॥
जयन्त्यार्द्रकवासानांमार्कवस्वरसैस्तथा ।
भावयित्वाचकर्त्तव्यावटिकाश्चणकोन्मिता॥
एकैकावटिकासेव्याकुर्य्यात्तीव्रतरांक्षुधाम् ।
विशूचींसर्वतोहिक्कांसेव्यंस्वादुचशीतलम् ॥
सामांचग्रहणीसदांगतुदनंशोपोत्कटंपाण्डुता
मार्तिवातकफत्रिदोपजनिताशूलंचगुल्मामय
म्॥वाताध्मानविशूचिकांचकसनश्वासार्शसां

विद्रधिंसर्वारोग्यवटीक्षणाद्विजयतेरोगांस्तथान्यानपि ॥

अर्थ–चार तोले पारेमें चार तोले शुद्ध सीसा मिलावे, पीछे इस सीसेको लोहेके पात्रमें गलाकर तेलमें बुझावे, इसी प्रकार घृतमें बुझावे, पीछे इसमें गंधक मिलाकर फिर लोहेके पात्रमें गलावे, और तैलघृतमें बुझावे । तदनन्तर गंधकके समान हरतालको जारण करे । चूर्णकर इस चूर्णके तुल्य शुद्ध मनसिलका जारण करे । पीछे इस चूर्णके बराबर निरुत्थ सीसेकी भस्म मिलावे । और इतनाही सुवर्णमाक्षिक मिलावे । तथा लोहभस्म, खपरिया, अभ्रक, हींगलू और शिलाजीत प्रत्येक एक २ तोला लेवे । पट्कोल (तज, पत्रज, इलायची, चीता, सोंठ और काली मिरच) २४ तोले, सौंफ, अजमोद, चातुर्जात (तज, पत्रज, इलायची और नागकेशर) पित्तपापडा, नेत्रवाला, वायविडंग, तुंबरू, भारंगी, रासना, कंकोल, चन्द्रसूर, पोहकरमूल, कटेरी, चिरायता, धतूरेकेबीज, प्रत्येक एक २ तोला लेवे। कलियारी ८ तोला, सबका बारहवां हिस्सा विष डाले, पिछे सबका दशांश त्रिफला लेकर काढा करके भावना देवे । अरनी, अदरक, भांगरा, इनके रसकी पृथक् २ भावना देकर चनेके बराबर गोलियां बनावे, १ गोली नित्य सेवन करनेसे क्षुधा बढे, विशूचिका, हिचकी, संग्रहणी, अंगोंकी पीडा, शोष, पांडुरोग, वात, कफ, और त्रिदोषजन्यविकार, शूल, गोला, वादी, आफरा, खांसी, श्वास, बवासीर और विद्रधि इन सब रोगोंको यह सर्वारोग्यवटी दूर करती है ।

अथ अर्शरोगाधिकारः

अर्शकुठाररसः

शुद्धसूतपलैकन्तुद्विपलंशुद्धगन्धकम् ।
मृतंताम्रंमृतंलोहंप्रत्येकन्तुपलत्रयम् ॥
त्र्यूपणंलांगलीदंतीपीलुकंचित्रकंतथा ।
प्रत्येकंद्विपलंयोज्यंयवक्षारंचटंकणम् ॥
उभौपंचपलौयोज्यौसैंधवंपलपंचकम् ।
द्वात्रिंशत्पलगोमूत्रंस्नुहीक्षीरंचतत्समम् ।
मृद्वग्निनापचेत्स्थाल्यांसर्वयावत्सुपिंडितम् ॥
मापद्वयंसदाखादेद्रसोह्यर्शकुठारकः ।

अर्थ–शुद्ध पारा ४ तोले, गंधक ८ पल, तांबेकीभस्म, लोहभस्म, प्रत्येक १२ तोले । त्रिकुटा, कलियारी, दन्ती, पीलू, चीता, प्रत्येक ८ तोला लेवे । जवाखार, सुहागा, प्रत्येक पांच २ पल लेवे । सैंधानोन ५ पल, गोमूत्र ३२ पल, थूहरका दूध ३२ पल, सबको एकत्र कर पात्रमें भर मंदाग्निसे पचावे । जब गाढा होजावे तब दो २ मासेकी गोलियां बनावे । एक गोली नित्य खानेसे यह अर्शकुठाररस बवासीरको दूर करे ।

अर्शकुठाररसः

भागःशुद्धरसस्यभागयुगलंगन्धस्यलोहाभ्रयोः । पट्बिल्वाग्निहत्र्यूपणाभयरजांदंतीचभागैःपृथक् । पंचस्युःस्फुटटंकणस्यचयवःक्षारस्यसिंधूद्भवाः । भागाःपंचगवांजलेसुविमलेद्वित्रिंशदेतत्पचेत् ॥ स्नुकूदुग्धंचगवांजलावधिशनैःपिंडीकृतंतद्भवेत् । द्वौमापौ गुदकीलकाननजटाच्छेदेकुठारोरसः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा १ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग, लोहा और अभ्रक छः २ भाग, वेलगिरी, चित्रक, त्रिकुटा, हरड, और जमाल-

गोटा, प्रत्येक एक २ भाग । सुहागा, जवाखार, और सैंधानोंन, प्रत्येक पांच २ भाग । इन सबको एकत्रकर बत्तीस भाग गोमूत्रमें पचावे । तथा थूहरका दूध ३२ भाग, डालकर पुनः पक्क करे । पीछे दो २ मासेकी गोलियां बनावे, १ गोली देनेसे गुदाके मस्सोंकी शिखा तोडनेको कुल्हाडीके समान है ।

अर्शकुठाररसः

श्रेष्ठादन्त्यग्नियुग्मत्रिकटुकइलिनीपीलुकुम्भं विपकम् । प्रस्थेमूत्रस्यसस्नुक्पयसिरसपलं द्वेपलेगंधकस्य ॥ लोहस्यत्रीणिताम्रात्कुडव मथरजःक्षारयोश्चापिपंचक्षिप्त्वास्थाल्यांपचे त्सुज्वलतिदिहनकश्चूर्णमर्शःकुठारः ॥

अर्थ—दन्ती और चीता दो भाग, त्रिकुटा, कलियारी, पीलू, जमालगोटा, प्रत्येक एक भाग, सबको १ प्रस्थ गोमूत्र और १ प्रस्थ थूहरको दूध, पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, लोहभस्म १२ तोले, तांबेकी भस्म १६ तोले, सुहागा और जवाखार दोनों पांच २ भाग ले, सबको एकत्रकर मिट्टीके पात्रमें भर पक्क करे, यह रस अर्श (बवासीर) को दूर करे ।

तीक्ष्णमुखरसः

मृतसूताभ्रलोहार्कतीक्ष्णंमुण्डंचगन्धकं ।
मण्डूरंचसमंताप्यंमर्धकन्याद्रवैर्दिनं ॥
अंधमूषागतंपाच्यंत्रिदिनंतुषवन्हिना ।
चूर्णितंसितयामासंखादेत्पित्तार्शसांजये ॥
रसस्तीक्ष्णमुखोनामक्षनुयोज्यंमधुत्रयम् ।

अर्थ—पारेकी भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, ताम्रभस्म, कान्तलोह, मुंडलोह, गंधक, मंडूर और सोनामक्खी इन सबकी समान भाग भस्म लेकर एक दिन घीगुवारके रसमें खरल करे, मूषमें भरकर ३ दिन तुषाग्निकी अग्नि दे । जब शीतल होजावे तब पीसकर चूर्ण करे, इसमेंसे एक मासे मिश्रीके साथ और तीक्ष्णमुख रसके साथ (खांड, शहत, और घृत ये मधुत्रय) देवे तो पित्तार्श शांति होवे ।

शिवरसः

सूतवैक्रान्तशुल्वाभ्रंकान्तभस्मसगन्धकम् ।
तुल्यांशंमर्दयेच्चादाडिमोत्थैरसैःस्तथा ॥
भक्षयेन्मापमेकन्तुहन्त्यर्शांसिशिवोरसः ।

अर्थ—पारा, वैक्रान्तिमणि, तांबा, अभ्रक, और कान्तलोह, इनकी भस्म तथा गंधक ये सब समान लेकर चूर्ण करे. उसको अनारके रससे खरल कर एक २ मासेकी गोलियां बनावे, एक गोली नित्य खानेसे यह शिवरस बवासीरको दूर करे ।

लोहामृतरसः

संग्राह्यमृतलोहस्यपलान्यष्टादशानिच ।
त्रिकटुत्रिफलादार्वीवन्हिमुस्तादुरालभा ॥
किराततिक्तकोनिम्बपटोलकटुकामृता ।
देवदारुविडंगानिपर्पटंप्रतिकर्षकम् ॥
मध्वाज्याभ्यांलिहेत्कर्षमर्शांसिग्रहणींजयेत् ।
वातपित्तकफंरक्तंनाशयेद्रोगसंचयम् ॥
ख्यातोलोहामृतोनामदेहदार्ढ्यकरःपरः ।

अर्थ—लोहभस्म ७२ तोले, त्रिकुटा, त्रिफला, दारुहलदी, चित्रक, नागरमोथा, धमासा, चिरायता, बकायननीम, पटोलपत्र, कुटकी, गिलोय, देवदारु, वायविडंग, और पित्तपापडा ये प्रत्येक एक २ तोला लेवे । सबका चूर्णकर लोहभस्मको मिलाय १ तोले शहत और घृतके साथ देवे तो बवासीर, संग्रहणी, वात, पित्त, कफ, रुधिर और अनेक प्रकारके रोग दूर होवे । तथा यह लोहामृतनाम रस देहको

दृढ करनेमें उत्तम हैं ।

अग्निमुखलोहम्.

त्रिविचित्रकनिर्गुंडीस्नुहीमुण्डिरकाजटा ।
प्रत्येकशोऽष्टपलिकाजलद्रोणेविपाचयेत् ॥
पलत्रयंत्रिडंगाद्व्योषंकर्षत्रयंपृथक् ।
त्रिफलायापलंपंचशिलाजतुपलंन्यसेत् ॥
दिव्यौषधहतस्यापिवैकंकतहतस्यवा ।
पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहस्यचूर्णितम् ॥
पलैश्चतुर्विंशत्याज्यान्मधुशर्करयोरपि ।
घनीभूतेपुशीतेचदापयेदवतारिते ॥
एतदग्निमुखंनामदुर्नामांतकरंपरम् ।
मन्दमग्निकरोत्याशुकालाग्निसमतेजसम् ॥
पर्वतानपिजीर्यन्तिप्राशनादस्यदेहिनाम् ।
गुरुवृष्याणिपानानिपयोमांसरसोहितः ॥
दुर्नामपांडुस्वयथुकुष्ठप्लीहोदरापहः ।
अकालपलितंहन्यादामवातंगुदामयम् ॥
नसरोगोस्तियंचापिननिहन्तिक्षणादिदम् ।
करीरकांजिकादीनिककारादीनिवर्जयेत् ।
सत्वत्यतोऽन्यथालोहंदेहात्किट्टंचदुर्जरम् ॥

अर्थ—निसोथ, चीतेकी छाल, निर्गुंडी, थूहर, गोरखमुंडी, भुआमला, प्रत्येक ६ पल लेवे । जल ६४ सेरका १६ सेर रहे तब उसे ले, घृत २४ पल, दिव्यौषधसे फुंका हुआ अथवा विकंकतके रससे फुंका हुआ लोह १२ पल लेवे, पीछे पूर्वोक्त सबको एकत्र कर अग्निसे पचन करावे । चीनी २४ पल इसमें और मिलावे, जब गाढा होजाय तब वायविडंग तथा त्रिकुटाका चूर्ण प्रत्येक ३ पल, त्रिफलाका चूर्ण ५ पल, और शिलाजीत १ पल मिलावे । पीछे शीतल होनेपर इसमें शहत २४ पल मिलावे । इसकी मात्रा १ मासेसे लेकर ४ मासेतक की है. यह श्रेष्ठ अग्निकारक औषधि है । इसके सेवनसे सब प्रकारकी बवासीर, सूजन, श्लीपद, कोढ, और उदररोगोंको दूर करे । यह पर्वतके समान किये हुए भोजनकोभी पचाता है. ऐसा कोई रोग नहीं है जो इसके सेवनसे दूर न हो । इसके ऊपर भारी और वृष्य पदार्थ दूध, मांस आदि बलकारक भोजन करने चाहिये तथा करील, कांजी, कुम्हडा, आदि जो ककारनामक पदार्थ हैं. उनको कदापि भोजन न करे, कदाचित् ककारादि पदार्थ भोजन करलेवे तो यह लोह देहसे फूट निकलता है ।

मानशूरणाद्यंलोहम्.

मानशूरणभल्लातत्रिवृद्दन्तीसमन्वितम् ।
त्रिकत्रयसमायुक्तमयोदुर्नामनाशनम् ॥

अर्थ—मान (बंगदेश प्रसिद्धि शाक विशेष) जमीकन्द, भिलाये, निसोथ, दन्ती, त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद (अर्थात् चीता, मोथा और वायविडंग) इन सबका चूर्ण समान भाग लेवे । और सबके बराबर लोहकी भस्म लेवे, मात्रा १ मासेकी है इसके सेवनसे बवासीर नष्ट होवे ।

चन्द्रप्रभावटी.

मृतंलोहंपलद्वंद्वंलोहांशंशुद्धगुग्गुलुः । द्वयोस्तुल्यासितायोज्यात्रिभिस्तुल्यंशिलाजतु ॥
तवक्षीरपलैकन्तुअन्याकर्षांशकाःशृणु । विडंगंत्रिफलाऽब्दपंभूनिम्बगजपिप्पली ॥ द्विनिशापिप्पलीमूलदेवदारुसुवर्चलम् । सैन्धवंधनिकाताप्यंकर्चूरोतिविषावृता ॥ ताप्यंसर्जीयवक्षारंवचामुस्तासपत्रकम् । दन्तीएलासूक्ष्मचूर्णमधुनागुटिकाकृता ॥ कर्षमात्रासदाखादेन्नाम्नाचन्द्रप्रभावटी । सर्वार्शांसिनिहंत्याशुपाण्डुरोगंभगन्दरं ॥ कृच्छ्रान्मेहान्क्षयंकासनानारोगहरापरा ॥

अर्थ–लोहभस्म ८ तोले, शुद्धगूगल ८ तोले, सफेद चिनी १६ तोले, शिलाजीत ३२ तोले, तवाखीर ४ तोला, और वायविडंग, त्रिफला, त्रिकुटा, चिरायता, गजपीपल, हलदी, दारुहलदी, पीपलामूल, देवदारु, सोंचरनोन, सैंधानोन, धनियां, सोनामक्खी, कचूरा अतीस, निसोथ, सज्जीखार, जवाखार, निसोथ, वच, नागरमोथा, पत्रज, दन्ती, इलायची, इन सबको एक २ तोला लेवे। और सबका चूर्णकर शहतकेसाथ एक एक मासेकी गोलियां बनावे. यह चन्द्रप्रभावटी सब प्रकारकी बवासीर, पांडुरोग, भगन्दर, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और क्षय तथा खांसी, ऐसे अनेक रोगोका नाश करे।

अभ्रकहरीतकी.

मृताभ्रकपलंविंशन्मृतलोहस्यपंचकम् । गन्धकस्यपलंपंचत्रिभिर्द्विगुणमाक्षिकम् ॥ पथ्याशतपलंयोज्यंधात्रीपलशतद्वयम् । सर्वमेकत्रतच्चूर्णंजम्बीरैर्भावयेद्दिनम् ॥ भृंगीपुनर्नवाद्रावैःपातालगरुडाकुलैः । भल्लातवन्हिकोरांटैर्हस्तशुंडीतुलांगली ॥ क्षीरिणीजलकुम्भीचप्रत्येकंप्रत्यहंद्रवैः । भावयेन्मर्दयेदित्थंमध्वाज्याभ्यांविलोलयेत् ॥ स्निग्धभाण्डेस्थितंखादेन्नित्यंनिष्कद्वयं द्वयम् । सिद्धसावरयोगोत्थंत्रिदोषार्शांसि नाशयेत् ॥

अर्थ–अभ्रकभस्म ८० तोले, गंधक २० तोले, लोहभस्म २० तोले, सोनामक्खीकी भस्म २४० तोले, हरड ४०० तोले, आमले ८०० तोले, इन सब पदार्थोंको एकत्र कर १ दिन जंबीरीके रसकी भावना देवे. पीछे भांगरा, सोंठ, पातालगरुडी, भिलाये, चीता, कुरंटक, हथशुंडी कलयारी, दुद्धी, जलकुम्भी, इन प्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरल करे. तदनन्तर चिकने चीनी आदिके वासनमें भरकर रख छोडे इसमेंसे १ तोला नित्य खाय तो त्रिदोषजन्य बवासीर दूर होवे, यह सिद्धसावरयोगसे बना हुआ है।

वैक्रान्ताख्यरसः

मृतसूताभ्रवैकान्तकान्तताम्रंसमंसमम् । सर्वतुल्येनगन्धेनमर्द्यंभल्लातकान्वितम् ॥ दिनैकंतद्द्रवैरेववटींकुर्य्याद्द्विगुंजकाम् । भक्षयेद्गुदजान्हन्तिद्वंद्वजंचत्रिदोषजम् ॥ वैक्रान्ताख्योरसोनामसाध्यासाध्यार्शशांतये ॥

अर्थ–पारेकीभस्म, अभ्रकभस्म, वैक्रान्तभस्म, कांतलोहभस्म, तांबेकीभस्म, इन सबको बराबर लेवे इन सबकी बराबर गन्धक और भिलाये डालकर भिलायेके रससे खरल कर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. १ गोली नित्य खानेसे द्वंद्वज, त्रिदोषज, तथा साध्य असाध्य सब प्रकारकी बवासीर दूर होवे।

नित्योदितरसः

विषरविगगनायःसूतगंधसमांशं । समहुतभुजद्रावैर्भावितंसप्तवारम् ॥ प्रबलगुदजकीलंहन्तिनित्योदितोसौ । मलहतिमलबंधेमाषमात्रःससर्पिः ॥

अर्थ–विष, ताम्रभस्म, अभ्रक, लोहभस्म, पारा और गंधक इन सबको समान भाग लेवे. और चीतेके रसकी सात भावना देवे. तो यह नित्योदितरस मूलव्याधी (बवासीर) और मलबंधको घृतकेसाथ एक मासे देनेसे दूर करे।

नित्योदितरसः

मृतसूताभ्रलोहार्कविषगन्धसमंसमम् । सर्वतुल्यांशभल्लातफलमेकत्रचूर्णयेत् ॥

द्रवैःसूरणकन्दोत्थैःखल्वेमर्द्येदिनत्रयम् । माषमात्रंलिहेदाज्यैरसश्चार्शोसिनाशयेत् ॥ रसोनित्योदितोनामगुदोद्भवकुलान्तकः । हस्तेनाभौमुखेपादेगुदेवृषणयोस्तथा ॥ शोथोहृत्पार्श्वशूलंचतथासाध्यार्शसांहितः । असाध्यस्यापिकर्त्तव्याचिकित्साशंकरोदितः

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रक, लोह, ताम्र, विष और गंधक ये सम भाग लेवे। सबकी बराबर भिलायेका चूर्ण मिलावे, सबको एकत्र कर जिमीकन्दके रससे ३ दिन खरल करे इसमेंसे १ मासे घृतके साथ देवे तो यह नित्योदित रस मूलव्याधिका नाश करे. हाथ, पैर, नाभि, मुख, गुदा, और अंडकोश इनकी सूजन और हृदय तथा पांशुओंका शूल तथा असाध्य बवासीर इनका नाश करे. असाध्य-अर्शकी चिकित्सा शिवप्रोक्त करनी चाहिये।

षडाननरसः

वैक्रान्तताम्राभ्रकगंधकानांरसस्यकान्तस्य समानभागम्। चूर्णंभवेत्तेनषडाननोयमर्शो विनाशायचवल्लमात्रम् ॥

अर्थ–वैक्रांतमणि, ताम्रभस्म, अभ्रक, गंधक, पारा, और कान्तलोहकीभस्म, ये सब समान भाग लेवे. सबका चूर्ण करे तो यह षडाननरस तय्यार होवे. बवासीर रोगमें दो रत्ती देना चाहिये।

पियूषसिंधुरसः

शुद्धंसूतंषड्गुणंजीर्णगन्धं । काचेपात्रेवालुकायंत्रयोगात् ॥ भस्मीकृत्वायोजयेदत्रहेमतुल्यांशंभस्मलोहाभ्रयोश्च ॥ सूतात्तुल्यं गन्धकंमेलयित्वाखल्लेमर्द्यंसूरणस्यद्रवेण ॥ दन्तीमुण्डीकाकमाचीहलाख्या । भृंगार्काग्निःसप्तधेषांरसेन ॥ क्षिप्त्वापश्चात्धान्यराशौत्रियसंचूर्णंकृत्वामाषमात्रंददीत । अर्शोरोगेदारुणेचग्रहण्यांशूलेपाण्डावम्लपित्तेक्षयेच ॥ श्रेष्ठंक्षौद्रंचानुपानंप्रशस्तंरोगोक्तंवामाषषट्कप्रयोगात् । सर्वेरोगायान्तिनाशंजरायावपैहृद्यंसेवनीयंप्रयत्नात् । पथ्यंसात्म्यं चाम्लयोगादियोपिहृद्यंदेयंसर्वरोगप्रशान्त्यै ॥ पुष्टिकान्तिवीर्य्यवृद्धिंसदाचसेवा युक्तोमानवःसंलभेत ।

अर्थ–शुद्धपारा लेकर उसको बालुकायंत्रमें षडगुण गन्धक जारण करे। और इस पारेके समान सुवर्णभस्म, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, और गंधक ये मिलावे, पीछे इसमें सूरण (जमीकन्द) के रसकी, दंती, गोरखमुंडी, मकोय, मद्य, भांगरा, आक और चित्रक इन प्रत्येकके रसकी सात २ भावना देवे । पीछे इसका गोला बनाकर धानकी रासमें रख देवे. तीन दिन पीछे निकाल लेवे । इसमेंसे एक मासे रोगिको नित्य देवे. तो यह उग्र बवासीर, संग्रहणी, शूल, पांडुरोग, अम्लपित्त तथा खई इनमें शहतके साथ देवे. इसके छः मासे खानेसे सब रोग दूर होवे। और बुढापा दूर होवे, इसीसे यत्नपूर्वक भक्षण करे, इसका खानेवाला खट्टा खारी आदि पदार्थ तथा स्त्रीसंग करना छोड देवे. और जो अपने आत्माको उपयोगी पदार्थ हो उसका सेवन कर्तव्य है । इसके सेवनसे पुष्टि, काति तथा वीर्य्यवृद्धि प्राप्ति होवे।

चक्रबंधरसः

दिनत्रयंगन्धसमंरसेन्द्रंविमर्दयेच्छ्वेतगुद्रवेण ताम्रस्यचक्रेणनिवध्यवन्हिहरीतकीभृंगरसैर्विमर्द्य ॥ कटुत्रयेणापिददीतगुंजाद्वयंमरुत्पायुरुहप्रशान्त्यै । चक्रबंधरसोयंहिसर्व

रोगापहारकः ॥ एतैस्तुगंधकेनैकंपुटंचैवम दापयेत् ।

अर्थ–पारा और गंधक समान लेवे. दोनों को सफेद पुनर्नवा (सांठ) के रसमें ३ दिन खरल करे, तथा तांबेकी भस्म डालकर खरल करे तो चक्रके सदृश पारा बद्ध होवे । पीछे उसको चित्रक, हरड, भांगरा, सोंठ, मिरच, पीपल. इनके रससे खरल करे । पीछे दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. १ गोली बातकी बवासीर दूर करनेको देवे. यह चक्रबंधरस सर्व रोग नाशक है. इस रसमें १ गंधकपुट और देवे ।

सर्वलोकश्रमहारीरसः

शुद्धसूतंपलंगन्धंगन्धार्द्धंतालताप्यकम् ।
अमृतंरसकंचैवतालकार्धविभागकम् ॥
एतेषांकज्जलींकुर्य्याद्दृढंसम्मर्द्यवासरम् ।
त्रिदिनंमर्दयेद्वाथदत्वानिम्बजलंखलु ॥
वटींकृत्वाविशोष्याथकाचकुप्यांनिधापयेत्।
निष्कंतुल्यार्कपात्रेणपिधायास्यमयत्नतः ॥
मार्धांगुलमितोत्सेधांमृत्स्नयातांविलिप्यच ।
ततोभाण्डेतृतीयांशेसिकतापरिपूरिते ॥
निधायतत्सिकताशुभ्रसिकताभिःप्रपूरयेत् ।
रुध्वास्यंतदधोवन्हिंज्वालयेत्सार्द्धवासरम्॥
स्वांगशीतलितंकाचपुटादाकृष्यतंरसं ।
तच्चूर्णंविधायाथताम्रमभ्रपलद्वयम् ॥
पलार्द्धममृतंचैवमरिचंचतुःपलम् ।
एकीकृत्यक्षिपेत्सर्वंनारिकेलकरण्डके ॥
माज्यंगुंजाद्विमानोहरतिरसवरःसर्वलोका-
श्रयोयं । वातश्लेष्मोत्थरोगान्गुदजनितगदं
शोपपांड्वामयंच ॥ यक्ष्माणंवातशूलंज्वरम
पिअखिलंवन्हिमांद्यंचगुल्मं। तत्तद्रोगघ्नयो-
गैःसकलगदचयंदीपनंतत्क्षणेन ॥

अर्थ–पारा ४ तोले, गंधक ४ तोले, हरताल २ तोले, सोनामक्खी २ तोले, विष १ तोले, खपरिया १ तोले, सबकी कजलीकर १ दिन घोटे, तदनन्तर निबूके रससे३ दिन खरल करे. पीछे इसकी गोलीकर आतिशी शीशीमें भर तीन २ मासेके आकके पत्तोंसे उसको लपेट देवे. उसके ऊपर डेढ अंगुल ऊंची कपरमिट्टी चढाय धूपमें सुखा लेवे. पीछे एक मिट्टीका पात्र लेवे उसका तीसरा हिस्सा वालूरेतसे भर उसके ऊपर उस पूर्वोक्त शीशीको रखे और ऊपरसे वालू भर देवे उस शीशेके मुखमें ईटका टुकडा देकर बंद कर देवे. पीछे दो प्रहरकी अग्नि देवे, तब स्वांग शीतल हो जावे तब उस शीशीसे रसको निकाल लेवे, पीछे उसका चूर्णकर उसमें तांबेकी भस्म और अभ्रकभस्म दो २ पल मिलावे. विष ४ तोले और काली मिरचका चूर्ण ४ पल मिलावे. सबको एकत्र कर नारियलकी नरेलीमें भर देवे. इसमेंसे २ रत्ती रस मक्खनके साथ खाय तो सब रोग दूर होवे. वादी कफके रोग, गुदाके रोग, शोप, पांडु, राजयक्ष्मा, वातशूल, सब प्रकारके ज्वर, मंदाग्नि, गोला, इन रोगोंमें इन्हीं इन्हीके अनुपानके साथ देवे तो यह रस तत्क्षण दीपन करे ।

त्रैलोक्यतिलकोरसः

रजःकृत्वाभर्जयित्वाशोधितंकाचटंकणम् ।
रेतयित्वारजःकृत्वाभर्जयित्वाघृतेनतु ॥
अष्टादशांगकोपेतंपुटेद्वारत्रयंततः ।
त्रिवारस्यद्रवेत्तेनलुंगस्वरसयोगिना ॥
चतुर्वारंचवर्पाभूवासामत्स्याक्षिकारसैः ।
गुग्गुलुत्रिफलाक्वाथैस्त्रिशद्वाराणियत्नतः ॥
तुल्यांशंरसगन्धोत्थकज्जल्याष्टांशभागिका ।

पुटेत्पंचाशतंवारान्मर्दयेच्चपुटेपुटे ॥
शोधितंरेतितंकान्तंसत्वंचघृतभर्जितं ।
पुटेदष्टांशदरदैः संयुतंलकुचाम्बुना ॥
दशवारंतथासम्यक्तारंशुद्धंमनोह्वया ।
तथाविंशतिवाराणिवलिनामीनद्रवसैः ॥
दशवाराणितापयेत्तुकृष्णागोघृतयोगिना ।
उभयंसमभागन्तत्पुटेच्छिंगुंडिकारसे ॥
रसगन्धोत्थकज्जल्यादशवारंपुटेत्पुनः ।
तस्मिन्नष्टांशभागेनक्षिपेद्वैक्रान्तभस्मकं ॥
राजावर्त्तकलांशेनसमभागेनपर्पटीं ।
तत्सर्वंपरिमर्द्याथभावयित्वार्द्रकाम्बुना ॥
गुडूच्याःस्वरसेनापिभूकदम्बरसेनवा ।
भृंगराजरसेनापिचित्रमूलरसेनच ॥
व्योषगुंजाकिर्नाकन्दैर्भूयोथार्द्रद्रवेणच ।
पटचूर्णमतःकृत्वाक्षिपेच्छुद्धंकरण्डके ॥
त्रैलोक्यतिलकःसोयंख्यातःसर्वरसोत्तमः ।
सर्वव्याधिहरःश्रीमान्शम्भुनापरिकीर्त्तितः
उदावर्त्तंचविड्बंधंव्यथांचजठरोद्भवाम् ।
लोहलंगन्दबुद्धित्वंशूलित्वमपिवंध्यताम् ॥
सूतिरोगानशोषांश्चशूलंनानाविधंतथा ।
परिनागाख्यशूलंचथताभिघातसमुत्कटम् ॥
रक्तगुल्मंचनारीणांरजःशूलंचदुःसहं ।
अनुपानंचपथ्यंचतत्तद्रोगानुरूपतः ॥

अर्थ—सफेद और काली अभ्रकका सत्व उसको काच और सुहागेसे शोधकर रेतीसे रेतलेवे, पीछे उस सत्वके रेतको घीमें भून पीछे अष्टादशांग काढेके तीन पुट देवे, और सुखाय २ कर तायलेवे, इस प्रकार तीन पुट देवे. पीछे तीन भावना विजोरेके रसकी, चार भावनाके चुओंके रसकी, अडूसा,मछेछी,गूगल, त्रिफला, इनके काढेकी तीस भावना देवे. पीछे इस चूर्णका अठारहवां भाग पारे गंधककी कजली मिलावे. पीछे पूर्वोक्त अडूसा आदि औषधियोंकी २० पुट देवे. प्रत्येक पुटमें घोटता जावे पीछे कान्तपाषाणके सत्वको शोधन कर और रितायकर उस सत्वको भून आठवा भाग हींगलू डालकर वडहलके रसकी १० भावना देवे. पीछे चांदीको मनसिलद्वारा शुद्ध करके गन्धक डाल मछेछीके रसकी वीस भावना देवे, तदनन्तर सुवर्णमाक्षिक डालकर कालीगौके घृतसे १० पुट देवे, पीछे पूर्वोक्त रेताहुआ सत्व और चांदी समान लेवे और सखालूके रसके १० पुट देवे. और १० पुट पारे गंधककी कजलीके देवे, फिर इसमें पूर्वोक्त सत्वका आठवा भाग वैक्रान्तकी भस्म डाले, और राजावर्त्तकी भस्म सोहलवा भाग डालकर पर्पटी बनावे. पीछे सबका चूर्ण कर अदरक, गिलोय, गोरखमुंडी, भांगरा, चीतेकी छाल, त्रिकुटाका काढा, भांग, इनके रसकी भावना देकर फिर अदरकके रसकी भावना देवे। पीछे धूपमें सुखाकर कपरछन कर लेवे। इसको किसी उत्तम चीनीके वर्तन या शीशीमें रख लेवे। यह त्रैलोक्यतिलक नामसे विख्यात सर्वोत्तम रस है । सर्वरोग हरणकर्त्ता श्री शिवने कहा है. उदावर्त्त, मलबंध, उदरकी पीडा, तोतलापन, मन्दबुद्धि, शूल, वंध्यता, प्रसूतरोग, पारिणामशूल, रक्तगुल्म, रजकी पीडा, इनको यह रस दूर करे. इसपर रोगानुसार पथ्य देना चाहिये।

इति श्रीरसराजसुन्दरे उत्तरखण्डेअर्शरोगाधिकारः

अथ अजीर्णरोगाधिकारः

अग्निसंदीपनोरसः

पट्टपणंपंचपटुत्रिक्षारंजीरकद्वयम् ।
व्रह्मदंभींग्रगंवाचमधुरीहिंगुचित्रकम् ॥
जातीफलंतथाकुष्ठंजातीकोपंत्रिजातकम् ।
चिंचाशेखरिकक्षारममृतंरसगन्धकौ ॥
लोहमभ्रंचवंगंचलवंगंचहरीतकी ।
समभागानिसर्वाणिभागौद्वावम्लवेतसात् ॥
शंखस्यभागाश्चत्वारःसर्वमेकत्रभावयेत् ।
क्वाथेनपंचकोलस्यचित्रापामार्गयोस्तथा ॥
अम्ललोणीरसेनैवमत्येकंभावयेत्त्रिधा ।
त्रिःसप्तकृत्वोलिम्पाकरसैःपश्चाद्विभावयेत्
वदराभावटीकार्य्यायोक्तव्यासंध्ययोर्द्वयोः
अनुपानंप्रदातव्यंवुध्यादोषानुसारतः ॥
अग्निसंदीपनोनामरसोऽयंभुविदुर्लभः ।
दीपयत्याशुमन्दाग्निमजीर्णंचविनाशयेत् ॥
अम्लपित्तंतथाशूलंगुल्ममाशुव्यपोहति ।

अर्थ–पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, और काली मिरच, पांचोंनोंन, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, सफेद जीरा, काला जीरा, अजमायन, वच, सोंफ, हींग, चिनेकी छाल, जायफल, कूट, जावित्री, दालचिनी, तेजपात, इलायची, इमलीकी छालकी भस्म, ओंगाकी भस्म, विष, पारा, गंधक, सार, अभ्रक, वंग, लौंग, हरड, ये प्रत्येक १ भाग लेवे. अमलवेत २ भाग ले, शंखभस्म ४ भाग ले, सबको कूट पीस पंचकोल, चिता और ओंगाके काढेकी भावना देवे। उसी प्रकार खट्टे लोनियाके रसकी ३ भावना देवे, नींबूके रसकी २१ भावना देवे, पीछे वेरके समान गोलियां बनावे. प्रातःकाल और सायंकाल दोनों वक्त एक २ गोली खाय और दोषके अनुसार अनुपान करे तो यह अग्निसंदीपनरस मंदाग्निको प्रज्वलित करे। अजीर्ण, अम्लपित्त, शूल, और गोला इन सबको नष्ट करे।

अजीर्णबलकालानलोरसः

द्विपलंशुद्धसूतंचगन्धकंचसमंमतम् ।
लोहंताम्रंहरीतालंविषंतुल्यंसवंगकम् ॥
पलप्रमाणंचपृथक्लवंगंटंकणंतथा ।
दन्तीमूलंत्रिवृच्चूर्णमेकैकंपलसम्मितम् ॥
अजमोदायवानीचद्विक्षारलवणानिच ।
पृथगर्द्धपलंग्राह्यमेकीकृत्यचभावयेत् ॥
आर्द्रकस्वरसेनैकविंशतिपांचकोलजैः ।
दशधाभावयेत्तोयैर्गुडूचीनारसैर्दश ॥
सर्वार्द्धंमरिचंदत्वाकाचकुप्यांचधारयेत् ।
चणमात्रावटींकृत्वाछायायांपरिशोषयेत् ॥
रसोजीर्णवलकालानलएषप्रकीर्तितः ।
अनेककालनष्टाग्नेर्दीपनःपरमःस्मृतः ॥
आमवातकुलध्वंसीप्लीहपाण्डुपदापहः ।
प्रमेहानाहविष्टम्भसूतिकाग्रहणीहरः ॥
श्वासकासप्रतीश्यायक्ष्मक्षयविनाशनः ।
अम्लपित्तंचशूलंचभगन्दरगुदोद्भवौ ॥
अष्टौदराणिप्लीहानंयकृतंहन्तिदारुणम् ।
आकंठंभोजयित्वातुखादयेचरसोत्तमम् ॥
अर्द्धयामेनतत्सर्वंभस्मीभवतिनिश्चितम् ।
चतुर्विधरसोपेतंमहाभोजनमिच्छतः ॥
भोजस्यनृपतेःकांक्षाभोजनेकृपयाकृता ।
गहनानन्दनाथेनसर्वलोकहितैषिणा ॥

अर्थ–पारा २ पल, गंधक २ पल, लोहभस्म, ताम्रभस्म, हरितालभस्म, विष, लीलाथोथा, वंग, लौंग, सुहागा, दन्तीकीजड, निसोथ, ये प्रत्येक एक २ पल लेवे। अजमोद, अजमायन, जवाखार, सज्जीखार, पांचोंनोंन, ये प्रत्येक

चार २ तोला इन सब वस्तुओंको एकत्र कर कूट पीस अदरकके रसकी २१ भावना देवे, पंचकोलके काढेकी १० भावना देवे, गिलोयके रसकी १० भावना देवे, पीछे सब चूर्णसे आधी काली मिरच पीसकर मिलावे। सबको घोट काचकी शिशीमें भरकर रख देवे. जब कुछ सूख जावे तब चनेके समान गोलियां बनावे, और छायामें सुखा लेवे। यह जीर्णवलकालानल नामक रस है। बहुत दिनोंकी जीर्ण जठराग्निको दीपन करे। आमवात, प्लीह, पांडु, प्रमेह, विष्टंभ, प्रसूत, संग्रहणी, खांसी, श्वास, पीनस, खई, अम्लपित्त, शूल, भगंदर, बवासीर, आठ प्रकारके उदररोग, कलेजेके रोग, सबको दूर करे। कंठ पर्य्यन्त भोजन करके इस रसको खाय तो आधे प्रहरमें सब भोजन किये को भस्म कर देवे. यह गहनानन्द सिद्धका कहा हुआ रस है।

श्रीरामबाणरसः

पारदाऽमृतलवंगगन्धकंभागयुग्ममरिचेनमिश्रितम्। अत्रजातिफलमर्धभागिकंतिन्तिडीफलरसेनमर्दितम्॥ माषमात्रमनुपानयोगतःसद्यएवजठराग्निदीपनः। संग्रहग्रहणिकुंभकर्णकंसामवातखरदूषणंजयेत्॥ वन्हिमांद्यदशवक्त्रनाशनोरामबाणगुटिकारसायनः॥

अर्थ-पारा, विष, लौंग, गंधक, प्रत्येक एक २ तोला ले। मिरच २ तोला, जायफल आधा तोला, इन सबको कच्ची इमलीके रसमें खरल कर एक२ मासेकी गोलियां बनावे. दोषानुसार अनुपान देवे. इस रसके सेवनसे तत्काल अग्निदीपन होवे. और संग्रहणी रूप कुंभकर्ण, आमवात रूप खरदूषण, तथा मंदाग्नि रूप रावणका नाशक यह रामबाण रस रसायन है।

क्षुद्बोधकरसः

व्योषसिन्धुत्थबलिभिरेकद्वित्रिलवैःस्मृतः। निम्बांम्बुमर्दितोगाढंनाम्नाक्षुद्बोधकोरसः॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों १ तोला सैंधानोंन २ तोला, गंधक ३ तोला, इन सबको कूट पीस नींबूके रसमें खरल करे। तो यह क्षुद्बोधरस बने। इसके खानेसे भूंख लगती है मात्रा ३ मासेकी है।

दूसराक्षुद्बोधरसः

टंकणकणामृतानांसहिंगुलानांसमोभागः। मरिचस्यभागयुगलंनिम्बूनीरैर्वटीकार्य्या॥ वटीकलायसदृशीमेकामेवसमश्नीयात्। सत्वरमजीर्णशान्त्यैवन्हेर्वृध्यैकफध्वस्त्यै॥

अर्थ-सुहागा, पीपल, विष, और हींगलू ये समान भाग लेवे। और काली मिरच २ भाग लेवे, इनका चूर्ण कर नीबूके रससे खरल करे। और मटरके समान गोलियां बनावे. यह गोली अजीर्णका नाश करे. भूंक बढावे, और कफको दूर करे।

अग्निकुमाररसः

पारदंचविषंगन्धंटंकणंसमभागतः। मरीचादष्टभागास्युर्द्वौशंखकवराटयोः॥ पक्वजंवीरजैर्गाढंरसःसप्तविभावयेत्। गुंजाद्वयमितोदेयोरसोह्यग्निकुमारकः॥ समीरणसमुद्भूतमजीर्णंचविशूचिकाम्। क्षणेनक्षपयत्येषक्षयेरोगनिकृंतनः॥

अर्थ-पारा, विष, गंधक, और सुहागा, इनको समान भाग लेवे। मिरच ८ भाग, शंख भस्म, और कौडीकी भस्म दो भाग, सबको एकत्रकर पकी हुई जंबीरीके रससे खरल कर सात भावना देवे। पीछे दो २ रत्तीकी गो-

लियां बनावे। यह अग्निकुमाररस वादीसे प्रगट अजीर्णको विशूचिकाको और क्षयरोगको एक क्षणमात्रमें दूर करे।

दूसराअग्निकुमाररसः

रसेनगन्धंसहटंकणेनसमंविपंयोज्यमतस्त्रिभागम् । कपर्दशंखावपिनेत्रभागैमरीचकं चाष्टगुणंविमर्द्य ॥ सुपक्कजम्बीररसेनखल्वे शुद्धोभवत्यग्निकुमारकोयम् । अजीर्णवातं गुदगुल्मवातंविशूचिकानांविनिहन्तिसद्यः॥

अर्थ–पारा, गंधक, सुहागा, इनको एक २ भाग ले. विष ३ भाग, और कौडी तथा शंखकी भस्म २ भाग, काली मिरच ८ भाग, सबको एकत्र कर पकी जंबीरीके रससे खरल करे. तो यह अग्निकुमाररस बने. ये अजीर्णवायु, गुदाकी वात, वायगोला, विशूचिकादि व्याधियोंका नाश करे।

तीसराअग्निकुमाररसः

टंकणंरसगन्धौचसमभागंत्रयंविपात् ।
कपर्दशंखौद्विलवौवसुभागंमरीचकम् ॥
दिनंजम्बांभसापिष्ठ्वानागवल्यार्द्रवन्हिना ।
शिग्रुमूलेनलुंगेनभवेदग्निकुमारकः ॥
अजीर्णशूलमन्दाग्निप्लीहपांड्वामयेपुच ।
वातरोगेपुसर्वेपुमूत्ररोगेपुवातजे ॥
कासेदुर्नाम्न्यतीसारेग्रहण्यांसन्निपातके ।

अर्थ–सुहागा, पारा, गंधक, इन सबको बराबर ले. विष ३ भाग, कोडी और शंखकी भस्म दो भाग, काली मिरच ८ भाग, सबको एकत्र कर जंबीरीके रसमें एक दिन खरल करे। पानके रसमें, अदरकके रसमें, सहजनेके रसमें, तथा विजौरेके रसमें एक २ दिन घोटे. तो अग्निकुमार रस बने. यह अजीर्ण, शूल, मंदाग्नि, प्लीह, पांडु, वादीके रोग, मूत्ररोग, खांसी, बवासीर, अतिसार, संग्रहणी और सन्निपातको दूर करे।

चतुर्थअग्निकुमाररसः

समानौगन्धकरसौतदर्द्धंवत्सनाभकम् ।
रसस्यताम्रभस्मोपिसमंचूर्णंविमर्दयेत् ॥
हंसपादिरसेनाथकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
वालुकायंत्रविधिनात्रियामंपाचयेद्भिपक् ॥
रसार्द्धममृतंक्षिप्त्वापुनःसंचूर्ण्यमर्दयेत् ।
वन्हित्रिकटुसिंधुत्थयुक्तेनार्द्रकवारिणा ॥
गुंजामात्रोहिदातव्यंमन्दाग्नौसन्निपातके ।
धनुर्वातेप्यजीर्णेचशूलेचक्षयकासयोः ॥
अयमग्निकुमाराख्योरसःस्यात्प्लीहगुल्मनुत्।

अर्थ–गंधक, पारा, दोनों बराबर ले. और विष आधा भाग, ताम्रभस्म १ भाग, इन सब पदार्थोंको एकत्र करके हंसपदीके रससे खरल करे। पीछे धूपमें सुखाकर शीशीमें भर वालुकायंत्रमें तीनप्रहर पचावे। जब शीतल हो जावे तब उसमेंसे निकाल उसमें विष आधा भाग मिलावे, पीछे सोंठ, मिरच, पीपल, और सैंधानोंन इनके चूर्णके साथ इस रसको अदरकके रससे खाय तो मन्दाग्नि, सन्निपात, धनुर्वात, अजीर्ण, शूल, खई, खांसी, प्लीह, और गुल्म इन रोगोंको यह अग्निकुमाररस दूर करे।

पंचमअग्निकुमाररसः

पारदंशुद्धगन्धंचविपंभागंत्रिभिःसमम् ।
कपर्देविपतुल्यांशंतत्तुल्यंस्त्राञ्जिकाकणा ॥
शुंठीचाष्टगुणायुक्तामरिचंमेलयेद्बुधः ।
मर्दयित्वाखलेकृत्वायावत्साकज्जलप्रभा ॥
जम्बीरनीरैर्देयाचभावनासप्तवैततः ।
आर्द्रकस्यरसेनैवततःसिद्धोद्विगुंजकम् ॥
रसश्चाग्निकुमारोयंआमसंचयजारुजम् ।

अग्निमांद्यमजीर्णंचनाशयेत्कफहृत्परः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, और विष, ये समान भाग ले. कौडीकी भस्म ३ भाग, सज्जीखार, सुहागा, पीपल, ये १ भाग ले । सोंठ ८ भाग और मिरच ८ भाग, इन सबको खरलमें डाल जब तक घोटे तबतक काजलके समान न हो पीछे जंबीरी नींबूके रसकी ७ भावना देवे. और अदरकके रसकी ७ भावना देवे. पीछे दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह अग्निकुमाररस आमके संचयको सुखावे । और मंदाग्नि, अजीर्ण तथा कफका नाश करे ।

वडवानलरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंगृहीत्वातौनागवंगौरसतुल्य भागौ । कृत्वासमंषोडशभागसंख्ययामरीच चूर्णंवडवानलस्य ॥

अर्थ–पारा १ तोला, गंधक २ तोला, सीसेकी भस्म १ तोला, और वंगकी भस्म १ तोला, और काली मिरचका चूर्ण १६ तोला, इन सबको एकत्र कर पीस डाले. इसको वडवानलरस कहते हैं ।

स्वयमग्निरसः

मरिचाब्दवचाकुष्ठंसमांशंविषमेवच ।
आर्द्रकस्यरसैःपिष्टामुद्गमात्रन्तुकारयेत् ।
स्वयमग्निरसोनामसर्वाजीर्णप्रशान्तये ॥

अर्थ–काली मिरच, नागरमोथा, बच, कूठ, सब बराबर ले । सबकी बराबर विष लेवे. सबको कूट पीस अदरकके रससे खरल कर मूंगके समान गोलियां बनावे, इससे सब प्रकारका अजीर्ण दूर होवे ।

क्षुधासागररसः

त्रिकटुत्रिफलाचैवतथालवणपंचकम् ।
क्षारत्रयंरसंगन्धंभागैकंपूर्ववद्विषम् ॥
गुंजामात्रांवटींकुर्य्याल्लवंगैःपंचभिःसमम् ।
क्षुधासागरनामायंरसःसूर्य्येणनिर्मितः ॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, पांचोंनोन, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पारा, गंधक, प्रत्येक एक २ तोला लेवे. विष २ तोला सबको एकत्र पीस जलसे घोटकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इसको ५ लौंगके चूर्ण और शहतमें मिलाकर खावे तो भूँख अत्यंत बढे ।

हुताशनरसः

गंधेशटंकनैकैकंविषमात्रत्रिभागकम् ।
अष्टभागन्तुमरिचंजम्भांभोमर्दितंदिनम् ॥
तद्वटींमुद्गमानेनकृत्वार्द्रेणप्रयोजयेत् ।
शूलारोचकगुल्मेषुविशूच्यामग्निमांद्यके ॥
अजीर्णेसन्निपातादौशैत्यजाड्येशिरोगदे ।

अर्थ–गंधक १ तोला, पारा १ तोला, सुहागा १ तोला, विष ३ तोला, मिरच ८ तोला, इन सबको पीसकर जंबीरीके रसमें १ दिन खरल करे. और मूंगके समान गोलियां बनावे. एक गोली अदरकके रसके साथ देवे तो शूल, अरुचि, गोला, विशूचिका, मंदाग्नि, अजीर्ण, सन्निपात, शीतकी जडता, और मस्तकरोग इनको दूर करे ।

भास्कररोरस.

विषंसूतंफलंगन्धंत्र्यूषणंटंकजीरकम् ।
एकैकंद्विगुणंलोहंशंखमभ्रवराटकम् ॥
सर्वतुल्यंलवंगंचजम्बीरैर्भावयेद्भिषक् ।
सप्तवासरपर्य्यन्तंततःस्याद्भास्करोरसः ॥
गुंजाद्वयप्रमाणेनवटींकुर्य्याद्विचक्षणः ।
ताम्बूलीदलयोगेनवटींसंचर्व्यभक्षयेत् ॥
शूलरोगेषुसर्वेषुविशूच्यामग्निमांद्यके ।
सद्योवन्हिकरोह्येपतंत्रनाथेननिर्मितः ॥

अर्थ–विष, पारा, त्रिफला, गंधक, त्रिकुटा,

सुहागा, और जीरा प्रत्येक एक २ भाग. लोहभस्म, शंखभस्म, अभ्रक और कौडीकी भस्म प्रत्येक दो २ भाग। और सबके बराबर लौंगका चूर्ण, सबको पीस कपरछनकर जंबीरीके रसमें ७ दिन घोटे, पीछे दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, १ गोली पानमें रखकर खाय तो शूल, विषूचिका और मंदाग्निको दूर करे, और तत्क्षण जठराग्निको बढावे।

अग्नितुंडीवटी.

शुद्धसूतंविषंगन्धमजमोदंफलत्रयम्।
सर्ज्जिक्षारंयवक्षारंवन्हिसैंधवजीरकम् ॥
सौवर्चलविडंगानिसामुद्रंटंकणंसमम्।
विषमुष्टिसर्वतुल्यंजम्बीराम्लेनमर्दयेत् ॥
मरिचाभावटींखादेदग्निमांद्यप्रशान्तये।

अर्थ-पारा, विष, गंधक, अजमोद, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, चितेकी छाल, सैंधानोंन, जीरा, संचरनोंन, वायविडंग, समुद्रनोंन, और सुहागा इन सबको बराबर ले. और सबकी बराबर कुचला लेकर सबको कूट पीस जंबीरीके रससे खरल कर मिरचके समान गोलियां बनावे। मंदाग्नि दूर करनेको १ गोली खाय. [पथ्याशुंठीगुडंचानुपलार्द्धं भक्षयेत्सदा। अग्नितुंडीवटीख्यातासर्वरोग कुलांतका] इसके ऊपर हरड, सोंठ, गुड मिलाकर दो तोले भक्षण करे। यह अग्नितुंडीवटी सर्व रोगोंके कुलको नष्ट करनेवाली यह पाठ किसी पुस्तकमें अधिक है।

अमृतवटी

अमृतवराटकमरिचैर्द्विपंचनवभागिकैःक्रमशः।
वटिकामुद्गसमानाकफपित्ताग्निमांद्यहारिणी

अर्थ-विष २ तोले, कौडीकी भस्म ४ तोले, मिरच ८ तोले, सबको जलसे पीस मूंगके समान गोलियां बनावे। ये कफपित्त मंदाग्निका नाश करे।

द्वितीयामृतवटी

कुर्य्याद्गंधविषव्योषत्रिफलापारदैःसमैः।
भृंगाम्बुमर्दितैर्मुद्गमात्रामृतवटीशुभा।
अजीर्णश्लेष्मवातघ्नीदीपनीवन्हिवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गंधक, विष, त्रिकुटा, त्रिफला, पारा, इन सबको समान लेवे। सबको भांगरेके रससे घोटकर मूंगके समान गोलियां बनावे. यह गोली अजीर्ण, कफ, वातको नष्ट करे, और जठराग्निको बढावे।

टंकणादिवटी

रसगन्धकटंकणनागरकंगरलंमरिचंसमभाग युतम्। लकुचस्वरसैश्चणकमितागुटिकाज नयत्यचिरादनलम् ॥

अर्थ-सुहागा, सोंठ, पारा, गंधक, विष, मिरच, इन सबको बराबर लेवे। और बडहरके रसमें खरल करके चनेके समान गोलियां बनावे. इससे शीघ्र जठराग्नि दीप्त होवे।

लवंगादिवटी

लवंगशुंठीमरिचानिभृष्टसौभाग्यचूर्णानिस मानिकृत्वा। भाव्यान्यपामार्गहुताशवाराम भूतमांसादिकजारणाय ॥

अर्थ-लौंग, सोंठ, मिरच, और भुना सुहागा, सब बराबर लेकर ओंगाकें रससे और चीतेके रससे भावना देकर एक एक रत्तीकी गोलियां बनावे। इसके सेवनसे प्रभूत (अत्यंत) मांसादिकभी पचे।

महोदधिवटी

एकैकंविषसूतौषजातीटंकंद्विकंद्विकं।
कृष्णात्रयंविश्वषट्कंदग्धकर्पर्दकंतथा ॥
देवपुष्पंवाणमितंसर्वसंमर्द्दयत्नतः।

महोदधिवटीनाम्नानष्टमग्निंप्रदीपयेत् ॥

अर्थ–विष १ तोला, रससिन्दूर १ तोला, जायफल २ तोला, सुहागा २ तोला, पीपल ३ तोला, सोंठ ६ तोला, कौडीकी भस्म ६ तोला, लौंग ९ तोला, सबको एकत्रकर जलसे घोट एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे। इसके सेवनसे नष्ट अग्नि फिर दीप्त करे।

अजीर्णहरमहोदधिवटी.

दंतीबीजमकल्मषंसदहनंशुंठीलवंगंसमं। गन्धंपारदटंकणंचमरिचंश्रीवृद्धदारूविषम्। खल्वेयामयुगंविमर्धविधिनादन्तीद्रवैर्भावना।देयापंचदशानुनिम्बुकजलैस्त्रेधात्रिधाचित्रकैः।त्रेधाचार्द्रकजैरसैःशुभभियासम्यवचात्रेदिता। पश्चाच्छुष्ककलायसम्मितवटीकार्य्या भिषक्सम्मता। क्षुद्बोधंप्रकरोतिशूलशमनी जीर्णज्वरध्वंसिनी। कासारोचकपाण्डुतोदर गदःसामामरुङ्नाशिनी ॥ वस्त्याटोपहलीमकामयहरीमन्दाग्निसंदीपनी। सिद्धेयंतुमहोदधिप्रकटितासर्वामयघ्नीसदा ॥

अर्थ–शुद्ध जमालगोटा, चित्रक, सोंठ, लौंग, गंधक, पारा, सुहागा, मिरच, विधायरा और विष इनको बराबर ले, खरलमें डाल दो प्रहर घोटे. पीछे दंतीके रसकी १९ भावना दे, और नींबूके रसकी ३, चितेके रसकी ३, अदरकके रसकी सात भावना देकर सुखा लेवे। जब गोली बंधने लायक होजाय तब मटरके समान गोलियां बनावे। एक गोली देनेसे क्षुद्बोध करे। शूल, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, अरुचि, पांडुरोग, उदर, आमरोग, पेटका गुडगुडाहट शब्द, हलीमक, मंदाग्नि, तथा सर्व रोगोंका नाश करे।

क्षुधासागरवटी.

त्रिकटुत्रिफलाचैवतथालवणपंचकम्। क्षारत्रयंरसोगन्धोद्विभागंपूर्ववद्विषम् ॥ आर्द्रकस्यरसेनैवगुंजाभावटकीकृता। अजीर्णेद्विवटीखादेल्लवंगैःपंचसप्तभिः ॥ क्षुधासागरनाम्नेयंवटीसूर्य्येणनिर्मिता।

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, पांचौनोंन, तीनों खार, पारा, गंधक, प्रत्येक एक २ तोला। और विष दो तोला लेकर सबको पीसकर अदरकके रसमें एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे। अजीर्णमें दो गोली पांच अथवा सात लौंगोंके चूर्णके साथ देवे. यह क्षुधासागरवटी सूर्य्येकी कही हुई है।

अग्निदीपनीवटी.

गन्धकंमरिचंशुण्ठीसैंधवंयवजन्तवम्। निम्बूरसेनवटिकाचणमात्राग्निदीपनी ॥

अर्थ–गंधक, मिरच, सोंठ, सैंधानोंन, इंद्रजौ, बायविडंग, इनका चूर्ण कर नींबूके रसमें खरल कर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. यह अग्निदीपकरस है. कोई इसको गंधकवटी कहते हैं।

भस्मवटी.

रजीकृतंपंचपलंतुपाम्लेखिन्नांशिवाद्युग्विषपतिन्दुबीजम्। हिंगुकृमिघ्नंत्रिपटुत्रिदीप्यंपलंपृथक्त्र्युषणगन्धयुक्तं ॥ चूर्णीकृतंनिम्बुरसेन भाव्यंकोलास्थिमात्रावटिकाविधेया। संसेविताहन्तिनृणामजीर्णहृद्रोगगुल्मंकृमिजांश्च रोगान्॥ प्लीहानिमांद्यार्त्तितथामवातंशूलातिसारंग्रहणीरुजंच। जलोदरार्शकृमिजांश्चरोगान्हन्याद्धन्वातकफोद्भवांश्च ॥

अर्थ–हरड और कुचला, दोनोंको पीसकर कांजीमें स्वेदन करे। पीछे हींग, वायविडंग, सैंधानोंन, विडनोंन, संचरनोंन, अजमायन,

अजमोद, खुरासानी, अजमायन, सोंठ, मिरच, पीपल, गंधक ये प्रत्येक चार २ तोला ले. सबका चूर्णकर नींबूके रसकी भावना देकर बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावे । इसके सेवनसे अजीर्ण, हृद्रोग, गोला, कृमि, प्लीह, मंदाग्नि, आमवात, शूल अतिसार, संग्रहणी, जलोदर, बवासीर और अनेक प्रकारके वात कफके रोग दूर होवे ।

लघुपानीयभक्तवटी.

रसार्द्धभागिकस्तुल्याविडंगमरिचाभ्रकाः ।
भक्तोदकेनसंमर्द्यकुर्य्याद्गुंजासमागुटी ॥
भक्तोदकानुपानैश्चसेव्यावन्हिप्रदीपनी ।
वार्य्यंनभोजनंचात्रप्रयोगोसात्म्यमिष्यते ॥

अर्थ—पारा आधा भाग; वायविडंग, मिरच, अभ्रक, ये प्रत्येक १ भाग, भातके पानीसे एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे । १ गोली मांडके साथ खाय तो अग्निको दीपन करे । यद्यपि इसपर किसी वस्तुका भोजन वर्जित नहीं है. तथापि आत्माको जो हितहो वह भोजन करे ।

पंचामृतावटी.

अभ्रकंपारदंताम्रंगन्धकंमरिचानिच ।
समभागमिदंसर्वंचांगेरीरसमर्दितम् ॥
मर्दितंहिरसैर्भूयोजयन्तीसिंधुवारयोः ।
भावनापिचकर्त्तव्यागुंजापरिमितावटी ॥
उष्णोदकानुपानेनचतस्रस्तिस्रएववा ।
वन्हिमांद्येप्रदातव्यावटीपंचामृताशुभा ॥

अर्थ—अभ्रक, पारा, तांबा, गंधक, कालीमिरच, ये सब समान ले । पीछे इसे चूकाके रसमें घोटे तथा अरनी, निर्गुंडी इनके रसकी भावना देकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, गरम जलके साथ ३ वा ४ गोली लेवे तो मंदाग्निको दूर करे । यह पंचामृतावटी है ।

भुक्तपाकवटिका.

अभ्रंगन्धकपारदौसदरदौताम्रंसतालंशिला
वंगंचत्रिफलाविषंचकुनटीभाव्यास्त्रयोदन्ति
नाम् । शृंगीव्योपयवानिचित्रकजलद्वंजीर
केटंकणम् ॥ एलापत्रलवंगहिंगुकुट्कीजाती
फलंसैंगन्धवम्।एतान्यार्द्रकचित्रदन्तिसुरसा
मूर्वारसैर्बिल्वजैः ॥ प्रत्येकंदिनसंख्ययास्म
सकलंगाढंविमर्द्यान्यतः । खादेद्वल्लमितंतथा
चसकलव्याधौप्रयुंज्याद्बुधः । विह्वद्रेकफ
जेत्रिदोपजनितेह्यामानुबन्धेपिच । मंदाग्नौ
विषमज्वरेचसकलेशूलेत्रिदोपोद्भवे । हंत्या
धीनपिभुक्तपाकवटिकाभूयश्चसम्भोजयेत् ।

अर्थ— अभ्रक, गंधक, पारा, हींगळू, तांबा, हरिताल, शिलाजीत, वंग, त्रिफला, विष, मनसिल, प्रत्येक एक भाग, दन्ती ३ भाग, काकडासिंगी, त्रिकुटा, अजमायन, चित्रक, नेत्रवाला, सफेदजीरा, कालाजीरा, सुहागा, इलायची, पत्रज, लौंग, हींग, कुटकी, जायफल, सैंधानोंन, प्रत्येक एक २ भाग ले । सबका चूर्णकर अदरक, चीता, दन्ती, तुलसी, मूर्वा, और बेल इनके रसकी पृथक् २ एक २ दिन भावना देवे । और दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इन गोलियोंको सब रोगोंमें देवे. बद्धकोष्ट, कफके रोग, त्रिदोषजन्य, आमके रोग, मंदाग्नि, विषमज्वर, शूल, इत्यादि रोगोंका नाश करे । और किये हुए भोजनको पाचन करे. और फिर भोजन करानेकी सामर्थ्य करे है ।

भुक्तोत्तरीयावटी.

माक्षिकंरसगन्धौचलोहंताम्रंमनःशिला ।
त्रिवृद्दन्तीवारिवाहश्चित्रकंचमहौषधम् ॥

पिप्पलीमरिचंपथ्यायवानीकृष्णजीरकम् ।
रामठंकटुपांचालीसैन्धवंचाजमोदकम् ॥
जातीफलंयवक्षारंसमभागंचकारयेत् ।
आर्द्रकस्वरसेनाथनिर्गुंडयाःस्वरसेनच ॥
सूर्य्यावर्त्तरसेनापिज्योतिष्मत्यारसेनच ।
आतपेभावयेद्वैद्यःस्वर्णपात्रेमयत्नतः ॥
शोपयित्वावटींकृत्वागुंजाफलमितांशुभाम् ।
भक्षयेत्तांवटींमायोलवंगेननियोजिताम् ॥
भुक्तोत्तरीयेबहुभोजनेवाआमानुबन्धेचिरमन्दवन्हौ । विद्संग्रहेवातकफानुबन्धेशोथोदरेमेहगदेप्यजीर्णे ॥ शूलेत्रिदोषेप्रभवेज्वरेच सम्यक्कृवटीभुक्तविपाकसंज्ञा । सुखंविपच्याशुनरस्यकोष्ठंमुहुर्मुहुर्वाछतिभोजनंच ॥

अर्थ–सुवर्णमाक्षिक, पारा, गंधक, लोह, तांबा, मनसिल, निसोथ, दन्ती, अभ्रक, (अथवा नागरमोथा,) चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, अजमायन, कालाजीरा, हींग, सैंधानोंन, अजमोद, जायफल, जवाखार, सब बराबर लेकर पीछे निर्गुंडी, अदरक, हुरहुर, मालकांगनी, इनके रसकी पृथक् २ भावना सोनेके पात्रमें देकर धूपमें सुखाता जाय । पीछे एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे । इस गोलीको लौंगके साथ देवे, भोजनके पीछे अथवा बहुत भोजन कर चुकाहो तब अथवा आमविकार, मंदाग्नि, मलसंग्रह, वातकफके विकार, सूजन, प्रमेह, अजीर्ण, शूल और त्रिदोपज्वरमें देवे । तो सब रोगोंको शान्ति करे । और भोजन किये हुए आहारको पचाय वारंवार भोजनकी रुचि प्रगट करे । कोई तांबेकी जगह हरिताल डालना लिखते हैं ।

गंधकवटी.

शुद्धगन्धकभागैकंसत्वंशुंठ्याश्चतुर्गुणम् ।
निम्बुनीरेणसम्यर्द्यसप्तवारंविशेपतः ॥
पुनश्चसैन्धवंक्षेप्यंयथारुचिभिषग्वरैः ।
चणकप्रमितांकुर्य्यात्वटिकांरुचिदायिनीम् ।
भोजनान्तेसदादेयागन्धकाख्यावटीशुभा ।

अर्थ–शुद्ध गंधक १ तोला, सोंठका सत्व ४ तोला, दोनोंको नींबूके रसमें ७ बार घोटे. पीछे इसमें रुचिके अनुसार सैंधानोंन डाले । पश्चात् चनेके समान गोलियां बनावे. यह गोली रुचिको बढावे, इस गंधकवटीको भोजनके पश्चात् देवे ।

द्वितीयगंधकवटी.

गन्धकस्यार्द्धपलकंचित्रकंमरिचंकणा ।
प्रत्येकंकर्पमात्राणिपलार्द्धंविश्वभेपजम् ॥
यवक्षारंत्रिलवणंकोलमात्राणिकारयेत् ।
निम्बुनीरेणवटिकांकुर्य्यात्कोलमिताम्बुधः
क्षुद्बोदनीशूलहराग्रहणीदोपपाचनी ।
आमदोपप्रशमनीगुल्मोदावर्त्तनाशिनी ॥

अर्थ–गंधक २ तोला, चितेकी छाल, मिरच, पीपल, प्रत्येक चार २ तोला । सोंठ २ तोला, जवाखार, तीनों नोंन, प्रत्येक छः २ मासे सबको नींबूके रसमें खरल कर बेरके समान गोलियां बनवे । यह गोली भूंख बढावे, शूल, संग्रहणीदोष, आमदोष, गोला और उदावर्त्त रोग आदिको नष्ट करे ।

तृतीयगन्धकवटी.

रसार्द्धंगन्धकंशुद्धंशुंठीचूर्णंनतत्समम् ।
लवंगंमरिचंचापिप्रत्येकन्तुपलंभवेत् ॥
सैन्धवंत्रिपलंग्राह्यंत्रिपलंचसुवर्चलम् ।
चणकाम्लंपलद्वंद्वंक्षारंमूलकजंतथा ॥
मर्दयेन्निम्बुकद्रावैर्दिनंसप्तखेरांशुभिः ।
बदरप्रमाणमात्रासर्वाचीर्णप्रनाशिनी ॥
चणकाम्लंतुवैदेयंचुक्रंवादेयमिष्यते ।

अर्थ–पारा ४ तोला, गंधक २ तोला, सोंठका चूर्ण २ तोला, लौंग ४ तोला, मिरच ४ तोला, सैंधानिमक १२ तोला, संचरनोंन १२ तोला, चनाखार ८ तोला, मूलीका खार ८ तोला, सबको नींबूके रसमें धूपमें रखकर ७ दिन घोटे. पीछे झरवेरके समान गोलियां बनावे। इसके खानेसे सब अजीर्ण दूर होवे। या तो चनाखार डाले या चूका उसके प्रतिनिधि डाले।

राजशेखरवटी.

भागोमृतरसस्यैकोवत्सनाभांशकद्वयम्। रसतुल्यंशिवाचूर्णंगन्धकंत्र्यूपणंतथा॥ विचूर्ण्यातिप्रयत्नेनभावयेत्सप्तधारसं। ताम्बूलीपत्रतोयेनस्वर्णधत्तूरजद्रवैः॥पिष्ट्वाचणमिताःकुर्य्याच्छायाशुष्कास्तुगोलिकाः। उष्णाम्भोयुतराजशेखरवटीमन्दाग्निसन्दीपनी नानाकारमहाज्वरप्रशमनीनिश्शेषरोगापहा। पांडुव्याधिमहोदरादिशमनीशूलाष्टनिःकृंतनी। श्लेष्मश्लीपदनाशिनीरसककीदुष्टामयछेदनी। कामोत्साहविवर्द्धनीमतिमतांप्रोल्लासिनीर्गुर्विवबालार्कप्रतिमासुकेशजननीखालित्यरुग्भंजनी॥ नारीणामतिरंजनीमतिमतांयूनांमनोमोहिनी। सारात्सारतरांकरोतिचतनुर्वालस्यरुङ्नाशिनी॥

अर्थ–चंद्रोदय १ तोला, विष २ तोला, हरडका चूर्ण १ तोला, गंधक, त्रिकुटा प्रत्येक एक तोला सबका चूर्ण कर नागरवेलके पानोंके रसकी ७ भावना देवे, धतूरेके रसकी ७ भावना देकर चनेके प्रमाण गोलिया बनावे, और छायामें सुखावर एक गोली गरमजलके साथ देवे. यह गोली मंदाग्नि, अनेक प्रकारके ज्वर, पांडुरोग, उदर व्याधि, आठ प्रकारके शूल, कफके विकार, और श्लीपद रोगको नष्ट करे। कामकी वृद्धि करे, बुद्धि बढावे, बालसूर्य्यकासा तेज, सुंदर बालोंको प्रगट करे, खालित्यरोगको दूर करे, स्त्रियोंको प्रसन्न करे, जवानोंके मनको मोहनकर्त्ता, अत्यंत बलदायिनी और बालकोंके रोगको नष्ट करे।

रविसुन्दरवटी.

विषंगन्धंरसंशुंठींभेदींमरिचसंयुतम्। पिप्पलीचात्रदातव्यात्वक्षीक्षीरैर्विभावितं॥ धत्तूरस्यचबीजानिसर्वाण्येकत्रकारयेत्। भावनाचत्रिधादेयादन्तीमूलस्यसप्तधा॥ चित्रकस्यापिहेम्नश्चत्रिवृत्तश्चार्द्रकस्यच। मुद्गप्रमाणावटिकारविसुन्दरसंज्ञिका॥ करोत्यग्निबलंपुंसांज्वरंकासंव्यपोहति। वातश्लेष्मभवान्रोगानन्यानन्यान्श्लेष्मसम्भवान्॥ अजीर्णषड्विधंजित्वाकोष्ठाग्निंवर्द्धयेत्सदा। सर्वंमन्दानलंहन्तिवज्रेणेन्द्रोयथाऽसुरान्॥

अर्थ–विष, गंधक, पारा, सोंठ, अम्लवेत, कालीमिरच और पीपल इन सबको बराबर लेकर थूहरके दूधकी भावना देवे। इनमें धत्तूरेके बीजें विषके तुल्य मिलाय दन्तीके काढेकी तीन भावना देवे. चित्रककी, धत्तूरेके, निसोथके काढेकी और अदरकके रसकी पृथक् पृथक् भावना देकर मूंगके समान गोलियां बनावे। यह रविसुन्दरवटी. अग्निको बढावे. ज्वर, खांसी, वातकफके रोग तथा कफके विकार, छः प्रकारका अजीर्ण इन सब रोगोंको दूर करे। सब प्रकारकी मंदाग्नि इस तरह नष्ट होजाय. जैसे वज्रसे इन्द्र असुरोंका नाश करताहै।

भैरवीवटी.

तिंतिडीकंविषंशुद्धंदग्धशंखंनियोजितम्।

जातीफलंत्रुटियुतंसर्वमेकत्रकारयेत् ॥
रसगन्धंसमरिचंनिम्बूरसविमर्दितम् ।
चित्रकेनतुवारैकंवटिकामापमात्रका ॥
देयायत्नेनसततंनाम्नामन्दाग्निभैरवी ।
कासेश्वासेप्रतिश्यायेविपरोगादिकेज्वरे ॥
सर्वरोगेपुविख्यातावटीभैरवसंज्ञिता ।

अर्थ—तंतडीक, शुद्ध विप, शंखकी भस्म, जायफल, इलायची, पारा, गंधक और काली मिरच, सबको एकत्रकर नींबूके रसमें खरल करे। पीछे एक वार चितेके रससे घोटकर उडदके समान गोलियां बनावे । एक गोली नित्य खानेसे खांसी, श्वास, पीनस, विषरोग, ज्वर और मंदाग्नि आदि सब रोगोंको यह भैरवीवटी दूर करे।

वैश्वानरपोटली.

शुद्धोसूतबलीचराचररजःकर्पांशतःकज्जलीं। कृत्वागोपयसाविमर्द्यदिवसंरुध्वाचमूपोदरे॥ सिद्धःकुम्भिपुटेस्वतश्चशिशिरःपिष्टःकरण्डे स्थितः । स्याद्वैश्वानरपोटलीतिकथिता-तीव्राग्निदीप्तिप्रदा ॥ एकोनविंशतिश्चूर्णैर्मरिचानांघृतान्वितैः । देयोयंवल्लमानेनवयोवल मपेक्ष्यताम् ॥ गिलेद्दलविशुध्यर्थंदधिभक्त-मनुत्तमम् । कवलत्रयमानेनदुर्गंधोद्गारशान्तये ॥ मध्यंदिनेततोभोज्यंघृततक्रोपदंशयुक्। रात्रौचपयसासार्द्धंयद्वारोगानुसारतः ॥ विदाहिद्विदलंभूरिलवणंतैलपाचितम् । बिल्वं चकारवेल्लंचवृन्ताकंकांजिकंत्यजेत् ॥ इयंहि पोटलीप्रोक्तासिंहलेनमहीभृता । मंदाग्नि भवाशेपरोगसंघातघातनी ॥ सिंहलस्यवि निर्दिष्टभैरवानन्दयोगिना । लोकनाथोक्त पोटल्याउपचारायहिस्मृतः ॥ पोटल्योदीप नाःस्निग्धामन्दाग्नौनितरांहिताः ।

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, कौडीकीभस्म, प्रत्येक एक २ तोला लेवे । और पारे गंधककी कजलीकर उसमें कौडीकी भस्म मिलाय गोमूत्रमें १ दिन खरल करे, और मूपायंत्रमें बंदकर कुंभपुटमें फूंक देवे. स्वांग शीतल होने पर शीशी आदि पदार्थमें बंदकरके रख छोडे, इसरसको **वैश्वानर पोटली** कहते हैं। २१ मिरचके चूर्ण और घृतके साथ २ रत्ती अवस्था बलविचार कर देवे. और इस रसको विना दांत लगाये निगल जावे, ऊपर दही भातके तीन ग्रास दुर्गंधि दूर करनेको खावे, मध्यान्हके समय घृत छाछ, और उपदंश (जो मद्य पीनेके पीछे चाटते है) रात्रिमें इसको दूधके साथ वा रोगके अनुसार देवे, इस पोटलीका सेवनकर्त्ता दाहकारी, दोदलके अन्न, अत्यंतनौन, तेलके पदार्थ, बेल, करेला, बैंगन, और काँजी आदिका सेवन न करे। यह पोटली सिंहल राजाकी कही है । इसके सेवनसे मंदाग्निसे होनेवाले सब रोग दूर होवे। और अग्निको दीपन करे, तथा मंदाग्निमें तो अत्यन्त हितकारी है ।

शंखवटी.

चित्राश्वत्थस्नुहीक्षारादपामार्गार्ककंतथा ।
लवणंपंचसंगृह्यततोलवणपंचकात् ॥
सैंधवाद्याःसमादायसर्वंगेतत्पलद्वयम् ।
द्वौद्वौकर्षौपृथक्कार्योतथाद्वौशंखचूर्णतः ॥
फलत्रयाचकर्पैकंहिंकर्पंतुलवंगकम् ।
एतत्सर्वंसमासाद्यश्लक्ष्णचूर्णीकृतंशुभम् ॥
भावयेदम्लयोगेनसप्तधाचप्रयत्नतः ।
रसःशंखवटीनामसेवितःसर्वरोगजित् ॥
गुंजामात्रमिमंखादेद्भवेदीपनपाचनम् ।
अजीर्णवातसम्भूतंपित्तश्लेष्मभवंतथा ॥

विशूचीशूलमानाहंहन्यादत्रनसंशयः ।

अर्थ-इमली, पीपल, थूहर, ओंगा, आक, इनके खार पांचोंनोंन, प्रत्येक ८ तोला, शंख भस्म २ तोला, त्रिफला १ तोला, लौंग २ तोला इन सबको ले महीनचूर्णकरे. इसमें नींबूके रसकी सात भावना देवे. यह शंखवटी सर्वरोग नाशक हैं. १ रत्तीके प्रमाण नित्य खानेसे दीपन होवे. वात, पित्त, कफसे प्रगट अजीर्ण, विशूचिका और शूल इनका नाश करे।

द्वितीयाशंखवटी.

पलंचिंचाक्षारःपलपरिमितंपंचलवणं । द्वयंसम्यक्पिष्टंभवतिलघुनिम्बूफलरसैः ॥ ततस्तप्तंतस्मिन्पलपरिमितंशंखशकलं । क्षिपेद्वारान्सप्तद्रवतितदनेनैवविधिना ॥ पलप्रमाणंकटुकत्रयंचपलार्द्धमानेनचहिंगुभागः। विषंपलंद्वादशभागयुक्तंतावद्रसोगन्धक एषचोक्तम् ॥ वदरास्थिप्रमाणेनवटीमेतस्य कारयेत् । भक्षयेत्सर्वदासास्यात्सर्वाजीर्णप्र शान्तये । सर्वोदरेपुशूलेपुविशूच्यांविविधे पुच ॥ अग्निमांद्येपुगुल्मेपुसदाशंखवटीहिता

अर्थ-इमलीकाखार ४ तोले, और पांचौनोंन ४ तोले, दोनोंको खरल करके नींबूके रससे घोंटे, इसमें ४ तोले शंखके टुकडे डाले. उनको सातवार नींबूके रससे बुझावे, जब गलजावे तब डाले. और सोंठ, मिरच, पीपल ये ४ तोला लेवे. हींग २ तोले, विष १२ तोले, गंधक १२ तोला, डालकर घोंटे और छोटे बेरके समान गोलियां बनावे, यह सर्व अजीर्ण, सब उदरके विकार, शूल, विशूचिका और अनेक प्रकारकी मन्दाग्नि, और गुल्म इन सबको यह शंखवटी हित है।

तृतीयाशंखवटी.

चिंचाक्षारपलंपटुव्रजपलंनिम्बूरसेकल्कितम् तस्मिन्शंखपलंप्रतप्तमसकृत्संस्थाप्यशीर्णाव धि ॥ हिंगुव्योपपलंरसामृतवलीनिःक्षिप्य निष्कांशिकान् । बद्धाशंखवटीक्षयग्रहणी कारुक्पंक्तिशूलादिपु ॥

अर्थ-इमलीकी छालकी भस्म १ पल, पांचोंनोंन १ पल, शंखभस्म १ पल, (शंखको अग्निमें जलाकर नींबूके रसमें बुझावे, जब सब गलजावे तब उसको धूपमें रखकर भावना देवे, जब तक खटाई आवे, पीछे आगे और पिछाडी लिखी औषधियोंको मिलावे.) हींग, सोंठ, मिरच,पीपल, सब मिलाकर १ पल पारा गंधक, और विष प्रत्येक आधा तोला ले. सबको एकत्र कर नींबूके रससे खरल कर गोलियां बनावे. इसके सेवन करनेसे क्षय, संग्रहणी, अजीर्ण और शूल आदिरोग दूर होवे।

चतुर्थीशंखवटी.

द्वौक्षारौरसगन्धकौसलवणौव्योपंचतुल्यंविपं । चिंचाभस्मचतुर्गुणंरसवरेलिम्पाकजाते कृतम् ॥ वारंवारमिदंसुपाकचरितंलोहंक्षि पेद्धिगुलम् । भृष्टंवंगसमंसुमर्दितमिदंगुंजाप्र माणाभवेत् ॥ ख्याताशंखवटीमहाग्निजन नीशूलान्तकृत्पाचनी । कासश्वासविनाशि नीक्षयहरीमंदाग्निसन्दीपनी ॥ वातव्याधि महोदरादिशमनीतृष्णामयोच्छेदनी । सर्व व्याधिविनाशिनीकृमिहरीदुष्टामयध्वंसिनी

अर्थ-सज्जीखार, जवाखार, पारा, गंधक, सैंधानोंन, विडनोन, त्रिकुटा, विष, ये प्रत्येक एक २ तोला. इमलीकी छालकी भस्म ४ तोला, सबको एकत्र करे फिर लोहकी भस्म १ तोला मिलाकर नींबूके रसकी भावना देवे, परंतु इतनी वस्तु और मिला लेवे. घृतकी

भुनी हींग और वंग भस्म. प्रत्येक एक २ तोला, पीछे एक २ रतीकी गोलीयां बनावे. यह शंखवटी इस नामसे विख्यातरस इसके सेवनसे अत्यंत जठराग्नि बढे, तथा वातव्याधि, महाउदररोग, तृष्णा, कृमिरोग, शूल, खांसी, श्वास, आदि सबरोग नाश होवे ।

पांचमीतुमहाशंखवटी.

पटुपंचकहिंगुशंखचिंचाभसितव्योषवलीश्च रामृतानि । शिखिशैलखरिकाम्लवंगानिम्बुभ्र शभाव्यानियथाम्लतांव्रजन्ति ॥ महाशंख वटीख्यासाभोजनान्तेप्रयोजिता । दीपनी हन्त्यपस्मारंमहार्शोग्रहणीमुखान् ॥

अर्थ–पांचौनोंन, हींग, शंखकीभस्म, इमलीकीभस्म, त्रिकुटा, गंधक, पारा, और विष प्रत्येक समान लेवे. चीते और ओंगाके काढेकी भावना दे, पीछे नींबूके रसकी भावना खटाई आनेपर्य्यन्त देवे, अग्निको दीप्त करे, मृगीरोग, प्रमेह, बवासीर, संग्रहणी आदि रोगोंको नाश करे. इसमें आम्लवर्गकीभी भावना देवे ।

षष्टीमहाशंखवटी.

दग्धशंखस्यचूर्णंहितथालवणपंचकं ।
चिंचिकाक्षारकंचैवकटुकत्रयमेवच ॥
तथैवहिंगुकंग्राह्यंविषगन्धकपारदम् ।
अपामार्गस्यवन्हेश्चकाथैर्लिम्पाकजैरसैः ॥
भावयेत्सर्वचूर्णन्तदम्लवर्गैर्विशेषतः ।
यावत्तदम्लतांयातिगुटिकामृतरूपिणी ॥
सद्योवन्हिकरीचैवभस्मकंचनियच्छति ॥
भुक्ताकण्ठन्तुतस्यान्तेखादेच्चगुटिकामिमाम् ।
तत्क्षणाज्जारयत्याशुसर्वाजीर्णविनाशिनी ।
ज्वरंगुल्मंपाण्डुरोगंकुष्ठंशूलंप्रमेहकम् ॥
वातरक्तंमहाशोथंवातपित्तकफानपि ।
दुर्नामारिरयंचाशुदृष्टोवारसहस्रशः ॥
निर्मूलंदम्पतेशीघ्रंलुतकंवन्हिनायथा ।
लोहवंगयुतासेयंमहाशंखवटीस्मृता ॥
प्रभातेकोष्णतोयानुपानमेवप्रशस्यते ।
जम्बीरबीजपूरंचमातुलुंगकचुक्रकम् ॥
चांगेरीतिंतिडीचैववदरीकरमर्दकम् ।
अष्टावम्लस्यवर्गोयंकथितोमुनिपुंगवैः ॥

अर्थ–शंखकी भस्म, पांचोनोंन, इमलीकी छालका खार, त्रिकुटा, हींग, विष, पारा, गन्धक ये सब वस्तु समान लेवे. सबको एकत्र कूटपीस ओंगा और चीतेकी छालके काढेमें नींबूके रससे और अम्लवर्गसैं खट्टा न हो तब तक घोटे. इस प्रकार अमृतरूप गुटिका बने. दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, यह तत्क्षण अग्निको वृद्धी करे. भस्मक रोगको दूर करे. कंठपर्य्यन्त भोजन करके इस गोलीको खायतो तत्काल अन्न पचजावे. ज्वर, गोला, पांडुरोग, कुष्ठ, शूल, प्रमेह, वातरक्त, घोरसूजन, वातपित्त, और कफके रोग, और बवासीरको तो जडसे उखाड देता है. ऐसा हजारोंवार देखा गया है. यदि इसमें लोहभस्म और वंग मिलादी जावे तो यही महाशंखवटी कहाती है. प्रातःकाल गरम जलके साथ इस गोलीका सेवन करना चाहिये. जंभीरी, बिजौरा, मातुलुंग (बिजौरेका भेद जिसको चकोतरा कहतेहैं) तंतडीक, चूका, इमली, वेर, और करौंदा इन आठ वस्तुओंको अम्लवर्ग कहते हैं ।

सप्तमीमहाशंखवटी.

कणामूलंवन्हिदन्तीपारदंगन्धकंकणा ।
त्रिक्षारंपंचलवणंमरिचंनागरंविषम् ॥
अजमोदामृताहिंगुक्षारंतिंतिडिकाभवम् ।
संचूर्ण्यसमभागन्तुद्विगुणंशंखभस्मकम् ॥
अम्लद्रवेणसंभाव्यवटीकोलास्थिसम्मिता ।

अम्लदाडिमतोयेनलिम्पाकस्वरसेनच ॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायनाम्नाशंखवटीशुभा ।
तक्रमस्तुसुरासीधुकांजिकोष्णोदकेनच ॥
शशैणादिरसेनैवरसेनविविधेनच ।
मंदाग्निंदीपयत्याशुवडवाग्निसमप्रभम् ॥
अर्शांसिग्रहणीरोगकुष्ठंमेहंभगन्दरम् ।
प्लीहानमश्मरींश्वासंकासंमेहोदरकृमीन् ॥
हृद्रोगंपाण्डुरोगंचविविधानुदरेस्थितान् ।
तान्सर्वान्नाशयत्याशुभास्करस्तिमिरंयथा॥

अर्थ–पारा, गंधक, पीपल, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पांचौंनोंन, कालीमिरच, सोंठ, विष, अजमोद, गिलोय, हींग, और इमलीकाखार, सबको एक २ तोला लेवे. शंखकीभस्म २ तोला, इन सबको अम्लवर्गके रसकी भावना देकर बेरकी गुठलीके प्रमाण गोलियां बनावे. खट्टे अनारका रस, नींबूका रस, छाछ, दारू, सिरका, कांजी, अथवा गरम जल इनके साथ सेवन करे. तो तत्काल मंदाग्निको प्रज्वलित करे, बवासीर, संग्रहणी, कोढ, प्रमेह, भगन्दर, प्लीह, पथरी, श्वास, खांसी, उदर, कृमी, हृद्रोग, पांडुरोग, इन, सब रोगोंका नाश करे. इसपर ससे और हिरनका मांस खाना पथ्य है ।

अष्टमीबृहच्छंखवटी.

स्नुगर्कचिंचाऽपामार्गरम्भातिलपलाशजान् ।
क्षारांश्चभिषगादद्यात्प्रत्येकंपलमात्रया ॥
लवणानिपृथक्पंचग्राह्याणिपलमात्रया ।
सर्जिकाचयवक्षारंटंकणंत्रितयंपलम् ॥
सर्वत्रयोदशपलंसूक्ष्मंचूर्णंविधायतु ।
निम्बूफलरसेप्रस्थसम्मितेतत्परिक्षिपेत् ॥
तत्रशंखस्यशकलंपलंवन्हौप्रताप्यतु ।
वाराग्निर्वापयेत्सप्तसर्वंद्रवतिसप्तधा ॥
नागरंत्रिपलंग्राह्यंमरिचंचपलद्वयम् ।
पिप्पलीपलमानास्यात्पलार्द्धंभ्रष्टहिंगुलः॥
ग्रंथिकंचित्रकंचापियवानीजीरकंतथा ।
जातीफलंलवंगंचपृथक्कर्षद्वयोन्मितम् ॥
रसोगन्धोविषंचापिटंकणंचमनःशिला ।
एतानिकर्षमात्राणिसर्वंसंचूर्ण्यमिश्रयेत् ॥
सरावार्द्धेनचुक्रेणसचीयवटिकांचरेत् ।
मासप्रमाणासावैश्रेबृहच्छंखवटीस्मृता ॥
सर्वाजीर्णप्रशमनीसर्वशूलनिवारिणी ।
विशूच्यलसकादीनांसद्योभवतिनाशिनी ॥

अर्थ–थूहर, आक, इमली, ओंगा, केला, तिल, और ढाक इनका क्षार, चार २ तोले लेवे. और पांचौंनोंन प्रत्येक चार २ तोले. सज्जीखार, जवाखार, और सुहागा तीनों एक २ पल इस प्रकार सब मिलाकर ५२ तोले हुए. इनका बारीक चूर्णकर ६४ तोले नींबूके रसमें डाल देवे. पीछे ४ तोले शंखके टुकडे लेवे. इनको अग्निमें तपाकर पूर्वोक्त नींबूके रसमें बुझावे. इसप्रकार बारंबार बुझावे. ऐसे सातबार करनेसे सब शंखके टुकडे उस रसमें मिलजावेंगे. पीछे १२ तोले सोंठ, मिरच ८ तोले, पीपल १ तोले, भुनी हींग २ तोले, पीपलामूल, चित्रक, अजमायन, जीरा, जायफल, लौंग ये प्रत्येक दो २ तोला लेवे. पारा, गंधक, विष, सुहागा, और मनसिल ये प्रत्येक एक २ तोला. इसप्रकार सबको ले चूर्णकर १६ तोले चूका (वा अम्लवेत) के रसमें मिलाकर खरल करे. और एक २ मासेकी गोलियां बनावे. इसको बृहच्छंखवटी कहतेहैं. इसके सेवनसे सब प्रकारका अजीर्ण, शूल, विशूचिका, अलस आदिको तत्काल शान्ति करे।

लघुक्रव्यादरसः

पारदाद्विगुणंगन्धमर्द्धांशंमृतलोहकम् ।
पिप्पलीपिप्पलीमूलमग्निशुंठीलवंगकम् ॥
लोहसाम्यंपृथक्कुर्य्याद्रससाम्यंसुवर्चलम् ।
टंकणंमरिचंचापिगन्धतुल्यंप्रदापयेत् ॥
एतद्विचूर्ण्ययत्नेनभावयेत्सप्तधाम्लकैः ।
एतद्रसायनंश्रेष्ठंमाषमात्रंप्रदापयेत् ॥
तक्रेणकेवलंवापिदद्याद्भोजनपाचने ।
क्षिप्रंतज्जीर्यतेभुक्तंदीपनंभवतिध्रुवम् ॥
सर्वाजीर्णप्रशमनंलघुक्रव्यादसंज्ञितम् ।

अर्थ–पारा २ तोला, गंधक २ तोला, लोहभस्म ६ मासे, पीपल, पीपलामूल, चीता, सोंठ, लौंग, प्रत्येक छः छः मासे. संचरनोन १ तोला, सुहागा, कालिमिरच, दोनों दो २ तोले. इन सब औषधियोंको एकत्रकर अम्लवर्गकी ७ भावना देवे. यह परमश्रेष्ठ रसायन है. एक महीने पर्य्यन्त छाछके साथ अथवा केवल रसही भोजन पचानेको देवे. तो तत्काल कियाहुआ भोजन भस्म होवे. और अग्नि दीपन होवे. यह लघुक्रव्याद रस सर्व अजीर्णोंका नाशक है ।

क्रव्यादरसः

मस्तुनिम्बुरसप्रस्थंतृतीयांशार्द्रकान्वितम् ।
वरांगैलापलंदेवपुष्पंपंचदशंस्मृतम् ॥
टंकणंवन्हिसहितंपलार्द्धंकटुकत्रयम् ।
वरंसार्द्धपलंसर्वंपिष्ट्वासंशोध्यवाससा ॥
रसःक्रव्यादसंज्ञोयंराजारामप्रकाशितः ।

अर्थ–छाछ और नींबूका रस ६४ तोले, तथा अदरकका रस २१ तोले, हरड, वहेडा, आंवला १६ तोले, इलायची ४ तोले, लौंग १५ तोले, सुहागा, चीतेकीछाल, ये दो दो तोला । सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक छः छः तोला । सबका चूर्णकर कपरछन करे, पूर्वोक्त छाछ और नींबूके रसमें मिला देवे । तो यह राजारामका कहा क्रव्याद संज्ञक रस बने, इसके खानेसे अत्यन्त क्षुधा वढे ।

क्रव्यादरसः

पलंरसस्यद्विपलंवलेःस्याच्छुल्वायसीचार्द्धपलप्रमाणं । विचूर्ण्यसर्वंद्रुतमग्नियोगादेरण्डपत्रेथनिवेशनीयम् । कृत्वाथतांपर्पटिकांविदध्याल्लोहस्यपात्रेवरपूतमस्मिन् । जम्बीरजम्पकरसंपलानिशतंनियोज्याग्निमहाल्पमात्राम् । जीर्णेरसेभावितमेतदेतैःसुपंचकोलोद्भववारिपूरैः । सवेतसाम्लैःशतमत्रदेयं समंरजष्टंकणजंसुभृष्टम् । विडंतदर्द्धंमरिचंसमंच । तत्सप्तधार्द्राचणकाम्लवारा । क्रव्यादनामाभवतिप्रसिद्धोरसस्तुसंस्थानकभैरवोक्तः । माषद्वयंसैन्धवतक्रपीतमेतस्यधन्यैःखलुभोजनान्ते । गुरूणिमांसानिपयांसिपिष्टीकृतानिसेव्यानिफलानिचैव। मात्रातिरिक्तान्यपिसेवितानियामद्वयाज्जारयतिप्रसिद्धः॥

अर्थ–पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, तांबेकीभस्म ४ तोले, लोहभस्म ४ तोले, इन सबको एकत्रकर चूर्ण करे, और लोह पात्रमें रखकर मंदाग्निसे पर्पटीके सदृश करे । पीछे जंबीरीका रस १०० पल मिलावे, और थोडा २ पाक करे, जब सब रस सूख जाय तब ५० पल पंचकोलका काढा तथा ५० पल अम्लवेतका काढा इनकी भावना देवे, ४ पल सुहागा २ पल विडनोन और १० पल कालीमिरचका चूर्ण मिलाकर चनाखारके जलकी ७ भावना देवे । पीछे इसकी गोली बनावे, यह संस्थानक भैरवका कहा हुआ क्रव्यादनामकरस है । २ मासे रस सैंधेनोंन और छाछके साथ देवे । इसके ऊपर गुरू पदार्थ, मांस,

दूध, मैदा, सूजी, आदि पिष्ट पदार्थ और फ-लादि खाना पथ्य है। यदि अनुमानसे अ-धिकभी भोजन करजाय तो वो सब इस रसके प्रभावसे दोही प्रहरमें भस्म होजाय।

बृहत्क्रव्यादरसः

द्विपलंगन्धकंशुद्धंद्रावयित्वाविनिक्षिपेत्। पारदंपलमानन्तुमृततुल्यायसंपुनः॥ ततोविचूर्ण्ययत्नेनलोहपात्रेविचक्षणः। स्थापयेद्धरसंतत्रपात्रंचोपरिनिक्षिपेत्॥ वस्त्रपूतंततःकृत्वालोहपात्रेविनिक्षिपेत्। पलमानेनसंमिश्र्यपंचांगुलदलेक्षिपेत्॥ मृद्वग्निनापचेत्तदुर्व्यासंचालयेन्मुहुः। पलमात्रंरसंशुद्धंदद्याज्जम्बीरकस्यतु॥ संचूर्ण्यपंचकोलोत्थैःकषायैःसाम्लवेतसैः। भावनाःकिलदातव्याःपंचाशत्प्रमिताःपृथक्॥ भृष्टटंकणचूर्णंचतुल्येनसहमेलयेत्। तदर्द्धंकृष्णलवणंमरिचंसर्वतुल्यकम्। सप्तधा भावयेत्पश्चाच्चणकक्षारवारिणा॥ ततःसंशोष्यवैपश्चात्कूप्यांश्चजठरेक्षिपेत्। अत्यर्थगुरुमांसानिगुरुभोज्यान्यनेकशः॥ भुक्त्वाचाकण्ठपर्य्यन्तंचतुर्वल्लमितोनरः। कट्वम्लतक्रसहितःपीतमात्रेहिपाचयेत्॥ पुनर्भोजयतिक्षिप्रंकापुनर्मन्दवन्हिता। रसःक्रव्यादनामायंप्रोक्तोमंथानभैरवैः॥ सिंहलक्षोणिपालस्यभूरिमांसप्रियस्यच। पुनर्भोजनकामस्यभैरवानन्दयोगिना॥ कुर्य्याद्दीपनमूर्ध्वजत्रुगदहृत्कुष्ठामसंशोधनम्। स्कंधस्थौल्यनिवर्हणोगदहरःशूलार्त्तिमूलापहः॥ गुल्मप्लीहविनाशकोवहुरुजांविध्वंसनोवातहृद्वातग्रंथिहरोमदापहरणःक्रव्यादनामारसः॥

अर्थ—गंधक ८ तोला लेकर लोहेके पात्रमें पतली करे, पीछे उसमें पारा, ताम्रभस्म, और लोहभस्म, इनको चार ४ तोला मिलावे. सबको पीस लोहपात्रमें रखकर अग्नि देकर फिर थोडा पतला करके सुखा लेवे। फिर लोहपात्रमें अंडके पत्तेपर रखकर मंदाग्निसे पाचन करे, और लोहेकी कलछीसे वारंवार चलाता रहे, पीछे ४ तोला जंभीरी नींबुका रस और पंचकोलका काढा और अमलवेत इनकी पृथक् २ पचास. २ भावना देवे, पीछे भुना सुहागा ४ तोला मिलावे, कालानमक २ तोला, और सब औषधियोंके बराबर काली मिरच मिलावे। सबको चनाखारके जलकी सात भावना देवे। पीछे सबको सुखाय सीसी-में भरकर रख छोडे, जब काम पडे तब ८ रत्ती खाय, अत्यन्त भारी मांसके पदार्थ और मैदा आदिके गरिष्ट पदार्थ कंठतक भोजन किये हुएको यह रस कटुरस, अम्लरस, छाछ, इनमेंसे किसीएकके साथ खानेसे तत्काल प-चाय देवे. और पुनः भोजन करनेकी इच्छा होवे. फिर मंदाग्नितो दूर होना कितनी बात है! यह मंथानभैरवका कहा क्रव्याद नामा रस है. अत्यंत मांसका भोजन करनेवाला और वारंवार भोजनकी इच्छा करनेवाला. ऐसे सिंहलदेशके राजाको भैरवानन्दयोगीने यह रस कहाथा. यह रस अग्निको दीप्त करे, कंठरोग, कुष्ठ और आमका रोग, इनको संशोधन करे, हाथपैरकी स्थूलताको दूर करे। शूल, बवासीर, गुल्म, प्लीह, वात, ग्रंथिरोग, उन्मादरोग, इन सबका नाश करे।

लब्धानन्दरसः

पारदंगन्धकंलोहमभ्रकंविषमेवच। समांशंमरिचंचाष्टौटंकणंचचतुर्गुणम्। भृंगराजरसैःसप्तभावनाचाम्लदाडिमैः॥

गुंजाद्वयंपर्णखण्डैःखादेत्सोयंनिहन्तितान् । वातश्लेष्मोद्भवान्रोगान्मन्दाग्नीन्ग्रहणी ज्वरान् ॥ अरुचिपाण्डुतांचैवजयेदचिरसेव नात् ।

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, विष, ये प्रत्येक समान भाग लेवे । तथा मिरच ८ भाग लेवे, सुहागा ४ भाग, इस प्रकार सबको एकत्र करके भांगरा, तंतडीक तथा अनारदाने इनकी सात २ भावना देकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे । १ गोली पानके साथ खानेसे वादी, कफसे उत्पन्न हुए रोग, मंदाग्नि, संग्रहणी, ज्वर, अरुचि, पाण्डुरोग, इनका शीघ्रही नाश करती है ।

राजवल्लभरसः

रसनिष्कंगन्धकैकंनिष्कमात्रंप्रदीपनम् । सार्द्धपलप्रदातव्यंचूलिकालवणंततः ॥ खल्लेनमर्दयेत्तत्तुसूक्ष्मवस्त्रेणगालयेत् । माषमात्रंप्रदातव्योभुक्तमांसादिजारकः ॥ अजीर्णेपुत्रिदोषेपुदेयोयंराजवल्लभः ।

अर्थ—पारा ४ मासे, गंधक १ तोला, विष ४ मासे, नोसादर ६ तोला, इन सबको खरल कर कपरछन करे. और जलसे एक २ मासेकी गोलियां बनावे. एक गोली नित्य खानेसे मांसादि खाये हुएको भस्म करे. अजीर्ण, त्रिदोष, आदि रोगोंमें इस राजवल्लभ रसको देना चाहिये ।

वन्हिनामकरसः

जातीजातंत्रिकर्षंमरिचमपिपलंचार्द्धकर्षप्रमाणं । गन्धंसूतंलवंगंविषमिदमखिलंचिंचिर्णीसस्यतोये ॥ पिष्ट्वामाषैकमात्रांवितरतिदहनं वन्हिमांद्येचसद्यो । रोगाञ्छूलानिलादीन् दहतिकृतगुणोवह्निनामारसोयं ॥

अर्थ—जावित्री १॥ तोला, मिरच ४ तोला, गंधक ६ मासे, पारा ६ मासे, लौंग ६ मासे, विष ६ मासे, इन सबको पकी इमलीकेरससे खरल कर एक २ मासेकी गोलियां बनावे. इनके सेवनसे जठराग्निकी वृद्धि होवे. शूल, वादी आदि अनेक रोगोंको यह वन्हिनामकरस दूर करे।

अग्निमुखरसः

सूतंगन्धंविषंतुल्यंमर्दयेदार्द्रकद्रवैः । अश्वत्थचिंचापामार्गक्षारक्षारौचटंकणम् ॥ जातीफलंलवंगंचत्रिकटुत्रिफलासमम् । शंखक्षारंपंचलवणंहिंगुजीरंद्विभागकम् ॥ मर्दयेदम्लयोगेनगुंजामात्रंवटीकृता । पाचनीदीपनीसद्योजीर्णशूलविशूचिकाः ॥ हिक्कागुल्मंचोदरंचनाशयेन्नात्रसंशयः । रसेन्द्रसंहितायांचनाम्नावन्हिमुखोरसः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, और विष बराबर लेकर अदरकके रसमें खरल करे. पीछे पीपल, इमली और ओंगा इनके खार, सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, जायफल, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, शंखकी भस्म, हींग, जीरा, पांचोंनोंन, प्रत्येक दो दो भाग लेवे. सबको नींबूके रसमें खरल कर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे । यह गोली पाचन है, अग्निको दीपन करे, अजीर्ण और विशूचिकाका तत्काल नाश करे, हिचकी, गोला, उदररोगका नाश करे, यह वन्हिमुखरस रसेन्द्रसंहितामें लिखा है ।

अजीर्णारिरसः

शुद्धंसूतंगन्धकंचपलमानंपृथक्पृथक् । हरीतकीचद्विपलानागरस्त्रिपलःस्मृतः ॥ कृष्णाचमरिचंतद्वत्सिंधुत्थंत्रिपलंपृथक् । चतुःपलाचविजयामर्दयेन्निंबुकद्रवैः ॥

पुटानिसप्तदेयानिघर्ममध्येपुनःपुनः । अजीर्णारिरयंमोक्तःसद्योदीपनपाचनः ॥ भक्षयेद्द्विगुणंभक्ष्यंपाचयेद्रेचयेदपि ।

अर्थ-शुद्ध पारा ४ तोले, गंधक ४ तोले, हरड ८ तोले, सोंठ १२ तोले, पीपल, मिरच, सैंधानोंन, प्रत्येक बारह १२ तोले, भांग १६ तोले, इन सबका चूर्ण कर धूपमें नींबूके रसके ७ पुट देवे. यह अजीर्णारिरस दीपन और पाचन है. इसके सेवनसे मनुष्य दूना भोजन करने लगे और यह दस्तावर है ।

बृहन्महोदधिरसः

दन्तीबीजमकल्मपंसदहनंशुण्ठीलवंगंसमं । गन्धंपारदटंकणंचमरिचंश्रीवृद्धदारुविषम् ॥ खल्वेदंडयुगंविमर्द्यविधिनादंतीद्रवैर्भावितम् देयापंचदशातुनिम्बुकजलैस्त्रेधात्रिधाचित्रकै त्रेधाचार्द्रकजैरसैःशुभधियासप्तैवचावेगिनः। पश्चाच्छुष्ककलायसंमितवटीकार्य्याभिषक् सम्मिता ॥ क्षुद्बोधमकरीत्रिशूलशमनीजी र्णज्वरध्वंसिनी । कासाऽरोचकपांडुतोदर गदेसामामरुन्नाशिनी ॥ वस्त्याटोपहलीम कामयहरीमंदाग्निसन्दीपनी । सिद्धियाति महोदधिप्रकटितासर्वामयघ्नीसदा ॥

अर्थ-शुद्ध जमालगोटा, चितेकी छाल, सोंठ, लौंग, पारा, गंधक, सुहागा, काली मिरच, विधायरा, और विष, इन सबको बराबर ले. दन्तीके रससे दो दंड खरल करे. इस प्रकार १९ पुट देवे. तीन पुट नींबूके रसके देवे, ३ पुट चित्रकके रसके देवे, ३ पुट अदरकके रसके देवे, ३ भावना बरयारेके रसकी देकर मटरके समान गोलियां बनावे. यह भूँखको बढावे, शूल, अजीर्ण, ज्वर, खांसी, अरुचि, पांडु, उदर, आमवात, बस्ती फूलना, हलीमक और मंदाग्निको दूर करे ।

पाशुपतरसः

कर्षंसूतंद्विभागंन्धंत्रिभागंभस्मतीक्ष्णकम् । त्रिभिःसमंविषंयोज्यंचित्रकद्रवभावितम् ॥ द्विधात्रिकटुकंयोज्यंलवंगैलातुतत्समे । जातीफलंजातिपत्रीचार्द्धभागमितंसमम् ॥ तथार्द्धपंचलवणंस्नुह्यर्कौवापितिंतिणी । अपामार्गोश्वत्थएपांलवणंचपलार्द्धकम् ॥ टंकणंयावकक्षारंस्वर्जिकाहिंगुजीरकं । हरीतकीसूततुल्यामर्द्दयेदम्लयोगतः ॥ धूर्त्तबीजस्यभस्मन्तुसर्वसप्तमभागतः । रसःपाशुपतोनाममोक्तःमत्ययकारकः ॥ गुंजामात्रावटीकार्य्यासर्वाजीर्णविनाशिनी । मोचरसेनातिसारंग्रहणींतक्रसैंधवैः ॥ शूलेनागरकंशस्तंहिंगुसौवर्चलान्वितम् । अर्शस्तुतक्रेणहितापिप्पलीराजयक्ष्मणि ॥ वातरोगंनिहन्त्याशुशुंठीसौवर्चलान्विता । गुडूचीशर्करायोगात्पित्तरोगविनाशिनी ॥ पिप्पलीक्षौद्रयोगेनश्लेष्मरोगंनिकृंतति । अतःपरतरानास्तिधन्वंतरमतेवटी

अर्थ-पारा १ तोला, गंधक २ तोला, और कान्तभस्म ३ तोला, इन सबकी बराबर विष लेवे । सबको चीतेके रसमें खरल करे. और सोंठ, मिरच, पीपल ये २ तोला, लौंग, इलायचीके बीज २ तोला, जायफल और जावित्री दोनों दो तोला. पांचोंनोन ९ तोला, थूहर, आक, इमली, ओंगा (चिरचिरा) पीपल इन सबका खार प्रत्येक दो तोला.सुहागा,सज्जीखार, जवाखार, हींग, जीरा और हरड, प्रत्येक एक २ तोला, सबको नींबूके रस अथवा अम्लवर्गसे घोटे. और धतूरेके बीजोंकी भस्म ७ तोला मिलावे,पीछे खरलकर एक २. रत्तीकी गोलियां

बनावे, यह गोली सब अजीर्णोंका नाश करे, मूसली और छाछके साथ खानेसे उदररोग, मोचरसके साथ खानेसे अतिसार, छाछ और सैंधेनोंनके साथ संग्रहणी, शूलरोगमें सोंठ कालेनोंन और हींगके साथ देवे. बवासीरमें छाछके साथ, खई रोगमें पीपलके साथ. वात रोगमें सोंठ और कालेनोंनके साथ, पित्तजरोगोंमें गिलोय और मिश्रीके साथ, कफके रोगोंमें पीपल और शहतके साथ देवे. तो उक्तरोग दूर होवे. इससे परे अन्यवटी धन्वंतरके मतमें उत्तम नहीं है।

अजीर्णकंटकरसः

शुद्धसूतविषगंधकंसमंतुल्यभागमरिचंचचूर्णितम् । मर्दयेत्सुबृहतीफलद्रवैरेकविंशतिविभावितंपुनः ॥ गुंजिकात्रयमिदंसुभक्षितंसद्यएवजठराग्निवर्द्धनम् । एपकंटकरसोविशूचिकाजीर्णमारुतगदान्निहन्तिच ॥

अर्थ—शुद्धपारा, विष, गंधक, ये बराबर ले. इन तीनोंके बराबर मिरचका चूर्ण लेवे. सबको कटेरीके रसकी २१ भावना देवे. और तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इसके सेवनसे जठराग्नि तत्काल बढे, यह अजीर्णकंटकरस विशूचिका, अजीर्ण और बादी आदिके अनेक रोग नाश करे।

आदित्यरसः

दरदंचविषंगन्धंत्रिकटुत्रिफलासमम् ।
जातीफलंलवंगंचलवणानिचपंचवै ॥
सर्वमेकीकृतंचूर्णमम्लयोगेनसप्तधा। भावयित्वावटींकुर्याद्गुंजार्द्धप्रमितांबुधः ॥ रसोह्यादित्यसंज्ञोयमजीर्णक्षयकारकः । भुक्तमात्रं पाचयतिजठरानलदीपनः ॥

अर्थ—हींगलू, विष, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, जायफल, लौंग, पांचोनोन, इन सबको एकत्र कर चूर्ण कर अम्लवर्गसे खरल कर सात भावना देवे. पीछे आधी २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह आदित्यरस अजीर्ण नाशक है. जो खाय वो तत्क्षण पचे और अग्नि प्रदीप्त होवे ।

चिंतामणिरसः

रसंगन्धंमृतंशुल्वंमृतमभ्रंपलत्रिकम् ।
त्र्यूषणंजयपालंचसमंखल्वेविमर्दयेत् ॥
द्रोणपुष्पीरसैर्भाव्यंशुष्कंतद्वस्त्रगालितम् ।
चिन्तामणिरसोह्येपअजीर्णेशंसतेसदा ॥
ज्वरमष्टविधंहन्तिसर्वशूलहरःपरः ।
गुंजैकंवाद्विगुंजंवाआमवातहरःपरः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, तांबेकीभस्म, अभ्रक, त्रिफला, त्रिकुटा, शुद्धजमालगोटाके बीज, सबको समान लेवे. और चूर्णकर द्रोणपुष्पी (गोमा) के रससे खरल कर एक वा दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इस चिंतामणीरसको अजीर्णमें देवे. यह आठ प्रकारके ज्वर, सब प्रकारके शूल, और आमवातका नाश करे।

वीरभद्राभ्रकम्.

अभ्रकंपुटसहस्रमारितंकर्णयुग्ममतिनिर्मलीकृतं । वासराणिनवतिविमर्दितंचित्रकस्वरससाधुसिक्तकम्॥ शृंगवेररसमर्दितावटीकारितासकलरोगनाशिनी । भक्षिताभुजगवल्लिपत्रकैःशृंगवेरशकलेनवापुनः ॥ वन्हिमांद्यभिनाश्यसत्वरंकारयेत्प्रखरपावकोपरम् । श्वासकासवमिशोथकामलांप्लीहगुल्मजठरारुचिमभान् ॥ रक्तपित्तयकृदम्लपित्तकंशूलकोपजगदान्विषूचिकाम् । आमवातबहुवातशोणितंदाहशीतबलन्हासकार्श्यकम् ॥ विद्रधिज्वरगरंशिरोगदंनेत्ररोगमखिलंहलीमकं । हंतिवृष्यतममेतदभ्रकंवीरभद्रमतिव

स्यमुत्तमम् ॥ भक्षितंविविधभस्यमागलंका ष्टसंयमपिभस्मतांनयेत् ।

अर्थ—हजार पुटकी अभ्रक भस्म २ तोला लेकर ९० दिन चीतेके रसमें खरल करे, पीछे अदरकके रसकी भावना देवे, और गोलियां वनावे. नागरवेल पान अथवा अदरकके टुकडोंके साथ खाय तो मंदाग्नि, श्वास, खांसी, शूल और विशूचिकादि जो उक्त रोग हैं सब नाश होवे यह वीरभद्राभ्रक वृष्य है ।

विश्वोदीपकाभ्रम्.

अभ्रंनिर्मलमारितंपलमितंचूर्णीकृतंयत्नत । श्चव्यंचित्रकमिन्द्रसूरकनकंमालूरपत्रार्द्रकम् ॥ मूलंपिप्पलिसम्भवंमधुरिकानीपोर्कमूलंपृथक् षेपांसत्वपलैर्विमर्दितमिदंकर्पंक्षिपेत्टंकण-म् । गुंजासंमितमेतदेववलितंतत्पारिभद्रद्रवैः मन्दाग्निचिरजातगुल्मनिचयंशूलाम्लपित्तं ज्वरं ॥ छर्दिदुष्टमसूरिकामलसकंश्वासंचका संतृपाम् । प्लीहानंयकृतंक्षयंस्वरहितंकुष्टंम हारोचकम् ॥ दाहंमोहमशेपदोपजनितंकृच्छ्रं चतुर्नामकं मामंवातविमिश्रितंनयनजंरोगं समुन्मूलयेत् ॥ विश्वोदीपकनामरोगहरणेमो क्तंपुराशम्भुना । सर्वेषांहितकारकंगदवतां सर्वामयध्वंसनम् ॥ पापाणंयदिभक्षितंतंद पितंकुर्य्यात्सजीर्णंपुनः । वल्यंवृष्यतरंरसा यनवरंमेधाकरंकान्तिदम् ॥

अर्थ—अभ्रक १ पल, चव्य १ पल, दोंनोको एकत्रकर चीता, संभालू, धतूरा, बेल इन प्रत्येकके पत्तोंका रस १ पल्ले, उसी प्रकार पीपलामूल, सौंफ, कदंब और आककीजड इन प्रत्येकके १ पल काढेकी भावना पृथक् २ देवे. दो तोले सुहागा मिलाय दो २ रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे १ गोली नीमके रसके साथ खाय तो वहुत दिनोंकी मंदाग्नि, गोला, शूल, अम्लपित्त, ज्वर, छर्दि, दुष्टशीतला, अलसक, श्वास, खांसी, प्यास, प्लीह, यकृतकेरोग, खई, स्वरभंग, कोड, अरुचि, दाह, मोह, अनेक प्रकारकी ववासीर, आमवात, नेत्ररोग, यह विश्वोदीपक नामसे विख्यात अभ्रक प्रथम श्रीशिवने कहाहै. सर्व मनुष्योंको हितकारक गुदाके रोगोंका नाशक, यदि पत्थर खालियाहो उसकोभी भस्म करदे बलकरे, वीर्य बढावे, रसायन है, बुद्धिको बढावे, और देहकी दिव्य-कांति करे है ।

इतिश्री रसराजसुन्दरस्य उत्तरखंडस्य पूर्वभागः समाप्तः

अथ रसराजसुन्दरस्योत्तरखण्ड स्योत्तरभागः

—०—

प्रारंभः

कृमिरोगेकीटमर्दोरसः

शुद्धंसूतंशुद्धगंधमजमोदाविडंगकम् ।
विषमुष्टीब्रह्मदण्डीयथाक्रमगुणोत्तरम् ॥ १॥
चूर्णयेन्मधुनामिश्रंनिष्कैकंकृमिजिद्भवेत् ॥२
कीटमर्दोरसोनाममुस्ताक्वाथंपिबेदनु ।
अत्रब्रह्मदण्डीभार्गी ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोला. शुद्धगंधक २ तोले, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, कुचला ५ तोले, ब्रह्मदण्डी ६ तोले, सबको कूटपीस चूर्णकर मात्रा चार तोलेकी बनावे अनुपान सहत और नागरमोथाका काढा इसके सेवन करनेसे कृमिरोग नष्टहोता है, [कोई ब्रह्मदण्डीकी प्रतिनिधिमें भारंगी कहते हैं]

कृमिमुद्गरोरसः

कृमेणवृद्धंरसगंधकाजमोदाविडंगंविषमुष्टिकाच । पलाशबीजंचविचूर्णमस्यनिष्कममाणंमधुनावलीढम् ॥ १ ॥ पिबेत्कषायंघनजंतदूर्ध्वंरसोयमुक्तःकृमिमुद्गराख्यः । कृमीन्निहन्तिकृमिजांश्चरोगान् । संदीपयत्यग्निमयंत्रिरात्रात् ॥२॥ सुश्रुतमानेन ४ माषाः

अर्थ—पारा १ तोला, गंधक २ तोले, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, कुचला ५ तोले, ढाकके बीज ६ तोले, सबको एकत्र मर्दन कर चार मासे सहतके साथ सेवन करे ऊपरसे मोथाका काढा पीवे, तो यह कृट मुद्गारस तीन दिनमें कृमिरोग तथा कृमिजन्य विकारोंको दूर करे और अग्निको दीप्त करे।

कीटारिरसः

शुद्धंसूतमिन्द्रयवंचाजमोदामनःशिला ।
पलाशबीजंगंधंचदेवदाल्याद्रवैर्दिनम् ॥
संमर्द्यभक्षयेन्नित्यंमुद्गपर्णीरसैःसह ।
सितायुक्तंपिबेचानुकृमिपातोभवत्यलम् ॥२॥

अर्थ—पारा, इन्द्रजौ, अजमोद, मनशिल, ढाकके बीज, और गंधक इनको देवदालीके रससे १ दिन मर्दन कर एक रत्तीके प्रमाण गोली बनावे, इसके ऊपर मिश्री मिला बनमूंगका रस पिलाना चाहिये. इसके सेवन करनेसे निश्चय कृमिसमूह निकल जाय इस रसमें सब औषधि समान लेवे ।

कृमिघातिनीगुटिका.

रसगंधाजमोदानांकृमिघ्नंब्रह्मबीजयोः ।
एकद्वित्रिचतुःपंचतिन्दोबीजस्यषट्क्रमात् ॥
संचूर्ण्यमधुनासर्वंगुटिकाकृमिघातिनीम् ।
खादन्पिपासुस्तोयंचमुस्तानांकृमिशान्तये ॥
आखुपर्णीकषायंवाम्पिबेत्शर्करान्वितम् ।

अर्थ—पारा १ तोला, गंधक २ तोला, अजमोद ३ तोले, वायविडंग ४ तोले, ढाकके बीज ५ तोले, कुचला ६ तोले, इन सबका चूर्णकर शहतके साथ मिलाय रत्ती २ की

गोली बनावे, इसके सेवनके पश्चात् मोथा अथवा मूसापर्णीका काढा मिश्री मिलाकर पीने- से कृमिरोग शीघ्र नष्ट होवे।

कृमिकालानलोरसः

विडंगंद्विपलंचैवविषचूर्णंतदर्द्धकम्।
लोहचूर्णंतदर्द्धंचतदर्द्धंशुद्धपारदम्॥
रसतुल्यंशुद्धगन्धंछागीदुग्धेनपेषयेत्।
छायाशुष्कांवटींकृत्वाखादेत्षोडशरक्तिकाम्॥ धान्यजीरानुपानेननाम्नाकालानलोरसः। उदरस्थंकृमीन्हन्याद्ग्रहण्यर्शःसमन्वितम्॥ अग्निदःशोथशमनोगुल्मप्लीहोदरान् जयेत्। गहनानन्दनाथेनभाषितोविश्वसंपदे।

अर्थ–वायविडंग २ पल, विषचूर्ण १ पल, लोहभस्म अर्द्धपल, शुद्धपारा चौथाईपल, शुद्ध गंधक ६ मासे, सबको कूटपीस बकरीके दूध- में १ दिन घोटे पीछे गोली बनाकर छायामें सुखावे. इस कालानल रसको धनिये और जीरेके साथ देवे तो उदरकी कृमि, संग्रहणी, बवासीर और सूजनको दूर करे, और अग्निको प्रज्वलित करे, तथा गुल्म प्लीह और उदररोग- को दूर करे।

कृमिविनाशनोरसः

शुद्धंसूतंसमंगंधमभ्रलोहंमनःशिला।
धातकीत्रिफलालोध्रंविडंगंरजनीद्वयं॥
भावयेत्सप्तधासर्वंशृंगबेरभवैरसैः।
चणमात्रांवटींकृत्वात्रिफलारससंयुताम्॥
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकृमिरोगोपशान्तये।
वातिकंपैत्तिकंहन्तिश्लैष्मिकंचत्रिदोषजम्॥
कृमिविनाशनामायंकृमिरोगकुलांतकः।

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रक, लोहभस्म, मनसिल, धायकेफूल, त्रिफला, लोध्र, वाय- विडंग, हल्दी, दारुहल्दी, इन सबको समान भाग लेवे. और कूटपीस अदरकके रसकी सात भावना देकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. एक गोली त्रिफलाके रसके साथ प्रातःकाल लेवे तो वातिक पैत्तिक और कफजन्य रोग तथा त्रिदोषज रोग दूर होवे. यह कृमि विनाशन रस कृमिसमूहका नाशक है।

कृमिकुठारोरसः

कर्पूरंचाष्टभागंचकुटजश्चैकभागकः।
तत्समानंत्रायमाणमजमोदाविडंगकं॥
हिंगुलंविषभागंचतत्समानंचकेशरम्।
सर्वंद्रव्यंचसंमर्द्यभृंगराजरसैर्दिनं॥
पालाशबीजसंमिश्रंसुंदरीरसभावितम्।
ब्राह्मीरसंततोदत्वासिद्धेत्कृमिकुठारकः॥
वल्लमात्रांवटींकृत्वादद्याद्धेमसमन्वितां।
कुर्य्यात्कृमिविनाशंचएवंसप्तविधंद्रढम्॥

अर्थ–शुद्धकपूर ८ भाग, कूडाकीछाल, त्रायमाण, अजमोद, वायविडंग, हींगलू, विष, केशर,और ढाकके बीज इन सबको एक२भाग ले एकत्रकर भांगरा और मूसापर्णी तथा ब्राह्मीके रसकी एक २ दिन भावना देवे तो यह कृ- मिकुठार रस सिद्धि होवे. दो रत्ती धतूरेके रसके साथ देनेसे सर्व प्रकारकी कृमि नष्ट होवे।

कृमिदावानलोरसः

हिंगुलःकर्षमानंस्याद्दन्तीबीजंतदर्धकम्।
अर्कक्षीरेणसंमर्द्यदापयेद्भावनादश॥
माषमात्रंप्रदातव्यमर्कमूलरसंपुनः।
प्रपिबेद्धिंगुसंयुक्तंकृमिजालनिपातनम्॥
कृमिदावानलोनामनाशयेत्कृमिसत्वरम्।

अर्थ–हींगलू १ तोला, जमाल गोटा ६ मासे. इनका चूर्णकर आकके दूधकी दश भावना देवे. इसमेंसे एक मासे आककी जड और हींगके साथ देवे तो सर्व कृमि गिरजाय,

इसको कृमिदावानल रस कहते हैं।

कृमिरोगारिरसः

सूतंगंधंमृतंलोहंमरिचंविषमेवच ।
धातकीत्रिफलाशुंठीमुस्तकीसरसांजनम् ॥
त्रिकटुंमुस्तकंपाठावालुकंबिल्वमेवच ।
भावयेत्सर्वमेकत्रस्वरसैर्भृंगजैस्ततः ॥
वराटिकाप्रमाणेनभक्षणीयोविशेषतः ।
कृमिरोगविनाशायरसोयंकृमिनाशनः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सार, मिरच, विष, धायकेफूल, त्रिफला, सोंठ, नागरमोथा, रसोत, त्रिकुटा, मोथा, पाढ, नेत्रवाला, और बेलगिरी इन सबको समान लेवे. और सबको कूट भांगरेके रसकी भावना देवे. इसमेंसे कौडीकी बराबर भक्षण करे तो कृमिरोग दूर होवे।

कृमिघ्नोरसः

कृमिघ्नंकिंशुकारिष्टबीजंसरसभस्मकम् ।
वल्लद्वयंचाखुपर्णीरसैःकृमिविनाशनः ॥

अर्थ–वायविडंग, ढाकके बीज, नींबकी निबोली, और चन्द्रोदय सबको समान लेकर चार रत्ती मूंसापर्णीके साथ खाय तो सर्व कृमि नष्ट होवे।

कृमिधूलिजलप्लवोरसः

पारदंगंधकंशुद्धंवंगंशंखंसमंसमं ।
चतुर्णायोजयेत्तुल्यंपथ्याचूर्णंभिषग्वरः ॥
दण्डयंत्रेणनिर्मथ्यपटोलस्वरसंक्षिपेत् ।
कार्पासबीजसदृशींवटिकांकुरुयत्नतः ॥
त्रिवटींभक्षयेत्प्रातःशीततोयंपिबेद्नु ।
केवलेपैत्तिकेयोज्यःकदाचिद्वातपैत्तिके ॥
श्रीमद्गहननाथोक्तःकृमिधूलिजलप्लवः ।

अर्थ–पारा, गंधक, वंग, शंखभस्म, सबको समान ले और सबकी बराबर हरडका चूर्ण तदनन्तर दंडयंत्रसे मथकर पटोलका स्वरस डाले, पश्चात् बिनौलेके समान गोलियां बनाकर प्रातःकाल तीन गोली खावे, ऊपर शीतलजल पीवे यह औषधि केवल पित्त विकारमें देवे और वातपित्तके रोगमेंभी देवे. यह गहननाथका कहा कृमिधूलिजलप्लवरस है।

लाक्षादिवटी.

लाक्षाभल्लातश्रीवासशिफाश्वेतापराजिता ।
अर्जुनस्यफलंपुष्पंविडंगमजगुग्गुलुः ॥
एभिःकीटाश्वशाम्यन्तेतिप्तापिग्रहेसदा ।
भुजंगामूषकादंशाःसंघनामामतंगजाः ॥
दूरादेवपलायन्तेकिन्नकीटाश्चयेपराः ।

अर्थ–लाख, भिलावा, रार, निर्गुंडी, सफेदकोयल, कोहके फल और फूल, वायविडंग, अजमोद और गूगल इन सबको एकत्रकर मर्दन करे. इसको घरमें रखनेसे कीट शांत होते है. सर्प, मूंसे, मच्छर आदि तथा बनके हाथी इसकी गंधमात्रसेही भाजते हैं. बाकी छोटे कीडोंका तो क्या कहना है।

विडंगलोहम्.

रसंगंधंचमरिचंजातीफललवंगकम् ।
कणातालंशुंठिवंगंप्रत्येकंभागसम्मितम् ॥
सर्वचूर्णसमंलोहंविडंगंसर्वतुल्यकम् ।
लोहंविडंगकंनामकोष्टस्थकृमिनाशनम् ॥
दुर्नामारुचिंचैवमन्दाग्निंचविशूचिकाम् ।
शोथंशूलंज्वरंहिक्कांश्वासकासंविनाशयेत् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, मिरच, जायफल, लौंग, पीपल, हरिताल, सोंठ, वंग, प्रत्येक समान भाग ले, और सब चूर्ण समान लोहभस्म और सबके बराबर वायविडंग डाले तो यह विडंगलोह, पेटकी कृमि, बवासीर, अरुचि, मन्दाग्नि, विशूचिका, सूजन, शूल, हिचकी, श्वास और खांसीको दूर करे।

पाण्डुरोगाधिकारः

पाण्डुसूदनोरसः

रसंगंधंमृतंताम्रंजयपालंचगुग्गुलु ।
समांशमाज्यसंयुक्तांगुटिकांकारयेद्भिषक् ॥
एकैकांखादयेद्वैद्यःपाण्डुशोथापनुत्तये ।
शीतलंचजलंचाम्लंवर्जयेत्पाण्डुसूदने ॥

अर्थ—पारा, गंधक, ताम्रभस्म, जमालगोटा, गूगल, इन सबको समान ले और सबकी बराबर घी डालकर खरलकर गोलियां बनावे, इस पांडुसूदन रसका सेवन कर्त्ता शीतल जल और खटाई नखावे ।

पञ्चाननावटी.

शुद्धंसूतंसमंगंधंमृतताम्राभ्रगुग्गुलु ।
जैपालबीजतुल्यंचघृतेनगुटिकीकृतम् ॥
भक्षयेद्वदराण्डाभंशोथपाण्डुप्रशान्तये ।
पंचाननवटीख्यातापाण्डुरोगकुलान्तिका ॥

अर्थ—पारा, गंधक, ताम्रभस्म, अभ्रक, गूगल, सबको समान लेवे. और सबके बराबर जमालगोटा, सबको घृतमें खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इसके सेवनसे पाण्डुरोग और सूजन नष्ट होवे. इसको खाकर गोमाका रस पीवे ।

चन्द्रसूर्यात्मकोरसः

सूतकंगंधकंलोहमभ्रकंचपलंपलं ।
शंखटंकवराटंचप्रत्येकार्द्धपलंहरेत् ॥
गोक्षुरबीजचूर्णंचपलैकंतत्रदीयते ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णंबाप्ययंत्रेविभावयेत् ॥
पटोलंपर्पटंभार्गीविदारीशतपुष्पिका ।
कुंडलीदंडनीवासाकाकमाचीन्द्रवारुणी ॥
वर्षाभूःकेशराजश्चशालिंचीद्रोणपुष्पिका ।
प्रत्येकार्द्धपलैर्द्रावैर्भावयित्वावटींकुरु ॥
चतुर्दशवटींखादेच्छागीदुग्धानुपानतः ।
गहनानन्दनाथोक्तचन्द्रसूर्यात्मकोरसः ॥
हलीमकंनिहन्त्याशुपाण्डुरोगंचकामलाम् ।
जीर्णज्वरंसदिपमंरक्तपित्तमरोचकम् ॥
शूलंप्लीहोदरानाहमष्ठीलांगुल्मपिद्रधीम् ।
शोथंमंदानलंकासंश्वासंहिक्कांवमिंभ्रमम् ॥
भगंदरोपदंशश्चदद्रुकण्डूव्रणापची ।
दाहतृष्णागुरस्तंभमामवातंकटीग्रहम् ॥
युक्त्यामद्येनमण्डेनमुद्गयूषेणवारिणा ।
गुडूचींत्रिफलावासाक्काथैर्नीरेणवाक्वचित् ॥

अर्थ— पारा, गंधक, लोहभस्म और अभ्रक एक २ पल लेवे. शंखभस्म, कौडीकीभस्म, और सुहागा प्रत्येक चार २ तोले. गोखरूका चूर्ण एकपल, इन सबको एकत्रकर पटोलपत्र, पित्तपापडा, भारंगी, विदारीकंद, सौंफ, गिलोय, ब्रह्मदण्डी, अडूसा, मकोय, इन्द्रायन, सांठकीजड, भांगरा, शालिंच और गोमा प्रत्येकका आठ २ पल रस ले तप्तखरलमें यथाक्रम भावना देकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, नित्य एक गोली खाय ऐसे चौदह दिन सेवन करे, अनुपान बकरीका दूध इसके सेवनसे पाण्डुरोग, कामला, हलीमक, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, अरुचि और शूल आदि अनेक रोग नष्ट होवे. रोग २ में यथा संगती मद्य, भातका मांड, मूंगकायूष, गिलोयका काढा, तथा अडूसेके काढेसे यह रस देना चाहिये ।

प्राणवल्लभोरसः

हिंगुलंसंभवंसूतंगंधंकाश्मीरसंभवं ।
लोहंताम्रंवराटींचतुर्थंहिंगुफलत्रयम् ॥
स्नुहीमूलंयवक्षारंजैपालंटंकणंत्रिवृत् ।
प्रत्येकंतुसमंभागंछागीदुग्धेनभावयेत् ॥
चतुर्गुंजांवटींखादेद्वारिणामधुनासह ।
प्राणवल्लभनामायंगहनानन्दभाषितः ॥

श्लेष्मदोषंचसंवीक्ष्ययुक्त्यावावृद्धिवर्द्धनं ।
निहन्तिकामलांपांडुमानाहंश्लीपदंतथा ॥
गलगंडंगंडमालांकृच्छ्राणिचहलीमकम् ।
शोथंशूलमुरुस्तम्भंसंग्रहग्रहणींतथा ॥
हन्तिमूर्च्छांवमिंहिक्कांकासंश्वासंगलग्रहम् ।
असाध्यंसन्निपातंचजीर्णज्वरमरोचकम् ॥
जलदोषभवंशोथंमेहोत्थंचजलोदरम् ।
नातःपरतरंश्रेष्ठंकामलार्तिरुजापहम् ॥

अर्थ—हींगलूसे निकाला हुआ पारा, आमलासार गंधक, लोहभस्म, ताम्रभस्म, कौडीकी भस्म, तूतिया, हींग, त्रिफला, थूहरकी जड, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा, और निसोथ इन सबको समान लेवे और मर्दनकर बकरीके दूधकी सात भावना दे. चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे, और सहत वा जलके साथ खावे तो यह प्राणवल्लभरस कामला, पांडु, अनाह, श्लीपद आदि रोगोंका नाश करे [कोई कहता है जैसी कफकी अधिकता होवे उसीके अनुसार इस गोलीको बढाकर देवे ।]

पंचामृतलोहमंडूरं.

लोहंताम्रंगंधमभ्रंपारदंचसमांशकम् ।
त्रिकटुत्रिफलामुस्तंविडंगंचित्रकंतथा ॥
किरातंदेवकाष्ठंचहरिद्राद्वयपुष्करम् ।
यवानीजीरयुग्मंचशठीधान्यकचव्यकम् ॥
प्रत्येकंलोहभागंचश्लक्ष्णचूर्णन्तुकारयेत् ।
सर्वचूर्णस्यचार्द्धांशंसुशुद्धंलोहकिट्टकम् ॥
गोमूत्रेपाचयेद्वैद्योलोहकिट्टंचतुर्गुणं ।
पुनर्नवाष्टगुणितंक्वाथंतत्रप्रदापयेत् ॥
सिद्धेवतारितेचूर्णंमधुनःपलमात्रकम् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकोकिलाक्षानुपानतः ॥
ग्रहणींचिरजांहन्तिसशोथांपाण्डुकामलाम् ।
अग्निंचकुरुतेदीप्तंज्वरंजीर्णंव्यपोहति ॥
प्लीहानंयकृतंगुल्ममुदरंचविशेषतः ।
कासंश्वासंप्रतिश्यायंकान्तिपुष्टिविवर्द्धनम् ॥
[अत्रसर्वचूर्णसमांशंमंडूरमितिवृद्धाः ।
गोमूत्रेपुनर्नवाक्वाथेमंडूराणांपाकः ।
चूर्णानांप्रक्षेपःशीतेचमधुनः]

अर्थ—लोहभस्म, ताम्रभस्म, गंधक, अभ्रक, पारा, त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, चीता, चिरायता, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, पोहकरमूल, अजमायन, जीरा, कालाजीरा, कचूर, धनियां और चव्य प्रत्येकका एक २ तोला चूर्ण ले और सब चूर्णसे आधा मंडूर लेवे [वृद्ध आचार्योंका मत है कि चूर्णके समान लोहभस्म लेवे और मंडूर चौगुना लेवे. और ८ गुना गोमूत्र लेवे और आठगुना पुनर्नवा (सांठी) का काढा लेवे. गोमूत्र, पुनर्नवाका काढा और मंडूरको एकत्र कर पाक करे. पाक होजानेपर आवे तब लोहभस्मादि चूर्णोंको डालकर खूब मिला देवे] पश्चात् शीतल होनेपर एक पल सहत मिलावे इसकी मात्रा वैद्य अपनी बुद्धीसे कल्पना करे. इसका अनुपान तालमखानेका रस है । इस रससे संग्रहणी, पाण्डुरोग, कामला, तथा शोथ प्रभृति अनेक रोग नष्ट होवे ।

निशालोहम्.

लोहचूर्णनिशायुग्मंत्रिफलारोहिणीयुतं ।
प्रलिह्यान्मधुसर्पिभ्यांकामलापाण्डुशान्तये ॥

अर्थ—लोहभस्म, हलदी, हरड, बहेडा, आमला, और कुटकी सबको समान भाग ले चूर्णकर सहत और घीके साथ चाटे तो कामला और पाण्डुरोग दूर होवे ।

धात्रीलोहम्.

धात्रीलोहरजव्योषनिशाक्षौद्राज्यशर्करा ।

भक्षणाद्धिनिहन्त्याशुकामलांचहलीमकम् ॥

अर्थ–आमले, लोहभस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, बहेडा, प्रत्येक समान ले चूर्ण कर सहत और मिश्री मिलाकर चाटे तो कामला और हलीमकको शीघ्र दूर करे।

पाण्ड्वारिरसः

रसगंधाभ्रलोहैक्यंपाण्ड्वारिपुटितास्त्रिधा।
कुमार्याक्तचतुर्वल्लःपाण्डुकामलपूर्ववत्॥

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रकभस्म, और लोहभस्म इन सबको एकत्रकर कुटकीके रसके ३ पुट दे घीग्वारके रसमें खरल कर एक २ मासेकी गोलियां बनावे. इनके सेवनसे पाण्डुरोग और कामला दूर होवे।

कामेश्वरोरसः

पलंसूतंपलंगंधंपथ्याचित्रकयोःपलम्।
मुस्तैलापत्रकाणांचमतिसार्द्धपलंक्षिपेत्॥
त्र्यूपणंपिप्पलीमूलंविषंचापिपलंन्यसेत्।
नागकेशरकंकर्षमेरंडस्यपलंतथा॥
पुरातनगुडेनैवतुल्येनैवविमिश्रयेत्।
मर्दयेत्कनकद्रावैर्भावयेच्चघृतान्वितम्॥
वटिकांवदरास्थ्याभांकारयेद्भक्षयेन्निशि।
पाण्डुरोगहरःसोऽयंरसःकामेश्वरःस्वयम्॥

अर्थ–पारा ४ तोले, गंधक ४ तोले, हरड़ और चीतेकी छाल प्रत्येक चार २ तोले. नागरमोथा, इलायची, पत्रज प्रत्येक ६ तोले. सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, और सिंगिया विष प्रत्येक ४ तोले. नागकेशर और अंडकी जड प्रत्येक १ तोला. सबको एकत्रकर कूटपीस सबके बराबर गुड मिलाय धतूरेके रससें घोट घीकी भावनादे बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावे और १ गोली रात्रिके समय खाय तो यह कामेश्वर रस पाण्डुरोगको दूर करे।

पाण्डुनिग्रहोरसः

अभ्रभस्मरसभस्मगंधकंलोहभस्ममुशलीविमर्दितम्। शाल्मलीजरसतोगुडूचिकाक्राथकैश्चपरिमर्दितोदिनम्॥ भावयेत्रिफलकार्द्रकन्यकावन्हिशिग्रुजरसैश्चसप्तधा। जायतेह्यभवतोमृतसन्त्रःशोपपांडुविनिवृत्तिदायकः॥ वल्लयुग्मपरिमाणतस्त्विमंलेहयेच्चघृतमाक्षिकान्वितम्। पथ्यमत्रपरिभाषितंपुरायच्चदेवपरिवर्ज्यवर्जनम्॥ शोपपाण्डुविनिवृत्तिदायकःसेवितस्तुयवचिंचिकाद्रवैः। नागराग्निजयपालकैस्तुवावज्रदुग्धपरिपक्वसर्पिषा॥ तक्रभक्तमिहयोजयेदतिस्निग्धमन्नमतिनूतनंत्यजेत्।

अर्थ–अभ्रकभस्म, पाराभस्म, शुद्धगंधक, लोहभस्म, प्रत्येक समान लेवे और सबको एकत्रकर मूसलीके रस, गिलोयके रस और सेमलके रसमें एक २ दिन खरल करे फिर त्रिफला, अदरक, घीगुवार, चीता और सहजनके रसकी सात २ भावना देवे तो यह रस अमृतके समान बने इसको ९ रत्ती सहत और घीके साथ खाय और जो वस्तु पांडुरोगमें वर्जित कही हैं उनको त्याग देवे और पथ्य सेवन करे तो यह रस पाण्डुरोग शोपरोगको दूर करे, अथवा इस रसको नौ जौ और इमलीके रसके साथ सेवन करे अथवा सोंठ, चीता और जमालगोटा एवं थूहरके दूधको दूधमें औटाकर उसके साथ सेवन करे इसके सेवन करनेवाला छाछ भात खाय, अथवा अत्यन्त चिकने पदार्थ और नवीन वस्तु सबको त्याग देवे, इसे पाण्डुनिग्रह रस कहते हैं।

नवायसचूर्णम्.

त्र्यूषणंत्रिफलामुस्तंविडंगंचित्रकंतथा ।
एतानिनवभागानिनवभागंहतायसं ॥
एतदेकीकृतंचूर्णंनरोष्टादशरक्तिकम् ।
प्रलिह्यान्मधुसर्पिर्भ्यांपिवेत्तक्रेणवासह ॥
गोमूत्रेणपिवेद्वापिपाण्डुरोगंसनाशयेत् ।
शोथंहृद्रोगमुदरंकृमिकुष्ठंभगंदरम् ॥
नाशयेदग्निमांद्यंचदुर्नामकमरोचकम् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिलिह्यात्कफसमृद्धिमान् ॥
अत्रनवायसंलोहंनवरक्तिकामितंभक्षणीयम्

अर्थ– सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आमला, नागरमोथा, वायविडंग और चीता ये नौ वस्तु एक २ तोला लेवे. और लोह भस्म (सारे) नौ तोले लेवे, सबको कूटपीस एकत्र कर १८ रत्ती चूर्ण सहत और घीके साथ अथवा छाछके साथ वा गोमूत्रके साथ पीवे तो पांण्डुरोग, सूजन; हृदयरोग, उदररोग, कृमिरोग, कोढ, भगंदर, मंदाग्नि, बवासीर, और अरुचिको दूर करे. जिसके कफकी अधिकता होवे वो इस **नवायस चूर्ण**को अदरक के रसके साथ सेवन करे । इस **नवायस** लोहमें ९ रत्ती लोह डालके खाना चाहिये क्योंकि **रसप्रदीप** में लिखा है **यथा** ।

गुंजामेकांसमारभ्ययावत्स्युर्नवरक्तिकाः ।
तावल्लोहंसमश्नियाद्यथादोषानलंनरः ॥

अर्थात् १ रत्तीसे लेकर नौ रत्ती पर्य्यन्त लोह खाना चाहिये. इसमें वैद्यको उचित है कि रोगीका बलाबल और जठराग्नि देखकर देवे । तात्पर्य यह है कि त्रिकुटा सहित लोहभस्म प्रथम दिन २ रत्ती खाय, दूसरे दिन ४ रत्ती, तीसरे दिन ६ रत्ती, इसी प्रकार प्रतिदिन दो२ रत्ती बढावे. जब नौ दिन होजावे तब त्याग देवे।

योगराजचूर्णम्.

त्रिफलायास्त्रयोभागास्त्रयस्त्रिकटुकस्यच ।
भागाश्चित्रकमूलस्यविडंगानांतथैवच ॥
पंचाश्मजतुनोभागास्तथारूप्यमलस्यच ।
माक्षिकस्यचशुद्धस्यलोहस्यरजतस्यच ॥
अष्टौभागसितायाश्चतत्सर्वंसूक्ष्मचूर्णितम् ।
माक्षिकेणाप्लुतंस्थाप्यमायसेभाजनेशुभे ॥
उदुंबरसमामात्रांततःखादेद्यथाग्निना ।
दिनेदिनेप्रयोगेनजीर्णेभोज्यंयथेप्सितं ॥
वर्जयित्वाकुलत्थांश्चकाकमाचीकपोतकान् ।
योगराजइतिख्यातोयोगोयममृतोपमः ॥
रसायनमिदंश्रेष्ठंसर्वरोगहरंशिवं ।
पांडुरोगंविषंकासंयक्ष्माणंविषमज्वरान् ॥
कुष्ठान्यलसकंमेहंश्वासंहिक्कामरोचकं ।
विशेषाद्धंत्यपस्मारंकामलांगुदजानिच ॥
सुवर्णमथवारौप्यंयोगेयत्रनसंभवेत् ।
तत्रलोहेनकर्मास्यभिषक्कुर्यादतंद्रितः ॥

अर्थ–त्रिफला, और त्रिकुटा तीन २ तोले चित्रककी जड और वायविडंग तोले २ भर शिलाजीत ५ तोले, रूपेकी कीटी, और सार एक एक तोले, शुद्ध सुवर्णमाखी १ तोले, मिश्री ८ तोले, सबको पीस बारीक चूर्ण करे । इसको सहतमें मिला लोहेके पात्रमें भर रखे, इसमेंसे तोलाभर नित्य भक्षण करे, अथवा बलाबल देखके मात्रा देवे. जब ये औषधी पच जावे तब यथेष्ट भोजन करे, परन्तु कुलथी, मकोय, कबूतरका मांस न खावे. यह संपूर्ण योगोंका राजा अमृतके तुल्य है. श्रेष्ठ रसायन सर्व रोग हरण कर्त्ता है. पाण्डुरोग, विष, खांसी, खई, विषमज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, श्वास, हिचकी, अरुचि, अपस्मार, कामला और बवासीर को दूर करे ।

विभीतकाख्यलवणम्.

कृत्वाग्निवर्णमलमायसंतुमूत्रेनिषिंचेद्बहुशोगवांतत् । तत्रैवसिंधूत्थसमंविपाच्यनिरुद्धधूमेतविभीतकाग्नौ ॥ तक्रेणपीतंमधुनाथवापि विभीतकाख्यंलवणंप्रयुक्तं । पाण्ड्वामयेभ्यो हितमेतदस्मात्पाण्ड्वामयघ्नंनहिकिंचिदस्ति ॥

अर्थ–लोहकीटीको खूब तपाय गोमूत्रमें बारबार बुझावे, फिर इसमें बराबरका सैंधानिमक मिलाके बहेडेकी निर्धूम अग्निमें पचावे, तो यह सिद्ध होवे. इस विभीतकलवणको छाछ और सहतके साथ सेवन करे यह पांडुरोगियोंको हितकारी और पांडुरोगको दूर करनेवाला, इससे बढकर दूसरा योग नहीं है. यह सारावली ग्रन्थमें लिखाहै ।

वृद्धनवायसचूर्णम्.

माक्षीकंत्रिफलात्रिकंत्रिकटुकंमुस्ताचतुर्जातकं । जंतुघ्नंमगधाजटासुरतरुद्राक्षानिशेद्वेशटी ॥ कर्पाशानियवानिवन्हिवदराजाजीद्वयांभोरुहैः । लोहादर्द्धपलांसिताद्विपलिकां किट्टन्तुसर्वार्द्धतः ॥ चूर्णसूक्ष्मतमंविधायमथितेनालोड्यवाभाव्यते । क्षौद्रेणानिलजान् रुजस्तुसकलाःश्वासप्रसेकामयान् ॥ शूलश्लीपदविद्रधिश्चजठरामर्शांसिमंदाग्निना । हन्यादामसमीरपांडुनिचयंकासंक्षयंमेहजित् ॥ एतद्वृद्धनवायसाख्यममृतंश्रीभोजभेडोवदत् ।

अर्थ–सुवर्णमक्खीकी भस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, मोथा, चातुर्जात, वायविडंग, पीपल, जटामांसी, देवदारु, दाख, हलदी, दारुहलदी, कचूर, अजवायन, चीतेकी छाल, बेरकी छाल, सफेद और स्याह दोनों जीरे, और कमलगट्टेकी मिंगी प्रत्येक एक २ तोला, लोहभस्म २ तोले, मिश्री ९ तोले, कीटीकी भस्म सबसे आधी ले. सबका बारीक चूर्णकर सहतके साथ अनुमान माफिक सेवन करे तो बादीके रोग, श्वास, रद्द, शूल, श्लीपद, विद्रधि, उदररोग, बवासीर, मंदाग्नि, आमवात, पाण्डुरोग, खांसी, क्षय, और प्रमेहको यह वृद्धनवायस चूर्ण दूर करे. यह श्रीभोज और भेड आचार्योंका कहा अमृतके तुल्य है, यह सारसंग्रहमें लिखा है ।

त्रिकत्रयादिलोहं.

पलंलोहस्यकिट्टस्यपलंगव्यस्यसर्पिषः । सितायाश्चपलंचैकंक्षौद्रस्यापिपलंतथा ॥ तोलैकंकान्तलोहस्यत्रिकत्रयसुभावितम् । ततःपात्रेविधातव्यंलौहेचमृन्मयेतथा ॥ हविषाभावितंचापिरौद्रेचशिशिरेतथा । भोजनादौतथामध्येचान्तेचापिप्रदापयेत् ॥ अनुपानंप्रदातव्यंतुल्वादोषबलाबलम् । कामलांपाण्डुरोगंचहलीमकसुदारुणम् ॥ निहन्तिनात्रसन्देहोभास्करस्तिमिरंयथा ।

अर्थ–शुद्धलोहकी कीटी, गौका घी, मिश्री और सहत प्रत्येक चार ४ तोले, कान्तिलोहकी भस्म १ तोले इन सबके चूर्णमें त्रिफला, त्रिकुटा और त्रिसुगंधकी भावना देकर लोहपात्रमें बन्दकर रख दे, अथवा मिट्टीके पात्रमें रख दे इसको धूपमें वा शरदीमें घृतकी भावना देकर रखछोडे इसको भोजनके आदि वा मध्य अथवा अन्तमें देवे और दोषोंका बलाबल निश्चयकर वैद्य अपनी बुद्धीके अनुसार अनुपान कल्पना करे तो ये कामला, पांडुरोग, हलीमक, इन सबको यह त्रिकत्रयादिलोह दूर करे ।

विडंगादिलोहं.

विडंगमुस्तत्रिफलादेवदारुषडषणैः । तुल्यमात्रमयश्चूर्णंगोमूत्रेष्टगुणेपचेत् ॥

तैरक्षमात्रांगुटिकांकृत्वाखादेद्दिनेदिने ।
कामलापाण्डुरोगार्त्तःसुखमाप्नुतेचिरात् ॥

अर्थ—वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, देवदारु, अडूसा, इनको समान भाग ले और सबकी बराबर मृतलोह चूर्ण लेवे, सबको अष्टगुने गोमूत्रमें पचाके तोले २ भरकी गोलियां बनावे और एक गोली नित्य सेवन करे तो कामला और पाण्डुरोगी शीघ्र सुखी हो ।

विडंगत्रिफलाव्योषंशुद्धलोहन्तुतत्समम् ।
पुरातनगुडेनाग्रेलेहयेद्दिनसप्तकम् ॥
श्वयथुंनाशयेत्क्षौद्रंपाण्डुरोगहलीमकम् ॥

अर्थ—वायविडंग, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक समान भाग ले. और सबकी बराबर शुद्ध लोहकी भस्म मिलावे. इसमें पुराना गुड मिलाकर ७ दिन खावे तो सूजन दूर हो और सहतके साथ चाटे तो पाण्डुरोग और हलीमक रोग दूर हो ।

दार्व्यादिलौहम्.

दार्वीसत्रिफलाव्योषविडंगान्यायसोरजः ।
मधुसर्पिर्युतंलिह्यात्कामलापांडुरोगवान् ॥

अर्थ—दारुहलदी, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग और लोह भस्म समानभाग लेके चूर्णकर सहतके और घीके संग चाटे तो कामला और पांडुरोगको दूर करे ।

मंडूरवज्रवटक.

पंचकोलंसमरिचंदेवदारुफलत्रिकम् ।
विडंगमुस्तयुक्ताश्चभागास्त्रिपलसम्मिताः ॥
यावन्त्येतानिचूर्णानिमंडूरद्विगुणंततः ।
पक्त्वाचाष्टगुणेमूत्रेघनीभूतेतदुद्धरेत् ॥
ततोक्षमात्रान्वटकानपिबेत्तक्रेणतक्रभुक् ।
पाण्डुरोगंजयत्याशुमन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥
अर्शांसिग्रहणीदोषमुरुस्तम्भमथापिवा ।
कृमिंप्लीहानमानाहंगलरोगंचनाशयेत् ॥
मंडूरोवज्रनामाऽयंरोगानीकप्रणाशनः ।

अर्थ—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, कालीमिरच, देवदारु, त्रिफला, वायविडंग, नागरमोथा, प्रत्येक पौनपाव ले. सबका चूर्णकर चूर्णसे दुगुनी शुद्ध मंडूरकी भस्म मिलावे, फिर अष्टगुने गोमूत्रमें औटावे. जब गाढा होजाय तब उतारकर तोले २ भरकी गोलियां बनावे, १ गोली छाछके साथ खाय और छाछकाही भोजन करे तो पाण्डुरोग, मंदाग्नि, अरुचि, बवासीर, संग्रहणी, उरुस्तंभ, कृमिरोग, प्लीहा, अफरा और गलरोग इस सब रोगसमूहको यह मंडूरवज्रवटक दूर करे, यह वृन्दग्रंथमें लिखा है ।

संभोहलौहम्.

त्रिकटुत्रिफलावन्हिविडंगंलोहमभ्रकम् ।
एतानिसमभागानिघृतेनगुटिकांकुरु ॥
कामलांपाण्डुरोगंचहृद्रोगंशोथमेवच ।
भगंदरंकृमिंकुष्ठंमन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥
तान्सर्वान्नाशयेदाशुबलवर्णाग्निवर्द्धनः ॥
सम्भोहलोहनामायंपाण्डुरोगेचपूजितः ।

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, चित्रक, वायविडंग, लोहभस्म और अभ्रकको समान भाग लेके घीसे गोलियां बनावे, यह कामला, पाण्डुरोग, हृदयरोग, सूजन, अरुचि, भगंदर, कृमिरोग और कोढको शीघ्र दूर करे. तथा बल वर्ण और अग्निको बढावे. यह संभोहलोह पाण्डुरोगमें माननीय है।

त्र्यूषणादिमंडूरम्.

स्विन्नमष्टगुणेमूत्रेलोहकिट्टंसुशोधितम् ।
पाकान्तेत्र्यूषणंवन्हिवरादार्वीसुरद्रुमान् ॥

विडंगबीजचूर्णंचमुस्तंकिट्टंसमंक्षिपेत् ।
प्रातःकर्षंभजेदस्यजीर्णेतक्रोदनंभजेत् ॥
हलीमकंपाण्डुरोगमर्शांसिश्वयथुन्तथा ।
उरुस्तंभंजयेदेतत्कामलांकुम्भकामलाम् ॥

अर्थ–शुद्ध कीटीको अठगुने गोमूत्रमें औटावे जब पक जावे तब सोंठ, मिरच, पीपल, चीतेकी छाल, हरड, बहेडा, आंवला, दारुहल्दी, देवदारु, वायविडंग और नागरमोथा, इन सबको कीटीके समान लेवे. सबको मिलाकर गोलियां बनावे. एक गोली नित्य सेवन करे तो हलीमक, पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, उरुस्तंभ, कामला और कुंभकामलाको दूर करे।

विभीतकादिवटी.

विभीतकायोमलनागराणां चूर्णंतिलानांच गुडप्रमुख्यः । तक्रानुपानाद्वटिकाप्रयोज्या हिनस्तिरोगानपिपाण्डुरोगान् ॥

अर्थ–बहेडा, लोहकीटी, सोंठ, और तिलका चूर्ण कर इसमें गुड मिला कर गोलियां बनावे और छाछके साथ इस विभीतकादि वटीको सेवन करे तो घोर पाण्डुरोगको दूर करे।

पुनर्नवादिमंडूर.

पुनर्नवात्रिवृद्व्योषंविडंगंदारुचित्रकम् ।
कुष्ठंहरिद्रेत्रिफलादंतीचव्यंकलिंगकम् ॥
कटुकापिप्पलीमूलंमुस्तंशृंगीचकारवी ।
यवानीकट्फलंचेतिपृथक्पलमितंमतम् ॥
मंडूरंद्विगुणंचूर्णाद्गोमूत्रेऽष्टगुणेपचेत् ।
गुडवद्वटकान्कृत्वातक्रेणालोड्यतान्पिबेत् ॥
पुनर्नवादिमंडूरवटकोऽश्विविनिर्मितः ।
पांडुरोगंपुराणंचकामलांचहलीमकम् ॥
श्वासंकासंचयक्ष्माणंज्वरंशोथंतथोदरं ।
शूलंप्लीहानमाध्मानमर्शांसिग्रहणींकृमीन् ॥
वातरक्तंचकुष्ठंचसेवनान्नाशयेद्ध्रुवम् ।

अर्थ–सांठकीजड, निसोथ, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, दारुहलदी, चीतेकी छाल, कूठ, हलदी, देवदारु, हरड, बहेडा आंवला, दंती, चव्य, इन्द्रजौ, कुटकी, पीपलामूल, नागरमोथा, काकडासिंगी, सौंफ, अजमायन, और कायफल, प्रत्येक ४ तोले लेवे। सबका चूर्णकर, चूर्णसे दूनी मंडूर लेकर अठगुने गोमूत्रमें पचावे. फिर उक्त औषधियोंके चूर्णको और गुडको मिलाके गोलियां बनावे, इसको छाछमे मिलाकर पीवे. यह पुनर्नवादि मंडूर अश्विनीकुमारने निर्माण किया है। यह पुराने पाण्डुरोग, कामला, हलीमक, श्वास, खांसी, खई, ज्वर, सूजन, उदर, शूल, प्लीहा, अफरा, बवासीर, ग्रहणी, कृमिरोग, वातरक्त और कुष्ठ इसके सेवनसे नष्ट होवे।

हंसमंडूरम्.

गोमूत्रेऽष्टगुणेलोहकिट्टंप्राग्विपचेत्ततः ।
फलत्रयांबुदव्योषविडंगग्रन्थिकाग्निकं ॥
चव्यदार्वींद्रफलदान्समान्संचूर्ण्यचूर्णकं ।
तत्सर्वंतत्रतत्तुल्यंक्षिपेत्कर्षमितंतथा ॥
भोक्तव्यमौषधेजीर्णेपिबेत्तक्रंसभोजनं ।
हंसमंडूरनामायंरसःसर्वरसाग्रणीः ॥
हन्तिपाण्डुरुजःसर्वाःसहलीमककामलाः ।
उरुस्तंभंतथशाथमुन्मूलयतिमूलतः ॥

अर्थ–प्रथम अठगुणे गोमूत्रमें कीटीको पचावे, फिर त्रिफला, मोथा, सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, पीपलामूल, चितेकी छाल, चव्य, दारुहलदी, और इन्द्रजौ समान लेकर चूर्ण कर छाछके साथ पीवे. जब औषधी पच जावे तब छाछ भातका भोजन करे. यह हंसमंडूर संपूर्ण रसोंमें श्रेष्ठ है. पाण्डुरोग, हलीमक, कामला, उरूस्तंभ और सूजनको न-

डसे उखाड देवे ।

मधुमंडूर.

गृहीत्वाभिषक्प्रस्थमंडूरभागंशृते त्रैफलेमर्द यित्वाचयामं । पुटेपाचयेद्यामयुग्मंकृशानोः पुटानीहदेयानिचंद्राक्षिवारं ॥ तथाधेनुमूत्रे कुमारीरसेचविधेयश्चपंचामृतेयोगराजः । भ वेत्तेंसधुनागैःपुटैःसिद्धिदोयमचिंत्यप्रभावश्च मंडूरएषः ॥ मधुमंडूरकणामधुनाचिरपाण्डु गदंननुहेममितः । जनकोरुधिरस्यनिहन्तिप रंविविधार्तिहरस्त्वनुपानवलैः ॥

अर्थ-शुद्ध मंडूर १ सेरको त्रिफलाके काढेमें प्रहरभर खरल करे, फिर दो प्रहर संपुटमें रखकर अग्नि देवे इस प्रकार २१ बार त्रिफलाके काढेमें घोटे और अग्निमें फूंके फिर गोमूत्र, घीगुवार, पंचामृत (गिलोय, गोखरू आदि) इनके रसका पुट दे २ कर फूंके इस प्रकार ८१ पुट देनेसे यह अचिंत्यप्रभाववाला और सिद्धिदाता मंडूर बने यह मधुमंडूर पीपलके चूर्ण और सहतके साथ १ मासेके अनुमान सेवन करनेसे पाण्डुरोगको दूर करे, रुधिरको उत्पन्न करे, और अनुपानके जोरसे औरभी अनेक रोगोंको जीते ।

खदिरलोहम्.

पचेत्खदिरनिःकाथेविडंगाब्दान्ययोरजः । वलातिक्तासितायष्टीत्रिफलारजनीद्वयैः ॥ लेहंलिह्यात्समध्वाज्यंपाण्डुरोगहलीमकी । सलेहःकामलंहन्यादपिसंवत्सरोत्थितं ॥

अर्थ-खैरके काढेमें वायविडंग, नागरमोथा, और लोहेकी भस्मको पचावे. तथा इसीमें गंगेरन, कुटकी, मिश्री, मुलेटी, त्रिफला, हलदी और दारुहलदी डालके अवलेह बना लेवे इसमें सहत और घी मिलाकर खावे तो पांडुरोग और हलीमक दूर होवे और एक वर्षकाभी पीलियारोग दूर हो ।

लोहसुन्दरोरसः

सूतभस्ममृतलोहगंधकौभागवर्द्धितमिदंविनि क्षिपेत् । दीर्घनालदृढकूपिकोदरेमृत्स्नयाच परिवेष्टयतांक्षिपेत् ॥ चुल्हिकोपरिचकूपि कामुखेमक्षिपेचवरशाल्मलीद्रवैः । त्रैफलंव सुगुडूचिकारसंपाचयेत्तुमृदुवन्हिनादिनं ॥ स्वांगशीतलमिमंप्रगृह्यचत्र्यूपणार्द्रकरसेनभा वयेत् । लोहसुन्दररसोयमीरितःशोपपाण्डु विनिवृत्तिदःपरः ॥

अर्थ-चन्द्रोदय, लोहभस्म, गंधक इनको क्रमसे एकसे दूसरेको जियादा लेवे, सबको एकत्र खरलकर लंबी नालकी शीशीमें भरदेवे, फिर उसपर कपरोटीकर धूपमें सुखालेवे, फिर चूल्हेपर चढावे जब अग्नि लगने लगे, तब उस शीशीमें सेमरका रस त्रिफला, वृद्धिऔषधि और गिलोयके रसमें मंदाग्नि द्वारा एक २ दिन पचावे, फिर स्वांग शीतल होनेपर शीशीसे निकाल त्रिकुटाके काढेकी और अदरकके रसकी भावना देवे. तब यह लोहसुंदर रस बने. ये शोपरोग और पाण्डुरोगको दूर करे. ।

कांस्यपिष्टीरसः

कांस्येनपिष्टिकांकृत्वादेवदालीरसप्लुतां । तीक्ष्णंगंधरजोयुक्त्याभुक्तंहंतिहलीमकम् ॥

अर्थ-कांसेकी पिष्टीमें बंदालका रस और सहननेका (अथवा गंधकका चूरा) मिलाकर सेवन करे तो हलीमक रोग दूर होवे ।

त्रिफलायागुडूच्यावादार्व्यानिंवस्यवारसः । प्रातर्माक्षिकसंयुक्तःशीलितःकामलापहः ॥

अर्थ-त्रिफला, गिलोय, दारुहलदी अथवा

नींबका रस इनमेंसे कीसी एकमें सहत मिला-कर सेवन करे तो कामला रोग नष्ट हो ।

सिंदूरभूषणोरसः

शुद्धंसूतंचसिंदूरंपलैकैकंविमर्दयेत् ।
वासारसेनयामैकंतेनकुर्याच्चचक्रियां ॥
सुपक्कांकारयेन्मूषामुत्तमांद्वादशांगुलां ।
तन्मध्येगंधकंसूतंक्षिपेत्पलचतुष्टयं ॥
पूर्वोक्तचक्रिकांवक्रेदत्वारुध्वापुटेल्लघु ।
जीर्णेगंधेसमुद्धृत्यचक्रिकांतांविचूर्णयेत् ॥
चूर्णाद्दशगुणंयोज्यंमृतलोहंचमर्दयेत् ।
लशुनेनदशांशेनचणमात्रावटीभवेत् ॥
वातपाण्डुहरःसिद्धोरसःसिंदूरभूषणः ।
पिबेच्चानुमपामार्गस्यैरंडस्यचमूलिकां ॥
तक्रैःपिष्टाथकर्षैकंहन्तिपाण्डुसकामलं ।

अर्थ–शुद्धपारा और सिंदूर चार २ तोले दोनोंको खरलकर अडूसेके रससें १ प्रहर ख-रल करे, फिर इसकी टिकिया बनावे पश्चात् १२ अंगुलकी पक्की मूष बनाके उसके बीचमें चारपल गंधक और पारा डालके पूर्वोक्त च-क्रिका उसके मुखपर रख मुखको बंदकर लावक पुटमें फूंक देवे जब गंधक भस्म हो-जावे तब उन टिकियोंको निकालकर चूर्णकरे, फिर इस चूर्णसे दशगुणी लोहभस्म मिलाके लहसनके रसमें खरलकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे, ये वात पांडुहरनेवाला सिंदूरभूषणरस सिद्धि होवे इसको खाकर ऊपरसें औंगा अरं-डकी जडको छाछमें पीसकर १ तोलेके प्रमाण पीवे तो कामला सहित पाण्डुरोगका नाश करे।

त्रिसंवट्टोरसः

सूतार्कहेमताराणांसमांपिष्टींप्रकल्पयेत् ।
जंबीरनीरसंयुक्तमातपेशोषयेद्दिनं ॥
ऊर्ध्वाधोद्विगुणंदेयंगंधमस्यांक्षिपेत्सितिम् ।
भाण्डगर्भेनिरुध्याथद्वियामंपाचयेल्लघु ॥
आदायचूर्णयेत्श्लक्ष्णंत्रिसंवट्टोमहारसः ।
हरीतक्यामग्रंदेयंद्विगुंजंपाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ–पारा, तांबा, सुवर्ण और चांदी इ-नकी समान भाग पिट्ठी ले जंबीरीके रसमें एक दिन धूपमें खरल करे, फिर एक सरावमें दूनी गंधक बिछाय बीचमें पिट्ठीको रख ऊपरसे फिर गंधक डाल देवे, और बंदकर दो प्रहर लावकयंत्रमें पचावे फिर निकालकर चूर्णकर डाले. तो यह त्रिसंवट्टरस सिद्ध होवे, इस-को २ रत्ती हरड और गुडके साथ देवे तो पाण्डुरोगको दूर करे, यह रसरत्नाकरमें लिखा है ।

लोहगर्भोरसः

रसभस्मचतुर्भागोलोहभस्माष्टभागकम् ।
वन्हिमुस्ताविडंगंचत्रिफलाकुटजत्त्वचः ॥
त्रिकटुंचूर्णितंयोज्यंप्रतिभागंचलेहयेत् ।
मधुनाकर्षमात्रंचपित्तपाण्डुहरंपरं ॥
रसोयंलोहगर्भाख्योदेयंपथ्यंमृगांकवत् ।
मुस्तामतिविषंशुंठीगुडूचीचिरतिक्तकां ॥
क्राथयित्वापिबेद्रात्रौसुशीतंमधुनासह ।

अर्थ–चंद्रोदय ४ तोले, लोहभस्म ८ भाग, चीतेकी छाल, नागरमोथा, बायविडंग, हरड, बहेडा, आमला, कूडाकी छाल, सोंठ, मिरच और पीपल प्रत्येक एक २ तोला । सबको कूट पीस चूर्ण कर सहतके साथ १ तोला चाटे तो पाण्डुरोगको दूर करे, यह लोहगर्भ-रस है. इसमें मृगांगके समान पथ्य देवे, और रात्रिमें नागरमोथा, अतीस, सोंठ, गि-लोय, चिरायता इनका काढा सहत मि-लाकर पिलावे ।

त्रैलोक्यनाथोरसः

पलानिचत्वारिरसस्यपंचगंधस्यसत्वस्यगुडू चिकायाः। व्योपस्यचूर्णस्यचतालमूल्याः सशालमलस्येहपलत्रयंच ॥ पृथक्पृथक्पद्गुणितस्यचाग्रेलोहस्यसर्वंत्रिफलाजलेन। घृष्टंचतुःषष्टिमितंतदर्द्धास्युर्भावनामार्कवजद्रवस्य ॥ शिग्रुत्थनीरेणचषोडशाग्रेंतथानलोत्थाग्रहकन्यकायाः। आर्द्रद्रवस्येतिरसोयुक्तःपाण्डुक्षयश्वासगदादिहंता।क्षौद्रेणवाशर्करयाघृतेनकर्षार्द्धमेतस्यभजेत्प्रयत्नात् ॥

अर्थ–पारा ४ पल, गंधक ५ पल, गिलोयका सत्व, सोंठ, मिरच, पीपल, मुसली और सेमलको तीन २ पल लेवे। एकत्र कर सबकी बराबर लोहकी भस्म मिलाकर त्रिफलाके काढेकी ६४ भावना देवे, और ३२ भावना भांगरेके रसकी देवे. और १६ सहजनेके रसकी देवे, तथा चित्रेके रसकी, घीगुवार और अदरकके रसकी आठ २ भावना देवे, तो यह रस पांडुरोग, क्षय और श्वासका नाश करनेवाला बने. इसको छः मासे सहत अथवा मिश्री वा घीके साथ सेवन करे।

आरोग्यसागरोरसः

एकैकंपलगंधाश्मरसंसंभृतकज्जलीं।
तस्यामध्येद्विपलिकंताप्यंतालंपलोन्मितं ॥
पलमात्रंमनोह्वांचपलमभ्रकभस्मकम्।
सुखस्पर्शस्यकर्षंचनिक्षिप्यपरिमर्द्यच ॥
मूषामध्येविनिक्षिप्यपिनद्धांतर्मुखींततः।
पत्रेणशुद्धताम्रस्यनिर्दलेनत्रिकर्षिणा ॥
मूषागृद्भिःसवस्त्राभिःपरिरुध्ययथादृढं।
परिशोष्यगिरंडैश्चपुटेद्गजपुटेनहि ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यखोटीभूतंविचूर्णयेत्।
गंधतालशिलाचूर्णैःसहितंखल्वचूर्णकं ॥
पुटेत्क्रोडपुटेनैवदशवारंततःपरं।
क्षिपेद्विंशतिभागेनवैक्रांतंभस्मतांगतं ॥
विमृद्यगोलकंकृत्वाक्षिपेद्रौप्यकरंडके।
आरोग्यसागरोनामरसोतिगुणवत्तरः ॥
हन्यात्पाण्डुमरोचकंगुदगदंवातंचपित्तंकफं।
गुल्माध्मानकशोफरोगमथचश्वासंशिरोर्तिंवमिं ॥ अत्यर्थंनिलमंदतांगुरुमुदावर्तंविचित्रंज्वरान्। रोगानप्यपरान्रतिद्वयमितंसूतोमरीचाज्ययुक् ॥

अर्थ–पारा और गंधक चार २ तोले ले, दोनोंकी कजली कर इसमें ८ तोले सोनामक्खीकी भस्म, और हरिताल, मनसिल, अभ्रककी भस्म प्रत्येक ४ तोले और १ तोला सज्जीखार सबको एकत्र कर खरल करे, फिर तीन तोले तांबेकी डिबिया बनाय उसमें पूर्वोक्त औषधियोंको रख बंद कर देवे, फिर कपरमिट्टीकर धूपमें सुखाय आरने कंडोंके गजपुटमें रख फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाले. तब वह डेलासा निकलेगा, उसको तोडकर चूर्ण करे फिर इसमें गंधक, हरिताल, मनसिल, मिलाकर वाराहपुटमें दश वार फूंके, फिर इसमें बीस भाग (वैक्रांत) यानी कांसुलाकी भस्म मिला सबको खरल कर गोलियां बनावे और चांदीके डिब्बेमें रखे यह आरोग्यसागररस अत्यन्त गुणदाता है। पाण्डुरोग, अरुचि, बवासीर, वातपित्त, कफ, गोला, अफरा, सूजन, श्वास, मस्तकपीडा, वमन, अत्यन्त अग्निकी मंदता, और उदावर्त्त आदि अनेक रोगोंको और अनेक प्रकारके ज्वरोंको काली मिरचके चूर्ण और घीके साथ दो रत्ती देनेसे दूर करे।

अमृताख्याहरीतकी.

शतावरीभृंगराजपुनर्नवकुरंटकः।

प्रतिसप्तपलंचूर्णजलेकाथ्यंचतुर्गुणे ॥ पादशेषंकषायंतंवस्त्रपूतंसमाहरेत् । हरीतकीफलंतस्मिंपष्ट्याधिकशतत्रयम् ॥ पाचयेच्छोपयेत्पश्चात्रिंशद्दुग्धपलैःपचेत् । भित्वानिवारयेद्दंडंतद्गर्भेचक्षिपेदिदं ॥ षट्पलौरसगंधौद्वौसुपत्रेचक्षणंपचेत् । उत्तार्यचालयेत्तावद्यावत्कठिणतांव्रजेत् ॥ चूर्णयित्वामृतासत्वपलान्सप्तविमिश्रयेत् । मधुनावटिकाकार्य्यापष्ट्याधिकशतत्रयम् ॥ एकैकाह्यभयागर्भेकृत्वासूत्रेणवेष्टयेत् । मधुभाण्डेक्षिपेत्पश्चादेकैकंभक्षयेदिनम् ॥ शुष्कपाण्डुहरासम्यगमृताख्याहरीतकी ।

अर्थ–शतावर, भांगरा, सांठकी जड, और पियावांसा प्रत्येक ७ तोला लेकर सबको कूट चौगुने जलमें काढा करे, जब पानी जल-कर चतुर्थांश रहजाय तब उतार कपडेमें छान लेवे. और उसमें ३६० बडी और मोठी हरड डालके पचावे, फिर सुखाकर ३० पल दूधमें औटावे, पीछे गुठली निकालकर ये वस्तु भरे. पारा और गंधक प्रत्येक ६ पल दोनोंको किसी पात्रमें रख थोडी देर अग्निपर पचावे फिर उतारकर जबतक गाढे नहो तब तक चलाता रहे, फिर इसमें गिलोयका सत्व मिलाकर सहतमें ३६० गोलियां बांधे. और एक२गोली पूर्वोक्त हर्डेमें भर देवे, और सूतसे लपेट देवे फिर एक पात्रमें सहत भरकर उसमें हर्डोको डालदेवे. इनमेंसे प्रतिदिन एक हरड भक्षण करे तो शुष्क पाण्डुरोगको ये अमृताख्य हरीतकी दूर करे ।

मदेभसिंहोरसः

रसगंधवराटताम्रशंखंविषवंगाभ्रककान्ततीक्ष्णमुंडं । अहिहिंगुलटंकणंसमांशंशकलंतात्रिगुणंपुराणकिट्टं ॥ पशुमूत्रविशोधितंसुभृष्टात्रिफलाभृंगतथार्द्रकोत्थनीरैः । सुविशोध्यवरामृतालिवांसस्वरसैरष्टगुणैःपुनर्नवोत्थैः॥ पृथगग्निकृतंघनंविपाच्यगुटिकागुंजयुतंनिजानुपानैः । ज्वरपाण्डुतृषास्रपित्तमेहक्षयकाशस्वरहाग्निसादमूर्च्छान् ॥ पवनादिपुदुस्तराष्टरोगान्सकलंपित्तहरंखुदावृतंच । गहनाकिमसौयथार्थनामासकलव्याधिहरोमदेभसिंहः ॥ इतिमदेभसिंहोरसः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, कौडीकी भस्म, ताम्रभस्म, शंखभस्म, विषवंग, अभ्रकभस्म, कान्तलोह, तीक्ष्णलोह, और मुण्डलोह तथा शीशा इनकी भस्म, हींगलू, और सुहागा प्रत्येक समान भाग लेवे. तथा सबसे तिगुनी पुरानी कीट लेवे, उसको गोमूत्रमें शुद्ध करलेवे. फिर त्रिफला, भांगरा और अदरख. इनके रसमें शुद्ध करे. पश्चात् सम्पूर्ण पूर्वोक्त औषधियोंको मिलाकर त्रिफला, गिलोय और पाटलके स्वरसमें खरल करे. फिर सब औषधियोंसे अठगुने सांठके रसमें डालके अग्निपर पचावे, जब गाढा होजावे तब रत्ती २ भरकी गोलियां बनावे (कोई कहता है त्रिफला आदि प्रत्येकके अठगुने रसमें पचाकर गोलियां बनावे) एक गोली पृथक् पृथक् रोगोंमें अपने २ अनुपानके साथ देवे तो ज्वर, पाण्डुरोग, तृषा, रक्तपित्त, खई, खांसी, श्वास, स्वरभंग, मन्दाग्नि, मूर्च्छा, वातव्याधि आदि आठ प्रकारके दुष्टरोग तथा सर्व प्रकारके पित्त विकार, और उदावर्त्त इनको शीघ्रही नाश करे । बहुत कहना क्या है असल तो यों है कि हाथीरूप, संपूर्ण रोगोंको यह सिंहरूप है. यह कश्यपसंहितामें लिखा है ।

तीक्ष्णादिरसः

तीक्ष्णसूतककान्ताभ्रशुल्वसूतकतालकं ।
देवदालीरसैःपिष्टंवालुकायंत्रमूर्च्छितम् ॥
अमृतोत्पलकल्हारकंदद्राक्षासमन्वितम् ।
पिष्टंयष्ट्यंभसाक्षौद्रसिताभ्यांकामलामणुत् ॥

अर्थ—खेरीलोह, शुद्धपारा, कान्तलोहकी भस्म, अभ्रक, ताम्रभस्म, वंगभस्म, इनको समान भाग लेकर बंदालके रसमें खरलकर वालुकायंत्रमें पचावे. फिर विष, कमल, लाल कमल और दाखके रसमें खरल करे, तथा मुलहटीके स्वरसमें सहत और मिश्री मिलाकर देवे तो कामलारोग दूर हो ।

त्रियोनिरसः

ताम्रस्यतुर्यभागेनरसेनोत्पल्यभावयेत् ।
निम्बुद्रावेणसंयोज्यःसूर्यतापेविनिक्षिपेत् ॥
ऊर्ध्वाधोगंधकंदत्वामृत्स्नयासन्निरुध्यच ।
यामद्वयन्तुपक्वंचस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
गुंजामात्रंददीतास्यभावयेद्गुडसंयुतम् ।
त्रियोन्याख्योरसोह्येषशोफपाण्डुपनोदनः ॥

अर्थ— ४ तोले शुद्ध ताम्रके कंटकवेधी पत्रोंको १ तोला पारा चराकर नींबूके रसमें खरलकर धूपमें सुखालेवे, फिर सराव संपुटमें ऊपर नीचे गंधक रख कपरमिट्टी कर दोप्रहरकी अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब निकाल लेवे, इसमेंसे १ रत्ती गुडके साथ देवे तो यह त्रियोनिरस सूजन और पाण्डुरोगको दूर करे ।

कांस्येनपिष्टःशिलयासहितःपाचितोरसः ।
हताभ्यांतीक्ष्णताम्राभ्यांयुतोहन्तिहलीमकम् ॥

अर्थ—कांसेको मनसिलके साथ पीस और उसमें पारा मिलाकर पचावे. फिर इसमें मृत खेरीलोह और ताम्रभस्मके साथ सेवन करे तो हलीमकरोग दूर होवे ।

हरिद्रालोहम्.

लोहचूर्णनिशायुक्तंत्रिफलाकटुरोहिणी ।
मलिह्यमधुसर्पिभ्यांकामलार्त्तःसुखीभवेत् ॥

अर्थ—लोहभस्ममें हलदी, त्रिफला, और कुटकीका चूर्ण मिलाकर सहत और घी के साथ खाय तो कामलारोगवाला सुखी होवे ।

रक्तपित्ताधिकारः.

रक्तपित्तकुठारोरसः

शुद्धपारदवलिमवालकंहेममाक्षिकभुजंगरंगकं । मारितंसकलमेतदुत्तमंभावयेच्चविततंद्रवैस्त्रिशः ॥ चंदनस्यकमलस्यमालतीकोरकस्यवृपपल्लवस्यच । धान्यवारणकणाशतावरीशाल्मलीवटजटामृतस्यच ॥ रक्तपित्तकुलकंडनाभिधोजायतेरसवरोस्रपित्तिनाम् । माणदोमधुवृपद्रवैरयंसेवितस्तुवसुकृष्णलोमतः ॥ नास्त्यनेनसममत्रभूतलेभेपजंकिमपिरक्तपित्तिनाम् ।

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, मूंगेकी भस्म, सोनामक्खीकी भस्म, सीसेकी भस्म, और रांगकी भस्म इन सबको बराबर लेवे. फिर चंदनके काढेकी कमल, मालती, कंकोल, अडूसेके पत्तोंकी, धनियां, गजपीपल, पीपल, शतावरी, सेमलके मूंसलेके रसकी, वडकी जटा और विष इनके रस वा काढेकी भावना दे तो रक्तपित्त नाशकारी सर्वोत्तम रस बने. इसे सहत और अडूसाके रसमें आठरत्ती इस रसका चूर्ण मिलाकर सेवन करे तो सर्व प्रकारका रक्तपित्त दूर हो इससे परे रक्तपित्तकी हरणकर्त्ता दूसरी औषधि नहीं है ।

बोलपर्पटीरसः

सूतगंधकसुकज्जलिकायाःपर्पटीसमयुतासमभागं ॥ बोलचूर्णविहितंमतिवाप्यंस्याद्रसोयमसृगामयहारी । वल्लयुग्मयुगलंमतिदेयंशर्करामधुयुतःकिलदद्यः ॥ रक्तपित्तगुदजस्तु नियोनिस्रावमाशुविनिवारयतीह ।

अर्थ–पारा, गंधक दोनों समानभाग ले कजलीकर. पर्पटी बनावे. उस पर्पटीमें समानभाग बोल चूर्ण मिलावे तो यह रक्तपित्त हरणकर्त्ता रस बने. इसमेंसे ६ रत्ती चूर्ण मिश्री और सहतके साथ देवे तो रक्तपित्त, गुदाके रोग, योनिस्राव ये तत्काल दूर हो ।

पटोलम्रायसंचूर्णंसूतेन्द्रसमचारितं ।
लोहारिमृगसंसृष्टंरक्तपित्तहरंपरम् ॥

अर्थ–पटोलपत्र, लोहभस्म, इनमें समान भाग पारद मिलावे फिर इसमें कौडी मिलाकर सेवन करे तो रक्तपित्त दूर हो ।

वृषादलानांस्वरसस्यकर्षंरसेन्द्रगुंजामधुशर्करायुतम् । लिहन्प्रभातेमनुजोनिहन्याद्दुःखाकरंदारुणरक्तपित्तम् ॥

अर्थ–अडूसेके पत्तोंका रस १ तोले, चन्द्रोदय १ रत्ती, इनमें सहत और मिश्री मिलाके प्रातःकाल चाटे तो घोर दुःखदाई रक्तपित्त भी दूर होवे ।

पारदंहिंगलूकंचऊर्ध्वयंत्रेणमेलयेत् ॥
कुक्कुटांडरसंभागंटंकणक्षारमेवच ।
गंधकस्यतथाभागंघृतेनपरिमर्दयेत् ॥
सिद्धंरसंसमादायजीरतोयेनदापयेत् ।
दिनानित्रीणिमाषंचग्रहणींरक्तदोषनुत् ॥
ज्वरदाहविनाशंचरक्तपित्तनिवारणम् ।

अर्थ–पारा और हींगलू दोनोंको घोट ऊर्ध्वयंत्र द्वारा पारेको निकाल लेवे, फिर मुर्गेके अंडेकी जरदीमें घोटके उडावे फिर सुहागा, गंधक, राल और घृतसे उस पारदको खरल करे, जब सिद्धि होजावे तब १ मासे जीरेके जलके साथ तीन दिन सेवन करे तो संग्रहणी, रुधिरविकार, ज्वर, दाह और रक्त पित्तको दूर करे ।

चन्द्रकलारसः

प्रत्येकंतोलमानेनसतकंताम्रभस्मकम् । दिनानित्रीणिगुटिकांकृत्वाचाग्नौविनिक्षिपेत् । ततःशुष्कंसमादायपुनरेवचमर्दयेत् ॥ समस्तैःसमभागैश्चकृत्वाकज्जलिकांचतः । मुस्तादाडिमदूर्वाचकेतकीस्तनवारिभिः ॥ सहदेव्याःकुमार्याश्चपर्पटस्यापिवारिणा । रामशीतलिकातोयैःशतावर्यारसेनच ॥ भावयित्वाप्रयत्नेनदिवसेदिवसेपृथक् । तिक्तागुडूचिकासत्वंपर्पटोशीरमागधी ॥ शृंगाटकंसारिवाचसमानंसूक्ष्मचूर्णकं । द्राक्षादिककषायेणसप्तधापरिभावयेत् ॥ ततःपोताश्रयंक्षिप्त्वावध्यःकार्याश्चणोपमाः । अयंचन्द्रकलानामरसेन्द्रःपरिकीर्तितः ॥ सर्वपैत्तगदध्वंसीवातुपैत्तगदापहः । अन्तर्वाह्यमहादाहंविध्वंसनमहाक्षयः ॥ ग्रीष्मकालेशरत्कालेविशेषेणप्रशस्यते । कुरुतेनाग्निमांद्यंचमहातापज्वरंहरेत् ॥ भ्रमंमूर्च्छाहरत्याशुस्त्रीणांरक्तमहास्रवं । ऊर्ध्वाधोरक्तपित्तंचरक्तवान्तिविशेषतः ॥ मूत्रकृच्छ्राणिसर्वाणिनाशयेन्नात्र संशयः । सपटोलकहिंगुलःसक्षौद्रोरक्तपित्तजित् ॥ नवनीतंसितालाजाद्राक्षयासहभक्षयेत् । मस्तकेचघृतंदद्याद्रक्तपित्तहरंपरम् ॥ द्राक्षावासायुगंव्याघ्रशर्कराभावितंपिबेत् । वासारससिताक्षौद्रैर्लाजांवाशर्करासमां ॥ भक्षयेद्रक्तपित्तार्तःतृष्णादाहज्वरंजयेत् ।

अर्थ–शुद्धपारा और ताम्रभस्म दोनोंको एक २ तोले ले गोली बनावे, और संपुट कर तीनदिन अग्निमें रखे फिर निकालके बराबर-की गंधक डाल कजली करे. इसमें नागरमोथा, अनारदाना, दूब, केतकी, दूध, सहदेई, घी-गुवार, पित्तपापडा, रामशीतला, और शतावर प्रत्येकके रसकी एक २ दिन भावना दे फिर चिरायता, गिलोयसत्त, पित्तपापडा, खस, पीपल, सिंघाडा और सारिवाकों समान ले चूर्ण कर द्राक्षादिक काढेकी सात भावना देवे, फिर अग्निके आश्रय गाढा कर चनेके बराबर गोलियां बनावे. इसे चन्द्रकला रसेन्द्र कहते हैं, यह सर्व प्रकारके पित्तरोग, तथा वातपित्त विकार, देहके बाहर भीतरका घोर दाह, महाघोर ज्वर, श्रम, मूर्च्छा, स्त्रियोंके अत्यंत रुधिरस्राव, ऊर्ध्व रक्तपित्त, तथा नीचेका रक्तपित्त, रुधिरकी वमन, सर्व प्रकारका मूत्रकृच्छ्र, इन सब रोगोंको दूर करे । इसको गरमीकी ऋतुमें अथवा शरदऋतुमें विशेषकर देवे. ये मंदाग्नि नहीं करता पटोलपत्रके काढेमें हींगलू और सहतभी मिला देवे तो रक्तपित्तको दूर करे । मक्खन, मिश्री, खील, दाख इनके साथ खाय, मस्तकमें घीकी मालिश करावे तो रक्तपित्तकी बीमारी दूर होवे । दाख और अडूसेके काढेमें मिश्री मिला इसके साथ इस रसको सेवन करे तो अथवा अडूसेका रस मिश्री और सहत मिला इसके साथ या मिश्री मिले खीलके यूषके साथ इस रसकी मात्रा मिलाकर पीवे तो रक्तपित्त, तृष्णा, दाह और ज्वरको दूर करे ।

अर्केश्वरः

मृतार्कंमृतवंगंचमृताभ्रंचसमाक्षिकम् । अमृताम्बुरसैर्भाव्यंत्रिसप्तकपुटैपचेत् ॥ वासाकंदविदारीभ्यांचतुर्गुंजाप्रमाणतः । भक्षणाद्धिनिहन्त्याशुरक्तपित्तंसुदारुणम् ॥

अर्थ–ताम्रभस्म, वंगभस्म, अभ्रक, और सोनामक्खीको गिलोय और नागरमोथाके रसके २१ पुट देकर सरावसंपुटमें रख फूंक देवे. फिर अडूसा सहत और बिदारीकंदके रसमें चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इसके सेवनसे रक्तपित्त तत्काल दूर होवे ।

सुधानिधिरसः

सूतंगंधंमाक्षिकंचैवलोहंसर्वंघृष्ट्वात्रिफलेनोदकेन । लोहेपात्रेगोमयैर्गोपुटित्वारात्रौदद्याद्रक्तपित्तप्रशान्त्यै ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, सोनामक्खी की भस्म, और लोहभस्मकी त्रिफलाके काढेमें खरलकर लोहपात्रमें रख आरने उपलोंका पुट देवे इसकी २ रत्ती रात्रिमें खावे तो रक्तपित्त शांत हो ।

आमलाद्यंलौहम्.

आमलंपिप्पलीचूर्णंतुल्ययासितयासह । रक्तपित्तहरंलोहंयोगराजमिदंस्मृतम् ॥ वृष्याग्निदीपनंबल्यमम्लपित्तविनाशनम् । पित्तोत्थानपियातोत्थान्निहन्तिविविधान्गदान् ॥

अर्थ–आमला, और पीपलका चूर्ण इन दोनोंके समान लोहभस्म और इन तीनोके बराबर मिश्री मिलावे तो यह चूर्ण रक्तपित्त हरणकर्त्ता अति श्रेष्ठ बने. वृष्य है, अग्निको दीप्त करे, बल बढावे, अम्लपित्त, पित्तरोग, वातरोग और अनेक प्रकारके रोगोंको यह आमलादिलोह दूर करे ।

शतमूल्याद्यंलौहम्.

शतमूलीसिताधान्यनागकेशरचन्दनैः ।
त्रिकत्रयतिलैर्युक्तंलौहंसर्वगदापहम् ॥
तृष्णादाहज्वरच्छर्दिरक्तपित्तविनाशनम् ।

अर्थ–शतावर, मिश्री, धनियां, नागकेशर, सफेद चंदन, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद, तिल, और लोहभस्म इन सबको एकत्र कर ६ माशे नित्य सेवन करे तो प्यास, दाहज्वर, वमन, और रक्तपित्त दूर होवे. ।

रक्तपित्तान्तकोरसः

रक्तपित्तीपिबेद्व्योमसहितंपर्पटीरसम् ।
वासाद्राक्षाभयानाश्चक्वाथंवाशर्करान्वितम्॥
योगवाहिरसान्सर्वान्रक्तपित्तेप्रयोजयेत् ।
मृताभ्रंमुण्डतीक्ष्णञ्चमाक्षिकंरसतालकम् ॥
गन्धकञ्चभवेत्तुल्यंयष्टिद्राक्षामृताद्रवैः ।
दिनैकंमर्दयेत्खल्वेसिताक्षौद्रसमन्वितम् ॥
माषमात्रंनिहन्त्याशुरक्तपित्तंसुदारुणम् ।
ज्वरंदाहंक्षतक्षीणंतृष्णाशोषमरोचकम् ॥

अर्थ–रक्तपित्तमें अभ्रकभस्मके साथ पर्पटीरस मिलाके पीवे [कोई खेतपापडाके क्वाथ के साथ पीना कहता है] अथवा अडूसे, दाख और हर्डका काढा मिश्री मिलाकर पीवे, तथा और जो योगवाही रस हैं उनको रक्तपित्तमें देवे. अथवा अभ्रक, सार, सोनामक्खीकी भस्म, हरितालकी भस्म, और गंधक समान भाग ले इनको मुलहटी, दाख और गिलोयके काढेमें १ दिन खरलकर मिश्री और सहतके साथ १ मासे खाय तो घोर रक्तपित्त, ज्वर, दाह, क्षतक्षीण, तृषा, शोष और अरुचिको दूर करे ।

रसामृतरसः

रसस्यद्विगुणंगन्धंमाक्षिकंचशिलाजतु ।
चन्दनंगुडूचीद्राक्षामधुपुष्पञ्चधान्यकम् ॥
कुटजस्यत्वचंबीजंधातकीनिम्बपत्रकम् ।
यष्टिमधुसमायुक्तंमधुशर्करयान्वितम् ॥
विधिनामर्दयित्वातुकर्षमात्रन्तुभक्षयेत् ।
धारोष्णपयसायुक्तंप्रातरेवसमुत्थितः ॥
पित्तंतथाम्लपित्तंचरक्तपित्तंविशेषतः ।
निहन्तिसर्वदोषंचज्वरंसर्वंनसंशयः ॥
रसामृतरसोनामगहनानन्दभाषितः ।

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक २ तोले, सोनामक्खी, शिलाजीत, चंदन, गिलोय, दाख, महुएके फूल, धनियां, कुडाकी छाल, इन्द्रजौ, धायके फूल, नींबके पत्ते, मुलहटी और सहत, मिश्री इनको एकत्र कूट पीस तोलेभर धारोष्ण दूधके साथ प्रातःकाल सेवन करे तो पित्तके रोग रक्तपित्तके सर्व विकार और सर्व प्रकारके ज्वरोंको यह रसामृत नामक रस दूर करता है. यह गहनानन्द योगीका कहा हुआ है ।

खण्डकूष्मांडकः

कूष्माण्डकान्पलशतंसुस्विन्नंनिष्कुलीकृतम् ।
पचेत्तप्तघृतप्रस्थेशनैस्ताम्रमयेदृढे ॥
यदामधुनिभःपाकस्तदाखण्डशतंन्यसेत् ।
पिप्पलीशृंगबेराभ्यांद्वेपलेजीरकस्यच ॥
त्वगेलापत्रमरिचधान्यकानांपलार्द्धकम् ।
न्यसेच्चूर्णीकृतंतत्रदार्व्यासंघट्टयेत्पुनः ॥
तत्पक्वंस्थापयेद्भाण्डेदत्वाक्षौद्रंघृतार्द्धकम् ।
तद्यथाग्निबलंखादेद्रक्तपित्तक्षतक्षयी ॥

अर्थ–१०० पल छिला और तराशा हुआ पेंठा उसको चूनेके पानीसे धोकर अच्छे पानीसे धो डाले, फिर थोडा जल डालके उबाले जब गलजावे तब बारीक कपडेमें डालके निचोड डाले. फिर थोडी देर धूपमें सुखाकर पीस डाले, तदनन्तर तांबेके पात्रमें शेरभर घी

डालकर भून ले. जब भुनकर सहतके समान लाल होजावे तब १०० पल खांडकी चाशनी कर उसमें डाल देवे और इतनी वस्तु और मिलावे. पीपल, अदरख और जीरा प्रत्येक दो पल, तज, छोटी इलायचीके बीज, पत्रज, काली मिरच और धनियां प्रत्येक दो तोला, सबका चूर्णकर उसीमें डाल दे, और कलछीसे चला देवे, जब पक जाय तब उतारकर किसी उत्तम पात्रमें भरकर रख छोडे और आध शेर सहत मिला देवे. इसको बलाबल देखकर रक्तपित्त, उरःक्षत और खईवाला सेवन करे।

शर्कराद्यंलौहम्

शर्करातिलसंयुक्तंत्रिकत्रययुतन्त्वयः।
रक्तपित्तंनिहन्त्याशुचाम्लपित्तहरंपरम्॥

अर्थ–त्रिकुटा, त्रिफला, और त्रिमदमें बराबर लोहभस्म मिलावे तथा मिश्री और तिल मिलाय सेवन करे तो रक्तपित्त और अम्लपित्तको दूर करे।

समशर्करलौहम्

लौहाच्चतुर्गुणंक्षीरमाज्यंद्विगुणमुत्तमम्।
चूर्णपादन्तुवैडंगंदद्यान्मधुसितेसमे॥
ताम्रपात्रेदृढेपक्त्वास्थापयेद्घृतभाजने।
मापकादिक्रमेणैवभक्षयेद्विधिपूर्वकम्॥
अनुपानंमयुंजीतनारिकेलोदकादिकम्।
रक्तपित्तंजयेत्तीव्रमम्लपित्तक्षतक्षयम्॥
महद्वकान्तिजननमायुष्यमुत्तमोत्तमम्।

अर्थ–लोहभस्म ४ तोले, दूध १६ तोले, गौका घी ८ तोले और लोहभस्मकी चतुर्थांश वायविडंगका चूर्ण ले प्रथम लोहभस्म, दूध और घीको ताम्र पात्रमें पकाके फिर वायविडंगका चूर्ण मिलावे, फिर शीतल होनेपर बराबरका सहत और मिश्री मिलाय घीके बासनमें भर रखे. क्रमपूर्वक मासेसे बढाकर विधिपूर्वक सेवन करे, इसके ऊपर नारियलका जल पीवे तो तीव्र अम्लपित्त और रक्तपित्त तथा क्षत, क्षीणताको दूर करके कांति और आयुको बढावे।

रक्तपित्तकुलकंडनोरसः

शुद्धपारदबलिमवालकंहेममाक्षिकभुजंगरंगकं। मारितंसकलमेतदुत्तमंभावयेत्पृथक्पृथक्द्रवैस्त्रिशः॥ चंदनस्यतगरस्यमालतीकोरकस्यवृषपल्लवस्यच। धान्यवारणकणाशतावरीशाल्मलीवटजटामृतस्यच॥ रक्तपित्तकुलकंडनाभिधोजायतेरसवरोस्नपित्तिनां। प्राणदोमधुवृषद्रवैरयंसेवितस्तुवसुकृष्णलंमितः॥ नास्त्यनेनसममत्रभूतलेभेषजंकिमपि रक्तपित्तिनाम्।

अर्थ–शुद्ध पारा, गंधक, मूंगा, सोनामक्खी, सीसा और रांगा इन सबकी भस्म लेवे फिर इनको चंदन, तगर, मालतीकी कली, अडूसेके पत्ते, धनियां, गजपीपल, शतावर, सेमल, बडकी जटा, और विष इन रसोंकी पृथक् २ भावना देवे. तो यह रक्तपित्तकुलकंडन उत्तम रस बने. रक्तपित्तके रोगियोंको प्राणोंका देनेवाला इसको ८ रत्ती सहत और अडूसेके काढेके साथ देवे, इसके समान रक्तपित्त नाशक दूसरी औषधी नहीं है।

रक्तपित्तीपिवेद्बोलसहितंपर्पटीरसम्।
वासाद्राक्षाभयाकाथंपिबेत्पश्चात्सशर्करम्॥

अर्थ–रक्तपित्त रोगवाला बोलके चूर्णमें पर्पटी रस मिलाकर खावे, पश्चात् अडूसा, दाख, और हरडेके काढेमें मिश्री मिलाकर पीवे तो रक्तपित्त दूर हो।

अमृताख्यलोहरसायन

अमृतावृत्तादंतीश्रावणीखदिरोवृषः।

चित्रकोभृंगराजश्चकोकिलाक्षःसपुष्करः ॥
पुनर्नवावलाकासशिग्रुमोरटदारुकः ।
स्नुहीरुष्करशरोदर्भःकुशास्थिसहपीवरी ॥
गवाक्षीवरुणःकंदश्चत्रिकातालमूलिका ।
नागवलाकणामूलंकुष्ठंब्राह्मणयष्टिका ॥
पलोन्मितानिचैतानिजलद्रोणेविपाचयेत् ।
अष्टभागावशिष्टन्तुकषायमुपकल्पयेत् ॥
त्रिफलायास्तथामस्थंजलाष्टगुणपाचितम् ।
तस्मादष्टावशिष्टस्तुकषायस्तुपरिस्नुतः ॥
माक्षिकेनहतस्यापिपुटितस्ययथाविधिः ।
अयसश्चूर्णितंपूतंपलंषोडशसम्मितम् ॥
पलान्यभ्रस्यचत्वारितावंतिगंधकस्यच ।
द्वेपलेचरसस्यापिखलितस्यविधानतः ॥
गुडस्यचपलान्यष्टौशितायावाथपैत्तिके ।
रक्तपित्तेथखंडस्यमत्स्यंड्यावापिकाधिके ॥
गुग्गुलोर्द्विपलंदत्वाप्रस्थार्द्धंसर्पिपस्तथा ।
एवंपाकविधिज्ञस्तुपचेल्लोहंसमाहितः ॥
शीतेऽवतार्यमधुनःक्षिपेदष्टपलंभिषक् ।
माक्षिकस्यविशुद्धस्यद्विपलंरजसःक्षिपेत् ॥
शिलाजतुस्तथाचूर्णपलार्द्धंसम्मितंपृथक् ।
अथैपांप्रक्षिपेच्चूर्णपलमात्रंपृथक्पृथक् ॥
त्रिकटुत्रिफलादंतीत्रिवृताजीरकद्वयम् ।
गायत्रिसारतालीसंधान्यकंमधुयष्टिका ॥
शुभंरसांजनंशृंगीचित्रकंतान्तवस्तुतं ।
चातुर्जातककंकोललवंगंजातिकाफलम् ॥
द्राक्षाखर्जूरकंचूर्णपलार्द्धंसम्मितंपृथक् ।
एपोल्होवरःश्रीमान्सर्वव्याधिप्रणाशनः ॥
यत्रयत्रप्रयुंजीततत्तदाशुविनाशयेत् ।
रक्तपित्तेऽम्लपित्तेचक्षयेकुष्ठेज्वरेऽरुचौ ॥
दुर्नाम्निचोदरेशूलेग्रहण्यांचामवातके ।
वातरक्तेमूत्रकृच्छ्रेप्रमेहेशर्करागदे ॥
अस्योपयोगान्मनुजस्तारुण्यमधिगच्छति ।
ब्रह्मचर्येणकुर्वीतप्लुतंमाक्षिकसर्पिषा ॥
मापकंरक्तिकावृद्ध्यायावदष्टौचमापकान् ।
वर्जयेद्विदलंसूपंमासंचानूपसम्भवम् ॥
ककारपूर्वकंसर्वंमयत्नेनविवर्जयेत् ।
अमृताख्योवलेहोयंसर्वत्रैवोपयुज्यते ॥
अनेनजंतवःस्वस्थाभवंतिइतिनिश्चितम् ।

अर्थ–गिलोय, निसोथ, दन्ती, गोरखमुंडी, खैरसार, अडूसा, चीता, भांगरा, तालमखाना, पुहकरमूल, सांठकी जड, गंगेरन, कास, सहजना, अंकोल, दारुहलदी, थूहर भिलावे, सरपता, कुश, डामहडसकरी, शतावर, इंद्रायन, वरना, चव्य, मूसली, खरैटी, पीपलामूल, कूट, ब्राह्मी और मुलैटी, प्रत्येक चार २ तोले लेकर एक द्रोण जलमें औटावे जब अष्टावशेष काढा रहे तब उतार लेवे फिर त्रिफलाका अष्टावशेष काढा लेवे, पश्चात् सुवर्णमाखी करके मारा हुआ लोहचूर्ण लेकर उक्त काढेका पुट देवे. फिर इस लोहको १६ पल लेकर, अभ्रकभस्म, गंधक, प्रत्येक १६ तोले. और शुद्धपारा ८ तोले सबको खरल करे इसको ८ तोले गुडमें यदि पित्तविकार हो ८ तोले मिश्री अथवा तोलेभर खांड उसमें ८ तोले शुद्ध गूगल और आधसेर घी मिलाकर पाक करे जब अवलेह होजावे तब उतार लेवे, शीतल होनेपर ८ पल सहत मिलाके तथा ८ पल सुवर्णमाक्षिककी भस्म मिलावे, और दो तोले शिलाजीत मिलावे फिर सोंठ, मिरच, पीपल, हर्डे, बहेडा, आंवला, दन्ती, निसोथ, दोनो जीरे, खैरसार, तालीसपत्र, धनियां, मुलहटी, रसोत, काकडासिंगी, चीता, चातुर्जातक, कंकोल, लोग, जायफल, दाख, और छुहारे प्रत्येक दो तोले डाले तो यह उत्तम अवलेह सर्व रोगों-

का दूर करनेवाला, चने जिस २ रोगपर देवे उसी २ रोगको शीघ्र दूर करे. रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षय, कुष्ठ, ज्वर, अरुचि, ववासीर, उदररोग, शूल, संग्रहणी, आमवात, वातरक्त मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और शर्करा आदि सब रोगोंको दूर करे. इसका सेवन करनेसे मनुष्य तरुण होता है, इसका खानेवाला ब्रह्मचर्यसे रहे. और इस अवलेहमें सहत और घी मिलाकर सेवन करे. प्रथम एक माशे फिर एक २ रत्ती नित्य बढावे ऐसे ८ माशे तक इसकी परममात्रा है. इसके सेवनवालेको दाल. मूंग अनूपदेशका मांस तथा ककारपूर्व जिनके नाम हैं, जैसे (कुटकी. कालशाल. ककडी. करेले, आदिको, त्याग देवे. यह अमृताख्य अवलेह सर्वत्र देना चाहिये इससे मनुष्य रोगहीन होता है यह बंगसेन ग्रन्थमें लिखा है।

कपर्दकीरसः

मृतंवामूर्च्छितंसूतंकार्पासकुसुमद्रवैः ।
मर्दयेद्दिनमेकन्तुतेनपूर्यावराटिका ॥
निरुध्याचान्धमूषायांभांडेरुद्धापुटेपचेत् ।
उद्धृत्यचूर्णयेत्श्लक्ष्णंमरिचैर्द्विगुणैःसह ॥
गुंजामात्रंघृतेनैवभक्षयेत्प्रातरुत्थितः ।
उदुंबरंघृतंचैवअनुपानंप्रयोजयेत् ॥
कपर्दकीरसोनामरक्तपित्तविनाशनः ।

अर्थ–मरेहुए वा मूर्च्छित पारेको नादनवन (नरमा) फूलके रसमें १ दिन खरलकर कौडियोंमें भरके उनका मुख बंद करदेवे. फिर अंधमूषामें रख गजपुटमें फूंक देवे. जब मूष स्वांगशीतल होजाय तब निकाल दूनी कालिमिरच मिलायके पीस डाले इसको एक रत्ती प्रातःकाल घीके साथ खाय तो यह कपर्देश्वर रस रक्तपित्तको दूर करे. इसपर गूलरका अनुपान देवे ।

नीलोत्पलसिताक्षौद्रसंयुक्तंपद्मकेशरम् ॥
तण्डुलोदकपानेनरक्तपित्तंनियच्छति ।

अर्थ–नीलकमल, मिश्री, सहत इनमें कमलकी केशर मिलाय चावलके पानीसे पीवे तो रक्तपित्त दूर हो ।

खंडखाद्यंलौहम्.

शतावरीछिन्नरुहाहृषोमुंडीतिकावला ।
तालमूलीचगायत्रीत्रिफलायास्त्वचस्तथा ॥
भार्गीपुष्करमूलंचपृथक्पंचपलानिच ।
जलद्रोणेविपक्तव्यमष्टभागावशेषितं ॥
दिव्यौषधिहतस्यापिमाक्षिकेणहतस्यच ।
पलद्वादशकंदेयंरुक्मलोहस्यचूर्णकम् ॥
खंडतुल्यंघृतंदेयंपलंषोडशकंबुधैः ।
पचेत्ताम्रमयेपात्रेगुडादेपाकवद्यथा ॥
प्रस्थार्द्धंमधुनोदेयंशुभाश्मजतुकस्यच ।
शृंगीकृष्णाविडंगंचशुंठ्याजाजीपलंपलं ॥
त्रिफलाधान्यकंपत्रंद्व्यक्षंमरिचकेशरम् ।
चूर्णंदत्वासुमथितंस्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥
यथाकालंप्रयुंजीतविडालपदमात्रकम् ।
गव्यक्षीरानुपानंचसेव्यंमांसरसंपयः ॥
गुरुवृष्यान्नपानानिस्निग्धंमांसादिबृंहणं ।
रक्तपित्तंक्षयंकासंपक्तिशूलंविशेषतः ॥
वातरक्तंप्रमेहंचशीतपित्तंवमिंक्लमं ।
श्वयथुंपाण्डुरोगंकुष्ठंप्लीहोदरंतथा ॥
आनाहंमूत्रसंस्रावमम्लपित्तंनिहन्तिच ।
चक्षुष्यंबृंहणंवृष्यंमांगल्यंप्रीतिवर्द्धनम् ॥
आरोग्यंपुत्रदंश्रेष्ठंकामाग्निबलवर्द्धनम् ।
श्रीकरंलाघवकरंखंडखाद्यंप्रकीर्त्तितम् ॥
छागंपारावतंमांसंतित्तिरःक्रकराःशशाः ।
कुरंगाःकृष्णसाराश्चतेषांमांसानियोजयेत् ॥
नारिकेलपयःपानंसुनिषण्णकवास्तुकं ।

शुष्कमूलकजीवाक्षंपटोलंबृहतीफलं ॥
फलंवार्त्ताकपक्काम्रंखर्जूरंस्वादुदाडिमं ।
ककारपूर्वकंयच्चमासंचानूपसंभवं ॥
वर्जनीयंविशेषेणखंडखाद्यंप्रकुर्वता ।
लोहान्तरंचतत्रापिपुटेनाविक्रियेप्यते ॥
नपुनर्माक्षिकेणैवशिलयावन्हिमारणं ।

अर्थ—शतावरि, गिलोय, अडूसेके पत्ते, गोरखमंडी, गंगेरन, मूसली, खैरसार, त्रिफला, भारंगी और पुहकर मूल प्रत्येक पावभर ले २० सेर जलमें औटाके अष्टावशेष काढा बनावे, पश्चात् मनसिलसे मरा और सुवर्ण माक्षिकके योगसे फूंका जगवेल लोह ४८ तोले लेवे और खांड, घी, गुड प्रत्येक १६ तोले मिलाके तांबेके बरतनमें पाक बनावे जब अवलेह होनेपर आवे तब आधसेर सहत मिलावे और शिलाजीत, काकडासिंगी, पीपल, वायविडंग, सोंठ, जीरा, प्रत्येक ४ तोले, त्रिफला, धनिया, पत्रज, कालीमिरच और केशर प्रत्येक दो तोले मिलावे, सबको एकत्र कर चिकने बरतनमें रख छोडे । इसको यथा समयमें १ तोले सेवन करे और अनुपानमें गौका दूध लेवे. तथा मांसरस, दूध, भारी पदार्थ, पुष्ट करने वाले पदार्थ, चिकने मांसादिक तथा बृंहणकारी पदार्थोंका सेवन करे तो यह रस रक्तपित्त तथा खांसी, परिणामशूल, वातरक्त, प्रमेह, शीतपित्त, वमन, क्लम, सूजन, पाण्डुरोग, कोढ, प्लीह, उदर, अफरा, मूत्रका निकलजाना, अम्लपित्त, इन सबको दूर करे. नेत्रोंका हितकारी, बृंहण, वृष्य, मंगलकर्त्ता और प्रीतिका बढाने वाला है. आरोग्यता और पुत्रदाता है कामाग्निको बढावे, कान्ति और हलकेपनको करने वाला यह खंडखाद्यावलेह है. इसका सेवन करनेवाला बकरे और कबूतरका मांस, तीतर, कुकर, ससा, हरिण, कालाहरिण, इनका मांस सेवन करे. प्यासमें नारियलका जल पीवे, चौपतिया, बथुआ, सुखीमूली, डोडी, पर बल, कटेरीके फल, बेंगन, पकाआम, छुहारा, मीठे अनार तथा ककार पूर्वक जो नाम (ककडी, करेले आदि) अनूपका मांस इतनी वस्तु खण्डखाद्यका सेवन करनेवाला त्याग देवे ।

रक्तपित्तहारसः

मृतंसूतंमृतंताम्रंतीक्ष्णंवासारसैर्दिनम् ।
मर्दितंमापमात्रंतुभक्षयेद्रक्तपित्तनुत् ॥

अर्थ—चन्द्रोदय, ताम्रभस्म और लोहभस्म सबको अडूसेके रसमें एक दिन खरलकर १ माशेके अनुमान भक्षण करे. तो रक्तपित्त दूर होवे, यह नारायण विलास ग्रन्थसे लिखा गया ।

अथयक्ष्माधिकारः

रास्नादिलौहम्.

रास्नाश्वगन्धाकर्पूरभेकपर्णीशिलाह्वयः ।
त्रिकत्रयैसमायुक्तैर्लौहंयक्ष्मान्तकृन्मतम् ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्तमपिवैद्यविवर्जितम् ।
हन्तिकासंस्वरापातंराजयक्ष्मक्षतक्षयम् ॥
वलवर्णाग्निपुष्टीनांवर्द्धनंदोपनाशनम् ।

अर्थ—रास्ना, असगंध, कपूर, मंडूकपर्णी (ब्राह्मीकाभेद) शिलाजीत, त्रिफला, त्रिकुटा, और त्रिमद प्रत्येक समान भाग लेवे, सबका चूर्णकर चूर्णकी बराबर लोहभस्म ले. सबको एकत्रकर बलाबल देख मात्रा देवे तो सर्व उपद्रव युक्त रोगी जिसको वैद्य त्याग गया हो उसकी खांसी, स्वरभेद, राजयक्ष्मा,

और क्षयोंको नाश करे, तथा मल, वर्ण और जठराग्निको बढावे और सर्व दुष्ट दोषोंको शान्ति करे।

राजमृगाङ्कोरसः

रसभस्मत्रयोभागाभागैकंहेमभस्मकम् ।
मृततारस्यभागैकंशिलागंधकतालकम् ॥
प्रतिभागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत् ।
वराटिकातेनपूर्यांचाजाक्षीरेणटंकणम् ॥
पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वामृद्भाण्डेतांनिरोधयेत् ।
शुष्कंगजपुटेपाच्यंचूर्णयेत्स्वांगशीतलम् ॥
दशपिप्पलिकैःक्षौद्रैर्मरिचैर्वाघृतान्वितैः ।
गुंजाचतुष्टयंचास्यक्षयरोगप्रशान्तये ॥
सघृतंदापयेद्वाथवातश्लेष्मभवेक्षये ।
रसोराजमृगाङ्कोयंनानारोगनिषूदनः ॥

अर्थ–पारेकीभस्म ३ भाग, सुवर्णभस्म १ भाग, रूपेकीभस्म १ भाग, मनसिल, गंधक, हरिताल प्रत्येक दोभाग. सब शुद्ध किये हुए लेकर खरल करे. फिर इसको पीली और बडी कौडियोंमें भरकर बकरीके दूधमें पिसे हुए सुहागेसे मुख बंद करदेवे फिर एक मिट्टीके बासनमें भर मुख बंदकर गजपुटमें फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब कौडियोंको निकालके पीस डाले इसमेंसे ४ रत्ती पीपलके चूर्ण और सहतके साथ सेवन करे अथवा काली मिरचोंके चूर्ण और घीमें मिलाकर खाय तो क्षयरोग दूर हो यदि वात कफसे क्षय विकार होवे तो केवल घृतमें मिलाकर खाय यह अनेक रोगोंके दूर करता है।

मृगाङ्करसः

स्याद्रसेनसमंहेममौक्तिकंद्विगुणंभवेत् ।
गंधकंचसमंतेनरसतुल्यन्तुटङ्कणम् ॥
तत्सर्वंगोलकंकृत्वाकांजिकेनचपेषयेत् ।
भाण्डेलवणपूर्णेथपचेद्यामचतुष्टयम् ॥
मृगांकसंज्ञकोज्ञेयोराजयक्ष्मनिकृन्तनः ।
गुंजाचतुष्टयंचास्यमरिचैःसहभक्षयेत् ॥
पिप्पलीदशकैर्वापिमधुनासहलेहयेत् ।
पथ्यन्तुलघुभिर्मांसैःप्रयोगेस्मिन्प्रयोजयेत् ॥
व्यंजनैर्घृतपक्वैश्चसंस्कृतैर्ह्यविदाहिभिः ।
वृन्ताकबिल्वतैलानिकारवेल्लंचवर्जयेत् ॥
स्त्रियंपरिहरेद्दूरंकोपंचापिविवर्जयेत् ।

अर्थ–पारेकी बराबर सुवर्णके वर्क और दूने मोती और पारेकी बराबर गंधक और सुहागा सबको कांजीमें पीसकर गोला बनावे, फिर एक पात्रमें निमक भरकर गोलेको बीचमें रख दे और ऊपरसे निमक भर पात्रका मुख बंद कर चूल्हेपर चढाय चार प्रहरकी अग्नि देवे तो यह मृगाङ्कसंज्ञक रस बने, यह राजयक्ष्माको दूर करे, ४ रत्ती मिरचके चूर्णमें खाय अथवा दश पीपलके चूर्ण और सहतके साथ भक्षण करे, इसके ऊपर हलके मांसोंका पथ्य देवे, और घृतपक (पूरी, कचौरी, मटरी आदि) पदार्थ खावे, परंतु दाहकर्त्ता पदार्थ वर्जित है, इसके सेवन करनेवाला बैंगन, बेलफल, तेल और करेले खाना त्याग देवे तथा स्त्रीसंग और क्रोधकोभी सर्वथा त्याग देवे।

रत्नगर्भपोटली.

रसंवज्रंहेमतारंनागंलोहंचताम्रकम् ।
तुल्यांशंमरिचंदेयंमुक्ताविद्रुममाक्षिकम् ॥
शंखतुत्थंचतुल्यांशंसप्ताहंचित्रकद्रवैः ।
मर्दयित्वाविचूर्ण्याथतेनपूर्य्यावराटिका ॥
टंकणंरविदुग्धेनमुखंलिप्त्वानिरोधयेत् ।
मृद्भाण्डेतानिरुध्याथसम्यग्गजपुटेपचेत् ॥
आर्द्रकस्यरसैःसप्तचित्रकस्यचविंशतिः ।
द्रवैर्भाव्यंततश्चास्यदेयंगुंजाचतुष्टयम् ॥

यक्ष्मरोगंनिहन्त्याशुसाध्यासाध्यंनसंशयः ।
योजयेत्पिप्पलीक्षौद्रैःसघृतैर्मरिचैस्तथा ॥
महारोगाष्टकेकासेश्वासेचैवातिसारके ।
पोटलीरत्नगर्भोयंसर्वरोगकुलान्तकाः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, हीरा, सुवर्ण, चांदी, सीसा, लोह और ताम्र इन सबकी भस्म और काली मिरच इन सबको समान भाग लेवे. तथा मोती. मूंगा, सोनामक्खी, और शंख इनकी भस्म और नीलाथोथा सब समान भाग ले सबको एकत्र कर चीतेके रसमें खरलकर पीली कौडीमें भरके आकके दूधमें पिसे हुए सुहागेसे उन कौडियोंके मुखको बंद करदेवे, फिर इनको मिट्टीके बरतनमें रखके बरतनका मुख बंद कर गजपुटमें रखके फुंक देवे जब स्वांग शीतल होजावे तब निकाल खरलकर अदरखके रसकी सात भावना देवे. फिर चीतेके रसकी २० भावना देवे तो यह रस बनाकर तयारहो इसमेंसे ४ रत्ती रस पीपल और सहतके साथ अथवा काली मिरच और घृतके साथ देवे तो साध्य और असाध्य क्षयरोगको दूर करे. और आठ महारोग (वातव्याधि, पथरी, कुष्ठ, प्रमेह, उदररोग, भगंदर, बवासीर और संग्रहणी) को दूर करे. खांसी, श्वास, अतिसार आदि इन सब रोगोंको यह रत्नगर्भ पोटली दूर करे ।

स्वल्पमृगाङ्कः

रसभस्मंहेमभस्मंतुल्यंगुञ्जाद्वयंभजेत् ।
दोषंवुध्वानुपानेनमृगाङ्कोयंक्षयापहः ॥

अर्थ—चंद्रोदय और सुवर्णभस्म दो रत्तीको दोषानुसार अनुपानके साथ देनेसे क्षयरोग दूर हो.

लोकेश्वरपोटली.

भस्मसूताच्चतुर्थांशंमृतस्वर्णम्प्रदापयेत् ।
द्विगुणंगंधकंदत्वामर्दयेच्चित्रकाम्बुना ॥
पूर्य्यावराटिकातेनटंकणेननिरुध्यच ।
भाण्डेचूर्णप्रलिप्तेऽथक्षिप्त्वारुध्वाचमृण्मये ॥
शोषयित्वागजपुटेपुटयेत्सुपरान्हके ।
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यचूर्णयित्वातुविन्यसेत् ॥
एषलोकेश्वरोनामवीर्यपुष्टिविवर्द्धनः ।
गुंजाचतुष्टयंचास्यंपिप्पलीमधुसंयुतम् ॥
मरिचैर्घृतयुक्तंश्वभक्षयेद्दिवसत्रयम् ।
अङ्गकार्श्येऽग्निमान्द्येचकाशेपित्तेक्षयेपिच ॥
लवणंवर्जयेदत्रसाज्यंदध्निचयोजयेत् ।
एकविंशद्दिनंयावत्सघृतंमरिचंपिबेत् ॥
पथ्यंमृगाङ्कवद्देयंशय्यीतोत्तानपादितः ।
येशुष्काविषमाशनैःक्षयरुजाव्याप्ताश्चयेष्टील या । पाण्डुत्वेनहताश्चवैद्यविधिनाहीनाश्च येदुर्भगाः । येतप्ताविविधैर्ज्वरैःश्रमदोन्मादैःप्रमादंगताः । तेसर्वेविगतामयाहतरुजाः स्युःपोटलीसेवनात् ।

अर्थ—पारेकी भस्म १ तोले, सुवर्णभस्म ३ माशे, और गंधक दो तोले, सबको चीतेके रसमें खरल करे पिट्ठी बनाय कौडियोंमें भर सुहागेसे मुख़ करदेवे, फिर कौडियोंको मिट्टीके पात्रमें भर मुंह ढक चूनेसे संधि बंद करदेवे और धूपमें सुखाय गजपुटमें फुंक देवे. जब स्वांग शीतल होजाय तब कौडियोंको निकाल चूर्णकर शीशीमें भर रखछोडे, और इसकी ४ रत्ती मात्रा पीपल और सहतके साथ अथवा काली मिरच और घीके साथ खावे तो तीन दिनमें वीर्य्यको पुष्ट करे, और अंगकी कृशता, मंदाग्नि, खांसी तथा पित्तक्षयमें इसका सेवन करनेवाला रोगी नमकको त्याग देवै, परन्तु दहीमें घी मिलाकर खाय तथा २१ दिन तक

घीमें काली मिरच मिलाकर पीवे, और मृगाङ्क रसके समान इसमे पथ्य देवे. और रोगी पैर सीधे पसार कर सोवे तो विषम भोजन करनेसे जो शुष्क होगये हो और क्षयरोग, अष्ठीला, तथा पाण्डुरोग करके व्यासहो और जिनको वैद्यने त्याग दिया हो तथा अनेक ज्वरों और श्रम करके व्यासहो तथा उन्माद करके प्रमादको प्राप्त हुए वो सब इस लोकेश्वरपोटलीके सेवन करनेसे दूर हो जाते हैं ।

कनकसुंदरोरसः

रसस्यतुर्यभागेनहेमभस्मप्रयोजयेत् ।
मनःशिलागंधकंचतुत्थंमाक्षिकतालकम् ॥
विषंटंकणकंसर्वंरसतुल्यंमदापयेत् ।
मर्दयेत्सर्वमेकत्रखल्लपात्रेचनिर्म्मले ॥
जयन्तिभृंगराजोत्थैःपाठायावासकस्यच ।
अगस्तिलाङ्गलाग्नीनांस्वरसैश्चपृथक्पृथक् ॥
भावयित्वाविशोष्याथपुनश्चार्द्रकवारिणा ।
सप्तधाभावयित्वाचरसःकनकसुन्दरः ॥
गुंजाद्वयंत्रयंवास्यराजयक्ष्मप्रशान्तये ।
मधुनापिप्पलीभिर्वामरिचैर्वाघृतान्वितम् ॥
सन्निपातेप्रदातव्यमार्द्रकस्यरसेनवै ।
जयपालरजोभिर्वागुल्मिनेशूलरोगिणे ॥
अम्लवर्ज्यंचरेत्पथ्यंबल्यंहृद्यंरसायनम् ।
वर्जयेल्लवणंहिंगुतक्रंदधिविदाहियत् ॥

अर्थ–पारा ४ तोले, सुवर्णभस्म १ तोले, मनसिल, गंधक, लीलाथोथा, सुवर्णमाक्षिक, हरिताल, सिंगिया विष, और सुहागा प्रत्येक ४ तोले ले सबको एकत्र कर साफ खरलमें घोट अरनी, भांगरा, पाढ, अडूसा, अगस्तिया, कलियारी और चीता प्रत्येकके रसकी जुदी २ भावना देवे और सुखाता जाय फिर ७ भावना अदरखके रसकी देवे, तो यह कनकसुन्दररस बनके तयार होवे. इसकी दो या तीन रत्तीकी मात्रा सहत और पीपलके साथ अथवा घी और काली मिरचके साथ देवे तो राजयक्ष्मा दूर होवे । अदरखके रससे देवे तो सन्निपात दूर होवे तथा शूलरोगीको शुद्ध जमालगोटेके साथ देवे, इसका सेवनकर्त्ता खटाईके पदार्थ, नोन, हींग, छाछ, दही और दाहकारी पदार्थोंको त्याग देवे यह बलकारी और हृदयको हितकारी रसायन है ।

हेमगर्भपोटली.

रसभस्मत्रयोभागाभागैकंहेमभस्मकम् ।
मृतताम्रस्यभागैकंतोलैकंगन्धकस्यच ॥
मर्दयेच्चित्रकैर्द्रावैर्द्वियामान्तेसमुद्धरेत् ।
पूर्यावराटिकातेनटंकणेनविलेपयेत् ॥
वराटींपूरयेद्भाण्डेरुध्वागजपुटेपचेत् ।
विचूर्णयेत्स्वांगशीतेपोटलीहेमगर्भिका ॥
मृगाङ्कवचतुर्गुंजाभक्षणाद्राजयक्ष्मनुत् ।

अर्थ–पारद भस्म ३ भाग, सुवर्ण भस्म १ भाग, ताम्रभस्म १ भाग, और गंधक तोलेभर इन सबको चितेके रसमें दो प्रहर खरल करे, जब पिट्ठी बनजाय तब कौडियोंमें भरके कौडियोंके मुखको आकके दूधमें पिसे सुहागेसे बन्द कर मिट्टीके बरतनमें भरदे, और बरतनका मुख बंदकर गजपुटमें फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजाय तब पीसकर शीशीमें भर रख छोडे इस हेमगर्भपोटलीको ४ रत्ती रोज खानेसे राजयक्ष्मा दूर होवे इसपर मृगाङ्करसके समान पथ्य देना चाहिये ।

महामृगाङ्कोरसः

निरुत्थभस्मसौवर्णंद्विगुणंभस्मसूतकम् ।
द्विगुणंभस्ममुक्तोत्थंशुकपुच्छंचतुर्गुणम् ॥
मृतताप्यञ्चपञ्चांशंतारभस्मचतुर्गुणम् ।

सर्वमेकत्रसंमर्घत्रिदिनंलुङ्गवारिणा ॥
ततश्चगोलकंकृत्वाशोपयित्वाखरातपे ।
सप्तभागप्रवालंचरसतुल्यञ्चटंकणम् ॥
लवणैःपात्रमापूर्य्यतन्मध्येगोलकंक्षिपेत् ।
तन्मुखन्तुमृदारुध्वापचेद्यामचतुष्टयम् ॥
आकृष्यचूर्णयेच्छुद्धंचतुःषष्टिविभागतः ।
वज्रंवात्रभावेतुवैक्रान्तंषोडशांसिकम् ॥
महामृगांकःखलुएषसिद्धः श्रीनन्दिनाथप्रकटीकृतोयम् । वल्लोस्यसेव्योमरिचाज्ययुक्तःसेव्याथवापिप्पलिकासमेतः। तत्रोपचाराःकर्त्तव्याःसर्वक्षयगदोदिताः । बल्यंवृष्यञ्चभोक्तव्यंत्यजेत्सूतविरोधियत् । यक्ष्माणंबहुरूपिणंज्वरगदंगुल्मंतथाविद्रधिम् । मन्दाग्निंस्वरभेदकासमरुचिंश्वासञ्चमूर्च्छांभ्रमिम् ॥ अष्टावेवमहागदान्गरगदान्पाण्डूमयान्कामलान् । पित्तोत्थांश्चसमग्रकान्बहुविधानन्यांस्तथानाशयेत् ॥

अर्थ–सुवर्ण भस्म १ तोले, रससिंदूर दो तोले, मोतीकी भस्म दो तोले, गंधक ४ तोले, सुवर्णमाक्षिककी भस्म ५ तोले, रूपेकी भस्म ४ तोले, मुंगेकी भस्म ७ तोले, और सुहागा दो तोले, सबको एकत्र मर्दन कर तीन दिन बिजौरेके रसकी भावना देवे, फिर इसका गोला बनाय धूपमें सुखाय नोनके पात्रमें रख ऊपरसे नोनभर मुख बंदकर संधि लेपन कर चूल्हेपर चढाय ४ प्रहर मंदाग्निसे पचावे, और स्वांग शीतल होनेपर निकालकर पीस डाले, फिर इसका चौंसठवा भाग हीरेकी भस्म मिलावे और सोलहवां भाग वैक्रांतकी भस्म मिलावे. तो यह महा मृगाङ्करस बने. इसकी ३ रत्तीकी मात्रा काली मिरचके चूर्ण और घीके साथ अथवा पीपल और सहतके साथ सेवन करे और इसके ऊपर वो उपचार करे जो कि यक्ष्मारोगको दूर करनेवाले है अर्थात् बल और पुरुषार्थकारी पदार्थोंका सेवन करे, और पारेके विरोधी सब पदार्थोंको त्याग देवे, तो यह रस खई, ज्वर, गोला, विद्रधि, मंदाग्नि, स्वरभेद, खांसी, अरुचि, श्वास, मूर्च्छा, भ्रम, आठ महारोग, विषरोग, पांडु, कामला, तथा समग्र पित्तरोग, और अन्य सर्व प्रकारके रोगोंको यह महामृगाङ्करस दूर करे ।

क्षयकेशरी.

मृतमभ्रंमृतंसूतंमृतंलोहञ्चताम्रकम् ।
मृतंनागञ्चकास्यञ्चमंडूरंविमलंमतम् ॥
वंगंखर्परकंतालंशंखटंकणमाक्षिकम् ।
मृतंस्वर्णमृतंकान्तवैक्रान्तंविद्रुमौक्तिकम् ॥
वराटंमणिरागञ्चराजपट्टञ्चगन्धकम् ।
सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यखल्लमध्येविनिक्षिपेत् ॥
मर्दयेत्त्वग्निभानुभ्यांमपुटेत्रिदिनंलघु ।
भावयेत्पुटयेदेभिर्वारांस्त्रींश्चपृथक्पृथक् ॥
मातुलुंगवरावन्हिह्यम्लवेतसमार्कवः ।
हयमाराद्रकरसैःपाचितोलघुवन्हिना ॥
वातपित्तकफोत्क्लेशान्ज्वरान्संमर्दितानपि
सन्निपातंनिहन्त्याशुसर्वांगैकांगमारुतान् ॥
सेवितश्चसितायुक्तोमागधीरजसायुतः ।
मधुकार्द्रकसंयुक्तस्तद्व्याधिहरणौषधैः ॥
सेवितोहन्तिरोगाणांव्याधिवाराणकेशरी ।
क्षयमेकादशविधंशोषंपाण्डुंकृमिजयेत् ॥
कासंपंचविधंश्वासंमेहमेदोमहोदरम् ।
अश्मरींशर्करांशूलंप्लीहंगुल्मंहलीमकम् ॥
सर्वव्याधिहरोवल्योवृष्योमेध्योरसायनः॥

अर्थ–अभ्रक भस्म, पारेकी भस्म, लोह भस्म, ताम्रभस्म, शीशेकी भस्म, कांसेकी भस्म मंडूर, विमला, बंग, खपरिया, हरिताल, शंख,

सुवर्णमाक्षिक, सुवर्ण, कांतिलोह, वैक्रांत, मूंगा, मोती, कौडी, पद्मराग, और कान्तिपाषाण इन सबकी भस्म फुलाया हुआ सुहागा, शुद्ध गंधक सबको एकत्र कर पीसे पश्चात् ३ दिन चिते और आकके दूधकी भावना देवे। और लघुपुटकी आंच देवे, इस प्रकार तीन वार करे, फि.र बिजौरा, त्रिफलेका काढा, चीता, अमलवेत, भांगरा, कनेर, अदरख, इनके रसमें पृथक् २ खरल करके लघुपुटमें फूंक देवे तो यह रस बनकर तयार हो. यह वात, पित्त और कफके विकारोंको तथा ज्वर, सन्निपात, सर्वांग तथा एकांग वात, इन सब रोगोंको मिश्री अथवा पीपलके साथ खानेसे दूर करे। अथवा सहत और अदरखके रसके साथ सेवन करे, अथवा जिस २ रोगपर जो २ औषधि कही है उनके साथ इसको सेवन करे तो सर्व रोग दूर हो, ग्यारह प्रकारके क्षयरोग, शोष, पांडु, कृमि, पांच प्रकारकी खांसी, श्वास, प्रमेह, भेदरोग. उदर, पथरी, शर्करा, शूल, प्लीह, गोला, हलीमक, इत्यादि सर्व रोगोंको दूर करे. बल करे, पुष्टता करे, बुद्धिको बढावे तथा रसायन है।

रजतादिलौहम्.

चन्दनंमधुकंक्षीरंपीतंरुधिरवान्तिजित् ।
भृंगराजस्यपत्रन्तुचूर्णितंमधुनासह ॥
गोलकंधारयेदास्येकासारिष्टप्रशान्तये।
पिबेद्वान्तिप्रशान्त्यर्थंक्षौद्रैश्छिन्नरुहारसम् ॥
भस्मीभूतंरजतममलंतत्समंव्योमचूर्णम् ।
सर्वैस्तुल्यंत्रिकटुकवरंसर्वमाज्येनयुक्तम् ॥
लीढंमातःक्षपयतितरांयक्ष्मपाण्डूदरार्शः ।
श्वासंकासंनयनजरुजःपित्तरोगानशेषान् ॥

अर्थ–सफेद चंदन और महुएके चूर्णको दूधमें मिलाकर पीवे. तो रुधिरकी वमन करना बंद हो, तथा भांगरेके पत्तोंके चूर्णको सहतमें मिलाकर गोलियां बनावे और गोलीको मुखमें राखे तो. खांसी आदि पीडा शांति हो। अथवा रुधिरकी वमन बंद करनेको गिलोयके रसमें सहत मिलाकर पीवे।

अथवा–शुद्ध चांदीकी भस्म, और अभ्रककी भस्म एक २ तोले; त्रिकुटा और त्रिफलाके चूर्ण दो तोले इन सबको सहतमें मिलाकर प्रातःकाल चाटे तो यक्ष्मा, पांडु, उदर, बवासीर, श्वास, खांसी, नेत्ररोग, और संपूर्ण पित्तरोगोंको यह रजतादिलोह दूर करे।

सर्वांगसुन्दरोरसः

रसंगन्धश्चतुल्यांशंद्वौभागौटंकणस्यच ।
मौक्तिकंविद्रुमंशंखभस्मदेयंसमांशकम् ॥
हेमभस्मार्द्धभागश्चसर्वंखल्लेविमर्दयेत् ।
निम्बुद्रावेणसंपिष्यपिण्डकांकारयेत्ततः ॥
पश्चाद्गजपुटेदत्त्वासुशीतश्चसमुद्धरेत् ।
हेमभस्मसमंतीक्ष्णंतीक्ष्णार्द्धंदरदंमतम् ॥
एकीकृत्यसमस्तानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्।
ततःपूजांप्रकुर्वीतरसस्यदिवसेशुभे ॥
सर्वांगसुन्दरोह्येषराजयक्ष्मनिकृन्तनः ।
वातपित्तज्वरेघोरेसन्निपातेसुदारुणे ॥
अर्शांसिग्रहणीदोषेमेहेगुल्मेभगंदरे ।
निहन्तिवातजान्रोगान्श्लैष्मिकांश्चविशेष
तः॥पिप्पलीमधुसंयुक्तंघृतयुक्तमथापिवा ।
भक्षयेत्पर्णखण्डेनसितयाचार्द्रकेणवा ॥

अर्थ–सुवर्णभस्म, पारा, गंधक प्रत्येक एक भाग ले सुहागा दो भाग, मोती, मूंगा और शंखकी भस्म प्रत्येक आधा भाग लेवे सबको खरलमें डाल नींबूके रसमें घोटकर गोलियां बनावे, उसपर कपरमिट्टीकर गजपुटमें

फूंक दे, जब शीतल होजावे तब निकाल खरलमें पीस सुवर्ण भस्मके तुल्य खेरी लोहेकी भस्म डाले, और लोहभस्मसे आधा हींगलू मिलावे और सबको एकत्रकर पीस डाले जिस दिन रस बनकर तयार हो उस दिन परमात्माका पूजन कर सेवन करे तो यह सर्वांगसुंदर रस राज यक्ष्मा, वातपित्त, ज्वर, घोर सन्निपात, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह, गुल्म, भगंदर, और वात तथा कफ विकारोंको दूर करे, इसको पीपल और सहतके साथ अथवा घृतके साथ पानमें या मिश्रीके साथ अथवा अदरकके रसके साथ इस रसको सेवन करना चहिये।

लोकेश्वरोरसः

पलंकपर्द्दचूर्णस्यपलंपारदगन्धयोः।
मापश्चटंकणस्यैवजम्बीराद्भिर्विमर्दयेत् ॥
पुटेल्लोकेश्वरोनाम्नालोकनाथरसोत्तमः।
ऋतेकुष्ठरक्तपित्तमन्यान्रोगान्बलाज्जयेत्
पुष्टिर्वीर्यप्रसादोजःकान्तिलावण्यदःपरः।
कोस्तिलोकेश्वरादन्योनृणांशंभुमुखोद्गतः॥
पथ्यंशाल्योदनंसर्पिर्दधिशाकंसहिंगुकम्।
नित्यंयामद्वयादूर्ध्वंकार्य्यंवारत्रयंदिवा ॥
त्र्यहाद्रुचौवादान्तेवालग्नःसूतोनचेत्पुनः।
अष्टमेऽन्हिप्रदातव्यःपूर्ववत्कार्यसिद्धये ॥
प्रथमेसप्तमेदेयालावसूरणमुद्गकाः।
द्वितीयेमापगोधूमंभक्ष्यंपूर्वोदितञ्चयत् ॥
देयानिमत्स्यमांसानितृतीयेमर्द्दनादिकम्।
तैलविल्वारनालानिकोपस्त्रीस्वप्नजागरान् ॥ त्यजेत्कादीनिद्रव्याणिहृद्यंस्वादुंचशीलयेत्। वार्यांसेव्यंपयःकोष्णंपित्तेतुससितंहितम् ॥ अत्यम्लंचोरवीजानितिलेषुकदलीफलम्। खर्जूरंमांसमृद्वीकासितादिसकलंभजेत् ॥ वीर्य्यच्युतौनारिकेलजलंतालफलानिच। आनाहारुचिमूर्च्छार्तिभ्रमोद्गारविशूचिकाः ॥ एतेपुलघुशाल्यन्नंकेवलंसघृतंहितम्। अतिवान्तोपिवेच्छिन्नारसंक्षौद्रेण संयुतम् ॥ सक्षौद्रंवासकरक्तपित्तेऽरुचिविपर्य्यये। भृष्टधान्यंसितायुक्तमथवाक्षौद्रसंयुतम् ॥ यवान्नंमधुसंयुक्तंपिवेद्वामाहिषंदधि। घृतान्नंभक्षयेन्नित्यंसुखोष्णेनचवारिणा ॥ छिन्नाम्बुसहितंदेयंदाहेजीर्णेसुधाजलम्। आर्द्रकंसार्षपरम्भाफलभृंगकफोल्वने ॥ अन्येप्युपद्रवायेस्युस्तत्तच्छान्त्यैयथापथम्। द्वात्रिंशद्दिवसेकार्यंस्नानमामलकैस्तिलैः ॥ युक्तंसेव्यंवलेजातेशनैरग्निबलादनु।

अर्थ–कौडीकीभस्म, पारेकी कजली, प्रत्येक ४ तोले और सुहागा एक माशे इन सबको जंबीरी नींबूके रसमें खरलकर इसमें लोकनाथ रस मिलावे तो यह लोकेश्वर नामक रस कुष्ठ और रक्तपित्तको छोडकर और सम्पूर्ण रोगोंको बलात्कार कर दूर करे. यह पुष्टि, वीर्य, प्रसन्नता कान्ति और लावण्यको देवे. इस लोकेश्वरके उपर भात दही, घृत, हींग, मिलाकर दही देवे. दो २ प्रहरके उपरांत दिनमें तीनवार पथ्य देवे, इस प्रकार देनेसे अरुचि और वान्ति नहीं होती. कदाचित् पारा विकार न करे, तो तीसरे दिन फिर देवे फिर पूर्वविधिसे आठवे दिन देवे. इस रसके सेवन कर्त्ता, प्राणीको पहले और सातवे दिन लवा. शूकरका मांस और मूंगका यूंप देवे. दूसरे दिन उडद और गेहू तथा लवाका मांस देवे. तीसरे दिन मछलीका मांस और तैलादिककी मालिश करावे.

इस लोकेश्वर रसका सेवनकर्त्ता प्राणी तेल, वेलफल, कांजी, क्रोध, स्त्रीसंग, जिया-

दा सोना, बहुत जागना, तथा करेले, ककडी आदि जो ककार नामकी वस्तु हैं उन सबको त्याग देवे. अर्थात् तेलादि पदार्थ सब इसपर अपथ्य है।

तथा जो वस्तु हृदयको हितकारी हो और स्वादिष्ट हो उसका सेवन करे, जहां सुन्दर पवन आती हो वहां मिश्री मिलाकर कुछ गरम दूध पीवे, यदि इस प्रकार पदार्थ सेवन करने पर भी क्षुधा अधिक लगे तो तिल, ईख, केलेकी गहर, खजूर (छुहारे) मांस, दाख और मिश्री आदि सबका सेवन करे।

यदि इस प्रकार सेवन करनेसे वीर्य्य ख-लित होजावे तो नारियलका जल और ताल-फलोंका सेवन करे, यदि इनके सेवनसे अफ-रा, अरुचि, मूर्छा, पीडा, धुआं सहित ड-कार और विशूचिका हो तो हलका केवल अन्न घीमें मिलाकर देवे, यदि वमन अत्यंत होती हो तो सहत मिलाकर गिलोयका रस पीवे, यदि वमनमें रुधिर आता हो तो अडूसेके रसमें सहत मिलाकर पीवे, यदि अरुचिकी विपरीतता होवे तो भुने हुए धानमे खांड मि-लाकर अथवा सहत मिलाकर सेवन करे, अथवा भुने जवोंमें सहत मिलाकर सेवन करे तथा भैंसका दही और घृत प्लुत अ-न्नका सेवन करे, तथा सुखोष्ण जलसे स्ना-नादिक करे, यदि दाह होता हो तो गिलोय-का रस मिला चूनेका नितरा हुआ जल देवे. कफकी वृद्धिमें अदरख सरसो केलाकी फली, और भांग देवे. और उपद्रवोंमें उन्हींकी शान्तिकारी वस्तु देवे. जब इस तरह ३२ दिन हो जावे तब आमले और तिलोंकी मा-लिश करे और स्नान कर डाले जब बल आ-जाय तब धीरे २ अन्य वस्तुओंका सेवन करे।

काञ्चनाभ्ररसः

काश्चनंरससिंदूरंमौक्तिकंलोहमभ्रकम् ।
विद्रुमञ्चाभयातारंकस्तूरीचमनःशिला ॥
प्रत्येकंबिन्दुमात्रन्तुसर्वंसमर्द्ययत्नतः ।
वारिणावटिकाकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः ॥
अनुपानंप्रयोक्तव्यंयथादोषानुसारतः ।
क्षयंहन्तितथाकासंश्लेष्मपित्तसमुद्भवम् ॥
प्रमेहंविविधश्चैवदोषत्रयसमुत्थितं ।
कफजान्वातजान्रोगान्नाशयेत्सद्यमेवहि
बलवृद्धिंवीर्यवृद्धिंलिंगदार्ढ्यंकरोतिच ।
श्रीकरःपुष्टिजननोनानारोगनिषूदनः ॥
गहनानन्दनाथोक्तोरसोयंकाञ्चनाभ्रकः ।

अर्थ–सुवर्ण भस्म, पारद, सिंदूर, मोती, लोहभस्म, अभ्रक भस्म, मूंगाकी भस्म, हर्ड, चांदीकी भस्म, कस्तूरी, मनसिल, प्रत्येक एक २ तोले सबको जलसे खरलकर दो २ रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे. इनको दोषानुसार अ-नुपानके साथ देवे तो क्षयीको दूर करे. तथा खांसी, कफ, पित्तविकार, अनेक प्रकारके प्रमेह और कफके तथा वातके विकारोंको त-त्काल दूर करे, बल और वीर्यको पुष्ट करे, लिंगको कडा करे, शोभा और पुष्टिकर्त्ता है तथा औरभी अनेक रोगोंको दूर करे यह गहनानन्दका कहा काञ्चनाभ्र रस है.

बृहत्काञ्चनाभ्ररसः

काञ्चनंरससिंदूरंमौक्तिकंलोहमभ्रकम् ।
विद्रुमंमृतवैक्रान्तंतारंताम्रञ्चवंगकम् ॥
कस्तूरिकालवंगञ्चजातीकोषैलवालुकम् ।
प्रत्येकंबिन्दुमात्रञ्चसर्वंमर्द्यंप्रयत्नतः ॥
कन्यानीरेणसंमर्द्यकेशराजरसेनच ।
अजाक्षीरेणसंभाव्यंप्रत्येकंदिवसत्रयम् ॥

चतुर्गुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक् ।
अनुपानंप्रयोक्तव्यंयथादोषानुसारतः ॥
क्षयंहन्तितथाकासंयक्ष्माणंश्वासमेवच ।
प्रमेहान्विंशतिश्चैवदोषत्रयसमुद्भवान् ॥
सर्वरोगंनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा ।

अर्थ-सुवर्ण, चन्द्रोदय, रससिन्दूर, मोती, लोह, अभ्रक, मूंगा, वैकांत (कांसुला) रूपा, तांबा और बंग इन सबकी भस्म, कस्तूरी, लौंग, और जावित्री प्रत्येक एक २ तोले सबको खरलकर घीगुवारके रस, भांगरेके रस, और बकरीके दूधमें खरल कर चार २ रत्ती की गोलियां बनावे, और वैद्य दोषानुसार अनुपानके साथ देवे तो क्षय, खांसी, श्वास, और वीस प्रकारका प्रमेह तथा और संपूर्ण रोगमात्रोंको यह बृहत्काञ्चनाभ्ररस दूर करे।

शिलाजत्यादिलोहम्.

शिलाजतुमधुव्योषताप्यंलोहरजस्तथा ।
क्षीरेणलोहितस्याशुक्षयःक्षयमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-शिलाजीत, मुलहटी, त्रिकुटा, (सोंठ-मिरच, पीपल) और सुवर्णमाक्षिककी भस्म प्रत्येक समान लेकर सबकी बराबर लोहेकी भस्म लेवे, फिर सबको दूधमें मिलाकर पीवे तो यक्ष्मारोग दूर हो ।

कुमुदेश्वरोरसः

हेमभस्मरसभस्मगन्धकंमौक्तिकन्तुरसटंकणं तथा। तारकंगरुडसर्वतुल्यकंकाञ्जिकेनपरिम र्घगोलकम् ॥ मृत्स्नयाचपरिवेष्ट्यशोषितंभा ण्डकेलवणगेथपाचयेत् । एकरात्रमृदुसंपुटेन वासिद्धिमेतिकुमुदेश्वरोरसः ॥ वल्लमस्यमरि चैर्घृतान्वितंराजयक्ष्मपरिशान्तयेपिबेत् ।

अर्थ-सुवर्ण भस्म, चन्द्रोदय, गंधक, मोती, खपरिया, सुहागा, रौप्य भस्म (कोई हरिताल भस्म कहतहैं) और सुवर्णमाक्षिककी भस्म सबको समान भाग ले कांजीमें खरलकर गोला बनावे, उसपर कपरमिट्टीकर धूपमें सुखालेवे, फिर एक हांडीमें नमकभर बीचमें गोलेको रख दे फिर ऊपरसे नोनभर हंडियाका मुख बंदकर चूल्हेपर रख मंदाग्निसे रात्रिभर पचावे तो कुमुदेश्वररस सिद्धि हो, इसमेंसे ३ रत्ती रस मिरच और घीमें मिलाके सेवन करे तो यक्ष्मारोग दूर हो ।

क्षयकेसरीरसः

त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः ।
नवभागोन्मितैस्तुल्यंलोहपारदसिंदुरम् ॥
मधुनाक्षयरोगांश्चहन्त्ययंयक्ष्मकेसरी ।

अर्थ-त्रिकुटा, त्रिफला, इलायची, जायफल, और लौंग प्रत्येक समान भाग ले और सबकी बराबर लोहभस्म, पारा और सिंदूर लेवे और सबको एकत्र कर सहत मिलाकर सेवन करे तो यह क्षयकेसरीरस क्षयादि सर्व रोगोंको दूर करे ।

बृहच्चन्द्रामृतोरसः

रसगन्धकयोर्ग्राह्यंकर्षमेकंसुशोधितम् ।
अभ्रंनिश्चन्द्रकंदद्यात्स्वर्णतोलकसंमितम् ॥
कर्पूरंशाणकंदद्यात्स्वर्णतोलकसम्मितम् ।
ताम्रञ्चतोलकंदद्याद्विशुद्धंमारितंभिषक् ॥
लौहंकर्षंक्षिपेत्तत्रवृद्धदारकजीरकम् ।
विदारीशतमूलीचक्षुरकंचबलातथा ॥
मर्कट्यतिवलाचैवजातीकोषफलेतथा ।
लवंगविजयावीजंश्वेतस्वर्जरसंतथा ॥
शाणभागंसमादायचैकीकृत्यप्रयत्नतः ।
मधुनामर्दयेत्तावद्यावदेकत्वमागतम् ॥
चतुर्गुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकुरुयत्नतः ।
भक्षयेद्वटिकामेकांपिप्पलीमधुनासह ॥

अर्थ–शुद्धपारा और शुद्धगंधक प्रत्येक सवा तोले, निश्चंद्र अभ्रक ढाई तोले, भीमसेनी कपूर ४ मासे, सुवर्णभस्म और ताम्रभस्म प्रत्येक एक तोले, लोहभस्म सवा तोले, विधायरा, जीरा, विदारीकंद, शतावर, तालमखाने, गुलसखरी, कौंचके बीज, कंगईकी छाल, जाविञी, जायफल, लौंग, भांगरेके बीज और सफेद राल प्रत्येक चार मासे ले और सबको एकत्र पीस सहतसे जबतक खरल करे जबतक एक जिगर न हो फिर चार २ रत्तीके प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली पीपल और सहतके साथ खाय तो क्षई दूर हो।

कालवंचकोरसः

मृतंसूतंमृतंनागंगन्धकंतुत्थटंकणम् ।
प्रत्येकमर्द्धनिष्कंस्यान्मृतशुल्वंद्विनिष्ककम्॥
शंखंनिष्कद्वयंचूर्ण्यनवनिष्कवराटकम् ।
पूरयेत्पूर्ववच्चूर्णपुटयेल्लोकनाथवत् ॥
सतस्त्वर्कदलद्रावैर्मर्दयेत्संपुटेपचेत् ।
आदायचूर्णयेत्श्लक्ष्णंतुल्यांशमरिचैर्युतम् ॥
चूर्णाच्चतुर्गुणंगंधमेकीकृत्यविचूर्णयेत् ।
पंचमाषैर्घृतैर्लेह्यमसाध्यंराजयक्ष्मणं ॥
त्रिसप्ताहान्नसन्देहाद्रसोयंकालवंचकः ।

अर्थ–चंद्रोदय, सीसेकीभस्म, गंधक, नीलाथोथा, और सुहागा प्रत्येक दो मासे तांबे और शंखकी भस्म प्रत्येक ८ मासे, सबको कूट पीस३६ मासे कौडियोंमें लोकनाथ रसके समान भरे, और फूंक दे फिर आकके पत्तोंसे खरलकर संपुटमें रख फूंक देवे. जब स्वांग शीतल होजाय तब चूर्णकर चूर्णके बराबर कालि मिरचका चूर्ण और कालि मिरचके चूर्णसे चौगुना शुद्ध गंधक इन सबको एकत्रकर चूर्ण करे. इसमेंसे ९ मासेकी मात्रा घी मिलाकर खावे तो असाध्यभी राजयक्ष्माको २१ दिनमें दूर करे. इसे कालवंचकरस कहते हैं।

नीलकंठोरसः

विषंक्षुद्रोशीरंचहरिद्रागोपयोमधु ।
कटुजस्यत्वचाचूर्णसमांशंमाषमात्रकम् ॥
राजयक्ष्महरंखादेद्रसोयंनीलकंठकः ।

अर्थ–विष, कटेहरी, खस, हलदी, गौदूध, सहत, कुडाकी छाल, सब मासे २ भर लेवे, और भक्षण करे तो यक्ष्माको दूर करे।

रसमाणिक्यम्.

शुद्धंसूतंपलान्यष्टौकुनटीतस्यतत्समम् ।
नागपत्रंचाष्टपलमष्टौस्याच्छुद्धगंधकः ॥
एकत्रकज्जलींकृत्वाकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
वालुकायंत्रमध्येतुअग्निंषोडशयामकम् ॥
भवेन्माणिक्यवर्णोयंशुद्धस्तंभंकरोतिच ।
जराव्याधिविनाशायराजरोगकुलांतकृत् ॥
दशरात्रिप्रयोगेणमहाव्याधिविनाशनं ।
रक्तिकार्द्धंसदापथ्यंवृद्धःसंयातियौवनं ॥

अर्थ–शुद्धपारा, मनसिल, सीसेकेपत्र, और शुद्धगंधक प्रत्येक ८ पल ले और सबकी कजली कर शीशीमें भर वालुकायंत्रमें १६ प्रहरकी अग्नि देवे तो यह माणिकके वर्णरस बने यह वीर्यका स्तंभन करे, वृद्धावस्था और रोगोंको तथा राजरोगको नाश करे. दशरात्रिके सेवन करनेसे घोर व्याधिको दूर करे, इसके सेवनसे बुड्ढाभी जवान हो. इस माणिक्यरसकी मात्रा आधरत्ती है।

रसराजः

मुक्ताप्रवालरसहेमशिताभ्रकश्चवंगंमृतंसकलमेतदहोविभाव्यं । छिन्नारसेनचवरीसलिलेनसप्तपश्चात्प्रदंमधुहविर्मरिचेनसार्कं ॥ लिह्यादुरक्षतहरंरसराजकाख्यंमाषप्रमाणकतनू

क्षत्रहेतुमेनं ।

अर्थ—मोती, मूंगा, चन्द्रोदय, सुवर्ण, सफेद अभ्रक और वंग इन सबकी भस्म समान भाग लेकर कुटकी और शतावरिके रसोंकी सात २ भावना देवे, फिर इस रसको सहत, घी और काली मिरचोंके चूर्णके साथ १ मासे सेवन करे तो उरक्षतको तत्काल दूर करे ।

वज्ररसः

कर्षखर्परसत्वस्यपण्मापेहेम्निविद्रुते ।
षड्निष्कसूतकंगन्धास्माऽष्टनिष्केमत्रेशितं ॥
प्रवालमुक्ताफलयोश्चूर्णंहेमसमांशयोः ।
क्रमाद्द्वित्रिचतुर्निष्कंमृतायसीसभास्करं ॥
चांगेर्यम्लेनयामांस्त्रीन्मर्दितंचूर्णितंपृथक् ।
द्वौनिष्कौमीलतंतुत्थंव्योमायस्कांततालका
त् ॥ अंकोलकंगुणीबीजतुत्थेभ्यश्चतुरःपृथक्
अष्टौचटंकणंक्षाराद्वराटानाश्चविंशतिः ।
महाजंबीरनीरस्यप्रस्थद्वंद्वेनपेषयेत् ॥
एतदष्टसरावस्थंशुद्धंखार्यास्तुपस्यच ।
करीपभारेचपचेदथमासद्वयंततः ॥
एतावद्गंधकात्पाच्यंमरिचाद्भावितादपि ।
मधुनालोडितंलिह्यात्ताम्बूलीपत्रलेपितं ॥
गतेस्यघटिकामात्रेप्रतियामेचपथ्यभुक् ।
नोचेदुद्दीपितोवन्हिःक्षणाद्धातून्पचत्यतः ॥
दिनमेकंनिषेव्यैनंत्याज्यान्यामंडलात्यजेत् ।
ततःपरंयथेष्टाशीद्वादशाब्दंसुखीभवेत् ॥
एकमेकंदिनंभुक्त्वावर्षेवर्षेमहारसं ।
वर्षादौचत्यजेत्त्याज्यंद्वादशाब्दांजरांजयेत्
एपवज्ररसोनामक्षयपर्वतभेदनः ॥

अर्थ—खपरियाका सत्व १ तोले, पारा १६ मासे, और गंधक १६ मासे, और मोती, मूंगा ये दोनों सुवर्णके बराबर लेवे । प्रथम ६ मासे सुवर्णकी द्रुतिमें खपरियाका सत्व मिलाय फिर लोहभस्म २ निष्क, सीसेकी भस्म ३ निष्क, तांबेकी भस्म ४ निष्क सबको एकत्रकर चार प्रहर चूकेके रसमें खरल करे फिर चूर्णकर नीलाथोथा, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, कान्तलोहकी भस्म, और हरिताल. ये सब ३२ मासे लेवे. अंकोल, कांगनी इनको नीलाथोथेसे चौगुनी लेवे, सुहागा ८ निष्क, कौडियोंकी भस्म २० निष्क, सबको दो सेर जंभीरी नींबूके रसमें खरल करे, फिर ८ सराव तुपोदकसे खरल कर एक भार आरने कंडोंकी अग्निमें दो महीनेतक पचावे, फिर जितनी ये औषधि रहे उसकी चतुर्थांश गंधक डालकर खरल करे, फिर काली मिरचकी भावना देवे इसमेंसे ४ रत्तीके अनुमान सहतमें मिलाकर पानमें लेपकर खाय और एक घडी बाद प्रहर २ में पथ्य भोजन करे, अन्यथा जठराग्नि दीपन होकर क्षणमात्रमें रसादि धातुओंको पचाती है. इस औषधिको १ दिन सेवन करके फिर मंडल ४९ पर्यन्त पथ्य सेवन करे इसके उपरांत यथेष्ट भोजन करे तो १२ वर्ष पर्यंत सुखी हो, वर्ष २ दिन पीछे एक २ दिन इस महारसका सेवन करे और पथ्यसे रहे तो १२ वर्षमें वृद्धावस्थाको जीते. यह वज्ररसनामक क्षयरोगरूप पर्वतको तोडनेवाला है. यह रसरत्नसमुच्चयमें लिखा हुआ है ।

महावीरोरसः

निष्कौद्वौतुल्यभागस्यरसादेकंसुसंस्कृतात् ।
निष्कंविपस्यद्वौतीक्ष्णात्कर्षांशंगन्धमौक्ति
कात् ॥ अग्निपर्णीहरितालभृंगार्द्रस्वरसारसैः ।
मर्दितंलांगलीकंदमलिप्तेसंपुटेपचेत् ॥
अर्द्धपादंचपोटल्याकाकिण्योद्वेविपस्यच ।
लिहेन्मरिचचूर्णंचमधुनापोटलीसमं ॥

क्षयग्रहण्यतीसारवन्हिदौर्बल्यकासिनां ।
पाण्डुगुल्मवतांश्रेष्ठोमहावीरोहितोरसः ॥
अतिस्थूलस्यपूयासृक्कफानुद्वमतःक्षये ।
नयोजयेत्क्षीररसान्निरुद्धोथक्रमत्वतः ॥

अर्थ-लीलाथोथा दो निष्क, शुद्ध पारा १ निष्क, विष १ निष्क, खेडीलोहकी भस्म २ निष्क, शुद्ध गंधक १ तोले, मोती १ तोले, इन सबको अग्निपर्णी, हरिताल, भांगरा, अदरख, और तुलसीके रसमें खरल कर कलियारीके कंदमें रख कपरमिट्टी कर संपुटमें रखकर फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब इसमें अर्द्ध भाग मृगांकपोटली रस मिलवे, और दो काकणीभर विष मिलावे, सबको घोटकर एक जी करे, इसको मिरचके चूर्ण और सहतके साथ खाय तो क्षय, संग्रहणी, अतिसार, मंदाग्नि, खांसी, पांडुरोग, गोला, इन रोगोंको यह महावीररस हित है. जो अति स्थूल तथा राध रुधिर कफको डालता हो उनको क्षीर और मांसरस पथ्यमें न दे. किन्तु इससे विपरीत क्रम करना चाहिये ।

दशांगलोहम्.

रास्नाकर्पूरतालीसभेकपर्णीशिलाजतु ।
त्रिकटुत्रिफलामुस्तविडंगदहनासमाः ॥
चतुर्दशायसोभागास्तच्चूर्णंमधुसर्पिषा ।
लीढंयक्ष्माणमत्युग्रंकासश्वासंतथाज्वरं ।
बलवर्णाग्निपुष्टीनांवर्द्धनंदोषनाशनं ॥

अर्थ-रास्ना, कपूर, तालीस पत्र, ब्राह्मी, शिलाजीत, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, नागरमोथा, बायविडंग, और चितेकी छालको बराबर ले, इनका चौदहवां भाग लोहभस्म मिलावे और ३ मासे चूर्णको सहत और पीपल मिलाकर चाटे तो घोर खई, खांसी, श्वास और ज्वरको दूर कर बलवर्ण और जठराग्निको बढावे, और सर्व दोषोंका नाश करे ।

स्वर्णभूपतिरसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंमृतशुल्वंतयोःसमं ।
अभ्रलोहकयोर्भस्मकान्तभस्मसुवर्णजं ॥
रसकंचविषंसम्यक्पृथक्सूतसमंभवेत् ।
हंसपादीरसैर्मर्द्यंदिनमेकंवटीकृतम् ॥
काचकूप्यांविनिक्षिप्यमृदामंलेपयेद्बहिः ।
शुष्कांसवालुकायंत्रेशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥
चतुर्गुंजामितंदेयमार्द्रकद्रवपिप्पली ।
क्षयंत्रिदोषजंहंतिसन्निपातांस्त्रयोदश ॥
खण्डपातंधनुर्वातंशृंखलावातमेवच ।
आढ्यवातंपंगुवातंकफवाताग्निमांद्यनुत् ॥
कटिवातंसर्वशूलंनाशयेन्नात्रसंशयः ।

अर्थ-शुद्ध पारा और शुद्ध गंधक दोनों बराबर ले और दोनोंकी बराबर भरा तांबा लेवे । तथा अभ्रक, लोह, कांत, सुवर्ण खपरिया और विष प्रत्येक पारेके समान लेवे, सबको हंसपदीके रसमें एक दिन खरल कर गोली बनावे, और शीशीमें भर शीशीपर कपरमिट्टी कर सुखाय. वालुकायंत्रमें धीमी आंचसे पचावे. इसकी ४ रत्ती मात्राको अदरखके रस और पीपलके चूर्णके साथ दे तो त्रिदोषकी खई और तेरह प्रकारके सन्निपात, खंडवात, धनुर्वात, शृंखलावात, आढ्यवात, पंगुवात, कफवात, मंदाग्नि, कमरकी बादी, सब प्रकारके शूल, गोलेका दर्द, उदावर्त्त, संग्रहणी, प्रमेह, सर्व प्रकारके उदररोग, पथरी, मूत्रका रुकना, मलका रुकना, भगंदर, सर्व प्रकारके कुष्ठ, विद्रधि, खांसी, श्वास, अजीर्ण, आठ प्रकारका ज्वर, कामला, पांडुरोग, और शिरके रोगोंको अनुपान भेद कर-

नेसे दूर करे । जैसे सूर्यके उदयसे सारा अंधकार नाश होजाता है. यह सर्व रोगोंके हितार्थ प्राचीन आचार्य्योंनें कहा है ।

पंचामृतपर्पटीरसः

सुवर्णरजतंताम्रंसत्वाभ्रंकान्तलोहकम् ।
क्रमवृद्धमिदंसर्वंमर्दयेदम्लवर्गतः ॥
ताप्यनीलांजनंतालंशिलागंधंचचूर्णितम् ।
दत्वादत्वापुटेत्तावद्यावद्विंशतिवारकम् ॥
लोहाद्द्विगुणसूतेनततोद्विगुणगंधतः ।
विधायकज्जलींश्लक्ष्णांलिप्तात्तांलोहपात्रके
द्रावयेद्बदरांगारैर्मृदुभिश्चाप्यनिक्षिपेत् ।
हेमादिपंचलोहानांभस्मचाप्यविलोडयेत् ॥
अथतत्कदलीपत्रेगोमयस्थेविनिक्षिपेत् ।
पत्रेणानेनसंछाद्यचिपिटीकुरुयत्नतः ॥
तस्योपरिक्षिपेत्सद्योगोमयंस्तोकमेवच ।
स्वतःशीतंसमाहृत्यतावच्चूर्णंविधायच ॥
निक्षिपेदूर्ध्वदंडायांपालिकायांततःपरं ।
पूर्ववद्बदरांगारैर्मृदुभिर्द्रावयेच्छनैः ॥
तुल्यालकशिलागंधंपलार्द्धंविषभावितं ।
पूर्ववद्वटिकातुल्यंतस्मादल्पंमुहुर्मुहुः ॥
जारयेत्पलिकामध्येयथादह्येन्नपर्पटी ।
पलिकेतिविनिर्दिष्टालेहक्षेपणयंत्रिका ॥
जीर्णतालादिकेचूर्णेपद्चूर्णंतुविधीयतां ।
पूतीकरंजमेपशृंगीचव्याघ्रीसौभाजनांघ्रिभिः॥एतैःपंचपलैःक्वाथंषोडशांशावशेषितं ।
तेनक्वाथेनसंस्वेद्यशोषयेत्सप्तधाहितां ॥
विषतिंदुफलोद्भूतरसैर्निर्गुंडिकारसैः ।
विभाव्यपलिकामध्येक्षिप्त्वाबदरवन्हिना ॥
ईषत्प्रस्वेदनंकृत्वास्थापयेदतियत्नतः ।
उक्ताभैरवनाथेनस्यात्पंचामृतपर्पटी ॥
व्योपाज्यसहितालीढागुञ्जाबीजेनसम्मिता।
सर्वलक्षणसंपूर्णंविनिहंतिक्षयामयं ॥
श्वासंकासंविशूचींचप्रमेहमुदरामयं ।
अरोचकंचदुःसाध्यंप्रसेकंछर्दिहृद्द्रवं ॥
अर्षिकंगुदरोगंचशूलकुक्षान्यशोपतः ॥
वातज्वरंचविड्बंधंग्रहणीकफजान्गदान् ।
एकद्वंद्वत्रिदोषोत्थान्रोगानन्यान्महागदान्
अग्निमांद्यंविशेषेणरसोयंपरमोत्तमः ।
एवंसमुक्ष्यदातव्योरसोयंभिषगुत्तमैः ॥
तत्तद्रोगहरैर्योगैस्तत्तद्रोगानुपानतः ।
पथ्यादिसर्वरोगघ्नीस्यात्पंचामृतपर्पटी ॥
तैलसर्षपबिल्वाम्लकारवेल्लकुसुंभकं ।
त्यज्येत्पारावतंमांसंवृंताकंकुक्कुटंतथा ॥

अर्थ–सुवर्ण, चांदी, तांबा, अभ्रकसत्व, कान्तिलोह, इनकी भस्म क्रमसे बढती भाग लेवे. सबको खरलमें डाल अम्लवर्गसे खरल करे, फिर सुवर्णमक्खी, सुरमा, हरिताल, मनसिल और गंधक इनका चूर्णकर वारंवार पुट देकर अग्निमें फूंक देवे. इस प्रकार २० पुट देकर लोहेसे दूना पारा और पारेसे दूनी गंधक दोनोंकी कजली कर लोहेके पात्रमें डालके बेरकी लकडियोंकी अग्निपर रखके तपावे. जब पतली होजावे तब सुवर्णादि पंचलोहकी भस्म भी मिला देवे, सबको एक जीव करके शीघ्र पत्रपर ढाल देवे, फिर दूसरे केलेके पत्रसे ढक गोबरकी लुगदीसे दवा देवे और शीतल होनेपर निकाल लेवे, फिर इसमें कजली मिलाके ऊपरकी हंडीवाली पालीमें डालके मंदाग्निसे तपावे. फिर इसमें हरिताल, मनसिल और गंधक मिलाके और दो तोले विष लेवे पूर्वक्रमसे पालीमें जारण करे, परन्तु गंधक आदि औषधीही जलें पर्पटी न जलें इस प्रकार जारण करे, जिसमें लेहको डालके पतली करते हैं उसे पलिका वा पारी कहते है. फिर कंजा मेढासिंगी, कटेरी, सहं-

जना, इनको पांच २ पल लेकर षोडशांशावशेष काढा करे। उससे पूर्वोक्त पर्पटीका ७ बार स्वेदन करे और सुखाकर सिंगियाविष, कुचला, और निर्गुंडीके रसकी भावना देकर पालीमें डाल थोडी देर बेरकी अग्निपर गरमकर रख छोडे. यह भैरवनाथकी कही पंचामृत पर्पटी है. इसको सोंठ, मिरच, पीपलके चूर्ण और घी, सहत एके साथ १ रत्ती लेवे तो सब प्रकारकी क्षयोंका नाश करे. श्वास, खांसी, विशूचिका, प्रमेह, उदर, असाध्य अरुचि, संग्रहणी, एकदोषज, द्विदोषज, त्रिदोषज, सर्वरोग. लारकागिरना, हृदयसे उत्पन्न छर्दि, गुदाकेरोग, कूखका शूल, वातज्वर, मलकारुकना, और मन्दाग्निको यह रस परम हितकारी है. इसप्रकार विचारकर इस रसको देना चाहिये. ये पृथक् २ अनुपानसे जिस २ रोग पर दिया जावे उसी २ को दूर करे. यह क्षयादि रोग नाशक पंचामृतपर्पटी है. इसका सेवन कर्त्ता तेल, सरसोंका साग, बेल, खटाई, करेले, कसूम, कबूतरका मांस, बेंगन और मुर्गका मांस इनसे बचता रहे, अर्थात् इनको न खाय।

चिंतामणिरसः

रसेन्द्रवैक्रान्तकरौप्यताम्रसलोहमुक्ताफलगन्धहेम्ना । त्रिभावितंचार्द्रकमार्धवन्हिरसैरजागोपयसातथैव ॥ अर्शःक्षयंकासमरोचकंचजीर्णज्वरंपाण्डुमपिप्रमेहान् । गुंजाप्रमाणंमधुमागधीभ्यांलीढंनिहन्याद्विषमंचवातं ॥ चिंतामणिरितिख्यातापार्वत्यानिर्मितास्वयं ।

अर्थ–चन्द्रोदय, वैक्रान्तकी भस्म, रूपरस, तामेश्वर, सार, मोतीकी भस्म, शुद्ध गंधक, और सुवर्णकी भस्म, इन सबको अदरखके रसकी ३ भावना देवे. और भांगरे. चीते इनके रसोंकी तीन तीन भावना देकर गौके दूधकी तीन भावना देवे. तो यह चिंतामणि रस सिद्धि होवे. इसकी १ रत्ती मात्राको सहत और पीपलके चूर्णके साथ सेवन करे तो बवासीर, क्षय, खांसी, अरुचि, जीर्णज्वर, पाण्डुरोग, प्रमेह और विषमवातको यह रस दूर करे।

स्वर्णभस्मराजमृगाङ्कोरसः

पलंस्वर्णस्यपत्राणांपारदस्यपलंतथा ।
गंधकस्यपलंदेयंप्रयत्नैःपरिशोधितम् ॥
विधायपुटितंपश्चाद्भूमिखातेनिधापयेत् ।
त्रिंशद्वनोपलैर्देयःपुटपाकश्चतुर्दशम् ॥
पुटेपुटेयोजनीयौपुनर्गंधकपारदौ ।
कांचनाररसंतद्वत्कांजिकंसःप्रयोजयेत् ॥
एवंप्रजापतेभस्मराजार्हंराजवल्लभम् ।
गुञ्जाचतुष्टयमितंदातव्यंवायथाबलं ॥
लवंगैलामृगमदैःस्वर्णमानमितैस्तथा ।
सजातीफलकर्पूरैर्मरिचैःक्षयनाशनम् ॥
पाण्डुरोगमुदावर्तंव्याधीन्वातभवान्जयेत् ।
अमृतासत्वसंयुक्तंसर्वज्वरविनाशनम् ॥
सितैलावंशजैःपित्तपीडातिमिरभास्करं ।
तदेवरससिंदूरंयुक्तंद्विगुणमौक्तिकम् ॥
तुर्यांशंटंकणंदेयंभर्जितंखर्परेशुभे ।
लवंगरससंपिष्टंपुटयंत्रेणपाचितम् ॥
स्वर्णभस्मामितिख्यातंमृगांकोजायतेरसः ।
क्षयादिसर्वरोगघ्नंराज्ञाचपदपूर्वकम् ॥

अर्थ–स्वर्णके वर्क, शुद्धपारा, शुद्धगंधक प्रत्येक ४ तोले ले, खरलकर कचनालके रसका पुट देवे, फिर कांजीका पुटदेकर सुखा ले, पश्चात् पृथ्वीमें गड्ढा खोद ३० आरने उपले रख उसमें इस सुवर्णकी पिट्ठीको रख संपुटमें बंदकर फूंक देवे, इस प्रकार १४ पुट

देवे तो राजाके खाने योग्य यह राजमृगांक रस बने, इसमेंसे ४ रत्ती अथवा बलाबल देखकर देवे. लौंग, इलायची, कस्तूरी एक २ मासे ले तथा जायफल, भीमसेनी कपूर और काला मिरचके चूर्णमें मिलाके इस राजमृगांक रसको देवे तो क्षय, पाण्डुरोग, उदावर्त और वादीके रोगोंको दूर करे. गिलोयके सत्वके साथ खानेसे सर्व प्रकारके ज्वरोंका नाशकरे, छोटी इलायची और बंशलोचनके साथ पित्तके विकारोंको जीते, यदि इसमें रससिंदूर और दूने बूकाके मोती तथा चतुर्थांश सुहागा साफ़ खिपडेका भुना सबको लौंगके रसमेंसे पीस पुटयंत्रमें फूंक देवे तो यह स्वर्णभस्म मृगांकरस बने, यह क्षयादि सर्वरोगोंका नाश करे यह रसराज लक्ष्मी ग्रंथमें लिखा है ।

महाकनकसिंदूरोरसः

रसगंधकनागांश्वरसकोमाक्षिकाभ्रके ।
कान्तविद्रुममुक्तानांवंगभस्मंचतारकं ॥
भस्मीकृत्वाप्रयत्नेनप्रत्येकंकर्षसंमितम् ।
सर्वतुल्यंशुद्धहेमंभस्मीकृत्वाप्रयोजयेत् ॥
मर्दयेत्त्रिदिनंसर्वंहंसपादीरसैर्भिषक् ।
ततोवैगोलकान्कृत्वाकाचकुप्यांविनिक्षिपेत् ।
रुध्वातत्काचकूपींचसप्तवस्त्रेणवेष्टयेत् ।
ततोवैसिकतायंत्रेत्रिदिनंचोक्तवन्हिना ॥
पश्चात्तंस्वांगशीतंतुपूर्वोक्तंरसमर्दयेत् ।
विनिक्षिप्यकरंडेयसंपूज्यरसराजकम् ॥
महाकनकसिंदूरोराजयक्ष्माहरःपरः ।
पाण्डुरोगश्वासकासकामलाग्रहणीगदान् ॥
कृमिशोफोदरावर्त्तगुल्ममेहगुदांकुरान् ।
मन्दाग्निछर्दिरुचीरामशूलहलीमकान् ॥
ज्वरान्द्वंद्वादिकान्सर्वान्सन्निपातांस्त्रयोदशान्पित्तरोगमपस्मारंवातरोगान्विशेषतः ॥
रक्तपित्तंप्रमेहांश्चस्त्रीणांरक्तस्रवांस्तथा ।
विंशतिश्लेष्मरोगांश्चमूत्ररोगान्निहन्त्यसौ ॥
बलवर्णकरश्चायमायुःशुक्रविवर्द्धनः ।
महाकनकसिंदूरःकाश्यपेनविनिर्मितः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सीसा, खपरिया, सोनामक्खी, अभ्रक, कान्तलोह, मूंगा, मोती, वंग और चांदी प्रत्येककी भस्म दो तोले लेवे. सबकी भस्मके समान सोनेकी भस्म मिलावे, फिर सबको हंसपदीके रसमें ३ दिन खरल करे, फिर गोला बनाय कांचकी शीशीमें रख उसका मुख बंद कर सात कपरमिट्टी करदेवे, फिर बालुकायंत्रमें रख तीन दिन बराबर अग्नि देवे और स्वांग शीतल होनेपर खरल कर उत्तम पात्रमें भरके रख छोडे तो पूजनीय रसराज बने. यह महाकनकसिंदूररस राजयेक्ष्मा, पांडुरोग, श्वास, खांसी, कामला, संग्रहणी, कृमि, सूजन, उदर, उदावर्त्त, गोला, प्रमेह, बवासीर, मंदाग्नि, वमन, अरुचि, आमवात, शूल, हलीमक, द्वंद्वजादि संपूर्ण ज्वर, तेरह प्रकारका सन्निपात, पित्तरोग, मृगी, वातरोग, रक्तपित्त, प्रमेह, स्त्रियोंके प्रदरादि, बीस प्रकारके कफरोग, मूत्ररोग, इन सबको दूर करे. बल, वर्ण, आयु और वीर्यको बढावे, यह महाकनकसिंदूररस कश्यप ऋषिका निर्माण किया हुआ है ।

मृगांकखानेकीविधि.

मृगांक १ रत्ती, बंशलोचन २ रत्ती, छोटी इलायचीके बीज २ रत्ती, बूका मोती १ रत्ती यदि कफ अधिक हो तो पीपल १ रत्ती, सहत ६ मासे सबको एकत्रकर खाय ।

मृगांककापथ्य.

गुञ्जाचतुष्टयंचास्यमरिचैर्भक्षयेद्भिषक् ।
पिप्पलीदशकंचानुमधुनालेहयेद्बुधः ॥
पथ्यंसुलघुमांसेनप्रायेणास्यप्रयोजयेत् ।
दध्याज्यंगव्यतक्रंवाक्षीरंवाजंप्रयोजयेत् ॥
व्यञ्जनैर्घृतपक्वैश्चनातिक्षारैरहिंगुकैः ।
एलाजाजीमरिचैस्तुसंस्कृतैरविदाहिभिः ॥
वृंताकंतैलबिल्वानिकारवेल्लंचवर्जयेत् ।
स्त्रियंपरिहरेद्दूरात्क्रोधंचापिपरित्यजेत् ॥
वल्लीरुधिरकानामतन्मूलक्वाथयेत्पलं ।
कटुत्रयसमायुक्तंपाययेत्कफशान्तये ॥
ईषद्धिंगुसमायुक्तंकाकिणीमूलमेवच ।
भक्षयेत्पथ्यभोज्यंचसर्ववान्तिप्रशान्तये ॥
मार्कण्डीपत्रचूर्णस्यगुटिकांमधुनाकृतां ।
धारयेत्सततंवक्त्रेकासविष्टंभनाशिनीं ॥
छागमांसंपयश्छागंछागंसर्पिससनागरं ।
छागोपसेवासयनंछागमध्येतुयक्ष्मनुत् ॥

अर्थ–४ रत्ती मृगांकको काली मिरचके चूर्णमें मिलाकर खावे, अथवा १० पीपलके चूर्ण और सहतमें मिलाकर खावे, और पथ्यमें हलके मांस खाने चाहिये. दही घी, गौकी छाछ, अथवा बकरीका दूध देवे. तथा घीके पके पदार्थ जिनमें बहुत हींग और नोन न पडे हो, तथा छोटी इलायची, जीरे और काली मिरचोंसे संस्कार किये हुए हो. और दाहकारी पदार्थ जिनमें पडे हो ऐसे पदार्थ सेवन न करे. एवं बैंगन, तेल, बेल, करेले आदि खाना त्याग दे. स्त्रीकेपास न जावे, क्रोध न करे, तथा रुधिरकानाम बेलकी जडका काढा कर उसमें त्रिकुटा डालकर पीवे. तो कफशांति हो, इसीमें थोडी हींग मिलाय काकतुंडीकी जडके चूर्णमें इस रसका सेवन करे और पथ्यसे रहे तो वादीके सर्व विकार दूर हो, भूँयखखसा रूखडीके पत्तोंके चूर्णकी सहतमें गोली बनाकर मुखमें रखे तो खांसी और मलावरोधको दूर करे. बकरेका मांस और बकरीका दूध और बकरीका घृत और सोंठ मिलाकर खावे तथा बकरियोंकी सेवा करे तथा बकरियोंमें रहे तो राजयक्ष्मा यानी क्षयीको दूर करता है ।

मोतिकेगुण.

कफपित्तक्षयध्वंसिकासश्वासाग्निमांद्यनुत् ।
पुष्टिदंवृष्यमायुष्यंदाहघ्नंमौक्तिकंमतम् ॥

अर्थ–कफ, पित्त, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और दाहको दूर करे. देहको पुष्टि करे. वीर्य और आयुको बढावे, इतने गुण मोतीमें है।

हेमाभ्ररससिंदूरोरसः

अभ्रकंरससिंदूरंमिश्रितंहेमभस्मना ।
समभागंप्रकुर्वीतरसेनार्द्रकयोजितं ॥
क्षयंचक्षयपाण्डुंचक्षयकासंचकुंभकम् ।
जयेन्मण्डलपर्य्यन्तंपूर्वकर्मविपाककृत् ॥

अर्थ–अभ्रकभस्म और रससिंदूरको सुवर्ण भस्ममें मिलाकर अदरखके रससे सेवन करे तो क्षयरोग, पाण्डुरोग, खांसीकी क्षीणता और कुंभकामला इन सब रोगोंको एक मण्डलपर्य्यन्त सेवन करनेसे दूर करता है ।

सुवर्णपर्पटीरसः

शुद्धंसुवर्णदलमष्टगुणेनशुद्धसूतेनपिंडितमथो नसुभागभाजं । गंधंद्रुतेबदरवन्हिकलोहपात्रेदत्त्वाविलोड्यलघुलोहशलाकयातत् ॥ मंदंनिरस्यसुरभीमलमण्डलस्थरंभादलेतदुपरि प्रणिधायचान्यत् । रंभादलंलघुनियंत्र्यतदाददीतशीतंसुवर्णरसपर्पटिकाभिधानं ॥ पित्तोल्वणेसशितयानुगयाथवातश्लेष्मोल्वणेकिलतुगामधुपिप्पलीभिः । क्षीणेविरेकिणि

चशोपिगिमन्दवन्हौपाण्डुप्रमेहिणिचिरज्व-रिणाग्रहण्यां ॥ वृद्धेशिशौसुखिनिराज्ञिनि देयनार्यांभिपज्यमेतदुदितंहितमामयन्नम् ।

अर्थ-सोनेके वर्कोंमें अठगुने शुद्ध पारेको मिलाकर खरल करे फिर अठगुनी गंधकको लोहेके कलछेसे बेरकी अग्निपर पतली करे उसमें पारा और सोंना बुरक दे और लोहेकी सलाईसे चलाता जाय जब खूब मिलजाय तब गोबरपर केलेका पत्ता बिछाकर उस तबी हुई गंधकको डाल देवे, और ऊपरसे दूसरा पत्ता ढककर दाब देवे, तो यह सुवर्णपर्पटी रस बने इसको पित्तकी अधिकतामें मिश्रीके साथ देवे. वातकफाधिक्यमें वंसलोचन, सहत और पीपलके चूर्णके साथ देवे यह क्षीणता, दस्त, शोपरोगी, मन्दाग्नी, पाण्डु, प्रमेह, जीर्णज्वर और संग्रहणी इन रोगोंमें तथा वृद्ध, बालक, सुखी, राजा और स्त्रीको यह औषधी सर्वरोग नाशक और परमहितकारी है ।

नवरत्नराजमृगांकोरसः

सूतंगंधकहेमताररसकंवैक्रान्तकान्तायसं।वंगं नागपविप्रवालविमलामाणिक्यगारुत्मते ॥ ताप्यौमौक्तिकपुष्परागजलजंवैदुर्यकंताम्रकं। शुक्तिस्तालकमभ्रहिंगुलशिलागोमेदनीलंसमे ॥ गोक्षुरैःफणिवल्लिसिंहवदनामुंडीकणा चित्रकैः । इक्षुछिन्नरुहारविप्रियजयाद्राक्षा वरीजद्रवैः ॥ कांकोलैर्मदनागकेशरजलैर्भाव्यंपृथक्सप्तधा ।भाण्डेसिंधुभृतेमृगांकवद्यः पाच्यःक्रमाग्नौदिनं ॥ भूयःप्राक्समुदाहृतैर्द्रवचयैस्तंभावयेत्पूर्ववत् । पश्चात्तुल्यविभाग शीतलजलःकस्तूरिकाभावना ॥ गोप्याद्गोप्यतरंरसायनमसौश्रीशंकरेणोदितं । गुञ्जा सिंधुयुतःकणामधुयुतःशोफेसपाण्ड्वामये॥वातव्याधिमुपद्रवैश्चसहितंमेहस्तथाविंशतिः। संयोज्यश्चहरीतकीगुडयुतोवाताभ्रकेदुर्जये॥ गंभीरेचगुडूचिसत्वचपलाक्षौद्रैस्तुसंयोजिता । आध्मानारुचिशूलमांद्यकसनापस्मारवातोदरान् ॥ श्वासान्संग्रहणीहलीमकमथासर्वज्वरान्नाशयेत् । धातून्पुष्टयतिक्षयंक्षपयतिस्यामाशतंयौवनं ॥ प्रौढाढोपयुतंकरोतिसहसा तारुण्यगर्वेप्सितं । सिद्धोरत्नमृगांकराजजयतिस्वस्वानुपानैर्गदान् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुवर्ण, चांदी, खपरिया, वैक्रान्त, कान्तलोह, बंग, नाग, हीरा, मूंगा, विमला, मानिक, पन्ना, सोनामक्खी, तारमाक्षिक, मोती, पुखराज, शंख, वैदूर्य, ताम्र, सीप, हरिताल, अभ्रक, हींगलू, मनसिल, गोमेद, नीलम, इन सबकी भस्म समान भाग लेवे. फिर सबको एकत्र कर गोखरू, पान, कटेरी, गोरखमुंडी, पीपल, चीतेकी छाल, इख, गिलोय, हुलहुल, अरनी, दाख, शतावर, कंकोल, कस्तूरी, और नागकेसर इनके काढोंकी पृथक् २ सात २ भावना देवे. फिर एक पात्रमें सेंधानिमक भरकर उसमें मृगाङ्क रसके समान इस रसको पचावे. क्रमसे १ दिनकी अग्नि देवे फिर स्वांग सीतल होनेपर पूर्वोक्त रसोंकी भावना देवे. फिर इसमें इस रसके समान कस्तूरीकी भावना देवे. यह गुप्तसे भी गुप्तर रसायन श्रीशिवने कही है. इसमेंसे १ रत्ती रसको सैंधेनिमक. पीपल और सहतके साथ देवे सूजन और पाण्डुरोग दूरहो तथा उपद्रव युक्त वातव्याधि २० प्रकारके प्रमेह दूर हो. वातरक्तमें हडके चूर्ण और गुडके साथ देवे, गंभीरज्वरमें गिलोयके सत्व, पीपल और सहतमें देवे अफरा, अरुचि, शूल, मंदाग्नि,

खांसी, मृगी, वातोदर, श्वास, संग्रहणी, हलीमक, और सर्व ज्वरोंको नाश करे. रसादि धातुओंको पुष्टि करे. क्षईको दूर करे. सौस्त्री भोगनेकी शक्ति करे, तरुणताको गर्वयुत् करे, यह सिद्ध मृगाङ्क रस पृथक् पृथक् अनुपानसे सम्पूर्ण रोगोंको दूर करता है ।

शंखगर्भपोटलीरसः

शंखनाभिगवांक्षीरैःपेपयेन्निष्कषोडशः । तेनमूपामकर्त्तव्यातन्मध्येभस्मसूतकम् ॥ निष्कार्द्धंगंधकात्त्रीणिचूर्णीकृत्यविनिक्षिपेत्। रुध्वातद्वेष्टयेद्वस्त्रैर्मृत्तिकांलेपयेद्दृढैः ॥ शोष्यंगजपुटेपाच्यात्मूपयासहचूर्णयेत् । मधुकृष्णानुपानेनगुंजामेकांमदापयेत् ॥ यक्ष्मरोगंनिहंत्याशुमृगांकरसवद्ध्रुव ।

अर्थ—शंखकी ३२ मासे नाभि लेके गौके दूधमें पीसे फिर उसकी मूषा बनाकर उसमें ८ मासे चन्द्रोदय और १२ मासे गंधकका चूर्ण डाल कपरमिट्टीकर धूपमें सुखाय गजपुटमें फुंकदे. जब स्वांग शीतल होजावे तब उसको निकाल ऊपरकी कपरमिट्टी दूर कर मूषा सहित खरलमें डाल पीस डाले, फिर किसी पात्रमें भरकर रखछोडे और १ रत्तीकी मात्रा पीपल और सहतके साथ देवे तो क्षयरोगको शीघ्र दूर करे, इसपर पथ्य मृगाङ्क रसके समान देवे।

त्रैलोक्यचिंतामणिरसः

रसंवज्रंहेमतारंताम्रतीक्ष्णाभ्रकंमृतं। गंधकंमौक्तिकंशंखंप्रवालंतालकंशिला ॥ शोधितंचसमंसर्वंसप्ताहंभावयेद्दृढम् । चित्रमूलंकपायेणभानुदुग्धैर्दिनत्रयम् ॥ निर्गुण्डीसूरणद्रावैर्वज्रदुग्धैर्दिनत्रयम् । अनेनपूरयेत्सम्यक्पीतवर्णान्वराटकान् ॥ टंकणंरविदुग्धेनपिष्ट्वातेषांमुखंलिपेत् । मृद्भाण्डेपुटेत्पश्चात्स्वांगशीतंविचूर्णयेत् ॥ चूर्णतुल्यंमृतंसूतंवैक्रान्तंसूतपादकं । शिग्रुमूलद्रवैःसर्वंसप्तवारंविभावयेत् ॥ चित्रमूलकपायेणभावनाचैकविंशतिः । आर्द्रकस्यरसेनैवभावनासप्तएवच ॥ सूक्ष्मचूर्णंततःकृत्वाचूर्णपादांशटंकणम् । टंकणांशंवत्सनाभंतत्समंमरिचंक्षिपेत् । लवंगंनागरंपथ्याकणाजातीफलंपृथक् ॥ प्रत्येकंवत्सनागस्यपादांशंचूर्णितंक्षिपेत् । मातुलुंगआर्द्रकस्यरसेनतद्विलोडयेत् ॥ चतुर्गुंजामितंखादेत्कणाक्षौद्रंलिहेदनु । अनुपानैःसमायोज्यंसर्वरोगोपशान्तये ॥ वन्हिंदीपयतेबलंचकुरुतेतेजोमहौजंधृते । वीर्यंवर्द्धयतेविषंचहरतेदार्ढ्यंचधत्तेतनौ ॥ अभ्यासेनविहन्तिमृत्युपलितंपुष्टिंप्रदत्तेनृणां। कासंतुंदयतेक्षयंक्षपयतेश्वासंचनिर्णाशयेत्॥ वातंविद्रधिपाण्डुशूलग्रहणीरक्तातिसारंजये। न्मेहप्लीहजलोदराश्मरितृपाशोफोहलीमो दरं ॥ भूतोत्थंचभगंदरंज्वरगणंचार्शांसि कुष्ठान्जयेत् । साध्यासाध्यरुजोनिहन्तिस रसस्त्रैलोक्यचिंतामणिः ॥

अर्थ—पारा, हीरा, सुवर्ण, चांदी, तांबा, तीक्ष्णलोह, और अभ्रक ये सब मरेहुए लेवे. गंधक, मोती, शंख, मूंगा, हरिताल, मनसिल, ये सब शुद्ध किये हुये लेवे. इनको ७ दिन चीतेके रससे खरलकर ३ दिन आकके दूधसे खरल करे, फिर ३ दिन निर्गुंडी, जमीकंद और थूहरके दूधमें घोटे, फिर इस पिट्ठीको पीली कौडियोंमें भर कौडियोंका मुख आकके दूधमें पिसे हुए सुहागेसे बंद करदेवे. पश्चात् इन कौडियोंको मिट्टीके बरतनमें रखकर फूंक देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालकर

पीस डाले, इस चूर्णके बराबर पारेकी भस्म और पारेकी भस्मसे चौथाई वैक्रान्तिकमणिकी भस्म मिलावे, सबको एकत्र खरलकर सहँजनेकी जडके रसमें ७ दिन खरल करे, फिर चीतेकी जडके काढेकी २१ भावना देवे ७ भावना अदरखके काढेकी देवे, फिर सबका चूर्णकर चूर्णकी चौथाई सुहागा मिलावे. और सुहागेकी चौथाई बच्छनाग विष डाले, और बच्छनागकी बराबर कालीमिरच डाले, तथा लौंग, सोंठ, हर्ड, पीपल, जायफल, प्रत्येक बच्छनागकी चौथाई डाले. सबको बिजौरे और अदरखके रससे खरलकर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे १ गोली पीपल और सहतके साथ खाय तथा सर्वरोग दूर करनेको इस पर रोगानुसार अनुपान करावे. तो यह जठराग्निको दीपन करे, बल, तेज, धृति और वीर्यको बढावे, विषको हरण करे, देह दृढहो, यह अभ्याससे मृत्यु और बुढापेको दूर करे, पुष्टि करे, खांसी, श्वास, क्षय, वातविद्रधि, पाण्डुरोग, शूल, संग्रहणी, रक्तातिसार, प्रमेह, प्लीह, जलोदर, पथरी, प्यास, सूजन, हलीमक, उदर, भूतबाधा, भगंदर, ज्वरोंका समूह, बवासीर और कोढ सब साध्यासाध्य रोगोंको यह त्रैलोक्य चिन्तामणि रस दूर करने वाला है।

वसंतकुसुमाकरोरसः

प्रवालरसमौक्तिकाम्बरमिदंचतुर्भागभाक् ।
पृथक्पृथगयस्मृतेरजतहेमनीद्वांशके ॥
अयोभुजगरंगकंत्रिलवकंविमर्याखिलं ।
शुभेहनिविभावयेद्भिपगिदंधियासप्तशः ॥
द्रवैर्विपनिशेक्षुजैःकमलमालतीपुष्पजैः
पयःकदलिकंदजैर्मलयजैणमाभ्युद्भवैः॥
वसंतकुसुमाकरोरसपतिर्द्विवल्लोन्मितः ।
समस्तगदहृद्भवेत्किलनिजानुपानैरयम् ॥
शिलाजतुमधूपणैःक्षयगदेपुसर्वेष्वपि ।
प्रमेहरुजिरात्रिभिःसमधुशर्कराभिःसह ॥
सितामलयजद्रवैर्महतिरक्तपित्तेथवा ।
सितामधुसमान्वितैर्वृषभपल्लवानांद्रवैः ॥
त्रिजातगजचन्दनैरपिचतुष्टिपुष्टिप्रदो ।
मनोभवकरःपरोवमिपुशंखपुष्पीरसैः ॥
अभीरुरसशर्करामधुभिरम्लपित्तामये ।
परेपुतुयथोचितंनतुगदेपुसंयोजयेत् ॥

अर्थ–मूंगा चन्द्रोदय, मोती और अभ्रकभस्म प्रत्येक ४ तोले. रूपरस, सुवर्णकी भस्म प्रत्येक दो तोले. सार, नागेश्वर, वंगेश्वर प्रत्येक ३ तोले इन सबको एकत्र कर आगे लिखे रसोंकी भावना देवे. अडूसा, हल्दी, ईखकारस, कंमल, मालतीके फूल, गौका दूध, केलाकंद, चन्दन, और कस्तूरीकी यथायोग्य भावना देवे. तो यह वसंत कुसुमाकर सर्व रसोंका राजा बने. इसकी ४ रत्तीकी मात्राको पृथक् २ अनुपानके साथ देनेसे सम्पूर्ण रोगोंका नाश करे, शिलाजीत और कालिमिरचके चूर्ण और सहतमें मिलाकर देनेसे सब क्षय रोगोंका नाश करे, हलदी सहत और मिश्रीमें मिलाकर देनेसे सम्पूर्ण प्रमेहोंको दूर करे, मिश्री और चन्दनके काढेके साथ रक्तपित्तको दूर करे, अथवा मिश्री सहत और अडूसेके पत्तोंके रसमें देनेसे घोर रक्तपित्तको दूर करे, त्रिजातक, गजपिपल, और चन्दनके साथ तुष्टता और पुष्टता करे, और कामदेवको बढावे, संखाहूलीके रसमें वमनको दूर करे, शतावरके रस. मिश्री और सहतके साथ अम्लपित्तका नाश करे, बाकीके रोगोंमें यथोचित अनुपानके साथ वैद्यको देना चाहिये।

शिलाजत्वादिलोहम्.

शिलाजतुयुतंलोहंवल्लंतुविधिमारितम् ।
पथ्याशीसेवतेयस्तुसयक्ष्माणंव्यपोहति ॥
शिलाजतुमधुव्योषताप्यलोहरजांसिच ।
क्षीरभुक्लेढितस्याशुक्षयःक्षयमवाप्नुयात् ॥

अर्थ–विधिपूर्वक २ रत्ती मरेहुए लोहको शिलाजीतमें मिलाकर सेवन करे, और पथ्यसे रहे तो राजयक्ष्मा दूरहो, अथवा शिलाजीत सोंठ, मिरच पीपल, और सुवर्णमक्खीकी भस्म, और लोहभस्मको मिलाकर सेवन करे तो क्षयरोग शीघ्र नाश हो ।

लक्ष्मीविलासोरसः

सुवर्णताराभ्रकताम्रवंगंत्रिलोहनागामृतमौक्तिकंच । एतत्समंव्योमरसस्यभस्मएकीकृतंस्यात्कृतकज्जलीकं ॥ संमर्दयेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंतच्छोषयेद्धित्रिदिनंचघर्मे । तत्कल्कमूषोदरमध्यगामीयत्नीकृतंताक्ष्र्यपुटेनपक्वं ॥ यामाष्टकंपावकमर्दितंचलक्ष्मीविलासोरसराजएषः । क्षयत्रिदोषप्रभवेचपाण्डौसकामला सर्वसमीरणेषु ॥ शोफप्रतिश्यायविनष्टवीर्ये मूलामयंसर्वसशूलकुष्ठं । हत्वाग्निमांद्यंक्षयसन्निपातश्वासंचकासंचहरेत्प्रयुक्तं ॥ तारुण्यलक्ष्मीप्रतिबोधनायश्रीमद्विलासोरसराजएषः ।

अर्थ–सुवर्ण, चांदी, अभ्रक, ताम्र, बंग, तीक्ष्ण मुंड और कान्तलोह, शीशा इनकी भस्म. विष और मोती इन सबको समान लेवे, और सबकी बराबर त्रिकुटाका चूर्ण और चंद्रोदय लेवे. सबकी कजलीकर सहत मिलाय ३ दिन बराबर धूपमें रखकर फिर इस कल्कको मूषामें रख भूधरयंत्रमें आठ प्रहरकी अग्नि देवे. फिर आठ प्रहर चीतेके रसमें खरल करे तो यह लक्ष्मीविलास सब रसोंका राजा बने, यह त्रिदोषजन्य क्षई. पाण्डुरोग, कामला, सर्व वातविकार, सूजन, पीनस, वीर्यक्षीणता, गुदाके रोग, सर्वप्रकारके शूल, कुष्ठ, मन्दाग्नि, क्षय, सन्निपात, श्वास, खांसी, इन रोगोंको हरण करे. यह तरुणता और सुन्दरताको करे. इसे लक्ष्मीविलास रस कहते है ।

चन्द्रामृतपर्पटी.

त्रिकटुत्रिफलाचव्यंधान्यजीरकसैंधवम् ।
प्रत्येकंतोलकंग्राह्यंछागदुग्धेनगोलयेत् ॥
रसगंधकलौहानिप्रत्येकंकर्षसम्मितम् ।
टंकणस्यपलंदत्वामरिचार्द्धपलंतथा ॥
नवगुंजाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक् ।
प्रातःकालेशुचिर्भूत्वाचिंतयित्वामृतेश्वरं ॥
एकैकांवटिकांखादेद्रक्तोत्पलद्रवेनवा ।
नीलोत्पलस्ययाद्रावैःकुलत्थस्यरसेनवा ॥
निहन्तिद्विविधंकासंवातपित्तसमुद्भवं ।
सरक्तमथनीरक्तंज्वरश्वाससमन्वितं ॥
तृड्दाहभूतशूलघ्नीरुचिदावन्हिवर्द्धिनी ।
बलवर्णकरीवृष्याप्लीहगुल्मोदरापहा ॥
आनाहकृमिपाण्डुघ्नीजीर्णज्वरविनाशिनी ।
इयंचंद्रामृतानामचन्द्रनाथेननिर्मिता ॥
वासागुडूचिकाभार्गीमुस्तकंकंटकारिका ।
क्वाथोऽशनान्तेदातव्योवटिकावीर्यवर्द्धये ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेडा, आंवला, चव्य, धनियां, जीरा, सैंधानिमक, प्रत्येक एक तोले सबको बकरीके दूधमें खरल कर. पारा, गंधक, लोहभस्म, प्रत्येक दो तोले. सुहागा ४ तोले, कालीमिरच दो तोले, सबको पूर्वोक्त औषधियोंके साथ खरलकर एक २ मासेकी गोलियां बनावे, फिर प्रातःकाल पवित्रहो अमृतेश्वरका चिंतवन कर १ गोली चांवलोंके मांडके साथ खावे, अथवा नीलक-

मलके रससे वा कुलथीके रससे खावे तो सूखी और गीली खांसी वातपित्तसे प्रकट, वातपित्तोद्भवपित्त, कफरोग, वातपित्तरोग, पैत्तिकरोग, तथा विषजन्य विकार, तथा रुधिरजन्य. तथा विना रुधिरके विकार, श्वासयुक्त ज्वर, प्यास, दाह, भूत, शूल, अफरा, कृमिरोग, पाण्डु, और जीर्णज्वरको दूर करे. रुचि, जठराग्नि, बल, वर्ण, इनको बढावे. वृष्य है प्लीह, गुल्मका नाश करे. यह चन्द्रामृता नाम गुटिका चन्द्रनाथने कही है. इस गोलीको खाकर अडूसा, गिलोय, भारंगी, नागरमोथा, कटेरी, इनका काढा वीर्य बढानेको पिलावे. यह रसचन्द्रिकामें लिखा है।

रुद्ररसः

तीक्ष्णशुल्वंनागतारंस्वर्णश्चमरिचंपृथक्।
एकद्वित्रिचतुष्पंचक्रमात्पट्शुद्धसूतकम् ॥
चांगेरीद्रवसंमर्द्यदिनैकंतत्रगोलकम् ।
गोलकंलेपयेत्तेनततोवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥
मृगांगवत्पचेत्स्थाल्यांवालुकाभिप्रपूरयेत्।
उद्धृत्यचूर्णयेच्छ्लक्ष्णंहरतुल्योरसोत्तमः ॥
मृगांकवत्क्षयंहन्तितथामात्रानुपानकम् ।

अर्थ–खेरीलोहकी भस्म, तामेश्वर, नागेश्वर, रूपरस, सुवर्ण भस्म, कालिमिरच, क्रमसे पहली १ तोले दूसरी दो तोले तीसरी ३ तोले चौथी ४ तोले पांचवी ५ तोले और छटी ६ तोले लेकर. शुद्धपारा ६ तोले लेवे. इन सबको १ दिन चूकाके रसमें खरल कर गोला बनावे. फिर पत्रासीलताके रसमें कुटेहुई गंधक उस गोलेपर चारों तरफ लपेटकर कपरमिट्टी कर देवे. फिर उत्तम पात्रमें रख मृगाङ्करसकी तरह वालुकायंत्रमें पचावे. स्वांग शीतल होजाय तब निकालकर पीसडाले. तो यह रुद्ररस मृगाङ्कके समान क्षई रोगको दूर करे. इसकी मात्रा और अनुपानभी मृगांक रसके समान जानने ।

अथनस्यं.

तालकंगंधकंतुत्थंवाकुचीचमनःशिला ।
अर्कदुग्धेनसम्पिष्ट्वावदर्याग्नौचजारयेत् ॥
नस्यंसप्तदिनंचैककफक्षयविनाशनम् ।

अर्थ–हरिताल, गंधक, नीलाथोथा, बावची और मनसिल इनको आकके दूधमें पीस बरकी लकडियोंमें रखके फूंक देवे. इसकी सात दिन नस्य लेनेसे कफकी क्षय दूर हो ।

अथकासाधिकारः

बृहद्रसेन्द्रगुटिका.

कर्षंशुद्धरसेन्द्रस्यगन्धकस्याभ्रकस्यच ।
ताम्रस्यहरितालस्यलोहस्यचविषस्यच ॥
मनःशिलायाःक्षाराणांबीजंधत्तूरकस्यच ।
मरिचस्यचसर्वेषांसमंचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥
जयन्तीचित्रकंमानंखण्डकर्णोथमण्डुकी ।
शक्राशनंभृङ्गराजंकेशराजार्द्रकंतथा ॥
एतेषांस्वरसेनापिकर्षमात्रंत्रमर्दयेत् ।
आर्द्रकस्वरसेनैवपञ्चकासंव्यपोहति ॥
अग्निमांद्यारुचिशोथमुदरंपाण्डुकामलाम् ।
रसायनीचवृष्याचबलवर्णप्रसादिनी ॥

अर्थ–शुद्धपारा, गंधक, अभ्रक, ताम्र, हरिताल और लोह इनकी भस्म तथा विष, मनसिल, जवाखारसे लेके खार, धतूरेके बीज, और कालीमिरच इनको समान भाग लेवे और चूर्णकर अरनी, चीता, मानसाग, खण्डकर्ण, ब्राह्मी, भांग, भांगरा, केशराज (भांगरेका भेद) और अदरखके रसमें पृथक् २ मर्दन कर मटरके समान गोलियां बनावे, इनको अ-

दरखके रसके साथ सेवन करे तो पांच प्रकारकी खांसी, श्वास, यक्ष्मा, भगंदर, मन्दाग्नि, अरुचि, सूजन, उदर, पाण्डुरोग, कामला, इनको दूर करे. यह रसायन वृष्य और बल कर्त्ता है ।

अमृतार्णवोरसः

पारदंगंधकंशुद्धंमृतलोहश्चटंकणम् ।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारुसचित्रकम् ॥
अमृतापद्मकंक्षौद्रंविषंचैवविमर्दयेत् ।
द्विगुञ्जंवातकासार्त्तःसेवयेदमृतार्णवम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, चीता, गिलोय, पद्माख, सहत, और सिंगियाविष इन सबको समान भाग लेकर खरल करे. पश्चात् रत्ती २ की गोलियां बनावे इनमेंसे १ गोली सेवन करनेसे वादी और खांसीको दूर करे, इसे अमृतार्णव रस कहते हैं ।

पित्तकासान्तकोरसः

भस्मताम्राभ्रकान्तानांकासमर्दत्वचोरसैः ।
मणिजैर्वेतसाम्लैश्चदिनंमर्द्यंसुपिण्डितम् ॥
निष्कार्द्धंपाण्डुकासार्तोभक्षयेच्चदिनत्रयम् ।
कासश्वासाग्निमान्द्यञ्चक्षयञ्चापिनिहन्त्यलम्

अर्थ–ताम्र, अभ्रक और कान्तीसार इन तीनोंकी भस्म समान भाग लेवे और कसौंदीकी छालके रसमें तथा बकपुष्प और अम्लवेतके रसमें एक दिन खरल कर दो २ माशेकी गोलियां बनावे. इनमेंसे एक गोली सेवन करे तो पांडुरोग खांसी, श्वास, मंदाग्नि और क्षयको दूर करे ।

काससंहारभैरवः

रसगन्धकताम्राभ्रंशंखटंकणलौहकम् ।
मरिचंकुष्टतालीसजातीफललवंगकम् ॥
कार्पिकंचूर्णमादायदण्डेनामर्धभावयेत् ।
भेकपर्णीकेशराजनिर्गुण्डीकाकमाचिका ॥
द्रोणपुष्पीशालपर्णीग्रीष्मसुन्दरकंतथा ।
भार्गीहरीतकीवासाकार्पिकैःपत्रजैरसैः ॥
वटिकांकारयेद्वैद्यःपञ्चगुञ्जाप्रमाणतः ।
वातजंपैत्तिकंकासंश्लैष्मिकंचिरजंतथा ॥
श्रीमद्गहननाथेनकाससंहारभैरवः ।
रसोयंनिर्मितोयत्नाल्लोकरक्षणहेतवे ॥
वासाशुंठीकण्टकारीकाथेनपाययेद्बुधः ।
कासंनानाविधंहन्तिश्वासमुग्रमरोचकम् ॥
बलवर्णकरःश्रीदःपुष्टिदःकान्तिवर्द्धनः ।

अर्थ–पारा, गंधक, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म, शंखभस्म, सुहागा, लोहभस्म, काली मिरच, कूठ, तालीसपत्र, जायफल और लौंग प्रत्येक एक तोला ले खरलमें डाल मूंसलेसे घोट, मण्डूकपर्णी, भांगरा, निर्गुंडी, मकोय, गोमा, सालोन, ग्रीष्मसुन्दर (शाकविशेष) भारंगी, हर्ड और अडूसा प्रत्येकके एक २ तोले रसकी भावना देकर पांच २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इनको अडूसा, सोंठ और कटेरीके काथसे सेवन करे तो वातज, पितज, द्वंद्वज और पुरानी खांसीको दूर करे, यह गहननाथका कहा काससंहार भैरव रस है यह अनेक प्रकारकी खांसी, श्वास और विषरोगोंको दूर करे. बल वर्ण करे, शोभा बढावे, पुष्टाई करे, तथा अग्नि दीपन करे ।

लक्ष्मीविलासोरसः

शुद्धंसूतंसतालञ्चतालार्द्धंरसखर्परम् ।
वंगंताम्रंघनंकान्तंकांस्यंगंधंपलंपलम् ॥
केशराजरसेनैवभावयेद्दिवसत्रयम् ।
कुलत्थस्यरसेनैवभावयेच्चपुनःपुनः ॥
एलाजातीफलाख्यञ्चतेजपत्रंलवंगकम् ।

यवानीजीरकञ्चैवत्रिकटुत्रिफलासमम् ॥ भावयेच्चरसेनैवगोलयेत्सर्वमौपधम् । छायाशुष्कावटीकार्य्याचणकप्रमिताशुभा ॥ शीताम्बुनापिबेद्धीमान्सर्वकासनिवृत्तये । मत्स्यंमांसंतथाक्षीरंपथ्यंस्यात्स्निग्धभोजनम् ॥ क्षयंकासंतथाश्वासंसज्वरंवाथविज्वरम् । हलीमकंपाण्डुरोगंशोथंशूलंप्रमेहकम् ॥ अर्शोनाशंकरोत्येववलवृद्धिंचकारयेत् । वर्जयेच्छाकमम्लञ्च भ्रष्टद्रव्यंहुताशनम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, हरिताल, प्रत्येक चार तोले, खपरिया २ तोले, वंग, ताम्र, लोह, कान्तिलोह, कांसा, प्रत्येककी भस्म चार २ तोले, सबको भांगरेके रसमें ३ दिन खरल करे, इसी प्रकार कुलथीके रसकी बार २ भावना दे. फिर इलायची, नायफल, तेजपात, लौंग, अजवायन, जीरा, त्रिकुटा, त्रिफला, इन सबको समान लेकर काढा कर काढेकी भावना देवे, फिर चनेके प्रमाण गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे. एक गोली शीतल-जलके साथ सेवन करे तो सब प्रकारकी खांसी दूर हो, पथ्यमें मछली, मांस, दूध और ताजा स्निग्ध भोजन कहा है. यह क्षय, खांसी श्वास, ज्वर, हलीमक, पाण्डुरोग, सूजन, शूल, प्रमेह और बवासीरको दूर करे. बलको बढावे इस लक्ष्मीविलास रसका सेवन कर्त्ता मनुष्य शाक, खटाई और भुनी हुई वस्तु और अग्निसे तापना छोड दे ।

सर्वेश्वरोरसः

रसगन्धकयोश्चूर्णमेकीकृत्याभ्रकंतथा । हेमभस्मसमंकृत्वामर्दयेद्यामकद्वयम् ॥ भूपणानिलवंगैलाटंकणंहेमतुल्यकम् । कंटकार्य्यारसैर्भाव्यमेकविंशतिवारकम् ॥ शिग्रुवीजार्द्रकरसैःसप्तधाभावयेत्पृथक् । रसःसर्वेश्वरोनामकासश्वासक्षयापहः ॥ अनुपानंप्रयोक्तव्यंविभीतकफलत्वचम् ।

अर्थ—पारे और गंधककी कजली कर इसमें समान भाग अभ्रक और सुवर्णकी भस्म मिलावे, और खूब खरल करे, फिर त्रिकुटा. लौंग इलायची और सुहागा प्रत्येक सुवर्ण भस्मके बराबर लेकर २१ भावना कटेरीके रसकी ७ भावना सहजनेके रसकी, और ७ भावना अदरखके रसकी देवे. तो सर्वेश्वर रस बने. इसको बहेडेकी छालके चूर्णके साथ सेवन करनेसे खांसी, श्वास, और क्षय दूर हो ।

शृंगाराभ्रम्

शुद्धंकृष्णाभ्रचूर्णंद्विपलपरिमितंशाणमात्रंयदन्यत् । कर्पूरंजातीकोशंसजलमिभकणातेजपत्रंलवंगम् ॥ मांसीतालीसचोचेगजकुसुमगदंधातकीचेतितुल्यम् । पथ्याधात्रीविभीतंत्रिकटुरथपृथगर्द्धशाणंद्विशाणम् ॥ एलाजातीफलाख्यंक्षितितलविधिनाशुद्धगन्धाश्मकोलम् । कोलार्द्धंपारदस्यप्रतिपदविहितंसर्वमेकत्रमिश्रम् ॥ पानीयेनैवकार्य्याःपरिणतचणकस्विन्नतुल्याश्चवट्यः । प्रातःखाद्याश्चतस्त्रस्तदनुचकियतःशृंगवेरंसपर्णम् ॥ पानीयंपीतमेतेध्रुवमपहरातिक्षिप्रमेतान्विकारान् । कोष्ठेदुष्टाग्निजातान्ज्वरमुदररुजोराजयक्ष्मक्षयश्च ॥ कासंश्वासंसशोथंनयनपरिभवंमेहमेदोविकारान् । छर्दिशूलाम्लपित्तंपमपिमहतींगुल्मजालंविशालम् ॥ पाण्डुत्वंरक्तपित्तंगरलभवगदान्पीनसंप्लीहरोगान् । इन्यादामाशयोत्थान्कफपवनकृतान् पित्तरोगानशेषान् ॥ बल्योवृष्यश्चयोगस्तरुणतरकरःसर्वरोगेप्रशस्तः । पथ्यंमांसैश्चयू

पैर्घृतपरिलुलितैर्गव्यदुग्धैश्चभूयः ॥ भोज्यंयोज्यंयथेष्टंललितललनयादीयमानंमुदायत्। शृंगाराभ्रेणकामीयुवतिजनशताभोगयोगादतुष्टः ॥ वर्ज्यंशाकाम्लमादौदिनकतिपयाचित्स्वेच्छयाभोज्यमन्यत् । दीर्घायुःकाममूर्तिर्गतवलिपलितोमानवोऽस्यप्रसादात् ॥

अर्थ–शुद्ध काली अभ्रकका भस्म ४ तोले, कपूर, जायफल, नेत्रवाला, गजपीपल, तेजपात, लौंग, जटामांसी, तालीसपत्र, तज, नागकेशर, कूठ और धायके फूल प्रत्येक ४ मासे तथा हर्ड, वहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक ६ मासे, इलायची और जायफल इन सबको खरल करके सिद्ध करे. फिर शुद्ध गंधक ८ मासे और पारा ४ मासे सबको एकत्र कर जलमें चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. प्रातःकाल चार गोली खाकर ऊपरसे अदरख और पानका रस पीवे, अन्तमें थोडा जल पीवे तो इन रोगोंको तत्काल दूर करे, जो जठराग्नि दूषित होनेसे हुए हो, ज्वर, उदररोग, राजयक्ष्मा, छर्ई, खांसी श्वास, नेत्ररोग, प्रमेह, मेदरोग, वमन, शूल, अम्लपित्त, प्यास, गोला, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, विषरोग, पीनस, प्लीहरोग, आमाशयके रोग, कफवातके विकार, और पित्त विकारोंको दूर करे. मलकरे, पुरुषार्थ वढावे, तरुणता करे, इसका देना सर्वरोगोंमें उत्तम है. इसपर, मांस, यूष, गौका घृत और दूध पथ्य है. और दिव्य स्त्रीके हाथसे यथेष्ट भोजन करे, इसका सेवन कर्त्ता सौ स्त्रियोंको भोगनेसेभी संतुष्ट नहीं होता, इसका सेवन करनेवाला शाक और खटाईको कुछ दिनके लिये त्याग देवे. वाकी सर्व वस्तु सेवन करे तो दीर्घायु और कामदेवके समान दिव्य मूर्त्तिमान होवे, तथा इसके प्रतापसे मनुष्य वली पलित रहित हो।

सार्वभौमः

जीर्णसुवर्णलौहंवायद्यनैवप्रदीयते ।
तदायंसर्वरोगाणांसार्वभौमोनसंशयः ॥

अर्थ–यदि इसीमें सुवर्णभस्म अथवा लोहभस्म जलके सेवन करे तो खांसीको दूर करे और सब रोगोंका जीतनेवाला यह सार्वभौमरस है ।

तरुणानन्दरसः

कर्षद्वयंरसेन्द्रस्यशुद्धस्यगंधकस्यच ।
कज्जलीकृत्ययत्नेनशिलातलशुभेदृढे ॥
बिल्वाग्निमंथःस्योनाकःकाश्मरीपाटलावला
मुस्तंपुनर्नवाधात्रीवृहतीवृषपत्रकम् ॥
विदारीशतमूलीचकर्पूरेषांपृथग्रसैः ।
मर्दयित्वापुनर्वास्वरसैर्दशतोलकैः ॥
मर्दयेत्तत्रशुद्धाभ्रंरसस्यद्विगुणंक्षिपेत् ।
रसस्यार्द्धश्चकर्पूरंतत्रैवदापयेद्भिषक् ॥
जातीकोषफलेमांसीतालीशैलालवङ्गकम् ।
चूर्णकृत्वाप्रयत्नेनमाषमात्रंक्षिपेत्पृथक् ॥
विदारीस्वरसेनैववटिकांकारयेद्भिषक् ।
राजयक्ष्माणमत्युग्रंक्षयंचोग्रमुरक्षतम् ॥
कासंपञ्चविधश्वासंस्वराघातमरोचकम् ।
कामलांपाण्डुरोगञ्चप्लीहानंसहलीमकम् ॥
जीर्णज्वरंतृषागुल्मंग्रहणीमामसम्भवाम् ।
अतीसारञ्चशोथंश्चकुष्ठानिचभगंदरम् ॥
नाशयेद्देपविख्यातस्तरुणानन्दसंज्ञितः ।
रसायनवरोवृष्यश्चक्षुपःपुष्टिवर्द्धनः ॥
शतसंयातिनारीणांभक्षणादस्यमानवः ।
क्षीणतानचशुक्रस्यनचवुद्धिवलक्षयम् ॥
द्विमाषमुपयोगेननिहन्तिकामलान्गदान् ।
शुक्रसंदीपनंकृत्वाज्वरंहन्तिनसंशयः ॥

नारिकेलजलेनैवभक्ष्योऽदश्चरसायनः ।
क्षीरानुपानभृण्योऽयंनक्वचित्प्रतिहन्यते ॥

अर्थ—शुद्धपारा, १ तोले और शुद्धगंधक १ तोले, दोनोंकी कजली कर वेल, अरनी, टेंटू, कंभारी, पाद, खरैटी, नागरमोथा, सोंठ, आमले, कटेरी, अडूसा, पत्रज, विदारीकंद, और शतावरी प्रत्येकके एक २ तोले रससे खरल कर फिर अडूसेके १० तोले रससे खरल कर रससे दूनी अभ्रकभस्म डाले, और रससे आधा कपूर मिलावे, तथा जायफल, जटामांसी, तालीसपत्र, छोटीइलायची और लौंग प्रत्येक एक एक मासेको चूर्ण करके डाले, फिर विदारीकंदके रससे खरलकर गोलियां बनावे, और १ गोली खाय तो घोर राजयक्ष्मा, क्षय, घोर उरःक्षत, पांच प्रकारकी खांसी, श्वास, स्वरभेद, अरुचि, कामला, पाण्डुरोग, प्लीह, हलीमक, जीर्णज्वर, प्यास, गोला, आम, संग्रहणी, अतीसार, सूजन, कोढ, भगंदर, इस सब रोगोंको यह तरुणानन्द रस दूर करे. रसायन है, वृष्य और नेत्रोंको हितकारी, पुष्टकरता और इसके सेवनसे हजार स्त्री भोगनेकी सामर्थ्य हो, कभी शुक्र क्षीण न होवे, न बुद्धि बलका क्षयहो, दो महीनेके सेवन करनेसे कामलादि रोगोंको दूर करे, शुक्रको बढाकर ज्वरका नाश करे, इसको नारियलके जलसे भक्षण करना चाहिये और ऊपरसे दूध पीना चाहिये ।

महोदधिरसः

सूतकंगंधकंलौहंविपश्चैववराङ्गकम् ।
ताम्रकंवंगभस्मापिव्योमकश्चसमांशकम् ॥
त्रिकटुंभद्रमुस्तश्चविडङ्गंनागकेशरम् ।
रेणुकामलकश्चैवपिप्पलीमूलमेवच ॥
एपाश्चद्विगुणंभागंमर्दयित्वाभयत्नतः ।
भावनातत्रदातव्यागजपिप्पलिकाम्बुभिः ॥
चणमात्रावटीकार्य्यासंग्रहग्रहणींतथा ।
काशंहन्तितथाश्वासमर्शांसिचभगंदरम् ॥
हृच्छूलंपार्श्वशूलञ्चकर्णरोगंकपालिकाम् ।
हरेत्संग्रहणीरोगानष्टौचजठराणिच ॥
प्रमेहान्विंशतिश्चैवचतुर्विधमजीर्णकम् ।
नचान्नपानेपरिहार्य्यमस्तिनशीतवातातपमैथुनेपु ॥ यथेष्टचेष्टाभिरतःप्रयोगैर्नरोभवेत् काञ्चनराशिगौरः ।

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, दालचिनी, तांवेकी भस्म, वंगभस्म, अभ्रक, सव समान लेवे. सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, आमले और पीपलामूल प्रत्येक दो दो भाग ले. सबको एकत्र खरल कर गजपीपलके रसकी भावना दे. चनेकी बराबर गोलियां बनावे. यह गोली संग्रहणी, खांसी, श्वास, बवासीर, भगंदर, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल, कानके रोग, कपालके रोग, आठ प्रकारके उदररोग, वीस प्रकारका प्रमेह, और चार प्रकारके अजीर्ण रोगको दूर करे । इसपर किसी प्रकारके भोजन और पीनेका पथ्य नहीं है. तथा शरदी, गरमी, हवा और मैथुनका त्याग नहीं हैं. इसमें यथेष्ट आचरण करनेसे भी मनुष्य सुवर्णके समान दिव्य देहवाला होता है ।

जयागुटिका.

सूतकंगन्धकंलौहंविपंवत्सकमेवच ।
विडंगकेशरंमुस्तमेलाग्रन्थिकरेणुकम् ॥
त्रिकटुत्रिफलाचित्रंशुद्धंजैपालबीजकम् ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
तिन्तिडीवीजमानेनप्रातःकालेचभक्षयेत् ।

कासंश्वासंक्षयंगुल्मंप्रमेहंविषमज्वरम् ॥
अजीर्णग्रहणीरोगंशूलंपाण्ड्वामयंतथा ।
अपानेहृदयेशूलेवातरोगेगलग्रहे ॥
अरुचावतिसारेचसूतिकातंकपीडिते ।
जयाख्यानिर्म्मितास्रेपाभक्षणीयासुरैरपि ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, चीतेकी छाल, पत्रज, रेणुका, केशर, नागकेशर, इलायची, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, और जमालगोटा, इन सबको समान भाग लेवे. और खरलकर दूना गुड मिलाय इमलीके चीयेके समान गोलियां बनावे, और एक गोली प्रातःकाल सेवन करे तो खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, अजीर्ण, संग्रहणी, शूल, पांडु, गुदा और हृदयके शूल, वादीके रोग, गलेका रुकना, अरुचि, अतिसार और विशूचिकाको यह जयाख्या गोली दूर करे ।

विजयागुटिका.

सूतकंगन्धकंलोहंविषंचित्रकपत्रकम् ।
विडंगरेणुकामुस्तमेलाकेशरग्रन्थिकम् ॥
फलत्रिकंत्रिकटुकंशुल्बभस्मतथैवच ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोदीयतेगुडः ॥
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ।
सूतायांग्रहणीरोगेशूलेपाण्ड्वामयेतथा ॥
हस्तपादादिदाहेचगुटिकेयंप्रशस्यते ।

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, सिंगिया विष, चितेकी छाल, पत्रज, वायविडंग, रेणुका, मोथा, इलायची, केशर, पीपलामूल, हरड, बहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, तांबेकी भस्म, इन सबको समान भाग ले और इन सबसे दूना गुड मिलाकर गोलियां बनावे और एक गोली नित्य खाय तो खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, प्रसूतके रोग, संग्रहणी, शूल, पांडुरोग, हाथपैरोंके दाहको यह विजयगुटिका हितकारी है ।

स्वच्छन्दभैरवोरसः

रसमेकंद्विधागन्धंगन्धतुल्यश्चसैंधवम् ॥
ज्वालामुखीरसैःपश्चदिनानिपरिमर्दयेत् ।
मूषकायांनिरुध्याथपुटेद्रात्रौचमध्यमम् ॥
सर्वभस्मवदायातिवल्लमेनंप्रयच्छति ।
ग्रहण्यांसंग्रहण्याश्चकासेश्वासेविशेषतः॥
उग्रासुज्वरतंद्रासुनिद्रास्वल्पासुयोजयेत् ।
अन्यरोगेपुतंदद्याद्रसंस्वच्छन्दभैरवम् ॥
तुष्टिपुष्टिप्रसौकुर्य्यात्सौकुमार्य्यश्चकारयेत् ।

अर्थ–पारा १ भाग, गंधक दो भाग, सेंधानिमक दो भाग, इन सबको पांच दिन तक ज्वालामुखीके रसमें खरल करे, फिर मूसामें रख रात्रिके समय मध्यम पुटमें फूंक दे ऐसा करनेसे सबकी भस्म होजायगी, इसकी ३ रत्तीकी मात्रा अनुपानके साथ देवे तो संग्रहणी, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, घोरज्वर, अल्पनिद्रा तथा अन्यान्यरोगोंमें इस स्वच्छन्द भैरव रसको देवे तो तुष्टता देहकी पुष्टता और सुकमारता करे ।

रसगुटिका.

रसभागोभवेदेकोगन्धकोद्विगुणोभवेत् ।
त्रिभागापिप्पलीपथ्याचतुर्भागोविभीतकः॥
पंचभागास्त्वामलंचषड्गुणासप्तभाविका ।
भार्गीसर्वमिदंचूर्णंभाव्यंवब्बूलजैर्द्रवैः ॥
एकविंशतिवारश्चमधुनागुडिकाकृता ।
विभीतकप्रमाणेनप्रातरेकान्तुभक्षयेत् ॥
कासंश्वासंहरेत्क्षुद्राकाथंतदनुकृष्णया ।

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, पीपल ३ तोले, हर्ड ४ तोले, बहेडा ५ तोले,

आंवला ६ तोले, और भारंगी ७ तोले, इन सबको बारीक पीस बंबूलके रसकी २१ भावना देवे. फिर सहतसे बहेडेकी बराबर गोलियां बनावे १ गोली प्रातःकाल सेवन करे तो खांसी, श्वासको दूर करे. इस गोलीको खाकर पीपलका चूर्ण मिला कटेरीका काढा पीवे ।

रसेन्द्रगुडिका.

माक्षिकश्चशिखिग्रीवमभ्रकंतालकंतथा ।
एतांस्तुमिलितान्सर्वान्भावयेदार्द्रकद्रवैः ॥
रक्तिद्वयप्रमाणान्तुकल्पयेत्गुडिकांभिषक् ।
जीर्णेन्नेभक्षयेदेकांक्षीरमांसरसाशनः ॥
पंचकासंक्षयंश्वासंरक्तपित्तंविनाशयेत् ।
पाण्डुकृमिज्वरहरीकृशानांपुष्टिवर्द्धनी ॥
शुक्रवृद्धिकरीचैवपाम्लपित्तविनाशिनी ।
बन्हिसंदीपनीश्रेष्ठात्वरोचकविनाशिनी ॥

अर्थ–सुवर्णमक्खीकी भस्म, मोरचूत, अभ्रकभस्म, और हरिताल प्रत्येक एक तोले, लेकर अदरखके रसकी भावनादे. दो २ रत्तीकी गोनियां बनावे और अन्न पचनेके पश्चात् इस गोलीको भक्षण करे और ऊपरसे दूध, मांसरसका पथ्य लेवे तो पांच प्रकारकी खांसी, और श्वास, रक्तपित्त, पाण्डुरोग कृमि और ज्वरको दूर करे, तथा कृश मनुष्यको पुष्टि करे, वीर्य बढावे, अम्लपित्तका नाश करे, जठराग्नि बढावे, अरुचि दूर करे ।

पुरंदरवटी.

सूतकाद्द्विगुणंगन्धमेकधाकज्जलीकृतम् ।
त्रिकटुत्रिफलाचूर्णंप्रत्येकंसूतसम्मितम् ॥
अजाक्षीरेणसंभाव्यवटिकांकारयेत्ततः ।
आर्द्रकस्यरसैःसेव्याशीततोयंपिबेदनु ॥
कासश्वासप्रशमनीविशेषादग्निवर्द्धनी ।
इयंयदिसदासेव्यातदास्याद्योगवाहिका ॥
वृद्धोऽपितरुणःशक्तःस्त्रीशतेपुत्रपायते ॥

अर्थ–एक तोले पारा और दो तोले गंधक दोनोंकी कज्जली कर सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला प्रत्येक एक २ तोला मिलाकर बकरीके दूधसे खरल कर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे और एक गोली अदरखके रसके साथ खाकर ऊपरसे शीतल जल पीवे तो यह खांसी और श्वासको दूर करे अग्निको बढावे यदि इसको सदैव सेवन करे तो यह योगवाही है. वृद्ध वृद्ध मनुष्यभी सौ स्त्रियोंके मदको दूर करे ।

कासान्तकोरसः

सूतंगन्धंविषश्चैवशालपर्णीचधान्यकम् ।
यावन्त्येतानिचूर्णानितावन्मात्रंमरीचकम् ॥
गुञ्जाचतुष्टयंखादेन्मधुनाकासशान्तये ।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, सालपर्णी, धनियां, इन सबको बराबर लेकर सबकी बराबर काली मिरच लेवे, सबको जलसे खरल कर चार चार रत्तीकी गोलियां बनावे और सहतके साथ नित्य खाय तो सर्व प्रकारकी खांसी दूर हो ।

कासकुठारः

हिंगुलंमरिचंगन्धंसव्योषंटंकणंतथा ।
द्विगुञ्जमार्द्रकद्रावैःसंनिपातंसुदारुणम् ॥
कासंनानाविधंहन्तिशिररोगंविनाशयेत् ।

अर्थ–हींगलू, काली मिरच, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, और सुहागा इन सबको समान भाग ले, अदरखके रससे खरल कर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इनका सेवन अनेक प्रकारकी खांसी और मस्तक रोगोंको दूर करे।

श्रीचंद्रामृतलौहम्.

त्रिकटुत्रिफलाधान्यंचव्यंजीरकसैन्धवम् ।
दिव्यौषधिहतस्यापितत्तुल्यमायसोरजः ॥
नवगुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक् ।
प्रातःकालेशुचिर्भूत्वाचिन्तयित्वामृतेश्वरीम्॥
एकैकांवटिकांखादेद्रक्तोत्पलरसाप्लुताम् ।
नीलोत्पलरसेनैवकुलत्थस्वरसेनच ॥
निहन्तिविविधंकासंदोषत्रयसमुद्भवम् ।
वातिकंपैत्तिकश्चैवगरदोषसमुद्भवम् ॥
सरक्तमथनीरक्तंज्वरंश्वाससमन्वितम् ।
भ्रमदाहतृट्शूलघ्नंरुच्यंवन्हिप्रदीपनम् ॥
बलवर्णकरंवृष्यंजीर्णज्वरविनाशनम् ।
इदंचन्द्रामृतंलोहंचन्द्रनाथेननिर्मितम् ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, धनियां, जीरा, सैंधानिमक, इन सबको समान भाग ले. और सबकी बराबर मनसिलसे की हुई लोह भस्म लेवे, और सबको एकत्र कर नौ २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली लालकमलके रसके साथ खाय अथवा नीलकमलके रससे अथवा कुलथीके काढेसे खाय तो अनेक प्रकारकी खांसी, त्रिदोषकी खांसी, भ्रम, दाह, प्यास, शूल, और जीर्णज्वरको दूर करे ,अग्निको बढावे बल और वर्णको करे वृष्य है. यह चन्द्रामृत लोह श्रीचन्द्रनाथका निर्माण किया है ।

अमृतमञ्जरी.

हिंगुलश्चविषंश्चैवकणामरिचटंकणम् ।
जातीकोषंसमंसर्वंजम्बीररसमर्दितम् ॥
रक्तिमानांवटींकुर्य्यादार्द्रकद्रवसंयुताम् ।
वटीद्वयंत्रयंखादेत्सन्निपातंसुदारुणम् ॥
अग्निमान्द्यमजीर्णश्चसामवातंसुदारुणम् ।
उष्णतोयानुपानेनसर्वंव्याधिंनियच्छति ॥
कासंपञ्चविधंश्वासंसर्वांगग्रहमेवच ।
जीर्णज्वरंक्षयंकासंहन्यादमृतमञ्जरी ॥

अर्थ–हींगलू, विष, पीपल, काली मिरच, सुहागा, जायफल, सबको समान ले. जंबीरी नींबूके रसमें खरल कर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे और अदरखके रससे दो अथवा तीन गोली खाय तो घोर सन्निपात, मंदाग्नि, अजीर्ण, दारुण आमवात, पांच प्रकारकी खांसी, श्वास, सर्व देहका जिकडना, जीर्ण ज्वर, क्षय, खांसी, इन सब रोगोंको यह अमृतमंजरी रस गरम जलके साथ लेनेसे दूर करता है ।

कासान्तकः

त्रिफलांव्योषचूर्णश्चसमभागंप्रकल्पयेत् ।
मधुनासहपानात्तुदुष्टकासंनियच्छति ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, सब समान भाग ले चूर्णकर खाय तो दुष्ट खांसी दूर होवे ।

बृहत्शृंगाराभ्रम्.

पारदंगन्धकश्चैवटंकणंनागकेशरम् ।
कर्पूरंजातीकोषश्चलवंगंतेजपत्रकम् ॥
सुवर्णंचापिमल्लेकंकर्षमात्रंप्रकल्पयेत् ।
शुद्धकृष्णाभ्रचूर्णन्तुचतुःकर्षंप्रयोजयेत् ॥
तालीसंघनकुष्ठश्चमांसीत्वक्धात्रिपुष्पिका ।
एलाबीजंत्रिकटुकंत्रिफलाकरिपिप्पली ॥
कर्षद्वयश्चएतेषांपिप्पलीक्काथमर्दितम् ।
अनुपानंप्रयोक्तव्यंचोचंक्षौद्रसमायुतम् ॥
अग्निमान्द्यादिकान्रोगानरुचिंपाण्डुकामलाम् । उदराणितथाशोथमानाहंज्वरमेवच ॥
ग्रहणीश्वासकासश्चहन्यायक्ष्माणमेवच ।
नानारोगप्रशमनंबलवर्णाग्निकारकम् ॥
बृहच्छृंगाराभ्रनामविष्णुनापरिकीर्तितम् ।
एतस्याभ्यासमात्रेणनिर्व्याधिर्जायतेनरः॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात, और सुवर्णकी भस्म प्रत्येक एक २ तोले लेवे और शुद्ध काली अभ्रककी भस्म ४ तोले, तालीसपत्र, नागरमोथा, कूट, जटामांसी, दालचीनी, धायके फूल, इलायचीके बीज, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, गजपीपल, प्रत्येक दो तोले लेवे. सबको पीपलके काढेसे खरल कर दालचीनी और सहतके साथ देवे तो मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु, कामला, उदर, सूजन, अफरा, ज्वर, संग्रहणी, श्वास, खांसी, खई और नानाप्रकारके रोगोंको दूर करे. बल, वर्ण और जठराग्निको बढावे. यह बृहच्छृंगाराभ्रक विष्णु भगवानने कही है इसके अभ्याससे मनुष्य रोगरहित होता है ।

नित्योदयरसः

सुशुद्धंपारदंगन्धंप्रत्येकंशुक्तिसम्मितम् ।
ततःकज्जलिकांकृत्वामर्दयेच्चपृथक्पृथक् ॥
बिल्वाग्निमन्थश्योनाकंकाश्मरीपाटलाबला।
मुस्तंपुनर्नवाधात्रीबृहतीवृषपत्रकम् ॥
विदारीबहुपुत्रीचएषांकर्षैरसैर्भिषक् ।
सुवर्णरजतंताप्यंप्रत्येकंशाणमात्रकम् ॥
पलमात्रन्तुकृष्णाभ्रंतदर्द्धन्तुसिताभ्रकम् ।
जातीकोषफलेमांसीतालीशैलालवङ्गकम् ॥
प्रत्येकंकोलमात्रन्तुवासानीरैर्विमर्दयेत् ।
शोषयित्वातपेपश्चाद्विदार्य्याःपेषयेद्रसैः ॥
द्विगुञ्जांवटिकांकृत्वापिप्पलीमधुनाभजेत् ।
नाम्नानित्योदयश्चायंरसोविष्णुविनिर्म्मितः
पंचकासान्निहन्त्याशुचिरकालोद्भवानपि ।
राजयक्ष्माणमप्युग्रंजीर्णज्वरमरोचकम् ॥
धातुस्थंविषमाख्यञ्चतृतीयकचतुर्थकम् ।
अर्शांसिकामलांपाण्डुमग्निमान्द्यंप्रमेहकम् ॥
सेवनादस्यकंदर्परूपोभवतिमानवः ।

अर्थ-शुद्धपारा और गन्धक प्रत्येक एक तोले, दोनोंकी कजली कर बेलगिरी, अरनी, टेंटू, कंभारी, पाढल, खिरैटो, नागरमोथा, सांठ, आमले, कटेरी, अडूसेके पत्ते, विदारीकंद और शतावरके रसमें पृथक् पृथक् खरल करे फिर इसमें सुवर्णभस्म रूपेकी भस्म, सोनामक्खीकी भस्म, प्रत्येक चार मासे मिलावे. काली अभ्रककी भस्म ४ तोले, सफेद अभ्रककी भस्म दो तोले, जायफल, जावित्री, जटामांसी, तालीसपत्र, इलायची, लौंग प्रत्येक दो टंक लेवे. और सबको पीसकर अडूसेके रसमें खरल करे, फिर धूपमें सुखाय विदारीकंदके रसमें घोट दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इनको पीपल और सहतके साथ खाय तो यह नित्योदितरस पांच प्रकारकी खांसी, खई, जीर्णज्वर, अरुचि, धातुगतज्वर, विषमज्वर, तृतीय, चातुर्थक, बवासीर, कामला, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि और प्रमेहको दूर करे. देहको कामदेवके समान करे ।

रसपर्पटी.

रसात्रिगुणगन्धेनमर्दयित्वासभृंगकम् ।
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेद्रावितंबदराग्निना ॥
ऊर्ध्वाधोगोमयंदत्त्वाकदल्याःकोमलेदले ।
स्निग्धेपत्रेक्षयोद्व्यापर्पटाकारतांनयेत् ॥
पादेलोहेविनिक्षिप्तेलोहपर्पटिकाभवेत् ।
ताम्रेपादेविनिक्षिप्तेताम्रपर्पटिकाभवेत् ॥
विषपादश्चयुंजीततत्साध्येष्वामयेषुच ।
सुरसाश्चजयन्त्याश्चकन्यकाढकरूपयोः ॥
त्रिफलायामुनेर्भार्ग्यामुंडयात्रिकटुसंज्ञयोः ।
भृंगराजश्चवन्हेश्चप्रत्यहंद्रवभावितं ॥
आर्द्रकस्यद्रवेणाथसप्तधाभावयेत्पुनः ।

अंगारेस्वेदयेदीषत्पर्पटीरसमुत्तमम् ॥
गुंजाष्टकंददीतास्यताम्बूलीपत्रसंयुतम् ।
पिप्पलीरसकंश्चापिनिर्गुण्ड्याथानुपाययेत् ॥
त्रिकण्टकस्यमूलानिशुंठीछित्वाविनिक्षिपेत् ।
अजाक्षीरेसनीरार्द्धेयावत्क्षीरंविपाचयेत् ॥
तत्क्षीरंपाययेद्रात्रौसकणंभोजयेदपि ।
कूष्माण्डवर्जयेच्चिचावृन्ताकंकर्कटीमपि ॥
आरनालश्चतैलंश्चमैथुनश्चविवर्जयेत् ।
मासत्रयन्तुसेवेतकासश्वासापनुत्तये ॥
सहिंगुजीरकव्योपैःशमयेद्ग्रहणीरसः ।
दशमूलांभसावातज्वरंत्रिकटुनाकफं ॥
ज्वरंमधुकसारेणपञ्चकोलेनसर्वजं ।
यक्ष्माणंमधुपिप्पल्यागोमूत्रेणगुदांकुरान् ॥
शूलमेरण्डतैलेनपाण्डुशोथंसगुग्गुलुः ।
कुष्टानिभृंगभल्लातबाकुचीपञ्चनिम्बकैः ॥
धत्तूरबीजसंयोगान्महोन्मादविनाशिनी ।
अपस्मारंनिहन्त्याशुव्योपनिम्बदलैःसह ॥
स्तनंधयःशिशूनान्तुनितरांपर्पटीहिता ।
पथ्यायाश्चूर्णसंयुक्ताव्याधीन्यान्सुदुस्तरा
न् ॥ सजातीफलशीतोदंयोजयेत्पर्पटीरसः
पित्तेजीर्णेशिरश्चास्यशीततोयेनसेचयेत् ॥
नस्यंनिष्ठीवनंधूमंतीक्ष्णंवमनरेचनं ।
अन्नंरूक्षाल्पतीक्ष्णोष्णंकटुतिक्तकषायकं ॥
चिरकालस्थितंमद्यंयोजयेत्कफरोगिणे ।

अर्थ—४ तोले पारा, १२ तोले गंधक, दोनोंकी कजलीकर भांगरेके रससे घोटे, फिर घीसे चुपडे हुए लोहपात्रमें बेरकी लकडीकी आंचसे कजली-की चाशनी कर केलेके पत्तेके नीचे गोबर बिछाय उसपर ढाल देवे, और दूसरे पत्तेसे दबाकर पपडीके समान बना लेवे. यदि इस कजलीमें चौथा भाग लोहभस्म मिलादी जावे तो यही लोहपर्पटी बनजावे, और तांबेकी भस्म मि-लानेसे यही ताम्रपर्पटी कहलातीहै, इस पर्पटीमें चौथाई भाग सिंगियाविष मिलाके तुलसी, अरनी, घीगुवार, अडूसा, त्रिफला, अगस्तिया, भारंगी, गोरखमुंडी, त्रिकुटा, भांगरा, चीता, इनके काढे तथा रसमें पृथक् पृथक् एक २ दिन भावना देवे, फिर ७ भा-वना अदरखके रसकी देवे, फिर किंचिन्मात्र अंगारों पर स्वेदन करके रखछोडे इसकी एक मासेकी मात्रा पानमें अथवा दश पीपलोंके साथ देवे, इसके पश्चात् निर्गुंडीका रस अथवा गोखरूकी जड और सोंठको बकरीके दूधमें आधा पानी मिलाकर औटावे. जब दूधमात्र रहजाय तब उसे छानकर पीपलका चूर्ण मिलाय रात्रिके समय पिलावे इस पर्पटीरस का सेवन कर्त्ता पेठा, इमली, बैंगन, ककडी, कांजी, तेल और मैथुन करना त्याग देवे. तीन महीनेके सेवनसे श्वास, खांसी दूरहो हींग, जीरा और त्रिकुटाके साथ सेवन करने से संग्रहणी दूरहो. दशमूलके काढेके साथ वातज्वर, त्रिकुटाके साथ कफ, मुलहटीके सारके साथ ज्वर, पंचकोलके काढेके साथ सब प्रकारके ज्वर, सहत और पीपलके साथ खई, गोमूत्रके साथ बवासीर, अंडीके तेलके साथ शूल, गूगलके साथ पाण्डुशोथ, कूट, भांगरा, भिलावा, बावची और पंचनिंब अर्थात नींबके पंचांगके साथ कोढ, धतूरेके बीजोंके साथ उन्माद, त्रिकुटा और नीमके पत्तोंके साथ मृगीको दूरकरे, यह दूध पीने वाले बालकको अत्यन्त हितकारी है, हरडके चूर्णके साथ और व्याधियोंको दूर करताहै. तथा जायफल और शीतल जलके साथ इस पर्पटीको देवे जब यह रस जीर्ण होजावे तब

शीतल जलसे रोगीके शिरको धोवे, नस्य, कुरला, धूम्रपान, तीक्ष्ण वमन, विरेचन, रूखा तीखा और थोडा तथा कडवा, चरपरा और कसैला ऐसा भोजन, तथा बहुत दिनका रखा हुआ मद्य ये कफरोगीको देने चाहिये।

कल्पतरुरसः

निष्कमात्रंविषंग्राह्यंमरिचंचाष्टनिष्ककम्।
पलार्द्धंकरहाचूर्णंनिष्कषट्कुलिञ्जनम्॥
जातीफलंपलार्द्धंञ्जातीकेशरकंतथा।
शोषणंकर्षमात्रन्तुचूर्णयेत्सर्वंयत्नतः॥
क्षौद्रेणचविमुक्तंस्याद्दिनंगुञ्जाचतुष्टयम्।
कासंश्वासंक्षयंकुष्ठंग्रहणीवन्हिमान्द्यनुत्॥
पुष्टिवीर्यबलोत्साहंभजतेकामिनीशतं।
वातश्लेष्मभवान्रोगान्प्रमेहांश्चैवविंशतिः॥
अनुपानविशेषेणनिहन्तिविविधान्गदान्।
रसःकल्पतरुर्नामाशंकरेणविनिर्मितः॥

अर्थ–४ मासे विष, काली मिरच ८ टंक, अकरकरा दो तोले, कुलींजन ६ टंक, जायफल और जावित्री दो २ तोले, काली मिरच एक तोले, सबको एकत्र कर चूर्ण करे, फिर इसमेंसे ४ रत्ती रस सहतके साथ सेवन करे तो खांसी, श्वास, क्षय, कोढ, संग्रहणी, मन्दाग्नि, इनको दूर करे. पुष्टता, वीर्य, बल, और उत्साहको बढावे. सौ स्त्रियोंको भोगने की शक्ति हो, वात कफके रोग और बीस प्रकारके प्रमेहको दूर करे, तथा अनुपानके बलसे अनेक रोगोंको दूर करे।

ताम्रभैरवोरसः

विषंखदिरसारश्चकरहाटंकणंतथा।
व्योषंताम्रंशुद्धफेनंसममात्रावटीकृता॥
दीयतेश्वासकासेपुपीनसेग्रहणीकफे।
नाशयेन्नात्रसंदेहस्तिमिरश्चयथारविः॥
ताम्रभैरवइत्येषज्वराणाञ्चनिकृन्तनः।

अर्थ–सिंगियाविष, खैरसार, अकरकरा, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, शुद्ध तांबेकी भस्म, और अफीम सबको समान लेकर गोलियां बनावे. इसको श्वास, खांसी, पीनस, संग्रहणी और कफमें देवे तो उक्त रोगोंका नाश करे. यह ताम्रभैरव रस सर्व रोगोंका नाशक है।

ताम्रपर्पटीरसः

मृतंताम्रंत्रिभागश्चगन्धकंरसतत्समम्।
भागमेकंवत्सनाभंकज्जलीखल्वमध्यगं॥
गोघृतेनकृतंकल्कंलोहपात्रेविपाचयेत्।
ढालयेदर्कपत्रेपुपर्पटीरससिद्धये॥
गुञ्जाद्वयंत्रयंचैवपिप्पलीमधुसंयुतम्।
त्रिसप्तरात्रयोगेनरोगराजश्चनाशयेत्॥
आर्द्रकस्यरसेनैवसन्निपातंनियच्छति।
त्रिफलारससंयुक्तंसर्वपाण्डुंविनाशयेत्॥
वातारितैलसंयुक्तंसर्वशूलनिवारणम्।
कुमारीरसयोगेनवातपित्तोपशान्तये॥
बाकुचीरससंयुक्तंसर्वदद्रुविनाशनम्।
त्रिफलामधुसंयुक्तंसर्वमेहनिवारणम्॥
खदिरक्वाथपानेनकुष्ठाष्टादशनाशनम्।
मंथानभैरवैरुक्तंलोकानांहितकारकम्॥

अर्थ–ताम्रभस्म, पारा, गंधक, प्रत्येक ३ तोले और बच्छनाग, विष १ तोले, सबकी खरलमें कजली कर घीके साथ लोहेके कलछेमें कजली करे और आकके पत्तेपर इस पर्पटी रसको ढाल देवे. तो यह पर्पटी बने. इसको दो या तीन रत्ती नित्य पीपल और सहतके साथ २१ दिनतक खावे तो राजरोग (खई) को दूर करे, अदरकके रससे सन्निपातको दूर करे, त्रिफलाके रससे सर्व

प्रकारके पीलिया अंडीके तेलसे सब प्रकारके शूल घीगुवारके रससे वातपित्तकी शान्ति, बावचीके रससे सब प्रकारके दाद, त्रिफला और सहतके साथ सब प्रकारका प्रमेह, खैरके काढेके साथ १८ प्रकारके कोढोंको दूर करे, यह मंथानभैरवकी कही ताम्रपर्पटी है।

कासारिरसः ४

अभ्रकंशम्भुबीजश्चतीक्ष्णंशुल्वसमन्वितम्। कासमर्दवरागस्तिवेतसाम्लैर्विमर्दयेत् ॥ चतुर्गुञ्जावटीहन्तिकासंपंचविधंतथा।

अर्थ–अभ्रक, पारा, लोहभस्म, और ताम्रभस्मको एकत्रकर कसोंदी, त्रिफला, अगस्तिया और अमलवेतके रससे खरल कर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह गोली पाच प्रकारकी खांसीको दूर करे।

तिक्तत्रयरसः

भस्मताम्राभ्रतीक्ष्णानांकासमर्दवरारसैः। मुनिजैर्वेतसाम्लेनदिनंमर्द्यश्चपीलितम् ॥ माषार्द्धंपित्तकाशार्तोभक्षेत्तिक्तत्रयोरसः।

अर्थ–ताम्रभस्म, अभ्रक भस्म और लोहभस्म, तीनोंको एकत्र कर कसोंदी, त्रिफला, अगस्तिया और अमलवेतके रससे खरल कर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे तो यह पांच प्रकारकी खांसीको दूर करे।

रसोलोकेश्वरोप्यत्रपिप्पलीमधुनासह। देयंगुञ्जाचतुष्कन्तुसघृतंमरिचैश्चवा ॥ काशश्वासाग्निमांद्यश्चक्षयकाशश्चनाशयेत्।

अर्थ–इस खांसीमें पीपल और सहतके साथ ४ रत्ती लोकेश्वर रस देवे, अथवा घी. और काली मिरचके साथ देवे तो सर्व प्रकारकी खांसी, श्वास, मन्दाग्नि और क्षयजन्य खांसीको दूर करे।

स्वयमग्निरसोवाथभक्षंनिष्कद्वयंद्वयम्। पित्तकासारुचिश्वासत्रयंपाण्डुंश्चनाशयेत् ॥

अर्थ–अथवा स्वयमग्नि रस दो टंक सेवन करे तो पित्त. खांसी, अरुचि. श्वासत्रय. और पाण्डुरोग दूर होवे।

स्वर्णपर्पटीरसः

शुद्धंसूतंभवेत्कर्षंगंधकंद्विगुणंतथा। भस्महाटकसूतांशंत्रयंखल्वेविमर्दयेत् ॥ कज्जलाभंलोहपात्रेकदल्याद्रावभावयेत्। ऊर्ध्वाधोगोमयंदत्वाहेमपर्पटिकारसः ॥ कासक्षयंसकृच्छ्रंचमूत्रघातंतथाश्मरीम्। सिद्धापर्पटिकाख्यातासर्वरोगविनाशिनी ॥ रसायिनीत्वियंश्रेष्ठाशिशूनाश्चगदापहा।

अर्थ–शुद्धपारा १ तोले, गंधक दो तोले, सुवर्ण भस्म १ तोले, तीनोंको खरलमें डाल कजली करे, फिर लोहपात्रमें तापकर केलेके पत्तेपर ढाल देवे और दूसरा पत्ता ऊपरसे ढक गोबरसे दबा देवे तो यह स्वर्णपर्पटी रस खांसी, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, और पथरीको दूर करे, यह सर्वरोग नाशिनी सिद्धपर्पटी है. रसायन और बालकोंको हितकारी है।

भूतांकुशोरसः

शुद्धसूतस्यभागैकंद्विभागंशुद्धगंधकम्। भागत्रयंमृतंताम्रंमरीचंपश्चभागिकम् ॥ मृताभ्रस्यचतुर्भागंभागमेकंविषंक्षिपेत्। भूतांकुशस्यभागैकंसर्वंचाम्लेनमर्दयेत् ॥ यामंभूतांकुशोनाममाषैकंवातकाशनुत्। अनुपानंलिहेत्क्षौद्रैर्विभीतकफलत्वचः ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ तोले, गंधक दो तोले, ताम्रभस्म ३ तोले, अभ्रकभस्म ४ तोले, काली मिरच. ५ तोले, विष और भूतांकुशरस प्रत्ये-

क एक तोले, सबको मिलाकर एक प्रहर नीबूके रससे खरल करे, फिर इस भूतांकुश रसको १ मासे सेवन करनेसे बातकी खांसी दूर होवे, इसको सहत और बहेडेकी छालके साथ सेवन करना चाहिये ।

बोलबद्धोरसः

रसभस्मंविषंतुल्यंगन्धकंद्विगुणंमतम् ।
बोलतालकवाल्हीककर्कोटीमाक्षिकंनिशा ॥
कंटकारीयवक्षारंलांगलीक्षीरसैंधवैः ।
मधूकसारंसंचूर्ण्यसप्ताहंचार्द्रकद्रवैः ॥
छायायांभावयेत्पश्चात्सप्ताहंचित्रकद्रवैः ।
गुटिकाबदराकाराश्लेष्मकासापनुत्तये ॥
भक्षयेद्बोलबद्धोयंरसःस्श्वासपाण्डुजित् ।

अर्थ—पारेकी भस्म १ तोले, गंधक दो तोले, विष १ तोले, बोल, हरिताल, पाढ, ककोडा, सुवर्णमक्खीकी भस्म, हल्दी, कटेरी, जवाखार, कलियारीका दूध, सैंधानिमक, महुएका सार, प्रत्येक एक तोले लेकर सबको ७ दिन अदरखके रसमे छायामें घोटे, फिर ७ दिन चित्रकके रससे खरल कर झडियाके बेर के समान गोलियां बनावे और सेवन करे, तो कफकी खांसी दूर हो ।

कासकर्त्तरीरसः

रसगंधकपिप्पल्योहरीतक्यक्षवासकम् ।
यथोत्तरंगुणंचूर्णंबब्बूलक्वाथभावितम् ॥
एकविंशतिवारेणशोषयित्वाविचूर्णयेत् ।
भक्षयेन्मधुनाहन्तिकासंवैकासकर्त्तरी ॥

अर्थ—पारा, गंधक, पीपल, हरड, बहेडा. अडूसा, प्रत्येक एकसे दूसरेको दूना लेवे और सबको बबूलके काढेकी इक्कीस भावना देकर सुखा लेवे और इसको सहतके साथसे वन करे तो खांसी दूर हो ।

पारदादिचूर्ण.

पारदंगंधकंशुद्धंमृतंलोहश्चटंकणम् ।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारुकटुत्रयम् ॥
अमृतामभ्रकंक्षौद्रंविषंतुल्यानिचूर्णयेत् ।
त्रिगुञ्जाःसर्वकासघ्नांज्वरारोचकमेहनुत् ॥

अर्थ—पारा,गंधक, सार, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, सहत, और विषको समान लेकर ३ रत्ती सेवन करनेसे खांसी, ज्वर, अरुचि, और प्रमेह दूर करे ।

सोमनाथीताम्रं.

शुल्वंसूतसमंद्वयोरपिसमोगन्धस्तदर्द्धःपुन स्तालश्चार्द्धशिलायुतोविरचयेत्पिष्टिंतितत्क ज्जलीं ॥ लिप्त्वाताम्रदलानिमार्तिकदृढोपा त्रेनिधायाथत । त्पाच्यंसिकतयंत्रकेद्विदिवसं शीतंस्वतोनिर्हरेत् ॥ तत्कासश्वसनाग्निमां द्यगुदजानेकार्तिपाण्ड्वामयं । प्लीहोरःक्षतिरो ध्रकोष्ठमरुतोयुक्त्याजयेद्योजितः ॥ वल्लद्वंद्व मितंकणामधुयुतंक्षारार्द्रवारापिवा । युक्तंस र्वकफामयघ्नमचिरात्तत्सोमनाथाभिधम् ॥

अर्थ—पारा १ तोले, गंधक दो तोले, हरिताल और मनसिल एक २ तोले सबको खरलमें डाल कजली करे फिर उसको तांबेके कंटक वेधी पत्रोंपर लेपकर मिट्टीके पात्रमें रख दो दिन बालुका यंत्रमें पचावे, स्वांगशीतल होने पर निकाल कर रोगीको देवे तो खांसी, श्वास, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग, प्लीहा, उरक्षत, बद्धकुष्ठ, बादी, इनको दूर करे. ४ रत्ती पीपल और सहतके साथ देवे अथवा क्षार और अदरखके रसके साथ देवे तो यह सोमनाथताम्र युक्तीसे सब रोगोंको दूर करे ।

मंथानभैरवोरसः

मृतंसूतंमृतंताम्रंहिंगुपुष्करमूलकम् ।
सैंधवंवंगकंतालंकटुकंचूर्णयेत्समान् ॥
देवदालीपुनर्नवयोनिर्गुंडीमेघनादयोः ।
तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकंमर्दयेद्दृढम् ॥
माषमात्रंलिहेत्क्षौद्रैरसोमंथानभैरवः ।
कफरोगप्रशान्त्यर्थंनिंबकाथंपिवेदनु ॥

अर्थ—पारेकी भस्म, ताम्रभस्म, हींग, पुहकरमूल, सेंधानिमक, गंधक, हरिताल, त्रिकुटा, इन सबको समान ले वंदालके रस, सांठ, निर्गुंडी, चौलाई, कुटकी, तोरई, इनके रसमें एक २ दिन खरल करे और १ मासेको सहतके साथ खाय तो यह मंथानभैरव रस कफको दूर करे, इसके ऊपर नींबका काढा पीवे।

त्रिनेत्रोरसः

ताम्रभस्मारतीक्ष्णानांकांचनारत्वचोरसैः।
मुनिजैर्वेतसाम्लेनदिनंमर्द्यंसुपिण्डितं ॥
द्विगुञ्जंपित्तकासार्त्तोभक्षयेच्चात्रिनेत्रकम् ।

अर्थ—तांबेकी भस्म, लोहभस्म, पीतलकी भस्म, कचनारके रसमें, अगस्तिया और अमलवेतके रसमें खरल कर गोलियां बनावे. २ रत्ती पित्तकी खांसीवाला भक्षण करे ।

शिलातालोरसः

त्रिकंटकरसैर्भाव्यंतालमेकंचतुःशिला । दिनंवासारसैःपिष्ट्वावालुकायंत्रपाचितं ॥ द्वियामान्तेसमुद्धृत्यतत्तुल्यंकटुकत्रयं । निर्गुंडीमूलचूर्णश्चव्योषतुल्यंविमिश्रयेत् ॥ शिलातालोरसोनाम्नामाषैकंश्वासकासजित् ।

अर्थ—एक तोले हरिताल और ४ तोले मनसिल, दोनोंको गोखरूके रसकी भावना देकर एक दिन अडूसेके रसमें पीस दोप्रहर वालुकायंत्रमें पचावे फिर शीशीसे निकाल वरावरका त्रिकुटा मिलाय त्रिकुटाकी वरावर निर्गुंडीकी जडका चूर्ण मिलावे तो यह शिलातालरस एक मासे खानेसे श्वास और खांसीको दूर करता है ।

तारेश्वरोरसः

रसपादंमृतंतारंशिलातालंचतुर्गुणं ।
वासागोक्षुरसाराभ्यांमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥
द्वियामंवालुकायंत्रेस्वेद्यमादायचूर्णयेत् ।
गुञ्जाद्वयंनिहन्त्याशुनूनंकासंक्षतोद्भवं ॥
रसस्तारेश्वरोनाम्नाह्यनुपानंचकथ्यते ।
दाडिमत्रिफलाव्यूषंत्रयाणांचसमंगुडम् ॥
चूर्णितंभक्षयेत्कर्षंसर्वकासापनुत्तये ।

अर्थ—पारा १ तोले, रूपेकी भस्म ३ मासे, हरिताल और मनसिल, पारेसे चौगुने, सबको अडूसा, गोखरू, और खैरसारके रसमें दो प्रहर खरल करे. फिर दोप्रहर वालुकायंत्रमें पचाकर चूर्ण करडाले, इसमेंसे दो रत्ती खाय तो खईकी खांसी दूर हो इसपर अनार, त्रिफला, त्रिकुटा, और इन तीनोंको वरावर गुड मिलाकर खानेसे सब प्रकारकी खांसी दूर हो।

सूर्य्यरसः

रसमेकंद्विधागंधंत्रितार्प्यंपंचतालकम् ।
सर्वंशुद्धंविचूर्ण्याथचतुर्भागंमृताभ्रकम् ॥
वचाकुष्ठंहरिद्राग्निटंकणंसैंधवंविषं ।
सपाठंलांगलीव्योषमक्षंप्रत्येकभागकम् ॥
भावितंभृंगसारेणदिनैकंतंचभक्षयेत् ।
माषंसूर्यरसोनामहिध्मावैस्वासकासजित् ॥

अर्थ—पारा १ तोले, गंधक दो तोले, सुवर्ण माक्षिककी भस्म ३ तोले, अभ्रक भस्म ४ तोले, हरिताल ५ तोले, सबको एकत्र कर खरल करे. फिर बच, कूठ, हलदी, चीता, सुहागा सैंधानिमकं, विष, पाट, कलियारी,

सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक एक२तोले ले. सबको कूट पीस भांगरेके रसकी एक दिन भावना देकर एक२मासेकी गोलियां बनावे, इसके खानेसे हिचकी, श्वास और खांसी दूर होवे ।

कफकुंजरोरसः

रसगंधौशुक्तिमांसंस्नुह्यर्कपयसःपलम् ।
पलंपलंपंचलवणमेकीकृत्यप्रलेपयेत् ॥
आलोडयचार्कदुग्धेनपूरयेत्शंखमध्यतः ।
पिप्पलीचविषवराचूर्णंकृत्वाप्रलेपयेत् ॥
प्रज्वालयेद्याममात्रंसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत् ।
कर्पूरनागपत्रैश्चदेयोमात्रार्द्धगुंजया ॥
श्वासंकासंचहृद्रोगंकफंपंचविधंतथा ।
वज्रवद्धंतिरोगांश्चरसोयंकफकुंजरः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सीपका मांस, और थूहरका दूध, प्रत्येक एक पल ले और पांचों नोन एक २ पलके अनुमान ले सबको एकत्र कर घोटे, तथा आकके दूधमें घोटकर शंखके बीचमें भरदे फिर पीपर, विष और त्रिफलाका चूर्णकर उस शंखको ल्हेस दे और फिर संपुटमें रख १ प्रहरकी अग्नि देवे. फिर उसको निकाल चूर्ण कर आध रती रसकपूर और पानके साथ देवे तो श्वास, खांसी, हृदयरोग और पांच प्रकारकी खांसी दूर हो।

हेमगर्भपोटलीरसः

रसस्यभागाश्चत्वारस्तावन्तःकनकस्यच ।
तयोश्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वादशभागिकः ॥
कुर्य्यात्कज्जलिकांतिपुमुक्ताभागाश्चषोडश ।
चतुर्विंशश्चशंखस्यभागैकंटंकणस्यच ॥
एकत्रमर्दयेत्सर्वंपक्वनिंबुकजैरसैः ।
कृत्वातेपांततोगोलंमूषासंपुटकेन्यसेत् ॥
मुद्रांदत्वाततोहस्तमात्रेगर्तेचगोमये ।
पुटेद्गजपुटेनैवस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
पिष्ट्वागुंजाचतुर्मानंदद्यादृव्याज्यसंयुतम् ।
एकोनत्रिंपद्मानमरिचैःसहदीयते ॥
राजतेमृन्मयेपात्रेकाचजेवाथलोहजे ।
लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्प्रयतमानसः ॥
कासेश्वासेक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे ।
अतीसारेप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका ॥

अर्थ–पारा और गंधक, दोनों चार २ तोले ले, दोनोंकी कजली कर १२ तोले गंधक मिलावे फिर सबकी कजली कर १६ तोले मोती, २४ तोले शंखकी भस्म, और एक तोले सुहागा ले सबको एकत्र कर नींबूके रसमें खरल करे, फिर उसका गोला बनाय मूषामें रख ऊपरसे मुद्रा करके हाथ भरके गड्ढेमें उसे रख गजपुटमें फूंक देवे, स्वांग शीतल होनेपर निकाल ४ रत्तीकी मात्रा गौके मक्खनमें २९ काली मिरचोंके चूर्णके साथ देवे इसको सुवर्ण, काच, लोह, अथवा मिट्टीके पात्रमें रखे लोकनाथ रसके तुल्य पथ्य करावे तथा खांसी, श्वास, क्षय, वातकफ, संग्रहणी और अतीसार इन रोगोंमें इस हेमगर्भ पोटलीको देना चाहिये.

कासश्वासविधूंननोरसः

रसभागोभवेदेकोगंधकाद्द्वौतथैवच ।
यवक्षारंत्रिभागंस्याद्वचकंचचतुर्गुणं ॥
मरिचंपंचभागस्यात्शुद्धसम्यक्विमर्दितः ।
कासंपंचविधंहन्यात्श्वासंसप्तविधंहरेत् ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, जवाखार ३ तोले, संचरनिमक ४ तोले, और काली मिरच ५ तोले, सबको खरल कर गोलियां बनावे. इसके सेवन करनेसे पांच प्रकारकी खांसी और ७ प्रकारका श्वास दूर हो।

नागरसः

पारदंपलमानंस्याद्गंधकंद्विपलंस्मृतम् ।
गन्धकेनहतंनागंसार्द्धद्विपलकंस्मृतम् ॥
अमृतंद्विपलंप्रोक्तंपिप्पलीद्विपलास्मृता ।
मरिचंद्विपलंचोक्तंशंखभस्मपलंमतम् ॥
आरण्योपलजंभस्मपलमानंप्रयोजयेत् ।
सर्वमेकत्रकृत्वातुसुखल्वेमर्दयेद्दिनं ॥
आर्द्रकस्यरसेनाथद्विगुञ्जंभक्षयेत्पुमान् ।
शीतांगंसन्निपातंचवातरोगंजयेद्ध्रुवम् ॥

अर्थ–पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, और गंधक करके मरा हुआ सीसा १० तोले, विष ८ तोले, पीपल और काली मिरच आठ २ तोले, शंखकी भस्म ४ तोले, आरने उपलोंकी राख ४ तोले, सबको एकत्र कर चार प्रहर खरल करे। और इसकी २ रत्ती मात्राको अदर रखके रसके साथ सेवन करे तो शीतांग सन्निपात, बादी और खांसी आदिको दूर करे।

कफकेतुरसः

आकल्लकंचसविषंसमुद्रफलसंयुतम् ।
प्रत्येकंसमभागंचद्विगुणंमरिचंततः ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवमर्दयित्वाप्रयत्नतः ।
गुञ्जामात्रामिमांचैववटींकुर्य्याद्विचक्षणः ॥
भुक्तेयंनाशयत्याशुकफरोगंनसंशयः ।

अर्थ–अकरकरा, विष, समुद्रफल, इन सबको समान लेकर सबसे दूनी काली मिरच लेवे, और अदरखके रससे खरल कर एक एक रत्तीकी गोलियां बनावे. इसके सेवनसे तत्काल कफका रोग दूर होवे।

तथा

भर्जितंटंकणंक्षारंपिप्पलीमरिचंतथा ।
आकल्लकंविषंशुद्धंवराटीभस्मएवच ॥
सर्वाणिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णंविधायच ।
द्विगुञ्जमात्रकंदद्यात्कफकेतुरयंरसः ॥
कासश्वासौशीतवातंनाशयेन्नात्रसंशयः ।

अर्थ–भुनाहुआ सुहागा, पीपल, काली मिरच, अकरकरा, विष, कौडीकी भस्म, इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे और दो रत्ती देवे तो यह कफकेतुरस खांसी, श्वास और शीतवातको दूर करे।

तथा

रसबलिरवितालान्पौष्करंहिंगुसिंधूद्भव ।
कटुकिरजस्ततसर्वमेकत्रपिष्टं ॥
वनरवसुरदालीतिक्तकोशातकीभिः ।
तदनुचननुभाव्याकृष्णनिर्गुंडिनीरैः ॥
कफगदकुलकेतुःस्याद्रसोमापमात्रः ।
समधुरितिनिहन्तिप्रोत्कटंश्लेष्मरोगं ॥
अनभवतिकषायोनिम्बजःपेयमस्मिन् ।
पवनमशनमात्रंपथ्यमुष्णाम्बुसेव्यम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, ताम्रभस्म, हरितालकी भस्म, पुहकर मूल, हींग, सैंधानिमक, और कुटकी सबका चूर्णकर, चौलाई, बंदाल, कुटकी और तोरईकी भावना देवे. इसकी १ मासे मात्राको सहतके साथ चाटे तो उत्कटभी कफरोग दूर हो. इसके ऊपर नींबका काढा पीवे और बातकारी द्रव्य न खाय और गरम जल पीया करे।

पारदादिवटी.

पारदस्यपलंचैवयशदंनागरंगके ।
पृथक्पलमितंप्रोक्तंत्रयाणाश्वविशेषतः ॥
अयंतुमृत्तिकापात्रेद्रावंकुर्य्याद्यथाविधि ।
सूतंचप्रक्षिपेत्तस्मिन्पुनर्भूम्यांतुप्रक्षिपेत् ॥
खल्वेधृत्वामर्दयेत्तुकज्जलींकारयेद्बुधः ।
शुद्धामृतपलमितंमरिचस्यपलाष्टकम् ॥
सूक्ष्मचूर्णंविधायाथवस्त्रपूतंसमाचरेत् ।
शिग्रुजस्यरसैर्मर्द्यंपुटानित्रीणिदापयेत् ॥

आर्द्रकस्यरसेनैवत्रिपुटंतुपुनर्द्देत् ।
कालायसदृशीकार्यावटिकाकफनाशिनी ॥
कासश्वासौनिहन्त्याशुशीतवातंतथैवच ।
शूलरोगहरीप्रोक्तारसादिवटिकात्वियं ॥

अर्थ–पारा, जस्तेकी भस्म, सीसेकी भस्म, प्रत्येक ४ तोले, लेवे और मिट्टीके पात्रमें प्रथम सीसे और जस्तको गलाय उसमें पारा मिला देवे, फिर उतार गंधक डाल खरलमें कजली करे, इस कजलीमें ४ तोले शुद्ध विष मिलावे, और काली मिरच ३२ तोले मिलाकर सबका बारीक चूर्णकर कपरछन करडाले, फिर संह-जनेके रसके तीन पुट देवे, और अदरखके रसके ३ पुट देकर मटरके समान गोलियां बना डाले. यह खांसी, श्वास, शीतवात और शूलरोग तथा कफरोगोंका नाश करे ।

कासश्वासरोगेवाजीकरणाधिकारोक्तो ।
वसंततिलकोरसोऽपियोजनीयः ॥

अर्थ–खांसी और श्वासरोगोंमें वाजी क-रणाधिकारमें जो वसंततिलकरस कहा है वो देना चाहिये ।

कंटकारीकषायेणपिप्पल्यामधुनासह ।
पंचवक्त्रोरसोदेयःश्लेष्मकाशापनुत्तये ॥

अर्थ–कटेरीके काढेमें पीपल और सहत मिलाके इसके साथ पंचवक्त्ररस देवे तो क-फकी खांसी दूर हो ।

हिक्काधिकार.

हेममुक्तार्ककान्तानांभस्मवल्लमितंवरम् ।
बीजपूररसक्षौद्रःसौवर्चलसमन्वितम् ॥
हन्तिहिक्काशतंसत्यमेकमात्राप्रयोगतः ।
काकथापंचहिक्कानांहरणेपुनरुच्यते ॥

अर्थ–सुवर्ण, मोती, ताम्र और कान्तलो-हकी भस्म ३ रत्तीको बिजौरेके रस सहत और संचरनोनके साथ खाय तो एकही मात्रा सौ हिचकियोंको दूर करे, फीर पांच हिचकियोंका दूर करना क्या बडी बात है? यह बौद्ध सर्वस्वमें लिखा है ।

दशमूलीकषायेणमधुनाचसमन्वितम् ।
कान्तायोभस्मर्हीक्कानांपंचानांपंचतांनयेत् ॥

अर्थ–दशमूलके काढे और सहतमें का-न्तलोहकी भस्म मिलाकर देवे तो पांच प्रका-रकी हिचकी दूर हो यह वंसतराज ग्रंथसे लिखा है ।

मेघडंबररसःअत्रजार्या.

तंदुलीयद्रवेपिष्टंसूततुल्यंचगंधकम् ।
वज्रमूषागतंचैवभूद्रेभस्मतांनयेत् ॥
दशमूलकषायेणभावयेत्प्रहरद्वयम् ।
गुञ्जाद्वयंहरत्याशुहिक्कांश्वासंज्वरंकिल ॥
अनुपानेनतादव्योरसोऽयंमेघडंवरः ।
नागरंपिप्पलीभार्गीपुष्करंकर्कटीसटी ॥
शर्कराष्टगुणंचूर्णमनुपानेप्रकल्पयेत् ।

अर्थ–पारा और गंधक दोनोंको बराबर ले चौलाईके रसमें खरल करे, फिर वज्रमूषामें रख भूधरयंत्रमें भस्म करे, फिर दशमूलके काढेकी दो प्रहर भावना देकर दो रत्ती सेवन करे तो हिचकी, श्वास और ज्वर दूर होवे. इस मेघडंबर रसको अनुपानके साथ देवे तहां सोंठ, पीपल, भारंगी, पुहकरमूल, काक-डासिंगी, कचूरकोसमान लेवे और अठगुनी मिश्री मिलायकर देवे यही अनुपान है ।

पाटलाफलतोयेनक्षौद्रेणचसमन्वितम् ।
हेमभस्मनिहन्त्येनहिक्काःपंचापिदुस्तराः ॥

अर्थ–पाढलके फलके जलमें सहत मिलाय इसके साथ सुवर्ण भस्मको सेवन करनेसे पांच प्रकारकी हिचकी दूर होवे ।

कटुकागैरिकाभ्यांचमुक्ताभस्मतथैवच ।
बीजपूरस्यतोयेनताम्रंतद्धत्समाक्षिकम् ॥

अर्थ—कुटकी, गेरू, मोतीकी भस्म और तांबेकी भस्मको बिजौरेके रसके साथ सेवन करनेसे हिचकी दूर हो ।

मधुनामाक्षिकस्यापिभस्महिक्काविनाशयेत् ।

अर्थ—सुवर्णमाक्षिककी भस्म सहतमें चाटनेसे हिचकी दूर होवे ।

शंखचूलोरसः

रसाभ्रहेमभस्मानिवैक्रान्तंसर्वतुल्यकम् ।
सर्वैःपंचगुणंशंखचूर्णंशुष्कंविमर्दयेत् ॥
लेहयेन्मधुनामापचतुष्कंसानुपानकम् ।
हिक्कांपंचविधंहन्तिमुमूर्षोरपितत्क्षणात् ॥

अर्थ—पारा, अभ्रक, सुवर्णभस्म, और वैक्रान्त भस्मको बराबर लेकर सबसे पचगुना शंखचूर्ण लेवे सबको पीस ४ मासे सहतके साथ खाय और अनुपानसे रहे तो पांच प्रकारकी हिचकी दूर होवे ।

पिप्पल्याद्यंलौहम्.

पिप्पल्यामलकीद्राक्षाकोलास्थिमधुशर्करा ।
विडंगपुष्करैर्युक्तोलेहोहन्तिसुदुर्जयम् ॥
छर्दिंहिक्कांतथातृष्णांत्रिरात्रेणनसंशयः ।

अर्थ—पीपल, आंवले, दाख, बेरकीगुठली, सहत, मिश्री, वायविडंग पुहकरमूल, इनके साथ लोहभस्म सेवन करे तो दुर्जयवमन हिचकी और तृष्णा इनको तीनही रात्रिमें दूर करे ।

यमलाख्यायाम्.

रसस्यतुर्यभागेनताम्रचूर्णंप्रकल्पयेत् ।
जंबीरोत्थैर्द्रवैर्मर्द्यंदिनान्ततेतत्समुद्धरेत् ॥
बध्वावस्त्रेष्टिकायंत्रेतुल्यगंधेनपाचयेत् ।
एषान्तुषड्गुणंकार्य्यंततःपिष्टिंसमुद्धरेत् ॥
पाषाणभेदीमत्स्याक्षीद्रवैःपिष्टन्तुमर्दयेत् ।
तद्गोलंलेपयेद्गाढंकल्केपाषाणभेदजे ॥
मत्स्याक्षाचघनंलेपंदत्त्वापातनयंत्रके ।
स्वेदयेद्यामामात्रन्तुरसोऽयंयोगवाहकः ॥
गुञ्जाद्वयंप्रदातव्यंवैस्वर्यश्वासहिध्मजित् ।
दशमूलंपिवेच्चानुसकुलत्थंकषायकम् ॥

अर्थ—पारा ४ तोले, तांबेकी भस्म १ तोले दोनोंको जंभीरीके रसमें १ दिन खरल करे, और सायंकालको निकाल कपडेमें बांध इष्टिकायंत्र (गौरीयंत्र) में षड्गुण गंधक जारण करे, फिर पाषाणभेद, मछेछी, इनके रसमें खरलकर पिष्टी करे फिर उसका गोला बनाय उसको पाषाणभेदके कल्कसे और मछेछी इनका गाढा लेप देकर पादनयंत्रमें १ प्रहर स्वेदन करे तो यह योगवाहक बने इसमेंसे दो रत्ती देवे ऊपरसे कुलथी डालकर दशमूलका काढा पिलावे तो स्वरभंग, श्वास और हिचकी दूर होवे ।

अथ श्वासाधिकारः

श्वासारिरसः

पारदोवत्सनागश्चगंधकंटंकणंकणा ।
समांशंद्विगुणंशुंठीमरिचंपंचभागिकम् ॥
सूक्ष्मचूर्णमिदंकृत्वावल्लमात्रंप्रदापयेत् ।
श्वासारिसंज्ञिकोह्येषसद्यःश्वासहरःपरः ॥

अर्थ—पारा, वत्सनाग विष, गंधक, सुहागा और पीपल सबको समान भाग ले और सबसे दूनी सोंठ और पांच भाग काली मिरच लेवे सबका बारीक चूर्णकर ३ रत्ती देवे तो यह श्वासारिरस तत्काल श्वासको हरण करे।

उदयभास्कररसः

धान्याभ्रंसूतकंगंधंस्वेतापामार्गजैरसैः ।
तुल्यांशंमर्दयेच्चान्हंयंत्रेपातनकेपचेत् ॥

ऊर्ध्वलग्नन्तुतद्ग्राह्यंरसोह्युदयभास्करः ।
श्वासंपंचविधंहन्तिद्विगुंजमनुपानतः ॥

अर्थ—धान्याभ्रक, पारा, गंधक इनको सफेद ओंगाके रसमें १ दिन खरल कर फिर पातनायंत्रमें पचावे. फिर ऊपरके पात्रमें लगी हुई भस्मको निकाल लेवे, यह उदयभास्कर रस पांच प्रकारकी श्वासको दूर करे, इसको दो रत्ती पथ्यके साथ देवे ऊपरसे ४ मासे कुटकीका चूर्ण सहतके साथ चाटे.

नीलकंठरसः

सूतंशुल्वंसलोहंवलिममृतयुतंत्रित्रिकंरेणुकाऽब्दं । गंडीरंकेशराग्निद्विगुणगुडयुतंमर्दयित्वा समस्तं ॥ कुर्य्यात्कोलास्थिमात्रान्सुरुचिरवटकान्भक्षयेत्प्राक्दिनादौ । पथ्याशीसर्वरोगानपहरतितरांनीलकंठाभिधानः ॥

अर्थ—शुद्धपारा, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गंधक, विष, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिसुगंध, पित्तपापरा, नागरमोथा, जमीकन्द, नागकेशर, और चीता सबको समान लेवे और सबसे दुगना गुड मिलाकर बेरकी बराबर गोलियां बनावे, नित्य प्रातःकाल भक्षण करे और पथ्यसे रहे तो यह नीलकंठरस श्वासादि सर्व रोगोंका नाश करे ।

अपरनीलकंठोरसः

सूतकंगंधकंलोहंविषंचित्रकपत्रकम् ।
विडंगंरेणुकंमुस्तमेलाकेशरग्रन्थिकं ॥
फलत्रयंत्रिकटुकंशुल्वभस्मतथैवच ।
एतानिसमभागानिद्विगुणंगुडमुच्यते ॥
संमर्द्यवटिकाकृत्वाभक्षयेच्चणकोन्मिता ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ॥
प्रसूतौग्रहणीमान्द्येशूलेपाण्ड्वामयेतथा ।
मूत्रकृच्छ्रेमूढगर्भेवातरोगेचदारुणे ॥
नीलकंठोरसोनामब्रह्मणानिर्मितःपुरा ।

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, चीतेकी छाल, पत्रज, वायविडंग, रेणुका, नागरमोथा, इलायची, केशर, पीपलामूल, त्रिफला, त्रिकुटा और तांबेकी भस्म सबको समान भाग लेवे और सबसे दूना गुड मिलाकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे, इनके सेवनसे खांसी, श्वास, क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, प्रसूतरोग, संग्रहणी, मंदाग्नि, पाण्डुरोग, मूढगर्भ और घोर वादीके रोगोंको यह नीलकंठरस दूर करे।

श्वासगजकेशरीरसः

तारताम्ररसपिष्टिकांशिलांगंधतालसमभागिकंरसः । आढरूपसुरसार्द्रसंभवैर्मर्दयेत्प्रकुरुगोलकंततः ॥ मृत्स्नयाचपरिवेष्टचगोलकंयामयुग्ममथभूधरेपचेत् । गोलकेनकुरुतत्समंततश्चाढरूपकटुकैश्चभावयेत् ॥ श्वासकासकरिकेशरीरसोवल्लमस्यपरिसेवयेद्बुधः ।

अर्थ—रूपेकी भस्म, तांबेकी भस्म, पारा, मनसिल, गंधक, और हरिताल प्रत्येक समान भाग लेवे, इन सबको अडूसा, तुलसी और अदरखके रससे खरलकर गोला बनाकर उसपर कपरमिट्टी कर दो प्रहर भूधरयंत्रमें पचावे स्वांगशीतल होनेपर निकालकर फिर अडूसा और त्रिकुटाके काढेसे खरल करे तो श्वास और खांसीको दूर करे. इसकी ३ रत्तीकी मात्रा है।

घोडाचोलीरसः

पारदंटंकणंगन्धंविषंव्योषंफलत्रयम् ।
तालकश्चसमंसर्वंजैपालंचापितत्समम् ॥
मर्दयेद्भृंगनीरेणभावनास्तुत्रिसप्तधा ।
गुंजामात्रांवटींकृत्वाछायायांशोषयेद्बुधः ॥

शृंगवेररसैःसार्द्धंवटीमेकांप्रयोजयेत् ।
उष्णेनवारिणाशूलेकासेश्वासेचयक्ष्मणि ॥
घोडाचोलीतिविख्यातानाम्नानागार्जुनोदिता । मधुनावलितंपलितंजयेत् । सौभाजनरसगोघृताभ्यांजठरशूलंजयेत् । दध्नाअजीर्णंशतपत्ररसेनशीतज्वरं ॥ पुनर्नवारसेनपाण्डुंतिलपर्णीरसेन । नेत्रांजनेननेत्ररोगान् तंदुलोदकेनविषं । जीरशर्करयाज्वरंबहुदिनसेवनेनसुभगोभवेत् । वचादेवदारुकुष्ठैरस्थिगतवातं । मस्तककेशान्दूरीकृत्य छित्वानिम्बूनीरेणमर्दयेत् । दंतनिर्मुक्तत्वं भवतिगोमूत्रेणपूगलग्नव्यथांहरेत् । आर्द्रकरसेनविरेचनंभवेत् । जातीफलेनार्शसांनाशः । पुत्रजीवरसेनवंध्यायाःपुत्रोभवेत् । शिरीषरसेनसर्पविषनाशः । वचायवानीरसेनकटिवातं । आढरूपकरसेनश्वासकासौ ॥

अर्थ—पारा, सुहागा, गंधक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला और हरिताल सबको बराबर ले और सबकी बराबर शुद्ध जमालगोटा लेवे, सबको भांगरेके रसकी २१ भावना देवे, फिर एक एक रत्तीकी गोलियां बनाकर छायामें सुखा लेवे, और १ गोली अदरखके रसके साथ देवे तो श्वास, खांसी, शूल और खई इनमें गरमजलके साथ देवे यह घोडाचोली विख्यात नागार्जुनकी कहीहै. सहतके साथ खानेसे वली पलितको दूर करे. सहजनेकी जडके रसमें गौका घृत मिलाकर लेवे तो उदररोगोंको दूर करे दहीसे अजीर्ण, कमलके रससे शीतज्वर सांठके रससे पाण्डुरोग. तिलवनके रसके साथ नेत्रोंमें आंजनेसे नेत्ररोग चांवलके धोवनके साथ विष, जीरे और मिश्रीके साथ ज्वर. बहुत दिन सेवनसे सुभग होवे. गोमूत्रके साथ लेनेसे सुपारी लगनेकी व्यथाको दूर करे. वच देवदारु और कूटके साथ हड्डीकी बादीको दूर करे. सन्निपातवाले रोगीका मस्तक मूंडकर छुरेसे छीलके इस गोलीको नींबूके रसमें घिस उस छिले हुए स्थानपर मले तो भिचीहुई दांती खुलजावे. अदरखके रसके साथ देनेसे दस्त करावे. जायफलके साथ बवासीरको दूर करे. जीवापोताके रससे वंध्याके पुत्र होवे. सिरसके रससे वंध्याके पुत्र हो. वच और अजवायनके रससे कमरकी बादी दूरहो. अडूसेके रससे श्वास और खांसी दूर हो ।

अमृतार्णवोरसः

पारदंगंधकंशुद्धंमृतलोहंचटंकणम् ।
रास्नाविडंगत्रिफलादेवदारुकटुत्रयम् ॥
अमृतापद्मकंक्षौद्रंविषतुल्यंसुचूर्णितं ।
द्विगुंजंश्वासकासार्त्तःसेवयेदमृतार्णवं ॥

अर्थ—पारा, गंधक, लोहभस्म, सुहागा, रास्ना, वायविडंग, त्रिफला, देवदारु, त्रिकुटा, गिलोय, पद्माख, सहत और विष सबको समान लेकर पीसे यह २ रत्ती श्वास और खांसीको दूर करे ।

ताम्रेश्वरोरसः

पलानिपंचशुद्धानिताम्रपत्राणिबुद्धिमान् ।
गृहीत्वायोजयेत्तत्रतदर्द्धंशुद्धसूतकं ॥
मर्दयेन्निंबुकद्रावैस्त्रिदिनान्युभयंभिषक् ।
ताम्रपत्रैःसमंशुद्धंगंधकंतत्रनिक्षिपेत् ॥
मर्दयित्वाघटीयुग्मंकाचकुप्यांचनिक्षिपेत् ।
यामानष्टौपचेद्धीमान्वालुकायंत्रसंस्थितं ॥
एषताम्रेश्वरोहन्यात्श्वासादीनखिलान्गदान् । धातुपुष्टिकरश्चैवसूतिकारोगनाशनः ॥

अर्थ—कंटकवेधी तांबेकी शुद्धपत्र ९ पल, और शुद्धपारा २॥ पल, दोनोंको ३ दिन नींबूके रससे खरल करे फिर तांबेके पत्रोंके समान शुद्ध गंधक डालकर दो घडी खरल करे, फिर तांबेके पत्रोंके समान शुद्ध गंधक डालकर दो घडी खरल करे, फिर काचकी शीशीमें भरकर ८ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे यह तामेश्वररस श्वासादि सर्व रोगोंको दूर करे. धातुको पुष्टि करे, और प्रसूतके रोगोंका नाश करे ।

निधायहृदिधूर्जटिंनिखिलविघ्नशात्यैमुदा ।
विधायवरहिंगुलैःसविधिभस्मकान्तायसः ॥
विनिर्मितमनेनचेत्भजतिखण्डखाद्यंसदा ।
कदापिनचवाध्यतेश्वसनरोगयोगैरिह ॥

अर्थ—सम्पूर्ण विघ्नोंके शान्तीके अर्थ हृदयमें श्रीसदाशिवका ध्यानकर विधिपूर्वक हिंगुलसे कान्तलोहकी भस्म करे, इस भस्मके साथ खंडखाद्य लोहका सेवन करे तो उस मनुष्यको श्वास रोग कभी बाधा न करे ।

कालाग्निरुद्रोरसः

वज्रसूतार्कस्वर्णारस्तारंतीक्ष्णमयंक्रमात् ।
भागवृद्धयामृतंसर्वंसहसाचित्रकद्रवैः ॥
मर्दयेन्मातुलुंगाम्लैर्जंबीरस्यदिनत्रयम् ।
शिग्रुमूलजलैःकाथोकण्याकाथदिनत्रयम् ॥
आर्द्रकस्यदिनैःसप्तदिवसेभावितंततः ।
शोषितंसूक्ष्मचूर्णन्तुपादांशंटंकणंतथा ॥
टंकणंसवत्सनागंचूर्णंकृत्वाविमिश्रितं ।
त्रिकटुत्रिफलावन्हिचातुर्जातकसैंधवं ॥
सौवर्चलंधूमसारंचूर्णमेतत्समंसमं ।
कृत्वाशमसुभागैकंतत्सर्वंचार्द्रकद्रवैः ॥
शिग्रुजैर्मातुलुंगोत्यैर्लोलयित्वावटीकृतम् ।
रसःकालाग्निरुद्रोयंत्रिगुंजंखादयेत्सदा ॥
अग्निदीप्तिकरंहिक्काश्वासंसर्वकुलांतकः ।
स्थूलानांकुरुतेकार्श्यंकृशानांस्थौल्यकारकम् ।
अनुपानविशेषैस्तुततोरोगेषुयोजयेत् ।
साध्यासांध्यंजयत्याशुमण्डलान्नात्रसंशयः ॥

अर्थ—हीरा, पारा, तांबा, सुवर्ण, लोहा, चांदी, और खेडीलोह इन सबकी भस्म क्रमसे बढती लेवे. और विष एक भाग लेकर सबको चीते, बिजौरे और जंभीरीके रससे तीन २ दिन खरल करे, तथा सहजने, पीपल, त्रिकुटा, त्रिफला इनका तीन २ दिन पुट देवे. फिर ३ दिन अदरखके रसकी भावना देकर सुखालेवे फिर चतुर्थांश सुहागा मिलाय इतनाही वच्छनाग विष मिलाकर चूर्ण करे. फिर त्रिफला, त्रिकुटा, चीता, चातुर्जात, सेंधानिमक, संचरनिमक और कूकुआ समान लेकर अदरख सहँजने और बिजौरेके रससे खरल कर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इस कालाग्निरुद्र रसकी एक गोली नित्य सेवन करे तो अग्निदीपन करे, खांसी और श्वासको दूर करे, स्थूलको कृश और कृशको स्थूल करे. तथा अनुपान विशेष करके समस्त रोगोंमें योजना करे. १ मंडल सेवन करनेसे साध्यासाध्य रोग दूर हो ।

मुष्टियोग.

भृष्टटंकणरक्तिकापञ्चमतप्तसीहुण्डाग्रदशदे ।
कुट्टिततज्जातरसमासकपंचएकीकृत्यातुर ॥
पुरुषंपापयेत्श्वासोपशमोभवतिशिवोनभूतोऽयम् ॥

अर्थ—भुना सुहागा ९ रत्ती, गरम सेंहुडके डंडेमें मिलाय पत्थरपर पीसके रस निचोड ले. और श्वासरोगीको पिलावे तो श्वास दूर हो यह शिवका अनुभूत है ।

भैरवरसः

पिप्पलीमरिचंचैवटंकणंदरदंतथा ।
शुद्धंमनःशिलागन्धंहरितालंतथैवच ॥
विशुद्धंपारदंप्रोक्तंतथाशुद्धंविषंस्मृतं ।
रौप्यभस्मचाभ्रकंचपलमानंपृथक्पृथक् ॥
चूर्णसूक्ष्मविधायाथभावयेत्तुरसैःपुनः ।
कदलीमूलकंचित्रंधत्तूरस्यचमूलकम् ॥
पृथक्पृथक्पलमितंकुट्टयित्वाजलेक्षिपेत् ।
षोडशांशेक्वाथयित्वावस्त्रपूतंसमाचरेत् ॥
खल्वेक्षित्वाभावयेत्तुकुर्यान्मुद्गनिभांवटीं ।
भैरवाख्यावटीख्यातारसशंकरसंज्ञिता ॥
कासश्वासौनिहन्त्येषासर्वव्याधिविनाशिनी

अर्थ–पीपल, काली मिरच, सुहागा, शिंगरफ, मनसिल, गंधक, हरिताल और शुद्धपारा, विष और रूपरस, और अभ्रक प्रत्येक चार२ तोला ले सबका वारीक चूर्ण कर जलमें डाल देवे. और षोडशावशेष काढा बनाय कपडेमें छान खरलमें डाल घोटे जब गाढा होजाय तब मूंगके समान गोलिया बनावे. यह भैरवाख्यवटी श्वास, खांसी और सर्व रोगोंको दूर करे।

कालेश्वरोरसः

वंगलोहंतथाताम्रमभ्रकंपारदंमतम् ।
गंधकंताप्यदरदौदिव्यंजातीफलंतथा ॥
सूक्ष्मैलादालचिनीचकेशरंविषकंस्मृतं ।
धूर्त्तबीजंचजैपालंटंकणंचसमंसमं ॥
सर्वेभ्यस्त्रिगुणंस्यान्मरिचंत्वाचूर्णीकृतंभिषक् ।
वृषापामार्गनिर्गुंडीभंगाभृंगरसेनच ॥
मर्दयेद्दिनमेकैकंरसःकालेश्वरोभवेत् ।
एकगुंजंद्विगुंजांवाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥
कासंश्वासंनिहन्त्याशुकफरोगंचदारुणं ।

अर्थ–वंग, सार, तामेश्वर, अभ्रक, चन्द्रोदय, गंधक, सुवर्णमाक्षिक भस्म, हींगलू, लौंग, जायफल, छोटी इलायची, दालचीनी, केशर, विष, धतूरेके बीज, जमालगोटा और सुहागा सबको समान भाग लेवे. और सबसे तिगनी काली मिरच मिलावे. सबका चूर्णकर अडूसा, औंगा, निर्गुंडी, भांग और भांगरा प्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरल करे. तो यह कालेश्वररस बने. एक वा दो रत्ती बलाबल देखकर देनेसे खांसी, श्वास और दारुण कफको रोगोंको दूर करे।

शुल्बतालेश्वरः

शुद्धंताम्रंदशपलंचतुर्थांशंतुपारदम् ।
जंबीरनीरैःसंमर्द्ययावदेकत्रमेलितं ॥
शुद्धतालपलंपंचकिंचिद्देयन्तुगंधकम् ।
मृद्भाण्डेसंनिरुध्यैवअग्निंसंज्वालयेदधः ॥
दशयामन्तुमन्दाग्निंपश्चादुत्तारयेत्तुतं ।
स्वांगशीतलसंग्राह्यंदेयंगुंजाद्वयंसृतं ॥
तांबूलीदलसंयुक्तंकासेश्वासेज्वरेपुच ।
पीनसेस्वरभेदेचमण्डलेरक्तसंभवे ॥
शूलंचाष्टविधंहंतिकफक्षयसमुद्भवम् ।
कृमिपाण्ड्वामयंप्लीहंज्वरेषुविषमेषुच ॥
एकाहिकंद्व्याहिकञ्चत्र्याहिकंचचतुर्थकम् ।
शुल्वतालेश्वरोह्येषरसःपरमदुर्लभः ॥

अर्थ–शुद्ध कंटकभेदी तांबेके पत्र आधसेरमें आधपाव शुद्ध पारा डाल दोनोंको मिलाकर जंबीरीके रसमें जबतक घोटे जबतक कि पारा पत्रोंपर न चढजाय, फिर पावभर गंधक डालके मिट्टीके वरतनमें बंद कर चूल्हेपर चढाय दश प्रहरकी मंदाग्नि देवे. फिर उतार ले स्वांगशीतल होनेपर दो रत्ती पानमें रखकर खाय तो श्वास, खांसी, ज्वर, पीनस, स्वरभंग, रुधिरके चकते, आठ प्रकारका शूल, खई, कफ, कृमिरोग, पांडुरोग, प्लीहा,

ज्वर, विषमज्वर और इकतरा आदि ज्वरोंको यह शुल्वतालेश्वर रस दूर करे।

महोदधिरसः

सूतकंगंधकंलोहंविषंचापिवराटकम्।
ताम्रकंवंगभस्माथअभ्रकश्चसमांशकम्॥
त्रिकटुपत्रकंमुस्तंविडंगंनागकेशरम्।
रेणुकांपिप्लकंचैवपिप्पलीमूलमेवच॥
एषाश्चद्विगुणंभागंमर्दयित्वाप्रयत्नतः।
भावनातत्रदातव्याजलपिप्पलिकारसैः॥
मात्राचणकमानश्चवटिकेयंप्रकीर्त्तिता।
श्वासंहन्तितथाकाशंअर्शांसिचभगंदरम्॥
हृच्छूलंपार्श्वशूलञ्चकर्णरोगंकपालिकम्।
हरेत्संग्रहणीरोगानष्टौचजठराणिच॥
प्रमेहान्विंशतिश्चैवअस्मरींचचतुर्विधं।
नचान्नपानेपरिहारमस्मिनशीतवाताध्वनिमैथुनेच॥ यथेष्टचेष्टाभिरतप्रयोगैःनरोभवेत् कांचनराशिगौरः।

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, कौडीकी भस्म, वंगभस्म और अभ्रक सबको समान भाग ले और त्रिकुटा, पत्रज, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, कबीला, और पीपलामूल प्रत्येक पूर्व औषधियोंसे दूनी लेवे, और पीसकर जलपिप्पलीके रसकी भावना देवे और चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. यह गोली श्वास, खांसी, ववासीर, भगंदर, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल, कर्णरोग, कपालिका, संग्रहणी, आठ प्रकारका जठर, बीस प्रकारका प्रमेह, चार प्रकारकी पथरी, इन सबको दूर करे. इसपर यथेष्ट आहार विहार करना चाहिये. यह देहको सुवर्ण राशिके तुल्य करे।

आनंदभैरवोरसः

पारदंगंधकश्चैवभृंगराजेनमर्दयेत्।
हिंगुलंचविषंव्योषंटंकणंमगधासमं॥
मातुलुंगरसैर्मर्द्येरसमानंदभैरवम्।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेग्रहणीसन्निपातके॥
अपस्मारेमहाघोरेशस्तमानंदभैरवम्।

अर्थ–पारा और गंधक दोनोंको भांगरेके रससे खरल करे, फिर इसमें हींगलू, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, और सुहागा मिलाकर बिजौरेके रससे घोटकर गोलियां बनावे. यह आनंदभैरवरस, खांसी, श्वास, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, सन्निपात, और मृगी इन सब रोगोंको दूर करे।

रसेन्द्रवटी.

कर्षशुद्धंरसेन्द्रस्यगंधकस्याभ्रकस्यच।
ताम्रस्यहरितालस्यलोहस्यचविषस्यच॥
मरिचस्यचसर्वेषांश्लक्ष्णंचूर्णपृथक्पृथक्।
सालौल्वखण्डकर्णश्चनिर्गुंडीकाकमाचिका॥
केशराजस्यभृंगस्यस्वरसेनविभावितः।
कलायपरिमाणश्चवटिकांकारयेद्भिषक्॥
कृत्वादौशिवमभ्यर्च्यद्विजातीन्परितोष्यच।
जीर्णांतेभक्षयेत्पश्चात्क्षीरमांसरसासनः॥
अपिवैद्यशतैस्त्यक्तमम्लपित्तंनियच्छति।
कासंपञ्चविधंचैवश्वासंहन्तिसुदुर्जयं॥

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रक, ताम्र, हरिताल, लोह, विष, और काली मिरच, प्रत्येक एक तोला लेवे. और सबको पीस साल औल्वना कंद, रतालू, निर्गुंडी, मकोय, भांगरा और केसुरिया इनके स्वरसकी भावना देकर मटरके बराबर गोलियां बनावे, फिर शिव और ब्राह्मणका पूजन कर भोजन जीर्ण होनेके पश्चात् देवे। ऊपरसे दूध और मांसरस सेवन करे तो सौ वैद्योंकरके त्यागा हुआ

अम्लपित्त, और पांच प्रकारकी खांसी तथा दुर्जय श्वासको दूर करे ।

पारदादिरसः

सूतःषोडशतत्समोदिनकरस्तस्यार्द्धभागोव लिः । सिंधुस्तस्यसमःसुसूक्ष्ममुदितःषट्पिप्पलीचूर्णितः ॥ जंबीरस्वरसेनमर्दितमिदं तप्तंसुपक्वंभवेत् । कासश्वाससशूलगुल्मजठरं पांण्डुंप्लिहंनाशयेत् ॥

अर्थ–पारा और शुद्ध तांबेके कंटक वेधी पत्र प्रत्येक १६ तोले, गंधक, सैंधानिमक प्रत्येक ८ तोले, और पीपल ६ तोले सबका चूर्णकर जंभीरीके रससे खरल कर चूल्हेपर चढाय १२ प्रहरकी अग्नि देवे तो यह खांसी, श्वास, शूल, गोला, उदर पाण्डुरोगोंका और तिल्लीको नाशक पारदादि रस बने ।

साधारणवटक

साधारणन्तुवटकंवक्ष्यामिशृणुतत्वतः । पारदंगंधकंचैवपलमेकंपृथक्पृथक् ॥
पलत्रयंत्रिकटुकंवंगमेकपलंक्षिपेत् । सर्वमेकत्रसंयोज्यदिनानित्रीणिमर्दयेत् ॥
अक्षप्रमाणवटकंछायाशुष्कंतुकारयेत् । नित्यमेकन्तुवटकंदिनानित्रिंशदेवच ॥
श्वासकासज्वरहरमग्निमांद्यारुचिप्रणुत् ।

अर्थ–पारा और गंधक प्रत्येक एक पल, त्रिकुटा ३ पल, वंगभस्म १ पल, सबको पीस ३ दिन अदरखके रससे खरलकर बहेडेकी बराबर गोलियां बनाय नित्य एक गोली सेवन करे तो ३० दिनमें श्वास, खांसी, ज्वर, मंदाग्नि और अरुचि इनको दूर करे ।

ससोत्तरावटी.

रसभागोभवेदेकोगंधकोद्विगुणोमतः । त्रिभागापिप्पलीग्राह्याचतुर्भागाहरीतकी ॥
विभीतःपंचभागस्तुवासाषड्गुणितंभवेत् । भार्ङ्गीसप्तगुणाग्राह्यासर्वंचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥
बब्बूलकाथमादायंभावयेदेकविंशतिः । विभीतकप्रमाणेनमधुनागुलिकांकिरेत् ॥
एकैकाभक्षयेत्प्रातःश्वासकासनिवृत्तये । निर्गुंडीघृतसंयुक्तंभक्तमादौप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, पीपल ३ तोले, हरड ४ तोले, बहेडा, ५ तोले, अडूसा ६ तोले, भारंगी ७ तोले, सबका चूर्णकर बबूलके काढेकी २१ भावना दे. बहेडेकी बराबर गोलियां बनावे. और एक गोली प्रातःकाल सहतके साथ खाय तो श्वास, और खांसी दूर होवे. प्रथम निर्गुंडीका रस, घी और भात भोजन करलेना चाहिये ।

जयागुटिका.

सूतकंगंधकंलोहंविषंवत्सकमेवच । विडंगंकेशरंमुस्तमेलाग्रंथिककेशरम् ॥
त्रिकटुत्रिफलाचित्रंशुल्वंजैपालबीजकम् । एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
तिंतिडीबीजमानंचप्रातःकालेतुखादयेत् । श्वासंकासंक्षयंगुल्मंप्रमेहंविषमज्वरं ॥
अजीर्णंग्रहणीरोगंशूलंपांड्वामयंतथा । अपानेहृदयेशूलेवातरोगेगलग्रहे ॥
अरुचौचातिसारेचसूतिकाविषनाशिनी । जयाख्यानिर्मिताह्येषातत्क्षणात्रिदिवेश्वरी

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, बच्छनागविष, वायविडंग, केशर, नागरमोथा, इलायची, पीपलामूल, नागकेशर, त्रिकुटा, त्रिफला, चीतेकी छाल, ताम्रभस्म, और जमालगोटा सबको समान भाग लेवे और सबसे दूना गुड मिलाकर इमलीके चीयेके समान गोलियां बनावे, और प्रातःकाल खाय तो श्वास, खांसी,

क्षय, गोला, प्रमेह, विषमज्वर, अजीर्ण, संग्रहणी, शूल, पाण्डुरोग, गुदा और हृदयके शूल, वातरोग, गलेका रुकना, अरुचि, अतिसार, प्रसूतका रोग और विषको दूर करे।

लोबानसत्वविधि.

विषंपलमितंप्रोक्तंलोवानंकुडवंमतम्। सितंसोमलकंचैवपलमानमुदीरितम् ॥ वितस्तिमात्रंसेहुंडकाष्टंचैवदिनिक्षिपेत्। सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यहंडिकायांनिधापयेत् ॥ डमरूयंत्रविधिनासत्वंनिष्कासयेद्बुधः। तर्जनीमितिमावर्तिदीपेधृत्वातुज्वालयेत् ॥ यंत्रस्याधोवेद्यामंदीपाग्नितत्रदापयेत्। ऊर्ध्वलग्नंशुद्धसत्वंस्थापयेचकरंडके ॥ गुंजाद्वयंत्रयंवापिचतुर्गुंजमथापिवा। श्वासकासनिवृत्यर्थंवलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥ राजयोग्यमिदंसत्वंविख्यातंरससागरे।

अर्थ–सिंगियाविष ४ तोले, लोबान १६ तोले, सफेद सोमल विष ४ तोले, और थूहरका टुकडा एक बालिश्त डाल सबको कूटपीस हांडीमें भर डमरूयंत्रद्वारा सत्व निकाले परंतु उस हांडीके तले तर्जनी उंगलीके बराबर मोटी दीवेकी लौकी ४ प्रहर अग्नि देवे. ऊपरके ढक्कनमें जो सत्व लगे उसे खुरच कर एक शीशीमें भरकर रख छोडे इसको दो तीन अथवा चार रत्ती सेवन करनेसे खांसी और श्वासको दूर करे, इसको बलाबल देखकर देना चाहिये, यह राजाओंके योग्य है।

महाश्वासारिलोहम्.

कर्षद्वयंलोहचूर्णंकर्षार्द्धमभ्रमेवच। सिताकर्षद्वयश्चैवमधुकर्षद्वयंतथा ॥ त्रिफलामधुकंद्राक्षाकणाकोलास्थिवंशजा। तालीसपत्रंवैडंगमेलापुष्करकेशरम् ॥ एतानिश्लक्ष्णचूर्णानिकर्षार्द्धंचसमांशकम्। लोहेचलोहदण्डेनमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥ ततोमात्रांलिहेत्क्षौद्रैर्बुध्वादोषबलाबलम्। इदंश्वासारिलोहश्चमहाश्वासंनिनाशयेत् ॥ कासंपञ्चविधंचैवरक्तपित्तंसुदारुणम्। एकजंद्वंद्वजंचैवतथैवसान्निपातजम् ॥ निहन्तिनात्रसंदेहोभास्करस्तिमिरंयथा।

अर्थ–लोहभस्म दो तोले, अभ्रक ६ मासे, मिश्री दो तोले, सहत दो कर्ष, त्रिफला, मुलहटी, दाख, पीपल, बेरकी छाल, वंशलोचन, तालीसपत्र, वायविडंग, इलायची, पुहकरमूल, और केशर सबको समान भाग ले सबका बारीक चूर्णकर लोहेके पात्रमें लोहेके मूसलेसे दो प्रहर घोटे फिर बलाबल देखकर इसकी मात्रा देवे तो यह श्वासारिलोह महाश्वासको दूर करे. और पांच प्रकारकी खांसी, रक्तपित्त, एक दोषज, द्विदोषज, और सन्निपात रोगोंको दूर करे।

डामराभ्रम्.

मेचकंपलमितंमृतमभ्रंब्रह्मयष्टिकनकामृतवासा। कासमर्दवननिंबकचव्यंग्रंथिकंदहनमूलसमेतम् ॥ एकशश्चपलिकैरिहसत्वैर्मर्दितंसुवलितंगुरुहिक्कां। कासश्वासमुदरंचिरमेहान्पाण्डुगुल्मयकृतंगलरोगम् ॥ शोथमोहनयनास्यजरोगंयक्ष्मपीनसगरंवलसादं॥ गण्डमंडलवमिंभ्रमदाहंप्लीहशूलविषमज्वरकृच्छ्रं। हन्तिवातकफपित्तमशेषंडामरेश्वरमिदंमहदभ्रम् ॥

अर्थ–काली अभ्रक भस्म ४ तोले, ब्रह्मदंडी, धतूरा, विष, अडूसा, कसौंदी, बकायन, चव्य, पीपलामूल, और चीतेकी जडकी छाल, प्रत्येक एक पल ले सबको खरल कर सेवन

करे तो हिचकी, खांसी, श्वास, उदर, पुराना प्रमेह, पाण्डु, गुल्म, यकृत्, गलरोग, सूजन, मोह, नेत्र और मुखके रोग, यक्ष्मा, पीनस, विषविकार, बलक्षय, गंडमाला, वमन, भ्रम, दाह, प्लीह, शूल, विषमज्वर, मूत्रकृच्छ्र, वात कफ और पित्तके विकारोको यह डामरेश्वराभ्र दूर करे ।

सूर्य्यावर्त्तोरसः

सूतकंगंधकंमर्धयामैकंकन्यकाद्रवैः ।
द्वयोस्तुल्यंताम्रपात्रंपूर्वकल्केनलेपयेत् ॥
दिनैकंहंडिकायंत्रेपचेच्छीतंसमुद्धरेत् ।
सूर्य्यावर्त्तरसोनामद्विगुंजःश्वासकासनुत् ॥
इन्द्रवारुणिकामूलंदेवदारुकटुत्रयं ।
शर्करासहितंखादेदूर्द्ध्वश्वासनिवृत्तये ॥

अर्थ–पारा, गंधक बराबर ले १ प्रहर घीगुवारके रससे खरल करे, फिर दोनोंकी बराबर तांबेके कंटकवेधी पत्र ले उनपर पूर्वोक्त पारे गंधकके कल्कका लेपकर हांडीमें भर एक दिन पचावे यह सूर्य्यावर्त्तरस नाम दो रत्ती सेवन करनेसे श्वास, खांसीको दूर करे. इसके ऊपर इन्द्रायनकी जड; देवदारु, त्रिकुटा और मिश्री मिलाकर इस चूर्णको खावे ।

विजयपर्पटी.

सूतकंगंधकंलौहंविषमभ्रकमेवच ।
विडंगंरेणुकंमुस्तमेलाग्रंथिककेशरम् ॥
त्रिकटुत्रिफलाताम्रंशुल्वंजैपालचित्रकम् ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोदीयतेगुडः ॥
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ।
सूतायांग्रहणीदोषेशूलेपाण्डवामयेतथा ॥
हस्तपादादिदाहेपुवटिकेयंप्रशस्यते ।

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, विष, अभ्रक, वायविडंग, रेणुका, नागरमोथा, पीपलामूल, केशर, त्रिकुटा, त्रिफला, तांबेकी भस्म, जमालगोटा, चीतेकी छाल, सबको बराबर गुड मिलाय गोलियां बनावे. यह गोली खांसी, श्वास, क्षय, गोला, विषमज्वर, संग्रहणी, प्रसूतके रोग, शूल, पांडुरोग, हाथपैरोंका दाह, इन सबको दूर करती है ।

घृतेनपाचयेन्मूलंपत्रञ्चवासकस्यच ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायकासेश्वासेक्षयेतथा ॥
पिप्पलीदेवदारूचशुंठीचूर्णसमंतथा ।
ऊर्ध्वश्वासंसदाहन्तिपिबेदुष्णजलेनच ॥

अर्थ–अडूसेकी जड और पत्तोंको घृतमें पचाकर प्रातःकाल खावे तो खांसी, और श्वास, और क्षयरोग दूर होवे. अथवा पीपल, देवदारु और सोंठ इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे उर्ध्वश्वास दूर होवे ।

लौहपर्पटीरसः

भागौरसस्यगंधस्यद्वावेकोलौहभस्मनः ।
एतद्घृष्टंद्रवीभूतंमृद्वग्नौकदलीदले ॥
पातयेद्गोमयगतेतथैवोपरियोजयेत् ।
ततःपिष्टाद्द्रवैरेभिःसप्तधाभावयेत्पृथक् ॥
भार्ङ्गीमुंडीमुनिवराजयानिर्गुंडिकातथा ।
व्योपवासककन्यार्द्रद्रवैरेनंपुटेपचेत् ॥
आगंधंखर्परेताम्रेपर्पटाख्योरसोभवेत् ।
सर्वरोगहरस्तैस्तैरनुपानैर्हिमापकैः ॥
ताम्बुलीपत्रसहितःश्वासकासहरःपरः ।
सकणःसुरसाकाथोनुपानंवासकाज्जलम् ॥
अम्लिकातैलवार्ताकुकूष्माण्डंकदलीफलम् ।
वर्ज्यंमांसरसंसर्वंपथ्यंदद्याद्विचक्षणः ॥
वर्जयेच्चविशेषेणकफकृत्स्त्रीसुखादिकम् ।

अर्थ–पारा और गंधक प्रत्येक दो तोले, लोहभस्म एक तोले, इन सबको अग्निपर पतले करके केलेके पत्तेपर ढाल देवे, ऊपरसे दूस-

रा पत्ता इक गोवरसे दबा देवे फिर इस पर्प-टीको पीस उक्त रसोंकी सात भावना देवे. भारंगी, गोरखमुंडी, अगस्तिया, त्रिफला, अ-रनी, निर्गुंडी, त्रिकुटा, अडूसा, घीगुवार और अदरख फिर तांबेके पात्रमें पुट देकर पचावे जबतक गंधक निश्शेष न होवे पचाता रहे. तो यह लोहपर्पटीरस सिद्ध होवे. इसको अनुपानके योगसे १ मासे सेवन करे तो सर्व रोगोंको हरण करे. और पानमें रखकर खाने-से श्वास और खांसीको दूर करे, तुलसीका काढा पीपल और सहत मिलाकर ऊपरसे पीवे और इसका सेवन करनेवाला तेल, खटाई, बैंगन, पेठा, केला, और मांसरसको त्याग दे और अन्यवस्तु पथ्यमें सेवन करे तथा कफकारी वस्तु न खाय और स्त्रीसंग न करे।

ताम्रपर्पटी.

लोहस्थानेताम्रयोगात्ताम्रपर्पटिकाभवेत् ।

अर्थ–यदि ऊपर कही पर्पटीमें लोहभस्म-की जगह ताम्रभस्म डाले तो यह ताम्रपर्पटी रस बने ।

पिप्पल्याद्यंलौहम्.

पिप्पल्यामलकीद्राक्षाकोलास्थिमधुशर्करा ।
विडंगपुष्करैर्युक्तंलोहंहन्तिसुदारुणम् ॥
छर्दिहिक्कांतथातृष्णांत्रिरात्रेणनसंशयः ।

अर्थ–पीपल, आंवले, दाख, बेरकी छाल, मुलहटी, मिश्री, वायविडंग, और पुहकरमूल इनके साथ लोहभस्म मिलाकर सेवन करनेसे वमन, हिचकी, और प्यासको तीन रात्रिमें दूर करे ।

श्वासकुठार.

टंकणंपारदंगंधंशिलाविषकटुत्रिकम् ।
निष्पिष्यवटिकाकार्यावाणगुंजाप्रमाणतः ॥
उष्णोदकंपिबेच्चानुशुद्राकाथमथापिवा ।
कासंपञ्चविधंहन्तिश्वासंश्लेष्मसमुद्भवम् ॥
शिरोरोगंनिहंत्याशुवृक्षमिंद्राशनिर्यथा ।

अर्थ–सुहागा, पारा, गन्धक, विष, मन-सिल, त्रिकुटा, सबको कूटपीस पांच २ रत्ती-की गोलियां बनावे. और गरम जलके साथ सेवन करे ऊपरसे कटेरीका काढा पीवे तो पांच प्रकारकी खांसी, कफसे उत्पन्न श्वास, और मस्तकरोग इन सबको यह श्वासकुठार रस नाश करे ।

श्वासकासचिन्तामणिः

पारदंमाक्षिकंस्वर्णसमांशंपरिकल्पयेत् ।
पारदार्द्धंमौक्तिकञ्चसूतात्द्विगुणगंधकम् ॥
अभ्रञ्चैवतथायोज्यंव्योम्नोद्विगुणलोहकम् ।
कण्टकारीरसेनैवछागीदुग्धेनचपृथक् ॥
यष्टिमधुरसेनैवपर्णपत्ररसेनच ।
भावयेत्सप्तवारञ्चद्विगुंजवटिकांभवेत् ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तांश्वासकासविमर्दिनीम् ।

अर्थ–पारा, सुवर्ण माक्षिक, और सु-वर्णभस्म, इनको समान भाग लेवे, और पारेसे आधी मोती तथा दुनी गंधक लेवे, और गंधककी बराबर अभ्रक भस्म और अभ्रकसे दूनी लोहभस्म मिलावे सबको कटेरीके रस, बकरीके दूध, मुलहटी और पानके रससे सात २ वार खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इनको पीपल और सहतके साथ सेवन करनेसे श्वास और खांसी दूर होवे ।

श्वासकुठारः

रसंगन्धंविषंटंकंशिलोपणकटुत्रयम् ।
सर्वसमंप्रदातव्योरसःश्वासकुठारकः ॥
वातश्लेष्मसमुद्भूतंश्वासंकासंक्षयंजयेत् ।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, सुहागा, मन-

सिल, कालीमिरच और सोंठ, मिरच, पीपल, सबको समान ले यह कफसे उत्पन्न श्वास, खांसी, और क्षयको दूर करे।

तथा.

रसंगंधंविषश्चैवटंकणंसमनःशिलम्।
एतानिसमभागानिमरिचंतचतुर्गुणम् ॥
त्रिभागंत्र्यूपणंज्ञेयंखल्लेसर्वंविचूर्णयेत्।
रसःश्वासकुठारोयंद्विगुञ्जःश्वासकासजित् ॥
गतासंज्ञायदापुंसांतदानस्यंप्रदापयेत्।
घ्रापयेन्नासिकारन्ध्रेसंज्ञाजननमुत्तमम् ॥
प्रतिश्यायंक्षतक्षीणंएकादशविधंक्षयम्।
हृद्रोगंश्वासशूलञ्चस्वरभेदंसुदारुणम् ॥
सन्निपातंतथाघोरंतंद्रामोहान्वितंजयेत्।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, सुहागा, और मनसिलको समान भाग ले और कालीमिरच चार भाग ले, तथा त्रिकुटा तीन भाग लेकर खरल करे। इस श्वासकुठाररसको दो रत्ती सेवन करनेसे श्वास, और खांसी जाय, और सन्निपातकी बेहोशीमें इसका नस्य देवे तो संज्ञा होआवे। पीनस, क्षतक्षीण, ग्यारह प्रकारकी क्षय, हृद्रोग, श्वास, शूल, घोर स्वरभेद, घोर सन्निपात, तंद्रा और मोहको यह श्वासकुठाररस दूर करे। परंतु जिस समय इसको पीसे तब एक २ काली मिरच डालके पीसे।

अथ स्वरभेदाधिकारः

भैरवोरसः

रसंगन्धंविषंटंकंमरिचंचव्यचित्रकम्।
आर्द्रकस्यरसेनैवसंमर्द्यवटिकांततः ॥
गुञ्जात्रयप्रमाणेनखादेत्तोयानुपानतः।
स्वरभेदंनिहन्त्याशुश्वासंकासंसुदुस्तरम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, विष, सुहागा, काली मिरच, चव्य और चीता सबको बराबर ले अदरखके रससे खरलकर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे। और गरमजलके साथ सेवन करे तो श्वास स्वरभेद और खांसी दूरहो।

चव्याम्लवेतसकुटात्रयतिंतिडीक।
तालीशजीरकतुगादहनैःसमांशैः ॥
चूर्णंगुडप्रमृदितंत्रिसुगंधियुक्तं।
वैस्वर्यपीनसकफारुचिसुप्रशस्तम् ॥
अनेनैवानुपानेनभस्मसूतंप्रयोजयेत्।
योगवाहिरसश्चापियोजयंतिभिषग्वराः ॥
सशर्करंशुंठिचूर्णंक्षौद्रेणसहयोजितम्।
कोकिलस्वरएवस्याद्गुडिकाभुक्तमात्रतः ॥

अर्थ–चव्य, अम्लवेत, त्रिकुटा, तंतडीक, तालीसपत्र, जीरा, वंशलोचन, चीता और त्रिसुगंधि बराबर लेकर सबको कूटपीस बराबरका गुड मिलाय देवे यह स्वरभंग, पीनस, कफरोग और अरुचिमें हितकारी है। इसी अनुपानके साथ यदि पारेकी भस्म देवे तथा इस स्वरभंगरोगमें अन्य योगवाही रसभी वैद्य देते हैं। सोंठके चूर्णमें मिश्री और सहत मिलाके गोलियां बनाकर सेवन करे तो कोकिलाके समान स्वर होवे।

स्वरप्रसादकोरसः

पारदंगंधकंतुल्यंतालकञ्चमनःशिला।
सर्वतुल्यञ्चकंकोलजलैस्तुदिवसत्रयं ॥
ततःपुटेद्गजपुटेशरपुंखाजलैःपुनः।
समर्द्यपाचयेद्भूयस्ततःसिद्धोभवेद्रसः ॥
स्वरप्रसादकोनामरसोयंदृष्टविक्रमः।
पर्णखण्डेनदातव्योगुञ्जाद्वयमतोबुधैः ॥
गुडार्द्रकेनमद्येनपिप्पलीमधुनाथवा।

अर्थ–पारा, गंधक, हरिताल, मनसिल,

सबको बराबर ले सबकी बराबर कंकोल मिलाय जलसे खरलकर गजपुटमें फूंक देवे तो यह रस सिद्धि होवे यह स्वरप्रसादकरस अनुभव किया हुआ है। पानके टुकडेमें दो रत्ती रखकर या गुड अदरख, मद्य, पीपल और महत इनमेंसे किसीके साथ देवे तो स्वरभंग दूर होवे।

गोरखवटी.

रसभस्मार्कलोहस्यभावितस्यत्रिसप्तधा।
क्षुद्राफलरसैर्मुद्गतुल्याकार्याचटीशुभा॥
मुखस्थाहरतेशीघ्रंस्वरभंगमसंशयं।
गोरक्षनाथेंगदितास्वरभंगिकृपालुभिः॥

अर्थ–चन्द्रोदय, तांबेकी भस्म, और लोहभस्म सबको समान भाग ले कटेरीके फलोंके रसकी भावना देकर मूंगके समान गोलियां बनावे. इन गोलियोंको मुहमें रखनेसे तत्काल स्वरभंग दूर होवे. यह गोरखनाथकी कही गोरखवटी वैद्यरहस्य ग्रंथमें लिखी है।

अथ रोचकाधिकारः

अग्निकुमाररसः

यवक्षारंतथास्वर्जीटंकणंलवणानिच।
त्रिकटुत्रिफलालोहंचूर्णद्विविधभागकं॥
कर्पूरश्चलवंगंचचव्यकंचित्रकंतथा।
दाडिमाम्लंविशेषेणशृंगवेरश्चरेणुकां॥
एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत्।
यवानीनिम्बुनीरेणदिवसत्रयभावितं॥
तथामृतरसेनैवमर्दितंचाम्लवेतसैः।
चणकाकारमात्राणिदीयतेरसमुत्तमः॥
अरोचकंवन्हिविशेषमांद्यंगुल्ममप्रमेहंविनिहन्त्यवश्यं। चुक्रेणयुक्तंखलुपंक्तिशूलंसूर्योदयाद्वृद्धमतीवजातं॥श्वासकासकफातंकाच्चाशनंप्राणवर्द्धनं।दद्यात्त्रिकटुकश्चैवकफारोचकनाशनम्॥रसोह्यग्निकुमारोयंसर्वरोगप्रणाशनम्।

अर्थ–जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, पांचों-नोन, त्रिकुटा, त्रिफला, लोहचूर्ण, कान्तलोह, कपूर, लौंग, चव्य, चीता, अनारदानां, अदरख और रेणुकाको समान भाग ले और बारीक चूर्णकर अजवायन और नींबूके रसमें तीन दिन खरलकर विषके काढेसे तीन दिन खरल करे फिर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे, यह गोली अरुचि, मंदाग्नि, गुल्म, और प्रमेहको दूर करे. चूकाके रसके साथ देनेसे परिणाम शूलको, श्वास, खांसी और कफके रोगोंको नाश करे. प्राण (दिल) को बढावे, त्रिकुटाके साथ देनेसे कफकी अरुचिका नाश करे. यह अग्निकुमाररस सर्व रोगनाशक है।

सूतादिवटी.

सूतंगंधाभ्रमगधाम्लिकामरिचसैंधवैः।
गुटिकारोचकहरीजिव्हावदनशुद्धिकृत्॥

अर्थ–पारा, गंधक, अभ्रक, पीपल, इमली, कालीमिरच, और सैंधानिमक सबको कूट पीस गोली बनावे यह गुटिका रुचिकर्त्ता और जीभ तथा मुखकी शुद्धि करे।

सुधानिधिरसः

रसगंधौसमौशुद्धौदन्तीकाथेनभावयेत्।
जम्बीरस्यरसेनैवआर्द्रकस्यरसेनच॥
मातुलुंगस्यतोयेनतस्ययज्जरसेनच।
पश्चाद्विशोष्यान्सर्वास्तान्टङ्कणश्चावचारयेत्॥ देवपुष्पंवाणमितंरसपादंमृतामृतम्।
माषमात्रंचतत्सर्वनागरेणगुडेनवा॥
सर्वारोचकशूलार्त्तिसामवातंसुदारुणम्।

विषूचीश्चाग्निमान्द्यश्चभक्तद्वेषश्चदारुणम् ॥ रसोयंवारयत्याशुकेसरीकरिणंयथा ।

अर्थ—पारा, गंधक, दोनों समान भाग ले, दंतीके काढे, जंबीरी, अदरख, बिजोरा इनके रस तथा बिजौरेके छिलकेके रसकी भावना देकर सुखालेवे और सबकी बराबर सुहागा, पंचमांश, लौंग, और पारेकी चौथाई शुद्ध विष मिलाकर एक २ मासेकी गोलियां बनावे. और सोंठ, और गुडके साथ लेवे तो सर्व प्रकारकी अरुचि, शूल, आमवात, हैजा, मंदाग्नि, भक्तद्वेष, इन सबको यह सुधानिधि-रस दूर करता है. ग्रन्थान्तरमें इसीको रस-केशरी कहा है ।

सुलोचनाभ्रम्.

पलंसुजीर्णगगनन्तुवज्रकंतेजोवतीकोलमुशीरदाडिमम् । धान्यम्लएलारुचकंपृथग्दशपलोन्मितंमर्दितमेवसेवितम् ॥ अरोचकंवातकफत्रिदोषजंपित्तोद्भवंगंधसमुद्भवंनृणाम् । कासंस्वराघातमुरुग्रहंरुजंश्वासंचलासंयकृतंभगन्दरम् ॥ प्लीहाग्निमान्द्यंश्वयथुंसमीरणंमेहंभृशंकुष्ठमसृग्दरंचाशूलाम्लपित्तक्षयरोगमुद्धतंसरक्तपित्तंवमिदाहयश्मरीम् ॥ निहन्तिचार्शांसिसुलोचनाभ्रकंबलप्रदंवृष्यतमंरसायनम् ।

अर्थ—वज्राभ्रककी शुद्धभस्म ४ तोले, तेजबलकल, बबूलकी छाल, खस, अनारदाना, आंवला, अम्लवेत, इलायची, संचानिमक, प्रत्येक एक २ पल लेवे । और सबको खरलकर सेवन करे तो वात कफ, पित्त और त्रिदोषजन्य अरुचि, गंधजन्य अरुचि, खांसी, स्वरभंग, ऊरुओंका जिकडना, श्वास, कफ, यकृतरोग, भगंदर, प्लीहा, मंदाग्नि, सूजन, बादी, प्रमेह, कोढ, रक्तप्रदर, कृमिरोग, शूल, अम्लपित्त, क्षयरोग, रक्तपित्त, छर्दिरोग, दाह, पथरी, और बवासीर इन सब रोगोंको यह सुलोचनाभ्र दूर करती है. बलकर्त्ती और वृष्य है. रसायन तथा सर्व धातुओंको पुष्ट करे ।

ससूतमरुचिघ्नंस्याच्चिन्तिडीकगुडोपणम् । मृद्वीकाजीरकंकृष्णामातुलुंगाम्लवेतसम् ॥

अर्थ—तिंतिडीक, त्रिकुटा, गुड, तथा दाख, जीरा, पीपल, बिजौरेकी केशर और अम्लवेत इनमें चंद्रोदय मिलाके सेवन करे तो अरुचि दूर हो ।

छर्दिरोगाधिकारः

मधुकंत्रिफलाचूर्णमयोरजसमंलिहन् । मधुसर्पियुतंतस्यक्गव्यंक्षीरंपिबेदनु ॥ छर्दिसमितिरांशूलमम्लपित्तंज्वरंक्लमं । अनाहंमूत्रकृच्छ्रंचशोथंचैवनिहन्तिहि ॥

अर्थ—महुआ और त्रिफलाको समान ले बराबरका सार मिलाय सहत और घृतके साथ खावे ऊपरसे गौका दूध पीवे तो छर्दि, तिमिरशूल, अम्लपित्त, ज्वर, क्लम, अफरा, मूत्रकृच्छ्र और सूजनको दूर करे ।

पारदादिचूर्णम्.

रसबलिघनसारकोलमज्जामरकुशमांबुधिसप्रियंगुलाजाः । मलयजमगधत्वगेलपत्रंदलितमिदंपरिभाव्यचन्दनाद्भिः ॥ मधुमरिचयुतंरजोस्यमापंजयतिवलिप्रबलाविलिप्तमर्त्यः

अर्थ—पारा, गंधक, कपूर, बेरकी मिंगी, लौंग, समुद्रफल, प्रियंगु, खील, चन्दन, पीपल, दालचीनी, इलायची और पत्रज इन सबको पीस चंदनके जलकी भावना देकर सहत और काली मिरचके चूर्णके साथ सेवन करे तो प्रबल छर्दिरोगको दूर करे ।

वमनामृतयोगः

गन्धकःकमलाक्षश्चयष्टीमधुशिलाजतु ।
रुद्राक्षोटंकणश्चैवसारंगस्यचशृंगकम् ॥
चंदनश्चतवक्षीरोगोरोचनमिदंसमं ।
विल्वमूलकपायेणमर्दयेद्याममात्रकं ॥
मात्रांचैवमकुर्वीतवल्लस्यैवप्रमाणतः ।
नानाविधानुपानेनछर्दिंहन्तित्रिदोषजां ॥
वमनामृतयोगोयंकमलाकरभाषितः ।

अर्थ–गंधक, कमलाक्ष, मुलहटी, शिलाजित, रुद्राक्ष, सुहागा, हरिनका सींग, सुहागा, तवाखीर और गोरोचन सबको बराबर ले वेलकी जडके काढेसे एक प्रहर मर्दन कर तीन ३ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह गोली नाना अनुपानोंके साथ त्रिदोषज वमनरोगको दूर करे, यह कमलाकर वैद्यने कहा है।

वान्तिहृद्रसः

अयःशंखवलीसूतखल्वेतुल्येविमर्दयेत् ।
कन्याकनकचांगेरीरसैर्गोलंविधीयतां ॥
सप्तमृत्कर्पटैर्लिप्तात्पुटितोवान्तिहृद्रसः ।
द्विवल्लःकृमिरोगेपिसाजमोदःसवेल्लकः ॥
वांतिहारेणमुनिनाप्रोक्तोयंमधुनायुतः ।
पिंगलाक्षारपानीयंपाययेद्वांतिहृद्भिपक् ॥

अर्थ–लोहभस्म, शंखके भीतरकी वली, और पारा तीनोंको बराबर लेकर घीगुवार, धतूरा, चूका, इनके रससे गोला बनाय सातें कपरमिट्टीकर संपुटमें रखकर फूंक देवे तो यह वांतिहृत् रस बने. ६ रत्ती अजमोद और वायविडंगके साथ देवे तो कृमिरोग दूर होवे. और सहत और शीशमक्षारके पानीके साथ देवे तो वांतीरोग दूर होवे।

अजाजीधान्यपथ्याभिःसक्षुद्राभिःकटुत्रिकैः
एभिःसार्द्धंभस्मसूतःसेव्योवान्तिप्रशान्तये ॥
हिक्काधिकारोक्तपिप्पल्यादिर्लोहमत्रविधेयम्

अर्थ–जीरा, धनियां, हरड, कटेरी और त्रिकुटाके साथ चन्द्रोदय सेवन करे तो वमनरोग दूर हो. इस छर्दि यानी रद्दके रोगमें हिचकीके अधिकारमें जो पिप्पल्यादिलोह कहा है देना चाहिये।

अथ तृष्णाधिकारः

महोदधिरसः

ताम्रंचत्रिकयावंगंसूतंतालंसतुत्थकम् ।
वटांकुररसैर्भाव्यंतृष्णाहृद्वल्लमात्रतः ॥
सक्षौद्रमाम्रजम्बूत्थंपिबेत्काथंपलोन्मितं ।
सकृष्णमधुनाकुर्य्यात्गण्डूषंशीतलेस्थितः ॥

अर्थ–तांबेकी भस्म, वंगभस्म, पारा, हरिताल, लीलाथोता इनको वडके अंकुरोंके रसकी भावना देकर गोलियां बनाकर सेवन करे, तो अत्यन्त तृषाको वेग दूर हो. आम, जामनके पत्तोंको काढेमें सहत मिलाकर ४ तोले पीवे तो प्यास दूर हो अथवा शीतल जलमें पीपलका चूर्ण और सहत मिलाकर शीतल स्थानमें बैठकर कुल्ले करे तो प्यास दूर हो।

कुमुदेश्वरोरसः

मृतताम्रस्यभागौद्वौभागैकंवंगभस्मकं ।
यष्टिमधुरसैर्भाव्यंशुष्कंमापार्द्धकंशुभम् ॥
सेव्यंचैवानुपानेनवक्ष्यमाणेनबुद्धिमान् ।
चन्दनंशारिवामुस्तंक्षुद्रैलानागकेशरम् ॥
सर्वतुल्यातथालाजापचेत्षोडशकैर्जलैः ।
अर्द्धशेषंहरेत्काथंसिताक्षौद्रयुतन्तुतम् ॥
छर्दितृष्णांनिहन्त्याशुरसोयंकुमुदेश्वरः ।

अर्थ–तांबेकी भस्म दो तोले, वंगभस्म १ तोले, दोनोंको मूलहटीके काढेकी भावना देकर चार २ मासेकी गोलियां बनावे, फिर चन्दन,

सरवन, नागरमोथा, छोटी इलायची, नागकेशर और सबकी बराबर धानकी खील ले १६ गुने पानीमें औटावे, जब आधा रहे तब इसमें मिश्री और सहत मिलाके ऊपर कही हुई गोली खानेके पश्चात् पीवे तो वमन होना और प्यासरोगको यह कुमुदेश्वररस दूर करता है।

पारदादिचूर्णम्.

रसगंधककर्पूरैःसैलोशीररसरोचकैः ।
सशितैःक्रमवृद्धैश्चसूक्ष्मचूर्णमहर्मुखे ॥
त्रिगुंजामामितंखादन्पिबेत्पर्युषितांबुच ।
भृशंतृषांनिहन्त्येवमाश्विनेयप्रकाशितं ॥

अर्थ–पारा, गंधक, भीमसेनीकपूर, शिलाजीत, खश, काली मिरच, और मिश्रीको क्रमसे बढती भाग लेवे. सबको पीस ३ रत्ती बासे पानीके साथ खाय तो प्यांसको दूर करे. यह अश्विनीकुमार संहितामें लिखा है।

क्षीरसागरोरसः

मृतरसगगनार्कमुण्डतीक्ष्णंसताप्यंसवलिसममिदंस्याद्यष्टिकावारिपिष्टं। तदनुसलिलनातैर्वासकैर्गोस्तनीभिर्मृदितमथविदारीवारिणा घस्रमेकं ॥ घृतमधुसहितेयंनिष्कमात्रावटीति क्षपयतिगुरुपित्तंपित्तरोगंक्षयंच । भ्रममदमुखशोषान्दाहतृष्णासमुत्थान्मलयजमिहपेयंचानुपानंसचन्द्रं ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक, तांबा, मुंडलोह, खेरीलोह, सोनामक्खी, और गंधक प्रत्येक समान भाग लेवे. और सबको मुलहटीके रसमें एक दिन खरल कर अडूसा, दाख, और विदारीकंदके रससे एक दिन खरल करे, फिर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इसके खानेसे घोर पित्तकेरोग, क्षय, भ्रम, मस्तपन, मुखशोष, दाह, तृष्णा, ये सब रोग दूर हो. इसके ऊपर चंदन और कपूर मिलाकर जल पीना चाहिये यह रसशंकर ग्रन्थसे लिखा है।

मूर्च्छाधिकारः

ताम्रचूर्णसमोशीरकेशरंशीतवारिणा ।
पीतंमूर्च्छांद्रुतंहन्याद्दृक्षमिंद्राशनिर्यथा ॥

अर्थ–तांबेकी भस्ममें खस और केशर मिलाय शीतल जलके साथ पीवे तो मूर्च्छा शीघ्र दूर हो।

ताम्रभस्मयोग.

ताम्रंदुरालभाकाथैःपीतन्तुघृतसंयुतं ।
निवारयेद्भ्रमंशीघ्रंमूर्च्छांचापिसुदुस्तराम् ॥

अर्थ–तांबेकी भस्मको धमासेके काढेमें मिलाय और घृत मिलाकर पीवे तो घोर मूर्च्छा दूर हो।

अभ्रकभस्मयोगः

कणामधुयुतंव्योममूर्च्छायामनुशीलयेत् ।

अर्थ–पीपल और सहतके साथ अभ्रकभस्मका सेवन मूर्च्छाको दूर करे ॥

सुधानिधिरसः

कणामधुयुतंसूतंमूर्च्छायामनुशीलयेत् ।
शीतसेकावगाहादिसर्वंवाशीतलंभवेत् ॥
सुधानिधिरसोनाममदमूर्च्छाविनाशनः ।

अर्थ–पीपल और सहतके साथ पारा मिलाकर खाय तो मूर्च्छा दूर हो. इसके ऊपर शीतल जलका तरडा देना चाहिये. शीतल जलसे स्नानादि करके सेवन करनेसे यह सुधानिधिरस मद और मूर्च्छाको दूर करे।

अष्टाङ्गलवणम्.

सचव्यहिंगुरुचकंधान्याकंविश्वदीपकम् ।
चूर्णससूतंमद्येनपीतंपानात्ययंजयेत् ॥
सौवर्चलमजाज्यश्चवृक्षाम्लंसाम्लवेतसं ।
त्वगेलामरिचार्द्धांशंशर्करामधुयोजितं ॥
हितंलवणमष्टांगमग्निसंदीपनंपरम् ।

मदात्ययेकफप्रायेदद्यात्स्रोतविशोधनम् ॥

अर्थ–चव्य, हींग, निमक, धनियां, सोंठ, अजमायन और पारा सबका चूर्णकर मद्यके साथ पीवे तो पानात्ययका विकार दूर हो. संचर निमक, जीरा, तिंतिडीक, अमलवेत, दालचीनी, इलायची और कालीमिरचको बराबर लेवे और सबसे आधी मिश्री और सहत मिलाके देवे तो यह अष्टांगलवण अग्नि दीप्ति करे, तथा कफप्राय मदात्ययरोगमें छिद्रोंके शोधन करनेको देवे।

रसामृतम्.

मातुलुंगद्रवैःसूतंभावितंवासरावधि।
गन्धकश्चपलान्यष्टौनागंतत्पादसंयुतं॥
एकीकृत्याथसंभाव्यहस्तिशुंडीरसैस्तथा।
धूमसारैस्त्र्यहंभाव्यंरामठेनत्र्यहंत्र्यहं॥
शुष्कंकाचघटेन्यस्ययामानष्टौप्रदीपयेत्।
सिकताख्येनयंत्रेणवैद्योबुद्धिविशारदः॥
रक्तिकाद्वितयंसेव्यंमदात्ययनिवृत्तये।
मधुनामलकैर्नित्यंराजार्हन्तुरसामृतं॥

अर्थ–प्रथम पारेको विष उपविषमें सात २ दिन खरल करके उडाय लेवे, इस प्रकार शुद्ध किया हुआ पारा ८ टके भर लेवे, और शुद्ध गंधक ८ टकेभर प्रथम दो टके शुद्ध शीशेको पिघलाकर पारेमें मिलादेवे. फिर पारे और गंधककी कजली करे और बिजौरेके रसमें १ दिन खरलकर हथसुंडीके काढे, धुंएनसैं हींगके जलसे तीन २ दिन खरल करे जब सूखजाय तब शीशीमें भर ३ कपरमिट्टी करे, फिर हांडीके पैंदेमें पैसेकी बराबर छेदकर उसपर ठीकरी रख ३ नौकेबराबर दोनों तरफ छेद करे, और छेदके चौगिर्द गीली मांटीकी मेंड लगाकर उसपर शीशी रख बालूसे हांडीको भरदेवे. पीछे दो प्रहर दो लकडियोंको मंद आंच देवे. और ३ प्रहर मध्यम तथा ९ प्रहर शीशीका मुख बंदकर तेज आंच देवे. ३ प्रहर अग्निपर रखा रहने देवे. स्वांगशीतल होनेपर उतारके शीशीमें भरकर रखछोडे इसमेंसे दो रत्ती रस दो मासे आमलेके चूर्णमें मिलाकर सहतके साथ चाटे तो मद्यके सर्व विकार दूर होवे, भूख बढे और अन्न पचे।

कज्जली.

धात्रीस्वरसनिपीतारसगंधककज्जलीसिता सहिता। हरतिमदात्ययरोगानाशुगरुत्मा निवोरगान्सहसा॥

अर्थ–पारे और गंधककी कजलीको आमलेके स्वरसमें मिश्री मिलाके पीवे तो मदात्यय रोगोंको शीघ्र दूर करे।

सूतभस्म.

पूरकंहिंगुरुचकंसचव्यंविश्वदीप्यकं।
चूर्णससूतंमद्येनपीतंपानात्ययंजयेत्॥

अर्थ–बिजौरेका रस, हींग, निमक, चव्य, सोंठ, अजमायन और पारा मिलाके मद्य पीवे, तो पानात्यय रोग दूर हो।

राजावर्त्तादियोगः

राजावर्त्तोरसःशुल्वंमधुकंघृतपाचितं।
मध्वाज्यशर्करायुक्तंहन्तिसर्वान्मदात्ययान्॥

अर्थ–राजवर्त्तकी भस्म, ताम्रभस्म, और महुएको घीमें पचाके सहत मक्खन और घीके साथ खावे तो सर्व प्रकारका मदात्यय रोग दूर हो।

अथ दाहचिकित्साः

दाहान्तकोरसः

सूतात्पंचार्कतश्चैकंकृत्वापिण्डंसुशोभनम्।

जंवीरस्वरसैर्मर्द्यसूततुल्यंचगंधकम् ॥
नागवल्लीदलैःपिष्टाताम्रपत्रीमलेपयेत् ।
मपूटेद्भूधरेयन्त्रेयावद्भस्मत्वमाप्नुयात् ॥
द्विगुञ्जमार्द्रकद्रावैरुयूपणेनचयोजयेत् ।
निहन्तिदाहसन्तापंमूर्च्छांपित्तसमुद्भवां ॥

अर्थ–९ तोले पारा, और १ तोले तांबेकी भस्म, दोनोंको जंवीरीके रसमें खरलकर पारेके समान गंधक मिलाय पानके रसमें पीस तांबेके पात्रमें लेपकर फिर भूधरयंत्रमें जबतक पचावे तबतक भस्म न होवे इसकी दो रत्तीकी मात्रा अदरख और त्रिकुटाके रससे देवे तो दाह और पित्तजन्य सन्निपातको दूर करे ।

रसादिवटी.

रसवलिघनसारचन्दनानांसनलदसेव्यपयोदजीवनानां । अपहरतिगुटीमुखस्थितेयंसकलंसमुत्थितदाहमाशुहन्यात् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, कपूर, चंदन, छड, नेत्रवाला, और नागरमोथा इनकी जलसे गोलियां बनाय मुखमें रखे तो सम्पूर्ण दाहोंको शान्ति करे ।

योगान्तरम्

दाहेशस्तौह्यावपिपूर्वोक्तौमालनीवसंताख्यौ
लीढौमधुनाशाकंगुंजाद्वित्रिप्रमाणेन ॥
दुग्धोदनंभिपग्भिःसिताविमिश्रंसदायोज्यं।
आभ्यांसमोनकश्चिद्योगोलोकेस्तिदाहरोगघ्नःचन्द्रकलारसोप्यतीवगुणदः ॥

अर्थ–दाहरोगमें पूर्वोक्त लघु और बृहन्मालिनी बसंतरस हितकारी हैं, इसे दो अथवा ३ रत्ती लेकर सहतमें मिलाकर खाय ऊपर दूध भात और मिश्रीका पथ्य देवे. इन दोनों योगोंकी बराबर दाहनाशक और दवा नहीं है. इस दाहरोगमें अम्लपित्त रोगमें कहा हुआ चंद्रकलारसभी अत्यन्त गुणदायक है ।

उन्मादाधिकारः

उन्मादगजांकुशोरसः

त्रिदिनंकनकद्रावैर्महाराष्ट्रीद्रवैःपुनः ।
विषमुष्टिजलैःसूतंसमुत्थाप्याथचक्रिकाम् ॥
कृत्वातस्यांसगन्धान्तांयुक्त्याबंधनमाचरेत् ।
तत्समंकनकंबीजमभ्रकंगंधकंविषम् ॥
मर्दयेत्त्रिदिनंसर्वंवल्लमात्रंप्रयोजयेत् ।
दोषोन्मादद्रुतंहन्तिभूतोन्मादंविशेषतः ॥

अर्थ–पारेको धतूरेके रस, ब्रह्मदंडीके रस और कुचलेके काढेमें तीन ३ दिन खरल करे, फिर इसमें गंधक मिलाकर युक्तिपूर्वक अग्निमें बंधन करे फिर पारेकी बराबर धतूरेके बीज, अभ्रक, गंधक, और विष मिलाके ३ दिन खरल करे. और दो रत्ती देवे तो वात पित्त और कफजन्य उन्माद तथा भूतजन्य उन्मादको यह शीघ्र दूर करे ।

"समुत्थाप्याथ चक्रिकां" इस जगह "समुत्थाप्यार्कचक्रिकां" ऐसा पाठ कहते हैं तहां अर्क कहिये ताम्रभस्मभी मिलावे ।

भूतांकुशोरसः

सूतायस्ताम्रमभ्रंचमुक्ताचापिसमंसमम् ।
सूतपादोत्तमंवज्रंशिलागंधकतालकम् ॥
तुत्थंरसांजनंशुद्धमहिफेणंरसांजनम् ।
पंचानांलवणानांचप्रतिभागंरसोन्मितं ॥
भृंगराजचित्रवज्रीदुग्धेनापिविमर्दयेत् ।
दिनान्तेपिण्डकांकृत्वारुद्धागजपुटेपचेत् ॥
भूतांकुशोरसोनामनित्यंगुंजाद्वयंलिहेत् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिभूतोन्मादनिवारणम् ॥
पिप्पल्योक्तंपिवेचानुदशमूलकषायकम् ।
स्वेदयेत्कटुतुम्ब्याचतीक्ष्णंरुक्षंचवर्जयेत् ॥
माहिषंचघृतंक्षीरंगुर्वन्नमपिभक्षयेत् ।

अभ्यङ्गकटुतैलेनहितोभूतांकुशेरसे ।

अर्थ-पारा, लोहचूर्ण, ताम्र, अभ्रक और मोतीको समान भाग ले और पारेके चतुर्थांश हीरा, गंधक, मनसिल, हरिताल, लीलाथोथा, रसोत, अफीम, शिलाजात; सुरमा और पांचोंनोन प्रत्येक पारेके तुल्य ले सबको भांगरे, चीते, थूहरके दूध, इनमें पृथक २ दिनमें खरलकर रात्रिमें गोला बनाय गजपुटमें रखकर फूंक देवे इसमेंसे २ रत्ती अदरखके रसके साथ खाय तो भूतोन्मादको दूर करे. इसके ऊपर दशमूलके काढेमें पीपलका" चूर्ण मिलाकर पीवे. तथा कडवी तूंबी करके स्वेदन करे और तीक्ष्ण और रूखा खानेसे परहेज करे, तथा भैंसका घी, दूध और गरिष्ट पदार्थ भक्षण करे, तथा इस भूतांकुश रसपर कडवे तेलकी मालिश कराना चाहिये ।

उन्मादभञ्जिनी.

शुद्धमनःशिलाचूर्णसैंधवंकटुरोहिणी ।
वचाशिरीषबीजञ्चहिंगुंचश्वेतसर्षपम् ॥
करञ्जबीजंत्रिकटुमलंशरावतस्यच ।
एतानिसमभागानिगोमूत्रैर्वटिकांकुरु ॥
गिरिमल्लीबीजसमांछायाशुष्काश्चकारयेत् ।
प्रातःसन्ध्यानिशाकालेचक्षुषोरञ्जनहितम् ॥
मधुरादिरसेचाज्यरात्र्यावपिजलेनच ।
वटिकैकासमाख्यातानाम्नाचोन्मादभञ्जिनी ॥ चातुर्थकमपस्मारमुन्मादञ्चविनाशिनी ॥

अर्थ-शुद्ध मनसिलका चूर्ण, सैंधानिमक, कुटकी, वच, सिरसके बीज, हींग, सफेद सरसों, कंजाके बीज, सोंठ, मिरच, पीपल, और कबूतरकी बीट, सबको समान भाग ले. और गोमूत्रसे खरल कर इन्द्रजौकी बराबर गोलियां बनावे और छायामें सुखाकर प्रातःकाल सायंकाल और रात्रिमें अंजन करे. मिष्टरसादि, घृत अथवा जलसे रात्रिमें एक गोली लगावे तो यह उन्मादभंजिनी गुटिका चौथैयाज्वर, मृगी, और उन्मादको दूर करे ।

त्रिकत्रयादिलौहम्.

त्रिकत्रयसमायुक्तंजीवनीययुतंत्वयः ।
हन्त्यपस्मारमुन्मादंवातव्याधिंसुदुस्तरम् ॥

अर्थ-त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिसुगंध, और जीवनीयगण इन सबको समान ले सबकी बराबर लोहभस्म मिलाय सेवन करे तो मृगी उन्माद और घोर वातव्याधिको दूर करे ।

उन्मादभञ्जनोरसः

त्रिकटुत्रिफलाचैवगजपिप्पलिकातथा ।
विडंगश्चदेवदारुकिरातंकटुकीतथा ॥
कंटकारीचयष्टीन्द्रयवचित्रकमेवच ।
बलाचपिप्पलीमूलंमूलञ्चवीरणस्यच ॥
शोभाञ्जनस्यबीजानित्रिवृताचेन्द्रवारुणी ।
वंगरूप्यमभ्रकंचप्रवालंसमभागिकम् ॥
सर्वचूर्णसमंलौहंसलिलेनविमर्दयेत् ।
उन्मादमपिभूतोत्थमुन्मादंवातजंतथा ॥
अपस्मारंतथाकार्श्यंरक्तपित्तंसुदारुणम् ।
नाशयेदविकल्पेनरसश्चोन्मादभञ्जनः ॥

अर्थ-त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपल, वायविडंग, देवदारु, चिरायता, कुटकी, कटेरी, मुलहटी, चीतेकी छाल, खरेटी, पीपलामूल, वीरणतृणकी जड, सहजनेके बीज, निसोथ, इन्द्रायन, वंगभस्म, रूपरस, अभ्रक, मूंगाकी भस्म, इन सबको समान भाग लेवे और सबकी बराबर लोहेकी भस्म लेवे. फिर सबको जलसे खरलकर गोलियां बनावे. इनके सेवन करनेसे भूतोन्माद, वातजन्य उन्माद; मृगी, कृशता, रक्तपित्त, इन सब रोगोंको यह उन्मादभञ्जन

रस दूर करे।

चतुर्भुजोरसः

मृतसूतस्यभागौद्वौभागैकंहेमभस्मकम्।
शिलाकस्तूरिकातालंप्रत्येकंहेमतुल्यकम् ॥
सर्वंखल्वतलेक्षिप्त्वाकन्ययामर्दयेद्दिनम्।
एरण्डपत्रैरावेष्ट्यधान्यगर्भेदिनत्रयम् ॥
संस्थाप्यचतदुद्धृत्यसर्वरोगेषुयोजयेत्।
एतद्रसायनवरंत्रिफलामधुमर्दितम् ॥
तद्यथाग्निबलंखादेद्वलीपलितनाशनम्।
अपस्मारेज्वरेकासेशोषेमन्दानलेक्षये ॥
हस्तकम्पेशिरःकम्पेगात्रकंपेविशेषतः।
वातपित्तसमुत्थांश्चकफजान्नाशयेद्ध्रुवम् ॥
सर्वौषधिमयोगैर्येव्याधयोनप्रसाधिताः।
कर्म्मभिःपंचभिश्चैवमंत्रौषधिप्रयोगतः ॥
सर्वांस्तान्नाशयत्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा।
चतुर्भुजरसोनामप्रहेशेनप्रकाशितः ॥

अर्थ—चन्द्रोदय १ भाग, सुवर्ण २ भाग, मनसिल, कस्तूरी और हरिताल प्रत्येक एक भाग, सबको खरलमें डाल घीगुवारके रसमें एक दिन खरल करे, फिर गोला बनाय अरंड-के पत्तोंसे लपेट धानकी राशिमें ३ दिन तक गाढ देवे. चौथे दिन निकाल लेवे, और सर्व रोगोंमें देवे यह श्रेष्ठ रसायन है इसमें त्रिफला और सहत मिलाके यथाबलानुसार सेवन करे तो वृद्धावस्थाको दूर करे. मृगी, ज्वर, खांसी, शोष, मन्दाग्नि, क्षय, हाथोंका कांपना, देह कांपना, तथा वात पित्त और कफके रोग, अवश्य दूर करे. संपूर्ण औषधोंके देनेसे जो रोग दूर न होवे वो, यथा वमन विरेचनादि पंचकर्मसे एवं महौषधादिकसे जो रोग दूर न होवे वो सब इस चतुर्भुजरसके सेवन करनेसे नष्ट होवे, जैसे इन्द्रके वज्रसे वृक्ष नष्ट होते हैं।

उन्मादपर्पटीरसः

कृष्णधत्तूरजैर्बीजैःपञ्चभिःपर्पटीरसः।
संप्रयोज्यःप्रशान्त्यर्थमुन्मादंभूतसम्भवम् ॥

अर्थ—पर्पटीरसमें धतूरेके पांच बीजोंका चूर्ण मिलाके खावे तो भूतोन्माद दूर होवे।

योगांतरम्.

उन्मादेपर्पटीदद्यात्साजावीपयसान्वितां।
अपस्मारेपितत्प्रोक्तमेतयोराज्यकेनवा ॥

अर्थ—भेडके दूधमें पर्पटी रस देवे तो उन्माद दूर होवे, इसी प्रकार राईके चूर्णके साथ देनेसे मृगी दूर हो।

उन्मादध्वंसीरसः

तालकंशुल्वकंतुल्यंगन्धकेनप्रमारयेत्।
तन्मृतञ्चपुटेत्पश्चाद्दत्वागंधंसमंपुनः ॥
गुंजाद्वयंप्रदातव्यमुन्मादेचवचायुतं।
अपस्मारेचसततमुन्मादध्वंसनंरसं ॥

अर्थ—हरिताल और तांबा बराबर ले और दोनोंको बराबर गंधक ले तांबेकी भस्म करे फिर इसमें बराबरकी गंधक मिलाके दो रत्ती बचके साथ देवे तो उन्माद दूर होवे, तथा अपस्मार यानी मृगी दूर होवे।

उन्मादगजकेसरीरसः

सूतंगंधंशिलातुल्यंस्वर्णबीजंविचूर्णयेत्।
भावयेदुग्रगंधायाःक्वाथेनमुनिशःपृथक् ॥
ब्राह्मीरसेनसप्तैवभावयित्वाविचूर्णयेत्।
रसःसंजायतेनूनमुन्मादगजकेसरी ॥
अस्यमाषःससर्पिष्कोलीढोहन्तिहठाद्ध्रुवं।
उन्मादाख्यमपस्मारभूतोन्मादमपिज्वरं ॥

अर्थ—पारा, गंधक, मनसिल, तीनोंको समान ले और बराबरके धतूरेके बीज मिलाय सबको कूटपीस बचके रसकी ७ भावना और

ब्राह्मीके रसकी ७ भावना देवे तो यह उन्मादगजकेशरी रस बने. इसको १ मासे मक्खनके साथ सेवन करे तो बलात्कारसे उन्मादरोग, अपस्मार, भूतोन्माद और ज्वरको दूर करे।

पारदोमरितःसम्यक्तत्तद्रोगहरौषधैः।
संयुक्तःसर्वरोगघ्नोनरकुंजरवाजिनाम् ॥

अर्थ–विधिपूर्वक मरेहुए पारेको जिस २ रोगको जो २ औषधि हरण करे उसके साथ देनेसे मनुष्य, हाथी और घोडे आदि सबके रोग दूर करे।

अभ्रार्कभूत्याख्यरसस्यवल्लंधत्तूरबीजेनसमं प्रदद्यात्। मरीचचूर्णेनघृतेनवापिपथ्यंचगुर्वन्नमिहप्रशस्तम् ॥

अर्थ–अभ्रक और ताम्र दोनोंकी भस्म ३ रत्ती धतूरेके बीजके साथ अथवा काली मिरच और घीके साथ देवे तो उन्मादरोग दूर हो इसपर भारी अन्न देवे।

अपस्माराधिकारः

सर्वेश्वरोरसः

रसंनारंगमूलंचदंतीपाठापृथक्पृथक्।
पलमेकंफेनफलमर्कमूलंतथैवच ॥
पलंतुहारिणंशृंगंत्रिफलात्रिपलंमतं।
एतेषांकाथसंयुक्तंदिनानित्रीणिमर्दयेत् ॥
अम्लवेतससंयुक्तमर्कक्षारसमन्वितं।
पंचपंचदिनेतद्वद्दमनारससंयुतं ॥
त्रिःसप्तदिवसंतद्वन्मर्दयेत्सिद्धमौषधं।
पिष्टंचित्रकानिष्क्काथेवल्लत्रयनिषेवितं ॥
उन्मादापस्मृतीहन्यादेषसर्वेश्वरोरसः।

अर्थ–पारा, नारंगीकी जडकी छाल, दंती, और पाढ प्रत्येक एक तोले लेवे तथा मेनफल और आकके फल ४ तोले, हरनका सींग ४ तोले, त्रिफला १२ तोले, इनके रसमें पारे आदिको खरल करे. पीछे अमलवेत और आकका क्षार मिलाके पांच २ दिन खरल करे पश्चात् दवन पापराके रसमें २१ दिन खरल करे, फिर चीतेके रसमें गोलियां बांधके रख छोडे और ६ रत्ती सेवन करे तो उन्माद और मृगीको यह सर्वेश्वररस दूर करे।

भूतभैरवः

मृतसूतार्कलोहानांशिलागन्धकतालकम्।
रसांजनंचतुल्यांशंनरमूत्रेणमर्दयेत् ॥
तद्गोलंद्विगुणंगन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत्।
पंचगुंजामितंखादेदपस्मारहरंपरं ॥
हिंगुसौवर्चलंव्योषंनरमूत्रेणसर्पिषा।
कर्षमात्रंपिबेचानुरसोयंभूतभैरवः ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, ताम्र, लोह, मनसिल और हरिताल इनकी भस्म गंधक और सुहागा ये बराबर ले मनुष्यके मूत्रमें खरलकर गोला बनावे फिर एक कडाहीमें गोलेसे दूनी गंधक डाल उसमे गोलेको पचालेवे. इसमेंसे ५ रत्ती सेवन करे तो अपस्मार दूर हो इसके ऊपर हींग, संचरनोन और त्रिकुटाको मनुष्यके मूत्रमे खरलकर घीके साथ एक तोले पीवे इसको भूतभैरवरस कहते हैं।

सूतभस्मप्रयोगः

शंखपुष्पीवचाब्रह्मीकुष्ठमेलारसैःसह।
सूतभस्मप्रयोगोयंरक्तिकाद्वयमानतः ॥
सर्वापस्मारनाशायमहादेवेनभाषितः।

अर्थ–शंखाहुली, वच, ब्राह्मी, कूट और छोटी इलायची इनके चूर्णमें २ रत्ती पारेकी भस्म मिलाकर सेवन करे तो सर्व प्रकारके

अपस्मार (मृगी) दूर हो यह महादेवने कहा है ।

ब्रह्मवटी.

मृतसूताभ्रकंतीक्ष्णंतारंताप्यंविषंसमम् ।
पद्मकेशरसंयुक्तंदिनैकंमर्दयेद्द्रवैः ॥
स्नुह्यग्निविजयैरण्डवचानिष्पावशूरणैः ।
निर्गुण्ड्याश्चद्रवैर्मर्द्यतद्गोलंपाचयेत्पुनः ॥
कंगुनीसर्षपोत्थेनतैलेनगंधसंयुतम् ।
ततःपक्कासमुद्धृत्यचणमात्रावटीकृता ॥
इदंब्रह्मवटीनामभक्षयेदार्द्रकद्रवैः ।
दशमूलकषायश्चकणायुक्तंपिबेदनु ॥
अपस्मारंजयत्याशुयथासूर्योदयेतमः ॥

अर्थ-चन्द्रोदय, अभ्रक, तीक्ष्णलोह, रूपरस, सोनामक्खी, और विषको समान भाग ले. इसमें कमलकी केशर मिलाके एक दिन खरल करे, तथा थूहर, चीता, अरनी, अंड, वच, सेंगा, जमीकंद, और निर्गुंडी इनके रसमें खरल कर गोला बनाय संपुटमें रखकर फूंक देवे. जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालके गंधक मिलाके कांगनी और सरसोंके तेलकी भावना देवे, फिर इसको अग्नि देके चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. इस ब्रह्मवटीको अदरखके रसके साथ सेवन करे अथवा दशमूलके काढेमें पीपल मिलाके पीवे तो मृगीरोगको तत्काल दूर करे. जिस प्रकार सूर्योदयसे अंधकार दूर होता है ।

वातकुलांतकः

मृगनाभिशिलानागकेशरंकलिवृक्षजम् ।
पारदंगंधकंजातीफलमेलालवंगकम् ॥
प्रत्येकंकार्षिकञ्चैवश्लक्ष्णचूर्णञ्चकारयेत् ।
जलेनमर्दयित्वातुवटींकुर्याद्द्विरत्तिकाम् ॥
यथाव्याध्यनुपानेनयोजयेच्चचिकित्सकः ॥
अपस्मारेमहाघोरेमूर्च्छारोगेचशस्यते ।
वातजान्सर्वरोगांश्चहन्यादचिरसेवनात् ॥
नातःपरतरंश्रेष्ठमपस्मारेपुवर्त्तते ।
ब्रह्मणानिर्मितःपूर्वंनाम्नावातकुलान्तकः ॥

अर्थ-कस्तूरी, मनासिल, नागकेशर, बहेडा, पारा, गंधक, जायफल, इलायची और लौंग प्रत्येक एक तोले लेवे. और सबको जलमें बारीक पीस दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यथा रोगानुसार अनुपानके साथ देवे तो घोर मृगी, मूर्च्छा, वातविकार ये थोडे दिनके सेवनसे दूर होवे. इससे परे अपस्मार रोगपर उत्तम प्रयोग अन्य नहीं. यह ब्रह्माने निर्माण किया है ।

वातव्याधिचिकित्साः

द्विगुणाख्योरसः

गंधकाद्द्विगुणंसूतंशुद्धंमृद्वग्निनाक्षणम् ।
पक्कावतार्य्यसंचूर्ण्यतुल्याभयासमन्वितम् ॥
सप्तगुंजामितंखादेदूर्ध्वंयचादिनेदिने ।
गुंजैकैकक्रमेणैवयावत्स्यादेकविंशतिः ॥
क्षीराज्यशर्कराभिश्चशाल्यन्नंपथ्यमाचरेत् ।
कम्पवातप्रशान्त्यर्थंनिर्वातेनिवसेत्सदा ॥
द्विगुणाख्योरसोनामत्रिपक्षात्कम्पवातजित्

अर्थ-पारा ४ तोले, गंधक दो तोले, दोनोंको थोडी देर अग्निपर रखके पचावे फिर उतार बराबरका हरडका चूर्ण मिलाय ७ रत्ती खाय और प्रतिदिन एक रत्ती बढावे. इस प्रकार २१ रत्ती पर्य्यन्त बढावे. तथा दूध, घी, मिश्री और साठी चांवल पथ्यमें देवे, और पवनरहित स्थानमें रहे तो यह द्विगुणाख्यरस तीन पक्ष ४९ दिनमें कम्पवायुको दूर करे ।

वातगजांकुशः

मृतसूतंमृतंलौहंताप्यंगंधकतालकम् ।
पथ्याशृंगीविषव्योषमग्निमन्थश्चटंकणम् ॥
तुल्यंखल्वेदिनंमर्द्यमुण्डीनिर्गुण्डिकाद्रवैः ।
द्विगुञ्जांवटिकांखादेत्सर्ववातप्रशान्तये ॥
कणाचूर्णयुतश्चैवजिंगीकाथंपिवेदनु ।
साध्यासाध्यंनिहन्त्याशुरसोवातगजांकुशः
क्रोष्टुशीर्षकवातंचाप्यववाहुकसंज्ञकम् ।
मन्यास्तम्भमुरुस्तम्भंहनुस्तम्भंविनाशयेत् ॥
पक्षाघातादिरोगेषुकथितःपरमोत्तमः ।

अर्थ–चन्द्रोदय, सार, सुवर्णमक्खीकी भस्म, गंधक, हरिताल, काकडासिंगी, विष, त्रिकुटा, अरनी और सुहागेको समान ले गोरखमुंडी और निर्गुंडीके रससे एक दिन खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली पीपलके चूर्णके साथ खाय ऊपरसे जिंगिणीका काढा पीवे तो साध्यासाध्य वातरोगोंको यह वातगजांकुश रस शीघ्र दूर करे. क्रोष्टुशीर्षक अपवाहुक, उरुस्तंभ, मन्यस्तंभ, हनुस्तंभ, और पक्षाघातादिक रोगोंको यह परमोत्तम रस है ।

वृहद्वातगजांकुशः

रसोवारिशोषणोत्रयुक्तोन्योयोगवाहिकः ।
सूताभ्रतीक्ष्णकान्तानिताम्रतालकगन्धकम्
स्वर्णशुंठीवलाधान्यंकट्फलंचभयाविषम् ।
पथ्याशृंगीपिप्पलीचमरिचंटंकणंतथा ।
तुल्यंखल्वेदिनंमर्द्यमुण्डीनिर्गुण्डजैर्द्रवैः ॥
द्विगुंजावटिकांखादेत्सर्ववातप्रशान्तये ।
साध्यासाध्यंनिहन्त्याशुवृहद्वातगजांकुशः॥

अर्थ–इस वातव्याधि रोगमें वारिशोषण रस देवे. अथवा जो और योगवाही रस हो वो देने चाहिये. पारा, अभ्रक, सार, कान्त-लोहकी भस्म, ताम्रभस्म, हरिताल, गंधक, सुवर्ण, सोंठ, खरैटी, धनियां, कायफर, हरड, विष, छोटी हरड, काकडासिंगी, पीपल, काली मिरच, और सुहागेको समान भाग ले गोरखमुंडी और निर्गुण्डीके रसमें खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे इसके खानेसे साध्य और असाध्य सर्व प्रकारकी वात दूर हो. इसे बृहद्वातगजांकुश कहते हैं ।

महावातगजांकुशः

मृताभ्रतीक्ष्णताम्रंचसूततालकगन्धकम् ।
भार्ङ्गीशुंठीवलाधान्यंकट्फलश्चाभयाविषम्॥
संपिष्यचपलाद्रावैर्निष्कैकांभक्षयेद्वटीम् ।
वातश्लेष्महरोह्येषरुरुवातगजांकुशः ॥

अर्थ–अभ्रक, तीक्ष्णलोहकी भस्म, ताम्रभस्म, पारा, हरिताल, गंधक, भारंगी, सोंठ, खरैटी, धनियां, कायफर, हरड और विषको पीपलके रसमें पीस ४ मासेकी गोली सेवन करे तो वातकफ तथा उरुवातको दूर करे ।

वातनाशनोरसः

सूतहाटकवज्राणिताम्रलौहंचमाक्षिकम् ।
तालंनीलांजनंतुल्यंसिन्धुफेणंसमांशकम् ॥
पंचानांलवणानांचभागैकंसुविमर्दयेत् ।
वज्रीक्षीरैर्दिनैकन्तुरुद्ध्वान्तंभूधरेपचेत् ॥
माषैकमार्द्रकद्रावैर्लिह्याद्वातविनाशनम् ।
पिप्पलीमूलकक्काथंसकृष्णमनुपाययेत् ॥
सर्वान्वातविकारांश्चनिहन्त्याक्षेपकादिकम् ।

अर्थ–पारा, सुवर्ण, हीरा, ताम्र, लोह, मांक्षिक, हरिताल, नीलासुरमा, नीलाथोथा, समुद्रफेन, इनको समान भाग ले. और एक भाग पांचोंनिमक लेवे. सबको संपुटमें रख भूधरयंत्रमें एक दिन पचावे. इसको एक मासे अदरखके रसके साथ चाटे तो बादी दूर होवे.

इसपर पीपलामूलका काढा पीवे. पीपलका चूर्ण डालके यह सम्पूर्ण आक्षेपकादि वातविकारोंको दूर करे. परन्तु सुवर्ण हीरा आदिकी भस्म डालनी चाहिये ।

वातारिरसः

रसभागोभवेदेकोद्विगुणोगंधकोमतः । त्रिगुणात्रिफलाग्राह्याचतुर्भागन्तुचित्रकम् ॥ गुग्गुलोःपञ्चभागमेरण्डतैलेनमर्दयेत् । गुटिकांकर्षमात्रान्तुभक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥ नागरैरंडमूलानांक्काथंतदनुपाययेत् । अंगमेरण्डतैलेनस्वेदयेत्पृष्ठदेशतः ॥ विरेकेतेनसंजातेस्निग्धमुष्णश्चभोजयेत् । वातारिसंज्ञकोह्येपरसोनिर्वातसेवितः ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, त्रिफला ३ तोले, चित्रक ४ तोले, प्रथम पांच तोले गूगलको अण्डीके तेलमें खरल कर फिर अन्य सब वस्तुओंको मिलाय उसी अंडीके तेलसे खरलकर एक २ तोलेकी गोलियां बनावे, और प्रातःकाल खाकर ऊपरसे सोंठ और अंडकी जडका काढा पीवे तथा रोगीकी पीठमें अंडीके तेलकी मालिश करे. जब दस्त होजावे तब चिकना और गरम पदार्थ भोजन करावे. इस वातारिरसका सेवनकर्त्ता पवनरहित स्थानमें रहे ।

अनिलारिरसः

रसेनगन्धंद्विगुणंविमर्द्यवातारिनिर्गुण्डिरसैर्दिनैकम् । निवेशयेत्ताम्रमयेपुटेतत्सर्वंमुदावेष्ट्यचवालुकाख्ये ॥ यंत्रेपुटेद्गोमयचूर्णवन्ही स्वभावशीतेतुसमुद्धरेत्तत् । निर्गुण्डिकावातहराग्नितोयैःसंचूर्ण्ययत्नेनविभावयेत्तत् ॥ रसोनिलारिःकथितोस्यवल्लमेरण्डतैलेनससैन्धवेन । मरीचचूर्णेनससर्पिषावानिर्गुण्डिचित्रैश्चकटुत्रिकैर्वा ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, दोनोंकी कजलीकर अंड और निर्गुंडीके रससे एक २ दिन खरल करे फिर उसको तांबेके संपुटमें रख कपरमिट्टीकर वालुकायंत्रमें आरने उपलोंकी अग्नि देवे, जब स्वांगशीतल होजावे तब निकालके निर्गुंडी, अंड, चीता, इनके रसोंकी पृथक् पृथक् भावना देवे, तो यह अनिलारीरस दो वा तीन रत्ती अंडीके तेल वा सैंधेनिमकके साथ अथवा काली मिरच और घीके साथ अथवा निर्गुण्डी, चीता और त्रिकुटाके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारकी वात दूर हो ।

वातकण्टकोरसः

वज्रंमृताभ्रहेमार्कतीक्ष्णंमुण्डंक्रमोत्तरम् । मरिचंमर्दयेदम्लवर्गेणदिवसत्रयम् ॥ द्विक्षारंपञ्चलवणंमर्दितंस्यात्समंसमम् । ततोनिर्गुण्डिकाद्रावैर्मर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥ शुष्कमेतद्विचूर्ण्याथविपश्चास्याष्टमांशतः । टंकणंविषतुल्यांसंदत्वाजम्बीरकद्रवैः ॥ भावयेद्दिनमेकन्तुरसोयंवातकंण्टकः । दातव्योवातरोगेषुसन्निपातेविशेषतः ॥ निर्गुण्डीमूलचूर्णन्तुमहिपाक्षंचगुग्गुलुम् । समांशंमर्दयेदाज्येतद्वटीकर्षसन्मिता । अनुयोज्यंघृतैर्नित्यंस्निग्धमुष्णंचभोजयेत् ॥ मण्डलंनाशयेत्सर्ववातरोगविशेषतः । सन्निपातेपिवेच्चानुतालमूलीकषायकम् ॥

अर्थ–हीरा, अभ्रक, सुवर्ण, तांबा, तीक्ष्णलोह, और मुण्डलोह इनकी भस्म, और काली मिरच क्रमसे बढती लेवे और सबको अम्लवर्गमें (जो इस ग्रन्थके मध्यमें लिखा है) तीन दिन खरल करे फिर सुहागा, सज्जीखार,

पांचों निमक, बराबरके लेकर पृथक् २ खरल करे. फिर निर्गुण्डीके रससे तीन दिन खरल करे, जब सूख जावे तब चूर्णकर इसमें आठवा भाग सिंगियाविष मिलावे, और विषके समान सुहागा मिलावे. सबको जंभीरीके रसमें एक दिन खरल करे तो यह वातकण्टक रस बने. इसको वातरोग तथा सन्निपात रोगमें देना चाहिये. निर्गुण्डीकी जडका चूर्ण और भैंसागूगलको समान लेकर घीमें खरलकर एक २ तोलेकी गोलियां बनावे और इस गोलीको रसके ऊपर घीके साथ खिलावे तथा चिकना और गरम भोजन देवे. तो देहके चकत्ते और सम्पूर्ण वातविकारोंको दूर करे. सन्निपातवाला इसको खाकर ऊपरसे मूसलीका काढा पीवे तो सन्निपात दूर हो ।

लघ्वानन्दोरसः

पारदंगंधकंलौहमभ्रकंविषमेवच ।
समांशंमरिचस्याष्टौटंकणन्तुचतुर्गुणम् ॥
भृंगराजरसेनैवदातव्यापंचभावना ।
तथादाडिमतोयेनवटीकुर्य्यात्सममाहितः ॥
निहन्तिवातजान्रोगान्भ्रमदाहपुरःसरान् ।

अर्थ–पारा, गन्धक, लोह, अभ्रक तथा विष ए समान भाग लेके तथा काली मिरच एक औषधसें अठगुनी और सुहागा चौगुना लेके भांगरेके रसकी पांच भावना देवे. फिर अनारके रसकी भावना देकर गोलियां बनावे, यह भ्रम और दाहयुक्त सम्पूर्ण वातरोगोंको दूर करे ।

चिन्तामणिरसः

कर्षंकंरससिन्दूरंतत्सममृतभस्मकम् ।
तदर्द्धंमृतलौहश्चस्वर्णशाणंक्षिपेद्बुधः ॥
कन्यारसेनसंमर्द्यगुञ्जमानांवटींचरेत् ।
अनुपानादिकंदद्याद्बुद्ध्वादोषवलावलम् ॥
हन्तिश्लेष्मान्वितंवातंकेवलंपित्तसंयुतम् ।
हृल्लासमरुचिंदाहंवान्तिभ्रान्तिशिरोग्रहम् ॥
प्रमेहंकर्णनादश्चज्वरगद्गदमूकताम् ।
बाधिर्य्यंगर्भिणीरोगमश्मरीसूतकामयम् ।
प्रदरंसोमरोगञ्चयक्ष्माणंज्वरमेवच ॥
बलवर्णाग्निदःसम्यक्कान्तिपुष्टिप्रसाधकः ।
चिन्तामणिरसश्चायश्चिन्तामणिरिवापरः ॥

अर्थ–रससिन्दूर और अभ्रक एक २ तोले, सार ६ मासे, स्वर्ण भस्म ४ मासे, सबको घीगुवारके रसमें खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इसपर वैद्य अपनी बुद्धिसे बलाबल विचारके अनुपान कल्पना करे तो यह कफयुक्त वादी, केवल वादी, पित्तयुक्त वादी, हृल्लास, अरुचि, दाह, वमन, भ्रान्ति, मस्तक पीडा, प्रमेह, कर्णनाद, ज्वर, गद्गद बोलना, गूंगापन, बहरापन, गर्भिणीके रोग, पथरी, प्रसूतरोग, प्रदर, सोमरोग, खई और ज्वरको दूर करे. बलवर्ण और अग्निको देवे. कान्ति और पुष्टिको करता है. यह चिन्तामणिरस चिन्तामणिके समान है ।

चतुर्मुखोरसः

रसगंधकलोहाभ्रंसमंसूतांघ्रिहेमच ।
सर्वंखल्लतलेक्षिप्त्वाकन्यास्बुरसमर्दितं ॥
एरण्डपत्रैरावेष्ट्यधान्यराशौदिनत्रयम् ।
संस्थाप्यचतदुद्धृत्यत्रिफलारससंयुतम् ॥
एतद्रसायनवरंसर्वरोगेषुयोजयेत् ।
तद्यथाग्निबलंखादेद्वलीपलितनाशनम् ॥
पौष्टिकंबल्यमायुष्यंपुत्रप्रसवकारकम् ।
क्षयमेकादशविधंकासंपंचविधंतथा ॥
कुष्ठमेकादशविधंपाण्डुरोगान्प्रमेहकान् ।
शूलंश्वासश्चहिक्कांचमन्दाग्निंचाम्लपित्तकान्

अपस्मारंमहोन्मादंसर्वाशांसित्वगामयान् ।
क्रमेणशीलितंहन्तिवृक्षमिन्द्राशनिर्य्यथा ॥
जगतांचहितार्थायचतुर्मुखमुखोदितः ।
रसश्चतुर्मुखोनामचतुर्मुखइवापरः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, इनको समान भाग लेवे. और पारेकी चौथाई सोनेकी भस्म मिलावे, सबको खरलमें डाल घीगुवारके रससे खरलकर गोला बनाय अरंडके पत्तोंसे लपेट तीन दिन धानकी राशिमें गाढ रखे फिर निकालकर त्रिफलाके काढेकी भावना देवे तो यह उत्तम रसायन सर्वरोग हरणकर्त्ता बने. इसको बलाबल देखकर देवे तो वलिपलितताको दूर करे, पुष्टि तथा बल करे, आयुको बढावे, पुत्रकारक है. ग्यारह प्रकारकी खई, पांच प्रकारकी खांसी, ग्यारह प्रकारका महाकुठ, पाण्डुरोग, प्रमेह, शूल, श्वास, हिचकी, मन्दाग्नि, अम्लपित्त, मृगी, घोर उन्माद, सब प्रकारकी ववासीर, त्वचाके रोग, इन सबको यह क्रमके साथ खानेसे दूर करता है. यह संसारके कल्याणार्थ ब्रह्माने कहा है इसी कारण इसको चतुर्मुख कहते हैं ।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलंकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्द्धौरसगन्धकौ ।
बलानागबलाभीरूविदारीकन्दमेवच ॥
कृष्णधत्तूरनिचुलंगोक्षुरवृद्धदारयोः ।
पीजंशक्रासनस्यापिजातीकोषफलेतथा ॥
कर्पूरश्चैवकर्षांशैःश्लक्ष्णचूर्णंपृथक्पृथक् ।
गृहीत्वाचाष्टमांशेनस्वर्णपर्णरसेनच ॥
वटिकांश्चिचणकमात्राणांकारयेद्भिषक् ।
रसोलक्ष्मीविलासोयंपूर्ववत्गुणकारकः ॥

अर्थ–काली अभ्रकका चूर्ण ४ तोले, पारा, गंधक दोनों दो तोले लेवे. सबको खरल कर खरेटी, गंगेरन, शतावर, विदारीकन्द, काला धतूरा, वेत, गोखरू, विधायरा, इन्द्रजौ, जायफल, जावित्री, भीमसेनी कपूर, इन सबका पृथक् २ चूर्ण कर हिरनडोडीका रस मिलाके चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. यह लक्ष्मीविलासरस (चतुर्मुख रसके समान गुणकर्त्ता है।)

रोगेभसिंहश्रीखंडवट्यौ.

सूताब्दयोघनवरानलवेल्लभार्ङ्गी ।
तिक्ताकटुत्रयवरैःसवचैःसमांशैः ॥
रोगेभसिंहइतिवातकफामयघ्नः ।
सान्द्रोयमल्पपटुतोविहितोद्विगुंजः ॥
एतंगुडिमसूदितेरसवर्जितःस्यात् ।
श्रीखण्डनामगुटिकाविहिताद्विगुंजा ॥
शैत्याद्यजीर्णकफवातभवान्विकारान् ।
हन्त्यार्द्रकेनयुताप्यथकेवलावा ॥

अर्थ–पारा दो तोले, नागरमोथा, त्रिफला, चीतेकी छाल, वायविडंग, भारंगी, कुटकी, त्रिकुटा और वच प्रत्येक एक तोला लेवे तो यह रोगेभसिंह रस वादी और कफके रोगोंका नाश करे. इसको किंचित् नमकके साथ सेवन करे. यदि इसमें गुड मिलाके दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे परन्तु इनमें पारा न डाले तो श्रीखण्डनामक गुटिका बने. यह शीत, अजीर्ण, कफ वातके विकारोंमें अदरखके रसके साथ अथवा फकत श्रीखण्डही सेवन करे ।

पिण्डीरसः

सूतात्पञ्चार्कतश्चैकंकृत्वापिण्डंसुगंधकम् ।
सूतांशंनागवल्लयाश्चद्रवैःपिष्ट्वाप्रलेपयेत् ॥
ताम्रपत्रींमुखेदत्वारुद्ध्वागजपुटेपचेत् ।
द्विगुंजंत्र्यूपणेनार्द्धधनुर्वातंसकम्पकं ॥
निहन्तिदाहसंतापमूर्च्छापित्तसमन्वितम् ।

अर्थ–पारा ९ तोले, तांबेकी भस्म १ तोले, गंधक ९ तोले, सबको पानके रसमें पीस तांबेके पत्रोंपर लेप कर गजपुटमें रखके फूंक देवे. स्वांगशीतल होनेपर निकालके दो रत्ती रसको त्रिकुटाके साथ सेवन करे तो धनुर्वात, कंपवात, दाह, संताप और पित्तसहित मूर्च्छाको दूर करे ।

कुब्जविनोदरसः

रसगंधौसमौशुद्धौचाभयातालकंतथा ।
विषंकटुकिव्योपश्चबोलजैपालकौसमौ ॥
भृंगराजरसेमर्द्यंस्नुह्यर्कस्वरसैस्तथा ।
गुञ्जाद्वयंभक्षयेचहृच्छूलंपार्श्वशूलकम् ॥
आमवाताढ्यवातादीन्कटीशूलश्चनाशयेत् ।
अग्निश्चकुरुतेदीप्तिस्थौल्यंचाप्यपकर्षति ॥
रसःकुब्जविनोदोयंगहनानन्दभाषितः ।

अर्थ–पारा और गंधक समान भाग लेवे. हरड, हरिताल, विष, कुटकी, त्रिकुटा, बीजाबोल, और जमालगोटा इन सबको बराबर ले. भांगरेके रस, थूहर और आकके दूधमें खरल कर गोलियां बनावे तो हृदय और पसवाडेके शूल, आमयुक्त बादी, कमरकी बादीको हरणकर, अग्नि दीप्ति करे, स्थूलताको हरण करे. यह कुब्जविनोदी रस गहनानन्द योगीने कहा है ।

शीतारिरसः

हिमवन्तिहिगात्राणिरोगाणिस्फुरितानिच ।
शिरोक्षिवेदनालस्यशीतवातस्यलक्षणम् ॥
रसेनगंधंद्विगुणंमृद्यपुनर्नवाग्निस्वरसैर्विभाव्य । पक्वार्कपत्रस्यरसेनपश्चाद्विपाचयेदष्टगुणेनयत्नात् ॥ रसार्द्धभागश्चविषश्चदत्वाविपाचयेदग्निजलैक्षपंतत् । शीतारिसंज्ञस्यरसायनस्यबलश्चसार्द्धंमरिचार्द्रकेण ॥ मरीचचूर्णेनघृतप्लुतेनसेवेतमांसश्चघृतश्चपथ्यम् ।

अर्थ–जिस प्राणीका शीतल देह हो, और बादीका रोग हो मस्तक और नेत्रमें पीडा होवे और आलस्य हो ये शीतवातके लक्षण हैं १ तोले पारा और दो तोले गंधककी कजली कर पुनर्नवा और चीतेके रसकी भावना देवे, फिर आकके पके पत्तोंके अठगुने रसमें वालुकायंत्रद्वारा पचावे, फिर पारेसे आधा विष डालके चीतेके रससे पचावे, यह शीतारिसंज्ञक रस परम रसायन बने. बलाबल देखकर काली मिरच और अदरखके साथ अथवा घृत और काली मिरचके चूर्णके साथ देवे, पथ्यमें मांसरस और घी देवे तो यह रस वातरोगको दूर करे ।

वातविध्वंसिनीरसः

सूतमभ्रकसत्वंचकांस्यंशुद्धंचमाक्षिकम् ।
गंधकंतालकंसर्वंभागोत्तरविवर्द्धितम् ॥
कज्जलीकृत्यतत्सर्वंवातारिस्नेहसंयुतम् ।
सप्ताहंमर्दयित्वातुगोलकीकृत्ययत्नतः ॥
निम्बुद्रवेणसंपीड्यतिलकल्केनलेपयेत् ।
अर्द्धांगुलदलेनैवपरिशोष्यप्रयत्नतः ॥
प्रपचेद्वालुकायन्त्रेद्वादशप्रहरंततः ।
जठरस्यरुजःसर्वास्तथाचमलविग्रहं ॥
आध्मानकंतथानाहंविषूचींवन्हिमांद्यकम् ।
आमदोषमशेषंचगुल्मंछर्दिंचदुर्जरम् ॥
ग्रहणींश्वासकासौचक्रमिरोगंविशेषतः ।
हन्यात्सर्वांगशूलंचमन्यास्तंभंतथैवच ॥
ज्वरेचैवातिसारेचशूलरोगेत्रिदोषजे ।
पथ्यंरोगानुसारेणदेयमस्मिन्भिषग्वरैः ॥
श्रीमतानन्दनाथेनवातविध्वंसिनीरसः ।

अर्थ–शुद्धपारा, अभ्रकसत्व, कांस्य, शुद्ध सुवर्णमक्खी, गंधक और हरिताल क्रमसे ए-

कसे दूसरी अधिक लेवे और कजली करके अंडीके तेलमें ७ दिन खरल करे, फिर गोला बनाय नींबूके रससे तरकर तिलका कल्क आध अंगुल उसपर लपेटे उसको सुखाके १२ प्रहर वालुकायंत्रमें पचावे तो यह रस उदरके रोग, मलका रुकना, अफरा, अनाह, विशूचिका, मन्दाग्नि, आमदोष, गोला, छर्दि, संग्रहणी, श्वास, खांसी, कृमिरोग, सर्वांगशूल मन्यास्तंभ, ज्वर, अतिसार, त्रिदोषका शूलरोग इन सब रोगोंको यह दूर करे. इसपर वैद्य रोगानुसार पथ्य बतावे. यह आनंदनाथका कहा वातविध्वंसन रस है ।

पलाशादिवटी.

पलाशबीजोत्थरसेनसूतंगंधेनयुक्तंत्रिदिनंविमर्द्य । श्लक्ष्णीकृतन्तद्विपतिन्दुबीजंसंयोजयेदस्यकलाप्रमाणम् ॥ माषद्वयंनिष्कमितंप्रयत्नादर्शोरिहन्त्वाशुनियोजनीयम् ॥
वातरक्तंतथाशोथमस्पर्शाख्यानिलामयम् ।
वातवत्पित्तरोगेपितत्रपित्तेनभावयेत् ॥
पलाशादिवटीख्यातावातरोगकुलान्तिका ।

अर्थ—ढाकके बीजोंके रसमें पारे और गंधकको खरलकर इस कजलीके सोलहवे भाग कुचलाके बीज डाले, और सबको घोटकर चार चार मासेकी गोलियां बनावे, और दो महीने सेवन करें तो बवासीरको दूर करे, वातरक्त, सूजन जिसमें स्पर्श न सुहावे ऐसी वादीको दूर करे, इसी प्रकार पित्तके रोगोंमें पित्तहरणकर्त्ता औषधियोंके रसकी भावना देकर पित्तरोगमें देवे अथवा पांचों पित्तोंकी भावना देवे. यह पलाशादिवटी सर्व वातरोगोंको हरण करनेवाली है ।

दशसारवटी.

यष्टिधात्रीबलाद्राक्षाएलाचन्दनवालुकम् ।
मधूकपुष्पखर्जूरंदाडिमंपेषयेत्समम् ॥
सर्वतुल्यासितायोज्यापलार्द्धंभक्षयेत्सदा ।
दशसारवटीख्यातासर्ववातविकारनुत् ॥
अथदाडिममित्यत्रगणमिच्छन्तिचापरे ।

अर्थ—मुलहटी, आमले, खरैटी, दाख, इलायची, चन्दन, एलुआ, महुआके फूल, छुहारे, और अनारदाने सबको बराबर लेकर पीसे और सबकी बराबर मिश्री मिलाके दो तोले नित्य भक्षण करे तो यह दश सार वटी सर्व वात विकारोंको दूर करे. किसी २ प्राचीन वैद्यकी यह सम्मति है कि इसमें दाडिमादिगण और मिलावे ।

गगनादिवटी.

मृतगगनरसार्कंमुण्डतीक्ष्णंसताप्यम् ।
सबलिसममिदंस्याद्यष्टितोयप्रपिष्टम् ॥
तदनुसलिलजातैर्वासकैर्गोस्तनीभिः ।
मृदितमनुविदारीवारिणाघस्रमेकम् ॥
घृतमधुसहितेयंनिष्कमात्रावटीति ।
क्षपयतिगुरुवातंपित्तरोगंक्षयंच ॥
भ्रममदकफशोषान्दाहतृष्णासमुत्थान् ।
मलयजमिहपेयंचानुपेयंसचन्द्रम् ॥

अर्थ—अभ्रकभस्म, चन्द्रोदय, ताम्रभस्म, मुण्डलोह और तीक्ष्ण लोहकी भस्म, सुवर्णमाक्षिककी भस्म, और गंधक इन सबको समान भाग ले मुलहटीके रसमें घोटे फिर कमल, अडूसा, मुनक्कादाख और विदारी कंदके रसमें एक २ दिन खरलकर घी और सहतसे चार २ मासेकी गोलियां बनावे. यह घोर वातके रोग, पित्तके रोग, क्षय, भ्रम, मद, कफ, शोष, दाह और प्यासको दूर करे. इसपर चंदन और कपूर मिला जल पीवे ।

सर्वांगसुन्दरोरसः

शुद्धसूताभ्रताम्रायोहिंगुलंकार्षिकंसमम् । गंधकश्चैकभागःस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ सप्तपर्णार्कसुक्क्षीरवासावातारिवारिणा । विषमुष्टिसमंसर्वंपेष्यंतद्गोलकीकृतम् ॥ विपचेद्वालुकायन्त्रेद्वियामान्तेसमुद्धरेत् । पिप्पलीविषसंयुक्तोरसःसर्वांगसुन्दरः ॥ सर्ववातविकारघ्नःसर्वशूलनिषूदनः ।

अर्थ–शुद्धपारा, अभ्रक, ताम्रभस्म, लोहभस्म और गंधक प्रत्येक एक तोले लेवे. सबको खरलकर सतोना, आक, थूहरका दूध, अडूसा और अंडके रससे बराबरका कुचला मिलाकर पीसे फिर गोला बनाय वालुकायंत्रमें पचावे दो प्रहर उपरान्त उतार लेवे. इस सर्वांगसुन्दरको पीपल और विषके साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण वातरोगोंको और सब प्रकारके शूलोंको दूर करे ।

तालकेश्वरः

एकभागोरसस्यस्याच्छुद्धस्तालैकभागिकः । अष्टौस्युर्विजयायाश्चगुटिकांगुडतश्चरेत् ॥ एकैकांभक्षयेत्प्रातःश्छायायामुपवेशयेत् । तालकेश्वरनामायंरोगश्चास्पर्शनाशनः ॥

अर्थ–शुद्धपारा और शुद्धगंधक प्रत्येक एक तोले, भांग ८ तोले, इसमें बराबरका गुड मिलाके गोलियां बनावे और एक गोली खाय छायामें रहे तो यह तालकेश्वर रस स्पर्श होना न मालूम हो ऐसे वातरोगको दूर करे ।

त्रैलोक्यचिन्तामणिरसः

हीरंसुवर्णंसुमृतश्चतारमेषांसमंतीक्ष्णरजश्चतुर्णाम् । सममृताभ्रंरससिन्दुरश्चनिष्पिष्टतीक्ष्णस्यतथाश्मनोवा ॥ खल्लेद्रवेणेवकुमारिकायागुञ्जाप्रमाणांवटिकांप्रकुर्य्यात् । त्रैलोक्यचिंतामणिरेषनाम्नासम्पूज्यसम्यग्गिरिजांदिनेशम् ॥ हन्त्यामयान्योगशतैर्विवर्ज्यामयप्रणाशायमुनिप्रणीतम् । अस्यप्रसादेनगदानशेषान्जरांविनिर्जित्यसुखंविभर्ति ॥ स्निग्धश्लेष्मण्यार्द्रकस्यरसेनपाययेत्सुधीः । शुष्केचमाक्षिकेनैवंपित्तेघृतसितायुतम् ॥ श्लेष्माणिमारुतेसम्यग्दुष्टेचसमतांगते । कणाचूर्णक्षौद्रयुतंप्रमेहेदुग्धसंयुतम् ॥ बलवर्णाग्निजननःकासघ्नःकफवातजित् । आयुःपुष्टिकरोवृष्यःसर्वरोगनिषूदनः ॥ तारशब्देनात्रशुद्धमौक्तिकमेवोच्यतेनतुरजतम् । हीरंस्वर्णंसुशुद्धंचमौक्तिकमितिपाठान्तरदर्शनात् ॥

अर्थ–हीरा, सुवर्ण, मोती, और तीक्ष्ण लोहको समान भाग लेवे सबकी बराबर अभ्रक भस्म लेवे, और अभ्रक भस्मके बराबर रस सिंदूर लेवे, सबको लोहेके खरलमें अथवा पाषाणके चिकने खरलमें घीगुवारके रससे खरल कर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इस त्रैलोक्यचिन्तामणि रसको भगवती और सूर्य्यका पूजन कर भक्षण करे, इसको सैकडों प्रयोगों करके जो रोग दूर न हुआहो उसके दूर करनेको मुनीश्वरोंने कहा हैं इस रसके प्रभावसे सम्पूर्ण रोग और बुढापा दूरहो. गीले कफरोगमें अदरखके रसके साथ देवे. शुष्क कफमें सहतके साथ, पित्तरोगोंमें मक्खन, मिश्रीके साथ, वातकफके रोगोंमें पीपलके चूर्ण और सहतके साथ, प्रमेहमें दूधके साथ देवे. यह बल, वर्ण और जठराग्निको बढावे, खांसी ओर कफवातको दूर करे, आयुष्य और पुष्टी करे और सर्व रोगोंको दूर करे. इसमें तारशब्द करके मोती इस कारण ग्रहण किया है कि अन्यत्र लिखा है. "हीरं

स्वर्णं सुशुद्धं च मौक्तिकं " इत्यादि ।

स्वच्छन्दभैरवोरसः

शुद्धसूतंमृतंलोहंताप्यगन्धकतालकम् ।
पथ्याग्निमन्थनिर्गुंडीत्र्यूषणंटंकणंविषम् ॥
तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुंडिकाद्रवैः ।
मुंडीद्रावैर्दिनैकंतुद्विगुंजंवटिकीकृतम् ॥
भक्षयेद्वातरोगार्त्तोनाम्नास्वच्छन्दभैरवः ।
रास्नामृतादेवदारुशुंठीवातारिसूजतं ॥
सगुग्गुलंपिवेत्कोष्णमनुपानंसुखावहं ।

अर्थ–शुद्धपारा, लोहभस्म, सुवर्णमाक्षिक, गंधक, हरिताल, छोटी हरड, अरनीकी जड, निर्गुंडी, सोंठ, मिरच, पीपल, सुहागा और विषको समान भाग लेवे और निर्गुंडीके रसमें एक दिन खरलकर गोरखमुंडीके रसमें एक दिन खरल करके दो २ रत्तकी गोलियां बनावे. इसको स्वच्छन्दभैरव रस कहते हैं. इसको रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ और अंडकी जडके काढेमें गिलोय डालकर देवे तो सर्व वायुविकार दूर होवे ।

वातराक्षसरसः

मृतंसूतंतथागन्धंकान्तंचाभ्रकमेवच ।
ताम्रभस्मकृतंसम्यङ्मर्दयित्वासमांशकम् ॥
पुनर्नवागुडूच्यग्निसुरसात्र्यूषणंतथा ।
एतेषांस्वरसेनैवभावयेत्रिदिनंपृथक् ॥
दत्वालघुपुटंसम्यक्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ।
वातराक्षसनामायंवातरोगेप्रयोजयेत् ॥
तत्तद्रोगानुपानेनद्विगुंजामात्रसेवनात् ।
ऊरुस्तंभंवातरक्तंगात्रभंगंतथैवच ॥
आमवातंधनुर्वातंवेदनावातमेवच ।
पक्षाघातंकंपवातंसर्वसंधिगतंतथा ॥
सुप्तवातंवातशूलमुन्मादंचविनाशयेत् ।
तत्तद्रोगानुपानेनवाताशीतिविनाशनः ॥

अर्थ–पारदभस्म, गंधक, कान्तलोहकी भस्म, अभ्रकभस्म, और ताम्रभस्मको समान भाग लेवे. सबको खरलकर सांठ, गिलोय, चीता, तुलसी और त्रिकुटा इनके स्वरसमें पृथक् २ तीन २ दिन खरल करे, फिर लघुपुट देवे जब शीतल होजावे तब निकाल ले इसको वातराक्षस रस कहते हैं. इसको वातरोगपर देवे, और पृथक् २ रोगोंके अनुपानसे इसे देवे तो उरुस्तंभ, वातरक्त, देहका बिगडजाना, आमवात, धनुर्वात, वेदनावात, पक्षाघात, कम्पवात, सर्वसन्धिगतवात, सुप्तवात, वातशूल, और उन्मादको दूर करे. इसको अनुपानके साथ देनेसे ८० प्रकारकी वातको दूर करे ।

समीरगजकेसरी.

नवाहिफेनंकुचिलंनवानिमरिचानिच ।
समभागानिसर्वाणिरक्तिकाप्रमितानिच ॥
देयासमरिचैतानिपुनस्तांबूलचर्वणं ।
कुब्जेचखंजवातेचसर्वजेगृध्रसीग्रहे ॥
अववाहौप्रयोक्तव्यःशोफेकंपेप्रतानके ।
विषूच्यामस्चौदेयमपस्मारेविशेषतः ॥

अर्थ–नवीन अफीम, कुचला, नवीन काली मिरच, इनको समान भाग ले इसमेसे १ रत्ती देवे और ऊपरसे पान खाय तो कुब्जवात, खंजवात, सर्वजवात, गृध्रसी, अपवाहुक, सूजन, कम्प, प्रतानवायु, विशूचिका और अपस्मारको दूर करे ।

मृतसंजीवनीरसः

म्लेच्छस्यभागाश्चत्वारोतदर्द्धंविषसंयुतम् ।
टंकणंदंतिबीजंचआर्द्रकस्यरसेनवै ॥
एतत्सर्वंक्षिपेत्खल्वेमर्द्दयेयामद्वयंभिषक् ।
भानुदुग्धैर्महोदर्याद्विगुंजंभक्षयेत्सदा ॥

वातव्याधिमुरुस्तंभमामवातंविशेषतः ।
ग्रहण्यर्शोविकारेषुज्वरमष्टविधंतथा ॥
निहन्तितत्क्षणादेवतमःसूर्य्योदयेयथा ।
मृतसंजीवनोनाममख्यातोरससागरे ॥

अर्थ–हींगलू ३ तोले, विष दो तोले, सुहागा और जमालगोटा प्रत्येक एक तोले. इस प्रकार सबको एकत्र कर अदरखके रसमें दो प्रहर खरल करे फिर आकके दूध और शतावरके रसकी भावना देकर दो दो रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली देनेसे वातरक्त, उरुस्तंभ, आमवात, संग्रहणी, बवासीर, और आठ प्रकारके ज्वर इनका नाश करे ।

सूर्य्यप्रभावटी.

चित्रकंत्रिफलानिंबंपटोलंमधुयष्टिका ।
वरांगंकेशरंचैवयवानीचाम्लवेतसं ॥
भूनिंबकंचदार्व्येलामुस्तापर्पटकंतथा ।
तुत्थकंकटुकाभार्ङीचव्यपद्मकदीप्यकः ॥
पिप्पलीमरिचंदंतीशटीशुंठीसपुष्करम् ।
विडंगंपिप्पलीमूलंजीरकंदेवदारुच ॥
पत्रकंकुटजंरास्नादुरालंभामृतात्रिवृत् ।
लतारुष्करतालीसंवृक्षाम्लंलवणत्रयं ॥
धान्यकंचाजमोदाचकारवीधातुमाक्षिकम् ।
जातीफलंतुगाक्षीरीवाजिगन्धासदाडिमं ॥
कांकोलकमुशीरंचद्विक्षारंमरिचंतथा ।
एतानिपलमात्राणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥
गिरिजस्यपलान्यष्टौद्वेपलेचैवगुग्गुलोः ।
प्रस्थमेकंसितायाश्चघृतस्यकुडवंतथा ॥
गिरिजस्यसमंलोहंमस्थार्द्धमाक्षिकस्यच ।
सर्वमेकत्रसंमिश्र्यस्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥
वातव्याधिमुरुस्तंभमर्दितंगृध्रसीतथा ।
विद्रधिंश्लीपदंगुल्मंपाण्डुरोगंहलीमकम् ॥
कासंपंचविधंघाटंमूत्रकृच्छ्रंगलग्रहं ।
अनाहमश्मरींवर्ध्मग्रहणीमपबाहुकं ॥
अरोचकंपार्श्वशूलमुदरंसभगंदरं ।
हृद्रोगंशूलमुत्कम्पविषमज्वरनाशनं ॥
उरःक्षतेक्षयेदोषेमुखरोगेचदारुणे ।
भाशयेद्गुटिकाचापिचूर्णंपाणितलोन्मितं ॥
विविधान्नानिभुंजीतयथेष्टंचयथासुखं ।
गुटिकाभास्करीनाम्नादृष्टादेवेनशंभुना ॥
प्रमेहंरक्तपित्तंचपाण्डुरोगंसकामलं ।
अग्निसंदीपनंहृद्यदीर्घायुर्पुष्टिदोभवेत् ॥
येवातप्रभवारोगायेचपित्तसमुद्भवा ।
कफरोगाश्चयेकेचित्द्वंद्वजाःसन्निपातिकाः॥
तेसर्वेप्रशमंयान्तिभास्करेणतमोयथा ।
रोगविद्राविणीकार्य्यागुटिकासूर्य्यवत्प्रभा ॥

अर्थ–चितेकीछाल, त्रिफला, नींबकी छाल, पटोलपत्र, मुलहटी, दालचीनी, नागकेशर, अजवायन, अमलवेत, चिरायता, दारुहल्दी, इलायची, नागरमोथा, पित्तपापडा, नीलाथोथा, कुटकी, भारंगी, चव्य, पद्माख, खुरासानी अजवायन, पीपल, काली मिरच, जमालगोटा, कचूर, सोंठ, पुहकरमूल, जीरा, देवदारु, तमालपत्र, कुडकीछाल, रास्ना, धमासा, गिलोय, निसोथ, तालीसपत्र, अमलवेत, सेंधा, काला और कचिया तीनों प्रकारका नमक, धनियां, अजमोद, सोंफ, सुवर्णमक्खी, जायफल, वंशलोचन, असगंध, अनारकीछाल, कंकोल, नेत्रवाला, जवाखार, सज्जीखार, और काली मिरच प्रत्येक ४ तोले लेवे. शिलाजीत ३२ तोले, गूगल ८ तोले, शुद्धलोहकी भस्म ३२ तोले, माक्षिकभस्म ८ तोले, इन सबका चूर्ण एकत्रकर सेरभर मिश्री, पावभर गौका घी, सहत आधसेर ले, सबको मिलाय चिकने बरतन चीनीया शीशे आदिमें भरके रखछोडे

इसमेंसे एक तोले या उससे कम बलाबल देखकर देवे तो वातव्याधि, उरुस्तंभ, अर्दित, गृध्रसी, विद्रधि, श्लीपद, गोला, पाण्डुरोग, हलीमक, पांच प्रकारकी खांसी, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, अफरा, पथरी, वद, संग्रहणी, अपवाहुक, अरुचि, पार्श्वशूल, उदर, भगंदर, हृदयरोग, शूल, कम्प, विषमज्वर, उरःक्षत, मुखरोग, प्रमेह, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कामला, तथा वातजन्य, पित्तजन्य, कफजन्य, द्वंद्वज और सान्निपातिज इत्यादि रोग इस सूर्य्यप्रभागोलीके खानेसे नष्ट होवे. जठराग्निको दीप्ति करे, हृदयको हितकारी है, दीर्घावस्था और देहकी पुष्टिकरे, इसको ऊपर खाने पीनेका कुछभी पथ्य नहीं यथेष्ट अनेक प्रकारके विविध अन्न भोजन करे यह लोक हितार्थ श्रीशिवजी महाराजने निर्माण किया है ॥

लघुवातविध्वंसिनी.

पारदष्टंकणोगंधपाषाणभिद्वत्सनागोवराट स्तथातालकः । त्र्यूषणंहेमनीरेणतन्मर्दयेद्र क्तिकाभावटीवातविध्वंसकः ॥ सन्निपातके मारुतेकफेशीतमांद्यकेश्वाससंभवे । संग्रहाभिधेशूलजेगदेकाससंसृतौयोजयेत्सदा ॥

अर्थ–पारा, सुहागा, गंधक, पाषाणभेद, बच्छनागविष, कौडीकीभस्म, हरिताल, सोंठ, मिरच, पीपल, इनको समान भाग लेवे और सबको पीस धतूरेके रससे खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे इसको वातविध्वंसक कहते हैं. यह सन्निपात, कफ, वायुशीत, मंदाग्नि, श्वास, संग्रहणी, शूल और खांसी इनका नाश करे ।

वातराजवटी.

सुशुद्धंपारदंगंधंलोहंमाक्षिकभस्मकम् । स्वर्णतारंताम्रवंगंकान्तंतीक्ष्णन्तुतालकम् ॥ दरदंवत्सनाभंचचातुर्जातसचित्रकम् । त्रिकटुत्रिफलाभार्ङ्गीग्रन्थिकंगजपिप्पली ॥ कुष्ठंजातीद्वयंदारुपुष्करंचाम्लवेतसं । सठींदारुहरिद्रेद्वेपद्मकंदाडिमंत्रिवृत् ॥ रास्नादुरालभाछिन्नादंतीजैपालकंविषम् । कर्षमात्राणिसर्वाणिद्विपलंगिरिजंमतं ॥ जातीफलंतुगाक्षीरीवाजिगंधासचव्यकम् । कंकोलकमुसीरंचद्वौक्षारौलवणत्रयम् ॥ सर्वंसंचूर्ण्यविधिवत्सुखल्वेशोभनेदिने । निर्गुंडीवासकंभृंगकाकमाचीसहार्द्रकम् ॥ तर्कारीसूरणद्रावैःततोन्मत्तरसस्यच । भावनाखलुदातव्यासप्तसप्तक्रमादिह ॥ ततःपर्णरसैर्भाव्यःवटिकांवल्लसम्मितां । छायाशुष्कंततःकृत्वाज्ञात्वारोगवलावलम् ॥ सुदिनेशुभनक्षत्रेशिवंदुर्गांविभाकरम् । प्रणम्ययोजयेत्सम्यक्यथारोगानुपानतः ॥ अशीतिवातजान्रोगान्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान् । विंशतिश्लेष्मिकान्घोरान्श्वासंकासंभगंदरं कुष्ठंउरुक्षतंशूलंज्वरंपाण्डुगलग्रहं । प्रमेहंरक्तपित्तञ्चगुल्मंसंग्रहणीतथा ॥ साध्यासाध्यान्निहन्त्याशुसत्यंश्रीशिवभाषितम् ॥ वातराजवटीह्येषानन्दिनापरिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–शुद्धपारा, गंधक, लोह, सुवर्णमाक्षिक, अभ्रक, सुवर्ण, रूपा, तांबा, वंग, कान्तलोह, खेरीलोह और हरिताल इनकी भस्म और शुद्ध शिंगरफ, बच्छनागविष, दालचीनी, इलायचीके बीज, पत्रज, नागकेशर, चीतेकी छाल, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, भारंगी, पीपलामूल, गजपीपल, कूट, सफेदजीरा, काला जीरा। देवदारु, पुहकरमूल, अमलवेत, कचूर, दारुहल्दी, हलदी, पद्माख,

अनारदाना, निसोथ, रास्ना, धमासा, गिलोय, दन्ती, जमालगोटा और सिंगियाविष प्रत्येक एक तोले, शिलाजीत ८ मासपल, वंशलोचन, असगंध, पथ्य, कंकोल, खस, सज्जीखार, जवाखार, सैंधानिमक, कालानिमक और कचियानिमक प्रत्येक एक तोले लेकर सबको निर्गुंडी, अडूसा, भांगरा, मकोय, अदरख, अरनी, जिमीकंद और धतूरेके रसकी सात २ भावना देवे फिर सात भावना पानके रसकी देकर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनाय छायामें सुखाय रखछोडे. और रोगीका बलाबल देख शुभ दिन, नक्षत्रमें शिवपार्वती और सूर्यको प्रणामकर जैसा रोग हो उसके अनुपानानुसार देवे तो अस्सी प्रकारकी बादी, चालीस प्रकारके कफरोग, बीस प्रकारके प्रमेह, श्वास, खांसी, भगंदर, कोढ, उरःक्षत, शूल, ज्वर, पाण्डुरोग, गलग्रह, प्रमेह, रक्तपित्त, गोला, संग्रहणी, इत्यादि सम्पूर्ण साध्यासाध्य रोगोंको दूर करे. यह वातराजवटी नंदीराजने कही है ।

वातराजवटी.

पारदंगंधकंशुद्धंचातुर्जातंकटुत्रयं ।
जीरकंयुगलंचन्द्रंपत्रंतालीसकेशरम् ॥
जातीफलंलवंगंचदीप्यकंवन्हिवालकम् ।
अमृताचन्दनंद्राक्षांमांसीचव्यंवरीवचा ॥
जातिकोशंविडंधान्यंत्रिफलातगरंवृषम् ।
प्रत्येकंतोलकंग्राह्यंद्विपलंचद्दनायसं ॥
शुद्धंनवाहिफेनन्तुपल्मात्रंप्रकीर्तितं ।
सर्वसंचूर्ण्यविधिवन्मर्दयेत्खाखसद्रवैः ॥
यामद्वयंततःकार्य्यावटिकावल्लसम्मिता ।
दद्याद्वलाबलंवीक्ष्ययथारोगानुपानकं ॥
वातव्याधिमुरुस्तंभंज्वरंदाहमनिद्रताम् ।
प्रमेहंरक्तपित्तंचउरःक्षतमरोचकम् ॥
हन्तिसर्वानिशेषेणतमःसूर्य्योदयेयथा ।
अस्यप्रभावान्मनुजोरमतेरमणीशतम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, चातुर्जात (दालचीनी, पत्रज, इलायची और नागकेशर) सोंठ, मिरच, पीपल, कालाजीरा, सफेदजीरा, भीमसेनीकपूर, तालीसपत्र, केशर, जायफल, लौंग अजवायन, चीतेकी छाल, एलवालुक, गिलोय, सफेदचन्दन, मुनक्कादाख, जटामांसी, चव्य, शतावरि, बच, जावित्री, वायविडंग, धनियां, हरड, बहेडा, आंवला, तगर और अडूसेके पत्ते प्रत्येक एक तोले, लोहभस्म द्विपल ८ तोले, तथा नवीन अफीम चार २ तोले. सबका चूर्णकर खसखसके रसमें दो प्रहर खरल कर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इनको बलाबल विचार रोगके अनुपानके अनुकूल देवे तो वातव्याधि, उरुस्तंभ, ज्वर, दाह, निद्रा का न आना, अतिसार, भ्रम, बवासीर, उपदंश, पथरी, प्रमेह, रक्तपित्त, उरःक्षत. और अरुचि इन सब रोगोंको दूर करे इस वातराज गोली-के सेवन करनेसे मनुष्य १००स्त्रियोंसे भोगकरे.।

वन्हिकुमाररसः८

टंकणःपारदोगन्धशंखोकपर्दःसमोवत्सनाभस्त्रिभागस्तथा । वलिजंअष्टभागंवन्हिपूर्वःकुमारःस्मृतोभृंगनीरेणमार्दितः ॥ वातरोगेषुसर्वेषुस्तनीयवन्हिमांद्यकेकफामयेप्लीहकासेशूलेवाग्निकुमारकः ।

अर्थ–पारा, गंधक, सुहागा, शंखभस्म, कौडीकी भस्म, प्रत्येक एक तोले लेवे, और बच्छनाग विष ३ तोले, कालीमिरच ८ तोले, सबको एकत्रकर भांगके रससे खरल करे इसको वन्हिकुमाररस कहते हैं यह सम्पूर्ण वातरोग, श्वास, मन्दाग्नि, कफप्लीहा, खांसी और

शूलको दूर करे ।

एकांगवीरोरसः

शुद्धंगंधंमृतंसूतंकान्तंवंगंसनागकम् ।
ताम्रंचाभ्रंमृतंतीक्ष्णंनागरंमरिचंकणा ॥
सर्वमेकत्रसंचूर्ण्यभावयेच्चपृथक्त्रयं ।
वराव्योपकनिर्गुंडीवन्हिमार्कवजैर्द्रवैः ॥
शिग्रुकुष्ठद्रवेणापिमनोवाव्याद्रवेणच ।
विषमुष्टयर्कहाटैश्च आर्द्रकस्यरसैस्तथा ॥
रसैश्चैकांगवीरोसौसुसिद्धोरससराद्भवेत् ।
पक्षावातंचार्दितंचधनुर्वातंतथैवच ॥
अर्द्धांगंगृध्रसीचापिविश्वाचीमपबाहुकं ।
सर्ववातामयान्हन्तिसत्यंसत्यंनसंशयः ॥

अर्थ–शुद्धगंधक, चन्द्रोदय, कान्तलोह, वंग, शीशा, तांबा, अभ्रक, और खेरीलोह इनकी भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे. फिर त्रिफला, त्रिकुटा, निर्गुंडी, चीता, भांगरा, सहजना, कूठ, कुचला, अकरकरा और अदरखके रसकी पृथक् २ तीन २ भावना देवे तो यह एकांगवीर रस बने. यह पक्षावात, अर्दित, धनुर्वात, अर्द्धांगवात, गृध्रसी, विश्वाची, अपबाहुक इत्यादि संपूर्ण, वातोंका नाश करे ।

मेघडंबरोरसः

तंदुलीयद्रवैःपिष्टंमततुल्यंचगंधकम् ।
वज्रमूषाधृतेपाच्याद्भूधरेभस्मतांनयेत् ॥
दशमूलकषायेणभावयेत्प्रहरद्वयं ।
गुंजाद्वयंहरेद्वायुःहिक्काश्वासंज्वरंकिल ॥
अनुपानेनदातव्यांरसोऽयंमेघडंबरः ।
योगसारावल्याम् ॥

अर्थ–पारा और गंधक दोनोंको बराबर लेके चौलाईके रसमें खरलकर वज्रमूषामें रख भूधरयंत्रमें पचावे, फिर दशमूलके काढेसे दो प्रहर खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह बादी, हिचकी, श्वास और ज्वरको मेघडंबर रस अनुपानके साथ देनेसे दूर करे. यह सारावली ग्रन्थमें लिखा है ।

रामबाणोरसः

श्वेतक्षारंपीतक्षारंपारदंमृतसिंहिकम् ।
मनःशिलाबलिश्चैषामेकभागंपृथक्पृथक् ॥
त्रिभागंश्वेतखदिरंसर्वंसंचूर्ण्यमर्दयेत् ।
नागवल्लिदलरसेचतुर्यामंभिषग्वरः ॥
मुद्गमानावटीकार्य्याएकान्तांभक्षयेन्नरः ।
पथ्यंमुद्गाढकीचूर्णंलवणेनविनाकृतम् ॥
चतुर्दशदिनान्येवमुपदंशीचरेन्नरः ।
सोपदंशंसर्ववातंसाध्यासाध्यंचनाशयेत् ॥
रामबाणरसोनाम्नाकथितंरससागरे ।

अर्थ–सुहागा, नौसादर, शिंगरफ, वंगेश्वर, मनसिल, गंधक प्रत्येक एक तोला लेवे, और सफेद कत्था ३ तोले लेकर सबका चूर्ण करे, फिर पानके रसमें ४ प्रहर खरलकर मूंगके बराबर गोलियां बनावे, १ गोली नित्य खाय उपरसे मूंग, अरहर, ज्वार इनकी रोटी दाल बिना निमकके खाय तो १४ दिनमें अवश्य साध्यासाध्य उपदंश जातारहै. यह रामबाण रस रससागर ग्रन्थसे लिखा गया है ।

रसादिगुटिकाः

पारदस्तालकोगंधस्त्रयःशुद्धाःसमाःस्मृताः
जातीफलंजातिकोशंभंगाबीजंलवंगकम् ॥
यवानीतुल्यकंशुद्धंशुद्धंत्र्यूषंसमंपृथक् ।
नागवल्लीदलरसैर्मर्दयेत्प्रहरद्वयम् ॥
सोसनस्याशफानीरैर्मर्दयेच्चतथाविधम् ।
अष्टगुंजामिताकार्य्यागुटिकाचभिषग्वरैः ॥
प्रभातेचैवसायान्हेवटींदेयाविशेषतः ।
मधुनानीरयुक्तेनगिलेतांवटींशुभाम् ॥

पक्षाघातंनिहन्त्याशुरसादिगुटिकात्वियं ।
चन्द्रटेनसमाख्यातायोगरत्नसमुच्चये ॥

अर्थ—पारा, गंधक, हरिताल प्रत्येक शुद्ध किया हुआ ले जायफल, जावित्री, भांगके-बीज, लौंग, अजमायन, शुद्धनीलाथोथा, और त्रिकुटा प्रत्येक समान भाग लेकर पानके रससे दो प्रहर खरल करे. फिर सोसनकी जडके कादेसे दो प्रहर खरल करे. फिर आठ २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक २ गोली सायं-काल और प्रातःकाल सहत और जलके साथ देवे तो यह पक्षवात (अर्द्धांगवात) को दूर करे. यह रसादिगुटिका योगरत्न समुच्चयमें चन्द्रट आचार्य्यने कही है ।

कंपवातारिरसः

मृतसूतंमृतंताम्रंमर्दयेत्कटुकीद्रवैः ।
एकविंशतिवारंतच्छोष्यंपेष्यंपुनःपुनः ॥
चणमात्रंवटींखादेत्सर्वांगकंपवातहृत् ।

अर्थ—चंद्रोदय, ताम्रभस्म, दोनोंको समान भाग ले कुटकीके रसकी २१ भावना देवे फिर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. इनको खाय तो सर्वांगवात और कंपवातको दूर करे।

कम्पवातहारसः

सूतकस्यपलान्पंचपलैकंताम्रचूर्णकम् ।
जंवीराणांद्रवैःपिष्टंसूतंतुल्यंचगंधकम् ॥
नागवल्लीद्रवैःपिष्टंताम्रपिष्टंप्रलेपयेत् ।
रुध्वागजपुटेपाच्याद्भूधरेयामपंचकम् ॥
आदायचूर्णयेत्तुल्यैस्त्र्यूषणैःसममिश्रितं ।
अर्द्धांगकंपवातार्त्तोभक्षयेत्तत्द्विगुंजकम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा २० तोले, तांबेके कंटक-वेधी पत्र ४ तोले, दोनोंको जंभीरीके रसमें खरलकर फिर पारेकी बराबर गंधक मिलाय पानके रससे खरल करे, और उन तांबेके पत्रोंपर लेपकर संपुटमें रख गजपुट और भूधरयंत्रमें पांच प्रहर पचावे फिर निकाल बराबरका त्रिकुटाका चूर्ण मिलाय सेवन करे तो अर्द्धांग और कम्पवातोंको दूर करे ।

गगनगर्भिकावटी.

सूताभ्रंतीक्ष्णताम्रंचमृतंतालकगंधकम् ।
भार्ङ्गींशुंठीवचाधान्यकंपिछंचाभयाविषं ॥
मर्द्यंपर्पटकद्रावैर्निष्ककांभक्षयेद्वटीम् ।
वातश्लेष्महराह्याशुवटीगगनगर्भिका ॥

अर्थ—पारा, अभ्रक, खेरीलोह, ताम्र और हरिताल इनकी भस्म गंधक, सोंठ, भारंगी, वच, धनियां, कवीला, हरड, और सिंगिया विष इन सबको समान लेवे. पित्तपापडेके कादेसे खर-लकर चार २ मासेकी गोलियां बनावे. यह ग-गनगर्भिकावटी वात और कफके रोगोंको शीघ्र दूर करे ।

पलाशवीजोत्थरसेनसूतंगंधेनयुक्तंपरिमर्दनीयः । श्लक्ष्णीकृतेतद्विषमुष्टिवीजंसंयोजनीयं चकलायमात्रं ॥ मासत्रयंनिष्कमितंप्रयत्नादस्पर्शनुत्त्यंखलुसेवयेत् ।

अर्थ—ढाकके बीजोंके रसमें पारे और गं-धकको खरलकर और मटरके अनुमान कुचला मिलाकर एक तोले तीन महीने पर्य्यन्त सेवन करे तो अस्पर्श (शून्य) वात दूर हो. ।

पर्पटीरसगुंजाष्टौवक्ष्यमाणंचगुग्गुलम् ।
कर्षार्द्धंखादयेत्साज्यमेकांगानिलशान्तये ॥

अर्थ—आठ रत्ती पर्पटीरसको योगराज गूगल और घृतमें मिलाकर ६ मासे नित्य खाय तो देहकी सब बादी दूर हो।

दरदादिवटी.

म्लेच्छंसार्द्धपलंप्रोक्तंगुडंस्यात्द्वादशंपलं ।
मृत्पात्रेनिंबदंडेनताम्रपत्रयुतेनच ॥

घर्षणंसप्तदिवसंप्रकुर्य्यात्सुप्रयत्नतः ।
ततोद्विमाषमानेनवटिकांकारयेद्बुधः ॥
प्रभातेचैवसायान्हेवटिकांभक्षयेन्नरः ।
सर्ववातप्रशान्त्यर्थंदरदादिवटीत्वियम् ॥

अर्थ–सिंगरफ डेढपल, गुड १२ पल, दोनोंको मिट्टिके पात्रमें नीमकी डंडीमें तांबेका पैसा चिपकाकर ७ दिन घोटे फिर आठ आठ मासेकी गोलियां बनावे. प्रातःकाल और सायंकाल एक २ गोली नित्य सेवन करे पथ्यसे रहे तो यह दरदादिवटी संपूर्ण वातरोगोंका नाश करे. ।

अमरसुन्दरीगुटिका.

त्रिकटुत्रिफलाचैवरेणुकाग्रन्थिकानलं ।
मृतलोहंचतुर्जातंपारदंगंधकंविषं ॥
विडंगाकल्लकंमुस्तासर्वेभ्योद्विगुणोगुडः ।
चणकप्रमितानाम्नागुटीअमरसुन्दरी ॥
अपस्मारेसन्निपातेश्वासेकासेगुदामये ।
अशीतिवातरोगेषुउन्मादेषुविशेषतः ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हरडा, बहेडा, आंवला, रेणुका, पीपलामूल, चीतेकी छाल, सार, चातुर्जात, पारा, गंधक, विष, वायविडंग, अकरकरा और मोथा, और सबसे दूना गुड लेकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे। यह अमरसुन्दरी गोली मृगी, सन्निपात, श्वास, कास, गुदाके रोग, अस्सी प्रकारके वातरोग और उन्मादको दूर करे ।

अमृतानामगुटिका.

पलत्रयंचित्रकंचचेतकीचपलत्रयं ।
पारदंत्रिकुटंचैवपिप्पलीमूलमुस्तकम् ॥
जातीफलंवृद्धदारुग्राहयेच्चपलंपलं ।
एलाशुभाकुष्ठगंधंदरदंकरहाटकम् ॥
ज्योतिष्मतीत्वगभ्रंचआयसंचपलार्द्धकम् ।
हालाहलंनिष्कमेकंगुडंदेयंपलाष्टकम् ॥
भृंगराजरसेनैवगुटिकाकोलसम्मिता ।
एकैकांभक्षयेन्नित्यंवाताशीतिर्विनश्यति ॥
कुष्ठाष्टादशनश्यन्तिप्रमेहंविंशतिंतथा ।
अपस्मारंपडेतानिसर्वनाडीव्रणानिच ॥
क्षयमेकादशंहन्तिऊर्ध्वश्वासंसुसुप्तिका ।
शोथाप्रवातपाण्डुत्वंकामलार्शोनिहन्तिपट्॥
सर्वरोगहरंख्यातंवाताम्लंचविवर्जयेत् ।

अर्थ–चीतेकी छाल और हरड बारह २ तोले, पारा, त्रिकुटा, पीपलामूल, नागरमोथा, जायफल, और विधायरा, प्रत्येक ४ तोले. राल, कूठ, गंधक, शिंगरफ, अकरकरा, मालकांगनी, तज, अभ्रक और सार प्रत्येक १० तोले, विष ४ मासे, गुड ३२ तोले, सबको भांगरेके रससे खरलकर बेरके समान गोलियां बनावे. एक गोली नित्य सेवन करे तो ८० प्रकारके वात १८ प्रकारके कुष्ठ, २० प्रकारका प्रमेह, ६ प्रकारकी मृगी, सर्व नाडीव्रण, ११ प्रकारकी क्षय, उर्ध्वश्वास, सोथ, प्रसूतवात, आमवात, पाण्डुरोग, कामला, ६ प्रकारकी बवासीर, और वाताम्ल इन सब रोंगोको यह अमृतनाम गुटिका दूर करे ।

मार्त्तण्डेश्वरोरसः

समताप्ययुतंशुल्वंपलविंशतिमानकम् ।
प्रध्मातंहिचतुर्वारंखंडयित्वाततश्चरेत् ॥
तत्तुल्यंमाक्षिकोपेतंपुटेद्विंशतिवारकम् ।
गंधकेनपुटेत्तावद्यावत्पलमितंभवेत् ॥
क्षिपेत्पलमितंतत्रगंधकेनहतंरसं ।
शाणमात्रंमृतंवज्रंसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयंमार्त्तण्डेश्वरनामवान् ।
कीर्तितोलोकनाथेनलोकानांहितकाम्यया ॥
मरीचघृतसंयुक्तःसेवितोमंडलार्द्धतः ।
वाताद्यष्टमहारोगान्श्वासकासयुतंक्षयं ॥

हलीमकंचपाण्डुंचज्वरानपिसुदुर्द्धरान् ।
इत्यादिकगदान्सर्वान्विनाशयतिनिश्चितं॥
करोतिदीपनंतीव्रंदीपानलसतोपमं ।
सन्निपातंजयत्याशुव्योपार्द्धकसमन्वितम् ॥
सर्वसौख्यकरोनृणांस्त्रीणांवंध्यत्वनाशनः ।

अर्थ—सोनामक्खी २० पल और तांबा २० पल दोनोंको मिलाय अग्निमें गलाके एक जी करे फिर निकालके तोड डाले, और फिर एक जी करे फिर सहतकी २० पुट देवे फिर जबतक एक पल अर्थात् ४ तोले शेष रहे तबतक बराबर गंधककी पुट दिये जाय फिर इसमें ४ तोले चन्द्रोदय और ४ मासे हीराकी भस्म डाल सबको एकत्र खरल करे तो यह मार्त्तंडेश्वररस सिद्ध होवे. इसको घी और काली मिरचोंके साथ २४ दिन सेवन करे तो वातसे आदि ले अष्ट महारोग, श्वास, खांसी, क्षय, हलीमक, पाण्डुरोग, घोर ज्वर इत्यादि संपूर्ण रोगोंको यह रस दूर करे. अग्निको दीपनकर तीव्र करे. त्रिकुटाके साथ लेनेसे सन्निपातको दूर करे पुरुषोंको सर्व सुखका देनेवाला है और स्त्रियोंके वंध्यापनेको दूर करता है ।

चतुःसुधारसः

समभागशुभेहेम्निनिर्व्यूढंताप्यमुत्तमम् ।
शतधाशतधारौप्येशुल्वेचशतवारकम् ॥
इत्यंसिद्धिमितंबीजपृथगक्षप्रमाणतः ।
समावर्त्यतदेकत्ररसेपंचपलात्मके ॥
वक्ष्यमाणप्रकारेणजारयेदतियत्नतः ।
तत्रखल्वेरसंदत्वाबीजनिष्कमितंतथा ॥
मर्दयेदतियत्नेनभवेद्यावद्दिनत्रयं ।
पूर्वोक्तकच्छपेयन्त्रेवक्ष्यमाणविडान्विते ॥
वक्ष्यमाणप्रकारेणबीजमेवमशेषतः ।
चलिकाशीशव्योमकांक्षीसौवर्चलैःसमैः ॥
चक्रांगीरससंभिन्नैःशतधाविडजारयेत् ।
एवंजारितसूतंनपलमात्रेणवातथा ॥
गंधकेनापिकर्तव्यासुस्निग्धावरकज्जली ।
तुल्यसत्वाभ्रसितंक्षिप्त्वासंमिश्रसर्वशः ॥
रंभापत्रेविनिक्षिप्यकुर्यात्पर्पटिकांशुभां ।
विचूर्ण्यपर्पटींतस्यवैक्रांत्तात्रिशदंशतः ॥
निक्षिप्यहिंगुतोयेनशतधापरिभावितं ।
निरुध्यमल्लमूषायांस्वेदयेदतियत्नतः ॥
पुनःसचूर्ण्ययत्नेनकरंडेविनिवेशयेत्।

अर्थ—बराबरके सुवर्णमें सुवर्णमाक्षिक मिलावे और धमावे इस प्रकार सौबार करे, इसी प्रकार चांदी और तांबा मिलाकर सौबार धमावे तो यह बीज सिद्ध होवे. फिर इसमेंसे १ तोले लेकर २० तोले शुद्ध पारेमें मिलाकर बीज जारणकी विधिसे जारण करे फिर इस पारेको खरलमें डाल एक तोले बीज मिलाकर ३ दिन खरल करे, फिर इसको कच्छपयंत्रमें विडके साथ रखके पूर्वोक्त (जो पारदजारणके प्रकरणमें लिख आए हैं) उस प्रकार जारण करे फिर गंधक, कसीस, अभ्रक, फिटकरी, संचरनिमक, बराबर मिला कुटकीके रसमें खरल कर सौबार विड दे २ कर जारण करे. इस प्रकार जारण कियाहुआ पारद ४ तोले लेकर दूनी गंधक मिला कजली करे और कजलीकी बराबर काली अभ्रकका सत्त्व मिलाय सबको एकत्रकर पर्पटी बनावे. फिर इसका चूर्णकर तीसवा भाग वैक्रांतिमणिकी भस्म मिलावे, फिर हींगके जलकी सौ भावना देवे. पश्चात् संपुटमें बंदकर विडसे मूषाके मुखको बंदकर स्वेदन करे. फिर मूषामेंसे सावधानीके साथ निकालकर चूर्णकर किसी उत्तम शीशी

आदिमें बंदकर रख छोडे ।

हन्यात्सर्वमरुद्गदान्क्षयगदंपांडुंचनष्टाग्नितां। निर्वीयत्वमरोचकंचजरणंशूलंचगुल्मादिकं। अष्टौचैवमहागदान्प्रसमयेत्व्याधिंसशोषंक्षणात् । भुक्तोमुद्गमितश्चतुःसुधरसःस्वस्थोचितोभूभुजां ॥ मूलकंवर्जयेदस्मिन्रसेनान्यंतु किंचनत्रिवारमेकवारेणवुभुक्षांजनयेत्ध्रुवम् ।

अर्थ-यह चतुःसुधारस सर्व प्रकारके वातरोग, क्षयरोग, पाण्डु, मंदाग्नि, वीर्यहीनत्व, अरुचि, परिणामशूल, गुल्मरोग, बवासीरादि८ महारोग, और शोषको क्षणमात्रमें दूर करे. इसको मूंगके बराबर सेवन करना चाहिये. यह राजाओंके योग्य है. इसका सेवन करनेवाला मूलीका सेवन न करे. बाकी सब वस्तु खाय. यह तीन वार या एकवार खानेसे क्षुधा प्रगट करता है।

सर्ववातारिरसः

गंधकात्द्विगुणंतालंतालकात्द्विगुणाशिला। शिलायाद्विगुणंताप्यंताप्याचद्विगुणंरसं ॥ खल्लयेत्सर्वमेकत्रयावत्स्यादिनसप्तकम् । सर्वस्यअष्टभागेनदत्वारक्तामृतंशुभं ॥ विषतिंदुकजद्रावैःपिष्ट्वागोलकमाचरेत् । विशोष्यवालुकायंत्रेरुंधयेद्विवसद्वयम् ॥ स्वांगशीतलमुध्दृत्यतुल्यहिंग्वष्टकान्वितम् । भावयेद्बीजपूरस्यसप्तवारंरसेनहि ॥ सप्तवारंरसैःशुंठ्याश्चित्रमूलस्यवारिणा । इतिसिद्धरसेन्द्रोयंसर्ववातारिसंज्ञकः ॥ घृतेनसहितोलीढोवल्लद्वयमितोनृभिः । निहन्त्यशीतंवातार्तिगुल्मानष्टविधानपि ॥ चतुर्विधंचमंदाग्निस्थूलांनुदरजानक्रमीन् । आध्मानंचतथाहिक्कांमूढवातंचविड्ग्रहम् ॥

अर्थ-गंधक ४ तोले, हरिताल ८ तोले, मनसिल १६ तोले, सुवर्णमाक्षिक ३२ तोले, पारा ६४ तोले, सबको एकत्रकर ७ दिनतक घोटे, फिर सबका आठवां भाग लालविष मिलावे, फिर विष और कुचलाके रससे खरल कर गोला बनावे, उसको सुखाय वालुकायंत्रमें रख दो दिनकी आंच दे, जब स्वांगशीतल होजावे तब इसमें बराबरका हिंगाष्टक चूर्ण मिलाय बिजौरेके रसकी ७ भावना देवे. और सात २ भावना सोंठ और चीतेकी छालकी देवे तो यह वातारिसंज्ञक रस सिद्ध हो. इसमेंसे ६ रत्ती घीके साथ सेवन करे तो ८० प्रकारकी वादी, १८ प्रकारके गुल्म, ४ प्रकारकी मंदाग्नि, उदरके क्रिम, अफरा, हिचकी, मूढवात और मलका रुकना आदिको बंद करे।

समीरपन्नगोरसः

अभ्रंगंधंविषव्योषरसटंकान्समांशकान् । भावयेत्सप्तधाभृंगरसेनस्यात्समीरहा ॥ आर्द्रद्रवेणवल्लोवाखंडव्योषेणयोजितः । महावातान्जयत्याशुनासाध्मातःसुसंज्ञकृत्॥

अर्थ-अभ्रक, गंधक, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, पारा और सुहागा प्रत्येक समान भाग ले फिर खरलकर भांगरेके रसकी सात भावना देवे, और तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे १ गोली खांड, त्रिकुटा और अदरखके रसके साथ सेवन करे तो घोर वातोंको दूर करे. और नास देनेसे संज्ञा करता है ।

वातगजसिंहोरसः

सूतंगंधकचित्रकंत्रिकटुकंमुस्तंविषंत्रैफलम् । तुल्यांशंविदधातुमार्कवरसेकृत्वातुगुंजावटी॥ कुष्टाष्टादशकंप्रमेहकफजंवातप्रकोपक्षयं । रोगानीकरीन्द्रदर्पदलनेपंचाननोवैद्यराट्॥

अर्थ-पारा, गंधक, चीतेकी छाल, त्रिकुटा, नागरमोथा, विष और त्रिफला प्रत्येक समान

भाग ले सबको भांगरेके रसमें खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह १८ प्रकारका कोढ, कफकी प्रमेह, वादीका क्षय, इत्यादि रोगरूप हाथियोंके मारनेको सिंहरूप है।

वृद्धचिंतामणिरसः

शुद्धंसूतंविषंगंधंदरदंटंकणंशिवा ।
त्र्यूषणंसैंधवंजातीफलार्ककरहाटकम् ॥
पारसीकयवानीचजीरकंचाजमोदकं ।
शृंग्यश्वगंधाश्रीपुष्पंसमभागंविचूर्णयेत् ॥
भावनात्रितयंदद्याद्भृंगराजरसेनच ।
नागवल्लीरसेनैवतथार्द्रकरसेस्त्रिधा ॥
ततःशुष्कंविधायाथयथारोगेप्रयोजयेत् ।
सामंनिरामंविज्ञायदद्याद्गुंजाचतुष्टयं ॥
महावातेऽपतंत्रेचसर्वगात्रेषुशून्यतां ।
सर्वज्वरहरःश्रेष्ठःसन्निपातांस्त्रयोदश ॥
हन्तिशीतंतथास्वेदंश्वासंचप्रबलंकफं ।
प्रलापंचातिनिद्रांचरोमहर्षारुचिंतथा ॥

अर्थ–शुद्धपारा, विष, गंधक, शिंगरफ सुहागा, हरड, त्रिकुटा, सैंधानिमक, जायफल, तांबेकी भस्म, अकरकरा, किरमानी, अजमायन, जीरा, अजमोद, काकडासिंगी, असगंध और लौंग सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे, फिर भांगरेके रसकी तीन भावना देवे तथा पान और अदरखके रसोंकी तीन २ भावना देवे, फिर इसको सुखाकर रख छोडे पश्चात् साम और निराम रोगोंका विचारकर ४ रत्तीकी मात्रा देवे. यह महावात, अपतंत्रवात, सर्व देहकी शून्यता, सर्व प्रकारके ज्वर, तेरह प्रकारके सन्निपात, शीत, पसीने, प्रबलश्वास, प्रबलकफ, प्रलाप, अत्यंत निद्रा, रोमांचका खडा होना, और अरुचि इत्यादि सब रोगोंका नाश करे।

राक्षसरसः

समांशंयोजयेच्छुद्धंपारदंगंधकंतथा ।
नागार्जुनीरसैर्मर्द्यंसुरसाबाकुचीतथा ॥
मयूरपर्णीकौमारीमधुयष्टीतथैवच ।
वाराहकर्णीस्वरसंवहुफल्यास्तथैवच ॥
एतासांरसमादायभावनायापृथक्पृथक् ।
कुक्कुटांडंतत्रगृह्णाप्रक्षाल्यंतुपुनःपुनः ॥
अधोर्द्धेकुक्कुटंदेयंसंपुटेतानिरोधयेत् ।
सप्तवारमृदावस्त्रंचतुर्यामाग्निनापचेत् ॥
पश्चंगजपुटेनीतंपुनर्मर्द्यंपुनःपचेत् ।
एवंत्रिवारसंस्कारैरसंरक्षोमृतोपमम् ॥
क्षुधाकरंवीर्यकरंबलवर्णाग्निवर्द्धनम् ।

अर्थ–पारा और गंधक चार २ तोले लेकर दुद्धीकेरस, तुलसी, बावची, मयूरपंखी, घीगुवार, मुलहटी, वाराहकर्णी, बहुफली, प्रत्येकके रसमें पृथक् २ भावना देवे. फिर मुरगेके अंडेको घिसे जब छेद होजाय तब भीतरका मवाद निकाल साफकर उसमें औषधियां भर कपरमिट्टीकर कुक्कुटपुटमें रख फूंक देवे. इस प्रकार ४ प्रहरकी अग्नि देवे. फिर पूर्वोक्त औषधियोंकी भावना देकर गजपुटमें फूंक देवे इस प्रकार तीन वार अग्नि देवे तो यह **राक्षसरस** बनकर तयार हो. यह भूखको बढावे, वीर्यकी वृद्धि करे, बल वर्ण तथा अग्निको बढावे. यह रसार्णव ग्रन्थमें लिखा है।

वंगेश्वरोरसः

शुद्धतालंशुद्धसूतंवंगंगंधकशुद्धकम् ।
ग्राहयेत्समभागानिअर्कक्षीरेविमर्दयेत् ॥
दिनसप्तकपर्यन्तंमर्दयेच्चनिरंतरम् ।
काचकुप्यांक्षिपेन्मुद्रांदत्वाचैवभिषग्वरः ॥
द्वादशप्रहरंदेयंमन्दाग्निंचनसंशयः ।
रसोग्राह्योप्रयत्नेनरक्तिकार्द्धप्रदीयते ॥

पुनरेवप्रकर्त्तव्योविधिरेषनसंशयः ।
ताम्बूलपत्रसंयुक्तंवातव्याधिंविनाशयेत् ॥
उन्मादेनष्टशुक्रेचअग्निहीनेचदीयते ।
कुष्ठंव्रणंज्वरंचैवनाशयेच्चकिमद्भुतम् ॥

अर्थ–शुद्ध हरिताल, शुद्धपारा, वंग, और शुद्ध गंधकको समान भाग लेकर आकके दूधसे ७ दिन खरल करे. और कांचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें रख चूल्हेपर चढाय १२ प्रहरकी मंदाग्नि देवे, फिर उन औषधियोंको निकाल आकके दूधमें खरलकर शीशीमें भर वालुकायंत्रमें रख चूल्हेपर चढाय १२ प्रहरकी मंदाग्नि देवे. जब सिद्ध होजाय तब निकालकर आधरत्तीकी मात्रा पानमें रखकर देवे तो वातव्याधि, उन्माद, शुक्रका नष्ट होना, कुष्ठ, व्रण, और ज्वर इन सबको यह वंगेश्वररस दूर करे. यह योगतरंगिणीमें लिखा है ।

तालकादिगुटिका.

तालकंगंधसूतंचशुद्धंदरदटंकणम् ।
त्र्यूषणंसमभागानिसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
भावनैकाप्रदातव्याआर्द्रकस्यरसेनच ।
मुद्गप्रमाणवटिकाएकांप्रातःप्रभक्षयेत् ॥
प्रसूतिवातरोगघ्नंमंदाग्निंग्रहणीतथा ।
श्लेष्मघ्नंविषमंचैवशीतज्वरविनाशनं ॥

अर्थ–हरिताल, गंधक, पारा, शिंगरफ और सुहागा प्रत्येक शुद्ध किये हुए ले और त्रिकुटा लेकर सबको खरल करे, और एक भावना अदरखके रसकी देवे. फिर मूंगके समान गोलियां बनाय एक गोली प्रातःकाल भक्षण करे तो प्रसूतवात मंदाग्नि, संग्रहणी, कफविकार, विषमज्वर और शीतज्वरका नाश करे ।

प्रभावतीगुटिका.

सूतगंधकतीक्ष्णाभ्रैःसताप्यैःसमभागिकैः ।
रसांशमपरंसर्वंपट्कोलंजीरकद्वयम् ॥
सौवर्चलंचसिन्धूत्थंविडंगंचहरीतकीं ।
अम्लवेतसकंसर्वंबीजपूराम्लमर्दितम् ॥
गुटिकास्तेनकल्केनकार्याःकोलास्थिमात्रिकाः । योगिन्याबहुधातिनाग्जितयात्रैलोक्यविख्यातया ॥ निर्दिष्टाहिवृकोदरातिगुटिकाशोष्णाम्बुनासेविता । निःशेषानिलदोपरोगजरुजःश्लेष्मामरोगोद्भवम् ॥ मंदाग्निंग्रहणींचतुर्विधमहाजीर्णंचतूर्णंजयेत् ।

अर्थ–पारा, गंधक, खेडीलोहकी भस्म, तांबेका भस्म, सुवर्णमाक्षिककी भस्म,- प्रत्येक बराबर लेवे. पट्कोल, दोनों जीरे संचरनोन, सैंधानोन वायविडंग और छोटी हरड प्रत्येक पारेकी बराबर लेवे. सबको अमलवेत और विजौरेके रसमें खरलकर बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावे. अजितायोगिनीने यह प्रभावती गुटिका कहा है. इसको गरमजलके साथ सेवन करे तो सम्पूर्ण वातव्याधिके रोग, कफ और आमके रोग मंदाग्नि, चार प्रकारकी संग्रहणी, अजीर्णरोग इन सबको शीघ्र दूर करे. यह रसरत्नसमुच्चय ग्रन्थसे लिखा गया है ।

अथ कफरोगचिकित्सा॥

श्लेष्मकालानलोरसः

रसस्यद्विगुणंगंधंगंधकाद्द्विगुणंविषम् ।
विषाच्चद्विगुणंदेयंचूर्णंत्रिकटुसम्भवम् ॥
रसतुल्याप्रदातव्याचाभयासविभीतकी ।
धात्रीपुष्करमूलञ्चाजमोदाचगन्धिका ॥
विडंगंकट्फलंचव्यंपञ्चैवलवणानिच ।
लवंगंत्रिवृतादन्तीसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥
भावयेत्सप्तधाराद्रेस्वरसैःसुरसोद्भवैः ।

हन्तिसर्वकफोद्भूतंव्याधिंकालानलोरसः ॥

अर्थ-पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, विष १६ तोले, त्रिकुटाका चूर्ण ३२ तोले, हरड, बहेडा, आवला, पुहकरमूल, अजमोद, बनतुलसी, वायविडंग, कायफर, चव्य, पांचोंनिमक, लौंग, निसोथ और दंती. प्रत्येकको ४ तोले लेवे. सबका चूर्ण कर धूपमें तुलसीके रसकी ७ भावना देवे, तो यह कालानलरस सम्पूर्ण कफरोगोंको दूर करे।

श्लेष्मशैलेन्द्रोरसः

पारदंगंधकंलौहंत्र्यूषणंजीरकद्वयम् ।
शृंगीशठीयमानीचपौष्करंचार्द्रकन्तथा ॥
गैरिकंयावशूकश्चकट्फलंगजपिप्पली ।
जातीकोपाजमोदाचवरायासलवंगकम् ॥
कनकस्यचवीजानिकट्फलंचव्यकंतथा ।
प्रत्येकंतोलकश्चैषांश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥
पाषाणेविमलेखल्लेघृष्टंपाषाणमुद्गरैः ।
विल्वमूलरसंदत्वाचार्द्रचित्रफलत्रिका ॥
वासानिर्गुंडिगणिकाचेन्द्राशनप्रचोदनी- ।
धत्तूरंकृष्णजीरश्चपारिभद्रकपिप्पली ॥
एतेषाश्वरसैर्मर्धमार्द्रकैश्चविभावयेत् ।
उष्णतोयानुपानेनसर्वव्याधिंविनाशयेत् ॥
विंशतिश्लैष्मिकान्रोगान्सन्निपातभवान्गदान् । उदराष्टकदुर्नामामवातश्चदारुणम् पंचपांड्वामयान्दोषान्क्रमिस्थौल्यमथोनृणाम् ॥ यथाशुष्केन्धनेवन्हिस्तथैवाग्निविवर्द्धनः

अर्थ-पारा, गंधक, लोहभस्म, त्र्यूषण (सोंठ, मिरच, पीपल.) दोनों जीरे, काकडासिंगी, अजमायन, कचूर, पुहकरमूल, अदरख, गेरू, जवाखार, कायफल, गजपीपल, जाविञी, अजमोद, त्रिफला, जवासा, लौंग, धतूरेके बीज, चव्य, प्रत्येक एक तोले लेवे. और सबका चूर्ण दिव्य चिकने खरलमें लोहेके मूसलेसे कर वेलकी जड, अदरख, चीता, त्रिफला, अडूसा, निर्गुंडी, अरनी, भांग, कटेरी, धतूरा, कालाजीरा, नीम और पीपल इनके रसमें खरल कर फिर अदरखके रसमें भावना देकर गोलियां बनावे और गरम जलके साथ सेवन करे तो सर्व वातविकार, वीस कफविकार, सन्निपातके रोग आठ प्रकारके उदररोग बवासीर, दारुण आमवात, पांच प्रकारके पाण्डुरोग, कृमिरोग, और स्थूलतादि सब रोगोंको दूर करे. जैसे सूखे ईंधनसे अग्नि बढती है उसी प्रकार जठराग्निको बढाता है।

महाश्लेष्मकालानलोरसः

हिंगुलंसम्भवंसूतंशिलागंधकटंकणम् ।
ताम्रंगन्धंतथाभ्रश्चस्वर्णमाक्षिकतालकम् ॥
धत्तूरंसैंधवंकुष्टंहिंगुपिप्पलिकट्फलम् ।
दन्तीवीजंसोमराजीवनराजफलत्रिवृत् ॥
वज्रीक्षीरेणसंमर्धवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
कलायपरिमाणान्तुखादेदेकांयथाबलम् ।
सन्निपातंनिहन्त्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥
मदसिंहोयथारण्येमृगाणांकुलनाशनः ।
तथायंसर्वरोगाणांसद्योनाशकरोमहान् ॥

अर्थ-हींगलूसे निकालाहुआ पारा, मनसिल, गंधक, सुहागा, ताम्र, वंग और अभ्रक इनकी भस्म, सुवर्णमाक्षिक हरिताल, धतूरा, सैंधानिमक, कूट, हींग, पीपल, कायफर, जमालगोटा, बावची, नांदनवन, निसोथ और थूहरका दूध इन सबमें खरलकर मटरके प्रमाण गोलियां बनावे. और बलाबल देखके खिलावे तो सन्निपातको शीघ्र दूर करे. जैसे वृक्षोंको वज्रपात और मृगोंके यूथको मस्त सिंह नाश करता है इसप्रकार सम्पूर्ण घोर रोगोंका नाश करे।

महालक्ष्मीविलासः

पलंवज्राभ्रचूर्णस्यतदर्द्धंगन्धकंभवेत् ।
तदर्द्धंवंगभस्मोपितदर्द्धंपारदंतथा ॥
तत्समंहरितालश्चतदर्द्धंताम्रभस्मकं ।
रससाम्यश्चकर्पूरंजातीकोपफलंतथा ॥
वृद्धदारुकबीजश्चबीजंस्वर्णफलस्यच ।
प्रत्येकंकार्षिकंभागंमृतस्वर्णश्चशाणकम् ॥
निष्पिष्यवटिकाकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः
निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदा-
रुणान् ॥ गलोत्थानंडवृद्धिश्चतथातिसार-
मेवच । कुष्ठमेकादशविधंप्रमेहान्विंशतिंत-
था॥श्लीपदंकफवातोत्थंचीरजंकुलजंतथा ।
नाडीव्रणंव्रणंघोरंगुदामयभगंदरम् ॥
कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यरक्तनु-
त् । आमवातंसर्वरूपंजिव्हास्तंभंगलग्रहम् ॥
उदरंकर्णनासाक्षिमुखवैजाड्यमेवच ।
सर्वशूलंशिरःशूलंस्त्रीरोगश्चविनाशयेत् ॥
वटिकांप्रातरेकैकांखादेन्नित्यंयथावलम् ।
अनुपानमिहप्रोक्तंमांसंपिष्टपयोदधिः ॥
वारिभक्तंसुरासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ।
वृद्धोपितरुणस्पर्द्धीनचशुक्रक्षयोभवेत् ॥
नचलिंगस्यशैथिल्यंनकेशायान्तिपक्वताम् ।
नित्यंगच्छेच्छतंस्त्रीणांमत्तवारणविक्रमः ॥
द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकस्तथा ।
प्रोक्तःप्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना ॥
रसोलक्ष्मीविलासोयंवासुदेवोजगत्पतिः ।
प्रसादादस्यभगवान्लक्षनारीसुवल्लभः ॥

अर्थ—वज्राभ्रककी भस्म ४ तोले, गंधक२ तोले, बंगभस्म १ तोले, पारा ६ मासे, हरिताल ६ मासे, तांबेकी भस्म ३ मासे, भीमसेनी कपूर ६ मासे, जायफल, जावित्री, विधायरेके बीज, धतूरेके बीज, प्रत्येक १ तोले. सुवर्णकी भस्म ४ मासे, सबको पानीसे पीस दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह सन्निपातके घोररोग, गलेके रोग, अंडवृद्धि, अतिसार, ११ प्रकारके घोरकुष्ठ २० प्रकारका प्रमेह, कफवातका और बहुत पुराना श्लीपद, नाडीव्रण, व्रणरोग, गुदाके रोग, भगंदर, खांसी, पीनस, खई, बवासीर, स्थूलता, दुर्गंधिता, रक्तविकार, आमवात, जिव्हास्तंभ,- गलग्रह, उदररोग, कर्णरोग नासिकाके रोग, नेत्र और मुखकी जडता, सर्व प्रकारके शूल, मस्तकशूल, और स्त्रियोंके रोगोंको यह रस दूर करे. बलाबल विचारके नित्य एक गोली खाय इसके ऊपर मांस, पिट्ठी, मैदाके पदार्थ, दूध, दही, भात, दाल, सीधु (मद्यका भेद) इनका सेवन करे तो कामरूप हो. वृद्ध मनुष्यभी तरुणके समान होजाय, अमोघ वीर्य हो, लिंगकी शिथिलता दूरहो, कभी सफेद बाल न हो, १० स्त्रियोंसे भोगकी सामर्थ्य हो, मतवारे हाथीके समान पराक्रम हो, दो लक्ष योजनकी दृष्टि होवे, पुष्टि करे, यह प्रयोगराज नारदने श्रीवासुदेव भगवान्के आगे कहा है, इसीके प्रतापसे श्रीकृष्ण भगवान् लक्ष स्त्रियोंके प्रिय हुए ।

कफकेतुरसः

टंकणंमागधीशुद्धंवत्सनाभंसमंसमम् ।
आर्द्रकस्यरसेनापिभावयेद्दिवसत्रयम् ॥
गुञ्जामात्रंप्रदातव्यमार्द्रकस्यरसेनवै ।
पीनसंश्वासकासश्चगलरोगंगलग्रहम् ॥
दन्तरोगंकर्णरोगंनेत्ररोगंसुदारुणम् ।
सन्निपातंनिहन्त्याशुकफकेतुरसोत्तमः ॥

अर्थ—सुहागा, पीपल, शुद्ध बच्छनाभविष, सबको समान ले अदरखके रसमें ३ दिन

खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. १ गोली अदरखके रसके साथ सेवन करे तो पीनस, श्वास, खांसी, गलरोग, गलग्रह, दंतरोग, कर्णरोग, नेत्ररोग, और सन्निपातके रोगोंको यह कफकेतुरस दूर करता है।

कफचिन्तामणिरसः

हिंगुलेन्दुंयवंटंकंत्रैलोक्यंबीजमेवच ।
मरिचञ्चसमंसर्वंत्रिभागंरससिन्दुरम् ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवमर्दयेद्याममात्रकम् ।
चणकाभावटीकार्य्यासर्ववातप्रशान्तये ॥
कफरोगंनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा ।

अर्थ—हींगुल, कपूर, इन्द्रजौ, सुहागा, भांगके बीज, काली मिरच, इनको समान भाग लेवे और एक औषधिका तिगुना रस सिन्दूर लेवे सबको अदरखके रससे खरलकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. इसके सेवनसे संपूर्ण वातरोग और कफरोग शीघ्र दूर होवे।

अथ पित्तरोगाधिकारः

गुडूच्यादिलौहम्.

गुडूचीसारसंयुक्तंत्रिकत्रययुतन्त्वयः ।
वातरक्तंनिहन्त्याशुसर्ववातहरंपरम् ॥

अर्थ—त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद तथा गिलोयका सत्व इनमें सार मिलाकर पीवे तो वातरक्त और वादीके सर्व रोग दूर होवे।

धात्रीलौहम्.

धात्रीचूर्णस्याष्टौपलानिचत्वारिलौहचूर्णस्य
यष्टीमधुकरंजाद्विपलंदद्यात्पुटेघृष्टम् ॥
धात्र्याश्चकाथेनतच्चूर्णंभाव्यंचसप्ताहम् ।
चण्डातपेनसंशुष्कंभूयःपिष्टंघटेस्थितम् ॥
घृतेनमधुनायुक्तंभोजनाद्यन्तमध्यतः ।
त्रीन्वारान्भक्षयेन्नित्यंपथ्यंदोषानुबन्धतः
भक्तस्यादौनाशयेद्यदोषान्पित्तकृतानपि ।
मध्येचानाहविष्टम्भन्तथान्तेचाग्निमाद्यताम् ॥
रक्तपित्तसमुद्भूतान्रोगान्हन्तिनसंशयः ।

अर्थ—आमलेका चूर्ण ८ टके भर, लोहभस्म ४ टके भर, मुलहटी और कंजा २ टके भर सबको कूटपीस आमलेके काढेमें ७ दिन भावना देवे. फिर तीव्र धूपमें सुखाय बारीक पीस किसी बरतनमें रखछोडे इसको घी और सहतके साथ खाय आदि मध्य और अंतमें खाना चाहिये. दिनमें तीन बार भक्षण करे और दोषानुसार पथ्य करे. यह भोजनके पूर्व खानेसे पित्तजन्य विकारोंको दूर करे. मध्यमें खानेसे अफरा विष्टंभ आदि रोगोंको दूर करे, और भोजनके अन्तमें खानेसे मंदाग्नि और रक्तपित्तसे उत्पन्न रोगोंको दूर करे।

पित्तान्तकोरसः

जातीकोपफलेमांसिकुष्टंतालीसपत्रकम् ।
माक्षिकंमृतलौहञ्चअभ्रंदिव्यंसमांशिकम् ॥
सर्वतुल्यंमृतंतारंसमंनिष्पिष्यवारिणा ।
द्विगुञ्जाभावटीकार्य्यापित्तरोगविनाशिनी ॥
कोष्ठाश्रितञ्चयत्पित्तंशाखाश्रितमथापिवा ।
शूलंचैवाम्लपित्तञ्चपाण्डुरोगंहलीमकम् ॥
दुर्नामंभ्रान्तिवातञ्चक्षिप्रमेवविनाशयेत् ।
रसःपित्तान्तकोह्येषकाशीराजेनभाषितः ॥

अर्थ—जाविची, जायफल, जटामांसी, कूठ, तालीसपत्र, सुवर्णमाक्षिक, लोहभस्म, और अभ्रकभस्म, प्रत्येक समान भाग लेवे. और सबको बराबर रूपेकी भस्म ले एकत्र कर जलमें पीस दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह पित्तरोगको दूर करे. तथा कोष्ठाश्रित पित्त, हाथपैर गतपित्त, शूल, अम्लपित्त, पाण्डुरोग, हलीमक, बवासीर और भ्रान्ति

इन सब रोगोंको यह पित्तान्तकरस दूर करे. यह काशीराजका कहा है ।

महापित्तान्तकोरसः

यदात्रमाक्षिकंत्यक्त्वासुवर्णमपिदीयते ।
महापित्तान्तकोनामसर्वपित्तविनाशनः ॥

अर्थ-पूर्वोक्त पित्तान्तकरसमें सुवर्ण माक्षिककी जगह सुवर्णभस्म मिलावे, तो महापित्तान्तकरस बने. यह रस सर्व पित्तरोगोंका नाश करे ।

अथ वातरक्तचिकित्साः

लांगलाद्यंलौहम्.

विशुद्धलांगलीमूलत्रिकटुत्रिफलातथा ।
द्राक्षागुग्गुलभिस्तुल्यंलौहचूर्णंनियोजयेत् ॥
मातुलुंगरसेनैवत्रिफलायारसेनच ।
विमृद्ययत्नतःपश्चात्गुटिकांकोलसंमिताम् ॥
भक्षयेन्मधुनासार्द्धंशृणुकुर्वन्तियान्गुणान् ।
आजानुस्फुटितंघोरंसर्वांगस्फुटितंतथा ॥
तत्सर्वंनाशयत्याशुसाध्यासाध्यंचशोणितम् ।

अर्थ-शुद्ध कालियारीकी जड, त्रिकुटा, त्रिफला, दाख, और गूगल सब समान भाग ले, और सबकी बराबर लोहभस्म मिलावे, सबको बिजौरे और त्रिफलाके रसमें खरलकर कंकोलके बराबर गोलियां बनावे. १ गोली सहतके साथ भक्षण करे तो घुटनोंका फटना, सर्वांगका फटना, इत्यादि सर्व साध्यासाध्य रोगोंको दूर करे. और रुधिरके विकारोंको दूरकरे ।

वातरक्तान्तकोरसः

गंधकंपारदंलौहंशिलातालंघनन्तथा ।
शिलाजतुपुरंशुद्धंसमभागन्तुचूर्णयेत् ॥
श्वेतापराजितादार्वीवागुजीचित्रकंतथा ।
पुनर्नवादेवकाष्ठंत्रिफलाव्योषवेल्लकम् ॥
चूर्णमेषांपृथक्तुल्यंसर्वमेकत्रकारयेत् ।
त्रिफलाभृंगराजस्यरसेनैवत्रिधात्रिधा ॥
भावयेद्भक्षयेत्पश्चात्चणमात्रंदिनेदिने ।
ततोनुपाननिंबस्यपत्रंपुष्पंत्वचंसमम् ॥
शाणमात्रंघृतैःकुर्य्यात्सर्ववातविकारनुत् ।
वातरक्तंमहाघोरंगंभीरंसर्वजंचयेत् ॥
सर्वोपद्रवसंयुक्तंसाध्यासाध्यंनिहन्त्यलम् ।

अर्थ-गंधक, पारा, लोहभस्म, मनसिल, हरिताल, अभ्रक, शिलाजीत, और शुद्ध गूगल, इनको समान भाग ले चूर्ण करे फिर सफेद उपलसिरी, दारुहल्दी, बावची, चीतेकी छाल, सांठकीजड, देवदारु, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल और वायविडंग इन सबको समान भाग ले और सबको खरल कर त्रिफला और भांगरेके रसकी तीन २ भावना देकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. १ गोली नित्य खाय ऊपरसे नीमके पत्ते, फूल, छाल इनको बराबर २ ले चूर्णकर ४ मासेके अनुमान घीके साथ भक्षण करे तो सर्व प्रकारके वातविकार, सर्व प्रकारके घोर वातरक्त, तथा साध्यासाध्य वातरक्त दूर हो ।

तालभस्म.

हरितालंपलंशुद्धंतथाकर्पंविपस्यच ।
श्वेतांकोटरसेनैवद्वयमेकत्रखल्लयेत् ॥
पलाशभस्मद्विपलंनिधायस्थालिकोपरि ।
तद्भस्मोपरितालस्यगोलकंस्थापयेत्सुधीः ॥
तस्योपरिअपामार्गभस्मंदद्यात्पलत्रयम् ।
स्थालीमुखेशरावंचदद्याद्यत्नेनलेपयेत् ॥
लेपयित्वाततश्चूल्यामहोरात्रंपचेद्भिपक् ।
ततस्तुजायतेभस्मशुद्धकर्पूरसन्निभम् ॥
गुंजात्रयंततोभक्ष्यमनुपानंविशेषतः ।
वातरक्तंश्वकुष्ठश्चदद्रुविस्फोटकापचीम् ॥

विचर्चिकांचर्मदलंवातरक्तंचशोणितम् ।
रक्तपित्तंतथाशोथंगलित्कुष्टंविनाशयेम् ॥
हलीमकंतथाशूलमग्निमान्द्यमरोचकम् ।

अर्थ-शुद्ध हरिताल टके भर, विष १ तोले, दोनोंको सफेद अंकोलके रसमें खरल करे, फिर एक हांडीमें दो टके भर ढाककी भस्म भरके बीचमें घुटी हुई हरितालके गोलेको रखे ऊपरसे ३ पल ओंगाकी राख भरकर खूब दबा देवे. फिर उस हांडीके मुखको शरावसे मंदकर कपरमिट्टीसे ल्हेस देवे, जब सुखजाय तब चूल्हेपर चढाय १ दिन रातकी अग्नि देकर पचावे इस हरितालकी कपूरके समान शुद्धभस्म होवे इसमेंसे ३ रत्ती अनुपानके साथ देवे तो वातरक्त, कोढ, दाद, विस्फोटक, अपची, विचर्चिका, चर्मदल, वातरक्तका रुधिर, रक्तपित्त, सूजन, गलित्कुष्ठ, हलीमक, शूल, मन्दाग्नि और अरुचिको दूर करे।

महातालेश्वरोरसः

तथासिद्धेनतालेनगन्धतुल्येनमेलयेत् ।
द्वयोस्तुल्यंजीर्णताम्रंवालुकायंत्रगंपचेत् ॥
अयंतालेश्वरोनामरसःपरमदुर्लभः ।
हन्यात्कुष्ठानिसर्वाणिवातरक्तमथापिच ॥
शूलमष्टविधंचित्ररसस्तालेश्वरोमहान् ।

अर्थ-शुद्ध हरितालकी भस्ममें बराबरकी गंधक मिलावे और दोनोंकी बराबर तांबेकी भस्म मिलाकर खरल करे, और वालुकायंत्रमें पचावे तो यह परम दुर्लभ तालेश्वर बने. यह सर्व प्रकारके कुछ, वातरक्त, ८ प्रकारका शूल, और चित्रकुष्टको दूर करे ।

विश्वेश्वरोरसः

रसाद्दशविषात्पंचगंधकाद्दशशोधिताद् ।
तुत्थाद्दशपलाशस्यवजिभ्यःपञ्चकारयेत् ॥
क्षुद्राश्वमारधत्तूरंकरहाटकमीलितः ।
दशकंदशकंकुर्य्याच्छोपयित्वाजटात्वचः ॥
दशकंदशकंदत्वाकुचिलाद्दशनूतनात् ।
भल्लातकाच्चदशकंचूर्णयित्वाभिपक्ततः ॥
सुदिनेचबलिंदत्वावैद्यपूजापरायणः ।
रक्तिकात्द्वितयंदद्यात्सहतेयदिवात्रयम् ॥
वातरक्तंज्वरंकुष्टंगजचर्मसौख्यदम् ।
अजानुस्फुटितंहन्तिविषजंवास्थिनिःसृतम् ॥
कुष्ठमष्टादशविधमग्निमान्द्यमरोचकम् ।
विश्वेश्वरोरसोनामविश्वनाथेनभाषितः ॥

अर्थ-शुद्धपारा १० तोले, शुद्धविष ५ तोले, शुद्धगंधक १० तोले, नीलाथोथा १० तोले, ढाकके बीज १५ तोले, कटेरी, कनेर, धतूरा, अकरकरा, और नलिपुष्प प्रत्येक १० तोले. नवीन कुचला और भिलाए दस १ तोले सबको एकत्र कर चूर्ण करे, फिर उत्तम दिनमें इष्टदेवको बलिदान दे, वैद्यका पूजनकर दो वा ३ रत्ती देवे तो वातरक्त, ज्वर, कोढ, गजचर्म, घोट्ट ओंतकका फटना, विषजन्य विकार, हड्डीका निकलना, १८ प्रकारका कोढ, मंदाग्नि और अरुचिको दूर करे यह विश्वेश्वर नामक रस है।

वक्ष्यतेकुष्ठरोगेयदौषधंभिषजांवरैः ।
वातरक्तेप्रयुंजीतकुर्याच्चरक्तमोक्षणम् ॥

अर्थ-जो औषधि कुष्टरोगपर कही है उसको वातरक्तपर देना और रुधिर निकालना चाहिये ।

अथ उरुस्तंभाधिकारः

गुंजाभद्ररसः

निष्कत्रयंशुद्धसूतंनिष्कद्वादशगंधकम् ।
गुंजाबीजंचपट्निष्कंजयन्तीनिंबबीजकम् ॥

प्रत्येकंनिष्कमात्रन्तुनिष्कंजैपालबीजकम् ।
जयाजंबीरधत्तूरकाकमाचीद्रवैर्दिनम् ॥
भावयित्वावटींकुर्यात्चतुर्गुञ्जाप्रमाणतः ।
गुञ्जाभद्ररसोनामाहिंगुसैंधवसंयुतः ॥
शमयत्युल्बनंदुःखमूरुस्तंभंसुदारुणम् ।

अर्थ—शुद्धपारा ३ निष्क, गंधक १२ निष्क, घूंघचीके बीज ६ निष्क, अरनी, नीमके बीज, प्रत्येक १ निष्क (१६ मासे) लेवे. जमालगोटा १६ मासे, सबको खरलकर अरनी, जंभीरी, धतूरा और मकोय इनके रसमें एक २ दिन खरलकर चार २रत्तीकी गोलियां बनावे. यह गुञ्जाभद्र नामक रस हींग और सहतके साथ लेनेसे घोर उरुस्तंभको दूर करे।

शिलाजतुगुग्गुलंवापिप्पलीमथनागरम् ।
उरुस्तंम्भेपिबेन्मूत्रैर्दशमूलीरसेनवा ॥
प्लीहाधिकारेकथितंरसेन्द्रंवारिशोषणम् ।
उरुस्तंभेप्रयुञ्जीतचान्यद्वायोगवाहिकम् ॥

अर्थ—शिलाजीत, गूगल, पीपल, अथवा सोंठ इनमेंसे किसी एकको पीसकर गोमूत्रके साथ पीवे, अथवा दशमूलके काढेके साथ पीवे अथवा ल्पीहाधिकारमें जो वारिशोषण रस कहा है उसको सब उरुस्तंभ रोगोंमें देवे अथवा अन्य योगवाही रसको देवे ।

आमवाताधिकारः

आमवातारिवटीः

रसगन्धकलोहाभ्रंतुत्थंटंकणसैन्धवम् ।
समभागंविचूर्ण्याथचूर्णाद्द्विगुणगुग्गुलुः ॥
गुग्गुलोःपादिकंदेयंत्रिवृत्तामूलवल्कलम् ।
तत्समंचित्रकंदेयंघृतेनपरिमर्दयेत् ॥
खादेन्माषद्वयंचास्यत्रिफलाचूर्णयोगतः ।
आमवातारिवटिकापाचिकाभेदिकामता ॥
आमवातंनिहन्त्याशुगुल्मशूलोदराणिच ।
यकृत्प्लीहोदराष्ठीलाकामलापाण्डुरोचकान्
ग्रन्थिशूलंशिरःशूलंवातरोगश्चगृध्रसीम् ।
गलगण्डंगण्डमालांकृमिकुष्ठभगन्दरान् ॥
विद्रधिमंत्रवृद्धिश्चअर्शांसिगुदजानिच ।
आमवातारिवटिकापुरेशानेनचोदिता ॥

अर्थ—पारा, गंधक, लोह, अभ्रक, लीलाथोथा, सुहागा और सैंधानिमक समान भाग ले चूर्णकर चूर्णसे दूना गूगल मिलावे और गूगलकी चतुर्थांश नीमकी छाल, और इतनीही चित्रक मिलाकर घीमें खरल करे, फिर दो मासेके अनुमान त्रिफलाके चूर्णके साथ खाय. यह आमवातारि गुटिका पाचनी और भेदनी है. आमवात गोला, शूल, उदररोग, यकृति, प्लीहा, अष्ठीला, कामला, पाण्डु, अरुचि, गांठोंका दूखना, मस्तकपीडा, वातरोग, गृध्रसी, गलगंड, गंडमाला कृमि, कुष्ठ, भगन्दर, विद्रधि, अंत्रवृद्धि, और बवासीर इन सब रोगोंको दूर करे ।

अपरामवातारिवटिका.

रसगन्धौवरावन्हिगुग्गुलःक्रमवर्द्धितः ।
एतदेरण्डतैलेनमर्दयेदतिचिक्कणम् ॥
कर्षोऽस्यैरण्डतैलेनहन्त्युष्णजलपायिनः ।
आमवातमतीवोग्रंदुग्धंमौद्गादिवर्जयेत् ॥

अर्थ—पारा गंधक, हरड, बहेडा, आमला, चीतेकीछाल, और गूगल इनको क्रमसे बढती भाग लेवे. और सबको पीसकर अंडीके तेलसे खरल कर एक २ तोलेकी गोलियां बनावे. और एक गोली अंडीके तेलके साथ लेवे और ऊपरसे गरम जल पीवे, तो यह आमवातारि गुटिका आमवातको दूर करे, इसपर दूध

और मूंगके पदार्थ वर्जित हैं ।

आमवातेश्वरोरसः

शुद्धगन्धंपलार्द्धंचमृतताम्रंचतत्समं ।
ताम्रार्द्धंपारदंशुद्धंरसतुल्यंमृतायसम् ॥
सर्वंपंचागुलेनैवभावयेच्चपुनःपुनः ।
संचूर्ण्यपंचकोलोत्थैःक्राथैःसर्वंविभावयेत् ॥
रौद्रेविंशतिवारांश्चगुडूचीनांरसैर्दश ।
भृष्टटंकणचूर्णेनतुल्येनसहमेलयेत् ॥
टंकणार्द्धंविडंदेयंमरिचंविडतुल्यकम् ।
तिंतिडीक्षारतुल्यंचसूततुल्यंचदन्तिकम् ॥
त्रिकटुत्रिफलंचैवलवंगंचार्द्धभागकम् ।
आमवातेश्वरोनामविष्णुनापरिकीर्त्तितः ॥
महाग्निकारकोह्येपआमवातान्तकोमतः ।
स्थूलानांकर्पणःश्रेष्ठःकृशानांस्थौल्यकारकः
अनुपानविशेषेणसर्वरोगविनाशनः ।
अनेनसदृशोनास्तिवन्हिदीप्तिकरोमहान् ॥
गुल्मार्शोग्रहणीदोपशोथपाण्डुरुजापहः ।

अर्थ–शुद्ध गंधक और तांबेकी भस्म दो २ तोले, शुद्धपारा और लोहभस्म एक २ तोले, सबको कूटपीस अंडके रससे ७ वार खरल करे, फिर पंचकोलके काढेकी २० भावना धूपमें रखकर देवे, गिलोयके रसकी १० भावना दे, फिर भुने सुहागेका चूर्ण ६ तोले, वायविडंग, कालीमिरच, तिंतडीककां खार, प्रत्येक तीन २ तोलेभर जमालगोटा, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, वहेडा, और आंवला प्रत्येक ६ मासे ले सबको कूटपीस गोलियां बनावे, यह आमवातेश्वर रस विष्णु भगवानने कहा है. अत्यन्त अग्नि बढावे, आमवातका नाश करे, पुष्ट पुरुषोंको कृश करे, और कृशोंको पुष्ट करे, यह अनुपानके योगसे सब रोगोंको दूर करता है. अग्निको दीप्ति करनेवाला इसके शिवाय कोई योग नहीं है, यह गोला, बवासीर, संग्रहणी, सूजन और पाण्डुरोगको दूर करता है ।

वृद्धदाराद्यंलौहम्.

वृद्धदारत्रिवृद्दन्तीगजपिप्पलिमानकैः ।
त्रिकत्रयसमायुक्तैरामवातनिकृन्तयः ॥
सर्वानेवगदान्हन्तिकेसरीकरिणंयथा ।

अर्थ–विधायरा, निसोथ, दन्ती, गजपीपल, मानकन्द, त्रिकुटा, त्रिफला और त्रिमद इन सबको समान भाग ले और सबको बराबर लोहभस्म मिलावे, तो यह सर्व रोगोंको दूर करे ।

शिवागुग्गुलुः

शिवाविभीतामलकीफलानांप्रत्येकशोमुष्टिचतुष्टयञ्च । तोयाढकेतत्क्वथितंविधायपादावशेषेत्ववतारणीयम् ॥ एरण्डतैलद्विपलंनिधायपिचुत्रयंगंधकनामकस्य । पचेत्पुरस्यात्रपलद्वयञ्चपाकावशेषेचविचूर्ण्यदद्यात् ॥ रास्नाविडंगमरिचंकणाचदन्तीजटानागरदेवदारु । प्रत्येकशःकोलमितंतथैषांविचूर्ण्यनिःक्षिप्यनियोजयेथ ॥ आमवातेकटीशूलेगृध्रसीक्रोष्टुशीर्षके । नचान्यदस्तिभैषज्यंयथायंगुग्गुलुःस्मृतः ॥

अर्थ–हरड, वहेडा और आमला प्रत्येक चार २ पल ले सबका चार सेर जलमें काढा करे, जब चतुर्थांश जल रहे तब उतार लेवे. फिर इसमें दो पल अंडीका तेल मिलावे, फिर ६ तोले गंधक और दो पल गूगल पूर्वोक्त काढेमें डालके पचावे, जब पाक होजावे तब रास्ना, वायविडंग, कालीमिरच, पीपल, दंती, जटामांसी, सोंठ और देवदारु प्रत्येक एक तोला ले सबको एकत्रकर गोलियां बनावे.

यह शिवागूगल आमवात, कमरकी बादी, गृध्रसी, क्रोष्टुशीर्षक इन रोगोंको दूर करे. इस गूगलके बराबर आमवातमें पथ्य कोई और दूसरी औषधि नहीं है।

आमवातगजसिंहमोदकः

शुंठीचूर्णस्यप्रस्थैकंयमान्याश्चपलाष्टकम् ।
जीरकस्यपलेद्वेचधन्याकश्चपलद्वयम् ॥
पलैकंशतपुष्पायालवंगस्यपलंतथा ।
टंकणस्यपलंभृष्टंमरिचस्यपलानिच ॥
त्रिवृतात्रिफलाक्षारपिप्पलीनांपलंतथा ।
शठ्येलातेजपत्रश्चचविकानांपलंतथा ॥
अभ्रंलौहंतथावंगंप्रत्येकश्चपलंपलम् ।
एतेषांसर्वचूर्णानांखण्डंदद्यात्गुणत्रयम् ॥
घृतेनमधुनामिश्रंकर्षमात्रन्तुमोदकम् ।
एकैकंभक्षयेत्प्रातःघृतंचानुपिबेत्पयः ॥
शूलघ्नोरक्तपित्तघ्नश्चाम्लपित्तविनाशनः ।
आमवातकुलध्वंसीकेसरीविधिनिर्मितः ॥

अर्थ–सोंठका चूर्ण- १ सेर, अजमायन ३२ तोले, जीरा और धनियां आठ २ तोले, सौंफ, लौंग, भुनासुहागा, और कालीमिरच प्रत्येक ४ तोले, निसोथ, त्रिफला, जवाखार, और पीपल प्रत्येक चार तोले ले. कचूर, इलायची, तेजपात, चव्य, प्रत्येक ४ तोले अभ्रक, लोह, वंग प्रत्येक ४ तोले ले चूर्णकर चूर्णसे तिगुनी खांड मिलावे. इसको सहत और घीमें मिलाकर १ तोले नित्य प्रातःकाल भक्षण करे, ऊपरसे घी और दूध मिलाकर पीवे तो शूल, रक्तपित्त, अम्लपित्त और आमवात इन सब रोगोंका नाश करे. इस आमगजसिंहमोदकमें प्रथम खांड जल डालके अग्निपर पाक करे. फिर चूर्णादिक सब मिलाय लड्डू बांध लेवे सहत, घीभी मिलावे।

रामबाणोरसोदेयोयोगवाहिरसेन्द्रकं ।
आमवातेविधीयन्तेसानुपानेप्रयत्नतः ॥

अर्थ–इस आमवात रोगमें रामबाण रस तथा योगवाही रस अनुपानके साथ देवे, तथा वैद्यरहस्य ग्रन्थमें जो आमवातारि गुटका लिखा है उसे देवे।

अथ शूलरोगचिकित्साः

सप्तामृतलौहम्.

मधुकंत्रिफलाचूर्णमयोरजसमलिहेत् ।
मधुसर्पियुतंसम्यक्गव्यक्षीरंपिबेदनु ॥
छर्दिसतिमिरंशूलमम्लपित्तंज्वरारुचिम् ।
मूत्रकृच्छ्रंतथामेहंहन्यादेतन्नसंशयः ॥

अर्थ–मुलहटी और त्रिफला बराबर लेकर चूर्ण करे और चूर्णकी बराबर लोहभस्म मिलाकर सहत और घीतेके साथ चाटे ऊपरसे गौका दूध मिश्री मिलाकर पीवे तो वमन तिमिर शूल, अम्लपित्त, ज्वर, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह इन सबको दूर करे।

त्रिफलालौहम्.

तीक्ष्णायश्चूर्णसंयुक्तंत्रिफलाचूर्णमुत्तमम् ।
क्षारेणपाययेद्धीमान्सद्यःशूलनिवारणम् ॥

अर्थ–खेडीलोहकी भस्ममें त्रिफलाका चूर्ण मिलाय दूधके साथ पीवे तो तत्काल शूलरोग दूर हो।

चतुःसमलौहम्.

अभ्रंताम्रंरसंलौहंगंधकंसंस्कृतंपलम् ।
सर्वमेतत्समाहृत्ययत्नतःकुशलोभिषक् ॥
आज्यंपलेद्वादशकेदुग्धेयत्तरसंख्यके ।
पक्त्वातत्रक्षिपेच्चूर्णसुपूतंघनवाससा ॥
विडंगत्रिफलावन्हित्रिकटूनांतथैवच ।
पिप्पलीपलोन्मितानेतानथसंमिश्रतान्नयेत् ॥

ततःपिष्ट्वाशुभेभाण्डेस्थापयेच्चविचक्षणः ।
आत्मनःशोभनेचान्हिपूजयित्वारविंगुरुम्॥
घृतेनमधुनालोड्यभक्षयेन्मापकादिकम् ।
अष्टौमापान्क्रमेणैववर्द्धयेच्चसमाहितः ॥
अनुपानंमयोक्तन्यंनारिकेलजलंपयः ।
जीर्णेलोहितशाल्यन्नंमुद्गमांसरसंतथा ॥
भक्षयेद्घृतसंयुक्तंसद्यःशूलाद्विमुच्यते ।
हृच्छूलंपार्श्वशूलञ्चआमवातंकटीग्रहम् ॥
गुल्मशूलंशिरःशूलंयोगेनानेननाशयेत् ।

अर्थ–अभ्रक, तांबेकी भस्म, पारा, गंधक और लोहभस्म प्रत्येक ४ तोले ले. घी ४८ तोले, दूध १२ पल, दोनोंको पचाके आगे लिखे चूर्णको कपरछन कर डाले, वायविडंग, त्रिफला, चीतेकी छाल, और त्रिकुटा प्रत्येक ४ तोले ले मिलाय सबको एकत्र कर उत्तम पात्रमें रखछोडे फिर शुभदिनमें सूर्य और गूरूका पूजन कर घृत और सहतके साथ मिलाके १ मासेके अनुमान खाय, फिर प्रतिदिन एक २ मासे बढाता जाय और इसके ऊपर नारियलका जल पीवे. जब यह पचजावे तब लाल चांवलोका भात, मूंग, मांसरस, इनमे घी मिलाके भोजन करे तो तत्काल शूलसे छूट जावे, हृदयका शूल, पीटका शूल, आमवात, कमरका रहजाना, गोला, और मस्तकशूलको यह चतुःसमलोह नाश करे।

पंचात्मकोरसः

मृतसूताभ्रकंचाम्लवेतसंताम्रगंधकम् ।
त्रिपंफलत्रयाचूर्णंतुल्यंमर्द्यंदिनावधि ॥
जयन्तीमुण्डिरिवासावृहतीचगुडूचिका ।
महाराष्ट्रीजम्बुरसैस्तथानीलोत्पलस्यच ॥
प्रतिद्रावैर्दिनंभाव्यंततःसंशोष्ययत्नतः ।
अर्द्धांशंपञ्चलवणंदत्वार्द्रकरसेनच ॥
दिनंपेष्यंततःकुर्य्यात्वटिकांचणसन्निभाम्।
प्रातर्मध्यान्हरात्रौचभक्षयेद्वटिकात्रयम् ॥
माषेक्षुपिष्टगुर्वन्नंगोपयश्चहितंतथा ।
सेवेन्नवातशूलार्त्तश्चायंपञ्चात्मकःस्मृतः ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक, अमलवेत, ताम्रभस्म, गंधक, विष, और त्रिफलाको एकत्र कर खरल करे. अरनी, गोरख मुंडी, अडूसा, कटेरी, गिलोय, ब्रह्मदंडी, जामुन और नील कमल प्रत्येकके रसमें एक २ दिन खरलकर सुखालेवे फिर सर्व चूर्णोंसे आधे पांचों निमक मिलावे, और अदरखके रसमें १ दिन घोट चनेकी बराबर गोलियां बनावे, एक २ गोली प्रातःकाल मध्यान्ह और सायंकालमें भक्षण करे इस पर उडदके पदार्थ, इख, पिष्टपदार्थ, भारीअन्न और गौका दूध वायशूलवाला मनुष्य सेवन न करे तो वायशूलको दूर करे.

धात्रीलौहम्.

कुडवंशुद्धमण्डूरंयवश्चकुडवंतथा ।
पाकार्थञ्चजलंप्रस्थंचतुर्भागावशेषितम् ॥
शातावरीरसस्याष्टावामलक्यारसस्यच ।
तथादधिपयोभूमिकुष्माण्डस्यचतुःपलम् ॥
चतुःपलमिक्षुरसंदद्यात्तत्रविचक्षणः ।
प्रक्षिपेत्जीरकंधान्यंत्रिजातंकरिपिप्पली ॥
मुस्तंहरीतकीचैवअभ्रंलौहंकटुत्रयम् ।
रेणुकात्रिफलाचैवतालीशंस्वर्णकेशरम् ॥
कटुकंमधुकंरास्नाचाश्वगंधाचचन्दनम् ।
एतेप्रांकार्पिकंभागंचूर्णयित्वाविनिक्षिपेत् ॥
भोजनाद्यवसानेचमध्येचैवसमाहितं ।
तोलैकंभक्षयेन्नित्यंअनुपानंपयस्तथा ॥
शूलमष्टविधंहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा ।
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसन्निपातकम् ॥
परिणामसमुत्थञ्चअन्नद्रवभवंतथा ।

सर्वशूलहरंश्रेष्ठंधात्रीलौहमिदंशुभम् ॥

अर्थ—प्रथम पावभर जवोंमें सेरभर जल डालकर काढा करे जब चतुर्थांश बाकी रहे तब उसमे पावभर शुद्ध मंडूर डाले और औटावे फिर शतावर और आमलोंका रस आठ २ पल, दही, दूध, भूयकुमडेकारस प्रत्येक ४ पल लेवे. और ईखका रस ४ पल मिलाकर जीरा, धनियां, त्रिजातक, गजपीपल, नागरमोथा, हरड, अभ्रक, लोहभस्म, त्रिकुटा, रेणुका, त्रिफला, तालीसपत्र, नागकेशर, कुटकी, महुआ, रास्ना असगंध, और चन्दन प्रत्येक एक तोले ले, सबका चूर्णकर पूर्वोक्त क्वाथमें मिलाके एक २ तोलेकी गोलियां बनावे, एक गोली भोजनके पश्चात् तथा मध्यमें सेवन करे, और ऊपरसे दूध पिवे तो ८ प्रकारके शूल, साध्यासाध्य शूल, वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, तथा परिणाम शूल और अन्नद्रवसे उत्पन्न सर्व प्रकारके शूल दूर हो यह धात्रीलोह कहाता है ।

शूलराजलौहम्.

कर्षैकंकान्तलौहस्यशुद्धमभ्रंपलंतथा ।
सितायाश्चपलञ्चैकंमधुसर्पिस्तथैवच ॥
सर्वमेकीकृतंपात्रेलौहदण्डेनमर्दयेत् ।
त्रिकुटात्रिफलामुस्तंविडंगंचव्यचित्रकम् ॥
प्रत्येकंतोलकंमानंचूर्णितंतत्रदापयेत् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायशिशिराम्ब्वनुपानतः ॥
सर्वदोषभवंशूलंकुक्षिशूलंचयत्भवेत् ।
हृच्छूलंपार्श्वशूलंचअम्लपित्तंचनाशयेत् ॥
अर्शांसिग्रहणीदोषंप्रमेहांश्चविषूचिकाम् ।
शूलराजमिदंलौहंहरेणपरिनिर्मितम् ॥

अर्थ—कांतलोह १ तोले, शुद्धअभ्रक ४ तोले, मिश्री ४ तोले, सहत और घी चार २ तोले. सबको लोहके पात्रमें डालके लोहके मूसलेसे खरल करे. फिर त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, वायविडंग, चव्य, चीता, प्रत्येक एक तोले सबको एकत्रकर किसी उत्तम पात्रमें भरकर रखछोडे, प्रातःकाल उठके शीतलजलके साथ भक्षण करे तो सर्व दोष जन्य शूलोको दूरकरे कुक्षिशूल, हृदयका शूल, पसवाडेका शूल, अम्लपित्त, बवासीर, संग्रहणी, प्रमेह, और विशूचिका (हैजा) इन सब रोगोंको यह शूलराज लोह दूरकरता है ।

विद्याधराभ्रम्.

विडंगमुस्तत्रिफलागुडूचीदन्तीत्रिवृद्वन्हिकटुत्रयश्च.। प्रत्येकमेषांपिचुभागचूर्णंपलानिचत्वार्य्ययसोमलस्य ॥ गोमूत्रशुद्धस्यपुरातनस्ययद्वायसस्तानिशशिवाटिकायाः । कृष्णाभ्रचूर्णस्यपलंविशुद्धंनिश्चन्द्रकंशुद्धमतीवसूतात् ॥ पादोनकर्षस्वरसेनखल्लेशिलातलेथानकुनीदलस्य । संमर्द्यपश्चादतिशुद्धगन्धपाषाणचूर्णेनपिचुन्मितेन ॥ युक्त्याततःपूर्वरजांसिदत्वासर्पिर्मधुभ्यामवमर्द्यरत्नात् । निधापयेत्स्निग्धविशुद्धभाण्डेततःप्रयोज्यास्यरसायनस्य ॥ प्राङ्माषकोवाप्यथवाद्वितीयोगव्यंपयोवाशिशिरंजलम्वा । पिबेदयंयोगवरःप्रभूताकालप्रणष्टानलदीपकश्च ॥ रोगंनिहन्यात्परिणामशूलंशूलंतथान्नद्रवसंज्ञकंच । यक्ष्माम्लपित्तंग्रहणीप्रवृद्धांजीर्णज्वरंलोहितपित्तकञ्च ॥ नश्यन्तितेयानिनहन्तिरोगान्योगोत्तमःसम्यगुपास्यमानः ।

अर्थ—वायविडंग, नागरमोथा, त्रिफला, गिलोय, दन्ती, निसोथ, चीतेकीछाल, और त्रिकुटा प्रत्येक १ तोले ले गोमूत्रमें सुधी पुरानी कीटी ४ तोले, अथवा लोहके पत्र ४

पल लेवे काले अभ्रककी निश्चन्द्र भस्म ४ तोले, शुद्धपारा पौन तोले, उसको मंडूकपर्णी-के पत्तोंके रसमें शुद्धकर फिर एक तोले गंधक मिलाके पूर्वोक्त विडंगादि चूर्ण मिलाके उत्तम घीके चिकने बासनमें रखछोडे फिर इसमेंसे दो मासे रस लेके सहत और घी मिलाय लोहेके खरलमें लोहेके मूसलेसे खरलकर बला-बल देखकर एक या दो मासे देवे और इसके ऊपर गौका दूध या शीतलजल चौसठगुना पीना चाहिये तो यह योगवर बहुत कालकी नष्ट जठराग्निको उद्दीपन करे. परिणामशूल, शूल, अन्नद्रव संज्ञक, खई, अम्लपित्त, संग्र-हणी, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, इत्यादि रोगोंको दूर करे ऐसा कौनसा रोग हैं जिसको यह उत्तम योगोत्तम दूर नहीं करसके ।

बृद्धविद्याधराभ्रम्.

शुद्धसूतंतथागन्धंफलत्रयकटुत्रयम् ।
विडंगमुस्तकञ्चैवत्रिवृत्तादन्तिचित्रकम् ॥
आखुपर्णीग्रन्थिकञ्चप्रत्येकंकर्षसम्मितम् ।
पलंकृष्णाभ्रचूर्णस्यमृतायश्चचतुर्गुणम् ॥
घृतेनमधुनापिष्ट्वावटिकांकोलसम्मितम् ।
एकैकांवटिकांखादेत्प्रातरुत्थायनित्यशः ॥
अनुपानंगवांक्षीरंनीरंवानारिकेलजम् ।
सर्वशूलंनिहन्त्याशुवातपित्तभवन्तथा ॥
एकजंद्वंद्वजञ्चैवतथैवसान्निपातकम् ।
परिणामोद्भवंशूलमामवातोद्भवंतथा ॥
कार्श्यवैवर्ण्यमालस्यंतन्द्रारुचिविनाशनम् ।
साध्यासाध्यंनिहन्त्याशुभास्कारस्तिमिरंयथा

अर्थ—शुद्धपारा, शुद्धगंधक, त्रिफला, त्रि-कुटा, वायविडंग, नागरमोथा, निसोथ दंती, चीतेकीछाल. मूसाकर्णी, पीपलामूल, प्रत्येक एक तोले, काली अभ्रककीभस्म ४ तोले, और लोहभस्म १६ तोले, सबको सहत और घृत-के साथ घोटकर बेरके बराबर गोलियां बनावे, एक गोली नित्य प्रातःकाल खाय ऊपरसे गौका दूध पिये अथवा नारियलका जल पीवे तो सर्व प्रकारके शूल, वातजन्य, पित्तजन्य, एकदोषज, द्विदोषज, तथा सन्नि-पातजन्य, परिणामशूल, आमवातका शूल, दे-हकी कृशता, विवर्णता, आलस्य, तन्द्रा, अ-रुचि इत्यादि साध्यासाध्य रोगोंको दूर करे ।

सर्वांगसुंदरोरसः

शुद्धंसूतंतथाताम्रंशिलामाक्षिकतालकम् ।
रजतंस्वर्णवंगञ्चलौहमभ्रंसनागरम् ॥
चूर्णयेत्पंचलवणंदेयंसर्वन्तुतुल्यकम् ।
गन्धकंमिश्रयेत्सर्वैरसैरेषांविभावयेत् ॥
शुंठीजयन्तीविजयामहाराष्ट्रिकधूर्त्तजैः ।
सर्वांगसुन्दरोनाम्नारसोयंविष्णुनिर्म्मितः ॥
खादेदेरण्डशुंठीभ्यांमाषमात्रंदिनेदिने ।
कफवातामयंहन्तिचानुपानंवदाम्यहम् ॥
व्योसंसौवर्चलंहिंगुंकरंजबीजसंयुतम् ।
पिबेदुष्णाम्बुनाचानुसर्वशूलनिकृन्तनम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, ताम्रभस्म, मनसिल, सो-नामक्खी, हरिताल, रूपरस, सुवर्णभस्म, बंग, लोहभस्म, अभ्रक, सोंठ, कालानिमक, सैंधा-निमक, कचियानिमक, खारीनिमक, और समु-द्रका निमक इन सबको बराबर लेवे, और सबकी बराबर गंधक मिलावे सबको खरलकर सोंठ, अरनी, भांग, जलपीपल, और धतुरेके रसोंकी पृथक् २ भावना देवे इस सर्वांगसु-न्दररसको तयार करके १ मासे अंड और सोंठके काढेसे नित्य खाय तो कफवातके रोगोंको दूर करे. इसके अनुपानको मैं कह-ताहूं सोंठ, मिरच, पीपल, कालानिमक, हींग

और कांजाको गरमजलके साथ पीवे तो यह सर्व शूलमात्रको हरण करे ।

शूलवज्रिणीवटिका.

रसगंधकलोहानांपलार्द्धेनसमन्वितम् ।
त्रिफलारामठंशुल्वंत्रिकटुशठिटंकणम् ॥
पत्रंत्वगेलातालीशजातीफललवंगकम् ।
यमानीजीरकंधान्यंप्रत्येकंतोलकंशुभम् ॥
माषैकावटिकाकार्य्याछागीदुग्धेनवापुनः ।
एकैकाभक्षिताचेयंवटिकाशूलवज्रिणी ॥
शूलमष्टविधंहन्तिप्लीहगुल्मोदरन्तथा ।
आम्लपित्तामवातंचपाण्डुत्वंकामलांतथा ॥
शोथंगलग्रहंवृद्धिंश्लीपदंसभगंदरम् ।
वृद्धेबलकरीचैवमन्दाग्नेरपिदीपनी ॥

अर्थ-पारा, गंधक और लोहभस्म प्रत्येक दो पल लेवे, त्रिफला, हींग, ताम्रभस्म, त्रिकुटा, कचूर, सुहागा, पत्रज, दालचीनी, इलायची, तालीसपत्र, जायफल, लौंग, अजवायन, जीरा और धनियां प्रत्येक एक तोले, सबको कूटपीस एक एक मासेकी गोलियां बनावे, एक गोली बकरीके दूधसे लेवे, तो आठ प्रकारके शूल, प्लीह, गोला, उदर, अम्लपित्त, आमवात, पाण्डुरोग, कामला, सूजन, गलग्रह, अंडवृद्धि श्लीपद, और भगंदरको दूर करे वृद्धको बल दे, मंदाग्निको दीपन करे ।

त्रिपुरभैरवः

भागोरसस्याश्महेन्नभागोग्राह्योतियत्नतः ।
तयोर्द्वादशभागानिताम्रपत्राणिलेपयेत् ॥
पचेत्शूलहरःसूतोभवेत्त्रिपुरभैरवः ।
माषोमध्वाज्यसंयुक्तोदेयोऽस्यपरिणामजे ॥
अन्येत्वेरण्डतैलेनहिंगुत्रययुतोरसः ।

अर्थ-पारा १ भाग, गंधक १ भाग, सुवर्ण १ भाग, सबसे बारह गुने कंटकवेधी ताम्रपत्र ले उनपर पारे आदिकी पिट्ठीका लेपकरि यंत्रमें रखके पचावे तो त्रिपुरभैरवरस सिद्ध हो, १ मासे सहत घीके साथ दे, अथवा अंडीके तेल और हिंगुत्रयके साथ देवे तो परिणामशूल दूर हो ।

अग्निमुखः

रसबलिगगनार्कवेतसाम्लंविषंस्यात् ।
सवरमिहपृथक्स्याद्भवयेदूषसमेतैः ॥
कनकभुजगवल्लीकण्टकारीजयाद्भिः ।
कमलसलिलवासामुष्टिवज्राम्बुपूरैः ॥
अरुणसदृशपाकैर्मातुलुंगश्चयोज्यः ।
पुटगणइहतुल्योभावयेदार्द्रकाद्भिः ॥
दहनवदननाम्नावल्लमात्रोनिहन्ति ।
प्रबलसकलशूलंतद्विकारानशेषान् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, अभ्रक, ताम्र, अमलवेत, सिंगियाविष और त्रिफला प्रत्येक समान भाग ले. सबको कूटपीस धतूरा, पान, कटेरी अरनी, कमल, नेत्रवाला, अडूसा, कुचला, थूहर और बिजौरेकी पृथक् २ भावना देवे और सबकी बराबर अदरखके रसकी देवे. इस अग्निमुख रसको तीन रत्ती सेवन करनेसे संपूर्ण प्रबल शूलों और शूलके विकार दूर हो।

शूलगजकेसरी.

शुद्धंसूतंद्विधागंधंयामैकंमर्दयेद्दृढम् ।
द्वयोस्तुल्यंशुद्धताम्रंसंपुटेसन्निवेशयेत् ॥
ऊर्ध्वाधोलवणंदत्वामृद्भाण्डेस्थापयेद्भिषक्।
ततोगजपुटंदद्यात्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
संपुटंचूर्णयेत्श्लक्ष्णंपर्णखण्डेद्विगुंजकम् ।
भक्षयेत्सर्वशूलार्त्तोहिंगुशुंठीचजीरकम् ॥
वचामरिचचूर्णंतुकर्षमुष्णजलैःपिबेत् ।
असाध्यंनाशयेच्छूलंश्रीशूलंगजकेसरी ॥

अर्थ—शुद्ध पारा १ तोले, गंधक २ तोले, दोनोंको प्रहरभर खरल करे फिर इस कचली-का इससे दूने तांबेके कंटकवेधी पत्रोंपर लेप-कर मिट्टीका संपुटकर उसके ऊपर नीचे नि-मकके पुट लगाय मुख बंद कर गजपुटमें रखके फूंक देवे स्वांग शीतल होनेपर निका-ल लेवे, और दो रत्ती पानके टुकडेमें रखकर देवे, ऊपरसे हींग, सोंठ, जीरा, वच और कालीमिरचके चूर्णको गरमजलके साथ पिलावे तो साध्य असाध्य सर्व प्रकारके शूलोंको यह शूलगजकेशरी रस दूर करे।

त्रिगुणाख्योरसः

टंकणंहारिणंशृंगंस्वर्णगन्धंमृतंरसम् ।
दिनैकमार्द्रकद्रावैर्मर्द्यरुद्धापुटेपचेत् ॥
त्रिगुणाख्योरसोह्येपमापैकंमधुसर्पिषा ।
सैंधवंजीरकंहिंगुमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु ॥
पंक्तिशूलहरःख्यातोयाममात्रान्नसंशयः ।

अर्थ—सुहागा, हरिणका सींग, सुवर्ण, गंधक और चन्द्रोदय सबको अदरखके रसमें एक दिन खरलकर संपुटमें रखके फूंक देवे फिर इसकी १ रत्तीकी मात्रा सहत और घी-के साथ देवे ऊपरसे सेंधानिमक, जीरा, हींग, सहत और घी मिलाके चाटे तो यह परिणा-म शूलको दूर करे।

शूलहरणयोगः

हरीतकीत्रिकटुकंकुचिलाहिंगुसैंधवम् ।
गन्धकंचसमंसर्वंवटींकुर्य्यात्सुखावहाम् ॥
लघुकोलप्रमाणान्तुशस्यतेप्रातरेवहि ।
एकैकावटिकाग्राह्यागुल्मशूलविनाशिनी ॥
ग्रहण्यामतिसारेचसाजीर्णेमन्दपावके ।
योजयेदुष्णपयसासुखमाप्नोतिनिश्चितः ॥
सुवर्णश्चभवेद्देयंसदोत्साहयुतंनृणाम् ।

अर्थ—हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, कुचिला हींग, सेंधानिमक, और गंधक सबको समान भाग लेके बेरके बराबर गोलियां बनावे. और एक गोली प्रातःकाल खाय तो शूलरोग, गो-ला, संग्रहणी, अतिसार, अजीर्ण, मन्दाग्नि इनको दूर करे. इसको गरमजलके साथ देवे तो सुवर्णके समान देह होजावे और उत्साह बढावे।

शर्करालौहम्.

त्रिफलायस्तथाधात्र्याश्चूर्णंवाकाललौहजम्।
शर्कराचूर्णसंयुक्तंसर्वशूलेपुयोजयेत् ॥

अर्थ—त्रिफला वा आंवलेका चूर्ण अथवा लोहभस्म, इनमेंसे किसी एकको मिश्रीके साथ सर्व प्रकारके शूल रोगोंमें देना चाहिये।

शंखादिचूर्णम्.

शंखचूर्णस्यचपलंपंचैवलवणानिच ।
क्षारंटंकणकंजातीशतपुष्पायमानिका ॥
हिंगुत्रिकटुकञ्चैवसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ।
आमवातंयकृच्छूलंपरिणामसमुद्भवम् ॥
अन्नद्रवकृतंशूलंशूलंचैवत्रिदोपजम् ।

अर्थ—शंखका चूर्ण ४ तोले, पांचों निमक, सुहागा, जावित्री, सोंफ, अजमायन, हींग, और त्रिकुटा सबको समान भाग ले चूर्ण करे, यह आमवात, यकृत, शूल, परिणामशूल, अन्न-द्रवजन्य शूल और त्रिदोपजन्य शूलको दूर करे।

अथ उदावर्त्तानाहाधिकारः

वैद्यनाथवटी.

पथ्यात्रिकटुसूतश्चद्विगुणंकनकन्तथा ।
थानकुनीरसैरम्ललोणिकायारसैःकृता ॥
गुडिकोदरगुल्मादिपाण्ड्वामयविनाशिनी ।
कृमिकुष्ठगात्रकण्डूपीडकांश्चनिहन्तिच ॥

गुडीसिद्धफलाचेयंवैद्यनाथेनभाषिता ।

अर्थ-हरड, सोंठ, मिरच, पीपल और शुद्धपारा, प्रत्येक समान भाग लेवे. और सबको मंडूकपर्णी औषधिके रसमें और इमली-के रसमें खरल कर गोलियां बनावे. यह उदर, गोला, पाण्डुरोग, कृमिरोग, कुष्ट, सर्व देहकी खुजली और फुंसी इनसबको यह वैद्यनाथवटी दूर करे ।

बृहदिच्छाभेदीरसः

शुद्धंपारदटंकणंसमरिचंगंधाश्मतुल्यात्रिवृत्। विश्वाचद्विगुणाततोनवगुणंजैपालचूर्णंक्षिपेत् खल्वेदण्डयुगंविमर्द्यविधिनाचार्कस्यपत्रेततः। स्वेदंगोमयवन्हिनाचमृदुनास्वेच्छावशाद्रेदकः ॥ गुंजैकमगितेरसोहिमजलैःसंसेवितोरेचयेत् । यावन्नोष्णजलंपिवेदपिवरंपथ्यञ्च दध्योदनम् ॥ आमंसर्वभवंसुजीर्णमुदरंगुल्मं विशालंहरेत् । वन्हेर्दीप्तिकरोबलाशहरणः सर्वामयध्वंसनः ॥

अर्थ-शुद्धपारा, सुहागा, कालीमिरच और गंधक समान भाग लेवे, और सबकी तुल्य निसोथ लेवे, तथा दूनीसोंठ और नौगुने जमाल गोटे लेवे. सबको खरलमें डाल ४ घडी विधि-पूर्वक मर्दन करे आकके पत्तोंमें रस आरने कंडोंकी मंदाग्निमें स्वेदन करे. एक रत्ती रस शीतल जलके साथ सेवन करे. तो जबतक गरमजल न पीवे तबतक दस्त होते रहेंगे इसपर दही भातका पथ्य देना चाहिये यह सर्व प्रकारकी आम और उदररोग गोला और कफको दूर करे, अग्निको दीपन करे, तथा सर्व प्रकारके रोगोंको दूर करता है ।

योगवाहिरसान्सर्वान्रेचकेकथितानपि । प्लीहाधिकारेकथितंरसेन्द्रंवारिशोषणम् ॥ उदावर्त्ततथानाहेमयुंजीतानुपानतः । पुटितंभावितंलोहंत्रिवृत्क्वाथैरनेकशः ॥ उदावर्त्तहरंयुञ्ज्यात्ससितंसयथाबलम् । उदावर्त्तेमयोक्तव्याउदरोक्तारसाःखलु ॥

अर्थ-जो दस्तकर्त्ता रस कहेहैं तथा प्लीहा-धिकारमें जो वारिशोषणरस कहा है उन सबको उदावर्त्त और अफारारोगमें देना चा-हिये. शुद्ध लोहभस्मको निसोथके काढेकी पुट और अनेक भावना देकर बलाबल विचारमि-श्रीके साथ देवे. तो उदावर्त्त रोग दूर हो, एवं उदावर्त्त रोगपर उदररोगमें कहे हुए सबरस देने चाहिये ।

अथ गुल्मरोगचिकित्साः

महानाराचरसः

ताम्रंसूतंसमंगन्धंजैपालञ्चफलात्रिकम् । कटुकंपेषयेत्क्षारैर्निष्कंगुल्महरंपिबेत् ॥ उष्णोदकंपिबेच्चानुनाराचोयंमहारसः ।

अर्थ-ताम्रभस्म, पारा, गंधक, जमालगो-टा, हरड, बहेडा, आमला और कुटकी इनको पीस जवाखार आदिके साथ गरमजलसे पीवे तो यह नाराचरस गोलेके रोगको दूर करे ।

पञ्चाननोरसः

पारदंशिखितुत्थञ्चगन्धंजैपालपिप्पली । आरग्वधफलान्मज्जावज्रीक्षीरेणपेषयेत् ॥ धात्रीरसयुतंखादेद्रक्तगुल्मप्रशान्तये । चिञ्चाफलरसञ्चानुपथ्यंदध्योदनंहितम् ॥

अर्थ-पारा, मोरचूत, गंधक, जमालगोटा, पीपल, अमलतासका गूदा, सब समान भाग लेकर थूहरके दूधसे खरल करे. इसको बला-बल देखकर आमलेके रसके साथ देवे तो रक्तगुल्म दूर हो, इसके ऊपर पकी इमलीका

रस पीवे और इसपर दही भातका पथ्य हित है।

गुल्मवज्रिणीवटी.

रसगंधकताम्रंचकांस्यंटंकणतालकं ।
प्रत्येकंपलिकंग्राह्यंमर्दयेदतियत्नतः ॥
तद्यथाग्निबलंखादेद्रक्तगुल्मप्रशान्तये ।
निर्म्मितानित्यनाथेनवटिकागुल्मवज्रिणी ॥
गुल्मप्लीहोदराष्ठीलायकृदानाहनाशिनी ।
कामलापाण्डुरोगघ्नीज्वरशूलविनाशिनी ॥

अर्थ–पारा, गंधक, ताम्रभस्म, कांसेकी-भस्म, सुहागा और हरिताल प्रत्येक ४ तोले लेवे. सबको खरलकर जठराग्निके समान भक्षण करे तो रक्तगुल्म, प्लीह, उदर, अष्ठीला, यकृत्के रोग, अफरा, कामला, पाण्डुरोग, ज्वर और शूलको नष्ट करे यह नित्यनाथकी कही हुई गोली है।

गुल्मकालानलोरसः

सूतकंलोहकंताम्रंतालकंगंधकंसमम् ।
तोलद्वयमितंभागंयवक्षारश्चतत्समम् ॥
मुस्तकंमरिचंशुण्ठीपिप्पलीगजपिप्पली ।
हरीतकीवचाकुष्ठंतोलकंचूर्णयेद्बुधः ॥
सर्वमेकीकृतंपात्रेक्रियन्तेभावनास्ततः ।
पर्पटंमुस्तकंशुण्ठ्यपामार्गपापचेलिकम् ॥
तत्पुनश्चूर्णयेत्पश्चात्सर्वगुल्मनिवारणम् ।
गुञ्जाचतुष्टयंखादेद्धरीतकीनुपानतः ॥
वातिकंपैत्तिकंगुल्मंतथाचैवत्रिदोषजम् ।
द्वंद्वजंश्लैष्मिकंहन्तिवातगुल्मंविशेषतः ॥
गुल्मकालानलोनामसर्वगुल्मकुलान्तकृत् ।

अर्थ–पारा, लोहभस्म, ताँमा, हरिताल, गंधक प्रत्येक दो तोले लेवे सबके बराबर जवाखार लेवे, नागरमोथा, कालीमिरच, सोंठ, पीपल, गजपीपल, हरड, वच, कूठ, प्रत्येक एक तोला ले, सबका एकत्र चूर्णकर पित्तपापडा, नागरमोथा, सोंठ, ओंगा, पाढ इनके रसमें खरलकर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली हरडके चूर्णके साथ खाय तो वातजन्य, पित्तजन्य, त्रिदोषज, द्वंद्वज, कफजन्य, गोला और वायगोलाको दूर करे. यह गुल्मकालानल रस सर्व गोलेके रोगोंका नाश करता है,

वडवानलोरसः

पारदंगन्धकंताप्यंयवक्षारार्कमभ्रकम् ।
अग्न्यम्बुनाहिपत्रेणसंमर्द्याथद्विगुञ्जकम् ॥
भक्षयेत्पर्णखण्डेनहिंगुसिंधुसुवर्चलैः ।
दाडिमश्चतथाबिल्वंकार्पिकंभृंगजैर्द्रवैः ॥
पिष्ट्वातुसुरयायुक्तंदेयंस्यादनुपानकम् ।
सर्वगुल्मंनिहन्त्याशुशूलंचपरिणामजं ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सुवर्णमाक्षिक, जवाखार, तांबेकी भस्म और अभ्रकको समान भाग ले सबको चीतेके पत्तोंके रसमें खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली पानमें रखके खाय ऊपरसे हींग, सेंधानिमक, कालानिमक, अनारदाना, बेलगिरी, प्रत्येकको एक २ तोले ले भांगरेके रसमें खरलकर शरावके साथ पिलावे तो यह वडवानलरस सर्व प्रकारके गुल्म और शूलोंको नाश करे।

महानाराचरसः

सूतटंकणतुल्यांशंमरिचंसूततुल्यकम् ।
गंधकंपिप्पलीशुंठीद्वौद्वौभागौविमिश्रयेत् ॥
सर्वतुल्यंक्षिपेत्दन्तीबीजंनिस्तुषमेवच ।
द्विगुंजंरेचनंसिद्धंनाराचाख्योमहारसः ॥

अर्थ–पारा, सुहागा, कालीमिरच, प्रत्येक १ तोले ले गंधक, पीपल, सोंठ, प्रत्येक दो तोले ले, और सबकी बराबर जमाल गोटा मिलावे सबको खरलकर दो रत्ती सेवन करे

तो यह नाराचरस उत्तम दस्तकारक बने ।

विद्याधरोरसः

पारदंगंधकंतालंताप्यंस्वर्णमनःशिलाम् ।
कृष्णाकाथैःस्नुहीक्षीरैर्दिनैकंमर्दयेत्सुधीः ॥
निष्कार्द्धंश्लैष्मिकंगुल्मंहन्तिमूत्रानुपानतः ।
रसोविद्याधरोनामगोदुग्धंचपिवेदनु ॥

अर्थ–पारा, गंधक, हरिताल, सोनामक्खी, सुवर्ण, मनसिल, सबको समान भाग ले पीपलके काढे और थूहरके दूधसे एक २ दिन खरल करे, इसमेंसे ४ मासे गोमूत्रके साथ सेवन करे, तो कफका गोला दूर हो. इस विद्याधररस पर गौका दूध पीना चाहिये ।

महागुल्मकालानलोरसः

गन्धकंतालकंताम्रंतथैवतीक्ष्णलौहकम् ।
समांशंमर्दयेत्गाढंकन्यानीरेणयत्नतः ॥
संपुटंकारयेत्पश्चात्सन्धिलेपंचकारयेत् ।
ततोगजपुटंदत्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
द्विगुंजंभक्षयेद्गुल्मीशृंगवेरानुपानतः ।
सर्वगुल्मंनिहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा ॥

अर्थ–गंधक, हरिताल, तांबेकी भस्म, तीक्ष्णलोहकी भस्म, इन सबको समानभाग लेवे. सबको घीगुवारके रसमें खरलकर संपुटमें रखके सन्धि लेपन कर गजपुटमें रखकर फूंक देवे. जब स्वांगशीतल होजावे तब निकाल कर दो रत्ती रसको अदरकके रसके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारके गोला दूर होवे ।

अभयावटी.

अभयामरिचंकृष्णाटंकणंचसमांशकम् ।
सर्वचूर्णसमंचैवदद्यात्कनकजंफलम् ॥
स्नुहीक्षीरैर्वटीकार्य्यायथास्विन्नकलायवत् ।
वटीद्वयंशिवामेकांपिष्ट्वाचोष्णांबुनापिवेत् ॥
उष्णाद्विरेचयेदेषाशीतेस्वास्थ्यमुपैतिच ।
जीर्णज्वरंपाण्डुरोगंप्लीहाष्ठीलोदराणिच ॥र
क्तपित्ताम्लापित्तादिसर्वाजीर्णानिनाशयेत् ।

अर्थ–हरड, काली मिरच, पीपल और सुहागा प्रत्येक समान भाग ले और सबको बराबर धत्तुरेके फल लेवे, सबको थूहरके दूधमें मटरके समान गोलियां बनावे. एक गोली और एक हरडके चूर्णको गरम जलके साथ लेवे तो दस्त करावे, और शीतल जलके साथ दस्त बंद करावे. यह जीर्णज्वर, पाण्डुरोग, प्लीहा, अष्ठीला, उदररोग, रक्तपित्त, अम्लपित्त, और सर्व अजीर्ण रोगोंको दूर करे ।

गोपीजलः

जैपालाष्टौद्विकोगन्धंशुण्ठीमरिचचित्रकम् ।
एकःसूतःससौभाग्योगोपीजलइतिस्मृतः ॥
शूलव्याध्याश्रयात्गुल्मान्कोष्ठादिदशपैत्तिकान् ।भगंदरादिहृद्रोगान्नाशयेदेषभक्षणात् ॥

अर्थ–जमालगोटा ८ तोले, गंधक दो तोले सोंठ, मिरच, चीता, पारा और सुहागा एक २ तोले ले यह गोपीजल शूल और व्याधीके आश्रय गोलेके रोग, दशपैत्तिकरोग, भगंदर आदि रोग हृदयके रोग इन सबको भक्षण करनेसे दूर करता है ।

कांकायनगुटिका:

शठीपुष्करमूलंचदन्तीचित्रकमाढकीम् ।
शृंगवेरंवचाश्चैवपलिकानांसमाहरेत् ॥
त्रिवृतायाःपलश्चैकंकुर्य्यात्त्रीणिचहिंगुनः ।
यवक्षारात्पलेद्वेचद्वेपलेचाम्लवेतसात् ॥
यमान्यजाजीमरिचंधान्यकश्चत्रिकार्षिकम् ।
उपकुंच्यजमोदाभ्यांपृथगर्द्धपलंभवेत् ॥
मातुलुंगरसेनैवगुटिकांकारयेद्भिषक् ।
तासामेकांपिवेत्द्वेवातिस्रोवाथसुखाम्बुना ॥
अम्लैर्मद्यैश्चयूषैश्चघृतेनपयसाथवा ।

एपाकांकायनेनोक्तागुटिकागुल्मनाशिनी ॥
अर्शोहृद्रोगशमनीकृमीनाश्चविनाशिनी ।
गोमूत्रयुक्ताशमयेत्कफगुल्मंचिरोत्थितम् ॥
क्षीरेणपित्तरोगंचमद्यैरम्लैश्चवातिकम् ।
त्रिफलारसमूत्रैश्चनियच्छेत्सन्निपातकम् ॥
रक्तगुल्मेपुनारीणामुष्ट्रीक्षीरेणपाययेत् ।

अर्थ-सोंठ, पुहकरमूल, दन्ती, चित्रक, अरहर, अदरक और वच प्रत्येक ४ तोले, निसोथ ४ तोले, हींग १२ तोले जवाखार २ पल, अमलवेत दो पल, अजवायन, जीरा, कालीमिरच और धनियां प्रत्येक ३ तोले लेके कालाजीरा और अजमोद दो २ तोले लेवे, सबको बिजौरेके रसमें खरलकर गोलियां बनावे. इनमेंसे एक दो वा तीन गोली गरमजलके साथ अथवा खटाई, मद्य, यूष, घी तथा दूधके साथ सेवन करे तो यह कांकायनगुटिका गोलेके रोग, बवासीर, हृदयकेरोग और कृमिको नष्ट करे. गोमूत्रकेसाथ पीवे तो बहुत दिनके कफके गोलेको दूधके साथ पित्तरोगोंको, मद्य अथवा खटाईके साथ वादीके रोगोंको, त्रिफलाके रस अथवा गोमूत्रसे सन्निपातके रोगोंको और ऊंटनीके दूधके साथ स्त्रियोंके रक्तगुल्म रोगोंको दूर करता है ।

गुल्मशार्दूलोरसः

रसंगन्धंशुद्धलोहंगुग्गुलोःपिप्पलंपलं ।
त्रिवृतापिप्पलीशुंठीशठीधान्यकजीरकम् ॥
प्रत्येकंपलिकंग्राह्यंपलार्द्धंकानकंफलम् ।
संचूर्ण्यवटिकाकार्याघृतेनवल्लमानतः ॥
वटीद्वयंभक्षयेच्चार्द्रकोष्णाम्बुपिबेदनु ।
हन्तिप्लीहयकृत्गुल्मकामलोदरशोथकम् ॥
वातिकंपैत्तिकंगुल्मंश्लैष्मिकंरौधिरन्तथा ।
गहनानन्दनाथोक्तरसोयंगुल्मनाशनः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, लोहभस्म, गूगल, पीपलामूल, नीसोथ, पीपल, सोंठ, कचूर, धनियां और जिरा प्रत्येक एक पल ले और जमालगोटा दो तोले सबका चूर्ण कर घीसे गोलियां बनावे. दो गोली अदरखके रसके साथ खाय ऊपरसे गरम जल पीवे. तो प्लीह, यकृत्, गुल्म, कामला, उदर, सूजन वातपित्तके गोले, कफके गोले, रुधिरके रोग, इन सबको यह गुल्मशार्दूल रस दूर करे ।

प्राणवल्लभोरसः

लोहंताम्रंवराटंचतुत्थंहिंगुफलत्रिकम् ।
स्नुहीमूलंयवक्षारंजैपालंटंकणंत्रिवृत् ॥
प्रत्येकंपलिकंग्राह्यंछागीदुग्धेनपेषयेत् ।
चतुर्गुंजावटींखादेद्वारिणामधुनापिवा ॥
प्राणवल्लभनामायंगहनानन्दभाषितः ।
निहन्तिकामलांपाण्डुमेहंहिक्कांविशेषतः ॥
असाध्यंसन्निपातंचगुल्मंरुधिरसम्भवम् ।
वातरक्तंचकुष्ठंचकण्डुविस्फोटकापचीम् ॥

अर्थ-लोह, तांबा, कौडीकीभस्म, लीलाथोथा, हींग, त्रिफला, थूहरकीजड, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा, निसोथ, प्रत्येक४ तोले ले सबको बकरीके दूधसे पीस चार२ रत्तीकी गोलियां बनावे. और गरम जल अथवा सहतके साथ खावे, तो यह महाप्राणवल्लभरस कामला, पाण्डुरोग, प्रमेह, हिचकी असाध्य सन्निपातके गोलेको तथा वातरक्त, कोढ, खुजली, विस्फोटक और अपची रोगको दूर करे ।

सर्वेश्वरोरसः

ताम्रंदशगुणंस्वर्णात्स्वर्णपादंकटुत्रिकम् ।
त्रिकटुत्रिफलातुल्यात्रिफलार्द्धमयोरजः ॥
अयसोर्द्धंविषश्चैवसर्वंसंमर्द्दयेत्नतः ।
सर्वेश्वररसोनामरौधिरंगुल्मनाशनः ॥

अर्थ-सुवर्ण भस्म ४ तोले, तांबेकी भस्म ४० तोले, सोंठ, मिरच, पीपल, और त्रिफला प्रत्येक एक तोले, लोहभस्म ६ मासे, विष ३ मासे, सबको खरल करे यह सर्वेश्वर रस रुधिरके गोलेको दूर करे ।

अथहृद्रोगाधिकारः

हृदयार्णवोरसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंमृतताम्रंतयोःसमम् ।
मर्दयेत्त्रिफलाक्वाथैःकाकमाचीद्रवैर्दिनम् ॥
चणमात्रांवटींखादेद्रसोयंहृदयार्णवः ।
काकमाचीफलंकर्षंत्रिफलाफलसंयुतम् ॥
द्वात्रिंशत्तोलकंतोयंक्वाथमष्टावशेषितम् ।
अनुपानंपिबेच्चात्रहृद्रोगेचकफोत्थिते ॥

अर्थ-शुद्धपारा और शुद्ध गंधक दोनोंको बराबर ले और दोनोंकी बराबर ताम्रभस्म ले सबको मिलाय त्रिफला और मकोयके रसोंमें एक २ दिन खरलकर चनेके प्रमाण गोलियां बनावे. इनमेंसे एक गोली खानेसे हृदयके रोग दूर हो, मकोयके फल और त्रिफला एक २ तोले और जल ३२ तोले ले अष्टावशेष काढा करके गोलीपर पीवे तो कफका हृदयरोग दूर हो ।

नागार्ज्जुनाभ्रम्.

सहस्रपुटनैःशुद्धंवज्राभ्रमर्ज्जुनत्वचः ।
सत्वैर्विमर्दितंसप्तदिनंखल्लेविशोषितम् ॥
छायाशुष्कावटीकार्य्यानाम्नेदमर्ज्जुनाह्वयम् ।
हृद्रोगंसर्वशूलार्शोहृल्लासछर्दिरोचकान् ॥
अतीसारमग्निमान्द्यंरक्तपित्तंक्षतक्षयम् ।
शोथोदराम्लपित्तञ्चविषमज्वरमेवच ॥
हन्त्यान्यान्यपिरोगानिबल्यंवृष्यंरसायनम् ।

अर्थ-हजार पुटकी अभ्रकको कोहके काढेसे ७ दिन खरलकर गोलियां बनाय छायामें सुखा लेवे तो अर्ज्जुनाख्यावटी हृदयके रोग, सर्व प्रकारके शूल, बवासीर, हृल्लास, वमन, अरुचि, अतिसार, मन्दाग्नि, रक्तपित्त, क्षतक्षय, सूजन, उदररोग, अम्लपित्त, विषमज्वर, और बहुतसे रोगोंको दूर करे, बलकर्त्ता, वृष्य और रसायन है ।

पञ्चाननोरसः

सूतगन्धौद्रवैर्धात्र्यामर्दयेत्गोस्तनीद्रवैः ।
यष्टिखर्जूरसलिलैर्दिनञ्चपरिमर्दयेत् ॥
धात्रीचूर्णसिताश्चानुपिबेत्हृद्रोगशान्तये ।

अर्थ-पारे और गंधकको बराबर ले आमलके रस, मुनका, मुलहटी, और खजूर इनके रससे एक२ दिन खरल करे. फिर आमलेके चूर्ण और मिश्रीके साथ सेवन करे तो हृदयरोग शान्ति हो ।

अथमूत्रकृच्छ्राधिकारः

त्रिनेत्राख्योरसः

वंगंसूतंगन्धकंभावयित्वालौहेपात्रेमर्दयेदेकघस्रम् । दूर्वायष्टीगोक्षुरैःशाल्मलीभिःमूषामध्ये भूधरेपाचयित्वा ॥ तत्तद्द्रावैर्भावयित्वास्य वल्लंदद्यात्शीतंपायसंवक्ष्यमाणम् ॥ दूर्वायष्टीशाल्मलीतोयदुग्धैस्तुल्यैः कुर्य्यात्पायसंतद्दीत । प्रातःकालेशीतपानीयपानात्मूत्रे जातेस्यात्सुखीचक्रमेण ॥

अर्थ-वंग, पारा और गंधक सबको लोहेके पात्रमें भावना देकर एक दिन दूब, मुलहटी, गोखरू, और सेमलके रससे खरलकर मूसमें रख भूधरयंत्रमें फूंक देवे. फिर पूर्वोक्त रसोंमें खरल कर ३ रत्ती रसको दूब. मुलहटी और सेमलके रस और दूधकी खीरके साथ

देवे या प्रातःकाल शीतल जलके साथ देवे तो मूत्रके होतेही मनुष्य सुखी होवे ।

वरुणाद्यंलौहम्.

द्विपलंवरुणंधात्र्यास्तदर्द्धंधात्रिपुष्पकम् ।
हरीतक्याःपलार्द्धञ्चपृश्निपर्णतदर्द्धकम् ॥
कर्षमानंचलौहाभ्रंचूर्णमेकत्रकारयेत् ।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायशाणमानंविधानवित्॥
मूत्राघातंतथाघोरंमूत्रकृच्छञ्चदारुणम् ।
अश्मरींविनिहन्त्याशुप्रमेहंविषमज्वरम् ।
वलपुष्टिकरंचैववृष्यमायुष्यमेवच ।
वरुणाद्यमिदंलौहम्चरकेणविनिर्मितम् ॥

अर्थ—वरना ८ तोले, आंवले ४ तोले, धायके फूल, और हरड एक २ तोले, पृष्टपर्णी १ तोले, लोहभस्म और अभ्रक भस्म प्रत्येक १ तोले, सबको एकत्रकर चूर्ण करे इसमेसे ४ मासे प्रातःकाल भक्षण करे तो घोरमूत्राघात, दारुण मूत्रकृच्छ, पथरी, प्रमेह, विषमज्वर इनको दूर करे. बल और पुष्टि करे वृष्य है, तथा आयुष्यको बढावे, यह वरुणाद्यलोह चरकने कहा है ।

मूत्रकृच्छान्तकोरसः

अयोरजःश्लक्ष्णपिष्टंमधुनासहयोजयेत् ।
मूत्राघातंनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम् ॥
रसगन्धयवक्षारंसितातक्रयुतंपिवेत् ।
मूत्रकृच्छ्राण्यशेषाणिनिहन्त्यनियतंनृणाम्॥
भैषज्यैरश्मरीप्रोक्तैःमूत्रकृच्छ्रमुपाचरेत् ।
योगवाहिरसैःपिष्ट्वामृतसूतंचतालकम् ॥
सतावरीरसैःपिष्ट्वामृतसूतश्चतालकम् ।
शिखितुत्थश्चतुल्यांशंदिनैकंमर्दयेद्दृढम् ॥
तद्गोलेसार्षपेतैलेपाच्यंयामश्चचूर्णयेत् ।
मूत्रकृच्छ्रान्तकश्चास्यक्षौद्रैर्गुञ्जाचतुष्टयम् ॥
भक्षणान्नात्रसन्देहोमूत्रकृच्छ्रंनिहन्त्यलम् ।
तुलसीतिलपिण्याकविल्वमूलंतुपाम्वुना ॥
कर्षैकंवानुपानेनसुरयावासुवर्चलैः ।

अर्थ—लोहकी बारीक भस्म सहतके साथ सेवन करे तो मूत्रघातको शीघ्र दूर करे, पारा, गंधक, जवाखार, और मिश्रीको समान भाग लेकर चूर्णकर छाछके साथ पीवे तो सर्व प्रकारके मूत्रकृच्छ्र निस्संदेह दूर होवे ।

जो यत्न पथरीरोगके कहेहैं वो मूत्रकृच्छ्रमें करे तथा योगवाही रसोंको अनुपानके साथ देवे ।

चन्द्रोदय, हरिताल, नीलाथोथा, समान ले शतावरिके रससे १ दिन खरल करे फिर उसका गोला बनाय सरसोंके तेलमें १ प्रहर पचावे, फिर चूर्णकर ४ रत्ती सहतमें देवे, तो मूत्रकृच्छ्र अवश्य दूर हो. अथवा तुलसी, तिल, खल, वेलकी जड, तुषोंका पानी, इनके साथ १ तोला पूर्वोक्त रस देवे, अथवा तुलसी और सोराके साथ देवे ।

अथमूत्रघाताधिकारः

तारकेश्वरोरसः

मृतसूताभ्रगन्धञ्चमर्दयेन्मधुनादिनम् ॥
तारकेश्वरनामायंगहनानन्दभाषितः ।
माषमात्रंभजेत्क्षौद्रैर्वहुमूत्रप्रशांतये ॥
उदुम्वरफलंपक्वंचूर्णितंकर्षमात्रकम् ।
संलिह्यान्मधुनासार्द्धमनुपानंसुखावहम् ॥

अर्थ—चन्द्रोदय, अभ्रक, गंधक सबको समान भाग ले सहतमें १ दिन खरल करे यह तारकेश्वररस गहनानन्दका कहा हुआ है इसको १ मासे सहतके साथ खाय तो बहुमूत्र दूर हो, इसके ऊपर पके गूलरका चूर्ण १ तोला सहतके साथ चाटे ।

लघुलोकेश्वरोरसः

शुद्धसूतस्यभागैकंचत्वारःशुद्धगंधकम् ।
पिष्ट्वावराटिकापूर्य्यारसपादेनटंकणम् ॥
क्षीरैःपिष्ट्वामुखंलिप्त्वाभाण्डेरुध्वापुटेपचेत् ।
स्वांगशीतंविचूर्ण्याथलघुलोकेश्वरोमतः ॥
चतुर्गुञ्जाप्रमाणन्तुमरिचेनतथैवच ।
जातीमूलफलैर्युक्तमजाक्षीरेणपाययेत् ॥
शर्कराभक्षितश्चानुपीत्वाकृच्छहरःपरः ।

अर्थ-पारा १ तोले, गंधक ४ तोले, दोनोंकी कजलीको कौडियोंमें भर पारेके चौथाई सुहागेको दूधसे पीस कौडियोंका मुख बंद कर दे, फिर उनको किसी बरतनमें भर बरतनका मुख बन्दकर संपुटमें रख फूंक देवे, जब शीतल होजावे तब ४ रत्तीके प्रमाण चार रत्ती कालीमिरचका चूर्ण, जायफल और जावित्रीको मिश्री पडे बकरीके दूधके साथ पीवे ऊपरसे शर्वत पीवे तो मूत्रकृच्छ दूर होवे ।

येनौषधेनमतिमान्मूत्रकृच्छ्रमुपाचरेत् ।
तेनौषधेनश्रेष्ठेनमूत्राघातानुपाचरेत् ॥
लवणाम्लवरायुक्तंघृतंचापिपिवेन्नरः ।
तस्यनश्यन्तिवेगेनमूत्राघातास्त्रयोदश ॥
पक्वमेर्वारुबीजानामक्षमात्रंससैन्धवम् ।
धान्याम्लयुक्तंपीत्वैवमूत्राघाताद्विमुच्यते ॥
त्रिकण्टकैरण्डशतावरीभिः । सिद्धंपयोवा तृणपञ्चमूलैः ॥ गुडप्रगाढंसघृतंपयोवा ।
रोगेषुकृच्छ्रादिषुशस्तमेतत् ।

अर्थ-जिस औषधिसे वैद्य मूत्रकृच्छका यत्न करे, उसी औषधिसे मूत्राघातका उपाय करे. निमक, खठाई, त्रिफला, इनको घीमें मिलाकर पीवे तो १३ प्रकारका मूत्राघात शीघ्र दूरहो. पके खीरेके १ तोले बीजोंको पीस सेंधानिमक तथा धान्याम्ल मिलाके पीवे, तो मूत्राघातसे छूट जावे. गोखरू, अंडकी जड और शतावर इनसे सिद्ध किया हुआ दूध अथवा तृण पंचमूल, गुड, घृत और दूध मूत्रकृच्छ्रादि रोगोंपर हितकारी है ।

अथाश्मर्य्यधिकारः

पाषाणवज्रोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंरसैःश्वेतपुनर्नवैः ।
मर्दयित्वादिनंखल्वेरुद्ध्वातद्भूधरेपचेत् ॥
दिनान्तेतत्समुद्धृत्यमर्दयेद्गुडसंयुतम् ।
अश्मरींवस्तिशूलश्चहन्तिपाषाणवज्रकः ॥
गोरक्षकर्कटीमूलक्काथंकौलत्थकंतथा ।
अनुपानंमयोक्तन्त्र्यंबुद्ध्यादोषबलाबलम् ॥

अर्थ-शुद्धपारा १ तोले, गंधक दो तोले, दोनोंको विस खपरेके रससे १ दिन खरलकर संपुटमें रखके भूधरयंत्रमें पचावे. जब सायंकाल्हो तब निकाल गुडके साथ मर्दन करे. इसके खानेसे पथरी, वस्तिशूल ये दूर होवें. इन्द्रायनकी जड और कुलथीका काढा इनको बलाबल विचार पाषाणवज्ररसपर पिलावे ।

त्रिविक्रमोरसः

मृतताम्रमजाक्षीरैःपाच्यंतुल्यंगतेद्रवे ।
तत्ताम्रंशुद्धसूतश्चगंधकंचसमंसमम् ॥
निर्गुंडीस्वरसैर्मर्द्यदिनंतद्गोलकीकृतम् ।
यामैकंवालुकायन्त्रेपक्त्वायोज्यंद्विगुंजकम् ॥
बीजपूरस्यमूलश्चसजलंचानुपाययेत् ।
रसस्त्रिविक्रमोनामशर्करामश्मरींजयेत् ॥

अर्थ-तांबेकी भस्मको बराबरके. बकरीके दूधमें औटावे, जब सूखजाय तब बराबरकी गंधक ले निर्गुंडीके स्वरसमें एक दिन खरल. कर गोला बनाय वालुकायंत्रमें रखके पचावे फिर इसमेंसे दो रत्ती रसको बिजौरेकी जडके

जलमें घोटके पिलावे तो यह त्रिविक्रमरस शर्करा और पथरीको दूर करे ।

लोहप्रयोगः

अयोरजंश्लक्ष्णपिष्टंमधुनासहयोजितम् ।
अश्मरींविनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रंचदारुणम् ॥

अर्थ—लोहेकी भस्मको बारीक पीस सहतके साथ देवे तो पथरी और दारुण मूत्रकृच्छ्रका नाश करे ।

इन्द्रवारुणिकामूलंमरिचंक्षीरपाचितम् ।
पर्पटीरससंयुक्तंसप्ताहादश्मरींजयेत् ॥
गंधकंजीरकंक्षुद्राफलंटंकद्वयंसदा ।
अश्मरींशर्करांमूत्रकृच्छ्रंक्षपयतिध्रुवम् ॥

अर्थ—इन्द्रायनकी जड़, और कालीमिरचोंको दूधमें औटावे फिर इस दूधमें पर्पटीरस मिलाके सेवन करे तो ७ दिनमें पथरीका नाश हो, अथवा गंधक, जीरा, कटेरीके फल सबको दो टंक नित्य सेवन करे तो पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र इन सबको दूरकरे ।

अथ प्रमेहाधिकारः

हरिशंकरोरसः

मृतसूताभ्रकंतुल्यंधात्रीफलनिजद्रवैः ।
सप्ताहंभावयेत्खल्वेयोगोयंहरिशंकरः ॥
माषमात्रंवटींखादेत्सर्वमेहप्रशान्तये ।

अर्थ—चन्द्रोदय, अभ्रक दोनों समान लेकर आमलोंके रससे ७ दिन खरल करे तो यह हरिशंकर रस बने, एक मासेकी गोली खानेसे सब प्रकारकी प्रमेहको शान्ति करे ।

इन्द्रवटी.

मृतंसूतंमृतंवंगमर्ज्जुनस्यत्वचान्वितम् ।
तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेशाल्मल्यामूलजैर्द्रवैः ।
दिनान्तेवटिकाकार्य्यामाषमात्राप्रमेहहा ॥
एषाइन्द्रवटीनाम्नामधुमेहप्रशान्तकृत् ।

अर्थ—चन्द्रोदय, बंग, कोहकी छाल, समान भाग ले सेमरकी जडके रससे खरल कर सायंकालको एक मासेकी गोली बनाकर लेवे. तो यह इन्द्रवटी मधुमेहको शान्ति करे

वंगावलेहः

वंगभस्मद्विवल्लंचलेहयेन्मधुनासह ।
ततोगुडसमंगंधंभक्षयेत्कर्षमात्रकम् ॥
गुडूचीसत्वमथवाशर्करासहितंतथा ।
सर्वमेहहरोज्ञेयोवंगावलेहउत्तमः ॥

अर्थ—६ रत्ती वंगभस्मको सहतके साथ चाटे फिर गुड और गंधक समान भाग मिलाके तोले भर गिलोय सत्वमिलाके अथवा मिश्री मिलाके खाय तो यह वंगावलेह सर्व प्रकारके प्रमेहोंको दूरकरे ।

प्रमेहसेतुः

सूताभ्रश्चवटक्षीरैःमर्दयेत्प्रहरद्वयम् ।
विशोष्यपक्वमूषायांसर्वरोगेप्रयोजयेत् ॥
विशेषान्मेहरोगेषुत्रिफलामधुसंयुतम् ।
युञ्जीतवल्लमेकन्तुरसेन्द्रस्यास्यवैद्यराट् ॥

अर्थ—चन्दोदय, अभ्रक, दोनोंको वडके दूधसे दो प्रहर खरलकर फिर सुखाके पक्की मूषामें रखके पकावे, इसको सर्व रोगोंमें देवे विशेषकर प्रमेहरोगमें देवे, त्रिफला और सहतके साथ ३ रत्ती देवे तो सर्व प्रकारकी प्रमेह दूर हो ।

विडंगादिलौहम्.

विडंगत्रिफलामुस्तैःकणयानागरेणच ।
जीरकाभ्यांयुतंहन्तिप्रमेहानतिदारुणान् ॥
लोहमूत्रविकारांश्चसर्वानेवविनाशयेत् ।

अर्थ—वायविडंग, हरड, बहेडा, आंवला, नागरमोथा, पीपल, सोंठ, कालीमिरच, काला-

जीरा, सफेदजीरा, इन सबको बराबर ले सबकी बराबर लोहभस्म लेवे तो यह विडंगादिलोह संपूर्ण मूत्रविकारोंको दूर करे।

अभ्रकयोग.

निश्चन्द्रमभ्रकंभस्मसवरारजनीरजः।
मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिकृन्तति ॥

अर्थ–अभ्रककीभस्म, त्रिफला, और हलदी ये सब बराबर लेकर चूर्णकर सहतके साथ खाय तो प्रमेह नष्ट होवे।

सर्वेश्वरोरसः

ताप्योटङ्कणहेमताररसकंगन्धपृथक्भागिकम्। ताम्रंविद्रुमशुक्तिजंशिखरिणंद्विघ्नंतथाभागिकम् ॥ वङ्गायोहिरसेन्द्रभूतिगगनंवैक्रान्तकान्तंत्रिशः। तंमर्द्यमुक्तिभावयेत्रिदिवसंयष्टीत्रिजाताम्बुभिः ॥ मुस्तोशीरवरावृषामृतसटीकन्याविदारीवरी। नीरैर्गोपयसेक्षुजश्चमुसली गोलंपचेद्यामकं ॥ मन्दाग्नौचमृगाङ्कवत्पुनरसौभाव्यस्ततोभावने। हेकस्तुरिमृगाङ्कयो र्मधुकणायुक्तोस्यवल्लोजयेत् ॥ मेहार्शोग्रहणीज्वरोदरमरुद्व्याधिंरुजंकामलां। पाण्डुं कुष्ठभगन्दरंज्वरगणंकृच्छ्रंचशुक्रक्षयम् ॥

अर्थ सुवर्णमाक्षिक, सुहागा, रूपरस, सुवर्णभस्म, खपरिया और गंधक प्रत्येक एक तोले, ताम्रभस्म, मूंगाकीभस्म, मोती और शिलाजीत प्रत्येक दो तोले. वंग, सार, नागेश्वर, चंद्रोदय, अभ्रकभस्म, कांसेकीभस्म, कान्तलोहकी भस्म, प्रत्येक ३ तोले. सबको खरलकर मुलहटी, त्रिजातक, नागरमोथा, खस, त्रिफला, अडूसा, गिलोय, कचूर, घीगुवार, विदारीकंद, शतावरि, इन प्रत्येकके काढोंकी पृथक् २ तीन २ दिन भावना देवे फिर गौके दूध, ईख और मूसलीके रसकी तीन २ भावना दे गोला बनाय, यंत्रमें रख, प्रहरभर पचावे. फिर स्वांग शीतल होनेपर रसको निकाल मृगांक रसके समान फिर भावना देवे. इसमेंसे ३ रत्ती रस कस्तूरी और मृगांक रसके समान पीपल और सहतके साथ देवे तो प्रमेह, बवासीर, संग्रहणी, ज्वर, उदर, वातव्याधि, कामला, पाण्डु, कोढ, भगंदर, ज्वरकेसमूह, मूत्रकृच्छ्र, और शुक्रक्षय इनको दूर करता है।

मेहहरोगोलः

गन्धेनसूतंद्विगुणंविमर्द्यविमर्दयेद्गोक्षुरजीरयुक्तं।शुष्कंचकृत्वाथसुतप्ताम्रचक्रंचतस्योपरि विन्यसेत ॥ चक्रेविलग्नंचततःप्रगृह्यमुपोदरे ध्मापयटङ्कणेन। संगृह्यतक्रेचनिधायगोलंत्रिसप्तकान्मेहविमुक्तमेति ॥

अर्थ–पारा ५ तोले, गंधक २॥ तोले, दोनोको गोखरूके स्वरससे खरलकर फिर सुखाय गरम तांबेके चक्रके ऊपर रखे उस चक्रमें जो लगे उसको लेके मूषामे रख सुहागा डालके धमावे, इसमेंसे छाछके साथ एक २ मासेकी गोलियां बनावे. इनको २१ दिन तक प्रत्येक दिन १ गोली सेवन करनेसे प्रमेह दूर हो।

रुजादलनवटी.

रसबलविषमग्नित्रैफलव्योषयुक्तम्।
समलवमितिसर्वैर्द्विगुणोस्याद्गुडोथ ॥
जठरगुदसमीरश्लेष्मप्रमेहान्सगुल्मान्।
हरतिझटितिपुंसांवल्लमात्रावटीयम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, विष, चीतेकी छाल, त्रिफला और त्रिकुटा। इन सबको समान भाग लेवे, सबकी बराबर गुड मिलाय गोलियां बनावे, यह उदरव्याधि, गुदाकेरोग, बादीके रोग, कफके रोग, प्रमेह और गोलाको

तत्काल दूर करे, इसकी मात्रा ३ रत्तीकी है।

नागभस्म्यादि.

तुल्यांशंमारितंसीसंदग्धंहरिणशृङ्गकम् । कर्पासबीजमज्जाचतुल्यमङ्कोलबीजकं ॥ पेषयेन्माहिषैस्तक्रैर्दिनैकंवटकीकृतम् । मापद्वयंसदाखादेत्सुरानामप्रमेहजित् ॥

अर्थ–सीसेकी भस्म, हरिणके सींगकी भस्म, बिनौलेकी मिंगी और अंकोलके बीज प्रत्येक ५ तोले. सबको भैंसकी छाछमें एक दिन पीस दो २ मासेकी गोलियां बनावे, और एक गोली नित्य सेवन करे तो सुरा नाम प्रमेहको शीघ्रही दूर करे ।

मेहभैरवोरसः

रसंगन्धंविषंलोहंजातीपत्रंचतत्फलम् । अब्धिशोषाहिफेनंचखुरासानंचचित्रकम् ॥ देवपुष्पसमंसर्वंसर्वैस्तुल्यंमृताभ्रकम् । भावयेत्सप्तधासर्वंचित्रमूलकषायकैः ॥ यथासात्म्येनसंयोज्यसर्वमेहापनुत्तये । अर्शोग्निग्रहणीशोथपाण्डुशुक्रक्षयेनृणाम् ॥ यथानुपानतोयोज्यःसिद्धःश्रीमेहभैरवः ।

अर्थ–पारा, गंधक, विष, लोहभस्म, जावित्री, जायफल, समुद्रशोष, अफीम, खुरासानी अजमायन, चीतेकी छाल और लौंगको समान भाग ले सबकी बराबर अभ्रक भस्म लेवे. सबको चीतेकी छालकी ७ भावना देवे. फिर इसको यथायोग्य अनुपानके साथ देवे तो प्रमेह, बवासीर, संग्रहणी, सूजन, पाण्डुरोग और शुक्रका क्षीण होना इनको यह मेहभैरवरस दूर करे ।

राजावर्त्तावलेह.

राजावर्तश्चवैक्रान्तंताम्रमभ्रंपृथक्पृथक् । शुक्तिमात्रंकृष्णलोहंपार्वतश्चपलद्वयम् ॥ मण्डूरंकुडवश्चैवशुद्धमञ्जनसन्निभम् । त्रिकत्रयंतालमूलीतथैवकरिकेशरम् ॥ श्वेतोच्चटानागबलाप्रत्येकंकर्षमात्रकम् । शुभ्रंशाल्मलिनीरस्यप्रस्थंचछागदुग्धतः ॥ मत्स्यंडिकायाःप्रस्थार्द्धमेभिःकुर्यादवलेहकम् । लिहेद्विधिज्ञःसुदिनेह्यनुपानंपिबेदनु ॥ चण्डामूलंशुक्तिमात्रंसर्वमेहप्रशान्तये । गुल्महृद्रोगवर्ध्मार्शोमुष्कपीडाप्रशान्तये ॥ शुक्राश्मरीमूत्रवातरेतोदोषापनुत्तये ।

अर्थ–राजावर्त्त, वैक्रान्त (कांसुला) ताम्र और अभ्रक प्रत्येकको भस्म दो तोले. खेरीलोहकी भस्म और शिलाजीत प्रत्येक दो पल, मंडूर १६ तोले, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद, मूसली, गजपीपल, सफेद घूंघची और नागबला प्रत्येक एक तोले ले सेमलका रस ६४ तोले. सेरभर बकरीका दूध, और आधसेर सफेद खांड डालके अवलेह सिद्धकरे. इसको विधिका जाननेवाला उत्तम दिनमें भक्षण करे, और चंडा (चोरनाम गंध द्रव्य) की जड़ दो तोले इसके ऊपर सेवन करे, तो सर्व प्रकारको प्रमेह, गोला, हृदयरोग, वद, बवासीर, अंडकोषोंकी पीडा, शुक्राश्मरी, मूत्रवात और वीर्यविकारको यह राजावर्त्तावलेह दूर करे।

प्रमेहकुठारोरसः

एलासकर्पूरसितासधात्रीजातीफलंगोक्षुरशाल्मलीत्वक् । सूताभ्रवङ्गायसभस्ममेतत्संमर्दयेद्गाढतरंहठेन ॥ ततोभवत्येपरसःप्रमेहकुठारनामाविदितप्रभावः । निष्कार्द्धमात्रोमधुनावलीढोनिहन्तिमेहानखिलानुदग्रान् ॥

अर्थ–छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, मिश्री, आमले, जायफल, गोखरू, सेमरकी छाल, पारा, गंधक, वंग, लोहभस्म, सबको

समान भाग लेकर खूब खरल करे, तो यह प्रमेह कुठाररस सिद्ध होवे. इसमेंसे दो मासे रस सहतके साथ सेवन करे तो यह राजावर्तावलेह प्रमेहको दूर करे ।

मृत्युंजयोरसः

एकांशंप्रक्षिपेत्स्वर्णंरौप्यंवज्रश्चतत्समम् ।
मुसल्याचाखुकर्ण्याचभाव्यंलुङ्गरसैस्त्र्यहम् ॥
मोचात्मगुप्तास्वरसैस्तदामृत्युंजयोरसः ॥
सर्वरोगहरोह्येपसेवितःपथ्यशालिभिः ।
राजयक्ष्मादिरोगांश्चप्रमेहान्विंशतिस्तथा ॥
जीर्णज्वरानतीसारान्ग्रहणीवहुमूत्रतां ।
तेनतेनानुपानेननाशयेन्नात्रसंशयः ॥
किमत्रवहुनोक्तेनजरामृत्युहरस्तथा ।
वज्रदेहोभवेत्सेवीद्रावयेद्वनिताशतम् ॥
नरेतसः क्षयस्तस्यपण्डोऽपितरुणायते ।
ऊर्द्ध्वलिङ्गःसदातिष्ठेल्ललनायाःप्रियोभवेत् ॥
सतुहाटकमध्वाज्यःश्रीधीमेधाविभूषितः ।
हयवेगोमयूराक्षोवाराहश्रुतिरेवसः ॥
अपरःकामदेवोवामानिनीमानमर्दनः ।
शाल्यन्नंगोपयःखण्डसिताजाङ्गलमामिपं ॥
गोधूमजान्विकारांश्चमापान्नंकदलीफलम् ।
पनसंचापिखर्ज्जूरंमुततीनालिकेरकम् ॥
मधुरश्चभजेत्प्राज्ञोवर्पमात्रमतिन्द्रतः ।
मात्रास्यमापप्रमितासदासेव्यानरोत्तमैः ॥

अर्थ–सुवर्णके वर्क, चांदीके वर्क और हीरेकी भस्म प्रत्येक समान भाग ले, सबको खरलकर मूसली, मूसाकर्णी, विजौरा, इनके रसमें तीन २ दिन खरल करे. फिर केला और कौंचके रसोंकी भावना देवे. तो यह मृत्यंजयरस सिद्ध होवे, यह पथ्यके साथ सेवन करनेसे सब रोगोंको दूर करे राजयक्ष्मादिरोग, वीस प्रकारके प्रमेह, जीर्णज्वर, अतिसार, संग्रहणी और बहुमूत्रताको अपने २ अनुपानके साथ दूर करे. बहुत कहनेसे तो क्या यह वृद्धावस्था और अकाल मृत्युको हरण करे, इसके सेवनसे देह वज्रके समान हो, सौ स्त्रियोंको द्रवावे, कभी वीर्यका क्षय न हो, हिजडाभी तरुणत्वको प्राप्तहो, सदैवलिंग खडा रहे, इसको सोनेके वर्क, सहत और मक्खनके साथ खाय तो तेज बुद्धि और धारणाशक्तिको बढावे. घोडेकासा वेग, मोर कीसी आंख, शूकरके समान कानोंकी शक्तिहो, मानों दूसरा कामदेवही है. इसके ऊपर साठी चांवलका भात, गौका दूध, वूरा, जंगलके जीवोंका मांस, गेंहूके पदार्थ, उडदके पदार्थ, केलेकीगहर, कटहर, सुलैमानी खजूर, गोला, एक वर्ष पर्यंत मिष्ट पदार्थ भक्षण करे. इसकी मात्रा एक मासेकी है ।

तारकेश्वररसः

मृतसूताभ्रगन्धानांमर्दयेन्मधुनादिनम् ।
तारकेश्वरनामायंमापैकंवहुमूत्रजित् ॥
उदुम्बरफलंपक्वंचूर्णितंकर्पमात्रकम् ।
संलिहेन्मधुनासार्द्धमनुपानंसुखावहम् ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक और वंग समान भाग लेकर १ दिन सहतके साथ खरल करे, इस तारकेश्वररसको १ मासे सेवन करनेसे बहुमूत्रको दूर करे. इसके ऊपर पके गूलरोंका चूर्ण १ तोले सहतके साथ चाटे यह अनुपान है।

त्रैलोक्यमोहनोरसः

शुद्धसूतस्तथागन्धोवङ्गभस्मशिलाजतुः ।
मौक्तिकंचसमंसर्वंशुष्कमादौत्रिमर्दयेत् ॥
पापाणभेदकाथेनकुमारीस्वरसेनच ।
मूर्वागुडूचित्रिफलाकपायेणपृथक्पृथक् ॥
दिनानिपश्चसंमर्द्यघर्मेसंशोपयेत्ततः ।

काचकुप्यांविनिक्षिप्यमुखंतस्यविमुद्रयेत् ॥
मापान्नविपचूर्णानांकल्केनभिपगुत्तमः ।
संस्थाप्यवालुकायन्त्रेचतुर्यामंविपाचयेत् ॥
चोपचीनीयचूर्णेनमापमानेनयोजितः ।
त्रैलोक्यमोहनोनाम्नागुञ्जामात्रोरसोत्तमः॥
पर्णखण्डेनदातव्यःप्रमेहमथनःपरः ।

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, वंग, शिलाजीत, और मोतीकी भस्म सब समान लेके खरल करे, फिर पापाणभेदके काढेसे, तथा घीगुवारके रससे एव मूर्वा, गिलोय और त्रिफला इनके काढेसे पृथक् २ पांच २ दिन खरल करे परंतु धूपमें रखके फिर इसको काचकी शीशीमें भर मुख बंद कर उडदके चून और विप चूर्णके कल्कसे फिर वालुकायंत्रमें ४ प्रहरकी अग्नि देवे. फिर इसमेंसे १ रत्ती रसको १ मासे चोबचीनीके चूर्णके साथ पानमें रखके खाय तो सर्व प्रकारकी प्रमेहको दूर करे ।

कर्पूराद्योरसः

कर्पूरभृङ्गीउन्मत्तवीजंजातीफलंतथा ।
मृताभ्रंमृतलोहश्चत्रपुनागरसंतथा ॥
एलापुन्नागधान्याकंविपंव्योपलवंगकम् ।
तालीसपत्रंपत्रंचजयावीजंत्वचंतथा ॥
अकर्करंनागवलातुल्यांशेनसमन्वितम् ।
चूर्णयित्वासितातुल्यंदत्वासेवेद्यथावलम् ॥
श्वासंप्रमेहंचसरक्तपित्तप्रस्वेदवातंवहुसन्निपातम् । स्वरक्षयंचाशुजयेद्विचित्रम् ॥ कर्पूरसंज्ञःकथितोरसोऽयम् ।.उन्मत्तवीजसंभूतंतैलं वात्रापिपूजितः ।

अर्थ—वरास, भाँग, धतूरेके वीज, जायफल, अभ्रक, सार, नागभस्म, वंग, पारा, छोटीइलायची, पुन्नाग, धनियां, विष, त्रिकुटा, लौंग, तालीसपत्र, पत्रज, अरनीके वीज, अरनीकी छाल, अकरकरा और खरैटी सबको समान भाग ले सबका चूर्णकर बराबरकी मिश्री मिलाय बलाबल देखकर खानेको देवे तो श्वास, प्रमेह, रक्तपित्त, प्रस्वेदवात, अनेक सन्निपात, स्वरभंग (गलेका बैठना) इन सबको दूर करे. यह कर्पूरसंज्ञक रस है, धतूरेके बीजोंका तेल इसमें अनुमान माफिक मिलावे तो अति गुण करे ।

मेहमर्दनोरसः

शुद्धशीशोद्भवंभस्मनिर्व्यूढेहेम्निसप्तधा ।
गोमूत्रकंशिलाधातुद्रवेणपरिमर्दयेत् ॥
शोपयित्वाविचूर्ण्याथक्षिपेन्नागकरङ्गके ।
मेहमर्दननामायंप्रोक्तभालुकिनाकिल ॥
गुञ्जाद्वयमितोदेयोनिम्वामलकसंयुतः ।
निहन्तिसकलान्मेहान्सर्वोपद्रवसंयुतान् ॥

अर्थ—शुद्ध शीशेकीभस्म, सुवर्णभस्म; दोनोको गोमूत्र और मनसिलके जलसे ७ बार खरल कर सुखाके चूर्णकर लेवे. फिरइसमें रांगकीभस्म और नागेश्वरकी भस्मको मिलावे तो यह भालुकी आचार्यका कहा मेहमर्दननामक रस बने इसको दोरत्ती नीम और आमलेके रसके साथ देवे तो सर्व प्रकारके उपद्रव युक्तभी प्रमेह दूर होवे. ।

मस्कमृगाङ्कोरसः

सुशुद्धंपारदंचैवसुशुद्धंगन्धकंभवेत् ।
रङ्गंशुद्धंसमादायनवसादरमेवच ॥
समभागानिसर्वाणिमर्दयित्वासुखल्लके ।
काचकूप्यांविनिक्षिप्यपावकेस्थापयेद्बुधः ॥
मुखेमुद्राचनोदेयाधूमंसंलक्षयेत्ततः ।
निर्धूमेजायमानेतुसिद्धोमस्कमृगाङ्कः ॥
मधुमेहन्तुमेहानांगणंनाशयतेध्रुवम् ।
मधुनाभक्षयेच्चैवसूक्ष्मैलाचूर्णकेनच ॥
रससागरग्रन्थेतुसुश्रेष्ठंस्वर्णभस्मच ।

अर्थ-शुद्धपारा, शुद्धगंधक, शुद्धरांगा, नोसद्दर, सब समान भाग लेके खरल करे, फिर कांचकी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें चढाय मुख बंदकर अग्निपर रखे उसमेंसे जो धुआं निकले उसे देखता रहे, जब धुआं निकलना बंद हो जावे, तब उतारलेवे, तो यह मस्कमृगांक सिद्ध होवे. यह मधुमेह और अन्य प्रमेहोंके गणोंको नाश करे. इसमें छोटी इलायचीका चूंरा मिलाय सहतके साथ चाटे यह प्रयोग रससागर ग्रन्थमें लिखा है. ।

संजीवनोरसः

पलमात्रंरसंशुद्धंवरनागसमन्वितम् ।
निक्षिप्यपातनायन्त्रेत्रिंशद्वाराणिपातयेत् ॥
समाहरेद्रसंसम्यक्पातनायन्त्रकेमृतम् ।
मृतंरसंक्षिपेत्तुल्यंभूपालावर्त्तभस्मकम् ॥
निरुत्थंत्रपुभस्मापिनिक्षिपेदष्टमांशतः ।
ततोनिम्बदलद्रावैस्त्रिंशद्वारंहिभावयेत् ॥
ततःसंशोष्यसंचूर्ण्यक्षिपेद्दृढकरण्डके ।
संजीवनोयंखलुवल्लमानोनिःशाकुलीचूर्णयुतःसतक्रः ॥ निहन्तिसर्वानपिमेहरोगान्नृणांनितान्तंकुरुतेक्षुधांच ।

अर्थ-पारा ९ तोले, शीशा पांच तोलेमें मिलाय पातनायंत्रद्वारा तीस वार पातन करे. जब पातनायंत्रमें शुद्ध होजावे तब इसमें पारेकी बराबर राजावर्त्त भस्म मिलावे और निरुत्थ रांगेकी अष्टमांश भस्म मिलावे, पश्चात् नीमके रसकी तीस भावना देवे, फिर इसको सुखाय चूर्णकर किसी उत्तम शीशीमें भरके रखछोडे, यह संजीवनरस ३ रत्ती कुटकीके चूर्णमें छाछके साथ सेवन करे तो सर्व प्रकारकी प्रमेहको दूर करे और भूंख बढावे । ·

रसस्यभस्मनातुल्यंवङ्गभस्मसमाहरेत् ।
मधुनालेहयेत्प्राज्ञोवातमेहप्रशान्तये ॥

अर्थ-पारेकी भस्ममें बराबर रांगकी भस्म मिलाय सहतके साथ चाटे तो वादीकी प्रमेह दूरहो ।

मुद्गमूलकयूषेणपथ्यंदेयंसतक्रकम् ।
तिलपिण्डीचतक्रेणपक्त्वादद्यान्नहिंगुकम् ॥
घृतंबहुनदद्याचतिलतैलेनभोजयेत् ।
मार्कंडीचूर्णमादायसगुडंखादयेन्निशि ॥

अर्थ-अब पथ्य कहते हैं कि मूंग मूलीके यूषके साथ और छाछ पथ्यमें देवे, तथा तिलकी पिंडी छाछके साथ देवे, परन्तु हींगका देना वर्जित है, बहुत घृत न देवे किन्तु तिलके तेलसेही भोजन करे और रात्रिमें भारंगीके चूर्णमें गुड मिलाके खाया करे ।

चन्द्रप्रभागुटिका

बोलंजातिफलंमधूकयुगलंसारंतथाखादिरं । कर्पूरामलकीशटीबहुसुताश्रोटाम्लसारःस्थिरा ॥ कासीसंभववीजदाडिमसहासर्वैसमंकल्पितम् । प्रत्येकंदधिदुग्धलाङ्गलिरसैस्तुम्बस्यमुद्गस्यच ॥ रसेनभावितंतस्यगुटिकासंप्रकल्पितः । जयेच्चन्द्रप्रभानामतीव्रान्मेहादिकान्गदान् ॥

अर्थ-बोल, जायफल, महुएकासार, मुलहटीकासार, खैरसार, कपूर, आंवला, कचूर, शतावर, बेर, तिंतडीक; मगरेला, कसीस, पारा, अनारदाना, इन सबको बराबर लेवे. फिर दही, दूध, कलियारी, तूंबा और मूंग इनके रसोंकी भावना देकर गोलियां बनावे. यह चन्द्रप्रभानाम गुटिका तीव्र प्रमेहोंको दूरकरे।

प्रमेहगजसिंहरसः

चांडालीराक्षसीपुष्पारसमध्वाज्यटङ्कणम् ।
रसंसमांशोपरसंसमंहेम्नाविमर्दिता ॥

समांशपूतिलोहंवामूपायांविपचेत्क्रमात् ।
प्रमेहगजसिंहोयंरसःक्षौद्रैर्द्विमापकम् ॥

अर्थ–लिंगनी, गंधपलासी, पारा, सहत, घृत और सुहागा तथा पारेकी बराबर उपरस ले फिर बराबरका सुवर्ण मिलावे, तथा कीटी मिलाय मूपामें रखके पचावे. तो यह प्रमेहगजसिंहरस बने इसमेंसे दो मासे रस सहतके साथ खाय तो प्रमेहका नाश करे ।

भीमपराक्रमःसर्वमेहे.

तुल्याभ्यांरसगंधाभ्यांकृत्वाकज्जलिकांत्वियं
द्रावयित्वायसेपात्रेमृदुनाबदराग्निना ॥
निरुत्थमष्टमासेनसीसभस्माविनिक्षिपेत् ।
समिश्रंकदलीपात्रेनिक्षिप्यतदनन्तरम् ॥
आकृष्यपरिपिष्ट्वाथसीसभस्मप्रमाणतः ।
कान्ताभ्रसत्वयोर्भस्मंराजावर्त्तकभस्मच ॥
परिसिद्धंसगोमूत्रेशिलाधातुंनिधायच ।
खल्लेनिक्षिप्यतत्सर्वंयत्नेनपरिमर्दयेत् ।
तुल्यगुञ्जाकुलीबीजचूर्णकल्कोथवारिणा ॥
कतकांघ्रिकपायेणनिम्बपत्ररसेनच ।
ततःसंशोष्यसंचूर्ण्यक्षिप्त्वालोहस्यभाजने ॥
त्रिफलानांकपायेणसप्तधापरिभावयेत् ।
आकुलीबीजबर्बूरनिर्यासौभृष्टचूर्णितौ ॥
समौरससमौकृत्वारसेनसहमर्दयेत् ।
इतिसिद्धोरसःसोऽयंभवेद्भीमपराक्रमः ॥
नामतःसर्वमेहघ्नोदृष्टप्रत्ययकारकः ।
वल्लद्वयमितोग्राह्योजलैःपर्युषितैःसह ॥
पथ्यंमेहोचितंदेयंवर्ज्यंसर्वंविवर्जयेत् ।

अर्थ–पारा और गंधक दोनों चार २ तोले दोनोंकी कजलीकर लोहेके पात्रमें बेरकी अग्निसे पिघलाकर उसमें एक तोले निरुत्थ सीसेकी भस्म मिलाके केलेके पत्तेपर ढाल देवे. फिर उस पर्पटीको पीस, कांतलोहकी भस्म, राजावर्त्त और अभ्रकसत्वकी भस्म डाले. तथा मनसिल डाल गोमूत्रमें खरल करे. फिर घूंघचीके बीजके चूर्णके कल्कके रससे निर्मलीके काढे, और नीमके पत्तोंके रसकी भावना देकर सुखाके चूर्ण करलेवे. फिर लोहपात्रमें डाल त्रिफलाके काढेकी ७ भावना देवे. आकुली, बबूरका गोंद, इनको भूनकर रसमें मिलावे तो यह भीमपराक्रमरस सिद्ध होवे. यह सर्व प्रकारकी प्रमेहको दूर करता है, मात्रा ६ रत्तीकी बासे जलके साथ लेवे और प्रमेहपर लिखे पथ्य करे तो यह प्रयोगानुभूत है ।

रामबाणोरसः

त्रपुणानिहतंतारंस्वर्णंनागहतंतथा ।
मृतसूतंतयोस्तुल्यंमर्दयेद्दिवसत्रयम् ॥
आकुलीमूलजैःक्वाथैःशोपयित्वामुहुर्मुहुः ।
ताप्यंवैकान्तराडूत्तभस्मंसर्वंसमंक्षिपेत् ॥
विमर्द्यवलिनासर्वंपोढातुपपुटैःपचेत् ।
अकुलीबीजबर्बूरक्वथितैर्भावयेत्त्रिधा ॥
तरंसंपरिचूर्ण्याथस्थगयेत्कूपिकोदरे ।
गुडूचीसत्वसंयुक्तोवल्लतुल्योरसस्त्वयं ॥
निहन्तिसकलंमेहंमोहंध्मातइवेश्वरः ।
बाणवद्रामचन्द्रस्यसज्जनस्येवभाषितम् ॥
नयातिजातुमेहत्वंरामबाणरसोत्तमः ।

अर्थ–रांगेसे माराहुआ रूपा और सीसेसे माराहुआ सुवर्ण दोनोंको समान ले दोनोंकी बराबर चन्द्रोदय मिलावे फिर आकुली बीजोंके काढेमें तीन दिन खरलकर बारबार सुखावे, और भावना देवे. फिर सुवर्णमाक्षिककी भस्म कांसुला, राजावर्त्तकी भस्म सबको समान भाग डालके गंधकके साथ घोटे. फिर तुपाग्निके छःपुट देवे, फिर आकुली बीज और बबूल इनके काढोंकी तीन २ भावना देवे प-

श्चात् उसका चूर्णकर उत्तम पात्रमें रखे इसको गिलोयके सत्वके साथ ३ रत्ती सेवन करे, तो संपूर्ण प्रमेहोंको दूर करे जैसे परमात्माके ध्यानसे मोह, रामचन्द्रके बाण से रावणादि दुष्टोंका नाश हुआ, वैसेही इस सज्जन पुरुषोंके कहे इस रामबाण रसके सेवन करनेसे फिर कदाचित् प्रमेह नहीं होता।

राजमृगाङ्कोरसः

सुवर्णरजतंकान्तंताम्रंत्रपुससीसकम्।
भस्मीकृत्वाचतत्सर्वंक्रमवृध्याकृतांशकम्॥
व्योमसत्वभवंभस्मसर्वैस्तुल्यंमकल्पयेत्।
कज्जलींसूतराजस्यसर्वैरेतैःसमांशिकां॥
प्रदाव्यलोहभस्माथपूर्वंभस्मविनिःक्षिपेत्।
काष्ठेनालोडयतत्सर्वंसद्रवंहिसमाहरेत्॥
ततोविचूर्ण्यतत्सर्वंसप्तवारंविभावयेत्।
आकुलीबीजसंभूतंकाथलौहेप्रयत्नतः॥
रुद्धंतन्मल्लमूषायांसर्वंसंस्वेदयेच्छनैः।
इतिसिद्धोरसेन्द्रोयंचूर्णितःपटगालितः॥
कान्तपात्रस्थितैरात्रौजलैस्त्रिफलसंयुतैः।
वल्लत्रयमितःमातर्दातव्योमेहरोगिणां॥
मृगचारिमृगेन्द्रेणमेहव्यूहविनाशनः।
निर्दिष्टोऽयंरसोराजमृगाङ्कइतिकीर्तितः॥
दीपनःपाचनोवृष्योग्रहणीपाण्डुनाशनः।
तापघ्नोरुचिकृत्सर्वरोगघ्नोयोगसंयुतः॥

अर्थ—सुवर्ण, चांदी, कान्त, ताम्र, रांगा, और सीसा इनकी भस्मोंको क्रमसे एकसे दूसरी अधिक लेवे, जैसे (सुवर्णसे जितनी अधिक चांदीकी लेवे वैसे चांदीसे उतनीही अधिक कांतकी लेवे) और सबकी बराबर अभ्रककी भस्म ले तथा सबकी बराबर पारे गंधककी कजली लेवे. उस कजली अग्निपर पतली करके सब भस्म मिला देवे, और लकडीसे जला देवे, जब वह एकजी होजावे तब केलेके पत्तेपर ढाल देवे फिर उस पर्पटीको पीस आकुलीके रसकी सात भावना देवे फिर मूषामें रख धीरे २ स्वेदन करे, तो यह मृगांकरस सिद्ध होवे. इसको कपरछन कर रखछोडे. रात्रिमें कान्त लोहके पात्रमें रखे, त्रिफलाके रसके साथ तीन रत्ती प्रमेहवालेको देवे. तो यह सम्पूर्ण प्रमेहोंका नाश करे. इसको रसराजमृगांक कहते हैं. दीपन, पाचन, वृष्य, संग्रहणी, पाण्डुरोग, ज्वर इत्यादि सब रोगोंको दूर करे और रुचि प्रकट करता है।

मेहवद्धोरसः

भस्मसूतंमृतंकान्तंमुण्डभस्मशिलाजतुः।
ताप्यंशुद्धंशिलाव्योपंत्रिफलाकोलवीजकम्
कपित्थरजनीचूर्णसमभाव्यंचभृङ्गिणां।
त्रिंशद्वारंविपोप्याथमधुयुक्तंलिहेत्सदा॥
निष्कमात्रंहरेन्मेहान्मेहवद्धोरसोमहान्।

अर्थ—चन्द्रोदय, कान्तलोहकी भस्म, मुंडलोहकी भस्म, शिलाजीत, सुवर्णमाक्षिककी भस्म, मनसिल, त्रिकुटा, त्रिफला, अंकोलके बीज, कैथ और हलदीका चूर्ण इन सबको बराबर लेवे और भांगरेके रसकी ३० भावना देवे फिर चार २ मासेकी गोलियां बनावे, एक गोली सहतके साथ नित्य खाय तो यह प्रमेहवद्धरस सर्व प्रमेहोंको दूर करे।

वृहद्धरिशंकरोरसः

रसगन्धकलौहंचस्वर्णवङ्गाभ्रमाक्षिकम्।
समभागन्तुसंपिष्यवटिकांकारयेद्भिषक्॥
सप्ताहमामलद्रावैर्भावितोयंरसेश्वरः।
हरिशंकरनामायंगहनानन्दभाषितः॥
प्रमेहान्विंशतिंहन्तिसत्यंसत्यंनसंशयः।

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, सुवर्णभस्म, वंगभस्म और सुवर्ण माक्षिककी भस्म इन सबको समान भाग ले और सबको आंवलेके जलसे ७ दिन खरलकर गोलियां बनावे. तो यह गहनानन्दका कहा हुआ हरिशंकररस २० प्रकारकी प्रमेहोंको निस्संन्देह दूर करे ।

आनन्दभैरवोरसः

वङ्गभस्ममृतंस्वर्णंरसंक्षौद्रैर्विमर्दयेत् ।
द्विगुञ्जंभक्षयेन्नित्यंहन्तिमेहंचिरोद्भवम् ॥
गुञ्जामूलंतथाक्षौद्रैरनुपानंप्रशस्यते ।

अर्थ–वंगभस्म, सुवर्णभस्म और पारेकी भस्म इन तीनोंको सहतमें खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे. १ गोली नित्य खाय तो बहुत दिनकी प्रमेहको दूर करे. इसके ऊपर घूंघचीकी जडका चूर्ण सहतमें मिलाकर चाटे।

विद्यावागीशरसः

मृतसूताभ्रनागश्चस्वर्णंतुल्यंप्रकल्पयेत् ।
महानिम्बस्यचूर्णन्तुचतुर्भिःसममाहरेत् ॥
मधुनालेहयेन्माषंलालामेहप्रशान्तये ॥
सक्षौद्रंरजनीचूर्णंलेह्यंनिष्कद्वयन्तथा ।
असाध्यंनाशयेन्मेहंविद्यावागीशकोरसः ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक, शीशेकीभस्म, और सुवर्णभस्म, सबको समान ले, सबकी बराबर बकायनका चूर्ण लेवे एक मासे सहतके साथ सेवन करे, तो लाला प्रमेहको दूर करे. इसपर हलदीका चूर्ण ८ मासे सहतके साथ लेवे तो यह असाध्या प्रमेहका नाश करे. इसे विद्यावागीश-रस कहते हैं ।

मेहमुद्गरोरसः

रसाञ्जनंविडंदारुबिल्वगोक्षुरदाडिमम् ।
भूनिम्बंपिप्पलीमूलंत्रिकटुत्रिफलात्रिवृत् ॥
प्रत्येकंतोलकंदेयंलोहचूर्णन्तुतत्समम् ।
पलैकंगुग्गुलंदत्वाघृतेनवटिकांकुरु ॥
माषैकानिर्मिताचेयंमेहमुद्गरसंज्ञिनी ।
श्रीमद्गहननाथेनलोकनिस्तारकारिणा ॥
अनुपानंप्रकर्त्तव्यंछागीदुग्धंजलंचवा ।
विंशन्मेहनिहन्त्याशुमूत्रकृच्छ्रंहलीमकम् ॥
अश्मरींकामलांपाण्डुमूत्राघातमरोचकम् ।
अर्शांसिव्रणकुष्ठञ्चवातरक्तंभगन्दरम् ॥

अर्थ–रसोत, वायविडंग, देवदारु, वेलगिरी, गोखरू, अनारदाना, चिरायता, पीपलामूल, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, निसोथ, प्रत्येक एक २ तोला लेवे और सबकी बराबर लोहभस्म लेवे. और गूगल ४ तोले सबको मिलाय घृतमें एक एक मासेकी गोलियां बनावे इसे मेहमुद्गर गोली कहते हैं. श्रीगहननाथने कही है. इसको बकरीके दूध अथवा जलके साथ देवे, तो वीस प्रकारके प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हलीमक पथरी, कामला, पाण्डुरोग, मूत्राघात, अरुचि, बवासीर, व्रण, कोढ, वातरक्त और भगंदरको दूर करे ।

मेघनादोरसः

भस्मसूतंसमंकान्तमभ्रकन्तुशिलाजतु ।
शुद्धताप्यंशिलाव्योपत्रिफलांकोठजीरकम्॥
कर्पासवीजंरजनीचूर्णंभाव्यश्चवन्हिना ।
विंशद्वारंविशोष्याथलिह्याच्चमधुनासह ॥
माषमात्रंहरेन्मेहंमेघनादरसोमहान् ।

अर्थ–चन्द्रोदय, कान्तलोहकी भस्म, अभ्रक, शिलाजीत, शुद्ध सुवर्णमाक्षिक, मनसिल, सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, अंकोल, जीरा, कपासके बीज और हलदी, इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे, और सुखा २कर२०भावना चीतेके रसकी देवे, फिर इसमें से१मासेको सहतके साथ चाटे तो यह मेघ-

नादरस सर्व प्रकारके प्रमेहोंका नाश करता है।

चन्द्रप्रभावटिका.

मृतसूताभ्रकंलौहंनागंवंगंसमंसमम् ।
एलाबीजंलवंगश्चजातीकोषफलंतथा ॥
मधुकंमधुयष्टिश्चधात्रीचसमशर्करा ।
कर्पूरंखादिरंसारंशताव्हाकण्टकारिका॥
आम्लवेतसकंतुल्यंदिनैकंलांगलोद्भवैः।
भावयेन्मेषदुग्धेननागवल्यारसैर्दिनम् ॥
वटिकाबदरास्थाभाकार्य्याचन्द्रप्रभापरा ।
भक्षयेद्वटिकामेकांसर्वमेहकुलान्तिकाम् ॥
धात्रीपटोलपत्रंवाकषायंवामृतायुतम् ।
सक्षौद्रंभक्षयेच्चानुसर्वमेहप्रशान्तये ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक, सार, नागेश्वर और वंग सबको समान भाग लेवे, छोटी इलायचीके बीज, लौंग, जायफल, जावित्री, मुलहटी, महुआ और आमले इन सबको समान भाग ले, कपूर, खैरसार, शतावर, कटेरी और अमलवेत सबको समान लेके चूर्ण करे फिर कलियारीके रसकी १ दिनकी भावना देवे. फिर बकरीके दूध और खरैटीके रसकी एक२ दिनकी भावना देवे फिर बेरकी गुठिलीके बराबर गोलियां बनावे इस चन्द्रप्रभा१ गोलीको प्रातःकाल नित्य भक्षण करे और आंवले, पटोलपत्र और गिलोय इनके काढेमें सहत मिलाकर पथ्य देवे तो सर्व प्रमेहोंका नाश करे।

इक्षुमेहेवंगेश्वरोरसः

रसभस्मसमायुक्तंवंगभस्मंप्रकल्पयेत् ।
अस्यमाषद्वयंहन्तिमेहानक्षौद्रसमन्वितम् ॥

अर्थ–चन्द्रोदयकी बराबर बंगभस्म मिलाकर सबका चूर्ण करे और दो माशे सहतके साथ सेवन करे तो प्रमेह दूर हो।

वृहद्वंगेश्वरोरसः

वंगभस्मरसंगन्धंरौप्यंकर्पूरमभ्रकम् ।
कर्षंकर्षमानमेषांसूतांध्रिहेममौक्तिकम् ॥
केशराजरसैर्भाव्यंद्विगुंजाफलमानतः ।
प्रमेहान्विंशतिश्चैवसाध्यासाध्यमथापिवा॥
मूत्रकृच्छ्रंतथापाण्डुंधातुस्थश्चज्वरंजयेत् ।
हलीमकंरक्तपित्तंवातपित्तकफोद्भवं ॥
ग्रहणीमामदोषञ्चमन्दाग्नित्वमरोचकम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा
वृहद्वंगेश्वरोनामसोमरोगंनिहन्त्यलम् ।
बहुमूत्रंवहुविधंमूत्रमेहंसुदारुणम् ॥
मूत्रातिसारंकृच्छ्रंचक्षीणानांपुष्टिवर्द्धनः ।
ओजस्तेजस्करोनित्यंस्त्रीपुंसम्यक्वृषायते॥
बलवर्णकरोरुच्यःशुक्रसञ्जननःपरः ।
छागंवायदिवागव्यंपयोवादधिनिर्म्मलम् ॥
अनुपानंप्रयोक्तव्यंबुद्धादोषगतिंभिषक् ।
दद्याच्चबालेमौढेचसेवनार्थंरसायनम् ॥

अर्थ–वंगकीभस्म, चन्द्रोदय, गंधक, रूपरस, कपूर, और अभ्रक प्रत्येक एक २ तोले, मोती ३ पैसे, सुवर्णभस्म ३ मांसे, सबको एकत्र कर भांगरेके रसकी भावना देवे और दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, यह वृहद्वंगेश्वररस साध्यासाध्य २० प्रकारके प्रमेहोंको, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, धातुगतज्वर, हलीमक, रक्तपित्त, बातपित्त, कफकेरोग, संग्रहणी, आमदोष, मन्दाग्नि, अरुचि, सोमरोग, बहुमूत्र, दारुणमूत्रप्रमेह, मूत्रातिसार, और मूत्रकृच्छ्र इन सब रोगोको नाश करे, क्षीण पुरुषोको पुष्टकरे ओज और तेजको बढावे. स्त्रीभोगकी शक्ति बढे, बल, वर्ण, रुचि और वीर्यको प्रगट करे, इसके ऊपर बकरी या गौका दूध या निर्मलदही अनुपानमें देवे इसमें वैद्य दोषोका बलाबलविचार अपनी बुद्धिसे बालक और ज-

चान मनुष्योंको रसायनार्थ देवे।

कस्तूरीमोदकः

वंगाभ्रमथनागाश्वेनागंवंगश्चकेवलम्।
मेहरोगेमयोक्तव्यंशिलाजतुसमन्वितम्॥
कस्तूरीवनिताक्षुद्रात्रिफलाजीरकद्वयम्।
कदलीनांफलंपक्वंखर्जूरंकृष्णतिलकम्॥
कोकिलाख्यस्यवीजश्चमापमात्रंसमंसमम्।
यावन्त्येतानिचूर्णानिद्विगुणासितशर्करा॥
धात्रीरसेनपयसाकुष्माण्डस्वरसेनच।
विपचेत्पाकविद्वैद्योमन्दंमन्देनवन्हिना॥
अवतार्य्यसुशीतेचयथालाभंविनिक्षिपेत्।
अक्षमात्रंमभुञ्जीतसर्वमेहप्रशान्तये॥
वातिकंपैत्तिकश्चैवश्लैष्मिकंसान्निपातकम्।
सोमरोगंवहुविधंमूत्रातीसारमुल्वणम्॥
मूत्रकृच्छ्रंनिहन्त्याशुमूत्राघातंतथाश्मरीम्।
ग्रहणींपाण्डुरोगञ्चकामलांकुम्भकामलाम्॥
वृष्योवलकरोहृद्यःशुक्रवृद्धिकरःपरः।
कस्तूरीमोदकश्चायंचरकेणचभाषितः॥

अर्थ–वंग, अभ्रक, शीशेकीभस्म, अथवा नागेश्वर वा केवल वंगको शिलाजीतमें मिलाकर खाय तो प्रमेह दूरहो. कस्तूरी, फूलप्रियंगु, कटेरी, त्रिफला, सफेदजीरा, कालाजीरा, पके केलेकी गहर, खजूर, कालेतिल, तालमखाने, प्रत्येक एक २ मासे लेवे, सबके चूर्णसे दूनी सफेद खांड मिलावे, और फिर आंवलेके रस, दूध और पेठेके चौगुने. रसमें मन्दाग्निसे पचावे, जब खांग शीतल होजावे तब इसमेंसे एक तोले खानेको देवे तो यह सर्व प्रकारके प्रमेह, वातके, पित्तके, कफके, सन्निपातके रोग और सोमरोग, घोर मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, संग्रहणी, पाण्डुरोग, कामला, और कुम्भकामला आदि सब रोगोंको दूर करे. वृष्य, वलकारी, हृदयको हितकारी, तथा शुक्रको बढानेवाला है. यह कस्तूरी मोदक चरकसे लिखागया है।

हेमवज्रः

भस्मसूतंमृतंकान्तलोहभस्मशिलाजतु।
शुद्धताप्यंशिलाव्योपंत्रिफलाविल्वजीरकम्
कपित्थंरजनीचूर्णंभृंगराजेनभावयेत्।
त्रिंशद्वारंविशोष्याथलिह्याच्चमधुनासह॥
निष्कमात्रंहरेन्मेहान्मूत्रकृच्छ्रंसुदारुणम्।
महानिम्वस्यवीजश्चपट्निष्कंपेपितश्चयत्॥
पलंतण्डुलतोयेनघृतंनिष्कद्वयेनच।
एकीकृत्यपिवेच्चानुहन्तिमेहंचिरोत्थितम्॥

अर्थ–चन्द्रोदय, कान्तलोहकी भस्म, शिलाजीत, शुद्ध सुवर्ण माक्षिककी भस्म, मनसिल, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, वहेडा, आमला, चेलगिरी, जीरा, कैथका गूदा, और हलदीका चूर्ण सबको भांगरेके रसकी ३० भावना देवे फिर इसको सहतके साथ ४ मासे सेवन करे तो प्रमेह, मूत्रकृच्छ्रको दूर करे वकायनके २४ मासे बीजोंको पीस ४ तोले चांवलके धीवनके जलमें मिलाय और ८ मासे घृत मिलाय एकत्रकर इसके ऊपर पीवे तो बहुत दिनकी उत्पन्न प्रमेहोंको दूर करे।

मेहकेसरी.

कुमारीकेवलादेयाचेपल्लवणसंयुता।
प्रमेहंहन्तिसकलंसप्ताहात्परतोनृणाम्॥
मृतवंगंसुवर्णश्चकान्तलौहश्चपारदम्।
मुक्तागुडत्वचश्चैवसूक्ष्मैलापत्रकेशरम्॥
समभागंविचूर्ण्याथकन्यानीरेणभावयेत्।
द्विमापंवटिकांखादेत्दुग्धान्नंप्रपिवेत्ततः॥
प्रमेहंनाशयत्याशुकेसरीकरिणंयथा।
शुक्रप्रवाहंसमयेत्त्रिरात्रान्नात्रसंशयः॥

चिरजातंप्रवाहश्चमधुमेहंश्चनाशयेत् ।

अर्थ—घीगुवारके पट्ठेमें किंचिन्मात्र निमक मिलाय ७ दिन खाय तो प्रमेह दूर हो. मृत-बंग, सुवर्णभस्म, कान्तलोह, पारा, मोती, दालचीनी, छोटी इलायची, पत्रज और केशर इन सबको समान भाग ले घीगुवारके रसकी भावना देकर दो दो मासेकी गोलियां बनावे एक गोली नित्य खाय ऊपरसे दूध भात खाय तो प्रमेह दूर होवे ।

योगेश्वरोरसः

सूतकंगंधकंलोहंनागंचापिवराटकम् ।
ताम्रकंवंगभस्मापिव्योमकश्चसमांशिकम् ॥
सूक्ष्मैलापत्रमुस्तश्चविडंगंनागकेशरम् ।
रेणुकामलकश्चैवपिप्पलीमूलमेवच ॥
एषाश्चद्विगुणंभागंमर्दयित्वाप्रयत्नतः ।
भावनातत्रदातव्याधात्रीफलरसेनच ॥
मात्राचणकतुल्याचगुडिकेयंप्रकीर्तिता ।
प्रमेहंबहुमूत्रंश्चअश्मरींमूत्रकृच्छ्रकम् ॥
व्रणंहन्तिमहाकुष्ठंअर्शांसिचभगंदरम् ।
योगेश्वरोरसोनाममहादेवेनभाषितः ॥

अर्थ—पारा, गंधक, लोह, सीसा, कौडी, तांबा और बंग इनकी भस्म और अभ्रक समान लेवे. छोटीइलायची, पत्रज, नागरमोथा, वायविडंग, नागकेशर, रेणुका, आंवले, पीपलामूल, इन सबको दो दो भाग लेवे सबका एकत्र चूर्णकर आंवलेके रसकी भावना देकर चनेके बराबर गोलियां बनावे यह गोलियां प्रमेह, बहुमूत्र, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, महाकुष्ठ, बवासीर और भगंदर इनको यह योगेश्वर नामक रस दूर करे ।

—

सोमरोगचिकित्सा.

तालकेश्वरोरसः

तालसूतंसमंगन्धंमृतलौहाभ्रवंगकम् ।
मर्दयेन्मधुनाचैवरसोयंतालकेश्वरः ॥
माषमात्रंभजेत्क्षौद्रैर्बहुमूत्रप्रशान्तये ।
उदुम्बरफलंपक्वंचूर्णितंकर्षमानतः ॥
संलेह्यंमधुनासार्द्धमनुपानंसुखावहम् ।

अर्थ—हरिताल, पारा, गंधक, लोहभस्म, अभ्रक और बंग इन सबको समान भाग लेकर सहतसे खरल करे, फिर १ मासेकी गोलीको सहतके साथ खाय तो बहुमूत्र दूरहो. इसके ऊपर पके गूलरका चूर्ण १ तोले सहतके साथ चाटे यह अनुपान है ।

गगनादिलौहम्.

गगनंत्रिफलालौहंकुटजंकटुकत्रयम् ।
पारदंगन्धकश्चैवविषटंकणसर्जिकाः ॥
त्वगेलातेजपत्रश्चवंगजीरकयुग्मकम् ।
एतानिसमभागानिश्लक्ष्णचूर्णानिकारयेत् ॥
तदर्द्धंचित्रकंचूर्णंकर्षैकंमधुनालिहेत् ।
अवश्यंविनिहन्त्याशुमूत्रातिसारसोमकम् ॥

अर्थ—अभ्रक, त्रिफला, लोहभस्म, कूडाकी छाल, त्रिकुटा, पारा, गंधक, विष, सुहागा, सज्जी, दालचीनी, तेजपात, बंगभस्म और दोनों जीरे सबको समान भाग ले सबका चूर्ण करे सबसे आधा चीतेका चूर्ण मिलवे, सबको मिलाय १ तोलेको सहतके साथ खाय तो अवश्य मूत्रातीसार और सोमरोगको दूर करे।

सोमनाथरसः

कर्पूंजारितलौहश्चतदर्द्धंरसगंधकम् ।
एलापत्रंनिशायुग्मंजम्बुवीरणगोक्षुरम् ॥
विडंगंजीरकंपाठाधात्रीदाडिमटंकणम् ।

चन्दनंगुग्गुलुर्लोध्रशालार्ज्जुनरसांजनम् ॥
छागीदुग्धेनवटिकांकारयेत्दशरत्तिकाम् ।
निर्म्मितोनित्यनाथेनसोमनाथरसस्त्वयम् ॥
सोमरोगंवहुविधंप्रदरंहन्तिदुर्ज्जयम् ।
योनिशूलंमद्गूलंसर्वंजाचिरकालजम् ॥
वहुमूत्रंविशेषेणदुर्जयंहन्त्यसंशयः ।

अर्थ–लोहभस्म १ तोले, पारा ६ मासे, और गंधक ६ मासे, इलायची, तेजपात, हल्दी, दारुहल्दी, जामुन, वीरणतृण, गोखरू, वायविडंग, जीरा, पाढ, आंवले, अनारदाना, सुहागा, चंदन, गूगल, लोध, राल, कोह, रसोत, इन सबको समान ले वकरीके दूधसे दस २ रत्तीकी गोलियां वनावे यह सोमनाथरस नित्यनाथका निर्माण कियाहै. यह सोमरोग, अनेक प्रकारके प्रदररोग, योनिशूल, लिंगशूल, और भी सर्व प्रकारके शूल, वहु दिनोका शूल, वहुमूत्र इन सबको निस्सन्देह दूर करे ।

वृहत्सोमनाथरसः

हिंगुलात्संभवंसूतंपालिंधारसमार्दितम् ।
रण्डाशोधितगन्धश्चतेनैवकज्जलीकृतम् ॥
तद्दयोर्द्विगुणंलोहंकन्यारसविमर्दितम् ।
अभ्रकंवंगकंरौप्यंखर्परंमाक्षिकंतथा ॥
सुवर्णश्चसमंसर्वंप्रत्येकश्चरसार्द्धकम् ।
तत्सर्वंकन्यकाद्रावैर्मर्द्दयेत्भक्षयेत्ततः ॥
भेकपर्णीरसेनैवगुञ्जाद्दयवटींततः ।
मधुनाभक्षयेच्चापिसोमरोगनिवृत्तये ॥
प्रमेहान्विंशतिंहन्तिवहुमूत्रश्चसोमकम् ।
मूत्रातिसारंकृच्छ्रश्चमूत्राघातंसुदारुणम् ॥
वहुदोषंवहुविधंप्रमेहंमधुसंज्ञकम् ।
हस्तिमेहंभिक्षुमेहंलालामेहंविनाशयेत् ॥
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसोमसंज्ञकम् ।
नाशयेद्वहुमूत्रंचप्रमेहमविकल्पतः ॥

अर्थ–हींगलूका निकाला पाराको निसाथके रसमें खरलकर लेवे, फिर मूषकपर्णीके रसमें शुद्ध की हुई गंधक लेकर कजली करे, कजलीसे दूनी लोहभस्म मिलाकर घीगुवारके रससे कजलीकर इसमें अभ्रक, वंग, रूपरस, खपरिया, सोनामक्खी और सुवर्णकी भस्म प्रत्येक पारेसे आधी २ लेवे, सबको घीगुवारके रससे खरलकर मंडूकपर्णीके रससे दो २ रत्तीकी गोलियां वनावे और सहतके साथ खाय तो सोमरोग दूरहो, वीस प्रकारका प्रमेह, वहु मूत्र, सोमरोग, मूत्रातिसार, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मधुप्रमेह, हस्तिप्रमेह, इक्षु प्रमेह, लालाप्रमेह, तथा वातपित्त और कफके सोमरोगोंका नाश करे ।

सोमेश्वरोरसः

शालार्ज्जुनंलोध्रकंचकदम्बागुरुचंदनम् ।
अग्निमन्थंनिशायुग्मंधात्रीदाडिमगोक्षुरम् ॥
जम्बूवीरणमूलंचभागमेषांपलार्द्धकम् ।
रसगंधकधान्याब्दमेलापत्रंतथाभ्रकम् ॥
लौहंरसांजनंपाठाविडंगटंकजीरकम् ।
प्रत्येकंपलिकंभागंपलार्द्धंगुग्गुलोरपि ॥
घृतेनवटिकांकृत्वाखादेत्षोडशरत्तिकाम् ।
गहनानन्दनाथेनरसोयत्नेननिर्म्मितः ॥
सोमेश्वरोमहातेजाःसोमरोगंनिहन्त्यलम् ।
एकजंद्वंद्वजंचैवसन्निपातसमुद्भवम् ॥
मूत्राघातंमूत्रकृच्छ्रंकामलांचहलीमकम् ।
भगन्दरोपदंशांचविविधान्पीडकाव्रणान् ॥
विस्फोटार्वुदकण्डूंचसर्वमेहांविनाशयेत् ।

अर्थ–राल, कोह, लोध, कदंवकी छाल, अगर, चन्दन अरनी, हल्दी, दारुहल्दी, आंवले, अनारदाना, गोखरू, जामुनि, और

वीरणतृणकी जड प्रत्येक दो २ तोला लेवे. पारा, गंधक, धनियां, नागरमोथा, इलायची, अभ्रक, लोह, रसोत वायविडंग, सुहागा और जीरा प्रत्येक चार २ तोले लेवे. और गूगल दो तोले सबको कूटपीस घीके साथ दो २ मासेकी गोलियां बनावे. यह गहनानन्द नाथ का कहा **सोमेश्वर महारस** सोमरोगको दूर करे. एकदोषज, द्विदोषज, सन्निपातज, मूत्रा घात, मूत्रकृच्छ्र, कामला, हलीमक, भगन्दर, उपदंश और अनेक प्रकारकी पिडिका, व्रण, विस्फोटक, अर्बुद, खुजली और सर्व प्रकारकी प्रमेहोंको दूर करे।

स्थौल्याधिकारः

त्र्यूषणाद्यंलोहम्.

त्र्यूषणंविजयाचव्यंचित्रकंविडमौद्भिदम्।
वाकुचीसैंधवंचैवसौवर्चलसमन्वितम् ॥
अयश्चूर्णेनसंयुक्तंभक्षयेन्मधुसर्पिषा ।
स्थौल्येचकर्षणंश्रेष्ठंवलवर्णाग्निवर्द्धनम् ॥
मेहघ्नंकुष्ठशमनंसर्वव्याधिहरंपरम् ।
नाहारेयंत्रणाकार्य्यानविहारेतथैवच ॥
त्र्यूषणाद्यमिदंलोहंरसायनवरोत्तमम् ।

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, भांग, चव्य, चीता, कालानोन, रेहकानिमक, बावची, सैंधानिमक, संचरनोन और लोहभस्म इन सबको समान भाग लेवे, सबको खरलकर इसे सहत और घीके साथ खाय तो स्थूलताको दूर करे. बल, वर्ण और अग्निको बढावे, प्रमेह, कोढ, और सब प्रकारकी व्याधियोंका हरण करे इसपर आहार बिहारका परहेज नहीं यह त्र्यूषणादि लोह रसायन है।

वडवाग्निलोहम्.

सूतभस्मसतालंचलोहंताम्रंसमंसमम् ।
मर्दयेत्सूर्य्यपत्रेणचास्यवल्लंप्रयोजयेत् ॥
मधुनास्थूलरोगेचशोथेशूलेतथैवच ।
मध्वाज्यमनुपानंचदेयंवापिकफोल्वणे ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, हरितालकी भस्म, लोह भस्म, और ताम्र भस्म प्रत्येक बराबर लेवे. और सबको आकके पत्तोंके रसमें खरलकर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे १ गोली सहतके साथ देवे तो स्थूलता, सूजन, और शूलको दूर करे. इसके उपर घृत सहत विषम भाग मिलाकर अनुपानमें देवे तथा इसको कफोल्वणमेंभी देना चाहिये।

वडवाग्निरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंताम्रंतालसमंसमम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यंक्षौद्रैर्लेह्यंत्रिगुंजकम् ।
वडवाग्निरसोनाम्नास्थौल्यमाशुनियच्छति॥

अर्थ–शुद्धपारा, गंधक, ताम्रभस्म, और हरिताल सबको बराबर ले आकके दूधसे एक दिन खरलकर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे, एक गोली सहतके साथ लेवे तो यह वडवाग्निरस स्थूलता रोगको शीघ्र दूर करे।

उदररोगाधिकारः

त्रैलोक्यसुन्दरोरसः

शुद्धसूतंद्विभागन्धंताम्राभ्रंसैन्धवंविषम्।
कृष्णजीरंविडंगंचगुडूचीसत्वचित्रकम् ॥
उग्रगन्धायवक्षारंप्रत्येकंकर्षमात्रकम् ।
निर्गुंडिकाद्रवैरग्निबीजपूरद्रवैर्दिनम् ॥
मर्दयेत्शोषयेत्सोयंरसस्त्रैलोक्यसुन्दरः ।
गुंजाद्वयंघृतैर्लेह्यंवातोदरकुलान्तकम् ॥
वन्हिचूर्णयवक्षारंप्रत्येकंचपलद्वयम् ।
घृतप्रस्थंविपक्तव्यंगोमूत्रैश्चचतुर्गुणैः ॥

घृतावशेषंकर्त्तव्यंकर्षमात्रंपिवेद्नु ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, ताम्रभस्म, अभ्रक, सेंधानिमक, विष, कालाजीरा, वायविडंग, गिलोयसत्व, चीतेकी छाल, बच और जवाखार प्रत्येक एक २ तोले लेवे सबको निर्गुंडो, चीता और विजौरेके रसमें एक २ दिन खरलकर धूपमें सुखावे तो यह त्रैलोक्यसुन्दर रस बने. इसको दो रत्ती सहतके साथ चाटे तो उदररोग दूर हो, चीतेका चूर्ण और जवाखार प्रत्येक चार २ तोले ले और सेरभर घी और चौगुना गोमूत्र मिलकर औटावे जब घी शेष रहे तब उतार ले इसे त्रैलोक्यसुन्दर रसके ऊपर १ तोले पीवे ।

वैश्ववानरीवटी.

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमृताकायःशिलाजतु ।
रसमानंप्रदातव्यंरसस्यद्विगुणंविषम् ॥
त्रिकटुश्चित्रकंवीरानिर्गुण्डीमूसलीरजः ।
अजमोदाविषांशेनप्रत्येकंचनियोजयेत् ॥
निम्बपंचांगुलक्काथैर्भावनाचैकविंशतिः ।
भृंगराजरसैःसप्तदत्वाक्षौद्रैर्विलोडयेत् ॥
भक्षयेद्वदरास्थ्याभांवटिकान्तांदिवानिशि ।
श्लेष्मोदरंनिहंत्याशुनाम्नावैश्वानरीवटी ॥
देवदारुवन्हिमूलकल्कक्षीरेणपाययेत् ।
भोजनंमेषदुग्धेनकुलत्थानांरसेनतु ॥

अर्थ–पारा १ तोले, गंधक दो तोले, तांबेकी भस्म और शिलाजीत एक २ तोले, विष दो तोले, त्रिकुटा, चीता, बीरणमूल, सम्हालू, मूसलीका चूर्ण, और अजमोद प्रत्येक दो २ तोले ले फिर नीम और अरंडके काढेकी २१ भावना देवे. पश्चात् भांगरेके रसकी ७ भावना देकर सहतसे खरलकर वेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावे. एक २ गोली प्रतिदिन सायंकाल और प्रातःकालमें भक्षण करे तो यह वैश्वानर वटी कफोदरको दूर करे. देवदारु और चीतेकी छालका कल्ककर दूधके साथ पीवे तथा वकरीके दूध और कुलथीके रसके साथ सेवन करे ।

जलोदरारिरसः

पिप्पलीमरिचंताम्रंरजनीचूर्णसंयुतम् ।
स्नुहीक्षीरैर्दिनैमर्द्यंतुल्यंजैपालवीजकम् ॥
निष्कंखादेद्विरेकंस्यात्सद्योहन्तिजलोदरम् ।
रेचनानांचसर्वेषांदध्यन्नस्तम्भनेहितम् ॥
दिनान्तेचप्रदातव्यमन्नंवामुद्गयूषकम् ।

अर्थ–पीपल, कालीमिरच, ताम्रभस्म, हलदीका चूर्ण, सबको थूहरके दूधसे एक दिन खरलकरे फिर समान भाग जमालगोटा मिलाकर ४ मासे खाय तो दस्त होकर जलोदरको दूर करे. यदि दस्त बंद कराने होवें तो दही भातका भोजन करावे अथवा सायंकालमें मूंगका यूष देवे ।

वन्हिरसः

सूतस्यगंधकस्याष्टौरजनीत्रिफलाशिलाः ।
प्रत्येकंचद्विभागंस्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रकम् ॥
प्रत्येकंचत्रिभागंचव्योषंदन्तिकजीरकम् ।
प्रत्येकंसप्तभागंस्यादेकीकृत्यविचूर्णयेत् ॥
जयन्तीस्नुकपयोभृंगवन्हिवातारितैलकैः ।
प्रत्येकंचक्रमाद्भाव्यंसप्तवारंपृथक्पृथक् ॥
महावन्हिरसोनाम्नानिष्कमुष्णजलैःपिवेत् ।
विरेचनंभवेत्तेनतक्रभुक्तंससैन्धवं ॥
दिनान्तेदापयेत्पथ्यंवर्जयेच्छीतलंजलम् ॥
सर्वोदरहरःप्रोक्तःश्लेष्मवातहरःपरः ।

अर्थ–पारा और गंधक प्रत्येक आठ २ तोले हलदी, त्रिफला, मनसिल, प्रत्येक दो २ तोले, निसोथ, जमालगोटा और चीता प्रत्येक

तीन ३ तोले लेवे सोंठ, मिरच, पीपल, दन्ती और जीरा प्रत्येक सात ७ भाग ले चूर्णकर अरनी, थूहरके दूध, भांगरा, चीता, और अंडीका तेल प्रत्येककी सात ७ भावना देवे इस महावन्हिरसको गरमजलके साथ पीवे तो दस्त हों इसपर गरमजल न पीवे रात्रिको छाछमें सैंधानिमक मिलाकर भातके साथ देवे तो यह सर्व उदररोंको हरण करे, तथा कफवातका हरण करे ।

त्रैलोक्यडुम्बरोरसः

द्वौभागौशिववीजस्यगंधकस्यचतुष्टयम् ।
अभ्रवन्हिविडंगानांगुडूचीसत्वनागयोः ॥
कृष्णजीरकटूनांचलवणक्षारयोरपि ।
प्रत्येकंभागमादायमर्दयेत्सुरसाद्रवैः ॥
वीजपूररसैर्भूयोमर्दयित्वाविशोषयेत् ।
त्रैलोक्यदुम्वरोनामवातोदरकुलान्तकः ॥
गुंजाद्वयंततश्चास्यददीतघृतसंयुतम् ।
भोजयेत्स्निग्धमुष्णंचपायसंचाविवर्जयेत् ॥

अर्थ-पारा दो तोले, गंधक ४ तोले, अभ्रक, चीता, वायविडंग, गिलोयसत्व, सीसेकी भस्म, कालाजीरा, त्रिकुटा, निमक, सज्जीखार, जवाखार, प्रत्येक एक एक भाग लेवे, सबको तुलसी और बिजौरेके रससे खरलकर गोलियां बनावे. यह त्रैलोक्यदुंवर रस वादीके उदरको दूर करे. इसकी दो रत्तीकी मात्रा घृतके साथ देवे और चिकना व गरम भोजनको देवे, परन्तु खीरका भोजन मना है ।

इच्छाभेदीरसः

शुंठीमरिचसंयुक्तंरसगन्धकटंकणम् ।
जैपालोद्विगुणःप्रोक्तःसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥
इच्छाभेदीद्विगुंजःस्यात्सितयासहदापयेत् ।
पिवेच्चुलुकान्यावत्तावद्वारान्विरेचयेत् ॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, सोंट और कालीमिरच इन सबको समान भाग ले और एक औषधिसे दूना जमालगोटा डाले सबको एकत्र पीस इसमेंसे दो रत्ती मिश्रीके साथ देवे इसके ऊपर जितने पानीके चुल्लू पीवे उतनेही दस्तहों यह इच्छाभेदीरस है ।

पिप्पल्याद्यंलौहम्

पिप्पलीमूलचित्राभ्रत्रिकत्रयेन्दुसैंधवम् ।
सर्वचूर्णसमंलौहंहन्तिसर्वोदरामयम् ॥

अर्थ-पीपलामूल, चीतेकी छाल, अभ्रक, त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद, कपूर और सैंधानिमक, सबकों बराबर ले और सबकी बराबर लोह मिलावे इसके सेवनसे सर्व प्रकारके उदररोग दूर हों ।

उदरारिरसः

पारदंशुक्तितुत्थंचजैपालंपिप्पलीसमम् ।
अरग्वधफलान्मज्जावज्रीक्षीरेणमर्दयेत् ॥
माषमात्रांवटींखादेत्स्त्रीणांजलोदरंजयेत् ।
चिंचाफलरसंचानुपथ्यंदध्योदनंहितम् ॥
दकोदरहरंचैवतीव्रेणरेचनेनच ।

अर्थ-पारा, सीसेकीभस्म, नीलाथोथा, जमालगोटा, पीपल, अमलतासका गूदा, सबको बराबर लेकर थूहरके दूधसे खरलकर एक मासेकी गोली खाय तो स्त्रीका जलोदर दूर हो इसके ऊपर इमलीका पत्ता और दहीभातका भोजन करे इसके तीव्र जुल्लाबसे जलोदर दूर होवे ।

वंगेश्वरोरसः

सूतभस्मवंगभस्मभागैकंसम्प्रकल्पयेत् ।
गन्धकंमृतताम्रंचप्रत्येकंचचतुःपलम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनैर्मर्द्यसर्वंतद्गोलकीकृतम् ।
रुद्ध्वातद्भूधरेपक्वापुटकेनसमुद्धरेत् ॥

एषवंगेश्वरोनामपीतोगुल्मोदरंजयेत् ।
घृतैर्गुंजाद्वयंलेह्यंनिष्कांश्वेतपुनर्नवां ॥
गवांमूत्रैःपिवेचानुरजनींम्वागवांजलैः ।

अर्थ–पारेकी भस्म, वंगभस्म, एक २ पल लेवे. गंधक और ताम्रभस्म प्रत्येक चार २ पल सबको आकके दूधसे एक दिन खरलकर गोला बनावे, उसको भूधरयंत्रमें एक दिन रखके पचावे तो यह वंगेश्वररस सिद्ध होवे यह गोला और उदररोगोंको दूर करे. इसको दो रत्ती घृतके साथ चाटे ऊपरसे विषखपरेको गोमूत्रमें पीसकर पीवे अथवा हल्दीके चूर्णको गोमूत्रमें पीवे।

प्लीहरोगचिकित्सा

रोहीतकलौहम्

रोहीतकसमायुक्तंत्रिकत्रययुतन्त्वयः ।
प्लीहानमग्रमांसंचयकृतंचविनाशयेत् ॥

अर्थ–रोहेडेकी छाल, त्रिकुटा, त्रिफला, और त्रिमद सबको समान ले और सबकी बराबर लोहभस्म मिलावे, इसे सेवन करे तो प्लीह, अग्रमांस और यकृतरोगको दूर करे ।

लोकनाथोरसः

पारदंगन्धकंचैवसमभागंविमर्दयेत् ॥
मृताभ्रंरसतुल्यंचयत्नेनपरिमर्दयेत् ।
रसाद्द्विगुणलौहंचलौहतुल्यंचताम्रकम् ॥
भस्मवराटिकायाश्चताम्रतस्त्रिगुणंकुरु ।
नागवल्लीदलेनैवमर्दयेद्यत्नतोभिषक् ॥
पुटेगजपुटेविद्वान्स्वांगशीतंसमुद्धरेत् ।
यकृत्प्लीहोदरंगुल्मंश्वयथुंचविनाशयेत् ॥
पिप्पलींमधुसंयुक्तांसगुडांवाहरीतकीम् ।
गोमूत्रंचपिवेचानुगुडंवाजीरकान्वितम् ॥

अर्थ–पारा, गंधक और अभ्रक समान भाग लेके खरलकरे, फिर पारेसे दूनी लोहभस्म और इतनीही ताम्रभस्म मिलावे. तथा तांबेकी भस्मसे तिगुनी कौडीकी भस्म मिलावे सबको पानके रसमें खरलकर गजपुटमें फूंक देवे जब स्वांगशीतल होजावे तब निकाल लेवे यह यकृत, प्लीह, उदर, गोला और सूजनको दूर करे, इसके ऊपर पीपल सहत अथवा गुड मिली हर्डका चूर्ण खाय उसपर गोमूत्र पीवे अथवा गुडयुक्त जीरा खाय ।

बृहल्लोकनाथोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंखल्वेकृत्वातुकज्जलिम् ।
सूततुल्यंजारिताभ्रंमर्दयेत्कन्यकाम्बुना ॥
ततोद्विगुणितंदद्यात्ताम्रलौहंप्रयत्नतः ।
काकमाचीरसेनैवसर्वतत्परिमर्दयेत् ॥
सूताच्चद्विगुणंगन्धंवराटीसम्भवंरजः ।
पिष्ट्वाजंबीरनीरेणमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥
तन्मध्येगोलकंक्षिप्त्वायत्नेनच्छादयेद्भिषक् ।
शरावसंपुटंकृत्वामृद्भस्मलवणाम्बुभिः ॥
शरावसन्धिमालिप्यंचातपेशोषयेत्क्षणम् ।
ततोगजपुटंदत्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
पिष्ट्वातुसर्वमेकत्रस्थापयेत्भाजनेशुभे ।
खादेद्वल्लंद्वयंचास्यमूत्रंचानुपिवेन्नरः ॥
मधुनापिप्पलीचूर्णंसगुडांवाहरीतकीम् ।
अजाजींवागुडेनैवभक्षयेत्तुल्ययोगतः ॥
यकृतंप्लीहरोगंचश्वयथुंचविनाशयेत् ।
वाताष्ठीलांचकमठींप्रत्यष्ठीलांतथैवच ॥
कांस्यकोडाग्रमांसंचशूलंचैवभगंदरम् ।
वंन्हिमांद्यंचकासंचलोकनाथरसोत्तमः ॥

अर्थ–पारा १ तोले, और गंधक दो तोले, दोनोंकी कजली करे, फिर तांबेकी भस्म एक तोले मिलाकर घीगुवारके उससे खरलकरे. फिर इसमें दूनी ताम्रभस्म और लोहेकी भस्म

मिलावे. और मकोयके रससे खरल कर गोला बनावे. फिर गंधक दो तोले और कोडियोंकी भस्म दो तोले सबको जंबीरी नीबूके रसमें खरल करे, दो मूसोंके बीचमें गोलेको रखे फिर बंदकर सराव संपुटमें रखके मिट्टी, राख, निमक और जलसे सरावकी संधियोंको बंदकर सुखाय गजपुटमें फूंकदेवे. जब स्वांग शीतल होजावे तब निकाल ले उस रसको पीस किसी उत्तमपात्र शीशीआदिमें रख छोडे इसमेंसे ६ रत्ती खाय ऊपरसे गोमूत्र पीवे और सहत मिला पीपलका चूर्ण वा गुड मिला हर्डका चूर्ण वा वराबरका जीरा गुडमें मिलाके खाय तो यकृत्, प्लीह, उदर. सूजन, वातष्ठीला, कमरकीबादी, प्रत्यष्ठीला, कांस्यक्रोढ, अग्रमांस, मन्दाग्नि, शूल, भगंदर और खांसी इन रोगोंको यह लोकनाथ रस दूर करे।

ताम्रेश्वरवटी.

हिंगुत्रिकटुकंचैवअपामार्गस्यपत्रकम् ।
अर्कपत्रंतथास्नुहीपत्रंचसमभागिकम् ॥
सैन्धवन्तत्समंग्राह्यंलौहंताम्रंचतत्समम् ।
प्लीहानंयकृतंगुल्ममामवातंसुदारुणम् ॥
अर्शांसिघोरमुदरंमूर्छांपाण्डुहलीमकम् ।
ग्रहणीमतीसारंचयक्ष्माणंशोथमेवच ॥

अर्थ–हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, ओंगाकेपत्ते, आकके पत्ते, और थूहरके पत्ते इनको समान भाग लेवे. और सबकी बराबर सैंधानिमक, और सैंधेनिमककी बराबर लोहभस्म और तांबेकी भस्म लेवे सबको खरल करे यह प्लीह, यकृत, गोला, आमवात, बवासीर, उदर, मूर्च्छा, पाण्डु, हलीमक, संग्रहणी, अतिसार यक्ष्मा और सूजनको दूर करे।

अग्निकुमारलौहम्.

तुत्थरामठटंकानिसैन्धवंधान्यजीरकम् ।
यमानीमरिचंशुण्ठीवंगैलाचविडंगकम् ॥
प्रत्येकंतोलकंचूर्णंलौहचूर्णन्तुतत्समम् ।
रसस्यगन्धकस्यापिपलैकंकज्जलीकृतम् ॥
घृतेनमधुनाखाद्यंलौहमग्निकुमारकम् ।
यकृत्प्लीहोदरहरंगुल्मंचापिहलीमकम् ॥
बलवर्णाग्निजननंकान्तिपुष्टिविवर्द्धनम् ।
श्रीमद्गहननाथेननिर्मितंविश्वसम्पदे ॥

अर्थ–नीलाथोथा, हींग, सुहागा, सैंधानिमक, धनियां, जीरा, अजवायन, कालीमिरच, सोंठ, लौंग, इलायची और वायविडंग प्रत्येक तोले १ भर ले और सबकी बराबर लोहेकी भस्म लेवे तथा पारा और गंधक चार २ तोले लेकर कजली करे यह अग्निकुमारस यकृत, प्लीह, उदर, गोला, और हलीमक इनको दूर करे. बल, वर्ण और अग्निको बढावे. कान्ति और पुष्टीको करे।

प्राणवल्लभोरसः

लौहंताम्रंवराटश्चतुत्थंहिंगुफलत्रिकम् ।
स्नुहीमूलंयवक्षारंजैपालंटंकणंत्रिवृत् ॥
प्रत्येकश्चपलंग्राह्यंछागीदुग्धेनपेषितम् ।
चतुर्गुञ्जावटींखादेद्वारिणामधुनापिवा ॥
प्राणवल्लभनामायंगहनानन्दभाषितः ।
दोषंरोगश्चसंवीक्ष्ययुक्त्यावाग्निविवर्द्धनम् ॥
निहन्तिकामलांपाण्डुमानाहंश्लीपदार्बुदम् ।
गलगण्डंगण्डमालांव्रणानिचहलीमकम् ॥
अपचींवातरक्तञ्चकण्डुविस्फोटकुष्टकम् ।
नातःपरतरःश्रेष्टःकामलार्त्तिमयेष्वपि ॥

अर्थ–लोहभस्म, ताम्रभस्म, कौडीकीभस्म, नीलाथोथा, हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, थूहरकीजड, जवाखार, जमालगोटा, सुहागा और निसोथ प्रत्येक चार २ तोले लेवे. सबको

बकरीके दूधसे पीसके ४ रत्तीकी गोली जल अथवा सहतके साथ खाय इस प्राणवल्लभ रसको रोग और दोषका बलाबल देखके देवे अथवा एक २ त्रुटि बढावे तो कामला, पाण्डु, अफरा, श्लीपद, अर्बुद, गलगंड, गंडमाला, हलीमक, व्रण, अपची, वातरक्त, खुजली, विस्फोटक, कोढ इन सबको दूर करे. कामलारोगका हरण कर्त्ता इससे परे कोई दूसरा योग नहीं है।

यकृदादिलोहम्.

द्विकर्षलोहचूर्णस्यचाभ्रकस्यपलार्द्धकम्।
कर्षंशुद्धंमृतंताम्रंलिम्पाकांछित्वचंपलम् ॥
मृगाजिनभस्मपलंसर्वमेकत्रकारयेत्।
नवगुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
यावत्प्लीहोदरञ्चैवकामलांचहलीमकम्।
कासंश्वासंज्वरंहन्याद्बलवर्णाग्निकारकम् ॥
यकृदरिःत्विदंलोहंवातगुल्मंचनाशनम्।

अर्थ—लोहकी भस्म दो तोले, अभ्रक दो तोले, शुद्धतांबेकी भस्म एक तोले, लिम्पाकीछाल, मृग चर्मकी भस्म, ४ तोले, सबको एकत्र कर नौ २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह सम्पूर्ण प्लीहोदर, कामला, हलीमक, खांसी, श्वास, ज्वर और वातगुल्मको दूर करे. तथा बलवर्ण और अग्निको बढावे इसको यकृदरिलोह कहते हैं।

मृत्युञ्जयलोहम्.

शुद्धंसूतंसमंगन्धंजारिताभ्रंसमंसमम्।
गंधकाद्द्विगुणंलोहंमृतताम्रञ्चतुर्गुणम् ॥
द्विक्षारंटंकणंविडंवराटमथशंखकम्।
चित्रकंकुनटीतालकटुकीरामठंतथा ॥
रोहीतकंत्रिवृच्चिंचाविशालाधवमंकुटम्।
अपामार्गंतालकंचमल्लिकाचनिशायुगम् ॥
कानकन्तुत्थकंचैवयकृन्मर्दरसाञ्जनम्।
एतानिसमभागानिचूर्णयित्वाविभावयेत् ॥
आर्द्रकस्वरसेनैवगुडूच्याःस्वरसेनच।
मधुनःकुडवैर्भाव्यंवटिकामाषमात्रतः ॥
अनुपानंप्रदातव्यंबुद्ध्वादोषानुसारतः।
भक्षयेत्प्रातरुत्थायसर्वरोगकुलान्तकम् ॥
प्लीहानंज्वरमुग्रंचकासंचविषमज्वरम्।
चिरजंकुलजंचैवश्लीपदंहन्तिदारुणम् ॥
रोगानीकविनाशायधन्वन्तरिकृतंपुरा।
मृत्युञ्जयमिदंलोहंसिद्धिदंशुभदंनृणाम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, गंधक, अभ्रक प्रत्येक एक २ तोले, लोहभस्म दो तोले, ताम्रभस्म चार तोले, सज्जीखार, जवाखार, कौडीकीभस्म सुहागा, शंखभस्म, चीतेकीछाल, मनसिल, हरिताल, कुटकी, हींग, रोहेडा, निसोथ, इमली, इन्द्रायनकी जड, खैरसार, अंकोल, ओंगा मूसली, चमेली, हल्दी, दारुहल्दी, धतूरेकेबीज, नीलाथोथा, सरफोका और रसौत इन सबको समान भाग ले चूर्णकर अदरख और गिलोयके रससे खरल कर ४. पल सहतकी भावना देकर एक २ मासेकी गोलियां बनावे इसको प्रातःकाल देकर दोषानुसार अनुपान कल्पना करे तो सर्व रोगोंका नाश करे. प्लीहा, घोरज्वर, खांसी, विषमज्वर, बहुत दिनोंकी तथा कुलमें परम्परासे जो चली आई रोगी श्लीपदको दूर करे. यह सम्पूर्ण रोग समूहके नाश करनेको धन्वंतरिने कहा है यह मृत्युंजयलोह मनुष्योंको सिद्धि और शुभदाता है।

प्लीहार्णवोरसः

हिंगुलंगन्धकंटंकमभ्रकंविषमेवच।
प्रत्येकंपलिकंभागंचूर्णयेदतिचिक्कणम् ॥
पिप्पलीमरिचंचैवप्रत्येकंचपलार्द्धकम्।

मर्दयित्वावटींकुर्य्यात्वल्लमात्रंप्रयत्नतः ॥
सेव्याशेफालिदलजैर्वटीमाक्षिकसंयुता ।
प्लीहानंषट्प्रकारंचहन्तिशीघ्रंनसंशयः ॥
ज्वरंमन्दानलंचैवकासंश्वासंवमिंभ्रमिम् ।
प्लीहार्णवइतिख्यातोगहनानंदभाषितः ॥

अर्थ–हींगलू, गंधक, सुहागा, अभ्रक, और विष प्रत्येक चार २ तोले लेवे, सबका वारीक चूर्णकर पीपल, कालीमिरच, दो २ तोले लेवे. सबको खरलकर तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इसको, निर्गुंडीके पत्तोंके रसमें सहत मिलाके सेवन करे तो छः प्रकारकी तापतिल्ली, ज्वर, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, वमन और भ्रमरोग इन सबको यह प्लीहारीरस दूर करे हैं.

प्लीहशार्दूलोरसः

सूतकंगन्धकंव्योपंसमभागंपृथक्पृथक् ।
एभिःसमंताम्रभस्मयोजयेद्वैद्यबुद्धिमान् ॥
मनःशिलावराटंचतुत्थंरामठलौहकम् ।
जयन्तीरोहितंचैवक्षारटंकणसैन्धवम् ॥
विडंचित्रंकानकंचरसतुल्यंपृथक्पृथक् ।
भावयेत्रिदिनंयावत्त्रिवृच्चित्रकणार्द्रकैः ॥
गुञ्जामात्रंवटींखादेत्सद्यःप्लीहविनाशनम् ।
मधुपिप्पलीसंयुक्तोद्विगुञ्जांवाप्रयोजयेत् ॥
प्लीहानमग्रमासंचयद्यद्गुल्मंसुदुस्तरम् ।
आमाशयेषुसर्वेषुचोदरेशोथविद्रधी ॥
अग्निमान्द्येज्वरेचैवप्लीन्हिसर्वज्वरेषुच ।
श्रीमद्गहननाथेनप्लीहशार्दूलभाषितः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक दो २ तोले लेवे. सबकी बराबर ताम्र भस्म लेवे. मनसिल, कौडीकी भस्म नीलाथोथा, हींग, लोहभस्म, अरनी, रोहेडा, जवाखार, सुहागा, सेंधानिमक, वायविडंग, चीतेकीछाल, और धतूरेके बीज प्रत्येक दो २ तोले लेवे. सबको निसोथ, चीतेकीछाल और अदरखके रसमें खरलकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे एक वा दो गोली प्रातःकाल सहत और पीपलके साथ खाय तो प्लीह (तिल्ली) अग्रमांस, यकृत, घोर गोलेका रोग, आमाशयके रोग, उदर, सूजन, विद्रधि, मन्दाग्नि, ज्वर और सर्व प्रकारकी प्लीहका नाश करे. यह गहननाथका कहा प्लीहशार्दूलरस है ।

प्लीहारिरसः

द्विकर्षंलौहभस्मापिकर्षंताम्रंप्रदापयेत् ।
शुद्धसूतंतथागन्धंकर्षमानंभिषग्वरः ॥
मृगाजिनंपलंभस्मलिम्पाकांघ्रित्वचःपलम् ।
एवंभागक्रमेणैवकुर्य्यात्प्लीहारिकांवटीम् ॥
नवगुंजामितंखादेच्चार्थनित्यंहिपूतवान् ।
प्लीहानंयकृतंगुल्मंहन्त्यवश्यंनसंशयः ॥

अर्थ–लोहेकी भस्म दो तोले, तांबेकी भस्म एक तोले, पारा और गंधक एक २ तोले, मृगचर्मकी भस्म ४ तोले, लिम्पाककी छाल ४ तोले, सबको खरलकर नौ २ रत्तीकी गोलियां बनावे इनके सेवनसे तिल्ली, यकृत्, गोल अवश्य दूर होवें.

प्लीहारिरसः

कर्षैकंतालचूर्णस्यतत्पादांशसुवर्णकम् ।
पलार्द्धमृतताम्रंचतत्समंशुद्धमभ्रकम् ॥
मृगाजिनस्यभस्मापिकर्षमात्रंप्रदापयेत् ।
लिम्पाकांघ्रित्वचस्तावत्सर्वमेकत्रकारयेत् ॥
रसगुञ्जाप्रमाणेनवटिकांकारयेत्ततः ।
मधुनावन्हिचूर्णेनखादेन्नित्यंयथावलम् ॥
असाध्यमपिप्लीहानंहन्त्यवश्यंनसंशयः ॥
यकृतंपाण्डुरोगंचगुल्मादिकभगंदरम् ॥

अर्थ-हरितालका चूर्ण १ तोले, सुवर्णभस्म ३ मासे, तांबेकीभस्म दो तोले, अभ्रक दो तोले, मृगचर्मकी भस्म एक तोले और लिम्पाककी जडकी छाल सबको एकत्र कर छः २ रत्तीकी गोलियां बनावे एक गोली सहत और चीतेके चूर्णके साथ नित्य खाय तो असाध्यभी प्लीहा (तिल्ली) अवश्य दूर होवे. तथा यकृत, पाण्डुरोग, गुल्म और भगंदर एभी दूर होवे।

लोहमृत्युञ्जयोरसः

रसगन्धकलौहाभ्रंकुनटीमृतताम्रकम् ।
विषमुष्टिवराटंचतुत्थंशंखंरसाञ्जनम् ॥
जातीफलंचकटुकीद्विक्षारंकानकन्तथा ।
व्योषंहिंगुसैन्धवंचमत्येकंसूततुल्यकम् ॥
श्लक्ष्णचूर्णीकृतंसर्वमेकस्मिन्भावयेत्ततः ।
सूर्य्यावर्त्तरसेनैवबिल्वपत्ररसेनच ॥
सूर्य्यावर्त्तेनमतिमान्ग्रटिकांकारयेत्ततः ।
प्लीहानंयकृतंगुल्ममष्ठीलांचविनाशयेत् ॥
अग्रमांसंतथाशोथंतथासर्वोदराणिच ।
वातरक्तंचकमठंचान्तर्विद्रधिमेवच ॥

अर्थ-पारा, गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक, मनसिल, तांबेकीभस्म, कुचला, कौडियोंकीभस्म नीलाथोथा, शंखभस्म, रसोत, जायफल, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार, जमालगोटाके बीज, त्रिकुटा. हींग, सैंधानिमक, प्रत्येक एक २ तोला लेवे. सबका बारीक चूर्णकर हुलहुल और बेलपत्रके रससे खरल करे फिर हुलहुलके रससे खरलकर गोलियां बनावे यह तिल्ली, यकृत, गोला, अष्ठीला, अग्रमांस, सूजन, सर्व प्रकारके उदररोग, वातरक्त, कमर और अंतर विद्रधि इन्का नाश करे इस रसको लोहमृत्युंजय कहते हैं।

महामृत्युञ्जयोरसः

रसगन्धकलौहाभ्रंकुनटीतुत्थताम्रकम् ।
सैन्धवश्चवराटश्चवाकुचीविडशंखकम् ॥
चित्रकंहिंगुकटुकीद्विक्षारंकट्फलंतथा ।
रसाञ्जनंजयन्तीचटंकणंसमभागिकम् ॥
एतत्सर्वंविचूर्ण्याथदिनमेकंविभावयेत् ।
आर्द्रकस्वरसेनैवगुडूच्याःस्वरसेनच ॥
गुञ्जामात्रांवटींकृत्वाभक्षयेन्मधुनासह ।
नानारोगप्रशमनोयकृद्गुल्मोदराणिच ॥
अग्रमांसंतथाप्लीहमग्निमान्द्यमरोचकम् ।
एतान्सर्वान्निहन्त्याशुभास्करस्तिमिरंयथा॥
महामृत्युंजयोनामप्रहेशेनप्रकाशितः ।

अर्थ-पारा, गन्धक, लोहभस्म, अभ्रक, मनसिल, नीलाथोथा, ताम्रभस्म, सैंधानिमक, कौडीकीभस्म, बावची, बिडनिमक, शंखभस्म, चित्रक, हींग, कुटकी, सज्जीखार, जवाखार, कायफल, रसोत, अरनी, और सुहागा प्रत्येक समान ले सबका चूर्णकर अदरख और गिलोयके रसकी एकदिन भावना देकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे एक गोली सहतके साथ भक्षण करे तो यकृत, गोला, अग्रमांस, प्लीह, मन्दाग्नि, अरुचि इत्यादि अनेक रोगोंका नाश करे यह महामृत्युञ्जय रस श्रीशिवजीने प्रकाशित किया है।

बृहद्गुडपिप्पली.

विडंगत्र्यूषणंहिंगुकुष्ठंलवणपंचकम् ।
त्रिक्षारंफेणकंचव्यंश्रेयसीकृष्णजीरकम् ॥
तालपुष्पोद्भवंक्षारंनाड्याःकुष्माण्डकस्यच।
अपामार्गोद्भवंक्षारंचिश्चायाःश्चित्रकन्तथा ॥
एतानिसमभागानिपुराणोद्विगुणोगुडः ।
गुडतुल्यंप्रदातव्यंचूर्णश्चैवकणोद्भवं ॥
मर्दयित्वादृढेपात्रेमोदकानुपकल्पयेत् ।

भक्षयेद्वर्द्धयेन्नित्यंप्लीहानंहन्तिदुस्तरम् ॥
प्रमेहंपाण्डुरोगञ्चकामलांवन्हिमान्द्यकम् ।
यकृतंपञ्चगुल्मञ्चउदरंसर्वरूपकम् ॥
जीर्णज्वरंतथाशोथंकासंपञ्चविधन्तथा ।
अश्विभ्यांनिर्मिताह्येषाशुवृहद्गुडपिप्पली ॥

अर्थ—वायविडंग, सोंठ, मिरच, पीपल, हींग, कूठ, पांचोंनिमक तीनोंक्षार, समुद्रफेन, चव्य, हर्ड, कालाजीरा, तालपुष्पका नाडीका, पेठेका, ओंगाका, इमलीका, और चीतेका इन सबका क्षार ये सब समान भाग ले, सबसे दूना पुराना गुड लेवे और गुडकी बराबर पीपलोंका चूर्ण लेवे. सबको खरलकर लड्डू बनालेवे, क्रमसे बढाता हुआ भक्षण करे तो प्लीहा रोग दूरहो, प्रमेह, पाण्डुरोग, कामला, मन्दाग्नि, यकृत, पांच प्रकारका गोलेका रोग, सर्व प्रकारका उदररोग, जीर्णज्वर, शोथरोग, पांचप्रकारकी खांसी, इन सब रोगोंको नष्ट करे यह वृहद्गुड पिप्पली अश्विनीकुमारने निर्म्माण कीइ है ।

ताम्रकल्पम्

अक्षपारदगन्धश्चकर्षद्वयमितंपृथक् ।
सर्वैःसमंमृतंताम्रंजम्बीराम्लेनमर्दयेत् ॥
सूर्य्यावर्त्तरसैःपश्चात्कणामोचरसेनच ।
योजयेत्तीव्रघर्म्मेतुयावत्सर्वन्तुजीर्य्यति ॥
जम्बीरस्यरसैर्भूयोरसंदण्डेनचालयेत् ।
दृढेशिलामयेपात्रेचूर्णयेदतिशोभनम् ॥
रक्तिद्वयक्रमेणैवयोज्यंमापद्वयावधि ।
न्हासयेच्चक्रमेणैवतथाचैवविवर्द्धयेत् ॥
जीर्णेभूंजीतशाल्यन्नंक्षीरंघृतसमन्वितम् ।
हन्त्याम्लपित्तंविविधंग्रहणींविषमज्वरम् ॥
चिरज्वरंप्लीहगदंयकृद्रोगंसुदुस्तरम् ।
अग्रमासंतथाशोथमुदरश्चसुदारुणम् ॥
कमठश्चतथाशोथवातवृद्धिंसुदारुणम् ।
धातुवृद्धिकरंवृष्यंबलवर्णकरंशुभम् ॥
सद्योवन्हिकरश्चैवसर्वरोगहरंपरम् ।
मुखशुद्धिर्विधातव्यापर्णैश्चूर्णसमन्वितैः ॥
ताम्रकल्पमिदंनाम्नासर्वरोगप्रशान्तये ।

अर्थ—बहेडा, पारा, गंधक प्रत्येक एक २ तोले लेवे. ताम्रभस्म ३ तोले सबको जंभीरीके रसमें खरलकर फिर हुलहुलके तथा पीपल और मोचरस इनसे धूपमें खरल कर फिर जंभीरीके रससे खरलकर सुखा लेवे. और शिलपर बारीक चूर्णकरे इसमेंसे दो रत्तीसे क्रमसे बढाकर दो मासे तक सेवन करे. फिर क्रमसे घटाता चला आवे, इसी प्रकार कईवार घटावें बढावे जब औषधि पचजावे तब साठी चावलोंका भात दूध और घी मिलाके भोजन करे तो आम्लपित्त,संग्रहणी विषमज्वर, बहुत दिनका ज्वर, प्लीह, यकृत्, अग्रमांस, सूजन, घोरउ-दररोग, इन सब रोगोंको दूर करे. धातुवृद्धि करे, वृष्य है, बल वर्ण करे, तत्काल अग्निको बढावे. प्रथम बीडा खाकर मुखशुद्ध करना चाहिये. यह ताम्रकल्प नाम करके विख्यात सर्व रोगोंका शमन कर्त्ता है ।

वज्रक्षारम्

दारुसैन्धवगन्धश्चभस्मीकृत्वाप्रयत्नतः ।
प्लीहानमग्रमांसञ्चयकृतञ्चविनाशयेत् ॥
सामुद्रसैन्धवंकाचंयवक्षारंसुवर्चलम् ।
टंकणंस्वर्जिकाक्षाररतुल्यंसर्वंविचूर्णयेत् ॥
अर्कक्षीरैःस्नुहीक्षीरैरातपेभावयेत्त्र्यहम् ।
तेनलिप्तार्कपत्रञ्चरुद्धाचान्तःपुटेपचेत् ॥
तत्क्षारंचूर्णयेत्पश्चात्त्र्यूषणंत्रिफलारजः ।
जीरकंरजनीवन्हिनवभागंसमंसमम् ॥
क्षारार्द्धमेवसर्वञ्चएकीकृत्यप्रयोजयेत् ।

वज्रक्षारमिदंसिद्धंस्वयंमोक्तंपिनाकिना ॥
सर्वोदरेषुगुल्मेषुशूलदोषेषुयोजयेत् ।
अग्निमांद्येप्यजीर्णेऽपिभक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयम् ॥
वाताधिकेजलंकोष्णंघृतंवापैत्तिकेहितम् ।
कफेगोमूत्रसंयुक्तमारनालंत्रिदोषजे ॥

अर्थ–देवदारु, सैंधानिमक, और गंधक इनकी भस्मको सेवन करे तो प्लीहा, अग्रमांस, और यकृत् इनको दूर करे. अथवा सामुद्रनिमक, सैंधा, कचिया, जवाखार, कालानिमक, सुहागा, और सज्जी इन सबको बराबर लेवे और सबको आक और थूहरके दूधकी तीन २ भावना दे धूपमें रखदे फिर इस कल्कमें आकके पत्ते लपेट संपुटमें रखके फूंकदेवे, जब भस्म होजावे तब इस भस्ममें त्रिकुटा, त्रिफला, जीरा, हलदी, और चीतेकी छाल सब नौ औषधोंको क्षारसे आधे लेकर मिलादेवे तो यह शिवका कहा वज्रक्षार सर्व प्रकारके गोला, शूलके दोष, मन्दाग्नि, और अजीर्ण इन रोगोंको ८ मासेके अनुमान नित्य खानेसे दूर करे. वाताधिक्यमें कुछ गरम जलके साथ खाय, पित्तके रोगोंमें घीके साथ और कफकी अधिकतामें गोमूत्रके साथ और सन्निपातमें कांजीके साथ खाना चाहिये ।

उदरामयकुंभकेसरी.

रसगंधकभस्मताम्रकंकटुकक्षारयुगंसटंकणम् कणमूलकचव्यचित्रकंलवणानितुयमानिरामठम् ॥ समभागमिदंविभावयेत्खरातपेत्व थजंबुवारिणा । उदरामयकुम्भकेसरीसए षमयितोस्यमापकः ॥ सुखार्यनुदापयेद्भिषक्प्रसभंहन्तित्रणंगदंभुवि । यकृतंकृमिमग्रमासकंकमठंप्लीहजलोदराद्वयं ॥ जठरानलंसार्द्धगुल्मकंपरमंसाममथाम्लपित्तकम् ।

अर्थ–पारा, गन्धक, तांबेकी भस्म, कुटकी सज्जीखार, जवाखार, सुहागा, पीपलामूल, चव्य, चीता, पांचोंनिमक, अजवायन और हींग ये सब वस्तु समान भाग ले सबको कूटपीस धूपमें रखके जामुनके रसकी भावना देवे तो यह उदरामय कुंभकेसरी रस बने. इसमेंसे एक मासे मद्य अथवा जलके साथ सेवन करे तो व्रणके रोग, यकृत, प्लीह, कृमिरोग, अग्रमांस, कमरके रोग, जलोदर, आमवातयुक्त उदरके विकार, गोला और अम्लपित्त इनको शीघ्र दूर करे ।

वारिशोषणोरसः

चतुर्विंशतिभागाःस्युर्गन्धाद्वंगंतदर्द्धकम् ।
वंगभागाद्धवेदर्द्धःपारदःकृष्णमभ्रकम् ॥
चतुर्दशविभागंस्यान्मृतंतद्दयितेपुनः ।
मृतलौहमष्टभागंमृतताम्रंनवात्रतत् ॥
मृतहेमद्वयंतेषांमृतरूप्यश्चसप्तकम् ।
अतिशुद्धमतिस्थूलंमृतंहीरंत्रयोदश ॥
भागाग्राह्यामाक्षिकस्यविशुद्धस्यात्रषोडश ।
अष्टादशमितंग्राह्यंनवकाशीशकंपुनः ॥
तुत्थकंचपडेवात्रनवीनंग्राह्यमेवच ।
तालकंचचतुर्भागंशिलायोज्यास्त्रयोबुधैः ॥
शैलेयंपंचदातव्यंसर्वमेकत्रनूतनम् ।
मृतमौक्तिकभागैकंसौभाग्यंद्वयमेवच ॥
कुट्टयित्वाविचूर्ण्याथजम्बीररस्यरसेनवै ।
भावयेत्सप्तयागाढंगुडिकान्तस्यंकारयेत् ॥
पानकद्वितयेकृत्वामुद्रयेत्पानकद्वयम् ।
घटमध्येनिवेश्याथदत्वापूर्वंश्चवालुकाम् ॥
उर्द्ध्वंश्चतांपुनर्दत्वावालुकांमुद्रयेन्मुखम् ।
अहोरात्रंदहेदग्नौस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥
वकुलस्यचवीजेनकण्टकारीद्वयेनच ।
गुडूचीत्रिफलावारीभावयेत्सप्तसप्ततः ॥

द्धदारसेनापितथादेयास्तुभावना: ।
गिरिकर्ण्यारसेनापिरोहितमत्स्यपित्ततः ॥
एवंसिद्धौभवेत्सम्यक्रसोमौवारिशोषणः।
देवान्गुरूंसमभ्यर्च्ययतिनोगुरवस्तथा ॥
रक्तिकाद्वितयंदेयंसन्निपातेसमुच्छ्रये ।
मरिचेनसमंदेयंतेनजागर्तिमानवः ॥
श्लैष्मिकेचगदेदेयंग्रहण्यामग्निमान्द्यके ।
प्लीह्निपाण्डौप्रयोक्तव्यंत्रिकटुत्रिफलाम्भसा
अतिवह्निकरःश्रीदोवलवर्णाग्निवर्द्धनः ।
धन्वन्तरिकृतःसद्योरसःपरमदुर्लभः ॥
सर्वरोगेप्रयोक्तव्योनिःसन्देहंभिषग्वरैः ।

अर्थ-गंधक २४ तोले, बंगभस्म १२ तोले, पारा ६ तोले, वज्राभ्रककी भस्म १४ तोले, सार ८ तोले, तांबेकी भस्म ८ तोले, सुवर्णकीभस्म २ तोले, चांदीकीभस्म ७ तोले, हीराकी अत्यन्त शुद्धभस्म १३ तोले, शुद्ध सुवर्णमाक्षिककी भस्म १६ तोले, कशीश १८ तोले, नीलाथोथा ६ तोले, हरिताल ४ तोले, मनसिल ३ तोले, शिलाजीत ९ तोले, मोतीकीभस्म १ तोले, सुहागा दो तोले, सब नवीन ले सबको कूटकर जंभीरीके रसकी ७ भावना देकर गोला बनाय उसको वालुकायंत्रमें रख एक दिनरात्रिकी मन्दाग्नि देवे, स्वांग शीतल होनेपर निकाल लेवे, फिर इस्को मौलसिरीके बीज, दोनोंकटेरी, गिलोय, त्रिफला, विधायरा, उपलसिरी इनके रस तथा काढेकी सात २ भावना यथा संभव दे. फिर रोहू मछलीके पित्तेकी ७ भावना दे, तो यह रस सिद्ध होवे प्रथम देवता, गुरु तथा सन्यासी और मातापितादि बडोंका पूजन कर दो रत्ती रस घोर सन्निपात वालेको कालीमिरचोंके चूर्णके साथ देवे, तो सन्निपातकी मूर्च्छा दूर होवे. कफरोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी, प्लीह और पाण्डुरोग इनमें त्रिफलाके काढेके साथ देवे. इसै शूलरोग, उदावर्त्त, और दुष्ट कुष्टरोगमें कठूमरके काढेके साथ देवे. यह जठराग्निको अत्यन्त प्रबल करे कान्ति करे, बलवर्णको बढावे, यह श्रीधन्वन्तरि भगवानका कहा परमदुर्लभ वारिशोषणरस है इसको निस्संदेह सब रोगोंमें देना चाहिये ।

सर्वतोभद्ररसः

सूतंगंधंतपनगगनंकान्तलौहस्यचूर्णम् ।
कृत्वैकस्मिन्दृषदिपिशितंशृंगवेरस्यवारा ॥
युंज्याद्रोगेयकृतिगुदजेप्लीह्निसर्वज्वरेषु ।
शोथेपाण्डौकृमिकृतगदेसर्वतःकामलायाम् ॥
कासेश्वासेचमेहेजठरजलगदेसर्वदोषप्रभूते ।
ख्यातोयोगःसुरमणिकृतःसर्वरोगैकहन्ता ॥

अर्थ-पारा, गंधक, तांबा, अभ्रक और कान्तलोह इनकी भस्म लेकर अदरखके रसमें एक दिन खरलकर एक एक रत्तीकी गोलियां बनावे. इस्से यकृत् (तिल्ली) गुदाके रोग, प्लीहा, सर्वज्वर, सूजन, पाण्डु, कृमिरोग, कामला, खांसी, श्वास, प्रमेह, उदर, और जलके रोगोंमें देवे यह सुरमणिका कहा प्रसिद्धियोग सर्वरोग हरण कर्त्ता है ।

अथशोथरोगचिकित्सा

त्रिकट्वाद्यंलौहम्

त्रिकटुत्रिफलादन्तीमार्गत्रिमदशुण्ठकैः ।
पुनर्नवायसैर्युक्तंशोथंहन्तिसुदुस्तरम् ॥
लोहंशोथोदरंस्थौल्यंजलोदरनिवारणम् ।

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, दंती, ओंगा, त्रिमद, सांठ, और सबकी बराबर लोह भस्म लेवे. इसके

भक्षणसे घोरसूजन, उदर, स्थूलता और जलोदरका नाश होवे ।

कटुकाद्यंलौहम्

कटुकीत्र्यूषणंदन्तीविडंगंत्रिफलातथा ।
चित्रकोदेवकाष्ठंचत्रिवृद्वारणपिप्पली ॥
तुल्यान्येतानिचूर्णानिद्विगुणंस्यादयोरजः ।
क्षीरेणपीतमेतत्तुश्रेष्ठंश्वयथुनाशनम् ॥

अर्थ–त्रिकुटा, कुटकी, दंती, वायविडंग, त्रिफला, चीतेकी छाल, देवदारु, निसोथ और गजपीपल ये सब समान भाग लेवे. और सबसे दूना लोहभस्म मिलावे. इस्को दूधके साथ पीवे तो सूजन दूर हो ।

त्र्यूषणाद्यंलौहम्

अयोरजस्त्र्यूषणयावशूकंचूर्णंचपीतंत्रिफलारसेन । शोथंनिहन्यात्सहसानरस्ययथाऽशनिर्वृक्षमुदीर्णवेगः ॥

अर्थ–लोहभस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, और जवाखार सबका चूर्णकर त्रिफलाके रसके साथ पीवे तो सूजन दूर होवे ।

सुवर्चलाद्यंलौहम्

सुवर्चलाव्याघ्रनखंचित्रकंकटुरोहिणी ।
चव्यंचदेवकाष्ठंचदीप्यकंलोहमेवच ॥
शोथपाण्डुंतथाकासमुदराणिनिहन्तिच ।

अर्थ–सज्जी, व्याघ्रनख, चीतेकीछाल, कुटकी, चव्य देवदारु, अजवायन और लोहभस्म, इनको कूटपीस कर सेवन करे तो सूंजन, पाण्डुरोग, खांसी और उदर रोगोंको नष्ट करे ।

क्षारगुडिका.

क्षारद्वयंस्याल्लवणानिपञ्चअयश्चतुष्कंत्रिफलाचव्योपम् । सपिप्पलीमूलविडंगसारंमुस्ताजमोदामरदारुविल्वम् ॥ कलिंगकाश्चित्रकमूलपाठायष्ट्याह्वयंसातिविषंपलाशम् । सहिंगुकर्षन्ततिसूक्ष्मचूर्णंद्रोणंतथामूलकशुण्ठकानाम् ॥ स्याद्भस्मनस्तत्सलिलेनसाध्यमालोड्ययावद्घनमप्यदग्धम् । स्त्यानंततःकोलसमाश्चमात्रांकृत्वातुशुष्कांविधिनाप्रयुंज्यात् ॥ प्लीहोदरंचित्रहलीमकार्शःपाण्ड्वामयारोचकशोथशोपान् । विसूचिकागुल्मतथाश्मरींचसश्वासकासान्प्रणुदेत्सकुष्ठान् ॥ सौवर्चलंसैन्धवंचविडमौद्भिदमेवच। सामुद्रलवणंचात्रजलमष्टगुणंभवेत् ॥

अर्थ–सज्जीखार, जवाखार, पांचोनिमक, चारों प्रकारके लोहोंकी भस्म, त्रिफला, त्रिकुटा, पीपलामूल, वायविडंग, नागरमोथा, अजमोद, देवदारु, वेलगिरी, इन्द्रजौ, चीतेकी छाल, पाढ, मुलहटी, अतीस, ढाककेबीज, और हींग प्रत्येक एक २ तोला लेवे. फिर मूली और सोंठकी भस्म करके इसमें एक द्रोण जल डालके छानले इसमेंसे खार निकाल लेवे. उस खारके जलमें पूर्वोक्त सज्जी आदि औषधि डालके पकावे जब गाढा होजावे तब बेरके समान गोलियां बनावे और धूपमें सुखाकर विधिपूर्वक रोगीको देवे तो प्लीहोदर, चित्रकुष्ट, हलीमक, बवासीर, पाण्डु, अरुचि, सूजन, शोथ, विसूचिका, गोला, पथरी, श्वास, खांसी, और कोढ इन सबको दूर करे. कालानिमक, सैंधानिमक, पांगा, रेहका और समुद्रका निमक इनमें अष्टगुण जल मिलाके सेवन करे ।

वंगेश्वरः

सूतभस्मवंगभस्मभागेनैकंप्रकल्पयेत् ।
गन्धकंमृतताम्रश्चप्रत्येकश्चचतुर्गुणम् ॥
अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यंसर्वंतद्गोलकीकृतम् ।

रुद्ध्वातुभूधरेपक्त्वापुटैकेनसमुद्धरेत् ॥
एषवंगेश्वरोनाम्नाप्लीहगुल्मोदरान्जयेत् ।
घृतैर्गुंजाद्वयंलिह्यात्पिप्पकांश्वेतपुनर्नवाम् ॥
गवांमूत्रैःपिबेच्चानुरजनींवागवांजलैः ।

अर्थ–चन्द्रोदय और रांगकी भस्म प्रत्येक दो २ तोले, गंधक और तांबेकी भस्म प्रत्येक आठ २ तोले, सबको आकके दूधसे एक दिन खरलकर गोला बनावे. और भूधरयंत्रमें रखकर फूंक देवे. तो यह वंगेश्वररस प्लीह, गोला और उदरके रोगोंको जीते, दो रत्ती वंगेश्वर रसको घृतमें मिलाके खाय विपखपरेका चार मांसे चूर्ण फांकके ऊपरसे गोमूत्र पीवे अथवा चार मांसे हलदीका चूर्ण खायके ऊपरसे गोमूत्र पीवे.

अथार्बुदरोगचिकित्सा

रौद्रोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंमर्द्येयामचतुष्टयम् ।
नागवल्लीरसैर्युक्तंमेघनादपुनर्नवैः ॥
गोमूत्रपिप्पलीयुक्तंमर्द्यरुद्ध्वापुटेल्लघु ।
लिह्यात्क्षौद्रैरसोरौद्रोगुंजामात्रोर्बुदंजयेत् ॥

अर्थ–शुद्धपारा और गंधक बराबर लेके चार प्रहर पान चौलाई और सांटके रसमें खरल करे. फिर गोमूत्र और पीपलके साथ घोटकर लघुपुट देवे इस रौद्ररसको एक रत्ती सहतके साथ सेवन करे तो अर्बुदरोग दूर होवे।

रामवाणादिकान्योगवाहिनोत्रप्रयोजयेत् ।

अर्थ–इस अर्बुद रोगमें रामवाणादि योगवाही रस देने चाहिये ।

श्लीपदरोगचिकित्सा.

नित्यानन्दोरसः

हिंगुलसम्भवंसूतंगन्धकंमृतताम्रकम् ।
वंगतालश्चतुत्थंचशंखंकांस्यंवराटकम् ॥
त्रिकटुत्रिफलालौहंविडंगंपट्टुपञ्चकम् ।
चविकापिप्पलीमूलंहवुपाचवचातथा ॥
शठीपाठादेवदारुरेलाचवृद्धदारकम् ।
एतानिसमभागानिवटिकांकुरुयत्नतः ॥
हरीतकीरसंदत्वापञ्चगुंजामितांशुभाम् ।
एकैकांभक्षयेन्नित्यंशीतंवारिपिबेदनु ॥
श्लीपदंकफवातोत्थंरक्तमांसगतञ्चयत् ।
मेदोगतंधातुगतंहन्त्यवश्यंनसंशयः ॥
श्रीमद्गहननाथेननिर्मितोविश्वसम्पदे ।
नित्यानन्दकरश्चायंयत्नतःश्लीपदेगदे ॥

अर्थ–हींगलूका निकाला पारा, गंधक, तांबेकी भस्म, बंग, हरिताल, नीलाथोथा, शंखकी भस्म, कौडीकी भस्म, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्डे, बहेडा, आंवला, लोहभस्म, बायविडंग, पांचोंनिमक, चव्य, पीपलामूल, हाऊवेर, वच, कचूर, पाढ, देवदारु, इलायची, विधायरा, इन सबको समान भाग लेवे. सबको कूटपीस हर्डके रससे पांच २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली नित्य शीतल जलके साथ सेवन करे तो कफवातसे प्रकट श्लीपद रक्तमांसगत श्लीपद, मेदगत, धातुगत इन सबका नाशकरे यह **गहननाथ** का कहा प्रयोग है ।

कणादिवटी.

कणावचादारुपुनर्नवानांचूर्णसबिल्वंसमवृद्धदारकम् । संमर्द्यचैतस्यनिहन्तिवल्लःसकांजिकःश्लीपदमुग्रवेगम् ॥

अर्थ-पीपल, वच, देवदारु, सांटकी जड, बेलगिरी, और विधायरा इन सबको खरलकर तीन रत्तीकी गोली कांजीके साथ लेवे तो घोर श्लीपदरोग दूर होवे ।

भगन्दररोगचिकित्सा.

वारिताण्डवोरसः

शुद्धसूतंद्विधागन्धंकुमारीरसमर्दितम् ।
त्र्यहान्तेगोलकंकृत्वाततस्तेनप्रलेपयेत् ॥
द्वयोःसमंताम्रपत्रंहण्डिकान्तीर्नवेशयेत् ।
तद्गाण्डंभस्मनापूर्य्यचुल्ह्यांतीव्राग्निनापचेत् ।
द्वियामान्तेसमुद्धृत्यचूर्णयेत्स्वांगशतिलम् ।
जम्बीरस्यरसैःपिष्ट्वारुद्ध्वासप्तपुटेपचेत् ॥
गुंजैकंमधुनाज्येनलेह्याद्धन्तिभगंदरम् ।
मूसलीलवणंचानुआरनालयुतंपिवेत् ॥
भुंजीतमधुराहारंदिवास्वप्नश्चमैथुनम् ।
वर्जयेच्छीतलाहारंरसेऽस्मिन्वारिताण्डवे ॥

अर्थ-शुद्धपारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, दोनोंको घीगुवारके रससे ३ दिन घोटकर गोला बनावे उसपर कपर मट्टीकर दोनोंके बराबर ताम्रंपत्र ले उनको एक हंडियामें बिछाय उनके बीचमें गोलेको रख उसमें दावकर राख भर देवे फिर चूल्हेपर चढाय. दो प्रहरकी तीव्राग्नि देवे पश्चात चूल्हेसे उतार स्वांगशीतल होनेपर उस गोलेको निकाल जंबीरीके रससे पीस संपुटमें रखके फूंकदेवे. इस प्रकार सात पुट देवे, फिर इसमेंसे १ रत्ती सहत और घीके साथ सेवन करे तो भगंदर नष्ट हो, इसके ऊपर मूसली और निमकका चूर्ण कांजीमें डालकर पीवे, इस रसका सेवनकर्त्ता मिष्ट आहार करे. दिनमें सोना, मैथुन करना, और शीतल वस्तुका खाना वर्जित है. यह वारिताण्डवरस है ।

भगंदरहरोरसः

सूतस्यद्विगुणेनशुद्धवलिनाकन्यापयोभिस्त्र्यहम् । शुद्धंताम्रमयःसमस्ततुलितंपात्रंनिधायोपरि ॥ स्वेद्यंयामयुगंचभस्मपिठरेनिम्बूजलैःसप्तधा ॥ पाकंतत्पुटयेद्भगन्दरहरोगुंजामितःस्यादिति ॥

अर्थ-पारेसें दूनी शुद्ध गन्धक लेकर घीगुवारके रससे तीन दिन खरल करे, फिर इस कजलीके बराबरके तांबेके ढकनेसे कजलीको ढकके दो प्रहर स्वेदन करे फिर निकालकर नींबूके रसकी सात भावना देवे और संपुटमें रखके फूंकता जाय तो यह रस सिद्ध होवे. इसमेंसे १ रत्ती नित्य सेवन करे तो भगन्दर नष्ट होवे, तथा रूपराजरस रविसुन्दर आदि रसभी देने चाहियें ।

अथोपदंशचिकित्सा.

योगवाहिरसान्सर्वान्सर्वरोगोदितानपि ।
उपदंशेप्रयुंजीतध्वजमध्येशिराव्यधः ॥

अर्थ-जो सब रोगोंपर योगवाही रस लिखे हैं वो सब उपदंशके रोगीको देने चाहियें तथा लिंगके बीचकी फस्त खुलवावे ।

अथकुष्टरोगचिकित्सा.

गलत्कुष्ठारिरसः

कन्याकोटिप्रदानेनगंगायांपितृतर्पणे ।
विश्वेश्वरपुरीवासेतत्फलंकुष्ठनाशने ॥
गवांकोटीप्रदानेनचाश्वमेधशतेनच ।
वृषोत्सर्गेचयत्पुण्यंतत्पुण्यंकुष्ठनाशने ॥
रसोवलिस्ताम्रमयःपुरोग्निशिलाजतुस्याद्विपतिन्दुकोग्नि । सर्वैचतुल्यंगगनंकरंजबीजंत

थाभागचतुष्टयंच ॥ संमर्घगाढंमधुनाघृतेन वल्लद्वयंचास्यनिहन्त्यवश्यम् । कुष्ठंकिलाश मपिवातरक्तंजलोदरंवाथविवृद्धमूलम् ॥ विशीर्णकर्णांगुलनासिकोपिभवेत्प्रसादात्स्मर तुल्यमूर्त्तिः ।

अर्थ—करोड कन्यादान करे, गंगामें पितृका तर्पण करे, और जो काशीमें वास करे इनको जो पुण्य होता है वही पुण्य वैद्य को कुष्ठरोग दूर करनेसे होता है. करोड गोदान और सौ अश्वमेध करनेसे तथा वृषोत्सर्ग कर्त्ताको जो पुण्य होता है वही फल कुष्टरोग दूर करने वालेको होता है ।

पारा, गंधक, ताम्रभस्म, लोहभस्म, गूगल, चीता, शिलाजीत, विष, कुचला, भिलावा, और सबकी बराबर अभ्रक ले और चौगुने कंजाके बीज लेवे सबको सहत और घीगुवारसे खूब खरलकर ६ रत्ती भक्षण करे तो कुष्ट, किलास, वातरक्त, जलोदर जिससे कान नाक गलने लगे ऐसाभी बद्धमूल कोढ दूर होवे और इस रसके प्रतापसे मनुष्य कामदेवके तुल्य होवे ।

उदयभास्कर.

गन्धकेनमृतंताम्रंदशभागंसमुद्धरेत् ।
ऊषणंपंचभागंस्यादमृतंचद्विभागिकम् ॥
श्लक्ष्णचूर्णीकृतंसर्वंरक्तिकैकप्रमाणतः ।
दातव्यंकुष्ठिनेसम्यगनुपानस्ययोगतः ॥
गलितेस्फुटितेचैवविशूच्यांमण्डलेतथा ।
विचर्चिकादद्रुपामाकुष्टरोगप्रशान्तये ॥

अर्थ—गंधकसे मारा हुआ तांबा १० तोले कालीमिरच ५ तोले, सींगियाविष दो तोले, सबका बारीक चूर्णकर १ रत्तीके प्रमाण अनुपानके साथ देवे तो गलितकुष्ठ, देहका फटना, विशूचिका, मंडलकुष्ट, विचर्चिका, दाद, खुजली, इत्यादि कुष्ट दूर होवें ।

तालकेश्वरोरसः

धात्रीटंकणतालानांदशभागंसमुद्धरेत् ।
धात्र्यारसैर्मर्दयित्वाशिखरीमूलवारिणा ॥
सर्वकुष्टहरःसेव्यःसर्वदाभोजनप्रियः ।

अर्थ—आंवले, सुहागा और हरिताल प्रत्येक दश २ भाग लेके आंवलेके रस और ओंगाकी जडके रससे खरलकर गोलियां बनावे इनके सेवनसे सब प्रकारके कुष्ठ दूर हों और भूँख बढे ।

ब्रह्मरसः

भागैकंमूर्च्छितंसूतंगन्धकन्त्वशिवागुची ।
चूर्णन्तुब्रह्मबीजानांप्रतिद्वादशभागिकम् ॥
त्रिंशद्भागंगुडस्यापिक्षौद्रेणगुडिकाकृता ।
अयंब्रह्मरसोनाम्नाब्रह्महत्यादिनाशनः ॥
द्विनिष्कंभक्षणाद्धन्तिप्रसुप्तिंकुष्टमण्डलम् ।
पातालगरुडीमूलंजलैःपिष्ट्वापिबेदनु ॥

अर्थ—चन्द्रोदय १ तोले, गंधक, चीता, बावची, और ढाकके बीज प्रत्येक १२ तोले लेवे. गुड ३० तोले, सबको कूट पीस सहतसे गोलियां बनावे, यह ब्रह्मरस ब्रह्महत्यासे प्रगट कुष्ठरोगको नष्ट करे. इसमेंसे ८ मांशे भक्षण करे ऊपरसे कडवी घीयाकी जडका रस पीवे तो शून्यता, मण्डल, कुष्ट, इनका नाश करे।

चन्द्राननोरसः

सूतव्योमाग्नयस्तुल्यास्त्रिभागोगन्धकस्यच ।
काष्टोदुम्बरिकाक्षीरैःसर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥
माषमात्रंगुडींकृत्वाकुष्टरोगेप्रयोजयेत् ।
देहशुद्धिंपुराकृत्वासर्वकुष्टानिनाशयेत् ॥
एषचन्द्राननोनामसाक्षात्श्रीभैरवोदितः ।

अर्थ—पारा, अभ्रक, चीता और लोहभस्म

इनको बराबर लेवे. और इनकी बराबर गंधक ले सबको कदूमरके दूधमें खरलकर एक २ मांपेकी गोलियां बनावे. फिर (वमन विरचनादिसे) देहशुद्धी करके देवे तो सब प्रकारके कोढोंको यह चन्द्रानन नाम गोली दूर करे यह साक्षात भैरवने कही है ।

कुष्टकालानलोरसः

गन्धंरसंटंकणताम्रलोहंभस्मीकृतंमागधिकासमेतम् ॥ पंचांगनिम्बेनफलत्रिकेनविभाजितंराजतरोस्तथैव ॥ नियोजयेद्वल्लकयुग्ममानंकुष्ठेषुसर्वेषुचरोगसंघे ॥

अर्थ—पारा, गन्धक, सुहागा, तांबेकीभस्म लोहभस्म और पीपल ये सब समान भाग लेवे और नीमके पंचांगकी, त्रिफलाके काढेकी और अमलतासके काढेकी भावना देकर तयार करे इसको ६ रत्ती सम्पूर्ण कुष्टोंमें देवे तो सर्व कुष्टोंका नाश करे ।

वज्रवटी.

शुद्धसूताग्निमरिचंसूताद्विगुणगंधकम् ।
काष्ठदुम्बरिकाक्षीरैर्दिनंमर्द्यंप्रयत्नतः ॥
वराव्योपकषायेणवटीश्चास्यसमाचरेत् ।
लिह्याद्वज्रवटीह्येपापामारोगविनाशिनी ॥

अर्थ—शुद्धपारा, चीतेकीछाल, कालीमिरच, प्रत्येक एक एक तोले और गंधक दो तोले ले सबको कदूमर और सहतसे एक दिन खरलकर त्रिफला और त्रिकुटाके काढेकी भावना देवे, पश्चात् गोलियां बनाकर सेवन करे तो यह वज्रवटी खुजलीको दूर करे ।

पलत्रयंमृतंताम्रंसूतमेकंद्विगंधकम् ।
त्रिकटुत्रिफलाचूर्णंप्रत्येकंश्वपलंपलम् ॥
निर्गुण्ड्याश्चाद्रकद्रावैर्वन्हिद्रावैर्विमर्दयेत् ।
दिनैकंतद्दिशोष्याथतुषाग्नौस्वेदयेद्दिनम् ॥
समुद्धृत्यविचूर्ण्याथवागुजीतैलमर्दितम् ।
त्रिदिनंभावयेत्तेननिष्कैकंभक्षयेत्सदा ॥
चन्द्रकान्तिरसोनाम्नाकुष्ठंहन्तिनसंशयः ।
तैलंकरञ्जबीजोत्थंवन्हिगन्धकसैंधवम् ॥
अनुपानंप्रकर्त्तव्यंकल्कंवावागुजीभवम् ।

अर्थ—तांबेकी भस्म १२ तोले, पारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, त्रिकुटा और त्रिफलाके चूर्ण चार २ तोले, सबको संभालू, अदरख, और चीतेके रससे एक २ दिन खरलकरे फिर संपुटमें रखके तुषाग्निसे एक दिन स्वेदन करें फिर निकाल चूर्णकर बावचीके तेलकी ३ दिन भावना देकर ४ मासे भक्षण करे तो यह चन्द्रकान्ति रस निश्चय कुष्टरोगको शान्ति करे. इसके ऊपर बावचीका तेल, चीता, गंधक और सैंधानिमक अनुपान देवे अथवा बावचीका कल्क अनुपानमें देवें ।

संकोचरसः

मृतताम्राभ्रकंतुल्यंतयोःसूतश्चतुर्गुणम् ।
शुद्धंतन्मर्दयेत्खल्लेगोलकंकारयेत्ततः ॥
त्रिभिस्तुल्यंशुद्धगन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत् ।
तन्मध्येगोलकंपाच्यंयावज्जीर्णन्तुगन्धकम् ॥
एतन्मृद्वग्निनातावत्समुद्धृत्यविचूर्णयेत् ।
गुग्गुलुर्निम्बपञ्चांगंत्रिफलाचामृताविषम् ॥
पटोलंखादिरंसारंव्याधिघातंसमंसमम् ।
चूर्णितंमधुनालेह्यंनिष्कमौदुम्बरापहम् ॥
रसःसंकोचनामायंश्रेष्ठःपरमदुर्लभः ।

अर्थ—तांबे और अभ्रककी भस्म, समान लेकर दोनोसे चौगुना शुद्धपारा लेवे, और सबको खरलकर गोला बनावे, फिर तीनोंकी बराबर गंधकको लोहपात्रमें गलाय उसमें पूर्वोक्त पारेको मन्द २ पचावे जब सम्पूर्ण गंधक जीर्ण होजावे तब उसको निकाल खर-

लकरे और गूगल, नीमका पंचांग, त्रिफला, गिलोय, विष, पटोलपत्र, खैरसार, और अमलतास इनको समान भाग लेकर चूर्ण करे इसमेंसे ४ मासे सहतके साथ चटावे तो उदुम्बरकुष्ट दूर हो, इसे संकोचरस कहते हैं।

अमृतांकुरलौहम्.

हुताशमुखसंशुद्धंपलमेकंरसस्यवै।
पलंलौहस्यताम्रस्यपलंभल्लातकस्यच॥
अभ्रकस्यपलश्चैवंगन्धकस्यचतुःपलम्।
हरीतकीविभीतक्योश्चूर्णकर्षद्वयंद्वयोः॥
अष्टमाषाधिकंतत्रधात्र्याःपाणितलानिषट्।
घृतंचाष्टगुणंलौहाद्द्वात्रिंशत्त्रिफलाजलम्॥
एकीकृत्यपचेत्पात्रेलौहेचविधिपूर्वकम्।
पाकमेवास्यजानीयात्शास्त्रज्ञोलौहपाकवित्
भक्षयेत्प्रातरुत्थायगुरुदेवद्विजार्चकः।
रक्तिकादिक्रमेणैवघृतभ्रामरमर्दितम्॥
लौहेचलौहदण्डेनकुर्यादेतद्रसायनम्।
अनुपानञ्चकुर्वीतनारिकेलजलंपयः॥
सर्वकुष्ठहरंश्रेष्ठंवलीपलितनाशनम्।
अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकान्त्यायुर्बलवर्द्धनम्॥
सेव्यांरसोजांगललावकानांविवर्ज्यशाकाम्लमयस्त्रीयश्च। शाल्योदनंषष्टिकमाज्यमुद्गंक्षौद्रंगुडंक्षीरमिहक्रियायाम्॥

अर्थ–अग्निद्वारा शुद्ध किया पारा, लोहभस्म, ताम्रभस्म, और अभ्र इनकी भस्म और भिलाए प्रत्येक एक २ पल लेवे. गन्धक ४ पल, हर्ड और वहेडा दो २ पल, आंवले ६ तोले ८ मासे, इन सबसे अटगुना घीले और ३२ गुना त्रिफलाका काढा लेवे. सबको एकत्र कर लोहेकी कढाईमें विधि पूर्वक पचावे. इसके पाकको लोहपाक ज्ञाता टीकठीक परीक्षा करे, जब सिद्ध होजावे तब इसमेंसे एक रत्ती क्रमसे घी और सहतके साथ लोहेके पात्रमें मिलाके भक्षण करे इसके ऊपर नारियलका जल और दूध पीना अनुपान कहा है यह सब प्रकारके कुष्ट तथा वली (गुजलट) पलित (सफेद बाल) इनको दूर करे. अग्निको दीप्ति करे, हृदयको हितकारी, कान्ति, आयु और बलको बढावे इस रसके ऊपर जंगली जीवोंके मांसरस, लवापक्षीका मांस तथा सर्व प्रकारके शाक, खटाई, और स्त्री सेवन त्याज्य है. तथा शाली चांवलोंका भात, साठी चांवलोंका भात, घी, मूंग, सहत, गुड और दूध सेवन करने चाहियें।

माणिक्यरसः

पलंतालंपलंगन्धंशिलायाश्चपलार्द्धकम्।
त्रपलःशुद्धसीसश्चताम्रमभ्रमयोरजः॥
एतेषांकोलभागंचवटक्षीरेणमर्दयेत्।
ततोदिनत्रयंधर्म्मेनिम्बकाथेनभावयेत्॥
गुडूचीवालहिन्तालवानरीनीलझिण्टिका।
शोभाञ्जनसुराजाजीनिर्गुण्डीहयमारकम्॥
एषांशाणामितंचूर्णमेकीकृत्यसरित्तटे।
मृत्पात्रेकठिनेकृत्वामृदम्बरयुतेदृढे॥
एकाकीपाकविद्वैद्योनग्नःशिथिलकुन्तलः।
पचेदेवहितोरात्रौयत्नात्संयतमानसः॥
तद्विजानीहिभैषज्यंसर्वकुष्ठविनाशनम्।
सर्षपंमधुनालौहपात्रेतद्दण्डमर्दितम्॥
द्विगुञ्जंसर्वकुष्ठानांनाशनंबलवर्द्धनम्।
शीतलंसारसंतोयंदुग्धंवापाकशीतलम्॥
आनीतंतत्क्षणादाजमनुपानंसुखावहम्।
वातरक्तंशीतपित्तंहिक्काश्चदारुणंजयेत्॥
ज्वरान्सर्वान्वातरोगान्पाण्डुंकण्डुंचकामलां।
श्रीमद्गहननाथेननिर्मितोवहुयत्नतः॥

अर्थ–हरिताल १ पल, गंधक १ पल,

मनसिल दो तोले, पारा, शुद्धसीसा, ताम्रभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक दो २ तोले ले, सबको एकत्रकर बडके दूधसे खरलकरे फिर तीन दिन धूपमें नीमके काढेकी भावना दे फिर गिलोय, कलहींस, किवांच, नीलमिटी, सहजना, मुरा, जीरा संभालू, और कनेर प्रत्येक चार २ मासे लेकर चूर्ण करे इनको नदीके किनारे नम्रहो वालोंको बखेरके मिट्टीके पात्रमें देवता हित पूर्वोक्त हरताल आदिको पचावे, प्रातःकाल सब सिद्ध हुई औषधिको ले उत्तम पात्रमें भर रख छोडे यह सर्वकुष्ट नाशक दवा है. इसको घृत अथवा सहतके साथ लोहेके मूंसलेसे खरलकर दो रत्ती रोगीको दे तो सर्व प्रकारके कुष्ट दूर होवें, और बलको बढावे इसपर सरोवरका शीतलजल और औटा हुआ शीतल दूध तथा तत्कालका दुहा बकरीका दूध हितकारी है यह वातरक्त शीतपित्त दारुण हिचकी, सर्व प्रकारके ज्वर, वातरोग, पाण्डुरोग, खुजली, कामला, इन सबको दूर करे यह गहननाथका कहा माणिक्यरस है।

कुष्टकुठारोरसः

भस्मसूतसमोगन्धोमृतायस्ताम्रगुग्गुलु ।
त्रिफलाचमहानिम्बश्चित्रकश्चशिलाजतु ॥
इत्येतचूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंभागषोडशः ।
चतुःषष्टिकरञ्जश्चबीजचूर्णप्रकल्पयेत् ॥
चतुःषष्टिमृतश्चाभ्रंमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत्
स्निग्धभाण्डेस्थितंखादेद्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत्॥
रसःकुष्टकुठारोयंगलितकुष्टविनाशनः ।

अर्थ–चन्द्रोदय १ तोले, गन्धक १ तोले, लोहभस्म, ताम्रभस्म, गूगल, त्रिफला, बकायन, चीतेकीछाल, शिलाजीत, प्रत्येक चन्द्रोदयका सोलहवां भाग ले. कंजा चौसठवां भाग ले, तथा इतनाही अभ्रक भस्म लेके सहत और घी में मिलाकर चिकने बरतनमें रखछोडे इसमेंसे ८ मासे नित्य खाय तो यह कुष्टकुठाररस गलितकुष्टका नाश करे।

रसतालेश्वरः

गुञ्जशंखकरंजचूर्णरजनीभल्लातकाग्निःशिखा
कन्यासूर्य्यपयःपुनर्नवरजोगन्धंतथासूतकम्
गोमूत्रेपचितंविडंगमरिचैःक्षौद्रश्चततुल्यकम्।
हन्यादाशुविचर्चिकारुजमिदंकण्डूतथाकैटिभम् ॥

अर्थ–घूंघची, शंखभस्म, कंजा, हलदी, भिलाए, कलियारी, घीगुवार, आकका दूध, सांठ, गन्धक; और पारा इनको अठगुने गोमूत्रमें पचाकर बराबरकी वायविडंग कालीमिरच, और सहत मिलाकर लगावे तो तत्काल विचर्चिका खुजली, और कैटभकुष्टको दूरकरे।

कुष्टहरितालेश्वरः

नागस्यभस्मशाणंकंतोलकंगन्धकस्यच।
द्विनिष्कंशुद्धतालस्यसमुद्भूतंगवांजलैः ॥
विपचेत्षोडशगुणैःपात्रेताम्रमयेशनैः ।
घर्मोद्विग्रसंजम्बीरकुमारीवज्रकन्दजैः ॥
रसैर्भृंगस्यचाम्भोभिर्युतंवल्लद्वयंभजेत् ।
कुष्ठेचास्थिगतेचापिशाखानासाविभुग्नके ॥
स्वरभंगेक्षतक्षीणेमण्डलेपुमहत्स्वपि ।
औदुम्बरंहन्तिशिवामधुभ्यांकृच्छ्रश्चकुष्टंत्रिफलाजलेन ॥ गुडार्द्रकाभ्यांगजचर्म्मसिध्म विचर्चिकास्फोटविसर्पकण्डूम् ॥ निहन्तिपाण्डुंविविधांविपादींसरक्तपित्तंकटुकासिताभ्यां । खादेद्विजीरंघ्रमृतायुतश्चसमुद्गयूषंस घृतश्चदद्यात् ॥ रोहीतकजटाक्काथमनुपानंप्रयच्छति । चतुर्दशदिनस्यान्तेकुष्ठंशुष्यतियत्नतःक्षुद्रोधोजायतेत्यर्थमत्यर्थशुभगंवपुः ॥

वर्जयेत्सततंकुष्ठीमत्स्यमांसादिभोजनम् ।

अर्थ–शीशेकी भस्म ४ मासे, गंधक १ तोले, हरिताल ८ तोले, इन सबको सोलहगुने गोमूत्रमें ताम्रपात्रमें उक्तसीसे हरितालादिकी पोटली बांध लटका देवे नीचे अग्नि जलाकर धीरे २ पचावे फिर इसको जंभीरी, घीगुवार और थूहरकी जडके रसमें डाल धूपमें रख दो २ दिन खरलकरे तो यह रस सिद्ध होवे. इसमेंसे ४ रत्ती रस भांगके जलके साथ सेवन करे तो अस्थिगत कोढ, हाथ पैरोका विगाडते वाला एवं नाकको बैठाने वाला कुष्ठ, स्वरभंग क्षतक्षीण, देहके घोर चकत्ते, औदुम्बर कुष्ट, इन सबको हरड और सहतके साथ खानेसे दूर करे. त्रिफलाके काढेसे खाय तो मूत्रकृच्छ्र, और कुष्टको दूर करे. गजचर्म, सिध्मरोग, विचर्चिका, विस्फोटक, विसर्प, खुजली इनको गुड और अद्रकके साथ खानेसे नष्ट करे. कुटकी और मिश्रीके साथ सेवन करने से पाण्डुरोग, अनेक प्रकारकी विपादिका और रक्तपित्तको दूर करे. इसको दोनों जीरे, गिलोय, मूंगकायूष, इनमें घी मिलाकर सेवन करे तथा रोहेडाका क्वाथ इसपर पीवे तो १४ दिनमें कैसाही कुष्ट क्यों नही शीघ्र सूख जावे, और इसके सेवनसे अत्यन्त भूख लगती है. दिव्यदेह होवे, कुष्टरोगीको मछली मांसादिक और भारीवस्तु खाना मना है.

सोमेश्वरोरसः

शुद्धंसूतंमृतश्चाभ्रंगन्धकंमर्दयेत्समम् ।
दिनंनिर्गुण्डिकाद्रावैरुध्वान्ध्रंभूधरेपचेत् ॥
उद्धृत्यवाकुचीतैलेवाकुच्यावाकपायतः ।
दिनैकंभावयेद्धर्मेनिष्कमात्रंचभक्षयेत् ॥
वाकुचीकाकमाचीचत्रिफलाचूर्णयेत्समम् ।
मध्वाज्यैःकर्षमात्रश्चअनुपानमिदंलिहेत् ॥
कपालविषमंकुष्ठंहन्तिसोमेश्वरोरसः ।

अर्थ–शुद्धपारा, अभ्रककीभस्म, गन्धक, समान भाग लेकर एक दिन निर्गुंडीके रसमें खरलकरे. फिर भूधरयंत्रमें रख एक दिन अग्नि देवे. फिर निकाल बावचीके तेल अथवा काढेकी एक दिन भावना देकर ४ मासेके अनुमान प्रतिदिन भक्षण करे और बावची, मकोय, त्रिफला इनके चूर्णमें १ तोला सहत और घृत मिलाके भक्षण करे यह इसका अनुपान है, तो यह सोमेश्वररस कपाल नाम दुष्टकुष्ठको दूर करे ।

तालकेश्वरोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंसूताच्चालंचतुर्गुणम् ।
कुक्कुटीपर्णसारेणवाकुच्यावाकपायकैः ॥
दिनैकंमर्दयेत्खल्लेत्रिभिस्तुल्यंमृतायसं ।
अयस्तुल्यंमृतंताम्रंमर्दयेद्दिनपंचकम् ॥
पूर्वकाथद्रवैर्वाथसर्वतद्गोलकंकृतम् ।
वर्षाभूचित्रपत्रैश्चमूषागर्भेप्रलेपयेत् ॥
तन्मध्येनिक्षिपेद्गोलंलेपःकल्पस्ततोपरि ।
रुध्वान्ध्रंभूधरेपच्यात्समुद्धृत्यविभावयेत् ॥
सप्तधामलजैस्तोयैःमधुमिश्रंनिरुध्यच ।
पुटेकेभूधरेपच्याद्रसोऽयंतालकेश्वरः ॥
चतुर्गुञ्जापर्णखण्डेभक्षयेच्चापिवेदनु ।
अजाजीद्वितयंयूषंगिरिकर्णीगवांपयः ॥
मुण्डीचूर्णंतथार्क्षौद्रैःसर्वकुष्ठंनियच्छति ।

अर्थ–शुद्धपारा और गन्धक एक २ पल, हरताल ४ पल, इनको कुक्कुटी पर्णसार (वन्दालके पत्तों) के अर्कमें अथवा बावचीके काढेमें एक दिन खरलकर तीनोंकी बराबर सार मिलावे, सारकी बराबर तांबेकी भस्म सबको पूर्वोक्त क्वाथसे पांचदिन खरलकर

गोला बनावे फिर सांठ और भोजपत्रका मूषा-के अन्दर लेपकर उसमें गोला रख पूर्वोक्त लेपसे ल्हेस देवे फिर भूधरयंत्रमें रख एक दिनकी अग्नि देवे, पीछे चन्दनकी सात भावना देवे और सहतमें खरलकर भूधरयंत्रमें फूंकदेवे तो यह तालकेश्वररस सिद्ध होवे. इसको ४ रत्ती पानमें रखकर खानेसे सब कोढ दूर होवें इसपर जीरा, कालाजीरा, त्रिकुटा, उपलसिरी, गौका दूध और गोरखमुंडी इनके चूर्णको सहतमें मिलाकर चाटे।

पिंगलेश्वरोरसः

भस्मसूतंविषंशुंठीवचावन्हिफलत्रिकम्।
ब्राह्मीवीजंविडंगानिभृंगिभल्लातगंधकम्॥
शिखितुत्थंकणातुल्यंसर्वमेकत्रमर्दयेत्।
त्रिफलाकाथसंयुक्तंकांतपात्रेस्थितंनिशि॥
कर्षमात्रंलिहेत्मातःसर्वकुष्ठनिवृत्तये।
षण्मासात्पलितंहन्तिरसोऽयंपिंगलेश्वरः॥

अर्थ—चन्द्रोदय, शुद्धविष, सोंठ, बच, चीता, त्रिफला, ब्राह्मी, वायविडंग, भांगरा, भिलाए, गन्धक, नीलाथोथा और पीपल इनको समान भाग लेकर चूर्ण कर त्रिफलाके काढेमें डाल एक रात्रि कान्तपात्रमें रखछोडे प्रातःकाल इसमेंसे एक तोला लेवे तो सर्व कुष्टोंकी निवृत्ति होवे छः महीने सेवन करनेसे सफेद बालका होना दूरहो इसे पिंगलेश्वररस कहते हैं।

त्रिगंधरसः

स्वरसैराजवृक्षस्यतालगन्धमनःशिला।
गुञ्जावाकुचिकाद्रावैर्भाव्यंकंगुणितैलके॥
प्रतिद्रावैर्दिनैकन्तुभक्षयेदर्द्धनिष्ककम्।
कुष्ठमौदुम्वरंहन्तित्रिगंधोऽयंमहारसः॥
मध्वाज्यवाकुचीमूर्वाकर्षैकमनुलेहयेत्।

अर्थ—अमलतासके रसमें हरिताल, गंधक और मनसिलको खरलकरे फिर घूंघची और बावचीके रस तथा कांगनी तेलमें एक २ दिन खरलकर दो २ मासेकी गोलियां बनावे एक गोली नित्य खाय तो औदुंबर कुष्ठको यह त्रिगंध महारस दूर करे इसपर घी, सहत तथा बावची मूर्वा इनका काढा पीवे।

संकोचगोलोरसः

मृतताम्राभ्रकंतुल्यंतयोःसूतंचतुर्गुणम्।
शुद्धंतन्मर्दयेत्खल्लेनष्टपिष्टंसुगोलकम्॥
त्रिभिस्तुल्यंशुद्धगन्धंलोहपात्रगतंद्रुतम्।
तन्मध्येगोलकंपाच्याद्यावज्जीर्यतिगंधकम्॥
तावन्मृद्वग्निनायत्नात्समुद्धृत्यविचूर्णयेत्।
तयोःसमंताम्रपत्रंरसेदेयमधोमुखम्॥
सन्धिंमृल्लवणैरुत्थ्याताम्रश्रावेणरोधयेत्।
द्वियामंपाचयेच्चूल्ह्यांचूर्णयेत्स्वांगशीतलम्॥
अक्षक्षीरैर्दिनैमर्द्यंमुद्रयेत्भूधरेपचेत्।
एवंपुनःपुनर्मर्द्यंपचेद्वादशसंपुटैः॥
गुग्गुलंनिंबपंचांगंत्रिफलाचामृताविषं।
पटोलंखदिरंव्याधिघ्रातंग्राह्यंसमंसमं॥
चूर्णितंमधुनालेह्यंनिष्कमौदुम्वरापहम्।
रसःसंकोचगोलोऽयंपुरानागार्ज्जुनोदितः॥

अर्थ—ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म प्रत्येक चार २ तोले और शुद्धपारा १६ तोले इनकी खरलमें कजलीकर गोला बनावे फिर तीनोंकी बराबर शुद्धगंधकको ताम्रपात्रमें गलाकर उसमें पूर्वोक्त गोलेको रख अग्निसे पचावे, जब तक गन्धक जीर्ण न हो तबतक मंद २ अग्नि देता रहे, जब गंधक जल जावे तब गोलेको निकाल खरलमें डालकर चूर्ण करे फिर जितना चूर्ण हो उसकी बराबर ताम्रपात्र ले उसमें चूर्णको भर ढक्कनसे बंदकर उसके

मुखको मिट्टी और निमक मिलाके बंद करदेवे फिर चूल्हेपर चढाकर दो प्रहरकी अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब बहेडेके दूधमें एक दिन खरलकर मुद्रा बनाय भूधरयंत्रमें फूंक देवे इस प्रकार वारंवार बहेडेके दूधमें खरलकर १२ अग्निदेवे तो रस सिद्ध हो, फिर गूगल, नीमका पंचांग, त्रिफला, गिलोय, विष, पटोलपत्र, खैरसार और अमलतासका गूदा प्रत्येक समान लेकर चूर्ण करे, इस तोले भर चूर्णमें सहत मिलाय इस ४ मासे चूर्णपर खाय तो ऊदुम्बर कोढका नाश करे यह संकोच गोलरस प्रथम नागार्जुन सिद्ध ने कहा था ।

कृष्णमाणिकरसः

मरिचंतीक्ष्णकंताम्रंसमंगन्धकमाक्षिकम् ।
तीक्ष्णंस्याद्द्विगुणंसूतंभस्मीकृत्वानियोजयेत् ॥ सर्वेषांदशमांशेनविषंदत्वाविचूर्णयेत् । दशमूलद्रवैःसर्वंदिनैकंमर्दयेद्दृढम् ॥
मंजिष्ठादिकषायेणमहाक्काथेदिनंदिनम् ।
मूषागतंनिरुध्याथवालुकायंत्रगंपचेत् ॥
मृद्वग्निनादिनैकन्तुरसोऽयंकृष्णमाणिकः ।
औदुम्बरंमहाकुष्ठंहन्तिमाषैकसेवनात् ॥
देवदाल्याथपंचागछायाशुष्कंन्तुचूर्णयेत् ।
मध्वाज्यशर्करायुक्तंद्विनिष्कमनुपाययेत् ॥

अर्थ–कालीमिरच, तीक्ष्ण (खेडी) लोहकी भस्म, तांबेकीभस्म, गन्धक और सुवर्णमाक्षिक ये सब समान भाग लेवे और लोहभस्मसे दूनी शुद्ध पारेकी भस्म ले तथा सब औषधियोंका दशवांभाग सिंगिया विष मिलावे सबको दशमूलके काढेसे एक दिन खरलकर फिर महामंजिष्ठादि काढेसे एक दिन खरल करे, पीछे मूषामें रख वालुकायंत्रमें एक दिन मन्दाग्निसे पचावे, तो यह कृष्णमाणिकरस सिद्ध होवे. यह औदुम्बर महाकुष्टको एक महीने सेवन करनेसे दूर करे. वन्दालके पंचांगको छायामें सुखाके चूर्णकरे, उसमे सहत घी और मिश्री मिलाकर ८ मासे इस रसके आरम्भमें भक्षण करे यह इसका अनुपान जानना चाहिये ।

कामधेनुरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंलोहपात्रेक्षणंपचेत् ।
शीतलंचूर्णयेत्खल्लेवध्वावस्त्रेचतुर्गुणे ॥
आरनालेघटांतस्थदोलायन्त्रेचतुर्गुणम् ।
पाचयेच्छोषयेत्पश्चाद्दशांशेवत्सनागकम् ॥
क्षिप्त्वासर्वंत्र्यहंभाव्यंतैलेवाकुचिसंभवे ।
कामधेनुरितिख्यातोरसोयंमण्डलापहा ॥
गुग्गुलंत्रिफलागन्धंसममेरण्डतैलकम् ।
द्विनिष्कमनुपानंस्याद्रक्तमण्डलकुष्ठजित् ॥

अर्थ–शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धगन्धक ८ तोले, प्रथम गंधकको गलाकर उसमें पारा मिलादेवे फिर शीतल कर खरलमें डाल खूब मर्दन करे. इस कजलीकी चौलड कपडेमें पोटली बांध दोलायंत्रकी विधिसे कांजीमें पचन करे, परन्तु कजलीसे कांजी चौगुनी होनी चाहिये फिर उस कांजीको अग्निपर ही सुखाके उस पोटलीसे कजली निकाल खरलमें डालके उसका अष्टमांश सिंगिया मिलाय तीन दिन बावचीके तेलसे खरल करे, तो यह कामधेनुरस सिद्ध हो, इसको गूगल, त्रिफला, गन्धक और इनकी बराबर गन्धक ले इसमेंसे ८ रत्ती ले पूर्वोक्त रसके साथ सेवन करे, तो रुधिरके चकत्ते और मण्डलकुष्ट दूर होवे ।

अर्केश्वरोरसः

तालताप्यशिलासूतशुद्धसैंधवटंकणम् ।
समान्हिकंभृंगणश्चचूर्णंतुल्यंविमिश्रयेत् ॥
अयमर्केश्वरोनाम्नासुप्तमण्डलकुष्ठजित् ।
चतुर्गुंजंलिहेत्सौद्रमनुपानश्चपूर्ववत् ॥

अर्थ-हरिताल, सुवर्णमाक्षिक, मनसिल, पारा, सैंधानिमक, सुहगा और पारा इनका चूर्ण समान भाग लेवे सबको मिलावे तो यह अर्केश्वर रस बने. यह सप्तकुष्ट, और मण्डल कुष्टको दूर करे. इसमेंसे ४ रत्ती सेवन करे अनुपान पूर्वोक्त जानना ।

विजयेश्वरः

विष्णुक्रान्तादेवदालीसर्पाक्षीतंडुलीमुनिः ।
नीलीब्राह्मीपलासश्चयथालाभेद्रवंहरेत् ॥
द्वित्रीणामेवनिर्यासैःसूतकंमर्दयेद्दिनम् ।
सूताद्विगुणगन्धोथएकीकृत्वाक्षणंपचेत् ॥
लोहपात्रेद्रुतंतावद्यावच्छुल्वाभ्रकंमतौ ।
मृत्येकंसूतपादंशंकर्पूरंसंविनिक्षिपेत् ॥
अग्नावुत्तारयेच्चूर्णंरसःसूर्यप्रभोमहान् ।
पुण्डरीकहरंनिष्कमनुपानेनपूर्ववत् ॥

अर्थ-कोयल, बन्दाल, सरफोका, चौलाई, अगस्तिया, नीली, ब्राह्मी, और ढाक इनमें जो वस्तु मिले उसका रस लेवे दो या तीनके रसमें पारेको एक दिन खरलकरे, फिर पारेसे दूनी गन्धक मिलाय लोहेके करछलेमें पचाय उसमें तांबे, अभ्रककी भस्म पारेसे चौथाई २ मिलावे, और भीमसेनी कपूर मिलावे फिर इसको अग्निसे उतार लेवे तो यह सूर्यप्रभा रस बने. ४ मासे पूर्वोक्त अनुपानके साथ देवे तो पुंडरीक कुष्टको दूर करे ।

विजयेश्वरः

शुद्धतालंमृतंसूतंतुल्यंताभ्यांचतुर्गुणम् ।
भर्जिताविजयायोज्यासर्वतुल्यंगुडंक्षिपेत् ॥
सुप्तकुष्ठहरोनिष्कंरसोऽयंविजयेश्वरः ।

अर्थ-शुद्धहरिताल और चन्द्रोदयको समान लेवे दोनोंकी बराबर भूनी भांग लेवे और सबकी बराबर गुड मिलावे इसमेंसे ४ मासे खाय तो यह विजयेश्वररस सुप्तकुष्टको दूर करे ।

नाराचरसः

लशुनंराजिकानीलीभानुचित्रकपल्लवं ।
समंभल्लातकंचूर्णंक्षिपेत्तैलंचतुर्गुणे ॥
तैलतुल्यंगवाक्षीरःपचेत्तैलावशेषकः ।
पंचात्पंचांगभक्षस्यभूशिनपिफलाशयोः ॥
सुवस्त्रगालितंकुर्य्यात्तुल्यंदार्मूर्च्छतंरसं ।
घृतक्षौद्रसमायुक्तंपूर्वंतैलेनपीडितम् ॥
अयंनाराचकंभक्षेनिष्कंजिह्वकान्तकृत् ।

अर्थ-लहसन, राई, नीली, और चीता इनके पत्ते लेवे. और इनमें समान भाग मिलाएका चूर्ण मिलावे सबको चौगुने कडवे तेलमें डाल तथा तेलसे चौगुना गौका दूध मिलाकर औटावे जब तेलमात्र शेष रहे तब उतार लेवे. फिर पूर्वोक्त पांचों औषधियोंके बराबर बहेडेका पंचांग लेवे तथा जमाल गोटेके फल लेवे सबको कूटपीस कपरछनकर बराबरका चन्द्रोदय मिलाय घृत और सहत मिलाकर पूर्वोक्त तेलसें खरलकरे तो यह नाराच रस ४ मांसे नित्य भक्षण करनेसे जिह्वकुष्टको दूर करे ।

सूर्यावर्त्तोरसः

ताप्यंगन्धंशुद्धसूतंशिलाजित्वम्लवेतसं ।
मृतताम्राभ्रकंतुल्यंमध्वाज्यगुडमिश्रितं ॥
माषैकंजिह्वकंहन्तिसूर्य्यावर्त्तोमहारसः ।

अर्थ-सुवर्णमाक्षिक, गन्धक, शुद्धपारा, शिलाजीत, अमलवेत, ताम्रभस्म और अभ्रकभस्म, इन सबको समान भाग लेवे. इसमें बरा-

नरका गुड, सहत और घी मिलाके एक मांसे खावे तो यह सूर्य्यावर्त्त रस जिह्वक कुष्टरोगको दूर करता है।

वीरचंडेश्वरोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंकान्तभस्मविपंतथा।
वाकुचीत्रिफलाचूर्णंनिम्बवन्हिगुडूचिका ॥
दिनंभृंगिद्रवैर्मर्द्यंवाकुच्याश्चकपायकैः।
भक्षयेल्लोहपात्रस्थंकर्षार्द्धंजिह्वकःप्रणुत।
वीरचण्डेश्वरोनाम्नापण्मानात्पूर्वकुष्ठजित्॥

अर्थ–शुद्धपारा, गंधक, कान्तलोहकी भस्म, सिंगियाविप, वावची, हर्ड, वहेडा, आंवला, नींबकीछाल, चीतेकीछाल, गिलोय, इन सबको एक दिन भांगरेके रससे और एक दिन वावचीके काढेसे लोहपात्रमें खरलकर ६ मांसे नित्य सेवन करे तो जिहककुष्ट दूर होवे, यह वीरचण्डेश्वर रस ६ महीनेमें कोढको दूर करे।

वेतालोरसः

अभ्रकंमृतलोहञ्चशुद्धसूतंशिलाजतुः।
ताप्यंचांकोलवीजानित्रिफलामुशलीसमम्॥
सव्योषंचूर्णितंलेह्यंमधुनानिष्कमात्रकम्।
मासैकान्नाशयेत्सिध्मांवेतालोऽयंमहारसः॥

अर्थ–अभ्रक, सार, शुद्धपार, शिलाजीत, सुवर्णमाक्षिक, अंकोलके बीज, हरड, वहेडा, आंवला, सफेदमूसली, सोंट, मिरच, पीपल, इन सबका चूर्ण कर ४ मांसे नित्य सहतके साथ सेवन करे तो एक महीनेमें विभूतीके रोगको यह वेताल नामक रस दूर करे।

पञ्चाननोरसः

शुद्धसूतंसमंगन्धंत्र्यूपमुस्ताफलत्र्यहम्।
गुडूचीचूर्णयेत्तुल्यंचूर्णाच्चद्विगुणंगुडम्॥
द्विगुंजांवटिकांखादेन्मासैकाद्गजचर्मनुत्।
रसःपञ्चाननोनाम्नाअनुस्यात्क्षौद्रवाकुची॥

अर्थ–शुद्धपारा, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, हरड, वहेडा, आंवला, और गिलोय इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करे, फिर सब चूर्णसे दूना गुड मिलाय दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे एक महीने पर्य्यन्त सेवन करे तो गजचर्मकुष्ट दूर हो. यह पंचाननरस है इसपर वावचीका चूर्ण सहत मिलाकर चाटे।

पर्पटीरसः

पलैकंशुद्धसूतस्यकर्षैकंशुद्धगंधकम्।
गन्धतुल्यंमृतंताम्रंसूतांशंमर्दयेद्विपम्॥
सर्वतुल्यंपुनर्गन्धंदत्वाकिञ्चिद्विपेपयेत्।
घृताभ्यक्तेलोहपात्रेपचेद्यावद्द्रुतंभवेत्।
रंभापत्रेपटेवाथपातयेत्पर्पटींतथा॥
मापैकंचूर्णितंतावद्गजचर्मनियच्छति।
निष्कैकंवाकुचीचूर्णंलेहयेदनुपानकम्॥

अर्थ–शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धगंधक १ तोले, तांवेकीभस्म ४ तोले, सिंगियाविप ३ मासे, सबकी वरावर फिर गंधक डालकर खूब पीसे फिर घीपुते लोहपात्रमें. उस कजलीको तायले, जब पतली होजावे तब तत्काल केलेके पत्ते पर ढालदेवे अथवा पट्टेपर ढालदेवे, तो पपड़ी जम जावेगी उसमेंसे एक मासे नित्य सेवन करे तो गजचर्म कुष्ठ रोग दूर होवे. इसके ऊपर ४ मासे वावचीके चूर्णको सहतमें मिलाकर चाटना चाहिये।

चर्मान्तकोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमाक्षिकञ्चशिलाजतु।
शुल्वंतीक्ष्णंमृतंलोहंतुल्यंमर्द्यंदिनत्रयम्॥
काकमाच्यादेवदाल्याःकार्कोट्याश्चद्रवैर्दृढम्
मुद्रयित्वापुटेचान्हंत्रिरात्रंवालुपाशिना॥
आदायभावयेच्चान्हंतैलंवाकुचिसंभवम्।

निष्कार्द्धंचर्मकुष्ठघ्नंखादेच्चर्मान्तकोरसः ॥
खादिरंवाकुचीवाजंमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु ।

अर्थ—शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, सुवर्णमाक्षिक, शिलाजीत, तीक्ष्णलोहकीभस्म, साधारण लोहकी भस्म प्रत्येक चार २ तोले लेवे. फिर इन सबको ३ दिन खरलकर काकमाची, ककोडा और बन्दाल इनके रसमें एक २ दिन खरल करे. फिर संपुटमें बंदकर तीन दिनरात्रि तुषाग्निमें रखकर अग्नि देवे. फिर इसमें बावचीके तेलकी एक दिन भावना देवे फिर दो २ मासेकी गोलियां बनावे एक गोली नित्य भक्षण करे तो चर्मान्तककुष्ठ और चर्मकुष्ठका नाश करे, इसके ऊपर खैरसार और बावचीके बीजोंका चूर्ण घी और सहतके साथ सेवन करना चाहिये. यह पथ्य है ।

चर्मभेदीरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंसूतांशंमृतशुल्वकम् ।
सूतपादंविषंचूर्णंपचेद्यावद्द्रुतंभवेत् ॥
लोहपात्रेघृताभ्यक्तेपातयेत्कदलीदले ।
अभावाद्गपुटस्निग्धेआदायभावयेत्त्र्यहं ॥
वाकुच्योत्थेनतैलेननिष्कपादञ्चभक्षयेत् ।
त्रिफलावाकुचीबीजंखदिरंराजवृक्षकम् ॥
मूलचूर्णंघृतक्षौद्रंकर्षैकमनुपाययेत् ।
चर्मभेदीरसोनाममण्डलाच्चर्मकुष्ठनुत् ॥

अर्थ—शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, खैरीलोहकीभस्म ४ तोले, ताम्रभस्म ८ तोले, सिंगियाविष २ तोले, बच, पीपल, आंवल, वायविडंग और सफेदजीरा प्रत्येक चार २ तोले. और सोंठ ८ तोले सबका चूर्णकर भांगरेके रससे खरल करे. फिर तिलवन और गोरखमुण्डी प्रत्येकके रससे तीन २ दिन खरल कर संपुटमें रखके फूंकदेवे इसमेंसे चनेके प्रमाण भक्षण करे तो यह चर्मकुठार रस चर्मकुष्ठको दूरकरे ।

ज्योतिष्पुंजोरसः

मृतसूताभ्रकंतुल्यंमर्द्यंबिल्वरसैर्दिनम् ।
नीलाचाज्यैरसोप्येवमयःपात्रेविमर्दयेत् ॥
कंगुणीनिम्बकर्पासैस्तैलेनापिचमर्दयेत् ।
माषंभजेत्तथालेप्यंचर्मकुष्ठहरंपरं ॥
ज्योतिष्पुञ्जोरसोनामसर्वकुष्ठकुलान्तकृत् ।
निम्बखदिरवांकोलराजवृक्षस्यमूलकम् ॥
कषायंपाययेच्चानुचर्मकुष्ठविनाशकृत् ।

अर्थ—चन्द्रोदय और अभ्रककीभस्म दोनों समानभाग लेकर बेलके रससे एक दिन खरल करे, फिर नीलके रससे घी डालकर लोह पात्रमें खरल करे, फिर कांगनी, नीम, कपास, और तेल इनमें एक २ दिन खरल करे तो यह ज्योतिःपुंजरस बनकर तयार हो इसमेंसे एक मासे नित्य भक्षण करे तथा इसी रसका जलसे लेप करे तो सर्व कुष्ठोंका नाश करे, इसके ऊपर नीम, खैर, अंकोल और अमलतासकी जड़ इनका काढा पिलावे तो चर्मकुष्ठका नाशहो ।

कुष्ठनिकृन्तकोरसः

शुद्धंसूतंविषंगन्धंतुल्यंताप्यंशिलाजतु ।
शुल्वंतीक्ष्णंमृतंलोहंसर्वंमर्द्यंदिनत्रयम् ॥
काकमाच्यादेवदाल्याकर्कोटयाश्चद्रवैर्दृढम् ।
रुध्वान्हंभूधरेपाच्यात्रिदिनंचतुषाग्निना ॥
निष्कार्द्धंलेहयेत्क्षौद्रैःरसःकुष्ठनिकृन्तकः ।
भल्लातवाकुचीपथ्याविडंगंलांगलीतिलम् ॥
जीरकंबदरीमूलंतुल्यंतुल्यगुडेनतु ।
भक्षयेदनुपानोऽयंहन्तिकुष्ठंविचर्चिकाम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा, गन्धक, सिंगियाविष,

सोनामक्खी, शिलाजीत, तांबेकी भस्म, खेडी, लोहकी भस्म, और साधारण लोहकी भस्म सबको एकत्र कर काकमाची (मकोय) बन्दाल और ककोडा इन प्रत्येकके रसमें तीन २ दिन खरल करे, फिर इसको भूधरयंत्रमें रखके तीन दिन तुषाग्नि देवे. चौथे दिन निकालकर ४ मासे भक्षण करे. और ऊपरसे मिलाए, बावची, हरड, वायविडंग, कलियारी, तिल जीरा, बेरकीजड प्रत्येक समान भाग ले और सबकी बराबर गुड मिलाकर खाय यह अनुपान है. इसके खानेसे कोढ, विचर्चिका आदि दूरहों ।

चन्द्ररुद्रोरसः

एकवीराशंखपुष्पीगोजिह्वाहरिणीखुरी ।
विष्णुक्रान्ताकंटकारीजीवन्तिक्षीरसारिवा ॥
मेघनादोदेवदारुब्राह्मीवीरातुदंतिका ।
सर्पाक्षीवेतसंनीलापलसंकाकमाचिका ॥
मुनिपत्रद्रवैस्तेषांद्वित्राणांचार्द्रकार्दनम् ।
मर्दयेत्सूतकंगाढंमृत्पात्रेतैर्द्रवैःपचेत् ॥
करीपाग्नौदिवारात्रौस्वांगशीतलमुद्धरेत् ।
एतत्तुल्यंशुद्धगन्धंमर्दवाकुचिकाद्रवैः ॥
तद्वीजोत्थैःकषायैर्वादिनान्तेवटकीकृतम् ।
चन्द्ररुद्रोरसोनाम्नानिष्कार्द्धंचर्चिकापहः ॥

अर्थ—एकवीरा, संखाहूली, गोभी, हरिनखुरी, कोयल, कटेरी, डोडी, क्षीरकांकोली, सारिवा, चौलाई, देवदारु, ब्राह्मी, वीरा, दन्ती, सरफोका, वेत, नीली, पलस, मकोय और अगस्तियाके पत्तोंका रस तथा अदरक इनमें जो औषधि एक या दो मिलें उनके रसमें पारेको खूब मर्दन करे. फिर उनके रस सहित पारेको भट्टीपर रखकर करीपाग्निसे एक दिन और रात्रि पचन करावे. जब स्वांग शीतलहो जाय तब उतारकर पारेकी बराबर गन्धक मिलाय बावचीके रससे एक दिन खरलकरे, अथवा बावचीके बीजोंके काढेमें खरलकर गोलियां बनावे तो यह चन्द्ररुद्ररस ४ मासे नित्य सेवन करनेसे विचर्चिका रोग जो कुष्टका भेद है उसको दूर करे ।

कुष्टांकुशोरसः

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंमर्दयेद्वाकुचीद्रवैः ।
निर्गुंड्याश्चद्रवैश्चान्हंतद्गोलंशोषयेत्ततः ॥
गोलतुल्येताम्रपत्रेहण्डिकान्तर्निरोधयेत् ।
लेपयेल्लावणैर्मृच्चसरावेतांनिरोधयेत् ॥
सिकतांपूरयेद्भाण्डेरुध्वाचुल्यांपचेल्लघु ।
पड्यामैस्ततसमुद्धृत्यचूर्णंतत्त्रिफलासमम् ॥
त्रिफलांशंभृंगिचूर्णंसर्वेतुल्यश्चवाकुची ।
समंतत्रविचूर्ण्याथसंस्कारश्चात्रकथ्यते ॥
वन्हिनिम्बंराजवृक्षंकरवीरंकरञ्जकम् ।
मूलकल्कंसमंकृत्वागोमूत्रेष्टगुणेपचेत् ॥
पादशेषंसमुत्तार्यवस्त्रपूतंपुनःपचेत् ।
ताम्रपात्रेद्रवीभूतेपूर्वचूर्णंपचेल्लघु ॥
तत्रैवखदिरंकाथंक्षिपेत्पालाशजंतथा ।
तुल्यैःकाथैःपचेत्तावद्यावत्पिण्डत्वमागतम् ॥
भक्ष्यंनिष्कंनिहन्त्याशुकृष्णवैपादिकंमहत् ।
रसःकुष्टांकुशोनामसर्वकुष्टंनियच्छति ॥

अर्थ—पारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, दोनोंको बावची और निर्गुंडीके रसोंमें एक २ दिन खरलकरे और गोला बनाकर धूपमें सुखालेवे फिर गोलेके समान तांबेके पत्रके पत्रले, उनको शीशीमें रखे और बीचमें उस गोलेको रखे फिर उसके मुखको पारोंसे बंदकर निमक और मिट्टीसैंल्हेस देवे, जिससे सान्धि न रहने पावे फिर उसको वालुकायंत्रमें रखके चूल्हे पर चढाके नीचे अग्नि जलावे, और छः

प्रहर मन्दाग्नि देवे फिर शीतलकर गोलेको निकाल बराबरका त्रिफलाका चूर्ण मिलावे, और त्रिफलाका चतुर्थांश भांगरेका चूर्ण मिलावे, और सबकी बराबर बावचीका चूर्ण मिलावे सबका चूर्णकर चीता, नीम, अमलतास, कनेर और कंजा इनकी जडका कल्क करके तथा अठगुना गोमूत्र ले सबको एकत्र करके पचावे जब चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे उसको कपडेसे छान लेवे, उसको तांबेके पात्रमें औटावे और पूर्वोक्त गन्धक पारेके गोलेको चूर्णकर. डालदेवे, तथा इसमें खैरसारका काढा तथा ढाकका काढा ये काढे समान भाग लेवे सबको औटावे जब गाढा होजावे तब इसमेंसे ४ मासेके अनुमान भक्षणकरे तो काली विपादिका तथा सम्पूर्ण कोढके रोग इन सबको यह कुष्ठांकुश रस दूर करता है ।

कुष्ठहरितालेश्वरः

हरितालंभवेद्भागंद्वादशोत्रविशुद्धमत् ।
गन्धकोपितथाशाद्योरसःसप्तोत्रदीयते ॥
कृष्णाभ्रकमपिश्लक्ष्णंखल्लेकृत्वाविमर्दयेत् ।
अंकोठमूलनीरेणसेहुण्डीपयसाथवा ॥
अर्कदुग्धेनसंपिष्यकरवीरजलेनच ।
काष्ठोदुम्बरनीरेणपेपणीयोरसोभृशम् ॥
शुद्धताम्रकोटरेचक्षेपणीयोरसेश्वरः ।
पञ्चगुञ्जाप्रमाणेनकाष्ठोदुम्बरवारिणा ॥
कुष्ठाष्टादशसंख्येपुदेयएपभिपग्वरैः ।
अचिरेणैवकालेनविनाशंयान्तिनिश्चयः ॥
पथ्यसेवाविधातव्याप्रणतिःसूर्यपादयोः ।
साधकेनतथासेव्योरसोरोगौघनाशनः ॥
पिप्पलीभिःसमंदद्यात्कुष्ठरोगेरसेश्वरः ।

अर्थ–शुद्ध हरिताल १२ तोले, शुद्ध गन्धक १२ तोले, शुद्धपारा ७ तोले, काली-अभ्रककीभस्म ७ तोले, सबको खरलमें डालके एकोलकी जडके रस थूहरके दूधमें आकके दूधमें कनेरके जलमें और कठूमरके रसमें प्रत्येकमें पृथक् २ खरल कर तांबेकी डिब्बीमें रख संपुटमें रखके फूंक देवे. तो यह रस सिद्ध होवे इसमेंसे पांचरत्ती कठूमरके रससे खाय तो अठारह प्रकारके कुष्ट तत्काल नष्ट होवे, इसके उपर रोगीको पथ्य सेवन करना चाहिये और सूर्य्य नारायणका आराधन कराकरे इस प्रकार सर्व रोग समूह नाशक रसका सेवन करे. इस रसको कुष्ट रोगमें पीपलके चूर्णके साथ देना चाहिये ।

राजराजेश्वरः

त्रिफलाखादिरंसारममृतावागुचीफलम् ।
आतपेमर्दयेत्सूतंगन्धकंमृतताम्रकम् ॥
सुहस्तमर्दितंसूतंयावत्तत्रविलीयते ।
भृंगराजद्रवंदत्वादिनमात्रंविमर्दयेत् ॥
प्रत्येकंसूततुल्यंस्याचूर्णीकृत्यविमर्दयेत् ।
मध्वाज्याभ्यांलोहपात्रेकर्पाभ्यांभक्षयेत्ततः ।
दद्रुकिटिभकुष्ठानिमण्डलानिविनाशयेत् ॥
द्विगुञ्जोपिनिहन्त्याशुराजराजेश्वरोरसः ।

अर्थ–हर्ड, बहेडा, आंवला, खैरसार, गिलोय, बावची, प्रत्येक एक २ तोले लेवे, फिर शुद्धपारा, गन्धक और तांबेकी भस्म इन सबको हाथोंसे इस प्रकार मलेकि पारद दीखनेसे बंद होजावे. फिर इस कजलीको एक दिन भांगरेके रससे खरल कर पूर्वोक्त त्रिफलादि औषधियोंको पारेकी बराबर मिलावे और सबका चूर्णकर सहत और घीके साथ लोहपात्रमें खरल करे, इसमेंसे दो रत्ती भक्षण करे तो दाद किटिभकुष्ट मंडल इन्को दूरकरे यह राजराजेश्वर रस है ।

पारिभद्ररसः

मूर्च्छितंसूतकंधात्रीफलंनिम्बस्यचाहरेत् । तुल्यांशंखादिरकाथैर्दिनंमर्द्यंश्चभक्षयेत् ॥ निष्कैकंदद्रुकुष्ठघ्नःपारिभद्राह्वयोरसः ।

अर्थ–चन्द्रोदय, आंवले, निबोली, प्रत्येक समान भागले सबकी बराबर खैरसारके काढेसे एक दिन खरल कर ४ मासे नित्य भक्षण करे तो दाद और कोढोंको यह पारिभद्राख्यरस दूर करे ।

प्रलेप.

गंधकंमूलकक्षारमार्दकस्यरसैर्दिनम् । मर्दितंहन्तिलेपेनसिध्मन्तुदिनमेकतः ॥ कृष्णधत्तूरजंमूलंगन्धतुल्यंविचूर्णयेत् । मर्द्यंजंबीरनीरेणलेपनंसिध्मनाशनम् ॥ अपामार्गस्यपञ्चांगंकदलीद्रवसंयुतम् । पुटदग्धंश्चगोमूत्रैर्लेपनंदद्रुनाशनम् ॥ चक्रमर्दस्यबीजञ्चदुग्धेपिष्ट्वाविमर्दयेत् । गन्धर्वतैलसंयुक्तंमर्दनात्सर्वकुष्ठजित् ॥

अर्थ–गन्धक और मूलीका क्षार दोनोंको समान भाग लेकर अदरखके रसमें एक दिन खरलकरे, इसके लगानेसे विभूतका रोग नष्ट होवे. काले धतूरेकी जड और गन्धक दोनों बराबर ले खरलमें पीसकर जंभीरीके रसमें खरलकर लेप करे तो विभूतिरोग नष्ट होवे. अथवा ओंगाके पञ्चांगको केलेके पानीमें खरल कर उसमें अग्निका जला निमक मिलाय गोमूत्रसे लेप करे तो दाद नष्ट हो. अथवा पमार के बीज दूधमें पीसकर अंडीका तेल मिलाय देहमें मालिश करे तो सर्व प्रकारके कुष्ट दूर होवें ।

लंकेश्वरोरसः

भस्मसूताभ्रशुल्बानिगंधतालंशिलाजतुः । अम्लवेतसतुल्यांशंत्र्यहंदत्वाविमर्दयेत् ॥ मध्वाज्याभ्यांवटींकुर्याद्विगुञ्जांभक्षयेत्सदा कुष्ठंहन्तिगजंसिंहोरसोलंकेश्वरोमहान् ॥ त्रिफलानिम्बमंजिष्ठावचापाटलमूलकम् । कटुकारजनीकाथंचानुपानंप्रयोजयेत् ॥

अर्थ–पारेकी भस्म, अभ्रककी भस्म, तांबेकी भस्म, गंधक, हरताल और शिलाजीत इन सबको समान भाग लेकर अमलवेतके रसमें तीन दिन खरलकरे फिर सहत और घीमें मिलाके दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे एक गोली नित्य भक्षण करे तो यह लंकेश्वररस कुष्टरूप हाथीके नाश करनेको सिंहरूप है. त्रिफला, नीम, मजीट, वच, पाडरकी जड, कुटकी, और हलदी इनका काढा करके इसके ऊपर पीना चाहिये ।

भूतभैरवोरसः

शुद्धंपञ्चदशात्रतालकमितंशुद्धश्चपट्गन्धकः। सप्ताष्टौनवतिंतिडीयकफलान्काठिन्याकानां दश ॥ सेगुण्डयार्कपयोभिरेवसततंसंचूर्ण्य तद्भाव्यते। रोहीतस्यजटारसेनमृदितंश्लक्ष्णं ततःखल्वितम् ॥ एकीकृत्यसमस्तमेतदपित तुटंकैकमेतज्जयेत् । पश्चाद्वासविशुद्धवारिस हितंकिञ्चिचतत्पीयते ॥ ताम्बूलंशशिखण्ड मण्डितवटीमिश्रंततःस्वापयेत् । शय्यायांमृग लोचनापरिभृताकर्माणिसंपादयेत् ॥ देहं वीक्ष्यसुखंमुखंनविरसंविज्ञायसम्यक्सुधीः। छागीदुग्धमिहैतदेवमुदितंतकञ्चतत्पाययेत्। नित्यंशांन्तिमिदंकरोतिनिहितंसर्वौषधैर्वर्जि तं। सामग्रामसमग्रमग्निमतरंनीलञ्चपीतारुण म् ॥ श्वेतंस्फीतमनल्पकंप्रशमतिमायःक्रमि व्याकुलम् । गन्धालिप्रमितंस्फटीकसदृशंकु ष्ठञ्चोत्साधनम् ॥ अष्टाष्टादशभूतभैरव

इतिख्यातःक्षितौहन्तिच । वातव्याधिनिकृं तनःकफकृतान्कुष्ठान्विशेषानयम् ॥ हन्तीतिज्वरमुग्ररूपमधीकंदाहाभिधानामयम् । कुर्याद्रूपमनंगरंगगुणभृद्भृंगास्पदंविग्रहम् ॥ एवंसमासात्कुरुतेसमासात्पथ्यञ्चतथ्यंसकलंकरोति । भुञ्जीतभुक्तंसततंप्रदिष्टंघृतंघृतम्वाविकृतंतदेव ॥ स्वच्छन्ददुग्धेनसुखेनजग्धंपथ्यंतदेतत्प्रवदन्तिसन्तः । कुष्ठस्यदुष्टस्य निराकरोतिगात्रश्चकुर्याच्छुभगन्धयुक्तम् ।

अर्थ–शुद्धहरिताल १९ तोले, शुद्धगन्धक ६ तोले, दोनोंको खरलकर नवीन तिंतडीकके रसकी सात आठ अथवा नौ भावना देवे, तथा करेलेके रसकी दश भावना देवें. थूहरके दूधकी आकके दूधकी निरन्तर भावना देकर चूर्ण करे. तथा रोहिडेकी जडके काढेमें खरल करे, फिर सबको एकत्र खरलकर ४ मासे नित्य सेवन करे ऊपरसे शुद्ध जल पीवे तिसके ऊपर भीमसेनी कपूरयुक्त पानकी बीडी खाकर सोजावे, और शय्यापर सुन्दर स्त्री सहित रति कर्म करे. परन्तु बलानुसार करे यदि देखे कि मुख विरस नहीं हुआ तो बकरीका दूध और छाछ पीवे, नित्य शांन्तवेश होकर और सर्वौपधि वर्जित होकर इस औषधिका प्रयोग करे. तो यह आम सहित सम्पूर्ण घोर नीले, पीले, लाल सफेद और दुष्टरंगके जिनमें कीडे पडे. दुर्गन्धियुक्त, फटेहुए ऐसे अठारह प्रकारके कुष्ठोंको यह भूतभैरवरस दूर करे वातव्याधिको दूर करे, ज्वर और दाहको दूर करे, देहको कामदेवके समान सुन्दर करे, इस प्रकारके गुण कहे हैं. इसको पथ्यके साथ खाय जो पथ्य कुष्टरोगपर कहाहै वो करे घृत और घृतके पदार्थ सेवन करे दूधके साथ यथेष्ट भोजन करे, यह रस दुष्टकुष्टको नाश करे और देहको सुगंधित करे ।

अर्केश्वरः

पलानीशस्यचत्वारिबलेद्वादशतावती । ताम्रस्यचक्रिकादेयारसस्योर्ध्वेशरावकम् ॥ दत्वाविवृद्धभाण्डस्थंपूरयेद्भस्मनादृढम् । अग्निप्रज्वालयेद्यामद्वयंशीतंविचूर्णयेत् ॥ पुटेद्द्वादशधासूर्यदुग्धेनालोडितंपुनः । वरापावकभृंगानांद्रवैस्त्रीण्येवभावयेत् ॥ अयमर्केश्वरोनाम्नारक्तमण्डलकुष्टजित् ।

अर्थ–पारा ४ तोले, शुद्ध गन्धक १२ तोले, दोनोंको खरलकर टिकिया बनावे. इनको तांबेके पत्रके बीचमें रखकर उसे सरवेमें बंदकर वालुकायंत्रमें रखे फिर यंत्रको भट्टीपर चढाके दो प्रहरकी तीव्र अग्नि देवे स्वांग शीतल होनेपर टिकियाओंको निकाल चूर्णकर डाले, फिर १२ पुट आकके दूधके देवे पश्चात् त्रिफला, चीता, भांगरा इनके रसोंकी तीन २ भावना देवे तो यह अर्केश्वररस सिद्धहो यह रुधिरके चकत्तोंको दूर करे ।

महातालेश्वरोरसः

तालताप्यशिलासूतंशुद्धटंकणसैन्धवम् । समंसंचूर्णयेत्खल्लेसूताद्द्विगुणगंधकं ॥ गन्धाद्द्विगुणलौहश्चजम्बीराम्लेनमर्दयेत् । ततोलघुपुटेपाच्यंस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥ त्रिंशदंशंविषंचात्रक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् । माहिषाज्येनसंमिश्रंनिष्कार्द्धंभक्षयेत्सदा ॥ मध्वाज्यैर्वाकुचीचूर्णकर्षमात्रंलिहेदनु । सर्वान्कुष्ठान्निहन्त्याशुमहातालेश्वरोरसः ॥

अर्थ–हरताल, सुवर्णमाक्षिक, मनसिल, शुद्धपारा, फुलाया हुआ सुहागा, और सैंधानिमक इन सबको समान भागले और पारेसे

दूनी गन्धक लेवे. और गंधकसे दूनी लोह भस्म सबको खरलकर जंभीरीके रससे घोटकर लघुपुटमें रख फूंकदेवे जब स्वांगशीतल होजावे तब निकाल इस रससे तीसवां भाग सिंगियाविष मिलाय सबका चूर्ण करलेवे इसमेंसे दो मासे रस भैंसके घीमें मिलाकर सेवन करे, अथवा सहत और घीके साथ भक्षण करे ऊपरसे एक तोला बावचीका चूर्ण फांके तो यह महातालेश्वर रस तत्काल संपूर्ण कुष्ठोका नाश करे।

विजयभैरवः

सप्तकंचुकनिर्मुक्तमूर्द्ध्वलग्नरसेन्द्रकम् ।
मृत्कटाहान्तरेतत्रस्थापयेच्चसमंत्रकम् ॥
सूताद्द्विगुणितंतालंकूष्माण्डद्रवशोधितम् ।
दोलायंत्रेणतैलाद्यैसप्तधापरिशोधितम् ॥
दत्वाप्लवैर्द्रवैर्झिंट्याकिंचिदाप्लाव्ययुक्तितः।
तयोर्द्विगुणितंभस्मपलाशस्योपरिक्षिपेत् ॥
पुनर्झिण्टीद्रवेणैवसर्वमाप्लाव्ययत्नतः ।
खाखशाखरसैर्भूयःपरिप्लाव्यचपाकजित् ॥
पचेदवहितोवैद्यःसालांगारेणयत्नतः ।
चतुर्विंशतियामंतुपक्त्वाशीतलतांनयेत् ॥
अवतार्यकाचपात्रेविधायतदनन्तरम् ।
प्रयत्नेनकृतप्रायश्चितःशोधितदेहकः ॥
निशांहरीतकीयुक्तंखादेद्रक्तिचतुष्टयम् ।
रक्तिकैकक्रमेणैववर्द्धयेद्दिनसप्तकम् ॥
मधूदकंपिवेच्चानुनारिकेलजलंचवा ।
जिंगिनीसंभवंक्वाथमथवाक्षौद्रनागरम् ॥
अभ्यंगसुरभिस्तैलैःकुर्य्यात्ताम्बूलचर्वणम् ।
पवनानलसूर्य्यांशुमत्स्यमांसदधीनिच ॥
शाकंककारपूर्वंचवर्जयेन्मतिमान्नरः ।
वातरक्तमाममिश्रमामंचापिसुदारुणम्॥ सर्व
कुष्टंचाम्लपित्तंविस्फोटंचमसूरिकाम् । विज
याख्योरसोनाम्नाहन्तिदोषानसृग्दरान् ॥

अर्थ–सात कंचुकी (कांचली) रहित, डमरूयंत्रमें ऊपर लगेहुए शुद्धपारेको मिट्टीके कढावमें मंत्रजाप पूर्वक स्थापन करे. पारेसे दूनी पेठेके रसकी सुधी हरिताल ले उसको तेल, छाछ आदिमें सातवार शोधन करलेवे, फिर पियावांसेके रसमें उस हरितालको भिगोलेवे. हरितालसे दूनी ढाककी राख ले, उसको एक पात्रमें आधी भरकर बीचमें हरितालके टुकडोंकी रख ऊपरसे बचीहुई राखसे दबादे, और अग्निपर रखके पचावे फिर स्वांग शीतल होनेपर पियावांसेके रससे भिगोकर खाकसे रसमें भिगोवे पीछे सालकी लकडीके अंगारोंमें पचावे २४ प्रहरकी अग्नि देकर उतार लेवे, स्वांगशीतल होनेपर हरतालको उस यंत्रमेंसे धीरेसे निकालकर कांचकी शीशीमें भरकर रखदे, फिर कुष्ठरोगका प्रायश्चित करके और वमन विरेचन द्वारा शुद्धदेह करके ४ रत्ती हरतालमिश्री और हरडके साथ सेवन करे फिर क्रमसे नित्य एक २ रत्ती बढावे, इस प्रकार सात दिन करे. इसके ऊपर सहत और जल मिलाकर पीवे, अथवा नारियलका जल पीवे, तथा जिंगिनीका काढा तथा सहत और सोंठ सातदिन सेवन करे, सुगंधित तेलोंकी मालिश करे और बीडेका चबाना. इस हरतालका सेवन करनेवाला अत्यंत पवनका खाना, अग्निसे तापना, धूपमें रहना, मछलीका मांस, दही और ककार पूर्वक शाक. (करेला, कोंहडा आदि) इन सबको यत्न पूर्वक त्यागदेवे. तो यह वातरक्त, आममिश्रित वातरक्त, घोरआमवात, सर्व प्रकारके कुष्ठ, अम्लपित्त, विस्फोटक, मसूरिका, और रक्तप्रदर, इन सबको यह

विजयाख्य रस दूर करे ।

कुष्ठारिरसः

काष्ठोदुम्बरिकाचूर्णंब्रह्मदन्तीवलात्रिकम् ।
प्रत्यहंमधुनालीढंवातरक्तंनिहन्तिच ॥
क्षरद्रक्तश्चरन्मांसंमासमात्रेणसर्वथा ।
गलत्पूयंपलितकीटंत्रिटंकंसेव्यमीरितम् ॥

अर्थ–कटूमरका चूर्ण, ब्रह्मदन्ती, वला, अतिवला, और नागवला प्रत्येक समान भाग लेकर चूर्णकर सहतके साथ चाटे तो वातरक्त दूर हो जिससें रुधिर और मांस निकलते हों. रुध पडगईहो और कीडे किलाविलाते हों ऐसा कोढभी इस कुष्ठारीसके सेवन करतेही ३ महीनेमें दूर होवे ।

षडाननगुटिका.

विशोषणंटंकणपारदश्चसगन्धचूर्णंचसमांश युक्तम् । जैपालचूर्णद्विगुणंगुणान्वितम् ॥ संमर्द्यसर्वंगुडिकाविधेया । विरेचनीसर्वविकारनाशिनीलघ्वीहितादीपनपाचनीयम्॥ कुष्टेहितातीव्रतरेहिशूलेचामाशयेचाश्मगते-विकारे । संशोधनीशीतजलेनसम्यक्संग्राहणीचोष्णजलेनयुक्ता ॥

अर्थ–कालीमिरच, सुहागा, पारा, गंधक और जमालगोटा प्रत्येक समान भाग लेवे सब औषधियोंसे दूना गुड मिलावे. सबको कूटपीसे एकजीकर गोली बनावे यह गोली दस्तावर, सर्वविकार नाशकर्त्ता, हलकी, दीपनी, और पाचनी है; कुष्ठरोगमें हितकारी, उग्रतर शूलरोगमें हितकारी, आमाशयके रोग, पथरी, इनको दूर करे. शीतल जलके साथ दस्त करावे और इसके ऊपर गरमजल पीनेसे दस्त बंद हों ।

कुष्ठनाशनः

चिरिबिल्वपत्रपथ्याशिरीषश्चविभीतकम् ।
काष्ठोदुम्बरिकामूलंमूत्रैरालोड्यफेणितम् ॥
कर्षमात्रंपिबेद्रोगीगोस्तन्यासहटंकणम् ।
सप्तसप्तकपर्य्यन्तंसर्वकुष्ठविनाशनम् ॥

अर्थ–कंजा, बेलपत्र, हरड, सिरसकी छाल, वहेडा, कठूमरकी छाल इन सबको गोमूत्रमें मिलाकर मथडाले फिर थोडी देर बाद इसमेंसे एक तोले पीवे. तथा इसके ऊपर भुना सुहागा मिलाके मुनक्का शाख खाय, इस प्रकार ४९ दिन पर्य्यन्त सेवन करे तो यह कुष्ठमात्रको दूर करता है ।

विजयानन्दः

अथचित्रस्यवक्ष्यामिनाशनोपायमुत्तमम् ।
शुद्धसूतस्यभागैकंद्विभागंशुद्धतालकम् ॥
मृत्कटाहान्तरेपूर्वंस्थापयेच्चसमंत्रकम् ।
द्वयोःसमंपलाशस्यभस्मतस्योपरिक्षिपेत् ॥
वक्रंमृत्कर्पटैलिप्त्वाशोषयेच्चखरातपे ।
चतुर्विंशतियामंतुपक्त्वाशीतलंतांनयेत् ॥
अवतार्यकाचपात्रेस्थापयेदतियत्नतः ।
विधिवत्सेवितश्चाऽसौहन्तिश्वित्रंचिरन्तनम्
सर्वकुष्ठनिहन्त्यांशुभास्करस्तिमिरंयथा ।
रसोयंश्वित्रनाशायब्रह्मणानिर्मितःपुरा ॥
विजयानन्दनामायंनिगूढःक्षितिमण्डले ।

अर्थ–अब चित्रकुष्टके दूर करनेका उत्तम उपाय कहते हैं. शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धहरताल ८ तोले, दोनों औषधियोंको मंत्रपूर्वक मिट्टीके पात्रमें स्थापित करे दोनोंके समान ऊपरसे ढाककी राखसे दबादेवे फिर पात्रके मुखपर कपरमिट्टी देकर धूपमें सुखालेवे. फिर चूल्हेपर चढाय २४ प्रहरकी अग्नि देकर शीतल करे, फिर उस हरतालको निकाल उत्तम शीशीमें भरकर रख छोडे, इस-

को विधिपूर्वक सेवन करे तो प्राचीन चित्रकुष्ठको दूरकरे. यह सम्पूर्ण कुष्ठोंको दूर करे, यह विजयानन्दरस चित्रकुष्ठके दूर करनेको पहले पहल ब्रह्मदेवने निर्माणकिया है ।

श्वित्रदद्रौपाटलालेपः

अश्वहारजनीहेममत्यकुष्पमिदखच ।
चूर्णश्चस्वर्जिकाक्षारंनीरंदत्वाप्रपेषयेत् ॥
प्रस्थयित्वाततःस्थानंमण्डलाग्रेणलिप्यति ।
पाटलानिपतन्त्यंगेविस्फोटाश्चातिदारुणाः
सम्भवन्तितिलारक्ताःकृष्णवर्णाभवन्तिते ।
मिलन्तिश्चशरीरेचदिव्यरूपोभवेन्नरः ॥

अर्थ–कणेर, हलदी, धतूरा, और सफेद ओंगा इन सबका क्षार लेवे. और सज्जीखार सबको पानीसे पीसके जहां चित्रकुष्ठ सफेद-दाग हो उस जगह खुजाके लगावे तो उस ठौरसे उसी समय घोर फोडे उत्पन्न होजांवेगे फिर उस जगह लाल तिल होजायगे फिर वो काले होकर देहमें मिल जावेंगे. और दिव्यरूप होजायगा यह पाटलालेपक होता है ।

श्वित्रहरोलेपः

सैंधवंरविदुग्धेनपेषयित्वाथमण्डलम् ।
प्रस्थयित्वाप्रलेपोयंश्वित्रकुष्ठविनाशनः ॥

अर्थ–सैंधेनिमकको आकके दूधमें पीसके सफेद चकत्तोंपर लेप करे परन्तु उन चकत्तोंको प्रथम पछनादे लेवे तो यह लेप चित्रकुष्ठ का नाश करे ।

कुष्टश्वित्रनाशनोलेपः

मुखेश्वेतेचसंज्ञातेकुर्य्यादिमांप्रतिक्रियाम् ।
गन्धकंचित्रकाशीशंहरितालंफलत्रयम् ॥
मुखेलिप्येदिनैकेनवर्णनाशीभविष्यति ।

अर्थ–यदि चित्रकुष्टके कारण प्राणीका मुख सफेद होजावे तो यह उपाय करे. गंधक, चीतेकीछाल, कसीस, हरिताल, और त्रिफला इन सबको जलमें पीसकर मुखपर लेप करे तो एकही दिनमें यह वर्णको पलट देवे।

गुञ्जादिलेपः

गुंजाफलाग्निचूर्णंचलेपनंश्वेतकुष्ठजित् । शिलापामार्गभस्मापिलिप्त्वाश्वित्रंविनाशयेत्॥

अर्थ–घूंघची और चीतेकी छाल दोनोंको पीसकर लेपकरे तो चित्रकुष्ट दूर हो. अथवा मनसिल और ओंगाका खारकर जलमें पीसके लेपकरे तो चित्रकुष्ट दूर होवे ।

रसमाणिक्यम्-

तालकंवंशपत्रारव्यंकुष्माण्डःसलिलेक्षिपेत् ।
सप्तधावात्रिधावापिदध्नाम्लेनचवापुनः ॥
शोधयित्वापुनःशुष्कंचूर्णयेत्तण्डुलाकृति ।
ततःशरावकेपात्रेस्थापयेत्कुशलोभिषक् ॥
वदरीपत्रकल्केनसन्धिलेपंचकारयेत् ।
अरुणाभमधःपात्रंतावज्ज्वालाप्रदीयते ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यमाणिक्याभोभवेद्रसः ।
तद्रक्तिद्वितयंखादेत्घृतभ्रामरमर्दयेत् ॥
संपूज्यदेवदेवेशंकुष्ठरोगाद्विमुच्यते ॥
स्फुटितंगलितंकुष्ठंवातरक्तंभगंदरम् ।
नाडीव्रणंव्रणंदुष्टमुपदंशंविचर्चिकाम् । नासास्यसंभवान्रोगानक्षतान्हन्तिसुदारुणम्
पुण्डरिकंचर्मदलंविस्फोटंमण्डलंतथा ।

अर्थ–हरितालको नरसल और पेठेके रसमें मिलाके सातवार अथवा तीनवार शोधन करे अथवा दहीके पानीमें शोधनकरे, फिर सुखाकर कूटे और कूटकर चांवलके बराबर छोटे २ तुकडे करे फिर उनको चतुर वैद्य सराव संपुटमें रखके बेरके पत्तोंके कल्कसे संधियोंको लेपकर बन्दकर देवे, फिर अग्निपर चढावे

जब तक पात्र नीचेसे लाल न होवे तब तक अत्यन्त तीव्र अग्नि देवे. फिर स्वांग शीतल होनेपर उसमेंसे हरितालको निकाल लेवे तो इसका रंग माणिकके समान लाल होजायगा इसमेंसे दो रत्ती सहत और घीके साथ खाय, प्रथम श्रीपरमात्माका पूजन करे तो यह कुष्टरोगको नाशकरे. स्फुटितकुष्ट, गलितकुष्ट, वातरक्त, भगंदर, नाडीव्रण, दुष्टघाव, उपदंश (गरमीकारोग) विचर्चिका, नाकेकरोग, मुखकेरोग, घोरघाव, पुण्डरीककुष्ट, विस्फोटक, और मण्डलकुष्ट इन सबको यह माणिक्यरस दूर करे ।

अथशीतपित्तोदर्दकोठाधिकारः

यमानीगुडसंमिश्रोःसूतभस्मद्विरक्तकः ।
शीतपित्तंनिहन्त्याशुकटुतैलविलेपनम् ॥
सिद्धार्थरजनीकल्कंप्रपुन्नाटतिलैःसह ।
कटुतैलेनसंमिश्रमेतदुद्वर्तनंहितम् ।
दूर्वानिशायुतोलेपःकण्डूपामाविनाशनः ॥
कृमिदद्रुहरश्चैवशीतपित्तहरःपरः । कुष्टोक्ताश्चक्रियांकुर्य्यात्सर्वयुक्त्याचिकित्सकः ॥
शीतपित्तेतथोदर्देकोठेचैवसमानतः ॥

अर्थ– ४ रत्ती पारेकी भस्मको अजमायन और गुडमें रखके खाय तो शीतपित्त, (पित्तीका रोग) दूर हो अथवा कडुए तेलकी देहमें मालिश करे तो पित्ती शान्ति होवे. अथवा सफेद सरसों और हलदी इन दोनोंके कल्कको पमारके बीज और तिल इनको कडुए तेलमें मिलाकर पीसे फिर इसका लेप करे तो शीतपित्तरोग दूर हो अथवा दूब और हलदी दोनोंको एकत्र पीस लेप करे तो खुजली आदि रोगोंको. कृमि. दाद और शीतपित्त इनको दूर करे शीतपीत्त. उदर्द और कोठ इनपर कुष्टोक्त चिकित्सा वैद्य अपनी युक्तिसे करे ।

अथाम्लपित्तचिकित्सा.

अम्लपित्तान्तकोरसः

मृतसूताभ्रलोहानामृतुल्यांपथ्यांविमर्दयेत् ।
माषमात्रंलिहेत्क्षौद्रैरम्लपित्तप्रशान्तये ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रककीभस्म, और लोहभस्म समान भाग ले सबकी बराबर हरड मिलाकर चूर्ण करे इसमेंसे एक मासेको सहतके साथ चाटनेसे अम्लपित्तका नाश होता है।

लीलाविलासोरसः

रसोबलिव्योमरविश्चलोहंधात्र्यक्षनीरैस्त्रिदिनंविमर्द्य । तद्भृङ्गचूर्णमृदुमार्कवेणसंमर्दयेदस्य चवल्लयुग्मम् ॥ हन्त्यम्लपित्तंमधुनाविलीढमूलीलाविलासोरसराजएषः । छर्दिंसशूलंहृदयस्यदाहंनिवारयेदत्रनसंशयोस्ति ॥

अर्थ–शुद्धपारा, गन्धक, अभ्रक, ताम्बेश्वर और सार इन सबको समान भाग लेकर आमलेके रसमें तीन दिन खरल करे. फिर भांगरेके रसमें खरल कर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे इनको सहतके साथ सेवन करे तो अम्लपित्त, वमन, शूल, हृदयका दाह. इन सबको यह लीलाविलास रस दूर करे ।

पानीयभक्तवटिका.

त्रिवृताम्रुस्तकञ्चैवत्रिफलाव्यूषणंतथा ।
प्रत्येकन्तुपलंभागन्तदर्द्धंरसगन्धकौ ॥
लोहाभ्रकविडंगानांप्रत्येकञ्चपलद्वयम् ।
एतत्सकलमादायचूर्णयित्वाविचक्षणः ॥

त्रिफलायाःकषायेणवटिकांकारयेद्भिषक् ।
एकैकांभक्षयेत्प्रातस्तक्रंचापिपिबेदनु ॥
हन्तिशूलंपार्श्वशूलंकुक्षिवस्तिगुदेरुजम् ।
श्वासंकासंतथाकुष्ठंग्रहणीदोषनाशिनी ॥

अर्थ–निसोथ, नागरमोथा, त्रिफला, सोंठ, मिरच, और पीपल प्रत्येक चार २ तोले लेवे. एवं पारा और गन्धक दो २ तोले ले. लोह-भस्म, वायविडंग और अभ्रक प्रत्येक आठ २ तोले ले. इन सबका चूर्णकर त्रिफलाके काढेसे गोलियां बनावे. एक २ गोली नित्य प्रातःकाल खाय ऊपरसे छाछ पीवे. तो शूल, पसवाडेका शूल, कूख, मूत्राशय और गुदाकी पीडा, श्वास, खांसी, कोढ, और संग्रहणी इत्यादि दोषोंको नाश करे ।

क्षुधावतीवटी.

आशुभक्तोदकैःपिष्टमभ्रकंतत्रसंस्थितम् ।
कन्नमानास्थिसंहारखण्डकर्णरसैरथ ॥
तण्डुलीयश्चशालिश्चकालमारिषजेनच ।
वृर्श्चीरवृहतीभृंगलक्ष्मणाकेशराजकैः ॥
पेषणंभावनंकुर्य्यात्पुटश्चानेकशोभिषक् ।
यावन्निश्चन्द्रकंतत्स्याच्छुद्धिरेवंविहायसः ॥
स्वर्णमाक्षिकशालिश्चध्मातंनिर्वापितंजले ।
त्रैफलेऽथविचूर्ण्यैवंलौहंकान्तादिकंपुनः ॥
वृहत्पत्रकरीकर्णत्रिफलावृद्धदारजैः ।
माणकन्दास्थिसंहारशृंगवेरभवैरसैः ॥
दशमूलीमुण्डितिकातालमूलीसमुद्भवैः ।
पुटितंसाधुयत्नेनशुद्धिमेवमयोव्रजेत् ॥
वशिरंश्वेतवाट्टालंमधुपर्णीमयूरकम् ।
तण्डुलीयंचवर्षाभ्वंदत्वाधश्चोर्ध्वमेवच ॥
पाक्यंसुजीर्णमण्डूरंगोमूत्रेणदिनत्रयम् ।
अन्तर्वास्यमदग्धंचतथास्थाप्यंदिनत्रयम् ॥
विचूर्णितंशुद्धिरियंलौहकिट्टस्यदर्शिता ।
जयन्त्यावर्द्धमानस्यआर्द्रकस्यरसेनतु ॥
वायस्याश्चानुपूर्व्वेणमर्दनंरसशोधनम् ।
गन्धकंनवनीताख्यंक्षुद्रितंलौहभाजने ॥
त्रिधाचण्डातपेशुष्कंभृंगराजरसाप्लुतम् ।
ततोवह्नेर्द्रवीभूतंत्वरितंवस्त्रगालितम् ॥
यत्नाद्भृंगरसेक्षिप्तंपुनःशुष्कंविशुध्यति ।
गगनात्द्विपलंचूर्णंलौहस्यपलमात्रकम् ॥
लौहकिट्टपलार्द्धंचसर्वमेकत्रसंस्थितम् ।
मण्डूकपर्णीवशिरतालमूलीरसैःपुनः ॥
वरीभृंगकेशराजकालमारिषजैरथ ।
त्रिफलाभद्रमुस्ताभिःस्थालीपाकाच्चचूर्णितं
रसगन्धकयोःकर्षंप्रत्येकंग्राह्यमेकतः ।
तन्मसृणशिलाखण्डेयत्नतःकज्जलीकृतम् ॥
वचाचव्यंयमानीचजीरकेशतपुष्पिका ।
व्योषंमुस्तंविडंगंचग्रन्थिकंखरमंजरी ॥
त्रिवृत्ताचित्रकोदन्तीसूर्य्यावर्त्तःसितस्तथा ।
भृंगमाणककन्दाश्चखण्डकर्णकएवच ॥
दण्डोत्पलाकेशराजकालावकरकोपिच ।
एषांमद्धंपलंग्राह्यंपटघृष्टंसुचूर्णितम् ॥
प्रत्येकंत्रिफलायाश्चपलार्द्धंपलमेवच ।
एतत्सर्वंसमालोड्यलोहपात्रेतुभावयेत् ॥
आतपेदण्डसंघृष्टमार्द्रकस्यरसैस्तथा ।
तद्रसेनाशिलापिष्टंगुडिकांकारयेद्भिषक् ॥
बदरास्थिनिभांशुष्कांस्वन्नगुप्तांनिधापयेत् ।
तत्प्रातर्भोजनादौतुसेवितंगुडिकात्रयम् ॥
अम्लोदकानुपानंचहितंमधुरवर्जितम् ।
दुग्धंचनारिकेलंचवर्जनीयंविशेषतः ॥
भोज्यंयथेष्टमिष्टंचवारिभक्ताम्लकांजिकम्।
हन्त्यम्लपित्तंविविधंशूलंचपरिणामजम् ॥
पाण्डुरोगंचगुल्मंचशोथोदरगुदामयान् ।
यक्ष्माणंपंचकासांश्चमन्दाग्नित्वमरोचकम् ॥
प्लीहानंश्वासमानाहमामवातंसुदारुणम् ।

गुडीक्षुधावतीसेयंविख्यातारोगनाशिनी ॥

अर्थ–चांवलोंके पानी अथवा कांजीमें रात्रिभर रखकर अभ्रकको पीसे फिर मानकन्द, अस्थिसंहार, खंडकर्ण (रतालू) चौलाई, शालिंच, कालशाक, मरसा, वृश्चीर (सफेद-पुनर्नवा) कटेरी, भांग, लक्ष्मणा, भांगरो इन प्रत्येकके रसकी पृथक् २ भावना देकर संपुटको अग्निमें फूंकदेवे. इस प्रकार जब तक अभ्रक निश्चन्द्र न होवे तबतक अनेक पुट दे अब लोहकी शुद्धि कहते है. कि सुवर्णमाक्षिक और चांवलोंके जलमें पीसकर कान्त लोह पर लेपकरे और भट्टीमें रखके धमावे, फिर आगेकहे हुए अमृतसार विधिसे त्रिफलाके काढेमें वारंवार बुझावे. इस प्रकार निरुत्थ भस्म कर उसको भानुपाकादिसे शोधकर वनके वथुरा, हस्तिकर्ण, त्रिफला, विधायरा, मानकंद, अस्थिसंहार, और अदरख इनके रसकी तथा दशमूल, मूंडी, इनके काढेके पुट देनेसे लोह शुद्ध होवे. अब मंडूरकी शुद्धि कहते हैं। लालओंगा, खैरेटी मूर्वा, ओंगा, चौलाई और सांट इनकी जड छाल और पत्तों को हांडीमें डालकर उनके ऊपर पुरानी मण्डूरको रक्खे फिर पूर्वोक्त पत्तो जडादिसे भरकर दवादेवे. फिर गोमूत्र भरकर तीनदिन रखी रहने दे. फिर अग्निपर चढाकर नीचे अग्नि जलावे परन्तु उसका धुआं बाहर न निकले इस प्रकार अग्नि देवे जब सब जलकर भस्म होजावे तब उतार लेवे. यह लोहकीटकी शुद्धीका प्रकार कहा । अब पारेकी शुद्धि कहते हैं. पारेकी अरनी, अंड, अदरख और वायसी (काकतुंडी,) इनके रसमें खरलकरे तो शुद्ध होवे अब गन्धककी शुद्धि कहते हैं. गंधकके टुकडे २ कर लोहेके करछलेमें भांगरेके रससे तीव्र खरल करे और धूपमें सुखा २ ले इस प्रकार तीनवार करे फिर एक पात्रमें भांगरेकारस भर मुखपर बारीक कपडा बांधदेवे फिर गन्धकको तायकर उस कपडेपर डालदेवे कि गंधक टपककर भांगरेके रसमें गिरजावे और जो कंकर आदि मिले होंगे वो उस कपडेमें रहजावेंगे फिर उस रसमेंसे निकालकर टुकडे २ कर धूपमें रखके सुखा लेवे तो गन्धक शुद्ध होवे।

इस प्रकार शुद्ध कीहुई अभ्रकभस्म ८ तोले, सार ४ तोले, लोहकीटी दो तोले, सबको एकत्रकर मण्डूकपर्णी (ब्राह्मीका एक भेद है) ओंगा, मूसली इनके रसमें खरलकर स्थाली पाक करे, फिर शतावर, भांग, भांगरा, कालशाक और सेमरकांशाकके रसमें घोटकर स्थालीपाक कर पचावे, फिर त्रिफला, नागरमोथा, इनके रसमें खरलकर स्थालीपाककरे फिर इस्का चूर्णकर एक तोले पारे गन्धककी कजली करे. जब अत्यन्त बारीक कजली होजावे तब वच चव्य अजवायन, जीरा, कालाजीरा, सोंफ, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा वायविडंग, पीपलामूल, ओंगा, निसोथ, चीतेकीछाल, दन्ती, सफेदहुलहुल, भांग मानकंद, रतालू, सहदेई, भांगरा और कालावकर इन प्रत्येकको दो २ तोले लेवे, सबका चूर्णकर त्रिफला ६ तोले लेवे, सबके चूर्णको एकत्रकर पारे गन्धककी कजली मिलाके लोहपात्रमें डाल धूपमें रखके अदरखके रसकी तीन पुट देवे, फिर उसी अदरखके रसमें बेरकी गुठलीके समान गोलियां बनावे. उनको धूपमें सुखाके इनमेंसे ३ गोली प्रातःकाल भोजनके पहले

सेवन करे इनके ऊपर नीबू आदि खट्टे रसका जल पीवे. परन्तु मिठाईका खाना वर्जित है. तथा दूध गिरिका गोला ये त्याज्य हैं. इसके ऊपर यथेष्ट आपको प्रिय जल, भात, खटाई और कांजी सेवन करे तो अम्लपित्त, अनेक प्रकारके शूल, परिणामशूल, पाण्डुरोग, गोला, उदरकी सूजन, गुदाके रोग, छर्द, पांच प्रकारको खांसी, मन्दाग्नि, अरुचि, प्लीहा, श्वास,-अफरा, दारुण आमवातके रोग, इन सबको यह क्षुधावती वटी नाश करे ।

अविपत्तिकरंचूर्णम्.

त्रिकटुत्रिफलामुस्तंवीजश्चैवविडंगकम् ।
एलापत्रश्चसर्वश्चसमभागंविचूर्णयेत् ॥
यावन्त्येतानिचूर्णानिलवंगंतत्समंभवेत् ।
सर्वचूर्णद्विगुणितंत्रिवृंचूर्णश्चदापयेत् ॥
सर्वमेकीकृतंयावत्तावच्छंर्करयान्वितम् ।
सर्वमेकीकृतंपात्रेस्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥
भोजनादौततोन्तेचमध्वाज्याभ्यामिदंशुभम्
शीततोयानुपानंश्चनारिकेलोदकंतथा ॥
ततोयथेष्टमाहारंकुर्यात्क्षीररसाशनः ।
अम्लपित्तंनिहन्त्याशुधिवर्द्धमलमूत्रकम् ॥
अग्निमांद्यभवान्रोगान्नाशयेचाविकल्पतः ।
बलपुष्टिकरंचैवशूलदुर्नामनाशनः ॥
प्रमेहान्विंशतिंचैवमूत्राघातान्तथाश्मरीम् ।
अविपत्तिकरंचूर्णमगस्त्यमुनिभाषितम् ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेडा, आंवला, नागरमोथा, वायविडंग, छोटीइलायची और पत्रज इन सबको समान भाग ले चूर्ण करे. जितना यह सब चूर्ण होवे इसकी बराबर लौंगका चूर्ण लेवे और सबसे दूना निसोथका चूर्ण लेवे, सबको एकत्रकर तोले जितना सब चूर्ण हो उसकी बराबर सफेद खांड मिलावे. सबको मिलाकर चिकने पात्रमें भरकर रख देवे, इसको भोजनके आदि अंतमें सहत और घीके साथ सेवन करना चाहिये इसके ऊपर शीतलजल, नारियलका जल पीवे, फिर यथेष्ट भोजन करे. दूध, मांसरस सेवन करे. तो यह तत्काल अम्लपित्तको दूर करे. तथा मलमूत्रकी वृद्धिको नष्ट करे. तथा मन्दाग्निसे होनेवाले रोगोंको दूर करे बल और पुष्टता करे. शूल, बवासीर, बीस प्रकारका प्रमेह, मूत्राघात और पथरी इन सब रोगोंको यह अगस्तऋषिका कहा अविपत्तिहर चूर्ण नाश करे ।

अथविसर्पविस्फोटकरोगचिकि०

कालाग्निरुद्रोरसः

सूताभ्रकान्तलोहानांभस्मगन्धकमाक्षिकम् ।
वन्यकर्कोटकद्रावैस्तुल्यंमर्द्यदिनावधि ॥ व
न्यकर्कोटिकाकन्देक्षिप्त्वालिप्त्वामृदावहिः।
भूधराख्येपुटेपश्चाद्दिनैकंतद्विपाचयेत् ॥
दशमांशंविषंयोज्यंमाषमात्रन्तुभक्षयेत् ।
रसःकालाग्निरुद्रोयंदशाहेनविसर्पनुत् ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्तमनुपानंप्रकल्पयेत् ।

अर्थ—पारा, अभ्रक, कान्तलोहकी भस्म, शुद्धगन्धक, सुवर्णमाक्षिक, इन सबको समान भाग लेवे सबको वनक कोडेके रससे एक दिन खरलकरे फिर उसको वनककोडेकी जड-में रख कपरमिट्टी चढाय भूधरयंत्रमें रख १ दिनकी अग्नि देवे. फिर उसमेंसे निकाल इस रसका दशांश सिंगियाविष मिलाय .इसमेंसे एक मांशे नित्य भक्षण करे, तो यह कालाग्निरुद्र संज्ञक रस दश दिनमें विसर्परोगका नाश करे. इसके ऊपर पीपलका चूर्ण सहत मिलाकर सेवन करे ।

पित्तनाशकभैषज्यंयोगवाहिरसंसुधीः ।
कुष्ठोदिटक्रियांसर्वामपिकुर्य्याद्धिपज्वरः ॥
गुडूचीनिम्बजक्वाथैःखदिरेन्द्रयवाम्बुना ।
कर्पूरत्रिसुगन्धिभ्यांयुक्तंसूतंद्विवल्लकम् ॥
विस्फोटंत्वरितंहन्याद्वायुर्जलधरानिव ।
गव्यंसर्पिस्त्र्यहंपीत्वा निर्गुण्डीस्वरसंत्र्यहम् ॥
विविधंस्नायुकमुग्रंहन्त्यवश्यंनसंशयः ।
सप्तपर्णशिफाकल्कपानाद्वालेपनात्तथा ॥
मूषलीमूलपानन्तुतन्तुकाख्योविनश्यति ।

अर्थ–इस विसर्परोगपर सम्पूर्ण पित्तनाशक औषधी करे. तथा योगवाही रस (चन्द्रोदयादिक) देवे, तथा जो कुष्ट पर औषधियां कहीहैं वो करनी चाहियें, अथवा गिलोय और नीमकी छालके काढेमें अथवा खैरसार और इन्द्रजौके काढेमें अथवा त्रिसुगन्ध और भीमसेनी कपूरके साथ ४ रत्ती पारा सेवन करे तो विस्फोटक रोगको शीघ्र दूर करे, जैसे वायु बादलोंका नाश करती है. तथा तीन दिन गौका घी पीवे तथा तीनें दिन निर्गुण्डीका स्वरस पीवे तो अनेक प्रकारके स्नायुक (नहरुा) अवश्य नष्ट होवें तथा संतोनाकी छालके कल्कको पीनेसे अथवा लगानेसे तथा मूसलीकी जडको पीनेसे तन्तुरोग (नहरुए) कारोग नाश होवे ।

अथमसूरिकाचिकित्सा

दुर्लभोरसः

अथशुद्धस्यसूतस्यमूर्च्छितस्यमृतस्यच ।
द्विवल्लापिप्पलीधात्रीरुद्राक्षघृतमाक्षिकैः ॥
पापरोगान्तकोयोगपृथिव्यामेवदुर्लभः ।

अर्थ–शुद्धपारा, मूर्छितपारा, अथवा पारेकी भस्म, और सफेद तथा पीली गगेरन, पीपल, आंवले, रुद्राक्ष तथा घी और सहत सबको मिलाके सेवन करे तो यह योग पाप रोगान्तक है अर्थात् शीतलारोगका नाश करे, यह योग पृथ्वीपर दुर्लभ है ।

अथक्षुद्ररोगचिकित्सा

क्षुद्ररोगेषुमतिमान्तत्तदौषधयोगतः ।
भस्मसूतंप्रयुञ्जीततथात्रयोगवाहिकम् ॥

अर्थ–बुद्धिवान वैद्य क्षुद्ररोगमें जिस २ रोगपर जो २ औषधी कही हैं उस २ औषधीके साथ पारेकी भस्म योजना करे अथवा योगवाही रस देवे तो क्षुद्ररोग दूर होवे ।

अथमुखरोगाधिकारः

चतुर्मुखोरसः

मृतंसूतंमृतंस्वर्णंद्वाभ्यांतुल्यांमनःशिलाम् ।
विमर्दयेच्चतैलेनचातसीसम्भवेनच ॥
तद्गोलंवस्त्रतोवद्ध्वालेपयेच्चसमन्ततः ।
अतसीफलकल्केनदोलायन्त्रेत्र्यहंपचेत् ।
उद्धृत्यधारयेद्वक्त्रेजिव्हादन्तास्यरोगनुत् ।

अर्थ–चन्द्रोदय, सुवर्णकी भस्म, दोनों समान भाग ले और दोनोंकी बराबर मनसिल ले सबको खरलमें डालके अलसीके तेलसे खरलकरे, फिर उसका गोला बनाकर कपडेमें बांधके उस पोटलीके ऊपर अलसीका कल्क करके लेप करदेवे फिर उस पोटलीको दोलायंत्रकी विधिसे तीन दिन पचाकर निकल लेवे. इस गोलीको मुखमें रखे तो सम्पूर्ण मुखके रोग जीभ और दांतोंके रोग दूर होवें।

पार्वतीरसः

पार्वतीकाशीसम्भूतोदरदोमधुपुष्पकम् ।

गुडुचीशाल्मलीद्राक्षाधान्यभूनिम्बमार्कवम्॥
तिलमुद्गपटोलश्चकूष्माण्डलवणद्वयम् ।
यष्टिकाधान्यकंभस्मचान्तर्दग्धंसमंसमम् ॥
मुखरोगंनिहन्त्याशुपार्वतीरसउत्तमः ।
पित्तज्वरंचिरंहन्तितिमिरश्चतृषामपि ॥

अर्थ-गन्धक, पारा, हींगलू, महुराके फूल गिलोय, सेमर, दाख, धनियां, चिरायता, भांगरा, तिल, मूंग, पटोलपत्र, कूष्माण्ड (पेठा) सैंधानिमक, कालानिमक, मुलहटी, धनियां इन सबको बराबर लेकर किसी पात्रमें रख मुख बन्दकर अग्निमें फूंकदेवे तो यह पार्वतीरस बनकर तयार हो इसके सेवन करनेसे मुखरोग, पित्तज्वर, तिमिररोग, और तृषाके रोग शीघ्र दूर होवे ।

मुखरोगहरी

रसगन्धौसमौताभ्यांद्विगुणंचशिलाजतु ।
गोमूत्रेणविमर्द्याथसप्तधार्द्रद्रवेणच ॥
गुंजाष्टकमिदंतालुगलौष्ठदन्तरोगनुत् ।
जातीनिम्बमहाराष्ट्रीरसैःसिध्यतिपाकहा ॥
कणामधुयुतंहन्तिमुखरोगंसुदारुणम् ।
महाराष्ट्र्यश्वगन्धाभ्यांमुखंचप्रतिसारयेत् ॥
धारणात्सेवनाच्चैवहन्तिसर्वान्मुखामयान् ।

अर्थ-पारा और गन्धक दोनों बराबर ले और दोनोंकी बराबर शुद्ध शिलाजीत ले सबको एकत्रकर गोमूत्रसे खरल करे, फिर सात-पुट अदरखके रसकी देवे. चमेली, नीम, जलपीपल, इनके रससे खरल करे तो यह रस सिद्ध होवे. इसको पीपलके चूर्ण और सहतके साथ सेवन करे तो दारुण मुखरोग दूर होवे. इसकी ८ रत्तीकी मात्रा है, यह तालू, गला, होंट, और दांत इन सबके रोग नष्ट करे. जलपीपल और असगंध दोनोंको पीस मुखमंजन करे तो मुखके सबरोग दूर हो ।

पथ्यावटी

सचास्यामयजिद्सेव्योमधुनापर्पटीरसः ।
पथ्याबालककुष्ठंचगोमूत्रेणप्रसाधयेत् ॥
एषाचवटिकाहन्तिमुखदौर्गन्ध्यसन्ततिम् ।

अर्थ-सहतके साथ पर्पटीरस सेवन करनेसे सम्पूर्ण मुखके रोग नष्ट हो, अथवा हरड, नेत्रवाला और कूठ इनको अठगुने गोमूत्रमें औटाकर फिर इस काढेको छानकर घोटे जब गाढा होजावे तब गोलियां बनालेवे, १ गोली मुखमें रखे तो मुखकी दुर्गन्धि दूर हो ।

अथकर्णरोगाधिकारः

कफकेतुरसः

व्योपमिज्जलवीजंचशंखभस्मविषान्वितम्।
मरिचसदृशंखादेत्कफकेतुमहारसः ॥

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, जलवेतसके बीज, शंखकी भस्म और सिंगियाविष सबका चूर्णकर कालीमिरचके समान खानेसे यह कफकेतु महारस कफके रोगोंको नष्ट करता है।

भैरवोरसः

सूतंगन्धंविषंचैवटंकणंसकपर्दकम् ।
मरिचेनसमायुक्तंआर्द्रतोयेनभावितम् ॥
वन्हिमान्द्यंचामरोगंश्लेष्माणंग्रहणीगदम् ।
सन्निपातंतथाशोथंहन्तिश्रोत्रोद्भवंगदम् ।

अर्थ-पारा, गन्धक, विष, सुहागा, कौडीकी भस्म और कालीमिरच, इन सबको समान भाग ले, खरलकर अदरखके रसकी भावना दे गोलियां बना लेवे. यह मन्दाग्नि, आमवात, कफकेरोग, संग्रहणी, सन्निपात, सूजन और कानके रोगोंको दूर करे ।

योगवाहिरसाःसर्वेप्रयोक्तव्याभिषग्वरैः ॥

कर्णरोगेपुसर्वेपुपीनसादिपुनित्यशः ।

अर्थ-संपूर्ण पीनसादिक नाकके रोग और कानके रोगोंमें वैद्यको संपूर्ण योगवाही रस देने चाहिये तो उक्त रोग नाश होवे ।

अथनासारोगाधिकारः

पंचामृतोरसः

शुद्धसूतंसमादायगन्धभागद्वयंततः ।
त्रिभागंटंकणंचापिविषंभागचतुष्टयम् ॥
पंचभागंतथादेयंमरिचस्तत्प्रयत्नतः ।
शृंगवेररसैःपिष्टागुडिकापंचरक्तिका ॥
अनुपानंहितंयोज्यंसर्वरोगप्रशान्तये ।
जलदोषोद्भवेरोगेमहत्सुप्रेजलोदरे ॥
सन्निपातेपुरोगेपुनासाप्यायांसपीनसे ।
व्रणशोथेव्रणेचैवनखदन्तविघातके ॥
पंचामृतरसोयोज्यःसर्वरोगप्रशान्तये ।

अर्थ-शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ८ तोले, सुहागा १२ तोले, सिंगियाविष १६ तोले, कालीमिरच २० तोले, सबको अदरखके रससे पीसके पांच २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इस गोलीको अनुपानके साथ देनेसे सब रोगोंको, शान्ति करे जलके दोषसे उत्पन्न रोगोंको, घोर जलंधरके रोगमें सन्निपात, नाककेरोग, पीनस, वृणशोथ, घाव, नाखून और दांतोके टूटनेमें यह पंचामृतरस देवे तो सब रोगशान्ति होवें ।

अथनेत्ररोगचिकित्सा

नेत्राशनिरसः

अभ्रंताम्रंतथालोहंमाक्षिकंचरसांजनम् ।
पातनायंत्रसंशुद्धगन्धकंनवनीतकम् ॥
पलप्रमाणंप्रत्येकंगृह्णीयाद्यविधानवित् ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णवैद्यैःकुशलकर्मभिः ॥
ततस्तुभावनाकार्य्यात्रिफलाभृंगराजकैः ॥
ततःप्रक्षेपचूर्णंचपिप्पलीमूलयष्टिका ।
एलापुनर्नवादारुपाठाभृंगशठीवचा ॥
नीलोत्पलंचन्दनंचश्लक्ष्णचूर्णंचदापयेत् ।
मापमेकंप्रदातव्यंघृतश्रीमधुमर्दितम् ॥
मर्द्दनंलोहदण्डेनपात्रेलौहमयेदृढे ।
अनुपानंप्रयोक्तव्यमुष्णेनवारिणातथा ॥
यावतोनेत्ररोगांश्चपानादेवविनाशयेत् ।
सरक्तेरक्तपित्तेचरक्तेचक्षुःस्रुतोपिच ॥
नक्तान्धतिमिरेकाचेनीलिकापटलार्बुदे ।
अभिष्यन्देऽधियन्येचपिष्टैचैवचिरन्तने ॥
नेत्ररोगेपुसर्वेपुवातपित्तकफेपुच ।
सर्वनेत्रामयंहन्याद्वृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥

अर्थ-अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, लौहभस्म, सुवर्ण माक्षिककीभस्म, रसोत, पातनायंत्रकी शोधित आमलासार गंधक, प्रत्येक चार २ तोले लेवे. सबको एकत्रकर चूर्णकरे फिर त्रिफला और भांगरेके रसकी भावना देकर आगेलिखी औषधियोंको मिलावे पीपलामूल, मुलहटी छोटी इलायचीके बीज, सांठकीजड, दारुहलदी, पाढ, भांगरा, कचूर, वच नीलकमल और सफेदचंदन, सबको कूटपीस चूर्णकर मिलावे फिर इसमेंसे एक मासेको सहत और घीके साथ लोहेके पात्रमें लोहेके मूसलेसे रगडकर खाय और इसपर गरमजल पीना अनुपान है यह संपूर्ण नेत्ररोगोंको पीने मात्रसेही दूर करे. रुधिर और रक्तपित्तयुक्त लालनेत्र और नेत्रोंसे जलका गिरना, रतोंध, तिमिर, कांचरोग, नीलिका, पटल, अर्बुद, अभिष्यन्द, अग्निमान्द्य, प्राचीन पिष्टरोग, तथा सम्पूर्ण वातापित्त और कफके नेत्ररोगोंको यह नेत्राशनिरस ऐसे दूर

करता है जैसे वज्रपात वृक्षको नष्ट करता है ।

नयनामृतलौहम्.

त्रिकटुत्रिफलाशृंगीशठीरास्नामहौषधम् ।
द्राक्षानीलोत्पलंचैवकाकोलीमधुयष्टिकम् ॥
वाद्यालंकेशिराजंचकण्टकारीद्वयंपलम् ।
लौहाभ्रयोःपलंदत्वाभावयेत्वक्ष्यमाणजैः॥
त्रिफलायाश्चतोयेनभृंगराजरसेनवा ।
भावयित्वावटीकार्य्याबदरास्थिनिभाशुभा
यावतोनेत्ररोगांश्चनिहन्यान्नात्रसंशयः ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, ककडा सिंगी, कचूर, रास्ना, सोंठ, दाख, नीलकमल, काकोली, मुलहटी, कगई, भांगरा, छोटीकटेरी, बडीकटेरी, प्रत्येक एक एक पल लेवे. लोहभस्म और अभ्रकभस्म प्रत्येक एक २ पल लेवे. सबका चूर्णकर त्रिफलाके काढेसे भांगरेके रससे भावना देकर बेरकी गुठलीके समान गोलियां बनावे. इनके सेवन करनेसे यावन्मात्र नेत्ररोग दूर होवें. इसमें सन्देह नहीं है ।

क्षतशुक्लहरोगुग्गुलः

अयःसमष्टिस्त्रिफलाकणानांचूर्णानितुल्या-
निपुरेणनित्यम्। सर्पिर्मधुभ्यांसहभक्षितानि
शुक्लानिकाचानिनिहन्तिशीघ्रम् ॥

अर्थ–लोहभस्म, त्रिफला, मूलहटी, और पीपल इनको समान भाग ले सबके बराबर शुद्ध गूगल मिलाय गोलियां बनावे इनको घी और सहतके साथ भक्षण करे तो शुक्ल और कांचरोग शीघ्र दूर हों ।

तिमिरहरलौहम्.

त्रिफलापद्मयष्ट्याह्वयुक्तंसायंनिषेवितम् ।
लौहंतिमिरकंहन्तिशुधांशुस्तिमिरंयथा ॥

अर्थ–हरड, बहेडा, आंवला, कमलगडा और मुलहटी सबका चूर्णकर इसमें बराबरकी लोहभस्म मिलाके सेवन करे तो यह तिमिरहरलोह जैसे चन्द्रमा अंधकारको दूर करताहै वैसे तिमिररोगका नाश करे ।

अथशिरोरोगाधिकारः

रसचन्द्रिकावटी.

त्रैलोक्यविजयावीजंवीजमुन्मत्तकस्यच ।
कण्टकारीवीजकंचइज्जलवीजमेवच ॥
वीजंचवृद्धदारस्यसमौगन्धकपारदौ ।
आर्द्रकैर्वटिकाकार्य्याकलापपरिमाणतः ॥
एषातोयानुपानेनप्रातःखाद्याहिताशिना ।
चिरजंसर्वरोगंचसन्निपातंसुदारुणम् ॥
आमवातंशिरोरोगंमन्यास्तंभंगलग्रहम् ।
कामलांशोथपाण्डुत्वंपीनसार्शोगुदामयान् ।
वटिकाचन्द्रिकानामवासुदेवेनभाषिता ॥

अर्थ–भांगके बीज, धतूरेकेबीज, कटेरीके-बीज, जलकनेरके बीज, विधायरेके बीज, पारा और गन्धक इनको समान भाग लेवे. सबको कूटपीस अदरखके रससे गोलियां बनावे. इसको प्रातःकाल जलके साथ सेवन करे, ऊपर पथ्य भोजन करे तो मस्तकके सम्पूर्ण प्राचीनरोग, दारुण सन्निपात, आमवात, शिरोरोग गर्दनका जिकडना, गलग्रह, कामला, सूजन, पाण्डुरोग, पीनस, बवासीर, और गुदाके अन्य रोगोंको यह चन्द्रिका गुटिका वासुदेववैद्यकी कहीहुई दूर करे

शिरोवज्ररसः

पलंसूतंपलंगन्धंपलंलौहंपलंरवेः ।
गुग्गुलोःपलचत्वारितदर्द्धंत्रिफलारजः ॥
यष्टिमधुकणाशुण्ठीगोक्षुरंकृमिनाशनम् ।
तोलकंदशमूलंचप्रत्येकंपरिकल्पयेत् ॥
क्वाथेनदशमूलांश्चयथास्वंपरिभावयेत् ।

घृतयोगेनकर्त्तव्यामाषेकाममितावटी ॥
छागीदुग्धेनवासेव्यामधुनापयसाथवा ।
वातिकंपैत्तिकंचैवश्लैष्मिकंसान्निपातिकम् ॥
शिरोर्तिंनाशयत्याशुवज्रमुक्तमिवासुरम् ।
शिरोवज्ररसोनामचन्द्रनाथेनभाषितः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, लोहभस्म, ताम्रभस्म प्रत्येक चार ४ तोले. शुद्धगूगल १६ तोले. त्रिफलाकाचूर्ण ९ तोले, मुल्हटी, पीपल, सोंठ, गोखरू, वायविडंग और दशमूल प्रत्येक एक-२ तोले लेवे. फिर सबका चूर्णकर दशमूलके काढेकी भावना देकर घीके संयोगसे एक २ मासेकी गोलियां बनावे इस गोलीको बकरीके दूध वा सहतसे सेवन करे, तो दीकेरोग, पित्तकेरोग, कफजरोग, सन्निपातजरोग और मस्तकपीडा इन सबको यह **शिरोवज्ररस** दूरकरे जैसे इन्द्रके हाथका फैंकाहुवा वज्र दैत्योंका नाशकरे यह **चन्द्रनाथ** आचार्य्यका कहा रस है ।

चन्द्रकान्तरसः

मृतसूताभ्रकंतीक्ष्णंताम्रंगन्धंसमंसमम् ।
स्नुहीक्षीरैर्दिनंमर्द्यभक्षयेन्माषमात्रकम् ॥
मधुनामर्दितंसेव्यंलौहपात्रेदिनेदिने। सप्ताहा
त्सूर्य्यवर्त्यादीन्शिरोरोगान्विनाशयेत् ॥

अर्थ–चन्द्रोदय, अभ्रक, सार, तांबेश्वर और शुद्धगंधक, प्रत्येक समान भाग लेकर सबको थूहरके दूधमें एक दिन खरल करे, और एक मासे नित्य भक्षण करे परन्तु इसको सहतमें मिलाकर लोहपात्रमें लोहेके मूसलेसे घिसकर नित्य सेवन करे तो सात दिनमें सूर्य्यावर्त्तादिक मस्तक रोगोंको यह **चन्द्रकान्तरस** दूर करे ।

महालक्ष्मीविलासः

लौहमभ्रविषंमुस्तंफलत्रयकटुत्रयम् ।
धत्तूरंवृद्धदारश्चबीजमिन्द्राशनस्यच ॥
गोक्षूरकद्वयश्चैवपिप्पलीमूलमेवच ।
एतत्सर्वंसमंग्राह्यंरसेधत्तूरकस्यच ॥
भावयित्वावटीकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः ।
महालक्ष्मीविलासोयंसन्निपातनिवारकः ॥

अर्थ–लोहभस्म, अभ्रकभस्म, सिंगियाविष, नागरमोथा, हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, धतूरा विधायरा, भांगरेकेबीज, बडे गोखरू जिनको दक्षिणी कहते हैं, छोटे गोखरू, पीपलामूल, इन सबको समान भाग ले धतूरेके रसकी भावना देकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह **महालक्ष्मी विलास रस** सान्निपातजन्य मस्तक रोगोंको दूर करे ।

अथप्रदरचिकित्सा

प्रदरान्तकलौहम्

लौहंताम्रंहरीतालंवंगमभ्रंवराटिका ।
त्रिकटुत्रिफलाचित्रंविडंगंपटुपञ्चकम् ॥
चविकापिप्पलीशंखंवचाहवुषपाकलम् ।
शठीपाठादेवदारुएलाचवृद्धदारुकम् ॥
एतानिसमभागानिसंचूर्ण्यवटिकांकुरु ।
शर्करामधुसंयुक्ताघृतेनभक्षयेत्पुनः ॥
रक्तंश्वेतंतथापीतंनीलंप्रदरदुस्तरम् ।
कुक्षिशूलंकटीशूलंयोनिशूलञ्चसर्वगम् ॥
मन्दाग्निमरुचिंपाण्डुकृच्छ्रश्वासंचकासनुत् ।
आयुःपुष्टिकरंवल्यंवलवर्णप्रसादनम् ॥

अर्थ–लोहभस्म, ताम्रभस्म, हरिताल, वंग, अभ्रक और कौडी इनकी भस्म. सोंठ, मिरच, पीपल, हरड, बहेडा, आंवला, चीतेकीछाल, वायविडंग, कालानिमक सैंधानिमक कचियानिमक, खारीनिमक, साम्भरनिकक, चव्य,

पीपल, शंखकी नाभी, वच, हाऊबेर, कूट, कचूर, पाढ, देवदारु, इलायची और विधाय-रा, इन सबको समान भाग लेवे और सबको पीस गोलियां बनावे. मिश्री, सहत और घीमें मिलाकर इस गोलीको खाय तो लाल सफेद, पीला, नीला ऐसा घोर प्रदररोग दूर होवे. पसवाडे, कमर, योनि और सर्वदेहके शूल, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डुरोग, मूत्रकृच्छ्र, श्वास, खांसी, इन सबको नष्टकरे. आयुकर्त्ता, पुष्टि-करता और बलवर्णका बढानेवाला है ।

प्रदरान्तकोरसः

शुद्धंसूतंतथागन्धंगन्धतुल्यश्चरूप्यकम् ।
खर्परश्चवराटश्चशाणमाणंपृथक्पृथक् ॥
तृतीयतोलकश्चैवलौहचूर्णंक्षिपेत्सुधीः ।
कन्यानीरेणएकाहंमर्दयेच्चभिषग्वरः ॥
असाध्यंप्रदरंहन्तिभक्षणान्नात्रसंशयः ॥

अर्थ–शुद्धपारा और गन्धक दोनों समान लेवे, गन्धककी बराबर रूपेकी भस्म, और खपरिया, कौडीए चार २ मासे ले और लो-हभस्म ३ तोले मिलावे सबको घीगुवारके रससे एकदिन खरलकर गोलियां बना लेवे. यह भक्षण करनेसे असाध्य प्रदररोगको भी दूर करता है. इसमें सन्देह नहीं ।

पुष्करलेहः

यष्टिमधुनिशाचूर्णंतोलकेनसमन्वितम् ।
वंगभस्मार्कपत्रस्यरसेनाप्लाव्यपीयते ॥
प्रातःप्रातःप्रतिदिनंप्रदरंहन्तिदुस्तरम् ।
रसाञ्जनंशुभाभृंगीचित्रकंमधुयष्टिकं ॥
धान्यतालीसगायत्रीद्विजीरंत्रिवृतावला ।
दन्तीत्र्यूपणकश्चापिपलार्द्धश्चपृथक्पृथक् ॥
चतुःपलंमाक्षिकस्यामलस्यचक्षिपेत्ततः ।
जातीकोपलवंगंचकंकोलंमृद्विकापिच ॥
चातुर्जातकखर्ज्जूरंकर्षमेकंपृथक्पृथक् ।
प्रक्षिप्यमर्दयित्वाचस्निग्धभाण्डेनिधापयेत्
एपलेहवरःश्रीदःसर्वरोगकुलान्तकः ।
यत्रयत्रप्रयोज्यःस्यात्तत्तदामयविनाशनः ॥
अनुपानंप्रयोक्तव्यंदेशकालानुसारतः ।
सर्वोपद्रवसंयुक्तंप्रदरंसर्वसम्भवम् ॥
द्वंद्वजंचिरजश्चैवरक्तपित्तंविनाशयेत् ।
कासश्वासाम्लपित्तश्चक्षयरोगमथापिवा ॥
सर्वरोगप्रशमनोबलवर्णाग्निवर्द्धनः ।
पुष्कराख्योलेहवरःसर्वत्रैवोपयुज्यते ॥

अर्थ–मुलहटी और हलदी एक २ तोले, ले, इनमें वंग भस्म मिलाय आकके पत्तोंके रसमें नित्य मिलाकर पीया करे. तो घोर प्रदरका रोग दूर होवे. रसोत, वंशलोचन, काकडासिंगी, चीतेकीछाल, मुलहटी, धनियां, तालीसपत्र, खैरसार, सफेदजीरा, कालाजीरा, निसोथ, खिरैटी, दंती, सोंठ, मिरच, पीपल, प्रत्येक दो २ तोले लेवे. इनमें चार पल सहत मिलावे. जायफल, लौंग, कंकोल, दाख, चातुर्जात, छुहारे प्रत्येक एक २ तोले ले. सबको एकत्र मर्दन कर चिकने बरतनमें भरकर रख छोडे यह परमोत्तम अवलेह क-ल्याणकर्ता सर्व रोगोंको नष्ट करता है. जिस २ रोग पर इसका प्रयोग कियाजाय उसी २ रोगको नाश करता है, इसपर वैद्य अपनी बुद्धिसे देश काल और अवस्था आदिका विचार करके अनुपानकी कल्पना करे तो यह सर्व उपद्रव सहित सर्वदोषजन्य प्रदरके रो-गोंको नष्ट करे. द्वंद्वज और प्राचीन रक्तपित्त-को नष्ट करे. खांसी, श्वास, आम्लपित्त, क्षय-रोग इत्यादि सर्वरोगोंको नष्टकरे. बल, वर्ण अग्निको बढावे, यह पुष्कराख्य अवलेह

सर्वत्रही योजना की जाती है ।

धात्रीचपथ्याचरसाञ्जनंचसर्वंविचूर्णंसजलं निपीतम् । अनन्तरक्तस्रवमुग्रवेगंनिवारयेत् सेतुरिवाम्बुवेगम् ॥ रक्तपित्तहरंसर्वंप्रदरेनूतनेतथा । रक्तातिसारेकथितंसर्वमेतत्प्रयोजयेत् ॥

अर्थ–आंवले, हरड और रसोतको समान भाग लेकर सबको जलमें मिलाकर पीवे तो अत्यन्त रुधिर गिरनेके वेगको इस प्रकार नाशकरे जैसे सेतु जलके वेगको निवारण करता है. सम्पूर्ण रक्तपित्त हरणकारी प्रयोग और जो रक्तातिसारमें प्रयोग कहे है वो सब नवीन प्रदररोगमें वैद्यको देने चाहिये. ।

अथ योनिव्यापच्चिकित्सा

समस्तंवातजित्कर्म्मयोनिव्यापत्सुशस्यते । क्षालनंस्वेदलेपांश्चवरानीरेणकारयेत् ॥
प्रक्षालयेद्धगंनित्यंपथ्यामलकवल्कलैः । वृद्धापिकामिनीकापिबालावत्कुरुतेरतिम् ॥

अर्थ–योनिके रोगोंमें सम्पूर्ण वातहरण कर्त्ता प्रयोग करे, तथा योनिका धोना, स्वेदलाना, और लेप इत्यादि कर्म त्रिफलाके जलसे करे. बुड्ढी औरतभी यदि नित्य हरड और आंवलेके वल्कलके काढेसे भगको धोया करे तो उसकी भग अत्यन्त सिकुडकर नवीन औरतके समान तंग होजावे ।

अथ सूतिकारोगचिकित्सा

सूतिकारिरसः

रसगन्धकक्रष्णाभ्रंतदर्द्धंमृतताम्रकम् । चूर्णितंमर्दयेद्यत्नाद्भेकपर्णीरसेनच ॥
छायाशुष्कावटीकार्य्याद्विगुञ्जाफलमानतः । क्षीरत्रिकटुनायुक्तासूतिकातंकनाशिनी ॥
ज्वरंतृष्णारुचिंश्वासंशोथंहन्तिनसंशयः ॥

अर्थ–पारा, गंधक, कालीअभ्रक, प्रत्येक चार २ तोले ले और तांबेकी भस्म दो तोले सबका चूर्णकर मण्डूकपर्णीके रससे खरलकर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे और छायामें सुखाकर एक गोलीको दूध और त्रिकुटाके चूर्णके साथ सेवन करे तो प्रसूतका रोग नष्ट होवे ।

सूतिकाविनोदरसः

रसगन्धकतुत्थंश्चत्र्यहंजम्बीरमर्दितम् । त्रिभावितंत्रिकटुनादेयंगुञ्जाचतुष्टयम् ॥
गर्भिण्याःशूलविष्टम्भज्वराजीर्णेपुयोजयेत् ।

अर्थ–पारा, गंधक, नीलाथोथा, तीनोंका चूर्णकर तीन दिन जंभीरीके रससे खरल करे फिर तीन भावना त्रिकुटाके काढेकी देवे, फिर चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे इनको गर्भीणीके शूल, अफरा, ज्वर, अजीर्ण आदि रोगोंमें देना चाहिये ।

गर्भचिन्तामणिरसः

तुत्थस्थानेस्वर्णदेयंचिन्तामणिरसेतथा ।

अर्थ–इसी उक्त सूतिकाविनोद रसमें नीलाथोथेकी जगह सुवर्ण भस्म मिलानेसे गर्भचिन्तामणि रस कहा जाता है ।

बृहत्सुतिकाविनोदरसः

शुण्ठ्याभागोभवेदेकोद्वौभागौमरिचस्यच । पिप्पल्याश्चत्रिभागंस्यादर्द्धभागश्चव्योमकम् ॥
जातीकोषस्यभागौद्वौद्वौभागौतुत्थकस्यच । सिन्दुवारजलेनैवमर्दयेदेकयामतः ॥
मधुनासहभोक्तव्यःसूतिकातंकनाशनः ।

अर्थ–सोंठ १ तोले, कालीमिरच दो तोले, पीपल ३ तोले, अभ्रकभस्म आधातोला, जायफल और नीलाथोथा दो२तोले सबको, निर्गुंडीके

रसमें एकप्रहर खरलकरे इस रसको सहतके साथ सेवन करे तो प्रसूतका रोग नष्ट होवे ।

सूतकारिरसः

टंकणंमूर्च्छितंसूतंगन्धकंहेमतारकम् ।
जातीफलंतथाकोपंलवंगैलाचधातकी ॥
वत्सकेन्द्रयवंपाठाशृंगीविश्वाजमोदका ।
गुडीप्रसारणीनीरैश्चतुर्गुंजाप्रमाणतः ॥
भक्षयेच्चद्रसैःप्रातःसूतिकातंकशान्तये ।
जीर्णज्वरंतथाशोथंग्रहणीप्लीहकासनुत् ॥

अर्थ–सुहागा, मूर्च्छितपारा, गंधक, सुवर्णभस्म, चांदीकीभस्म, जायफल, जावित्री, लौंग, इलायची, धायकेफूल, कूडाकीछाल, इन्द्रजौ, पाढ, काकडासिंगी, सोंठ और अजमोद इन सबको समान भाग ले, और प्रसारणीके रससे चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इस गोलीको प्रातःकाल गन्धप्रसारिणीके रससे सेवन करे तो प्रसूतका रोग शान्तहो, जीर्णज्वर, सूजन, संग्रहणी, प्लीह और खांसी इन सब रोगोंका नाशकरे ।

सूतिकाघ्नोरसः

रसगन्धकलौहाभ्रंजातीकोपंसुवर्चलम् ।
समांशंमर्दयेत्खल्वेछागीदुग्धेनपेषयेत् ॥
गुंजाद्वयंप्रमाणेनसूतिकातंकनाशनः ।
ज्वरातीसाररोगघ्नःसूतिकातंकनाशनः ॥
सूतिकाघ्नोरसोनामब्रह्मणापरिकीर्त्तितः ।

अर्थ–पारा, गन्धक, लोहभस्म, जायफल, और संचरनिमक सबको समानभाग लेकर बकरीके दूधसे खरलकरे फिर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे १ गोली नित्य सेवन करे तो प्रसूतके रोग, ज्वर, अतिसारको नष्ट करे. यह सूतिकाघ्नरस ब्रह्मदेव ने कहा है ।

सूतिकान्तकोरसः

रसाभ्रगन्धकंव्योपंसुवर्णमाक्षिकंविषम् ।
सर्वमेकीकृतंचूर्णंखादेद्रक्तिचतुष्टयम् ॥
सूतिकाग्रहणीरोगंवन्हिमान्द्यञ्चनाशयेत् ।
अतिसारंचसमयेदपिवैद्योविवर्जितम् ॥
कासश्वासातिसारघ्नोवाजीकरणउत्तमः ।

अर्थ–पारा, अभ्रक, गन्धक, सोंठ, मिरच, पीपल, सुवर्णमाक्षिक, और सिंगियाविष सबको समान भाग लेकर चूर्णकरे और इसमेंसे ४ रत्ती लेकर सेवन करे तो प्रसूतके रोग, संग्रहणी, मंदाग्नि, वैद्यवर्जित अतिसार, खांसी, श्वास और अतिसारको नष्ट करे तथा वाजीकरण करे ।

गर्भचिंतामणिरसः

जातीफलंटंकणंचव्योपंदैत्येन्द्ररक्तकम् ।
तच्चूर्णंसमभागेनमर्दितंप्रहरद्वयम् ॥
जंबीररसयोगेनवटींकुर्य्याद्विचक्षणः ।
गुंजाद्वयंप्रमाणन्तुखलुवैद्यःप्रयत्नतः ॥
आर्द्रकस्यरसेनैवभक्षयेदुष्णवारिणा ।
निहन्तिसर्वरोगंचभास्कररस्तमिरंयथा ॥

अर्थ–जायफल, सुहागा, सोंठ, मिरच, पीपल, गन्धक, और हींगलू सबको समान भाग लेकर जंबीरीके रससे दो प्रहर खरल करे और दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे, एक गोली अदरखके रससे खाय अथवा गरमजलसे खाय तो संपूर्ण गर्भकेरोगोंको नष्ट करे जैसे सूर्य्य अंधकारको नष्ट करता है ।

गर्भचिंतामणिरसः

रसंतारंतथालौहंप्रत्येकंकर्षमानतः ।
कर्षत्रयंतथाचाभ्रंकर्पूरंवंगताम्रकम् ॥
जातीफलंतथाकोषंगोक्षुरंचशतावरी ।
बलांतिबलयोर्मूलंप्रत्येकंतोलकंशुभं ॥
वारिणावटिकाकार्य्याद्विगुंजाफलमानतः ।

सन्निपातंनिहन्त्याशुस्त्रीणांचैवविशेषतः ॥
गर्भिण्याज्वरदाहंचप्रदरंसूतिकामयम् ।
अर्थ–पारा, चांदी और लोहा प्रत्येक दो दो तोले लेवे, अभ्रक ३ तोले, भीमसेनी कपूर, वंग, ताम्रभस्म, जायफल, जावित्री, गोखरू, शतावर, खरैंटी, और गंगेरनकी जड प्रत्येक तोले २ भर लेवे. सबको कूटपीस जलसे दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे तो सन्निपातको शीघ्र दूर करे तथा स्त्रियोंके रोगोंको विशेषकर दूर करे. गर्भिणीका ज्वर, दाह, प्रदर और प्रसूतका रोग दूर हो ।

बृहद्गर्भचिंतामणिरसः

सूतंगन्धंतथास्वर्णंलौहंरजतमाक्षिकैः ।
हरितालंवंगभस्माप्यभ्रकंसमभागिकम् ॥
भावनाखलुदातव्यारसैरेपांपृथक्पृथक् ।
ब्राह्मीवासाभृंगराजपर्पटीदशमूलकैः ॥
सप्तधाभावयेद्देयोगुंजामानंवटींचरेत् ।
गर्भचिन्तामणिरयंपूर्ववत्गुणकारकः ॥
अर्थ–पारा, गंधक, सुवर्ण, लोह, चांदी, सुवर्ण माक्षिक, हरिताल, वंग और अभ्रक सत्र को समान भाग लेवे सबका चूर्णकर आगेलिखे रसोंकी भावना पृथक् २ देवे. ब्राह्मी, अडूसा, भांगरा, पापरी, दशमूल, इनके रस अथवा काढोंकी सात २ भावना देवे फिर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे, यह गर्भचिन्तामणि-रस पूर्वोक्त रसके समान गुणकर्त्ता है ।

गर्भविनोदीरसः

त्रिभागंत्रिकटुंदेयंचतुर्भागंचहिंगुलं ।
लौहंताम्रंसीसकंचपलमानंसमाहरेत् ॥
जातीफलंकेशराजंभृंगैलामुस्तकंवरं ।
धात्रीकीन्द्रयवंपाठाशृंगीबिल्वंचवालकम् ॥
कर्पमानंचसंचूर्ण्यसर्वमेकत्रकारयेत् ।
बदरास्थिममाणेनवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
गन्धालिकापत्ररसैरनुपानंप्रदापयेत् ।
सर्वातीसारशमनःसर्वशूलनिवारणः ॥
सूतिकाहरनामायंरसःपरमदुर्लभः ।
अर्थ–लौंग, पारा, गन्धक, जवाखार, अभ्रक, लोह, तांबेकीभस्म, और सीसा प्रत्ये-क एक २ पल लेवे. जायफल, भांगरा, त्रिफ-ला, भांग, छोटी इलायची, नागरमोथा धायके फूल, इंद्रजौ, पाढ, काकडासिंगी, बेलगिरी, और नेत्रवाला इन सबको एक २ तोले ले कूटपीस जलसे बेरकी गुठलीकी बराबर गोलियां बनावे एक गोली गंधप्रसारणीके रससे देवे तो सर्व प्रकारके अतिसार सर्वप्रकारके शूल यह सूतिकाहररस प्रसूतके रोगोंको हरण कर्त्ता परम दुर्लभ है ।

महाभ्रवटी.

अभ्रकंपुटितंताम्रंलौहंगन्धकपारदम् ।
कुनटींटंकणंक्षारंत्रिफलाचपलंपलम् ॥
गरलंचतथामापचतुष्कंचैवचूर्णितम् ।
तत्सर्वंभावयेदेषांरसैःप्रत्येकशःपलैः ॥
ग्रीष्मसुन्दरकस्याढरूपकस्यक्रमेणतु ।
रसैस्ताम्बूलवल्याश्चदलोत्थैर्भावितंपृथक् ॥
द्रवेकिंचित्स्थितेचूर्णंमरिचस्यपलंक्षिपेत् ।
सर्वातीसारशमनंसर्वशूलनिवारणम् ॥
सूतिकाशोथपाण्डुत्वंसर्वज्वरविनाशनम् ।
नाशयेत्सूतिकातंकंवृक्षमिन्द्राशनिर्यथा ॥
अर्थ–शतपुटी अभ्रक, ताम्रभस्म, लोहभ-स्म, गन्धक, पारा, मनसिल, सुहागा, हरड, बहेडा, आंवला, प्रत्येक चार २ तोले लेवे. सिंगियाविष ४ मासे लेवे, सबका चूर्णकर आगे लिखे चार २ तोले रसोंकी भावना देवे, ग्रीष्मसुन्दर, अडूसा, और पानके रसकी भाव-

ना देनेके पश्चात् कुछ रस भावनाका जब बाकी रहे तब ४ तोले कालीमिरचका चूर्ण मिला देवे, फिर गोली बांध लेवे, यह महाभ्रवटी सब प्रकारके अतिसारोंको शमन करे, सब प्रकारके शूलरोग, प्रसूत, सूजन, पाण्डुरोग, और सर्वज्वरोंका नाश करे. यह प्रसूतके रोगोंको इसप्रकार नष्ट करे जैसे वज्रपात वृक्षको।

महाभ्रवटी.

मृतमभ्रंचलौहंचकुनटीताम्रकन्तथा।
रसगन्धंटंकणंचयवक्षारफलत्रिकम्॥
प्रत्येकंतोलकंग्राह्यंभूषणंपंचतोलकम्।
सर्वमेकीकृतंचूर्णंप्रत्येकेनाविभावयेत्॥
ग्रीष्मसुन्दरसिंहास्यनागवल्यारसेनच।
चतुर्गुंजाप्रमाणेनवटिकांकारयेद्भिषक्॥
योजयेत्सर्वथावैद्यःसूतिकारोगशान्तये।

अर्थ–अभ्रकभस्म, लोहभस्म, मनसिल, तांबा, पारा, गंधक, सुहागा, जवाखार, हरड, बहेडा, आंवला, प्रत्येक एक २ तोले और कालीमिरच ५ तोले सबको एकत्रकर चूर्णकरे, फिर ग्रीष्मसुन्दर (गीमा) अडूसा, और नागरवेल पानके रसमें खरल कर चार २ मासेकी गोलियां बनावे इससे वैद्य सूतिका रोगको शान्ति करे।

रसशार्दूलः

अभ्रंताम्रंतथालोहंराजपट्टंरसन्तथा।
गन्धटंकमरिचंचयवक्षारंसमांशकम्॥
तथात्रतालकंचैवत्रिफलायाश्चतोलकम्।
तोलकंचामृतंचैवषड्गुंजाप्रमिताबटी॥
ग्रीष्मसुन्दरकस्यापिनागवल्लीरसेनच।
भावयेत्सप्तधाहन्तिज्वरकासांगसंग्रहम्॥
सूतिकातंकशोथादिस्त्रीरोगंचविनाशयेत्।

अर्थ–अभ्रक, तांबा, लोह, कान्तलोह, पारा, गन्धक, सुहागा, कालीमिरच और जवाखार प्रत्येक समान भाग ले हरिताल, हरड, बहेडा, आंवला, प्रत्येक एक २ तोले ले और एक तोले विषका चूर्ण मिलावे, सबको कूटपीस छःरत्तीकी गोलियां बनावे. फिर इसको ग्रीष्मसुन्दर (गीमा) और पान इनके रसकी सात २ भावना देकर सेवन करे तो ज्वर, खांसी, अंगोकासंकोच, प्रसूतके रोग, सूजन आदिके रोग तथा स्त्रियोंके रोगोंको यह नष्ट करे।

महारसशार्दूलः

अभ्रकंपुटितंताम्रंस्वर्णगन्धंचपारदम्।
शिलाटंकंयवक्षारंत्रिफलायाःपलंपलम्॥
गरलस्यतथाग्राह्यमर्द्धतोलकसम्मितम्।
त्वगेलापत्रकंचैवजातिकोपलवंगकम्॥
मांसीतालीशपत्रंचमाक्षिकंचरसांजनम्।
एषांद्विकार्षिकंभागंदेयंचापिविचक्षणैः॥
द्रवेकिंचित्स्थितेचूर्णंमरिचस्यपलंक्षिपेत्।
भावनाचप्रदातव्यापूर्वोक्तेनरसेनच॥
निहन्तिविविधान्रोगान्ज्वरान्दाहान्वमिं भ्रमिम्। तथातिसारकंचैववन्हिमांद्यमरोचकम्॥ विशेषाद्गर्भिणीरोगंनाशयेदचिरेणच।

अर्थ–अभ्रकभस्म, ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म, गन्धक, पारा, मनसिल, सुहागा, जवाखार, हरड, बहेडा और आंवला प्रत्येक एक २ पल लेवे. सिंगियाविष ६ मासे, तज, इलायची, पत्रज, जायफल, लौंग, जटामांसी, तालीसपत्र, सुवर्णमाक्षिक, और रसौत प्रत्येक दो २ तोले लेवे. सबका चूर्णकर ४ तोले कालीमिरचोंका चूर्ण मिलावे. फिर ग्रीष्मसुन्दर (गीमा) और पानके रसकी भावना देकर गोलियां बनावे. यह अनेक प्रकारके ज्वर, दाह, वमन

भ्रम, अतिसार, मन्दाग्नि, अरुचि और विशेष करके गरमीके रोगोंको यह तत्काल दूर करता है

वृहद्रसशार्दूलोरसः

रसस्यद्विगुणंगन्धंशुद्धंसंमर्द्दयेद्दिनम् ।
प्रतिलौहंसूततुल्यमष्टलोहंमृतंक्षिपेत् ॥
ब्राह्मीजयन्तीनिर्गुण्डीयष्टीमधुपुनर्नवा ।
नलिकागिरिकर्ण्यर्ककृष्णधूर्त्तदुरालभा ॥
आढरूपंकाकमाचीद्रवैरेषांविमर्द्दयेत् ।
रोगोक्तमनुपानंवाकवोष्णंवाजलंपिबेत् ॥

अर्थ-पारा ४ तोले और गन्धक ८ तोले, दोनोंकी कजलीकर प्रतिलोह (सुवर्ण, चांदी, तांबा, कांसा, पीतल, सीसा, जस्ता और लोह) इन प्रत्येककी भस्म चार २ तोले ले सबको एकत्र करके ब्राह्मी, अरनी, निर्गुंडी, मुलहटी, सांठ, नलिका अपराजिता, आक, काला धतूरा, जवासा, अडूसा, मकोय, इन प्रत्येकके रसमें खरलकरे. फिर तीन २ अथवा चार २ रत्तीकी गोलियां बनावे, इनको प्रत्येक रोगके न्यारे २ अनुपानके साथ अथवा गरम जलके साथ देवे तो सम्पूर्ण रोगोंको नष्ट करे।

अष्टधातुः

सुवर्णरजतंताम्रंकांस्यंपित्तलमेवच ।
नागंवंगंतथालौहमष्टधातवोऽष्टौप्रकीर्त्तिताः ॥

अर्थ-सुवर्ण, चांदी, तांबा, कांसा, पीतल, सीसा, वंग तथा लोह ये आठ धातु कहलाती हैं इन्हींको अष्टलोह कहते हैं।

अथबालरोगचिकित्सा

बालोरसः

पलंशुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्यपलंतथा ।
सुवर्णमाक्षिकस्यापिभागार्द्धंसंप्रकल्पयेत् ॥
ततःकज्जलिकांकृत्वालौहपात्रमयेदृढे ।
केशराजस्यभृंगस्यनिर्गुण्डीस्वरसेनच ॥
शुभेशिलामयेपात्रेलौहदण्डेनमर्दयेत् ।
राजिकासदृशींचैववटिकांकारयेद्भिषक् ॥
एकैकांवटिकांखादेन्नागवल्लीदलद्रवैः ।
हन्तित्रिदोषसम्भूतंज्वरंचैवसुदारुणम् ॥
चिरज्वरंचकासंचशूलंसर्वसमुद्भवं ।
शिशूनांरोगनाशायशिवेनपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-शुद्धपारा और शुद्धगन्धक चार २ तोले, सुवर्णमाक्षिककी भस्म दो तोले लेकर सबकी लोहपात्रमें कजलीकर, भांगरा और निर्गुण्डी इनके रसको पत्थरके खरलमें लोहेके मूसलेसे घोटकर भावना देवे, फिर राईके बराबर गोलियां बनावे, एक गोली पानमें रखकर खाय तो त्रिदोषजन्य दारुणज्वर, प्राचीन ज्वर, खांसी और सर्व प्रकारके शूलोंको दूर करे, यह बालकोंके रोगनाशार्थ श्रीशिवने बालरस कहा है।

बालोरसः

पलंशुद्धस्यसूतस्यगन्धकस्यचतत्समम् ।
सुवर्णमाक्षिकस्यापिचार्द्धभागंनियोजयेत् ॥
ततःकज्जलिकांकृत्वालौहपात्रेमयेदृढे ।
केशराजस्यभृंगस्यनिर्गुण्ड्याःपर्णसम्भवम् ।
स्वरसंकाकमाच्याश्चग्रीष्मसुन्दरकस्यच ॥
सूर्य्यावर्त्तकवर्षाभूभेकपर्णीरसैस्तथा ।
श्वेतापराजितायाश्चरसंदद्याद्विचक्षणः ॥
देयंरसार्द्धभागेनचूर्णंमरिचसम्भवम् ।
शुभेशिलामयेपात्रेयामंदण्डेनमर्दयेत् ॥
शुष्कमातपसंयोगाद्गुटिकांकारयेद्भिषक् ।
प्रमाणंसर्षपाकारंबालानांचप्रयोजयेत् ॥
हन्तित्रिदोषसम्भूतंज्वरंचैवसुदारुणम् ।
कासंचविविधंचैवसर्वरोगंनिहन्तिच ॥

अर्थ-शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले,

सुवर्णमाक्षिककी भस्म दो तोले, इन सबकी कजली लोहके दृढपात्रमें करे, भांगरा, निर्गुण्डी, पान, मकोय, ग्रीष्मसुन्दर, सूर्य्यावर्त्तक, सांठ, मंडूकपर्णी, और सेत उपलसिरी इनके रसोंकी पृथक् पृथक् भावना देकर दो तोले कालीमिरचका चूर्ण मिलावे, फिर धूपमें रख पत्थरके खरलमें एक प्रहर खरलकरे जब गाढा होजावे तब सरसोंकी बराबर गोलियां बनावे उनको धूपमें सुखाकर एक गोली बालकको देनेसे बालकका त्रिदोषजज्वर, खांसी और अनेक प्रकारके रोगोंको दूर करे ।

अथविषाधिकारः

विषवज्रपातोरसः

निशाटंकंचसजातीकोषंतुत्थंसमांशंकुरुदेवदाल्याः । रसेनपिष्टाविषवज्रपातोरसोभवेत्सर्वविषापहन्ता ॥ निष्कोऽस्यसंजीवयतिप्रयुक्तोनृमूत्रयोगेनचकालदष्टम् । जटाविषेनाकुलितंतथान्यैर्विषैर्नरंचाशुतथातुरंच ॥

अर्थ–हलदी, सुहागा, जायफल, और नीलाथोथा सबको समानभाग लेवे और सबको बन्दालके रससे खरलकर चार २. मासेकी गोलियां बनावे. तो यह विषवज्रपातरस मनुष्यके मूत्र वा गोमूत्रके साथ सेवन करनेसे घोर कारियलका डसाहुआ भी अच्छा हो. जडके विष, अर्थात् कन्दादिकके विषसे जो पीडित होवे वो तथा अन्य विषोंसे पीडित मनुष्य इस रसके सेवन करनेसे अच्छा होवे. ॥

भीमरुद्रोरसः

सूतराजस्यतोलैकंगन्धकस्यतथैवच ।
अभ्रात्कर्षंततोदेयंतोलैकंकान्तलौहकम् ॥
परोक्तैनौषधैनैवभावयेच्चपृथक्पृथक् ।
विशालावृहतीब्राह्मीसौगन्धिकसुदाडिमः ॥
मर्कट्याश्वात्मगुप्तायाःस्वरसेनपृथक्पृथक् ।
एकरक्तिकमानेनवटिकांकारयेद्भिषक् ॥
वटीमेकांभक्षयित्वापिवेच्छीतजलंततः ।
भीमरुद्रोरसोनामचासाध्यमपिसाधयेत् ॥
कुक्कुरस्यशृगालस्यविषंहन्तिसुदुस्तरम् ।

अर्थ–शुद्धपारा, गन्धक, अभ्रक, कान्तलोहकी भस्म प्रत्येक एक २. तोला, इनमें आगे लिखी औषधियोंकी पृथक् २ भावना देवे. इन्द्रायन, कटेरी, ब्राह्मी, नीलकमल, अनार, सफेदओंगा, और किवाछ इनके रसकी पृथक् पृथक् भावना देकर एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. एक गोली खाकर ऊपरसे शीतल जल पीवे. तो यह भीमरुद्ररस असाध्य विषरोगीको अच्छाकरे. कुत्ते तथा स्यारके घोरविषको दूर करे ।

अथरसायनाधिकारोवाजीकरणाधिकारश्च.

श्रीमन्मथोरसः

सुस्थस्योजस्करंकिञ्चित्किञ्चिदार्त्तस्यरोगनुत् । यज्जराव्याधिविध्वंसिभेषजंतद्रसायनम् ॥ रसगन्धकयोर्ग्राह्यंकर्षमेकन्तुशोधितम् ।
अभ्रंनिश्चन्द्रकंदद्यात्पलार्द्धंसुविचक्षणः ॥
कर्पूरंनिश्चन्द्रकंदद्याद्वंगंचकोलसंमितं ।
ताम्रंकोलार्द्धकंतत्रानिःशेषंमारितंक्षिपेत् ॥
लौहंकर्षंसुजीर्णश्चवृद्धदारुकवीजकम् ।
विदारीशतमूलीचक्षुरनीजंवलातथा ॥
मर्कट्यतिवलाचैवजातीकोषफलेतथा ।
लवंगंविजयाबीजंश्वेतसर्जंयमानिका ॥
एतेषांचूर्णमादायप्रक्षिपेत्शाणसम्मितम् ।

गुंजाद्वयञ्चभोक्तव्यंकोष्णंक्षीरंपिबेदनु ॥
गृहेयस्यशतस्त्रीणांविद्यन्तेतिव्यवायिनः।
नतस्यलिंगशैथिल्यमौषधस्यास्यसेवनात् ॥
नचशुक्रक्षयंयातिनबलंन्हासतांव्रजेत्।
कामरूपीभवेद्दिव्योवृद्धःषोडशवर्षवत् ॥
रसायनवरोबल्योवाजीकरणउत्तमः।
रसःश्रीमन्मथोनाममहेशेनप्रकाशितः ॥

अर्थ—औषधी दो प्रकारकी हैं एक रोगी कों हितकारी, दूसरा रोगरहितकों हितकारी, औषधी दो प्रकारकी है एक रसायन, दूसरी वाजीकरण, तहां रोगीके हितकारी रसोंकों प्रथम लिख आए हैं अब स्वस्थ मनुष्यकों हितकर्त्ता रसोंकों लिखते है।

कोई औषधी स्वस्थ मनुष्यकों ओज. बढाने वाली है और कोई रोग हरण करने वाली है. तहा जो औषधी वृद्धावस्था और रोगोंकों नष्टकरे उस औषधीकों रसायन कहते हैं।

शुद्धपारा १ तोले, शुद्धगन्धक १ तोले, निश्चन्द्र अभ्रक दो तोले, भीमसेनी कपूर और शुद्ध वंगकी भस्म प्रत्येक आठ २ मासे. तांबेकी भस्म ४ मासे, लोहेकी भस्म एक तोले, विधायरेके बीज, विदारीकन्द, शतावर, तालमखाने, खिरैटी, कौंचकेबीज, गंगेरन, जायफल, जावित्री, लौंग, भांगकेबीज, सफेदराल, और अजवायन इन सबका चूर्ण चार २ मासे लेवे. सबकों एकत्र कर इसमेंसे दो २ रत्ती की गोलियां बनाकर सेवन करे ऊपरसे थोडा गरम दूध पीवे जिसके घरमें सौ स्त्री होवे. और जो अति मैथुन कर्त्ता है उसकों यह रस सेवन करना चाहिये. इसके सेवनसे कभी लिंग शिथिल नहीं होता. कभी शुक्रका क्षय नहीं होता, न बलका न्हास होता, कामरूप और वृद्धाभी सोलह वर्षके समान हो, यह सर्वोत्तम रसायन बलकारी और वाजीकरण कारक है. यह शिवजीका कहा हुआ मन्मथनामक रस है।

महेश्वररसः

रसभस्मीकृतंकोलंगन्धकंशोधितंसमम्।
लोहकर्षद्वयंताम्रमर्द्धकोलकसम्मितम् ॥
सुवर्णजारितंदद्याच्छाणार्द्धंसुविचक्षणः।
अभ्रंकर्षद्वयंदद्याच्छाणार्द्धंचन्द्रचूर्णकम् ॥
स्यामाबीजंवरींचैवबलामतिबलांतथा।
एलांचशंखपुष्पींचशाणमानंविनिःक्षिपेत् ॥
जलेनवटिकांकृत्वागुंजामात्रांप्रदापयेत्।
सेवनादस्यकन्दर्परूपोभवतिमानवः ॥
सहस्रंयातिनारीणामुत्साहोजायतेऽधिकः।
नित्यंस्त्रीसेवनाद्यस्तुक्षीणशुक्रोभवेन्नरः ॥
महाबलोमहाबुद्धिर्जायतेनात्रसंशयः।
स्थूलानांकर्षकःश्रेष्ठःकृशानांपुष्टिकारकः ॥
रसोविनाशयेद्रोगान्सप्तसप्ताहभक्षणात्।

अर्थ—पारेकीभस्म और शुद्धगंधक आठ २ मासे, लोहभस्म दो तोले, ताम्रभस्म ४ मासे, सुवर्णभस्म दो मासे, अभ्रकभस्म दो तोले, शुद्ध भीमसेनी कपूर ८ मासे, विधायरेकेबीज, शतावर, खिरैटी, गंगेरन, इलायची, शंखपुष्पी, इन्कों चार २ मासे लेवे. सबकों कूटपीस एक २ रत्तीकी गोलियां बनावे. इनके सेवन करनेसे कामदेवके समान सुन्दर हो जावे, हजार स्त्रियोंसे भोग करनेकी शक्ती होवे. नित्य स्त्रियोंसे भोग करनेसे जिसके वीर्य्यकी हानि होजाती हैं. वह महाबली, महाबुद्धिवान होवे. यह मोठे पुरषोंकों पतले और पतलोंकों मोठा करनेमें श्रेष्ठ है. इस रस-

कों ४९ दिन सेवन करनेसे संम्पूर्ण रोगोंका नाश होवे ।

पूर्णचंद्रोरसः

सूताभ्रलौहंसशिलाजतुस्याद्विडंगताप्यंमधुनाघृतेन । सम्मर्द्यसर्व्वंखलुपूर्णचन्द्रोमाषोस्यवृष्योभवतिप्रयुक्तः ॥

अर्थ–शुद्धपारा, अभ्रककी भस्म, लोहभस्म, शिलाजीत, वायविडंग, सुवर्णमाक्षिककी भस्म, इन सबकों सहत और घींमें खरलकर एक २ मासेकी गोलियां बनाकर सेवन करे तो यह पूर्णचन्द्ररस वृष्य करता है ।

कार्श्यहरलौहम्.

श्वेतापुनर्नवादन्तीवाजीगन्धात्रिकत्रयैः ।
शतमूलीवलायुक्तैरेभिर्लोहंप्रसाधितम् ॥
निहन्तिनिहितंकार्श्यमपिभृंगरसैःसह ।
नास्त्यनेनसमंलौहंसर्वरोगान्तकंमतम् ॥
दीपनंवलवर्णाग्नेर्वृष्यदंचोत्तमोत्तमम् ।

अर्थ–सफेद पुनर्नवा (विसखपरा) दन्ती, असगन्ध, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिमद, शतावर और खरैटी इन सबकों समान भाग लेवे, और सबकी वरावर लोहेकी भस्म मिलावे, फिर इसमेंसे वलावल विचारकर भांगरेके रसके साथ देवे तो यह सर्व रोगोंकों नष्ट करे दीपनकरे, वल, वर्ण और अग्निकों वढावे, तथा उत्तमोत्तम वृष्य प्रयोग है इस कार्श्यहरलोहकी वरावर दूसरा प्रयोग नहीं है ।

लक्ष्मीविलासोरसः

पलंकृष्णाभ्रचूर्णस्यतदर्धौरसगन्धकौ ।
कर्पूरस्यतदर्द्धंचजातीकोषफलेतथा ॥
वृद्धदारकवीजंचवीजमुन्मत्तकस्यच ।
त्रैलोक्यविजयावीजंविदारीमूलमेवच ॥
नारायणीतथानागवलाचातिवलांतथा ।
वीजंगोक्षुरकस्यापिनैचुलंवीजमेवच ॥
एतेषांकार्षिकंचूर्णपर्णपत्ररसेनच ।
निष्पिष्यवटिकांकार्य्यात्रिगुंजाफलमानतः
निहन्तिसन्निपातोत्थान्गदान्घोरान्सुदारुणान् । वातोत्थानपिपित्तोत्थान्नास्त्यत्र नियमःक्वचित् ॥ कुष्ठमष्टादशाख्यंचप्रमेहान्विंशतिंतथा । नाडीव्रणंव्रणंघोरंगुदामयभगन्दरम् ॥ श्लीपदंकफवातोत्थंचिरजंकुलसम्भवम् । गलशोथमन्त्रवृद्धिमतीसारंसुदारुणम् ॥ कासपीनसयक्ष्मार्शःस्थौल्यदौर्गन्ध्यमेवच । आमवातंसर्वरूपंजिह्वास्तंभंगलग्रहम् ॥ अर्दितंगलगण्डंचवातशोणितमेवच। उदरंकर्णनासाक्षिमुखवैरस्यमेवच ॥ सर्वशूलंशिरःशूलंस्त्रीणांगदनिसूदनम् । वटिकांप्रातरेकैकांखादेन्नित्यंयथावलम् ॥ अनुपानमिह्प्रोक्तंमांसपिष्टंपयोदधि । वारिभक्तसुरासीधुसेवनात्कामरूपधृक् ॥ वृद्धोपितरुणस्पर्द्धीनचशुक्रस्यसंक्षयः । नचलिंगस्यशैथिल्यंनकेशायान्तिपक्वताम् ॥ नित्यस्त्रीणांशतंगच्छेन्मत्तवारणविक्रमः । द्विलक्षयोजनीदृष्टिर्जायतेपौष्टिकःपरः ॥ प्रोक्तःप्रयोगराजोयंनारदेनमहात्मना । रसोलक्ष्मीविलासोयंवासुदेवजगत्पतिः ॥ अभ्यासादस्यभगवानलक्षनारीपुवल्लभः ।

अर्थ–कृष्णाभ्रककी भस्म ४ तोले, पारा, गन्धक दोनों दो तोले. भीमसेनी कपूर १ तोले, जायफल, जावित्री, विधायरेके बीज, धतूरेकेबीज, भांगके बीज, विदारीकन्द, शतावर, गुलसकरी गंगेरन. गोखरू और समुद्रफल इन सब औषधियोंकों समान भाग लेवे. सबकों पानके रससे खरलकर, तीन २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह गोली सान्निपातके रोग, वातकेरोग,

और पित्तके रोगोंको दूर करे. इस रसपर किसी आहार विहारका नियम नहीं. अठारह प्रकारके कुष्ठ, वीस प्रकारके प्रमेह, नाडीव्रण, घोरगुदाकेरोग, भगंदर, कफवातोत्थ श्लीपद-का रोग, गलेकी सूजन, आंतोंकी वृद्धि, अ-तिसार, खांसी, पीनस, खई, ववासीर, स्थूल-ता, देहमें दुर्गन्धिका आना, आमवातके रोग, जिह्वास्तंभ, गलग्रह, अर्दितरोग, गलगंड, वातशोणित (वातरक्त) उदररोग, कान, नाक, नेत्र, मुखकी विरसता, सब देहका शूल, मस्तकशूल, स्त्रियोंकेरोग, इस **लक्ष्मी-विलास** रसकी गोली नित्य यथावलानुसार भक्षण करे, इसपर, मांस, मिष्टान्न, दूध, दही, जलसे वने पदार्थ, मद्य, सीधु (मद्यकाभेद) ये सेवन करना पथ्य है. इनके खानेसे काम-देवके सदृश होवे. वृद्ध मनुष्यभी तरुणकी बराबरी करे, इस रसके सेवन करनेसे वीर्य्य कभी क्षय नहीं होता, न कभी लिंग शिथिल होता, बाल कभी सफेद नहीं होता, मत्तवाले हाथीके समान सौ स्त्रियोंसे गमन करे, दो लाख योजनकी दृष्टि हो, अत्यन्त पुष्टाई-हो, यह प्रयोग महात्मा **नारदने श्रीकृष्ण** जगत्पतिके आगे कहाथा कि जिसके अभ्यास करनेसे श्रीकृष्ण भगवान् एक लाख गोपियोंके प्रिय हुए ।

श्रीकामदेवरसः

कामदेवमथोसूतंकामिनांकामदंसदा ।
यस्यप्रसादतोवल्योरम्यश्चरमतेस्त्रियम् ॥
पारदंपलमेकंस्याद्द्विपलंशुद्धगन्धकम् ।
रक्तकार्पासतोयेनघृष्ट्वाकाचस्यकुप्यतः ॥
निःक्षिप्यटंकणेनैवमुखंतस्यनिरोधयेत् ।
वालुकायंत्रमध्यस्थंकुप्यंचकुरुतेदृढम् ॥
अहोरात्रंपचेदग्नौशास्त्रवित्कुशलोभिषक् ।
शीतेचादायपात्रस्थंकुपिकान्तरलम्बितम् ॥
दरदेनसमंरक्तंसोज्वलंभस्मयद्भवेत् ।
भक्षयेन्मापमेकंचघृतेनमधुनासह ॥
पश्चाद्दुग्धंगुडंचाज्यकृष्णेक्षुमपिशर्कराम् ।
द्राक्षाखर्जूरमधुकप्रभृतीनथभक्षयेत् ॥
त्रिफलामधुनाशान्तियातिपित्तचिरोद्भवम् ।
निर्गुण्डिकारसेनात्रदुर्वारवातवेदनाम् ॥
प्रशमंयातिवेगेननूतनंचवपुर्भवेत् ।
अर्द्धावर्तितदुग्धेनगृह्यतेयद्ययंरसः ॥
वन्ध्यापिचभवत्येवजीववत्सासपुत्रिका ।

अर्थ-कामदेव और पारद ये दोनों का-मीपुरुषको कामके देनेवाले हैं, जिनकी प्रस-न्नतासे निर्बल प्राणीभी प्रबलहो रमणीय होकर स्त्रियोंसे रमण करता है, उस **श्रीकामदेव** नामक रसको कहते हैं ।

शुद्धपारा ४ तोले, शुद्धगन्धक ८ तोले, दोनोंकी कजलीकर लालकपास के रसमें दो प्रहर खरल करके कांचकी शीशीमें भर उसके मुखपर सुहागेका मुद्रादे मुखबन्द करे, फिर उसको वालुकायंत्रमें रख भट्टीपर चढाय शास्त्रज्ञाता कुशलवैद्य एक दिन रात्रि पचावे, फिर स्वांग शीतल होनेपर उस रसको शीशी-मेंसे निकाले तो पारेकी हींगलूके समान लालभस्म होजायगी. उसको १ मासे ले घी और सहतके विषम भागोंमें मिलाकर खाय फिर दूध, गुड, घी, कालीमिरच, खांड, छुहारे, महुआ आदिका सेवन करे त्रिफला और सहत करके बहुत दिनोंका पित्त शमन हो, निर्गुंडीके रससे दुर्निवार वातकी पीडा दूर हो, नवीन देहहो, यदि इस रसको अधौटा दूधके साथ सेवन करे तो वन्ध्या स्त्री भी जी-

वत् वत्सा अर्थात् जीता जागता पुत्र जने ।

अनंगसुन्दरोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंत्र्यहंकल्हारजैर्द्रवैः ।
मर्दितंवालुकायंत्रेयामंसंपुटकेपचेत् ॥
रक्तागस्त्याद्रवैर्भाव्यंदिनमेकंसिताम्बुजैः ।
यथेष्टंभक्षयेच्चानुकामयेत्कामिनीशतम् ॥

अर्थ—शुद्धपारा और शुद्धगन्धक चार २ तोले दोनोंकी कजलीकर कुछ सफेद और कुछ लाल ऐसे कमलके रसमें ३ दिन खरल करे, फिर वालुकायंत्रमें भरकर एक दिन संपुटमें पचावे, फिर एक दिन लाल अगस्तियाके फूलोंमें खरल करे, और एक दिन सफेद कमलोंके रसमें खरलकरे फिर इसको बलाबलके अनुसार भक्षण करे तो सौ स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति होवे ।

हेमसुन्दरोरसः

मृतसूतस्यपादांशंहेमभस्मप्रकल्पयेत् ।
क्षीराज्यदधिसंमिश्रंमाषैकंकांस्यपात्रके ॥
लेहयेन्माषषट्कन्तुजरामरणनाशनम् ।
वागुजीचूर्णकर्षैकंधात्रीफलरसप्लुतम् ॥
अनुपानंपिबेन्नित्यंस्याद्रसोहेमसुन्दरः ।

अर्थ—पारेकीभस्म १ तोले, सुवर्णभस्म ३ मासे, इनको छः मासे दूध, घी और दही इनसे कांसेके पात्रमें एकत्र करके सेवन करे तो वृद्धावस्था और अकालमृत्युको नाश करे, इसके ऊपर एक तोले बावचीके चूर्णको आंवलेके रसमें सानकर पीवे, यह इस हेमसुन्दर रसका अनुपान है ।

अमृतार्णवोरसः

सूतभस्मचतुर्भागंलोहभस्मतथाष्टकम् ।
अभ्रभस्मचषड्भागंगन्धकस्यचपंचमम् ॥
भावयेत्त्रिफलाक्वाथैस्ततःसर्वंभृंगजैर्द्रवैः ।
शीग्रुवन्हिकटुकाथैर्भावयेत्सप्तधापृथक् ॥
सर्वतुल्यकणायोज्यागुडेम्मिश्रंपुरातनैः ।
निष्कमात्रंसदाखादेज्जरामृत्युनिवारणम् ॥
ब्रह्मायुःस्याच्चतुर्मासैरसोयममृतार्णवः ।
कौरण्डकस्यपत्राणिगुडेनभक्षयेदनु ।

अर्थ—पारेकीभस्म ४ तोले, लोहभस्म ८ तोले, अभ्रककीभस्म ६ तोले, शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तोले, सबका एकत्र चूर्णकर त्रिफलाके काढेकी भावना देवे. फिर भांगरेके रसकी तथा सहजने, चीते, कुटकी, इनके रसोंकी सात सात भावना पृथक् २ देवे. फिर सबकी बराबर पीपलका चूर्ण डालकर पुराने गुडमें मिलावे और ४ मासेके अनुमान प्रतिदिन छः महीने तक सेवन करे तो वृद्धावस्था और अकालमृत्युका हरण करे. ब्रह्माकी आयुको करे, इसके ऊपर पीयावांसेके पत्तोंका चूर्ण गुडमें मिलाकर खावे यह अनुपान है ।

बृहत्पूर्णचंद्ररसः

द्विकर्षशुद्धसूतस्यगन्धकंचाद्विकार्षिकम् ।
लोहभस्मपलंचाभ्रंजारितंचपलांशकम् ॥
द्वितोलंरजतंचैववंगभस्मद्विकार्षिकम् ।
सुवर्णंतोलकंचैवताम्रकांस्यंचतत्समम् ॥
जातीफलंचेन्द्रपुष्पमेलाभृंगंचजीरकम् ।
कर्पूरंवनितामुस्तंकर्षैकर्षपृथक्पृथक् ॥
सर्वंखल्लतलेक्षिप्त्वाकन्यारसविमर्दितम् ।
भावयित्वावरातोयैःकेवुकानांरसेनच ॥
एरण्डपत्रैरावेष्ट्यधान्येरात्रिदिनोषितम् ।
उद्धृत्यमर्दयित्वातुवटिकांचणसम्मितांम् ॥
खादेच्चपर्णखण्डेनसंयुक्तांव्याधिनाशिनीम् ।
सर्वव्याधिविनाशायकाशीनाथेनभाषितः ॥
पूर्णचन्द्ररसोनामसर्वरोगेषुयोजयेत् ।
बल्योरसायनोवृष्योवाजीकरणउत्तमः ॥

अयमष्ठीलिकांहन्तिकासश्वासमरोचकम् ।
आमशूलंकटीशूलंहृच्छूलंपित्तशूलकम् ॥
अग्निमान्द्यमजीर्णंचग्रहणींचिरजामपि ।
आमवाताम्लपित्तंचभगंदरमपिद्रुतम् ॥
कामलांपाण्डुरोगंचप्रमेहंवातशोणितम् ।
नातःपरतरःश्रेष्ठोविद्यतेवाजिकर्मणि ॥
रसस्यास्यप्रसादेननरोभवतिनिर्गदः ।
मेधांचलभतेवाग्मीसर्वशास्त्रसमन्वितः ॥
मदनस्यसमांकान्तिमदनस्यसमंबलम् ।
गीयतेमदनेनैवमदनस्यसमंवपुः ॥
स्त्रीणान्तथानपत्यानांदुर्बलानांचदेहिनाम् ।
क्षीणानामल्पशुक्रानांवृद्धानांवातरेतसाम् ॥
ओजस्तेजस्करश्चायंस्त्रीपुकामविवर्द्धनः ।
अभ्यासेननिहन्तिमृत्युपलितंसर्वामयध्वंसिनो ॥ वृद्धानांमदनोदयोदयकरःप्रौढांगना संगमे । नित्यानन्दकरःसुखातिसुखदोभूपैः सदासेव्यते ॥ दृष्टसिद्धफलोरसायनवरः श्रीपूर्णचन्द्रोरसः ।

अर्थ-शुद्धपारा दो तोले, शुद्धगंधक, दो तोले, लोहभस्म ४ तोले, अभ्रकभस्म ४ तोले, चांदीकीभस्म दो तोले, वंगभस्म दो तोले, सुवर्णभस्म १ तोले, तांबे और कांसेकीभस्म एक २ तोले लेवे, जायफल, लौंग, इलायची, भांग, जीरा, कपूर, फलप्रियंगु, और नागरमोथा प्रत्येक एक एक तोले लेवे. सबकों खरलमें डाल घीगुवारके रससे खरल करे फिर त्रिफलेके काढेकी भावना देकर सुपारीके काढेकी भावना देवे. फिर गोला बनाय उसपर अंडके पत्ते लपेटकर तीन दिन रात्रि धानकी राशिमें गाड देवे फिर तीन दिन बाद निकाल खरलकर पानीसे चनेकी बराबर गोलियां बनावे, एक गोली नागरवेल पानके साथ खाय, यह सम्पूर्ण व्याधि नाशनार्थ काशीनाथ नामक आचार्य्यने कही है. इस पूर्णचन्द्ररसकों सम्पूर्ण रोगोंमें देवे यह बलकारी. रसायन, वृष्य, उत्तम वाजीकरण कर्त्ता, अष्ठीलिका, खांसी, श्वास, अरुचि, आमजन्यशूल, कमरकी पीडा, हृदयकाशूल, पित्तजन्य शूल, मंदाग्नि, अजीर्ण, पुरानी संग्रहणी, आमवात, अम्लपित्त, भगन्दर, कामला, पाण्डुरोग, प्रमेह और वातरक्त इन सब रोगोंकों नष्टकरे. इससे परे वाजीकरण कर्त्ता दूसरा प्रयोग नहीं है इस रसके प्रभावसे मनुष्य रोगरहित होता है. और सर्व शास्त्रयुक्त बुद्धिकों प्राप्त होता है. कामदेवके समान कान्ति, बल, बडाई और देहकों प्राप्त होता है. स्त्रियोंकों तथा जिनके सन्तान नहीं ऐसे दुर्बल पुरुषोंकों तथा क्षीण और अल्पशुक्र वृद्ध और वातरेतस इनकों ओज और तेजका करनेवाला, स्त्रियोंकों कामका बढाने वाला, यह अभ्यासके प्रतापसे अकालमृत्यु, वृद्धावस्था, और सम्पूर्ण रोगोंकों नष्ट करता है. वृद्धोंकों स्त्रीसंगमें कामदेवकी वृद्धि करे, नित्य आनन्दकारी, अत्यन्त सुखदाता राजाओंकों सेवने योग्य तथा अनुभव किया सब रसायनोंमें श्रेष्ठ यह पूर्णचन्द्रोदय रस है ।

चन्द्रोदयरसः

पलंमृदुस्वर्णदलंरसेन्द्रात्पलाष्टकंषोडशगन्धकस्य । शोणैःसुकार्पासभवप्रसूनैःसर्वंविमर्द्यायकुमारिकाद्भिः ॥ तत्काचकुम्भेनिहितं प्रगाढंमृत्कर्पटैस्तदिवसत्रयश्च । पचेत्क्रमाग्नौ सिकताख्ययन्त्रेततोरजःपल्लवरागरम्यम् ॥ संगृह्यचैतस्यपलञ्चसम्यक्पलञ्चकर्पूररजस्तथैव । जातीफलंशोपणमिन्द्रपुष्पंकस्तूरिका

याइहशाणमेकं ॥ चन्द्रोदयोयंकथितोस्यव छोयुक्तोहिवल्लीदलमध्यवर्त्ती । मदोन्मदा नांमदाशतानांगर्भाधिकत्वंश्लथयत्यकुण्ठा त् ॥ घृतंघनीभूतमतीवदुग्धंमृदूनिमांसा निसमण्डकानि । माषानिपिष्टानिभवन्तिप थ्यान्यानन्ददायान्यपराणिचात्र ॥रतिका लेरतान्तेवासेवितोयंरसेश्वरः । मानहानिं करोत्येषप्रमदानांसुनिश्चितः ॥ कृत्रिमंस्थाव रञ्चैवजंगमञ्चैवयद्विषम् । नविकारायभव तिसाधकेन्द्रस्यवत्सरात् ॥ यथामृत्युञ्जयो भ्यासान्मृत्युञ्जयतिदेहिनाम् । यथायंसा धकेन्द्रस्यजरामरणनाशनः ॥ इन्द्रपुष्पंलवंगं स्यात्कार्पासकुसुमद्रवैः । तन्त्रान्तरेप्रसिद्धो यंमकरध्वजनामतः ॥

अर्थ-सुवर्णके वर्क ४ तोले शुद्धपारा ३२ तोले, शुद्धगंधक ६४ तोले, तीनोंको खरलमें डालकर कजली करे फिर नादनवन (नरमा-कपास) के फूलोंके रसमें सबको खरलकरे. फिर घीगुवारके रसमें खरलकर कांचकी आ-तिशीशीशीमें भर ऊपरसे कपरमिट्टी चढाय धूपमें सुखाय वालुकायन्त्रमें रखकर २४ प्रहरकी क्रमसे मंद, मध्य और तेज अग्नि देवे तो इसकी नली जम जायगी उसको शीशीसे निकाले तो इसका लालवर्ण निकले, फिर ४ तोले चन्द्रोदय, ४ तोले भीमसेनी कपूर, जाय-फल, समुद्रशोष और लौंग प्रत्येक चार २ तोले, और कस्तूरी ३ मासे सबको एकत्रकर इसमेंसे तीन रत्ती पानमें रखकर खाय तो मदोन्मत्त सौ स्त्रियोंके गर्वको दूर करे, इसपर घृत और अधौटा दूध, नरमनरम मांसके पदार्थ, मैदाके पदार्थ, तथा हलके मंड, उडद-की पिट्ठीके जो उत्तम २ पदार्थ है सब पथ्य हैं. इस रसको मैथुनके समय वा अन्तमें सेवन करनेसे स्त्रियोंके मानकी हानि करे, कृत्रिम-विष, स्थावरविष और जंगमविष ये इस रसके सेवनकर्त्ताको विकार नहीं करते. जैसे मृत्यु-ञ्जय मंत्रके अभ्याससे प्राणी मृत्युको जीतता है उसी प्रकार इसके अभ्याससे प्राणी जरा और मरण रहित होता है. तन्त्रान्तरमें इसी रसका मकरध्वज नाम है।

मकरध्वजः

स्वर्णस्यभागौवंगश्चमौक्तिकंकान्तलौहकम् ।
जातीकोषंफलंरूप्यंकांस्यकंरससिन्दुरम् ॥
प्रवालंकस्तूरीचन्द्रमभ्रकश्चैकभागिकम् ।
स्वर्णसिन्दूरतोभागाश्चत्वारःकल्पयेद्बुधः ॥
नातःपरतरःश्रेष्ठःसर्वरोगनिषूदनः ।
सर्वलोकहितार्थायशिवेनपरिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-सुवर्णभस्म दो तोले, वंगभस्म एक तोले, मोतीकी भस्म १ तोले, कान्तलोहकी भस्म, जायफल, जावित्री, रूपेकी भस्म, कां-सेकीभस्म, रससिंदूर, मूंगाकीभस्म, कस्तूरी, शुद्धकपूर, और अभ्रककी भस्म प्रत्येक एक २ तोले.ले, स्वर्णसिन्दूर ४ तोले ले, सबको एकत्र कर सेवन करे तो सर्व रोगमात्रका नाश करे. सम्पूर्ण लोकोंके हितके वास्ते श्री-शिवजी ने यह मकरध्वज रस निर्माण किया है।

वसन्ततिलकोरसः

हेम्नोभस्मकतोलकंघनंद्विगुणितंलौहास्त्रयः पारदाः । चत्वारोभियतन्तुवंगयुगलश्चैकी कृतंमर्दयेत् ॥ मुक्ताविद्रुमयोरसेनसमतागो क्षूरवारेक्षुणा । सर्वैवन्यकरीषकेणसुदृढंतसंप चेत्सप्तधा ॥ कस्तूरीवनसारमर्दितरसःप श्चात्सुसिद्धोभवेत् । कासश्वाससपित्तवात कफजित्पाण्डुक्षयादीन्हरेत् ॥ शूलादिग्र

हर्णीविपादिहरणंमेहास्मरींविंशतिं । हृद्रोगापहरंज्वरादिशयनंवृष्यंवयोवर्द्धनं ॥ श्रेष्ठंपुष्टिकरंवसन्ततिलकंमृत्युञ्जयेनोदितं ।

अर्थ–सुवर्णकीभस्म १ तोले, अभ्रक दो तोले, लोहभस्म ३ तोले, शुद्धपारा ४ तोले, गंधक ४ तोले, वंगभस्म दो तोले, सबकों एकत्र कर खरल करे फिर मोती और मूंगाकी भस्म प्रत्येक चार २ तोले ले इनकों गोखरू, ईख और अडूसा इनकी भावना देकर आरने उपलोंकी सात ७ अग्नि वालुकायंत्रकी देवे फिर कस्तूरी ४ तोला, और भीमसेनी कपूर ४ तोलेकों मिलाकर खरल करे तो यह वसन्ततिलकरस सिद्ध होवे, यह खांसी, श्वास, पित्त, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, शूल, संग्रहणी, विषरोग, वीस प्रकारके शूल, हृदयकेरोग, ज्वर इत्यादि रोगोंकों हरण करे. वृष्य और आयुकों बढावे. यह मृत्युंजय शिवका कहा वसन्ततिलकरस अति उत्तम पुष्टिकारी है. इसकी मात्रा दो रत्तीकी है ।

वसन्तकुसुमाकरोरसः

द्विभागंहाटकंचन्द्रंत्रयोवंगाहिकान्तका ।
चतुर्भागंशुद्धमभ्रंप्रवालंमौक्तिकंतथा ॥
भावयेद्गव्यदुग्धेनभावयेक्षुरसेनच ।
वासलाक्षारसोदीच्यरम्भाकन्दप्रसूनकैः ॥
शतपत्ररसेनैवमालत्याःकुंकुमोदकैः ।
पश्चान्मृगमदैर्भाव्यंसुगन्धिरससम्भवम् ॥
कुसुमाकरविख्यातोवसन्तपदपूर्वकः ।
गुंजाद्वयेनसंसेव्यःसितामध्वाज्यसंयुतः ॥
मेहघ्नकान्तिदश्चैवकामदःपुष्टिदस्तथा ।
वलीपलितनाशश्चश्रुतिभ्रंशंविनाशयेत् ॥
पुष्टिदोबल्यमायुष्यंपुत्रप्रसवकारणः
प्रमेहान्विंशतिंचैवंक्षयमेकादशन्तथा ॥
तथासोमरुजंहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा ।

अर्थ–सुवर्ण दो तोले, वंगभस्म, सीसेकी भस्म, और कान्तलोहकी भस्म, प्रत्येक एक २ तोले लेवे. शुद्ध अभ्रककीभस्म, मोती और मूंगाकीभस्म प्रत्येक चार २ तोले ले सबकों एकत्र चूर्णकर गौके दूध, ईखके रस, अडूसा, लाख, नेत्रवाला, केलेकाकन्द और फूल, कमल, मालती और केशर इनके रसोंकी भावना देकर फिर कस्तूरीकी तथा सुगंधित रसोंकी भावना देवे. तो वसन्त पद पूर्वक कुसुमाकर अर्थात् वसन्त कुसुमाकर नामसे विख्यात रसकी दो २ रत्तीकी गोलियां बनाकर, मिश्री, सहत और घीके साथ सेवन करे तो कान्तिकरे, कामनाका देनेवाला. पुष्टिकारी, वलीपलित नाशक, वहरेपनका नाश करे, देहकों पुष्टिकरे, बल और आयुकों बढावे. सन्तानका देनेवाला, वीस प्रकारकी प्रमेह, ग्यारह प्रकारका क्षयरोग, और सोमरोग इन सब साध्य और असाध्य रोगोंकों नष्ट करे ।

नीलकण्ठोरसः

सूतकंगन्धकंलौहंविषंचित्रकपद्मकम् ।
वरांगरेणुकामुस्तग्रन्थैलानागकेशरम् ॥
त्रिकत्रयंचत्रिफलाशुल्वभस्मतथैवच ।
एतानिसमभागानिद्विगुणोगुडउच्यते ॥
संमर्घवटकंकृत्वाभक्षयेच्चणकोन्मितम् ।
कासेश्वासेक्षयेगुल्मेप्रमेहेविषमज्वरे ॥
हिक्कायांग्रहणीदोषेशोथेपाण्ड्वामयेतथा ।
मूत्रकृच्छ्रेमूढगर्भेवातरोगेचदारुणे ॥
नीलकण्ठोरसोनामब्रह्मणानिर्म्मितःस्वयं ।
अनुपानविशेषेणसर्वरोगहरोभवेत् ॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहभस्म, सिंगियाविष, चीतेकीछाल, कमलगट्टा, तज, रेणुका,

विचार न करना चाहिये. इस राक्षसरसकों सेवन कर राजा कामदेवके समान रूपवान होवे।

विलासिनीवल्लभोरसः

समानभागेनबलिशुल्बिवीजतयोःसमानंकनकस्यवीजम् । धत्तूरतैलेनविमर्द्यसम्यक्विलासिनीवल्लभनामधेयः ॥ सूतोभवेद्वल्लयुगप्रमाणःसितायुतोमेहसमूहहारी । वीर्य्यस्यवन्धंकुरुतेनराणाम् ॥ निहन्तिदर्पंचसुलोचनानाम् ।

अर्थ—पारा १ तोले, गन्धक १ तोले, धतूरेके वीज दो तोले, सबका वारीक चूर्णकर धतूरेके तेलमें खूब खरल करे. तो यह विलासिनी वल्लभ नाम पारा बनकर तयार हो. इसकों ४ रत्ती लेकर मिश्रीके साथ सेवन करे. तो सम्पूर्ण प्रमेहोंकों दूर करे. वीर्य्यका स्तंभन करे, और स्त्रियोंके अभिमानकों नष्ट करे ।

वंगेश्वरोरसः

वंगभस्मरसंगन्धंरौप्यंकर्पूरमभ्रकम् ।
कर्षंकर्षंप्रदातव्यंसूतान्ध्रिहेममौक्तिकम् ॥
केशराजरसेभाव्यंद्विगुंजाफलमात्रकम् ।
प्रमेहान्विंशतिंहन्तिसाध्यासाध्यमथापिवा
वल्यंवृष्यंपुष्टिकरंपरंप्रोक्तंरसायनम् ।

अर्थ—वंगकीभस्म, पारा, गन्धक, रूपेकी भस्म और अभ्रक प्रत्येक एक २ तोले लेवे. सुवर्णकी भस्म और मोतीकी भस्म प्रत्येक तीन २ मासे ले, सबकों भांगरेके रसमें खरल कर दो २ रत्तीकी गोलियां बनावे यह वीस प्रकारके साध्या साध्य प्रमेहोंको दूर करे तथा बल करे, वृष्य है, पुष्टिकरता तथा परम रसायन है ।

मदनकामदेवोरसः

तारंवज्रंसुवर्णञ्चताम्रंसूतंसगन्धकम् ।
लौहञ्चक्रमवृद्ध्यानिकुर्य्याद्दत्तानिमात्रया ॥
विमर्द्यकन्यकाद्रावैःन्यसेत्काचमयेघटे ।
विमुद्र्यपिठरीमध्येधारयेत्सैंधवेभृते ॥
पिठरींमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ह्यांनिवेशयेत् ।
वन्हिंशनैःशनैःकुर्य्याद्दिनैकंतत्समुद्धरेत् ॥
स्वांगशीतञ्चतच्चूर्णंभावयेदर्कदुग्धतः ।
अश्वगन्धाचकाकोलीवानरीमुसलीक्षुरा ॥
त्रित्रिवेल्लरसैरासांशतावर्य्याचभावयेत् ।
पद्मकन्दकसेरूणांरसैरेकाचभावना ॥
कस्तूरीव्योपकर्पूरंकंकोलैलालवंगकम् ।
पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतत्चूर्णंविमिश्रयेत् ॥
सर्वैःसमांशर्कराञ्चदत्वाशाणोन्मितंपिवेत् ।
गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः ॥
अस्यप्रभावात्सौंदर्यंवलंतेजोऽभिवर्द्धते ।
तरुणीरमयेद्वह्वीर्नचहानिःप्रजायते ॥

अर्थ—चांदीकीभस्म, सुवर्णकीभस्म, तांबेकीभस्म, शुद्धपारा, शुद्धगंधक, लोहभस्म, प्रत्येक क्रमसे अधिक भाग लेवे. सबकों खरलकर घीगुवारके रसमें खरल करे और फिर एक हांडीमें पिसा निमक भर बीचमें शीशीकों रख मुख पर्य्यन्त निमक भरदे: और मुखकों परियासे बंद करदेवे, फिर उसकों चूल्हेपर चढाय धीरे २ एक दिन बराबर अग्नि देवे. फिर असगंध, कंकोल, कौंछ, मूसली, तालमखाने, इन प्रत्येकके रसकी तीन २ वार भावना देवे फिर कमलकन्द, कसेरू, इनके रसकी एक २ भावना देवे, पश्चात् कस्तूरी, सोंठ, मिरच, पीपल, भीमसेनी कपूर, कंकोल, छोटी इलायची लौंग, ये सब प्रथम चूर्णसे अष्टमांस लेवे. फिर सबकी बराबर मिश्री मिलाकर ४ मासे ८ तोले गौके दूधके साथ पीवे, और इसके ऊपर मधुर आहार

सेवन करे. इसके प्रभावसे सुन्दरता, बल और तेज बढे और बहुत स्त्रियोंसे रमण करे तथा वीर्यकी कदाचित् हानी न हो।

कंदर्पसुंदरोरसः

सूतोवज्रमहिमुक्तातारंहेमसिताभ्रकम् ।
रसैःकार्पासकानेतान्मर्दयेदरिमेदजैः ॥
प्रवालंचूर्णगन्धस्यद्विद्विकर्षौविमिश्रयेत् ।
प्रवालंचूर्णगन्धस्यविमर्द्यमृगशृंगके ॥
क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावयेद्धातकीरसैः ।
काकोलीमधुकंमांसीबलात्रयाविपेंगुदम् ॥
द्राक्षापिप्पलिधंदाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् ।
परूपकंकसेरुश्चमधुकंवानरीतथा ।
भावयित्वारसैरेषांशोषयित्वाविचूर्णयेत् ॥
एलात्वक्पत्रकंमांसीलवंगंगेरुकेशरम् ।
मुस्तंमृगमदंकृष्णाजलंचन्द्रंचमिश्रयेत् ॥
एतच्चूर्णैःशाणमितैःरसंकन्दर्पसुन्दरम् ।
खादेच्छाणमितंरात्रौसिताधात्रीविदारिका
एतेषांकर्षचूर्णेनसर्पिष्कर्षेणसम्मितम् ।
तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिबेत्सुखितमानसः ॥
रमणीरमयेद्बह्वीर्नहानिंक्वापिगच्छति ।

अर्थ—शुद्धपारा, हीरेकीभस्म, सीसेकीभस्म, मोतीकीभस्म, चांदीकीभस्म, और सफेद अभ्रककी भस्म, ये प्रत्येक पारेकी बराबर लेवे. इन सबकों एकत्र खरल करके खैरके काढेसे खरल करे, फिर मूंगाकीभस्म दो तोले, गंधककीभस्म २ तोले, मिलाके असगंधके स्वरसे खरल करे. फिर हिरनके सींगमें भर ऊपर कपरमिट्टीकर लघु संपुटमें रखकर फूंक देवे, फिर धायके फूलोंमें अथवा इसके काढेकी भावना देकर काकोली, मुलहटी, जटामांसी, वरियारा, गुलसकरी और कंगही, भसींडा, हिंगोट, दाख, पीपल, बांदा, सतावर, सालपर्णी, पृष्टपर्णी, मधुपर्णी, माषपर्णी, फालसे, कसेरू, महुआ, कौंचकेबीज, इन सबके रसकी पृथक् २ भावना देकर धूपमें सुखाता जावे. इलायची, तज, पत्रज, जटामांसी, लौंग, गेरू, केशर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल; नेत्रवाला और भीमसेनी कपूर, इन सबकों मिलावे चूर्णकरे. तो यह कंदर्पसुन्दर रस बने इसमेंसे ४ मासे रात्रिमें मिश्री, आंवले और विदारीकंद इनके एक २ तोले चूर्णकों एक तोले घीमें मिलाय इसमें इस कन्दर्पसुंदर रसकों मिलायके खाय ऊपरसे ८ तोले दूध पीवे, और प्रसन्न चित्तरहे तो अनेक स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्तिहो तथा वीर्य्यकी हानि कदाचित् न होवे।

अथलोहरसायनम्.

शुद्धंरसेन्द्रभागैकंद्विभागंशुद्धगंधकम् ।
क्षिपेत्कज्जलिकांकृत्वातत्रतीक्ष्णभवंरजः ॥
क्षिप्त्वाकज्जलिकांतुल्यंप्रहरैकंविमर्दयेत् ।
ततःकन्याद्रवैर्मध्येत्रिदिनंपरिमर्दयेत् ॥
ततःसंजायतेतस्यसोष्णोधूमोद्गमंभवेत् ।
अथतत्पिण्डितंकृत्वाताम्रपात्रेनिधापयेत् ॥
मध्येधान्यकुशूलस्यत्रिदिनंधारयेद्बुधः ।
ततउद्धृत्यतंतस्मात्खल्लेक्षिप्त्वानिधापयेत् ॥
रसैःकुठारछिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ।
संशोष्यघर्मेकाथैश्चभावयेत्त्रिकटोस्त्रिशः ॥
वासामृताचित्रकाणांरसैर्भाव्यंपृथक्त्रिशः ।
लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजलैः ॥
निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्विंशभृंगकुरंटकैः ।
पलासकदलीद्रावैःबीजकस्यसृतेनवा ॥
नीलिकालम्बुषाद्रावैःबब्बूलफलिकारसैः ।
भावयेत्त्रिस्त्रिवेलंचततोनागबलारसैः ॥
बलावरीगोक्षुरभिःपातालगरुडीद्रवैः ।

त्रित्रिवेलंयथालाभंभावयेदेभिरौषधैः ॥
ततःप्रातर्लिहेत्क्षौद्रघृताभ्यांकोलमात्रकम् ।
पलमात्रंवरीक्वाथंपिवेदस्यानुपानकम् ॥
मासत्रयाच्छीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम्।
मन्दाग्निश्वासकासौचपाण्डुतांकफमारुतौ ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्ताहन्यादेतन्नसंशयः ।
वातास्रंमूत्रशोषांश्चग्रहणीयरुजांजयेत् ॥
अंडवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्वमधुप्लुतम् ।
बलवर्णकरंवृष्यमायुष्यपरमंस्मृतम् ॥
जयेत्सर्वामयान्कालादिदंलोहरसायनं ।
प्रक्षिप्यौषधमेतस्मिन्प्रदद्यात्कोलमात्रकम्॥
कूष्मांडतिलतैलञ्चमाषान्नंराजिकांतथा ।
मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥

अर्थ–शुद्धपारा १ तोले, शुद्धगन्धक दो तोले, दोनोंकी कजली करके इसमें लोहेकी भस्म ३ तोले, मिलाकर एक प्रहर सबकों खरल करे, फिर घीगुवारके रसमें तीन दिन खरल करे. इस प्रकार करते २ उसमेंसे धुआं निकलने लगेगा और कजली गरम होजावेगी तब उसका गोला बनाय अंडके पत्तोंसे लपेट किसी तांबेके पात्रमें रखकर धानकी खत्तीमें तीनदिन पर्य्यन्त गढा रहने देवे. फिर उसकों निकाल खरलमें डाल कन्दगिलोयके रसकी तीन भावना देवे, फिर धूपमें सुखाकर त्रिकुटा-के काढेकी तीन भावना देवे, तथा अडूसा, गिलाय और चीतेके रसोंकी तीन २ भावना देवे, फिर लोहपात्रमें रखकर त्रिकुटाके काढे-की, निर्गुण्डी, अनारके फलकी छाल, भसींडा, भांगरा, पीयावांसा, ढाक, केलेकाकन्द, विजै-सारका काढा, नीली, मुण्डी, और बबूलकी फलियों इन प्रत्येकके काढेकी तीन २ भावना देवे. फिर खिरैटी, कंगही, शतावर, गोखरू और छिलहिंटा इन प्रत्येकके रसकी तीन तीन भावना देवे. यदि सब औषधि न मिलें तो जो मिलें उन्हींके रसोंकी भावना देवे. इसकों प्रातःकाल ८ रत्ती ले सहत और घीमें मिला-कर चाटे, और इसके ऊपर शतावरका काढा ४ तोले पीवे, इस प्रकार तीन महीने सेवन, करनेसे वलीपलित कहिये वृद्धावस्थाकों दूर करे. मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, कफ वादी, इन सब रोगोंकों पीपल और सहतके साथ खानेसे दूर करे. वातरक्त, मूत्रके विका-र, संग्रहणी और अंडवृद्धिकों मुलहटीकेस-त्त और सहतके साथ खानेसे नष्ट करे. बल, वर्ण करे, आयुकोंवढावे. वृष्य है, यह लोह रसायन संपूर्ण रोगमात्रोंकों दूर करे. इसमें जो प्रक्षेप औषधि कही हैं. उनकों आठ २ मासे मिलावे ।

अब इसपर पथ्य कहते हैं. पेठा, तिल, तेल, उडदके पदार्थ, राई, मद्य और खटाईके पदार्थ इत्यादिक वस्तुओंको लोह सेवन कर्त्ता मनुष्य त्याग देवे ।

पारदभस्म.

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंलोहपात्रेग्निसंस्थिते ।
आर्द्रन्यग्रोधदण्डेनचालयेद्भस्मतांनयेत् ॥
रक्तिकाद्वितयंभुक्तंरेतःपुष्टिकरंपरम् ।

अर्थ–शुद्धपारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, दोनोंकों लोहके पात्रमें डाल अग्निपर रखकर अग्नि देवे. और जब कढाई अत्यन्त गरम होजावे तब एक वडकी लकडीसे उस पारे और गन्धककों रगडता जाय, इस प्रकार करनेमें थोडी हीदेरमें उस पारे और गन्धककी भस्म होजावेगी. उस भस्मकों किसी शीशी आदिमें भरकर रख छोडे इसमेंसे दो रत्ती

भस्मकों यथायोग्य अनुपानके साथ सेवन करे तो वीर्य्यकों अत्यन्त बढावे ।

स्तंभनकर्त्तापारः

शुद्धंसूतमिपुप्रतोलकमितंगन्धंतथाशुद्धिमत् । पंचाक्षंपरिगृह्यसंयुतमुखांशुक्तिसमुद्घाटयतां तत्कीलंपरिहृत्यशुक्तिजठरादंतःक्षिपेद्गन्धकम् । प्रोक्तस्यार्द्धमथान्तरेविनिहितंसूतंसमस्तंततः ॥ सूतस्योपरिशेपगन्धकरजःसंक्षिप्यतन्मध्यगं । सूतंशुक्तिकयान्यतोपरिगतासंमुद्रयगृह्यस्त्रकैः ॥ तांशुक्तिंपरिशोष्यसूर्यकिरणात्संदीयतेऽग्नितुपैः । धान्यानांगजसंज्ञकेवरपुटेतत्स्वांगसंशीतलम् ॥ संचूर्ण्यांशुकगालितंकिलभवेद्गुञ्जोन्मितंपुष्टिकृत् । रेतस्तंभनकृत्पयोऽनुचपिवेत्सायंसितासंयुतम्

अर्थ–शुद्धपारा ५ तोले, शुद्ध गन्धक ५ तोले, ले मुखमुदी सीपके मुखकों खोल उसके भीतरके कीडेकों निकाल डाले, फिर उस गन्धकके आधे चूर्णकों उसमें बिछाकर उसपर पारेकों रख बाकी आधे चूर्णसे दबा देवे, फिर दूसरे सीपके पलडेसे बंदकर कपरमिट्टी करके धूपमें सुखा लेवे, और धान्यके तुषोंके गजपुटमें रखकर फूंक देवे. जब स्वांग शीतल होजावे तब निकालकर उसकी कपरमिट्टीकों दूर करे, और पारेकी डलीकों निकाल चूर्ण कर कपरछनकरे और किसी उत्तम शीशी आदि पदार्थमें भरकर रखछोडे, इसमेंसे एक रत्ती रस मक्खन, मिश्री, दूध आदिके अनुपानसे भक्षण करे तो पुष्टता करे, और वीर्य्यका स्तंभन करे, तथा सायंकालमें इसके ऊपर मिश्री मिला हुआ दूध पीवे ।

गंधामृतरसः

भस्मसूतंद्विधागन्धंकन्यकाद्भिर्विमर्दयेत् । रुद्ध्वालघुपुटेपश्चादुद्धृत्यमधुसर्पिषा ॥ निष्कंखादेज्जरामृत्युंहन्तिगन्धामृतोरसः । समूलंभृंगराजञ्चछायाशुष्कन्तुचूर्णयेत् ॥ तत्समंत्रिफलाचूर्णसर्वतुल्यासिताभवेत् । पलैकंभक्षयेच्चानुसेवनाच्चजरापहम् ॥

अर्थ–चन्द्रोदय १ तोले गन्धक दो तोले, दोनोंकों घीगुवारके रससे एक दिन खरल कर सराव संपुटमें बन्दकर लघुपुटमें फूंकदे. स्वांग शीतल होनेपर निकाल ले सहत और घीके साथ ४ मासे भक्षण करे तो वृद्धावस्था और बुढापेका नाश करे, यह गन्धामृतरस है. जड युक्त भांगरेकों छायामें सुखाकर चूर्ण करे, फिर उसमें बराबरका त्रिफलाका चूर्ण मिलावे, और सब चूर्णकी बराबर मिश्री मिलाकर इसमेंसे चार तोले नित्य सेवन करे तो वृद्धावस्था दूर हो ।

पंचशररसः

रसेनयुक्शाल्मलिजेनसूतंत्रिसप्तवाराणिवलिंविमर्द्य । पृथक्त्रयंकज्जलिकांविपक्वंघृते रसःपंचशरोऽयमुक्तः ॥ वल्लोहिवल्लीदलसंप्रयुक्तोवीर्यातिवृद्धिंकुरुतेऽस्यनूनम् । मांसान्नमद्यंगुरुपायसंचपयःपिवेन्माहिषमत्रसिद्धम्

अर्थ–सेमरके मूसलाके रसमें पारेकों खरल करे, फिर गन्धक मिलाकर २१ भावना सेमरके रसकी देवे, फिर इस कजलीकों घीमें परिपक्व करे तो यह पंचशर नामकरस सिद्ध हो, दो रत्ती रस पानमें रखकर सेवन करे तो यह वीर्य्यकी वृद्धी करे. इसपर मास, उडदके पदार्थ, मद्य, भारी पदार्थ, पायस (खीर) और भैंसका दूध सेवन करना चाहिये।

कामिनीमदभंजनोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंत्र्यहंकल्हारकद्रवैः ।

त्रिस्त्रिर्वेलंयथालाभंभावयेदेभिरौषधैः ॥
ततःप्रातर्लिहेत्क्षौद्रघृताभ्यांकोलमात्रकम् ।
पलमात्रंवरीक्वाथंपिवेदस्यानुपानकम् ॥
मासत्रयाच्छीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम् ।
मन्दाग्निंश्वासकासौचपाण्डुतांकफमारुतौ ॥
पिप्पलीमधुसंयुक्ताहन्यादेतन्नसंशयः ।
वातास्रंमूत्रदोषांश्चग्रहणीयरुजांजयेत् ॥
अंडवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्वमधुप्लुतम् ।
बलवर्णकरंवृष्यमायुष्यपरमंस्मृतम् ॥
जयेत्सर्वामयान्कालादिदंलोहरसायनं ।
प्रक्षिप्यौषधमेतस्मिन्प्रदद्यात्कोलमात्रकम् ॥
कूष्मांडतिलतैलञ्चमापान्नंराजिकांतथा ।
मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ तोले, शुद्धगन्धक दो तोले, दोनोंकी कजली करके इसमें लोहेकी भस्म ३ तोले, मिलाकर एक प्रहर सबकों खरल करे, फिर घीगुवारके रसमें तीन दिन खरल करे. इस प्रकार करते २ उसमेंसे धुआं निकलने लगेगा और कजली गरम होजावेगी तब उसका गोला बनाय अंडके पत्तोंसे लपेट किसी तांबेके पात्रमें रखकर धानकी खत्तीमें तीनदिन पर्य्यन्त गढा रहने देवे. फिर उसकों निकाल खरलमें डाल कन्दगिलोयके रसकी तीन भावना देवे, फिर धूपमें सुखाकर त्रिकुटाके काढेकी तीन भावना देवे, तथा अडूसा, गिलाय और चीतेके रसोंकी तीन २ भावना देवे, फिर लोहपात्रमें रखकर त्रिकुटाके काढेकी, निर्गुण्डी, अनारके फलकी छाल, भसींडा, भांगरा, पीयावांसा, ढाक, केलेकाकन्द, बिजैसारका काढा, नीली, मुण्डी, और बबूलकी फलियों इन प्रत्येकके काढेकी तीन २ भावना देवे. फिर खिरैटी, कंगही, शतावर, गोखरू और छिलहिंटा इन प्रत्येकके रसकी तीन तीन भावना देवे. यदि सब औषधि न मिलें तो जो मिलें उन्हींके रसोंकी भावना देवे. इसकों प्रातःकाल ८ रत्ती ले सहत और घीमें मिलाकर चाटे, और इसके ऊपर शतावरका काढा ४ तोले पीवे, इस प्रकार तीन महीने सेवन, करनेसे वलीपलित कहिये वृद्धावस्थाकों दूर करे. मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, पाण्डुरोग, कफ वादी, इन सब रोगोंकों पीपल और सहतके साथ खानेसे दूर करे. वातरक्त, मूत्रके विकार, संग्रहणी और अंडवृद्धिकों मुलहटीकेसत्त और सहतके साथ खानेसे नष्ट करे. बल, वर्ण करे, आयुकोंबढावे. वृष्य है, यह लोह रसायन संपूर्ण रोगमात्रोंकों दूर करे. इसमें जो प्रक्षेप औषधि कही हैं. उनकों आठ २ मासे मिलावे ।

अब इसपर पथ्य कहते हैं. पेठा, तिल, तेल, उडदके पदार्थ, राई, मद्य और खटाईके पदार्थ इत्यादिक वस्तुओंको लोह सेवन कर्त्ता मनुष्य त्याग देवे ।

पारदभस्म.

शुद्धंसूतंद्विधागन्धंलोहपात्रेग्निसंस्थिते ।
आर्द्रन्यग्रोधदण्डेनचालयेद्भस्मतांनयेत् ॥
रक्तिकाद्वितयंभुक्तंरेतःपुष्टिकरंपरम् ।

अर्थ—शुद्धपारा ४ तोले, गंधक ८ तोले, दोनोंकों लोहके पात्रमें डाल अग्निपर रखकर अग्नि देवे. और जब कढाई अत्यन्त गरम होजावे तब एक बडकी लकडीसे उस पारे और गन्धककों रगडता जाय, इस प्रकार करनेमें थोडी हीदेरमें उस पारे और गन्धककी भस्म होजावेगी. उस भस्मकों किसी शीशी आदिमें भरकर रख छोडे इसमेंसे दो रत्ती

भस्मकों यथायोग्य अनुपानके साथ सेवन करे
तो वीर्य्यकों अत्यन्त बढावे ।

स्तंभनकर्त्तापारः

शुद्धंसूतमिपुप्रतोलकमितंगन्धंतथाशुद्धिमत् ।
पंचाक्षंपरिगृह्यसंयुतमुखांशुक्तिंसमुद्घाटयतां
तत्कीलंपरिहृत्यशुक्तिजठरादंतःक्षिपेद्गन्धक
म् । प्रोक्तस्यार्द्धमथान्तरेविनिहितंसूतंसम
स्तंततः ॥ सूतस्योपरिशेषगन्धकरजः
सांक्षिप्यतन्मध्यगं । सूतंशुक्तिकयान्यतोपरि
गतासंमुद्र्यमृद्वस्त्रकैः ॥ तांशुक्तिंपरिशोष्यसू
र्यकिरणात्संदीयतेऽग्निंतुपैः । धान्यानांग
जसंज्ञकेवरपुटेतत्स्वांगसंशीतलम्.॥ संचूर्ण्यां
शुकगालितंकिलभवेद्गुञ्जोन्मितंपुष्टिकृत् । रे
तस्तंभनकृत्पयोऽनुचपिवेत्सायंसितासंयुतम्

अर्थ—शुद्धपारा ५ तोले, शुद्ध गन्धक ५
तोले, ले मुखमुदी सीपके मुखकों खोल उसके
भीतरके कीडेकों निकाल डाले, फिर उस
गन्धकके आधे चूर्णकों उसमें विछाकर उ
सपर पारेकों रख वाकी आधे चूर्णसे दवा देवे,
फिर दूसरे सीपके पलडेसे बंदकर कपरमिट्टी
करके धूपमें सुखा लेवे, और धान्यके तुषोंके
गजपुटमें रखकर फूंक देवे. जब स्वांग शीतल
होजावे तब निकालकर उसकी कपरमिट्टीकों
दूर करे, और पारेकी डलीकों निकाल चूर्ण
कर कपरछनकरे और किसी उत्तम शीशी
आदि पदार्थमें भरकर रखछोडे, इसमेंसे एक
रत्ती रस मक्खन, मिश्री, दूध आदिके अनुपानसे
भक्षण करे तो पुष्टता करे, और वीर्य्यका
स्तंभन करे, तथा सायंकालमें इसके ऊपर
मिश्री मिला हुआ दूध पीवे ।

गंधामृतरसः

भस्मसूतंद्विधागन्धंकन्यकाद्भिर्विमर्दयेत् ।
रुद्ध्वालघुपुटेपश्चादुद्धृत्यमधुसार्पिषा ॥
निष्कंखादेज्जरामृत्युंहन्तिगन्धामृतोरसः ।
समूलंभृंगराजञ्चछायाशुष्कन्तुचूर्णयेत् ॥
तत्समंत्रिफलाचूर्णंसर्वतुल्यासिताभवेत् ।
पलैकंभक्षयेच्चानुसेवनाच्चजरापहम् ॥

अर्थ—चन्द्रोदय १ तोले गन्धक दो
तोले, दोनोंकों घीगुवारके रससे एक दिन
खरल कर सराव संपुटमें बन्दकर लघुपुटमें
फूंकदे. स्वांग शीतल होनेपर निकाल ले सहत
और घीके साथ ४ मासे भक्षण करे तो वृ-
द्धावस्था और बुढापेका नाश करे, यह ग-
न्धामृतरस है. जड युक्त भांगरेकों छायामें
सुखाकर चूर्ण करे, फिर उसमें वरावरका
त्रिफलाका चूर्ण मिलावे, और सव चूर्णकी
वरावर मिश्री मिलाकर इसमेंसे चार तोले
नित्य सेवन करे तो वृद्धावस्था दूर हो ।

पंचशररसः

रसेनयुक्शाल्मलिजेनसूतंत्रिसप्तवाराणिव
लिविमर्द्य । पृथक्त्रयंकज्जलिकांविपक्वंघृते
रसःपंचशरोऽयमुक्तः ॥ वल्लोहिवल्लीदलसं
प्रयुक्तोवीर्यातिवृद्धिंकुरुतेऽस्यनूनम् । मांसा
न्नमद्यंगुरुपायसंचपयःपिवेन्माहिपमत्रसिद्धम्

अर्थ—सेमरके मूसलीके रसमें पारेकों खर-
ल करे, फिर गन्धक मिलाकर २१ भावना
सेमरके रसकी देवे, फिर इस कज्जलीकों घीमें
परिपक्व करे तो यह पंचशर नामकरस सिद्ध
हो, दो रत्ती रस पानमें रखकर सेवन करे
तो यह वीर्य्यकी वृद्धी करे. इसपर मास,
उडदके पदार्थ, मद्य, भारी पदार्थ, पायस
(खीर) और भैंसका दूध सेवन करना चाहिये।

कामिनीमदभंजनोरसः

शुद्धंसूतंसमंगन्धंत्र्यहंकल्हारकद्रवैः ।

मर्दितंवालुकायंत्रेयामंसंपुटकेपचेत् ।
रक्तागस्त्यद्रवैर्भाव्यंदिनैकन्तुंसितायुतम् ॥
यथेष्टंभक्षयेच्चानुकामयेत्कामिनीशतम् ।

अर्थ—शुद्धपारा ४ तोले, गन्धक ४ तोले, दोनोंको लाल कमलके रसमें तीन दिन खरल करे, फिर वालुकायंत्रमें एक प्रहर पचन करावे, पश्चात् उसमेंसे निकाल कर घूंवचीके रसमें एक दिन खरल करके, इसमेंसे बलावल विचार मिश्रीके साथ इसकों सेवन करे और यथेष्ट भोजन करे तो १०० स्त्रियोंसे रमण करनेकी शक्ति होवे ।

लक्ष्मणालौहम्.

लक्ष्मणाहस्तिकर्णाभ्यांत्रिकत्रयसमन्वयात्।
अश्वगन्धासमायोगाल्लौहंपुंसवनंस्मृतं ॥
पुत्रोत्पत्तिकरंवृष्यंकन्यासूतिनिवर्त्तकम् ।
कृशस्यवलदंश्रेष्ठंसर्वामयहरंपरम् ॥

अर्थ—लक्ष्मणा और लाल अरंड इनमें त्रिफला, त्रिकुटा, त्रिमद और असगंध ए सब समान भाग मिलवे सबकी बराबर लोह-भस्म मिलाकर यथायोग्य मात्रासे सेवन करे तो यह पुत्रोत्पत्ति करे, वृष्य है, तथा जिसके कन्याही कन्या होती हों उसकों दूर करे. कृशोंकों बल देवे और सब रोगोंको हरण करे।

कामिनीदर्पघ्नरसः

शाल्मल्यास्त्वचमादायश्लक्ष्णचूर्णानिकार येत् । शुद्धगंधकचूर्णानितद्रसेनैवभावयेत् ॥
मापमात्रप्रयोगेणशृणुवक्ष्यामियेगुणाः ।
मकरध्वजरूपोऽपिस्त्रीशतानन्दवर्द्धनः ॥
गतायुश्चभवेद्देविवलीपलितनाशनः ।
तेजस्वीवलसंम्पन्नोवेगेनतुरगोपमः ॥
सततंभक्षयेद्यस्तुतस्यमृत्युर्नजायते ।

अर्थ—सेमरकी छालका बारीक चूर्ण कर समान भाग गन्धकका चूर्ण मिलाय सेमरके रससें ही खरलकरे. इसकों एक मासे नित्य सेवन करनेसे जो गुणहैं वो सुनों, कामदेवके समान दिव्यरूप हो, सौ स्त्रियोंकों आनन्द देवे. गतायु पुरुषभी वलीपलितके रोगोंसे रहितहो. तेजस्वी, बलवान, वेगमें घोडेके समान हो, जो प्राणी निरन्तर इस रसका सेवन कर्ता है उसकी मृत्यु कदाचित् न होवे ।

हरशशांकरसः

गन्धकामलकंचूर्णधात्रीरसविभावितम् ।
सप्तधाशाल्मलीतोयैःशर्करामधुयोजितम् ॥
लीढ्वाचानुपयःपानंमत्यहंकुरुतेतुयः ।
एतेनाशीतिवर्षोऽपिशतधारमतेस्त्रिया ॥

अर्थ—गन्धक और आमलेके चूर्णकों आंमलेके रसकी सात भावना देवे. फिर सात भावना सेमरके रसकी देकर इसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करे और ऊपरसे दूध पीवे इस प्रकार नित्य करे तो अस्सी वर्षका भी मनुष्य सौवार स्त्रीसे रमण करे ।

चंडालनीयोगः

सितंपुनर्नवामूलंशाल्मलीरसभावितम् ।
शाल्मलिसत्वनिर्य्यासंदद्यात्तत्रसमंसमम् ॥
गंधकंसर्वतुल्यञ्चभावयेच्छाणमात्रकम् ।
अनुपानंप्रकुर्व्वीततत‌ःक्षीरंपलद्वयम् ॥
अयंचंडालनीयोगोऽगम्याप्यत्रहिगम्यते।
निषेधान्निभ्रंयातिकरणात्कामरूपधृक् ॥

अर्थ—सफेद सांठ (विसखपरे) की जडकों सेमलके रसकी सात भावना देवें, फिर इसकी बराबर सेंवलका गोंद मिलाकर सबकी बराबर गंधक मिलावे, सबका चूर्णकर ३ मासे सेवन करे इसके ऊपर ८ तोले दूध पीवें, यह चंडालनी योग अगम्यासे भी गमन करावे

यदिस्त्री संग नकरे तो मृत्यु होवे ।

सिद्धसूतः

मुक्ताफलंशुद्धसूतंसुवर्णंरूप्यमेवच ।
यवक्षारश्चतत्सर्वंतोलैकैकंप्रकल्पयेत् ॥
रक्तोत्पलपत्रतोयैर्मर्दयेत्पत्तलीकृतम् ।
मर्दयेच्चपुनर्दत्त्वागंधकंतदनन्तरम् ॥
क्षिप्त्वाकाचवटीमध्येसंनिरुद्धयत्रियामकम्
सिकताख्येपचेच्छीतेसिद्धंसूतन्तुभक्षयेत् ॥
पंचरक्तिप्रमाणेनमुसलीशर्करान्वितम् ।
शुक्रवृद्धिंकरोत्येषध्वजभंगंचनाशयेत् ॥
दुर्बलंवपुरत्यर्थंबलयुक्तंकरोत्यसौ ।
मुद्गगर्भघृतंक्षीरंशालयःस्निग्धमाहिषम् ॥
पारातस्यमांसंचतित्तिरश्चसदाहितः ।

अर्थ—मोती, शुद्धपारा, सुवर्णभस्म, चांदीकीभस्म और जवाखार प्रत्येक एक २ तोला लेवे, सबका चूर्णकर लाल कमलके पत्तोंके रससे खरल करे, फिर बराबरकी गन्धक मिलाय खरलकर कांचकी आतिशी शीशीमें भर वालुकायंत्रमें रखकर तीन प्रहरकी अग्नि देवे, जब स्वांग शीतल होजावे तब इस सिद्ध पारदमेंसे ५ रत्ती ले, मूसली और मिश्रीमें मिलाकर सेवन करे तो शुक्रकी वृद्धि होवे, और ध्वजभंग (लिंगकी सुस्ती) को नष्ट करे. दुर्बल मनुष्यका देह बलवान हो, इसके ऊपर मूंग, घी, दूध, सांठी चांवल, भैंसका दूध, कबूतर और तीतरका मांस खाना सदैव हित है ।

स्तंभनं.

कर्पूरंटंकणंसूतंतुल्यंमुनिरसंमधु ।
संमर्द्यलेपयेल्लिंगंस्थित्वायामंतथैवच ॥
ततःप्रक्ष्याल्यरमयेद्वनितानांशतंसुखम् ।
वीर्यस्तंभकरंपुंसांसम्यङ्नागार्जुनोदितम्॥

अर्थ—कपूर, सुहागा और पारा तीनों औषधि समान भाग लेकर पीस डाले फिर अगस्तियाके रससे और सहतमें खरल करके लिंगपर लेप करे, एक प्रहरके बाद उस लेपको धोकर स्त्रीसे रमण करे तो सौ स्त्रियोंसे भोग करे, वीर्य्यका स्तंभन करे. यह नागार्ज्जुन सिद्धका कहा प्रयोग है ।

अन्ययोगः

अहिफेनंदुग्धशुद्धंरक्तिकात्रितयोन्मितम् ।
विन्दुवेगंध्रुवंधत्तेसितयानिशिभक्षितम् ॥

अर्थ—शुद्ध अफीमका दूध ३ रत्ती लेकर रात्रिके समय मिश्रीमें भक्षण करे तो वीर्यका स्तंभन अवश्य हो ।

सौगतिगुटिका.

पारदगन्धकचम्पककेसरसुरकुसुमकरहाटाः।
अजमोदांबुधिशोषोजातीपत्रश्चजातिफलम्
प्रत्येकंभागैकंभागद्वितयंचशुद्धमहिफेनम् ॥
तेनवदरसदृशगुटिकाकार्य्यामधुनाथभक्षये
देकाम् । यामेतीतेललनांसविधेस्थित्वाज
वानिकाकर्षम् ॥ तैलार्द्रंभुंजीयादनुपानंचैत
देतस्यलिंगंकठिनतरंस्याद्वीर्यंसंस्तंभयेद्यामं।
एषासौगतिगुटिकासत्यंसत्यंचरोधकरी ॥

अर्थ—पारा, गन्धक, नागकेशर, केशर, लौंग, अकरकरा अजमोद, समुद्रशोष, जावित्री, और जायफल प्रत्येक एक २ तोले लेवे और शुद्ध अफीम दो तोले लेकर सबको खरलकर बेरकी गुठलीके बराबर गोलियां बनावे, एक गोली रात्रिके समय सहतसे खाय फिर एक प्रहर बाद एक तोले अजवायनको तेलमें मिलाकर सेवन करे; यह इसका पथ्य है तो लिंग कठिन होवे, वीर्य्यका एक प्रहर तक स्तंभन हो, यह सौगति गुटिका निश्चय वीर्य्यको रोकने वाली है ।

अन्ययोगः

करवीरजटालेपंयःकरोतिनरोमणौ ।
वीर्य्यस्तंभंसलभतेकरनाटीसुरतेष्वपि ॥

अर्थ–कनेरकी जडकों जलमें पीस सुपारीकों बचाकर लिंगपर लेप करे फिर एक घंटे बाद उसकों धोकर स्त्रीसे रमण करे तो करनाटी स्त्रीके भी संभोग करनेसे वीर्य्य स्तंभन कों प्राप्त होवे ।

कामदेवः

सूतोमाषमितःस्वदोषरहितस्तच्चूर्य्यभागोवलि । स्तन्मानस्तुभुजंगफेनउदितःक्षुद्राफलस्याम्बुना ॥ एतद्गोलकमाकलय्यविपचेत्क्षुद्राफलेहेमगे । लावैरष्टमितैर्भवेदितिरसःश्रीकामदेवाभिधः ॥ मात्रासूर्य्योदयेगुञ्जामेकंयामचतुष्टये । गुञ्जाचतुष्टयंदेयंनागवल्लीदलान्वितम् ॥ दुग्धौदनंसलवणंरात्रौक्षीरंयथेच्छया ।

अर्थ–पारा १ मासे, गन्धक ४ मासे, अफीम ४ मासे, इन सवकों कटेरीके फलके रसमें खरलकर गोलियां बनावे उसकों कटेरीके फलमें रखकर पचावे फिर धतूरेके फलमें रखकर उसकों ८ लावकपुट दे तो यह कामदेवरस सिद्ध हो. इसमेंसे एक रत्ती प्रातःकाल देवे, फिर १ रत्ती दूसरे प्रहर, इसी प्रकार चार प्रहरमें ४ रत्ती मात्रा पानमें रखकर देवे, और दिनमें दूधभात भोजन करे परन्तु निमकका पदार्थ न खाय और रात्रिकों यथेष्ट दूध पीवे तो यह गुटिका अत्यन्त स्तंभन करे ।

महानीलकण्ठोरसः

पलैकंनागभस्माथभावयेत्तिमिपित्ततः ।
वङ्गार्गसुमृतंस्वर्णतोलैकंवापिमिश्रयेत् ॥
द्विपलंभस्मसूतस्यत्रिपलंमृतमभ्रकम् ।
त्रिपलंलोहभस्माथसर्वमेकत्रकारयेत् ॥
भावयेच्चपृथक्कन्याब्राह्मीनिर्गुण्डिकाशमी ।
मुण्डीशतावरीछिन्नाकोकिलाक्षस्यवीजकैः
मूसलीवृद्धदारोग्निद्रवैरेभिर्भिषग्वरः ॥
ततःसंचूर्णयेत्सर्वतुल्यमेकादशाभिधम् ।
वराव्योषाब्दवन्हेलाःजातीफललवंगकम्
पूजयेद्वृषपुष्पाद्यैःनीलकण्ठमहेश्वरम् ।
द्विगुंजाभक्षयेदस्यमृत्युंजयमनुस्मरन् ॥
क्षयमेकादशविधंग्रहणीरक्तपित्तकम् । विविधान्वातजान्रोगान्चत्वारिंशच्चपैत्तिकान्
हन्तिसर्वामयानेवकामिनीनांशतंव्रजेत् ।
एकविंशतिरात्रार्द्धपरिहार्य्यंत्यजेदिह ॥
यथेष्टाहारचेष्टोहिकंदर्पसदृशोनरः ।
मेधावीबलवान्प्राज्ञोवह्नाशीभीमविक्रमः ॥
पुत्रार्थिनीतथानारीसैवपुत्रंप्रसूयते ।
अस्यसूतस्यमाहात्म्यंवेत्तिशंभुर्नचापरः ॥

अर्थ–मछलीके पित्तेमें घोटा हुआ नागेश्वर ४ तोले, उसीमें एक तोले सुवर्णकीभस्म मिलावे, चंद्रोदय ८ तोले और अभ्रक १२ तोले मिलाय सबकों एकत्रकर घीगुवार, ब्राह्मी, निर्गुण्डी, छोंकरा, गोरखमुण्डी, शतावर, गिलोय, तालमखाने, मूसली, विधायरा और चीता इनके रसोंकी पृथक् पृथक् भावना देवे. फिर हरड, वहेडा, आमला, सोंठ, मिरच, पीपल, नागरमोथा, चीता, इलायची, जायफल, और लौंग इनका चूर्ण मिलाकर रस सिद्ध करे फिर अडूसेके फूल आदिसे **श्रीनीलकंठ** शिवका पूजन करे तब दो रत्ती सेवन कर श्रीमृत्युंजयशिवका स्मर्ण करे. तो ग्यारह प्रकारका क्षयरोग, संग्रहणी, रक्तपित्त, अनेक वातके रोग, और ४० पित्तके रोगोंकों नष्ट

करे सौ स्त्रियोंको भोगनेकी सामर्थ्य हो २१ रात्रि पथ्य सेवन करके फिर परिहारको त्यागदेवे, फिर यथेष्ट आहार और आचारोंका सेवन करे, कामदेवके समान रूप होवे, बुद्धिवान, बलवान, प्राज्ञ, बहुत भोजन करने वाला, भीमसेनके समान पराक्रमी, जिसको पुत्रकी इच्छा हो उसको पुत्र होवे. इस महानीलकण्ठरसकी महिमा श्रीशिवही जानते हैं. अन्य नहीं ।

बृहच्छृंगाराभ्रकं

पारदंगन्धकंचैवटंकणंनागकेशरम् ।
कर्पूरंजातीकोपंचलवंगंतेजपत्रकम् ॥
एतेषांकर्षभागानिसुवर्णंतत्समंभवेत् ।
शुद्धकृष्णाभ्रचूर्णञ्चचतुष्कंपिचुभागिकम् ॥
तालीसंघनकुष्ठंचमांसीपुष्पवरांगकम् ।
एलाबीजंत्रिकटुकंत्रिफलाकरिपिप्पली ॥
एषांकर्षद्वयञ्चैवपिप्पलीक्वाथभावितम् ।
अनुपानंप्रयोक्तव्यंचोचंक्षौद्रसमायुतम् ॥
नानारोगप्रशमनंविशेषात्कासरोगनुत् ।
वातिकंपैत्तिकञ्चैवश्लैष्मिकंसान्निपातिकम् ॥
हृच्छूलंपार्श्वशूलंचशिरःशूलंविशेषतः ।
स्वरामयंतथाकुष्ठंश्लेष्माणंवातशोणितम् ॥
बृहच्छृंगाराभ्रनामविष्णुनापरिकीर्त्तितम् ।
रक्तपित्तंचकासंचनाशयेन्नात्रसंशयः ॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग, और तेजपात प्रत्येक एक २ तोले लेवे, और सबकी बराबर इसमें सुवर्णभस्म अथवा सुवर्णके वर्क मिलावे, शुद्ध कृष्णाभ्रककीभस्म ४ तोले, तालीस, नागर मोथा, कूट, और जटामांसीके फूल, दालचीनी, छोटी इलायचीके बीज, सोंठ, मिरच, पीपल, हर्ड, बहेडा, आमला और गजपीपल ये प्रत्येक दो दो तोले लेवे. सबका चूर्णकर पीपलके काढेकी भावना देवे. तो यह रस बनकर तयार होवे. इसको दालचीनीके चूर्ण और सहतके साथ चाटे तो अनेक रोगोंको नष्ट करे विशेष कर खांसीके रोगोंको नष्ट करे. वात, पित्त, कफ और सन्निपातके रोगोंको तथा हृदयके शूल, पसवाडेके शूल, मस्तकपीडा, स्वरभंग, कोढ, कफकी बीमारी, वातरक्त और रक्तपित्त इनको दूरकरे यह विष्णुभगवान्की कही हुई बृहच्छृंगाराभ्रक है इसमें सन्देह नहीं है ।

कामाग्निसंदीपनमोदकः

कर्पोरसोगंधकमभ्रकञ्चद्विक्षारचित्रेलवणानिपञ्च । शटीयवानीद्वयकीटहारीतालीसपत्रान्यपरंद्विकर्षं ॥ जीरंचतुर्जातलवंगजातीफलंचकर्षत्रयमेवमन्यत् । सवृद्धदारुंकटुकत्रयंचतथाचतुःकर्षमितंनिबोध ॥ धान्याकयष्टीमधुरीकसेरूकषापृथक्पंचवरीविदारी। वरेभकर्णाभबलात्मगुप्ताबीजंतथागोक्षुरबीजयुक्तम् ॥ सबीजपत्रेन्द्ररजःसमानंसमासिताक्षौद्रयुतंचतुल्यम् । कर्षैकमिन्दोरथमोदकंतत्कामाग्निसंदीपनमेतदुक्तम् ॥ वृष्यास्त्वतःपरतरंसततंनदृष्टयेतंनिसेव्यमनुजःप्रमदासहस्रम् । गच्छन्नलिंगशिथिलत्वमवाप्नुयाचनागाधिपंविजयतेवलतःप्रमत्तम् ॥ कान्त्याहुताशनमपिस्वरतोमयूरान्वाहंजवेननयनेनमहाविहंगम् । वातानशीतिमथपित्तगदंसमग्रंश्लेष्मोत्थविंशतिरुजःपरमग्निमांद्यम् ॥ दुर्नामकामलभगंदरपांडुरोगमेहातिसारकृमिहृद्ग्रहणीप्रदोषान् । कासज्वरश्वसनपीनसपार्श्वशूलशूलाम्लपित्तसहितांश्चिरजान्समस्तान् ॥ हत्वागदानपिचतत्पुमपत्यकारीसर्वंतुप

ध्यमथसर्वसुखप्रदायि। वृष्यंवलीपलितहारि रसायनंस्यात्श्रीमूलदेवकथितंपरमंप्रशस्तम्

अर्थ—पारा, गंधक, अभ्रक, जवाखार, सज्जीखार, चीतेकीछाल, पांचों निमक, कचूर, अजमायन, अजमोद, वायविडंग, और तालीसपत्र प्रत्येक दो २ तोला लेवे, जीरा, दालचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, तेजपात, लौंग और जायफल प्रत्येक चार २ तोला लेवे. विधायरा, सोंट, मिरच, पीपल, ये प्रत्येक छः २ तोला लेवे. धनियां, मुलहटी, सिंघाडे, कसेरू, प्रत्येक आठ २ तोला लेवे. सतावर, विदारीकंद, हरड, बहेडा, आंवला, हस्तिकर्ण, पलासकी छाल, खिरैटी, कौंचके बीज, और गोखरू प्रत्येक दश २ तोला लेवे. इन सब औषधियोंको कूटपीस चूर्ण करे. और सब चूर्णके बराबर शुद्धकी हुई भांग बीजों सहित चूर्णकर मिलावे, और सबकी बराबर मिश्री मिलावे तथा अनुमान माफिक घी और सहत मिलाकर दो तोले कपूरसे सुगंधित करे, इसकी मात्रा छःमासेसे लेकर एक तोले पर्य्यन्त है. इसके समान वृष्यऔषधी संसारमें दूसरी नहीं देखी गई है. इसके सेवन करनेसे यह प्राणी १००० स्त्रियोंको भोगे, लिंग कभी शिथिल न होवे, हाथीके समान बलहो, अग्निके समान तेज होवे, मोरके समान स्वर होवे, घोडेके समान वेगहो, गीधके समान दृष्टि हो, ८० प्रकारके पित्तरोग, बीस प्रकारके कफरोग, मंदाग्नि, बवासीर, कामला, भगंदर, पाण्डुरोग, घोर अतिसार, कृमिरोग, हृदयके रोग, संग्रहणी, खाँसी, ज्वर, श्वास, पीनस पसवाडेका शूल, शूल, अम्लपित्त, और बहुत दिनोंके संपूर्ण रोगोंको यह नष्ट करे. तथा सन्तानका दाता है. सब ऋतुओंमें पथ्य है, और सदैव सुखकारी है, वृष्य है, और बलीपलित (बुढापे) का दूर कर्त्ता और रसायन है. यह श्रीमलदेवका कहा परमोत्तम प्रयोग है ।

समासोयं उत्तरखंडस्योत्तरभागः

हमारे मित्र वैद्य सुन्दरलालजीने पुरनियांसे ये अपने परिचित रस लिखकर भेजे हैं और लिखा है कि इनको अपने किसी ग्रन्थमें प्रकाशकर दीजिये ये रस मेरे अनुभव किये हुए हैं उनकी आज्ञानुसार हम यहां प्रकाश किये देते हैं. यदि इसी प्रकार जो अन्य मित्र गण अपनी परिचित यानी आजमाई हुई औषधियोंको संसारके कल्याणार्थ छपवाना चाहें वो हमारे पास भेजें हम उनको छाप देवेंगे और उनका नामभी स्पष्ट अक्षरोंमें प्रकाश करदैंगे अर्थात् यह औषधि हमारे परममित्रने अमुकस्थानसे लिखी है ऐसा उस प्रयोगके अन्तमें लिख दिया जायगा ।

संखियामारण.

संवलकेजैहरकीक्रिया ।

संखियाको एक दिन कांजीसे खरलकर एक दिन विषके काढेसे खरल करे, पश्चात् प्रत्येक उपविषमें घोट गोला बनाय डौरूयंत्रमें उडा लेवे ऊपरके पात्रमें जो सत्व लगे उसको छुरीसे होशियारीके साथ निकालके शीशीमें भरकर रखछोडे इसकी एक चांवल मात्राको मिश्रीके साथ देवे तो चातुर्थिकज्वर दूर होवे पथ्य दूध और मिश्री है ।

संवलमारणः

दो तोले सुहागेको पीस उसके बीचमें

एक तोले संखियाकी डलीको रख संपुटमें एक सेर आरने उपलोंकी अग्नि निर्वात स्थानमें देवे पश्चात् स्वांग शीतल होनेपर निकाल लेवे. इसकी सरसोंके बराबर मात्राको मक्खन, मिश्री और मलाईके साथ देवे तो बडा गुण करे ।

दूसरीविधी.

एक तोले संखिया और ६ तोले शिंगरफको एकत्र पीस सेरभर भांगकी लुगदीके बीचमें रख एक हांडीमें ऊपर नीचे शोरा और बीचमें लुगदीको रख हांडीको ४ घडीकी अग्नि देवे तो भस्म होवे ।

तीसरीविधि.

तिलीके सेरभर खारको तीनसेर पानीमें भिगोवे प्रातःकाल छान लेवे, और खारको फेंक देवे, फिर एक पजावेकी वडी ईंटमें गड्ढा खोदकर उसमें लोहेकी कटोरी जमाकर दर्ज बंद करदेवे, उसमें संवलकी डली रख चूल्हेपर चढाय लकडीकी मंदाग्नि देवे, और उस पानीकी एक २ बूंद डलीपर टपकाता जाय ऐसे १२ प्रहर आंच देवे फिर उसको सकोरेसे बंदकर मिट्टीसे बंद कर देवे फिर आंच जलाना बंद कर दे और स्वांग शीतल होने पर उतार लेवे तो वह डली फूल जायगी मात्रा एक चांवल भर बहुत गुण करे ।

चतुर्थविधि.

सोरा दो तोले, सफेद मूसली और कालाजीरी एक २ तोले, तीनोंको पीस आधे मटकनेको भर बीचमें संखियाकी डलीको रख ऊपरसे फिर उन्हीं औषधियोंके चूर्णको भर देवे, फिर मटकनेका मुख बंदकर पांच सेर आरने उपलोंमें फूंकदेवे तो भस्म होवे मात्रा १ चांवल ।

पंचमविधि.

दो तोले संवलको तीन दिन नीबूके रसमें खरलकर टिकिया बांध जिमीकन्दकी गांठमें रख ऊपरसे कपरमिट्टीकर सेरभर आरने उपलोंकी अग्नि देवे, इस प्रकार तीन अग्नि देवे, फिर तीन दिन मालकाँगनीके रसमें घोटे और जिमीकन्दमें रखकर फूंकदेवे इस प्रकार तीन अग्नि देनेसे संखियाकी भस्म होवे ।

इतिश्रीमाथुरकृष्णलालतनयदत्तरामनिर्मितरसराजसुन्दरेउत्तरखण्डस्योत्तरार्द्धसमाप्तिमगमत्-१-२-९४.
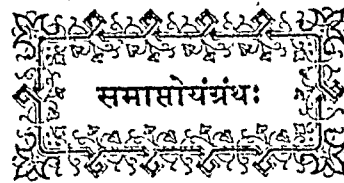
परिशिष्ट.

विसूचिकाविध्वंसरस.

टंकणंमाक्षिकंशुंठीपारदंगंधकंविषम् ।
गरलंसमभागेनसर्वेषांहिंगुलंसमम् ॥ १ ॥
मर्द्यंजंबीरद्रावेणवटीकार्याप्रयत्नतः ।
श्वेतसर्षपतुल्याचमृतसंजीवनीतथा ॥ २ ॥
विषूचींनाशयत्याशुदध्यन्नंपथ्यमाचरेत् ।
त्रिदोषोत्थमतीसारंसर्वोपद्रवसंयुतम् ॥३॥

अर्थ–सुहागा, सुवर्णमाक्षिक, सोंठ, पारा, गंधक, विष, और सर्पविष, प्रत्येक एक एक तोले लेवे, और हिंगुल ७ तोले ले. सबको खरलमें डालकें जँभीरीके रससैं खरल कर सरसोंके समान गोली बनावे, इसके सेवन करनेसैं विषूचिका (हैंजा) तत्काल नष्ट हो, और सर्व उपद्रव युक्त त्रिदोषका अतिसार दूर होय, इसके ऊपर दही भातका भोजन करना चाहिये ।

कर्पूरासव.

तुलाप्रसन्नांपरिगृह्यशुद्धां पलाष्टकंचोडुपतेश्चि पेच्च । एलाचसूक्ष्मायनशृंगवेरे यवानिका वह्लजमत्रसर्वम् ॥ ४ ॥ पलप्रमाणंपिहिते चभांडे मासंनिदध्याद्भिषगत्रयत्नात् । वि सूचिकायाःपरमौषधंत न्निहंतिचान्यान्वि विधान्विकारान् ॥ ९ ॥

अर्थ–बनी हुई उत्तम सुरा (दारू) ४०० तोले, भीमसेनी कपूर ३२ तोले. छोटी इलायची नागरमोथा, सोंठ, अजमायन, कालीमिरच, प्रत्येक चार २ तोले लेवे. इन सबको एकत्रकर एक मिट्टीके चिकने वासनमें भर मुख ढककै धर देवे जब एक महिना हो जाय तब निकालके देवे. यह विसूचिका (हैजा) की परम दिव्यौषधी है. औरभी अनेक रोगोंको दूर करे मात्रा १ मासेकी है. इसको थोडी २ देर ठहर-२ के बराबर देतारहे ।

बृहद्वंगेश्वरोरसः

सूतंगंधंमृतंलोहंमृतमभ्रंसमांसिकम् ।
हेमंवंगंचमुक्ताचताप्यमेवंसमंसमम् ॥ ६ ॥
सर्वेषांचूर्णितंकृत्वाकन्यारसविमर्दितम् ।
गुंजाद्वयंप्रमाणेनवटिकांकुरुयत्नतः ॥ ७ ॥
बृहद्वंगेश्वरोह्येपरक्तसूत्रेप्रशस्यते ।
स्वेतमूत्रंबृहन्मूत्रंकृष्णमूत्रंतथैवच ॥ ८ ॥
सर्वप्रकारमेहांस्तुनाशयेदविकल्पतः ।
अग्निवृद्धिवयोवृद्धिकांतिंवृद्धिकरोतिच॥९॥
क्षयरोगंनिहंत्याशुकासंपंचविधंतथा ।
कुष्ठमष्टादशविधंपांडुरोगंहलीमकम् ॥१०॥
शूलंश्वासंज्वरंहिक्कांमंदाग्नित्वमरोचकम् ।
क्रमेणशीलितोहंतिवृक्षमिंद्राशनिर्यथा॥११॥

अर्थ–पारा, गंधक, लोहकीभस्म, अभ्रकभस्म, सुवर्ण, वंग, मोती और सुवर्ण माक्षिक सब समान भाग लेवे. सबका चूर्णकर घीगुवारके रसमें करलकर २ रत्तीकी गोलियां बनावे. यह बृहद्वंगेश्वररस रक्तमूत्र, स्वेतमूत्र, बृहन्मूत्र, कालामूत्र, और सर्व प्रकारके-प्रमेहोंको दूर करे अग्नि, अवस्था, कांति, इनको

मटावे, लड़का रंग, पांच प्रकारकी खांसी, अठारह प्रकारका कुष्ठ, पांडुरोग, हलीमक, शूल, श्वास, ज्वर, हिचकी, मंदाग्नि, और अरुचि इनको क्रमसे साथ सेवन करनेसे दूर करे ।

श्रीपदारिलोह.

हरीतक्याविभीतस्यधात्र्याश्चूर्णसुचूर्णितम्।
पलोन्मितप्रमाणेनग्राह्यंत्रीणांगुणैषिणा॥१२
तोलद्वयंलोहचूर्णकांतलोहस्यजारितम् ।
तोलद्वयंतथादेयंविशुद्धंचशिलाजतु ॥१३॥
कर्षेकाननम्नेपुत्रिफलाक्वाथभावना ।
श्रीपदाख्यगदध्वंसीसर्वव्याधिविनाशन १४
श्रीपदारिरितिख्यातोलोहोमुनिभिरीरितः।

अर्थ-हरड, बहेरा, आमला, प्रत्येक ६ तोले. लोहभस्म २ तोले. शिलाजीत २ तोले. इन सबको एकत्र कर त्रिफलेके काढेकी भावना देकर एक २ मासेकी गोली बनावे, इसके सेवन करनेसे श्लीपद आदि अनेक रोग दूर हो इसको मुनीश्वरोंने श्रीपदारिलोह कहा है ।

अष्टावक्ररसः

रसराजस्यभागैकंद्विभागंगंधकस्यच ।
भागैकंतुसुवर्णस्यभागार्द्धंरजतस्यच॥१५॥
नागंताम्रंप्रवालंचवंगंचैवत्र्यंशकम् ।
मर्दयेत्करजनार्द्रस्यसर्वमेकप्रहरेण ॥१६॥
वटांकुररसैर्यामंयामंकन्यारसैःसह ।
कूप्यस्थंपाचितंरम्यंत्रिदिनंवालुकासुधीः॥
दाडिमीकुसुमप्रख्यंजायतेअविकलरसः ॥
वलीपलितविध्वंसिबलपुष्टिकरंपरम् ॥१८॥
आरोग्यंजननंमेधाकांतिशुक्रविवर्द्धनम् ।
महौषधिरयंचैतदष्टावक्रेणनिर्मितः ॥१९॥

अर्थ-पारा १ तोले. गंधक २ तोले. सुवर्णके वर्क १ तोले. रूपेकेवर्क ६ मासे, सीसा, तांबा पपरिया और वंग प्रत्येक तीन २ मासे लेवे. इन सबको घी गुवारके रसमे १ प्रहर खरलकर, चंद्रोदय बनानेकी विधिसे कांचकी शीशीमें भर वालुका यंत्रकी अग्नि देकर बनाय लेना चाहिये. इसको २ रत्तीकी मात्रा पानके रसमे सेवन करे. तो वली (झुर्री पड़ना) पलित (सफेद बालोंका होना) दूर करे, बल पुष्टाई करे. आरोग्य कर्ता, मेधा कांति, और शुक्रको बढावे. यह सर्वोत्तम महौषधी अष्टावक्र ऋषिने कही है ।

इति.

परिशिष्ट और अकार क्रमका कोश इसका अभी औरभी बाकी है सो सावकाश मिलनेसे छापेंगे.

यह पुस्तक इस ठिकानेसे मिलेगी.

पंडित दत्तराम चौबे.

मानिकचौक.

मथुराजी.

समाप्तोऽयं
रसराजसुंदरः